Published by Lala Meharchand Lachmandass, Sanscrit Pustakalaya, Lahore,

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-Sagar Press, 26-28, Kolbhat Lane, Bombay.

निवेदन.

यद्यपि इस पद्मचन्द्रकोषमें साम्प्रतिक शिक्षाके अनुकूल आवश्यक शब्द प्रथमही पर्याप्त थे तो भी प्रत्येक आवृत्तिमें अधिकाधिक शब्दविन्यास कोषको अलंकृत करता है। इसी आशयको पूर्ण करनेके लिये इस आवृत्तिमें पञ्चसहस्रसे भी अधिक नये २ शब्द सन्निवेशित किये गये हैं और प्रथम और द्वितीयावृत्तिके अनुसार उन शब्दोंका प्रकृति प्रत्ययालोचनपूर्वक यथावत् अर्थका प्रकाश भी किया गया है। यह कोष सारभूत शब्दोंसे पूर्ण होनेके कारण प्रथमही शिक्षित जनता द्वारा अत्यन्त प्रशंसित हुआ। इसी हेतुसे प्रथम दो आवृत्तिओंमें हाथों हाथ बिक गया और जहां तहांसे इसकी तृतीयावृत्तिके लिये इच्छा प्रकट कीगई। इस कोषकी बहुतही उपयोगिता समझ कर हमने निर्माताको सविशेष प्रार्थना करके भिन्न २ विषयगर्भित शब्दावली सन्निविष्ट करा दी है। आशा है कि सर्व साधारण विद्वानों और छात्र आदिके लिये यह पञ्चसहस्रसे भी अधिक शब्द पूर्ण सन्तोषप्रद होंगे जिससे अनेक दूसरे कोषोंके देखनेका कष्ट निवृत्त होजायगा।

इस बार हमने इस कोषके आदिमें निर्माताका भी मनोहर फोटो लगा दिया है जिससे कोष की शोभा और भी अधिक बढ गई है।

यद्यपि इस समय कागज और मुद्रणका व्यय उत्तरोत्तर बढता जाता है तो भी हमने पहिले की तरह उसी बम्बईमें सुप्रसिद्ध निर्णयसागरयन्त्रालयद्वारा सर्वोत्तम कागज पर मुद्रित कराया है। जिसके देखनेही से चित्त आकर्षित होता है। यथा-शक्ति प्रत्येक शब्दके संशोधन करनेमें पूर्ण प्रयत्न किया गया है। इस बार नवीन उपयोगी शब्दोंका प्रवेश इस कोषके लिये सुवर्णमें सुगन्धिके समान होगया है। तीस हजारके लगभग आवश्यक शब्दोंवाला कोष प्रत्येक पाठशाला, महाविद्यालय और पुस्तकालयमें संस्थापन किया जाना चाहिये। स्वयं संस्कृतभाषाकी उन्नति करनेके लिये सर्व साधारणका मित्र होजाना चाहिये। इस बार हमने अत्यन्त परिश्रम करके इसे प्रस्तुत कराया है। यदि यह शिक्षितमण्डलका मनोहारी हुआ तो हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे तुरन्त ही चतुर्थावृत्तिमें प्रकाश करनेके लिये यत्न होंगे। संस्कृतभाषाकी निरन्तर उन्नति हो तो जनसमस्थानकी उत्तरोत्तर उन्नतिकी सम्भावना है, इस लिये संस्कृतभण्डार कोषरूपही है, भगवान् पदपदार्थनिर्वचनस्वरूप कोषकी रमणीयता भारतसन्तानके हृदयमें प्रकाशित करे जिससे दिन २ संस्कृतोन्नति होकर भारतके कुलदीपक प्रकट हों और हमारा उत्साह भी सफल हो। इत्।

संस्कृतपुस्तकालय,
लाहोर.
१८-१०-१५.

मेहरचन्द लछमनदास.

भूमिका

सर्वरत्नास्पदं कोशः प्रमाणं शास्त्रशालिनाम् । विश्वोपकारपर्य्याप्तिर्यत्कोशे सुप्रतिष्ठिता ॥

यह बात सब जानते और मानते हैं कि किसीभी भाषामें पूरी २ व्युत्पत्ति लाभ करनेके लिये व्याकरण और कोशसे परिचित होना अत्यन्त आवश्यक है. विशेषतः कोशसे किसी शब्दका परिज्ञान तो मानों राजाकी आज्ञाके समान दृढ़ और अटल है. यदि हम किसीभी शब्दके अर्थका निश्चय करनेके लिये प्रवृत्त होकर प्रामाणिक कोशका लाभ करें, जिसके द्वारा हमें इसबातका पूरा २ विश्वास होजाय कि अमुक शब्दके अर्थोंकी अवधि यहांहीतक है. चाहे प्रकृति प्रत्ययके बलसे औरभी अनेक अर्थ होसकें, परन्तु प्रचलित अर्थोंकी शेषसीमा हो, तो निःसन्देह उक्तकोश सकल जनोपकार करनेमें तनिकभी त्रुटि न करेगा । यही कारण है कि, हमारे पूर्वतन ऋषिमहर्षिओं और अमरसिंह आदि विद्वानोंनेभी अपनी मातृभाषात्मक संस्कृत भाषाके स्पष्ट लिखने, और यथार्थ पढनेके लिये असीम परिश्रम और विद्वत्ताके साथ अनेक, सर्वथा परिपूर्ण, सुघटित, सुललित और महोपकारक व्याकरण और कोशोंकी रचना की, जिन्हें देख बड़े २ दक्ष विद्वान् विस्मित हो अद्यावधि प्रशंसा करते चले आते हैं । परन्तु मुझको १६ वर्ष पर्यन्त अध्यापक होकर छोटी और बड़ी शिक्षा प्रणालीसे भलीभांति अनुभव होगया है कि, ऐसे समय जब कि आंग्ल पाठशालाओंमें विद्यार्थिओंको अनेक विषयों (अंग्रेजी-संस्कृत-गणित-इतिहास-पदार्थविद्या-भूगोल-हिन्दी-उर्दू-अरबी-फारसी-आदि)का अभ्यास करना पड़ता है, यहांतक कि, दो ही वर्षमें बहुतसे विषयोंमें परीक्षा देकर उत्तीर्ण होना है, तो उक्त ऋष्यादिप्रणीत बड़े बड़े ग्रन्थोंका अभ्यास उनके लिये सर्वथा उपकारी नहिं हो सका—क्योंकि अंग्रेजी-आदि इतर भाषाके कोशोंकी नाईं उक्त प्राचीन कोशोंकी परिपाटी देशकालानुसार सरल नहीं—प्रत्युत इनका रचनाक्रम इस प्रकारका दुरूह है कि, गुरुके निकट चिरकालतक पढने और कण्ठस्थ करनेके बिना किञ्चित्भी सहायक नहीं होते ।

इस आवश्यकताको पूर्ण करनेके लिये यद्यपि कई एक श्रीमान् मान्यवर मॉनिअर विलियम-आदि अंग्रेजी जातीय विद्वानोंनेभी व्याकरण और कोशोंकी पुस्तकें प्रकाशित की हैं, और उनसे विशेषतः संस्कृत जाननेकी इच्छा करनेहारे यूरोपीय महापुरुषोंको अत्यन्त सहायताभी मिली है, परन्तु यह सहायता भारतवासिओंके लिये उपयुक्त नहीं. क्योंकी प्रथम तो वे सब अंग्रेजीमें लिखे गये हैं, दूसरे उनका अधिक मूल्य होनेसे लाभ करना बहुत कठिन है । और जो "शब्दार्थभानु" नामक कोश हिंदुस्तानी अर्थसहित है उससेभी यथार्थ उपकार नहीं हो सका, क्योंकि उसमें प्रकृति प्रत्यय बिन शब्द मात्र हैं; जिसमें बहुत यत्न करनेपरभी बुद्धिमान् शिष्यके मनमें सन्तोष नहिं होता । मैंने प्रायः महाविद्यालयादिमें विद्यार्थिओंको परस्पर आलाप करते सुना है, कि भलाजी अमुक शब्दका अर्थ जो कोशमें है, वह क्योंकर हुआ-उस अर्थको बोधन करनेहारा कौनसा धातु है? और है उसके आगे कौनसा प्रत्यय लगा कि उसका विशेष अर्थ होगया. यथा कोशमें "नृशंस" इस शब्दका अर्थ लिखा है. घातक-क्रूर-परद्रोही-शरीर । बेरहम । ईजारसां । अब कहिये इस प्रकार शब्दके अर्थका ज्ञान क्योंकर कार्य्यसाधक होसकता है. जब कि विद्यार्थीके मनमें इसबातके जाननेकी इच्छा निरन्तर लगी है कि, उक्त शब्दका अर्थ क्योंकर "घातक" हुआ । इसी शब्दका अर्थ यदि इस कोशमें देखो तो तनिकभी सन्देह न रहेगा । हां ऐसे कोशसे छोटे २ विद्यार्थिओंका तो कुछ उपकार होसक्ता है. जिनके लिये इतनाही परिज्ञान पर्याप्त है कि "न" "र" नर (पु०) अर्थ "मनुष्य" ठीक अंग्रेजी आदिके सामान्य कोशोंकी नाईं जैसे ऐम ए ऐन=मैन- "मैन" मैंने "आदमी" निश्चय जानियें. इस प्रकारका शब्दपरिचय सर्वथा भ्रान्तिके साथ मिला रहता है, कदापि छात्रका हृदय कतिपय शब्दपरिज्ञानसे विशद नहीं होसक्ता । इस बड़ी भारी न्यूनताको पूर्ण करनेके उद्देशसे लाला मेहरचन्द्र, लक्ष्मणदास प्रोप्राईटर संस्कृत पुस्तकालय, सैदमिट्ठा बाजारके विशेष अनुरोधसे यह पद्मचन्द्रकोश, जो यद्यपि अंग्रेजी कोशोंकी अपेक्षा बहुत छोटा है, परन्तु कालि-

द्विक० (द्विकर्मक)।
द्विव० (द्विवचनान्त)।
टाप् (आ)।
ङीप् (ई)।
ऊङ् (ऊ)।
अण् (अ)।
फ (आयन्)।
ढ (एय्)।
ख (ईन्)।
छ (ईय्)।
घ (इय)।
ष्यञ्—(य)।
कन्—(क)।
ठन्—(इक)।
यक् / यत् / यन् / ण्य } (य)।
क्त (त)।
क्तवतु (तवत्)।
क्त्वा (त्वा)।
क्तिन् / क्ति } (ति)।
ण्यत् / यत् / क्यप् } (य)।
णमुल् (अम्)।
ठन् / ण्वुल् / ण्वुन् / वुण् / वुन् } (अक)।

ल्यु } —(अन)।
अच् / अण / अप् / क / कञ् / खच् / खश् / खल् / घ / घञ् / ट / टक् / ड-ण-दा } (अ)।
षाकन् (आक)।
इनि / घिनुण् / णिनि } (इन्)।
इष्णुच् / खिष्णुच् } (इष्णु)।
उण / डु } (उ)।
उकञ् (उक)।
नङ् / नन् } (न)।
क्विप् / क्विन् / ण्वि } (यह साराही उड़ जाता है और धातु हलन्तही रहता है)।
क्वनिप् (वन्)।
क्वरप् (वर)।





स्वर्गीय श्री मन्महाराजा पद्म चन्द्र जी साहिब बहादुर वालिए रियासत
जुब्बल (शिमला) जिनकी स्मृति में यह कोश निर्मित हुआ।





[illegible]



पद्मचन्द्रकोषके रचयिता

श्रीमान् पं० गणेशदत्तजी शास्त्री,

भूतपूर्व प्रोफेसर ओरियंटल कालेज, वर्तमान प्रोफेसर सनातनधर्मकालेज, लाहौर.



वाचस्पत्यम्—(श्रीतारानाथ तर्कवाचस्पतिकृत बृहदभिधानम्) अस्मिन् कोषे वेद, ब्राह्मण, छन्दो, व्याकरण, साहित्य, काव्य, नाटक, चिकित्सा, ज्योतिषादिसकलशास्त्रशब्दानामकारादिक्रमेणार्थव्युत्पत्तयश्च सरलसंस्कृतभाषया व्याख्याता विद्यन्ते. ... ... सजिल्द. कलकत्ता — Rs. A. P. 280-0-0

शब्दार्थचिन्तामणि—यह कोषग्रन्थ बहुतही उत्तम और बृहत् है, इसमें अकारादिक्रमसे शब्द लिखे हैं व पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग लिखनेके उत्तर शब्दोंकी व्युत्पत्ति व सिद्धिके लिये पाणिनि-व्याकरणके सूत्र तथा शब्दोंके अर्थ व उनकेलिये अनेक कोषोंके प्रमाण तथा विशिष्ट शब्दोंमें अनेक ग्रन्थोंसे उदाहरण भी दिये गये हैं, यह ग्रंथ ४ जिल्द व ३१५१ पृष्ठोंमें है ... ... उदयपूर — 25-0-0

उपनिषद्वाक्यकोष—(और भगवद्गीताकोष) A concordance to the Principal Upanishads and Bhagwat Gita. ... ... मुम्बई — 6-0-0

अमरकोष—अमरसिंहविरचितः श्रीमद्भोजिदीक्षितात्मजश्रीभानुजीदीक्षितकृतया व्याख्यासुधया (रामाश्रमीटीकया सहित) पंडित शिवदत्तजीकृत टिप्पणीसहित अतिसुंदरविलायती जिल्द मुम्बई Amara-kos'a with the commentary (Vyākhyāsudhā or Rāmās'rami) of Bhânuji Dikshita, son of Bhattoji Dikshita. ... ... Bombay. — In Press.

शब्दसागर—[संस्कृत इंग्रेजी अभिधान] (अकारादिक्रमेण संस्कृतशब्दानां अर्थो. व्युत्पत्तयश्च इंग्लण्डीयभाषया व्याख्याताः विद्यन्ते) Shabda Sagar-a comprehensive Sanscrit English Lexicon chiefly based on Professors Horance Hayman Wilson's Sanscrit English Dictionary & compiled from various recent authorities for the use of Schools & Colleges by Pandit Jiba Nanda Vidya Sagar B. A. ... ... Calcutta — 10-0-0

अमरकोश नामलिङ्गानुशासनम्—भट्टक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितेनामरकोशोद्घाटनेन सहितः Amarakosha-(Namalinganushasana with the Commentary) Amarakoshodghatana of Kshirasvamin. ... ... Poona — 3-8-0

अमरसार—संस्कृतसे अंग्रेजी वा अंग्रेजीसे संस्कृत कोष जेबी गुटका. ... ... मुम्बई — 0-12-0

सरस्वतीकोश—इसमें कठिन भाषाके शब्दोंका सुगम भाषामें अर्थ किये हैं पं० सीताराममणीत साईंस. ... ... मुरादाबाद — 1-0-0

शब्दार्थभानुकोश—(पं. भानुदत्तजीसंकलित) संस्कृत शब्द उर्दूभाषामें अर्थ. ... मुम्बई — 2-0-0

मङ्गलकोश—मङ्गलीप्रसादकृत इसमें संस्कृत वा भाषाके अकारादि शब्दोंके अर्थ भाषामें दिये हैं. ... ... लखनऊ — 2-0-0

शब्दस्तोममहानिधिः—(संस्कृताभिधानम्) [अकारादिक्रमेण संस्कृतशब्दानामर्थो व्युत्पत्तयश्च सरलसंस्कृतभाषया व्याख्याता विद्यन्ते] पं. तारानाथसङ्कलितः साईस. ... ... कलकत्ता — 11-4-0

अंग्रेजी और संस्कृत डिक्शनरी—(अंग्रेजी शब्द संस्कृतमें अर्थ) श्री वामन शिवरामकृत The Practical English Sanscrit Dictionary by Vaman Shivaram Apte M. A. ... ... पूना — 6-0-0

डाला गया है । यह धर्म ग्रंथके समान पढ़ने लायक ग्रन्थ है । मू० ३)

सरल मनोविज्ञान । इसमें मनोविज्ञान जैसे कठिन विषयको बहुत ही सरलतासे सुगम भाषामें अच्छी तरह उदाहरण आदि देकर समझाया है और प्रत्येक अध्यायके अन्तमें एक रोचक प्रश्नावली दी है । मू० १॥)

कालिदास और भवभूति । संस्कृतके दो सुप्रसिद्ध कवियोंके अभिज्ञान शाकुन्तल और उत्तररामचरित इन दो नाटकोंकी गुणदोषविवेचिनी, मर्मस्पर्शिनी और तुलनात्मक समालोचना । यह समालोचना कितनी बढ़िया होगी, यह बतलानेके लिए इतना ही बतला देना काफी होगा कि इसके लेखक सुप्रसिद्ध नाटककार स्व० द्विजेन्द्रलाल राय हैं । मू० १॥)

साहित्य मीमांसा । यह भी एक समालोचना-ग्रन्थ है । इसमें पूर्वके और पश्चिमके साहित्यकी—यूरोपियन और आर्यसाहित्यकी—तुलनात्मक समालोचना की गई है और इस देशके साहित्यको सब तरहसे आदरणीय, उत्कृष्ट और महान् सिद्ध किया है । मू० १=)

राणा प्रतापसिंह । स्वर्गीय द्विजेन्द्रबाबूके सुलभ नाटकका अनुवाद । इसमें महाराणा प्रताप, उनके भाई शक्तसिंह, [illegible] पृथ्वीराज, उनकी स्त्री जोशीबाई, अकबरकी कन्या [illegible] और [illegible] आदि पात्रोंके चरित्र एक अपूर्व और [illegible] ढंगसे चित्रित किये गये हैं । मू० १॥)

[illegible] । इस [illegible] पुस्तकमें सुख, दुःख, स्मृति, [illegible], [illegible], [illegible], आशा, घृणा, प्यार, लज्जा, [illegible] और [illegible] भावोंको बिल्कुल ही नवीन ढंगसे [illegible] किया है । मू० [illegible])

[illegible] । मूल लेखक श्रीयुत पाल रिचर्ड और [illegible] श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर । [illegible] हुई [illegible] जातियोंको बड़ा [illegible] उपदेश दिया है । मू० ॥=)

[illegible] । [illegible] जातियोंने एशियाके अनेक [illegible] जिन भूखण्डों, [illegible] जो अधिकार विस्तार किया है [illegible] जातियोंको अपना गुलाम [illegible] पुस्तकके बाद सहसा [illegible] है । मू० १)

[illegible] । [illegible] एम० ए०, [illegible] पर [illegible] है । यह सबसे बढ़कर ग्रन्थ है । [illegible] अच्छा है । मू० ३॥)

[illegible] । अनु०-पं० [illegible] [illegible] अनुवाद । इसमें १ [illegible], २ [illegible] पद, ३ कुमारसंभव और शकुंतला, ४ शकुंतल[illegible] ६ कादम्बरी चित्र, ७ काव्यकी उपेक्षिता ये सा[illegible] और इनमें उक्त प्राचीन ग्रन्थोंकी अपूर्व और म[illegible] लोचना की गई है । थोड़ेमें बहुत कह डालना [illegible] खास गुण है । मू० ॥-)

समाज । अनु० बाबू बद्रीनाथ वर्मा एम० [illegible] तीर्थ । यह भी रवीन्द्रबाबूकी एक निबन्धावली [illegible] है । इसमें आठ निबन्ध हैं–१ आचारका अत्याच[illegible] [illegible] दयात्रा, ३ विलासकी फाँसी, ४ नकलका [illegible] ५ प्राच्य और प्रतीच्य, ६ अयोग्य भक्ति, ७ पूर्व [illegible] ८ चिट्ठीपत्री । 'प्रभा'के सम्पादक लिखते हैं–[illegible] बाबूकी लेखनीसे जो कुछ निकलता है वह विचार[illegible] चित्ताकर्षक और अद्भुत होता है । .....इस [illegible] पमा विचार पूर्ण उपदेशोंसे भरा है मूल्य ॥=)

अञ्जना । लेखक—श्रीयुत सुदर्शन । ए[illegible] कथाके आधारसे लिखा हुआ मौलिक नाटक [illegible] सिद्धहस्त कहानी लेखक हैं । उनका यह पहल[illegible] है और इसमें भी ये अपनी स्वाभाविक प्रतिभाके [illegible] हुए हैं मूल्य १=)

मुक्तधारा । महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर [illegible] नाटकका अनुवाद । इसमें व्यक्तिगत, सामाजिक, [illegible] और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओंपर एक नये ही ढं[illegible] डाला गया है । प्रारंभमें प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री [illegible] तर्कशिरोमणिकी एक विस्तृत भूमिका है जिस[illegible] अभिप्राय बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है । नाटकपा[illegible] विश्लेषण भी किया गया है । मू० ॥=)

सुहराब रुस्तम । स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल र[illegible] नाटकका अनुवाद । अनुवादक—श्रीमान् मुंशी [illegible] लगभग तीन चतुर्थांश भाग पद्यका है । करुणरस[illegible] नेयोग्य नाटिका है । मू० ॥=)

अरक्षणीया । बंगालके इस समयके सर्वश्रेष्ठ [illegible] चन्द्र चट्टोपाध्यायके सामाजिक उपन्यासका अनु[illegible] ही मार्मिक और हृदयद्रावक है । मू० बारह आने [illegible]

अन्त्योदय और स्वावलम्बन । मू० १=)

युवाओंको उपदेश । अंग्रेजीके सुप्रसिद्ध ग्रं[illegible] [illegible] वर्मन'का हिन्दी अनुवाद मू० ॥-)

आरोग्य-दर्पण । द्विजेन्द्र बाबूका सामाजिक नाट[illegible]

कोलम्बस । अमेरिकाका पता लगानेवाले [illegible] जीवनचरित मू० ॥)

साम्राज्य-कल्पद्रुम । इस पुस्तकमें देशी [illegible] और रजवाड़ोंकी सामग्रियाँ देकर मनचाही [illegible] [illegible] है । मू० १)

पद्मचन्द्रकोश।

ॐ चिदात्मने नमः।

अ

अ, (पु०) अव्-ड। विष्णु। न होना। संस्कृत वर्णमालाका पहिला अक्षर, अभाव.

अ, (अव्य०) अव्-प्रगम करना आदि+ड-स्वरोंके आदिमें पाठ होनेसे अव्यय है। अभाव (न होना)। प्रतिषेध (रोकना)। स्वल्प (थोडासा)। सम्बोधन। अधिक्षेप (तिरस्कार करना)। निषेधार्थक "नञ्" का प्रतिनिधि है। स्वरोंके पहिले अन् और व्यञ्जनोंके पहिले "अ" ही रहता है। "न" के ६ अर्थ होते हैं-सादृश्य (मिलता-जुलता) जैसे "अब्राह्मण" ब्राह्मण (यज्ञोपवीत आदि होनेसे) के समान-क्षत्रियादि। अभाव (न होना) जैसे "अज्ञानम्" ज्ञानका न होना। मूलभेद (फरक)-"अपटः" कपडा नहीं, कोई और वस्तु। अल्पता (थोडापा)-छोटापन जैसे-"अनुदरा" पतली वा छोटी कमरवाली। विरोध (विरुद्ध वा खिलाफ) जैसे "अनीति" (नीति वा न्यायके विरुद्ध)। लट् लङ् और लृङ् लकारोंके पहिले भी लगाया जाता है.

अऋणिन्, (त्रि०) नास्ति ऋणं यस्य। ऋणरहित। जिसने किसीका ऋण-कर्जा नहिं देना। बेकर्ज। "ऋ" को व्यञ्जन मान लेनेसे ऋणके पहिले "अन्" नहीं हुआ। इसी अर्थमें "अनृणी" भी होता है.

अंश, (पु०) अंश्+आमेडच्। विभाग। राशीका तीसवां हिस्सा.

अंशक, (त्रि०) अंश+ण्वुल् (अक)। विभाजक (बांटनेहारा)। स्त्रियाम्-अंशिका। दायाद (शरीक-हिस्सेदार) (पु०) अंश+स्वार्थे कन्। अंश, हिस्सा, टुकडा। मेष आदि राशिका तीसवां भाग। "द्विभर्तृका मेषनवांशके स्यात्".

अंशयितृ, (पु०) अंश्+तृच्। अंशयति। बांटनेहारा भागी.

अंशल, (त्रि०) अंश+लच्। बलवान्.

अंशहर, (त्रि०) अंशं हरति-हृ+अच्। अंशहारक। हिस्सा लेनेहारा। "अंशहरोऽर्धहरो वा पुत्रवित्तार्जनात् पितुः" इति स्मृतिः.

अंशावतरण, (न०) ६ त०। अंशस्य अवतरणम्। देवताओंके अपने २ भागसे मिलकर वसुदेव आदि रूपसे पृथिवीपर प्रकट हुआ नरदेह भगवानका अवतार.

अंशिन्, (त्रि०) अंश्+णिन्। भाग करनेहारा। शरीक.

अंशु, (पु०) अंश्+कु। प्रभा। किरण। वेग.

अंशुक, (न०) अंशु+क। वस्त्र-महीन कपडा.

अंशुधर, (पु०) अंशु+धृ+अच् ६ त०। सूर्य। वेगवान्.

अंशुपति, (पु०) अंशु-पति ६ त०। सूर्य.

अंशुमत्फला, (स्त्री०) अंशुमत्-फलं यस्याः ६ त०। केलेका वृक्ष.

अंशुमाला, (स्त्री०) अंशु+माला ६ त०। किरणोंका समूह.

अंशुमालिन्, (पु०) अंशु+माला+इनि। सूर्य.

अंस, (पु०) अम्+स। कंधा। हिस्सा.

अंसकूट, (पु०) अंस+कूट ६ त०। बैलका भंग-डूह.

अंहस, (न०) अह्+असि। पाप.

अंह्रि, (पु०) अह्+क्रि। पाओं। वृक्षका मूल.

अंह्रिप, (पु०) अंह्रिणा (मूलेन) पिबति सिक्ततोयम्। अंह्रि+पा+क। सींचे गये जलको जडसे पीताहै। वृक्ष.

अक्, भ्वा० प० गतौ (अकति)। जाना। सांपकी भांति सरकना.

अक, (त्रि०) सरकनेहारा.

अकम्, (न०) न कं-सुखम्। सुखका न होना। दुःख। (जैसा कि "नाक" न अकं दुःखं यत्र) जहां दुःख न हो.

अकच, (त्रि०) न० ब०। गंजा। -चः। केतु ग्रहका नाम है। जो धडके स्वरूपमें है.

अकथित, (त्रि०) न० ब०। न कहा गया। गौण कर्म.

अकनिष्ठ, (त्रि०) न० ब०। न छोटा अर्थात् बडा वा मध्यम-ष्ठः-(पु०) बहुवचन (अके-पेट्निम्दाकरे पापे निष्ठा यस्य सः)। बुद्धगौतमका एक नाम है.

अकनिष्ठप, (पु०) (अकनिष्ठान् बुद्धान् पाति-पा-क) बुद्धका नाम। बुद्धदेव.

अकन्या, (स्त्री०) न० त०। जो कुमारी नहीं। जवान औरत.

अकम्पन, (त्रि०) न० त०। न कांपना। -नः। एक राक्षसका नाम.

अकम्पित, (त्रि०) न० त०। जो कांपता नहीं। स्थिर। -तः (पु०) जैनका नाम। बुद्धमन्त। अन्तिम तीर्थंकरका एक शिष्य.

अकल्पित, (त्रि०) न० ब०। न कहा गया। गौण कर्म.

अकरणि, (स्त्री०) । न+कृ+अनि । शाप । समाप्त न होना। किसी कामसे हार हो जाना । निरुत्साह होना.

अकरा, (स्त्री०) न+कृ+अच् । आवलेका वृक्ष, बिनहाथ.

अकरुण, (त्रि०) नास्ति करुणा यस्य यत्र वा । जिसे वा जहां दया नहीं । दयारहित । निर्दय.

अकर्कश, (त्रि०) न कर्कशः न० त० । कोमल.

अकर्ण, (त्रि०) न+कर्णः । बहु० बिनकान । बहिरा । डोरा.

अकर्तन, (त्रि०) (कृत+युच्) न० त० । उच्चस्थं फलं न कर्तितुं शीलं अस्य । जो ऊंचे फलको ले नहीं सक्ता । छोटे । ठेंगना । बौना । वामन । कृत् भावे ल्युट् । न० ब० । काटनेहारा.

अकर्तृ, (पु०) न० त० । जो करनेहारा (कर्ता) नहीं । "पुरुषोऽकर्ता भोक्ता" सांख्य.

अकर्मक, (त्रि०) (नास्ति कर्म यस्य-ब० कप्) । फलव्यापारयोरेकनिष्ठत्वात् । जिसे (क्रिया) का फल (नतीजा) और व्यापार (हरकत-क्रिया) एकही (व्यक्ति)में रहे उसे अकर्मक क्रिया (Intransitive) कहतेहैं.

अकर्मण्य, (त्रि०) कर्मन्+य+न०त० । काम न करनेहारा.

अकर्मन्, (त्रि०) न+कर्मन् बहु० । जो काम न करसके.

अकल, (पु०) नास्ति कला (अवयवः) अस्य । अंगरहित परमात्मा । (त्रि०) अवयव(अंश)रहित.

अकल्कन, (त्रि०) कल्कनं दम्भः न० ब० । दम्भरहित । जो पाखंडी नहीं । जिसका [illegible] नहीं हुआ । जो [illegible] नहीं.

अकल्का, (स्त्री०) न+कल्का बहु० चाँदनी । [illegible]

अकल्प, (त्रि०) न० ब० । अशक्त । जो कल्प (समर्थ) नहीं [illegible] । अशक्त । निर्बल (कमजोर).

अकल्पित, (त्रि०) न० त० । जो कल्पित (बनावटी) नहीं । स्वाभाविक (कुदरती) । स्वाभाविक.

अकल्य, (त्रि०) [illegible] न० त० । रोगी.

अकल्याण, (त्रि०) न० त० । मङ्गलरहित । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । दुर्भाग्य । दुःख.

अकवच, (त्रि०) (न कवचं यस्य-) [illegible] न० त० । जिसका कवच नहीं [illegible]

अकवि, (पु०) [illegible] न० त० [illegible]

अकवीर, (पु०) न० त० । [illegible] । जो [illegible] नहीं । [illegible]

अकस्मात्, (अव्यय) एकवारगी । अचानक.

अकाण्ड, (पु०) न+काण्ड न० त० । अवसरविना । बाणविना.

अकाम, (पु०) कम्+घञ् न० त० । इच्छाविन.

अकाय, (पु०) न+काय ब० । देहविना-राहु.

अकार, (त्रि०) (करोतीति कारः-कृ+घञ्-अण्वा न० त० । जो कुछभी काम नहीं करता । क्रियारहित । –रः (पु०) "अ" अक्षर (वर्णमालाका पहिला) । "अक्षराणामकारोऽस्मि" (भ० गी० १०-३३).

अकारण, (न०) न+कारण न० त० । हेतुविना । निष्प्रयोजन । प्रयोजनविन.

अकार्पण्य, (त्रि०) न० ब० । नास्ति कार्पण्यं (दैन्यं) यस्मिन् । जो दीनता (आजिजी)के विना मिलसो । "अकार्पण्यमदैन्यम्."

अकार्य, (न०) कृ+ण्यत् न० त० । जूआ चोरी आदि बुरा काम । ब० बिनकाम.

अकाल, (पु०) न+काल न० त० । बुरा समय । मनादि न करनेका समय.

अकालजलदोदय, (पु०) अकाले जलदानां उदयः । तत्पु० । समयविन बादलोंका होना.

अकिञ्चन, (त्रि०) न+किञ्चन ब० । निर्धन गरीब.

अकिञ्चिज्ज्ञ, (त्रि०) न+किञ्चित्+ज्ञा+क । थोडा भी न जाननेहारा-मूर्ख.

अकिञ्चित्कर, (त्रि०) न+किञ्चित्+कृ+अच् । काम न करनेहारा.

अकीर्ति, (स्त्री०) न० ब० अप्रशस्ता कीर्तिः । अकीर्तिम न होना । अयश । बुरी ख्याति.

अकुण्ठ, (त्रि०) न+कुण्ठ ब० । न रुकनेहारा । काममें चतुर.

अकुतोभय, (त्रि०) न+कुत+भयं. न० त० । न डरनेहारा.

अकुप्य, (न०) गुप्+क्यप् यस्य गः न० त० । सोना-चांदी.

अकुल, (त्रि०) (अप्रशस्तं कुलं यस्य । जिसका कुल (वं-श) अच्छा नहीं । नाखांदा । कुलहीन.

अकुशल, (त्रि०) न० ब० । न कुशल । जो कुशल नहीं । दुःख । जो चतुर नहीं । अभद्र । बुरा । [illegible]

अकूट, (त्रि०) न० ब० । जो टग नहीं । [illegible] । [illegible]

अकूर्च, (त्रि०) नास्ति कूर्च-श्मश्रु यस्य । जिसकी दाढी न हो । [illegible].

अकूपार, (पु०) न+कूप+ऋ+अण । समुद्र [illegible].

अकृच्छ्र, (त्रि०) न० ब० । दुःखरहित । सुखी ।–छ्रम्, (न०) कष्ट न होना । आराम । सुख.

अकृत, (त्रि०) (कृ+क्त-कर्मणि) न० ब० । न कियागया । न सिद्ध हुआ । न बनायागया.

अकृतिन्, (त्रि०) न० ब० । जो निपुण (चतुर) नहो । जो कुछभी कर नहीं सक्ता । कामकाजमें असमर्थ.

अकृतार्थ, (त्रि०) (अ+कृत+अर्थ) । न० ब० । न बनाया गया । जिसका कुछभी मतलब नहीं हुआ.

अकृत्य, (न०) कृ+क्यप् न० त० । चोरी आदि बुरा काम । बिनकाम.

अकृष्टपच्य, (त्रि०) (पच्+यत्-न०)न० त० । कर्षणे क्षेत्रे स्वयं पच्यते । न हल चलाये हुए खेतमें पकता है । खेती-आदिके बिना अपनेआप पकेहुए धान (चावल) आदि.

अकृष्णकर्मन्, (त्रि०) अकृष्णं-शुद्धं कर्म यस्य । जिसका काम शुद्ध हो । सदाचारी । पुण्यात्मा.

अकौशल, (न०) कुशलस्य भाव कुशल+अण् न० त० । बिनचतुराई.

अक्का, (स्त्री०) अक्+कन् । माता.

अक्त, (त्रि०) अञ्ज्+क्त । चुपड़ाहुआ । पिराहुआ । फैलाहुआ.

अक्रम, (त्रि०) न+क्रमः ब० । जिसका नियम न हो । पाद-भ्रष्ट.

अक्रूर, (पु०) न+क्रूरः न० त० । यदुकुलका राजा दयालु (त्रि०).

अक्रोध, (पु०) क्रुध्+घञ् न० त० । क्रोधका न होना । क्रोधशून्य (त्रि०).

अक्ष, (न०) अक्ष+अच् । इन्द्रिय । सोलह माशे तोल । पासा । पहिया । रावणका एक पुत्र । व्यवहार.

अक्षत, (त्रि०) क्षण+क्त न० त० । न टूटाहुआ (न०) नपुंसक । चावल-ता-(स्त्री०) अक्षतयोनिस्त्री.

अक्षदर्शक, (पु०) अक्ष+दृश्+ण्वुल् । मुन्सिफ । जुआरिआ.

अक्षदेविन्, (त्रि०) अक्ष+दिव्+णिनि । जुआरिआ.

अक्षधुरा, (स्त्री०) अक्ष+ (चक्र) धुर+(अम) ६ त० । प-हियेके आगेका भाग.

अक्षपाद, (पु०) अक्ष+(चक्षुः) पाद ब० । गौतममुनि । ६ त० । चमार.

अक्षम, (त्रि०) क्षम्+अच् न० त० । सामर्थ्यहीन । क्षमारहित.

अक्षमा, (स्त्री०) क्षम्+अङ् न० त० । न सहारना । ईर्षाकरना.

अक्षमाला, (स्त्री०) अक्ष+माला ६ त० । जपमाला.

अक्षय, (पु० न०) क्षि+अच् । न० त० जिसका नाश न हो.

अक्षया, (स्त्री०) (नास्ति क्षय. दानादेः यस्यां तिथौ) बहु० । जिस तिथिमें दानका क्षय नहीं होता । बहुत पुण्य बढानेहारी तिथि । सोमवती अमावास्या । रविवारकी सप्तमी । बुधवारकी चतुर्थी । वैशाखके शुक्लपक्षकी तृतीया.

अक्षय्य, (न०) न क्षेतुं शक्यम् । क्षि+यत्-नि० न० त० । जो क्षय नहीं होसक्ता । श्राद्धकी समाप्तिमें देने योग्य घृत (घी) मधु (शहद) युक्त जल । अक्षयधर्म.

अक्षर, (पु०) क्षर+अच् न० त० । अकारादिवर्ण । नाश-शून्य-ब्रह्म.

अक्षरचण, (न०) अक्षर+चण । लेखक, लिखनेहारा.

अक्षरशः, (क्रि०वि०) अक्षरं अक्षरं इति वीप्सायां शस् । एक एक अक्षर । अक्षरोंके अनुसार.

अक्षरजीवक, (त्रि०) अक्षरेण जीवति । अक्षर+जीव+ण्वुल् । अक्षर लिखकर जीनेहारा लेखक.

अक्षरजीविन्, (त्रि०) अक्षरेण लिप्यादिकर्मणा जीव-तीति । अक्षर+जीव+णिनि-(इन्) । अक्षरोंको लिख-कर जीविका करनेहारा

अक्षरसंस्थान, (न०) अक्षराणां संस्थानम् ६ त० । अक्ष-रोंका टिकाना । अक्षरोंकी रचना करना । बहु० लिपि । अक्षरावली.

अक्षारी, (स्त्री०) अश्नुते गगनाभोगं मेघैः । अश+सरन्+ङीप् बादलोंद्वारा आकाशमें व्याप्त होतीहै । वर्षाऋतु । मौसिम । बरसात.

अक्षवती, (स्त्री०) अक्षाः-पाशका विद्यन्ते अत्र । जहां खेलनेके पासे पड़े हों । अक्ष+मतुप् (मत्) वत्वम् । अक्षक्रीडा । पासोंका खेल.

अक्षवित्, (त्रि०) अक्षं-पाशक्रीडां वेत्ति । पासोंसे खेल-को जानेहारा । अक्ष+विद्+क्विप् । जूएको जानेवाला । जु-आरिआ.

अक्षशौण्ड, (पु०) अक्ष+शौण्ड ७ त० । पक्का जुआरिआ.

अक्षसूत्र, (न०) अक्षस्य-जपमालायाः सूत्रम् । ६ त० जप-मालाका सूत । जनेऊ

अक्षान्ति, (स्त्री०) न० त० । न सहारना । क्षमा न करना । ईर्षा करना । क्रोध करना । बेसबर होना.

अक्षार, (त्रि०) नास्ति क्षारं यत्र । जहां खार न हो । जो कृत्रिम (बनावटी) लून नहीं.

अक्षि, (न०) अक्ष+क्सि । नेत्र । आंख.

अक्षिगत, (त्रि०) अक्षिविषयं गत. त० । विरोधी । शत्रु.

अक्षित, (त्रि०) न० त० । क्षि+क्त । न क्षय होनेवाला । अविनाशी । नित्य रहनेहारा । एकरस रहनेहारा.

अक्षितरम्, अक्षीव तरति- न० त० । तृ+अच् । आंखके समान तैरताहै । जल निर्मल होनेसे नेत्रके समान जान पड़ताहै.

अक्षिव, (पु०) अक्षि वाति-प्रीणाति अञ्जनेन । (वा+क) । अञ्जनद्वारा जो आंखको निर्मल करता है । सुहांजनेका वृक्ष । –वम्-समुद्रका लोन.

[illegible]. (पु०) [illegible] जो [illegible] न हो.

[illegible], (त्रि०) न० त० । [illegible] । न [illegible] हुआ । न [illegible] । [illegible].

[illegible]. (त्रि०) न० त० । जो छेद ([illegible]) नहीं । [illegible].

[illegible], (त्रि०) न० त० । [illegible] न होना । न [illegible] हुआ [illegible].

[illegible]. (पु०) [illegible] । [illegible].

[illegible]. (पु०) [illegible] न० त० । [illegible] ध्यान.

[illegible]. (स्त्री०) [illegible] । [illegible] ११८० [illegible], ११८० [illegible], ११११० [illegible], [illegible] [illegible]

[illegible]. (त्रि०) [illegible] न० त० । [illegible] । जिसका [illegible]

[illegible]

अगरी, (स्त्री०) नास्ति गरः (विषं) यस्याः । ब० त्री० । जिसमें विष (जहर) नहीं होता । घूने (घुं) से जिसको घुण करनेहारा देवताड़का वृक्ष । जिससे [illegible] देनेहारा कोईभी द्रव्य (पदार्थ).

अगस्ति, (पु०) अग+अस्+ति । अगस्त्य नाम मुनि.

अगस्ती, (स्त्री०) दक्षिणदिशा.

अगस्त्य, (पु०) अग+स्त्यै+क । अगस्त्य नाम मुनि.

अगाध, (त्रि०) [illegible] न० ब० । बहुत गहिरा-[illegible]

अगार, (न०) अगं न गच्छन्तं [illegible] [illegible] । न जाते हुयेको मिलनाई । गृह । घर.

अगिरः, (पु०) न गीर्यते दु.खेन । गृ+[illegible] न० जो दु:खसे नहीं निगला जाता । स्वर्ग । [illegible].

अगिरौकसः, (त्रि०) अगिरः (स्वर्गः) ओकः (स्थानं) यस्य । जिसके निवासका स्थान स्वर्ग है । स्वर्गमें [illegible] देवता

अगु, (त्रि०) नास्ति गौः यस्य । Vedic गौ वा किरण निर्धन । गरीब । अगुः (पु०) राहुका नाम । भोरा [illegible].

अगुण, (त्रि०) नास्ति गुणः यस्य । गुणरहित । [illegible] जिसके अच्छे गुण नहीं । निकम्मा.

अगुरु, (न०) अगुरुचन्दन । [illegible] । उरवेसकाष्ठ (f [illegible]

अगूढ, (त्रि० न०) गुह्+क्त । न छिपाहुआ.

अगृभीत, (त्रि०) न गृभीतः (गृहीतः) । न० Vedic । न पकड़ा गया । न जीता गया

अगृह, (पु०) न० ब० । नास्ति गृहं यस्य । [illegible] कोई घर नहीं । घरके बिना घूमनेहारा । यति । [illegible]

अगोचर, (त्रि०) न० ब० । इन्द्रियातीत । जो [illegible] नहीं जानपना । अतीन्द्रिय [illegible] जो इन्द्रियोंसे ग्रहण न हो सके । [illegible].

[illegible], (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

अग्नि, (पु०) [illegible]

अग्नि[illegible], (पु०) [illegible]

[illegible]

ग्निजिह्वा, (स्त्री०) अग्नेः जिह्वा इव शिखा यस्याः । बहु० । अग्निकी जीभकी भांति जिसकी शिखा हो । ६त० आगकी जीभ । आगकी शिखा (लाट) । अग्निः जिह्वा येषाम् (ब०) जिनकी जीभ अग्नि है । देवता.

ग्निदेवता, (स्त्री०) अग्निः देवता यस्याः । जिसकी देवता अग्नि है । कृत्तिका नाम नक्षत्र (तारा) । इसकी देवता अग्नि है.

ग्निनिर्यास, (पु०) अग्निवत् उद्दीपकः निर्यासः (निष्यन्दः) यस्य । बहु० । जिसकी गोंद अग्निके समान उद्दीपक (भूखको चमकानेहारी) है । उपचारसे (उसे उपजा) अग्निजारवृक्ष । स्वर्ण । (न०).

ग्निप्रस्तर, (पु०) अग्नि+स्तॄ+अप् । आगको उठानेवाला पत्थर । चकमकी.

ग्निवाहु, (पु०) धूम.

ग्निभ, (न०) भा+क । स्वर्ण-आगकी तरह चमकनेहारा.

ग्निभू, (पु०) अग्नेः भवति-भू क्विप् । अग्निसे होताहै । (कार्तिकेय) देवताओंका सेनानी । स्वर्ण (सोना) (न०) कोईभी अग्निसे उपजाहो (त्रि०)

ग्निमणि, (पु०) अग्नेः उत्पादकः मणिः । अग्निको निकालनेहारा मणि । अग्निका साधन आतशी शीशा (कांच) । सूर्यकान्तमणि.

ग्निमन्थ, (पु०) अग्नये मथ्यते असौ । मन्थ+अच । अग्निके लिये मंथन किया जाताहै । गनियारी वा गनियारी नामसे प्रसिद्ध वृक्ष । इसकी लकडिओंको रगड़नेपर झट आग भड़क उठती है.

ग्निमारुती, (पु०) अग्निमारुत+इञ् । अगस्त्यमुनि.

ग्निमुख, (पु०) देवता । ब्राह्मण.

ग्निमुखी, (स्त्री०) अग्निः [illegible] मुखं (अग्रं) अस्याः । ङीप् । जिसका मुख अग्निके समान है । भेला । भल्लातक वृक्ष । बहेड़ा । पाकशाला । रसोईखाना । गायत्रीमन्त्र

ग्निरक्षण, (न०) अग्निः रक्ष्यते अनेन । रक्ष+ल्युट् (अन) । राक्षस आदिसे अग्निकी रक्षा करनेका एक मन्त्र । अग्निहोत्र.

ग्निष्टोम, (पु०) स्तु+ मन् कर्मन् । यज्ञविशेष.

ग्निष्वात्त, (पु०) ब० ब० । अग्निः--श्राद्धीयविप्रसम्प्रदानकाः शुभु आत्तं (ग्रहणं) येषां ते । श्राद्धके उपयोगी ब्राह्मणके स्वरूपी अग्निने ग्रहण करते है । पितृगण । मरीचिके वंशमें हुए पितर । मनुष्यजन्ममें अग्निहोत्र आदि यज्ञ न करके स्वधर्मनिष्ठ होकर मरकर पितर होते हैं । देवता और मनुष्योंके पितर । पितरोंके पुत्रगण.

ग्निसात्, (अव्य०) अग्नि+सातिच् । अग्निके अधीन होजाना । क्षार होजाना । जलजाना.

अग्निहित, (पु०) विन्धु+क्विप् । अग्निहोत्री.

अग्निहोत्रम्, (न०) अग्नये हूयते अत्र । हु+त्र । च० त० । मन्त्रके साथ अग्नि स्थापन करके किया गया होम । अग्निहोत्रका सम्बन्धी होनेसे अग्नि.

अग्निहोत्रिन्, (त्रि०) अग्निहोत्रं अस्ति अस्य । अग्निहोत्र+इनि । अग्निको स्थापन करके सायंप्रातः होम करनेहारा सात्विक.

अग्नीध्र, (पु०) अग्नि+इन्धु+रक् । पुरोहितविशेष ब्रह्मा अग्नि+धृ+क । आगका काम होमादि.

अग्नीषोमीय, (त्रि०) अग्नीषोमौ देवते यस्य+ छ (ईय) । अग्नि और सोम देवताओंके निमित्त याग.

अग्न्याहित, (पु०) अग्नि+आ+धा+क वा परनिपातः । अग्निहोत्री.

अग्न्युत्पात, (पु०) उत्+पत्+घञ् ३ त० । धूमकेतु । आकाशसे आग आदिका नीचे गिरना.

अग्न्युपस्थान, (त्रि०) अग्नि. उपस्थीयतेऽनेन, अग्नि+उप+स्था+ल्युट् (अन) ६ त० । अग्निको निकटलानेका मन्त्र.

अग्र, (न०) अङ्ग+रन् नलोपः । ऊपरका भाग । शिखभाग । सहारा । पूर्वभाग । समूह । १६ मासका मान । प्रधान । अधिक । प्रथम (त्रि०).

अग्रकाय, (अर्धो०) अग्रः कायः । देहका पूर्वभाग.

अग्रग, (त्रि०) अग्रे गच्छतीति, अग्र+गम्+ [illegible] ७ त० । आगे जानेहारा.

अग्रगण्य, (त्रि०) अग्रे गण्यते, अग्र+गण्+यत् ७ त० । आगे गिनागया, प्रधान.

अग्रगामिन्, (त्रि०) अग्रे गच्छतीति, अग्र+गम्+णिनि ७ त० । आगे जानेहारा

अग्रजङ्घा, (स्त्री०) अग्रा जङ्घा । जंघका अगला भाग.

अग्रजन्मन्, (पु०) अग्रे जन्म यस्य, अग्र+जन्+मनिन् व्यधि०बहु० । बड़ाभाई । ब्राह्मण । पहिले उत्पन्न हुए (त्रि०).

अग्रजाति, (पु०) अग्रा श्रेष्ठा जातिरस्य, अग्र+जन्+क्तिन् (ति) ब्राह्मण.

अग्रजिह्वा, (स्त्री०) अग्रा जिह्वा । जीभकी नोक.

अग्रणी, (त्रि०) अग्रे नीयतेऽसौ, अग्र+नी+क्विप् कर्म । स्वामी, श्रेष्ठ.

अग्रतस्, (अव्य०) अग्र+तसिल् । पूर्वभाग । आगे । [illegible]

अग्रतःसर, (त्रि०) अग्रतः सरति, अग्रतस्+सृ+ट ७ त० । अगुआ, आगे जानेहारा.

अग्रदानिन्, (पु०) अग्रे दानं यस्य, अग्र+दान+इनि । प्रेतके निमित्त दान लेनेहारा ब्राह्मण.

अग्रनख, (अव्य०) [illegible] । नख ([illegible]) [illegible]

अग्रनासिका, ([illegible] [illegible] । [illegible].

अग्रवर्ती, (स्त्री०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] ([illegible]).

[illegible], (पु०) [illegible] पहिले निकल [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (न०) [illegible], ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible], (न०) [illegible]

[illegible], (न०) [illegible] (त्रि०).

[illegible], (स्त्री०) [illegible] ([illegible]).

[illegible], (स्त्री०) [illegible]

[illegible]

अग्राता, (स्त्री०) । न महांतं अर्हति । न-मह+[illegible]। एक प्रकारकी मृत्तिका (मही) जो शुभ कर्ममें आ नहीं सके

अग्रिम, (पु०) अग्रे भवः, अग्र+डिमच् (बड़ा भाई)। श्रेष्ठ, उत्तम (त्रि०).

अग्रिय, (पु०) अग्र+घ । बड़ा भाई । श्रेष्ठ । उत्तम (त्रि०)

अग्रीय, (पु०) अग्र+छ बड़ा भाई । श्रेष्ठ उत्तम (त्रि०)

अग्रेग्, (त्रि०) अग्रे गच्छति । अग्रे+गम्+ड+अलुक् स० । आगे जानेहारा सेवक.

अग्रेदिधिषु, (पु०) अग्रे+दिधि+षो+कु कर्म, अलुक्स० । विधवाके साथ विवाह करनेहारा । बड़ी कन्याके विवाह प्रथम यदि छोटी विवाह दीजाय तो उसे "अग्रेदिधिषु कहेंगे".

अग्रेसरः, (पु०), अग्रे सिरता पारि-अलुक् । आगे रहा बनाता है । पहिले चलनेहारा.

अग्रेसू, (त्रि०) अग्रे सूयते (सू+क्विप्) जिसे पहिले पैदा [illegible] जाता है.

अग्र्य, (पु०) अग्रे भवः, अग्र+यत् । बड़ा भाई । प्रधान । श्रेष्ठ (त्रि०).

अघ अंघ, (न०) पुण्य अनुष्ठि (पाप) करना । पाप करना

अघ, (त्रि०) [illegible] । बुरा । पाप करनेहारा । [illegible] । बुरा । [illegible]

अघ, (न०) [illegible] । पाप । व्यसन । दुःख.

[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible] आनेसे [illegible] है । [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]

अघमर्षण, (त्रि०) अघ (पाप) मृष्यतेऽनेन, अघ+मृष्+ल्युट् । न० । [illegible] पापोंके दूर करनेके [illegible] [illegible]

अघायु, (त्रि०) [illegible] । [illegible] [illegible]

अघासुर, (पु०) [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अङ्क, (पु०) अङ्क+घञ् । नाटकका एक भाग । पर्वत । चिन्ह । रेखा । पुरुषका भूषण । समीप । गोद (अस्त्री०).

अङ्कन, (त्रि०) अङ्क+ल्युट् । चिन्ह चिन्हकरनेका साधन मोहर.

अङ्कपालि-ली, (स्त्री०) अङ्क+पा आलि ६ त० वा ङीप् । गोदका लेना, अङ्केन पालयति. अङ्क+पालि+इ । उपमाता-(धाया) अङ्कस्य पालिरिव त० । आलिङ्गन-गले मिलना.

अङ्कपालिका, (स्त्री०) अङ्कपालि+क-दाई । वेदी । गोदके पास लेके मिलना.

अङ्कलोप, (पु०) अङ्कानां लोपः । संख्याका व्यवकलन (घटाना)

अङ्कविद्या, (स्त्री०) अङ्कानां विद्या । अङ्कोंकी विद्या । गणितशास्त्र.

अङ्कस्, (न०) अन्च्+असुन् कुत्वम् । चिन्ह । शरीर.

अङ्कित, (त्रि०) अङ्क+क्त । चिह्नकियागया । चिह्नकियागया । गिनागया.

अङ्कुर, (अस्त्री०) अङ्क्+उरच् । बीजसे जो नया उत्पन्न हो । मट्टीको जो फाड कर निकले तिनका । पुत्र । जल । शीघ्र उत्पन्न होनेकी समानतासे लोहू-लोम.

अङ्कुरक, (पु०) अङ्कुर+कुरच् ततः कः । जिसको बडे यत्नसे रक्षा कियाजाय । पक्षी आदिका वासस्थान । घुरा.

अङ्कुरित, (त्रि०) अङ्कुर अस्य सञ्जाताः । तारका० इतच् । जिसके अङ्कुर (फूनगी) निकल आयेहों.

अङ्कुश, (अस्त्री०) अङ्क+उशच् । हाथीको चलानेके लिये आगेसे टेढा लोहेका एक प्रकारका अस्त्र-अङ्कुस.

अङ्कुशग्रह, (पु०) अङ्कुशं गृह्णाति । अङ्कुश (अङ्कस) को पकडता है । हाथीको चलानेहारा महावत.

अङ्कुशदुर्धर, (पु०) दुर्+धारि+खल् हस्व ३ त० । दुर्दान्तहस्ती-जिस हाथीको वशमें लाना कठिन हो । मतवारा हाथी.

अङ्कुशधारिन्, (पु०) अङ्कुशं धारयति । हाथी रखनेवाला.

अङ्कुशमुद्रा, (स्त्री०) अङ्कुशाकारा मुद्रा । अङ्कुशके स्वरूपवाली मोहर.

अङ्कुशित, (त्रि०) अङ्कुश+इतच् । अङ्कुशवाली.

अङ्कोल, ट, ठ, (पु०) अङ्कते लक्ष्यते कीलाकारकण्टैः, अङ्क्+ओट, ट, (ल) आकोडनामी वृक्ष (जिसके फूल पीले और सुगन्धियुक्त, लम्बे लम्बे काटोंवाला । एवं फल जिसके लालरंगके होतेहैं).

अङ्कोलसार, (पु०) अङ्कोलस्य सार. ६ त० । अङ्कोटवृक्षकी विष.

अङ्कोलिका, (स्त्री०) अच्+वल्+अच् सम्प्रसारणे, अङ्कोल+क (यह शब्द अङ्कपालिकाका अपभ्रंश प्रतीत होताहै.) आलिङ्गन करना । गलेमिलना.

अङ्क्य, (पु०) अङ्क+यत् । गोदमें रखकर बजानेका बाजा मृदङ्ग (तबले) आदि.

अङ्ग, चुरा० प० । चिमटना । साथ लग जाना

अङ्ग, (न०) अङ्ग्+अच् । देहावयव । ओर । एकदेश । चिन्ह । उपाय । मन.

अङ्ग, भ्वा० प० (अङ्गति । आङ्गीत्) । जाना । सैर करना.

अङ्ग, (अव्य०) अच्छा । महाभाग । ठीक ठीक सत्यस्वीकार.

अङ्गकर्मन्, (न०) अङ्गस्य (देहस्य) कर्म (संस्कार) सुगन्धिवाले द्रव्योंसे शरीरपर लेप करना । खुशदार पदार्थोंसे शरीरको रगडना

अङ्गग्रह, (पु०) अङ्ग+ग्रह ६ त० । देहकी पीडा.

अङ्गज, (न०) अङ्गात् जायते, अङ्ग+जन्+ड । रुधिर । पुत्र । बेटा-जो कुछ देहसे निकले (त्रि०).

अङ्गण, (न०) अगि-गतौ-अङ्ग्+ल्युट् वा णत्वम् । आङ्गनवेडा.

अङ्गति, (पु०) अनक्ति मालनेन करणेन, अञ्ज+अति कुत्वम् । सवारी । अज्यते पूज्यते कर्मणि+अति । ब्रह्म । अग्नि । अग्निहोत्री.

अङ्गद, (न०) अङ्गं दायति शोधयति दै+क । बाजू-बुहटा, बाहुभूषण, वालीका पुत्र वानर (पु०) अङ्गदान करनेहारा (त्रि०) । दक्षिण दिशाके हाथीकी हथिनी (स्त्री०).

अङ्गना, (स्त्री०) प्रशस्तं अङ्गं अस्ति यस्याः, अङ्ग+न । अच्छे अङ्गोंवाली स्त्री । स्त्रीमात्र । उत्तर दिशाके हाथीकी हथिनी.

अङ्गनाप्रिय, (पु०) प्री+क, अङ्गना+प्रिय ६ त० । अशोकवृक्ष (इसके फूलसे स्त्रीलोग अपने अङ्गोंको भूषित करती हैं) जो कुछ स्त्रियोंको प्रिय हो (त्रि०).

अङ्गनाप्रिय, (पु०) अङ्गनायाः प्रियः । स्त्रीका प्यारा पुरुष.

अङ्गपालिका, (स्त्री०) अङ्गं देहं पालयति, अङ्गपालि+ण्वुल् । दाई नामसे प्रसिद्ध उपमाता । अङ्गपालन करनेहारी.

अङ्गप्रशमनम्, (न०) अङ्गानां प्रशमनम् । शरीरकी व्याधिका शान्त होना.

अङ्गप्रायश्चित्त, (न०) अङ्गस्य शुध्द्यर्थं प्रायश्चित्तम् । शारीरिक शुद्धिके लिये प्रायश्चित्त । (जैसे किसी सम्बन्धीकी मृत्युपर शान्तिक).

अङ्गभूः, (त्रि०) अङ्गात् मनसो वा भवति । भू+क्विप् । शरीर वा मनसे उपजता है । पुत्र । बेटा । कामदेव

अङ्गमन्त्र, (पु०) (अङ्गानां मन्त्रः । एक मन्त्र । अङ्गन्यासका मन्त्र

अङ्गमर्द, (पु०) अङ्गं मर्दयति, अङ्ग+मर्दि+णिच्+अच् ६ त० । शरीर दबानेहारा सेवक । मुठीचापी करनेहारा । अङ्गोंको मलनेहारा (त्रि०).

अचक्र, (त्रि॰) पहिये बिना व्यापाररहित.

अचक्षुस्, (त्रि॰) चक्ष्+उसि ब॰ । अन्धनेत्रशून्य.

अचण्डी, (स्त्री॰) चडि कोपने+अच्+ङीप् न॰ त॰ । वह गौ जिसका स्वभाव शान्त हो । बिनक्रोध (त्रि॰).

अचतुर, (त्रि॰) (अविद्यमानानि चत्वारि यस्य) जिसके चार न हों । न॰ त॰ । न चतुर । जो चतुर (चालाक) नहीं.

अचर, (न॰) न चरति चलति-चर्+अच् न॰ त॰ । ठहरा-हुआ-पृथिवी-पर्वत आदि । " चराणामचराणां ".

अचरम, (त्रि॰) न चरमः (अन्तिमः) । जो अन्तिम (आखिरी) न हो । मध्यम आदि.

अचल, (पु॰) न चलति-चल्+अच् न॰ त॰ । पर्वत घुस-[illegible] कीलक, जो कांपे नहीं । पृथिवी.

अचलम्, (न॰) [illegible].

अचलकन्यका, (स्त्री॰)-सुता-दुहिता-तनया इत्यादि पार्वतीका नाम । हिमालयपर्वतकी कन्या.

अचलज-जात, (त्रि॰) अचलात् जातः ५ त॰ । पर्वतसे उत्पन्न हुए.

अचलत्विष्, (पु॰) [illegible] कोयल-जिसकी [illegible] (त्रि॰).

अचलद्विष्, (पु॰) [illegible] इति, द्विष्+क्विप् । पर्वतोंका [illegible] (जिसने पर्वतोंके पर काटे).

अचलधृतिः, (स्त्री॰) [illegible] जिसके प्रत्येक [illegible] ([illegible])

अचलपति-राट्, (पु॰) पर्वतोंका राजा हिमालय.

अचला, (स्त्री॰) न चलति । पृथिवी । [illegible] । पर्वत.

अचलाग्रगामी, (स्त्री॰) [illegible].

अचापल-ल्य, (त्रि॰) [illegible] चापल्यं यस्य बहु॰ । जो चपल नहीं । स्थिर । [illegible] न॰ त॰ । [illegible] । न [illegible].

अचित्, (त्रि॰) न चेतति । (Ved) न [illegible] । [illegible].

अचित्त, (त्रि॰) Ved न [illegible] । [illegible] । (न॰ त॰) न [illegible] ([illegible]) [illegible] । न इच्छा किया [illegible].

अचित्त, (त्रि॰) ([illegible] यस्य) । जो चित्तसे [illegible] । [illegible] । मूर्ख । [illegible].

अचित्ति, (स्त्री॰) (न [illegible]) । [illegible] । [illegible] । [illegible].

अचित्तित, (त्रि॰) (न॰ [illegible]) । न [illegible] । [illegible].

अचिन्त्य, (न॰) चिन्ति-कर्मणि यत्-न॰ त॰ । [illegible] इयत्तया परिच्छेत्तुं चाशक्यं परब्रह्म । वह वस्तु [illegible] विचार न होसके (त्रि॰) । "अचिन्त्याः खलु ये [illegible] इति स्मृतौ.

अचिर, (न॰) चि+रक् न॰ त॰ । थोड़ा समय । [illegible] काल रहनेहारा द्रव्यमात्र (त्रि॰).

अचिरद्युतिः, (स्त्री॰) अचिरा द्युतिर्यस्याः ब॰ । [illegible] जिसकी चमक थोड़ाकाल रहै (त्रि॰).

अचिरप्रभा, (स्त्री॰) प्र+भा+अङ्, अचिरा प्रभा [illegible] ब॰ । बिजली । थोड़ाकाल रहनेहारी प्रभावाला ([illegible]

अचिरप्रसूता, (स्त्री॰) अचिरं प्र-सू-क्त आ॰ । थोड़े [illegible] (थर्मा) जो जनी हो । गौ आदि.

अचिररोचिस्, (स्त्री॰) अचिरं रोचिर्यस्याः ब॰ । [illegible] थोड़ी देर रहनेहारी प्रभावाला (त्रि॰).

अचिरात्, (अव्य॰) अचिरं अनतीतं [illegible] । शीघ्र ([illegible]

अचिराभा, (स्त्री॰) (अचिरप्रभाकी नाईं) । आ+भा [illegible] बिजुरी.

अचिरांशु, (स्त्री॰) अचिरा अंशवोऽस्याः ब॰ । [illegible] जिसकी किरणें थोड़ी देर रहैं (त्रि॰).

अचिष्णु-ष्णु, (त्रि॰) Ved (अच्-जाना इष्णु [illegible] सब स्थानपर जानेवाला । सर्वव्यापी.

अचेतन, (त्रि॰) चित्+णिच्+युच्-चेतना [illegible] चेतनाहीन चित्+ल्यु न॰ त॰ । बेसमझ । ज्ञानरहि[illegible]

अचेतस्, (त्रि॰) चित्+ असुन् न॰ त॰ । विवर[illegible] चित्त.

अचेतान, (त्रि॰) चित् शानच् न॰ त॰ । Ved [illegible] चेतनताके बिना । अज्ञानी । मूर्ख । मुग्ध । [illegible] हुआ.

अचेष्ट, (त्रि॰) (नास्ति चेष्टा यस्य) जि[illegible] (हरकत) न हो । जड़ । बेहोश.

अचैतन्य, (त्रि॰) चेतनस्य भावः, चेतन+ष्य[illegible] चैतन्यरहित । ज्ञानशून्य न॰ त॰ । ज्ञानभिन्न ([illegible]

अच्छ, (अव्य॰) छो+क, न॰ त॰ । सन्मुख-साम[illegible]

अच्छ, (त्रि॰) न छ्यति दृष्टिं, न+छो क. । [illegible]

अच्छत्र, (पु॰) जिस देशमें राजा नहीं । [illegible]

अच्छन्दस्, (त्रि॰) वेद न पढ़नेहारा । जिसको वे[illegible] अधि नहीं । शूद्र । छन्दहीन.

अच्छभल्ल, (पु॰) रीछ भालू.

अच्छावाक, (पु॰) अच्छं निर्मलं आभिमुख्येन [illegible] वच् अच्छे शब्दको वच् [illegible] [illegible] करनेहारा पुरोहित.

अच्छिद्र, (त्रि०) छिद्+रक् न० । छिद्रशून्य-दोषरहित । वह वैदिककर्म जिसमें अङ्गहानि न होवे । किसी प्रकारकी चूकका न होना.

अच्छिद्रावधारण, (न०) अच्छिद्रतया साङ्गतयावधारणं अव+धारि+ल्युट् । कियेगये वैदिककर्मके विषयमें यह कहना कि यह कर्म अङ्गहीन न होवे

अच्छिन्न, (त्रि०) (न छिद् क्त) । न कटाहुआ । निरन्तर । लगातार । नित्य । बेरोक.

अच्छिन्नपर्ण-पत्र, (पु०) (अच्छिन्नानि सन्तति पर्णानि पत्राणि यस्य) । एक वृक्षका नाम जिसके पत्ते कभी नहीं झड़ते । शाखोटक वृक्ष । एक पक्षी.

अच्छेद्य-अच्छेदिक, (त्रि०) (छेत्तुं नार्हति छिद् ण्यत्) । जो काटा नहीं जासकता.

अच्छोटन, (न०) मृगया । अहेर । शिकार.

अच्छोद, (त्रि०) अच्छं उदकं यस्य, उदकमोदनाथः । निर्मल जलवाला छोटा तालाब । अपने नामसे प्रसिद्ध सरोवर (न०) कादम्बरीमें प्रसिद्ध है.

अच्युत, (पु०) न० त० । स्वस्वरूपान्न च्यवते, न च्युत, च्यवते वा । [illegible] । न गिराहुआ-पक्का विष्णु । नियमसे जो स्थिर रहे । पीपल.

अच्युतज: (पु०) अच्युतात् जायते । पं० त० जैन देवताओंकी एक श्रेणी (जमात) जो विष्णुसे उत्पन्न हुई मानते हैं.

अच्युतस्थल, (न०) अच्युतस्य स्थलम् । विष्णुका स्थान विशेष । पञ्जाबमें एक स्थान.

अच्युताग्रज, (पु०) अच्युतस्य कृष्णस्य अग्रे जायते, अग्र+जन्+ड ६ त० । बलदेव । इन्द्र.

अच्युताङ्गज, (पु०) अच्युतस्य अङ्गात् जायते, अङ्ग+जन्+ड ६ त० । वासुदेव-कृष्ण और रुक्मिणीका पुत्र

अच्युतात्मज, (पु०) आत्मनोऽङ्गात् जायते अङ्+ड ६ त० । कामदेव.

अच्युतावास, (पु०) [illegible] ६ त० । [illegible] (इसमें ईश्वरका विशेष वास है । "अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां" भ० गी०) पीपल । [illegible]

अज, [illegible] ([illegible]) ([illegible]) । [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible]

अज, (पु०) न जायते, जन्+ड न० त० । ब्रह्म विष्णु [illegible]- रचना किया । (अज्) विष्णुसे उत्पन्न हुआ कामदेव । जिसका जन्म न हो (त्रि०) जगत्का कारण [illegible] गुणसाम्य प्रधान.

अजकर्ण, (पु०) अजस्य कर्ण इव कर्णो यस्य ब० । "विट-साल" नामी वृक्ष जिसके पत्ते बकरेके कानके समान लम्बे होतेहैं । सर्जवृक्ष

अजकव-वप, ([illegible]) अजो विष्णु [illegible] [illegible], [illegible] ६ त० । [illegible]

अजकाव, (स्त्री०) [illegible] । जो विष्णु और [illegible] है ([illegible])

अजक्षीर, (न०) [illegible] । [illegible]

अजगव, (पु०) [illegible] ६ त० । विष्णु । अग्नि

अजगन्धा, (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

अजगन्धिका, (स्त्री०) [illegible]

अजगन्धिनी, (स्त्री०) [illegible] ([illegible])

अजगर, (पु०) [illegible] ([illegible])

अजगल्लिका, (स्त्री०) [illegible] ([illegible]).

अजघन्य, (त्रि०) न जघन्य ([illegible]) न० त० । [illegible] न हो । [illegible].

अजजटा, (स्त्री०) [illegible].

अजजीविक, (त्रि०) [illegible]

अजदण्डी, (स्त्री०) [illegible]

अजदन्ती, (स्त्री०) [illegible]

अजनि, ([illegible]) [illegible] ([illegible])

अजमद, ([illegible]) [illegible]

अजमोद, (पु०) [illegible]

अजनि, (पु०) [illegible]

र, (पु॰) अच् अन्ते यस्य ब॰। जिस शब्दके न्तमें स्वर हो। स्वरान्त.

द, (न॰) स्वेदिकहेतुरिति उच्यते; न+अन्+िन् । छणजुमको सूजन करनेहारा देवहन मूनल आदि द्र.

, (पु॰) अक्षरं जनति निन्दार्थे नञ्, जन्+अन् । जो रमन्ति न पढ़ सके। गराव किताबके पढ़नेहारा। पाति रक्षति, अज+पा+क। बकरीपालनेहारा (त्रि॰).

ा, (स्त्री॰) प्रचेतन जनितुं शक्यता अयस्कान्तिरा +अच्। ईंधनकी मन्त्रम नाम। जो आगकी भाग- गके अनेकनेसे निकलतारहता है। (ईंधनकी र आगमनरहनेसे स्थिर होरहा है).

द्–द, (पु॰) अजस्य पाद इव पादोऽस्य। (ग्यारह- होंमें एकका नाम। पूर्वभाद्रपदनामी नक्षत्र गता).

रा, (स्त्री॰) अजस्य शिव। कुछ इस नामसे द बेरका वृक्ष.

न्धुः, (पु॰) अजस्य बन्धुः इव मूर्खः। बकरीके ाईके सदृश मूर्खत्व होनेसे मूर्ख। बेवकूफ.

[illegible] (पु॰) [illegible] (न॰। [illegible]) [illegible] (इसके सब बकरे प्रगल होकर [illegible])

[illegible] (पु॰) [illegible] । [illegible] है। [illegible]

[illegible] (पु॰) [illegible] । [illegible]

[illegible] (त्रि॰) [illegible] (बहु॰)। [illegible] है। (पु॰) [illegible]

[illegible] (स्त्री॰) [illegible] (न॰ [illegible])

[illegible] (पु॰) [illegible] (त्रि॰)

[illegible] (पु॰) [illegible] (स्त्री॰) [illegible]

[illegible] (स्त्री॰) [illegible]

अजरा, (स्त्री॰) जृ+अच्, न॰ त॰। घृतकुमारी नामी वृ[illegible] जराशून्य। बुढापेका न होना। अजरम् (अव्य॰)

अजर्य, (न॰) न जीर्यति, जृ+यत्, न॰ त॰। मित्र[illegible]

अजलोमन्, (पु॰) अजस्य लोमेव लोम (मञ्जरी) [illegible] उसमान (ब॰) शूकशिम्बीनामी वृक्ष (जिसकी म[illegible] बकरीके रोमकी नाई होती है).

अजवस्तिः, (पु॰) अजस्य वस्ति इव वस्तिः यस्य बकरेकी वस्तिके समान वस्तिवाला। एक ऋषि न[illegible] वा उससे उत्पन्न हुआ एक समूह.

अजवीथी, (स्त्री॰) अजेन ब्रह्मणा निर्मिता वीथी प[illegible] त॰। आकाशमें पुच्छकी नाईं यमनाललनामसे प्रसिद्ध। मार्ग (जहांसे लेकर अगस्त्यके स्थानतक पितरों मार्ग है).

अजशृङ्गी, (स्त्री॰) अजस्य मेषस्य शृङ्गमिव फलं अ[illegible] ब॰ मेढाशृङ्गीनामी वृक्ष, जिसके फल मेढेके सींग भांति होते हैं.

अजस्र, (न॰) न+जस्+र। निरंतर टूटनेके बिना। स[illegible] रहनेहारा बहुमात्र.

अजहत्स्वार्था, (स्त्री॰) न जहत् स्वार्थों या, न+हा+शतृ ब॰। अपने अर्थको न छोड़कर दूसरे अर्थको जनानेह[illegible] लक्षणा नामशक्ति। जैसे "गेहो धावति" यहां [illegible] गुणको छोड़ेबिना गेहगुणवालेमें लक्षणा है.

अजहल्लिङ्ग, (पु॰) न जहत् लिङ्गं यं, हा+शतृ ब॰ जिसका लिङ्ग नियत हो। विशेष्यका चाहे और लिङ्ग [illegible] रहे परंतु अपने लिङ्गको न छोड़नेहारा। यह विशेषण [illegible] होता है। यद्यपि और स्थलमें यह नियम है कि विशेष विशेष्यका लिङ्गग्रहण करे परंतु यहां नहीं जैसे "[illegible] श्रुतिर्वा प्रमाणम्"

अजागर, (पु॰) [illegible], न जागर्ति [illegible] ब॰। [illegible] (इसके [illegible] नहीं [illegible]) ([illegible] यह [illegible]) [illegible] "[illegible]" की [illegible] है).

अजाजी, (स्त्री॰) [illegible]

[illegible] (पु॰) [illegible]

[illegible] (त्रि॰) [illegible]

अजातव्यञ्जन, (त्रि०) न जातं व्यञ्जनं (पुरुषचिह्नं) यस्य। जिसकी दाढ़ी नहीं.

अजातशत्रु, (पु०) जातस्य जन्तुमात्रस्य न शत्रुः, असमर्थ-समासः। राजा युधिष्ठिर। जिसका कोई शत्रु उत्पन्न नहीं हुआ। जातिशून्य। जन्मशून्य (त्रि०).

अजाति, (स्त्री०) जन+क्तिन्, न० त०। उत्पन्न न होना

अजादनी, (स्त्री०) अजैरद्यते, अद्+कर्मणि ल्युट्। बकरी-योंसे खानेलायक देनेहारा नियठीनामी वृक्ष.

अजानि, (पु०) नास्ति जाया यस्य ब०। जायाया निङादेशः। स्त्रीरहित.

अजानेय, (पु०) अजेरपि विक्षेपेपि आनेयो यथास्थानं प्रापणीय आरोहो येन, अज्+अच्+आ+नी+कर्मणि यत् ततः ब०। बहुतसे शस्त्रोंकी चोटें खानेपरभी जो न डरता हुआ अपने सवारीको पहुंचनेयोग्य स्थानपर पहुंचावै ऐसा घोड़ा। उत्तम घोड़ा.

अजापयस्, (न०) अजादुग्धादिभ्यः जातम्। बकरीके दूध आदिसे उत्पन्न। एक प्रकारका घी जो औषधिसे बनाया जाता और खांसी अथवा दमा आदिमें प्रयोग किया जाता है.

अजापालक, (त्रि०) अजाम् आपालयति। आ पा णिच्+ण्वुल्। (उप० त०)। बकरियोंको पालने या उनपर जीविका करनेहारा.

अजामि, (त्रि०) न० त०। Ved जो संबन्धी नहीं। जो ठीक नहीं.

अजाविकम्, (न०) (अजाश्च अवयश्च तेषां समाहारः द्वन्द्व)। बकरियें और भेड़ें.

अजाश्वम्, (न०) अजाश्च अश्वाश्च। स० द्वंद्व। बकरे और घोड़े.

अजि, (पु०) अज्+इन्। तेज चलनेहारा (त्रि०)

अजित, (त्रि०) न जितः (न० त०)। न जीता गया शत्रु.

अजिन, (न०) अजति क्षिपति रजआदि, अज्+इनच्। चमड़ा.

अजिनपत्रा-त्रिका, (स्त्री०) अजिनं चर्मेव पक्षिकं पत्रं पक्षो यस्याः ब०। चमचिड़ा या चर्मचिड़ु नामसे प्रसिद्ध पक्षिभेद.

अजिनफला, (स्त्री०) अजिनं (चर्मविकारवत् अग्र) इव फलं यस्याः। देशी नामसे प्रसिद्ध वृक्षके अन्तरका वृक्ष.

अजिनयोनि, (स्त्री०) अजिनस्य चर्मणः योनिः कारणं ६ त०। हरिणमात्र। हरएक किसमका हिरन.

अजिर, (न०) अज्+किरच्। उद्यान नामसे प्रसिद्ध। चौतड़ा वेग.

अजिरशोचिस्, (त्रि०) अजिरं शोचिः (तेजः) यस्य। चमकदार तेज (रोशनी) वाला.

अजिराधिराज, (पु०) Ved वेगवान् राजा। यमराज.

अजिरीय, (त्रि०) (अजिरं छ ईय)। आंगनके संबन्ध। चौतड़ेके साथ मिला हुआ.

अजिह्म, (त्रि०) हा+मन् न० त०। सरल सीधा, जो कुटिल न हो

अजिह्मग, (पु०) अजिह्मं सरलं गच्छति गम्+ड। बाण। सीधा जानेवाला (त्रि०)

अजिह्व, (पु०) जि+वन्+दृच्। जिह्वा रसना वा नास्ति यस्य ब०। मेंडक। जीभसे विना (त्रि०)

अजीकवम्, (न०) अजा छागाः तेषां कं सुखं वाति प्रीणाति, वा+क। शीर महादेवका धनुष है। शिवका धनुष.

अजीगर्त, (पु०) अजस्य गमनाय गर्तः अस्य। जिसके जानेके लिये छिद्र (सुराख) है। गर्त (छेद)। मनुसंहितामें एक ब्राह्मणका नाम। जो शुनःशेफका पिता है.

अजीतिः, (स्त्री०) न जीयते। न जीतना। [illegible]। न क्षय होना.

अजीर्ण, (न०) जॄ+भावे क्त, न० त०। पेटकी अन्नके जीर्ण होजानेके साथ पाचे अन्न अधिकार न पचना। एक प्रकारका रोग। कर्तरि क्त न० त०। जो पुराना न हो (त्रि०) बदहजमी

अजीव, (त्रि०) जीव+भावे घञ् ब०। जीवरहित। मरहुआ। मुरदा.

अजीवन, (त्रि०) न० ब०। न जीवनं यस्य। जीविका रहित। जिसकी कोई रोजी नहीं। ल्युट् (न०)। न होना। मृत्यु। मौत.

अजीवनि, (स्त्री०) न जीवनम्, न+जीव आक्रोशे+अनि। मृत्यु-कौन बाद न जीए इस प्रकार अभिशाप

अजुर्य, (त्रि०) अज् जुरच Ved। अविनाशी। जरा न होनेवाला। बड़ा वेगवान्.

अजेय, (त्रि०) न+जि+कर्मणि यत्। जिसे जीता न जा सके

अजैकपाद्-द, (पु०) अजस्य छागस्य एक पाद इव पादो यस्य उपमा ब०। [illegible]। रुद्रमूर्ति। पूर्वभाद्रपदनक्षत्र एक नाम। (जिसका देवता अजैकपाद है)

अजैडकम्, (न०) (अजाश्च एडकाश्च)। द्वन्द्व स०। बकरे और मेड़े.

अजोष, (त्रि॰) न॰ त॰ । न जोषः (प्रीतिः) । जो प्रसन्न या संतुष्ट नहीं हुआ.

अज्जुका, (स्त्री॰) अर्जयति या सा, अर्जि+अक रकारस्य जत्वं । वेश्या कंचनी (इसका नाटकहीमें प्रयोग होता है).

अज्ञ, (त्रि॰) न जानाति, न+ज्ञा+क । ज्ञानशून्य-मूर्ख । थोड़ा जाननेहारा.

अज्ञका, (स्वार्थे कन्) (स्त्री॰) अज्ञ एव । मूर्ख स्त्री । बेवकूफ औरत.

अज्ञात, (त्रि॰) न॰ त॰ । न ज्ञातः । न जाना गया । न आज्ञा किया गया.

अज्ञातकुलशील, (त्रि॰) न॰ ब॰ । न ज्ञातं कुलशीलं यस्य । जिसका कुल या स्वभाव न जाना गया हो.

अज्ञातचर्या-वासः, (त्रि॰) अज्ञातः वासः यस्य । जिसका निवास नहीं जाना गया । (जैसा की पाण्डवोंका ऐसा वास हुआ था).

अज्ञाति, (स्त्री॰) न ज्ञातिः न॰ त॰ । सम्बन्धी (रिश्तेदार) न होना.

अज्ञान, (न॰) ज्ञा+भावे ल्युट् न॰ त॰ । ज्ञानका विरोधी ज्ञानसे नाश हो जानेहारा अविद्या नामी वेदांतमें प्रसिद्ध जगत्का कारण ज्ञान विरोधी पदार्थ । ज्ञानशून्य (त्रि॰).

अज्ञानिन्, (पु॰) न ज्ञात णिनि । जो ज्ञानी (समझदार) न हो । अज्ञ.

अज्मन्, (स्त्री॰) अजति गच्छति दानेन अनया, अज् करणे मनिन् न वीभावः । जिसके दान करनेसे स्वर्गको जाता है । गौ । न॰ । मार्ग । युद्ध । घर.

अज्येष्ठ, (त्रि॰) न ज्येष्ठः । न॰ त॰ । जो बहुत बड़ा या बहुत अच्छा न हो । बड़े भाईके विना.

अज्येष्ठवृत्तिः, (पु॰) नास्ति ज्येष्ठवत् वृत्तिः व्यवहारः यस्य । जिसका बर्ताव बड़े भाईकी भांति नहीं.

अज्र, (त्रि॰) अज् जाना-र । Ved तुरंत जानेहारा । -ज्रः (पु॰) क्षेत्र । मैदान.

अञ्च, (पु॰) भ्वा॰ उभ॰ । अञ्चति-ते, आनच-ञ्चे, अञ्चितुं, अच्यात् न अच्यात्, अक्त अञ्चित । झुकना । इच्छा करना । वश करना । जाना.

अञ्चति, (पु॰) अञ्च+अति । वायु-हवा.

अञ्चल, (पु॰) अञ्चति अन्तं अञ्च+अलच् । कोनका भाग । कपड़ेका कोना । पल्ला.

अञ्चित, (त्रि॰) अञ्च+क्त । पूजा कियागया । आदर कियागया । सिकोड़ लियागया "अञ्चितसव्यपादं" इति भट्टि .

अञ्चितपत्र, (न॰) अञ्चितानि वक्रीभूतानि पत्राणि यस्य । (ब॰) । टेढ़े पत्तोंवाला कमल.

अञ्चितभ्रू, (स्त्री॰) अञ्चिते पूजिते वक्रीभूते वा भ्रुवौ यस्याः । सुंदर स्त्री । वह स्त्री जिसकी भौं टेढ़ा लिया सुंदर.

अञ्ज्, (रुध्) मिलना-प्रकट-प्रकाश करना इत्यादि । प॰ अङ्क्ते अनक्ति । अर्थात् । जिलाना-चमकाना । "...कश्चिन्नयेति योऽञ्जनम्" इति माघ.

अञ्जन, (न॰) अज्यतेऽनेन करणे ल्युट् । काजल । सुरमा । भावे ल्युट् । मिलना । जाना । मैलापन । प्रकाशकरना । कर्तरि ल्युट् । उत्तर दिशाकी हथिनी । -नी । हनुमान्की माता । (स्त्री॰) णिनि ङीप् । चन्दन और कस्तूरी लेप करना । वस्तुसे इतर अर्थको जतानेहारा शब्दव्यापार, (स्त्री॰) "अन्यार्थधीहेतुर्व्यापृतिरञ्जनेति" काव्यप्रकाश.

अञ्जनकेशी, (स्त्री॰) अञ्जनं इव केशा यस्याः । केशोंको संभार करनेहारा हट्टविलासिनी नाम गंधद्रव्य । जिसे लगानेसे केश काले हो जाँय.

अञ्जनशलाका, (स्त्री॰) अञ्जनाय शलाका । च॰ त॰ । काजलके लिये सिलाई । सुरमचू.

अञ्जना, (स्त्री॰) अज्यते अनया । अञ्ज्-ल्युट्-टाप् । उत्तर दिशाकी हथिनीका नाम । हनुमान्की माताका नाम । मारुतीकी माता.

अञ्जनाद्रि-गिरि, (पु॰) अञ्जनं इव कृष्णः गिरिः । काजलके समान काला पर्वत । नीलगिरि.

अञ्जनाधिका, (स्त्री॰) अञ्जनादधिका कृष्णत्वात् । अञ्जनाई नामसे प्रसिद्ध कीटभेद.

अञ्जनाम्भः, (न॰) अञ्जनस्य अम्भः । ष॰ त॰ । काजल पानी । नेत्रजल । आंसका पानी.

अञ्जनावती, (स्त्री॰) अञ्जनं विद्यतेऽस्याः, अधिककृष्णवर्णत्वात् । अञ्जन+मतुप् वत्वं दीर्घश्च । ईशानकोनकी हथिनी.

अञ्जनी, (स्त्री॰) अज्यते चन्दनकुङ्कुमादिभिरसौ, अञ्ज् कर्मणि ल्युट् ङीप् । केसर आदि सुगंध द्रव्योंसे लिपी हुई स्त्री । करणे ल्युट् । कड़वा वृक्ष । कालाञ्जननामी वृक्ष.

अञ्जलि, (पु॰) अञ्ज+अलि । हाथ जोड़ना । जुड़े हुए दोनों हाथ । कुड़व । पावभरका मान.

अञ्जलिकर्मन्, (न॰) अञ्जलेः कर्म । ष॰ त॰ । दोनों हाथ जोड़ना । सादर प्रणाम.

अञ्जलिका, (स्त्री॰) अञ्जलिरिव कायति प्रकाशते । अञ्जलि+कै+टाप् । छोटी चूहीं । क्षुद्र मूषिका । अर्जुनके एक बाणका नाम.

अञ्जलिकारिका, (स्त्री॰) अञ्जलेः कारिका करणं, कृञ् त्वर्यनिर्देशे ण्वुल् । हाथोंका जोड़ना । कृ+ ण्वुल् ६ त॰ । लज्जालु या लज्जावती नामसे प्रसिद्ध लता वा सं॰ हाथ जोड़ । इस लताका स्वभाव है कि छूनेमात्रसे मानों पत्तोंको सिकोड़ती जाती है मानों हाथ जोड़ रही है.

अञ्जलिपुट-टम्, (अली॰) पोले हाथोंका जोडना। हथेलीका पोला रखना.

अञ्जस्, (न॰) अञ्ज्+असुन्। वेग। शक्ति। सरल। सीधा

अञ्जसा, (अव्य॰) अञ्ज+भावे असुन्। अञ्जे गति विलम्बे वा स्यति सो+क्विप्। शीघ्र। जल्दी। ठीकठीक.

अञ्जसाकृत, (त्रि॰) तृ॰ अलुक्। ठीक किया गया। न्यायपूर्वक किया हुआ.

अञ्जसीन, (त्रि॰) अञ्जस् ख। Ved सीधा आगे चला जाना.

अञ्जिः, (त्रि॰) अञ्ज् इन्। Ved चमकदार। रोशन। –ञ्जि पु॰ चन्दन आदिका चिह्न तिलक अहालिका.

अञ्जिष्ठः-ष्णु, (पु॰) अनक्ति स्वकिरणैः विश्वम्। अञ्ज इष्ठच्-इष्णुच्। अपनी किरणोंसे जगतको प्रकाशित करता है। सूर्य। सूरज.

अट्, जाना भ्वादि सक पर॰ सेट्। अटति। आटीत्.

अटनि-नी, (स्त्री॰) अटति मौर्वी, अट्+अनि वा ङीप्। धनुषके आगे चिल्ला चढानेका स्थान। कमानपर चिल्ला बांधनेकी जगह। धनुष्कोटि.

अटरूप, (पु॰) अटति भ्रमति, अट्+अच्, तं रोषति हिनस्ति रुष्+क, अटद्भिर्वा न रुष्यते न+रुष्+क। बासवृक्ष.

अटल, (त्रि॰) न॰ त॰। स्थिर (पक्का)। निश्चल। न टलनेहारा। कठिन। सख्त.

अटवि-वी, (स्त्री॰) अटन्ति चरमे वयसि यत्र, अट्+अवि, वा ङीपि दीर्घता। पिछली अवस्थामें जहां घूमते हैं। वन। जङ्गल। शिकारके लिये जहां घूमे.

अटविकः, (त्रि॰) अटव्यां चरति। जंगलमें फिरने (घूमने) वाला.

अटा, (स्त्री॰) अट् वा अट्। इधर उधर फिरनेका स्वभाव (जैसा सन्यासी)। "अट्या" "अटाट्या" इसी अर्थमें होते हैं.

अटाट्या, (स्त्री॰) अट्+यङ्+भावे अ लोलात् टाप्। घूमना। वृथा गमन। (इसी अर्थमें अटा और अट्या भी है)

अट्, लोपना मारना। भ्वादि आत्म. सक-सेट्। अट्टते। आट्टिष्ट

अट्ट, अनादर करना चुरादि-उभ-सक-सेट। अट्टयति-ते आट्टिटत्-त.

अट्ट, (पु॰) अट्टयति अनादियतेऽन्यद् यत्र। अट्ट+घञ्। महलके ऊपरका घर (अटारी) हट (दुकान) सूखा अनाज अतिशय (ज्यादती) बुर्ज (नाचीज) मारना अनादर फसीलके ऊपर सेनाका घर (वहां स्थित होकर नर औरोंकी नीचे होनेसे कुछ पर्वाह नहीं करते)

अट्टपन्धः, (पु॰) ष॰ त॰। राजगिरीके काममें किसी मकानकी नींव भरनेवाला.

अट्टशूल, (पु॰) अट्टं अन्नं शूलं विक्रेयं यस्य। बहु॰। अन्न बेचनेहारा.

अट्टस्थली, (स्त्री॰) अट्टप्रधाना स्थली। शाक॰ त॰। बहुत प्रासाद(महल)वाला नगर-आदि.

अट्टहास, (पु॰) अट्टेन अतिशयेन हासः। हस्+घञ् ३ त॰। बडी हंसी। जोरसे हसना.

अट्टहासक, (पु॰) अट्टहास इव कायते, कै+क। जोरसे हसनेके समय दांत बाहिर निकलनेसे बडे सफेद (श्वेत) होते हैं। दांतोंके समान श्वेत कुंदवृक्ष.

अट्टालक, (पु॰) अट्ट [illegible] प्रासादोपरि गृहमिव अलति पर्याप्तो भवति अल्+ण्वुल्। महलके ऊपर ईंटोंआदिसे बना घर। बरसाती। बुर्ज.

अट्टालिका, (स्त्री॰) अट्टाल+स्वार्थे क। ईंट चूने आदिसे बना राजाका घर। महल। ऊंचा मंदिर। एक नगरका नाम.

अट्टालिकाकार, (पु॰) अट्टालिकां करोति। उप॰ त॰। अटारी वा महल बनाता है। राज ईंटें रखता है.

अठ, जाना। भ्वादि, पर॰ सक॰ सेट्। अठति। आठीत्

अठ, जाना। आत्म॰ भ्वा॰ सक॰ सेट्। अण्ठते।

अड्, उद्यम करना। भ्वा॰पर॰सक॰सेट्। अडति। आडीत्.

अड्, व्याप्ति फैलाना। स्वादि॰ पर॰ सक॰ सेट् (इसका प्रयोग वेदहीमें होता है) अड्णोति। आडीत्

अड्ड, अभियोग (हमला करना) समाधान (साबित करना) अनुमान करना। भ्वादि॰ पर॰ सक॰ सेट्। अड्डति। आड्डीत्.

अड्डचलः, (पु॰) ष॰ त॰। हलका एक भाग.

अण्, शब्द करना। सांसलेना। भ्वा॰ प॰ अ॰ सेट्। अणति। आणीत्.

अण, जीना। दिवादि-आत्म॰ अक॰ सेट्। अण्यते। आणिष्ट.

अण, (न) क (त्रि॰) अणति यथेच्छं नदति। अण+अच्, ततः कुत्सायां क। नीच। निंदित। बहुत छोटा (कः) पक्षिविशेष.

अणव्य, (त्रि॰) अणु, उन्। अणोः सूक्ष्मधान्यस्य भवनं क्षेत्रं। छोटी खेतीका खेत (जिस खेतमें छोटा २ अनाज पैदा हो)। अणु+यत्। सर्षप (सरसों) आदिकी उत्पत्तिवाला खेत.

अणि, (पु॰ स्त्री॰) अणति शब्दायते। अण्+इन्। आगामी रथके चक्रमें आगे रहनेहारा कीलक (रथके पहियेका कील)। सूईकी नोक। अङ्कुश (हथियारकी नोक)। सीमा (हद)

अणिमन्, (पु॰) अणोर्भावः। अणु+इमनिच्। छोटापन। छोटाकार। आठ सिद्धियोंमेंसे एक सिद्धि। जिससे जीव छोटीसी मूर्ति बन सब स्थलमें जासके। "अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा। ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता".

अणीयस्, (त्रि०) अणु+ईयस् । बहुत छोटा । बहुत थोडा । "अणोरणीयान् महतो महीयान्" इति श्रुतिः.

अणु, (त्रि०) अण+उन् । छोटा । थोडे मापवाला द्रव्य । (स्त्रियां) अण्वी । छोटे २ धान, चीना, कङ्गनी, श्यामा आदि.

अणुक, (त्रि०) (स्वार्थे कन्) बहुत छोटा । बहुत थोडा.

अणुभा, (स्त्री०) अण्वी सूक्ष्मा भा दीप्तिर्यस्याः ब० । बिजली-बिजुरी.

अणुमात्रिक, (त्रि०) अणु परिमाणं यस्य ब० । अतिक्षुद्र । बहुत छोटा.

अणुरेणु, (पु०) धूलिकना । त्रसरेणु । जर्रह.

अणुरेवती, (स्त्री०) अणुः सूक्ष्मा रेवती तारेव । रेवती नक्षत्रकी भांति सूक्ष्म (महीन) । एक वृक्ष (दन्ती) का नाम.

अणुवादः, (पु०) ष० त० । परमाणुवाद । (संपूर्ण द्रव्य परमाणुओंसे बनता है और परमाणु नित्य है).

अणुवीक्षणम्, (न०) ष० त० । बहुत दूरतक देखना या विचरना । अणुः सूक्ष्मः वीक्ष्यते अनेन करणे ल्युट् । जिसे सूक्ष्म वस्तु देख पडती है । दुरबीन.

अण्ड, (न०) अणन्ति सम्प्रयोगे यान्ति अनेन । अम्+ड । पताल (पेशी) । कस्तूरी । पक्षीका अण्डा । वीर्य.

अण्डकम्, (न०) अल्पार्थे कन् । छोटा अण्डा.

अण्डकटाह-हम्, (अस्त्री०) अण्डं ब्रह्माण्डं कटाह इव । ब्रह्माण्ड (जगत्) मानो कटाह (कडाहे) की भांति.

अण्डकोटरपुष्पी, (स्त्री०) अण्डं इव कोटरे मध्ये पुष्पं यस्याः । बहु० । जिसके कोटर (खोडर) में अण्डेके समान फूल हो । एक प्रकारका वृक्ष । अजांत्री.

अण्डकोश-ष-षकः, (पु०) ष० त० । अण्डस्य कोशः । अण्डेका मध्य । वृषण । फोता.

अण्डज, (पु०) अण्डात् डिम्बात् जायते । जन्+ड । अण्डेसे निकला पक्षी, सांप । मच्छी । कांकलास नामसे प्रसिद्ध । कृकलास (किरला) । जो कोई अण्डेसे निकला हो (त्रि०) । कस्तूरी (स्त्री०).

अण्डवर्धनम्, (न०) ष० त० । अण्डेका बढना । फोतासूजा फूलजाना.

अण्डाकार आकृति, (त्रि०) । अण्डस्य आकार इव । अण्डेकी आकृति (शकल) वाला । बहु०.

अण्डालु, (पु०) अण्ड+आलु । मत्स्य-मछली.

अण्डीर, (पु०) अण्डः पुंस्त्वलक्षणभेदः अस्य अस्तीति । अण्ड+ईरन् । पुरुष । समर्थ । शक्ति । लंपट.

अण्वन्त, (पु० ; [illegible] । अत्यन्तसूक्ष्म [illegible] लिये जिसका.

अत, बांधना । इदित् । भ्वादि० पर० सक० सेट् । अन्तति । आन्तीत्.

अत, बांधना । भ्वादि० पर० सक० सेट् । अतति । आतीत्.

अत, पहुंचाना, निरन्तर चलना । भ्वादि० पर० सक० सेट् । अतति । आतीत् । कर्म अतितः.

अतएव, (अव्य०) अतः कारणात् । इसलिये.

अतकः, (पु०) अतति सततं गच्छति । अत् कन् । निरंतर चलता है । निरंतर (लगातार) फिरनेवाला पथिक । मुसाफिर.

अतज्ज्ञ, (त्रि०) न तत् जानाति । नहीं उस (ब्रह्म) को जानता है । परमात्माको न जाननेहारा.

अतट, (पु०) तटमते आहन्यतेऽम्भसा इति तटं जलाघातस्थानं तन्नास्ति यस्य ब० । जिसका किनारा न हो । जलकी नामसे प्रसिद्ध आश्रयस्थानसे शून्य । पर्वतआदि ऊंचा स्थान । पृथिवीका नीचला भाग.

अतथा, (अव्य०) वैसा नहीं.

अतथ्य, (त्रि०) न तथा भवति । मिथ्या । झूठ.

अतद्र्हं, (अव्य०) जो यथार्थ रीतिसे न हो । अन्यायसे । अयोग्य रीतिसे.

अतद्गुण, (पु०) अ+तद्+गुण० न० त० । जो दूसरेसे न उठाया जाय । एक प्रकारका वचन जिसमें दूसरेका गुणग्रहण न कियाजाय.

अतद्गुणसंविज्ञान, (पु०) जिसमें किसीका गुण न समझा जाय । जैसे "दृष्टसमुद्रं आनय" "जिसने समुद्र देखा हो उसे ला" इस वाक्यमें गुणीभूत समुद्रका लानेमें अन्वय नहीं (एक प्रकारका समास) । "लम्बे कानवालेको ला" इस वाक्यमें गुणीभूत कानका लानेमें अन्वय है, इस लिये इसे "तद्गुणसंविज्ञान" समास कहते हैं.

अतनम्, (न०) अत्-ल्युट् । जाना फिरना ।-नः (पु०) । सदा फिरता रहता है.

अतन्त्र, (त्रि०) न० ब० । वह बाजा की जिसकी तारें न हों । जो आधीन न हो । जो नियमके आधीन न हो "इत्यग्रहणमतन्त्रम्".

अतन्द्र, (त्रि०) न तन्द्रा यस्य । कामकरनेवाला चालाक.

अतन्द्रित, (त्रि०) न तन्द्रा जाता अस्य । निरलस । उद्यमी । हिम्मती.

अतप, (त्रि०) न तापयति । न० ब० । जो तपा हुआ न हो । शीतल । ठण्डा । सरद ।-पाः (बहुव०) । बौद्धमतके कई एक देवताओंका नाम.

अतपस्-स्क, (पु०) न० ब० । धर्मसम्बन्धी कर्तव्य विस्मरण (भूल) करनेहारा । "इदं ते नातपस्काय" (भ० गी०).

अतप्ततनु, (त्रि०) जिसके शरीरपर तप्त मुद्राका चिह्न न हो । तप्तसे रहित शरीरवाला.

अतमस्, (त्रि॰) न तमः यत्र ब॰। दीप्तिविशिष्ट। चमकदार.

अतरुण, (त्रि॰) न तरुण न॰ त॰। पुरातन। पुराना। बूढ़ा.

अतर्क, (त्रि॰) न॰ ब॰। नास्ति तर्कः यस्मिन्। तर्क-(दलील)के बिना। जिसमें कोई युक्ति नहीं दी जासकी।—र्कः (पु॰) तर्कका न होना। बुरा न्याय.

अतर्कित, (त्रि॰) न॰ त॰। न सोचा गया। अकस्मात् होगया। अचानक हुआ.

अतर्कितम्, क्रि॰ वि॰। न विचारे गयेकी भाँति। जैसा कि न सोचा हो.

अतर्कोपगत-उपनत, (त्रि॰) अचानक आपड़ा या होगया। सर्वथा अकस्मात् हुआ.

अतर्क्य, (त्रि॰) न तर्कितुं योग्य। न तर्कयह। जो विचार (ख्याल) दलीलमें नहीं आसकता.

अतल, (न॰) अस्य भूलग्नस्य तलम्। सात पातालोंमें पहिला पाताल। तलशून्य (त्रि॰).

अतलस्पर्श, (त्रि॰) न तलस्य अधोभागस्य स्पर्शो यत्र ब॰। जिसका नीचला भाग छुआ न जाय। अथाह। गंभीर.

अतस्, (अव्य॰) इसीलिये। इससे परे। यहांसे। इस कारणसे। अवश्य। ऊपर.

अतस, (पु॰) अत् सतीऽसच्। पवन। आत्मा। शस्त्र। अलसीवृक्ष। अलसीका बना वस्त्र (न॰).

अतसिरा, (पु॰) Veil (अत सतिच्)। घूमनेवाला संन्यासी.

अतसी-सि, (स्त्री॰) वृक्षविशेष। सन.

अति, (अव्य॰) बहुत ज्यादा। श्रेष्ठता। ऊपर

अतिकाय, (त्रि॰) अतिक्रान्तः कायम्। न बहनेयोग्य। न विश्वास करनेलायक। अद्भुत

अतिकाया, (स्त्री॰) अतिक्रान्ता कथाम्। बहुत बढ़कर कही गई कथा (कहानी)। निष्प्रयोजन (बेमतलब)बात.

अतिकन्दक, (पु॰) अतिरिक्त कन्दः यस्य ब॰। हस्ति-कंदक घास.

अतिकर्षण, (न॰)प्रा॰ त॰। अत्यंत दम (कोशिश)

अतिकश, (त्रि॰) अतिक्रान्त कशम्। चाबुकको झूठ मानेवाला (घोड़ा आदि)

अतिकाय, (त्रि॰) अत्युत्कटः कायः यस्य। बड़ेभारी विशेष शरीर(वड)वाला.

अतिकृच्छ्र, (त्रि॰) प्रा॰ त॰। बहुत कठिन।—च्छ्रः पु॰ (अतिकृच्छ्र इत्यर्थ प्रायश्चित्तम्)। बहुत कठिन (कष्ट)। बारह दिनमें समाप्त होनेवाली बहुत कठिन तपस्या.

अतिकृतम्, (अव्य॰) इससे अधिक किया गया.

अतिकृत, (पु॰) बहुत अधिक। विशेष.

अतिकेशर, (पु॰) अतिरिक्तानि केशराणि यस्य ब॰। कुब्जकवृक्ष.

अतिक्रम, (पु॰) अति+क्रम्+घञ् क्रमः। लांघजाना। अतिक्रान्त कर्म आदि म॰। नियमको लांघजाना। अपने कर्तव्यको भूलजाना (त्रि॰)

अतिक्रान्त, (त्रि॰) अति+क्रम्+क्त। लांघगया। अपने कामको भूल गया

अतिक्रुद्ध, (त्रि॰) अति+क्रुध+क्त। बहुत क्रोधी। बड़े क्रोधमें आगया। तन्त्रशास्त्रमें एक मन्त्रका नाम है

अतिक्रूर, (त्रि॰) बहुत निर्दय (बेरहम)।—र (पु॰) एक (तन्त्रमें) मन्त्र जो तीन वा [illegible] अक्षरोंका होनेसे बहुत क्रूर है.

अतिक्षिप्त, (त्रि॰) परे फेंका गया

अतिखट्व, (त्रि॰) अतिक्रान्त खट्वाम्। [illegible]। जिसको [illegible] नहीं.

अतिग, (त्रि॰) अति+गम्+ड। [illegible]। [illegible] (यह समासमें प्रायः [illegible] है)

अतिगम, [illegible]

अतिगण्ड, (पु॰) [illegible]

अतिगन्ध, (पु॰) [illegible] (त्रि॰)

अतिगन्धालु, (पु॰) [illegible]

अतिगव, (त्रि॰) [illegible]

अतिगाढ-[illegible], (त्रि॰) [illegible]

अतिगुण, (त्रि॰) [illegible]

अतिगुरु, (त्रि॰) [illegible] (पु॰) [illegible]

अतिगो, (स्त्री॰) [illegible]

अतिग्रह, (त्रि॰) [illegible]

अतिग्रहार, (त्रि॰) [illegible] (पु॰) [illegible]

अतिचर, (पु॰) [illegible]

अतिचार, (त्रि॰) [illegible]

अतिचमू, (त्रि॰) [illegible]

[illegible]

अत, [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अत, [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अन, [illegible], [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (अव्य०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible], (वि०) [illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (अव्य०) [illegible]

[illegible], (वि०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (अव्य०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] "[illegible]" [illegible] । [illegible]

[illegible]

अतमस्, (त्रि॰) न तमः यत्र ब॰। दीप्तिविशिष्ट। चमकदार.

अतरुण, (त्रि॰) न तरुण न॰ त॰। पुरातन। पुराना। बूढ़ा.

अतर्क, (त्रि॰) न॰ ब॰। नास्ति तर्कः यस्मिन्। तर्क-(दलील) के विना। जिसमें कोई युक्ति नहीं दी जासकी।—र्कः (पु॰) तर्कका न होना। बुरा न्याय.

अतर्कित, (त्रि॰) न॰ त॰। न सोचा गया। अकस्मात् होगया। अचानक हुआ.

अतर्कितम्, क्रि॰ वि॰। न विचारे गयेकी भांति। जैसा कि न सोचा हो.

अतर्कोपगत-उपनत, (त्रि॰) अचानक आपड़ा न होगया। सर्वथा अकस्मात् हुआ.

अतर्क्य, (त्रि॰) न तर्कितुं योग्यः। न तर्कयन्। जो विचार (ख़याल) दलीलमें नहीं आसका.

अतल, (न॰) अस्य भूखण्डस्य तलम्। सात पातालोंमें पहिला पाताल। तलशून्य (त्रि॰).

अतलस्पर्श, (त्रि॰) न तलस्य अधोभागस्य स्पर्शो यत्र ब॰। जिसका नीचला भाग छुआ न जाय। अथाह। गंभीर.

अतस्, (अव्य॰) इसीलिये। इससे परे। यहांसे। इस कारणसे। अवश्य। जरूर.

अतस, (पु॰) अत् गतौ+असच्। पवन। आत्मा। शस्त्र। अलसीवृक्ष। अलसीका बना कपड़ा (न॰)

अतसिः, (पु॰) Ved (अत्-असिच्)। घूमनेवाला संन्यासी.

अतसी-सि, (स्त्री॰) वृक्षविशेष। सन.

अति, (अव्य॰) बहुत प्रशंसा। लांघना। ऊपर.

अतिकथ, (त्रि॰) अतिक्रान्तः कथाम्। न कहनेयोग्य। न विश्वास करनेलायक। नष्टधर्म.

अतिकथा, (स्त्री॰) अतिक्रान्ता कथाम्। बहुत बढ़ाकर कही गई कथा (कहानी)। निष्प्रयोजन (बेमतलब) कथा.

अतिकन्दक, (पु॰) अतिरिक्तः कन्दः यस्य ब॰। हस्तिकन्द वृक्ष.

अतिकर्षण, (न॰) प्रा॰ स॰। अत्यन्त श्रम (कोशिश)

अतिकश, (त्रि॰) अतिक्रान्तः कशाम्। चाबुकको कुछ न माननेवाला (घोड़ा आदि).

अतिकाय, (त्रि॰) अतिशयः कायः यस्य। बड़ेभारी विशेष शरीर (धड़) वाला.

अतिकृच्छ्र, (त्रि॰) प्रा॰ स॰। बहुत कठिन।—च्छ्रम् (अतिक्रान्तः कृच्छ्रं प्राजापत्यम्)। बहुत कठिन (व्रत)। बारह दिनमें समाप्त होनेवाली बहुत कठिन तपस्या.

अतिकृतम्, (अव्य॰) हदसे बाहिर किया हुआ.

अतिकृश, (पु॰) बहुत कमज़ोर। निर्बल.

श॰ ३

अतिकेसर, (पु॰) अतिरिक्तानि केसराण्यस्य ब॰। कुब्जकवृक्ष.

अतिक्रम, (पु॰) अति+क्रम्+घञ् क्रमः। लांघजाना। अतिक्रान्तः कर्म प्रादि स॰। नियमको लांघजाना। अपने कर्तव्यको भूलजाना (त्रि॰).

अतिक्रान्त, (त्रि॰) अति+क्रम्+क्त। लांघगया। अपने कामको भूल गया.

अतिक्रुद्ध, (त्रि॰) अति+क्रुध्+क्त। बड़ा क्रोधी। बड़े क्रोधमें आगया। तन्त्रशास्त्रमें एक मन्त्रका नाम है.

अतिक्रूर, (त्रि॰) बहुत निर्दय (बेरहम)।—र (पु॰) एक (तन्त्रमें) मन्त्र जो तीन वा तेतीस अक्षरोंका होनेसे बहुत क्रूर है.

अतिक्षिप्त, (त्रि॰) परे फेंका गया.

अतिगद्ग, (त्रि॰) अतिक्रान्तः गद्गदम्। स्पष्ट गिरा। जिसके पास स्पष्ट नहीं.

अतिग, (त्रि॰) अति+गम्+ड। लांघगया। अतिरिक्तगत (यह समासमें प्रायः पीछे रहता है)

अतिगम्, भ्वा॰ प॰। व्यतीत होना। गुज़रना.

अतिगण्ड, (पु॰) अति+गडि+अच्। ज्योतिषशास्त्रमें एक योगका नाम। बड़ी गाल। बड़ी बड़ी गालोंवाला। फूलीगालवाला.

अतिगन्ध, (पु॰) अतिशयितो गन्धो यस्य ब॰। चम्पक-वृक्ष। बड़ी सुगन्धिवाला (त्रि॰)

अतिगन्धालु, (पु॰) पुत्रदात्री नाम लता.

अतिगाय, (त्रि॰) अतिक्रान्तः गां वाचम्। बकनेमें बढ़कर होगया। बड़ा मूर्ख। पूरा बेवकूफ। अशोभनीय। जो कह-नेमें नहीं आसका.

अतिगहन-गह्वर, (त्रि॰) बड़ा गहरा.

अतिगुण, (त्रि॰) उत्कृष्ट (ऊंचा) गुणोंवाला। अपूर्व। निर्गुण। (गुणं अतिक्रान्तः) प्रा॰ स॰। अत्युत्कृष्ट

अतिगुरु, (त्रि॰) बहुतभारी।—रु (पु॰) अत्यन्त आदरणीय व्यक्ति, जैसा कि "पिता" "माता" "आचार्य".

अतिगो, (स्त्री) प्रशस्त गौ। अच्छी गौ.

अतिग्राह, (त्रि॰) अतिक्रान्तः ग्रहम्। जो ग्रहण (समझ) में नहीं आसकता। ज्ञानका पकड़नेवाला।—हः-ग्रहः। इन्द्रियके विषय स्पर्श, रस आदि.

अतिचार, (त्रि॰) बड़ा (बहु) चलनेवाला।—रः (पु॰) ज्योतिषमें ग्रहके शीघ्र चलनेसे एक राशिसे दूसरेमें जाना। उल्लंघन (लांघ).

अतिघ, (पु॰) अत्यन्तेन हन्ति, हन्। बहुत मारता है। एक तरह का अस्त्र.

अतिघ्न, (त्रि॰) अत्यन्तेन हन्ति दुःखं, हन् टक्। [illegible]

अतिचमू, (त्रि॰) चमूं अतिक्रान्तः। सेनाको जीतनेवाला। [illegible]

अतिधृति, (स्त्री०) अतिक्रान्ता धृतिं अष्टादशाक्षरपादिकां धृतिं प्रा० स० । उन्नीस अक्षरोंके प्रत्येकपादवाला एक छन्द । जिसका धैर्य वा संतोष जाता रहा हो (त्रि०).

अतिनिद्रा, (स्त्री०) बहुत नींद ।-द्रः (पु०) बहुत सोनेवाला । नींदरहित ।-द्रम् (अव्य०) । नींदका समय बीत जाना.

अतिनु-नौ, (त्रि०) अतिक्रान्तो नावं प्रा० स० । ह्रीबे ह्रस्वः । बेडीसे उतरा हुआ । पुंसि स्त्रियां च अतिनौः

अतिपञ्चा, (स्त्री०) पञ्चवर्षं अतिक्रान्ता । पांच वर्षको लांघ गई । पांच वर्षकी कन्या.

अतिपत्, भ्वा० प० । लांघजाना । भूलजाना.

अतिपतन, (न०) अति+पत्+ल्युट् । अत्यय-नाश-बरबादी.

अतिपत्ति, (स्त्री०) अति+पद्+क्तिन् । न सिद्ध होना । फौजमेंसे गुजरा हुआ.

अतिपत्र, (त्रि०) अति+पद्+त्र अत्या० स० । अतिरिक्तं बृहत् पत्रं यस्य वा ब० । पत्तेसे लांघगया । बडे २ पत्तोंवाला हस्तिकंद वृक्ष.

अतिपथिन्, (पु०) अतिशयित सुन्दरः पन्थाः प्रा० स० । अतेः पूजार्थत्वात् न समासान्तः । अच्छा रास्ता । सडक

अतिपर, (त्रि०) अतिक्रान्तः परान् । शत्रुओंपर विजय प्राप्त करनेहारा ।-रः (पु०) । दाना दुस्मन.

अतिपरिचय, (पु०) बहुत परिचय (वा कुर्बत).

अतिपरोक्ष, (त्रि०) अतिक्रान्तः परोक्षं (अव्य०) । नेत्रोंसे बहुत दूर । बहुत छिपा हुआ.

अतिपातक, (न०) अतिक्रान्तोऽत्यन्तदुष्ट्येनान्यत् पातकं प्रा० स० । बडा पातक (बडा पाप) जैसे पुरुषोंका माता-ओं (बहु) और कन्याके साथ गमन करनेसे उपजा एवं स्त्रियोंका पुत्र, पिता, और श्वशुर (सौरा) के साथ संभो-ग करनेसे उत्पन्न हुआ पातक विशेष कहलाता है । पाप-को लांघनेहारा पुण्यशील पुरुषादि (त्रि०).

अतिपातिन्, (त्रि०) अति-पत्-णिच्-णिनि । शीघ्र भागने-हारा । लांघ जानेवाला.

अतिप्रगे, (अव्य०) अति प्रगीयतेऽस्मिन् काले, गै के । बहुतही सवेरका समय.

अतिप्रबन्ध, (पु०) अतिशयितः प्रबन्धः । लगातार.

अतिप्रवृद्ध, (त्रि०) अतिशयेन प्रवृद्धः । प्रा० स० । जीता हुआ । बहुत बढ गया । बहुत बडा हुआ.

अतिप्रश्न, (पु०) अति+प्रच्छ+नङ् । अतिक्रम्य मर्यादां प्रश्नः । इस प्रकारका प्रश्न कियेजाना कि जिसका उत्तर मिलचुका हो । दूसरेको चिढाने (खिझाने) के लिये प्रश्न करना । जैसा बृहदारण्यकोपनिषद्में गार्गीने ब्राह्मणके योगिराट् याज्ञवल्क्यजीसे किया है । उत्तर न होनेवाला प्रश्न.

अतिप्रसक्ति, (स्त्री०) अति+प्र+सञ्ज+क्तिन् । अत्यन्त आसक्ति । किसी काममें बहुत लगजाना । प्रसंगको छोड जिसका सम्बन्ध दूसरेके साथ रहे । लक्ष्यमें जो लक्षणका सम्बन्ध होताहै उसे प्रसंग कहतेहैं जो इसके विपरीत हो वह अतिप्रसंग है । प्रसंगको छोड देनेहारा (त्रि०)

अतिप्रौढा, (स्त्री०) विवाहके योग्य अवस्थावाली कन्या । उमरमें बडी हुई लडकी.

अतिबल, (त्रि०) अतिशयितं बलं यस्य ब० । बडे बल-वाला । अतिशयितं बलं यस्याः ५ ब० । बडे बलको उत्पन्न करनेहारी पीले रंगकी बेडियाला नामी बेल (लता) । यह अस्त्रविद्या जो विश्वामित्रने कृशाश्व मुनिसे सीखी और रामचन्द्रजीको समर्पण की (स्त्री०) बडा बल । बडी सेना । बडी शक्ति.

अतिबालक, (त्रि०) अतिशयितः बालकः । प्रा० स० । बहुत बालक । बचपनवाला । -क (पु०) बच्चा.

अतिबाला, (स्त्री०) अतिक्रान्ता बाल्यावस्थाम् । बाल्या-वस्थाको लांघ गई । दोवर्षकी गौ.

अतिब्रह्मचर्य, (न०) अतिशयितं ब्रह्मचर्यम् । बहुत देर-तक ब्रह्मचारी रहना ।-र्यः । (अतिक्रान्त. ब्रह्मचर्यम्) । जिसने स्त्रीसंग करके ब्रह्मचर्य तोड डाला हो.

अतिभ(भा)रः, (पु०) अतिशयितः भरः वा भारः । प्रा० स० । बडा भार (बडा बोझा).

अतिभवः, (पु०) अतिशयेन भवति प्रा० स० । लांघ-नेवाला । जीतनेहारा.

अतिभीः, (स्त्री०) अति बिभेति अस्या दर्शनात् । भी क्विप् । जिसके देखनेसे बहुत डरता है । बिजली.

अतिभूमि, (स्त्री०) अतिशयिता भूमिर्मर्यादा प्रा० स० । बडी मर्यादा अधिकाई । अतिक्रमेऽव्ययीभावः । मर्या-दाका तोडना । मर्यादाको तोडनेवाला । पृथिवीलांघनेहा-रा (त्रि०)

अतिमङ्गल्य, (पु०) अतिमङ्गलाय हितं, अतिमङ्गल+यत् । बिल्ववृक्ष । बहुत मंगलसे पूर्ण । बहुत शुभको उत्पन्न करनेहारा (त्रि०).

अतिमतिः, (स्त्री०) मानः अतिशयिता मतिः (मानम्) । बडा अहंकार । औद्धत्य.

अतिमर्त्य-मनुष, (त्रि०) अतिक्रान्तो मर्त्यं मनुषं । मनुष्यको लांघ गया । दैवीशक्तिवाला.

अतिमर्याद, (त्रि०) अतिक्रान्तो मर्यादाम् । उचित निय-मको लांघनेहारा । रीति तोडनेवाला.

अतिमात्र, (त्रि०) अतिक्रान्तो मात्रां अत्यं । अत्या-स० । बहुत थोडेको लांघनेहारा (अतिक्रम करनेहारा)

अतिमान, (त्रि०) मानं अतिक्रान्तः । परिमाणसे बाहिर होगया । जो मापा नहीं जासका.

अतिचर, भ्वा॰ प॰ । अतिक्रम करना । जुल्म करना । अपराध करना.

अतिचरा, (स्त्री॰) अतिक्रम्य चरति अति+चर्+अच् । पद्मचारी वृक्ष (यह उत्तरदेशमें होता है) । इसीका दूसरा नाम पद्माभ भी है । कईयोंने इसीको स्थलपद्मिनी, पद्मिनी और पद्मचारिणीलता नामसे निर्दिष्ट किया है । बहुत बदलनेवाली.

अतिचार, (पु॰) अतिशयेन चारः, अतिक्रम्य वा चारः । अति+चर्+घञ् । बहुत चलनेहारा । बहुत चलना । ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध मङ्गल आदि पांच ग्रहोंका सूर्यके विशेष संबन्धसे तेजको न सहन करनेके कारण टेढी और शीघ्र आदि गतिसे अपने भोगने योग्य समयको लांघकर और और राशिओंमें जाना.

अतिचारिन्, (पु॰) अति+चर्+णिन् । अपने समयको भोगेबिन दूसरी राशीमें जानेहारे मंगलादि पांच ग्रह लांघकर जानेहारा । बहुत जानेहारा (त्रि॰).

अतिचिरम्, (क्रि॰ वि॰) बहुत देर (विलम्ब).

अतिच्छत्र, (पु॰) अतिक्रान्तः छत्रं प्रादि स॰ । छतिया नामसे प्रसिद्ध एक तृणविशेष (जो थलपर होता है) । तालमखाना नामसे प्रसिद्ध एक तृणभेद जो जलमें रहता है । सुल्फा नामी एक प्रकारका शाक जिसके पत्र और फूल छातेकी शकलके होते हैं । क्षीरस्वामीके मतमें "छत्रा" इतनाही नाम है । छातेको लांघनेहारा (त्रि॰).

अतिच्छन्दः-दस्, (त्रि॰) अतिक्रान्तं छन्दः छन्दं वा । सांसारिक इच्छाओंसे रहित । वैदिक आचारको तोडनेहारा.

अतिजगती-ति, (स्त्री॰) अतिक्रान्ता जगती त्रयोदशाक्षरपादावृत्तिं प्रा॰ स॰ । एक छन्द जिसके प्रत्येक पादमें १३ अक्षर होते हैं । जगतको लांघनेहारा (त्रि॰).

अतिजन, (त्रि॰) अतिक्रान्तो जनम् । वह देश कि जहा कोई मनुष्य नहीं । निर्जन.

अतिजव, (त्रि॰) अतिशयितो जवो यस्य ब॰ । बडे वेगवाला । जल्दी चलनेहारा.

अतिजागर, (पु॰) अतिशयितो जागरो निद्राराहित्यं यस्य ब॰ । नीलबकपक्षी । (यह सदा जागताही रहता है) जिसको नींद नहीं (त्रि॰).

अतिजात, (त्रि॰) अतिक्रान्तो जातं जाति जनकं वा । जो अपनी जाति वा पितासे भी अत्यन्त श्रेष्ठ हो.

अतिडीन, (न॰) अतिक्रान्त डीनं पक्षिगतिभेदं प्रा॰ स॰ । पक्षियोंका बहुत ऊंचा जाना.

अतितराम्, (अव्य॰) अति+तरप्+तत्तः आमु । बहुतही बहुत.

अतितीक्ष्ण, (त्रि॰) अतिशयेन तीक्ष्णः कटुः रसो यस्य ब॰ । मरिच आदि । मिरचां । सजना नामसे प्रसिद्ध शोभाञ्जन (पु॰).

अतितीव्रा, (स्त्री॰) अतिशयेन तीव्रा गण्डदूर्वा प्रा॰ स॰ । गांडाडूब (गांडदूर्वा) दूर्वा (दूबा) बड़े तेजगुणवाला (त्रि॰).

अतितृ, भ्वा॰ प॰ लांघना । गुजरना । बढजाना.

अतितृष्णा, (स्त्री॰) बहुत तृष्णा (लालच) । अती भ्वा॰ प॰ लांघना । गुजरना । बढजाना.

अतिथि, (पु॰) अतति गच्छति न तिष्ठति, अत्+इथिन् मार्गमें चलता २ घरमें आगया मुसाफिर । "एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः । अनित्यं हि स्थितो यस्मात् तस्मादतिथिरुच्यते" मनु॰ । कुश और कुमुद्वतीके पुत्र नाम । रामचन्द्रजीका पोता.

अतिथिदेव, (त्रि॰) अतिथि: देव इव पूज्यो यस्य । अतिथिको ईश्वरबुद्धिसे पूजनेहारा ।-वः (पु॰) सबसे बडा देवता शिवजी.

अतिथिसपर्या, (स्त्री॰) अतिथीनां सपर्या पूजनम् सपरधातुः कण्ड्वादिः यक् ततो अङ् । गृहस्थके प्रतिदिन करनेयोग्य पांच यज्ञोंमें मनुष्ययज्ञविषयक अतिथिपूजन आदि । (इसी अर्थमें अतिथिपूजा भी).

अतिदग्ध, (त्रि॰) बुरी तरहसे जल गया.

अतिदानम्, (न॰) बहुत देना । उदारता । फिआसी.

अतिदिश्, तु॰ प॰ । जतलाना । बदलना.

अतिदिष्ट, (त्रि॰) अति+दिश्+क्त । और धर्मका औरमें आरोप करना । जैसे "प्रकृतिके समान विकृति करनी चाहिये" इस वाक्यसे प्रकृतिस्वरूप अमावस्यायागादिके अङ्गकार्य प्रयाज आदि विकृतिस्वरूप पश्वादियागमें अतिदिष्ट (आरोपित) कियेगये हैं । "इतरधर्मस्य इतरस्मिन् प्रयोगाय आदेशः आदेशो नाम" इति मीमांसा । यह अतिदेश ५ प्रकारका है, शास्त्र, कार्य, निमित्त, व्यपदेश, और रूप । करणव्युत्पत्त्या मीमांसाशास्त्रका उपदेशवाक्य । अतिदेश इव वत् आदिशब्दोंसे पहिचाना जाता है.

अतिदीप्य, (पु॰) अतिशयेन दीप्यते अति+दीप कर्मणि यत् । रक्तचित्रक । लालचित्रा नामी वृक्ष.

अतिदूर, (त्रि॰) बहुत दूर ।-रे,-रात्,-रेण । (प्रायः इसके पहिले "न" रहता है) । षष्ठीके साथ । बहुत दूर नहीं । "तपोवनस्य नातिदूरेण".

अतिदेश, (पु॰) अति+दिश्+घञ् । व्याख्यानरूपार्थ । अन्यधर्मको दूसरेमें लगाकर दिखादेना.

अतिद्वय, (त्रि॰) द्वयं अतिक्रान्तः, नास्ति द्वयं यस्य वा । दोनोंको लांघ गया अथवा जिसके पास दोनों नहीं । उत्तमारहित । अनुपम.

अतिधन्वन्, (पु॰) अतिरिक्तं धनुर्यस्य ब॰ । धनुषोऽनङ् । अच्छे धनुषवाला योधा । मरुभूमिको लांघनेहारा (त्रि॰).

अतिधृति, (स्त्री०) अतिक्रान्ता धृतिं अष्टादशाक्षरपादिकां वृत्तिं प्रा० स० । उन्नीस अक्षरोंके प्रत्येकपादवाला एक छन्द । जिसका धैर्य वा संतोष जाता रहा हो (त्रि०).

अतिनिद्रा, (स्त्री०) बहुत नींद ।-द्रः (पु०) बहुत सोनेवाला । नींदरहित ।-द्रम् (अव्य०) । नींदका समय बीत जाना.

अतिनु-नौ, (त्रि०) अतिक्रान्तो नावं प्रा० स० । क्लीबे ह्रस्वः । बेडीसे उतरा हुआ । पुंसि स्त्रियां च अतिनौः

अतिपञ्चा, (स्त्री०) पञ्चवर्षं अतिक्रान्ता । पांच वर्षको लांघ गई । पांच वर्षकी कन्या.

अतिपत्, भ्वा० प० । लांघजाना । भूलजाना.

अतिपतन, (न०) अति+पत्+ल्युट् । अत्यय-नाश-बरबादी.

अतिपत्ति, (स्त्री०) अति+पद्+क्तिन् । न सिद्ध होना । फौजमेंसे गुजरा हुआ.

अतिपत्र, (त्रि०) अति+पद्+त्र अत्या० स० । अतिरिक्तं बृहत् पत्रं यस्य वा ब० । पत्तेसे लांघगया । बडे २ पत्तोंवाला हस्तिकंद वृक्ष.

अतिपथिन्, (पु०) अतिशयितः सुन्दरः पन्थाः प्रा० स० । अतेः पूजार्थत्वात् न समासान्तः । अच्छा रास्ता । सत्पथ

अतिपर, (त्रि०) अतिक्रान्तः परान् । शत्रुओंपर विजय प्राप्त करनेहारा ।-रः (पु०) । दाना दुश्मन.

अतिपरिचय, (पु०) बहुत परिचय (वा कमीयत).

अतिपरोक्ष, (त्रि०) अतिक्रान्तः परोक्षं (अव्य०) । नेत्रोंसे बहुत दूर । बहुत छिपा हुआ.

अतिपातक, (न०) अतिक्रान्तोऽत्यन्तदुष्टत्वेनान्यत् पातकं प्रा० स० । बडा पातक (बडा पाप) जैसे पुरुषोंका माता-नूं (बहु) और कन्याके साथ गमन करनेसे उपजा एवं स्त्रियोंका पुत्र, पिता, और श्वशुर (सौरा) के साथ समीगन करनेसे उत्पन्न हुआ पातक विशेष कहलाता है । पाप-को लांघनेहारा पुण्यशील पुरुषादि (त्रि०).

अतिपातिन्,(त्रि०) अति-पत्-णिच्-णिनि । शीघ्र भागने-हारा । लांघ जानेवाला.

अतिप्रगे, (अव्य०) अति प्रगीयतेऽस्मिन् काले, गै के । बहुतही सवेरका समय

अतिप्रबन्ध, (पु०) अतिशयितः प्रबन्धः । लगातार.

अतिप्रवृद्ध, (त्रि०) अतिशयेन प्रवृद्धः । प्रा० स० । जीता हुआ । बहुत बढ गया । बहुत बडा हुआ.

अतिप्रश्न, (पु०) अति+प्रच्छ+नङ् । अतिक्रम्य मर्यादां प्रश्नः । इस प्रकारका प्रश्न कियेजाना कि जिसका उत्तर मिलचुका हो । दूसरेको चिढाने (खिझाने) के लिये प्रश्न करना । जैसा बृहदारण्यकोपनिषद्में बाल्कीने प्रश्नापने योगिराट् याज्ञवल्क्यजीको किया है । उत्तर न होनेवाला प्रश्न.

अतिप्रसक्ति, (स्त्री०) अति+प्र+सञ्ज+क्तिन् । अत्यन्त आसक्ति । किसी काममें बहुत लगजाना । प्रसंगको छोड जिसका सम्बन्ध दूसरेके साथ रहे । लक्ष्यमें जो लक्षणका सम्बन्ध होताहै उसे प्रसंग कहतेहैं जो इसके विपरीत हो वह अतिप्रसंग है । प्रसंगको छोड देनेहारा (त्रि०)

अतिप्रौढा, (स्त्री०) विवाहके योग्य अवस्थावाली कन्या । उमरमें बडी हुई लडकी.

अतिबल, (त्रि०) अतिशयितं बलं यस्य ब० । बडे बल-वाला । अतिशयितं बलं यस्याः ५ ब० । बडे बलको उत्पन्न करनेहारी पीले रंगकी खेडियाला नामी बेल (लता) । यह अस्त्रविद्या जो विश्वामित्रने कृशाश्व मुनिसे सीखी और रामचन्द्रजीको समर्पण की (स्त्री०) बडा बल । बडी सेना । बडी शक्ति.

अतिबालक, (त्रि०) अतिशयितः बालकः । प्रा० स० । बहुत बालक । बचपनवाला । -क. (पु०) बच्चा.

अतिबाल्या, (स्त्री०) अतिक्रान्ता बाल्यावस्थाम् । बाल्या-वस्थाको लांघ गई । दोवर्षकी गौ.

अतिब्रह्मचर्य, (न०) अतिशयितं ब्रह्मचर्यम् । बहुत देर-तक ब्रह्मचारी रहना ।-र्यः । (अतिक्रान्तः ब्रह्मचर्यम्) । जिसने प्रीसंग करके ब्रह्मचर्य तोड डाला हो.

अतिभ(भा)रः, (पु०) अतिशयितः भरः वा भारः । प्रा० स० । बडा भार (बडा बोझा).

अतिभवः, (पु०) अतिशयेन भवति प्रा० स० । लांघ-नेवाला । जीतनेहारा.

अतिभीः, (स्त्री०) अति बिभेति अस्या दर्शनात् । भी क्विप् । जिसके देखनेसे बहुत डरता है । बिजली.

अतिभूमि, (स्त्री०) अतिशयिता भूमिर्मर्यादा प्रा० स० । बडी मर्यादा अधिकाई । अतिक्रमेऽव्ययीभावः । मर्या-दाका तोडना । मर्यादाको तोडनेवाला । पृथिवीलांघनेहा-रा (त्रि०).

अतिमङ्गल्य, (पु०) अतिमङ्गलाय हितं, अतिमङ्गल+यत् । बिल्ववृक्ष । बहुत मंगलसे पूर्ण । बहुत शुभको उत्पन्न करनेहारा (त्रि०).

अतिमतिः, (स्त्री०) मानः अतिशयिता मतिः (मानम्) । बडा अहंकार । औद्धत्य.

अतिमर्त्य-मानुष, (त्रि०) अतिक्रान्तो मर्त्यं मानुषं । मनुष्यको लांघ गया । दैवीशक्तिवाला.

अतिमर्याद, (त्रि०) अतिक्रान्तो मर्यादाम् । उचित निय-मको लांघनेहारा । रीति तोडनेवाला.

अतिमात्र, (त्रि०) अतिक्रान्तो मात्रां अल्पं । अत्या-स० । बहुत थोडेको लांघनेहारा (अतिक्रम करनेहारा).

अतिमान, (त्रि०) मानं अतिक्रान्तः । परिमाणसे बाहिर होगया । जो मापा नहीं जासका.

अतियादिन्, (त्रि॰) सर्वानतीत्य वदतीति, अति+वद् णिनि । सबको तोड़कर बोलनेहारा । सबका मत खण्डन करके जो स्वमतको संस्थापन करे.

अतियाह, (अतीत्य देहं अन्यदेहे वाह प्रापणम्) म॰ स॰ । दूसरे देहमें पहुंचानेहारा । सूक्ष्म जीवनतत्व (सूक्ष्म शरीर) । स्वर्गादिमें शुभ कर्मकी समाप्ति होनेपर पार्थिव भोग देनेहारा । देखानेवाला.

अतियाहक, (अतीत्य स्थितं देहं वाहयति देहान्तरं प्रापयति) वह ण्वुल् । इस (स्थूलके जड़ होजानेसे जीवको दूसरे देहमें पहुंचा देता है । "क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति" । ईश्वरविरचित एक देव (Ved) जो जीवको दूसरे शरीरमें ▮ जाता है.

अतियाहनम्, (अति वहः णिच् ल्युट्) । व्यतीत होना । गुजरना । बहुत परिश्रम करना । सहारना । बहुत भारी बोझा उठाना । भारी बोझा । भेजदेना । किसीकी बातमें नियुक्त होना.

अतियाहिक, (त्रि॰) अतिवाहः अस्ति अस्य॰ ठन् । अतिवाह (सूक्ष्म शरीरवाला) । दूसरे शरीरमें जानेहारा.

अतियाहित, (त्रि॰) अति+वह+णिच्+क्त । बलवाया । बीतगया पातालनिवासी जीव ।-तं । सूक्ष्मशरीर.

अतिविकट, (पु॰) अतिशयेन विकट, प्रा॰ स॰ । दुष्ट हाथी । बड़ा भयदेनेहारा (त्रि॰).

अतिविषा, (स्त्री॰) अतिक्रान्ता विषं अत्या॰ स॰ । आमदयनामी बेल पत्री । विषको दूर करनेहारी.

अतिवृत्, भ्वा॰ आ॰ । महाभारत रामायणमें प॰ भी । ऊपर या नीचेसे निकल जाना । पारहोजाना । लांघजाना

अतिवृष्टि, (स्त्री॰) अति+वृष्+क्तिन् । बहुत वर्षा होनेपर खेतीको नाश करनेहारा उपद्रव ईतिभेद.

अतिवृद्ध, (त्रि॰) अति+वृध्+क्त । बहुत पुराना (पुराना) । बहुतही उमरवाला ।-द्ध. (पु॰)तन्त्रशास्त्रमें एक मन्त्र जिसके अक्षर चालीससे एक सहस्रपर्यन्त अक्षर हों । -द्धा (स्त्री॰) एक बड़ी बूढी स्त्री जो बचाती बच नहीं सकी.

अतिवृष्टि, (स्त्री॰) बहुत वर्षा । ६ उपद्रवोंमेंसे एक.

अतिवेगित, (त्रि॰) बहुत तीक्ष्ण (तेज) चलिनेहारा

अतिवेध, (पु॰) अत्यन्त वेध । दशमी और एकादशीका परस्परसंयोग.

अतिवेल, (त्रि॰) अतिक्रान्तो वेलां मर्यादां कूलं वा, अत्या॰ स॰ । बहुत ज़ियादा । मर्यादारहित । बेहिसाब । समुद्रके तटको अतिक्रम करनेहारा । अत्यन्त (अव्यय॰) समयका लांघना (अव्य॰).

अतिव्यथनं-व्यथा, (न॰ स्त्री॰) अति+व्यथ+ल्युट् । अत्यन्त पीड़ाका अनुभव करना

अतिव्याप्ति, (स्त्री॰) अति+वि+आप्+क्तिन् । अतिशयेन अलक्ष्यलक्ष्ये चाविशिष्य व्याप्तिप्रदर्शनम् । व्यापनामें अलक्ष्य (जिसका लक्षण नहीं कियागया) में लक्षणका जाना (जिसको जहां रहना चाहिये उससे भिन्नमें भी यदि रहजाय तो वह लक्षण अतिव्याप्तिदोषसे दूषित ठहरता है । जैसे शृङ्गित्व गौका लक्षण नहीं है, क्योंकि महिष आदिभी सींगवाले हैं । जैसे पृथिवीका लक्षण गन्धवत्त्व है तो गन्धकी स्थिति केवल पृथिवीहीमें उचित है । यदि वायुआदिमें उसका प्रसंग हो तो अतिव्याप्ति समझनी । और जैसे धूममें वह्निकी व्यापकता है उसमें तो नहीं, उसका जलमें प्रसंग होनेपर अतिव्याप्ति समझनी । अधिक विस्तृत होजाना । ज़ियादह फैलजाना.

अतिशक्ति, (स्त्री) अति+शक्+क्तिन् । अतिशयिता शक्तिः सर्वसाधनसामर्थ्यं देहस्य बलं वा । प्रा॰ स॰ । बहुत सामर्थ्य, बड़ा वीर्य । अतिक्रान्ता शक्तिं अत्या॰ स॰ अत्यन्तसामर्थ्यवाला (त्रि॰) अतिशयिता [illegible] प्रा॰ स॰ । बड़े बलवाला (त्रि॰) अतिक्रान्तशक्ति॰ । जिसके समान किसीकी सामर्थ्य न हो

अतिशक्वरी, (स्त्री॰) अतिक्रान्ता शक्वरी चतुर्दशाक्षरपादिका वृत्तिं अत्या॰ स॰ । एक छन्द जिसके प्रत्येक पादमें १५ अक्षर हों.

अतिशय, (पु॰) अति+शीङ्+अच् । अधिक । बड़ा । अतिक्रान्तः शयं हस्तं अत्या॰ स॰ । हाथको लांघनेहारा (त्रि॰)

अतिशयित, (पु॰) अति+शीङ्+क्त । अधिक [illegible]) अतिशयन

अतिशयित, (त्रि॰) अति+शीङ्+क्त) श्रेष्ठ [illegible].

अतिशयिन्, (त्रि॰) अति+शीङ्+इनि । श्रेष्ठ । अधिक । बहुत बड़ा । सुन्दर.

अतिशयोक्ति, (स्त्री॰) अतिशयेन उक्तिः [illegible], वच्+क्तिन् । अलंकारशास्त्रमें प्रसिद्ध अर्थालंकारका भेद । सा॰ द॰ १० परि

अतिशस्त, (त्रि॰) अतिक्रान्तः शस्तम् । हमसे अच्छ [illegible] । अनुशंसा [illegible].

अतिशायन, (न॰) अति+शीङ्+ल्युट् । अतिशयके "तरप्" प्र॰ पूर्वकेशीङ्ग् [illegible] । [illegible] (विभक्ती) प्रत्यय

अतिशायिन्, (त्रि॰) [illegible] । [illegible]

अतिशी, अ॰ आ॰ । [illegible] । [illegible] । ([illegible]) [illegible].

अतिशीत, (न॰) [illegible] बहुत [illegible] (त्रि॰).

अद्मर, (त्रि०) अत्तुं शीलं अस्य अद्-कर्तरि क्मरच्। खानेके स्वभाववाला। खाऊ.

अद्य, (अव्य०) अस्मिन्नहनि इदम्शब्दस्य निपातः सप्तम्यर्थे। आजका दिन। आजसे लेकर.

अद्यतन, (त्रि०) अद्यभवः, अद्य+ट्युल्तुडागमश्च। आजकी वस्तु। स्त्रियां ङीप्। अद्यतनी। आजवाली चीज.

अद्यत्वे, (अव्य०) इदम्शब्दस्य इदानीमित्यर्थे निपात०। अब.

अद्यश्वीना, (स्त्री०) अद्य श्वः परदिने वा प्रसोष्यते। अद्य+श्वस्+ख्रत्ययेः। आज वा कल जनेगी। वह गर्भवती स्त्री कि जिसका प्रसव निकट आरहाहो.

अद्रव्यं, (न०) न० त०। न द्रव्यम्। निमूल्यवस्तु। नाचीज। निष्प्रयोजन पदार्थ। निकम्मी चीज.

अद्रि, (पु०) अद्+क्रिन्। पर्वत। वृक्ष। सूर्य। एक प्रकारका मान.

अद्रिकर्णी, (स्त्री०) अद्रिः अद्रिलतेव गिरिवल्मूषिका तस्याः कर्णः कर्णतुल्यं पर्णं यस्याः। गौरादित्वात् ङीप्। [illegible] नाम एक बेल.

अद्रिकीलता, (स्त्री०) अद्रय. [illegible] कीला. [illegible] ब०। बडे २ पर्वत जिसके मानो कील हैं। पृथिवी.

अद्रिज, (न०) अद्रौ जायते जन्+ड ७ त०। शिलाजतु [illegible] पर्वतसे उत्पन्न। जो पर्वतसे उत्पन्न हुआ। जो कुछ पर्वतपर उत्पन्न हो.

अद्रितनया, (स्त्री०) अद्रेर्हिमालयस्य तनया। पार्वती.

अद्रिभिद्-द्, (पु०) अद्रिं भिनत्ति भिद्+क्विप् ६ त०। इन्द्र। पर्वतोंको काटनेवाला.

अद्रिभू, (स्त्री०) [illegible] भू+क्विप् ७ त०। [illegible] (वह पर्वतपर उत्पन्न होती है)

अद्रिराट्, (पु०) [illegible] स० स०। हिमालय पर्वत.

अद्रिसार, (पु०) [illegible]। जो पर्वतके [illegible].

अद्रीश, (पु०) [illegible] ६ त०। हिमालय, शिव, [illegible]

अद्रोह, (न०) [illegible] (अपने समान) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible]। [illegible] ([illegible]) [illegible] (पु०)

अद्वयवादिन्, (पु०) [illegible]

अद्वयाविन्, (त्रि०) अद्वयं अस्त्यर्थे विनिः छन्दसि दीर्घः। दो (देव और पितृयान) मार्गोंसे रहित.

अद्वयु, (त्रि०) द्वयं द्विप्रकारः अस्ति अस्य वा-उ। न० ब०। द्वैत (दो प्रकार) से रहित। भीतर और बाहिरसे समरूप (एकरूप).

अद्वितीय, (त्रि०) न द्वितीयः सदृशो यस्य न० ब०। अपने समान दूसरेके बिना। केवल। एक परमात्मा। [illegible]

अद्विपेण्य, (त्रि०) न० त०। न द्विष् एण्य। न विरोध करने लायक.

अद्वेषस्, (त्रि०) द्विष् असुन्। न० त०। द्वेष (वैर) रहित। प० पु०। वैर न करना.

अद्वैत, (त्रि०) द्विधा इतं भेदं गतं द्वीतं तस्य भावः तदस्ति यस्य ब०। सजातीयादि भेदशून्य वेदान्तपरमात्मा.

अद्वैतवादिन्, (त्रि०) अद्वैतं सर्वं एव चिदात्मकं वदतीति, वद्+णिनि। जो कुछ है सभी चैतन्यस्वरूप है ऐसा बोलनेहारा। सीपीमें चांदी, और रस्सीमें जैसे सर्प की प्रतीति होती है और उनके यथार्थ ज्ञान होनेसे जैसे चांदी और साँपकी बुद्धि निवृत्त होजातीहै, वैसे ही यह चराचर प्रपञ्च चैतन्य आत्मामें प्रतीत होता है और चैतन्य आत्माके यथार्थ ज्ञान होनेपर सम्पूर्ण प्रपञ्च आडम्बर निवृत्त होजाताहै, इस प्रकार कथन करनेहारा वेदान्ती। बुद्धविशेष (जो संपूर्ण बाहिरकी वस्तुको ज्ञानस्वरूप स्वीकार करता है).

अधःक्षिप्त, (त्रि०) अधोमुखेन क्षिप्तम्, क्षिप्+क्त स० त०। नीचे मुखके भार रखा गया। झुकाया हुआ। औंधे मुँ किया गया। नीचे रखा गया.

अधन, (त्रि०) नास्ति धनं स्वाधीनतया यथेष्टं व्ययार्हं यस्य ब०। भार्या, पुत्र, दास आदिके पास धन होने भी वे उस धनको अपनी इच्छापूर्वक अपने अर्थमें स्वाधीन भोग नहीं सके, क्योंकि वे जो कुछ धन कमाते हैं वह उनके स्वामीका है इसलिये वे धनहीन हैं। धनरहित। जिसके पास थोडा धन हो। "भार्या पुत्रश्च दासश्च त्रय एवाधनाः स्मृताः। यत्ते समधिगच्छन्ति यस्य ते तस्य तद्धनम्" इति स्मृतिवचनम्.

अधन्य, (त्रि०) न धन्यः न० त०। दुःखी। [illegible] अभागा। दैवसे मारा हुआ.

अध पुष्पी, (स्त्री०) अधोमुखानि पुष्पाणि अस्य, [illegible] ङीप्। मुख्यः अधोमुख [illegible]

अधम, (त्रि०) अव+अम [illegible] अधोभाग [illegible] निकृष्ट। नीच। [illegible] [illegible].

अधमर्ण, (त्रि०) अवश्य देयं ऋणं तत् अधमं शोध्यं यस्य ब० । ऋण लेनेहारा । कर्जा उठानेहारा । कर्जाई.

अधमाङ्ग, (न०) अधमं अङ्गं कर्म० । चरण । पाँव । पाद.

अधर, (पु०) न ध्रियते, धृ+अच् न० त० । ऊपर वा नीचेका ओठ (होठ) । पृथिवीके साथ न मिला हुआ । नीचे । तल (त्रि०).

अधरात्, (अव्य०) अधर+प्रथमायाः पञ्चम्याः सप्तम्या वा आति अस्तलोपः । नीचेका भाग । नीचेसे.

अधरेण, (अव्य०) अधरस्मिन् देशे, काले, दिशि वा अधर+एनप् नीचे । पश्चिम दिशा.

अधरेद्युस्, (अव्य०) अपरस्मिन्नहि, अधर+एद्युस् । परदिन । परसों जो आवेगा.

अधरोत्तर, (त्रि०) अधरः-उत्तरश्च । स० द्वं० । उत्कृष्ट और निकृष्ट । नीचे और ऊपर । छोटा बड़ा । बुरा और अच्छा । अधरं च तत् उत्तरम् । कर्म० । दुष्ट (बुरा) उत्तर.

अधरोष्ठ, (पु०) अधर ओष्ठः । कर्म० । नीचेका होट.

अधर्म, (पु०) ध्रियतेऽनेन, धृ+मनिन्, विरोधे न० त० । धर्मका विरोधी वेदद्वारा निषेध किये गये कामसे उत्पन्न हुआ पाप । जीवोंको मारना । पुण्यरूप धर्मसे शून्य (त्रि०) गुण किंवा धर्मसे रहित परब्रह्म (न०)

अधःशय्या, (स्त्री०) शीङ्+क्यप् शय्या ७ त० । पृथिवीपर लोटना, भूमिशयन.

अधश्चरः, (पु०) अध कर्मणि सेवादौ चरतीति चर्+ट । चोर । नीचस्थानमें जानेहारा (त्रि०) स्त्रियां ङीप्.

अधस्, (अव्य०) अधर+असि, अधरशब्दस्याने अधादेशश्च । पाताल । कोई स्थान जो नीचे हो । अर्थवशसे प्रथमा पञ्चमी और सप्तमी विभक्तिके अर्थमें अनुमान किये जाते हैं.

अधस्तात्, (अव्य०) अधर+अस्ताति । अध शब्दकी भांति नीचेका अर्थ.

अधि, (अव्य०) न+धा+कि । अधिकार । ऐश्वर्य । हद । ज्यादती । आधीयते दु खमनेनेति आ+धा+किंवा ह्रस्व । मनकी पीड़ा (पु०).

अधिक, (त्रि०) अधि+क । ज्यादा । अनेक । अर्थालंकारभेद.

अधिकरण, (न०) अधि+कृ+ल्युट् । आश्रय (जैसे न्यायाधिकरण) व्याकरणशास्त्रमें प्रसिद्धकर्ता और कर्मद्वारा क्रियाका आश्रय अधिकरण नाम कारक (अर्थात् सप्तमी विभक्ति) जैसे "गेहे स्थाल्यामन्नं पचति" इत्यादि उदाहरणमें घर कर्ताद्वारा, और थाली कर्मद्वारा, परम्परासे पकानारूप क्रियाका आश्रय है । "अधिक्रियते निर्णयार्थं विचारोऽस्मिन्" । पूर्वोत्तरमीमांसाशास्त्रमें प्रसिद्ध एक अर्थको प्रतिपादन करनेहारा न्यायसमूह विषय, संशय, पूर्वपक्ष, सिद्धांत, निर्णयस्वरूप पांच अंगोंको बोधन करनेहारा वाक्यसमुदाय । तत्र विचारनेके योग्य वाक्यको विषय, क्या यह है वा नहीं इस प्रकार विषयीभूत वाक्यार्थमें संशय करना विकल्प, संशयास्पद दोनों पक्षोंके बीच असत् (झूठे) पक्षमें युक्तिदर्शन वाक्य पूर्वपक्ष, पूर्वपक्षोक्त युक्तिको खण्डन कर सत् (सच्चे) पक्षमें युक्तिको दिखानेहारा वाक्य सिद्धान्त, अनन्तर सिद्धान्तमें सिद्ध हुए अर्थका उपसंहार (समाप्त) करनेहारा वाक्य निर्णायकवाक्य कहाजाता है । (इसका विस्तार वाचस्पत्याभिधानमें बहुत पाया जाता है).

अधिकरणविचाल, (पु०) अधिकरणस्य विचाल. अन्यथाकरणं, वि+चल्+घञ् ६ त० । द्रव्यकी दशाके भेदसे संख्याका भेद करना । एकको अनेक बनाना वा अनेकको एक करना इति भाष्यम् । एक राशिके पांच भाग करने किंवा पञ्चसहस्रको इकट्ठा करलेना (पांचोंका एक करना) । यह अधिकरणकी संख्याका विचाल समझना.

अधिकरणिकः, (पु०) (अधिकरणं आश्रयतया अस्ति अस्य ठन्) जिसका आश्रय अधिकरण (कचहरीका स्थान) है । न्याय करनेहारा । मजिस्ट्रेट । राजपुरुष.

अधिकर्द्धि, (त्रि०) अधिका ऋद्धिः यस्य । जिसकी बहुत सम्पदा हो.

अधिकर्मन्, (न०) (अधिकं कर्म) उत्कृष्ट वा मुख्य काम । सरबराही । सिरपर निरीक्षण.

अधिकर्मिक, (पु०) (न०) अधिकृत्य हट्टं कर्मणेऽलं अधि+कर्मन्+ट । दुकानका मालिक । हट्टका स्वामी । दुकानदारोंसे किराया लेनेहारा.

अधिकवाक्योक्ति, (स्त्री०) अधिकवाक्यस्य उक्तिः । बहुत वाक्यका कहना । किसी बातको बहुत बढ़ाकर कहना.

अधिकषाष्टिक-षाततिक, (त्रि०) साठ वा सत्तरसे अधिक मोलवाला.

अधिकाङ्ग, (पु०) अधिकोऽङ्गात् । कवचको धारण करनेहारे योधाओंसे कवचको दृढ़तासेरखनेलिये बांधीगई पट्टिका आदि ब० । जिसका अङ्ग अधिक हो । बढ़े हुए वा जियादा अङ्गवाला (त्रि०).

अधिकाधिक, (त्रि०) अधिकात् अधिकः । अधिक (बहुत) से अधिक.

अधिकाम, (त्रि०) अधिकः कामः यस्य । बहुत इच्छावाला । बड़ा कामी.

अधिकार, (पु०) अधि+कृ+घञ् । आरम्भ । स्वामित्व (इच्छापूर्वक क्रयविक्रयको सम्पादन करनेहारा) पैतृकाधिकार । स्वत्व (हक़) । लिखितैकसूत्रका सम्बन्धी

जैसे विहित कर्ममें ब्राह्मणादिका अधिकार है । राजाओंका छत्रसिंहासनादिधारणमें अधिकार है । जैसे इस व्यक्तिको छता पकडनेका अधिकार है । प्रकरण । व्याकरणशास्त्रमें प्रथम-सूत्रमें ग्रहण कियेगये पदादिकी उत्तरसूत्रमें अनुवृत्ति करनी (अधिकारसूत्र).

अधिकारविधि, (पु०) अधिकारे फलस्वाम्ये विधिर्वि-धानं, वि+धा+कि = त० कर्मसे उपजा फल भोगनेवा-लेको जतानेहारी विधि (नियम) जैसे "यजेत" इससे यज्ञसे उपजे फलको भोगनेवाला सर्वका अधिकारी बोधन किया है.

अधिकारिन्, अधिकारवत् (त्रि०) (अस्त्यर्थे-इनि-मतुप् वा) अधिकारवाला । प्रामाणिक । शक्तिवाला । हकदार.

अधिकार्थवचन, (न०) अधिकार्थस्य स्तुतिनिन्दाभ्यां आरोपितस्य वस्तुधर्मात् अतिरिक्तस्य वचनम्, वच्+ल्युट् ६ त० स्तुति वा निन्दासे आरोप कियेगये वस्तुके धर्मसे भिन्नका कथन करना । स्तुत्यर्थवाद । निन्दार्थवाद.

अधिकृ, (तना० उभ०) किसी काम करनेमें लायक होना । अधिकार होना । किसी कामके लिये मुखिया नियत करना.

अधिकृत, (पु०) अधि+कृ+क्त । आमदनी औ खर्चको देखैहारा । मालिक । कर्मजन्य फलका सम्बन्धी । जिसको किसी कामका अधिकार दिया गया हो (त्रि०).

अधिकृत्य, (अव्य०) उसकी बाबत । विषय.

अधिक्षिप्, तु० प० गाली देना । निन्दा करना.

अधिक्षिप्त, (त्रि०) अधि+क्षिप्+क्त । रक्खागया । निन्दा-किया गया । तिरस्कार कियागया.

अधिक्षेप, (पु०) अधि+क्षिप्+घञ् । तिरस्कार.

अधिगत, (पु०) अधि+गम्+क्त । जानागया । पायागया । स्वीकार कियागया.

अधिगन्तृ, (त्रि०) गम्-तृच् । ज्ञान करनेवाला । पानेवाला.

अधिगम, (पु०) अधि+गम्+घञ् । ज्ञान । पाना । माया.

अधीनः, (त्रि०) अधिगतः इनं । स्वामीके वश (कान्)-में बन्धा हुआ.

अधिगव, (त्रि०) न त्रि० त्रि० गवि इति अधिगवम् (अव्य० स०)। गौमें बन्दा वा लिया गया । गौका.

अधिगुण, (त्रि०) अधिकः गुणः यस्य । अच्छे वा अधिक गुणोंवाला । श्रेष्ठ । उत्तम.

अधिजिह्वः, (पु०) अधिका जिह्वा यस्य । अधिक वा बिना हुई जीभवाला सर्प (रोग).

अधिज्य, (त्रि०) अधिगता ज्या यत्र, अधिज्यं ज्या वा । जिसपर चिल्ला चढा हो । चिल्ला चढाये हुए.

अधिदन्ता, (स्त्री०) अधिगतदन्त । दांतके ऊपरकी मूर्ति.

अधिदन्तः, (पु०) अध्यारूढः (दन्तस्य उपरिजातः दन्तः) दांतके ऊपर चढा हुआ दांत.

अधिदेवता, (स्त्री०) देव एव देवता, अधिका देवता देवताया अपि ईश्वरत्वात् । सूर्य आदि ग्रहस्वरूप देवों ईश्वर रुद्र आदि (जिसका आश्रय ले सूर्य आदि अपना काम कर रहेहैं).

अधिदेवनं, (न०) अधि-उपरि दीव्यते यत्र । जिसके ऊपर द्यूत (जुआ) खेला जाता है । जुआ खेलनेकी मेज वा पटरा.

अधिदैवत, (न०) देवैव स्वार्थे अण् । हिरण्यगर्भ अन्तर्यामी पुरुष (पु०) वह चक्षुरादि इन्द्रियोंके अधि-ष्ठाता (आश्रय) । सूर्यादि देवताओंको अपने २ कर्म लगाकर चक्षुरादि इन्द्रियोंपर अनुग्रह करता है इसीसे सम्पूर्ण देवताओंका ईश्वर कहते हैं.

अधिनाथ, (पु०) (अधिकः नाथः) परमेश्वर.

अधिनाय, (पु०) (नी-घञ् अधि नीयते वायुना वायुसे ऊपर लाया जाता है । सुगन्ध.

अधिप, (त्रि०) अधि+पा+क । राजा । प्रभु । स्वामी.

अधिपति, (पु०) अधि+पा+डति । प्रभु । स्वामी.

अधिपाः, (पु०) अधिपाति-पा-क्विप् । Ved बहुत रक्षा करता है । राजा । ईश्वर । स्वामी.

अधिपु(पू)रुषः, (पु०) अधिकः पु (पू)रुषः । परम पुरुष । परमेश्वर.

अधिप्रज, (त्रि०) अधिका प्रजा यस्य । बडी प्रजावाला बहुत सन्तानवाला (पुरुष).

अधिभू, (पु०) अधिभवति स्वामीभवति । स्वाम्यर्थेऽधि०, भू+क्विप् । प्रभु । नायक । मालिक.

अधिमूल, (न०) मूलं प्राणिमात्रं अधिकृत्य वर्तमानम् । प्राणिओंमें रहनेवाला । परमात्मा परब्रह्म । सर्वव्यापी पुरुष.

अधिभोजनम्, (न०) अधिकं भोजनम् । अधिक (जिसका) भोजन (खाना) अधिकं भोजनं (मूल्यं वा) यस्य (त्रि०) । बहुत मोलवाला (कीमती).

अधिमन्थनं, (न०) मन्थ भावे करणे वा ल्युट् । अग्नि निकालनेके लिये बहुत रगडना.

अधिमात्र, (त्रि०) अधिका मात्रा यस्य । बहुत मात्रावाला । असीम । बेहद.

अधिमास, (पु०) अधिको दशमासात् अतिरिक्तः अमावास्यादिदर्शान्तमासो मासः प्रा० स० । मलमास अधिमास । सूर्यकी संक्रान्तिसे भिन्न मास । जिसमहीनेमें दो अमावस हों । लौंदका महीना.

अधिमांसक, (पु०) अधिको मांसो यत्र ब० स० । दन्त-प्रकारका दांतोंका रोग । "हनुसंधौ पश्चिमे दन्ते महाशोफो महारुजः । लालास्रावी कफकृतो विज्ञेयः सोऽधिमांसकः" वैद्यक.

अधियश, (पु०) अधिकृतः स्वामितया यशो यस्य ब० । विष्णु.

अधियोग, (पु०) अधि+युज्+घञ् । अधिको योगः प्रा० स० । ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध यात्राके लिये शुभ योग । वह यह है कि गमनसमयके लग्नमें, किंवा लग्नसे चौथे, पांचवें, सातवें, नवमें वा दशवें स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्रके मध्यमें दोनोंका एकस्थानपर होना । ऐसे योगमें यात्रा करनेवालेका कल्याण और शत्रुहानि यह फल है.

अधियोध, (पु०) आधिक्येन युध्यते, युध्+अच् । युद्धमें सबसे बड़ा योद्धा (बहादुर).

अधिरथ, (त्रि०) (अध्यारूढो रथं रथिनं वा) रथपर चढ़ा हुआ ।-थः (पु०) रथवाही । गाड़ी चलानेवाला । अंगदेशका राजा.

अधिराज्-जः, (पु०) अधिराजते राज+क्विप् । राजन् टच् वा । महाराजा चक्रवर्ती.

अधिराज, (पु०) अधिको राजा प्र० स० टच् । सार्वभौम चक्रवर्ती । राजाओंका राजा । बारह मण्डलका राजा.

अधिराज्य-ष्ट्रं, (न०) (अधिकृतं राज्यं वा राष्ट्रं अत्र)। पूरा राज्य । पूरी बादशाहत.

अधिरुक्म, (त्रि०) अधिगतं रुक्मं आभरणं येन । भूषणं (सोनेके) गहने वा जेवर वाला.

अधिरुह्, (न०) ऊपर उगना । चढ़ना.

अधिरूढ, (त्रि०) अधिरुह्-क्त । चढ़गया । बढ़गया.

अधिरोहणी, (न०) (अधि+रुह्+ल्युट्-चढ़ना ।-णी (स्त्री०) अधिरोहः साधनत्वेन अस्ति अस्याः । सीढी । सिढ़ी । पौड़ । डांग.

अधिरोहिणी, (स्त्री०) अधिरुह्यतेऽनया । अधि+ रुह्+ करणे ल्युट् "सीढ़ी" इस नामसे प्रसिद्ध लकड़ी आदिसे बना ऊंचे स्थानपर चढ़नेका साधन । पौड़िआं.

अधिवचनं, (न०) (अधिकं वचनं पक्षपातेन कथनं वचनं) किसी बातपर भलीभांति बातचीत करना । किसीके पक्षमें बोलना.

अधिवस्, भ्वा० प० । निवास करना । अपना स्थान बनाना । रहना.

अधिवस्त्र, (त्रि०) अध्यावृतं वस्त्रं येन । जिसने कपड़े पहिन लिये हों । पर्दा किये.

अधिवास, (पु०) अधि+वस्+घञ् । निवास । चन्दन माला आदिसे संस्कार । अधिवसयति देवता अनेन । अधि+वस्+णिच्+करणे घञ् । यज्ञके आरम्भ होनेसे प्रथम दिवस जिसमें देवतास्थापन आदि कर्म किया जाता है.

अधिवास, चुरा० प० । सुगन्धित (खुशबूदार) करना.

अधिवासन, (न०) अधि+वस्+णिच् अधिकरणे ल्युट् । यज्ञारम्भ होनेसे पहिला दिन, जिसमें देवताका स्थानादि कर्म किया जाता है । भावे ल्युट् । गन्धमाल्यादिसे पूजादिक संस्कार करना.

अधिविद्, तुदा० उभ० । पहिली स्त्रीके जीवित रहनेपरभी विशेष आपत्तिमें दूसरा विवाह करना.

अधिविन्ना, (स्त्री०) विद्+भावे क्त । अधि उपरि विन्नं विवाहोऽस्याः । प्रथम विवाहिता स्त्री । जिसपर सौति न आई हो । "आधिविन्नस्त्रियै देयम्" इति स्मृतिः ।

अधिवेत्तृ, (पु०) (विद्+कर्तरि तृच्) दूसरा विवाह करनेवाला पति (पहिलीके जीतेपर भी).

अधिशी, अदा० आत्म० । लेटना । सोजाना । विश्राम करना । निंदि । सुलाना.

अधिश्रयः, (पु०) श्रि भावे-अच् । आश्रय । आधार । (श्री+अच्) । उबालना । गरम करना.

अधिश्रयण, (न०) अधि उपरि श्रयणं पाकार्थं स्थापनं, श्रीञ् भावे+ल्युट् । चूल्हेके ऊपर टिकाना । चूल्हेके ऊपर रखकर पकाना । अधिकरणे ल्युट् । पाक करनेका स्थान । करणे ल्युट्, टित्वात् ङीप् । चूल्हा चूल (प्रसिद्ध).

अधिश्रि, भ्वा० उभ० । सोजाना । चढ़ना । आश्रयलेना । ("अधिश्री" भी होता है) अग्निपर चढ़ाना । गरम करना.

अधिश्री, (त्रि०) अधिका श्रीर्यस्य । बड़े पद (दरजेवाला । बड़ी शोभावाला) बड़ा धनी । चक्रवर्ती राजा.

अधिषवण, (न०) (अधिषूयते सोमः अत्र अधि षु आधारे ल्युट्) सोमरस निकालनेका पत्थर (पात्र) । (भावे ल्युट्) सोमरस निकालना.

अधिष्ठा, भ्वा० पर० । किसीके ऊपर बैठना । अधिकार (कबजा) करना । आश्रय लेना.

अधिष्ठातृ, (त्रि०) अधि+स्था+तृच् यत्नं । अध्यक्ष । मालिक । जो हरएक कामके होवे न होनेको देखता है । प्रबंध करनेहारा । मुन्तज़िम.

अधिष्ठान, (न०) अधि+स्था+ल्युट् । वेदान्तशास्त्रमें प्रसिद्ध आरोपका अधिकरण "अधिष्ठानावशेषो हि नाशः कल्पितवस्तुनः" अधिकरणे ल्युट् । नगर । करणे चक्का (न०) ल्युट् । पहिया । प्रभाव.

अधिस्त्रि, (स्त्रियं अधिकृत्य वर्तते) । स्त्री वा किसी औरतकी बाबत (बारेमें) । (स्त्री) अधिका स्त्री । विशेष स्त्री.

अधिस्पन्दं, (अव्य०) अधिकः स्पन्दो यथा स्यात्तथा । अतिशीघ्र । बहुत जल्दीसे.

अधिहरि, (अव्य०) हरौ इति (विभक्त्यर्थे) हरिमें.

अधी, अधि-इ । अदा० आत्म० । अध्ययन करना । पढ़ना । सीखना । याद करना.

अधीत, (त्रि॰) अधि+इङ्+क्त । पढाहुआ । भावे क्त । पढना (न॰)

अधीतविद्य, (पु॰) अधीता विद्या येन । बहुव्री॰ । जिसने विद्या समाप्त करली हो । वेदोंको पढ चुका.

अधीति, (स्त्री॰) अधि+इङ्+क्तिन् । पढना.

अधीतिन्, (त्रि॰) अधीतं अनेन । अधीत+इनि । जो पढचुका हो.

अधीन, (त्रि॰) अधिगतं इनं प्रभुं, गति॰ स॰ । आय- (त्त । काबूमें आगया । अधि+ख).

अधीर, (त्रि॰) धीरः धैर्यान्वितः न॰ त॰ । चपल । जो अपनेको काबूमें नहिं रख सक्ता.

अधीश, (त्रि॰) अधिक ईशः प्रा॰ स॰ । अधिकप्रभु । सार्वभौम । चक्रवर्ती । शाहाँनशाह.

अधीश्वर, (त्रि॰) अधिक ईश्वरः प्रा॰ स॰ । चक्रवर्ती । स्त्रियां ङीप् । अधीश्वरी.

अधीष्ट, (न॰) अधि+इष्+भावे क्त । आदरके साथ किसी कामके लिये आज्ञा देना । कर्मणि क्त । आदरसे नियोग किया गया.

अधुना, (अव्य॰) अस्मिन् काले । इदंशब्दस्य नि॰ । इस समय । अब.

अधुनातन, (त्रि॰) भवार्थे अधुना+ट्युल् । अब होने- वाला । अबका.

अधृष्ट, (त्रि॰) धृष् निर्लज्जत्वे+क्त न॰ त॰ । लज्जाशील.

अधृष्य, (त्रि॰) धृष्-प्रागल्भ्ये+क्यप् न॰ त॰ । जिसे ति- रस्कार करना वा दबाना उचित नहीं.

अधोक्षज, (पु॰) अक्षात् इन्द्रियात् जायते अक्षजं प्र- त्यक्षज्ञानं, जन्+ड ५ त॰ । अधरं अक्षजं यस्मात् हीनं त- स्य ब॰ । जिसका ज्ञान इन्द्रियोंसे प्रत्यक्ष नहीं होता । विष्णु । "अधो न क्षीयते जातु यस्मात्तस्मादधोक्षज" इति.

अधोजिह्विका, (स्त्री॰) अधरा जिह्वा जिह्विका अल्पार्थे क । अधःस्थिता जिह्विका कर्म॰ । जीभके नीचे छोटी जीभ ।

अधोभुवन, (न॰) अधःस्थितं भुवनं लोकः कर्म॰ । पाताल ।

अधोमुख, (त्रि॰) अधो मुखं यस्य ब॰ । जिसका मुख नीचेकी ओर है । ...

अधोलोक, (पु॰) अधःस्थितो लोकः कर्म॰ । पाताल.

अधोंऽशुक, (न॰) ... । अधोवस्त्र.

अध्यक्ष, (त्रि॰) अधिगतोऽक्षं व्यवहारं अत्या॰ स॰ । राजाके छाते पकडने आदिका काम जिसे दियागया हो । आमदनी और खर्चका हिसाब रखनेहारा । अश्नुते व्याप्नोति अधि+अक्ष+अच् । व्यापक । चारोंओर फैलाहुआ । अधिगतं मूलतया अक्षं इन्द्रियं गति॰ स॰ । प्रत्यक्षज्ञान । अर्शआदित्वात् अच् । प्रत्यक्षज्ञानका विषय । जो सामने दीखसके.

अध्यग्नि, (अव्य॰) अग्नौ अग्निसमीपे वा । विभक्त्यर्थे सामी- प्येर्थे वा अव्ययी॰ । आगमें वा आगके पास । अग्निकी साक्षीमें विवाहके समय स्त्रियोंके तईं दियागया धन आदि (न॰) । धर्मशास्त्रमें इसी अर्थका नियम कियागया है । यथा-"विवाहकाले यत् स्त्रीभ्यो दीयते ह्यग्नि- सन्निधौ । तदध्यग्निकृतं सद्भिः स्त्रीधनं परिकीर्तितम्" इति.

अध्यधीन, (त्रि॰) अधिकोऽधीनः प्रा॰ स॰ । जो बहुत आधीन हो । दास.

अध्ययन, (न॰) अधि+इङ्+ल्युट् । पढना । गुरुके मुखसे बोलेगयेके अनुसार बोलना । केवल अक्षरोंका पाठ करना "अध्ययन" है, यह वैदिकमत है । अर्थसहित अक्षरोंका ग्रहण करना "अध्ययन" है यह मीमांसकोंका मत समझना चाहिये.

अध्यर्ध, (त्रि॰) अधिकं अर्धं यस्य ब॰ । कोई चीज जो अपने आधेके साथ हो.

अध्यवसाय, (पु॰) अधि+अव+सो+घञ् । "यह ऐसेहीहै" इस प्रकार किसी विषयके विचारमें निश्चय कर- ना । "आत्मका यह धर्म है" यह नैयायिक कहते हैं । "बुद्धिका धर्म है" यह सांख्यादिका मत समझना । सां- ख्यतत्त्वकौमुदीमें इसका लक्षण यूं लिखाहै कि जिस स- मय इन्द्रियें विषयोंको ग्रहण करती हैं तो प्रत्येक विषय- की भिन्न वृत्तियें उपजतीहैं ऐसे समयमें रजस्तमोगुणको तिरस्कार कर बुद्धितत्त्वका जो सत्त्वगुणसे प्रकाश करना उसीका नाम अध्यवसाय किंवा भला बुरा करनेकी इच्छा कहतेहैं । अथवा चित् शक्तिसे प्रकाशितहुआ बुद्धिका "करना चाहिये" यह निश्चयरूप परिणाम अध्यवसाय है । उत्साह । दिलेरी । शौक.

अध्यात्म, (अव्य॰) आत्मनि देहे मनसि वा । विभक्त्यर्थे अव्ययी॰ । आत्मा, देह, किंवा चित्तका अधिकरण (आश्रय) । वह विद्या जिसमें आत्मतत्त्वका विचार हो । "समवेत्याध्यात्ममनुध्याने" इति नीलकण्ठः । स्वभाव । अथवा स्वरूप । ब्रह्म चैतन्य परब्रह्म । इसी अध्यात्म- विद्या आदि शब्दोंका वेदान्तादिमें यही अर्थ प्रसिद्ध है

अध्यापक, (त्रि॰) अधि+इङ्+णिच्+ण्वुल् । छात्र वा दूसरे अध्ययनको करानेहारा । पढानेहारा । उस्ताद.

अत्यन्त, [illegible]

अत्याचार, [illegible]

अत्यारूढ़, [illegible]

अत्याशेष, [illegible]

अत्यावश्यक, [illegible]

अत्याहार, [illegible]

अत्याग, (पु०) [illegible]

अत्याशित, [illegible]

अत्याहार, (पु०) [illegible]

[illegible] (वि०) [illegible] Ved. [illegible]

[illegible] (स्त्री०) [illegible]

अनमित्र, (वि०) [illegible]

अनर्वाण, (वि०) Ved. [illegible]

अनय, (वि०) [illegible]

अनय, (पु०) [illegible]

अनग्नि, (पु०) नास्ति अग्निः श्रौतः स्मार्तो वा यस्य । श्रौत वा स्मार्त विधिसे अग्निको स्थापन न करनेहारा गृहस्थ आदि । सर्वथा अग्निसे शून्य संन्यासी.

अनग्निदग्ध, (त्रि०) न अग्निना दग्धः । न० त० । जो आगसे नहीं जलाया गया.

अनघ, (त्रि०) नास्ति अघं पापं दुःखं व्यसनं कालुष्यं वा यस्य । पापशून्य । दुःखहीन । व्यसन (बुरी आदत) शून्य । स्वच्छ.

अनङ्कुश, (त्रि०) अङ्कुशेन न वश्यः । जो अंकुशसे वश नहीं किया जासक्ता । न वशमें रहनेवाला । स्वतन्त्र (जैसा कवि).

अनङ्ग, (त्रि०) नास्ति अङ्गं आकारो यस्य । आकाश । चित्त । कामदेव (पु०) जिसके अङ्ग न हों ऐसा कोई । (त्रि०).

अनङ्गक्रीडा, (स्त्री०) अनङ्गेन क्रीडा तृ० त० । कामदेव-सम्बन्धिनी क्रीडा (खेलन) । एक छन्द.

अनङ्गशेखर, (पु०) दण्डकभेद छन्दोविशेष । जहां क्रमसे गुरु लघु अक्षरोंकी रचना होती है.

अनच्छ, (त्रि०) न अच्छः निर्मलः न० त० । कलुष । अस्वच्छ । मैला.

अनञ्जन, (न०) न अज्यते निप्यते, अञ्ज् कर्मणि ल्युट् न० त० । आकाश जिसका किसीसे सम्बन्ध नहीं । परब्रह्म । अञ्जनं दोषस्तद्रहिते नारायणे । दोषरहित नारायण । (पु०) कोई वस्तु जो दोषरहित हो (त्रि०).

अनडुह्, (पु०) अनः शकटं वहति, नि० । एक नामसे प्रसिद्ध गौ । बैल । स्त्रियां गवि ङीपि । अनडुही और अनड्वाही.

अनणु, (त्रि०) न० त० । न छोटा.

अनति, (अव्य०) न अति । न बहुत.

अनद्धा, (अव्य०) न० त० । न अद्धा । Ved न सत्य । न स्पष्ट । न निश्चित । -पुरुषः । न सच्चा पुरुष । जो देवता, पितर, मनुष्योंका पुरुषार्थ प्रयोजन सिद्ध नहीं करता.

अनद्यतन, (त्रि०)-नी स्त्री० न त० । जो आजका नहीं (इसी अर्थमें लङ् आता है).

अनधिक, (त्रि०) न० त० । न बहुत.

अनधिगत, (त्रि०) न० त० । न प्राप्त किया । न जाना । न पढा । -मनोरथ (त्रि०) जिसका संकल्प पूरा नहीं हुआ -शास्त्र (त्रि०) । जिसने शास्त्र नहीं सीखा.

अनधीन, (त्रि०) न अधीनः न० त० । स्वतन्त्र । दुर्-[illegible] । [illegible] ([illegible]) एक स्वतन्त्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है.

अनध्यक्ष, (त्रि०) । न अध्यक्षः न० त० । जो प्रत्यक्ष न हो । जो प्रकट न हो । जो खयालमें न आसके.

अनध्याय, (पु०) अध्यायोऽध्ययनं अभावार्थे न० त० । न पढना । न अधीयतेऽस्मिन् काले इति अधिकरणे घञ् । वह समय जब पढना न चाहिये । जैसे "चातुर्मास्यद्वितीयासु मन्वादिषु युगादिषु । अष्टकासु च संक्रान्तौ शयने बोधने हरेः अनध्यायं प्रकुर्वीत ।" और भी जब बिजली गिरे । पृथिवी काँपे इत्यादि अनध्यायके काल हैं.

अननुभावुक, (त्रि०) (न अनुभवितुं शक्तः) जो खयाल (अनुभव) नहीं किया जा सका ।-ता । अनुभवमें न आसकना.

अनन्त, (पु०) नास्ति अन्तः गुणानां यस्य ब० । जिसके गुणोंका अन्त न हो । "गन्धर्व, अप्सरा, सिद्ध, किन्नर, उरग, और चारण जिसके गुणोंका पार नहिं पासके इसीसे वह अनन्त कहा जाता है" ऐसे लक्षणवाला विष्णु भादव । शेषनाग जिसका बहुत सिर होनेसे अन्त नहीं आसक्ता । शेषनागका अवतार बलभद्र (बलदेव) अन्तः परिच्छेदः देशतः कालतः वस्तुतश्च यस्य नास्ति देश, काल और वस्तुसे जिसका परिमाण नहिं हो सके अर्थात् परब्रह्म । आकाश । (न०) बडा पैकुण्ठ सिन्धुवार नाम वृक्ष । (पु०) अवधि (हद) शून्य इयत्ता (वह इतना है) शून्य ऐसी कोई वस्तु जिसकी अवधि या इयत्ता नहिं (त्रि०).

अनन्तगुण, (त्रि०) अनन्ता गुणा यस्य बहु० । अनन्त (असंख्यात) गुणवाला.

अनन्तजित्, (पु०) (अनन्तानि भूतानि जितवान्) सबको जीतनेवाला । वासुदेव । आर्हत देवताका नाम

अनन्तदृष्टिः, (पु०) अनन्ता दृष्टयः नेत्राणि यस्य बहु० । अनन्त नेत्रोंवाला । शिव । इन्द्र.

अनन्तर, (त्रि०) नास्ति अन्तरं व्यवधानं यस्य । जिसके बीच फरक (फासिला) नहो । अवकाशरहित.

अनन्तरजः, or-जा (पु० स्त्री०) (अनन्तरस्याः अनन्तरवर्णाया मातुः जायते) माताके ऊपरकी जातिवाले पिताके उत्पन्न । वैश्यवर्णकी माताके क्षत्रियवर्णका पुत्र या पुत्री.

अनन्तरजा, (स्त्री०) (अनन्तरं जायते) छोटी या बडी बहन (बहिन).

अनन्तर्गर्भिन्, (पु०) न अन्तः गर्भः यस्य, अन्तर्गर्भ इति न० त०) जिसके भीतर गर्भ न हो । कुशा नामी तृण जिसका पवित्रा बनाया जाता है

अनन्तविजयः, (पु०) अनन्तान् विजयते पराजयते अनेन । जिसके शब्दसे अनन्तोंको विजय करता है । युधिष्ठिरका शङ्ख.

अनन्तव्रत, (न०) अनन्तस्य व्रतं उपासनार्थंत्वात् ६ त० । भादोंके शुक्लपक्षकी चतुर्दशीके दिन करने योग्य अपने नामसे प्रसिद्ध एक व्रत.

अनन्ता, (स्त्री०) नास्ति अन्तोऽस्याः ६ ब० । जिसका अन्त न हो । विशल्यनामी औषध । एक प्रकारकी जड़ *जिसका नाम अनन्तमूल है । पार्वती । पृथिवी । दूर्वा ।* हरीतकी (हरड़) । आमलकी (आंवला) । गुड़ूची । अग्निमन्थ वृक्ष । अग्निशिखा वृक्ष । श्यामलता । पिप्पली.

अनन्तात्मन्, (पु०) *अनन्त आत्मा । परमात्मा.*

अनन्द, (त्रि०) (न नन्दयति नन्द्+णिच्+अच्) आनन्दरहित । नाखुश । अप्रसन्न.

अनन्यगतिक, (त्रि०) नास्ति अन्या गतिः यस्य न० ब० । जिसके लिये और कोई उपाय नहीं.

अनन्यज, (पु०) नास्ति अन्यत् यस्मात् तस्मात् जायते जन्+ड ५ त० । जिससे भिन्न और कुछ नहीं अर्थात् सम्पूर्ण वस्तुओंका भेद उसीका स्वरूप है, तात्पर्य, विष्णु कि उससे उपजा अर्थात् कामदेव.

अनन्यता, (स्त्री०) अनन्यस्य भाव । वही अभेद । वहीपन । अभिन्नता.

अनन्यपूर्व, (पु०) नास्ति अन्या पूर्वा यस्य । जिसकी दूसरी और कोई स्त्री नहीं ।-र्वा (स्त्री०) न अन्यः पूर्वो यस्याः । जो किसी दूसरेकी पहिले नहीं । वह स्त्री जिसका कोई दूसरा पति नहीं.

अनन्यभाज्, (त्रि०) न अन्यं अन्यां वा भजते किसी दूसरी व्यक्तिके साथ प्रीति न करनेवाला.

अनन्यवृत्ति, (त्रि०) न अन्यस्मिन् ध्येयभिन्ने वृत्तिर्यस्य ब० । जिसकी ध्येयके बिना दूसरेमें वृत्ति न हो । एकान्तचित्त.

अनन्यशासन, (त्रि०) नास्ति अन्यस्य शासनं यस्मिन् । जिसपर दूसरेकी आज्ञा नहीं चलती । स्वतन्त्र

अनन्यसदृश, (त्रि०) नास्ति अन्यः सदृशः यस्य ६ ब० । असाधारण । जिसके समान दूसरा न हो । निरुपम.

अनन्यसामान्य, साधारण (त्रि०) न अन्यस्यां सामान्यः । जो दूसरी स्त्रीमें एक जैसा नहीं । एकहीमें अधिक प्रीति करनेवाला.

अनन्यादृश, (त्रि०) न अन्य इव दृश्यते । जो दूसरेके समान न हो । एकही.

अनन्वय, (त्रि०) नास्ति अन्वयो यत्र ब० । अन्वयशून्य सम्बन्धरहित । अर्थालङ्कारका एक भेद.

अनप, (त्रि०) न सन्ति आधिक्येन आपः यत्र । जहां अधिक जल न हो (छपड)।

अनपकरणम्, कर्मन् क्रिया (न० स्त्री०) न अपक्रियते । न हानि (नुकसान) पहुंचाना । (धर्मशास्त्रमें) लिये हुवे कर्जको न चुकाना.

अन० ५

अनपत्य, (त्रि०) नास्ति अपत्यं यस्य । सन्तानरहित । पुत्रहीन । लावारिस वगैर.

अनपत्रप, (त्रि०) नास्ति अपत्रपा लज्जा यस्य ६ ब० । जिसे लज्जा (शरम) नहीं । निर्लज्ज (बेशरम).

अनपर, (त्रि०) नास्ति अपरः यस्य ब० । जिसके पास दूसरा कोई नहीं । अकेला.

अनपाय, (त्रि०) नास्ति अपायः नाशः यस्य ६ ब० । जिसका नाश न हो । अक्षय । अविनाशी.

अनपावृत, (त्रि०) न० ब० । न लौटनेवाला.

अनपेक्ष-क्षिन्, (त्रि०) न० त० । बेखयाल । बेपरवाह । उदासीन । असंबद्ध । स्वतन्त्र.

अनपेत, (त्रि०) न अपेतः गत. न० त० । जो चला नहीं गया । जो व्यतीत नहीं हुआ

अनप्नस्, (त्रि०) नास्ति अप्न. रूपं यस्य । Ved. रूपरहित । बेशक्ल । कर्महीन.

अनप्सरस्-रा, (स्त्री०) न अप्सरा न० त० । जो अप्सरा (स्वर्गकी वेश्या) नहीं । अप्सराके अयोग्य.

अनभिज्ञ, (त्रि०) न अभिज्ञः न० त० । न जाननेवाला । अज्ञ । अज्ञानी । बेखबर.

अनभिम्लान, (त्रि०) न अभिम्लानः न० त० । न कुम्हलाया हुआ.

अनभिशस्त, (त्रि०) Ved. निर्दोष । बे ऐब । निरपराध.

अनभिसन्धान, (न) बिनसंकल्प । बिनइरादा.

अनभ्यावृत्ति, (स्त्री०) पुनरुक्ति न करना । दुबारा न कहना.

अनभ्याश-श, (त्रि०) नास्ति अभ्यासः नैकट्यं यस्य । जो निकट न हो । जो दूर हो.

अनभ्र, (त्रि०) न अभ्रः मेघः न० त० । मेघ (बादल)-रहित । कुछ अकस्मात् होगया.

अनम, (पु०) न नमति अन्यान् । ब्राह्मण । (जो दूसरोंके झुकनेपर नहीं झुकता वरन आशीर्वाद देता है).

अनमित्र, (त्रि०) नास्ति अमित्रं यस्य ६ ब० । जिसका कोई शत्रु नहीं । दुश्मन बगैर.

अनमीव, (त्रि०) Ved. नास्ति अमीवः रोगः यस्य न० ब० । रोगरहित । तंदुरुस्त । चंगा भला । प्रसन्न । आराममें रहा हुआ.

अनम्र, (त्रि०) न नम्रः न० त० । न नम्र (झुकनेवाला) हलीम नहीं.

अनय, (पु०) अयः शुभावहो विधिः तदन्यः न० त० । अशुभदैव । दौर्भाग्य (बुरी किस्मत) । जूआ खेलनेवालोंके दहिनी ओर आना । नयो नीतिः नीञ्+अच् न० त० । नीतिका न होना ब० । वह जो नीतिसे इतर व्यवहार करे (त्रि०).

अनरण्य, (पु०) सूर्यवंशका एक राजा.

अनर्गल, (त्रि०) अर्गलं द्वाररोधकस्तम्भः ब० । दर्वाजेको रोकनेवाले थम्भेके विना (होडेके विना) । प्रतिबन्धकशून्य । विन रोक.

अनर्घ, (त्रि०) अर्घो मूल्यं न० ब० । अमूल्य । जिसका मोल न हो.

अनर्थ, (पु०) अर्थः प्रयोजनं विरोधे न० त० । प्रयोजनविरुद्ध । अनिष्ट (न चाहागया) ब० । अभीष्टरहित विष्णु (पु०) आप्तकाम होनेसे । अर्थोऽभिधेयः प्रयोजनं वा नास्ति यस्य ब० । जिसका अर्थ न हो । जिसका प्रयोजन न हो । अर्थरहित मात्र (त्रि०).

अनर्थक, (न०) अर्थोऽभिधेयोऽप्रधानत्वे नत्रा ब० । उरःप्रभृति० कप्समासान्तः । समुदायार्थशून्य प्रलाप । अर्थसे विना वचन । सम्बन्धरहित वाक्य । अर्थ (त्रि०).

अनर्थान्तरम्, (न०) अन्योऽर्थः अर्थान्तरं मयूर० त० । ततः न० त० । दूसरे अर्थके विना । अभेद । जिसका एकही अर्थ हो.

अनर्ध, (त्रि०) Ved. जो शिथिल न हो.

अनर्वन्, (त्रि०) अर्व् हिंसायां कनिन्, अर्वा सपत्नः, न० त० । शत्रुरहित । जो द्वेष करनेके योग्य नहीं.

अनल, (पु०) नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य बहुदाह्यदहनेऽपि तृप्तेरभावात् ब० । बहुत वस्तुओंको जलानेपरभी जिसे तृप्ति नहिं होती । अग्नि । आठ वसुओंमेंसे पांचवा वसु । कृत्तिकानामी नक्षत्र जिसकी देवता अग्नि है । चित्ता नामसे विख्यात चित्रक वृक्ष (पु०) । भेला नामसे प्रसिद्ध भल्लातकवृक्ष । देहमें स्थित, आयुको धारण करनेहारा पित्तनामी धातु । अव्ययी० । जलभिन्न । तृण आदिसे भिन्न । अन्+कलच् । साठ वर्षोंमें पचासवा वर्ष.

अनलप्रभा, (स्त्री०) अनलस्य प्रभेव प्रभा यस्य ब० । ज्योतिष्मतीनामी बेल.

अनलि, (पु०) अनितीत्यन्, अन्+क्विप् अन् अलिर्यत्र ब० । बकनामी वृक्ष (इस वृक्षके मधु अर्थात् पुष्परसोंसे भौंरे जीवन धारण करते हैं).

अनवच्छिन्न, (त्रि०) न अव+छिद्+क्त । निरन्तर । न कटा हुआ । लगातार.

अनवधानता, (स्त्री०) अवधीयते, मनः संयुज्यते कर्तव्यकर्मणि यथाविधि प्रवर्त्ततेऽनेन, अव+धा+करणे ल्युट् । अवधानं चित्तैकाग्र्यं तन्नास्ति यस्य तस्य भावः । जिससे कर्तव्यकर्ममें मन ठीक न लग सके । प्रमाद । भूल । कर्तव्यको अकर्तव्य जान न करना । अकर्तव्यको कर्तव्य जान करना.

अनवनामित, (त्रि०) अव+नम्+णिच् क्त । न झुकाया गया । न नीचे किया गया.

अनवद्य, (त्रि०) अवद्यं गर्ह्यं न० त० । अवद्यं निन्दा नास्ति । निन्दारहित । कलंकरहित.

अनवद्र, (त्रि०) न अवध्वंसी । अविध्वंसशून्य । न नाश होनेवाला । न नाश होनेवाला.

अनवम, (त्रि०) न अवमः । न छोटा । ऊंचा.

अनवरत, (त्रि०) अव+रम्+भावे क्त । अवरमः विरतिः यस्य ब० । लगातार । निरन्तर । उत्कृष्ट । अच्छा.

अनवराध्य, (त्रि०) अवरस्मिन् अर्धे भवः यत् न० त० । उत्कृष्ट । बड़ा । उत्तम । उम्दा.

अनवलम्ब-म्बन, (त्रि०) न० ब० । निराधार । जिसका आधार कोई नहीं । पराधीन.

अनवलोभन, (न०) पुंसवनके अनन्तर चौथे मासमें कर्तव्य गर्भका संस्कारविशेष इस नामसे प्रसिद्ध.

अनवसर, (त्रि०) अवसरति अत्र, अव+सृ+अप्, अवसरः उचितः कालः स नास्ति यस्य ब० । जिसका ठीक समय नहिं न० त० । ठीक समयका न होना । बेमौका.

अनवसान, (त्रि०) नास्ति अवसानं यस्य न० ब० । जिसका अन्त नहीं । अमर । स्थितिरहित.

अनवसित, (त्रि०) न० त० । न समाप्त हुआ । न पूरा हुआ । अनिश्चित.

अनवस्कर, (त्रि०) अवकिरयते क्षोप्यते, अव+कॄ+अप् सुडागमः । अवस्करो मल स नास्ति यस्य ब० । मलरहित । साफ । निर्मल । विमल.

अनवस्था, (स्त्री०) अव+स्था+अङ् अवस्थितिः न० त० । अवस्थाका अभाव । दरिद्रता । तर्कका दोषविशेष । उपपाद्यको सिद्ध करनेके लिये उपपादकका अनुसरण करना तर्क है । जिस तर्कमें उपपाद्य और उपपादककी विश्रान्ति नहिं वह तर्क अनवस्था दोषसे दूषित है.

अनवस्थान, (न०) अव+स्था+ल्युट् न० त० । अवस्थान-भाव न ठहरना । ब० । वायु (पु०) चञ्चलमात्र (त्रि०).

अनवान, (अव्य०) अवानः श्वासोच्छ्वासः स यथा न स्यात्तथा । बीचमें श्वास लिये विन । एकही श्वासके साथ । विन ठहराव (यति).

अनवाय, (त्रि०) अव इ घञ् अवायः=अवयवः न० ब० । निरवयव । अवयव (भाग) के जो विना हो.

अनवेक्षण, (न०) अव+ईक्ष्+ल्युट् । न० त० । न परवाह करना । न खयाल करना.

अनंश, (त्रि०) न० ब० । न पैत्रिक (बडोंका) अंश । हिस्साविरसा न लेनेका अधिकारी.

अनशन, (न०) अश्+ल्युट् न० त० । अशनाभाव । न खाना । उपवास । भोजनशून्य (त्रि०).

अनघ्य, (त्रि॰) नास्ति अघं यस्य न॰ ब॰ । अखण्डित । जिसके पास पोसा न हो.

अनश्वर, (त्रि॰)-री (स्त्री॰) अविनाशी । नित्य.

अनस्, (न॰) अनिति शब्दायते, अन्+असुन् । शकट । गाड़ा । छकड़ा । करणे ल्युट् । ओदन । भात । चावल । माता (स्त्री॰).

अनसूया, (स्त्री॰) असूय+यक्प्रत्ययात् असूय+अट् न॰ त॰ । गुणोंमें दोष आरोप करना असूया है उसका न होना । गुणोंको गुण कहना । अत्रिमुनिकी स्त्री.

अनस्थ-स्थिक, (पु॰) (न॰ ब॰) अस्थि (हड्डी)-रहित ।-(स्थः ।) अस्थिरहित शत्रु.

अनहन्, (न॰) अहः+अप्रशस्तं अहः । बुरा दिन । अभागी दिन.

अनहर, (त्रि॰) अह् ॰टिरवे, अप् न॰ त॰ । न टेढ़ा । सीधा.

अनाकाल, न॰ त॰ । दुष्काल । कुसमय । भैंसीया । न॰ त॰ । आ सम्यग् आकालिकत्वात् काल आकालः । अकाल । बदहाली.

अनाकुल, (त्रि॰) न आकुल न॰ त॰ । न घबराया हुआ । शान्त । एकाग्र । स्थिर । आकीर्ण व्याप्त । न मिलाहुआ मथन । साफ बयान.

अनाक्रान्ता, (स्त्री॰) आक्रमितुं अयोग्या सर्वतः कण्टकात्-त्वात् आ+क्रम्+क्त न॰ त॰ । चारोंओर कांटोंसे घिराहुआ होनेके कारण जो दबाया नहीं जा सकता । कण्टकारिका । जो आक्रमण नहीं किया गया (त्रि॰).

अनागत, (त्रि॰) आ+गम्+क्त, आगत, न॰ त॰ । भावी । आगे होनेवाला । न आनेवाला । जो मौजूद नहीं । आनेवालेके सिवा.

अनागतार्तवा, (स्त्री॰) न आगतं आर्तवं यस्याः ... न+आ+गम्+क्त न आगतं आर्तवं यस्याः ब॰ । जिसको (जो स्त्रीको प्रतिमास हुआ करता है) हुआ । ललित कन्या.

अनागामिधान, (त्रि॰) ... न ... । न ऐसा गया । जिसका अगर ... नहीं ... .

अनागामिन्, (त्रि॰) नास्ति आगामि ... । न ... । न ... .

अनागार, (त्रि॰) नास्ति अगारं यस्य न॰ ब॰ । निर्वासी । वैतुल्य

अनाचार, (पु॰) ... । ... न ... । बुरा आचार । आचारका न होना न॰ । ... (त्रि॰)

अनातप, (पु॰) ... न॰ त॰ । धूपका न होना । छाया न॰ । ... (त्रि॰)

अनातुर, (त्रि॰) न आतुर । न॰ त॰ । ... । न ... । ...

अनात्मक, (त्रि॰) नास्ति आत्मा स्थिरो यस्य । जहां आत्मा स्थिर न हो । मिथ्या । अनित्य

अनात्मज्ञ-वेदिन्, (त्रि॰) न आत्मानं जानाति ... न वेत्ति आत्मन्+ज्ञा+क । न॰ त॰ । ... । अपने आपको न जाननेवाला । मूढ़

अनात्मन्, (पु॰) ... । ... आत्मा से भिन्न न॰ त॰ । आत्मासे भिन्न ... आत्मा देहादि । "... ... उपरा । ..."

अनात्मनीन, (त्रि॰) न आत्मने हित ... । न॰ त॰ । जो अपने लिये हितकर नहीं

अनात्मवत्, (त्रि॰) ... । जिसका आत्मा अपने वशमें नहीं । जो ... नहीं ...

अनात्म्य, (त्रि॰) ... न॰ ब॰ । जिसका ... नहीं । ...

अनात्यन्तिक, (त्रि॰) न ... न॰ त॰ । जो सदा नहीं । ...

अनाथ, (त्रि॰) नास्ति नाथः ... न॰ ब॰ । जिसका स्वामी नहीं । ...

अनाथसभा, (स्त्री॰) ... न॰ त॰ । ... (...) ...

अनादर, (पु॰) ... । ... । ...

अनादि, (पु॰) नास्ति आदिः ... । जिसका आदि नहीं ... । ... (पु॰) ... । ... (त्रि॰)

अनादृत, (त्रि॰) न आदृत न॰ त॰ । ... । तिरस्कृत ...

अनादेय, (त्रि॰) न आदेय ... । न लेने ... । ...

अनाद्यन्त, (त्रि॰) ... । जिसके आदि ... ।

अनाद्रि, (त्रि॰) ... ।

अनाधिदिर, (...) ... ।

अनाभू, (त्रि०) आभिमुख्येन भवति इति आभू=भोक्ता न० त० । न स्तुति करनेवाला । न सम्मुख होनेवाला । Ved.

अनामन्, (न०) अननं अनः अन्+अच्, अनं जीवनं, अमयति, रुजति, अम्+अनि । जीवनको बिगाडनेहारा । बवासीरका रोग । जिसका नाम न हो ऐसा मलमास (पु०) इस मासमें वैदिककर्म नहिं होते इसलिये नामरहित है । नामशून्य (त्रि०).

अनामय, (पु०) अम्+घञ्, आमं तापं याति अनेन, या+क । आमयो रोगः न० त० । रोगका न होना । आरोग्य आराम न० ब० । रोगशून्य (त्रि०).

अनामा, (स्त्री०) ब्रह्मणः शिरश्छेदनपापजनतया ग्रहणायोग्यत्वात् नास्ति नाम ग्रहणयोग्यं यस्याः ब० । अजन्तत्वात् टाप् । इस नामसे प्रसिद्ध मध्यमा और कनिष्ठा अङ्गुलीके बीचकी अङ्गुली । स्वार्थे कः । इसे अनामिकाभी कहते हैं, इसी अङ्गुलीसे महादेवने ब्रह्माके शिरको काटा था, यह पुराणमें प्रसिद्ध है । इसीलिये इस अङ्गुलीको पवित्र करनेके आशयसे इसमें पवित्रनामक कुश धारण किया जाता है

अनायत्त, (त्रि०) न आयत्तः । स्वाधीन । दूसरेके आधीन नहीं । खुदमुख्तार.

अनायन, (त्रि०) न आयनं चालनं यत्र । न हिलनेवाला । एकान्त । निश्चित । पक्का.

अनायास, (पु०) आ+यस्+घञ् । अल्पार्थे न० त० । प्रयत्नका न होना । अल्प यत्न । थोडी मिहनत । बिना क्लेश । ब० । जो प्रयत्न नहिं करता (त्रि०).

अनायासकृत, (न०) अनायासेन अल्पप्रयत्नेन कृतं न० त० । थोडेही परिश्रमसे सिद्ध होने योग्य काथ आदि । थोडी मिहनतसे किया गया.

अनायुष्य, (त्रि०) आयुषे न हितं न० त० । जो आयुके लिये हितकर नहीं । दीर्घ जीवनको नाश करनेवाला (अधिक भोजन आदि).

अनारत, (त्रि०) न आरत. न० त० । न ठहरनेवाला । न रुकनेवाला । निरन्तर । लगातार.

अनारत, (न०) आ+रम्+क्त, आरतं विरतिः, अत्यन्ताभावे न० त० । कभी न ठहरना । सन्तत । अविरत । अविच्छेद । लगातार ब० । कभी न ठहरनेहारा (त्रि०).

अनारभ्य, (त्रि०) न० आरब्धुं योग्यः । न आरम्भ करने लायक.

अनारम्भण, (त्रि०) न आरम्भणं आश्रयः । आश्रयरहित । निराधार.

अनारोग्य, (त्रि०) नास्ति आरोग्यं यस्मात् न० ब० । स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) को बिगाडनेवाला.

अनार्जव, (पु०) ... ब० । कुटिलता । रोग । ... न होना । ... (त्रि०)

अनार्तव, (त्रि०) ... न हुआ । बे मौसमी (फूल आदि)

अनार्य, (त्रि०) न आर्य. । न० त० । जो आर्य (... पुरुष) नहीं । जो आदरका पात्र नहीं । शूद्र.

अनार्यक, (न०) न० अनार्यदेशे आर्यावर्तभिन्ने ... म्लेच्छादौ भवः । अनार्य+क । अगुरुकाष्ठ । ... देशे तस्मिन् जायते जन्+ड । अनार्यदेशमें ... हुआ (त्रि०)

अनार्यतिक्त, (पु०) अनार्यकिरातदेशे तिक्तः ... ष० त० ... चिरायता नामसे प्रसिद्ध मुनिम्ब वृक्ष.

अनालोचित, (त्रि०) न आलोचित । न देखा ... न विचारा गया । न परीक्षा किया गया.

अनावर्तिन्, (त्रि०) वृत्+णिनि न० त० । न लौटनेवाला ...

अनाविद्ध, (त्रि०) आ+व्यध्+क्त न० त० । न ... गया । न हानि पहुंचाया गया.

अनाविल, (त्रि०) न आविलः मलिनः न० त० । ... मैला । न कीचडवाला । शुद्ध । साफ.

अनावृत्ति, (स्त्री०) आ+वृत्+क्तिन् न० त० । अभ्या... सका न होना । आगमनका न होना । बहु० । ... (त्रि०) न अभ्यास करनेवाला । न दुहरानेहारा.

अनावृष्टि, (स्त्री०) आ+ईषद्‌-वृष्+क्तिन् न० त० ... थोडीसी वर्षाका न होना । खेतीको नाश करने... उपद्रव । ईतिओंमेंसे एक.

अनाश, (त्रि०) नास्ति आशा यस्य न० ब० । जिसकी ... आशा नहीं । निराश । बेउम्मीद.

अनाशक, (पु०) आ सम्यक् यथेच्छं आशः अशनं, ... अश्+घञ् न० त० । यथेच्छ भोगाभाव । अपनी इच्छाके अनुसार भोगका न होना । "तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति यज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेनेति" श्रुतिः...

अनाशकायन, (न०) न नश्यति अनाशकः आत्मा ... अयनं प्राप्त्युपायः । आत्माके पानेका उपाय । ब्रह्मचर्य... न विवाह हुआ । ध्यानपर.

अनाशिन्, (पु०) न नश्यति, नश्+णिनि न० त०, ... अश्नाति कर्मफलं अश्+णिनि न० त० । या नाशरहित ... कर्मफलके न भोगनेहारा । परमेश्वर.

अनाश्रमिन्, (पु०) नास्ति आश्रमः अस्य । गृहस्थ ... आश्रमरहित । किसी आश्रममें नहीं.

अनाश्रव, (त्रि०) न+आ+श्रु+अ । न आशृणोति । ... सुननेवाला । कानसे बधिर (बहिरा).

नाश्वन्, (त्रि०) न+अश्+क्वनिप् नि० । जिसने भोजन नहीं किया.

नास, (त्रि०) आस्यते=निरस्यते दीयते अनेन इति आः=मुखं तद्रहितं त्यागाभावेन अस्य । मुखरहित । बोलनेकी शक्तिसे रहित । न बोलनेवाला.

नासादित, (त्रि०) न+आ+सद्+णिच्+क्त । न प्राप्त किया । न पाया । न मिला.

नास्था, (स्त्री०) आ+स्था+अङ् । आस्था आदरः न०त० । अनादर । आदरका न होना ब० । जिसका आदर न हो.

नास्राव, (त्रि०) न आस्रावः न० त० । क्लेशरहित.

नाहत, (न०) आ+हन् भावे क्त । आहतं छेदो भोगो वा न० ब० । नया कपड़ा जो न फटा और न दूसरेने भोगा गया हो । तन्त्रशास्त्रमें प्रसिद्ध हृदयमें स्थित द्वादशदल (१२ पत्तोंवाला) कमल । "शब्दो ब्रह्ममयः शब्दोऽनाहतो यत्र दृश्यते । अनाहताख्यं तत् पद्मं मुनिभिः परिकीर्तितम्" इस लक्षणवाला । परा, पश्यन्ती, मध्यमा, और वैखरी इस प्रकार प्रसिद्ध वृत्तियोंमें मध्यमानाद अनाहत शब्दसे कही जाती है, क्योंकि वह हृदयपद्ममें उपजती है ब० । कोई वस्तु जो आघात (चोट)से रहित है (त्रि०).

नाहार, (त्रि०) न+आहारः न० त० । भोजनका त्याग कर (होना).

नाहूत, (त्रि०) न आ+ह्वे+क्त । न बुलाया गया । न निमन्त्रित किया गया । न पुकारा गया.

अनिकेत, (त्रि०) नास्ति निकेतः नियमेन वासो यस्य ब० । नियतनिवासशून्य । जो नियमसे एक स्थानपर नहीं रहता । परिव्राजक । संन्यासी.

अनिर्णीत, (त्रि०) न निर्+णी+क्त न० त० । निर्णय न किया गया । शास्त्रमें न लिया हुआ.

अनित, (त्रि०) अन+इत । न गया । न पहुँचा.

अनित्य, (त्रि०) न नित्य न० त० । जो सदा न हो.

अनिद्र, (त्रि०) नास्ति निद्रा यस्य न० ब० । नींदरहित । जिसको नींद नहीं आई । [illegible]

अनिन्द्य, (त्रि०) न० त० । [illegible] न करनेयोग्य

अनिभृत, (त्रि०) न+निभृत न० त० । न गुप्त किया हुआ । [illegible] । प्रकट । चंचल.

अनिमित्त, (त्रि०) नास्ति निमित्तं यस्य न० ब० । निष्कारण । जिसका कोई प्रत्यक्ष हेतु नहीं.

अनिमिष-मेष, (पु०) नास्ति निमिषः [illegible] इत, नि+मिष् [illegible] । जिसकी आँख नहीं झपकती । देवता । मछली । निमेषो [illegible] त्रिष्वपि च । जिसकी आँख कभी नहीं झपकती । विष्णु । न निमिषति पश्यतीति, नि+मिष्+क न० त० । [illegible] । कोई वस्तु जो किसीसे दृश्य हो (त्रि०).

अनियन्त्रित, (त्रि०) नि+यन्त्र+णिच्+क्त न० त० । नियमसे बाहिर । स्वतन्त्रतासे निकला गया । काबूमें न आनेवाला (ब०).

अनियम, (पु०) न+नियमः न० त० । नियम [illegible] न होना । अनियमित(त्रि०) बेकायदेका.

अनिर, (त्रि०) न इरितुं [illegible] ईर्+क+ट-इत्व । न चलाया जानेवाला । [illegible]

अनिरुक्त, (त्रि०) न निरुक्त न० त० । न स्पष्ट कहा गया । जिसका ठीक लक्षण नहीं हो सका.

अनिरुद्ध, (पु०) न केनापि युद्धेन निरुद्ध, [illegible] न० त० । प्रद्युम्नका पुत्र । उषाका पति । [illegible] (त्रि०) थोड़ा बोलनेवाली बाणी । वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, और अनिरुद्धनामी चतुर्व्यूहमें [illegible] न निरोध [illegible] [illegible] अनिरुद्धका अंश (त्रि०)

अनिरुद्धपथ, (न०) न निरुद्ध पन्था यत्र न० ब० । आकाश । जहाँ किसीकी रोक नहीं [illegible] । जो [illegible] न हो (त्रि०)

अनिर्देश्य, (त्रि०) निर्देष्टुं [illegible] हुआ [illegible] । निर्+दिश्+ण्यत् [illegible] न० त० । [illegible] गुण, क्रिया और संज्ञासे जिसे कह नहीं सकें । [illegible] । निर्विशेष परमात्मा ([illegible] "वह यह है" इस रीति निर्देश नहीं किया जा सकता)

अनिर्धारित, (त्रि०) न+निर्+धृ+णिच्+क्त । [illegible] । न निश्चय किया हुआ.

अनिर्वचनीय, (पु०) निर्वक्तुं [illegible] [illegible] [illegible] । जिसे [illegible] नहीं सके । [illegible]

अनिर्वाण, (त्रि०) न [illegible] न० । न [illegible] न किया गया । न बुझा हुआ

अनिर्विण्ण, (त्रि०) न+निर्+विद्+क्त । [illegible] । न [illegible] हुआ । न [illegible] हुआ

अनिर्वृति-ति, (स्त्री०) न+निर्+वृ+क्तिन् । [illegible] । [illegible]

अनिर्वेद, (पु०) न+निर्+विद्+घञ् । [illegible] न होना । [illegible]

अनिर्वैर, (त्रि०) न निर्वैर न० त० । [illegible] न होना ब० । [illegible] । [illegible]

अनिल, (पु०) अनिति अनेन अन्+इलच् । वायु (इसीसे सब जीव प्राण धारण करते हैं) । स्वाती नक्षत्र जिसकी देवता वायु है । "वातः पवमानस्तुतः" इसमें कहे हुएके अनुसार गणदेवताका भेद । आठ वसुओंमेंसे पाँचवाँ वसु.

अनिलघ्नक, (पु०) अनिलं वातरोगं हन्ति, हन्+क । ततः प्रशस्ते क । (बयड़ा) इस नामसे प्रसिद्ध वृक्ष । इसका फल वातरोगको नाश करता है.

अनिलव्याधि, (पु०) अनिलस्य+व्याधिः ष० त० । वायुका रोग । शरीरके भीतर प्राणादि वायुका विकृत होना.

अनिलसख, (पु०) अनिलस्य वायोः सखा टच् । वायुका मित्र । अग्नि.

अनिलान्तक, (पु०) अनिलो वातरोगस्तस्यान्तकः, अन्तं करोतीति, अन्त+णिच्+ण्वुल् । जीयापुति नामसे प्रसिद्ध वृक्ष.

अनिलान्तक, (पु०) अनिलस्य अन्तकः । वायुनाशक । इङ्गुदीका वृक्ष । अङ्गारपुष्प.

अनिलामय, (पु०) अनिलस्य आमय. षष्ठी० त० । वातरोग.

अनिलायन, (न०) अनिलस्य+अयनं मार्गः ष० त० । वायुका मार्ग । [illegible] । वायुकी गति.

अनिलाशन—अशिन्, (त्रि०) अनिलं अश्नाति । वायुको खाता है । सर्प । सर्प (कोष.)

अनिलोडित, (त्रि०) न+निर्+उड+क्त । न सुविचारित । अच्छी भाँति न सोचा गया.

अनिवर्तन, (त्रि०) न निवर्तते न+नि+वृत्+अन । न लौटनेवाला । स्थिर । दृढ़ । न लौटने योग्य.

अनिवार, (त्रि०) नास्ति निवारो निवारणं यस्य । जिसका निवारण न हो । अनिवार्य । [illegible] । निरन्तर अनिवार्य । न हटने लायक । न निवारण करनेके योग्य.

अनिविद्यमान, (त्रि०) न निविशते [illegible] न+नि+विश्+शानच् मुक् । कहीं न ठहरनेवाला । आरम्भ न [illegible] । [illegible] । [illegible].

अनिश, (त्रि०) [illegible] नास्ति यस्य ब० । [illegible] कोई न कोई [illegible] रहे । अविरत । निरन्तर । [illegible] बिना.

अनिसृष्ट, (त्रि०) न निसृष्ट न निर्+सृज्+क्त न । न [illegible] । [illegible] नहीं [illegible] । [illegible] नहीं हुआ.

अनिह्नुत, (त्रि०) [illegible] न० । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] हुआ.

अनिष्टदुष्टधी, (त्रि०) अनिष्टा दुष्टा च धीः यस्य ब० । बुरी और बिगड़ी हुई बुद्धिवाला । महानीच.

अनिष्टप्रसङ्ग, (पु०) अनिष्टः प्रसङ्गः कर्म० । न चाही हुई बातका हो जाना । मिथ्या नियम । युक्ति और पदार्थ सम्बन्ध.

अनिष्टानुबन्धिन्, (त्रि०) अनिष्टं अनुबध्नाति । उप० त० । अप्रिय विपत्तिका अनुसरण करता है । दुःख देनेवाला.

अनिष्टाशंसिन्, (त्रि०) अनिष्टं आशंसते उप० त० । दुःख का वृत्तान्त सुनाने वा सूचन करनेवाला.

अनिष्पत्ति, (स्त्री०) न निष्पद्यते न+निर्+पद्+क्तिन् । असमाप्ति । न पुरा होना । अपूर्णता । न सिद्ध होना.

अनिष्पत्रम्, (अव्य०) निःसृतं पत्रं पक्षो यत्र तादृशं न भवति । यह बाण जिसका परोंवाला भाग अतिवेगसे न चलनेके कारण दूसरी ओर निकल नहीं सका.

अनिस्तीर्ण, (त्रि०) न+निर्+तॄ+क्त । न लाँघा गया । न निकला गया । एक ओर न किया गया । लगाया गया दोष दूर न किया गया । उत्तर न दिया गया.

अनिस्तीर्णाभियोग, (पु०) न निस्तीर्णः अभियोग येन ब० । अपनेपर लगाये गये दोषका उत्तर न देनेवाला प्रतिवादी (Defendent).

अनीक, (न०) अनितिअनेन, अन्+ईकन् । सेना (क्योंकि यह जीवनको बचाती है) । न नीयते अपगार्यतेऽस्मात् । नी+क्विप् ब० कप् ह्रस्वाभावः । युद्ध (यहाँ कोई किसीसे मरनेसे नहिं हटाना).

अनीकस्थ, (पु०) अनीके युद्धे तिष्ठति स्था+क । युद्धमें सेना.

अनीकिनी, (स्त्री०) अनीकं युद्धं प्रयोजनतया अस्त्यस्याः अनीक+इनि । जिसका प्रयोजन लड़ाई करना है । सेना । हाथी आदिकी विशेषसंख्यावाली सेना । वह संख्या यह है कि हाथी २१८७ । रथ २१८७ । घोड़े ६५६१ । पैदल १०९३५ सम्पूर्णयोग २१८७०.

अनीड, (त्रि०) नास्ति नीडं यस्य ब० । निराश्रय । घरहित । अग्नि । निवासरहित.

अनील, (त्रि०) न नीलः=नीलवर्णः । न नीला । सित (श्वेत) आदि । अनीलवाजिन् पु० । सित घोड़ेवाला अर्जुनका नाम.

अनीश, (पु०) नास्ति ईशो नियन्ता यस्य ब० । जिसका शासन करनेवाला कोई नहीं । सबको नियमपर चलानेवाला विष्णु । न० त० । ईश्वरभिन्न । स्वामीसे भिन्न.

अनीश्वर, (त्रि०) न ईश्वर +ईट् न० त० । नास्ति ईश्वरः यस्य न० ब० । ईश्वरं अपनेसे श्रेष्ठ पुरुष हीन । जिसके निरन्तर स्वामीकी श्रद्धा नहीं । अशक्त । न काबू किया गया । असमर्थ । स्वाधीन.

अनीश्वरवाद, (पु०) नास्ति ईश्वर इति वाद वदनं । पर-मेश्वरको न स्वीकार करनेवाला । नास्तिक.

अनीह, (वि०) ईह+अट् न० ब० । जिसकी कोई इच्छा न हो । जिसे कोई पेशा (व्यापार) न हो.

अनु, (अव्य०) अन्+उ । उपसर्गविशेष । बाद । पीछे । निकट । सादृश्य । लक्षण । वीप्सा । इत्थम्भाव । भाग । हीन । आयाम । समीप आदि अर्थोंमें आता है.

अनुक, (वि०) अनुकामयते अनु+कम्+ड । कामनावाला । कामी । जिसको विषयकी इच्छा बहुत हो.

अनुकथन, पुरा० पर० अनुकथन+अन्वादेश=अनुकथनके पीछे दूसरी बातका वर्णन करना । अगली बातका प्रगट करना

अनुकम , (अव्य०) अनुकामयते अनु+कम्+क्विप् । निकट । [illegible]

अनुकम्प्, भ्वा० आ० । दया करना (रहम करना) । तरस करना । सहानुभूति दिखाना

अनुकम्पा, (स्त्री०) अनु+कम्प्+अ । दया । थोड़ासा हिलना.

अनुकरण, (न०) सादृश्ये अनु+कृ+ल्युट् । अनुकरण । नकल (वह देश, भाषा, आकारोंके समान कर दिखाना) । अनुक्रियतेऽनेनेति करणे ल्युट् । नकल करनेका साधन.

अनुकर्ष-ण, (पु०) अनुकृष्यते व्यवधानेन कर्षण, अनु+कृष्+घञ् । रथके नीचे रहनेवाली पहियेके ऊपर बंधीहुई लकड़ी । प्रथम सूत्रमें ग्रहण किये गये पद आदिको अगले सूत्रमें आवश्यक लिये खींचना.

अनुकल्प, (पु०) कल्प्यते विधीयते इति कृप्+णिच्+अच् । कल्पो विधिः अनु हीनः कल्पो मुख्यकल्पस्थाने, प्रा० स० । गौणकल्प । प्रतिनिधि । एकके स्थानमें दूसरी वस्तुकी कल्पना करना । जैसे "यदि दहन न हो तो दूधसे काम करना" यह अनुकल्प है.

अनुकाम, (वि०) कामम् यथेष्टः अनुकामो वा । इच्छानुसार । यथेष्ट मुक्ति । मनोनुकूल । अनुकामयते कम+अच् । इच्छासे पूर्ण । कामी । इच्छुक.

अनुकामीन, (वि०) यथेष्ट गमनशील [illegible] । [illegible] । [illegible] । इच्छापूर्वक गमन करनेवाला.

अनुकार, (पु०) अनु+कृ+घञ् । वेष, आचार, आदिमें सदृश करना.

अनुकाल, (वि०) कालमनु । यथावसर । यथासमय । ठीक वक्तपर हुआ.

अनुकूल, (वि०) कूलं अन्वेति [illegible] । अनुकूल । आनु० क० । मुवाफिक । हितकर [illegible] ।

महाव । अन्य [illegible] । [illegible] प्रसिद्ध एक प्रकारका नाटक । न० १ [illegible]

अनुकृ, तना० उभ० । पीछे करना । पीछे होना । अनुकरण । नकल करना

अनुकृष्, भ्वा० पर० । पीछे खींचना । [illegible] देना.

अनुक्रम, भ्वा० उभ०, दिवा० प० । पीछे जाना । अनुगमन करना । इच्छा करना । गिनना । [illegible] निकलनाला । गमनना.

अनुक्रम, (पु०) अनु+क्रम्+घञ न वृद्धि । पद्धति । क्रम । आनुपूर्व्यं । [illegible]

अनुक्रमणिका, (स्त्री०) [illegible] अनु+क्रम् करणे ल्युट् [illegible] । परिपाटीसे [illegible] । सूचिका ([illegible]) [illegible] । अनुक्रमणी । ([illegible]) [illegible] विषय [illegible] दिखाना आदि.

अनुक्रोश, (पु०) [illegible] । [illegible] अनु+क्रुश्+घञ् । दया । [illegible] पहुंचा हो (वि०).

अनुक्षर, [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible]

अनुग, (वि०) अनु+गम्+ड । पीछे चलनेवाला । सेवक । [illegible].

अनुगत, (वि०) अनु+गम्+क्त । [illegible] । [illegible] । पीछे आनेवाला । [illegible] । [illegible] जो [illegible] ग्रहण किया हो.

अनुगतार्थ, (वि०) [illegible] अर्थ [illegible] । [illegible]

अनुगम, भ्वा० प० । पीछे पीछे जाना । [illegible] । [illegible] करना

अनुगम, (पु०) [illegible] । पीछे [illegible] । [illegible] । [illegible]

अनुगर्जन, (पु०) [illegible] है । [illegible]

अनुगिरम्, (अव्य०) [illegible]

अनुगुण, (वि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] देनेवाला.

अनुगृ, भ्वा० प० । [illegible] [illegible]

अनुपुरुष, (पु०) अनुगतः अन्यं पुरुषम् । किसी पुरुषके पीछे २ चलनेवाला । अनुगामी.

अनुपूर्व, (पु०) अनुगतं पूर्वं परिपाटी । त्रिलिंग० । यथाक्रम । सिलसिलेवार.

अनुप्त, (त्रि०) वप्+क्त न० । न वपन किया, न बोआ गया बीज.

अनुप्तिम, (त्रि०) वप्+त्रिमक् (न०) बीजारोपण (बो०) विना ही बढ गया.

अनुप्राप्, स्वा० प० । पाना । लाभ करना । पहुंचना । पकडलेना.

अनुप्रास, (पु०) अनु+प्र+आस्+घञ् । स्वरवैषम्य (स्वरभेद) होने परभी तुल्यवर्णोंकी रचनावाला अलङ्कार । काव्यालङ्कारविशेष । तुल्यवर्णोंकी रचना.

अनुप्लव, (पु०) अनु+प्लु+अच् । सहाय करनेहारा । अनुचर । दास.

अनुप्लु, भ्वा० आ० । पीछे भागना.

अनुबन्ध, (पु०) अनु+बन्ध्+यथायथं भावादौ घञ् । बांधना । इच्छापूर्वक दोष करना । वातपित्तादि दोषोंमेंसे अप्रधान, धातु, प्रत्यय, आगम, और आदेशमें गुण, वृद्धि आदि कार्यविशेषके लिये लगाया गया कोई वर्ण, जो पदकी सिद्धिसमयमें इत् होकर लोप हो जाता है । मुख्यको अनुसरण करनेहारा अप्रधान । कथन किये गयेको अनुसरण करनेहारा संबन्ध । पीछे होनेवाला शुभ परिणाम । शास्त्रके प्रारम्भमें कथन करनेके उचित अधिकारी, विषय, प्रयोजन और सम्बन्धकी रचना । फलका साधन । पुत्र वा शिष्य जो अपने माता पिता वा आचार्यका अनुसरण कर्ता है । निरन्तर बन्धा होना.

अनुबन्धिन्, (त्रि०) अनुबध्नाति, अनु+बन्ध्+णिनि । सहचर । अनुचर । व्यापक । दास । फंसाहुआ । स्त्रिया ङीप्.

अनुबन्धी, (स्त्री०) अनुबध्यतेऽतिशयेन व्याप्रियतेऽनया अनु+बन्ध्+घञ् गौरा० ङीष् । हिक्का रोग । हिचकी । तृष्णा.

अनुबन्ध्य, (त्रि०) वधार्थं बन्धोऽनुबन्धः ण्यत् । यज्ञमें मारनेके लिये बांधीगई गौ आदि.

अनुबल, (न०) अनु-पश्चात् स्थितं बलम् । पीछे रहती हुई सेना । सहायक सेना.

अनुबोध, (पु०) अनु+बुध+णिच् घञ् । पहिले लेप कियेगये चन्दन आदिके गन्धको उद्दीपन करनेके लिये फिर मर्दन करना । पीछे जाना.

अनुब्राह्मण, (न०) ब्राह्मणसदृशो ग्रन्थः । ब्राह्मणके सदृश ग्रन्थ.

अनुभव, (पु०) अनु+भू+अप् । वह ज्ञान जो स्मरणसे भिन्न हो । स्मृतिसे भिन्न ज्ञान (जो किसी संस्कारके बिना हो).

अनुभाव, (पु०) अनुभावयति अङ्गोपन्यासेन, अनु+भू+णिच् कर्मणि घञ् । रसभावोंका विशेष नेत्र भौंहोंके कटाक्ष आदिसे उत्पन्न होना है । सामर्थ्य । कर्तरि अच् । अलङ्कारशास्त्रमें प्रसिद्ध रसको प्रकट करनेहारा । "जो मनोगत भावको साक्षात् प्रकट करें वे अनुभाव कहे जाते हैं" इस प्रकारके लक्षणवाला भौंका चढना आदि.

अनुभूति, (स्त्री०) अनुभूयते अनु+भू+क्तिन् । ज्ञान । पहिचान । प्रत्यक्ष न्यायमें प्रत्यक्षादि लब्ध ज्ञान.

अनुभ्रातृ, (पु०) अनुगतो भ्रातरम् । भाईके पीछे हुआ कनिष्ठ भ्राता । छोटा भाई.

अनुमत, (त्रि०) अनु+मन्+क्त । आपही किसी कार्यमें लगनेपर "हां यह कीजिये" ऐसे प्रोत्साहनके लिये मानागया । सम्मत । मंजूर.

अनुमति, (स्त्री०) अनु+मन्+क्तिन् । मान लेना । कृपा करना । मुवाद । अनुमन्यते कलाहीनत्वेऽपि पूर्णिमात्वादिकरणायानुज्ञायतेऽस्यां, अधिकरणे क्तिन् । कलासे हीन चन्द्रमावाली शुद्ध चतुर्दशीयुक्त पूर्णिमा तिथि.

अनुमत्त, (त्रि०) अनु+मद्+क्त । हर्षसे मतवाला हुआ.

अनुमन्, दिवा० आ० । मान लेना । स्वीकार करना.

अनुमन्तृ, (त्रि०) अनु+मन्+तृच् । आप उदासीन रहकर कार्यमें प्रवृत्तहुए दूसरेका उत्साह बढानेके लिये अनुमति करनेहारा । माननेहारा.

अनुमन्त्र, चुरा० आ० । पवित्र मन्त्रोंसे शुद्ध करना.

अनुमरण, (न०) अनु+मृङ्+ल्युट् । भर्ता मरगया किन्तु देह न मिला तो उसकी खडाओं आदि ले पृथक् चितापर स्त्रियोंका शरीर छोडना । पीछे मरना.

अनुमान, (न०) अनु+मि+मा वा+भावादौ ल्युट् । अग्नि (धोके देशमें रहनेहारे) का निश्चय करना । जैसे अग्नि धूमका व्यापक है तो धूम उसका व्याप्त हुआ इस प्रकार दोनोंका कईवार पाकस्थान आदिमें सहचार (इकट्ठा रहना) देख पीछे कभी पर्वत आदिमें उठरही निरन्तर वाले धूमका दर्शन कर वहां (पर्वत आदिमें) "अग्नि है" यह निश्चय होता है । करणे ल्युट् । अनुमानका साधन धूम आदि । श्रुतिहीको स्वत प्रमाण्य है, जहां साक्षात् श्रुति नहिं सुनीजाती वहां स्मृतिवाक्यसे श्रुतिवाक्य का अनुमान करना । इसप्रकार श्रुतिका अनुमान करने द्वारा स्मृतिवाक्यभी अनुमानपदसे कहाजाता है ऐसा मीमांसक कहते हैं.

अनुमिति, (स्त्री०) अनु+मि-मा वा क्तिन् । हेतु वा दर्शनसे किसी चीजको जाना.

अनुमित्सा, (स्त्री०) अनुमातुं इच्छा+अनु+मा+सन् अ टाप् । अनुमान करनेकी इच्छा.

अनुमासः, (पु०) अनुगतो मासः । अगला महीना ।–सम् (अव्य०) प्रत्येक मास महीनेबाद महीना.

अनुमोद, (पु०) अनु+मुद्+घञ् । दूसरे जो किया वह मुझको अच्छा लगा। इस प्रकार बोलना । औरके सुखसे सुखी । आनंद । खुशी.

अनुमृ, तुदा० आ० । म्रियते । मरे । पीछे मरना.

अनुया, अदा० प० । अनुसरण करना । पीछे जाना.

अनुयाज, (पु०) अनु+यज्+घञ् कुत्वाभाव. । अमावास्या और पौर्णमासीके अग प्रयाज आदि पांच याग.

अनुयात्रिक, (पु०) अनुयात्रा=अनुगमनं अस्ति अस्य-ठन् । अनुसारी । अनुचर । नौकर.

अनुयायिन्, (त्रि०) अनु+या+णिनि । सदृश । अनुचर। पीछे जानेहारा । दास आदि । स्त्रियां ङीप्.

अनुयुज्, रुधा० आ० । पूछना । प्रश्न करना.

अनुयोग, (पु०) अनुयुज्यते कथनाय नियुज्यते अनु+युज्+घञ् । प्रश्न । प्रश्न होनेपर पूछागया कहनेको प्रवृत्त होता है.

अनुरथ्या, (स्त्री०) रथ्या अन्वायतं स्थिता । पद्मार्ग । पावका रास्ता । पगडण्डी.

अनुराग, (पु०) अनु+रञ्ज+घञ् । अत्यन्तप्रीति । प्रेम । अनुरूपो रागः प्रा० स० । बहुत प्रीति करनेहारा (त्रि०).

अनुरात्र, (त्रि०) रात्रिं अनुगतः प्रा० स० । रातोरात । –त्रं-अव्य० । रात्रमें । प्रत्येक रात्रि । रात पीछे रात.

अनुराधा, (स्त्री०) २७ नक्षत्रोंमें १७ वां नक्षत्र । अनुगता राधां विशाखां । अत्या० स०.

अनुरुध, रुधा० उभ० । निरोध करना । रोकना । बन्द करना'

अनुरूप, (अव्य०) रूपस्य सादृश्ये योग्यत्वे वा अव्ययी० । समानता । एक जैसा । मानिन्द । योग्यता । "अर्थो-भापत्ति" सदृश । योग्य (त्रि०).

अनुरोध, (पु०) अनु+रुध्+घञ् । दबावट । अनुसरण । पीछा करना । सेवा करने योग्य स्वामी आदिकी अभि-लाषाको पूरा करनेकी इच्छा.

अनुलाप, (पु०) अनु वारं वारं लप्यते लप्+घञ् । बार-बार कहना.

अनुलेप, (पु०) अनु+लिप्+भावे घञ् । चन्दन आदिका मलना । "कर्मणि घञ्" । मल्यमया चन्दनादि.

अनुलोम, (पु०) अनु+लोमन् यथाक्रमे अव्ययी० अच् । यथाक्रम । क्रमानुसार सिलसिलेवार.

अनुलोमज, (पु०) अनुलोमेन यथाक्रमेण जातः, जन्+ड । विवाहमें क्षत्रिया आदि स्त्रियोंमें ब्राह्मण आदि उत्तमवर्णोंसे उत्पन्न हुआ मूर्धाभिषिक्त आदि संकीर्ण (मिलहुआ) वर्ण.

अनुवर्तन, (पु०) अनुगतो वर्तनमाराध्यादेरिच्छा अत्या० स० । अनु+वृत्+ल्युट् । स्वामी आदिकी पूरा करना । अनुरोध । लिहाज । दबावट । पीछ

अनुवंश, (पु०) वंशं अनुगतो वृत्तान्तः । परम्पराग न्त । खान्दानसे मिलता जुलता हाल.

अनुवाक, (पु०) अनु+उच्यते+वच्+घञ् । कुत्वं । ऋग्विशेष । ऋक् और मन्त्रसमूह । वेदका वेदका भाग । वाकनामसे प्रसिद्ध.

अनुवाक्या, (स्त्री०) अनु+वच्+ण्यत् कुत्वं । नामी ऋत्विग्भेदसे पढाने योग्य देवताके बुलानेका वैदिकस्तोत्र । वैदिकविधि.

अनुवाद, (पु०) अनु+वद्+घञ् । जानेगये अर्थको करना । सिद्ध (बनाहुआ) की रचना । दूसरे जानेहुए अर्थको शब्दसे कहना । कहेहुएको भाषामें कहना । तर्जुमा.

अनुवासन, (न०) अनु+वस्+ल्युट् । धूप आदिसे गन्धयुक्त करना । स्नेहयुक्त करना.

अनुविधा, जु० उभ० । नियम बनाना । आज्ञा कहेहुएके पीछे चलना.

अनुविधायिन्, (त्रि०) अनु+वि+धा+इन् । आज्ञा फर्मांबर्दार । हुक्म माननेवाला.

अनुवृत्त, (त्रि०) अनु+वृत्+क्त । फैलाहुआ । चल पीछे गया । प्रीतिवाला । पीछा करनेहारा.

अनुवृत्ति, (स्त्री०) अनु+वृत+क्तिन् । प्रवर्त्तनसे करना । अनुरोध । सेवा । दूसरेकी इच्छानुसार चलना । कृत्य । व्याकरणशास्त्रमें प्रसिद्ध पहिले सूत्रोंमें म कियेगये पद आदिको अगले सूत्रोंमें खेंचकर अ

अनुवेलम्, (अव्य०) वेला वेला । हरवक्त । नित्य.

अनुव्यध्, दि० प० । मारना । टकराना । बेधना.

अनुव्रज्या, (स्त्री०) अनु+व्रज्+क्यप् । अनुगमन रूप सेवन । सेवा । पीछा करना.

अनुव्रत, (त्रि०) अनुगतं व्रतं कर्म यस्य ब० । व्रती । धर्मात्मा । भक्त.

अनुशतिक, (त्रि०) शतेन क्रीतः शत+ठन् । ए खरीदा गया.

अनुशय, (पु०) अनु+शीङ्+अच् । अत्यन्त द्वेष । अनु पश्चात्ताप, पहिला वैर । क्रोधसे योग्य वस्तु

अनुशायिन्, अनु+शीङ्+इनि । कर्मके फल भोगनेके पीछे स्वर्ग पश्चात्तापयुक्त भूमिलोकमें फिरनेके लिये कर्मको प्राप्त हुआ जीव । पश्चा (त्रि०).

अनुशासन, (न०) अनु+शास्+ल्युट् । शासन । आज्ञा । हुकम । उपदेश । हुकम करना । "शिष्टानां अनुशासनं लक्षणादिना" इति करणे ल्युट् । असाधु (जो उपदेश करनेके योग्य नहिं) शब्दोंमेसे पृथक् कर उपदेश करने योग्य शब्दोंका समझाना । जैसे व्याकरणमें असाधुशब्दोंमेंसे साधुशब्दोंकी विवेचना कर बोधन किया जाता है.

अनुशी, अदा० आ० । लेटना । किसीके साथ सो जाना । पछताना.

अनुशीलन, (न०) अनु+चु० शील्+ल्युट् । बार बार विचारना । बार बार अभ्यास करना.

अनुशोचन, (न०) अनु+शुच्+ल्युट् । शोक । "शोचिं शुचि" शोक करना (इसी अर्थमें) "अनुशोचना" (स्त्री०).

अनुश्रव, (पु०) अनुश्रूयते गुरुपरम्परया उच्चार्यमाणः अनु अभ्यस्यते, श्रूयते एव न तु केनापि क्रियते वा अनु+श्रु+अप् । गुरुपरम्परासे उच्चारणके अनन्तर जिसका अभ्यास किया जाता है, अथवा सुनाही जाता है किसीसे किया नहिं जाता । वेद । (इसका सुना जानाही सबने माना है) बुद्धिमान्, Vad.

अनुषङ्ग, (पु०) अनु+षञ्ज+घञ् कुत्वं । दया । आसक्ति (किसी वस्तुमें लग जाना) । एक स्थानमें सुने गये पदको दूसरे स्थानमें अन्वयके लिये खेंचना । सम्बन्ध । प्रणाम.

अनुष्टुप्, (स्त्री०) अनु+स्तुभ्+क्विप् षत्वं । सरस्वती । आठ आठ अक्षरके पादका छन्द (अष्टाक्षरछन्द).

अनुष्ठान, (न०) अनु+स्था+भावे ल्युट् षत्वं । वेदशास्त्रमें विधान किये गये कर्मका करना.

अनुष्ण, (त्रि०) उष्णः दक्षः न० त० । आलसी । उष्णसे भिन्न (शीत) । कमल (न०) । आलसी जीव शीतकी पीडाके न होनेपरभी शीतपीडाका अभिनय (अवस्थानुकरण=नकल) करताहुआ करने योग्य काममें जड (मूर्ख)की नाईं होता है परन्तु चतुर, शीत होनेपरभी उसे कुछ न मानकर कर्त्तव्य करनेको (अजड बुद्धिमान्) हुआ लग जाता है, इस प्रकार जन (मूर्खबुद्धिमान्) को उष्ण और अनुष्ण कहा जाता है । (एक काम करनेके लिये गरम और दूसरा अर्थात् मूर्ख शीतकी नाईं होता है) । (यहां करनेवालेके अर्थमें कन् प्रत्यय लाकर) "अनुष्णक" शब्दभी सिद्ध होता है.

अनुष्णवल्लिका, (स्त्री०) अनुष्णा शीतला वल्ली इव, स्वार्थे क, टापि, अत । जो बेलकी नाईं शीतल हो । "स्वार्थे क" शीतल बेल.

अनुषक्त, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । -धन क्रि० वि० । [illegible] । [illegible] । किसीकी [illegible].

अनुसञ्ज्वर, [illegible] । [illegible].

अनुसन्धा, [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] करना । [illegible] । [illegible].

अनुसन्धान, (न०) अनु+सम्+धा+ल्युट् । [illegible] ([illegible]) । [illegible] करना ([illegible]).

अनुसरण, (न०) अनु+सृ+ल्युट् । पीछे जाना । पीछे करना । एक जैसा बनाना । "[illegible]" । अनु (इसी) अर्थमें.

अनुसृप्, भ्वा० प० । पीछा करना.

अनुसैन्यं, (अव्य०) सैन्यं अनुगतम् । सेनाकी पीठ.

अनुस्तरणी, अनु+स्तॄ+ल्युट् । बिछौना । [illegible] । आच्छादन । [illegible] । गौ जो मृत्युके बाद दान कीगई परलोकमें वैतरणी नदीके उतरने का देती है.

अनुस्यूत, (त्रि०) अनु+सिव्+क्त ऊट् । ग्रथित । (गुथाहुआ) निरन्तर मिलाहुआ (जैसे आकाश सबमें).

अनुस्वार, (पु०) अनु+स्वृ+घञ् । उदात्तादि स्वरवत्त्व स्वरणं एव स्वारः अनुगतः स्वारात् अत्या० स० । उदात्तादि स्वरवाले होनेसे स्वरवर्णोंही स्वार हैं उनके पीछे करनेहारा (स्वरके आश्रयसे उच्चारण किया बिन्दुमात्रसे प्रकाश कियागया) मुखसहित, नासिकासे बोलागया (अनुनासिक) वर्णोंका एक भेद "अनुस्वार और विसर्ग" इस प्रकार प्रारम्भ कर "ये आश्रय स्थानके भागी होते हैं" ऐसा कहनेसे अनुस्वारके लक्षण (ऊपर कहा गया लक्षण)हो सका है । बिन्दु(ं).

अनुहरण, (पु०) अनु+हृ+ल्युट् । देश, भाव, वेष आदिसे एक जैसा करना वा दिखाना । समान धर्मका आविष्कार करना.

अनुहृ, भ्वा० प० । अनुकरण । नकल करना.

अनूक, (पु०) अनु+उच्-समवाये-क-कुत्वं नि० । पिछला जन्म । कुल । स्वभाव (न०).

अनूचान, (पु०) अनु+वच्+कान नि० । शिक्षा आदि छः अङ्गोंसहित वेदको पढनेहारा । वेदोंके अर्थको अनुवचन (वर्णन) करनेमें समर्थ.

अनून, (त्रि०) ऊन+क न० त० । न थोडा । परिपूर्ण (भराहुआ) । सारा । अहीन (नकम) । नूनं (निश्चित) न० त० । अनिश्चित । जिसका निश्चय न हो.

अनूप, (त्रि०) अनुगता आपो यत्र ७ ब० । अप् स० । आत उत्वम् । जलप्राय देश (ऐसा स्थान कि जहां जलही जल हो) । उस स्थानमें सदा वास करनेहारा महिष (भैंसा) । "वह देश कि जहां बहुत जल, वृक्ष, धान, श्लेष्म, रोग हों उसे अनूप कहते हैं" । एक देशविशेष (पु०) । अनूपसार नामसे प्रसिद्ध एक देश.

अनूपज, (न०) अनूपे (जलप्रायदेशे) जायते अनूप+जन+ड ७ त० । आदा वा अदरक इस नामसे प्रसिद्ध । आर्द्रक । वह प्रायः जलमें उत्पन्न होता है । जो कुछ सजल देशमें उत्पन्न हो (त्रि०).

अनूरु, (पु०) न स्तः ऊरू यस्य ब० । सूर्यका सारथि अरुण । विनताका सबसे बड़ा पुत्र । अभी गर्भ पूर्ण नहिं हुआ और माताने अण्डेको फोड डाला इससे ऊरु आदि अङ्गोंमें विकलता होगई ऐसा पुराणमें प्रसिद्ध है.

अनूरुसारथि, (पु०) अनूरुः सारथिः (रथनियन्ता) यस्य ब० । जिसके रथको अनूरु हांकता है । सूर्य.

अनूच, (पु०) नास्ति अभ्यस्ततया ऋक् यस्य अच् स० । जिसने ऋक् अर्थात् ऋगादि वेदोंका अभ्यास नहिं किया । ऋदृश्य अनुपनीत (जिसका यज्ञोपवीत नहिं हुआ) बालक.

अनृत, (न०) ऋतं (सत्यं) न० त० । सत्यसे भिन्न, अयथार्थ (झूठ) । लोकमें प्रायः झूठा व्यवहार कथनमें ही देखाजाता है, कहीं वस्तुमेंभी जैसे रांग (रांग-धातुभेद) में चांदी आदि । यहां चांदी ऐसा ज्ञानभी होता है (वह मिथ्याज्ञान है) । तद्वति (त्रि०) ७ ब० । वाणिज्य (व्यापार) (न०) इसमें झूठ बहुत होता है.

अनृतु, (पु०) न ऋतुः न० त० । बेमोसिम । बेवहार । अयथार्थ समय.

अनेक, (त्रि०) एक न० त० । एकसे भिन्न बहुत । "पतन्त्यनेके जलधेरिवोर्मयः" इति माघः.

अनेकधा, (अव्य०) अनेक+धा । कई प्रकारसे.

अनेकप, (पु०) अनेकाभ्यां (मुखशुण्डाभ्यां) द्वाभ्यां पिबति पा+क । जो मुख और सूंडसे पीता है । हाथी.

अनेकरूप, (त्रि०) अनेकानि बहूनि रूपाणि अस्य ब० । जिसके बहुत रूप हों । चित्ररूप (जिसके रूप नाना-प्रकारके हों).

अनेकशः, (अव्य०) वीप्सार्थे कारके शस् । बहुत बार बार बार । अक्सर.

अनेकान्त, (त्रि०) न एक एव अन्तः परिच्छेदो यस्य ब० । जो एक रूपसे नहिं मापा वा विचार किया जाय । जिसके रूपका कुछ नियम न हो । जिससे अधिक और कोई न हो.

अनेकान्तवादिन्, (पु०) अस्ति नास्ति वा इति एकान्तं न वदति । वद्+णिनि २ त० । है, वा नहिं है, इस प्रकार नियमसे जो नहिं बोलता । बौद्धभेद.

अनेजत्, (त्रि०) न एजत् । न कांपनेवाला । सदा एक प्रकारका । सर्वदैकरूप ब्रह्म.

अनेडः, (पु०) न एडः न० त० । मूर्ख । बदमाश । बेवकूफ.

अनेडमूक, (त्रि०) एडो बधिरो मूको वचनशक्तिरहितः नास्ति यस्मात् ५ ब० । (काला, बोबा) इस प्रकार प्रसिद्ध सुने और बोलनेकी शक्तिसे रहित । (डोरा, गूंगा) । शठ । धूर्त.

अनेहस्, (पु०) न हन्यते, हन्+असि (धातुको "एह" आदेश हो जाता है) । जिसे मारा नहिं जाता । काल.

अनैकान्तिक, (पु०) एकान्तं नियतं प्राप्नोति, एकान्त+ठञ् न० त० । व्यभीचारी (हेतु और साध्यका साहचर्याभाव अर्थात् इकट्ठा न रहना) दुष्ट हेतु । जैसे धूमको सिद्ध करनेके लिये अग्निको हेतु कहना । जिसकी व्याप्ति (साहचर्यनियम) नियत नहिं । "अनैकान्त" भी इस अर्थमें हो सक्ता है.

अनैक्यं, (न०) (न ऐक्यं एकस्य भावः यत्) बहुतोंका होना । एक न होना । बहुतायत.

अनो, (अव्य०) न नो । नहीं.

अनोकशायिन्, (पु०) अनोके=अगृहे शेते शी+णिनि । घरमें न सोनेवाला । भिक्षुक.

अनोकह, (पु०) अनस शकटस्य अकं गतिं हन्ति-हन्+ड । जो गड्डेकी गतिको रोकता है । वृक्ष.

अनोङ्कृत, (त्रि०) ॐकृतः-न० त० । ॐ इस पवित्र अक्षरसे न सेवा किया.

अनौद्धत्य, (न०) न औद्धत्यं न० त० । अहंकारका न होना । विनय । दीनता.

अनौरस, (त्रि०) उरस्+अण् न० त० । एकही स्त्रीसे न उत्पन्न हुआ । जो सगा नहीं । जो किसीका अपना नहीं । बनावटी । दत्तक (जैसे पुत्र).

अन्त, (न०) अम्+तन् । स्वरूप स्वभाव । इसे पु० । न० नाश । कोना । सीमा (हद) । निश्चय । अवयव(अंग) । (पु०) निकट । मनोहर

अन्तःकरण, (न०) कृ+करणे ल्युट् । अन्तरभ्यन्तरे तद्वर्तिनस्तथा ज्ञानादीनां वा करणं कर्म० (त० । भीतरका साधन । अथवा भीतर रहनेहारे ज्ञान आदिका साधन । अथवा ज्ञान, सुख आदिका साधन भीतरका इन्द्रिय जो मन, बुद्धि, चित्त आदि पदोंसे बोला जाता है.

अन्तःकुटिल, (पु०) अन्तर्मध्ये कुटिलः । जो बीचमें कुटिल (टेढा) हो । बीचमें टेढे आकारके अवयवोंवाला शंख । जिसका मन (अन्तःकरण) टेढा हो.

अन्तःपथ, (त्रि०) अन्तः समागतः पन्थाः । भीतर आयहा मार्ग । रास्ता.

अन्तःपदवी, (स्त्री०) सुषुम्णामध्यगतः पन्थाः । सुषुम्णानाडीके बीचका मार्ग.

अन्तःपुरम्, (न०) अन्तः=अभ्यन्तरं पुरं=गृहं । पुरस्य अन्तः स्थितम् । भीतरका घर । अथवा शहरके भीतर । जनानखाना.

अन्तःपुर, (न०) अन्तरभ्यन्तरं पुरं गृहं, कर्म० । (अन्दर) इस प्रकार प्रसिद्ध राजाओंकी स्त्रियोंके निवासयोग्य घर । वहां रहनेसे "राजाकी स्त्री" यह भी अर्थ बनता है । इसी अर्थमें "अन्तःपुरी" यह भी होता है.

अन्तःपुरिक, (पु०) अन्तःपुरे नियुक्तः ठन् । अन्तःपुरमें नियत किया गया । अन्तःपुरका.

अन्तःप्रज्ञ, (त्रि०) अन्तः प्रज्ञा यस्य ब० । भीतरके ज्ञानवाला । आत्माके जाननेवाला । समझा हुआ अपना आप.

अन्तःसंज्ञ, (त्रि०) अन्तः संज्ञा यस्य ब० । अन्तः भीतरकी संज्ञा चेतना । होशवाला.

अन्तःसत्वा, (स्त्री०) अन्तरभ्यन्तरे गर्भे सत्वं प्राणी यस्याः ब० । जिसके गर्भमें प्राणी रहे । गर्भिणी स्त्री.

अन्तःसत्वा, (स्त्री०) अन्तः सत्वं जीवः यस्याः ब० । जिसके भीतर जीव प्राणी हो गर्भवती स्त्री । गाभन औरत.

अन्तःसलिल, (त्रि०) अन्तः सलिलं यस्य ब० । पृथिवीके नीचे जलवाला । भीतर सरस वृक्षवाला.

अन्तःसार, (त्रि०) अन्तः सारः यस्य ब० । भीतरकी ताकत बलवाला । भीतरके कोषवाला.

अन्तःस्थ, (त्रि०) अन्तः तिष्ठति । मध्य । दर्मियानमें होना । बीचमें होना । "य-र-ल-व" के लिये व्याकरणकी संज्ञा । येभी स्वर और व्यञ्जनों मध्यमें ठहरते हैं और तालु आदिके थोडासा छूकर बोले जातेहैं.

अन्तःस्वेद, (पु०) अन्तः स्वेदो मदस्यन्दनं घर्मजलं यस्य ब० । जिसके भीतर मद बहे अथवा पसीनेका जल बहे । मद बहानेहारा हाथी । मस्त हाथी.

अन्तक, (पु०) अन्तं करोति, अन्त+तत् करोतीत्यर्थे णिच् ण्वुल् । अन्त करनेहारा । यम । नाश करनेहारा (त्रि०).

अन्तकर, (त्रि०) अन्तं नाशं करोति कृ+ट, उप० स० । नाश करनेहारा.

अन्तग, (त्रि०) अन्तं अवसानं गच्छति, गम्+ड । पार जानेहारा । किसी कामके अवसानतक पहुंच गया । ये अन्त गत यह इसी अर्थमें.

अन्तज, (त्रि०) अन्ते जायते जन्+ड । पश्चात् पैदा हुआ.

अन्तपाल, (पु०) अन्तं पालयति । सीमा हदकी रक्षा करनेहारा । पासबान.

अन्तर्, (अव्य०) अन् तुडागमश्च । मध्य । बीच । मध्य भीतर । निश्च.

अन्तर, (न०) अन्तं राति ददाति, रा+क । अवकाश । अवधि । [illegible] । पहिरनेका कपडा । छिद्र । भेद । आत्मामें विश्वास हो । विशेष । उपयुक्त अर्थ । छिपाना । बिना । बाहिर । कारण । बीच=मध्य । (इनमें कितनेही अर्थोंका उदाहरण है).

अन्तरग्नि, (पु०) अन्तः=मध्यस्थः अग्निः । भीतरी अग्नि । अन्नको पचानेवाला जठराग्नि.

अन्तरङ्ग, (त्रि०) अन्तर्मध्येऽङ्गानि यस्य । अन्तः । व्याकरणशास्त्रमें प्रकृति (धातु) और प्रत्ययके बीच प्रकृतिके आश्रित कार्य.

अन्तरतम, (त्रि०) अतिशयेन अन्तरः । बहुत भीतर । बहुतही निकट । बहुतही अन्दर.

अन्तरा, (अव्य०) अन्तरेति इण्+डा । निकट । बीच । बिना.

अन्तरात्मा, (पु०) अन्तर्वर्ती आत्मा । भीतर का आत्मा । अन्तःकरण (मन) । सर्वान्तर्यामी परमेश्वर । अन्तःकरणका अभिमानी जीव.

अन्तराय, (पु०) अन्तरं=व्यवधानं अयते, अय्+अच् । विघ्न । रुकावट । फरक डालनेहारा (त्रि०).

अन्तराल, (न०) अन्तरं मध्यसीमां आराति गृह्णाति आ+रा+क, रस्य लत्वम् । मध्य । बीच । स्वार्थे "आन्तराल" भी होता है.

अन्तरि, अदा० प० । अन्तर्+इ । दोनोंके बीचमें आ किसीके रास्तेमें खडे होजाना.

अन्तरिक्ष, (न०) अन्तः स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यते, कर्मणि घञ् । अन्तः ऋक्षाणि वा यस्य पृषो० । पक्षे ऋकारस्य रित्वं वा । जो स्वर्ग और पृथिवीके बीच दिखाई देता है । अथवा जहां नक्षत्र हों । पक्षी और देवोंके संचारयोग्य । पृथिवी और सूर्यके मध्यमें रहनेहारा आकाशका स्थान । यहां "अन्तरीक्ष" ऐसा शब्दभी होता है.

अन्तरित, (त्रि०) अन्तर्+इण् कर्तरि क्त २ त० अन्तर्व्यवधानं करोतीति णिचि कर्मणि क्त वा । बीचमें आया । तिरस्कार किया गया.

अन्तरीप, (पु०) अन्तर्मध्ये गता आपोऽस्य ब० । स० आत् ईत्वं । जिसके मध्यमें जल हो । द्वीप । जजीरा

अन्तरीय, (न०) अन्तरे भवंस्य । पहिरनेका वस्त्र । मार्गीपर धारण किया गया और दोनों ओरसे बिन कटा जो कपड़ा जानुओं (घुटनों) को आच्छादन करसके "उसे अन्तरीय कहते हैं" धोती.

अन्तराय, अन्ते+भवं ॥ । भीतरका । अन्दरकी पोशाक । "अतिक्लिष्टचीनांशुकान्तरीयम्".

अन्तरे, (अव्य०) अन्तरेति इण्+विच् । मध्य । बीच.

अन्तरेण, (अव्य०) अन्तरेति, इण्+ण । बिना । मध्य.

अन्तर्गडु, (त्रि०) अन्तर्मध्ये गडुरिव निरर्थकः । ग्रीवा (गर्दन) प्रदेशमें उत्पन्न हुए गलेके मांसपिण्डको जैसे निष्प्रयोजनता है उसी प्रकार निरर्थक । काव्यके मध्यमें जो गडुके समान है वह अलङ्कार तो नहिं परन्तु उसे प्रहेलिका अथवा कुशतत कहते हैं.

अन्तर्गृह, (न०) अन्तर्गृहस्य । घरके मध्यमें । काशीमें रास्तावरणवाला (स्थान पड़नेका) स्थानविशेष.

अन्तर्जठर, (न०) अन्तर्जठरस्य । जठर(पेट)के बीच । कुक्षिके बीच एक कोठा.

अन्तर्जम्भ, (पु०) दादनस्थानं जम्भः, दन्तपंक्तयोरन्तरालम् । मुंहके भीतर जबड़ोंका स्थान.

अन्तर्जल, (न०) अन्तर्जलस्य (अव्य०) । जलके बीच । जलके मध्यमें करने योग्य अघमर्षण मन्त्रका जप । (ऋतं च सत्यं चाभीद्धा० यह मन्त्र है).

अन्तर्जात, (त्रि०) अन्तः जातः । भीतर उत्पन्न हुआ.

अन्तर्ज्योतिः, (न०) अन्तः ज्योतिरिव प्रकाशकं । भीतर ज्योतिकी तरह प्रकाश करनेहारा । अन्तरात्मा.

अन्तर्दाह, (पु०) अन्तर्मध्ये दाहः दह्+घञ् । देहके भीतर सन्ताप । कोठे(पेट)का सन्ताप.

अन्तर्दृष्टि, (स्त्री०) भीतरकी नजर । आत्माकी परीक्षा करनेवाली दृष्टि । अपने आपमें देखना.

अन्तर्द्वार,(पु०)अन्तर्मध्ये द्वारं । घरके बीचका गुप्त दर्वाजा.

अन्तर्द्धान, (न०) अन्तर्+धा+ल्युट् । छिपना । देखने योग्य पदार्थके न देख सकनेवाले स्थानमें ठहरना । मुनि आदिकोंका शरीर छोड़ना.

अन्तर्द्धि, (पु०) अन्तर्+धा+कि । आच्छादन (ढकना) । व्यवधान । (बीचमें आना) छिपना.

अन्तर्निहित, (त्रि०) अन्त+नि+धा+क्त । भीतर रक्खा गया.

अन्तर्भूत, (त्रि०) अन्तर्मध्ये भूतः, भू+क्त । बीचमें रहा । बीचमें गया.

अन्तर्भेद, (पु०)अन्तः भेदः यस्मिन् ब० । भीतर । घरका भेद फूट । "अन्तर्भेदाकुले गेहं नचिरात्प्रतिनश्यति".

अन्तर्मदावस्थ, (त्रि०) अन्तः मदस्य अवस्था यस्य । जिस हाथीका मद भीतर छिपा हो । भीतरके मदवाला.

अन्तर्मनस्, (त्रि०) अन्तर्गतं बाह्यव्यापाराक्षमतया अन्तरेवस्थितं मनो यस्य । बाहिरके व्यापारको न सहन करनेके कारण जिसका मन भीतरही स्थित हो रहा है । जिसका मन एकाग्र हो । व्याकुलचित्त.

अन्तर्मातृका, (स्त्री०) अन्तःस्था षट्चक्रस्था मातृका अकारादिवर्णाः । भीतर शरीरके छ चक्रोंकी अक्षरावली । भीतरकी मां.

अन्तर्मुख, (त्रि०)-खी । अन्तः मुखं यस्य-यस्या वा-ब०) भीतर मुंहवाला-वाली । मुखमें जानेहारा । भीतरको दिखानेहारा । भीतरका रास्ता सुलझाना । वह चित्त जो बाहिरकी वस्तुका परित्याग करके परमात्मामें परमात्माहीको सुझताहै.

अन्तर्मुद्र, (त्रि०) अन्तः मुद्रा यस्य । जिसके भीतर मोहर लग चुकी है । भीतरके निशानवाला न० । एक प्रकारकी भक्ति.

अन्तर्यामिन्, (पु०) अन्तर्मध्येऽनुप्रविश्य यमयति लोककर्माणि इन्द्रियादीनि जीवं वा व्यापारयति, यम्+णिच्+णिनि । जो भीतर प्रवेश करके इन्द्रियादि किंवा जीवको अपने अपने काममें लगाता है । वायु । "जो भीतर आवेशकर आत्मवेतु (निजव्यापार अर्थात् प्राणादिवृत्ति)-ओंसे जीवोंको धारण किंवा पोषण करता है" ऐसे लक्षणवाला ईश्वर । "अन्तरेण यमयती"त्यादि बृहदारण्यकान्तर्यामिब्राह्मणोक्तः । भीतरकी बातको जानेहारा (त्रि०).

अन्तर्यूणिः-णिः, (पु०) अन्तः स्थित एव उच्चारयदं कारयति वण्+क्त ।भीतर रह करही उच्चार=डकारके शब्दको लाता है । अजीर्ण । अनपच.

अन्तर्वंशिक, (त्रि०) अन्तर्वंशे राजामाभ्यन्तरगृहे नियुक्तः नियुक्तार्थे ठ । राजाओंके घरोंमें रहनेके लिये ब्रह्मचारी पुरुष वामन आदि.

अन्तर्वंशिक-वासिकः, (पु०) अन्तर्वंशे-वासे नियुक्तः ठक् । अन्त पुरका अध्यक्ष । जनानखानेका हाकिम दूरी रखवाली करनेवाला.

अन्तर्वस्त्र-वासस्, (न०) अन्तः स्थितं वस्त्रम् । भीतरकी पोशाक.

अन्तर्वत्नी, (स्त्री०) अन्तरस्य अस्ति गर्भः । अन्तर्+मतुप् ङि० । गर्भवती स्त्री.

अन्तर्वा, (त्रि०)अन्तः अन्तरङ्गमध्यं अन्त वरणं वाति=गच्छति क्विप्=वरं, वा+क्विप् । केह प्यार होनेसे मनके पीछे चलनेवाला । अपने बन्धों व पशुओंके जन्म दिया वेवाला

अन्तर्वाणि, (त्रि०) अन्तर्गता अन्तःकरणे स्थिता शास्त्रवाक्यान्विता वाणी यस्य ब० । न कप् इत्यच । बहुतसे शास्त्रोंके वाक्योंको जाननेहारा पण्डित.

अन्तर्वेदी, (स्त्री०) पृथिव्या मध्यस्थितत्वात् अन्तर्वेदीव । हरिद्वारसे ले प्रयाग (अलाहाबाद) तक शशस्थली और ब्रह्मावर्त नामसे प्रसिद्ध देश.

अन्तर्हस्तिन्, (त्रि०) हस्तस्य अन्तः+मत्+हस्त+ख । हाथमें लिया हुआ । जहां हाथ पहुंच सके.

अन्तर्हास, (पु०) अन्तः हासः यस्य ब० । भीतर हसना ओंठ न फुरे । गुप्तहास.

अन्तर्हित, (त्रि०) अन्तर्+धा+क्त । गुप्त । छिपाहुआ.

अन्तर्हृदयं, (न०) हृदयस्य अन्तः । हृदयका मध्य.

अ(न्तन्ते)वासिन्, (पु०) अन्ते समीपे वस्तुं शीलं अस्य वस्+णिनि । गमन्या वा लुक् । जिसका पासही रहनेका स्वभाव हो । शिष्य । चेला । स्त्रियां ङीप् । पास रहनेहारा (त्रि०).

अन्तशय्या, (स्त्री०) शयनं शय्या शीङ्+क्यप् । अन्तस्य नाशार्थं शय्या, चतुर्थ्यर्थे ६ त० । मरनेके लिये पृथिवीपर लेटना । मशान (क्योंकि यहां भूमिशयन कराया जाता है) मरण.

अन्तसद्, (पु०) अन्ते=गुरुसमीपे सीदति=गच्छति । गुरुके पास जाता है । शिष्य.

अन्तावसायिन्, (पु०) [illegible] अन्तं अवसातुं [illegible] अन्त, अव+षो+णिनि+युक् च । नाइ केश काटनेहारा । नाई । "अन्ते गृहे वसति अवस्यति निश्चि[illegible]" । जो कुटुम्बमें तत्त्वका निश्चय करे । एक मुनि । "[illegible] अनुलोमान अवर्णा[illegible]" । जो अपनी [illegible] के लिये जीवोंको नाश करता है । जीवोंकी हिंसा करनेहारा चाण्डाल आदि.

अन्तिक, (त्रि०) अन्त्यते संबध्यते सामीप्येन-अन्त+घञ् [illegible] । जो पास रहे । समीप रहे । पास । (पु०) [illegible] (न०) एक प्रकारकी औषध (दवाई).

अन्ति(का), (स्त्री०) अन्त्यते सम्बध्यते अन्त+इ । नाटकमें बड़ी बहिनको कहते हैं । सपेक्, [illegible] "अन्तिका" भी.

अन्तिकाश्रय, (पु०) अन्तिके समीपे आश्रयते आ+श्रि+अच् । पास रहनेहारा । आश्रयका स्थान.

अन्तिम, (त्रि०) अन्ते भव, अन्त+डिमच् । अन्तमें [illegible] । अन्तिम.

अन्तेवासिन्, अन्ते वसति । [illegible] पास रहनेहारा । पास [illegible] (पु०) । [illegible] [illegible] । गुरुके पास रहनेहारा । शिष्य । [illegible] है.

अन्त्य, (पु०) अन्ते पर्यन्ते वसतीति । अन्त[illegible] सबसे पीछे रहे । चाण्डाल । मोथा (स्त्री०) । [illegible] वस्तु (त्रि०) जैसे नक्षत्रोंमें रेवती, [illegible] अक्षरोंमें हकार इत्यादि । एक प्रकारकी [illegible] १०००००००००००००००.

अन्त्यज, (पु०) अन्तोऽधमः सन् जायते [illegible] शूद्र । क्योंकि वह ब्राह्मणादि चारोंवर्णोंमें नीच [illegible] हुआ । "रजक (कपड़ारंगनेहारा) चर्मकार ([illegible] नट, वरुट (नीचभेद) कैवर्त (मच्छीपकड़[illegible] भेद (नीचभेद) भिल्ल" ये सात अन्त्यज कहे [illegible] इस प्रकार स्मृतिमें कहेगये रजक आदि जो कों[illegible] उत्पन्न हुआ हो (त्रि०).

अन्त्यजन्मन्, (पु०) अन्त्यं जन्म यस्य । शू[illegible] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यके उत्पन्न होनेके अनन्त[illegible] पाओंसे उपजा.

अन्त्यधनं, (न०) अन्त्यं धनम् । व्याजकी आखीरी[illegible] आखीरी धन.

अन्त्यलोपः, (पु०) अन्त्यः लोपः । आखीरी अक्ष[illegible] ना । आखीरी नाश.

अन्त्यावसायिन्, (पु०) "निषादकी स्त्री [illegible] अन्त्यावसायी पुत्रको उत्पन्न करती है वह मसान[illegible] है" इस प्रकार मनुसे कहा गया मुरदाफूंक[illegible] प्रसिद्ध संकीर्णवर्ण । "चण्डाल, श्वपच, क्ष[illegible] वैदेहक, मागध, अयोगव" ये सात अन्त्याव[illegible] इस प्रकार अङ्गिराने स्मरण किये चाण्डालादि.

अन्त्येष्टि, (स्त्री०) इटियागः यज्+क्तिन् । अन्त[illegible] मृतकका दाहादिरूप अन्तिम संस्कार । मुर्दा अ[illegible] पातकान्त दिवसतक उसके निमित्त जो [illegible] होता है.

अन्त्र, (न०) अन्त्यते देहो बध्यतेऽनेन अति [illegible] देहका बंधन । आंतकी पुरीतती नाड़ी.

अन्दुक, (पु०) अन्द्यते बध्यतेऽनेन अदि बन्धने [illegible] हस्त । हाथीके पावका बंधन (जंजीर) । [illegible]

अन्दू, (स्त्री०) अन्द्यते बध्यतेऽनेन अदि+ऊ [illegible] (जंजीर) । स्त्रियोंके पांवोंका भूषण । पायजेब.

अन्ध, न [illegible]-पु० उभ० अक० [illegible] [illegible].

अन्ध, (त्रि०) अन्धयति चक्षुषा न पश्यति+अच् [illegible] [illegible] । अन्ध्यतेऽनेन [illegible] (अंधेरा) । पानी (न०).

अन्धम्, (न०) अन्धयति । अन्धेरा । हल्दी भूल । आत्माकी अविद्या ।-ध (पु०) । अन्धयति-निर्वाणं गच्छति । इन्द्रियोंपर पूरी आज्ञा चलानेवाला संन्यासी । नष्ट द्रव्यके मिलने न मिलनेका उपयोगी राशिभेद । मे०वृ०सि० रातके समय, और मि० क० क० दिनके समय अन्धे होतेहैं.

अन्धक, (त्रि०) अन्ध+कन् । अन्धा ।-कः (पु०) एक दैत्य-का नाम जो कश्यप और दितिका पुत्र है । शिवजीने इसे माराथा । इसकी एक सहस्र भुजा और दो सहस्र नेत्र थे । अच्छी चमकदार आंखें रखकरभी अन्धेके समान फिरता था.

अन्धक, (पु०) अन्धयति-अन्ध्+ण्वुल् । दैत्यभेद । मुनि-भेद । यदुवंशीयोंमेंसे एक राजा । हिरण्याक्षका पुत्र । दैत्यभेद । अंधेरा (न०).

अन्धकरिपु, (पु०) अन्धकासुरस्य रिपुः । अंधकदैत्यके शत्रु । शिव । "अन्धकस्य तमसो रिपो" । अंधेरेका शत्रु । सूर्य । चन्द्र । अग्नि.

अन्धकार, (पु० न०) अन्धं करोति-कृ+अण् उप० स० । तेजोभावे तमसि । प्रकाशका न होना । अंधेरा.

अन्धकूप, (पु०) अन्धयतीत्यन्धः स चासौ कूपः । अंधेरा कूआ । 'अन्ध कूपो यत्र' ७ ब० । जहां अंधेरा कूआ हो ऐसा नरकभेद । "अन्धस्य दृष्टयभावस्य कूप इव" । दृष्टिके नाश होनेका मानो कूआ है अर्थात् मोह ([illegible] सम्पूर्ण दृष्टिके नाशकी खान है).

अन्धतमस्, (न०) अन्धयति, अन्ध+अच्, ताम्यति अनेनेति, तम्+करणे असि कर्म० । बड़ा अंधेरा । "अन्धं अंधका-रकं तामिस्रं यत्र" ७ ब० । नरकविशेष । सांख्यशास्त्रमें प्रसिद्ध भयविशेषका विषयअभिनिवेश.

अन्धतामिस्रः-स्रं, (पु० न०) पूरा काला । गाढ़ अंधेरा । विशेषतः आत्माका । देहके नष्ट होनेपर "मैं ही नष्ट हुआ" इस प्रकारका अज्ञान । भारी अंधकारके फलवाला । २१ नरकोंमेंसे दूसरा जो परस्त्रीगामिओं या हत्यारोंको मिलता है.

अन्धमूषिका, (स्त्री०) अन्धं दृष्टयभावं मुष्णाति । मुष्+ ण्वुल् दीर्घः । देवताडका वृक्ष (इसका सेवन करनेसे अंधों-की भी आंखें खुल जाती हैं, यह वैद्यशास्त्रमें प्रसिद्ध है).

अन्धमूषिका, (स्त्री०) अन्धं-दृष्टयभावं मुष्णाति, मुष-ण्वुल् । एक प्रकारका वृक्ष या तृण घास जिसका नाम "देवताड" है इसके सेवनसे अंधेकी आंखें खुलजाती हैं.

अन्धवर्त्मन्, (पु०) अन्धं-सूर्यप्रकाशराहित्यात् वर्त्म यत्र । वायुका सातवां पर्दा या लोक जहां सूर्यका प्रकाश नहीं होता.

अन्धस्, (न०) अद्यते, अद्+असुन् नुम् धश्च । अन्न । भात । चावल.

अन्धाहिः-अहिकः, (पु०) अन्धः अहिः । अंधा सांप । विषरहित.

अन्धिका, (स्त्री०) अन्धयति, अन्ध्+ण्वुल् । रात । जूएका भेद । शिखा नाम औषधी । आन्धुली नामी नेत्रका रोगभेद.

अन्धु, (पु०) अन्ध्+कु । कूप । कूआ.

अन्धुल, (पु०) अन्ध्+उलच् । शिरीषका वृक्ष.

अन्ध्र, (पु०) अन्ध्+र । देशभेद । वहांके लोग । जातिभेद.

अन्न, (न०) अनिति अनेन-अन्+नन्-अद्यते इति वा-अद्+ क्त । जिसके द्वारा जीता है या जो खाया जाता है । भात । गीला अन्न । कच्चा अन्न । चावल जौ आदि कच्चा अन्न । पृथिवी (क्योंकि वहां अन्न उपजता है इसलिये उसे अन्न कहते हैं).

अन्नकोष्ठक, (पु०) अन्नस्य व्रीह्यादेः स्वल्पं कोष्ठमिव, अल्पार्थे कन् । चावल आदिका छोटा कोठा । अन्नका कोठा (कुटी)

अन्नगन्धि, (पु०) अन्नस्य गन्ध इव गन्धो यस्य ब० । इत्व-मासान्तः । अन्नके गन्धके समान जिसका गन्ध हो । अति-सार । पेटका रोग । "अन्नस्य गन्धो लेशो यत्र" ७ ब० । थोड़े अन्नके भोजनवाला (त्रि०).

अन्नजलं, (न०) अन्नं जलं च । स० द्वं० । अन्न और जल । खान पान.

अन्नदासः, (पु०) अन्नेन पालितो दासः । शाक० त० । अन्न-मात्रपर काम करनेवाला नौकर.

अन्नप्राशन, (न०) प्रकृष्टं विधानेन प्रथममाशनं प्राशनं ६ त० । छठे या आठवें महीनेके आदिमें शास्त्ररीतिसे बालक आदिको पहिले अन्न खिलाना.

अन्नमय, (पु०) अन्नस्य विकारः, अन्न+विकारार्थे मयट् । स्थूल शरीर (यह अन्नहीका विकार है) । अन्नका विकार (त्रि०) । "अन्नमयं हि सौम्य ! मनः" इति श्रुतिः.

अन्नविकार, (पु०) वि+कृ+घञ् ६ त० । अन्नका विकार । लोहू और मांस आदिके पकनेसे उपजा अन्तिम धातु । शुक्र.

अन्नाद, (त्रि०) अन्नं अत्ति । अन्न खानेवाला । दीप्ताग्नि । भटपटी जठराग्निवाला.

अन्नादान, (न०) अन्नस्य विधानेनाशनम् । विधिसे अन्नका खिलाना अन्नप्राशनके अर्थमें.

अन्य, (त्रि०) अन्-अस्या० यः । भिन्न । समान । यह सर्वनाम है.

अन्यतम, (त्रि०) बहूनां मध्ये निर्धारिते एकस्मिन् । बहुतोंमेंसे एक.

अन्यतर, (त्रि०) द्वयोर्मध्ये निर्धारिते एकस्मिन् । दोनोंमेंसे एक.

अन्यतस्त्यः, (पु०) अन्यतो भवःत्यप् । कुछ और ही होनेवा । शत्रु विरुद्ध.

अन्यत्र, (अव्य०) अन्य+त्रल् । बिना । व्यतिरेक.

अन्यथा, (अव्य०) अन्य प्रकारर्थे थाल् । बिना । दूसरी तरह । झूठ । दूर.

अन्यथावादिन्, (त्रि०) अन्यथा+वद्+इन् । औरही प्रकारसे बोलता है । झूठा.

अन्यथावृत्ति, (त्रि०) अन्यथा वृत्तिः यस्य । बदलेहुए विचारवाला । बिगड़ेहुए स्वभाववाला.

अन्यथासिद्धि, (स्त्री०) अन्य कारणं विनापि सिद्धिः । जिसके कारण न होनेपरभी कार्यकी सिद्धि हो सके । जैसे "घट" की उत्पत्तिके समय गधेके रहनेपरभी उसे कारण स्वीकार किये बिनाभी घटादिकी सिद्धि हो सकती है अर्थात् कुम्हार अपनी मट्टी लाकर घड़ा बना सकता है इसलिये घटकी सिद्धिमें गधा अन्यथासिद्ध समझना चाहिये । कार्यमें रहते हो पर कार्यका उत्पादक न हो.

अन्यदा, (अव्य०) अन्यस्मिन् काले दा । कालान्तर और समय । फिर कभी.

अन्यपूर्वा, (स्त्री०) अन्यः पूर्वो यस्याः । द्विरूढा । एक वरके मरजानेपर दूसरी बेर ब्याहीगई स्त्री । "अन्यपूर्वाभिः सह" । "अन्य पूर्वा यस्य" । एक स्त्रीके मरजानेके पीछे दूसरी बेर ब्याहागया पुरुष (पु०).

अन्यभृत्, (पु०) अन्येन भ्रियते, भृ+कर्मणि क्विप् । कोकिल । कोयल । दूसरेसे पुष्ट किया गया.

अन्यर्हि, (अव्य०) दूसरे समय । अन्यदा.

अन्यादृश्, (त्रि०) अन्यस्य इव दर्शनं यस्य अन्य+दृश+क्विन् । दूसरेके समान । और प्रकार । दूसरी तरह । इसी अर्थमें "अन्यादृश" भी होता है.

अन्याय, (पु०) न्याय्यो विचारः । अनुचित, अधर्मित, अनीति, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमनसे प्रतिपादन करनेका अभाव । अनन्तरे न० त० । विचारका न होना । वाजिब न होना । अधिकारका न होना । नेदमें न० त० । न्यायसे भिन्न । अ० । विरुद्धाचरण । अनाचार । अनुचित । अन्यदीय व्यवहारकरनेका । (त्रि०) अन्यायोपजीवी । दुष्ट (पु०)

अन्येद्युः, (अव्य०) अन्य+एद्युस् । दूसरे वा अगले दिन । कल

अन्योदर्य, (पु०) अन्यस्मिन् सपत्नीभिन्ने उदरे भवः उदर+यत् । जो अपनी माताके भिन्न उदरसे उत्पन्न हो । पिता एक और माता भिन्न हो ऐसा सौतेला भाई "अन्योदर्यस्तु संसृष्टिः" इति स्मृतिः । वैदी (...) वहिन (स्त्री०) जो कोई दूसरेके पेटसे जात हो (त्रि०) इसी लिये दायभागटीकामें इस वचनके ... भाईके पुत्र आदिकोंभी "अन्योदर्य" पदसे ... होनेसे ग्रहण किया है.

अन्योन्य, (त्रि०) अन्य+कर्मव्यतिहारे (एक ... क्रियाकरणे) द्वित्वं पूर्वपदे सुश्च । परस्पर । आपसमें "द्वित्व किये जानेपरभी सर्वनामता होती है" ... अन्योन्यस्य इत्यादि समझना । "अलङ्कारशास्त्रोक्त ... एक अलङ्कार (न०)" यह साहित्यदर्पणके १० म परि... च्छेदमें देखना चाहिये.

अन्योन्याभाव, (पु०) अन्योन्यस्मिन् अन्योन्यस्य ... व । आपसमें एक दूसरेका न होना । "जैसे ... घटका वैसेही घटमें घटका सदा अभाव है" ... संभव ऐसा नहीं होता क्योंकि घटमें भूतका ... होनेपरभी भूतलपर घटका होना किसी समय ... है, इसीसे यह अन्योन्याभावसे भिन्न है.

अन्योन्याश्रय, (त्रि०) परस्परं अन्योन्यं आश्रयतीति आ+श्रि+अच् । जो एक दूसरेका आश्रय करता है । ... सापेक्ष । न्यायमतमें तर्कविशेष । (पु०) यह जैसे ... "जैसे एकके ज्ञानके लिये दूसरे ज्ञानकी अपेक्षा ... और ज्ञानादिकी उत्पत्तिके लिये पहिले ज्ञानकी अपेक्षा ... अर्थात् दोनों परस्पर सापेक्ष है । जब दोनों ... आश्रय हो गये तो स्वापेक्षापेक्षित्वनिमित्तक अनि... प्रसङ्ग हुआ (यह दोष है).

अन्वक्ष, (त्रि०) अनुगतं अक्षं इन्द्रियं-अच्० ... प्रत्यक्ष । अनुगत । पीछा करना । "अन्वक्ष ... दृष्टि० " । आखके निकट (अव्य०)

अन्वय, (त्रि०) अनु+अय+णिच् । पीछा करनेवाला । ...

अन्वय, (पु०) अनु+इण्+अच् । वंश । पदोंका परस्पर ... आकाङ्क्षा । सम्बन्ध । पदोंका योग्यता सम्बन्ध । ... कारणका अनुगमन करना.

अन्वयबोध, (पु०) अन्वयस्य पदोंका परस्पर ... सम्बन्धस्य बोधः । ६ त० । पदोंसे ज्ञापित हुए ... पदार्थोंका ज्ञान । आपसमें मिलनेसे उत्पन्न हुए ... समस्त प्रयत्नसहित भिन्न ज्ञान । ... सबसे उत्पन्न हुआ अनुमिति वगैरह.

न्वयव्यतिरेकिन्, (त्रि०) अन्वयव्यतिरेकी सोऽस्य । साध्यको सिद्ध करनेहारा हेतुविशेष । (जिसमें अन्वय और व्यतिरेक दोनों बन सके) "जैसे वह्निको सिद्ध करनेमें धूम हेतु है, यह वह्निवाले महानस (पाकशाला) आदिमें, और वह्निके अभाववाले जल आदिमें भावाभाव-रूपसे वह्निके साथ अन्वयव्याप्ति और व्यतिरेकव्याप्ति है" इस प्रकार न्यायमतमें प्रसिद्ध है.

न्वयव्याप्ति, (स्त्री०) अन्वयेन व्याप्तिर्व्यापकं नियततया स्थितिः ३ त० । अन्वयके साथ नियममें रहना । जहां धूम होगा वहां वह्नि होगा इस प्रकारकी व्याप्ति.

न्वयार्थः, (त्रि०) अनुगत. अर्थ-प्रा० स० । जिसका अर्थ स्पष्ट हो । यथार्थ । अर्थानुसारी.

न्ववसर्गः, (पु०) अनु+अव+सृज्+घञ् । "जैसा चाहते हो करो" इस प्रकारकी आज्ञा.

न्ववाय, (पु०) अन्ववयन्ते परस्परानुसेव्यन्ते-अनु+अव+अय्+घञ् । इण्+कर्तरि अच् [illegible] । वंश । सन्तान.

न्वष्टका, (स्त्री०) अनुगता अष्टकां-अत्या० स० । पौष-माघ-फाल्गुन-और आश्विनके कृष्णपक्षकी नवमीको साग्निक लोगोंका श्राद्ध.

न्वह, (अव्य०) अहि अहि । वीप्सायेऽव्ययीभावः अच् । प्रतिदिन.

न्वाख्यानं, (न०) आख्यानं अनुगतम् । पहिले कहे-हुएका सविस्तर वर्णन.

न्वाचय, (पु०) एकस्य प्राधान्यात् अन्य आचीयते बोध्यते यत्र-अनु+आ+चि+आधारे अच् । एककी प्रधान-तासे जहां दूसरा बतलाया जाता है । उद्देश्यकी सिद्धिसे जहां अनुद्देश्यकी सिद्धिभी समझी जाय । जैसे भिक्षाके लिये जा यदि गौको देखो तो लेते आना, यहां भिक्षा-हीमें उद्देश (तात्पर्य) है गमनमें नहीं, उसकी सिद्धिके अनन्तर गौका लाना अनुद्दिष्टकी साध्यरूपसे निर्दिष्ट हुआ है । संयुक्त । मिलाहुआ । जहां मुख्यके साथ गौणभी मिला रहे.

न्वाजे, (अव्य०) अन्वाजयति अनेन । अनु+आ+जि+डे । दुर्बलकी सहायता करनी.

अन्वादेश, (पु०) अनु+आ+दिश्+घञ् । पूर्वोक्तस्य किंचिद् कार्यान्तरं विधातुं पुनरुपदेशे । पहिले एक काम करलेपर कुछ दूसरा काम करनेका फिर उपदेश करना । जैसा इसने व्याकरण तो पढलिया अब इसे न्याय पढाइये इस प्रकार न्यायपाठके लिये फिर उपदेश है । कहेगयेको फिर कहना । अनुवाद.

अन्वाधिः, (पु०) अनु-पश्चात् आधीयते+धा+कि । जमा-नत । "मेरे कहनेपर तू फलानेको फलानी वस्तु देदे" इस प्रकार जमानत देनेवाला.

न्वाधेय, (न०) अनु+आ+धाञ्+यत् । स्त्रीधनविशेष । विवाहके पीछे मातापितासे तथा भर्तृकुलसे एवं बंधुकुलसे स्त्रीको जो कुछ मिला है । पीछे धीगई वस्तु (त्रि०).

न्वारब्ध, (त्रि०) अनु+आ+रभ्+क्त । पीछे छूकी ओर स्पर्श किया गया.

न्वारम्भ, भ्वा० आ० प्रारम्भ करना । शुरू करना । छूना.

न्वारुह्, भ्वा० प० साथ चढना । विशेषतः चितापर.

न्वारोहणं, (न०) अनु+आ+रुह्+अन । स्त्रीका पतिके शरीरके साथ चितापर चढना.

न्वास्, अदा० आ० । पास वा पीछे बैठना.

न्वासन, (न०) अनु+आस्+ल्युट् । पीछे बैठकर सेवा करना । दुःख । पीछे सोचना । "आधारे ल्युट्" शिल्प-गृह (कारखाना).

न्वाहार्य, (न०) अनु पश्चात्, मासि मासि आह्रियते अनु+आ+हृ+कर्मणि ण्यत् । प्रतिमास करनेयोग्य अमा-वास्याके दिन विधान कियागया श्राद्ध । "पितॄणां मासिकं श्राद्धं अन्वाहार्यं विदुर्बुधाः" इति स्मृतिः । मासिक श्राद्ध । यज्ञकी दक्षिणा.

न्वाहार्यपचन, (पु०) अन्वाहार्यं श्राद्धान्नं पच्यते-ऽनेन-पच्+करणे ल्युट् । जिसके द्वारा श्राद्धका अन्न पकाया जाता है । दक्षिणाग्नि । ऋग्वेदकी विधिसे स्थापित अग्नि.

अनु-इ=अन्वि, अदा० प० । अनुसरण करना । पीछे आना । जाना । प्राप्त करना.

अन्विष्, तुदा० प० । चाहना । तलाश करना.

न्वीक्षा, (स्त्री०) अनु श्रवणात् अनु ईक्षा श्रुतार्थस्य युक्तायुक्तपर्यालोचना-अनु+ईक्ष् भावे अ । सुनेगये अर्थका युक्तायुक्त विचार करना । वेदवाक्य सुननेके अन-न्तर उसके अर्थका विचार करना । इसीलिये इस कामको पूरा करनेहारी विद्याका नाम आन्वीक्षिकी कहा जाता है.

अन्वीप, (त्रि०) अनुगता+आपो यत्र । पानीके पास । जलके पास ठहराहुआ.

अन्वृचम्, (अव्य०) ऋचं अनुगतम् । एक मन्त्र वा श्लो-कके अनन्तर दूसरा.

अन्वेषण, (न०) अनु+इष्+भावे ल्युट् । अनुसन्धान । गवे-षण । तहकीकात । ढूंढना । यहां अनुसन्धान शब्दसे यह समझना कि कोई वस्तु व्यवधान आदिसे न दिखती हो उसके जाननेका यत्न करना । वाञ्छा । चाह । अन्वेषणा (स्त्री०) इसी अर्थमें.

अप्, (स्त्री०) बहु० आप्+क्विप् ह्रस्वः । जल । पानी । (सदा बहुवचन होता है).

अप, (अव्य०) न पाति-पा+ड । वियोग । विकार । उ-त्कृष्टता । निदर्शन । आनन्द । वर्जन । चोरी करना.

अपकर्मन्, (न॰) अपकृष्टकर्म प्रा॰ । दुष्ट आचरण । बुरा अमल करना स॰ । दुष्ट आचरण करनेहारा (त्रि॰).

अपकर्ष, (पु॰) अप+कृष्+भावे घञ् । बिगाडना । अपने कर्तव्यकालसे पहिलेही करना.

अपकरणम्, (न॰) अप+कृ+अन । बुरा व्यवहार हाल करना । हानि नुकसान पहुंचाना.

अपकामः, (पु॰) अपगतः कामः–कामस्य अभावो वा । जुगुप्सा । विद्वेष । घृणा । वैर । किसी प्यारी वस्तुका न होना । निरिच्छ.

अपकार, (पु॰) अप+कृ+घञ् । अनिष्टोत्पादन । बुराई करना । वैर । दुश्मनी.

अपकारगिर्, (स्त्री॰) अपकारेण द्वेषेण गीर्यते–गॄ+क्विप् । भर्त्सनवाक्य । तिरस्कारका वचन । झिडकना.

अपकृ, तना॰ उ॰ । बुराई करना । खेंचना । उठा ले जाना । घसीटना.

अपकॄ, तु॰ प॰ बिखरना । पानीको उछलना.

अपकृष्ट, (त्रि॰) अप+कृष्+क्त । अधम । नीच । हीन । अपने समयसे प्रथम किया गया.

अपक्रम, (पु॰) अपसृत्य क्रमो गतिः–क्रम्+घञ्–अवृद्धिः । पलायन । भागना.

अपक्रिया, (स्त्री॰) अप+कृ+भावे श । द्रोह । वैर । अपकार.

अपक्रोश, (पु॰) अप+क्रुश्+घञ् । निन्दा करना । "उपक्रोश" इसी अर्थमें.

अपक्ष, (त्रि॰) नास्ति पक्षो यस्य ब॰ । पक्षहीन । बिन-पर । जो उड नहीं सक्ता.

अपक्षेपण, (न॰) अप+क्षिप्+ल्युट् । नीचे फेंकना । नीचे स्थानके साथ संयोग होनेका कारण क्रियाविशेष । "अवक्षेपण" इसी अर्थमें.

अपगत, (त्रि॰) अप+गम्+क्त । मरगया । भागगया । गया बह गया.

अपगम्, भ्वा॰ प॰ । चले जाना । भाग जाना.

अपगरः, (पु॰) अप–निन्दार्थे गॄ– भावे अप् । निन्दा.

अपघन, (पु॰) अप+हन्+अप् घनादेशः । देह । शरीरका मल.

अपघात, (पु॰) अप+हन्+घञ् । बुरीतरहसे मारना । दुःखसे मरना.

अपचः, (पु॰) पक्तुं अशक्तः । न पक्व सकनेवाला । जो अपने लिये नहीं पकाता । बुरा रसोइया । निन्दाअर्थमें.

अपचय, (पु॰) अप+चि+अच् । हानि । नुकसान । घुटन्स । खर्च.

अपचर्, भ्वा॰ प॰ । प्रस्थान करना । दफ्तर होना । विरुद्ध जाना । अपराध करना । धर्षित । बचार । अपचारित.

अपचायित, (त्रि॰) अप+चाय्+णि+कर्मणि निष्ठा+इट् । पूजागया.

अपचार, (पु॰) अप+चर्+घञ् । अहित करना । बुराई करना प्रा॰ स॰ । बुरा आचार । बुरा करना । इसके बिना न हो (त्रि॰).

अपचित, (त्रि॰) अप+चाय्+क्त । चायः चिः । पूजागया । चि+क्त । हीन.

अपचिति, (स्त्री॰) अप+चाय्+क्तिन्–प्रकृतेश्चिभावः । पूजा । चि+क्तिन् । हानि । नुकसान । आदर.

अपची, (पु॰) अपकृष्टं पच्यते अपची, पच्–कर्मणि अच्–गौरा॰ ङीष् । एक व्याधि जिसमें गलेकी नसें फूल जाती है.

अपच्यु, भ्वा॰ आ॰ । गिर जाना । चले जाना । बेंदरा नाश होना । मरना.

अपच्छाय, (त्रि॰) अपगता छाया यस्मात् । छायाहीन । बिनछायेवाला । बुरीछायावाला.

अपजातः, (पु॰) अपकृष्टः जातः । गुणोंमें मातापितासे निकृष्ट पुत्र.

अपजि, भ्वा॰ प॰ । हराना । जीतना.

अपज्ञा, क्या॰ आ॰ । मुकर जाना । निषेध करना । छिपाना.

अपञ्चीकृतम्, (न॰) अपञ्च पञ्च कृतम् न॰ त॰ । साधारण भौतिक पदार्थ जो पांच २ स्थूल पदार्थ नहीं बनाया गया अर्थात् जो पांचसे पचीस नहीं किया गया । पांच सूक्ष्मभूत । पंचतन्मात्रा इत्यादि.

अपटान्तर, (त्रि॰) पटेन तिरस्कारिण्या अन्तरं अस्य न॰ त॰ । जहां पडदेका फासला नहीं । अव्यवहित । बीचरहित । मुआहुआ । आसक्त । संसक्त । कमजुर । लगाहुआ । "अपदान्तर" इसी अर्थमें होता है.

अपटी, (स्त्री॰) अल्पः पटः पटी । न॰ त॰ । कनातनामसे प्रसिद्ध कपडेका पडदा.

अपटु, (त्रि॰) पटुर्दक्षः । न॰ त॰ । रोगी । चतुराईरहित । काम न करसकनेहारा.

अपण्य, (त्रि॰) न पणनीयः अविक्रेय । न बेचने लायक.

अपतर्पण, (न॰) अप+तृप्+ल्युट् । रोग होनेही भूखा मरना । तृप्त न होना.

अपत्य (न॰) न पतन्ति पितरोऽनेन पत्+करणे यत् । न॰ त॰ । पुत्र या कन्यारूप सन्तान.

अपत्यदा, (स्त्री॰) अपत्यं तदेतुं गर्भं ददाति । गर्भ करनेहारी औषध । इसके सेवन करनेसे गर्भ हो जाता है । गर्भ देनेहारी स्त्री आदि.

अपत्यशत्रु, (पु॰) अपत्यस्य शत्रुः ६ त॰ । कुलीर । कर्कट.

…, (पु०) न पिबते पत्रमस्य। अङ्कुर (इसका पत्र …ीं होता)

…प, (त्रि०) अपगता त्रपा लज्जा यस्मात् ५ ब०। …हीन। बेशरम.

…प्, भ्वा० आ०। लज्जित होना। लज्जासे शिर नीचे …रना झुकाके साथ.

…पिष्णु, (त्रि०) अप+त्रप्+इष्णुच्। स्वभावसे …वाला.

…थ, (न०) न पन्थाः न०त०। वा अच्। कुपथ। बुरा …स्ता। "शास्त्र वा अचोऽभावे अपथिन् इत्यादि" ब०। …थ्य (त्रि०) "पथोऽभाव." । मार्गका न होना …व्य०)

…थ्य, (त्रि०) पथि (रोगिभोजने) हितं, पथिन्+यत् …न०त०। रोगीको भोजन न करने योग्य। बीमार करनेहारी.

…-पाद, (त्रि०)-पदी-स्त्री० न पद्यते-ज्ञायते-पद्+ …प्-न० त०.

…दान, (न०) अप+दैप्+ल्युट्। शोधन। साफ करना। …करणे ल्युट्"अष्टाध्याय। "अवदान"इसी अर्थमें होताहै.

…दिश्, तुदा० प०। निर्देश करना। सूचन करना। …नलाना। बहाना करना। दिशति। दिदेश। अदिशत्.

…दिश, (न०) दिशयोर्मध्ये-अप+दिशा। अव्ययीभाव। …शाओंका बीच। कोणनामसे प्रसिद्ध.

…दिशम्, (अव्य०) दिशयोः मध्ये-अव्यय। दो दिशा- …ओंके बीचमें। मध्य कोण.

…देश, (पु०) अप+दिश्+घञ्। लक्ष्य। निशान। रू- …को आच्छादन करना। छल। बहाना। निमित्त। स्थान.

…देशिन्, (त्रि०) अपदिशति-कथति। कपट ठग। …रनेको बाजारमें छिपा कर चलनेवाला.

…ध्यै, भ्वा० प०। ध्यायति। दध्यौ। किसी बुरा खयाल …रना। किसीको मनसे शाप देना.

…ध्वंसज, (पु०) अपध्वस्यतेऽनेन अपध्वंसः वर्णानां …मिश्रणपनामरूपादक सः संकरस्तस्मात् जायते-अनु+ज …स०। मिश्रवर्णोंके संगमसे उत्पन्न हुआ संकीर्ण वर्ण। …बिगड़े हुए अक्षरोंसे बना एक अक्षर बिगड़ कर निकला.

…ध्वस्त, (त्रि०) अप+ध्वंस्+क्त। निन्दित। छोड़ दि- …यागया। नाश कियागया.

…नयन, (न०) अप+नी+भावे ल्युट्। दूर करना। …खण्डन करना.

…नस, (त्रि०) अपगता-दूरीभूता नासिका यस्य। नसादेश …जिसकी नाक उड़ गया। नाक बिना.

…नोदन, (न०) अप+नुद्+भावे ल्युट्। दूर हटाना। …तोड़डालना.

अपभाष्, भ्वा० आ०। भाषते। अभाषिष्ट। बभाषे। गाली निकालना। बुरा कहना.

अपभ्रंश, (न०) अपभ्रन्श्+घञ्। गिरना। "अपभ्रश्य-ते अधर्महेतुतया पततेऽनेन" करणे घञ्। जिसके द्वारा गिरजाताहै। साधुशब्दसे भिन्न अपशब्द। यज्ञादिमें उसके कहनेमें पाप उत्पन्न होताहै.

अपम, (त्रि०) अपकृष्टं मीयते मा-बाहुलकात्-क। अपकर्ष बुराईपनमें माना जाता है। Ved. बहुत दूरका या बहुत पुराना.

अपमान, (न०) अप+मि-मा+वा भावे ल्युट्। अवज्ञा। निरादर। बेइज्जती.

अपमित्यक, (न०) अपमितिरपमानः तेन अकं दुःखं यत्र। जहां अपमानसे दुःख होताहै। अपमानका कारण दुःखदेनेहारा ऋण (उधार) (कर्जा)। उसके लेनेमें निश्चय उत्तमर्ण (जिससे उधार लियाजाताहै) के समीप निरादरसे दुःख होताहै.

अपमृत्यु, (पु०) अपकृष्टो मृत्युः प्रा० स०। मरनेके कारण रोग आदिके बिनाही आपही शस्त्र चलाकर या दूसरेके द्वारा मरना.

अपयान, (न०) अप+या+भावे ल्युट्। निकलजाना। भागना.

अपर, (न०) न पूर्वो यस्य, पृ-अपादाने+अप् न० त०। हाथीका पिछला भाग। "न पृणाति सन्तोषयति-पृ+अच् न०त०"। शत्रु। भिन्न (त्रि०) पश्चिम दिशा। ऋत्वे-दादि विद्या (स्त्री०).

अपरक्त, (त्रि०) अप+रञ्ज्+कर्तरि क्त। विरक्त। जो अनुकूल न हो.

अपरति, (स्त्री०) अप+रम्+भावे क्तिन्। विराग। हटजाना.

अपरत्र, (अव्य०) अपर+त्रल्। परलोकमें। पीछे। दूसरे समय.

अपरत्व, (न०) अपरस्य भावे+त्व। अपरनामी न्याय-मतमें सामान्यका भेद (जो थोड़े देशमें रहे)। वह दो प्रकारका है कालिक, और दैशिक, जैसे "मापसे पौत्र अपरा है" यह कालिक, और "पटनासे काशी अपरा है" यह दैशिक अपरत्व है। दोष.

अपरपक्ष, (पु०) अपरः शेषः पक्षः कर्म०। कृष्णपक्ष। कालीरातें.

अपररात्र, (पु०) अपरं रात्रेः एक० स० टच्। रात्रि-शेष। रातका पछी हिस्सा। रातका पिछला पहर.

अपरस्पर, (न०) अपरं च परं च-द्वं० पूर्वपदे सुट्। क्रियासातत्य। क्रियानैरन्तर्य। कामका जारी रहना। लगातार काम करना। यह और वह। आपसमें.

अपराजित, (पु॰) परा+जि+क्त-न॰ त॰ । शिव । विष्णु । एक ऋषि । न जीताहुआ (त्रि॰) दूर्वा । एक लताका नाम । दुर्गा । शेफालिका (सुहाँजना) । जयन्तीवृक्ष । असनवृक्ष । ह्लादिनीवृक्ष (स्त्री॰).

अपराद्धपृषत्क, (पु॰) अपराद्धो (लक्ष्यात् च्युतः) पृषत्को (बाणो) यस्य अप+राध्+क्त ब॰ । जिसका बाण लक्ष्य (निशाने) से गिरगया हो । निशाना न करनेहारा धनुषधारी.

अपराध, (पु॰) अप+राध्+भावे घञ् । अकार्यादि करणरूपदोष । पातक । पाप । गुनाह । चूक । भूल.

अपरान्त, (पु॰) अपरस्या अन्तः । पाश्चात्यदेशभेद । पश्चिमदेशी । पश्चिमदेशका वासी (त्रि॰).

अपराह्न, (पु॰) अपरं अहः । एक॰ त॰ टच् । अह्नोऽपरः पश्चात् वा । त्रिधाविभक्तदिनस्य तृतीये भागे । दिनका तीसरा भाग । दिनका शेषभाग.

अपरिग्रह, (पु॰) परि+ग्रह+अप्-अभावार्थे न॰ त॰ । असंग्रह । पास कुछ न रखना । स्वीकार न करना । "नास्ति कन्थाकौपीनाद्यतिरिक्तः परिग्रहो यस्य" । ब॰ गोदड़ी और लंगोटी आदिके विना जिसके पास और कुछ नहीं । संन्यासी । जो कुछ भी स्वीकार नहीं करता (त्रि॰).

अपरिच्छिन्न, (त्रि॰) परि+छिद्+क्त न॰ त॰ । इयत्तारहित । असीम । जो मापा न जाय । वेहद.

अपरिहार्य, (त्रि॰) परि+हृ+ण्यत् न॰ त॰ । अत्यजनीय.

अपरेद्युस्, (अव्य॰) अपरस्मिन्नहनि । अप+एद्युस् । दूसरा दिन । परसों.

अपरोक्ष, (न॰) परतः (अतीतः) अक्ष्णा (इन्द्रियाणां) न भवति पर+अक्षि+अ+समर्थस॰टच्-नि॰सुट् । विषयीन्द्रियसन्निकर्षजन्ये प्रत्यक्षरूपे ज्ञाने । विषय और इन्द्रियके व्यापारसे उपजा प्रत्यक्षरूप ज्ञान । सामने । "अर्थापत्ति तद्विषये" (त्रि॰) जो सामनेहो.

अपर्णा, (स्त्री॰) न पर्णान्यपि भोजनं यस्याः । पत्तेरानामी जिसने छोड़दिया । हिमालयकी कन्या । (" जब यह तपस्यामें निरत थी तो इसने पत्तोंतक खानेका परित्याग किया, इसीसे यह नाम प्रसिद्ध हुआ") । पार्वती । पत्तोंसे शून्य (त्रि॰).

अपर्याप्त, (त्रि॰) परि+आप्+क्त न॰ त॰ । असमर्थ । असम्पूर्ण । शक्तिरहित । जो पूरा न हो.

अपर्वन्, (त्रि॰) नास्ति पर्व यस्मिन् दिने । जिस दिनसूर्य और चन्द्रमाका मेल न हो । बिनमेल । पर्वके विना दिन अर्थात् जो यथार्थ समय नहीं । बुरा वक्त या बुरी बहार.

अपलप, भ्वा॰ प॰ । अपनि । छिपाव । अपलपति । निषेध करना । नामंजूर करना.

अपलाप, (पु॰) अप+लप्+घञ् । मालूमहोनेपर छिपाने अथवा । भालकीसी बात बनाकर कहना । बात छिपाना । प्रेम । स्वीकार न करना.

अपवद्, भ्वा॰ प॰ सक॰ । गाली देना । निन्दा करना । विरोध करना । शिक्षाना । अप पूर्व+वद्+आत्+इत्यादि यह-ऊहे.

अपवद्, भ्वा॰ प॰ । लेजाना । उठालेजाना । चोरी । दूर असाधीर.

अपवरक, (न॰) अप+वृ+वुन् संज्ञायां वुन् । गर्भगृह । कमरा । रहनेका घर.

अपवर्ग, (पु॰) अप+वृज्+भावे घञ् । दान । मुक्ति । पूर्णत्व.

अपवर्जन, (न॰) अप+वृज्+भावे ल्युट् । दान । त्याग । मोक्ष । निर्जन । अपने सिवा दूसरेका न होना.

अपवर्तन, (न॰) अप+वृत्+णिच्+भावे ल्युट् । उलटा फेरा करना । अङ्कगणित (हिसाब)में प्रसिद्ध भाज्य भाजक दोनोंको किसी एक तुल्यअङ्क अङ्कसे भाग देकर संक्षिप्त करना । अन्त करना.

अपवाद, अप+वद्+भावे घञ् । निन्दा । अवज्ञा । विभाग । विशेषविधिरूप बाधक । विवर्त निरूपण वेदान्तशास्त्रमें प्रसिद्ध सीपीमें प्रतीतहुई चांदीको पीछेसे स्वरूपमें लय करना । (ज्ञानहोजानेपर जैसीकी तैसी वस्तुका ज्ञान) । भेद । विरोध । विरोध । आम कायदह.

अपवारण, (न॰) अप+वृ+णिच् ल्युट् । अन्तर्धान । छिपना । व्यवधान । पड़दा

अपविघ्न, (त्रि॰) अपगता विघ्ना यस्मिन् यथा तथा । निर्विघ्न । बिनरुकावट । न छेदा गया.

अपविद्ध, (त्रि॰) अप+व्यध्+क्त । त्यक्त । छोड़दिया । प्रत्याख्यात । तिरस्कार कियागया । प्रतिक्षिप्त (फेंका हुआ) । "माता पिता दोनोंने किम्वा दोनोंमेंसे एकने जिसे छोड़ दिया, और कोई दूसरा उसे पुत्र बनाले ऐसा पुत्र अपविद्ध कहा जाता है" । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक । मुनबन्नह.

अपविषा, (स्त्री॰) अपगतं विषं यस्याः ब॰ । जिससे विष दूर हो जाय । विषहारिणी (विषनिकालनेहारी).

अपवृ, स्वा॰ उभ॰ । वृणोति । ते । ववार । वव्रे । खोलना.

अपवृज्, रुधा॰ आ॰ । अपवृङ्क्ते हटाना । नाश करना । रोक देना । फाड़ देना । खेंचना । लेजाना । खतम करना.

अपवृत्, भ्वा॰ आ॰ । पीछे लौटना । लेजाना । प्रवृत्त करना । चल देना । जुदा होना । अपवर्तते । ववृते । निर्वृ.

अपवृत्त, (पु॰) अप+वृत+क्त । पराङ्मुखीभूत । किसीको न माननेहारा । जिसका आचरण विरुद्ध गया हो.

अपव्यय, क्रिया॰ प॰ । बुरी तरहसे किसीके वित्तको उड़ाना । खोमना । अर फिजरी । विव्यय.

अपव्यय, (पु॰) अपकृष्टः-मर्यादां उल्लंघ्य कृतः व्ययः । मर्यादा बापदादाको लांघ कर किया गया व्यय । खर्च । कारिज खर्च । हदसे जियादा खर्च.

अपशब्द, (पु॰) अपकृष्ट शब्दः प्रा॰ स॰ । संस्कृतभिन्न शब्द । जो शब्द ठाक न हो । बिगड़हुआ शब्द । "संस्कृत शब्दकी शक्तिको बिगाड़ना, भूल, अशक्य आदिसे औरही प्रकारसे बोलेनेसे अपशब्द कहलाते हैं" यह हरिकारिकाका तात्पर्य है । (संस्कृतशब्दको अन्यथा उच्चारण करनेसे अशुद्ध हो गया) । अपभ्रंश

अपशोक, (पु॰) अपगतः शोको यस्मात् ब॰ । जिससे शोक दूर हुआ । अशोकका वृक्ष । शोकरहित । (त्रि॰).

अपष्ठु, (त्रि॰) अप+स्था+कु-उणा॰ विरुद्ध । प्रतिकूल.

अपस्, (न॰) आप्-असुन्-ह्रस्वश्च । आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा स्यात् उणा॰ ४।२०७ अप-अप । कार्य । काम । क्रिया । पवित्रकर्म वा रीति । अच्छा काम.

अपसद, (त्रि॰) अपकृष्ट एव सीदति-सद+अच् । नीचजातिविशेष । ब्राह्मणके वीर्यसे क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रकन्याके गर्भमें उत्पन्न सन्तान । अधम । नीच.

अपसर्जन, (न॰) अप+सृज+भावे ल्युट् । देना । छोड़ना । मोक्ष । विसर्जन.

अपसर्प, (पु॰) अप+सृप+अच् । गुप्तचर । छिपाहुआ दूत । "खुफिया पुलिस" हरकारा.

अपसव्य, (पु॰) अपगतं सव्यं यस्य । दहिनेका भाग । दहिनीओर । पितृतीर्थ । पितरोंका तीर्थ (न॰)

अपसिद्धान्त, (पु॰) अपगत सिद्धान्त । बुरा सिद्धान्त । सिद्धान्तको स्वीकार करनेसे सिद्धान्तका परित्याग करके कथनीय (वचप्रयोग) करना.

अपसृ, भ्वा॰ प॰ । सरति । सरना । चले जाना । दूर होना । हट जाना.

अपसृप, भ्वा॰ प॰ । आगमनसे उलटा । चलेजाना । पीछे हट जाना । बहकजाना । चले जाना । [illegible] । सरकै । अलगना

अपस्मार, (पु॰) अपरोक्षमें ([illegible]) अप+स्मृ+अच् मृगरोग । मर्णोच्च रोग । दर्शनसे बिना स्वरूप ज्ञान ([illegible]) । रोग ([illegible]) को अपस्म करनेहारा रोग.

अपस्नान, (त्रि॰) अपवर्ग स्नान । बुरा स्नान । प्राणके छोड़नेमें स्नान । बुराईके कारण स्नान निषेध.

अपस्मार, (पु॰) अपगतं स्मार (स्मर्ण) यस्मात् ५ ब॰ । जिसमें स्मरण (याददिश्त) जातारहे । मिरगीनामसे प्रसिद्ध रोगका भेद । (इसके होनेपर दम मेंढकी उसी समय सबूर्ण विषयोंमें स्मरणशक्ति विनष्ट होजाती है).

अपहन्, अदा॰ प॰ । हन्ति । अपघात । मारडालना । हटा देना । ताड़न करना । नाश करना । मारना । छेदन.

अपहस्, भ्वा॰ प॰ । हसति । हंसना । ठट्ठाकरना । हंसी (मखौल) करना.

अपहस्त, (त्रि॰) अपगतहस्तको हस्तो अस्मिन् । जिसके हटानेके लिये हाथ बढ़े । गलहस्त (गलेमें हाथ) देकर निकालागया.

अपहार, (पु॰) अप+हृ+घञ् । हरि ([illegible]) चोरी । छिपाना । हरना । [illegible] खर्च.

अपहा, जु॰ प॰ । [illegible] छोड़ना

अपहृ, भ्वा॰ प॰ । हरति । हरना । [illegible] । दूर लेजाना । उठा लेजाना । छीना लेजाना । [illegible]

अपह्नव, (पु॰) अप+ह्नु+भावे अप् । [illegible] पर भी छिपाना ([illegible]) । प्रेम । ([illegible]) । [illegible]

अपह्नु,-अदा॰ आ॰ । छिपाना । छिपाव [illegible]) बहकाना । [illegible]

अपह्नुति, (स्त्री॰) अप+ह्नु+भावे क्तिन् । छिपाना । अर्थालङ्कारविशेष । [illegible] वस्तुका आरोप करना.

अपांनाथ, (पु॰) [illegible]

अपांनिधि, (पु॰) [illegible] समुद्र । [illegible]

अपांपति, (पु॰) [illegible]

अपांपित्त, (न॰) [illegible] आर्थ है

अपाक, (पु॰) [illegible]

अपाकरण, (न॰) [illegible]

अपाकरिष्णु, (पु॰) [illegible]

अपाङ्ग, [illegible]

अभ्याकाङ्क्षित, (न॰) अभि+आ+काङ्क्ष+क्त । झूठा दखल । झूठा दावा । मुंहसे प्रगट करना । " अभ्याख्यान " भी इसी अर्थमें होता है.

अभ्यागत, (पु॰) अभि+आ+गम्+क्त । घरमें आया-हुआ अतिथि । जो पहिले नहीं देखागया । सामने आया कोई हो (त्रि॰).

अभ्यागम, (पु॰) अभि+आ+गम्+भावे घञ् अवृद्धिः । विरोध । पास । सामने जाना । भोग । स्वीकार । फलका संबंध । " आधारे घञ् " लड़ाई । समर.

अभ्यागारिक, (पु॰) अभ्यागारे यत्नकर्मणि व्यापृतः ठन् । घरके व्यापार पुत्रादिके पालन करनेमें व्याकुल (घबराया हुआ).

अभ्यादा-अभि-आ-दा, जु॰ आ॰ । लेना । पकड़ना । पहिरना+माला आदि । एकके बोल चुकनेपर बोलना.

अभ्यादान, (न॰) अभि+आ+दा भावे ल्युट् । सामने होकर देना । आरम्भ (शुरू) करना.

अभ्यामर्द, (पु॰) अभि+आ+मृद्+आधारे घञ् । संग्राम । जंग " मर्दे घञ् " निचोड़ना.

अभ्यास, (पु॰) अभि+अस्-धातौ+करणे घञ् । अव-[illegible] । समीप.

अभ्यास, (पु॰) अभि+अस्-क्षेपे+कर्मणि घञ् । बार बार [illegible] । गुरुसे सुना । गुरुके कहेहुए अर्थमें [illegible] विचार करना । बार बार कहना । निरन्तर ([illegible]) । [illegible] जो अन्तरित (छिपा) नहीं, केवल [illegible] । [illegible] ध्यानादिका बार बार [illegible] । [illegible] बार बार लगना । दूसरी ओर [illegible] न जाने देना.

अभ्यासादन, (न॰) अभि+आ+सद्+णिच्+ल्युट् । शत्रु [illegible] शत्रुको [illegible] करदेना । शत्रुके सामने जाना.

अभ्याहार, (पु॰) अभि+आ+हृ+घञ् । आहार । भोजन । [illegible] ले जाना.

अभ्युच्चय, (पु॰) अभि+उद्+चि+अच् । अभ्युदय । [illegible] । [illegible] । [illegible].

अभ्युत्थान, (न॰) अभि+उद्+स्था+ल्युट् । आदर दि-[illegible] लिये आसन छोड़के उठना । आदरसे उठकर [illegible] । ([illegible]) । उठना । उन्नति.

अभ्युत्था, अभि+उद्+स्था, भ्वा॰ प॰ । [illegible] लिये उ-ठना । [illegible] लिये उठना । निकलना । [illegible] ।

अभ्युत्पत्-अभि+उद्+पत्, भ्वा॰ प॰ । [illegible] । [illegible].

अभ्युदय, अभि+उद्+इण्+अच् । मनसे प्रगट होना । वृद्धि । चूड़ा आदि [illegible] संस्कारके निमित्त कियागया श्राद्ध [illegible] जाना है । वृद्धिके लिये श्राद्ध.

अभ्युदित, (पु॰) अभि+उद्+इ+क्त [illegible] विहितं कर्म यस्मात् । जिसमें [illegible] हुआ हो । सूर्योदयकालमें निद्राके कारण [illegible] के उचित कार्य नहीं किया ऐसा ब्रह्मचारी । [illegible]

अभ्युद्गम्, अभि+उद्+गम् भ्वा॰ प॰ । [illegible] पहुंचना । गच्छति । जगाम । अगमत्.

अभ्युद्यत, (त्रि॰) अभि+उद्+यम्+क्त । [illegible] आगहुंचा फल आदि । उद्यत । समुद्यत । [illegible]

अभ्युपगम, (पु॰) अभि+उप+गम्+अप् [illegible] लेना । पास आगया । स्वीकार करना । [illegible] युक्ति । दलील.

अभ्युपपत्ति, (स्त्री॰) अभि+उप+पद्+क्तिन् [illegible] निवारण कर अभीष्टको पूरा करनेहारा अनुग्रह [illegible] देवरसे सन्तानका उत्पन्न करवाना । [illegible]

अभ्युपाय, (पु॰) अभि+उप+इण्+अच् । [illegible] मंजूर । अच्छा । उपाय.

अभ्यूढ, (त्रि॰) अभि+वह्+क्त । [illegible]

अभ्यूह, (पु॰) अभि+ऊह+अच् । तर्क । [illegible]

अभ्यूह्, भ्वा॰ उ॰ । ऊपरसे बन्द करना । [illegible] अनुमान करना । ऊहति-ते । [illegible] औहीत् । औहिष्ट.

अभ्र, जाना । भ्वादि॰ पर॰ सक॰ सेट् । अभ्रति । आनभ्र.

अभ्रंकष, (त्रि॰) अभ्रं कषति पीडयति-[illegible] गुनगुनाना । बादलको छूनेवाला । बहुत ऊंचा

अभ्रंलिह्, (त्रि॰) अभ्रं लेढि-स्पृशति, [illegible] मेघको चाटनेवाला । बादलको छूनेवाला । [illegible]

अभ्रि, (स्त्री॰) अभ्रति गच्छति अनया । " [illegible] इन् " । बेरीके मलको साफ करनेके लिये बनाहुआ कुदाल । (अभ्री इसी अर्थमें).

अभ्रेष, (पु॰) भ्रेष-चलना+घञ् न॰ [illegible] न्याय्य । मुनासिब । चलनेसे शून्य (त्रि॰)

अम्, रोगी होना (चुरा॰ उभय॰ सक॰ [illegible] देना सक॰ । आमयति-आमयते । [illegible]

अम, (पु॰) अम्+घञ् अवृद्धिः । रोग । [illegible] अर्थ (त्रि॰).

अमङ्गल, (पु॰) नास्ति मङ्गलं यस्मिन्नर्थे [illegible] वृक्ष । (न॰ । कुशलसे रहित (त्रि॰) [illegible]

[illegible] (त्रि०) न+मन्+क्त । न अनुभव किया गया । न [illegible] किया गया । न जाना गया.

[illegible] न०) अमति अन्नं अम-" अम् भोजने । आधारे [illegible] " भोजनका पात्र । बर्तन । हथियार.

[illegible] (त्रि०) नास्ति मन यस्य+मनस्+वत् । न मन- [illegible] त्रिन लगाव । बुद्धिहीन । वेपर्वाह.

[illegible] (पु०) मृ+पचाद्यच् । न० त० । देवता । अमर- [illegible] सौ बोधक बनानेहारा । मुनिदत्त । जो अन्यी [illegible] मरना । पारद (पारा) । हड्डियोंका समूह । जो [illegible] (त्रि०).

[illegible] (पु०) अमरगुरुरक [illegible] [illegible] पूजारी मानसे प्रसिद्ध ब्राह्मण.

[illegible] (त्रि०) [illegible] मृ+पचाद्यच् न० त० । दूर्वा । गुरुची । [illegible] (स्त्री०) मृ+पचाद्यच् [illegible] । पुनर्नवा (स्त्री- [illegible] (पु०) [illegible] पुरी । नगरी मादी । जरायु । पुनर्नवारी [illegible]

[illegible] (पु०) अमराणां अद्रिः ष० त० । सुमेरु पर्वत [illegible] (पु०) अमराणां आलयः । ष० त० । स्वर्ग. [illegible] (स्त्री०) अमर+वती+"ष" [illegible] [illegible] (स्त्री०) अमर+पाल+ [illegible] । देवताओंका निवासस्थान । इन्द्रकी नगरी. [illegible] (पु०) [illegible] (पु०) मुनि अहंति+यत=अर्घ [illegible] । जो मरे [illegible] (पु०) [illegible] । देवता [illegible]

[illegible] (त्रि०) [illegible] । कोप । गुस्सा । क्रोध [illegible] (पु०) [illegible] (त्रि०) मृष+क्विप्+अन न० त० । क्रोधी । गुस्से [illegible] । सहिष्णुता [illegible]

[illegible] (न०) [illegible] । [illegible] । निर्मल । [illegible] । दोषरहित

[illegible] (स्त्री०) [illegible] (अव्य०) [illegible] (त्रि०) [illegible] । [illegible]

[illegible]

अमित्र, (पु०) अम्+ [illegible] होन+क्त्र । शत्रु । दुश्मन.

अमुत्र, (अव्य०) अदस्+त्रल् । परलोक । दूसरा जन्म.

अमूर्त्त, (त्रि०) मूर्त्ति+अच् । न० त० । मूर्त्तिशून्य । वायु आदि निराकार । अरूप । [illegible] । [illegible] ।

अमृत, (न०) मृ+क्त । न० त० । मोक्ष । देवोंके पान- [illegible] हुआ द्रव्य । पीयूष । जल । घी । अयाचितवस्तु । दूध । [illegible] । पारद । अन्न । धन । मनुष्य । (त्रि०) सुन्दर । [illegible] । (स्त्री०) दूर्वा । गुरुची । (न०) [illegible] मरण ।

अमृतजटा, (पु०) [illegible]

अमृतदीधिति, (पु०) अमृतं इव [illegible] । [illegible] । अमृतके [illegible] किरणें जिस [illegible] चन्द्रमा । महादेव.

अमृतफला, (स्त्री०) अमृतं इव [illegible] । जिसका फल अमृतके [illegible] हो । [illegible] । [illegible] ।

अमृतसंभवा, (स्त्री०) [illegible]

अमृतसोदर, (पु०) [illegible] (इसकी उत्पत्ति अमृतसे हुई) । उच्चैःश्रवा नाम घोडा [illegible] । घोडे घोडा.

अमृताशन, (पु०) [illegible] । [illegible] ।

अमेध्य, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

अमेय, (त्रि०) न [illegible] । [illegible]

अमोघ, (त्रि०) [illegible] न हो

अम्ब, [illegible]

अम्बक, (न०) [illegible]

अम्बर, (न०) [illegible]

अम्बरीष, (न०) [illegible]

(पु०) [illegible]

अम्बष्ठ, (पु०) [illegible]

अम्बा, (स्त्री०) अम्ब्यते शब्द्यते बालेनोपगम्यते-अम्ब्+कर्मणि घञ्। माता। अम्बकाशी कन्या। काशीराजकी लड़की.

अम्बालिका, (स्त्री०) माता। विचित्रवीर्यकी स्त्री। पाण्डुराजकी माता.

अम्बिका, (स्त्री०) माता। काशीराजकी कन्या। विचित्रवीर्यकी स्त्री। धृतराष्ट्रराजकी माता। दुर्गा (जगत्को उत्पन्न करनेसे)। अम्बष्ठावेल। कटकी वेल.

अम्बु, (न०) [illegible] । जल। पानी। [illegible]

अम्बुकणा, (स्त्री०) जलबिन्दु। पानीकी बूंद.

अम्बुचामर, (न०) अम्बुनि चामरं इव ७ त०। शैवाल। सेवार.

अम्बुज, (न०) अम्बुनि जायते। अम्बु+ज। कमल। पद्म। शंख। (पु० न०) शंख.

अम्बुद, (पु०) अम्बु ददाति। दा+क। मेघ। बादल.

अम्बुधि, (पु०) अम्बूनि धीयन्तेऽत्र। धा-आधारे कि। ६ त०। समुद्र। समुन्दर.

अम्बुपत्रा, (स्त्री०) अम्बूनि पत्रे यस्याः। [illegible]। [illegible]

अम्बुभृत्, (पु०) अम्बूनि बिभर्ति। अम्बु+भृ+क्विप्। मेघ। समुद्र.

अम्बुरुह, (न०) अम्बुनि रोहति जायते। रुह+क। पद्म.

अम्बुवर्तिनी, (स्त्री०) अम्बुनि वर्तते। [illegible] ७ त०। [illegible]। [illegible].

अम्बूकृत, (त्रि०) [illegible]

[illegible]

अम्भस्, (न०) [illegible] जल। पानी। [illegible]

[illegible] (न०) [illegible] "[illegible]" [illegible]

[illegible] "[illegible]" [illegible]

अम्भोज, (न०) अम्भसि जायते। [illegible] त०। पद्म। [illegible]। (पु०) [illegible] (त्रि०).

अम्भोजिनी, (स्त्री०) [illegible]

[illegible]

अम्भोद, (पु०) अम्भो ददाति। [illegible]। मेघ। बादल.

अम्भोधर, (पु०) अम्भो धरति। [illegible]।

[illegible]

अम्भोनिधि, (पु०) [illegible]। [illegible]

[illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible]

[illegible]

अम्र, (पु०) अमति सौरभेण दूरं गच्छति। अम्+र। आमका वृक्ष। जिसकी सुगन्धि दूर जाती है.

अम्ल, (न०) अम्+क्त। तक्र। छाछ। खट्टा। खट्टे रस (त्रि०).

अम्लक, (पु०) अल्पोऽम्लः अल्पार्थे कन्। मोटा बड़। लकुचवृक्ष.

अम्लकेशर, (पु०) अम्लः केशरोऽस्य। बीजपूर। जम्बीर। चकोतरा.

अम्लफल, (न०) तिंतिडीवृक्ष। निंबूकी किस्म.

अय, जाना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्। अयते। अयांचक्रे.

अय, (पु०) एति सुखं अनेन। इण्+करणे अच्। पूर्व जन्मका शुभ कर्म। शुभावह विधि। सौभाग्य.

अयःपान, (न०) अयः-द्रवीभूतं तप्तलौहं पीयतेऽत्र ल्युट्। जहां तपेहुए लोहेका रस पीना पड़ताहै ऐसा एक नरक। "अयस्पान" भी इसीअर्थमें होताहै.

अयक्षिय, (त्रि०) यज्ञाय साधुनं भवति। यज्ञ+घ। न० त०। जो यज्ञके लिये ठीक नहीं। माष। मांस (पु०).

अयन, (न०) अय्+भावे ल्युट्। जाना। दक्षिणसे उत्तर और उत्तरसे दक्षिणमें सूर्यका जाना। "आधारे ल्युट्" मार्ग। घर। आश्रय। स्थान.

अयस्, (न०) इण्+असुन्। लोहा। धातुविशेष। (यदि यह जर है तौभी चमक पत्थरके निकट रख हुआ चलता है).

अयस्कान्त, (पु०) अयसां मध्ये कान्तः रमणीयः। "अतः कृकमि" [illegible]। कान्तलोहनामी एक प्रकारका लोहा। ६ त०। पास रहनेहीसे लोहेको खींचनेद्वारा चुम्बक नामसे प्रसिद्ध एक प्रकारका पत्थर। लोहेका खिचाव होनेसे ऐसा नाम है.

अयस्कार, (पु०) अयस्+कृ+अण्-उप० स०। लोहार। टट्टर.

अयाचित, (न०) याच+क्त न० त०। अयाचनसे [illegible] "अमृतं स्यादयाचितम्" इति मनु। बिना माँगी मिली चीज। न मांगागया (त्रि०)

अयाचितव्रत, (त्रि०) [illegible] [illegible] हुवे पदार्थसे जीविका करनेवाला.

अयाज्य, (त्रि०) न याजयितुं योग्य-[illegible]। जो मनुष्य [illegible] लिये यज्ञ न करना चाहिये। जो यज्ञ [illegible] नहीं। शूद्र.

अयातयाम, (न०) अयथ [illegible] [illegible] और पुनः [illegible]

अयि, (अव्य०) [illegible]। प्रश्न। अनुनय। [illegible]। [illegible]। [illegible]। अनुनय। क्रोध। [illegible]

, (त्रि०) यु-मिलाना और न मिलाना+क्त । न० त० । मिलाहुआ । मिलाहुआ (न०) दशसहस्रसंख्या १००००.

, (अव्य०) इण्+एच् । कोप । गुस्सा । विषाद । सम्भ्रम । ाधर्यमें दूसरेको बुलानेके लिये शब्दके प्रथम जोड़ाजाता है । संबोधन

ोगव, (पु०) अय इव कठिना गौर्वाणी यस्य । नि०अच् । जातिविशेष । शूद्रके वीर्यसे वैश्यकन्यामें उत्पन्न सन्तान । वर्णसंकर

ोगवाह, (पु०) अनुस्वार और विसर्ग । अक्षरसमाम्नायमें इनका पाठ न होनेपर भी षत्वणत्वादि कार्य सिद्ध करतेहैं । " वाह+अच् कर्म० "

अयोघन, (पु०) अयांसि हन्यन्तेऽनेन । हन्+अप्-घनादेशश्च-नि० । हथौड़ी नामसे प्रसिद्ध लोहेका मुद्गर.

अयोध्या, (स्त्री०) युध+ण्यत्-न० त० । सरयूके तीरपर एक नगरी । उत्तरकोशला । श्रीरामजीकी पुरी । जिससे लड़ाई न कीजाय (त्रि०)

अयोनि, (त्रि०) नास्ति योनिः-कारणं यस्य । निष्कारण । विना कारण । जिसका उत्पादक और कोई नहीं । नित्य.

ोनिज, (पु०) योनौ उपचारात् मातरि न जायते । परमेश्वर । श्रीरामजीकी स्त्री सीता (स्त्री०) । जो योनिसे नहिं उपजा (त्रि०).

र, (न) ऋ+अच् । चक्रस्य नाभिनेम्योर्मध्यस्थे काष्ठे । पहियेकी नाभि और नेमिके बीचका काठ । शीघ्र । जल्दी । जो जल्दी चलताहै (त्रि०) । जैनमतमें कालचक्रका अंश " स्वार्थे-क " सेवाल । पापड़ (पु०)

अर, अल+अम्-वा लस्य रत्वम् । बस । पर्याप्त । जल्दी.

अरघट्ट-क, (पु०) अरं शीघ्रं घट्यते चाल्यतेऽम्भो । घट+कर्मणि अच् । महाकूप । पानीके उठानेकी कला । रिंघावाला कूआ.

अरजस्, (त्रि०) रञ्ज्+असुन्-नलोपः । न०त० । रजोगु-के धर्म । कामक्रोधादिसे रहित । (स्त्री०) कुमारी कन्या

त्रि०) बिनधूर

णि, (पु०) ऋ+अनि । सूर्य । गनियारीनामी वृक्ष । "ऋच्छति प्राप्नमलाग्नि" । आग निकालनेकी लकड़ी (यज्ञमें इसीसे आग निकालतेथे) । स्त्रियां ङीप्.

रण्य, (पु०) ऋ+आधारे अन्य । अर्यंते सेवे वदसत्र । जहां पिछली उमरमें जाय करतेहैं । वन । जंगल.

अरण्यानी, (स्त्री०) महदरण्यं । नि० ङीप्-आनुक् । बड़ा वन.

अरति, ऋ+अति । क्रोध । रम्+क्तिन्-न०त० । चित्तका स्थिर न होना । प्रीति न होना । घबराहट । इसके वियोगसे मनका व्याकुल होना (स्त्री०).

अरत्नि, (पु०) ऋ+अत्नि=रत्नि बद्धमुष्टिकरः स नास्ति यत्र । बीची अङ्गुलिको फैलाकर मुट्ठी बांधाहुआ हाथ.

अरथिन्, (त्रि०) नास्ति रथः यस्य । जिसके पास रथगाड़ी नहीं । जो रथमें स्थित होकर युद्ध नहीं करता.

अरद, (त्रि०) न रदः यस्य । जिसका दांत नहीं । बिनदांत जैसा कि बच्चा । जिसके दांत टूट गयेहों.

अरर, (त्रि०) ऋ+अरन् । किवाड़ । कपाट । द्वार । दर्वाजा । ढकना

अरविन्द, (न०) अरान् चक्राङ्गानीव पत्राणि विन्दते । विद्+श । रक्त । कमल । सारस पक्षी । बगला । नीला कमल । लालकमल । नीलोफर । ताम्र । तांबा । ताँबा.

अराजक, (त्रि०) नास्ति राजा यत्र-न+राज्+कनिन्-क । जहां कोई राजा नहीं । राजहीन देश.

अराति, (पु०) न राति-ददाति सुखं । रा+क्तिन् । न० त० । शत्रु । दुश्मन.

अराल, (पु०) ऋ+विच्-अर । अरं आशाति । आ+का+क । सर्जरस । मतवारा हाथी । राल (त्रि०) । टेढ़ा । टेढ़ा हाथ । (स्त्री०) वेश्या । कंजरी.

अरि, (पु०) ऋ+इन् । शत्रु । रथाङ्ग । पहिया । शरीर त्रिका । छकी संख्या । ज्योतिःशास्त्रमें लग्नसे छठा स्थान.

अरित्र, (न०) ऋच्छत्यनेन । ऋ+इत्र । डालिनामसे प्रसिद्ध बेड़ीके चलानेका काठ । नौकाचालनकाष्ठ । चप्पा.

अरिन्दम, (त्रि०) अरीन् दाम्यति-दमयति वा+ दम् खच् मुम्च । शत्रुजेता । दुश्मनोंपर जोरावर । शत्रुओंको दबानेहारा.

अरिमर्द, (पु०) अरिं रोगरूपं शत्रुं मृद्नाति । मृद्+अण्-उ० स० । खांसीको दूर करनेहारा वृक्ष (त्रि०) । शत्रुओंको सतानेहारा.

अरिमेद, (पु०) अरेर्विट्खदिरस्येव मेदः सारोऽस्य । जिसका सार विट्खदिरकी भाई हो । एकवृक्ष । विट्खदिर.

अरिषड्वर्ग, (न०) षट् च अष्टौ च ततः परिमाणार्थे कन् । षष्ठं अरिस्थानिकं षष्ठं-शाक० त० । विवाहमें वर्जनीय योगविशेष । वरकन्याकी अपनी २ राशिसे छठा और आठवां घर यदि शत्रु हो तो अशुभ है.

अरिषड्वर्ग, (पु०) षण्णां वर्गः समुदायः षड्वर्गः । ... रीणां कामक्रोधादीनां षड्वर्गः (काम, क्रोध, लोभ, मोह, म... मात्सर्यरूप अन्त करणके छ शत्रुओंका समूह) । काम... भीतरके छ शत्रु.

अरिष्ट, (पु०) रिष्-मारन+कर्तरि क्त न० त० । ... लहसन । नीम । सूतिकागार । जिस घरमें स्त्री, पुत्र वा ... जनती है । छाछ । (न०) मद्यविशेष । कौआ । ... नामी प्रसवका घर । अशुभ । वैद्यक पानी.

अरिष्टताति, (पु०) अरिष्ट+तातिल् शुभकरक । ... शुभ । रना (त्रि०) । शुभंकर ।

अरिष्टसूदन, (पु०) अरिष्टं असुरं सूदयति । सूद्+ल्यु । विष्णु (त्रि०) अशुभको दूर करनेहारा.

अरुचि, (पु०) न रुचिर्यत्र । रोगविशेष । बदहजमीके सबब खाना न चाहना । "रुचिः सन्तोषः" न० त० । सन्तोषाभाव (प्रसन्न न होना).

अरुज, (पु०) न रुजति । रुज्+क । वृक्षविशेष (त्रि०) । नीरोग । रोगरहित.

अरुण, (पु०) ऋ+उनन् । सूर्य । सूर्यका सारथी । गुड़ । संध्याकी ललाई । शब्दरहित । एक दैत्य । कोढ़का भेद । (न०) केसर । सिंदूर । मजीठ (स्त्री०).

अरुणलोचन, (पु०) अरुणे रक्ते लोचने यस्य । लालनेत्र । कबूतर । कोइल.

अरुणोदय, (पु०) अरुणस्य अर्कस्य तत्किरणस्योदयो यत्र । सूर्योदयसे पहिली चार घड़ियें.

अरुन्तुद, (त्रि०) अरूंषि मर्माणि तुदति । तुद्+खश्-मुमच् । मर्मपीड़क । हृदयकी चोटके स्थलोंमें छूनेहारा.

अरुन्धती, (स्त्री०) अरुन्धती नाम । [illegible] । वसिष्ठकी स्त्री । कर्दममुनिकी कन्या । बहुत छोटा तारा.

अरुष्, (पु०) ऋ+उसि । सूर्य । रक्तखदिर । मर्म (न०).

अरे, (अव्य०) ऋ+ए । नीचसम्बोधन । क्रोधसे बुलाना.

अरेपस्, (त्रि०) नास्ति रेपः=पापं यस्य । पापरहित । [illegible] शुद्ध । बेदाग । छद्म । चमकदार.

अरोगण, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

अर्क, [illegible] और स्तुति करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । अर्कयति-अर्कयते । आर्चिकत्-त.

अर्क, (पु०) अर्च्+कर्मणि घञ्-कुत्वं । सूर्य । इन्द्र । तांबा । [illegible] । विष्णु । [illegible] । [illegible] । आक.

अर्कचन्दन, (पु०) अर्कस्य प्रियः चन्दनः । शाक० त० । [illegible].

अर्कतनय, (पु०) अर्कस्य सूर्यस्य तनयः । सुग्रीव । कर्ण । [illegible] । [illegible] । (स्त्री०) यमुना.

अर्कग्रहण, (पु०) अर्कस्य [illegible] । [illegible] । [illegible] प्रकाशसे [illegible] । [illegible] [illegible].

अर्कमण्डल, (पु०) अर्कस्य [illegible] आभा । [illegible] [illegible] । [illegible] ।

अर्गल, (स्त्री०) [illegible] । ([illegible]) [illegible].

अर्घ, [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

अर्घ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

अर्घ्य, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । पूज- [illegible] (त्रि०).

अर्च, पूजा करना । उभ० भ्वा० सक० सेट् । अर्चति [illegible] आर्चीत् । आर्चिष्ट.

अर्चा, (स्त्री०) अर्च्+आधारे अ । प्रतिमा । "भावे ■" । पूजा.

अर्चि, (स्त्री०) अर्च्+इन् । आगकी लाट । कि[illegible]

अर्चित, (त्रि०) अर्चि+क्त । पूजागया । विष्णु (पु०).

अर्चिष्मत्, (पु०) अर्चिर्विद्यतेऽस्य मतुप् । [illegible] चमकदार (त्रि०).

अर्ज, अर्जनकरना-कमाना । भ्वा०पर०सक०से[illegible] आर्जीत्.

अर्जक, (पु०) अर्जयति रज्जुं अर्ज्+ण्वुल् । [illegible] (इसकी शाखाओंकी तांतोंसे रस्सी बनती [illegible] कर्ता । इकट्ठा करनेहारा (त्रि०).

अर्जन, (न०) अर्ज्+ल्युट् । प्राप्ति । उपा[illegible]

अर्जुन, (पु०) अर्ज्+उनन् । एक वृक्ष [illegible] पाण्डुका मध्यम अर्थात् तीसरा पुत्र । [illegible] नेत्ररोग । मोर । चित्रा रंग । नेत्रका रो[illegible]

अर्णव, (पु०) अर्णांसि सन्त्यस्मिन् । अ[illegible] मुद्र । एक प्रकारका छन्द.

अर्णस्, (न०) ऋच्छति । ऋ+असुन् [illegible] उणा० सुट् । जल । पानी.

अर्तन, (न०) ऋत्+ल्युट् । निन्दा । [illegible]

अर्ति, (स्त्री०) अर्द्+क्तिन् । पीड़ा । [illegible]

अर्थ, मांगना । चु०आ० द्विक०सेट् । [illegible]

अर्थ, अर्थ+भावकर्मादौ यथायथं अच् [illegible] वस्तु । निवृत्ति । इच्छा । प्रकार । [illegible] लाभ । उद्देश्य.

अर्थदूषण, (न०) अर्थस्य अपहर[illegible] नका चुराना । व्यापनोंके स्थान, [illegible] धनका व्यय करना

अर्थना, (स्त्री०) अर्थ+युच् । भि[illegible]

अर्थपति, (पु०) अर्थानां पति[illegible]

अर्थप्रयोग, (पु०) अर्थानां प्र[illegible] धन देना । सूदपर रुपया देना [illegible]

अर्थवाद, (पु०) वद्+कर्मणि [illegible] देना । निन्दाका दोषका प्रशं[illegible]

अर्थशयत, (त्रि०) अर्थस्य [illegible] [illegible] । कौन, कैसे, कहा [illegible] [illegible] है [illegible]

अर्थशास्त्र, (न०) अर्थस्य [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]

(अर्था)गम, (पु०) अर्थस्य आगमः । आ+गम्+घञ् अच्दिः ।
धनका आना । धनागम । आमदनी.
अर्थान्तरन्यास, (पु०) प्रकृतार्थसिद्धये अन्यार्थस्य न्यासः ।
प्रकृत (वर्तमान) अर्थकी सिद्धिके लिये दूसरे अर्थको ले-
आना । अर्थालङ्कारका भेद
अर्थापत्ति, (स्त्री०) अर्थस्य अनुक्तार्थस्य आपत्तिः सिद्धिः
आ+पद्+क्तिन् । न कहे गए अर्थका समझना । जैसे देव-
दत्त जीताहै परन्तु घरमें नहीं तो समझसकतेहैं कि बा-
हिर अवश्य होगा । मीमांसक अनुमानसे भिन्न कहतेहैं ।
नैयायिक व्यतिरेक व्याप्तिज्ञानसे उपजा अनुमानही सम-
झतेहैं
अर्थिक, (पु०) अर्थयते इत्यर्थी याचक +कुत्सितार्थे कन् ।
सोयेहुये राजा आदिको जगानेके लिये स्तुति करनेहारा । वै-
तालिक । भिक्षु । भाट । भिखारी.
अर्थिन्, (त्रि०) अर्थ+अस्त्यर्थे इनि । याचक । भिक्षुक ।
सेवक । सहाय । धनी । वादी । धनरहित
अर्थ्य, (त्रि०) अर्थात् प्रयोजनादनपेतः । अर्थ+यत् ।
न्याय्य । उचित । न्यायसे कमाया "कर्मणि यत्" । प्रार्थ-
नीय । पण्डित । धनवान् । (न०) शिलाजतु.
अर्द्, मारना-भ्वा०उभ०सक०सेट् । अर्दति-ते । आर्दित-ष्ट.
अर्द्दन, (न०) अर्द+ल्युट् । पीडा पहुंचाना । मारना । मां-
गना । जाना.
अर्दित, (त्रि०) अर्द+क्त । दुःखी हुआ । लाचार किया
गया । प्रार्थना करनेवाला
अर्ध, (पु०) ऋध्+बढना-आदादी घञ् । खण्ड । टुकडा
(न०) समानांश । एक अंश भाग । (त्रि०) दोहिस्से
कियागया.
अर्धगङ्गा, (स्त्री०) अर्धं गङ्गायाः । एकदे०स० । गंगाका-
मारिसे आधा देनेहारी कावेरी नदी.
अर्धचन्द्र, (पु०) अर्धं चन्द्रस्य । एक० त० । चन्द्रार्ध । अ-
ष्टमीका चांद । चांदकी शकलवाला नखूनका जखम । न-
हन्न । गलहत्था । सानुनासिक ँ चिन्ह.
अर्धनारीश्वर, (पु०) अर्धाङ्गे या नारी तस्या ईश्वरः ।
महादेव । शिवपार्वतीकी मूर्तिविशेष । हरगौरीरूप शिव
अर्धपारावत, (पु०) अर्धेन अङ्गेन पारावत इव । जिसका
आधा अंग कबूतरकी नाईं हो । चित्रकण्ठ । कपोत । ति-
तिरपक्षी.
अर्धपारावतः, (पु०) अर्धः पारावत इव, अर्धेन अंगेन
पारावत इव । आधे शरीरसे कबूतरकी भांति एक प्रकारका
कबूतर.
अर्धरथः, (पु०) अर्धः असम्पूर्णः रथः रथी । पूरा रथी
नहीं । रथमें बैठ कर दूसरेके साथ युद्ध करनेवाला जो
रथीके समान चतुर नहीं.

अर्धरात्रः, (पु०) अर्धं रात्रेः । रातका आधा । मध्यरात्रि ।
आधीरात.
अर्धरात्र, (पु०) अर्धं रात्रेः एक०त० । अच् । आधीरात.
अर्धर्चः-र्चम्, (न०) अर्धा ऋक् । आधा मन्त्र वा श्लोक.
अर्धवीक्षण, (न०) अर्धं असम्पूर्णं वीक्षणं । वि+ईक्ष्+ल्यु-
ट् । पूरा न देखना । कटाक्षसे देखना.
अर्धशतम्, (न०) अर्धेन सहितं शतम् । आधेसहित
एकसौ अर्थात् एकसौ पचास १५०.
अर्धावभेदक, (पु०) अर्धं अव भिनत्ति-अर्ध+अव+भिद् ।
एक आधेको फाडनेवाला । आधेसिरकी पीडा.
अर्धाशनम्, (न०) अर्धं अशनस्य । भोजनका आधा ।
आधा भोजन.
अर्धासन, (न०) अर्धं आसनस्य । एक० त० । आसनका
आधा भाग । स्नेहको प्रकाश करनेहारा सम्मान.
अर्धिक, (त्रि०)-की-(स्त्री०) । अर्धं अर्हति ठन् । आधा
भाग लेनेवाला.
अर्धिन्, (त्रि०) अर्धं अस्त्यर्थे इनि । आधा भाग लेनेवाला ।
आधेका हिस्सेदार.
अर्धोदय, (पु०) अर्धस्य सम्यक्त्वस्य पुष्पस्य उदयो यत्र ।
माघका महीना, अमावास्या तिथि, श्रवणनक्षत्र और
व्यतीपात होनेसे एक योग होताहै.
अर्धोरुक, (न०) अर्धं ऊरोः अर्धोरु तत्र कायते का+
क । घोंटे नीचेतक अङ्गोंको ढांकनेहारा कपडा । उत-
मस्त्रियोंके पहिरनेका वस्त्र जो चोलीके सदृश होताहै ।
साडी । घाघरा.
अर्पण, (न०) ऋ+णिच्+ल्युट् पुगच् । सम्प्रदान । देना ।
नजर करना । सौंपना.
अर्पित, (त्रि०) ऋ+णिच्+पुगच् । क्त । दिखायाआदि.
अर्पिस, (पु०) ऋ+णिच्+पुक् च इसन् । हृदय । दिल
छाती.
अर्पिसः, (पु०) ऋ+णिच्+इसन्+हृदय । हृदयका मांस
अर्व-र्वै, मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । अर्वति । आर्वी
अर्बुद, (न०) अर्व्+णिच्+उद्+इण्+क । अच् आमी ...
दशकरोडकी संख्या १०००००००० । (पु०) पर्वतविशे...
अर्भक, (पु०) अर्भे एव स्वार्थे क । बालक । मूर्ख । ...
कमजोर । थोडा.
अर्मः-र्मं, (पु० न०) ऋ० उणा० नेत्ररोग विशेष । ...
बीमारी । पहुंचने योग्य देश । चलनेयोग्य देश । ...
अर्य, (त्रि०) ऋ+यत् । स्वामी । वैश्य (पु०) ...
टाप्" अर्या । अर्यी.
अर्यमन्, (पु०) अर्यं श्रेष्ठं मिमीते ऋ+कनिन ...
पितरोंका राजा.

अर्वन्, (पु०) ऋ+वनिप् । घोड़ा । इन्द्र । स्त्रियां अर्वती.

अर्वाच्, (अव्य०) पूर्व । पर । निकट । पहिले । पीछे । नजदीक.

अर्वाचीन, (त्रि०) अर्वाक् काले पश्चात् काले भवः+ख । प्रतिकूल । विरुद्ध । पीछेकी पैदाइश । नूतन । नया.

अर्बुद, (पु०) अर्व्+उदच् । एकजातिका लोग जो दक्षिण में रहते और इन्द्रदेवके जीते गये थे.

अर्शस्, (न०) ऋ+असुन् इट्च । रोगविशेष । बवासीर । "अर्श".

अर्शस, (त्रि०) अर्शस् अस्त्यर्थे अच् । बवासीरकी व्याधि से दुःखित.

[illegible], (त्रि०) [illegible] । किसीको व्यथा पहुंचानेका यत्न करनेवाला.

[illegible], (त्रि०) [illegible] । बहनेवाला । चलनेवाला.

अर्ह, पूजा [illegible] अक० भ्वादि-पर० सेट् । अर्हति । आर्हीत् । आनर्ह.

अर्ह, (पु०) अर्ह+कर्मणि अच् । योग्य । पूज्य । इन्द्र । ईश्वर.

अर्हण, (न०) अर्ह+भावे ल्युट् । पूजाका साधन । पूजा.

अर्हत्, (त्रि०) अर्ह शतृ । योग्य । लायक । आदरके योग्य । स्तुतिके योग्य । बुद्ध.

अर्हन्त, (त्रि०) अर्ह [illegible] । योग्य । लायक । —न्त (पु०) बुद्धदेव । [illegible].

अर्ह्य, (त्रि०) अर्ह ण्यत् । योग्य । आदरणीय । स्तुतिके योग्य । पूजनीय.

अल्, [illegible] । [illegible] । सक० भ्वा० उभ० । [illegible] । [illegible] । [illegible] । आलिट.

अलम्, (अव्य०) भूषण । पर्याप्ति । शक्ति । वारण । नि- षेध । [illegible].

अलङ्कर्मीण, (त्रि०) अलं समर्थः कर्मणि ख । काम करनेमें चतुर । चुस्त । चालाक.

[illegible], [illegible] । [illegible] । Ved [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] । जिसके [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । (त्रि०) [illegible].

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible].

अलम्भूष्णु, (त्रि०) अलं सामर्थ्ये भू ग्स्नु । [illegible] लायक । चालाक.

अलक, (पु०) अलति-भूषयति मुखं । कुन्तल । घुंघराले केश । पागलकुत्ता । कुलक । (स्त्री०) कुबेरकी नगरी.

अलक्त-क, (पु०) न रक्तो यस्मात् ५ त० [illegible] लाक्षारस । लाखका रंग । वृक्षनिर्यासविशेष.

अलक्षण, (त्रि०) नास्ति लक्षणं अनुमापकं वा [illegible] ६ ब० । जिसका अनुमान न होसके । [illegible] शून्य । न० त० । दुर्भाग्य (बदनसीब).

अलङ्कार, (पु०) अलं+कृ+घञ् । भूषण । [illegible] शास्त्र । काव्यके गुण और दोषको जनानेहारा [illegible] जेवर । गहना.

अलस-क, (त्रि०) न लसति व्याप्रियते-लस+अच् [illegible] निरुद्योग, सुस्त (पांवका रोग) (पु०) हंसपदी लता (स्त्री०)

अलात, (पु० न०) अला+अत-न० त० । अर्धदग्ध [illegible] अंगार । लोहका.

अलाबु-बू, (स्त्री०) न लम्बते । न+लबि+ऊ-णिद् [illegible] पक्ष वृद्धिः । लौंड । तुम्बी । कद्दू । लताविशेष.

अलि, (पु०) अलति दंशे, कूजिते, शाब्दिते [illegible] भाति । अल्+इन् । भ्रमर । कौआ । कोइल । शराब । [illegible]

अलिक, (न०) अल्यते भूष्यते । अल्+कर्मणि इक [illegible] मस्तक । ललाट । माथा । झूठ । मिथ्या । "अलीक."

अलिन्द, (पु०) अल्यते भूष्यते अल्-कर्मणि किन्द [illegible] दर्वाजेके कमरेसे बाहिरका चौतरा । दर्वाजेके [illegible] भाग । चौतरा.

अलिप्सा, (स्त्री०) न लभ् सन् अ । लाभ करनेकी [illegible] का न होना । इच्छारहित.

अलीक, (त्रि०) अल्+ईकन् उणा० न [illegible] अप्रिय । अगम्य । दूर.

अलोहित, (त्रि०) न लोहितः । रुधिररहित । जो [illegible] नहीं । —त । [illegible]

अलौकिक, (त्रि०) लोके विदितः ठञ् न० त० । [illegible] लोग नहीं देखपाते । लोकसे बाहिर । चमत्कारी । [illegible]

अल्प, (त्रि०) [illegible] । किञ्चित् । थोड़ा । थोड़ा "अल्प" [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible].

[illegible], (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । मां । [illegible] । [illegible]

[illegible], [illegible]

अवधारण, (न०) अव+धृ+णिच्+ल्युट्। निश्चयकरण। तहकीक करना। पक्का निश्चय.

अवधि, (पु०) अव+धा+कि। सीमा। हद्द। काल। गर्त। गढा। अवसान। अन्त "आधारेऽवधौ" त्रिड.

अवधीर, न माना। अवज्ञा करना। चुरा० उभ०सक०सेट्। अवधीरयति, ते। आवधीरत्-त.

अवधूत, (त्रि०) अव+धू+क्त। त्यक्त। तजाहुआ। तिरस्कृत। रोकाहुआ। कांपाहुआ। (पु०) वर्णाश्रमधर्मको छोडनेहारा संन्यासी। केवल आत्माराम.

अवध्य, (त्रि०) न+वध्+यत्। न मारनेयोग्य। पवित्र.

अवन, (न०) अव+ल्युट्। प्रीणन। तसल्ली। रक्षण। हिफाजत करना। प्रीति.

अवनम्, भ्वा० प०। झुकना। प्रणाम करना। नीचे झुकाना। नमति। अनंसीत्.

अवनत, (त्रि०) अव+नम्+क्त। नम्र। झुकाहुआ.

अवनद्ध, (त्रि०) अव+नह्+कर्मणि क्त। बंधाहुआ। मृदङ्गादि बाजा (न०) वस्त्र और भूषणका पहिरना.

अवनह्, दि० उ०। बांधना। गांठ लगाना। नह्यति-ते। अनात्सीत्। अनद्ध। अवनद्ध.

अवनाट, (त्रि०) नतं नासिकायाः अव+नाटच्। चपटी नाकवाला.

अवनि-नी, (स्त्री०) अव्+अनि। भूमि। जमीन.

अवनिज्, जु० उ०। प्रक्षालन करना। धोना। साफ करना। पोछना। नेनेक्ति-क्ते। निनेज-निनिजे। अनिजत्-अनैक्षीत्। अनिक्त.

अवनेजन, (त्रि०) अव+निज्+अन। प्रक्षालन करना। धोना। श्राद्धमें कुशापर पानी छिडकना.

अवन्तिका, (स्त्री०) अवन्तिषु कायति प्रकाशते। मालवदेशकी राजधानी उज्जयिनी.

अवपत्, भ्वा० प०। नीचे गिरना। नीचे कूदना। उतरना। पतति। अपप्तत्.

अवपात, (पु०) अव+पत्-आधारे घञ्। बिल। "भावे घञ्"। नीचे गिरना। निपात। गिरना.

अवपात्र, अवरं भोजनायोग्यं पात्रं यस्य। जिसका पात्र भोजनयोग्य न हो। म्लेच्छका पात्र, जिसमें दूसरे नहीं खासकें.

अवपात्रित, (त्रि०) अवपात्र। करोतेर्ये णिच्। जो अपनी जाति सों बैठा है। जिसके सम्बन्धी उसे एकही पात्रमें भोजन करनेकी आज्ञा न दें। जातिसे छेक दियागया.

अवपादित, (त्रि०) अवरतः समन्तात् पत्राः जाताः अस्य तार० इतच्। चारों ओर पत्त (पाई)से फंसा हुआ। फन्देमें फंसा हुआ.

अवपीड, चु० प०। दबाना। पीडयति। अपिपीडत्,

अवप्लुत, (त्रि०) अव+प्लु+क्त। चारों ओर से उतराहुआ। भीजाहुआ.

अवबुध्, दि० आ०। जानना। पहिचानना। ज्ञात होना। बुध्यते। अबोधि.

अवब्रवः, (पु०) कुत्सितः ब्रवः। बुरी खबर.

अवभञ्ज्, रुधा० प०। तोडडालना। टुकडे २ करना। अभाङ्क्षीत्.

अवभास, (पु०) अव+भास्-भावे घञ्। प्रकाश। रोशनी। साक्षात्कार। छल.

अवभृथ, (पु०) अव+भृ+क्थन्। प्रधान यज्ञके पीछे विकल्पितके अर्थ कर्तव्यहोम। यज्ञके अन्तमें स्नान.

अवम, (त्रि०) अव+अमच्। पापी। गुनहगार। अधम। दुष्ट। कमीना.

अवमत, (त्रि०)अव+मन्+क्त। अनादृत। बेइज्जत.

अवमन्, दि० आ०। तिरस्कार करना। मन्यते। अमंस्त.

अवमन्तृ, (त्रि०) अव+मन्+तृच्। तिरस्कार करनेवाला। अभिमानी.

अवमर्द, (पु०) अव+मृद्+घञ्। पीडन। शत्रुके नगरको विनाश करना। मारना। कुचलना.

अवमर्श, (पु०) अव+मृश+घञ्। आलोचना। विचार.

अवमानना, (स्त्री०) अव-चुरा०-मन्+भावे युच्। अपमान करना.

अवमानित, (त्रि०) अव+चुरा०-मन्+कर्मणि क्त। अपमान कियागया.

अवमार्जनम्, (न०) अव मृज् अन। प्रक्षालन। धोना। पोछना। साफ करना। मांजना। बनाना.

अवमुच्, तु० प०। मुक्त छोड देना। खोल देना। घोडा आदि उतार देना-जैसे पौशाक.

अवमूर्धन्, (त्रि०) अवनतः मूर्धा अस्य। झुके सिरवाला.

अवमृज्, अदा० प०। पिसना। रगडना.

अवमृद्, क्र्या० प०। पीसना। मलना। अमर्दीत्.

अवयव, (पु०) अव+यु+अच्। अङ्ग। हिस्सा। उदाहरण। साधन। न्यायमतमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन पांच वाक्य.

अवर, (त्रि०) अव+रा+क। चरम। अर्वाचीन। नीच (न०) हाथीकी जांघका पिछला भाग। देशकाल (पु०) पीछेके देशकालमें होनेवाला.

अवरज, (पु०) अवरस्मिन् काले जातः। छोटा भाई.

अवरति, (स्त्री०) अव+रम्-भावे क्तिन्। विरति। रना। थम्न। हटना.

अवरवर्ण, (पु०) अवरगिना हुआ शूद्र।

धा० प० । निरोध करना । रोकना । ठहराना ।
रोध । अरोसीन.

(त्रि०) अव+रुध्+कर्मणि क्त । आच्छादित । । बांधाहुआ । अन्य पुरकी भोगनेयोग्य दासी । त्री (स्त्री०).

धा० प० । नीचे उतरना । रोहति । रुरोह । अरुक्षत्.

(त्रि०) अव+रुह्+कर्तरि क्त । उतरा । उत-अपने स्थानसे उठा

(पु०) अव+रुध्+भावे घञ् । निरोध । रोक । घञ्" । राजमन्दिर । रनवास । राजाकी स्त्री.

, (त्रि०) अव+रुह्+णिच्-पुक् च+कर्मणि क्त । । उतारा गया.

(पु०) अव+रुह्+भावे घञ् । अवतरण । उतरना । चढ़ना "अपादाने घञ्" । स्वर्ग । (जहांसे भोग- [illegible] नीचे उतरते हैं).

(त्रि०) अव+रुध्+घञ् । विवर्ण । विरोध । ला । शूर । "वाक्य" इसी अर्थमें.

(पु०) अव+लग्+क्त इडभावः । देहका मध्य- भाग । लगाहुआ (त्रि०).

(पु०) अव+लवि+आधारे घञ् । आश्रय । करणे घञ्" । पकडनेका साधन दण्ड आदि । वन."

भ्वा० आ० । लटकना । लम्बते । लम्बे ।

(त्रि०) अव+लिप्+कर्तरि कर्मणि वा क्त । । गर्वित । लिप्त । लिपटाहुआ.

अदा० उभ० । चाटना । लेढि-लीढे । लिलेह-अलिक्षत्-अलिक्षत.

(त्रि०) अव+लिह्+कर्मणि क्त । अलिप्त । आ- । आस्वादित । चखाहुआ । चाटाहुआ.

, (स्त्री०) आदर रीति । अनादर । अनादर । [illegible] । आदरकी.

तु० उ० । किसी वस्तुको [illegible] (उ) अपने [illegible] करता है । [illegible] । लुम्पति-लुम्पते । लोप-लुलोपे । अलुपत्-अलुप्त.

, (न०) अव+लुप्+अन । अलग करना [illegible]

(पु०) अव+लिह्+भावे घञ् । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

, (पु०) अव+लिह्+भावे ल्युट् । [illegible] । [illegible] । ल्युट्" । चाटना आदि.

अवलेह, (पु०) अव+लिह्+भावे घञ् । चीजसे चाटना । चटनी.

अवलोकन, (न०) अव+लुक्+भावे ल्युट् । दर्शन । देखना । अनुसंधान । [illegible] करना । "करणे ल्युट्" । आलोक । नेत्र.

अवलोप, (पु०) अव+लुप्+घ । [illegible] । [illegible] । [illegible] । चूराना.

अवलोम, (त्रि०) अवनतं लोम अनुकूलं । जो किसी के अनुकूल हो.

अवश (त्रि०) नास्ति वशं आयत्तं यस्य । [illegible] । परा- धीन । बेवश

अवशाय, (त्रि०) [illegible] । [illegible] (माथा) करके [illegible].

अवशिष्ट, (त्रि०) अव+शिष्+क्त । [illegible] । शेष । [illegible] । परिशिष्ट । बाकी । अधिक । [illegible].

अवश्य, (अव्य०) [illegible] । (त्रि०) [illegible].

अवश्याय, (पु०) अव+श्यै+अ । [illegible] । [illegible] । [illegible] । अभिमान

अवष्टम्भ, (न०) अव+स्तम्भ+अच् । [illegible] किसी वस्तुको [illegible] । "[illegible]" [illegible]

अवष्टब्ध, (त्रि०) अव+स्तम्भ+कर्मणि क्त [illegible] । [illegible] । निकट । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवष्टम्भ, (पु०) अव+स्तम्भ+[illegible] [illegible] । [illegible] । सोना । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवसक्थिका, (स्त्री०) [illegible] । जिसमें पद बांधे हुए हों । [illegible].

अवसर, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवसथ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवसर, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवसर्प, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवसाद, [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

अवसान, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवसाद, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवसित, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवस्कन्द, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

अवस्कन्दन, (न०) अव+स्कन्द्+भावे ल्युट् । तोड़ना । छीनना । गुजरना । उतरना.

अवस्कर, (पु०) अव+कृ+कर्मणि अप्-सुट् । झाड़से उड़े हुए कंकर मट्टी आदि । विष्ठा । गूँह । गुह्य । छिद्र.

अवस्तात्, (अव्य०) अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरं इत्यर्थे अस्ताति+अव् आदेशः । नीचे । नीचेसे.

अवस्तार, (पु०) अव+स्तृ+करणे घञ् । जवनिका । कनात । दरी । पर्दा.

अवस्तु, (त्रि०) कुत्सितार्थे नञ् । एक निकम्मी चीज.

अवस्था, (स्त्री०) अव+स्था+अङ् । दशा । आयु । हालत । उमर.

अवस्थान, (न०) अव+स्था+भावे ल्युट् । स्थिति । रिहायश । जगह.

अवस्यन्दन, (न०) अव+स्यन्द+भावे ल्युट् । हिंसन । मारना.

अवस्यु, (त्रि०) अवः रक्षणं तदिच्छति क्यच् उन् Ved- अनुग्रहकी इच्छावाला । रक्षा चाहनेवाला.

अवस्रंसन, (न०) अव+स्रंस+भावे ल्युट् । अध:पतन । नीचे गिरना.

अवहार, (पु०) अव+हृ+कर्तरि ण । चोर । पानीका हाथी । तन्दुआ । निमन्त्रित ब्राह्मणोंका धन चुराना.

अवहित, (त्रि०) अव+धा+क्त । स्थापन किया गया । सावधान । हुशियार.

अवहेल, (न० स्त्री०) अव+हेल्+अ । घत्रर्थे त वा । अनादर । बेअदबी.

अवाक्शिरस्, (त्रि०) अवाक् शिरोऽस्य ब० । नीचे मुख । अधोमुख.

अवाक्ष, (त्रि०) अवनतानि अक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य । जिसकी इन्द्रियें झुक गई हैं । मरखक । रखवारा.

अवाङ्मुख, (त्रि०) अवाक् मुखं अस्य । अधोमुख । नीचे मुख.

अवाग्र, (त्रि०) अवनतं अग्रं अस्य । जिसका आगा झुका हो । सिर झुकाये हुए । प्रणाम करनेवाला.

अवाच्, (त्रि०) अवाचि । अव+अञ्च्+क्विन् । नीचेकी ओर ऐंठा देख । (स्त्री०) दक्षिणदिशा । ६ ब० । जो बोल नहिं सक्ता । गुंग । निठल्ला समय (अव्य०).

अवाच्य, (न०) अव+वच्+ण्यत् कुत्व-न०त० । अनिन्दित । जो निन्दाके योग्य नहीं । यथावत् । जो कहनेके योग्य नहीं.

अवान, (त्रि०) अव+अन्+घञ् । सूखा हुआ । सूखा.

अवान्तर, (त्रि०) अवगतं अन्तरं मध्यं अन्त्या० स० । प्रधानान्तर्वर्ती आदि । मध्यवर्ती । बीचका.

अवाप्, स्वा० उ० । पाना । लाभ करना । आप्नोति-अवाप्नु- आप-आपे । आपत्-आपिरन्.

अवारपार, (पु०) अवारं पारं च स्तो यस्य । अवारपार दोनों किनारेवाला समुद्र । समुद्रचन्द्र.

अवारपारीण, (त्रि०) अवारपारे गच्छति-ख । पार जानेहारा.

अवासस्, (त्रि०) न वासोऽस्य । वस्त्ररहित । वस्त्र बिना । नंगा । रजस्वला.

अवि, (पु०) अव+इन् । सूर्य । भेड़ । बकरा । पर्वत । स्वामी.

अवितथ, (न०) न वितथं मिथ्या । न० त० । सत्य । स

अविद्या, (स्त्री) विद्+क्यप्-न० त० । विद्याभाव । विद्या न होना । अहंकारका कारण अज्ञान । विद्याकी विरोधी अयथार्थबुद्धि । वेदान्तमतमें भाव किंवा अभावसे कही जानेहारी अचेतन (जड़) माया (परमात्माकी शक्ति

अविनाभाव, (पु०) बिना (व्यापकं अन्ते) न (स्थितिः) व्यापकस्थित्यनुरोधि सत्तारूपा व्याप्ति । व्यापक (कारण) के बिना न रहसके । जैसे अग्निके बिना धूम नहिं रह सक्ता अर्थात् जहां धूम होगा वहां अग्नि अवश्य होनी चाहिये । व्याप्ति.

अविनीत, अव+नी+कर्तरि क्त । उद्धत । अशिक्षित । बदचालचलन बिगड़ाहुआ । नाफरमाबरदार । (स्त्री०) कुलटा । बदचलन औरत.

अविभक्त, (त्रि०) अपृथक् । नाबटा (पु०) वि+भज्+ क्त-न० त० । समृद्ध । विभागरहित द्रव्य । सांझा.

अविमुक्त, (न०) वि+मुच्+क्त-न० त० । जिसे ब्राह्मण और महादेव नहिं छोड़ते । काशीक्षेत्र । मुक्तभिन्न । मुक्त नहिं (त्रि०).

अविरत, (त्रि०) वि+रम्+भावे क्त । न० ब० । विरामशून्य । लगातार.

अविरल, (त्रि०) न विरलः न० त० । घन । निबिड़ मिलाहुआ । मेघना.

अविवेक, (पु०) वि+विच्+घञ्-न०त० । सदसद्विवेकाभाव । भले बुरेका न विचारना । बेसमझी । अज्ञान.

अविश्रान्त, (त्रि०) वि+श्रम्+क्त-न०त० । विरामशून्य । लगातार.

अविस्पष्ट, (न०) वि+स्पश्+क्त-न० त० । अस्पष्ट वाक्य । जो साफ न हो.

अवीचि, (पु०) नास्ति वीचिः (सुखं) अत्र । नरकभेद । विनताश (न०).

अवीर, (त्रि०) वीरः (पुत्रादि) नास्ति यस्य । वीररहित । बटहीन.

अवे, अवइ+अदा० प० । जाना । समझना । सीखना । पहिचानना । एति । इयाय । अगात्.

अवेक्षण, (न०) अव+ईक्ष्+भावे ल्युट् । दर्शन । देखना । मनका लगाना । सोचना । "अवेक्षा" इसी अर्थमें.

अवोक्षण, (न०) अव+उक्ष+भावे ल्युट् । Ved. थोडेसे झुके हुए हाथसे सींचना.

अवोद, (त्रि०) अव+उन्द् भावे घञ् निपातः नलोप । आर्द्र । गीला.

अव्य, (त्रि०) अवि+भवार्थे यत् । भेडमें आया वा भेडका सम्बन्धी.

अव्यक्त, (पु०) वि+अञ्ज+क्त-न०त० । विष्णु । कामदेव । शिव । मूर्ख । प्रधान । आत्मा । परमात्मा । सूक्ष्मशरीर.

अव्यक्तराग, (पु०) न व्यक्तो रागोऽरुणिमा यस्य । थोडा लाल । अरुणवर्ण.

अव्यञ्जन, (पु०) नास्ति व्यञ्जनं (शुभलक्षणं शृङ्गं) यस्य । सींगके बिना पशु । अच्छे लक्षणसे शून्य । चिह्नशून्य (त्रि०).

अव्यथ, (पु०) न व्यथते (पद्भ्यां न चलति) । व्यथ् । डरना और चलना-अच् । सर्प । सांप पीडाके बिना (त्रि०).

अव्यथिन्, (पु०) बहुचलनेऽपि न व्यथते । व्यथ्-इनि । अश्व । घोडा.

अव्यभिचारिन्, (त्रि०) वि+अभि+चर्+णिनि-न० त० । किसीभी प्रतिकूल कारणसे न हटायाजानेहारा । न हटनेवाला । न्यायमतमें शुद्ध हेतु (पु०).

अव्यय, (न०) वि+इण्+अच्-न० त० । सब विभक्तिओं और वचनोंमें एकरूप शब्दमें रहनेहारा धर्मविशेष । जैसे सर्वत्र एकरूप होनेसे स्वरादि अव्यय हैं । शिव । विष्णु (पु०) आद्यन्तरहित । विकारशून्य (त्रि०).

अव्ययीभाव, (पु०) अनव्ययं अव्ययं भवति अनेन । अव्यय+च्वि+भू+करणे घञ् । व्याकरणमें प्रसिद्ध एक समास । जैसे "उपकुम्भं" यहां अनव्यय भी कुम्भादिपद अव्यय बन गया है.

अव्यवस्था, (स्त्री०) वि+अव+स्था अङ्-न० त० । अशिष्टान्त । अविधि । शास्त्रके विरुद्ध उपदेश । नियमका न होना.

अव्यवहार्य, (त्रि०) वि+अव+हृ+ण्यत्-न० त० । जिसके साथ शयन वा भोजन उचित नहीं । जो व्यवहारके योग्य नहीं । जो अपने धर्मसे गिरगया हो । पतित.

अव्यवहित, (त्रि०) वि+अव+धा+कर्मणि क्त-न० त० । व्यवधानशून्य । साथ । लगाहुआ । बिना परदा.

अव्याकृत, (त्रि०) वि+आ+कृ+कर्मणि-क्त न० त० । वेदान्तमें बीजरूप जगत्का कारण अज्ञान । सांख्यमें प्रधान.

अव्याप्यवृत्ति, (त्रि०) व्याप्य (साधिकरणं देशादिकं साकल्येन संबध्य) न वृत्तिः (स्थितिर्यस्य) । जो अपने आश्रयके सम्पूर्ण देशमें न रहे । जैसे घट पृथिवीके एकदेशमें ही रहताहै इसलिये अव्याप्यवृत्ति है । व्याप्यवृत्ति तो जातिआदि है जो घट आदिमें सम्पूर्ण रूपसे संबद्ध हुआ ही स्थित है यह न्यायमतमें प्रसिद्ध है.

अव्युत्पन्न, (त्रि०) वि+उत्+पद्+क्त-न०त० । सम्पूर्ण शब्दसंबंधी प्रत्येक अङ्गको जाननेकी शक्तिका नाम व्युत्पत्ति है उससे अर्थात् अवयवार्थसे शून्य शब्द "वह शब्दभी जो धातु प्रत्ययसे सिद्ध नहीं होसका" । शब्दके अर्थको न जाननेहारा मूर्ख आदि.

अश्, फैलना-स्वा०आ०सक०वेट् । अश्नुते । आशिष्ट-आष्ट । आनशे

अश्, खाना-क्र्या०पर०सक०सेट् । अश्नाति । आशीत् । आश.

अशन, (पु०) अश्नुते (व्याप्नोति) अश्+ल्यु । पीतसालवृक्ष । पौधा । भावे ल्युट् । व्याप्ति । फैलना । भोजन (न०) । अन्न.

अशनाया, (स्त्री०) अतिलोभेन अशनं इच्छति । अशन+क्यच् स्त्रियां भावे अ । बहुत लोभसे खाना चाहताहै । भूख.

अशनायित, (त्रि०) अशन+क्यच् +कर्तरि क्त । क्षुधित । भूखा.

अशनि, (पु०) अश्नुते (संहन्ति) अश्+अनि । वज्र । बिजुली । वर्क.

अशब्द, (त्रि०) नास्ति शब्दो, वेदादौ वाचकशब्दो वा यस्य । शब्दहीन । वाचकशब्दरहित । प्रधान "ईक्षतेर्नाशब्दं" इति सूत्रं.

अशरीर, (त्रि०) नास्ति शरीरं तदभिमानो वा यस्य । सकल निषेधस्य देहशून्य परमात्मा । शरीरके अभिमानसे रहित जीवन्मुक्त । "अशरीरं वाव सन्तं प्रियाप्रिये न स्पृशतः".

अशास्त्र, (न०) शास्+करणे ष्ट्रन् न०त० । वेदादि विरुद्ध नास्तिकका शास्त्र.

अशित, (त्रि०) अश्+कर्मणि क्त । भक्षित । खायाहुआ । रजाहुआ

अशितङ्गवीन, (त्रि०) अशितास्तृप्ता गावोऽत्र । जहां गौएं रजती हैं । वह स्थान कि जहां गौएं चरती हैं.

अशित्रम्भव, (त्रि०) अशितस्तृप्तो भवत्यनेन । स्व मुम् च । तृप्तिका साधन अन्नादि । खाद्यद्रव्य । खानेकी चीज

अशिश्वी, (स्त्री०) नास्ति शिशुर्यस्याः ङीप् । शिशुहीना स्त्री । बेऔलाद औरत " ज़ने बे फ़रज़न्द " "अशिश्विका" इसी अर्थमें होताहै.

अशीति, (स्त्री०) दशानां अवयवं दशति, दशकं अष्टगुणिता दशतिः नि० । अशीत्यवयव । संख्याविशेष । ८० अस्सी.

अशुभ, (न०) नास्ति शुभं यस्मात् ५ ब० । पाप । अमङ्गल । पापी (त्रि०)

अशेष, (त्रि०) नास्ति शेषो यस्य । शेषहीन । तमाम । सकलनिःशेष.

अशोक, (पु०) नास्ति शोको यस्मात् ५ ब० । अशोकवृक्ष । वकुलवृक्ष । पारा । कटुकावृक्ष (स्त्री०) । शोकरहित (त्रि०).

अशोच्य, (न०) शुच्+कर्मणि ण्यत् न० त० । अशोचनीय । जो शोक करनेके लायक नहीं.

अशौच, (न०) शुचेर्भावः शौचं न० त० । शुचिताभाव । नातकी । विहित कर्मके अनधिकारको सम्पादन करनेहारा अघने । "मार्ये ध्वम्" "आशौच्य" इसी अर्थमें है.

अश्न, (त्रि०) अश्नुते व्याप्नोति अश्नाति वा अश्+नन् । व्याप्त । सब स्थानपर फैला हुआ । खानेवाला.

अश्नीतपिबता, (स्त्री०) अश्नीत पिबत इत्युच्यते यस्यां क्रियायां मयू० व्यं० स० । खाने पीनेके लिये निमन्त्रण.

अश्मक, (पु०) अश्म इव स्थिरः, स्वार्थे कन् । पत्थरकी भाँति स्थिर । एक ऋषिका नाम । दक्षिण दिशामें एक नगर.

अश्मगर्भ, (पु०) अश्मेव गर्भोऽस्य । मरकतमणि । पन्ना । मणिविशेष.

अश्मघ्न, (पु०) अश्मानं हन्ति (भिनत्ति) हन्+टक् । पाषाणभेदक वृक्ष.

अश्मन्, (पु०) अश्नुते व्याप्नोति संहत्यतेन वा । कर्मणि वा मनिन् । पर्वत । मेघ । पत्थर (न०) लोहा.

अश्मन्तक, (पु० न०) अश्मानं अन्तयति । चुल्हा । वृक्षविशेष । अश्मन्तक वृक्ष.

अश्मपुष्प, (न०) अश्मेव अन्तयति चूर्णितं करोति । अश्म+णिच्+अच् पृषो० । इसको चूर्ण करनेहारा (अश्म) पत्थरको चूर्ण करनेका यन्त्र.

अश्मरी, (स्त्री०) अश्मानं राति-रा+क गौरा० ङीष् । मूत्रकृच्छ्र रोग । यह मूत्राशयमें पत्थरकी भाँति कठिन भाग रहता है । रोगविशेष । पथरीकी बीमारी.

अश्मरीघ्न, (पु०) अश्मरी (मूत्रकृच्छ्र) हन्ति-हन्+टक् । जो पथरीके रोगियोंका दूर करता है । वरुणवृक्ष.

अश्मसार, (पु० न०) अश्म सार इव । लोहा । ६ त० । जो पत्थरके समान कठिन है.

अश्र-स्र, (न०) अश्नुते नेत्रं व्याप्नोति वा । अश्+रक् । जो नेत्रको व्याप्त कर लेता है । नेत्रजल । आँसूका पानी । आँसू । अश्रु.

अश्रान्त, (त्रि०) श्रम्+भावे क्त-न० त० । ... रन्तर । लगातार । "कर्तरि क्तः" न थका हुआ ...

अश्रि-श्री, (स्त्री०) अश्+क्रि । अस्त्रादिका घरआदिका कोण । कोन । धार । ... रहित (स्त्री०).

अश्रु-स्रु, (पु०) अश्नुते व्याप्नोति नेत्रम् ... (अश्) क्रुन् । जो आँखमें भरजाता है ... दीखता नहिं । नेत्रजल । आँखका पानी । ...

अश्रुत, (त्रि०) श्रु+क्त-न० त० । अनाकर्णित ... जो सुना नहीं गया.

अश्लील, (न०) श्रियं लाति श्रीलाति-ला+क ... लज्जाजनकादिका ग्राम्यभाषा । लज्जा देनेहारी ... धृणा । देहाती जबान । गाली । गलौज.

अश्लेषा, (स्त्री०) श्लिष+घञ्-न० त० । नक्षत्रवि... तारा । इसके ५ तारे होतेहैं न० ब० । न श्लि...

अश्व, (पु०) अश्+क्वन् । घोटक । घोड़ा.

अश्वकर्ण, (पु०) अश्वस्य कर्ण इव पत्रं ... पत्ता घोड़ेके कानकी तरह हो । सालवृक्ष । ... जिसका कान घोड़ेके कानकी तरह हो.

अश्वतरज, (पु०) अश्वश्च खरी च, अश्व... शाम्यां जायते पुंवद्भावः । खच्चर । घोड़ेका ... धन".

अश्वखुर, (पु०) अश्वस्य खुरमिव खुरं मूलं ... पत्ता घोड़ेके खुरके समान है । अपराजिता ...

अश्वघ्न, (पु०) अश्वं हन्ति-हन्+टक्-उपप... इसका । इसके खानेसे घोड़ेका नाश होजाता ...

अश्वतर, (पु०) तनुरश्वः । अश्व+ तनुत्वे ष्टर... च । जो गधेसे घोड़ीमें उत्पन्न हो । खच्चर ...

अश्वत्थ, न श्वःस्थास्यति शाल्मलिवृक्षादिवत् स्थि... नि० । शाल्मली वृक्षादिके समान देरतक ... वृक्षविशेष । पीपल । गर्दभाण्डका वृक्ष ... (कलके) देरतक न रहनेके कारण ... "ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्" ...

अश्वत्थामन्, (पु०) अश्वस्य इव स्थाम ब... म० । घोड़ेके समान बलवाला । कौरवोंके ... और द्रोणका पुत्र

अश्वपाल, (पु०) अश्वान् पालयति । पा+णि... घोड़ेवाला । घोड़ोंको पालनेहारा । ...

अश्वबाल, (पु०) अश्वस्य बालः, ६ त० ... घोड़ेका बाल.

अश्वमुख, (पु०) अश्वस्य मुखमिव मुखमस्य । जिसका मुख घोड़ेके समान हो । किन्नर देवताविशेष.

अश्वमेध, (पु०) अश्वो मेध्यते (हिंस्यते) अत्र । मेधृ+घञ् । जिसमें घोड़ा मारा जाताहै । एक यज्ञ । (इसमें एक प्रकारके अच्छे घोड़ेको मन्त्रोंसे स्नान करवा पत्र बांध, एक वर्षके लिये घूमनेको छोड़ देते हैं; जब वर्षसमाप्तमें वह घोड़ा घरको लौट आताहै इसे कोई नहिं पकड़ता, तब इसे मारकर तिसकी चरबी होममें डालते हैं, उसीका नाम अश्वमेध होताहै).

अश्वमेधीय, (पु०) अश्वमेधाय हितः । छ प्रत्ययः । अश्वमेधका घोड़ा.

अश्वयुज्, (स्त्री०) अश्वेन (हयमुखाकारेण) युज्यते । युज्+क्विप् । जिसका रूप घोड़ेकी नाईं हो । अश्विनी नक्षत्र । "मलधीतेऽपि अश्वयुज" इसी अर्थमें.

अश्वरोधक, (पु०) अश्वं रुणद्धि । रुध+ण्वुल् । करवीर-वृक्ष । घोड़ेको रोकनेहारा.

अश्ववार (पु०) अश्वं वारयति वृणो० इ+अण् उप० स० । घोड़ेको रोकनेहारा वा कबूल करनेहारा । अश्वारोही । घोड़ेपर चढ़नेहारा । घुड़चढ़ा.

अश्वस्तन, (त्रि०) न श्वोभवः । श्वस्+तुट् । दूसरे दिनके लिये न रहनेहारा । एक दिनके निर्वाहके योग्य अन्नादि.

अश्वाभिधानी, (स्त्री०) अश्वोऽभिधीयतेऽभिधार्यतेऽनया । अभिधा+ल्युट् । जिससे घोड़ा पकड़ा जाता है । घोड़ेके बांधनेकी रस्सी । "अश्वाभिधानीमादत्ते" श्रुति.

अश्वारि, (पु०) अश्वस्यारिः ६ त० । महिष । भैंसा.

अश्वारोह, (पु०) अश्वं आरोहति । रुह+अण् । घोड़ेपर चढ़नेहारा । घुड़चढ़ेसे लड़ाई करनेहारा । "असवार".

अश्विन्, (पु०) द्वि० अश्वा सन्ति अनयो । इनि । जिसके घोड़े हों । स्वर्गके वैद्य (हकीम) अश्विनीकुमार । सूर्यके वीर्यसे अश्विनीसे उत्पन्न हुए जोड़े पुत्र.

अश्विनी, (स्त्री०) अश्व इवाकारोऽस्त्यस्याः । जिसका सिर घोड़ेकी नाईं हो । "दीर्घ" २७ नक्षत्रोंमें १ म तिथिमें । सूर्यकी स्त्री.

अश्विनीकुमार, (पु०) द्वि० । घोड़ीरूप सूर्यपत्नीमें घोड़ेरूपी सूर्यसे उत्पन्न हुए दो पुत्र । घोड़ीरूप एक देवी (जिसका नाम संज्ञा था) के पेटसे उत्पन्न हुए दो कुमार । स्वर्गके वैद्य (हकीम)

अश्वीय, (न०) अश्वानां समूहः । घोड़ोंका झुंड वा दल (देर) अश्वसमूह । अश्वीन (त्रि०) घोड़ेका हितकारी.

अश्वोत्तम, (न०) अश्वानां उत्तमः (सुन्दर) अश्व ष० त० । उत्तम अश्व । अच्छा घोड़ा.

अष्, गमनार्थ-अक० सक० । जाना, देना भ्वा० उभ० सक० सेट् । अषति-ते । आपोह.

अषड्क्षीण, (त्रि०) न सन्ति षट् अक्षीणि (चक्षूंषि) यत्र । ख (ईन) तीसरे जनके कानसे न सुनागया । दोनोंहीसे किया गया मन्त्रादि (सलाह मशवरा) दोनोंका सलाहमशवरह.

आषाढ–ढ, (पु०) वैसाखसे तीसरा मास । हाड़.

अषाढा–ढा, (स्त्री०) उत्तराषाढा और पूर्वाषाढा दोनों नक्षत्र (तारे).

अष्टक, (न०) अष्टौ अध्यायाः परिमाणं अस्य । अष्टन्+कन् । पाणिनीका अष्टाध्यायी ग्रन्थ । ८ अध्यायोंका समूह । ऋग्वेदका प्रत्येक अंश (भाग) (इस ऋग्वेदमें अष्टकसे ८ भाग हैं)

अष्टका, (स्त्री०) अश्नन्ति पितरोऽस्यां अशू-कन्+तुट् । सप्तमी आदि तीन दिन । पौष, माघ, फाल्गुनकी कृष्णाष्टमी । "अष्टका पितृदेवत्ये" इस शिक्षामें वहां इस नहिं होता

अष्टन्, (त्रि०) बहु० । संख्याविशेष । आठ

अष्टधा, (अव्य०) आठ प्रकार । आठ तरहसे

अष्टधातु, (न०) अष्टौ धातवः । आठ धातु । सोना । चां-दी । तांबा । पीतल । कांसी । सीसा । रांगा । लोहा.

अष्टपाद्–द, (पु०) अष्टौ पादा अस्य ब० स० शरभमेद । लूता पड़ावे होनेसे बहुपद । जिसके आठ पैर हों । मकड़ीविशेष । एक शिकारी हिरन । सफेद शेर । शरभ

अष्टमङ्गल, (पु०) अष्टसु स्थानेषु मङ्गलं यस्य । जिसके आठों स्थानों (मुख, बालों पर पूंछ, छाती, और पैरोंके पास) पर श्वेतवर्णत्व (सिफेदी) होता हो ऐसा घोड़ा । आठ मङ्गलपदार्थोंका समाहार (ढेर) जैसा कि इस श्लोकमें आठ मङ्गलद्रव्य हैं, ब्राह्मण, गौ, अग्नि, सोना, घी, सूर्य, जल और राजा । (दूसरे ८ इसमें) हैं, शेर, बैल, हाथी, कलश, पंखा, झण्डा, बैरी और दीपक

अष्टमान, (न०) अष्टौ कुडव मानं (परिमाण) यस्य । जिसका माप आठ मुट्ठीभर हो । कुडवक (११ तोलेका) आठ मुट्ठीभर

अष्टमी, (स्त्री०) अष्टानां पूरणी । आठोंको पूरण करनेवाली । १५ कलाके चन्द्रमाकी आठवीं कलाकी क्रिया । आठवें कलाकी तिथि

अष्टमूर्ति, (पु०) अष्टौ मूर्तयस्य कर्मदे० ब० स० । शिवजी आदि जिसकी आठ मूर्ति हैं । पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, यज्ञ (यज्ञ करनेहारा यजमान) सूर्य और चन्द्रमा, इसलिये आठ मूर्तियोंके शिवजी (शिव)

अष्टलोहक, (न०) अष्टसु लोहम् (धातुषु) इन्हें । आठ धातुओंका समूह । सोना चांदी तांबा पीतल, रांगा, सीसा लोहा, कांसा यह आठ धातु हैं

अष्टाकपाल, (पु०) अष्टसु कपालेषु (मृत्पात्रेषु) संस्कृतः पुरोडाशः । आठ मट्टीके पात्रोंमें शुद्ध किया गया चरु (घी आदि) । जिसके द्वारा यज्ञ किया जाता है । यज्ञ.

अष्टाङ्ग, (पु०) अष्टौ अङ्गानि यस्य । जिसके आठ अंग हों । योगविशेष । यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि ये आठ योगके अंग हैं । इनका स्वरूप अपने २ शब्दके अर्थमें कहेंगे) । जानु (घुटने या गोडे) पैर, हाथ, छाती, बुद्धि, शिर, वचन और दृष्टि (नजर) से किया गया प्रणाम है, जल, दूध, कुशाग्र, दही, घी, चावल, जौ और सिद्धार्थक (गोरीसरिओं) इस प्रकार आठ द्रव्योंसे बनाया गया पूजाका साधन अर्घ है.

अष्टादशन्, (त्रि०) बहु० अष्टाधिका दश, अष्टौ च दश चैति वा । आठसे ज़ियादा दस या आठ और दस १८ रह "पूरणे डट्" १८ संख्याको पूर्ण करनेहारा । अठारहवां.

अष्टादशाङ्ग, (पु०) अष्टादश अङ्गानि यस्य । जहां १८ अङ्ग हैं । (न०) वैद्यक शास्त्रमें प्रसिद्ध एक पाचन है.

अष्टावक्र, (पु०) अष्टसु अङ्गेषु भागेषु वा वक्र । आठ अंगोंमें टेढा । कहोडका पुत्र एक प्रसिद्ध ब्राह्मण.

अष्टिः, (स्त्री०) अश्यते भूमौ क्षिप्यते, अश्+क्तिन् पृषो० त्वम् । एक गेंदलैसा पासा । १६ अक्षरोंका छन्द.

अष्ठा, (स्त्री०) अश्यते व्याप्यतेऽनया, अश व्याप्तौ ष्ट्रन् । पशुओंके चलानेका छड़ी या चाबुक या अङ्कुश.

अष्ठीला, (स्त्री०) अष्ठिरस्थि तुल्यकठिनादमानं-ला+क-रस्य लः दैर्घः । गोल पत्थर । बीमारी । चोट लगनेसे जो नील पड़जाता है । वातसे उठना रोग.

अस्, चमकना अक० । लेना और जाना सक० भ्वा० उभ० सेट् । असति-ते । आसीत्-ट । "लावण्यमुत्पाद्य इवास" कुमार०.

अस्, होना-अदा०अक०पर०सेट् । अस्ति । अभूत् । बभूव

अस्, फेंकना-दिवा०पर०सक०सेट् । अस्यति । आस्थत्.

असंस्कृत, (त्रि०) सम्+कृ+क्त+सुट् न० त० । गर्भाधानादि संस्कारोंसे रहित । व्याकरणके संस्कारसे शून्य । अपशब्द । बिगड़हुआ शब्द

असकृत्, (अव्य०) न सकृत्-न०त० । बारबार

असक्त, (त्रि०) सञ्ज+क्त-न०त० । आसक्तिसे शून्य । फलकी अभिलाषासे रहित । "असक्तः सुखमन्वभूत्" इति रघु० । "बुद्धिर्यस्य असक्ता" इत्यादि.

असङ्कुल, (त्रि०) न सङ्कुल । परस्परविरुद्ध । जो आपसमें विरुद्ध न हो । बहुत भीड़ेसे खाली जगह । चौड़ी सड़क.

असङ्कल्पसमाधि, (पु०) न सङ्कल्प (सङ्कल्पसे उत्पन्न होनेवाला) जिस समाधिमें पूर्व वृत्ति रहित नहीं रहता । संप्रज्ञात । असंप्रज्ञात.

असंख्य, (त्रि०) नास्ति संख्या इयत्ता यस्य । जिसे संख्या न हो । परार्धसे लांघगया । बड़ी संख्यावाला

असङ्ग, (पु०) सञ्ज्+घञ् न० त० । सङ्गरहित । परमात्मा । महादेव । पुत्र, धन, और लोभवासनाकी छोड़के वैराग्य । न० ब० । विषयकी प्रीतिसे रहित (त्रि०)

असङ्गत, (त्रि०) सम्+गम्+क्त-न० त० । सङ्गतिरहित । तच्छून्य । जो औचितीसे शून्य हो । अयुक्त । विरुद्ध.

असङ्गति, (स्त्री०) सम्+गम्+क्तिन्-न० त० । संगतिसे रहित । सगति (मेल) का न होना । अर्थालङ्कारभेद.

असत्, (त्रि०) अस्+शतृ-न०त० । सत्से भिन्न । न होना । विश्वासविना कियागया होम आदि । असत् "स्त्रियां ङीप्" । कुलटा । व्यभिचारिणी स्त्री.

असद्ग्रह, (पु०) असति (अविद्यमाने) वस्तुनि ग्रह (आग्रह) । न होनेवाली चीजमें हठ करना । बालकोंका हठ.

असपत्न, (त्रि०) नास्ति समानः पतिः यस्य । बिना सौतिन स्त्रीरहित । जो शत्रु न हो । मित्र.

असपिण्ड, (त्रि०) नास्ति समानः पिण्डः यस्य । बिना पिण्ड (पितरोंके लिये एक चावलोंका गोला) के साथ संबंध नहीं । जिसका रुधिरसंबन्ध न हो.

असभ्य, (त्रि०) सभायां अर्हति-यत् न० त० । जो सभाके लायक नहिं । स्त्रीवर्णन आदि । खल । नीच.

असमञ्जस, (न०) समञ्जसं (युक्तियुतं) न० त० । जो युक्तियुक्त नहिं । जो ठीक नहिं । असङ्गत । सगर राजाका बड़ा पुत्र (पु०).

असमद, (त्रि०) सह मदेन-गर्वेण समद-कलह नास्ति यत्र । निर्विवाद । जिसमें कोई विवाद न हो.

असमय, (पु०) अयुक्तार्थे न० त० । कुसमय । अयोग्य काल । बेमौका.

असमर्थ, (त्रि०) समर्थः शक्त. । न० त० । दुर्बल । अशक्त । कमजोर । नाताक़त । असक्त । असमर्थ । समर्थ

असमवायिकारण, (न०) समवैति-सम+अव+इण्+णिनि । न० त० । न्यायमतमें समवायिकारण जो होता है, उससे भिन्न द्रव्यमें रहनेहारा गुणादि कारण जैसे घटका कपालद्वयसंयोगरूप गुण असमवायिकारण है । संयोगविभागादिका असमवायिकारण द्रव्यके कर्म किया है.

असमीक्ष्यकारिन्, (त्रि०) समीक्ष्य विविच्य न करोति कृ+णिनि । विचार कियेबिना काम करनेहारा । बेसमझे काम करनेहारा । मूर्ख.

असम्पत्ति, (त्रि०) न-सम्+पद्+क्तिन् । दुर्भाग्य । निर्धन । गरीब । दुःखी.

अर्थप्रकाश, (त्रि०) [illegible] (त्रि०).

[illegible], (न०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (न०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] (त्रि०)

[illegible], ([illegible]) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible]

असाम्प्रतम्, (अव्य०) न साम्प्रतं युक्तं न० त० । अयुक्त । नामुनासिब । असमान्तर । बेमौकह.

असार, (पु०) नास्ति सारो यस्य । सारहीन । एरण्ड वृक्ष न० त० । सारभिन्न न० ब० । निःसार "असारः खलु संसारः".

असि, (पु०) अस्-चमकना-फेंकना+इन् । खड्ग । तरवार.

असिक्नी, (स्त्री०) सित+ङीप् । जिसा केशादी बुढ्ढा बनती तद्भिन्ना अवस्था । क्नादेशः ङीप् च । अन्तःपुरचारिणी दासी । जनानेमें जानेआनेवाली लौंडी । नदीविशेष.

असिगण्ड, (पु०) अस्यते क्षिप्यते । अस्+इन् । असिः क्षिप्तो गण्डो यत्र । जहां गाल रक्खी जाय । गालका तकिया.

असित, (पु०) सितः शुभ्रः । विरोधे न० त० । शुभ्रवर्णभिन्न । काला रंग । शनिग्रह । कृष्णपक्ष (त्रि०) मुनिविशेष.

असेचनक, (त्रि०) न सिच्यते तृप्यते मनोऽत्र । सिच्+क्वुन्+कन् । बहुतही सिवाय दर्शन जिसे देखनेसे मन नहीं रजता.

असेवन, (त्रि०) न+सेव+अन । सेवा न करनेवाला । बेसेवक. ।

असेवित, (त्रि.) न+सेव+क्त । न सेवा किया गया । छोड़ दिया गया.

असेवितेश्वर-द्वार, (त्रि०) न सेवितः ईश्वरः न सेवितं ईश्वरस्य द्वारं येन । जो धनियों अथवा बड़े लोगोंके द्वारकी सेवा नहीं करता.

असौष्ठव, (त्रि०) न सुष्ठु [illegible] न+सुष्ठु+अण् जो सुन्दर वा [illegible] नहीं । जिसकी अच्छी हालत नहीं.

अस्त, (पु०) अस्यन्ते सूर्यकिरणाः यत्र । आधारे क्त । पश्चिमाचल । सूर्यका डूबनेका पर्वत । "अस्तमित" [illegible] । [illegible] । (त्रि०) मृत्यु । क्षीण । [illegible] (न०).

अस्तम्, (अव्य०) अन्तर्धान । छिपजाना । नष्ट । [illegible].

अस्तमय, (न०) अस्तं [illegible] । सूर्य [illegible] ([illegible]).

अस्ताचल, (पु०) अस्यन्ते [illegible] यत्र । पश्चिमाचल । [illegible].

अस्ति, (अव्य०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

अस्तु, (अव्य०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

अस्तेय, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । न [illegible] (त्रि०).

अस्त्र, (न०) अस्यते क्षिप्यते । अस्+ष्ट्रन् । [illegible] बाणआदि । "करणे ष्ट्रन्" धनुष । तरवार आदि.

अस्त्रचिकित्सक, (पु०) अस्त्रस्य अस्त्रजन्यव्रणस्य चिकित्सकः । कित्+ण्वुल् । ६ त० । अस्त्रके घावकी चिकित्सा करनेहारा.

अस्त्रिन्, (त्रि०) अस्त्रं धनुरस्यास्ति-इन् । धनुषधारी । किसी किस्मका अस्त्र धारण करनेहारा.

अस्थान, (न०) अप्रशस्ते न० त० । [illegible]

अस्थि, (न०) अस्यते-अस्+क्थिन् । मांसके [illegible] नामसे प्रसिद्ध धातुभेद.

अस्थिधन्वन्, (पु०) अस्थि अस्थिमयं धनुर्यस्य [illegible] । शिव । महादेव.

अस्थिपञ्जर, (पु०) अस्थि पञ्जर इव । हड्डियों [illegible]

अस्थिमालिन्, (पु०) अस्थिमयी माला [illegible] शिवजी.

अस्थावर, (त्रि०) नास्ति स्थावरं [illegible] स्थिरहित । स्थूलशरीररहित । शरीरहित.

अस्मद्, (त्रि०) अस्+मदिक् । अस्मदर्थी [illegible] मैं । हम । देहाभिमानी जीव.

अस्मि, (अव्य०) मैं "तानस्मि वक्ति विदुर [illegible] हम०.

अस्मिता, (स्त्री०) अस्मि इत्यस्य भावः तल् । शास्त्रमें प्रसिद्ध प्रधान और पुरुषको एक [illegible] बुद्धि और दर्शनको एकरूप समझना.

अस्र, (न०) असृक् रुधिरम् रसरोदन [illegible] के पडनेपर जो आंसूमें उत्पन्न होताहै । मांस [illegible] दूसरेके आधीन.

अस्वतन्त्र, (त्रि०) न स्वस्य तन्त्रः अधीन । [illegible]

अस्वप्न, (पु०) नास्ति स्वप्नो निद्रा यस्य । जिसे [illegible] देवता.

अस्वर्ग्य, (त्रि०) स्वर्गाय हितं-स्वर्ग+यत्-न० त० हेतु धर्मका विरोधी । निषिद्धाचरण । बुरा काम.

अस्वस्थ, (त्रि०) न स्वस्मिन् तिष्ठति, न+स्व+स्था [illegible] जो आपमें नहीं रहता । बेआराम । व्याधित । [illegible]

अस्वाध्याय, (त्रि०) न स्वाध्यायो वेदाध्ययनं [illegible] अध्ययनहीन (जो वेद नहीं पढ़ता) । "न [illegible] दक्षिणन्" जिस दिन पढना उचित नहीं । [illegible]

अस्वामिक, (त्रि०) न स्वामी यस्य । [illegible] बिनमालिक.

अस्वैरिन्, (पु०) स्वैरी स्वाधीन-न० त० । पराधीन, [illegible]

अह, गत-अत्य० भ्वा० पद० इति-भेद । भेदे । [illegible]

अह, धातु० । चुरा० इदित् उभ० अक० सेट् । [illegible] अभिप्राय न.

अहह, (अव्य०) प्रशंसा । तारीफ । क्षेपण । फेंकना । रोकना.

अहं, (अव्य०) मैं । अहंकार । आत्मसम्बन्धी अभिमान.

अहंयु, (त्रि०) अहं, अहंकारोऽस्त्यस्य । अहं+युस् । अहंकारी.

अहंकार, (पु०) अहं इति क्रियतेऽनेन । कृ+घञ् । अभिमान । गर्व.

अहत, (न०) हन+क्त-न०त० । नवाम्बर । नया कपड़ा । बेजखं । अनाहत । बगैर चोटके.

अहन्, (न०) न जहाति न त्यजति सर्वथा परिवर्तमानत्वात् न+हा+कनिन् । सदा घूमता रहताहै । दिन.

अहमहमिका, (स्त्री०) अहं अहं शब्दोऽस्त्यत्र । वीप्सार्थो द्विर्भावः ठन्-न दिलोपः । अन्योन्यात्मस्तुति । अपनी प्रशंसा करनी । मैंही सबमें बड़ा हूं ऐसा कहना.

अहम्पूर्विका, (स्त्री०) अहं पूर्वोऽहं पूर्वं इत्यभिधानं यत्र । लड़ाईमें युद्ध करनेहारे उत्साहपूर्वक कहतेहैं कि मैं पहिले आऊंगा मैंही पहिले आऊंगा । बढ बढ कर लड़ना.

अहम्मति, (स्त्री०) अहमित्याकारा मतिः ज्ञानं । मन्+क्तिन् । अविद्या । औरमें औरके धर्मको दिखानेहारा अज्ञान.

अहर्गण, (पु०) अह्नां गणः समूहः । दिनोंका समूह । ३० दिनका मास.

अहर्दिव, (न०) अहश्च दिवा च । समा०द्वं० । प्रतिदिन । रोजमर्रा.

अहर्मुख, (पु०) अह्नो मुखं आदिभागः । दिनका पहला भाग । प्रत्यूष । प्रात काल । सवेर.

अहल्लिकः, अहनि लीयते, ली+ड+निपातः । सोऽस्त्यस्य । शव । मुर्दा । मृतक शरीर । Vol. बहुत बोलनेवाला.

अहल्य, (त्रि०) न हलाय भवति । हलमें न जोता गया । -ल्यः (पु०) । एकनगरका नाम ।-ल्या (स्त्री) । गौतमकी पत्नी का नाम.

अहस्कर-अहस्पति, (पु०) अहः करोति । कृ+ट । करकादित्वात् सत्वम् । दिवाकर । सूर्य । सूरज । आकका वृक्ष.

अहह, (अव्य०) सम्बोधन । आश्चर्य । खेद । क्लेशवर्ष.

अहार्य, (पु०) हृ+ण्यत् । न० त० । पर्वत । जो चुराया न जाय । जो लोभा न जाय (त्रि०).

अहि, (पु०) आहन्ति । आ+हन्+डिन् डिलोपः आहो ह्रस्वश्च । सांप । इवन्मंडल । सूर्य । सीसा । राहु । मुसाफिर । जीव । कठिन । अश्लेषा नक्षत्र.

अहिंस्र, (त्रि०) न हिनस्ति । हिंस्+रन्-नञ् तत्पु० । मन, वाणी और शरीरसे दूसरेको पीड़ा न पहुंचाना । हिंसारहित जीवोंको पीड़ा न देना.

अहिजित्, (पु०) अहिं सर्पं वृत्रासुरं वा जितवान् । जि+क्विप् तुक् । सांप वा वृत्रासुरको जीतनेहारा । विष्णु । इन्द्र.

अहित, (पु०) न० त० । शत्रु । जो हितकारी न हो (त्रि०) । बीमारीमें रोकी गई खुराक । अमङ्गल.

अहितुण्डिक, (पु०) अहेस्तुण्डं मुखं तेन दीव्यति । ठञ् । सांप पकड़नेहारा । सांपसे खेलनेहारा.

अहिफेन, (न०) (पु०) अहेः फेन. गरलं इव दोषजनकत्वात् । जो सांपकी झागके समान हो । अफीम.

अहिबुध्न, (पु०) अहेरिव बुध्नो मूलं यस्य । शिव । चन्द्रमा । रुद्रविशेष । उत्तराभाद्रपद नक्षत्र.

अहिभुज्, (पु०) अहिं भुङ्क्ते-क्विप् । गरुड़ । मोर । नेउला.

अहिलता, (स्त्री०) अहिलोकस्य पन्नगस्य लता । शाक० त० । ताम्बूली । पानकी बेल.

अहिविद्विष्, (पु०) अहिं सर्पं वृत्रासुरं वा द्विष्टवान् । द्विष्+क्विप् । गरुड़ । इन्द्र । मोर । नेउला । विष्णु

अहीरणि, (पु०) अहीन् ईरयति दूरीकरोति । ईर्+अनि । द्विमुखसर्प । दो मुंहवाला सांप । (इसके देखनेसे दूसरे सांप भाग जातेहैं).

अहुत, (पु०) आभि हुतं हवनं यत्र । जहां हवन नहीं कियागया । धर्मका साधन होनेवाली होमादिक बिना । ध्यानयोग । (न०) ब्रह्मयज्ञ । (त्रि०) न हुतम् यत्

अहैतुक, (त्रि०) हेतुम् अनर्थ-ठक् न० त० । कार्यानुसन्धानरहित । फलकी इच्छाके बिना । निष्कारण । वा पक्षपातरहित । कपटके बिना । स्वाभाविक.

अहो, (अव्य०) शोक । करुणा । विषाद । विचार । खेद । संबोधन । दया । निन्दा । विस्मय । हैरानहोना । प्रश्न । तारीफ करना । शाबाश । हाहाकार । फिकर । धिक्कार

अहोबत, (अव्य०) दया । खेद । ... । ... । लोकको बोधन करानेवाला संबोधन.

अहोरात्र, (पु०) अहश्च रात्रिश्च । द्वन्द्व० । दिनरात

अह्नाय, (अव्य०) शीघ्र । जल्दी.

अह्रस्व, (त्रि०) न० ह्रस्व । न० त० । दीर्घ । लम्बा । न छोटा.

आ

आ, (अक्षर) संस्कृतका दूसरा स्वर । अनुस्वार । इस । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... और ... । ... और ... जिस तरह ... है । (...) ... । (...) ... । ... । ... । ... है । ... । (पु०) महादेव

आग्नीध्र, (न०) अग्निं इन्धे अग्नीत् तस्य शरणम् । होम करनेहारेका घर । मनुवंशमें प्रियव्रतका ज्येष्ठ पुत्र.

आग्नेय, (न०) अग्निर्देवतास्यस्य अण् । जिसकी देवता अग्नि हो । सुवर्ण । सोना । घी । लालरंग । वह्निपुराण (महापुराण) । आगवाला । एक नगर । अगस्त्यमुनि । (पु०) । "आग्नेयी" (स्त्री०) पूर्व और दक्षिणके मध्यकी दिशा । अग्निकी स्त्री स्वाहा । प्रतिपदा । अग्निदेवताका मन्त्र.

आग्न्याधानिकी, (स्त्री०) अग्न्याधानस्य यज्ञस्य दक्षिणा+ठञ् । ब्राह्मणोंको देने योग्य धन । यज्ञकी दक्षिणा.

आग्रभोजनिक, (पु०) अग्रभोजनं नियतं दीयते अस्मै+ठञ् । वह ब्राह्मण जिसे सबसे पहिले भोजन दिया जाताहै । सबसे आगे बैठनेवाला ब्राह्मण.

आग्रयण, (न०) अग्रे अयनं भोजनं शस्यादेर्येन कर्मणा पृ० ह्रस्वदीर्घव्यत्ययः । नये फलादिका भोजन करनेसे पहिले एक प्रकारका यज्ञ । एक अग्निका नाम । नया अन्न.

आग्रहायणिक, (पु०) आग्रहायणी पौर्णमासी यस्मिन् मासे+ठक् । मार्गशिर (मग्गसिर) का महिना । पूर्णिमावाला मास । "आग्रहायण" इसी अर्थमें होताहै.

आग्रहायणी, (स्त्री०) आग्रहायण्या मृगशिरसा नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी-अण्-ङीप् । मृगशिर नक्षत्रवाली पूर्णिमा । मार्गशीर्ष (मग्गसिर) मासकी पौर्णमासी.

आग्रहारिक, (पु०) अग्रहारोऽग्रभागो नियतं दीयतेऽस्मै ठक् । नियमसे जिसे पहिला भाग दिया जाय । पहिले भाग देने योग्य ब्राह्मण । श्रेष्ठ ब्राह्मण । उत्तम-ब्राह्मण.

आघट्ट, (पु०) आघट्टयति रोगान्-ण्वुल् । लालरंग । अपामार्गवृक्ष.

आघात, (पु०) आ+हन्+घञ् । आहनन । चोट । "आधारे घञ्" वधस्थान । मारनेकी जगह । कतलघर । कसाईखाना.

आघात, (पु०) आ+हन्+घञ् । चोट । परस्पर चोट करना.

आघार, (पु०) आ+घृ+कर्मणि घञ् । घी । "भावे घञ्" होम आदि । मन्त्रविशेषसे देवताविशेषको घी देना.

आघूर्णित, (त्रि०) आ+घूर्ण+क्त । चालित । हिलायागया । भ्रमित । घुमायागया.

आघृणि, (त्रि०) आगतो घृणिर्दीप्तिरस्य । तेजसे चमकनेहारा । प्रकाशमान । बहुतसे धनवाला । सूर्य (पु०).

आघ्राण, (न०) आ+घ्रा+क्त । गन्धग्रहण । गन्धका लेना । संघूना । तृप्त होना.

आघ्रात-त, (त्रि०) आ+घ्रा+क्त ... सिंघागया । गंधागया । ...
गया । खोलागया.

आङ्गारम्, (न०) अङ्गाराणां समूहः ...
समूह । बहुतसे जलेहुए कोइले.

आङ्गिक, (त्रि०) अङ्गेन अङ्गचालनेन निर्वृत्त ... को प्रकाशकरनेहारे गात्रोंसे सिद्ध हुए ... ना आदि । अंगोंसे उपजा । नृत्य । ... भिनय । "आङ्गिकोऽभिनयः".

आङ्गिरस, (पु०) अङ्गिरसो मुनेरपत्यं ...
पुत्र । बृहस्पति.

आङ्गूष, (पु०) आङ्गूष-स्वार्थे अण् । ...
वैदिक गीत । गीत.

आचक्षु, अ० आ० । बोलना । प्रतिज्ञा ... बतलाना । वर्णन करना । आचष्टे । आख्यत ...

आचतुरम्, (अव्य०) चतुर्पर्यन्तं+अव् ...
पीढ़ीतक । चारतक.

आचम्, भ्वा० प० । आचमन करना । ...
जल पीना । आचामति । चचाम । अचमीत् ...

आचमन, (न०) आ+चम्+भावे ल्युट् । ...
पीना । मुख आदिका धोना । कर्मके ... जल डालना । विहित कर्म करनेसे प्र... के लिये तीनवार हाथपर जलपान करना ... पहिले जल पीना.

आचमनक, (न०) आचमनस्य मुखक्षालन... अत्र । जहां मुंह धोनेका पानी पड़े । ...
पीकदान.

आचमनीय, (न०) आचमनाय मुखप्रक्षालन... हितम् छ । आ+चम्+करणे अनीयर् वा । ...
पानी.

आचान्त, (त्रि०) आ+चम्+क्त । आचमन ... जल पीयागया.

आचाम, (पु०) चम्+भावे घञ् । आचमन ...
चूसना.

आचार, (पु०) आ+चर्+भावे घञ् । ...
रुन । मनु आदिसे कहागया ज्ञान आचमन ...

आचार्य, (पु०) आ+चर्+ण्यत् । जो ...
पवीत कर कल्प और उपनिषद्सहित वेद... का पढ़ानेहारा । मनसंस्थापन करनेहारा आदि । "स्त्रियां टाप्" आचार्या । ...
आचार्याणी.

र्यक, (पु०) आचार्यस्य कर्म भावो वा-वुञ् । चार्यका काम । आचार्यपना । आचार्यके करनेका काम

चित, (त्रि०) आ+चि+क्त । संगृहीत । इकट्ठा किया । व्याप्त । वचन । फैलाहुआ । एक रथका भार ५ मन

छन्न, (त्रि०) आ+छद्+क्त । ढका । ढकाहुआ । घिराहुआ ।

छाद, (पु०) आच्छाद्यतेऽनेन । छद्+णिच्+करणे घ । वस्त्र । कपड़ा

च्छादन, (न०) आ+छद्+णिच्+ल्युट् । वस्त्र । कपड़ा । ढकना । परदा

च्छुरित, (त्रि०) आ+छिद्+कर्मणि क्त । छेदसे कटगया । काटागया । ज़ोरसे खोंचाहुआ.

च्छुरित, (न०) आ+छुर्+क्त । शब्दसहित हँसना । नखोंसे पिसना । खिलखिलाकर हँसना । नखोंका शब्द.

र, (न०) आज्यतेऽनेन । आ+अज्+घञर्थे क । ग । "अजस्येदं अण्" । बकरेका मांस आदि.

क, (न०) अजानां समूहः वुञ् । छागसमूह । बकरोंका झुण्ड.

जि, (स्त्री०) अजन्ति अस्यां । अज्+इन्-न वीभावः । समरभूमि । संग्रामभूमि । लड़ाईकी जगह । गाली । झगड़.

जीव, (पु) आजीव्यतेऽनेन । आजीव्+करणे घञ् । आजीविका । जीनेका निर्वाह । "आजीविका" इसी अर्थमें

जू, (स्त्री०) आजवति । आ+जु+क्विप् दीर्घः । तन-खाहबिना काम करनेहारा

ज्ञा, (स्त्री०) आ+ज्ञा+अङ् । निदेश । ऐसा करो ऐसा शासन । हुकम । ज्योतिषप्रसिद्ध लग्नसे १० वां स्थान.

ज्य, (न०) आ अज्यते । अन्ज्+क्यप्-नलोपः । घृत । घी

ज्यभाग, (पु०) आज्यस्य भागः । होम । आहुतिवि-शेष । घी.

ञ्जनेय, (पु०) अञ्जनाया अपत्यं-ढक् । हनुमान.

टविक, (न०) अटव्यां चरति, भवो वा ठक् । जंगली सेना । जंगली.

टोप, (पु०) आ+तुप्+घञ्-पृषो० टत्वम् । अहंकार । वेग । ज़ोर । वायुसे उत्पन्नहुई पेटकी बीमारी.

डम्बर, (पु०) आ+डम्ब्-अरन्+केकना । हर्ष । खुशी । अहंकार । बाजेकी आवाज । आरम्भ । वेग । आँखके रोम । बादलका गर्जना । बाजा । गुस्सा । हाथीका शब्द

आढक, (पु० न०) आढौकते-आ+ढौक्+घञ्-पृषो० । चारों ओरसे दस अंगुलका माप । चारप्रस्थ परिमाण । चारसेर । पड़ोप्पा । अनाज गिननेका पात्र.

आढकी, (स्त्री०) आढौकते अच्-पृषो० । अरहरनामी शमी-का धान.

आढ्य, (त्रि०) आ+ध्यै+क-पृषो० । युक्त । मिलाहुआ । बड़ा धनी.

आणक, (त्रि०) अणक एव स्वार्थे अण् । नीच । छोटा ।-कं । स्त्रीपुरुषकी क्रीडा.

आणि, (पु०) अण्-इण्-स्त्रियां वा ङीप् । रथचक्रके आगे-का कील । नोक । हद । कोना.

आतङ्क, (पु०) आ+तकि+घञ् । रोग । सन्ताप । सन्देह । ढोलका शब्द । भय । डर.

आतञ्चन, (न०) आ+अञ्च्+ल्युट् । वेग । हाँक करना । चलाना । नाश । फेंकना । उपद्रव । मुसीबत.

आतत, (त्रि०) आ+तन्+क्त । फैला दिया गया । विस्तार दिया गया.

आततायिन्, (त्रि०) आततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं शीलं अस्य । अय्+णिनि । शस्त्र उठाकर जिस-का मारनेका स्वभाव है । मारनेको तयारहुआ । महा-पापी । छ प्रकारके महापापी-आग लगानेहारा, विष-देनेहारा, शस्त्रवाला, धनका चोर, खेतका चोर, और स्त्रीका चोर.

आतन्, तना०उ० । फैलाना । बिछाना । ढांकना । तनोति-तनुते । ततान-तेने । अतानीत् । अतनुत-अतत.

आतप, (पु०) आ+तप्+घञ् । पीड़ाका कारण । सूरज वा आगकी गरमी । धूप । प्रकाश । सूर्यका प्रकाश.

आतपत्र, (न०) आतपात् त्रायते । त्रै+क । छाता । जो धूपसे बचाता है.

आतर, (पु०) आतरत्यनेन । तृ+अप् । नदीआदिके तरनेकेलिये भाड़ा.

आतर-आतार', (पु०) आतरति अनेन-तृ+अप्+घञ् वा । नदीके पार जानेका किराया । महसूल.

आतापि, (पु०) आ+तप्+इञ् । एक दैत्यका नाम जिसे अगस्त्यने निगला.

आतापिन्, (त्रि०) आ+तप्+णिनि । खचरा (पु०) चीलपक्षी.

आतायिन्, (पु०) आ+ताय्+णिनि । चील नामसे प्र-सिद्ध पक्षी.

आतिथेय, (न०) अतिथये इदम्-ढक् । अतिथिके लिये भोजनादि । "तत्र साधुः ढञ्" । अतिथिकी पूजा । चतुर । कुशल (त्रि०)

आतिथ्य, (न०) अतिथेरिदं-ञ्यः । अतिथि । अतिथिसेवा.

आतिवाहिक, (त्रि०) अतिवाहे इहलोकात् परलोकप्रापणे नियुक्तः-ठक् । इस लोकसे परलोकमें पहुंचानेका काम करनेहारा । मरेहुएकी सूक्ष्मदेहको दूसरे लोकमें पहुंचानेके लिये ईश्वरसे नियत कियागया अर्चिरादिस्थानमें निवास करनेहारा देवविशेष । "आतिवाहिकस्तल्लिङ्गात्" वे० सू०

आतिशय्यं, (न०) अतिशय-स्वार्थे ष्यञ् । बहुत ही । बहुतायत । महाराशि.

आतिष्ठम्, (न०) अतिष्ठस्य भावः अण् । सबके ऊपर आज्ञा चलानेवाला.

आतुजि, (त्रि०) आ+तुज्+इन् । किसीपर आक्रमण करनेवाला । हानि पहुंचानेवाला । लेजानेवाला । हिंसा करनेवाला.

आतुर, (त्रि०) ईषदर्थे-आ+अत+उरच् । पीडित । रोगयुक्त । रोगी । दुखिया.

आतृद्, रुधा० प० । बहजाना । दुःख पहुंचाना । धकेलना । खोलना । हिंसा करना । तृणत्ति । ततर्द । अतर्दीत् । तृण्ण.

आतृण्ण, (त्रि०) आ+तृद्+क दुःखी किया गया । वेधा गया । काटा गया.

आतोद्य, (न०) आसमन्तात् तुद्यते-आ+तुद्+ण्यत् । वीणाआदि चार तरहका बाजा । सब प्रकारका बाजा.

आत्तगन्धा, (त्रि०) आत्तो गृहीतोऽरिणा गन्धो गर्वो यस्य । शत्रुने जिसके अहंकारको दबालिया । शत्रुसे दबाया गया । काम.

आत्मगुप्ता, (त्रि०) आत्मनः गुप्तः स्वरूपेणैव रक्षितः । आलकुशीनामी लता.

आत्मघातिन्, (त्रि०) आत्मानं देहं हन्ति । हन्+णिनि । जो वृथाही आग वा पानीआदिके द्वारा अपने देहका नाश करे । अपनी हत्या करनेहारा । खुदकुशी.

आत्मघोष, (पु०) आत्मानं घोषयति स्वशब्दैः । आप ही अपनेको बुलानेहारा । कौवा । कुक्कुट । (का का) (कु कु) इस ध्वनिसे अपनेही नामका एकदेश लेते हैं.

आत्मज, (पु०) आत्मनो जायते, आत्मा वा जायते । जन्+ड । अपनेसे उत्पन्न होता है । वा आपही उपजता है । पुत्र । "आत्मा वै जायते पुत्रः" इति श्रुतिः । "आत्मजन्मा" इसीअर्थमें होता है । कन्या । लडकी । मनसे उत्पन्न हुई बुद्धि (स्त्री०).

आत्मदर्श, (पु०) आत्मा देहः दृश्यतेऽत्र । दृश्+आधारे घञ् । जहां शरीर देखा जाता है । दर्पण । शीशा । आरसी.

आत्मन्, (पु०) अत्+मनिन् । स्वरूप । यत्न । देह । मन । धृति । बुद्धि । सूर्य । अग्नि । वायु । जीव । ब्रह्म.

आत्मनीन, (त्रि०) आत्मने हितः+ख । विदूषक आत्म पुत्र । साला । (नाटकमें) विदूषक । अपना हित करनेहारा । स्वहितकारी.

आत्मनेपद, (न०) आत्मने आत्मार्थफलबोधनाय पदम् अलुक् स० । अपनेलिये पद । दो पदोंमेंसे एक जिसमें संस्कृत धातुओंका उच्चारण होताहै.

आत्मबान्धव, (पु०) आत्मनः बान्धवः । अपने बान्धव । माताकी बहिनके लडके । पिताकी बहिनके लडके । मामेके पुत्र ये सब अपने बन्धु समझने चाहिये.

आत्मभू, (पु०) आत्मनो मनसो देहात् वा भवति । भू+क्विप् । जो मनसे वा देहसे उपजता है । चारमुखवाला विधाता । कामदेव.

आत्मम्भरि, (त्रि०) आत्मानं बिभर्ति-भृ+खि-मुम् च । अपनाही पेट भरनेहारा स्वार्थी । लालची । अपनेहीको पालनेहारा.

आत्मयोनि, (पु०) आत्मा योनिः अस्य । विष्णु । महादेव । ब्रह्मा । कामदेव.

आत्मरक्षा, (स्त्री०) आत्मन एव रक्षा यस्याः । इन्द्रनद । अपनी रक्षा

आत्मसात्, (अव्य०) अपने काबूमें । किसीका अपना । अपने आधीन.

आत्महन्, (पु०) आत्मानं हतवान् । हन्+क्विप् । जिसने अपनेको मारा । जो अकर्ता अभोक्ता स्वयंप्रभु आत्माको कर्ता भोक्ता आदि मानताहै । जो अपनेको यथार्थ नहीं जानता । मूर्ख । आत्मघाती । अपनेको मारनेहारा जन

आत्माधीन, (पु०) आत्मनोऽधीनः । अपने आधीन । पुत्र । साला । प्राणका आश्रय.

आत्माश्रय, (पु०) आत्मानं आश्रयति । आ+श्रि+अच् । त० । जो अपना आसरा लेताहै । जिसे अपनी अपेक्षा आपही हो ऐसा तर्कका एक दोष.

आत्मीय, (त्रि०) आत्मनोऽयं-छ । ये अपना है । अपना । अपना सबंधी.

आत्मोद्भवा, (स्त्री०) आत्मनेवोद्भवति । भू+अच् । जो अपनेसे उपजे । माषपर्णी वृक्ष । "आत्मा उद्भवो यस्याः" कन्या । पुत्र (पु०).

आत्यन्तिक, (त्रि०) अत्यन्त-स्वार्थे ठक् । बहुत होगया । अतिशयजात.

आत्ययिक, (त्रि०) अत्ययः नाशः प्रयोजन अस्य ठक् । नाश । तकलीफ देनेहारा । बदकिस्मत.

आत्रेय, (पु०) अत्रेरपत्यं-ढक् । अत्रिमुनिका पुत्र । शरीरका रस धातु । अत्रिके वंशमें हुआ । शिवजीका नाम । एक नदीका नाम । जो बंगालकी उत्तरदिशामें है (स्त्री०).

आत्रेयी, (स्त्री॰) न सन्ति त्रिदिनानि कर्मयोग्यानि यस्याः । ढच् स॰ सा अत्र । स्वार्थे ढच् । जिसके तीन दिन काम करने योग्य नहिं । ऋतुमती स्त्री । एक नदीका नाम । " पुन स्वार्थे कनि ह्रस्वे " आत्रेयिका भी.

आथर्वण, (पु॰) अथर्वणा मुनिना दृष्टो वेदः -अण्-तं अधीते- वेत्ति वा-पुनः अण् । तत्र विहितं वा-पुनः अण् । अथर्वमुनिसे देखागया वेद । अथर्ववेदको जो पढता वा जानताहै । अथर्ववेदमें विधान कियागया । अथर्ववेदको पढानेहारा ब्राह्मण । अथर्ववेदमें कहागया अभिचार (शत्रुमारण) आदि काम । अथर्ववेदके अनुसार क्रिया करनेहारा ब्राह्मण (पुरोहित).

आदत्त-आत्त, (त्रि॰) आ+दा+क्त । लिया गया । स्वीकार किया गया.

आदर, (पु॰) आ+दृ+कप् । प्रतिष्ठा । समादर । सम्मान । आरम्भ । इज्जत.

आदर्श, (पु॰) आदृश्यतेऽत्र । दृश+आधारे घञ् । जिसमें स्वरूप॰ देखा जाय । दर्पण । शीशा । आइना । टीका । प्रतिरूप । पुस्तक.

आदहन, (न॰) आ+दह्+अन+आदह्यते अस्मिन् । जलना हानिपहुंचाना । मारना । श्मशान (मशान) । वह स्थान जहां कोई पदार्थ जलाया जाय.

आदा, जु॰ आ॰ । आदत्ते । लेना । स्वीकार करना । आश्रय लेना । आगेसे लेने जाना.

आदान, (न॰) आ+दा+भावे ल्युट् । ग्रहण । लेना । घोडेका जेवर

आदि, (पु॰) आ प्रथमं दीयते गृह्यते । आ+दा+कि । प्रथम । पहिले होना । कारण निकट । प्रकार । हिस्सा । मुख्य.

आदिकवि, (पु॰) ब्रह्मदेव । और वाल्मीकिमुनि.

आदितेय, (पु॰) अदित्या अपत्यं-ढक् । अदितिकी सन्तान । देवता.

आदित्य, (पु॰) अदितेरपत्यं-ण्य । सूर्य । देवता । सूर्यमंडलमें रहनेहारा सुवर्णस्वरूप विष्णु । आकका वृक्ष । बारह सूर्य । "आदित्या द्वादश प्रोक्ता." । पुनर्वसुनक्षत्र.

आदित्यसूनु, (पु॰) सुग्रीव । यमराज । शनि । सावर्णिनामा मनु । वैवस्वत मनु । कर्णनामी राजा.

आदित्सु, (त्रि॰) आ+दा+सन्+उ । लेनेकी इच्छा करनेवाला.

आदिन्, (त्रि॰) अत्ति इति अद्+णिनि । खानेवाला.

आदिदेव, (पु॰) आदौ दीव्यति-स्वयं राजते । दिव्+अच् ७ त॰ । जो प्रथमही क्रीडा करता है । आपही चमकता है । नारायण । शिवजी महाराज । आदिकारण ब्रह्म.

आदिपु(पू)रुष, (पु॰) आदौ पुरि देहे वसति । वस्+उपन् । स्वेन आत्मना पूरयति जगत् । पूर्+उपन् वा-पूर्॰वा ह्रस्वः । जो पहिले शरीरमें रहताहै । जो आपही सारे जगत्को पूर्ण कर्ताहै । पहिला जीव हिरण्यगर्भ । नारायण.

आदिम, (त्रि॰) आदौ भवः । आदि+डिमच् । पहिले हुआ । आदिका । पहिला.

आदिवराह, (पु॰) आदिभवो वराहः । विष्णु । (वह सबसे पहिले वराहरूपसे अवतार ग्रहण कर्ता भया).

आदिष्ट, (न॰) आ+दिश्+भावे क्त । आज्ञा । हुकम । आदेश । " कर्मणि क्तः " । हुकम दियागया । आदेश कियागया । व्याकरणप्रसिद्ध स्थानजात जैसे इक्के स्थानमें यण् आदेश कियागया है तो आदिष्ट यण् हुआ । कहागया । पहिले कहागया । प्रतिनिधी हुआ.

आदीनव, (पु॰) आ+दी+भावे क्त । आदीनस्य वानं प्राप्ति-वाक । दोष । ऐब । क्लेश । दुःख । दुर्दम । जिसे वशमें लाना कठिन है.

आदृ, तु॰ आद्रियते । आदर करना । प्रतिष्ठा करना । इज्जत करना.

आदृत, (त्रि॰) आ+दृ+कर्तरि क्त । पूजागया । आदरवाला । आदर कियागया.

आदृश्, भ्वा॰ प॰ । पश्यति । अदर्शत् । अद्राक्षीत् । देखना । तालाश करना । (णिचि) दिखाना । सूचन करना.

आदेश, (पु॰) आदिश्+भावे घञ् । आज्ञा हुकम । उपदेश । शिक्षा । विधि नियम । शासन । इत्तिला.

आदेष्टृ, (त्रि॰) (पु॰) आ+दिश्+तृच् । वह यजमान कि जो पुरोहितको "मेरे इष्ट सम्पादनके लिये कर्म कीजिये" ऐसे कहताहै । यज्ञ करानेहारा । हुकम करनेहारा । उपदेश करनेहारा.

आद्य, (त्रि॰) आदौ भवः । दिगा॰ यत् । पहिले हुआ । प्रथम । "अद्+ण्यत्" खानेलायक कोई वस्तु । धान्य (न॰).

आद्या, (स्त्री॰) आदौ भवा । शक्ति । सब देवियें । दुर्गा । काली । चण्डिका आदि.

आद्यून, (त्रि॰) आदिवा ऊन. । आदिद्यन्य । जिसका दुःख नहो । "आ+दिव्+क्त-ऊठ्-नत्वंच" । अथवा अद्-खाना इस धातुसे बनसक्ता है । सब काम छोडके केवल जिसे पेट भरनेहीकी इच्छा लगी रहे । पेटू । भूखा.

आधमन, (न॰) आधीयते । आ+धा+क मनन् । बन्धक (हुण्डी) पर देनाआदि । निक्षेप । अमानत । गिरवी.

आधमर्ण्य, अधमर्णस्य भावः कर्म वा-ष्यञ् । कर्जदार होना.

आधर्मिक, (त्रि॰) अधर्मं चरति ठञ् । अन्यायी बेइन्साफ करनेहारा । जो धर्म नहिं कर्ता.

आधर्षित, (त्रि॰) आ+धृष्+क्त। अन्यायसे आक्रमण कियागया। जिसका अपराध देखागया। वेदन्यायीसे द-बाया गया। "मार्गेण धर्षितः परैः" इति स्मृतिः

आधान, (न॰) आ+धा+ल्युट्। अग्न्याधान। मन्त्रआदिसे अग्नि रखना। "आधाने मोक्षणे च" इति स्मृतिः। गर्भाधान.

आधार, (पु॰) आ+धृ+घञ्। अधिकरण। आश्रय। आसरा। व्याकरणप्रसिद्ध औपश्लेषिक, वैषयिक, अभिव्यापकनामी अधिकरणकारक। सप्तमी कारकमें में, पर। थाल ([illegible])। आलवाल ([illegible])। पुल.

आधि, (पु॰) आधीयते अभिनिवेश्यते प्रतीकाराय मनोऽनेन। आ+धा+कि। मनकी पीडा। बडी आशा। आश्रय। अमानत। व्यसन.

आधिकरणिक, (पु॰) अधिकरणे नियुक्तः ठक्। कचहरीमें लगा हुआ। जज। न्याय करनेवाला.

आधिक्य, (न॰) अधिकस्य भावः ष्यञ्। अधिकाई। ज़ियादती। बहुतायत.

आधित, (त्रि॰) अभि+ह+क्त। टेढा। तहकीक कियागया। पीला जमेहुआ.

आधिदैविक, (त्रि॰) दैवान् अधिकृत्य प्रवृत्तम्। अधिदैव+ठञ्-द्विपदवृद्धिः। बहुत वायुआदिसे पैदा हुआ.

आधिपत्य, (न॰) अधिपतेर्भावः ष्यञ्। स्वामीका होना। [illegible].

आधिभौतिक, (त्रि॰) भूतानि व्याघ्रसर्पादीनि अधिकृत्य भवं। अधिभूत+ठञ्-द्विपदवृद्धिः। व्याघ्र सांप आदिसे पैदा हुआ.

आधिराज्य, (न॰) अधिराजस्य भावः कर्म वा+ष्यञ्। [illegible]। चक्रवर्तित्व.

आधिवेदनिक, (न॰) अधिवेदनाय द्वितीयविवाहाय दीयते ठक्। [illegible]। दूसरे विवाहकी इच्छासे पुरुषसे पहिली स्त्रीको दियागया धन। द्वितीय विवाहके समय पहिली स्त्रीको दियागया पारितोषिक (इनाम).

आधु, भ्वा॰ उ॰ कम्पन। हिलना डोलना। धुनोति-धुनुते। दुधाव-दुधुवे। अधावीत्। अधविष्ट-अधोष्ट.

आधुनिक, (त्रि॰) अधुना भवः-ठञ्। इदानीन्तन। अबका। नया

आधेय, (त्रि॰) आ+धा+यत्। अर्पित। एक वस्तुके आधार दूसरी वस्तु। ("[illegible]" यहां [illegible] अर्थमें है).

आधोरण, (पु॰) आ+धोर्+ल्यु। हाथीके चलानेमें चतुर। महावत। हस्तिपक। हाथीवान.

आध्मात, (त्रि॰) आ+ध्मा+क्त। शब्दित। फूंका आवाज। भराहुआ। सडाहुआ। वायुरोगसे पेट फूला.

आध्मान, (पु॰) आ+ध्मा+ल्युट्। वायुका रोग। हवाईकी बीमारी। लोहारकी फूंकनी। बढना.

आध्यात्मिक, (त्रि॰) आत्मानं मनःशरीरादिकं अधिकृत्य भवः-ठञ्। शोक, मोह, ज्वरादिसे उत्पन्न दुःख.

आध्यान, (न॰) आ+ध्यै+ल्युट्। चिन्ता। शोच। उत्कण्ठापूर्वक स्मरण। बडे चावसे याद करना। शोकके साथ स्मरण करना.

आध्यापकः, (पु॰) अध्यापक एव, स्वार्थे अण्। आत्मविद्याकी शिक्षा करनेवाला.

आध्यायिक, (त्रि॰)-की (स्त्री॰) अध्याय ठञ्। मननमें लगा हुआ। वेद पढा हुआ। अधीतवेद.

आध्यासिक, (त्रि॰)-की (स्त्री॰) अध्यासेन ठक्। अध्यास (एक वस्तुमें दूसरीको मानलेना) उत्पन्न हुआ.

आध्वनिक, (त्रि॰) अध्वानं व्याप्नुतः-कुशलो वा। यात्रामें गयाहुआ। सफ़र करनेहारा। मार्गचतुर.

आध्वरिक, (त्रि॰) अध्वर+ठञ्। जो यज्ञ करते हैं। पुरोहित। सोमयज्ञका विधान करनेहारा.

आध्वर्यव, (न॰)-वी (स्त्री॰) अध्वर्योः यजुर्वेदः अण्। यजुर्वेदमें कहागया अध्वर्युका काम। अध्वर्युका यजुर्वेद जाननेहारा.

आन, (पु॰) आनित्यनेन। आ+अन्+करणे घञ्। भीतर प्राणवायुका नासिकासे बाहिर आना। मुख। सांस लेना। फूंकना.

आनक, (पु॰) आनयति उत्साहान् करोति। णिच्+ण्वुल्। बाजा। लडाईका बडा बाजा। शब्दकरनेहारा बादल। उत्साहकरनेहारा (त्रि॰).

आनकदुन्दुभिः, (पु॰) आनकाः दुन्दुभयो देववाद्यविशेषो यस्य। वसुदेवका नाम। [illegible]। (कृष्णजन्मके उत्सवमें [illegible] बजाये गये थे)। आनकदुन्दुभी (स्त्री॰)

आनडुह, (त्रि॰)-ही (स्त्री॰) अनडुह इदं। वृषभ (बैल) का अथवा बैलसे उत्पन्न हुआ.

आनत, (त्रि॰) आ+नम्+क्त। कृतप्रणाम। झुका हुआ। नीचेझुका। विनयसे झुकाहुआ। टेढा.

आनति, (स्त्री॰) आनमति प्रणमति अनया नम्+भावे क्तिन्। जिससे झुकना है। "[illegible]" झुकना। नीचे होना। प्रणाम करना। इज्जत करना.

आनद्द, (न०) आ+नह्+क्त । चमड़ेसे बंधाहुआ बाजा । ढोल । मृदङ्ग । बाजा बालोंसे बजाना । गुथाहुआ । फैलाहुआ । बंधाहुआ (त्रि०) पोशाक पहिरना । शरीरपर जेवरोंका डालना.

आनन, (न०) अनिति अनेन । आ+अन्+करणे ल्युट् । जिससे सांस लेता है । मुख.

आनन्तर्य, (न०) अनन्तरं एव चतुर्वर्णादित्वात् स्वार्थे ष्यञ् । अनन्तर । सामीप्य । नजदीकी । बिनाअन्तर । पासी

आनन्त्य, (न०) आनन्त+भावे स्वार्थे वा ष्यञ् । अनन्तता । निरवधिकता । देश और कालआदि न मापागया । अकथनीय । बहोतसी.

आनन्द, (पु०) आ+नन्द्+घञ् । हर्ष । सुख । दुःखका न होना । ब्रह्म । आनन्दवाला (त्रि०) । "आनन्दं ब्रह्मणो [illegible] ब्रह्म" श्रुति .

आनन्दन, (न०) आनन्दयत्यनेन । आ+नदि+णिच्+ करणे ल्युट् । जिससे प्रसन्न करता है । आनेजानेके समय कुशलप्रश्नसे आनन्द करजाना । आनेजानेके समय मित्रोंसे मिलना.

आनन्दमय, (पु०) आनन्द प्रचुरोऽस्य-प्राचुर्ये मयट् । जिसे बहुत आनन्द हो । जीव । वेदान्तोक्त सुषुप्तिका साक्षी । प्राज्ञ

आनन्दार्णव, (पु०) आनन्द अर्णव इव अतीमत्वात् । असीम होनेसे जिसका आनन्द समुद्रकी भांति है । परमे श्वर । ज्योतिषोक्त [illegible] [illegible] । १ त० । [illegible]

आनन्दि, (पु०) आ+नदि+इन् । हर्ष । कौतुक । खुशी.

आनर्त, (पु०) आनृत्यति अत्र । आ+नृत+आधारे घञ् । नृत्यशाला । नाचघर । देश । जल । द्वारकाके पासका देश । लड़ाई । आनर्तदेशवासी.

आनाय, (पु०) आनीयते मत्स्योऽनेन । आ+नी+करणे घञ् । जाल । "आये अद्य" । जाल । यज्ञोपवीतसंस्कार । [illegible] पहिरना.

आनाह, (पु०) आ+नह्+घञ् । बन्धनी लम्बाई । मल और मूत्रको रोकनेवाला रोगविशेष । बन्धी । डिबी.

आनीति, (स्त्री०) आ+नी+क्तिन् । [illegible]

आनुकूल्य, (न०) अनुकूलस्य भावः कर्म वा ष्यञ् । अनुकूलता । अपनेसे मिलकर रहना । अपनेसे कुछ [illegible] करनी.

आनुगुण्य, (न०) अनुगुणस्य भाव कर्म वा ष्यञ् । [illegible]

आनुपूर्वी-र्व-र्व्य, (स्त्री० न०) पूर्वानुपूर्वक अनुपूर्व [illegible] [illegible]

[illegible]

आनुमानिक, (त्रि०) अनुमान[illegible] ठञ् । सिद्ध होगा । केवल अनुमान प्रमाणसे सिद्ध [illegible] कहागया प्रधान । "आनुमानिक" इति [illegible].

आनुयात्रिक, (त्रि०) [illegible] ठञ् । [illegible] होनेसे [illegible] "[illegible]" गी० भा०

आनुषङ्गिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) अनुषङ्ग [illegible] ठञ् [illegible] [illegible] मिला हुआ । [illegible].

आनूप, (त्रि०)-पी, (स्त्री०) अनूपदेशे भव, [illegible] । जलवाला । गीला । सीले स्थानमें [illegible] हुआ.

आनृण्यम्, (न०) अनृणस्य भाव कर्म वा ष्यञ् । ऋण (कर्ज) का न होना । बेकर्ज होना.

आनृत, (त्रि०) [illegible] [illegible] जिसका स्वभाव झूठा हो । जिसके [illegible]

आनृशंस्य, (न०) नृशंसो घातुक । [illegible] । दया । रहम । [illegible].

आनैश्वर्यम्, (न०) अनीश्वरस्य भाव ष्यञ् । ईश्वर (सामर्थ्य) का न होना । [illegible]

आन्तर, (त्रि०) अन्तरे भव अण् । भीतरी हुआ । भीतर । भीतरका

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आन्त्र, (न०) [illegible] "[illegible]" । [illegible] (त्रि०) "[illegible]"

आन्दोल, [illegible]

आन्दोलन, (न०) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आन्वीक्षिकी, (स्त्री०) अनु वेदश्रवणानन्तरं ईक्षा पर्यालोचनं अन्वीक्षा सा प्रयोजनं यस्याः तत्र साधुः वा ठञ् ङीप्। जिसके द्वारा सुननेसे वेदकी परीक्षा की जाय। तर्कविद्या। इल्म मन्तक। अध्यात्मविद्या। इल्म रूहानी.

आप्, स्वा० प० । आप्नोति कर्त्तं व्या० प० आपयति। आप। आप्तुम्। आप्स्यति। आप्तुं। आप्त। प्राप्त करना। पाना। व्याप्त करना.

आपः, (पु०) आप्+क्विप्। आठ वसुओंमेंसे एक देवता। —पम् (न०) (अपां समूहः) जलसमूह। तुफान वा उमड़ा हुआ पानी। जल। पानी.

आपगा, (स्त्री०) अपोभिः जलसमूहेन गच्छति वहति—इ। जो जलके समूहसे चले—बहे। नदी। दर्या.

आपण, (पु० न०) आपणन्ते विक्रीयन्तेऽत्र। आ+पण्+अधि० अपने घञ्। जहां कुछ बेचते हैं। हट्ट। क्रयविक्रयस्थान। खरीद फरोख्तका स्थान। दुकान। "आपणे" [illegible]

आपणिक, (त्रि०) [illegible] ठक्। [illegible] खरीद फरोख्त करनेहारा। व्यापारी

[illegible], (त्रि०) [illegible]। [illegible]। मुसीबतमें [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible] गर्भं यया। जिसे गर्भी (गर्भ) प्राप्त हुआ। गर्भिणी। जिसे गर्भ हो गया है। [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]। प्राप्त करनेवाला। [illegible].

[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible]। जिनके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जिनने [illegible] है। [illegible]

[illegible], (न०) [illegible]। [illegible]। पानी। "[illegible]" [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible]। [illegible]। [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible]

[illegible], ([illegible]) [illegible]

आपान, (न०) आपीयते सम्भूय पीयते सुराद्य। ल्युट्। जहां इकट्ठे हो कर मद्य पी जाय। मद्य पीने मिलकर बैठना। चक्र। मद्य पीनेकी सभा। दारूकी चौकड़ी.

आपिञ्जर, (न०) ईषद् पिञ्जरवर्णम्। थोड़ा पीला स्वर्ण। सोना.

आपीड, आ+पीड+अच्। चोटीकी माला। [illegible] भूषण (जेवर)। सरसे बाहिर निकली हुई कलगी देना। माला.

आपीत, (न०) ईषद् पीतं। प्रा० स०। माक्षिक थोड़ासा पीयागया। मद्य। थोड़ा पीला। सुवर्ण.

आपीन, (न०) आ+प्याय+क्त-पीभाव-नत्व [illegible] ऊध (हवाना)। कूप। कुआ (पु०) ईषद् स्थूल थोड़ा मोटा (त्रि०).

आपूपिक, (न०)—की। अपूप. शिल्पं अस्य अच्छे पूवे बनानेहारा। पूवे खानेहारा। पूवे बेचने का बेचनेहारा। पूवोंका समूह। "अपूपानां स[illegible]

आपूप्य, (पु०) अपूपाय साधु. वा यत्। सत्तु। जिसके पूवे बनाकें.

आपृच्छा, (स्त्री०) आ+प्रच्छ+अङ्। आलाप। [illegible] सम्भाषण.

आपोक्लिमं, (न०) लग्नसे ३ री, ६ ठी, ९ वी १२ वी राशि.

आप्त, (त्रि०) आप्+क्त। विश्वस्त। भरोसा किया भरोसेके लायक। पाया। लाभ किया। भ्रम [illegible] देषभयादिसे रहित। यथार्थ वचनका कहनेहारा। [illegible] ग्रन्थ। सत्यवाला.

आप्तकाम, (त्रि०) आप्तः प्राप्तः कामः कामनाविषयो जिसने अपनी इच्छा पूरी की हो। जिसका मनोरथ पूरा। भरा पूरा। हमेशा रजामन्द। परमेश्वर.

आप्तोक्ति, (स्त्री०) आप्तस्य उक्तिः। वच+क्तिन्। [illegible] वचन। यथार्थरूप विषयका निर्णय करनेके लिये विद[illegible] (वैज्ञानिक करनेहारा) का वचन। ठीक कहनेहारेका [illegible]

आप्यायन, (न०) आ+प्या+ल्युट्। तृप्ति। [illegible] [illegible]। पूर्णी। "प्रिय मधुर" नमकी देना। [illegible]

आप्रपद, (अव्य०) प्रपदं पादाग्रं व्याप्य [illegible] [illegible]। पैरतक पोशाकका तहमद। पैरतक [illegible]

आप्रपदीन, (त्रि०) आप्रपदं व्याप्नोति [illegible] [illegible] [illegible] आदि। "आप्रपदीन" [illegible]

आप्लाव/आप्लव, (पु०) आ+प्लु+अप्/घञ्। [illegible] [illegible] [illegible]। स्नान। [illegible] [illegible].

आप्लुत, (त्रि॰) आ+प्लु+क्त । नहायाहुआ । "भावे क्त" नहाना (न॰).

आप्लुतव्रत, (पु॰) आप्लुतं वेदाध्ययनानन्तरं स्नातं व्रतम्-स्यास्य । वेदपढनेके अनन्तर नहानेहारा । वेद पढा हुआ । गृहस्थाश्रम न करनेहारा ब्रह्मचारीभेद । स्नातक । ब्रह्मचर्यको समाप्त कर घरमें आया ब्राह्मण । गृहस्थविशेष.

आबद्ध, (न॰) आ सम्यक् बद्धं । बन्ध्+भावे क्त । दृढ बन्धन । पक्का बंधाहुआ "आधारे क्त" प्रेम । सुहृबत । "कर्मणि क्त" भूषण । जेवर । गहना । "करणे क्त" योक्त्र । जूआ (पु॰) । बंधाहुआ । रुकाहुआ (त्रि॰).

आबिल, (त्रि॰) आ+बिल्-फाड़ना+क । कलुष । काला । नापाक.

आबुत्त, (पुं॰) आपनं आप्+क्विप्, आपमुपनोति । वद्+तन्+क्त । नाट्योक्तिमें भगिनीपति (बहनोई) की संज्ञा है.

आभरण, (न॰) आ+भृ+कर्मणि ल्युट् । भूषण । जेवर । सजावट.

आभा, (स्त्री॰) आ+भा+अङ् । दीप्ति । चमक । शोभा । कान्ति । सुन्दरता । उपमान । वायुका एकप्रकारका रोग.

आभाषण, (न॰) आ+भाष्+ल्युट् । आलाप । बातचीत । परस्परकथन.

आभास, (पु॰) आ+भास्+अच् । प्रतीति । प्रतिबिम्ब । दीप्ति । चमक । ग्रन्थादिके आरम्भमें संगति दिखानेका प्रस्ताव । अवतरणिका । भूमिका । सदृश । समान.

आभास्वर, (पु॰) आ+भास्+वरच् ६४ वा १२ देवगण.

आभिजन, (पु॰) अभिजन+अण् । जन्मसम्बन्धी । कुलसम्बन्धी । जन्मकालसे कियागया । सम्बन्धी । रिश्तादार.

आभिजात्य, (न॰) अभिजातस्य भावः ष्यञ् । अच्छे कुलमें होना । कौलीन्य । पाण्डित्य । चातुर्य । चतुराई । अच्छी समता.

आभीक्ष्ण्य, (न॰) अभीक्ष्णस्य भावः ष्यञ् । पौनःपुन्य । बारबार होना.

आभीर, (पु॰) आ सम्यक् भियं राति । रा+क । अहीर वर्णसंकरभेद । गोप । ग्वाल । देशभेद । (स्त्री॰) गोपी । अहीरी.

आभीरपल्लि:, (स्त्री॰) आभीराणां पल्लिः । ग्वालोंके घर । गोपोंके गांव । एक पदमें ङीप् होताहै.

आभील, (न॰) आ समन्तात् भयं लाति । आ+भी+ला+क । कष्ट । तकलीफ । भयावना । रोगी (त्रि॰).

आभोग, (पु॰) आ+भुज्+भावे आधारे वा घञ् । यत्नका फल । परिपूर्णता । पूरापन । चौतरा । गीतकी समाप्ति.

आभ्युदयिक, (त्रि॰) अभ्युदयः प्रयोजनं अस्य-ठक् । चूडादि कर्म । शुभकर्मकी वृद्धिके लिये करने लायक श्राद्ध । फल देनेहारा । उन्नति देनेहारा । वृद्धिका अवसर.

आम, (त्रि॰) आ ईषत् अम्यते-पच्यते । आ+अम्+कर्मणि घञ् । अपक्व । जो पका नहिं । कच्चा । अजीर्णक नामी रोग । अनपच (पु॰).

आमगन्धि, (न॰) आमस्य अपक्वस्य गन्ध गन्धो यस्य । इत्समा॰ । कच्चे मांस आदिके समान गन्धवाला । जलते हुए मांसकी गन्ध । चिताके धूमकी गन्ध.

आमनस्य, (न॰) अप्रशस्तं मनो यस्य तस्य भावः ष्यञ् । अच्छे मनका न होना । दुःख । दरद । शोक.

आमन्त्रण, (न॰) आ+मन्त्र+ल्युट् । अभिनन्दन । प्रणाम करना । बुलाना । अवश्यकर्तव्य (श्राद्धादि) में बुलाना । निमन्त्रण । दावत करना.

आमय, (पु॰) आमं रोगं यातनेन+मा । कच्चे घमर्चें क । आ+मीञ्-मारना+करणे अच् वा । जिससे रोगी होनाहै । रोग.

आमयाविन्, (त्रि॰) आमयोऽस्यास्तीति विनिः दीर्घश्च । रोगयुक्त । रोगी.

आमर्द्दिन्, (त्रि॰) आ+मृद्+इनि । मलनेवाला । पीसनेवाला । दबानेवाला.

आमर्शन, (त्रि॰) आ+मृश+ल्युट् । स्पर्श । छूना । विचारना.

आमर्ष, (पु॰) न+मृष्+घञ् दीर्घः । क्रोध । गुस्सा.

आमलक-की, (पु॰) आ+मल+वुन् । वयस्था । धात्री । आंवला । आमलेका पेड । आमलेका फल.

आमाशय, (पु॰) आमस्य आशयः । नाभि और स्तनोंके बीचका भाग । अपाकस्थान । न पचनेकी जगह । कच्ची जगह.

आमिक्षा, (स्त्री॰) आमिष्यते-सिच्यते । मिष्+सक् । तपेहुए दूधमें दही डालनेसे जो विकार होताहै । फटाहुआ दूध । छाना.

आमिष, (न॰ पु॰) आ+मिष-सींचना-मारना+क । मांस । खाने पीने और पहिरनेकी चीज । लोभ । घूस । रिश्वत । सुन्दररूप । बहुत लोभ । रूप । शब्दादिका गुण । भोजन विषय । सम्भूत । जम्बीरनामक फल.

आमिषाशिन्, (त्रि॰) आमिषं अश्नाति, अश्-इन् । मांस खानेवाला

आमुक्त, (त्रि॰) आ+मुच+क्त । छोडाहुआ । पहिरेहुए । पहनेहुए । "कर्मणि क्त" । वस्त्र कि जिसने कवच (जिरह) पहिनाहै.

आमुख, (न॰) आ+लिख्+करणे अच् । प्रारम्भ । (नाटकमें) प्रस्तावना (जहां नटी, विदूषक, वा पारिपार्श्वक सूत्रधारके साथ ऐसी रीति विचित्र वाक्योंसे करे कि जिससे आरम्भ कथाकी सूचना होजाय).

आमुष्मिक, (त्रि॰) अमुष्मिन् परलोके भव: ठञ् स्वम्मा अलुक् निपातन । परलोकमें होनेवाला भाव । दूसरे जन्ममें होनेवाली वस्तु । "पारलौकिक".

आमुष्यायण, (त्रि०) अमुष्य स्यातस्य अपत्यं-नडा० फक्-अलुक् । अच्छे वंश वा अच्छे चरित्रसे प्रसिद्ध पुरुषकी सन्तान । अच्छे वंशमें उत्पन्न हुआ इसका बेटा.

आमृद्, क्र्या० प० । मलडालना । दबाना । मृद्नाति । ममर्द । अमर्दीत.

आमृश्, तु० प० । स्पर्शकरना । छूना । हाथ फेरना । मृशति । ममर्श । अमार्क्षीत.

आमोद, (पु०) आ समन्तात् मोदयति । आ+मुद्+णिच्+अच् । बहुत दूर फैला हुआ गन्ध । गन्ध मात्र । "भावे घञ्" हर्ष । खुशी.

आमोदिन्, (त्रि०) आमोदयति सुरभीकरोति-आमोद+कृत्यार्थे णिच्+णिनि । मुखपर खुशबू पैदा करनेहारा कपूर वगैरह । हर्षवान् । खुशी । खुशबूदार । सुगन्ध । खुशबू.

आम्ना, भ्वा० प० । परम्परासे अभ्यास करना । मनति । मम्नौ । अम्नासीत्.

आम्नात, (त्रि०) आ+म्ना+क्त । अभ्यस्त । विचार किया गया । खयाल किया गया । कहा गया.

आम्नाय, (पु०) आम्नायते-अभ्यस्यते-आ+म्ना+घञ् । जो परंपरासे अभ्यास किया जाताहै । वेद । आगम । निगम । गुरुपरम्परासे आयाहुआ सच्चा उपदेश । वंशकुलके क्रमसे कहना । "भावे घञ्" अभ्यास । आदत । खान्दानी । तरीकह । नसल । हिदायत.

आम्र, (पु०) अम्-जाना रोगीहोना आदि+रन्-दीर्घश्च । आम । आमका वृक्ष । आमका फल.

आम्रातक, (पु०) आमं तद्रसं आ ईषत् अतति याति । आ+अत्+ण्वुल् । आमडानामी वृक्ष । भिलवा.

आम्रेडित, (त्रि०) आ+म्रेड्+उन्माद होना । पागल होना । अच् । आम्रेडेन उन्मत्तेनेवाचर्यते । आम्रेड-आचारे क्विप्+क्त । पागलकी नाँई कहेहुए वचनको दुबारा तिबारा कहना । बारबार कहागया । व्याकरणमें एक संज्ञा.

आम्ला, (स्त्री०) आ सम्यक् अम्लो रसो यस्याः । जिसका बहुत खट्टा रस हो । तिन्तिडीका वृक्ष । खट्टा स्वाद । इमलीका वृक्ष.

आय, (पु०) आ+इण्+अच् । अय्+घञ् । लाभ । हासिल । आमदनी । प्राप्ति । धनका आना । स्त्रियोंके घरका रखवार.

आयत, (त्रि०) आ+यम्+क्त दीर्घ । लंबा । खेंचागया । आ+यत्+अच् । अतियत्नशाली । बहुत कोशिश करनेहारा । धंधा.

आयतच्छद, (स्त्री०) आयतः दीर्घः छदोऽस्याः । जिसका पत्ता लंबा हो । कदली । केला.

आयतन, (न०) आयतन्तेऽत्र । यत् आधारे ल्युट् । जहां बहुत यत्न करतेहैं । देवादिवंदनस्थान । मन्दिर । आश्रय । डेरह । विश्रामस्थान । धर्मार्थ कर्म । यज्ञ्की जगह.

आयति-ती, (स्त्री०) आ+या+डति वा ङीप् । उत्तरकाल । आनेवाला समय । प्रभाव । फल देनेका समय । आ+यम्+क्तिन् । मेल । लंबाई । प्रताप । पहुंचना.

आयतीगवम्, (अव्य०) (आयान्ति गावः यस्मिन् समये) । गौओंका घरमें लौटनेका समय.

आयत्त, (त्रि०) आ+यत्+कर्तरि क्त । अधीन । वशीभूत । काबुमें आया.

आयत्ति, (स्त्री०) आ+यत्+क्तिन् । स्नेह । सामर्थ्य । ताकत । सीमा । हद । मर्यादा । दिन । शयन । बिस्तरा या सोना । लंबाई.

आयःशूलिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) चतुर । चालाक । तीक्ष्ण उपायसे कार्य सिद्ध करनेहारा

आयस, (न०) अयसा निर्मितं तद्विकारो वा-अण् । का पात्र आदि । लोहा । लोहेसे बनाहुआ (त्रि०).

आयस्त, (त्रि०) आयस्+क्त । क्षिप्त । फेंकागया । दिया गया । हत । मारा गया । तीक्ष्णीकृत । तेज किया

आयाम, (पु०) आ+यम्+घञ् । दैर्घ्य । लंबाई । देरलग.

आयास, (पु०) आ+यस+घञ् । परिश्रम । मिहनत । कोशिश । दुःख । दरद । मनकी पीडा । जलन ।

आयु, (पु० न०) इण्+उण् । जीवनकाल । उमर । "मावधिष्ट जरायुं मां" श्रुतिः.

आयुध, (न०) आ+युध्+करणे घञर्थे क । प्रहरण हथियार । अस्त्र.

आयुर्वेद, (पु०) आयुर्विद्यते लभ्यतेऽनेन । विद्-रना+करणे घञ् । आयुर्वेत्ति अनेन विकल्पनेन । -आश्वा+करणे घञ् वा । जिससे उमर जानी जाय । (निदान) जनाकर जिससे आयु जानता है । वैद्यक । चिकित्साशास्त्र.

आयुष्मत्, (त्रि०) आयुर्विद्यतेऽस्य मतुप् । जिसकी उमर विद्यमान है । दीर्घजीवी । देरतक जीनेहारा (पु०) । विष्कम्भ आदि योगोंमेंसे तीसरा योग.

आयुष्य, (त्रि०) आयुः प्रयोजनं अस्य । यत् । आयुका हितकारी बडी उमर देनेहारा । हितकारी । अच्छा.

आयोग, (पु०) आ+युज्+घञ् । काम । व्यापार । फूल चन्दन आदि भेट । तट । किनारा.

आयोगव, (पु०) अयोगव एव स्वार्थेऽण् । शूद्रसे वैश्य स्त्रीमें उत्पन्न हुआ सन्तान । प्रतिलोम । वर्णसंकरमें एक जातिभेद.

आयोजन, (न०) आ+युज्+ल्युट् । उद्योग । आरम्भ । इकट्ठा करना या लेना । लगाना । बटोर ।

आयोधन, (न०) आ+युध्+आधारे ल्युट् । लड़ाईकी जगह । युद्धस्थान । "भावे ल्युट्" लड़ना । मारना । युद्ध । वध.

आर, (पु०) ऋ+कर्तरि घञ् । मंगलग्रह । शनिग्रह । मीठा खट्टा फल । वृक्षभेद । पीतल । कोण । सिरा । धुरा । रान्तरेका पेड़.

आर(रा)व, (पु०) आ+रु+घञ्-अप्‌वा । शब्दमात्र । दर-एकतरहकी आवाज.

आरकूट, (पु० न०) आरे पित्तलं कूटयति-अच् । पीतलका भूषण । पित्तलाभरण । पीतलका जेवर । पीतल । पित्तल.

आरट्टज, (पु०) आरट्टे देशे जायते । जन्+ड । आरट्ट देशका घोड़ा.

आरण्यक, (पु०) अरण्ये भव. । मनुष्यादि वुञ् । जंगली रास्ता । अध्याय । न्याय । इन्साफ । विहारस्थान । घोड़ोंका स्थान । हाथी । वेदका भागविशेष (न०) "आरण्यकमधीत्य च" इति मनुः.

आरति, (स्त्री०) आ+रम्+क्तिन् । उपरम । हटना । निवृत्ति । ठहराव.

आरथ, (पु०) ईषद्-रथः रथः । छोटी गाड़ी । एक घोड़े या बैलसे चलानेवाली गाड़ी.

आरब्ध, (त्रि०) आ+रभ्+क्त । शुरू किया गया । आरम्भ किया गया

आरभटी, (स्त्री०) आरम्भतेऽनया । आ+रभ्+अटि वीर । नटका काम । नटोंकी क्रीड़ा । एक प्रकारकी रचना । खेल । नाच.

आरम्भ, (पु०) आ+रभ्+घञ् मुमच् । शुरू । त्वरा । जल्दी । उद्यम । कोशिश । वध । मारना । अहंकार । प्रस्तावना.

आरा, (स्त्री०) आ+ऋ+अच् । चमड़ा काटनेका औजार । लोहेका अस्त्र.

आरात्, (अव्य०) दूर । समीप । पास । नजदीक.

आरात्रिक, (न०) अरात्रावपि निर्वृत्तम् । दिनके निकली जो होवेहै । दीपक तो रात्रिमेंहि दिखलाई जाताहै परन्तु या तो दिनके समय भी दिखलातेहैं । आरती । नीराजनकर्म.

आराधन, (न०) आ+राध्+ल्युट् । उपासना । पूजन । तोषण । प्रसन्न करना । प्राप्ति । पकाना । सेवा करना । चाकरी.

आराम, (पु०) आ+रम्+आधारे घञ् । उपवन । बगीचा । वन । कृत्रिमवन । बनावटी वन । बगीचेका । लेनेके का वन.

आरु, (पु०) ऋ+उण् । वृक्षभेद । कर्कट । शूकर । केकड़ा । शूअर.

आरुरुक्षु, (त्रि०) आ+रुह्+सन्+उ । ऊपर चढ़नेकी इच्छा करनेवाला.

आरुह्, भ्वा० प० । चढ़ना । ऊपरको जाना.

आरूढ, (त्रि०) आ+रुह्+क्त । चढ़ाहुआ.

आरोग्य, (न०) अरोगस्य भावः ष्यञ् । रोगका न होना । तन्दुरुस्ती । आराम.

आरोप, (पु०) आ+रुह्+णिच्+करणे ल्युट् । औरमें और धर्मका प्रतीत होना । जैसे "रस्सीमें सांपका ज्ञान" । स्थापन करना । संस्थापन । कल्पना । मनगढ़न्त । चढ़ाना.

आरोह, (पु०) आ+रुह्+अच् । अग्नि । दैत्य । शूर । राक्षस । वायु । हवा.

आर्जव, (न०) ऋजोः भावः-अण् । सीधापना । पैन । सेधी । सच्चाईपना । आपस निष्कपट हुआ । सच्चाई.

आरोह, (पु०) आ+रुह्+घञ् । आरोहण । चढ़ना । दैर्घ्य । लम्बाई । उत्तम स्त्रियोंका चूतड़ । ऊंचाई । परिमाणविशेष

आर्किः, (पु०) अर्कस्य अपत्यं-इञ् । सूर्यका पुत्र । यमराज । शनि । कर्ण । सुग्रीव । वैवस्वतमनु

आर्त्तोद, (पु०) आर्त्त+नद्+अण् । आर्तनाद करके विलाप करनेवाला.

आर्या, (स्त्री०) आ+अर्य+अच् । एक प्रकारकी पीली कपड़ी

आर्य, (त्रि०)-र्या (स्त्री०) अर्य एव अण् । पूजा करनेवाला । श्रेष्ठ । आर्यदेशसम्बन्धी.

आर्चीक, (त्रि०) ऋचीके पर्वते भवः-अण् । ऋचीक पर्वतमें जन्म करनेवाला.

आर्जव, (पु०) ऋजोर्भावः-अण् । सरलता । सीधापन । कुटिलता न रखना

आर्जुनि, (पु०) अर्जुनस्य अपत्यं-इञ् । अर्जुनका पुत्र । अभिमन्यु.

आर्त, (त्रि०) आ+ऋ+क्त । पीड़ित । [illegible] । अनुष्ठान । वैभरव्य.

आर्तव, (न०) ऋतुस्तत्र प्राप्तम्-अण् । स्त्रीपुष्प । ऋतुकाल संबंधी पुष्प । स्त्रियों को महीनेमें होता है

आर्त्विज्य, (न०) ऋत्विजो भावः कर्म वा ष्यञ् । ऋत्विक्का कर्म करनेवालका कर्म

आर्थिक, (त्रि०) अर्थं दृष्ट्वा-ठक् । अर्थ ही प्रयोजन का हत । अर्थके प्राप्त करनेहारा । धनिक । धनी । अर्थसे भरा । विज्ञ । धनी । ऐश्वर्यवान् । धनवान् । बुद्धिमान्.

आर्द्र, (त्रि०) अर्द्+रक् दीर्घश्च । गीला । आर्द्रित । और चीज जिसमें जल मिल रहे । (स्त्री०) एक नक्षत्र

आर्द्रक, (न०) आर्द्रेण कायति कै-क । अदरक । शृङ्गवेर.

आवर्जन, (न०) आ+वृज्+अन । नीचेकी ओर झुकना । देना । जीतना.

आवरण, (त्रि०) आ+वृ+अन । छिपानेवाला । बंद करनेवाला ।–णम् (न०) छिपाना । रोकना.

आवरणशक्ति, (स्त्री०) आवरणस्य शक्तिः । मानसिक अविद्या जो वास्तविक पदार्थके स्वरूपपर पर्दा डालदेती है.

आवर्जित, (त्रि०) आ+वृज्+णिच्+क्त । आहृत । झुकायागया । झुकाया गया । फेंका गया । दियागया । नीचे किया गया

आवर्त, (पु०) आ+वृत्+भावादौ घञ् । जलके स्रवसे जलका आपही घूमना । भुंवर । देशविशेष । गोलऔटना । घोडेका चिह्न (पीठकी ओर रोमसमूह) । चिन्ता । मेघराजविशेष । माक्षिक धातु । भक्तियोंका झुण्ड.

आवर्तक, (त्रि०) आवर्त एव स्वार्थे कन् । बार २ घूमनेवाला ।–कः (पु०) एक प्रकारका बादलभेद.

आवर्तन, (न०) आ+वृत्+णिच्+ल्युट् । दूध आदिका आलोडन (रिडकना-मथना) । औटाना । बिलोना । गालना.

आवर्तित, (त्रि०) आ+वृत्+णिच्+क्त । लौटायागया । अभ्यास कियागया । गुणाकीयागया । निवारा कियागया.

आवश्यक, (त्रि०) अवश्यं भव्यः । वुञ् । नियमङ्गत । जरूरीकाम.

आवसथ, (पु०) आवसति अत्र । वस्+अथच् । निवासस्थान । रहनेकी जगह । घर कुटिया । विश्रामस्थान । आरामकी जगह । व्रतविशेष.

आवाप, (पु०) आ+वप्+भावे घञ्-संज्ञायां कन् । आलवाल । वृक्ष पालनेके लिये जलका कुण्ड । पात्रविशेष । फेंकना । बोना । शत्रुकी चिन्ता । दूसरेके राज्यकी चिन्ता । नीचे ऊपर भूमि । विषमस्थान । प्रधानहोम । बड़ा होम.

आवारक, (त्रि०) आ+वृ+ण्वुल् । आच्छादन करनेवाला । छिपानेवाला । निरोध करनेवाला+रोकनेवाला.

आवारिः, (पु०) आ+वृ+इञ् । आपण । दुकान । तबेला.

आवास, (पु०) आ+वस्+आधारे घञ् । वासस्थान । घर आदि.

आवाहन, (न०) आ+वह्+णिच्+ल्युट् । समीप आनेके लिये देवताओंको बुलाना । नजदीक लाना । बुलाना.

आविक, (न०) अविना लोम्ना निर्मितं ठक् । भेड़के बालोंसे बना कम्बल । ऊनका । भेड़सम्बन्धी (त्रि०).

आविग्न, (पु०) आ+विज्+कर्तरि क्त । उद्विग्न । घबराहुआ । वृक्षविशेष.

आविद्ध, (त्रि०) आ+व्यध्+क्त । विद्ध । बेधागया । टेढ़ा । छिन्न कियागया । फेंकागया । दबायागया । मूर्ख.

आविष्करण-स्कारः, (न० पु०) आविस्+कृ+अन । प्रकट करना । जाहिर करना । दिखाना.

आविष्ट, (त्रि०) आ+विश्+क्त । भूतादिसे दबायागया । आवेशयुक्त । दबाहुआ । दाखिलहुआ । भराहुआ.

आविस्, (अव्य०) प्रकाश । जाहिर । (आविर्भाव (आविष्कार).

आवी, (स्त्री०) । अवीः एव-स्वार्थे अण् । गर्भवती स्त्री.

आवीत, (त्रि०) । आ+व्ये+क्त । धारित । पहिराहुआ । प्रविष्ट हुआ । चला गया । व्यतीत हुआ.

आवीतिन्, (पु०) । आवीत इति । दक्षिण दहिने कंधेपर यज्ञोपवीत धारण करनेवाला ब्राह्मण.

आवुक, (पु०) अवति पालयति उण् संज्ञायां कन् । (नाट्योक्तिमें) जनक । पिता.

आवृ, स्वा० क्र्या० उ० उभ० । आच्छादन करना । ढांकना । छिपाना । वृणोति । वृणाति । वरयति.

आवृज्, भ्वा० आ० । देना । बकशना । (ved) किसीकी ओर लौटना । मुड़ना । विधि झुकना । आवर्जयति.

आवृत्, भ्वा० आ० । लौटना । घूमना । आवर्तते । वर्तते । आवर्तिष्ट

आवृत, (त्रि०) आ+वृ+क्त । ढकाहुआ । आच्छादन कियागया.

आवृत्त, (त्रि०) आ+वृत्+क्त । हटाहुआ । निवृत्त । लौटाहुआ । अभ्यस्त । गुणित.

आवृत्ति, (स्त्री०) आ+वृत्+क्तिन् । अभ्यास । बारबार गुणना । लौटना.

आवेग, (पु०) आ+विज्+घञ् । घबराहट । चिन्ता । बेआरामी । शोक । दुःख । भय । जल्दी । बदहारपनका दुःख

आवेश, (पु०) आ+विश्+घञ् । अहङ्कार । तकब्बर । संरम्भ । क्रोध । गुस्सा । अभिनिवेश । हठ । अनुप्रवेश । दाखिल होना । जैसे भूतका दाखिल होना । मरोंका डर । भूतादिसे रोग.

आवेशिक, (त्रि०) आवेशे गृहे भवः आगतो वा ठञ् । घरका । घरमें आयाहुआ । असाधारण स्वकीयबान्धवादि । खास अपना रिश्तेदार वगैरह । अतिथि । मेहमान । आदरवाला.

आवेष्टक, (पु०) आवेष्टयति-ण्वुल् । आवरणकारक । ढाँकनेवाला प्राचीर (सफील) वगैरह (घेरा)

आशङ्का, (स्त्री०) आ+शङ्क्+अ । डर । त्रास । सन्देह । संशय.

षाढ, (पु०) आषाढी पूर्णिमाऽस्मिन् मासे अण् । आषाढ । (हाड़) महीना.

सं, (न०) अस् क्षेपणे+ष्ट्रन् । आकाश । अन्तरिक्ष । अवकाश.

ष्टमः, अष्टमो भाग, अष्टम-ञ । आठवां भाग । हिस्सा.

सस्, अ० आ० । आसते । आसांचक्रे । आसिष्ट । आसितुं । आसिन । आसीन । बैठना । विश्राम करना । निवास करना.

सस्, बैठना-अदा० आत्म० सक० सेट् । आस्ते । आसिष्ट.

सस्, (अव्य०) स्मरण । दूर करना । क्रोध । सन्ताप । अहंकारसे सिड़कना.

सक्त, (त्रि०) आ+सञ्ज्+क्त । लगाहुआ । निरत । सब काम छोड़कर एकहीमें लगजाना । निरन्तर । नित्य (अ०)

सङ्ग, (न०) आ+सञ्ज्+घञ् । अभिनिवेश । एकचानका हठ । भोगकी अभिलाषा करनेका अभिमान । सङ्गम । योग.

सत्ति, (स्त्री०) आ+सद्+क्तिन् । सङ्गमे । मेल । काम । निकट । न्यायमतमें आकांक्षायोग्य दोनों पदार्थोंको बिना अन्तर बोलना.

सन्दी, (पु०) आसीदति अस्मिन् प्रश्नकाले । निपातः । प्रश्नकालमें पैंतार जिसमें समाजाता है । विष्णु । वासुदेव ।-नी (स्त्री०) आसनमें आसनम् । बैठाजाता है जिसपर । छोटा पलंग । पीढ़ी । आरामकुरसी.

सन, (न०) आस्+ल्युट् । उपवेशन । बैठना । "आधारे 'ल्युट्'" । पीठ आदि पीढ़ी कौपीन । हाथीका स्कन्धदेश । सन्धि आदि राजाके ६ गुणोंमेंसे एक (शत्रुके जीते अरिको रोक कर ठहरना)। आराम करना । आठ योगके अंगोंमेंसे तीसरा (पद्मासनादि) । जीरकका वृक्ष (पु०).

सन्न, (त्रि०) आ+सद्+क्त । निकटस्थ । समीप वर्तमान.

सव, (पु०) आसूयते । आ+सु+कर्मणि अप् । मद्य । दारुक ताड़की शराब । जबेतक रस जो पका नहीं.

सादन, (न०) आ+सद्+णिच्+ल्युट् । सम्पादन । पकड़ना । हासिल करना । मिलना । सामने आना । पाना । पूरा करना.

सार, (पु०) आ+सृ+घञ् । [illegible] । जोरके बौछार । [illegible] बौछार । जोरकी वर्षा । फैलना । सेना-ओंका चारो ओर घेरना । "बरसे बादल" । [illegible]

सिक्त, (पु०) असिः प्रहरणं अस्य-ठञ् । तलवार जिसका शस्त्र है । तरवारवाला

सिका, (स्त्री०) [illegible] । बैठनेका नियम । नियमपूर्वक बैठना.

आस्विष्, पु० प० । पनीका [illegible] में [illegible] । सींचना । पीस्य करना । मरदेना.

आसित, (त्रि०) आस्+क्त । बैठनेवाला । आराम किया हुआ.

आसिधारं, (न०) असिधारा इव कर्म अत्र-अण् । तरवारकी धारपर चलनेकी भांति एक प्रकार कठिन व्रत.

आसुति, (स्त्री०) आ+सु+क्तिन् । मद्यनिष्पादन । रस निकालना.

आसुर, (पु०) असुरसम्बन्धी । दैत्यका । यज्ञ न करनेहारा । आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक । जिसमें वर, कन्या, पिता, वा उनके सम्बन्धियोंको धन देकर वधू लेता है । जैसे मोलकर वस्तु खरीदते हैं.

आसेचन, (त्रि०) न [illegible] । [illegible] ल्युट् । जहां मन नहीं [illegible] । [illegible] सुन्दर दर्शन । छिड़काव । सींचना.

आसेध, (पु०) आ+सिध्+घञ् । [illegible] । [illegible] में [illegible] रोक । कैद.

आसेवा, (स्त्री०) आ+सेव्+अ । [illegible] प्रवृत्ति । एक कामको बारबार करना । बारबार [illegible] तरह ऐसा करना.

आस्कन्दन, (न०) [illegible] । आ+स्कन्द्-[illegible] ल्युट् । तिरस्कार करना । [illegible] । [illegible] । [illegible] करना । आधारे घञ् । युद्ध

आस्तर, (पु०) आ+स्तृ-[illegible] । [illegible] । [illegible] पीठका बकाल । [illegible] । "[illegible]" इसी अर्थमें होता है

आस्तारः, (पु०) आ+स्तृ+घञ् । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible]

आस्तिक, (त्रि०) अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य इक् । परलोक है ऐसी जिसकी बुद्धि हो । परलोकका [illegible] । [illegible] बुद्धि [illegible] । जो वेद, [illegible], और ईश्वरको स्वीकार करे । "[illegible]" इसी अर्थमें होता है

आस्तीर्ण, (त्रि०) आ+स्तृ+क्त । [illegible] । [illegible]

आस्था, (स्त्री०) आ+स्था+अङ् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । आदर । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

आस्थान, (न०) [illegible] । [illegible] ल्युट् । जहां बैठते हैं । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

आस्थित, (त्रि०) आ+स्था+क्त । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

आस्पद, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

आस्फालन, (न०) आ+स्फल्-चलना-रगड़ना-णिच् ल्युट्। चलन। चलाना। घसना। पछाड़ना। रगड़ना। छींटेमारना.

आस्फोट, (पु०) आ+स्फुट्+अच्। अर्कवृक्ष। पहिल्वानोंका भुजाओंपर हाथसे ठोकना। तालठोकना। (कुश्ती-करनेके समय सभ ठोकतेहैं)। कांपना। नवमल्लिकावृक्ष.

आस्माक, (त्रि०)-की (स्त्री०) आस्माकीन। अस्मद् अण्-खञ् अस्माकादेशः। हमारा। हम लोगोंका.

आस्य, (न०) असवे प्रासोऽत्र। अस्+आधारे ण्यत्। जहां ग्रास डाला जाताहै। मुख। मुंका मध्यभाग। मुखका (त्रि०).

आस्यपत्र, (न०) आस्यमेव पत्रं अस्य। जिसका मुखही पत्र हो। पद्म। कमल.

आस्था, (स्त्री०) आस्+भावे क्यप्। स्थिति। आसन। ठहरना। निवास.

आस्रासव, (पु०) आस्रस्य आसवः प्रस्रवः ६ त०। मुंका मद। लाळ। थुक। लार.

आस्रव, (पु०) आस्रवति मनोऽनेन। करणे अप्। जिससे मन बह जाताहै। क्लेश। दुःख। तकलीफ। "भावे अप्"। निरन्तर बहना.

आस्वनित, आस्वान्त (त्रि०) आस्वन्+क्त। ध्वनित। शब्द किया गया। बुलाया गया.

आस्वाद, (पु०) आ+स्वद्+कर्मणि घञ्। रस। सुआद। "भावे घञ्"। स्वाद लेना.

आहक:, (पु०) आ+हन्+ड-कन्। एक प्रकारकी नाककी व्याधि.

आहत, (त्रि०) आ+हन्+क्त। ताडन कियागया। चोट दियागया। ज्ञात। जानाहुआ। बढ़ा। बाजा (पु०)। पुराना वा नया कपड़ा (न०).

आहन्, अ० प०। ताडन करना। मारना। अपने शरीरका कोई अंग कर्म होनेसे आत्मनेपद होजाता है। जैसे आहते शिरः। हन्ति। जघान। अवधीत्। हतः.

आहव, (न०) आहूयन्तेऽरयोऽत्र। आ+ह्वे+अप्-सम्प्रसारणे गुणः। जहां शत्रु बुलाये जातेहैं। युद्ध। लड़ाई। आहूयतेऽत्र "आ+हु+अप्"। जहां देवताओंको दिया जाताहै। यज्ञ। होम.

आहवनीय, (पु०) आहवनं अर्हति-छ। गृहस्थीके अग्निसे लेकर होमके लिये संस्कार कियागया अग्नि। "आ+हु+अनीयर्"। हवनीय। हवनके योग्य। होमके लायक.

आहार, (पु०) आ+हृ+घञ्। आहरण। लाना। किसी चीजका गलेके नीचे करना। भोजन। खाना। "कर्मणि घञ्" अन्नादि.

आहार्य, (त्रि०) आ+हृ+ण्यत्। आहरणीय। व्यक्त। कलियोग। आगन्तुक। अभिनय। देमाळोकी जगह। कृत्रिम। बनावटी। स्त्रियोंके पहिरनेहारे जेवर वगैरह.

आहाव, (पु०) आ+ह्वे+घञ्-सम्प्रसारणेऽपि दीर्घः। गौ आदिके पानी पीनेके लिये पत्थर आदिके जलका स्थान। युद्ध। लड़ाई। बुलाना। यज्ञ

आहित, (त्रि०) आ+धा+क्त। न्यस्त। रक्खा गया। स्थिर कियागया। डालाहुआ। स्थिर किया गया.

आहितुण्डिक, (त्रि०) अहितुण्डेन दीव्यतीति ठक्। मुंमें गेल्लाहै। सांप पकड़नेहारा। मदारी.

आहुति, (स्त्री०) आ+हु+क्तिन्। देवताके उद्देश्यसे पढ़कर अग्निमें घी डालना। देवताके लिये दान करना.

आहूति:, (स्त्री०) आ+ह्वे+क्तिन्। बुलाना। पुकार

आहेय, (न०) अहेरिदं ढक्। सांपकी कुंडली। विष आदि.

आहो, (अव्य०) प्रश्न। सवाल। विकल्प। सन्देह.

आहोपुरुषिका, (स्त्री०) अहमेव पुरुषः अहम्पुरुषः तस्य भावः कन्-स्त्रीत्वात् टाप्। अहंकारसे अपनी बड़ाईका ख्याल। दर्पजन्य आत्मोत्कर्ष। घमंड

आहोस्वित्, (अव्य०) विकल्प। सन्देह। प्रश्न। जाननेकी इच्छा.

आह्निक, (त्रि०) अह्ना साध्यं ठञ्। दिनका कर्म सन्ध्या तर्पण आदि। भोजन (न०) ग्रन्थका हिस्सा। सदाकी क्रिया.

आह्लाद, (पु०) आ+ह्लाद्+घञ्। आनन्द। प्रसन्नता

आह्वय, (पु०) आ+ह्वे+श। नाम। जूआ.

आह्वान, (न०) आ+ह्वेञ्+ल्युट्। आकारण। बुलावा.

आह्वे, भ्वा० प०। पुकारना। बुलाना। आमन्त्रण करना। अहंकारसे बुलाना। ह्वयति। जुहाव। अह्वत्। आहूः.

ई

ई, (पु०) अस्य विष्णोरपत्यम्। अ+अञ्। विष्णुस्थान। कामदेव। अस्येदम्। अ+इञ्। नेत्र। क्रोधसे कहाहुआ वचन। निरस्कार। दया। खेद। विलापवानी। निन्दा। सम्बोधन.

इ, जाना। भ्वा० पर० सक० अनिट्। अयति। ईयाय।

इ(इण), अ० प०। जाना। याद आना। ऐति। ईयाय। अगात्। एतुं। इत.

इक्, याद करना। अधिपूर्वक एव नित्। अदा० पर० सक० अनिट्। अध्येति। अध्यैषीत्। अधीयन्.

इक्षु, (पु०) इष्+क्सु। गन्ना। मीठे रसवाला पौंडा.

इक्षुकाण्ड, (पु०) इक्षोः काण्ड इव काण्डोऽस्य। काशतृण। काही। गन्ना.

इक्षुपत्र, (पु०) इक्षोः पत्रं इव पत्रं अस्य। जिसका पत्ता गन्नेकासा हो। धान्यभेद। जुआर.

इक्षुमती, (स्त्री०) इक्षुस्तद्रसोऽस्त्यस्यां-मतुप्। जिसमें गन्नेकासा रस हो। एक नदी

इक्षुर, (पु०) इक्षु इक्षुगन्धं राति-क। तालमखाना। कोकिल वृक्ष.

इक्षुसार, (पु०) ६ त०। गुड़। गन्नेका सार.

इक्ष्वाकु, (पु०) इक्षु इच्छां आकरोति। इक्षु+आ+कृ+उ। कडुतुम्बी। वैवस्वतमनुका बेटा। सूर्यवंशी प्रथम राजा.

इक्ष्वालिका, (स्त्री०) इक्षुरिव अलति व्याप्नोति-ण्वुल्। कास। काही

इख्, जाना-इदित्-भ्वा० पर० सक० सेट्। इङ्खति। ऐङ्खीत्.

इग्, जाना-इदित्-भ्वा० पर० सक० सेट्। इङ्गति। ऐङ्गीत्.

इङ्, पढना-अधिपूर्व एव नित्। अदा० आत्म० सक० अनिट्। अधीते। अध्यैष्ट-अध्यगीष्ट। अधिजगे। अध्यैष्यत-अध्यगीष्यत.

इङ्गित, (न०) इगि+क्त। अभिप्रायको प्रकाश करनेवाली शरीरकी क्रिया। मनोभिप्राय। आशय। संकेत। इशारह.

इङ्गुद, (पु०) इगि+उ-इङ्गु रोगभेदं द्यति-दो+क। तापसतरु। तपस्विभोज्य वृक्ष हिंगोट। "इङ्गुदी" इसी अर्थमें.

इच्छा, (स्त्री०) इष्+श। यह मेरे लिये हो इस प्रकारका मनोधर्मविशेष। सुख और उसका साधन। आत्माका धर्म। चाह.

इज्य, (पु०) इज्यतेऽसौ। यज्+क्यप्। गुरु। देवगुरु। बृहस्पति। नारायण। परमात्मा। पूजाके लायक (त्रि०).

इज्या, (स्त्री०) यज्+भावे क्यप्। स्त्रीत्व टाप्। यज्ञ। दान। मिलन "संगतिकरण"। प्रतिमा। गौ। कुट्टिनी.

इडा, (स्त्री०) इल्+अच्-टा। अन्न। स्वर्ग। गौ। वाणी। भूमि। स्वर्ग। बुधकी स्त्री। शरीरके वाम भागकी टेढ़ी नाड़ी.

इण्, जाना-अदा० पर० सक० अनिट्। एति। ऐषीत्.

इत, (त्रि०) इण्+क्त। गया। प्राप्त किया हुआ। जाना हुआ। गत। स्मृत। ज्ञात

इतर, (त्रि०) इता कामेन तरः। दूसरा। नीच। भिन्न। पामर। छोटे दरजेका। इतरा.

इतरथा, (अव्य०) और प्रकारसे। अन्यथा.

इतरेतर, (त्रि०) इतर+द्वित्वम्। अन्योन्य। आपसमें परस्पर। मिथः.

इतरेद्युस्, (अव्य०) अन्यस्मिन्नहनि। दूसरे दिन। अगले दिन। और रोज.

इतस्, (अव्य०) यहांसे। मुझसे इस ओर। यहां। इधर। इसमें। अबसे.

इतस्ततः, (अव्य०) अस्मिन् तस्मिन्। इसमें उसमें। इधर उधर.

इति, (अव्य०) हेतु। प्रकाश। निदर्शन। प्रकार। समाप्ति। प्रकरण। स्मरण। निकटता। मत। प्रश्न। अवधारण। व्यवस्था। परामर्श। मान। प्रारम्भ। इस तरह। शब्दके स्वरूपको प्रकाश करनेहारा। प्रातिपदिकार्थद्योतक-इसके योगमें प्रथमा विभक्ति होती है। कभी कभी द्वितीयाके अर्थमें आता है। वाक्यके अर्थको प्रकाश करनेहारा.

इतिकर्तव्यता, (स्त्री०) इति इत्थं इदं कर्तव्यं तस्य भाव। यह करके इसे करेंगे ऐसा काम करनेका क्रम। अवश्य करनेलायक

इतिमध्ये, (अव्य०) अस्मिन् मध्ये। इसबीचमें.

इतिह, (अव्य०) उपदेशपरम्परा। ऐसे पुराना उपदेश। सुना। सुनाया अच्छा वचन। जैसे "इस वटपर भूत रहता है" यह सुनतेही चले आते हैं। किन्तु किसीने देखा नहीं.

इतिहास, (पु०) इतिह पारम्पर्योपदेश आस्तेऽस्मिन्। इतिह+आस+घञ्। "जिसमें पुरुषके चार अर्थ (धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष) का उपदेश प्राचीन कथाओंसे युक्त हो" ऐसे लक्षणसे युक्त पुराने वृत्तान्तका प्रकाशक। महाभारत, रामायण, श्रीभागवत आदि ग्रन्थ.

इत्थम्, (अव्य०) अनेन प्रकारेण। [illegible] प्रकारसे। [illegible] तरह। इस रीति। ऐसे.

इत्य, (त्रि०) इण्+क्यप्-तुक् च। प्राप्य। नपुंसकके समान कर्मवाला

इत्वर, (त्रि०) इण्+क्वरप्। पथिक। नीच। क्रूरकर्म। इन्द्रियरहित काम करनेहारा। नपुंसक (पु०) पामर। बकरा। बैल.

इत्वरी, (स्त्री०) इण्+क्वरप्+ङीप्। अभिसारिका। जो पुरुषोंसे मिलनेकी इच्छासे संकेत किये स्थानपर जाती है। व्यभिचारिणी। असती औरत.

इद्, ऐश्वर्य होना-इदित्। भ्वा० पर० अक० सेट्। इन्दति। ऐन्दीत्

इदम्, (त्रि०) (अयं-पु०; इयं-स्त्री०, इदं-न०) यह सिर्फ ऐसी चीजको कहता है जो बहुतही समीप हो। इससे निकटकी देश। प्रत्यक्ष। यह। यहां.

[illegible], (अव्य०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]।

[illegible], (न०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] ([illegible]).

[illegible], (न०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]। जिसके [illegible] है। [illegible]। [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

[illegible], (न०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

[illegible]

इन्द्रगोप, (पु०) इन्द्रो गोपो रक्षकोऽस्य [illegible] वर्षामें उपजनेसे इन्द्र जिसकी रक्षा करें [illegible] किया गया लाल रंगका कीड़ा। पटबीजन.

इन्द्रजाल, (न०) इन्द्रेण जीवात्मनैव [illegible] वरणम्। आत्मार्थ मनुष्योंके नेत्रोंपर [illegible] जिसमें वस्तुका असली स्वरूप नहीं दीख पड़[ता] [illegible] और जादूकी वस्तुमें और [illegible] इन्द्रजाली। मायाका काम। छल.

इन्द्रजालिक, (त्रि०) इन्द्रजालं शिल्पं [illegible] इन्द्रजाली। माया रचनेहारा। मदारी। [illegible] तुरुक कुछ दिखानेवाला.

इन्द्रजित्, (पु०) इन्द्रं जितवान्। जि-क्विप्। [illegible] जो इन्द्रको जीतचुका। रावणपुत्र। रावणका बेटा। [illegible]

इन्द्रधनुष, (न०) इन्द्रस्य धनुरिव। मानो इन्द्रका [illegible] है। आकाशमें मनुष्ये बनाये नहीं धनु[ष] [illegible] वाली सूर्यकी किरणें.

इन्द्रनील, (पु०) इन्द्र इव नीलः। इन्द्रकी भी [illegible] रूपमें जाननेसे उसे नीला कहते हैं। नीलम। मरकतमणि [illegible]

इन्द्रप्रस्थ, (न०) इन्द्रस्य [illegible] [illegible] [illegible] पाण्डवोंकी मानो एक कोठी है। [illegible]

इन्द्रवंशा, (स्त्री०) [illegible] छन्दोभेद। [illegible] [illegible] [illegible] भेद

इन्द्रवज्रा, (स्त्री०) [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इन्द्रवारु, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]

इन्द्राणी, (स्त्री०) इन्द्रस्य पत्नी [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

[illegible], (न०) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] है। [illegible]। [illegible] [illegible]

[illegible], (न०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ऐन्द्रियायतन, (न०) ६ त० । इन्द्रियोंका विश्रामस्थान।

ऐन्द्रियार्थसन्निकर्ष, (पु०) इन्द्रियाणां अर्थैः (सम्ब-न्धिविषयैः सह) सन्निकर्षं सम्बन्धः । इन्द्रियोंका अपने अपने विषयोंके साथ सम्बन्ध (मिलना) । प्रत्यक्ष ज्ञानका कारण इन्द्रिय और विषयका संयोग (मेल).

इन्ध्, चमकना, रुधादि० आ० अक० सेट् । इन्धते । ऐन्धिष्ट.

इन्धन, (न०) इध्यतेऽग्निरनेन । इन्ध्-करणे ल्युट् । जिससे आग जलतीहै । काष्ठ । लकड़ी । बाळन.

इभ, (पु०) इण्+भ-किच । हस्ती । हाथी । आठकी संख्या । पील

इभकणा, (स्त्री०) इभोपलक्षणा कणा । शाक० त० । गजपि-प्पली । पीपल.

इभनिमीलिका, (स्त्री०) इभं हस्तिनं अपि निमीलयति (सेवनात् निद्रापयति) । जिसका सेवन करनेसे हाथीको-भी नींद आजाय । भङ्ग । भांग । भिजया । भांगबूटी.

इभपालक, (पु०) इभं पालयति । जो हाथीको पालताहै । हस्तिरक्षक । महावत.

इभ्य, (त्रि०) इभं हस्तिनं अर्हति-यत् । बड़े धनवाला । आढ्य । राजा.

इभ्या, (स्त्री०) इभ+यत्+टाप् । हस्तिनी । हथिनी.

इयत्, (त्रि०) इदं परिमाणं अस्य । इदम्+वतुप् । एतावत् । इतना.

इयत्ता, (स्त्री०) इयतो भावः तल् । इतनेका होना । सीमा । हद । परिमाण । माप । संख्या । गिनती.

इरम्मद, (पु०) इरया जलेन माद्यति वर्धते । इरा+मद्+खश् इस्वः मुमुच । जो पानीसे बढे । वज्राग्नि । बिजली । वाडवानल । समुद्रकी आग (जो घोड़ीकी शकलमें है).

इरा, (स्त्री०) इण्+रक् । इं-कामं राति । रा+क आ । भूमि । पृथ्वी । वाणी । सुरा । मद्य । शराब । जल । अन्न । कश्यपकी स्त्री.

इरावती, (स्त्री०) इरां भूमिं अवति । अव+शतृ+ङीप् । वटपत्रशाक । एक नदीका नाम जो पंजाबमें है, जिसे रा-वीभी कहते हैं । यह पत्थरोंकोभी फाड़कर जमीनपर आतीहै.

इरिण, (न०) ऋ+इन्+किच । ऊसरभूमि (जहां बीज-बोयागया नहि उपजता) । आसरेके विना । शून्य । सूना.

इरेश, (पु०) ६ त० । वरुण । बृहस्पति । राजा । विष्णु.

इर्वारु, (उ) (स्त्री०) उर्व+आरु-पृषो० । ककड़ । ककड़ी । ककंटी । फूट.

इल्, सोना अक० । जाना-फेंकना सक० । तुदा० पर०.

इल्, फेंकना चुरा०उभ०सक०सेट् । एलयति-ते । ऐलिलत-त.

इलविला, (स्त्री०) पुलस्त्यमुनिकी स्त्री । कुबेरकी माता । इसी सबंधसे कुबेरका नाम ऐलविल है.

इला, (स्त्री०) इल्+क । भूमि । पृथिवी । गौ । वाणी । जम्बुद्वीपके ९ वर्षोंमेंसे एक । वैवस्वतमनुकी कन्या बुधकी स्त्री (यह विष्णुके वरसे पुरुष होकर महादेवके शापसे स्त्री होगई । बुधने उसे विवाह कर पुरूरवाको उत्पन्न किया । यह चरित्र पुराणमें प्रसिद्ध है).

इलावृत, (न०) इला पृथिवी वृता येन । जो पृथिवीको घेरे हुए है । जम्बुद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक । चारों सीमावाला देश । "पश्चान्माल्यवतः प्राच्यां गन्धमादनशैलतः । इलावृतं नीलगिरेर्याम्यतो निषधादुदक्" । जगत्के ९ भागोंमेंसे एक.

इली, (स्त्री०) इल्+इन्-ङीप् । हाथछुरी । करवालिका । छोटी तरवार.

इल्वल, (पु०) इल्+वलच्-नि० गुणाभाव । अत्यन्त चपल मत्स्यविशेष । एकप्रकारका मच्छ । दैत्यभेद (जिसे वसिष्ठने नाश किया । मृगशिरके पाँच तारे (स्त्री०).

इव्, फैलना । इवित । भ्वा०पर०सक०सेट् । इन्वति । ऐन्वीत.

इव, (अव्य०) सादृश्य । बराबरी । उत्प्रेक्षा । मानों । थोड़ा । वाक्यालङ्कार.

इष्, जाना-सरकना । दिवा०पर०सक०सेट । इष्यति । ऐषीत.

इष्, चाहना । तुदा०पर०सक०सेट् । इच्छति । ऐषीत् । एषिता-एष्टा.

इष, (पु०) इष्-जाना+क्विप् । जिसमें जयकी इच्छा करने-हारे यात्रा करतेहैं । आश्विनमास । शरदृका महिना.

इषु, (पु०) इष्यते हिंस्यतेऽनेन । जिससे मारते हैं (स्त्री०) इष्+उकित् ह्रस्व । बाण । तीर । पाँचकी संख्या.

इषुधि, (पु०) (स्त्री०) इषवो धीयन्तेऽत्र । धा+कि । बाणाधारतूण । बाणका आश्रय तूण । तर्कस । जहां बाण रहते जाँय.

इष्ट, (त्रि०) इष्+क्त । पूजित । आदर कियागया । अभिलषित । चाहागया । पियारा । "यज्+क्त" (यज्ञादि-का काम) एरण्डका वृक्ष (पु०) । संस्कार (न०) । चाह । धर्मका कार्य.

इष्टका, (स्त्री०) इष्+तकन् । मट्टी आदिका बनाहुआ एक प्रकारका मट्टीका टुकड़ा । ईंट.

इष्टा, (स्त्री०) इज्यतेऽनया । यज्-करणे क्त । शमीवृक्ष । छाँकरा दरख्त.

इष्टापूर्त, (न०) इष्टं च पूर्तं च द्वयोः समाहारः पूर्वपददीर्घ । अग्निहोत्र, तप, सत्य, यज्ञ, दान, वेदरक्षा, आतिथ्य, वैश्वदेव और ध्यान आदि धर्मकार्य (इष्ट), और बावली, कूआ, तालाब, देवमन्दिर, अन्नदान और बगीचा लगाना आदि पूर्त कहलाताहै । बहुतोंकी भलाईका काम.

इष्टि, (स्त्री०) यज्+क्तिन् । यज्ञ । दर्शपौर्णमासयज्ञभेद । "इष्+क्तिन्" अभिलाष । इच्छा । चाह । इच्छाहित.

इष्म, (त्रि०) इष् इच्छायां-कर्मणि मक्। इच्छा करनेवाला । चाहनेवाला ।-ष्मः (पु०) कामदेव । वसन्त.

इष्यः,-ष्यं (पु० न०) इष्+क्यप् । वसन्त । बहार.

इष्वसन, (पु०) इषुः अस्यते क्षिप्यतेऽनेन । अस्+ल्युट् । ६ त० । धनुष्.

इष्वास, (पु०) इषवः अस्यन्तेऽनेन । अस्+घञ् । ६ त० । जिस्से तीर फेंकतेहैं । चाप । धनुष् । "इषून् अस्यति अण्" । बाण चलानेहारा (त्रि०).

इह, (अव्य०) अस्मिन् काले । इससमय । इसदेशमें । इसदिशामें.

इहत्य, (त्रि०) इह+त्यप् । यहांका । इस स्थानका । इस संसारका.

(ई)

ई, (स्त्री०) अस्य विष्णोः पत्नी ङीप् । विष्णुकी स्त्री । लक्ष्मी । (पु०) कामदेवका नाम । (अव्य०) दिलका टूटना । दरद । शोक । गुस्सा । अनुकम्पा । मिहर्बानी । प्रत्यक्ष । पुकारना.

ई, चाहना-अक० । जाना और फैलना-सक० अदा० पर० अनिट् । एति । ऐषीत्.

ई, जाना-दिवा० आत्म० सक० अनिट् । ईयते । ऐष्ट.

ईक्ष्, देखना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ईक्षते । ऐक्षिष्ट.

ईक्षण, (न०) ईक्ष्+भावे ल्युट् । दर्शन । देखना । "करणे ल्युट्" । नेत्र । आंख.

ईक्षणिक, (त्रि०) ईक्षणं शुभाशुभदर्शनं शिल्पं अस्य ठन् । स्त्रियां टाप् । जिसका जीवन अच्छे वा बुरे फल कहनेसे चलता है । हाथकी रेखापर फल कहनेहारा । दैवज्ञ । ज्योतिषी.

ईक्षा, (स्त्री०) ईक्ष्+अ । दर्शन । देखना.

ईक्षित, (त्रि०) (ईक्ष्+क्त) देखा हुआ । ध्यान किया गया । (न०) देखना.

ईक्षितृ, (त्रि०) ईक्ष्-तृच् । देखनेवाला । खयाल करनेवाला.

ईड्, स्तुति करना । तारीफ करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । ईडयति-ते । ऐडिडत्-त.

ईड्, स्तुति करना । सराहना । अदा० आत्म० सक० सेट् । ईट्टे । ईडिषे । ईडिध्वे । ऐडिष्ट.

ईडा, (स्त्री०) ईड्+अ । स्तुति । प्रशंसा । तारीफ.

ईडित, (त्रि०) ईड्+क्त । स्तुति कियागया । प्रशंसित.

ईति, (स्त्री०) ईयतेऽनया । ई+क्तिन् । खेतीके छ प्रकारके उपद्रव जैसे बहुत वर्षा न होना, मकडी, सूआ, तोता, एकओर बसवटिक आना । सफर करना । कष्ट.

ईदृश, (त्रि०) [illegible] दर्शनं अस्य । इदम्+दृश्-क्विन् । [illegible]

[illegible]

ईदृश, (त्रि०) अयमिव दर्शनं अस्य । इदम्+दृश्+क्स । इदमादेशो दीर्घः । एतादृश । जो देखनेमें ऐसा है । "ट" ईदृशः । इसी अर्थमें । स्त्रियां ङीप् । ईदृशी.

ईप्सा, (स्त्री०) आप्तुं इच्छा, आप्+सन्+अ । इच्छा.

ईप्सित, (त्रि०) आप्+सन्+क्त । आप्तुमिष्ट । पानेको चाहागया । इष्ट । अपेक्षित । जरूरी.

ईप्सु, (त्रि०) आप्+सन्+उ । पानेकी इच्छा करनेहारा

ईर्, जाना । चुरा० उभ० । पक्षे-भ्वा० पर० सक० सेट् । ईरयति-ते । ईरति । ऐरिरत्-त । ऐरीत्

ईरिण, (त्रि०) ईर+इनन् । जंगली । वह स्थान जहां बीज बोया गया नहीं उगता.

ईरित, (त्रि०) ईर+क्त । भेजा गया । प्रेरणा किया गया । चलाया गया । कहागया.

ईर्म, (न०) ईर्+मक् । व्रण । घाव । फोडा । "ईर्म" भी होताहै.

ईर्ष्य्, ईर्षा करना । हसद करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ईर्ष्यति.

ईर्ष्या-र्षा, (स्त्री०) ईर्ष्य+अ । परोत्कर्षासहिष्णुता । दूसरेकी बडाईको न सहारना । वैर । हसद ।

ईर्षालु, (त्रि०) ईर्षां लाति । ला+डु । ईर्षायुक्त । की वृद्धि न देखसकनेहारा.

ईला, (स्त्री०) ईड्+क डस्य ळलम् । पृथिवी । गौ । स्तुति.

ईलित, (त्रि०) ईड्+क्त-डस्य ळत्वम् । स्तुत । स्तुति कियागया.

ईश्, (पु०) ऐश्वर्य होना । हुकमत करना । अदा० आत्म० सक० सेट् । ईष्टे । ईशिषे । ईशिध्वे । ऐशिष्ट.

ईश, (त्रि०) ईश्+क । आज्ञा चलानेवाला । अधिकार रखनेवाला ।-शः (पु०) स्वामी । मालिक । शिव । महेश्वर.

ईशनम्, (न०) ईश्+ल्युट् । आज्ञा चलाना । हुकूमत करना । इख्तिआर.

ईशान, (पु०) ईश्+शानच् । महादेव । परमेश्वर । शिवजीकी आठ मूर्तिओंमेंसे सूर्यकी मूर्ति । धनी । स्वामी (त्रि०).

ईशिता, (स्त्री०) ईशिनो भाव. तल् । अणिमादि ऐश्वर्योंमें सबपर अधिकारता । " ईशित्व " भी इसी अर्थमें.

ईश्वर, (त्रि०) ईश्+वरच् । मालिक । हुकम करनेवाला ।-रः (पु०) जगत्का स्वामी.

ईश्वर, (पु॰) ईश्+वरच्। महादेव। कामदेव। पातञ्जलके अनुसार क्लेश-कर्मविपाकाशयोंसे न छुआहुआ पुरुषविशेष। चैतन्यात्मा। सर्व सामर्थ्यवाला परमेश्वर। प्रभवादिके मध्यमें एक वर्षका नाम। पहिला स्वामी (त्रि॰) "स्त्रियां ङीप्" ईश्वरी। दुर्गा। लतामेद.

ईष्, (भ्वा॰ उ॰) भाग आना। उड़जाना। बचाना। शिला चुनना। ताकता करना। देना। आक्रमण करना। मारना। ईषति-ते। ऐषीत्। ईषिष्ट। ईषित.

ईष, (पु॰) ईश्+क। (त्रि॰) स्वामी। मालिक। महादेव। परमेश्वर.

ईषत्, (अव्य॰) अल्प। थोड़ा। किंचित्। कुछ.

ईषत्कर, (पु॰) ईषत्+कृ॰ खल्। लेश। अल्प। थोड़ासा। अल्पप्रयाससाध्य (त्रि॰) थोड़े यत्नसे सिद्ध होनेवाला.

ईषदुष्ण, (पु॰) 'ईषदुष्णता' इति-स॰। अल्पताप। मन्दोष्ण। थोड़ा तपाहुआ (गरम).

ईषा, (स्त्री॰) ईष्+क। हलदण्ड। हलका डण्डा (फाल).

ईषिका, (स्त्री॰) ईषेव "इवे प्रतिकृतौ" इति कन्। हस्तिनेत्रगोलक। हाथीकी आँखका गोलक (डेला)। तूलिका। मूरत लिखनेवाली कलम। अजमेर.

ईषि(षी)का, (स्त्री॰) इष्-गत्यादौ वुन् अत इत्वम्। कान्ना। घासका तिनका.

ईह्, चेष्टाकरना-इच्छा करना। भ्वा॰ आ॰ अक॰ सेट्। ईहते। ऐहिष्ट.

ईहा, (स्त्री॰) ईह्+अ। चेष्टा। उद्यम। वाञ्छा। कोशिश.

ईहित, (त्रि॰) ईह्+क्त चेष्टित। खोजागया। भूंजागया। चाहागया। प्रार्थना कियागया। "भावे क्त" इच्छा। चाह.

(उ)

उ, शब्द करना। आवाजकरना-भ्वा-आत्म॰ सक॰ अनिट्। अवते। औष्ट.

उ, (अव्य॰) सम्बोधन। बुलाना। क्रोधका वचन। गुस्सेसे बोलना। दया। हुकम। विस्मय। हैरानी। "अत्+उ" शिवजी.

उक्त, (त्रि॰) वच्+क्त। कथित। कहागया। एक अक्षरके पादका छन्द (स्त्री॰) "भावे क्त" कथन। करना (न॰).

उक्ति, (स्त्री॰) वच्+क्तिन्। कथन। कहना.

उक्थ, (न॰) वच्+थक। नौ प्रकारके सामवेदका एक भाग। सामवेदका प्रधान अङ्ग। महाव्रताख्य यज्ञ। प्राण.

उक्थशास, (पु॰) उक्थानि सामावयवशास्त्राणि शंसति शंस+क्विप्-नि॰। जो सामभागकी प्रशंसा करता है। यजमान.

उक्ष्, सींचना (भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्)। उक्षति। औक्षीत्। उक्षाबभूव.

उक्षणं, (न॰) उक्ष्+ल्युट्। सींचना। सींचनेद्वारा राजतिलक देना.

उक्षतर, (पु॰) तनुतरः, उक्षन्॰ तनुत्वेऽर्थे ष्टरच्। तीसरी अवस्थाको पहुंचा हुआ बैल। बड़ा बैल। महावृषभ.

उक्षन्, (त्रि॰) उक्ष्+कनिन्। बड़ा। सींचनेवाला (शा॰ पु॰) वृषभ=बैल। सूर्य.

उक्षित, (त्रि॰) उक्ष+क्त। सींचागया। गीला किया गया। शुद्ध किया गया। सुगन्धित किया गया.

उख्, जाना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। ओखति। औखीत्। उवोख.

उखा, (स्त्री॰) उख+क। पाकपात्र। पकानेकेलिये पात्र। देगचा। हाँडी.

उग्र, उच्॰रन्। गश्चान्तादेशः। महादेव। वायुकी मूर्ति धारण करनेहारे शिवजी। क्षत्रियसे विवाही गई शूद्रामें उत्पन्न। संकीर्ण (दोगला) वर्ण। मुहांजना। उत्कट (त्रि॰) जोरका। बड़ा। सख्त। बचा। भवानी। कोपी। गुस्सा करनेहारा। नक्षत्रसमूह। एक प्रकारका विष (स्त्री॰ङीप्) उग्री। निर्दय (बेरहम) स्त्री.

उग्रकाण्ड, (पु॰) उग्र. काण्डोऽस्य। करेला। कारवेल्लकभेद.

उग्रगन्ध, (पु॰) उग्रः गन्ध. पुष्पेऽस्य। जिसके फूलमें बड़ी गन्ध हो। चम्पक। चमेली। बन्बा। कटफल। अर्जकवृक्ष। लशुन। लहसन। हींग (न॰) तेजगन्धवाला (त्रि॰).

उग्रता-त्वं, (स्त्री॰ न॰) उग्र+तल् त्व। भीषणता। डराबनापन। तेजपना। क्रोध.

उग्रधन्वन्, (पु॰) उग्रं धनुर्यस्य ब॰ अनङ्स॰। शिव। इन्द्र। तेज धनुर् सदा धनुष् बड़ा तेज हो। शिव। इन्द्र। तेज धनुर्वाला (त्रि॰)

उग्रम्पश्य, (त्रि॰) उग्रं पश्यति, उग्रदृश्+खश्+मुम्। डरावनी दृष्टिवाला। भयानक। दुष्ट। बदमाश.

उग्रश्रवस्, (पु॰) उग्रं उत्कटं श्रवः कर्णो यस्य। जिसका कान तेज हो अर्थात् उपदेशको झटही ग्रहण करले। रोमहर्षणका पुत्र पौराणिक (पुराणकहनेवाला).

उग्रसेन, (पु॰) उग्रा सेना अस्य। जिसकी सेना जोरावर हो। यदुवंशमें हुआ आहुक नाम कंसका पिता। राजा। मथुरा नगरीका राजा। धृतराष्ट्रका पुत्र.

उच्, इकट्ठा करना। उचक होना। दि॰ पर॰ सक॰ सेट्। उच्यति। औचत्। औचीत्.

उचथं, (न॰) उच्यते=स्तूयते अनेन, वच्+कथन्। जिससे स्तुति कीजाती है। स्तुति करनेका मन्त्र। स्तोत्र

उचथ्य, (त्रि॰) उचथ+यत्। स्तुति करनेयोग्य। ऋषिके लायक.

उचित, (त्रि॰) उच्+क्त । वक्+क्तिन्‌इया । लायक । मुनासिब । यथार्थ । ठीक । समझागया । परिमित । जुड़ाहुआ.

उच्च, (त्रि॰) उत्क्षिप्य बाहू चीयते । उद्+चि+ड । जो भुजा उठाकर पकड़े । उन्नत । ऊंचा.

उच्चतरु, (पु॰) कर्म॰ नारिकेल । नरेलका दरख्त.

उच्चाटन, (न॰) उद्+चट्+णिच्+ल्युट् । उच्चाटन । उखाड़ना । अपनी जगहसे अलग करना । तन्त्रोक्त "अभिचारभेद" । "उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम्".

उच्चार, (पु॰) उद्+चर्+णिच्+घञ् । उच्चारण । कहना । "कर्मणि घञ्" । विष्ठा । मल.

उच्चावच, (त्रि॰) उदक् उत्कृष्टं च अवाक् अपकृष्टं च । मयू॰ नि॰ । बड़े छोटे कईभेद । तरहतरहके । अनेक प्रकारके.

उच्चूलक (क), (पु॰) उन्नता चूडा यस्य तस्य स्वत्वम् । जिसकी चोटी ऊंची हो । ध्वजोर्ध्वस्थित वस्त्रखण्ड । झण्डेके ऊपरका कोना । झण्डा । झण्डेके ऊपर बंधाहुआ भूषण.

उच्चैःश्रवस्, (पु॰) उच्चैरुन्नतं श्रवोऽस्य । जिसके कान ऊंचेहों । ऊंचे कानवाला समुद्रमेंसे उपजा इन्द्रका वाहन (सवारी) घोड़ा । "उच्चैः उच्चशब्दं शृणोति-श्रु+असुन्" बधिर । बहिरा.

उच्चैर्घुष्ट, (न॰) "उच्चैस्+घुष्+क्त । उच्चघोषणा । ढण्ढोरा । डौण्डी.

उच्चैस्, (अव्य॰) ऊंचा बड़ा । लम्बा । पूरा पूरा.

उच्छास्त्र, (त्रि॰) उद्गतं शास्त्रात् । ग॰ स॰ । अतिक्रान्तशास्त्र । शास्त्रको लांघगया । शास्त्रविरुद्ध । अधर्मका काम.

उच्छिख, (त्रि॰) उद्गता शिखा यस्य । प्रा॰ ब॰ जिसकी चोट वा जिसका आगेका भाग ऊंचा हो । आगेसे ऊंचा.

उच्छित्ति, (स्त्री॰) उद्+छिद्+क्तिन् । उच्छेद । नाश । तबाह.

उच्छिलीन्ध्र, (न॰) उच्छ्रितं शिलीन्ध्रं । ऊपरको उठा शिलीन्ध्र । छत्राक । खुंब । मशरूमसे भराहुआ.

उच्छिष्ट, त्रि॰) उद्+शिष्+क्त । भुक्तावशिष्ट । खानेसे बचरहा । छोड़ागया । जूठा.

उच्छीर्षक, (न॰) उत्थापितं शय्यात उत्तोल्य स्थापितं शीर्षं यस्मिन् ब॰ कप् । छेजसे उठाकर जिसपर सिर रखाजाय । शीर्षोपधान । तकिया । सिरहाना । बालिश.

उच्छून, (त्रि॰) उद्+श्वि+क्त । स्फीता । फूलाहुआ । बढ़ाहुआ.

उच्छृङ्खल, (त्रि॰) उद्गतं शृङ्खलातः । ग॰ स॰ । जो सकड़ीसे निकलगया । बंधनरहित । शान्तिबिना । निरंकार । सम्भ्रमयुक्त । बगैर ढरके । नियमके बिना । लगेंकेको छोड़कर.

उच्छेद, (पु॰) उद्+छिद्+घञ् । छेदन । तोड़ना । विनाश । तबाह करना.

उच्छोषण, (त्रि॰) उद्+शुष्+णिच्+ल्युट् । सुखानेवाला.

उच्छ्राय, (पु॰) उद्+श्रि+अच्-घञ् । उच्च । ऊंचाई.

उच्छ्रित, (त्रि॰) उद्+श्रि+क्त । ऊंचा । उठ बंधाहुआ.

उच्छ्वास, (पु॰) उद्+श्वस्+घञ् । अन्तर्मुखश्वास । और जानेवाला श्वास । आश्वासिकका अध्याय । उ

उच्छ्वासन, (न॰) उद्+श्वस्+ल्युट् । सांसलेना । ज

उज्झ्, छोड़ना छोड़ना । तुदा॰ इदित् पर॰ सक॰ । उज्झति । औज्झीत.

उञ्छ्, बांधना-गलसमझना । तुदा॰ पर॰ सक॰ सेट् । उ

उज्जयि(य)नी, (स्त्री॰) विक्रमादित्यकी राजधानी । अवन्तीपुरी.

उज्जासन, (न॰) उद्+जस्+णिच्+ल्युट्+स्वार्थे णिच् मारण । मारना.

उज्जृम्भ, (पु॰) उद्+जृम्भि+घञ् । विकाश । खिलना । फूटना.

उज्ज्वल, (त्रि॰) उद्+ज्वल्+अच् । दीप्त । चमकीला । साफ । खिलाहुआ । सफेद । (न॰) शृङ्गाररस (पु॰)

उज्झ्, छोड़ना-तुदा॰ पर॰ सक॰ सेट् । उज्झति । औ

उञ्छन, (पु॰) (न॰) उञ्छ्+ल्युट् । धान्यका बाजारआदिमें गिरेहुए, बेचनेके पीछे बचेहुए आदिकी कणिकाओंका लेना.

उटज, (पु॰ न॰) उटेभ्यो जायते-जन्+ड । पत्तोंसे हुई शाला । मुनि वा ऋषिओंका घर । पर्णशाला.

उठ्, इकट्ठाकरना-पर॰ अक॰ सेट् । ओठति । औठीत्

उडु, (स्त्री॰ न॰) उड्+कु । नक्षत्र । तारा । "स्त्रीलिङ्गमें वा ऊङ्".

उडु(डू)प, (पु॰ न॰) उडूनि जले पाति-पा+क । डग (पु॰) चाद.

उडु(डू)पति, (पु॰) उडूनां पतिः । तारोंका मालिक । जलका स्वामी । वरुण.

उड्डामर, (त्रि॰) उत्कृष्टं डामरम् । अत्यन्तप्रबल । जोरका । सबसे ऊंचा.

उड्डीन, (न॰) उद्+डी+क्त । पक्षिओंका ऊपरजाना ।

उत, (अव्य॰) विकल्प । समुच्चय । वितर्क । अत्यर्थ । बहुतही । सन्देह । और भी । क्या । अथवा.

उतथ्य, (पु॰) अङ्गिराके श्रद्धा स्त्रीमें उत्पन्नहुआ बृहस्पतिका बड़ा भाई.

उताहो, (अव्य॰) विकल्प । सन्देह । प्रश्न । ऐसा वा ऐसा.

त, (त्रि०) उद्गतं मनोऽस्य । उद्+क+नि० । उन्मत्तचित्त । जिसका मन और जगह चलागया । उदासमनवाला.

ट, (पु०) अतीव । उद्+कट्+अच् । बहुत । तेज । अलगया । बाण दारचीनी (न०) । मस्तहाथी (पु०).

ण्ठा, (स्त्री०) उद्+कठि+अ । इष्ट वस्तुके पूरा करलेके लिये मनकी चिन्ता । फिकर । चाहीहुई वस्तुमें देरको न सहारना । दुःख । बेआरामी । किसी पियारी चीजकी ख्वाहिश । शोक.

न्धर, (त्रि०) उन्नता कन्धरा अस्य । ऊंची गर्दन (कण्ठ) वाला.

प्, भ्वा० आ० । कांपना । थरथराना । कम्पते । कम्पे । अकम्पिष्ट.

र, (पु०) उद्+कृ+अप् । धान आदिका इकट्ठा करना । हाथ पांव आदिका फैलाना । पासका फैलाना.

र्ष, (पु०) उद्+कृष्+घञ् । अतिशय । बहुत । ज्यादा.

ल, (पु०) अगन्नाथके पासका देश । उड़ीसा उत्कल, "उत्कः सन् लाति ला+क" । व्याध । शिकारी । भारवाहक । बोझा उठानेहारा.

लिका, (स्त्री०) उद्+कल्+वुन् । उत्कण्ठा । काम आदिसे याद करना.

ार, (पु०) उद्+कृ+घञ् । धानोंको इकट्ठा करना । और ऊपर उछालना । फेंकना.

ीर्ण, (त्रि०) उद्+कॄ+क्त । फैलायागया । फेलायागया । लिखाया गया । उल्लिखित । कृतवेध । बेधागया । चढ़ागया.

ुण, (पु०) उद्+कुण्+क । जूं । खाटोंका कीड़ा.

ोच, (पु०) उद्+कुच्+घञ् । अन्यायका काम करलेके लिये वादी (मुद्दइ) किंवा प्रतिवादी (मुद्दालह)-से धन लेना । घूस । रिश्वत । बड़ी.

्राम, (पु०) उद्+क्रम्+घञ् अवृद्धिः । व्युत्क्रम । उलटा । उलटाक्रम । उछलना । नियमविरुद्ध । सिलसिला छोड़कर.

्रान्त, (त्रि०) उद्+क्रम्+क्त । चला गया । बाहिर गया । निकल गया.

्रोश, (पु०) उद्+कुश्+अच् । कुररीपक्षी । कूंज । चिल्लाना.

ेक्षप्, तु० प० । फेंकना । उठाना । जगहपर धर देना । गाड़ना । लिपटि । विक्षेप । अचैतसीत.

ेक्षप्त, (त्रि०) ऊपरको फेंकदिया । पकड़ लिया गया । ताड़न किया गया.

्षेपण, (न०) उद्+क्षिप्+ल्युट् । ऊर्ध्वक्षेपण । ऊपर फेंकना । "कर्मणि ल्युट्" पंखा । "करणे ल्युट्" धान मलनेकी लकड़ी.

ःखन्, भ्वा० प० । खोदना । खोद डालना । खनति । चखान । अखानीत् । खात.

उत्खात, (त्रि०) उद्+खन्+क्त । उत्पाटित । उखाड़ागया.

उत्तंस, (पु०) उद्+तसि+अच् । कर्णभरण । कानका भूषण । शिरोभूषण । सिरका जेवर.

उत्तप्त, (त्रि०) उद्+तप्+क्त । सन्तप्त । तपाहुआ । गरम । स्नात । नहायाहुआ । शुष्क मांस । सूखाहुआ मांस (न०).

उत्तमर्ण, (पु०) उत्तमं ऋणं अस्य । जिसका कर्जा अच्छा हो । कर्ज देनेहारा । महाजन । ऋणदाता.

उत्तमसाहस, (न०) दण्डभेद । बड़ी सजा । १००० वा कईओंके मतमें ५०००० हजार पणकी सजा । बड़ी दिलेरी.

उत्तमाङ्ग, (न०) कर्म० मस्तक । माथा । सिर । शरीरका सबसे अच्छा अंग.

उत्तम्भ, (पु०) उद्+स्तम्भ्+घञ् । ठहरना । पकड़ना । रोकना । आसरा देना । बुराईसे हटजाना । आराम करना.

उत्तर, (न०) उत्तीर्यते प्रकृतासियोगोऽनेन । उद्+तॄ+अप् । जिसके द्वारा कियेगये सवालको हटाकें । राजके निकट वादीसे किये हुए सवालको साफ करना । उत्तर नाम व्यवहारका अङ्ग । दोषके तोड़नेका वचन । विराटराजका पुत्र (पु०) । उदीची (उत्तर) दिशा । विराटराजकी कन्या (स्त्री०) । अच्छा । ऊंचा । लायक । पीछे.

उत्तरकोशला, (स्त्री०) अयोध्या नाम नगरी । रामचन्द्रजीकी जन्मभूमि.

उत्तरङ्ग, (न०) उत्तरं अङ्गं । कर्म० । शाकपार्थि० । द्वारोर्ध्वस्थदारु । दरवाजेके ऊपरकी लकड़ी । ऊंची तरङ्गोंवाला (त्रि०)

उत्तरच्छद, (पु०) कर्म० । शय्योपर्यास्तरणवस्त्र । सेजके ऊपर बिछानेका कपड़ा । बिछौना । ऊपरका कपड़ा.

उत्तरपक्ष, (पु०) वाद (मुबाहिसा) में पूर्वपक्ष । पहिले उठायागया सवाल । सबसे दोषक । सिद्धान्तपक्ष (फैसलेका जवाब).

उत्तरमीमांसा, (स्त्री०) कर्म० । अगला विचार । फैसलेकी बात । ब्रह्ममीमांसा (ब्रह्मका विचार) । वेदान्तदर्शन.

उत्तरा, (स्त्री०) प्रेतकी पितृत्वप्राप्ति होनेपर सपिण्डीकरणके पीछेकी श्राद्धक्रियायें । उत्तरदिशा, काल, देश (अव्य०).

उत्तरात्, (अव्य०) उत्तरदिशा । उत्तरकी ओर । उत्तरकाल.

उत्तराधिकारिन्, (त्रि०) उत्तरं अधिकरोति । अधि+कृ+णिनि । पहिले स्वामीका स्वत्व (कब्जा) समाप्त होनेपर उसी सम्बन्धसे कब्जा कायम करनेहारे अधिकारको पाये पुत्र पौत्र आदि दायाद । वारिस । शरीक.

उत्तराभास, (पु०) उत्तरमिवाभासते । आ+भास्+अच् । जो उत्तरकी नाईं प्रतीत हो । दुरुत्तर । खराब जवाब । बुरा जवाब.

स, (पु०) उद्+स । पर्वत आदिसे बहेहुए पानीके गिरनेकी जगह । बहताहुआ पानी । झरना । निर्झर.

सङ्ग, (पु०) उद्+सञ्ज्+घञ् । क्रोड । गोद । पुच्छट । गोदसे निकलगया (त्रि०).

सञ्जनं, (न०) उत्+सञ्ज्+अन । ऊपर फेंकना । उठाना ऊपरको.

सद्, भ्वा० प० । दुःखी होना । नाश होना । तबाह होना । सीदति । सन्नाद । अगदत् । सन्न.

सन्न, (त्रि०) उत्+सद्+क्त । नाश होगया । तबाह होगया.

सर्ग, (पु०) उद्+सृज्+घञ् । व्याकरणमें कहागया अपानमायुक्ता चलना । सामान्य नियम । त्याग । छोड़ना । देना । दानभेद.

सर्पण, (न०) उद्+सृप्+ल्युट् । छोड़कर आगेजाना । लांघना.

सर्या, (स्त्री०) उद्+सृ+यत् । वह गौ जो बैलके साथ मिला देने योग्य है । गर्भके योग्य अवस्थावाली गौ.

सव, (पु०) उद्+सू+अप् । आनन्दको उत्पन्न करनेहारा काम । विवाह आदि । खुशी.

सवसंकेत, (पु० ब०) हिमालयकी जंगली जातिके लोग (जहां स्त्रीपुरुषोंमें क्रीडाके लिये आपसी संकेत होजाताहै अर्थात् अनुरागही कारण होताहै । जिसने जिसे चाहा सो वरा लिया) "[illegible]" रघुः.

सह्, भ्वा० आ० । सामर्थ्य रखना । उत्साह करना । हौसला करना । दिलेरी करना । सहते । सेहे । असाहिष्ट । सोढ.

सादन, (न०) उद्+सद्+णिच्+ल्युट् । निकालना । नाश करना । त्यागित करना । सुगन्धि लगाना । चढ़ना । बिनमें होकर [illegible] चलाना । मैल साफ करना । सुगन्धिवाली वस्तुओंसे उबटन करना । उबटना । मलना.

सारण, (न०) उद्+सृ+णिच्+ल्युट् । निकालना । दूर करना । चलाना । हिलाना । किसी चीजको दूसरी जगहपर करदेना.

साह, (पु०) उद्+सह्+घञ् । उद्यम । निश्चय करनेलायक कामोंमें बड़ी कोशिश । राजाओंका विशेष गुण । सुत । इच्छा

सिक्त, (त्रि०) उद्+सिच्+क्त । गर्वित । अहंकारी । उद्धत बोलनेवाला । वर्धित । बढ़ा हुआ । ऊपर सींचा हुआ । बहाये हुए । [illegible] । निकल होनेवाला

सुक्, पु० प० । पीड़ना । वैकल्य । अविश्वासी होना । [illegible] । निषेध । अविच्छ.

सुक, (त्रि०) उद्+सु+किप्+अपि इत्त । किसी वस्तुको वसेसे लिये मन हुआ । [illegible] उत्सुक हुये उससे हुए दिलवाले । बेचैनमन । [illegible] । [illegible] के लिये लोभमें रत.

उत्सूत्र, (त्रि०) उत्क्रान्तः सूत्रम् । सूत्रको लांघ गया । सूत्रसे अलग कर दिया गया । खुल गया.

उत्सूरः, (पु०) उत्क्रान्तः सूरः=सूर्यं । सूर्यको लांघ गया । सायं । सांझका समय । दोनोंसमय मिलें हुएका समय । संध्या.

उत्सृष्ट, (त्रि०) उद्+सृज्+क्त । त्यक्त । छोड़दिया । दियागया

उत्सेक, (पु०) उद्+सिच्+घञ् । अहंकार । छिड़कनी । उछलकर बाहिर सींचना.

उत्सेध, (पु०) उद्+सिध्+घञ् । ऊंचाई । शरीर । ऊंचा । ऊंचा.

उदक, (न०) उन्द्+ण्वुल्-नलोपश्च नि० । जल । पानी । "उदम्" इसीमें.

उदक्या, (स्त्री०) उदकं स्नानार्थं अर्हति उद्+यत् । जो चौथे दिन नहाकर शुद्ध होती है । ऋतुमती स्त्री.

उदगद्रि, (पु०) उदक् उत्तरस्यां अद्रिः । उत्तरका पहाड़ । हिमालय

उदगयन, (न०) उदक् उदीच्यां अयनम् । उत्तरको आश्रय लेना । सूर्यका उत्तरकी ओर जाना । उत्तरायण

उदग्र, (त्रि०) ऊर्ध्वं अग्रं यस्य । ऊंचा । उन्नत.

उदङ्क, (पु०) उदकस्य अङ्किर्यत्र । उद्+अञ्च्+घञ् । चमड़ेका बनाहुआ घी आदिका पात्र । कुप्पा

उदञ्चन, (न०) उद्+अञ्च्+करणे ल्युट् । डोलडेका पात्र । उदन "भावे ल्युट्" । ऊपर फेंकना.

उदधि, (पु०) उदकानि धीयन्तेऽस्मिन् । उदक-उदन आदेश उदन्-धा-कि-उदादेश । जहां पानी रक्खे जाते हैं । समुद्र । घट । घड़ा.

उदन्त, (पु०) उदन्तेऽस्मिन् [illegible] । [illegible] होताहै । [illegible] । वृत्तान्त । खबर । [illegible]

उदन्या, (स्त्री०) [illegible] उदक इच्छति क्यच् । उदन् [illegible] । [illegible] । पिपासा । प्यास.

उदन्वत्, (पु०) उदकानि सन्ति अस्य अतिशायने [illegible] । समुद्र

उदपान, (पु० न०) उदक पीयतेऽस्मिन् । उद्+पा+ल्युट्-उदादेश । जहां पानी पीते हैं । कुएं के पास का कुंड [illegible] । कूप । कुंवा । [illegible]

उदय, उद्+इ+अच् । पूर्वका पर्वत । उठना । [illegible] । [illegible] । [illegible]

उदयन, (पु०) उद्+इ+ल्युट् । [illegible] "[illegible] ल्युट्" उदय । [illegible]

उदर, (न०) उद्+ऋ+अप् । जठर । पेट । नाभि और स्तनोंका बीच । "आधारे अप्" युद्ध । लडाई । "उद्+ऋ+अप्-उदो दलोपश्च" पेटका रोग.

उदरम्भरि, (त्रि०) उदरं बिभर्ति । भृ+णि+मुमच । पांच यज्ञ किये बिन अपना पेटही भरनेहारा । क्षुधित । पेटू.

उदरावर्त, (पु०) उदरे आवर्त इव गम्भीरत्वात् । गहरी होनेसे पेटपर मानो पानीका भवर (चक्र) है । नाभि । नाफ । धुन्नी.

उदरिणी, (स्त्री०) उदरे गर्भोऽस्त्यस्याः इनि । जिसके पेटमें गर्भ हो । गर्भवती । गर्भवाली । अन्तर्वत्नी । हमलवाली.

उदर्क, (पु०) उद्+अर्क-अर्थे वा घञ् । उत्तरकालमें होनेवाले फलवाला शुभ वा अशुभ कर्म । नतीजा । परिणाम । फल.

उदर्चिस, (पु०) उद् ऊर्ध्वं अर्चिः रश्मिः अस्य । ऊंची लाटवाला । ऊंची शिखावाली आग । अधिक कान्ति होनेसे कामदेव । ऊर्ध्वरेता । वीर्यका ऊपर जाना होनेसे शिवजी । ऊंची लाट.

उदवसित, (न०) उद्+अव+सि+क्त । गृह । घर

उदात्त, (पु०) उ+आ+दा+क्त । ऊंचे स्वरसे उचारण कियागया वर्ण (अक्षर) । मनोहर । बडा । दाता (त्रि०) अलङ्कारभेद । ऊंची आवाज । ऊंचा । अच्छा । चमकनेवाला बाजाबाजा.

उदान, (पु०) उद्+अन्+घञ् । गलेकी हवा । नाभि । सांपका भेद.

उदार, (त्रि०) उद्+आ+रा+क । दाता । बडा । सीधा । चतुर । गम्भीर । असाधारण (खास) । खुलादिल.

उदासीन, (त्रि०) उद्+आस्+शानच् । रागद्वेषरहित । मध्यस्थ । दो जीतनेवालोंमें किसीकाभी पक्ष (लिहाज) न करनेहारा । उपेक्षक । बेपर्वाह । किसीसे सम्बन्ध न रखनेहारा.

उदाहरण, (न०) उद्+आ+हृ+भावे ल्युट् । किसी बातको एक जगह दिखाकर सम्पूर्ण स्थानपर निश्चय करना । दृष्टान्तसिद्धिके लिये कहागया दृष्टान्त । प्रकृतकी सिद्धिके लिये निदर्शनरूप उपोद्घात । मिसाल.

उदाहृत, (त्रि०) उद्+आ+हृ+क्त । दृष्टान्तरूपसे उपन्यास कियागया । मिसालके तौरपर दिखाया गया । कहागया.

उदित, (त्रि०) उद्+क्त । कहागया । उद्+इण्+क्त । उठा । निकला । बडा.

उदीच्य, (त्रि०) उदीचि उत्तरकालादौ भवः यत् । उत्तरकाल (आनेवाला वक्त) में होनेवाली चीज । शरावती (सरस्वती) नदीके उत्तर पश्चिमका भाग । उत्तरका । बच्छनामी गन्धद्रव्य.

उदीरण, (न०) उद्+ईर्+ल्युट् । कहना ।. बोलना ।

उदीर्ण, (त्रि०) उद्+ऋ+क्त । उदार । गुणोंसे बडा । बढाहुआ.

उद्गूढ, (त्रि०) उद्+गुह्+क्त । छिपाहुआ धारणकिये । उठायेहुए.

उद्गत, (त्रि०) उद्+गम्+क्त । उदयहुआ । ऊंचे गया । निकलाहुआ.

उद्गमनीय, (न०) उद्+गम्+अनीयर् । धो साफ कपडे.

उद्गाढ, (न०) उद्+गाह्+क्त । अतिशय । अत्यन्त । बहुतही.

उद्गातृ, (पु०) उच्चैर्गायति साम । उद्+गै+तृ ... ऊंचे गानेहारा.

उद्गार, (पु०) उद्+गृ+घञ् । उद्गमन, कै । ...

उद्गीथ, (पु०) उद्+गै+थक् । एक सामवेदका ...

उद्गूर्ण, (त्रि०) उद्+गुरी । उद्यम करना+क्त । ...

उद्घ, (पु०) उद्+हन्-नि० । श्रेष्ठ । बहुत ... में पीछे रहता है जैसे "प्रशस्तोद्घ." प्रशस्त ...

उद्घर्षण, (न०) उद्+घृष्+ल्युट् । घिसना । ... गोंडी रगड । खुजली करना.

उद्घाटक, (पु० न०) उद्+घट्+णिच् ण्वुल् । ... निकालनेके लिये एक प्रकारकी कल । अथ ... "करणे ल्युट्" उद्घाटनम् (न०) इसीअर्थमें ... ल्युट्" प्रतिबंधनिरास । रुकावटका दूरकरना ... वस्तुका बंधन खोलना । कुंजी । चाबी

उद्घात, (पु०) उद्+हन्+घञ् । आरम्भ । ... फिसलना । प्राणायामके अङ्ग कुम्भकका भे... मुद्गर । शस्त्र । किसी ग्रन्थका भागविशेष

उद्दान, (न०) उद्+दो+ल्युट् । बांधना । चुल्हा । ...

उद्दामन, (त्रि०) उद्गतं दाम्नः । जो रस्सीसे ... लगयाहो । बंधनसे रहित । खुला । बिनरोक ... स्वरमुक्तार । बदसलन । "उत्कृष्टं श्रेष्ठं ... अस्त्रं यस्य" । जिसका पाशनामी अस्त्र बडा ... वरुण (पु०).

उद्दित, (त्रि०) उत्+दो+क्त । बाधा हुआ.

उद्दिश, चु० उ० । सूचन करना । इशारा करना । जतलाना । विख्यात करना । बतलाना ... ते । दिदेश-दिदिशे । अदिक्षत्- अदिक्षत.

उद्दिष्ट, (त्रि०) उद्+दिश्+क्त । उपदिष्ट । ... गया । चाहागया । छन्दःशास्त्रमें प्रस्तारके वि... साधन (न०).

ोपन, (न०) उद्+दीप्+णिच्+ल्युट् । प्रकाशन । रौशनी । चमकानेहारा । अलङ्कारशास्त्रमें कहेगये रस आदिको चमकानेहारे चन्द्रमा आदि विभाव । भड़काना.

ेश, (पु०) उद्+दिश्+घञ् । अनुसन्धान । ढूंडना । तलाश करना । योजना । अभिलाष । इच्छा । चाह । निशान । किये नामपर संक्षेप वस्तुका नाम लेना.

ाव, (पु०) उद्+द्रु+घञ् । पलायन । भागना । दौड़ना.

्योत, (पु०) उद्+द्युत्+घञ् । प्रकाश । रौशनी । धूप । चमक.

्धत, (पु०) उद्+हन्+क्त । राजमल्ल । राजाओंका पहिलवान । (त्रि०) बोलनेमें बड़ा चपल । बिनाविचारे बोलनेवाला । अविनीत । न सीखाहुआ । बहती । अहंकारी । मगरूर । ऊपरको हटायेहुये । हटाहुआ । बड़ा सख्त बोलनेवाला.

्धरण, (न०) उद्+हृ+भावे ल्युट् । छुटकारा । कर्जउतारना । उखाड़ना "कर्मणि ल्युट्" । वमन कियागया अन्न आदि.

्धर्ष, (न०पु०) उद्+हृष्+णिच्+घञ् । उत्साह । खुशी (विवाह आदि) । त्योहार । बड़ीखुशी (विशेषकरके धर्मसम्बन्धी) घरदोत्सवादि.

्धर्षण, (न०) उद्+हृष्+णिच्+ल्युट् । रोमाञ्च । शरीरके रोमका खड़ा होना

्धव, (पु०) उद्+हु+अप् । यज्ञका अग्नि । कृष्णदेवका पियारा यादवविशेष (यह कृष्णजीका बड़ाभक्त हुआहै) । उत्सव.

्धार, (पु०) उद्ध्रियते । उद्+हृ+कर्मणि घञ् । जो उठाया जाताहै । जिसे शोधन करना पड़ताहै । ऋण । कर्ज । "भावे घञ्" । मुक्ति । छुटकारा । बचाना । बाहिर निकालना । सम्पदा.

्धुर, (त्रि०) उद्गता धूः अस्मात् । भार निकल गया है जिससे । बोझेसे स्वतन्त्र हुआ । बेरोक होगया । स्वतन्त्र

्धूत, (त्रि०) उद्+धू+क्त । उत्क्षिप्त । उठायागया । फेंकागया.

्धूनन, (न०) उद्+धू+णिच्+ल्युट् । उत्क्षेपण । ऊपर फेंकना । उछालना

्धृत, (त्रि०) उद्+हृ-ध वा क्त । उठायागया । उछालागया । छुड़ायागया । जुदा कियागया । नाश कियागया । खानेसे छोड़ागया । रक्षा कियागया.

उद्बन्धन, (न०) उद्+बन्ध्+ल्युट् । गलेमें रस्सी लगाकर अपनेको बांधना । पाशबंधन । फांसीलगाना । अपनेको लटकादेना.

उद्बुद्ध, (त्रि०) उद्+बुध्+क्त । विकसित । खिलाहुआ । जागाहुआ । आनीहुई वस्तुके सम्बन्धी ज्ञानसे जागाहुआ वस्तुका संस्कार । जैसे हाथीको देखकर अनुभव कियेहुए हस्तिपक (महावत) का खयाल होजाता (ये न्यायादि मतमें स्वीकार कियागयाहै).

उद्बृंहण, (न०) उद्+बृंह्+अन । वृद्धि । बढ़ना । उन्नति । तरक्की.

उद्बोध, (पु०) उद्+बुध्+घञ् । थोड़ी समझ । पहिचान । याद्दास्त.

उद्भट, (पु०) उद्+भट्+अच् । कच्छु । छज (चावल आदिके छांटनेका कामदेताहै) । अच्छे आशयवाला । महाशय । प्रवर । बहुतअच्छा । ग्रन्थसे बाहिरका श्लोक आदि । कुटकल । सूर्य । प्रसिद्ध । मशहूर.

उद्भव, (पु०) उद्+भू+अप् । उत्पत्ति । जन्म । पैदाइश । निकलना.

उद्भिज्ज, (त्रि०) उद्+भिनत्ति-क्विप्-उद्भित् तथा सन् जायते-जन्+ड । पृथिवी फाड़कर उत्पन्नहुआ वृक्ष । झाड़ी आदि । भाजी । नया तात । सब स्थावर.

उद्भिद्, (त्रि०) भूमिं उद्भिनत्ति-उद्+भिद्+ क्विप् । वृक्ष, तृण, झाड़ी, बाली और लतारूप पाँच प्रकारका स्थावर । यह (पु०).

उद्भूत, (त्रि०) उद्+भू+क्त । उत्पन्न । प्रगटहुआ । न्यायमतमें प्रत्यक्ष योग्य । जिसे आंखसे देख सकें.

उद्भेद, (पु०) उद्भिद्यतेऽत्र अत्र घञ् । जिससे शरीर ऊपरको उठताहै । रोमाञ्च । शरीरपर रोमका खड़ा होना । जन्म । पैदाइश । "भावे घञ्" फुरना.

उद्भ्रम, (पु०) उद्भ्राम्यत्यनेन । उद्+भ्रम्+घञ्-अवृद्धिः । जिससे चित्त बहुत घूमताहै । उद्वेग । व्याकुलता । घबराहट । सन्देहहोना । भूल । फिकर । घूमना.

उद्यत, (त्रि०) उद्+यम्+क्त । तयारहुआ । ऊंचेकियागया । ग्रन्थका अध्याय.

उद्यम, (पु०) उद्+यम्+घञ्-अवृद्धिः । उद्योग । हिम्मत । दिलेरी । परिश्रम । मिहनत । कोशिश । तयारी.

उद्यान, (न०) उद्+या+आधारे ल्युट् । जाना सैरकरना । बाग । शौक । आक्रीडन । विलासकरनेका बाग । इरादा । आशय.

उद्यावः, (पु०) उद्+यु+घञ् । मिलाना । इकट्ठा करना.

उद्यासः, (पु०) उद्+यस्+घञ् । प्रयत्न । कोशिश. Ved.

उद्योग, (पु०) उद्+युज्+घञ् । यत्न । चेष्टा । उद्यम । उत्साह । कोशिश.

उद्रिक्त, (त्रि०) उद्+रिच्+क्त । अतिशयित । ज़ियादा । अधिक । बढ़ाहुआ.

उद्रिच्, रुधा० स० प्रायः कर्मवाच्यमें प्रयुक्त होता है। अतिक्रमण करना। लांघना। (पंचमीके साथ आता है) "ममैवोद्रिच्यते तव जन्मनः" रिणक्ति। रिरेच। अरिचत्। रिक्तः.

उद्रेक, (पु०) उद्+रिच्+घञ्। वृद्धिः। बढना। उपक्रम। प्रारम्भ। नीमका पेड.

उद्वर्तन, (न०) उद्वर्त्यतेऽनेन। उद्+वृत्+णिच्+ल्युट्। जिससे शरीर अच्छा बनायाजाय। शरीरके साफ करनेका द्रव्यआदि। "भावे ल्युट्" विलेपन। चन्दन लगाना। घसना। उछलना.

उद्वर्तन, (न०) उद्+वृत्+अन। ऊपर जाना। उदय होना। बाहिर निकलना। सम्पत्ति। उन्नति। इधर उधर लौटना। चन्दन आदि लगाना। शरीरको सुगन्धित द्रव्योंसे मलना। कदाचार.

उद्वाहु, (त्रि०) उद्धतौ बाहुयस्य। जिसकी भुजा ऊंचे हो। भुजा ऊपरको उठाये.

उद्वह, (पु०) उद्वहति ऊर्ध्वं नयति पितॄन्। वह्+अच्। जो पितरोंको ऊपर (स्वर्गादि लोकमें) लेजाताहै। पुत्र। ऊर्ध्वं वहति+अच् "प्रवहवायुके ऊपरकी हवा".

उद्वान्त, (पु०) उद्गतं वान्तं अन्तर्जलं यस्मात्। प्रा० स०। जिससे भीतरका जल बाहिर निकलाहै। मदरहित हाथी। उद्+वम्+क्त। उद्गीर्ण। बाहिर निकाला। कैकीया.

उद्वासन, उद्+वु०वस्+ल्युट्। मारण। मारना। "उद्+वस्+णिच्+ल्युट्"। विसर्जन। विदाकरवाना। छोडना.

उद्वाह, (पु०) उद्+वह्+घञ्। विवाह। शादी। परिणय.

उद्विग्न, (त्रि०) उद्+विज्+क्त। उद्वेगयुक्त। घबराया हुआ। दुःख दूर करनेकी शक्ति न होनेसे घबराये हुए दिल। खिन्न हुआ.

उद्वीक्ष्, भ्वा० आ०। देखना। विचारना। ख्याल करना। पहिचानना। ईक्षते। ईक्षाञ्चक्रे। ऐक्षिष्ट। ईक्षितः.

उद्वीक्षण, (न०) उद्+वि+ईक्ष्+अन। ऊपर देखना। दर्शन। नेत्र.

उद्वीज्, चु० प०। पंखा करना। किसी पर या सामने फूंकना। उद्वीजयति.

उद्वृत्, भ्वा० आ०। ऊपरको जाना। बढना। फूट निकलना। वर्तते। अवर्तिष्ट.

उद्वृत्त, (त्रि०) उद्गतो वृत्तात्। गति०। अच्छी चालसे उलट गया। दुर्वृत्त। दुराचारी। जिसका चालचलन अच्छा नहो। "उद्+वृत्+क्त। उच्छित। फैलागया (ऊपरको).

उद्वृत, (त्रि०) उद्+वृ+क्त। उघरा। उठा हुआ जल, दूध, मेघआदि। बढहुआ। फूलगया। विरुद्ध होगया। एकत्र। बलात्। अभिमानी। उद्धत। दुराचारी। क्रुद्ध.

उद्वेग, (पु०) उद्+विज्+घञ्। विषय भ्रमण ... विरह (विछोडा) से दुःख उपजना। डर। "... वेगोत्थानात्" निश्चल। जो हिले नहीं। जल्दी ...

उद्वेजन, (त्रि०) उद्+विज्+अन। मनमें ... व्याकुल करनेवाला। किसीके चित्तमें दुःख ... ना क्षोभ। उत्कण्ठा०। दु मदैना। शोक.

उद्वेजयितृ, (त्रि०) उद्+विज्+तृच्। भयानक। ...

उद्वेजि(णि)न्-अक, (त्रि०) उद् विज्+णिच्+वुल्। ... घबरानेवाला। नाश करनेवाला। दुःख पहुंचानेवा... खिन्न। नाखुश। बेआराम.

उद्वेदि, (त्रि०) उन्नता वेदिः यत्र। ऊंचे सिंहासन...

उद्वेल, (त्रि०) उद्गतो वेलां। किनारेसे बाहिर ... मर्यादा तोडनेहारा.

उद्वेल्ल, भ्वा० प०। कांपना। लहरना। इधर उधर ... वेल्लति.

उद्वेल्लित, (त्रि०) उद्+वेल्ल्+क्त। कांप गया। लगा।-तं (न०) कांपना। कंप.

उद्वेष्टन, (न०) उद्+वेष्ट्+ल्युट्। हाथ और ... बन्धन। जुराबां। दस्तान। पगडी। "उद्... नात्" (त्रि०) खुलाहुआ (बंधनसे).

उन्द्, गीला करना-रुधा० पर० अक० उनत्ति ... औन्दीत्.

उन्दुरु, (पु०) उन्द्+उरु। मूषिक। चूहा। "उन्दुर" उन्दुरु "तथा".

उन्न, (त्रि०) उन्द्+क्त। आर्द्र। गीला। ... दयावाला.

उन्नत, (त्रि०) उद्+नम्+क्त। उच्च। ऊंचा। महा...

उन्नति, (स्त्री०) उद्+नम्+क्तिन्। वृद्धि। ... उदय। गरुडकी स्त्री.

उन्नद्ध, (त्रि०) उद्+नह्+क्त। अच्छीतरहसे बं... बंधाहुआ.

उन्नमित, (त्रि०) उद्+नम्+णिच्+क्त। उठायागया। ... कियागया.

उन्नयन, (न०) उद्+नी+ल्युट्। विमर्श। दलील। ...

उन्नयन, (त्रि०) ऊपरको उठायेहुए नेत्रोंवाला।-नं ... उठाना। ऊंचे करना। जल सींचना। रस नि... संवाद करना। अनुमान करना.

उन्नाभ, (न०) उन्नता नाभा यस्य। बाहरनिक... नाभवाला.

उन्निद्र, (त्रि०) उद्गता निद्रा सुप्ता यस्य। जिसकी ... जगा रहा। खिलहुआ। जागाहुआ.

उन्नी, भ्वा० प०। ऊपरको लेजाना। हटाना। नि... तर्ककरना। नयति। अनैषीत्। आस्म०। उन्नय...

उन्नेतृ, (त्रि०) उद्+नी+तृच् । उठानेवाला । अनुमान करनेवाला.

उन्मज्जक, (पु०) उद्+मस्ज+ण्वुल् । गलेतक पानीमें खड़े होकर तपस्या करनेहारा तपस्वी । पानीपर तैरनेहारा (त्रि०)

उन्मत्त, (पु०) उद्+मद्-करणे क्त । धतूरा । मुचकुन्द वृक्ष । "कर्तरि क्त" उन्मादवाला । पागल । मद्के आवेशवाला (त्रि०)

उन्मद, (त्रि०) उद्गतो मदो हर्षोऽस्य । जिसे मद चढ़ गया । पागल । "करणे अच्" मादक द्रव्य । नशेकी चीज.

उन्मनस्, (त्रि०) उद्भ्रान्तं मनोऽस्य । उचाटे हुए दिलवाला । जिसका मन और जगह गया हो । जिसका दिल कायम नहिं.

उन्मनस्-नस्क, (त्रि०) उत्क्रान्तं मनः अस्य । व्याकुल मनवाला । दुःखी । बेआराम । उचाटे हुए मनवाला.

उन्मथ, (पु०) उद्+मन्थ्+घञ । वध । मारना । कतल करना.

उन्माथ, (पु०) उन्मथ्यतेऽनेन । उद्+मथ्+करणे घञ् । मांस देकर मृग आदिके फंसानेके लिये लगाया गया कूटयन्त्र (फंदा) । "भावे घञ्" । मारना । तबाह करना । लाचार करना.

उन्माद, (पु०) उद्+मद्+घञ । चित्तविभ्रम । दिलका बहुत घूमना । भूतादि प्रवेश करनेसे चित्तका कायम न रहना । विप्रलम्भोंकी कामदेवसे बीमारी एक प्रकारकी दशा । किसी शरीरके रोगसे बुद्धिका स्थिर न रहना । पागलपना । पागल.

उन्मादन, (पु०) उद्+मद्+णिच्+ल्युट् । उन्मत्त करनेहारा कामदेवका एक बाण.

उन्मान, (न०) उद्+मा+करणे ल्युट् । परिमाणका साधन तोल माप आदि । मापना.

उन्मार्ग, (त्रि०) उत्क्रान्तः मार्गम् । मार्गसे छोड़ गया । कुत्सित मार्गपर चलनेवाला ।-र्ग (पु०) कुत्सितमार्ग । दुराचार ।-र्गं (अव्य०) कुत्सित मार्गसे.

उन्मिषित, (त्रि०) उद्+मिष्+क्त । प्रफुल्ल । फूलाहुआ । खिल हुआ । थोड़ासा चमकाहुआ.

उन्मीलन, (न०) उद्+मील्+ल्युट् । उन्मेष । नेत्रका खिलना । खिलना.

उन्मुख, (त्रि०) उद्+ऊर्ध्वं मुखं अस्य । जिसका मुख ऊंचेको । जो ऊंचे देखता है । उठाहुआ । किसी कामके करनेको तयार । [illegible]

उन्मुद्र, (त्रि०) उद्गता मुद्रा बन्धनं । [illegible] न रहा । खुलमुद्र । खिलहुआ

उन्मूलन, (न०) उन्मूल्+णिच्+ल्युट् । उत्पाटन । उखाड़ना । जड़से निकालना.

उन्मेष, (पु०) उद्+मिष्+घञ् । नेत्र आदिका खोलना । थोड़ा प्रकाश.

उप, (अव्य०) समीपता । पासहोना । अधिक । मरण । सादृश्य । आरम्भ.

उपकण्ठ, (त्रि०) उपगत कण्ठं । अत्या० स० । कण्ठके पास पहुंचा । निकट गलेकेपास । गांवका सीमा । घोड़ोंकी उछलनेकी चाल.

उपकरण, (न०) उपक्रियतेऽनेन । उप+कृ+ल्युट् । जिसने उपकार कियाजाता है । प्रधान साधन । जैसे भोजनादिमें व्यञ्जन (शाक-भाजी) । सोनेका साधन पलंग आदि । नहानेका साधन उबटन आदि । युद्धमें धनुष आदि । राजा आदिके लिये छत्र, चँवर आदि साधन.

उपकार, (पु०) उप+कृ+घञ् । उपकृति । मदद । फैलाये हुए पुष्पआदि । अनुकम्पा । नौकरी । खिदमत.

उपकारक, (त्रि०) उप+कृ+ण्वुल् । उपकार करनेहारा "क्लीबे स्यादि अथ द्वयो उपकारिका" । राजाका घर । कपड़ेका बनाहुआ राजाका घर । खेमा । तम्बू । पटमण्डप.

उपकार्य, (त्रि०) उप+कृ+ण्यत् । उपकार योग्य । उपकारके लायक राजगृह । राजाका घर (कपड़ेका बनाहुआ) । पटमण्डप (स्त्री०).

उपकूप, (पु०) उपगत. कूपं-अत्या० स० । कूएके पास गया । कूएके पासका खोदा हुआ जलाशय (जलका हौज).

उपक्रम, उप+क्रम्+घञ् । उपक्रमणकर आरम्भ करना । पहिला । आरम्भ । इलाज । दवा । [illegible] । बल.

उपक्रोश, (पु०) उप+क्रुश्+घञ् । निन्दा । कोसके निकट । [illegible] (त्रि०) [illegible] । [illegible].

उपक्रोष्टृ, (पु०) उप+क्रुश्+तृच् । गधा । [illegible] । निन्दक । निन्दाकरनेहारा (त्रि०) [illegible].

उपक्ष(रा)यं, (न०) उप+क्षर् [illegible] । [illegible] । [illegible].

उपक्षिप्, पु० व० । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

उपक्षीण,-(त्रि०) उप+क्षि+क्त । [illegible] । [illegible]

उपक्षेप, (त्रि०) उप+क्षिप्+घञ् । [illegible] । [illegible]

उपक्षेपण, (पु०) उप+क्षिप्+ल्युट् । [illegible]

[illegible] । [illegible]

उपगत, (त्रि०) उप+गम्+क्त । स्वीकृत । मानागया । पहुंचा । जानागया.

उपगम, (पु०) उप+गम्+घञ्-अवृद्धिः । पासजाना । अंगीकार । जाना.

उपगीति, (स्त्री०) उप+गै+क्तिन् । आर्याछन्दका भेद । गाना.

उपगूह्य, (त्रि०) उप+गुह्+ण्यत् । आलिङ्गनकरनेयोग्य । मिलनेलायक "भावे ण्यत्" मिलना.

उपगूहन, (न०) उप+गुह्+ल्युट् । आलिङ्गन । मिलना । ग्रहण । पकड़ना.

उपग्रह, (पु०) उप+ग्रह्+अप् । कारावन्धन । जेलखाना । जेलमें डालना । मिहर्बानहोना । "कर्मणि घञ्" केतु । धूमकेतु आदि ग्रह.

उपग्राह्य, (न०) उप+ग्रह्+ण्यत् । उपढौकन । भेंट । नजराना मिहर्बानीके लायक.

उपघात, (पु०) उप+हन्+घञ् । अपकार । नाश । रोग । चोट.

उपघ्नः, (पु०) उप+हन्+क । संनिकृष्ट । आश्रय । पासका आसरा स्थान । आश्रय । सहारा । स्थिति । रक्षा । जो किसीपर वा किसीसे हो.

उपचक्रः, (पु०) उपगतः चक्रं=चक्रवाकं । एक प्रकारका चकवा पक्षी.

उपचक्षुस्, (न०) उपगतं चक्षुः इव । नेत्रके समान लगा हुआ । ऐनक.

उपचय, (पु०) उप+चि+अच् । वृद्धि । बढ़ना । उन्नति । ज्योतिषमें लग्नसे ३ । ६ । १० वां और ११ वां स्थान.

उपचरित, (त्रि०) उप+चर्+क्त । उपासित । सेवा कियागया । बरतागया.

उपचर्म-र्मं, (अव्य.) चर्म चमड़े पर वा चमड़ेके निकट.

उपचर्या, (स्त्री०) उप+चर्+क्यप् । चिकित्सा । हिकमत । सेवा.

उपचाय्य, (पु०) उपचीयते संस्क्रियतेऽसौ नि० । जिसका संस्कार कियाजाताहै । यज्ञमें संस्कारकीगई आग.

उपचार, (पु०) उप+चर्+घञ् । चिकित्सा । हिकमत । सेवा । व्यवहार । विधान । मुहावरेमें दूसरेको शुद्ध करना.

उपचित, (त्रि०) उप+चि+क्त । इकट्ठा । बढ़ाहुआ । बढ़ाहुआ । इकट्ठा किया हुआ । तयार कियागया.

उपच्छन्द्, चुरा० प० । मनाहुकी करना । प्रेरणा करना । प्रार्थना करना । देना । छन्दयति । अभिच्छन्दयत्.

उपजरम्, (अव्य०) बुढ़ापेके सम्मुख । बुढ़ापेमें.

उपजल्प्, भ्वा० प० । बोलना । बकवाद करना (बक-बक करना । उपदेश करना.

उपजाति, (स्त्री०) वर्णवृत्तछन्दोंमें भेद । एकप्रकारका छन्द.

उपजाप, (पु०) उप+जप्+घञ् । भेद । फाड़ । फुसलाना । धीरे धीरे जप करना.

उपजापक, (त्रि०) उप+जप्+ण्वुल् । ... वाला । सूचक । विरोध कराने वाला । बकवादी...

उपजीविका, (स्त्री०) उपजीवयति । उ... टाप् । रोजी । जीनेका साधन । वृत्ति । जीवि...

उपजीविन्, (त्रि०) उप+जीव+णिनि । ... आसरेमें पड़ाहुआ नौकर.

उपजीव्य, (त्रि०) उप+जीव्+ण्यत् । आश्र...

उपजुष्ट, (त्रि०) उप+जुष्+क्त । प्रसन्न । पहुंचा... लाया गया वा स्वीकार किया गया । आश्रय... सेवा किया गया । प्यार किया गया.

उपज्ञा, (स्त्री०) उप+ज्ञा+कर्मणि अङ् । ... बिना आचार्य समझलेना । "भावे घञ्" । ...

उपढौक्, णिजन्त -भेंटा करना । सादर भेंट ... ढौकयति.

उपढौकन, (न०) उप+ढौक्+कर्मणि ल्यु... उपहार । उपायन.

उपतापः, (पु०) उप+तप्+घञ् । उष्णता । ... विपत्ति । व्यथा । शोक.

उपत्यका, (स्त्री०) उप+त्यकन् । पर्वतके नि...

उपदंश, (पु०) उप+दन्श्+घञ् । मदपान... शराब पीनेके साथ अच्छा लगनेवाली सर्... चटनी । उपस्थरोगभेद । एक प्रकारकी डंकमा... लिङ्गकी बीमारी । दंशन । डंकलगाना । डं...

उपदर्शक, (पु०) उप+दृश्+णिच्+ण्वुल् । ... दरवान । दिखलानेहारा (त्रि०).

उपदर्शक, (त्रि०) उप+दृश्+ण्वुल् । दिखाने... (पु०) मार्गदर्शक । द्वारपाल । साक्षी.

उपदा, (स्त्री०) उप+दा । अङ् । उपहार... घूंस । भेंट.

उपदृश्, भ्वा० प० । देखना । साक्षात् करना... कर्मवाच्य । दिखाई देना णिचि । दिखाना । ... जतलाना । परिचित कराना । किसी व्यक्तिकी... पर्म उठना । वर्णन करना । पश्यति । द... दीन । अदर्शत् । दर्शयति । दृश्यते । अदर्शि...

उपदेश, (पु०) उप+दिश्+घञ् । गुरुजनोंके... पीछेहुई बातका कहना । भलाईकी बात बत... लाना । प्रश्न करनेहारा वचन.

उपदेष्टृ, (त्रि०) उप+दिश्+तृच् । शिक्षा देनेवा... पु०) शिक्षक । गुरु । विशेषतः आध्यात्मि... आचार्य.

उपद्रव, (पु०) उप+द्रु+अप् । उत्पात । ... उपद्रव । उस वा अनुसार गुप्त बनेर... (मुसाफर) आदि । गर्दी.

[illegible]दु, क्रिया० प० । पास ही भागना । किसीके सामने भागना । आक्रमण करना । उपद्रवति । द्रुताव । अदुद्रुवत् । द्रुत.

[illegible]द्रुत, (त्रि०) उप+द्रु+क्त । व्याकुल । घबरायाहुआ । मुसीबतमें पड़ाहुआ.

[illegible]धा, (स्त्री०) उप+धा+अङ् । धर्म अर्थादिकी रचनासे मन्त्रियोंकी परीक्षा करना । छल । व्याकरणमें पिछले अक्षरका पहिला.

[illegible]धा, जु० उभ० । स्थापन करना । रखना । किसीमें या किसीके नीचे रखना । दधाति । धत्ते । दधौ । दधे । अधात् । अधित.

[illegible]धातु, (पु०) उपमितः धातुभिः । सोने आदि प्रधान धातुओंके सदृश गौण द्रव्य (स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, तुत्थ, कांस्य, रीति, सिन्दूर, शिलाजतु) । शरीरकी गौण धातु (रससे दुग्ध, लोहूसे रज, मांससे चर्बी, मेदसे पसीना, अस्थिसे दांत, मज्जासे बाल, वीर्यसे ओजस्).

[illegible]धान, (न०) उपधीयते शिरोऽत्र । जहां सिर रक्खा जाय । शिरोधान । सिहाना । तकिया । प्रणय । विशेष । [illegible]भित । एक प्रकारका व्रत.

[illegible]धि, (पु०) उप+धा+कि । किसी वस्तुको औरही प्रकारसे प्रकाश करना । कपट । छल । रथका पहिया.

[illegible]धूपित, (त्रि०) उप+धूप्+क्त । आसन्नमरण । जिसकी मौत नजदीक हो । तपायाहुआ । धुएंसे घिराहुआ.

[illegible]नमा, क्रिया० प० । झुकना । चलना । धमति । दध्मौ । अधमीत्.

[illegible]नत, (त्रि०) उप+नम्+क्त । उपस्थित । इकट्ठा किया गया । पहुंचा । आया.

[illegible]नम्, क्रिया० प० । आना । पहुंचना । किसीकी ओर झुकना.

[illegible]नय, (पु०) उप+नी+अच् । उपनयन । एक संस्कार । जिसके लिये गुरुके पास पहुंचना । आचमनसे जो जो धूमधाम है [illegible] यह संस्कार भी है । [illegible] (पवित्र) की डोरी (सूत्र) है, इसलिये [illegible] अथवा एक अक्षर ([illegible]) । [illegible] द्वारा [illegible] देद.

[illegible]नयन, (न०) उप+नी+ल्युट् । [illegible] एक संस्कार । [illegible] । [illegible]

[illegible]नाह, (पु०) उप+नह्+घञ् । [illegible] बांधनेके लिये [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

[illegible]निधि, (पु०) उप+नि+धा+कि । [illegible] । [illegible] । [illegible] रक्खी हुई चीज

उपनिषद्, (स्त्री०) [illegible] । उप+नि+सद्+क्विप् । जिसके द्वारा [illegible] हो जाता है । ब्रह्मविद्या । ब्रह्मविद्याको प्रतिपादन करनेवाला वेदका [illegible] । वेदान्त । [illegible] । [illegible] । धर्म [illegible] । [illegible] पहुंचना । [illegible] विद्या.

उपनी, क्रिया० प० । पास लाना । पहुंचाना । [illegible] । [illegible] । [illegible] । अनिष्ट

उपनेत्र, (न०) उपगतं नेत्रम् । नेत्रके पास [illegible] । आंखके पास रखा जाय । [illegible] नेत्रका उपकार करनेवाला द्रव्य । चश्मा । ऐनक

उपन्यास, (पु०) उप+नि+अस्+घञ् । [illegible] । वचनस्थापन । पास रखना । [illegible] । [illegible] । [illegible] । कहानी । भूमिका

उपपति, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

उपपत्ति, (स्त्री०) उप+पद्+क्तिन् । युक्ति । [illegible] । सिद्धि । प्राप्ति । [illegible]

उपपद, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] बोला गया पद । [illegible] । [illegible] शब्द । [illegible] । [illegible] । [illegible] । "[illegible]" [illegible] और "[illegible]" [illegible] है । यह शब्द [illegible]

उपपन्न, (त्रि०) उप+पद्+क्त । युक्तियुक्त । [illegible] । [illegible]

उपपातक, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

उपपादक, (न०) उप+पद्+णिच्+ण्वुल् । [illegible] । [illegible] । [illegible]

उपपुर, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

उपपुराण, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

उपप्लव, (पु०) उप+प्लु+अप् । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] । [illegible]

उपप्लु, भ्वा॰ आ॰ । तैरना । छोट पोट होना पानीका । कष्ट उठाना । प्लवते । प्लुते । अप्लोष्ट.

उपप्लुत, (त्रि॰) उप+प्लु+क्त । पीडित । मुसीबतमें पड़ाहुआ । पानीमें डूबगया । उपद्रुत.

उपबृंहित, (त्रि॰) उप+बृंह्+क्त । वर्धित । बढ़ाहुआ.

उपभोग, (पु॰) उप+भुज्+घञ् । भोजनादिसे उत्पन्न हुआ सुखका अनुभव । भोग । सुख । खाना । स्वादलेना.

उपमर्द, (पु॰) उप+मृद्+घञ् । आलोडन । रिड़कना । हिंसन । मारना । पहिले धर्मको छिपाकर दूसरेको कायम करना । मलना.

उपमा, (स्त्री॰) उप+मा+अङ् । सादृश्य । समानता । बराबरी । अर्थालङ्कारभेद.

उपमातृ, (स्त्री॰) उपमिता माता । माताके समान दूसरी माता । सौतेली माता । धाय । दाई । मासी—मौसी—बुआ—चाची मावजाई आदि सभी मातृतुल्य हैं.

उपमान, (न॰) उपमीयतेऽनेन । उप+मा+ल्युट् । जिससे समानता दिखलाई जाय । जैसे "चांदके समान मुख" यहां चन्द्र उपमान है क्योंकि इसीसे मुखकी उपमा दीगई । "मर्दे स्पृष्ट" [illegible] । समान होनेकी समझ.

उपमिति, (स्त्री॰) उप+मि+क्तिन् । सादृश्यज्ञान । उपमा.

उपमेय, (त्रि॰) उपमीयते यत् उप+मि+यत् । सादृश्यका आधार । जैसे "चन्द्रके समान मुख" यहां मुख उपमेय है.

उपयन्तृ, (पु॰) उप+यम्+तृच् । व्याहे विवाह करनेवाला । स्वामी । पति.

उपयम, भ्वा॰ उ॰ । विवाह करना । स्त्री बनाना इस अर्थमें आत्मनेपदी है । उपयच्छते । उपयच्छते । यच्छत । [illegible] । [illegible] । [illegible].

उपयम, (पु॰) उप+यम+घञ्-अप्‌विः । विवाह । शादी । "उपयम".

उपयाच्, भ्वा॰ उ॰ । मांगना । मगना । प्रार्थना करना । [illegible] । [illegible].

उपयाचक, (त्रि॰) प्रार्थना करनेवाला । भिक्षुक । मांगनेवाला.

उपयाचितक, (न॰) उप+याच्+क्त-स्वार्थे कन् । प्रार्थित । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

उपयुक्त, (त्रि॰) उप+युज्+क्त । [illegible] । ठीक २ [illegible] । [illegible].

उपयुज्, रुधा॰ आ॰ । काममें लाना । उपयोग करना । नियोग करना । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । युक्त.

उपयोग, (पु॰) उप+युज्+घञ् । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

उपयोगिता, (स्त्री॰) उपयोगिनो भावः तल् । [illegible] होना । आवश्यकहोना । मौका । जरूरत । [illegible] । मतलब.

उपयोगिन्, (त्रि॰) उप+युज्+घिनुण् । [illegible] अनुकूल । योग्य काममें लगाना । [illegible] कामदेनेलायक । फायदामन्द । ठीक.

उपरक्त, (पु॰) उप+रञ्ज्+क्त । [illegible] राहुसे पकड़ाहुआ चन्द्रमा और सूर्य । [illegible]

उपरञ्ज्, दि॰ उ॰ । कर्मवाच्ये । लाल होना । [illegible] उपरज्यते भगवान् चन्द्रः । [illegible] । रंगना । [illegible]

उपरत, (त्रि॰) उप+रम्+क्त । विरत । [illegible] मारागया । मृत । मराहुआ । सबकामनाओंसे [illegible]

उपरति, (स्त्री॰) उप+रम्+क्तिन् । किसी वस्तुकी प्राप्ति होनेपरभी उदासीन होना इन्द्रियोंको हटाना । जीवन, [illegible], और [illegible] [illegible] होनेपरभी अत्यन्त इच्छा न करना [illegible] पुरुषका अर्थ सिद्ध नहि होसक्ता " ऐसी बुद्धि कहते हैं.

उपरत्न, (न॰) उपमितं रत्नेन । रत्नके सदृश [illegible] गया । गौण रत्न । छोटा रत्न । काच । [illegible]

उपरम्, भ्वा॰ प॰ । कभी आत्मनेपदी भी करना । हटजाना । समाप्त करना.

उपराग, (पु॰) उप+रञ्ज्+घञ् । सूर्य [illegible] ग्रहण । राहु । उपद्रव । निन्दा । व्यसन । [illegible]

उपराम, (पु॰) उप+रम्+घञ् । निवृत्ति । [illegible] भोगोंसे वैराग्य । आराम । शान्ति.

उपरि, उपरिष्टात् { अव्य॰ } ऊपर । ऊंचे (इसके [illegible] और षष्ठी विभक्ति [illegible]

उपरूपक, (न॰) उपगतं रूपकं=दृश्यकाव्यं [illegible] मानतासे नाटकके साथ मिलता हुआ [illegible] अठारह नाटिका त्रोटक आदि प्रकारके गौण भेद हैं.

उपरोध, (पु॰) उप+रुध्+घञ् । आनुकूल्यके लिये अनुरोध । अपनी ओर करनेके लिये [illegible] रोकना । इकरार । बढ़ाई । सहायता । [illegible]

उपल, (पु॰) उपलीयते=उपलीयते [illegible] भीत विछायाजाता है । ली+क, [illegible] [illegible] । [illegible]

उपलक्षण, (न॰) [illegible] [illegible] सम्बन्ध । [illegible] रहनेहारे और अपनेसे [illegible] ग्रहण जिससे हो । जैसे " कौओंसे दही [illegible] कौआ यह पद अपने और अपने भिन्न [illegible] बोधक है । अपना और अपनेसे भिन्न [illegible] [illegible] बोध करनेहारा शब्द.

[illegible], (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । "[illegible]".

[illegible], [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । "[illegible]" [illegible].

[illegible], (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । उद्यान । बाग

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible]

[illegible], [illegible] । [illegible] । [illegible] । "[illegible]" इसी अर्थमें

[illegible], (पु०) उप+वद्+घञ् । निन्दा । अपवाद । [illegible]

उपवास, उप+वस्+घञ् । सूर्योदयसे लेकर आठ पहरतक न खाना । अनाहार । भोजन न करना.

उपवाह्य, (पु० स्त्री०) उप+वह्+ण्यत् । राजाकी सवारी हाथी हथिनी । राजाकी पालकी आदि.

उपविश्, तु० प० । बैठजाना । आसन लेना । पास बैठना । प्रवेश करना । सेवा करना । अभ्यास करना । [illegible] । [illegible].

उपवीणयति, नामधातु० प० । वीणाके [illegible] आगे गीत गाना.

उपवीत, (न०) उप+व्ये+क्त । दक्षिण (दहिना) हाथ बाहिर निकालेहुए बाँयें कन्धे [illegible] यज्ञोपवीत (जनेऊ)

उपवीत, (न०) उप+वि+क्त । यज्ञोपवीत धारण करना । हिन्दुओंसे प्रथम तीन वर्णोंसे धारण किया गया यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ

उपवीतिन्, (त्रि०) उपवीतं विद्यतेऽस्य । जिसका यज्ञोपवीत हो । यज्ञोपवीत धारण करनेहारा.

उपवेद, (पु०) उपमितः वेदेन । वेदके समान । आयुर्वेदादि.

उपवेष्टृ, (त्रि०) उप+विश्+तृच् । बैठनेवाला.

[illegible], [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । शान्ति । आराम.

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible]

[illegible], अदा० आ० । पास लेटना । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

उपश्रु, भ्वा० प० । श्रवण करना । सुनना । [illegible] । [illegible] । [illegible].

उपश्रुति, (स्त्री०) उप+श्रु+क्तिन् । अङ्गीकार । [illegible] । [illegible] । [illegible] । प्रश्न पूछना.

उपश्लेष, (पु०) [illegible] एकदेशेन श्लेषः (सम्बन्धः) । एक ओरसे मिलना । आधार और आधेयका एक ओरसे मिलना । जैसे घर और चटाईका उपश्लेष होता है.

उपश्लोकयति, नामधातु० प० । वर्णन करना । श्लोकों द्वारा स्तुति करना । उपश्लोकयिष्यति.

उपसंक्रमण, (न०) उप+सम्+क्रम्+ल्युट् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०).

उपसंग्रह, (पु०) उप+सम्+ग्रह्+अप् । पाँवपर हाथ लगाकर नमस्कार करना । छूना । चरणवन्दना.

उपसंयम, (पु०) उप+सम्+यम्+अप् । उपसंहार । खेंचना । समाप्त करना । बांधना । रोकना । जगतका नाश.

उपसंव्यान, (न०) उपसंव्ययतेऽनेन । व्येञ्+ल्युट् । पहिरनेका कपड़ा । धोती.

उपसंहार, (पु०) उप+सम्+हृ+घञ् । समाप्ति । इकट्ठा करना । खेंचना.

उपसत्ति, (स्त्री०) उप+सद्+क्तिन् । सेवा । मिलना । पास जाना । पूजा

उपसर्ग, (पु०) उप+सृज्+घञ् । रोगका विकार । उपद्रव । शुभाशुभको सूचन करनेहारा महाभूतविकारका उत्पात । व्याकरणमें "प्र परा" आदि जो क्रियाके साथ जुड़ते हैं.

उपसर्गा, (पु०) उप+सृज्+घञ् । व्याधि । बीमारी । विघ्न । हानि । ग्रहण.

उपसर्जन, (न०) उप+सृज्+ल्युट् । अमुख्य । अप्रधान । गौण । विशेषण । समासशास्त्रमें प्रथमान्तनिर्दिष्ट । विपत्ति छोड़ना । प्रतिनिधि । एकही जगहपर काम करनेहारा.

उपसूर्यक, (न०) उपगतं सूर्यं सूर्यमिव चन्द्रं वा । संज्ञायां कन् । चन्द्रमा वा सूर्यके पास मण्डलाकार (गोलाकृति) परिध (घेरा) । सूर्यके पास पहुंचगया.

उपसृ, भ्वा० प० । सम्मुख जाना । पहुंचना । निकट सेवना । सरति । ससार । असार्षीत् । सृत.

उपसृज्, तु० प० । मुख्य बहा देना । देना । मिलना । जुड़ना । किसीके साथ मिलना । उत्पन्न होना । नाश होना । सृजति । ससर्ज । असाक्षीत् । सृष्ट.

उपसृष्ट, (न०) उप+सृज्+क्त । मिलाहुआ । दबाया हुआ । मैथुन । भोग । "प्र" आदि उपसर्गवाला । "प्रभाव" "निकृष्ट" (त्रि०).

उपसेक, (पु०) उप+सिच्+घञ् । सींचकर कोमल करना.

उपस्कर, (पु०) उप+कृ+अप्-सुट् च । व्यञ्जनादिको शुद्ध करनेका साधन । मसाला । घरमें रहनेका साधन । गृहकी वस्तु । साधन । सामग्री । भूषण । निन्दा । कलङ्क । दोष.

उपस्कार, (पु०) उप+कृ+घञ् । परिशिष्ट । कोई वस्तु शेष रह गई । एक बात भूषित करनेके लिये दूसरीका जोड़ देना.

उपस्कृ, तना० उभ० । तयार करना । भूषित करना । सजाना । पकाना । करोति । कुरुते । चकार । चक्रे । अकार्षीत् । अकृत । कृत.

उपस्थ, (त्रि०) उप+स्था+क । निकटवर्ती । पास रहनेवाला । स्थ पु० अंक (गोद) । मध्यभाग । स्थः-स्थं पु न । उपस्थचिन्ह । लिङ्ग वा योनि.

उपस्था, भ्वा० उभ० । निकट ठहरना । अपना साथ देना । पास आना । पहुंचना । सेवा करना । तिष्ठति । उपतिष्ठते । अस्थात् । अस्थित.

उपस्थातृ, (त्रि०) उप+स्था+तृच् । सेवक । नौकर । पहुंचनेवाला । पुरोहितभेद.

उपस्थान, (न०) उप+स्था+ल्युट् । उपेत्य स्थितिः । पहुंचकर ठहरना । निकट होना । नजदीकी । नमस्कार । प्रार्थना । स्तुति । बहुत लोग.

उपस्थित, (त्रि०) उप+स्था+क्त । समीपस्थित । हाजिर । प्राप्त । पहुंचाहुआ । आयाहुआ । इकट्ठा कियाहुआ । [illegible].

उपस्पर्श, (पु०) उप+स्पृश्+घञ् । स्पर्श । छूना । नहाना "उपस्पृशन्ति इन्द्रियाणि यत्र" । जिसमें इन्द्रियोंको छूते हैं । किसी पात्रके जलको लेकर मुख आदिको स्पर्श करना । किसीने आचमन करना । "[illegible]" इति मनुः.

उपस्पृश्, तु० प० । स्पर्श करना । जलसे छूना । आचमन करना.

उपस्पृष्ट, (त्रि०) उप+स्पृश्+क्त । स्पर्श किया । छुआ गया । आचमन कियागया । [illegible].

उपहस्तिका, (स्त्री०) उपगता हस्तं अ...
गुथली । गेंदुक । पान सुपारीआदि रखनेका...

उपहार, (पु०) उप+हृ+घञ् । उपढौकन । ...
"अव्य० सु०" (समीपार्थ) हारके पा...

उपह्वर, (पु०) उप+ह्वृ+अच् । युद्ध । उ...
एकान्त । निकट । नजदीक.

उपहित, (त्रि०) उप+धा+क्त । स्थापन...
रक्खा गया । किसीपर या किसीमें रक्खा...
आपन्न । रक्खा गया.

उपहृ, (भ्वा० प०) लाना । पास लाना...
हरति । जहार । अहार्षीत्.

उपाकरण, (न०) उप+आ+कृ+ल्युट् । य...
नेऊ) डालकर वेदको पढ़ना । सावन महि...
दिन करनेलायक वैधकर्म । संस्कार करके...
मारना । आरम्भ.

उपाकृ, तना० उ० । लाना । पहुंचाना । ...
बुलाना । देना । पाना । किसी विशिष्ट स...

उपांशु, (अव्य०) उप+अनश्+उ । निर्जन...
अप्रकाश । छिपाहुआ । विनाजाने । दूसरे...
तामें मनको लगाकर अपनेही सुनेलायक...
ओठ थोड़ासा हिलें ऐसा जप उपांशु कह...
उपांशुर्देवताके मन्त्रादिका जप करना (...
स्याच्छतगुण." इति मनुः.

उपाख्यान, (न०) उप+आ+ख्या+ल्युट्...
प्राचीन वृत्तान्त कहना । पुराना हाल कह...
"रामोपाख्यानमत्रैव" इति महाभारतम्.

उपागम, (पु०) उप+आ+गम्+घञ् । स्वी...
समीपागमन । पास आना । पहुंचना.

उपाङ्ग, (न०) उपमितं अङ्गेन । गति० ...
प्रधानका सहायक । "शरीरके हाथ पांव...
अंगुलीयें उपाङ्ग हुये ।" "साङ्गोपाङ्गैरिहै...

उपाजे, (अव्य०) दुर्बलकी सहायता करना...

उपात्त, (त्रि०) उप+आ+दा+क्त । गृहीत...
प्राप्त । हासिल । पकड़ागया । यह हाथी...
प्राप्त नहीं हुआ.

उपादान, (न०) उप+आ+दा+ल्युट् । प्र...
हना । अपने २ विषयोंसे इन्द्रियोंका हट...
कार्य उपजानेके लिये ग्रहण किया गया...
कहुआ कारण । जैसे मट्टी आदि घड़े आदि...
अलंकार (जेवर) आदिके उत्पन्न करनेके...
जाता है, और वह सदा कार्योंमें मिल...
रहता आदि है) । जिससे कार्यके पहिले...

देय, (त्रि०) उप+आ+दा+यत् । उत्कृष्ट । बहुत अच्छा । नेलायक । प्रधान । मुख्य । करनेलायक । मनोहर । न्दर उमदह

धि, (पु०) उप+आ+धा+कि । धर्मकी चिन्ता । विशेषणमें उपाधिका भेद होता है किन्तु उपाधिवालेका द कदापि नहिं हो सक्ता "। सांख्यसूत्रम् । अपने धर्मको सरेमें लेजाकर चमकानेहारा । जैसे दर्पण (शीशा) अ-से मीटेरनको मुखमें लेजाकर, और जबाका फूल अपनी लाईको स्फटिक (बिल्लौर) में लेजाकर चमकाता है, इ-लिये यहां दर्पण आदि नीलारत्न आदिके प्रकाश करनेमें पाधि है । न्यायमतमें हेतुके व्यभिचार (हेतु और सा-धका एक न रहना) को दिखानेहारा साध्यमें व्यापक ौर साधनमें अव्यापक पदार्थ अर्थ । छल । नाम । चिह्न । टुम्ब पालनेकी घबराहट.

ध्याय, (पु०) उपेत्य अधीयतेऽस्मात् । उप+अधि+इ+घञ् । पास जाकर जिससे पढ़ा जाय । जो जीविकाके लिये वेद वा वेदाङ्गके किसी एकदेशको पढ़ावे । पढ़ाने-हारा । उस्ताद । " उपाध्यायी, उपाध्यायानी" (स्त्री०).

नह, (स्त्री०) उप+आ+नह्+क्विप् । उपानहो दीर्घ होजाता है । चर्मपादुका । चमड़ेकी खड़ावें । जूती.

न्त, (पु०) उपमितं अन्तेन । प्रा० स० । निकट । न-ज़दीक । प्रान्त । सिरा । आंखका कोण

न्त्य, (त्रि०) उपान्ते भव. यत् । अन्तसमीपभव । अ-न्तसे पहिला

य, (पु०) उप+अय्+घञ् । साधन । उपगम । हासिल । शत्रुओंको आधीन करनेके लिये चार कारण–साम, दान, भेद, दण्ड.

यन, (न०) उप+अय्+ल्युट् । तोषकारक उपहार । गुरु-को प्रसन्न करनेहारी भेट । समीप गमन । पास जाना.

र:, (पु०) उप+ऋ+कर्मणि घञ् । निकटता । समीपता । चूक । भूल । अपराध । पाप । गुनाह.

रत, (त्रि०) उप+आ+रम्+क्त । निवृत्त । हटगया । चलागया.

रम्, भ्वा० प० । विलास करना । खेलना । मनका विनोद कर दिलबहलाना । किसी बातमें प्रसन्न होना । किसी बातसे विरत होना (हटना) । उपारमति । उपारंसीत् । उपारत:.

लम्भ, (पु०) उप+आ+लभ्+घञ्-मुमच । निन्दापूर्वक दुष्टवचन । किसीकी पहिले निन्दा करके बुरा वचन कहना । दोष । उलाहना । परस्परदूषण । आपसमें दोष लगाना । देरी करना.

वृत्त, (त्रि०) उप+आ+वृत्+क्त । थमको दूर करनेके लिये बार २ पृथिवीपर लोटनेहारा घोड़ा । लौटगया.

उपास्, अदा० आ० । पास बैठना । एक ओर बैठना । सेवा-करना । पूजा करना । निवास करना । पहुंचना । उपास्ते । उपासाञ्चक्रे । उपासिष्ट.

उपासक, (त्रि०) उप+आस्+ण्वुल् । उपासना करनेहारा । भक्त सेवक.

उपासन, (न०) उप+आस्+ल्युट् । शराभ्यास । तीर चला-नेकी विद्या । शुश्रूषा । सेवा । देवतादिका आराधन (स्त्री).

उपास्ति, (स्त्री०) उप+आस्+क्तिन् । उपासना । देवताकी सेवा । खिदमत.

उपेक्षक, (त्रि०) उप+ईक्ष+ण्वुल् । दो विवाद (मुकाबिला) करनेवालोंकी जीतहारके साथ जिसका स्पर्श नहिं । उन दोनोंसे किये गये हर्षविषादसे शून्य । उदासीन । जो प्रती-कार (बदला) लेनेमें उद्यत नहिं होता । बेपर्वाह.

उपेक्षा, (स्त्री०) उप+ईक्ष+अ । त्याग । छोड़ना । "ये मेरे-लिये न हो" इस प्रकारकी इच्छा । उदासीनता । बेपर्वाही.

उपेन्द्र, (पु०) उपगत इन्द्रं अनुगतत्वात् । जो छोटा भाई होनेसे इन्द्रके पास गया । विष्णु । यह कश्यपसे अदितिमें इन्द्रके पीछे वामनरूपसे उत्पन्न हुआ.

उपेन्द्रवज्रा, (स्त्री०) ग्यारह अक्षरके पादवाला एक प्रसिद्ध छन्दोभेद.

उपेय, (त्रि०) उप+इण्+यत् । उपायसे सिद्धहोनेलायक । पानेयोग्य.

उपोढ, (त्रि०) उप+वह्+क्त । समीप । नजदीक विवाहा-हुआ । जोड़बंधी.

उपोद्घात, (पु०) उप+उद्+हन्+घञ् । प्रकृतोपपादक उ-दाहरण । असली बातको सिद्ध करनेहारी मसाल । असली अर्थको वर्णन करनेके लिये दूसरे अर्थका बयान करना । ऐसी चिन्ता कि जिससे प्रकृतकी सिद्धि हो.

उपोषण, (न०) उप+उष्+ल्युट् । उपवास । दिन रात कुछ न खाना । व्रत । रोजह । फाका.

उप्त, (त्रि०) वप्+क्त । कृतवापधान्य । बोयाहुआ धान्य । बोयाहुआ पेड़का बीज । बीजागया.

उप्तकृष्ट, (त्रि०) पूर्वं उप्तं पश्चात् कृष्टं-पूर्वकालेत्यादि स० । प-हिले बोया गया पीछे खेवा गया । बीज बोनेके अनन्तर खेवा गया खेत.

उब्ज, कोमल होना । तुदा० पर० अक० सेट् । उब्जति.

उभ, (त्रि०) द्वित्व० उभ+क् । द्वय । दो । इसका समासमें प्रयोग नहिं । समासमें सदैव उभय हो जाता है । उभ् +अयट्.

उभयतस्, (अव्य०) उभ्+तसिल्-स्वार्थे अय: । दोनो ओर.

उभयत्र, (अव्य०) दोनों स्थान । दोनों जगह.

उभयथा, (अव्य०) दोनों प्रकार । दोनों तरह.

ऊर्णु, ढांकना । अदा० उभ० सक० सेट् । ऊर्णोति-ऊर्णुते । और्णावीत्-और्णुवीत्-और्णवीत् । और्णविष्ट.

ऊर्ध्व, (त्रि०) उद्+हाङ्+ड पृषो० ऊरादेशः । ऊंचा । ऊपर.

ऊर्ध्वकण्ठी, (स्त्री०) ऊर्ध्वः कण्ठः मुखं यस्याः । ब० । गौरा० ङीप् । जिसका मुख ऊंचे हो । महाशतावरीलता । बेल.

ऊर्ध्वजानु, (त्रि०) ऊर्ध्वे जानुनी यस्य । जिसके घुटने ऊंचे हो । मोटे घुटनो (गोड़ों) वाला.

ऊर्ध्वज्ञु, (त्रि०) ऊर्ध्वे जानुनी यस्य । (जानुशब्दको विकल्पसे ज्ञु आदेश होता है) । ऊपरका भाग । मोटे घुटनोंवाला.

ऊर्ध्वपाद (पु०) ऊर्ध्वाः पृष्ठस्थाः पादा अस्य । जिसके चारों पाव पीठपर हो । शरभ नाम हाथीका शत्रु-एक प्रकारका पशु । आठ पांववाला जीव.

ऊर्ध्वपुण्ड्र, (पु०) ऊर्ध्वः ऊर्ध्वमुखः पुण्ड्रः इक्षुयष्टिरिव । ऊंचे मुखवाला गन्नेकी पोरीकी नाईं । माथेपर ऊंचे मुखवाला । पौंडे गन्नेकी तरह तीन रेखाओंके स्वरूपका तिलकभेद । एक प्रकारका ऊंचा टीका । प्रायः वैष्णव लोक माथेपर लगाते हैं.

ऊर्ध्वम्, (अव्य०) ऊंचा.

ऊर्ध्वरेतस्, (पु०) ऊर्ध्वं न पतत् रेतो यस्य । जिसका वीर्य ऊंचेको जाता है अर्थात् नहिं गिरता । महादेवजी । सनकादि । संन्यासी । भीष्मपितामह.

ऊर्ध्वलिङ्ग, (पु०) ऊर्ध्वं उत्कृष्टं लिङ्गं चिह्नं अस्य । जिसका निशान उत्तम है । महादेव । "ऊर्ध्वलिङ्गं विरूपाक्षं" सन्ध्यावन्दनमन्त्रः.

ऊर्ध्वलोक, (पु०) कर्म० । ऊंचा लोक । स्वर्ग । बहिश्त.

ऊर्मि, (पु०) (स्त्री०) ऋ+मि-अर्तेरुच । तरङ्ग । लहर । प्रकाश । वेग । जोर । तेजी । पीडा । चाह । बुभुक्षा (भूख) आदि छ । ("जैसे भूख पियास प्राणकी, शोक मोह मनकी, जरा (बुढ़ापा) मृत्यु (मौत) शरीरकी ये छ ऊर्मियें हैं") । एकप्रकारकी घोडेकी चाल.

ऊर्मिका, (स्त्री०) ऊर्मिरिव भासति । कै+क । लहरकी तरह चमकनेहारी । अंगूठी । "स्वार्थे कन्" लहर आदि.

ऊर्मिमालिन्, (पु०) ऊर्मिमाला अस्त्यस्य इनि । जिसकी तरङ्गोंकी कतार हो । समुद्र । समुंदर.

ऊर्मिला, (स्त्री०) लक्ष्मणजीकी स्त्री.

ऊर, (पु०) ऊष+क । खारी मट्टी । प्रभात । सुबह । चन्दन आदि.

ऊषण, (त्रि०) ऊष्+ल्यु । पीपर । पिप्पलीमूल । चीता । मरच । सोंठ.

ऊषर, (त्रि०) ऊष+मतवर्थीय रः । खारी मट्टीवाली जगह । वह देश जहां बोया गया बीज नहिं उगता.

ऊषवत्, (त्रि०) ऊष+मतुप्-मस्य वः । कल्लरवाली जमीन.

ऊष्मन्, (पु०) ऊष+मनिन् । ग्रीष्म । गर्मी । व्याकरणमें कहे गये गरम वायुसहित ... गये श-ष-स-ह-रूप चार अक्षर.

ऊह, वितर्क करना । दलील करना । भ्वा० ... सेट् । ऊहते । औहिष्ट.

ऊह, (पु०) ऊह्+घञ् । वितर्क । दलील । नतीजा निकालना । अध्याहार । छूटे हुए ... लगाकर वाक्य पूरा करना । किसी पदको ... दृष्टाको पूर्ण करना । अन्वयके योग्य ... की कल्पना करना । जैसे "पार्वणे सौम्या..." यह वचन ठीक है परन्तु एकोद्दिष्टमें ... नहिं बनता इसलिये "सौम्यः" ... कल्पना करनी पडी.

ऊहा, (स्त्री०) ऊह्+अ । ओलाद(?) ... अर्थ पूरा न होनेके कारण दूसरे शब्द ... बीचमें डालना.

ऊहिनी, (स्त्री०) ऊह्+इन्+ङीप् । सेना । ...

ऋ

ऋ, जाना-भ्वा० पर० सक० अनिट् । ऋच्छति । ...

ऋ, जाना-जुहोत्यादि० पर० सक० अनिट् । इयर्ति । ...

ऋ, हिंसाकरना-मारना स्वा० पर० सक० अनिट् । ... आर्षीत्.

ऋक्थ, (न०) ऋच्+थक् । धन । दौलत । ... धर्मशास्त्रमें प्रसिद्ध दायरूप धन । बडोका ... जो तक्सीम करनेलायक है । बडोंका ... करनेके योग्य है.

ऋक्ष, (पु०) ऋष्+स-किच । भल्लूक । रीछ नक्षत्र ... मेषआदि राशि (पु० न०).

ऋक्षगन्धा, (स्त्री०) ऋक्षान् गन्धति हिनस्ति ... ऋषिजाङ्गलि वृक्ष । महाश्वेता । क्षीरविदारी.

ऋक्षगिरि, (पु०) कर्म० । पर्वतोंका भेद । ...

ऋक्षराज, (पु०) ऋक्षाणां राजा-स० टच् । ... जाम्बवान् । चांद.

ऋग्वेद, (पु०) ऋक्प्रधानो वेदः । जिसमें ... वर्णित है । जिसमें परमात्माकी महिमा वर्णन ... देवत) वेदोंमेंसे एक । ज्योतिर्मय परमात्मा ... गण जिसके देवता हैं अर्थात् जिसमें सवि... श्वर अथवा देवस्वरूप श्रीपरमात्माको मुख्य ... समोक्षकी नानाविध अभिलाषाओंका वर्णन ... वेदभेद । सबसे पुराना वेद । हिन्दुओंका ... (निबन्ध) पुस्तक.

ऋषि, (पु०) ऋष्+इन्-किच । वेदमन्त्र देखनेहारा मुनि । अनुष्ठान करनेयोग्य कर्मको जनानेहारा सूत्रोंका कर्ता । आचार्य । गोत्र और प्रवरको चलानेहारा मुनि । तपस्वी । मत्स्यविशेष.

ऋषियज्ञ, (पु०) ऋषियोंके लिये यज्ञ । ब्रह्मयज्ञ । वेदका पढ़ना.

ऋष्टि, (स्त्री०) ऋष्-करणे क्तिन् । दोनोंओर धारावाला खड्ग (तलवार).

ऋष्य, (पु०) ऋष्+क्यप् । मृगभेद । एक प्रकारका हरिण.

ऋष्यमूक, (पु०) ऋष्यो मृगो मूको यत्र । पम्पासरोवरके पास फूलेहुए वृक्षोंवाला एक पर्वत (रामायणमें प्रसिद्ध है) जहां रामचन्द्रजी सुग्रीवके पास कुछकालके लिये रहे.

ऋष्यशृङ्ग, (पु०) ऋष्यस्य मृगभेदस्य शृङ्गमिव शृङ्गं अस्य । एक हरिणके सींगकी नांई जिसके सींग हैं । विभाण्डक ऋषिका पुत्र । लोमपाद नाम राजाकी कन्या (जो राजा दशरथने इसे दी थी) । शान्ताका पति । मुनिविशेष.

ऋष्व, (त्रि०) ऋष्+क्वन् । (वेदमें) बड़ा । ऊंचा । अच्छा । देखनेलायक । इन्द्र और अग्निका नाम.

ॠ

ॠ, जाना । जुहो० पर० सक० सेट् । आरति । आरीत् । आर । आरुः.

ॠ, (अव्य०) बचाना । रक्षा । निन्दा । डरना । इसी (अ०) दैत्य और देवताओंकी माता (स्त्री०) बाद्गिरी । माता । भैरव (पु०) दैत्य । दया.

ऌ

ऌ, (अव्य०) देवता और दैत्योंकी माता । पृथिवी । पहाड़.

ॡ

ॡ, (अव्य) देवताओंकी माता । देवकी । महादेव (पु०) दैत्योंकी मा (स्त्री०) विष्णु (पु०).

ए

ए, (अव्य०) इण्+विच् । दया । याद करना । घिन करना । बुलाना । विष्णु (पु०).

एक, (त्रि०) इण्+कन् । एककी संख्या । मुख्य । केवल निरुद्ध । और अन्य । एकही । समान । अल्प । थोड़ा.

एकक, (त्रि०) एक+कन् । असहाय । अकेला.

एककार्य, (त्रि०) एकं कार्यं प्रयोजनं यस्य । जिसका एकही काम हो । एक कामका काम करनेहारा । साथमें काम करनेहारा मित्रादि.

एकगुरु, (पु०) एकोगुरुर्यस्य गुरुत्वेन । जिसका एकही गुरु हो । जिसका अध्यापक (पढ़ानेहारा) एकही हो । सतीर्थ्य.

एकचक्र, (न०) एकं चक्रं यत्र । जहां एकही चक्र (पहिया) हो । रथका नाम । सूर्यका रथ (पु०) । एकचक्रा (स्त्री०) जहां पाण्डवोंने बकासुरके मारनेके लिये वास किया था.

एकचर, (त्रि०) एकः सन् चरति । [illegible] विचरनेहारा । अकेला घूमनेवाला । गैंडा [illegible]

एकजाति, (पु०) एका जातिर्जननं यस्य । [illegible] बार जन्म होताहै । शूद्र (इसका [illegible] "एकजन्मा".

एकजातीय, (त्रि०) एकः प्रकारो विद्य[illegible] जातीयट् । तुल्यप्रकार । एक [illegible]

एकतम, (त्रि०) एक+डतमच् । बहुतोंके [illegible] लिये निश्चय कियागया एक । बहुतोंमें एक

एकतर, (त्रि०) एक+डतरच् । दोनोंके बी[illegible] निश्चय कियागया एक । दोनोंमेंसे एक । "[illegible]

एकतस्, (अव्य०) एक ओरसे.

एकतान, (त्रि०) एकं तानयति । पु० तन् [illegible] भरोसा करना-अण् । जो एकपर विश्वास [illegible] चित्तवृत्ति । जिसका खयाल एकही ओर [illegible] थमें लगे हुए चित्तवाला.

एकत्र, (अव्य०) एक+त्रल् । एकस्मिन्नर्थे [illegible] नमें-में-पर.

एकत्व, (न०) एक+त्व । ऐक्य । एकत्व [illegible] ही । साम्य । बराबर । सायुज्य मुक्ति [illegible] ध्येयसे अभेद हो जाना है.

एकदण्डिन्, (पु०) एकः केवलः दि[illegible] दण्डो दण्डोऽस्यास्ति । जो केवल दण्[illegible] धारताहै । शिखायज्ञोपवीत आदि नहीं

एकदन्त, (पु०) एकः दन्तोऽस्य । जिसका [illegible] हो । गणेश । (एकदंष्ट्र) इसी अर्थमें है[illegible]

एकदा, (अव्य०) एक+काले दाच् । एक[illegible] किसीवक्त.

एकदृश्, (त्रि०) एका दृग् यस्य । जिसकी [illegible] एक नेत्रवाला । काणा । काक-कौआ [illegible] सर्वं अभिन्नं पश्यति । दृश्+क्विप् । जो [illegible] देखताहै अर्थात् जिसे भिन्नभाव नहीं । शि[illegible]

एकधा, (अव्य०) एक+प्रकारे धाच् । [illegible] एकतरह.

एकपक्ष, (त्रि०) एकः पक्षः यस्य । जिसका [illegible] सहायक.

एकपत्नी, (स्त्री०) एकः समानः अनन्यो [illegible] और पुरुष । जिसका एक वैसा वा वही प[illegible] मंडिन । पतिव्रता । (पतिभिन्न दूसरा पुरु[illegible] बेटही । सती औरत.

एकपद, (न०) एकं पदं पदक्षेपोयत्र [illegible] पांवके रखनेलायक समय । एक बारर । [illegible] शब्दभेद.

पदी, (स्त्री०) एकः पादोऽस्याम् । ङीप् । पद्भावः । ...र्म । रास्ता । पथ.

पदे, (अव्य०) एक+पद्+के । अकस्मात् । अचानक । कहीं बार । "कथमेकपदे निरागसम्" इति कुमारः.

पिङ्ग, (पु०) एकं नेत्रं पिङ्गं अस्य । जिसकी एक आंख पीली है । कुबेर । यह पार्वतीको दोषदृष्टिसे देखता भया । उसके शापसे इसका नेत्र जाता रहा फिर महादेवजीकी प्रसन्नतासे उसकी आंखमें पीलापन होगया (पुराणकथा).

भक्त, (पु० न०) आधा दिन बीतजानेपर जो नियमसे खाना है रात्रिको कुछ नहिं भोजन करता, उसे एकभक्त कहते हैं ऐसा व्रत अर्थात् नियम.

यष्टिका, (स्त्री०) एका यष्टिरिव आवली यस्याः ब० कप् । लाठीकेसमान जिसकी एकही लडी हो । एकलडा । एकावलीहार.

राज्, (पु०) एको राजते क्विप् । सार्वभौम । एकही चमक रहा है । चक्रवर्ती । १२ मण्डलका राजा.

विंशति, (स्त्री०) एकाधिका विंशति. । एक ऊपर बीस । इक्कीस संख्या.

वीर, (पु०) एको वीरः । कर्म० । एक बहादुर । बडा वीर । एक वृक्ष.

शफ, (पु०) एकः शफोऽस्य । जिसका एकही खुर हो । एक खुरवाले गधा आदि घोडा-खच्चर । शरभ.

शेष, (पु०) एकः शेषो यत्र । जहां एक बाकी रहे । व्याकरणमें प्रसिद्ध द्वन्द्वसमासका भेद । जैसे पुत्र और पुत्री (दोनोंका एकशेष) "पुत्रौ" होता है.

श्रुति, (स्त्री०) एका अभिन्ना उदात्तादिशून्या श्रुतिः उच्चारणम् । उदात्तादिसे शून्य एक एवार्णि स्वरका उच्चारण करना । प्रातिशाख्यमें प्रसिद्ध उदात्त, अनुदात्त, और स्वरितका विभाग कियेविन बोलना.

सर्ग, (त्रि०) एकस्मिन् सर्गो निश्चयो यत्र । जहां एकही बातका निश्चय हो । एक ओर मनवाला । एकाग्रचित्त

काकिन्, (त्रि०) एक+आकिन् । असहाय । जिसकी मदद कोई न हो । अकेला.

काक्ष, (पु०) एकं अक्षि यस्य । षच् स० । जिसकी एक आंख हो । कौआ । काना (त्रि०).

काग्र, (त्रि०) एकं अग्रं विषयो यस्य । जिसका विषय एक हो । और विषयको छोडकर एकही ओर मनवाला । विक्षेपरहित ज्ञान । एकमन । "सर्गे स्थम्" । ऐसाभी इसी अर्थमें होताहै.

कादश, (त्रि०) एकादशन्+पूरणे डट् । ग्यारहको भरनेहारा । ग्यारवां । ग्यारवीं तिथि (स्त्री०) चन्द्रमाके ग्यारह कलाभरनेकी ग्यारवीं तिथि (विष्णुका पवित्र दिन).

एकादशन्, (त्रि०) एकश्च दश च आलम् । एक और दश । ११ संख्या.

एकादशद्वार, (न०) एकादश द्वाराणि यत्र । जहां ग्यारह दर्वाजे हैं । शरीरनामी नगर (वहां नासिका, श्रोत्र, नेत्र दो २ छ मुखके हुए, एक मुख, नाभिसहित नीचेके तीन, और ब्रह्मरन्ध्र इसतरह ११ दर्वाजे हैं).

एकादशी, (स्त्री०) एकादशानां पूरणी । ११ कलाओंको पूरण करनेहारी । दोनों पक्षोंमें प्रतिपदासे लेकर ११ कलाको पूरा करनेवाली तिथि । जहां हरिवासरव्रत होता है.

एकान्त, (त्रि०) एकः अन्तो निश्चयो यत्र । जहां एकही निश्चय हो । अत्यन्त । जरूरी । बहुतही । अकेला । रह.

एकान्ततस्, (अव्य०) एकान्त+तसिल् । अव्यभिचारी । न टलनेहारा । जरूर होनेहारा । केवलमात्र । निपट । ज्यादह.

एकान्न, (त्रि०) एककालमेवान्नं भक्ष्यं यस्य । जहां एकबारही भोजन कियाजाता है । एकबार खानेहारा । एकभक्तव्रत । एकबार खानेका अन्न.

एकान्नविंशति, (स्त्री०) एकेन न विंशतिः एक+न+आदुक् दश वा न, एकबीस । उन्नीसकी संख्या.

एकाम्बरा, (स्त्री०) एकः अम्बरो वस्त्रमर्थं यस्याः । जिसकी अम्बरा (अमर) एक वस्त्र हो । एक दर्वेकी गौ.

एकायन, (त्रि०) एकं अयनं विषयो यस्य । जो एकही विषयमें लगा है । और विषयोंसे चित्तको हटानेहारा । एकाग्रमन.

एकावली, (स्त्री०) एका आवली यष्टिरेषा । एक मणियोंकी लडी । एक लडाहार । अर्थालंकारका भेद

एकाश्रय, (त्रि०) एक आश्रयो यस्य । जिसका एकही आश्रय हो । अनन्यगति.

एकाह, (पु०) एकं अहः । द्विगु० अच् । "अहन्नन्तः पुंसि" इति पुंस्त्वम् । एकदिन.

एकाहार, (पु०) एकस्मिन् दिने एक आहारो भोजनम् । एकदिनमें एकबार भोजन करना । दिनमें एकबार भोजन करनेहारा (त्रि०).

एकीभाव, (पु०) अनेकस्य एकस्य भवनः । एक+च्वि+भू+घञ् । बहुतोंका एक होना । एकत्व । एकपन.

एकीय, (त्रि०) एक+छ (ईय) । एक पक्षका । एकका मददगार.

एकोद्दिष्ट, (न०) एक उद्दिष्टो यत्र । जिसमें एकहीका उद्देश हो । एकको उद्देश्य करके किया श्राद्ध । प्रेतश्राद्धं एकत्व निर्दिष्ट करनेका श्राद्ध.

एज्, कांपना । भ्वा० आ० सक० सेट् । एजते । एजित

एठ्, बाधकरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । एठति । एठित.

एड़, (पु०) इल्-सोना-अच् । मेष । मेढा । बधिर । बहिरा । ढोरा (त्रि०).

एडक, (पु०) इल्+ण्वुल् । मेंढ । बनका बकरा । बड़े सींगोंवाला मेढा । हरएक मेढा । स्त्रीतान् टाप् । एडका । मेंढ.

एडमूक, (त्रि०) श्रुतिरहित एडो बधिरश्चासौ मूकः । गूंगा और बहिरा पुरुष.

एण, (पु०) इ-ण । कृष्णवर्णमृग । कालेरंगका हरिण । स्त्रियां एणी.

एणतिलक, (पु०) एणस्तिलक इव चिह्नं । जिसका निशान हरिण हो । मृगाङ्क । चन्द्र । चन्द्रमा । माहताब.

एणाजिन, (न०) एणस्य अजिनम् । हरिणका चमडा.

एत, (त्रि०) (पु०) इण्+तन् । हरिण (पु०) आया । कर्बुरवर्ण । चितकबरा रंग । चितकबरे रंगवाला । स्त्रियां एनी । रंगबरंगी । चमकनेवाली.

एतद्, (त्), (त्रि०) इण्-आदि-अदुक्च । पुरोवर्ती । सामने । यह.

एध्, बढना । भ्वा० आ० अक० सेट् । एधते । ऐधिष्ट.

एधस्, (न०) इध्यतेऽग्निरनेन । इन्ध्+असि । जिससे आग भड़कती है । नि० नलोप । गुणश्च । काष्ठ । काठ । लकडी.

एधित, (त्रि०) एध्+क्त । वृद्धियुक्त । बढाहुआ । बढगया.

एनस्, (न०) इण्+असुन्-नुट्च । पाप । अपराध । दोष । गुनाह.

एरका, (स्त्री०) इण्+रक् । गांठरहित तृण । गुंदा । घासविशेष.

एरण्ड, (पु०) ईरयति वायुं मलं वा । ईर्+अण्डच् । नि० गुणश्च । जो हवा या मलको दूर करता है । एक पेड.

एला, (स्त्री०) इल्+अच् । एलानामी लता । इलायची.

एव, (अव्य०) सादृश्य । बराबरी । अवधारण । तहकीकात । परिमव । तिरस्कार । हिकारत । थोडापन । निश्चय । ही.

एवम्, (अव्य०) सादृश्य । मुशाबहत । इसप्रकार । ऐसा निश्चय । स्वीकार । मात्रा । प्रश्न । सवाल.

एष्, जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । एषते । ऐषिष्ट.

एषण, (पु०) एष्+ल्यु । लोहेका बाण । युच् । इच्छा । पुत्र, लोक और धनकी कामना (स्त्री०) ल्युट् । सुनारका कांटा । "स्वार्थे कन्" "एषणिका" इसी अर्थमें होता है.

ऐ

ऐ, (अव्य०) स्मरण । बुलाना । शिव (पु०).

ऐकमत्य, (न०) एकमतस्य भावः । ष्यञ् । एकमतहका आशय । एकाशय.

ऐकागारिक, (त्रि०) एकं असहायं अगारं प्रयोजनं अस्य ठक् । अकेले स्थानपर जिसका प्रयोजन सिद्ध होता है । चौर । चोर.

ऐकाग्र्य, (त्रि०) एकाग्र । स्वार्थे अण् । अ[illegible]

ऐकात्म्य, (न०) एक आत्मा स्वार्थे ष्यञ् [illegible] ष्यञ् । एकस्वरूपका होना । एक आत्माका होना.

ऐकान्तिक, (त्रि०) एकान्ते भवतीति ठञ् । [illegible] नेहारा । अव्यभिचारी । न टलनेहारा । [illegible] द । मजबूत.

ऐकाहिक, (त्रि०) एकाहे भवः । [illegible] दिनमें होनेवाला । एक दिनको लांघकर [illegible] दिनको छोडकर होनेहारा ज्वर । तरेया ता[illegible] एकसमयपर होनेहारा ज्वर (तापयुक्त) (पु[illegible]

ऐक्य, (न०) एकस्य भावः । एक+ष्यञ् । [illegible] पना । मेल । जोड.

ऐक्षव, (त्रि०) इक्षोर्विकारः इक्षु+अण् । [illegible] गुडआदि.

ऐक्ष्वाक, (पु०) इक्ष्वाकोर्गोत्रापत्यम्-अण्, नि० [illegible] वंशमें उत्पन्न हुआ । सूर्यवंशी राजा.

ऐङ्गुद, (न०) इङ्गुदाः फलं-फले अण् तस्य न लुक् [illegible] वृक्षका फल । हिंगोटका फल । तपस्वियोंका वृक्ष.

ऐण, (त्रि०) एणस्य कृष्णमृगस्य इदम् अण् । [illegible] का चमडा आदि.

ऐणेय, (त्रि०) एण्या इदं ढक् । काली हरिणी[illegible] आदि.

ऐतिह्य, (न०) इतिह पारम्पर्योपदेशः स्वार्थे ष्यञ् । [illegible] मरा । चलाआता सिलसिलेवार उपदेश । जैसे "[illegible] इसपर यक्ष रहता है" इत्यादि बापदादोंसे [illegible] उपदेश । किसीने जानकर नहिं कहा । इतिहासी । [illegible] तारीखी.

ऐन्दव, (न०) इन्दुर्दैवतास्य । जिसका देवता चन्द्र[illegible] मृगशिरानक्षत्र चन्द्रमाका (त्रि०) । [illegible] (स्त्री० ङीप्).

ऐन्द्र, (त्रि०) इन्द्रस्येदम् । इन्द्र+अण् । इन्द्रका । [illegible] नक्षत्र (न०) स्त्रियां ङीप् । ऐन्द्री.

ऐन्द्रजालिक, (त्रि०) इन्द्रजालेन चरति । इन्द्र[illegible] विचरता है । मायाकरनेहारा । छलिया (बाजीगर).

ऐन्द्रि, (पु०) इन्द्रस्य अपत्यं इञ् । इन्द्रका पुत्र । [illegible] अर्जुन । सुग्रीव वानर । काक । कौआ.

ऐरावत, (पु०) इरा जलानि सन्त्यस्य । इरा+मतुप्-म[illegible] इरावान् । समुद्रः तत्रभवः अण् । जलोंवाले स्थान(स[illegible] में होनेवाला । समुद्रसे निकला इन्द्रका हाथी.

ऐरिण, (न०) ईरिणे ऊषरे भवा । सैन्धवलवण । [illegible] हन (सिन्धक).

, (न०) इस अर्थं तत्रभव ठक् । जन्ममें होनेवाला । य । द्याव.

(पु०) इल्वया अपत्यं । इल्वाका बेटा । बुधका पुत्र । रवा राजा.

ऐल, (पु०) इलविलाया अपत्यम् । इलविलका बेटा । बेर.

नी, (स्त्री०) ईशानी देवता अस्याः । महादेव जिसका ता है । उत्तर और पूर्वके अन्तरकी दिशा.

र्य, (न०) ईश्वरस्य भावः । ईश्वरपना । अणिमा आदि ट प्रकारकी विभूतियें । जैसे अणिमा, महिमा, लघिमा, रिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व.

मन्, (अव्य०) अस्मिन् वचने । नि० । वर्तमानवर्षे । लका वर्तन.

ौकिक, (त्रि०) इहलोके भवः बाहुल्यात् ठञ् । द्विपद- के । इहलोकका.

, (त्रि०) इह भवः बाहुल्यात् ठञ् । इहलोकमें होने- ला । मनुष्यदेहके शरीरके लिये माला चन्दन आदि रका अनुभव आदि । इहलोकका.

ओ

(अव्य०) हाकिमी । स्मरण । सम्बोधन । बुलाना । दया.

(न०) ब्रह्माके पति । ब्रह्मा.

, (पु०) उच+क-नि० चाल च । पक्षी । समूह । ढेर.

र, (न०) उच+अतुन् । घुमना । ढेर । घर । अवकाश । पनाह.

हनी, (स्त्री०) ओघ आसवः सूर्येन अहर्न अस्यं या । जो समयकी ओलक बनीहै । बेरबीट । वै । र.

, मुहासा-बजासा-हुदासा । लय० । सामर्थ्यका । ६० स्वा० पर० सेद् । ओलति । ओंलीत.

, (पु०) वच्+घञ् । वाहुद । ऊंचा पैर । आदमीसे बला-जाल-वचन । इत्युक्तादि.

र, (पु०) अव+मन् । उन्-गुण ओम्-नमः नमस्- कार । प्रणव । जिसकी वैदरतामें सबसे अधिक तुति गई है । उसकी रहन वर्णहै.

, कप करना । कोरपना । चुरा० उभ० अक० सेट् । कहती-ने । ओंडिअन-न

र, (न०) इसन्+मनुष्-वर्णके गुण । दीप्ति । न । तेज । प्रकाश बल । प्रताप । उजाले । जलने । अनुसार १ की १ दी ५ दी ७ दी इत्यादि विभक्ति है । प्रतिहा बेलन । वेदरनाके अनुसार अनुसारको कोरोमा बस्तुहैर । "ओज" की रुही कहते है.

स, (त्रि०) अविरदेव ओजसी ओजस्विन् तच् । ढेव । बहुत तेजवाला । बड़े जलवाला । निश्चय मन

ओण, अपमारण करना । निकलना । हटना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ओणति-ओणीत.

ओत, (त्रि०) आ+वेञ्+क्त । अन्तर्गत । बीचमें बंधा- हुआ । बराहर । बंधी २ मर्गें.

ओतु, (त्रि०) अव+तुन्+ऊठ्-गुण । बिलार । बिल्ली.

ओदन, (पु०) उन्द+युच-नलोपो गुणश्च । भात । अन्न । भगवा । तीवलअन्न । उबलेहुए चावल । अन्न

ओम्, (अव्य०) अव्+मन् ऊठ्-गुण । गुण । प्रणव । अ उ और म् इन तीनोंमें बनाहुआ एक अक्षर । आरम्भ । ओंकार । ब्रह्म । हटना । मंगल । शुद्ध । अंगीकार । निकलना

ओष, (पु०) उष्+घञ । दाह । जलना

ओषधि-धी, (स्त्री०) ओषो दीप्तिर्धीयते । ओष+धा+ की । जो दाहको धारण करे । वह वृक्ष जो फल पकने तकही रहतेहैं । धान । जौ आदि । बनस्पतिका वृक्ष । बीहियवादि.

ओषधिप्रस्थ, (पु० न०) ओषधिप्रस्थ नाम । नगर० । यह हिमाल कि जहां बन वनौषध बहुतेरी रहतीहैं । हिमालयपुर.

ओष्ठ, (पु०) उष्+थन् किच्च [illegible] । होंठ । दांतोंका ढक्कन । दन्तच्छद

ओष्ठपुष्प, (पु०) ओष्ठोपमानं पुष्पं यस्य । जिसका फूल होठके समान लाल है । बन्धूकवृक्ष

ओष्ठी, (स्त्री०) ओष्ठ इव आकारी । ओष्ठ+ङीष् । फल अस्य । बिंबाफल । बिम्बफलका वृक्ष । कुंदरूका

ओष्ठ्य, (पु०) ओष्ठ+यत् । ओष्ठमें होनेवाले । उ ऊ प फ ब भ म जिनका उच्चारण होठोंसे होता है

ओष्ठोपमफला, (स्त्री०) ओष्ठ उपमा यस्य । ओष्ठके समान फल । जिसका फल होंठके समान हो । बिंबीफल (बेल)

औ

औक्ष, (न०) उक्ष्णां समूहः । बैलोंका समूह । बैलोंका झुण्ड । "औक्षक" भी कहते हैं

औग्र्य, (त्रि०) उग्रस्य भावः । उग्रपना । तीक्ष्ण । बहुतहीमें तेजीहुई बात

औचिती, [(स्त्री०)] उचितस्य भावः । योग्यता ।
औचित्य, [(न०)] उचितपन । ठीकपना । योग्य होना । बराबरी

औज्ज्वल्य, (त्रि०) उज्ज्वल । उज्ज्वलताकी । चमक । तेज । प्रकाशित

औडुपिक, (पु०) उडुपेन तरति । नाव । नाव चलानेवाला । केवट

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] ।

[illegible] (वि०) [illegible] ।

[illegible] (न०) [illegible] ।

[illegible] (वि०) [illegible] ।

[illegible] (वि०) [illegible] ।

[illegible] (न०) [illegible] ।

[illegible] (न०) [illegible] ।

[illegible]

औपयिक, (त्रि०) उप+अय+घञ् । [illegible] हस्तगत । उपायसे लाभ हुआ । [illegible] चीज । तजवीजसे मिला.

औपसर्गिक, (पु०) उपसर्गेण [illegible] सन्निपातकी ज्वरका रोगभेद । एक [illegible].

औरभ्र, (न०) उरभ्रस्य मेषस्येदं अण् । [illegible] बना । कम्बल.

औरभ्रक, (न०) उरभ्राणां समूह [illegible] भेड़ोंका समूह (गल्ह).

औरस, (पु०) उरसा निर्मितः अण् । [illegible] सवर्णामें संस्कार कीगई स्त्रीमें [illegible] पुत्र । धर्मशास्त्रके प्रकारसे [illegible] सबसे श्रेष्ठ पुत्र.

और्ध्वदेहिक, (त्रि०) ऊर्ध्वं देहः [illegible] देयं वा श्राद्धादि ठक् । [illegible] तथा श्राद्धादि कर्म । मरनेके [illegible] सब क्रियाओंका अनुष्ठान (नांस) [illegible] कर्मसमूह । "और्ध्वदैहिक" भी.

और्व, (पु०) ऊर्वस्यापत्यं अण् । [illegible] वाडव (चोटीके लगनेसे समुद्रकी [illegible] उर्व मुनिसे उत्पन्न हुई । [illegible] वडिवाग्निकाही है । समुद्रकी आग । [illegible] भाग । बड़वाकी निमस

औलूक, (न०) उलूकानां समूह [illegible] उल्लुओंका समूह.

औलूक्य, (पु०) वैशेषिकदर्शन [illegible] [illegible]

[illegible] (न०) [illegible]

औशीर, (न०) [illegible]

[illegible] (न०) [illegible]

[illegible] (न०) [illegible]

[illegible] (त्रि०) [illegible]

[illegible] (न०) [illegible]

[illegible] (न०) [illegible]

[illegible]

क.

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । आत्मा । यम । [illegible] । सूर्य । अग्नि । विष्णु । [illegible] । [illegible] । राजा । [illegible] । [illegible] । प्रकाश । शब्द । सुख । सिर । जल । [illegible] (अ०)

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] पुत्र । [illegible] । [illegible] मामा । [illegible] । [illegible] । [illegible] और [illegible] धनुष्य । [illegible] । [illegible] का [illegible] । [illegible] । [illegible] प्रसिद्ध [illegible] । [illegible])

[illegible], (अ०) [illegible] । [illegible] प्रसिद्ध [illegible] । [illegible] और [illegible] । [illegible] दवाई.

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] श्रीकृष्णदेव.

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । श्रीकृष्ण.

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । श्रीकृष्णजी.

[illegible], (अ०) [illegible] । [illegible] प्रसिद्ध [illegible] धातु.

[illegible] । [illegible] ।

[illegible] । [illegible] ।

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] ।

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] (स्त्री०) [illegible]

[illegible], (अ०) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible])

[illegible], (स्त्री०) [illegible]

[illegible]

[illegible], ([illegible]) (पु०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] (स्त्री०)

[illegible]

[illegible]

कङ्कमुख, (पु०) कङ्कस्य मुखं इव मुखं अस्य। जिसका मुख कांकपक्षीके मुखकी नाईं हो। सन्दंश। संडासी.

कङ्काल, (पु०) कं मुखं शिरो वा कालयति क्षिपति। कल्+अच्। त्वक् (चमडा) मांसरहित शरीरके आरम्भ करनेहारा अस्थिओंका समूह। हड्डिओंका पिंजरा। हड्डी.

कङ्कालमालिन्, (पु०) कङ्कालानां माला अस्ति अस्य इन्। जिसकी माला अस्थिपिंजरकी है। रुद्र। शिव। महादेव.

कङ्गु-ङ्गू, (पु०) ककि+उ। कंगनी। धान्यभेद। पृषो० कङ्गोग.

कच्, शब्द करना। भ्वा०पर०अक०सेट्। कचति। अकचीत्-अकाचीत्.

कच्, बांधना-बैर करना। भ्वा०पर०इदित् सक०सेट्। कचति। अकचीत्.

कच्, बांधना-सक०चमकना-अक०भ्वा०आ०सेट्। कचते। अकचिष्ट.

कच, (पु०) कच्+अच्। केश। बाल। बृहस्पतिका पुत्र। सूखा घाव। मेघ। बादल। हथिनी (स्त्री०)। "भावे" बांधना। [illegible].

कचाकचि, (अव्य०) परस्परं कचैः सह प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्। आपसमें एक दूसरेके बालोंको पकडकर किया हुआ युद्ध.

कच्छु, (स्त्री०) कष्+ऊ। एक वृक्ष। कच्छू। खुजली.

कच्चर, (त्रि०) कुत्सितं चरति। कु+चर्+अच्-कदादेशः। मलिन। मैला। दुष्ट (न०).

कच्चित्, (अव्य०) काम्यते इति कम्। चीयते निधीयते अर्थे इत्यच्। कम्+चि+क्विप्-पृषो० मस्य दः। अपनी इच्छा जाननेके लिये प्रश्न। हर्ष। मङ्गल। इष्टप्रश्न। [illegible].

कच्छ, (त्रि०) कच्-बांधना+ड। केन जलेन छ्यति [illegible]। [illegible]। जलप्रायदेश वह स्थान कि जहां [illegible]। काछी। किनारा। तुम्बातुम्ब। केशरका वृक्ष। [illegible] (पु०)। कछनी.

कच्छप, (पु०) कच्छे निर्गत्य पा+क। कूर्म। कछुआ। [illegible]। [illegible] निकलनेकी कला। एक प्रकारका वृक्ष। [illegible].

कच्छुर, (त्रि०) कुत्सितं छुरति। कु+छुर्+क-कदादेश। [illegible]। [illegible]। [illegible] (पु०)

कज्, [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible].

कज्जल, (न०) [illegible]। [illegible]। [illegible] (पु०) [illegible] (न०).

कज्जलरोचक, (न०) (पु०) कज्जलं रोच[illegible] णिच्+अच्। दीपकका आधार। [illegible] को चमकता है.

कञ्चुक, (पु०) कचि+उकन्। [illegible] लोहेका वर्म। चोला। अंगरखा। कंचुली। [illegible]

कञ्चुकालु:, (पु०) कञ्चुक+आलु। सर्प। सांप.

कञ्चुकिन्, (पु०) कञ्चुक+इन्। राजाओंके [illegible] अधिकारी। दर्बान। द्वारपाल। [illegible] जिरहपहिरे हुए (त्रि०) रनवासकी रक्षा [illegible] चणकनाम मुनि। जिसने अंगरखा पहिरा हुआ है.

कञ्जक, (पु०) कञ्जः केश इव कायति। [illegible] पक्षी। उसका काला रंग होनेसे बालोंकी [illegible] कोयल.

कञ्जार, (पु०) कं जलं जारयति। [illegible] ब्रह्मा। उदर। पेट (न०) अपि "कञ्ज" अर्थमें होता है.

कट्,-जाना बरसना (भ्वा० पर० सक० सेट्) अकटीत्। अकाटीत्.

कट, (पु०) कट्+अच्-कर्मणि घ वा। [illegible] स्थान। कमरका पासा। हस्तिगण्डस्थल। बहुत। काल। तृण। मुर्देका रथ। तख्ता। श्मशान। मसाँन काही आदिका रस्सा। [illegible]

कटक, (अस्त्री०) कट्+वुन्। मेखला नाम [illegible] भाग। पर्वतका नितम्बस्थान। पर्वतके [illegible] भूषण। कडा। हाथीदांत। पहिया। राजधानी। सून। सेंधानोन। दायरा। जमीन। सेना.

कटप्रू, (पु०) कटं प्रवते। प्रु+क्विप्-दीर्घ। विद्याधर। अपनी इच्छासे रूपको धारण [illegible] राक्षस। पासा खेलनेवाला। एक कीडा। [illegible]

कटभङ्ग, (पु०) भञ्ज्+घञ्। [illegible] (छिन्नता) होनेसे राजाका विनाश। [illegible] पाटना वा छीनना.

कटाक्ष, (पु०) कटं गच्छ अक्षति [illegible] तिरछे देखना। अपाङ्गदर्शन। तिरछी नजर.

कटाहक?, कटायन, (न०) कटस्य तृणागनस्य अयनं [illegible] जिससे चटाई बनती है। बालनगुंछा [illegible].

कटाह, (पु०) कटं आहन्ति। आ+हन्+ड। [illegible] [illegible]। तैलविपाकसाधनपात्र। तेल [illegible] पात्र। कडाई। नरक। खप्पर.

कटि-टी, (स्त्री०) कट+इन्। [illegible]। [illegible] "वा ङीप्".

कटिल, (न०) कटि प्रवते। [illegible]। [illegible]। करेला। कटिल्ल.

) प्रोथ्+अच् । कटस्य कव्या वा प्रोथो
। कटिदेशका मांसपिण्ड । कटी । कमर ।

) कट्+इल । कारवेल्ल । करेला.

०) कटौ धार्य सूत्रं-शाक० । कमरपर धारण
कार्पास (कपास) वा (सोना चांदी) का बना-
तागी । मेखला । काची । धुनही । गोट.

द्+उ । दूषण । दुष्ट कार्य । रसभेद । कडवा ।
दू । सुगन्धु । कटुकी लता (स्त्री०) चम्पक ।
पटोल । नीम.

०) कटुः कन्दो मूलं यस्य । जिसकी जड
त्रिपुरस (मसाला) । अदरक । लशुन । लस्सन.

(पु०) कटुः कीटः स्वार्थे कन् । मशक । मच्छर.
०) कटुक्वणित्वा, क्वणो यस्य । जिसकी आवाज
तित्तिर) टिट्टिभ पक्षी । टिटहरा परिंदा.

पु० न०) कटुः ग्रन्थिः यस्य । जिसकी गांठ
पिप्पलीमूल । पीपलीकी जड । शुण्ठीमूल ।

०) कटु छदः पत्रं यस्य । जिसका पत्ता
। तगरवृक्ष । टगर.

०) कटूनां त्रयं । कटुत्रिक । तीन कडवी चीजें ।
, काली मिरच.

स्त्री०) कटु दलं यस्याः । कडवे पत्तोंवाली ।
हिमारी बूटी.

स्त्री०) कटु बीजं यस्याः । जिसका बीज कडवा
ी.

) कटुं विपाके कटुरसं राति । रा+क । पकनेपर
रसको देती है । तक्र । छाछ । लस्सी.

०) कटुक्वणितो रवो ध्वनिर्यस्य । जिसका शब्द
मेंडक । मेंडक.

) कट+ष्वरन् । तक्र । छाछ । व्यञ्जन । चटनी ।

चादसे स्मरण करना) चुरा० उभ० पक्षे भ्वा०
० सेट् इदित् । कण्टयति-ते । अचकण्टत्-ते ।

स करना वा कसी इच्छासे याद करना) इदित्
० सक० सेट् । (प्रायः-यह धातु उत् उपसर्गके
ा है) । उत्कण्ठते । उदकण्ठिष्ट.

) कठ+अच् । मुनिभेद । ऋग्वेदकी शाखा । उस
पढनेहारा.

त्रि०) कठ+इनच् । क्रूर । बेदरम । कठोर ।
उष्ण । स्तब्ध । रोककुआ । स्थाली (स्त्री०)
रकाबी.

कठिनी, (स्त्री०) कठिन+ङीप् । अक्षर लिखानेका साधन । एक द्रव्य । चाकमटी । खडियामट्टी.

कठोर, (त्रि०) कठ+ओरन् । कठिन । सख्त । पूर्ण । भराहुआ.

कठोरता, (स्त्री०) कठोर-तल्=कठोरत्वं-न० । कठोरपना । सख्तपन.

कठोरीभूत, (त्रि०) कठोर+च्वि+भू+क्त । कठोर सख्त-तेज । होगया । "कठोरीभूतः दिवसः" मध्याह्नसमय । दुपहिरका समय.

कड्, हर्ष करना-खुश होना । भ्वा० इदित् । उभ० सक० सेट् । कण्डति-ते । अकण्डीत्-अकण्डिष्ट.

कड्, भेदन करना-फाडना और रक्षा करना-बचाना । चुरा० इदित् । कण्डयति-ते, अचकण्डत्-त.

कड्, खाना । तुदा० पर० सक० सेट् । कडति । अकाडीत्-अकडीत्.

कडङ्गर, (न०) कडं गिरति-गृणाति वा अच्-नि० मुम् । म्वा और मूंग आदिकी जड । भुस । घास । तूडी.

कडङ्गरीय, (त्रि०) कडङ्गरं अर्हति । भुस भक्षण करनेवाले गौ आदि । तूडी खानेवाले पशु । डंगर.

कडार, (पु०) गड्-सींचना+आरन् । गको क होजाता है । पिङ्गल वर्ण । पील रंग । पीले रंगकी कोई चीज (त्रि०) दास । नौकर । गुलाम.

कड्ड्, कर्कश होना । सख्त होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । कड्डति । अकड्डीत्.

कण्, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कणति । अकाणीत्-अकणीत्.

कण्, भ्वा० प० । कणति । कणित । शब्द करना । चिल्लाना । विपत्तिमें जैसे । छोटा होना । जाना । पहुंचना.

कण, (पु०) कण्+अच् । धान्य आदिका अति सूक्ष्म अंश । कनियां । लेश । बहुत थोडा । कणजीरक । कणका जीरा (स्त्री०).

कणजीरक, (न०) कर्म० क्षुद्रजीरक । छोटा जीरा.

कणभक्ष, (पु०) भक्ष+अण् । उप० । काली चिडिया । कणाद मुनि । "कणभक्षक" यही अर्थ.

कणिक, (पु०) कणो विद्यतेऽस्य । अस्त्यर्थे ठन् । गोधूमचूर्ण (आटा) । मयदा । मैदा । बहुत छोटा हिस्सह । अभिमन्थरश्च (स्त्री०).

कणेर, (पु०) कण्+एर । कर्णिकार वृक्ष । कनेरका वृक्ष । वेश्या । हथिनी (स्त्री०).

कण्टक, (पु०) (न०) कटि+ण्वुल् । वृक्षकी नोक । कांटा । क्षुद्रशत्रु । रोमाञ्च । शरीरके रोमोंका खडा होना । मच्छीकी हड्डी । लग्नसे ४ था, १० वां और ७ वां स्थान

कमठ, (पु॰) कम्+अठन् । कछुवा । कच्छु । संन्यासि- योंका जलपात्र (न॰)

कमण्डलु, (पु॰ न॰) मण्डनं मण्डः कस्य जलस्य मण्डं लाति ला+कु । -जो पानीकी सजावटको ग्रहण करे । संन्यासिओंका जलपात्र । मट्टी वा लकड़ीका पात्र जो भिक्षुलोक हाथमें रखते हैं । तमाखा । चौपाओंका भेद.

कमन, (त्रि॰) कामयते । कम्+युच् । कामुक । कामी । अभिरूप । सुन्दर । अशोकवृक्ष.

कमनच्छद, (पु॰) कमनः सुन्दरः छदोऽस्य । जिसका पत्ता सुन्दर है । कङ्कपक्षी । बगुला.

कमनीय, (त्रि॰) कम्+अनीयर् । मनोहर । कामना- योग्य । चाहनेलायक । सुन्दर । बहुत उंचा.

कमल, (न॰) कं जलं अलति भूषयति । कम्+अल्+ अच् । जो जलको सजा देताहै । पद्म । कमल । जल । तांबा । दवा । औषध । मृगविशेष । सारसपक्षी (पु॰) । जल (न॰).

कमलाकर(षं)ण्ड, (न॰) कमलानां समूहः । कमल+ (ष)ण्ड । कमलसमूह.

कमला, (स्त्री॰) कमते [illegible] । अर्शआदित्वात् अच् । लक्ष्मी । कम्+अलच् । [illegible] । सुन्दरस्त्री.

कमलालया, (स्त्री॰) कमलं आलयो यस्याः । जो कम- लमें वास करती है । लक्ष्मी.

कमलासन, (पु॰) कमलं आसनं यस्य । जिसका आसन कमल है । ब्रह्मा.

कमलिनी, (स्त्री॰) कमलोंका समूह देशो वा । कमल+ इनि । कमलोंका समूह । कमलोंकी लता.

कमलोत्तर, (न॰) कमलं इव उत्तरं [illegible] । कुसु- [illegible] फूल.

कमितृ, (त्रि॰) कम्+तृच् । कामुक । कामी । [illegible] । [illegible].

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कम्बलिन्, (त्रि॰) कम्बल अस्ति अर्थे इनि कम्बलवाला ।-ली: (पु॰) वृषभ । बैल.

कम्बु, (पु॰ न॰) कम्+उ-बुक् । शङ्ख । [illegible] रंगबिरंगी । घोंघा.

कम्बुपुष्पी, (स्त्री॰) कम्बुः शङ्ख इव पुष्पं [illegible] फूल शङ्खके समान हैं । शङ्खपुष्पी.

कम्बोज, (पु॰) कवि+ओज । हाथीका [illegible] भेद । देशभेद । हिन्दुस्तानके उत्तरमें एक [illegible]

कम्र, (त्रि॰) कम्+र । भोगकी इच्छा करनेवा[illegible] मनोहर । सुंदर.

कर, (पु॰) कृ+अप् । कृ+अच् वा । हस्त । [illegible] राजाके लेनेयोग्य रिवाज या महसूल । [illegible] गजा । हाथीकी सूंड । हस्तनामी नक्षत्र ११ [illegible]

करक, (पु॰) कृ+वुन् । करंजवृक्ष । [illegible] वृक्ष । कचनालका वृक्ष । बकुलवृक्ष । [illegible] छोटी गोथरी । कमण्डलु (पु॰ न॰) । [illegible] वर्षोपल । ओला । गला.

करकङ्कणन्याय, (पु॰) कङ्कणशब्दस्य करभूषण[illegible] करशब्दप्रयोगस्य तत्संलग्नताबोधनार्थः [illegible] कंकणशब्द यद्यपि हाथके भूषणमेंही [illegible] कर "कङ्कण" कहनेसे हाथमें लगाहुआ ऐस[illegible] इस प्रकारकी मिसाल.

करकण्टक, (पु॰) करस्य कण्टक इव । [illegible] कांटा है । नख । नाखून । नौं.

करकाजल, (न॰) करकाया जलं (त[illegible] करकाम्भस्जल । ओलोंका बहा पानी.

करकाम्भस्, (पु॰) करकाया अम्भ इव [illegible] जिसका जल ओलोंके समान हो । [illegible] पेड़ । नरेल.

करग्रह, (पु॰) करस्य वधूकरस्य ग्रहण यत्र [illegible] जहां वर वधूके हाथको पकड़ता है । [illegible] पाणिग्रहण

करङ्क, (पु॰) कीर्यते द्रव्यं अत्र । कृ+अङ्[illegible] वस्तु फेंकी जाती है । पात्रभेद । [illegible] मस्तकगार । सपेदी खोपरी । [illegible] [illegible] "[illegible]" [illegible]

करकच्छप, (पु॰) कर इव [illegible] [illegible] हाथकी नाई हो । [illegible] [illegible]

[illegible]

ग्र, (पु०) कं शिरः तनं वा स्पन्दति याम् । करभका गले का स्थल । कर्णपुष्प.

ट, (पु०) कृ+अटन् । गजगण्ड । हाथीकी गाल । कौआ । कुसुम्भशाक । वह भी जो दुसरे दोहले कीजाय स्त्री०) टाप्

टिन्, (पु०) करटः गजगण्डः । तत्र करटमें इति । गजी । हाथी.

ण, (न०) कृ+ल्युट् । जिसकी सिद्धिमें साक्षात् (सि-द्ध करनेके) साधन । व्याकरणमें बहाताका कारकका भेद । कर्म । हेतु । क्षेत्र । इन्द्रिय । शरीर । "करणे स्फुट्" बना । वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न सिपाहका जातिभेद । कर-ण । कायस्थ (पु०)

णाधिप, (पु०) करणानां इन्द्रियाणां अधिपः । इन्द्रि-योंका स्वामी । जीव । आत्मा.

ण्ड, (पु०) कृ+अण्डन् । मधुचक्र । मधुमक्खियोंका छत्ता । खड्ग । तलवार । कारण्डव पक्षी । बांसआदिका रचाहुआ फूलोंका पात्र । डलिया । समुद्र । मंजूषा । कलेजेकी बीमारी । यकृतरोग (स्त्री०) टाप्.

तल, (पु०) ६ त० । हस्ततल । हाथकी तली । हाथ.

ताल, (न०) तल्-प्रतिष्ठा करना । आदर करना । तल-रना घञ् । करे तालो यस्य । जिसका ताल हाथपर हो । तालभेद । (करताल) वह हाथपर रखकरही बजा-या जाताहै । झांझ । मंजीरा । ढेली.

ताली, (स्त्री०) करौ ताल्येते यत्र । घञ् । ताड+घञ् ६ त० टाप् । ङ कोष । जहां हाथ बजाये जाते हैं । करतल-ध्वनि । करताल.

तोया, (स्त्री०) करस्य गौरीविवाहकाले शिवकरस्य तोयात् (अवहसमेतारित') सम्भूतं तोयं यस्या. । पार्व-तीके विवाहसमय महादेवके हाथसे बहेहुए पानीनेके पानीसे जिसका जल उत्पन्न होगया । कामरूपदेशमें अपने नामसे प्रसिद्ध एक नदी.

पत्र, (न०) करात् पतति । पत+ष्ट्रन् । हाथसे गिर-ताहै । करात । ककच । लकड़ीको फाड़नेहारा । आरा । "करौ एव पत्रं वाहनं यत्र" । हाथही जहां सवारीहै । जलक्रीड़ा । पानीकी खेल.

पत्रवत्, (पु०) करपत्रं पत्रतुल्योऽस्त्यस्य मतुप् । जिसके पत्तेकी जड आरेके समान हो । तालवृक्ष । ताड-दरख्त.

पर्ण, (पु०) करः हस्त इव पर्णं यस्य । जिसका पत्ता हाथकी नाई हो । भ्येंड । भिण्डातक्क्षुप । रक्त एर-ण्ड । लाल रेंड.

पल्लव, (पु०) करस्य हस्तस्य पल्लव इव । हाथके पत्तेकी नाई । अंगुली.

करपात्र, (न०) कर एव पात्रं जलनिक्षेपस्थान यत्र । जहां हाथही जल फेंकनेका पात्र है । हाथोंमें उठाकर आपसमें पानी देने या उछालनेकी खेल । कर्म० । हस्त-रूप पात्र । हाथका पात्र.

करपाल, (पु०) करं पालयति । पाल्+अण् । हाथको बचाताहै । खड्ग । तलवार । "ईहायां वन्द् टाप् भत इत्यं" । हाथकी लकड़ी । सोटा.

करपीडन, (न०) करस्य वधूकरस्य वरेण पीडनं ग्रहणेन मर्दनं यत्र । वधूके हाथका वरके हाथसे पकड़ कर मलना जहां हो । विवाह.

करवाल, (पु०) करस्य बालः शिशुरिव । हाथका मानो बच्चा है । नख । नाखून । नौं । "करे बालो गतिर्यस्य" । हाथमें जिसकी गति है । खड्ग । तलवार.

करभ, (पु०) कृ+अभच् । करे भाति । भा+क वा । मणि-बंधसे ले कनिष्ठातक हाथका भागदेश । कोहनीसे चीची-अंगुलीतक हाथका बाहिरला भाग । हाथीका बच्चा । ऊंट-का बच्चा । नखीनाम गन्धद्रव्य । ऊंट । "करभवलक-हारे" इति माघः.

करमर्दन (पु०) करं मृद्नाति । मृद्+ल्यु । करमका वृक्ष । करौंदा । हाथमलना.

करमाला, (स्त्री०) करः कराङ्गुलिपर्वं मालेव जपसंख्या-हेतुत्वात् । अंगुलिओंकी गांठें जपकी गिनतीका कारण होनेसे मानो मालाकी नाई हैं । अनामिकाके मध्यसे लेकर दहिनीओर तर्जनीके मूलपर्यन्त करमाला है । अंगुलिओं-में दस गांठोंकी माला जो जपसंख्याके लिये है.

करम्ब, (त्रि०) कृ+अम्बच् । मिश्रित । मिलाहुआ । मिश्रण । मिलना (पु०).

करम्बित, (त्रि०) करम्बो मिश्रणं जातोऽस्य इतच् । जिसका मेल हुआहै । मिश्रित । मिलाहुआ । जुड़ाहुआ । "मधुकरनिकरकरम्बित" जयदेव..

करम्भ, (पु०) येन जलेन रम्यते सिच्यते । रभ्+घञ्-मुम्च । दहीसे मिलेहुए सत्तू । जलसे सींचा जाताहै.

कररुह, (पु०) करे रोहति । रुह्+क । हाथमें उगताहै । नख । नखून । नौं.

करवाल, (पु०) करं वालयति रक्षति (पु०) वल्-पाल-न करना+अण् । हाथको बचाताहै । कृपाण । तरवार.

करवीर, (पु०) करं वीरयति । चुरा० । वीर-विक्रमक-रना-बल दिखलाना+अच् । हाथको बल देताहै । कृपाण । तरवार । कृपण । सूम । कंजूस । एक वृक्ष । श्मशान । मसान । एक देशका नाम । "द्वार्य कन्" । अर्जुन वृक्ष । कनेरका वृक्ष.

करशाखा, (स्त्री०) करस्य शाखेव । मानो हाथकी डाली है ।

करशीकर, (पु०) करस्य हस्तिहस्तस्य शीकरः । हाथीके सूंड़की बूंदें । हाथीकी सूंडसे निकलाहुआ पानीका कणा (कतरा).

करशूक, (पु०) करस्य शूकः सूचीव । मानो हाथकी सूई है । नख । नों.

करसूत्र, (न०) ६ त० । विवाहआदिके समय हाथमें मंगलके लिये बांधागया सूत । कंगन.

करहाट, (पु०) करं हाटयति दीपयति । हट्-प्रकाशकरना+णिच्+अण् । किरणको चमकाताहै । पद्म आदिका मूल (जड़) । मदनवृक्ष । पिण्डीवृक्ष । देशका भेद.

करहाटक, (पु०) करं हाटयति । हट्-चमकना+णिच्+ण्वुल् । हाथको प्रकाश कर्ताहै । मदनवृक्ष । ६ त० । हाथका भूषण । सुवर्ण । हाथका जेवर । सोना.

कराल, (त्रि०) कृ+अप् । करो विक्षेपः तस्मै अलति पर्याप्नोति । अल्-पूरा-होना+अच् । जो विक्षेप (भय आदि)के लिये पूरा है । विकट । भयानक । तेलका भेद (गर्जनतैल) । सर्जरसवाला तेल । तैलधुना (न०) । दन्तुर । नतोन्नत । ऊंचानीचा । ऊंचा (त्रि०) । अनन्तमूलनामी वृक्षका भेद.

करास्फोट, (पु०) करेण आस्फोटः शब्दो यत्र । जहां हाथकी आवाज होतीहै । वक्षःस्थल । छातीकी जगह । सिकोड़कर रक्खीगई एक भुजा । दूसरे हाथकी चोटसे शब्द करना । ताल ठोकना ३ त० । भुजाका ठोकना.

करिणी, (स्त्री०) करिन्+ङीप् । हस्तिनी । हथिनी । गौं । देवनामेद.

करिदारक, (पु०) करिणं दृणाति हिनस्ति । दृ+ण्वुल् । हाथीको फाड़ताहै । सिंह । शेर.

करिन्, (पु०) करः शुण्डादण्डः अस्ति इत्यर्थे इनिः । जिसका सूंडका डंडा हो । हस्ती । हाथी.

करीर, (पु०) कृ+ईरन् । घट । घड़ा । वंशाङ्कुर । बांसकी पुट । शिर्टी । करीरका वृक्ष । हस्तिदन्तमूल । हाथीके दांतकी जड़ (स्त्री०).

करीष, (पु० न०) कृ+ईषन् । शुष्कगोमय । सूखा गोबर । सूखा गोबर.

करुण, (पु०) कृ+उनन् । करुणनामी रसका भेद । करुणनामी वृक्षका भेद । दैन्य । अनय । दुःखित । करुणावाला (दयालु) (त्रि०) दया (स्त्री०) टाप्.

करुणविप्रलम्भ, (पु०) करुणरसान्वितो विप्रलम्भः । करुणरसवाला विरहेण । अर्थात्स्त्रीका शृङ्गाररसमें विप्रलम्भभेद । जिसमेंकि प्रेमका अनुभव करना.

करुणामय, (त्रि०) करुणा+मयट् प्रचुरे मयट् । बड़ी दयावाला । करुणामयी (स्त्री०)

करूष, (पु०) कृ+ऊष । देशभेद.

करेणु, (पु०) कृ+एणु । गज । हाथी । हस्तिनी । हथिनी (स्त्री०).

करोट, (पु० न०) के शिरसि रोटते । रुट्-चमकना+अच् । सिरपर चमकती है । सिरकी हड्डी । खोपड़ी । "करोटी" यही अर्थ.

कर्क्, हसना । पर० अक० सेट् । कर्कति । अकर्कीत्.

कर्क, (पु०) करोति कृणोति क्रियते वा । कृ+क । तस्य न ह्रस्वम् । वह्नि । आग । चित्ता घोड़ा । दर्पण । शीशा । कुलीर । केकड़ा । कर्कटवृक्ष । कण्टक । मेषआदिसे चौथी राशि । घट । घड़ा । (पु० स्त्री०) वा ङीप्.

कर्कट, (पु०)कर्क+अटन् । छोटा आवला । कडुआ । कर्करेटपक्षी । जलजन्तुका भेद । कुलीर । केकड़ा । चौथी राशि । शाल्मलीवृक्ष । सिम्बलका पेड़ । "स्वार्थे कन्" कर्कटक । यही अर्थ.

कर्कटशृङ्गी, (स्त्री०) कर्कट इव शृङ्गं यस्याः । जिसका सींग केकड़ेकी नांई हो (काकड़सिंगी) वृक्षभेद । "स्वार्थे कन्" कर्कटशृङ्गिका.

कर्कन्धू, (स्त्री०) कर्कं कण्टकं दधाति । धा+कू । नि० मुम् (जो कांटेको धारण कर्ताहै) । बदरीफल । बेर । वृक्षविशेष । उनाव.

कर्कश, (पु०) करे कशति । कश्-आवाज करना । अच् । पृषो० । कर्कः काठिन्यं अस्त्यर्थे श । कृ-फेंकना+क्विप् कर् । कश्-मारना +अच्-कर्म० वा कर्कश (कमेला) खांसीको दूरकरनेहारा । इक्षु गन्ना तरवार । तरसकी तेजहुना । कठोर । साहसी । क्रूर । निर्दय । बेरहम । दारसर्पवाला (त्रि०).

कर्कसार, (न०) कर्कं हासं श्वेतता सारति गच्छति । सृ+ अण् । करम्भ । दधिसक्तु । दहीसे मिलाहुआ आटा ■ मास.

कर्कारु, (पु०) कर्कं हास श्वेतता ऋच्छति । ऋ+उण् । कूष्माण्ड । पेठा.

कर्कोट, (पु०) कर्क+ओट । सांपका भेद । नागराज । "स्वार्थे कन्" कर्कोटकनाम सांप जिसे दृष्टिविष (देखते हीमें जिसकी जहर चढ़जातीहै) कहतेहैं । विषका वृक्ष । ककोड़ानामी दरख्त.

कर्चूर, (पु०) कर्च्+ऊर । पृषो० । (कचूर) स्वर्ण । हरिताल

कर्द, पीडाकरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कर्दति । अकर्दीत्.

कर्ण, फाड़ना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कर्णयति-ते । अचकर्णत्-त "आ उपसर्गके साथ इसका अर्थ सुन लेना है" । आकर्णयति । आकर्णयते.

कर्ण, (पु०) कृ+नन् । कर्णं पाटनम् । अप् । शब्द ग्रहणकरनेके लिये जो फैलाजाताहै । कृ+नन् । वा । श्रोत्रेन्द्रिय । कानकी इन्द्रिय । अंगदेशका राजा । कुन्तीका पुत्र । सूर्यका बेटा । तीन गुणकारका क्षेत्र । अरित्र । बेडीके चलानेकी लकडी । चप्पा.

कर्णकीटी, (स्त्री०) कर्णे गन्त्र कीटः । अल्पार्थे ङीप् । छोटाकीडा । कनखजूरा.

कर्णगूथ, (न०) ६ त० कर्णमल । कानकी मैल.

कर्णजलूका, (स्त्री०) कर्णे जलूकेव । कानखजूरा । कनखजूरा । "कर्णजलौकम्".

कर्णजाह, (न०) कर्णस्य मूलं । कर्ण+जाहच् । कर्णमूल । कानकी जड.

कर्णधार, (पु०) कर्णं नौकाचालनदण्डं धारयति । धृ+णिच्+अण् । जो बेडी चलानेके दण्ड (चप्पा या डांड) को पकडताहै । नाविक । मल्लाह.

कर्णपाली, (स्त्री०) कर्णं पालयति । पाल्+अण् । कानका पाला । एक प्रकारका कानका भूषण । बाली । बाला.

कर्णपूर, (पु०) कर्णं पूरयति । पूर्+अण् । जो कानको भरताहै । कर्णाभरण । कानका भूषण । नीलोत्पल । नीलाकमल । शिरीषका वृक्ष । अशोक वृक्ष । इनके फूलोंसे भीके कान भूषित किये जातेहैं । "कर्णपूरक".

कर्णवर्जित, (त्रि०) ३ त० । बधिर । बहिरा । जिसको कान नहीं । सांप (पु०).

कर्णवेध, (पु०) विध्+घञ् । ६ त० । वह संस्कार जिसमें कानोंको वेधन करते हैं.

कर्णवेष्ट, (पु०) कर्णौ वेष्टते अनेन । जिससे कान घेरे जाते हैं । कुण्डल । बाला । "ण्वुल्" कर्णवेष्टक । इसी अर्थमें । "भावे ल्युट्" कर्णावरण (कानका पडदा) (न०).

कर्णशष्कुली, (स्त्री०) कर्णस्य शष्कुलीव । कर्णगोलक । कानके बीचका आकार । कानका छेद जो पतली झिल्लीसे ढका हुआ होता है, जिसपर वायुके लगनेसे शब्द सुनाई देताहै.

कर्णाट, (पु०) रामनाथसे लेके श्रीरंगतक देश । काव्यकी रीति (स्त्री०) ङीप्.

कर्णि, (पु०) कर्ण+इन् । शरभेद । तीर । कष्टकारिका ।

कर्णिका, (स्त्री०) कर्ण+ण्वुल् । करिहस्ताग्र । हाथीके सूंडकी नोक । हाथके बीचकी अंगुली (मध्यमा) । कानका भूषण । पद्मबीजकोष । छेदनी । कुट्टिनी । कमला । अग्निमन्थ वृक्ष । अजशृङ्गी वृक्ष.

कर्णिकार, (पु०) कर्णिकां ऋच्छति । ऋ+अण् । उप० (मंजियारी) वृक्षभेद । कनेरका दरख्त । कनेरका फूल । छोटा सन्दल.

कर्णीरथ, (पु०) कर्णैः सामीप्येन अस्ति अस्य कर्णौ । जिसके पास कान रहे । रथेगम्यः । तत्र ई शोभा यस्य । जिसकी शोभा कन्धेपर हो । स चासौ रथो रथतुल्यं वाहनं कर्म० । ऐसी रथके समान सवारी । कंधेपर उठाई जानेवाली सवारी । पालकी । डोली आदि.

कर्णीसुत, (पु०) कर्ण्याः कंसमातुः सुतः । कंसकी माका बेटा । कंसासुर । कंसराक्षस.

कर्णेजप, (पु०) कर्णे जपति । जप्+अच् । सप्तम्या अलुक् । कानमें धीरेसे बोलता है । सूचक । चुगलखोर । पिशुन । खल । नीच । बुरीसलाह देनेवाला.

कर्त्, शिथिल होना-ढीला होना । चुरा० उभ० अक० सेट् । कर्तयति-ते । अचकर्तत्-त.

कर्तन, (न०) कृती-काटना । कृत+ल्युट् । छेदन । काटना । रुईके ढेरसे सूत निकालनेका व्यापार । कातना.

कर्तरी, (स्त्री०) कृत+घञ् । कर्तं राति । रा+क-ङीप् । कृपाणी । कटारी । कत्तरी । केश आदिके काटनेका साधन । कैंची । अस्त्र.

कर्तव्य, (त्रि०) कृत्+तव्य । करनेके लायक । "पुत्रः सखा वा भ्राता वा पिता वा यदि वा गुरुः । रिपुस्थानेषु वर्तन्तः कर्तव्या भूतिमिच्छता".

कर्तृ, (त्रि०) कृ+तृच् । कारक । करनेहारा । व्याकरणमें कहागया दूसरे कारकोंका प्रेरक । क्रियाका आश्रय । स्वतन्त्र (सरसुखत्यार) । चतुरानन । ब्रह्मा (पु०).

कर्तृका, (स्त्री०) कृत+तृच्-ह्रस्वभावः । संज्ञायां कन् । छोटी तरवार । चाकू.

कर्द, कुत्सित शब्द करना । बुरी आवाज करना । पेटकी आवाज करना । भ्वा० पर० अक० सेट् । कर्दति । अकर्दीत्.

कर्द, कर्द+अच् । कर्दम । कीचड.

कर्दम, कर्द+अम् । पङ्क । कीचड । पाप । ब्रह्माकी छायामें उत्पन्नहुआ प्रजापतिविशेष । मांस (न०) कीचडवाला (त्रि०) "कर्दमक" । एक प्रकारके धान.

कर्पट (पु० न०) कृ+कर्मणि विच् । पट्-पटः । पुराना कपडा । चीथडा । मैला कपडा । "करस्य पटः" शाक० । गरमी आदि पोंछनेके लिये हाथमें रक्खाहुआ कपडेका टुकडा । गेरीरंगका कपडा । रुमाल । उपर्णा.

कर्पर, (पु०) कृप्+अरन् । कपाल । खोपरी । कटाह । एक प्रकारका शस्त्र । अंजीरका वृक्ष । कडाही । शिरकी खोपरी.

कर्परांश, (पु०) कर्परस्य अंशः । कर्परका अंश । खापरा । ठीकरा । रेता । कंकर.

कर्पास, (पु० न०) कृ+पास । वस्त्रयोनि । कपडेका कारण । कपास । रूई । वृक्षभेद । "कर्पासी".

कर्पूरमणि, (पु०) कर्पूरवर्णो मणिः । कपूरके रंगका मणि । एक रत्नविशेष । [illegible] । "कर्पूरमणि".

कर्मकर, (पु०) कर्म करोति । [illegible] । भृत्य । नौकर । नौकरी करनेवाला (त्रि०).

कर्मकाण्ड, (पु०) कर्मणां समूहः । [illegible] । कर्मसमूह । कर्मको प्रतिपादन करनेहारा वेदका भाग.

कर्मकार, (पु०) कर्म+कृ+अण् । लोहकारक । लोहार । [illegible] । [illegible] बिना काम करनेवाला । बेगार । [illegible].

कर्मक्षेत्र, (न०) कर्मणां [illegible] क्षेत्रम् । काम करनेका योग्य स्थान । भारतवर्ष । हिन्दुस्तान.

कर्मठ, (त्रि०) कर्मणि कुशलः । कर्मन्+ठ । [illegible] । काम करनेमें [illegible].

कर्मण्य, (त्रि०) कर्मणि साधुः । कर्मन्+यत् । काममें [illegible] । काममें चतुर । कामके लायक । वेतन । [illegible] (स्त्री०).

कर्मदेवता, (स्त्री०) कर्मणा [illegible] देवता । काम करके देवता होनेवाला । [illegible] देवतनको प्राप्त हुआ । [illegible] और [illegible] पदको प्राप्त जो [illegible] वे कर्मदेवता कहलाते हैं.

कर्मधारय, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] "[illegible]"

कर्मन्, (न०) कृ+मनिन् । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कर्मफल, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible]

कर्मभू, (स्त्री०) [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । जैसे [illegible] [illegible] [illegible].

[illegible] (स्त्री०) ६ त० । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

[illegible] (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । ([illegible]) [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] [illegible]

कर्मव्यतिहार, (पु०) वि+अति+हृ+घञ् । कर्मणः व्यतिहारः ३ त० । आपसमें एकजातिका काम कर । कामका बदलना । जैसे आपसमें ताडन करैहैं.

कर्मशूर, (पु०) कर्मणि शूरः कामनें बहादुर । जो [illegible] प्रारम्भकियेभये कामको समाप्त करनेहारा । [illegible] कामकरनेहारा.

कर्मसङ्ग, (पु०) कर्मणि सङ्गः आसक्तिः । सञ्ज्+घञ् । मैं कर्ता हूं, इससे यह फल भोगूंगा इसप्रकार [illegible] चेत । काममें लगना.

कर्मसंन्यासिन्, (पु०) जो वेदविहित कर्मोको [illegible] त्याग करताहै । सम्+नि+अस्+णिनि । सब कर्मोको [illegible] नेहारा यती.

कर्मसाक्षिन्, (पु०) [illegible] [illegible] । ६ त० । सूर्य । चन्द्र । यम । काल । पृथिवी । तेज । जल । [illegible] आकाश । ये सौ शुभ और अशुभ कर्मके साक्षी (गवाह)

कर्मसिद्धि, (स्त्री०) ६ त० । इष्ट और अनिष्टके [illegible] प्राप्ति.

कर्माध्यक्ष, (पु०) ७ त० । क्रियासाक्षी । कामके [illegible] [illegible] । किये और न कियेको देखनेवाला.

कर्मार, (पु०) कर्म ऋच्छति । ऋ+अण् । [illegible] लोहार । सरमान आदि जाति । एकप्रकारका [illegible] । [illegible] भेद.

कर्मिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन कर्मी । इष्टन् [illegible] । [illegible] कामकरनेवाला । क्रियादक्ष जन । काममें चतुर । [illegible] लगाहुआ.

कर्मेन्द्रिय, (न०) कर्मणां क्रियाणां साधनभूतं इन्द्रिय [illegible] क्रियाको सिद्ध करनेवाली इन्द्रिय । [illegible] इनसे पकड़ना चलना आदि क्रिया सिद्ध होती है.

कर्व्, अहंकार करना । भ्वा० प० अक० सेट् । [illegible] [illegible].

कर्वट, (पु०) कर्व्+अट । सौसौ गांवमें [illegible] [illegible] बड़ा गांव आसपासके बेगोंद गांव [illegible] [illegible] [illegible] । पुर । नगर । [illegible] [illegible]

कर्बुर, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०)

कर्ष्, [illegible] । भ्वा० प० सक० सेट् । [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (न०).

कर्ष, (पु०) (न०) कृष्+अच् । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible].

कर्षक, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

कर्णफल, (पु०) कर्णे तन्मात्रं फलं अस्य । जिसका फल सोलहमासेका हो । विभीतक वृक्ष । बहेडा । आमलकी । (स्त्री०) टाप्.

कर्णिणी, (स्त्री०) वृष्+णिनि । क्षीरिणीवृक्ष । रास्नौ । कर्णिका । घोडेकी लगामका लोहा.

कर्हि, (अव्य०) कस्मिन् काले । किम्+र्हिल् कादेशः । किससमय । कब.

कर्हिचित्, (अव्य०) कर्हि+चित् । किसीसमय.

कल्, गिनती करना । भ्वा० आवाजकरना । अक० आ० आत्म० सेट् । कलते । अकलिष्ट.

कल्, गति-जाना-गिनना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कलयति-ते । अचीकलत्-त.

कल्, प्रेरणकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कालयति-ते । अचीकलत्-त.

कल, (पु०) कल्-शब्दकरना-पम्-अजादिः । मधुराव्यक्तशब्द । मीठी और धीमी आवाज । सालवृक्ष । अजीर्ण । बहु-व्रमी.

कलकण्ठ, (पु०) कलः कलान्वितः कण्ठोऽस्य । जिसके गलेमें मीठी आवाज हो । कोकिल । कोइल । हंस । पारावत । कबूतर । "स्त्रियां ङीप्" कलकण्ठी.

कलकल, (पु०) कलप्रकारः प्रकारे द्वित्वम् । कोलाहल । रौला । हौरा.

कलघोष, (पु०) कलो घोषो यस्य । जिसकी आवाज मीठी हो । कोइल.

कलङ्क, (पु०) कलयति क्विप् । कल् चासौ अङ्कयति । चिह्न । निशान । अपवाद । तामाआदि धातुओंकी मल (कलकन) अपयश । बेइज्जती । दाग.

कलङ्ग, (पु०) केनेतिशब्दं लङ्गति आचरे । जिससे लिपटेहुए अस्त्रोंसे मारागया मृग (हरिण वा पशुविशेष) । पक्षी । तामकूट । दशरथपक्षीका मांस.

कलत्र, (न०) गड्+त्रन् । गस्य कः डस्य लः । नितम्ब । चूतड । अपनी स्त्री । भार्या.

कलधौत, (न०) कलः मलः धौतः अस्य । जिसका मल धोयागया । सोना । चांदी । "कलधूतम्".

कलध्वनि, (पु०) ६ ब० । कोकिल । कोइल । कबूतर । मोर । मीठा और धीमा शब्द.

कलन, (पु०) कल्+ल्यु । वेतसवृक्ष । बेंतका वृक्ष । "भावे ल्युट्" चिह्न । दाग । एक महीनेका गर्भ । पहना । शिक्षा । "कलनात् सर्वभूतानाम्" इति स्मृतिः.

कलभ, (पु०) कल्+अभच् । पांच वर्षका हाथीका बच्चा । धतूरेका पेड.

कलम, (पु०) कल्+अम । लेखनी । चोर । धान्यका भेद.

कलम्ब, (पु०) कड्+अम्बच् । डस्य लः । नालिका शाक । कलमीशाक । धार । तीर.

कलरव, (पु०) रु+अप्=रवः । कलो रवोऽस्य । मीठी आवाजवाला । कोइल । कबूतर । मीठा और धीमाशब्द.

कलल, (पु० न०) कल्+अलच् जरायु नामक गर्भके ढाङनेवाला चमडा.

कलविङ्क-ङ्ग, (पु०) कलं यथा(रु)ते । वकि (वगि) जाना । अच् पृषो० अतङ्लम् । चटक । चिडिया । पक्षी । श्वेतचामर । इन्द्रयव । इन्द्रजौ.

कलश, (पु०) कलं शब्दं शवति । शु+जाना+ड । घट । घडा । गागर । चौंतीस सेरका माप.

कलह, (पु०) (न०) कलं हन्ति । हन्+ड । विवाद । झगडा । युद्ध । लडाई । अतिकोप । तलवारका मियान.

कलहंस, (पु०) कलप्रधानो हंसः । मीठी आवाजवाला हंस । राजहंस । कादम्बहंस । राजाओंमें उत्तम । परमात्मा । तेरह अक्षरोंके पादवाला छन्दोभेद.

कला, (स्त्री०) कल्+अच् । चन्द्रमाके मण्डलका १६ वां भाग । दियेगये धनका लाभ होने योग्य अंश । सूद । समयका परिमाण । ज्योतिषके अनुसार राशीके तीस भागका साठवां भाग । नौका । बेडी । कपट । विभूति । सामर्थ्य । संख्या । गिनती । मरीचिकी स्त्री । चौसठ प्रकारका नाना बजाना आदि.

कलाद, (पु०) कलां अंशं आदत्ते । आ+दा+क । अधाको लेतादे । स्वर्णकार । सुनार (वह भूषण बनानेके लिये दियेगये धनमेंसे अवश्य कोई न कोई अंश लेही लेताहै).

कलानिधि, (पु०) कला निधीयन्तेऽस्य । कला+नि+धा+कि । चन्द्रमा.

कलानुनादिन्, (पु०) कलं अनुनदति । णिनि । जो बार २ शब्द करताहै । भ्रमर । भौंरा । चटक । चिडिया.

कलाप, (पु०) कलां आप्नोति । कला+आप्+अण् । समूह । मोरकी पूंछ । अलङ्कार । मेखला । तर्कश । चांद । व्याकरणविशेष । एकपाँव.

कलापक, (पु०) कलापस्क । स्वार्थे कन् । कलापके अर्थमें । चार श्लोकका एक वाक्य.

कलापिन्, (पु०) कलापो बर्होऽस्यास्तीति । इनि । मयूर । मोर । मोरपंखके समान धारवाला वट (बोड) । कल+आप्+णिनि । कोकिल । कोइल.

कलाभृत्, (पु०) कलां बिभर्ति । कला+भृ+क्विप् । चन्द्र । चांद.

कलावत्, (पु०) कला+अस्त्यर्थे मतुप् मस्य वः । चन्द्र । कलावाला (त्रि०).

कपलित, (त्रि०) कवलं ग्रासं करोति । णिच्+क्त । ग्रास किया गया । खायागया । फैलाहुआ । व्याप्त.

कपाट, (न०) के वातं पटति । पट्-वेष्टनकरना । घेरलेना । अण् । दर्वाजेको रोकनेवाला काठका टुकडा । किवाड । "कवाटी".

कवि, (पु०) कु+इ । शुक्र । वल्मीकिमुनि । भास्कर । काव्यकर्ता । ब्रह्मा । पिछला अगला सब जाननेहारा । सूक्ष्म अर्थके देखनेहारा । पण्डित (त्रि०) । खलीन । लगाम कवी वा कवि (स्त्री०).

कविका, (स्त्री०) कु+इ । संज्ञायां कन् । खलीन । जो लोहेका बनाहुआ घोडेके मुंहमें लगाम जोडनेके लिये दियाजाताहै.

कवोष्ण, (न०) ईषदुष्णं । को' कवादेशः । ईषदुष्णस्पर्श । थोडा गर्महुआ.

कव्य, (न०) कु+यत् । पितरोंके उद्देशसे दियागया अन्नादि.

कश्,-शब्दकरना । भ्वा० अक० पर० सेट् । कशति । अकशीत्-अकाशीत्.

कशा, (स्त्री०) कश्+अच् । घोडे आदिको चलानेके लिये चोटका साधनपदार्थ । कोडा । चाबुक.

कशिपु, (पु०) कश्+कु । नि० । भक्त । अन्न । वस्त्र । कपडा । भोजनाच्छादन । शय्या । बिछौना । "सत्यां क्षितौ किं कशिपोः प्रयासैः" भागवतम्

कशेरु, (पु० न०) कं शृणाति । शॄ हिंसाकरना । उ एरुआदेश । पीठकी हड्डी । मेरुदण्ड । मध्यदण्ड । जलमें उपजा मूलभेद.

कश्मल, (न०) कश्+कल-मुट् च । मूर्च्छा । मोह । पाप । मैल (स्त्री०).

कश्मीर, (पु०) कश्+ईरन्-मुट् च । कश्मीरनामी देश.

कश्मीरज, (पु०) कश्मीरे जायते । जन्+ड । कुङ्कुम । केसर । "कश्मीरजन्मा".

कश्यप, (पु०) कश्यं मद्यं पिबति । पा+क । मरीचिनामसे प्रसिद्ध ब्रह्माके पुत्रका बेटा । कश्य (मद्य) के पान करनेसे कश्यप प्रसिद्ध हुआ । मुनिभेद । मृगभेद । मत्स्यभेद.

कष्,-मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कषति । अकषीत्-अकाषीत्.

कष, (न०) कष्+अच् । कषौ । कसौटी । पत्थरका भेद.

कषण, (पु०) कष्+ल्यु । अपक्व । कचा । "भावे ल्युट्" घिसना । गुजली करना (न०).

कषाय, (पु०) कषति कण्ठं । कष+आय । स्योनाकवृक्ष । राग । क्रोध । अन्तःकरणका दोष । कषइला । रसभेद । कषैला । लाल पीला मिलाहुआ रंग । कषाय । काला (पु०).

कषायित, (त्रि०) कषायो रक्तपीतवर्णो जातोऽस्य इतच् । जिसका लाल पीला रंग होगयाहै । कसैलवाला.

कषायिन्, (त्रि०) कष्-अस्ति अर्थे, इनि । कषायवाला । कसैला । लाल रंगसे रंगाहुआ । संसारमें मन लगानेवाला पुरुष आदि (पु०) कई एक वृक्षोंका नाम । खजूर आदि.

कष्ट, (न०) कष+क्त । पीडा । व्यथा । दर्द । पीडावाला । जंगल (त्रि०).

कस्,-तेजकरना-औरजाना । अदा० इदित् आत्म० सक० सेट् । कंस्ते । अकंसिष्ट.

कसनोत्पाटन, (पु०) कसनं कासरोगं उत्पाटयति । ल्यु । वासकवृक्ष । "वासकः कासनाशकः" यह वैद्यककी उक्ति है.

कसेरु, कस+ऊ एरुआगमः । शूकरका पियारा जलकन्दभेद । एक प्रकारका घास । जिसका मूल सूअर खाते हैं.

कस्तीर, (पु० न०) कं जलं तीरयति । अच् । नि० सुट् । रांगा । रङ्ग धातु.

कस्तूरिका, (स्त्री०) कस्+ऊर-सुट् च । ङीप् । कस्तूरी । स्वार्थे क ह्रस्वे अत इत्वं । मृगमद । मृगनाभि.

कह्लार, (न०) के जले ह्लादते । ह्लाद्+अण् । पृषो० दस रः । चिराकमल.

कांस्य, (न०) कंसेन निर्व्यादितं । कंस+ष्य । एकप्रकारका बाजा । पानपात्र । पीनेका पात्र । ताम्बे और रांगके मेलका बनाहुआ उपधातु । "स्वार्थे कन्" कांस्यक (वही अर्थ).

कांस्यकार, (पु०) कांस्य+कृ+अण् । उप० । कसेरा । जातिभेद.

काक, (पु०) कै-शब्दकरना । कन् तस्य नेलम् । अपने नामसे प्रसिद्ध पक्षी । कौआ । खल । लंगडा.

काकचिञ्चा, (स्त्री०) जिसके फलका सिरा कौएके रंगका हो । गुञ्जा । रत्ती । पृषो० "काकचिञ्चि," "काकचिञ्ची" "काकचञ्चा" वही अर्थ.

काकच्छद, (पु०) काकस्य छदः पक्ष इव छदो यस्य । कौएके परके समान जिसका पर हो । खञ्जनखग । ममोला.

काकतालीय, (न०) काक (कौए) के गमनसमय अकस्मात् तालफलका गिरना । एक प्रकारका न्याय । अचानक होजानेवाली बात । अतर्कितसम्भव व्यापार । छ (ईय) प्रत्ययः.

काकतिन्दुक, (पु०) काकवर्णः तिन्दुकः । काकपीलुका । कुचला.

काकपक्ष, (पु०) काकस्य पक्ष इव । कौएके परके समान मस्तकके दोनों भागमें एक प्रकारकी केशरचना । बालकोंकी शिखाको काकपक्ष कहतेहैं । कांकोरिआं । पटे.

काकपुष्ट, (पु०) काकेन पुष्टः । कौएसे पालागया । कोकिला । कोइल । कोइल । कौएके बिलसे कौएके बच्चेको दूरकर उसके स्थानमें अपने बच्चेको रखदेतीहै, और काकी अपने बच्चेकी बुद्धिसे उसे पालती है, यह प्रसिद्ध है.

कपलित, (त्रि०) कपलं प्राप्तं करोति । कित्+क्त । ग्रास किया गया । खायागया । फैलाहुआ । ग्रस्त.

कपाट, (न०) के वातं वहति । वह्-नेटनकरना । घेरलेना । अण् । दर्वाजेको रोकनेवाला काटका टुकडा । किवाड । "कपाटी".

कपि, (पु०) कु+इ । हुक । वाल्मीकिमुनि । भास्कर । काव्यकर्ता । ब्रह्मा । पिछला अगला सब जाननेवाला । सूक्ष्म अर्थके देखनेहारा । पण्डित (त्रि०) । सन्तीन । लगाम कवी वा कवि (स्त्री०).

कपिका, (स्त्री०) कु+इ । पेहलाँ कन् । खलीन । जो लोहेका बनाहुआ घोडेके मुंमे लगाम जोडनेके लिये दियाजाताहै.

कपोष्ण, (न०) ईषदुष्णं । कोः कवादेशः । ईषदुष्णस्पर्श । थोडा गर्महुआ.

कव्य, (न०) कु+यत् । पितरोंके वहेशसे दियागया अन्नादि.

कश्,-शब्दकरना । भ्वा० अद० पर० सेट् । कशति । अकशीत्-अकाशीत्.

कशा, (स्त्री०) कश्+अच् । घोडे आदिको चलानेके लिये घोडका साधनपदार्थ । कोडा । चाबुक.

कशिपु, (पु०) कश्+उ । नि० । भक्त । अन्न । वस्त्र । कपडा । भोजनाच्छादन । शय्या । बिछौना । "सतो शिनी [illegible] कशिपोः प्रयासै" भागवतम्.

कशेरु, (पु० न०) के शणाति । शृ हिंसाकरना । उ प्रत्ययः । पीठकी हड्डी । मेरुदण्ड । मध्यदण्ड । जलकी तरका तृणभेद.

कश्मल, (न०) कश्+कल मुट्च । मूर्छा । मोह । पाप । मैल (स्त्री०).

कश्मीर, (पु०) कश्+ईरन् मुट्च । कश्मीरनामकी देश

कश्मीरजा, (पु०) कश्मीरे जायते । जन्+ड । कुंकुम । केसर । "कश्मीरजन्मा".

कश्यप, (पु०) कश्यं मद्यं पिबति । पा+क । मरीचिनामसे प्रसिद्ध ब्रह्माके पुत्रका बेटा । कश्य (मद्य) के पान करनेसे कश्यप प्रसिद्ध हुआ । मुनिभेद । मृगभेद । मत्स्यभेद

कष्,-मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कषति । अकषीत्-अकाषीत्.

कष, (न०) कष्+अच् । कसौटी । कसौटी । कषाय भेद

कषण, (पु०) कष्+ल्युट् । कच्चा । कचा । "कषणे मधुरं" विलास । मुखकी कसन (न०)

कषाय, (पु०) कषति कण्ठं । कष्+आय । कसैलापन । रस । गोंद । आदि कसनेका देश । कवाथ । काढा । कसैला । कसा पीला मिलाहुआ रंग । सुगन्ध । लाल (पु०).

कषायित, (त्रि०) कषायो रसः संजातोऽस्य । इतच् । जिसका रस पीला रंग होगयाहै । [illegible].

कषायिन्, (त्रि०) कष्-अस्य अर्थे इनि । कषायवाला । कसैला । लाल रंगसे रंगाहुआ । [illegible] पुरुष आदि (पु०) वहाँ एक [illegible] । [illegible].

कष्ट, (न०) कष+क्त । पीडा । व्यथा । दर्द । [illegible] । संकट (त्रि०).

कस्,-गमनकरना-चमकना । भ्वा० [illegible] सेट् । [illegible] । आर्षगिर.

कसमोत्पाटन, (पु०) [illegible] । [illegible] "कमला: [illegible]" यह वेदकी श्रुति है.

कसेरु, [illegible] । [illegible] एक प्रकारका घास । जिसका मूल मधुर होताहै

कर्णीर, (पु० न०) [illegible] । [illegible]

कस्तूरिका, (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

कह्लार, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

कांस्य, (न०) [illegible] । [illegible] "[illegible]" [illegible] ([illegible])

कांस्यकार, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । जातिभेद.

काक, (पु०) [illegible] । [illegible]

काकशिखा, (स्त्री०) [illegible] "[illegible]" "[illegible]" "[illegible]" [illegible]

काकपद, (पु०) [illegible]

काकतालीय, (न०) [illegible]

काकशिशुक, (पु०) [illegible] । कुक्कुट

काकपक्ष, (पु०) [illegible] । [illegible]

काकपुच्छ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] है, यह कोकिल है

काकमीरु, (पु०) काकात् भीरुः । पेचक । उल्लू.

काकली, (स्त्री०) कल्+इ । ईषत् कली । कादेशः वा ङीप् । सूक्ष्म मधुरशब्द । धीमी मीठी आवाज.

काकलीरव, (पु०) काकली मधुराव्यक्तो रवो यस्य । मीठे धीमे शब्दवाली । कोइल । कोकिल.

काकाक्षिगोलकन्याय, (पु०) जैसे कौएका एक नेत्र दोनों गोलकमें घूमजाताहै, वैसे जहां एकपदार्थका दोनोंसे मेल हो वह दृष्टान्त । उभयसम्बन्ध दृष्टान्त.

काकार, (त्रि०) कं-जलं आकिरति । जल सिंचारनेवाला । पानी सींचनेवाला.

काकिणी, (स्त्री०) कक्-चपल होना, तं अणति अण् पृषो० । पणका चौथा अंश बीस कौडी । एक दमडी । एकमासेका चौथा भाग । "काकिनी" यही अर्थ.

काकी, (स्त्री०) काक+ङीप् । कौएकी स्त्री । कौएका रंग होनेसे वायसीलता । एक प्रकारकी बेल । कौनी.

काकु, (स्त्री०) काक+उण् । शोक और भय आदिसे शब्दका बदलना । अलंकारमें प्रसिद्ध विरुद्ध अर्थकी कल्पना करने-द्वारा नञ्आदि शब्द । वक्रोक्ति.

काकुत्स्थ, (पु०) काकुत्स्थः सूर्यवंशीयः नृपभेदः । तस्या-पत्यं अण् । सूर्यवंशी राजा । इक्ष्वाकु राजा । श्रीरामचन्द्र.

काकुद, (न०) काकुं ध्वनिभेदं ददाति । धत्ते । दा+क । तालु । जिह्वा इन्द्रियका आश्रयस्थान । तालुआ.

काकेष्ट, (पु०) काकानां इष्टः । कौओंका पियारा । निम्ब । नीम । इसका फल कौओंको पियारा लगताहै.

काकोदर, (पु०) कुत्सितं अकति । अक्+अच् । कोः कादेशः । काकं ईषद् गतिमत् उदरं यस्य । जिसका पेट धीरे चलताहै । सर्प । सांप.

काकोल, (पु०) कक्-चपलहोना-स्वार्थे णिच्-ओल । द्रोणकाक । पहाडीकौआ । सांप । एक प्रकारका सूअर । नरकभेद । विषभेद (पु० न०) । वायसी । कौनी । अश्वगंधा (स्त्री०).

काक्ष, (चाहना) भ्वा० उभ० इदित्-सक० सेट् । काङ्क्षति । काङ्क्षते । अचकाङ्क्षीत् । अचकाङ्क्षिष्ट.

काक्ष, (त्रि०) ईषत् कुत्सितं अक्षि यस्य कोः कादेशः । जिसकी आंख थोडीसी बुरी हो । बुरी आंखवाला जन । थोडासा औरके कोनेमें देखना (न०).

काक्षीव, (पु०) ईषत् क्षीवति अस्मात् । क्षीव्+घञ् । कादेशः । जिससे थोडासा मस्त होजाताहै । शोभाञ्जनवृक्ष । सुहांजना.

काङ्क्षा, (स्त्री०) काङ्क्ष्+अ । इच्छा । चाह.

काङ्क्षा, (स्त्री०) काङ्क्ष+अ । इच्छा । चाह । अभिप्राय । इरादा । भूख. .

काङ्क्षित, (त्रि०) कांक्ष+क्त । चाहा किया गया । (भं० न०) इच्छा.

काङ्क्षिन्, (त्रि०)-णी-(स्त्री०) काङ्क्ष+णिनि चैठी इच्छा करनेवाला । शाकिलमंद.

काच, (पु०) कच्यतेऽनेन । कच्-बांधना-घ एक प्रकारकी मणि । नेत्र और एक प्र उत्पन्न पदार्थ । मोम । कच । छिका । मा

काचक, (पु०) काच एव-स्वार्थे क काच पत्थर । मार.

काचन, काचनकं-(न०) काच्+अन स्वार्थे क नेका बीना वा रस्सी.

काचनकिन्, (पु०) काचनक-इन् । इस दायका डिगाहुआ.

काचलवण, (न०) काचस्य लवणम् । शोर

काचित, (त्रि०) काचे शिक्ये चितं पूर्ण धनरक्षार्थं । छिकेपर रक्खी हुई वस्तु.

काचूक, (पु०) काच+ऊक । पावक । सं पक्षी.

काञ्चन, (पु०) कांचि-चमकना+ल्यु । एकाइ चंपा । नागकेशर । उदुम्बर । धतूरा । गे गिरी । काचन आदि फूल । दीप्ति । धनङ (

काञ्चनक, (पु०) काञ्चनं इव कायति प्रका जो सोनेके समान चमकताहै । पक्षिभेद । कों कचनालका दरख्त । हरिताल (न०).

काञ्चनदली, (स्त्री०) काञ्चनं इव दलं यस्या पत्ते सोनेकी नाईं हों । स्वर्णकदली सोनेकी क

काञ्चनक्षीरि, (स्त्री०) काञ्चनं इव क्षीरं यस्या जिसका दूध सोनेकी नाईं हो । क्षीरिणीलता.

काञ्चनाल, (पु०) कञ्चनाय दीप्तौ अलति अल्+अच् । कोविदारवृक्ष । कचनालके दरख्त.

काञ्चि-ञ्ची, (स्त्री०) । काचि-इन् वा ङीप् । रका भूषण । एकलड़ा हार । गुञ्जा । रत्ती । तडागी.

काञ्ज,-भ्वा० आ० कांचते । काचित । चमकना ।

काञ्जलं, (न०) ईषत् (का) जलं । थोडासा कुत्सितं जलं । अशुद्ध (बुरा) जल.

काण, (पु०) कण-चन्दकरना । घञ् । काक । एक आंखवाला (त्रि०) काणा.

काणेयः-रः, (पु०) काण+एय+ठेक रहित पु आंखवाली स्त्रीका बेटा.

काणेली, (स्त्री०) काण+एल+ई । व्यभिचारि दुष्टा नारी । न ब्याही हुई स्त्री.

काणेलीमातः, (पु०) काणेली माता यस्य तस्य पुत्रः । अविवाहिता स्त्रीका पुत्र । व्यभिचारिणीका बेटा.

काण्ड, (पु० न०) कण्-शब्दकरना । ड दीर्घः । स्तम्भ । थम्भा । तिनके आदिका गुच्छा । वृक्षका स्कंध । बाण । अवसर । मौका । प्रस्तर । पत्थर । नाडिओंका समूह । बहुतसे हिस्सोंवाला ग्रन्थका प्रकरण । अध्याय । निर्जन-स्थान । अकेली जगह । अखरोटका वृक्ष (पु०).

काण्डकटुक, (पु०) काण्डे स्कन्धेऽपि कटुकः तिक्तः । कारवेल । करेला.

काण्डतिक्त, (पु०) काण्डे तिक्तः । भूनिम्ब । चिरायता.

काण्डपट, (पु०) काण्ड इव पटः । कनात । पटभेद । जिसे शिवोंकेपर काण्डरूपता होजातीहै.

काण्डपृष्ठ, (त्रि०) काण्डानि पृष्ठे । यस्य शस्त्राजीव । जो शस्त्रपर जीताहो । सिपाही । अपने कुलकी वृत्तीको त्याग करके जो दूसरे कुलमें जाय इसी दुष्ट चरित्रसे वह ऐसा कहलाता है (पु०) । धनुष्मान.

काण्डीर, (त्रि०) काण्डो बाणोऽस्त्यस्येति । ईर । जिसका बाण हो । तीरन्दाज । बाणधारणकरनेहारा । अपामार्ग (न०) मजीठ । कारवेल (स्त्री०).

काण्डेक्षु, (पु०) काण्डेन स्कन्धेन इक्षुरिव । जो कांडमें गन्नेकीसी मालूम दे । तालमखाना । तृणभेद.

काण्व, (पु०) कण्वेन अधीतः अण् । कण्वसे पढागया । यजुर्वेदकी एक शाखाका भेद । "अपत्यार्थे अण्" कण्वका पुत्र (त्रि०).

कात्, (अव्य०) निन्दाके प्रकाश करनेवाला शब्द । प्रायः "कृ" के साथ बाहुल्यतः प्रयुक्त होताहै । एक प्रकारकी गाली वा तिरस्कारके अर्थमें आता है । "पुरः कात्कृत" । कात्कृ स० कात्करोति-कात्कार-च । अपमानकरण । धिक्कार.

कातर, (त्रि०) ईषत्तरति स्वे कार्ये कर्तुं शक्नोति । जो अपना काम थोडासा करसक्ताहै । अधीर । घबराया हुआ । व्याकुल । दुःखमें घबराया । भीरु । डरपोक । विवश । बेबस । चपल । "के अपि कातरं द्रक्ष्यते अनु शिरेभिर्ये दृष्टाः" । जो कार्यमें ढीला है, चतुरता नहीं दिखाता । डरपोक । डर

कात्तृण, (न०) कुत्सितं तृणं कादेशः । कुत्सित तृण । बुरा घास.

कात्यायन, (पु०) कत्यस्य अपत्यं फक् । कत्यका बेटा । एक मुनि (वह धर्मशास्त्रका कर्ता है) वररुचिनामी व्याकरणके वार्त्तिककर्ता पंडित.

कात्यायनी, (स्त्री०) कत्यस्य अपत्यं स्त्री० फक् । दुर्गा (वह कात्यायनकी बेटी स्वरूप थी) । कत्यकी पुत्री । गेरुआ वस्त्र पहिननेवाली विधवा (बैरागन).

कादम्ब, (पु०) कद्+अम्बि+अच् । कलहंस । कलहंस । बाण । इक्षु । गन्ना । "कदम्बे भवः अण्" कदम्ब (वही अर्थ).

कादम्बरी, (स्त्री०) कुत्सितं अम्बरं अस्याः । जो कद-देशः । कदम्बो बलभद्रः तस्य प्रिया अच् । जिसका कपड़ा मैला हो अर्थात् बलभद्र (मदपानकरनेसे) उन्हींकी प्यारी । बलभद्रकी पियारी । उसकी प्रीति । "कादम्बं रसं राति रा+क-ङीप्" । कोकिला । कोयल । सर-स्वती । सारिका । मैना । शराब.

कादम्बिनी, (स्त्री०) कादम्बः कलहंसः तस्य अनु-कारकत्वेन अस्ति अस्याः इनि । जिसके पीछे कलहंस का बगला भागतेहैं । मेघमाला । बादलोंकी कतार

कादाचित्क, (त्रि०) कदाचित् भव । ठञ् । कभी । होने-वाला.

काद्रवेय, (पु०) कद्रु अपत्यं ढक् । कद्रूकी सन्तान । देवयोनिभेद । नागविशेष । सर्प । सांप

कानक, (त्रि०) कनक+अण् । सोनेका । सोनेका बना हुआ । पुं-न० । जयपाल वा जमालगोटेका बीज

कानन, (न०) कन् चमकना । ल्युट् वृक्ष वा । वन । घर । ब्रह्माका मुख.

कानीन, (पु०) १ न० । कनीनिका । कर्णका दशम । (इसे उत्पन्न हुई अविवाहिता कन्या द्वारा होता है) [illegible]

कानिष्ठिनेयः-यी, (पु० स्त्री०) कनिष्ठा अपत्य ढक् इनङ् च । सबसे छोटी कन्याका बेटा [illegible] बेटी

कानीन, (पु०) कन्यायाः अपत्यम् अण् कनी आदेशः । बिन विवाही कन्याका पुत्र । व्यासदेव । कर्ण । कर्ण.

कान्त, (पु०) कम्+क्त । कम्+क्त । पति । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । चन्द्रमा । वसन्त । लोहविशेष (न०) । कुंकुम । [illegible] । [illegible] । बहुत सुन्दर (त्रि०) । [illegible] । [illegible] (स्त्री०)

कान्तलौह, (पु०) कान्तं [illegible] लोह । [illegible] [illegible] हो । अयस्कान्त । चुम्बक पत्थर । [illegible]

कान्तार, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो वा [illegible] । कम्+आरन् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । ईख भेद । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

कान्ति, (स्त्री०) कम्-क्तिन् । शोभा । दीप्ति । चमक । [illegible] । [illegible].

कान्दिशीक, (त्रि०) [illegible] । [illegible] [illegible] (त्रि०)

कारयितृ, कारयिष्णु -(त्रि०) कृ+णिच्+तृच् वा इष्णुच् । करनेवाला । सिद्ध करानेवाला.

कारव, (पु०) केति रवोऽस्य । जिसकी आवाज कक हो । काक । कौआ.

कारस्कर, (पु०) चारं करोति । कृ+अप् । नि० सुट् । किम्पाकवृक्ष.

कारा, (स्त्री०) कृ+अङ् । नि० दीर्घः । बंधनागार । जेलखाना । कैदखाना । दूती । वीणाके नीचे काठका पात्र (तुम्बा) । सुवर्णकारिका । सुनारिन.

कारागार, (न०) कारेव आगारं । बंधनालय । जेलखाना.

कारापथ, (पु०) लक्ष्मणके पुत्र अङ्गद और चन्द्रकेतुका राज्यविशेष । देशभेद.

कारि, (स्त्री०) कृ+इञ् । क्रिया । काम । शिल्पी । कारीगर (त्रि०).

कारिका, (स्त्री०) कृ+ण्वुल् । क्रिया । काम । "कर्त्तरि ण्वुल्" नटकी स्त्री । ऐसा श्लोक कि जिसमें अक्षर थोड़े होनेपरभी अर्थ बहुत हो । शिल्प । कारीगरी । "कृ+भावे ण्वुल्" । यातना । पीड़ा । दर्द । कृ+ण्वुल् । नाई आदिका काम । वृत्तिभेद । सूद.

कारित, (त्रि०) कृ+णिच्+क्त । करवाया गया.

कारिन्, (त्रि०) कृ+णिनि । बनानेवाला । करनेवाला.

कारीषी, (स्त्री०) [illegible] । कारो [illegible] । हैरण्यकर्त्तृ । हैर+अण् । [illegible] करने-[illegible] । [illegible] किया.

कारीषं, (न०) करीषाणां समूहः अण् । सूखे हुए गोबर (कंडेका) का समूह.

कारु, (त्रि०) कृ+उण् । शिल्पी । कारीगर । कारक । करनेवाला । विश्वकर्मा (पु०).

कारुण्य, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] अपनी [illegible] [illegible] [illegible].

कारुणिक, (त्रि०) करुणा [illegible] अस्य ठक् । दया । [illegible] हो । दयालु । दयाकरनेवाला.

कारुण्य, (न०) करुणस्य भावः । करुणैव वा ष्यञ् । दया । मेहरबानी.

कार्तवीर्य, (पु०) कृतवीर्यस्य अपत्यं पुमान्-कृतवीर्य+अण् । हैहय राजा कृतवीर्य के [illegible] [illegible] उत्पन्न [illegible].

कार्तस्वर, (न०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । सोना । [illegible] । [illegible] । [illegible]

कार्तिक, (पु०) कृत्तिकायां जातः अण् । कृत्तिकामें उपजा । स्कन्द । स्वामिकार्तिक । कृत्तिकानक्षत्रयुक्त पौर्णमासी कार्तिकी सा यत्र मासे ठक् । कृत्तिका नक्षत्रवाली पूर्णिमा (कार्तिकी) जिस मासमें हो । वह महीना । कातककी पूनो । शरद् ऋतुका दूसरा महीना.

कार्तिकेय, (पु०) कृत्तिकानां अपत्यं [illegible] । कृत्तिकाओंकी सन्तान (उनके पालनकरनेसे) । स्वामिकार्तिक । शिवपुत्र.

कार्तिकोत्सव, (पु०) ७ त० । कार्तिकके शुक्ल प्रतिपदाके दिन करनेयोग्य दीपोत्सव । [illegible] करनेका मेला.

कार्त्स्न्य, (न०) कृत्स्नस्य भावः ष्यञ् । सर्वथा [illegible] साराभार । साकल्य । सामस्त्य । पूरा २.

कार्दमः, (पु०)-मी (स्त्री०), कार्दम (मि) क ([illegible]) की (स्त्री०) कर्दम+अण्-ठक् वा । कीचड़वाला । [illegible] कीचड़से ढका हुआ

कार्पटः, (पु०) कर्पट-अण् । प्रार्थना करनेवाला । [illegible] करनेवाला । गेरुए कपड़े पहिनेवाला.

कार्पटिक, (पु०) कर्पटेन काषायवस्त्रेण चरति [illegible] गेरुये कपड़ोंसे विचरताहै । तीर्थयात्राके लिये [illegible] हुआ । तीर्थसेवी.

कार्पण्य, (न०) कृपणस्य भावः ष्यञ् । कृपणता [illegible] उचितव्यय (खर्च) को डरके धन [illegible] [illegible] इच्छा करना । दीनता.

कार्पास, (पु०) कार्पास्याः फल अण् तस्य [illegible] । विकारे वा अण् । सूत । रुई । कार्पासीफल । उसमें [illegible] हुआ कपड़ा आदि । कपास । कपा.

कार्पासी, (स्त्री०) कृ+पास+स्वार्थेऽण् । [illegible] कपास । कपा

कार्म, (त्रि०) कर्मन्+ण । परिश्रमी । मेहनती.

कार्मण, (त्रि०) कर्मणि कुशलः । अण् । [illegible] चतुर । काममें होशियार । योगविद्या । [illegible] मन्त्रचलाना.

कार्मिक, -(त्रि०)-की (स्त्री०) कर्मन्-ठञ् । [illegible] बनाया गया । रंगीले सूतसे मिलाहुआ कपड़ा.

कार्मुक, (पु०) कर्मणे प्रभवति उकञ् । बांस । [illegible] [illegible] । [illegible] । धनुष (कमान) (न०) । [illegible] धनुष कामकरनेवाला (त्रि०).

कार्य, (न०) कृ+ण्यत् । प्रयोजन । हेतु । [illegible] [illegible] पदार्थ [illegible] [illegible] । [illegible] प्रारम्भके [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible] [illegible] करनेयोग्य (त्रि०)

कार्श्य, (न०) कृशस्य भावः ष्यञ्। कृशका होना। कम-जोरी। निर्बलता। शालवृक्ष। कचूरवृक्ष (पु०)। स्वार्थे ष्यञ्

कार्षापण, (पु० न०) कर्षस्यायं क्षण्। आ+पण्+घञ्। कार्षस्य आपणः। सोलह पण। सोलह पैसा। पण। पैसा। कृषक (पु०) सोना। रुपया.

कार्षिक, (पु०) कर्षस्यायं ठञ्। पणका चौथा भाग। एकरुपयेका माप। एक तोलाभर.

कार्ष्ण, (त्रि०) -र्ष्णी (स्त्री०) कृष्ण-अण् कृष्णसम्बन्धी। कृष्णवाला। व्यासवाला। काले हरिणवाला। काला.

कार्ष्णि:, (पु०) कृष्णस्य अपत्यं इञ्। कृष्णकी सन्तान। कामदेवका एक नाम है.

काल, (पु०) कुत्सितं अलति। अल्+अच् कोः कादेशः। काला रंग। काले रंगवाला (त्रि०) लोहा। कक्कोलक (न०) कालयति सर्वं (चुरा०) कल्+अच्। यम। महाकाल। शिवजी। शनैश्चर। कोइल। रक्तचित्रक। कासमर्द। क्षण, घड़ी आदि समय (पु०)। ये सम्पूर्ण कार्योंमें निमित्तकारण हैं। यह सूर्यकी क्रियासे पहि-चाना जाता है.

कालकण्ठ, (पु०) कालः कण्ठो यस्य। जिसका गला काला है। नीलकण्ठ। शिवजी। मोर। खञ्जन। दात्यूह। कलविङ्क। चिड़िया.

कालकूट, (न०) कालं अपि कूटयति, दहति। कूट्+अण्। जो कालको भी जला देता है। विष। जहर। मृत्युका मानो समूह है। देवता और दैत्योंकी लड़ाईमें देवताओं-से मारेगये पृथुमाली दैत्यके लोहूसे उत्पन्नहुआ अश्वत्थ-सदृश (घोडके वृक्ष समान) वृक्षकी गोंद (निर्यासको मुनिओंने कालकूट कहा है। एक किस्मका जहर.

कालधर्म, (पु०) ६ त०। मृत्यु। मौत। समयस्वभाव। समयकी हालत.

कालनियोग, (पु०) कालेन कृतो नियोगः कालस्य वा नियोगः। नि+युज्+घञ्। देवाज्ञा। ईश्वरका हुक्म। कालसे कियागया नियम.

कालनेमि, (पु०) राक्षसका भेद। हिरण्यकशिपुका पुत्र। दैत्य.

कालपर्ण, (पु०) कालं कृष्णं पर्णं अस्य। जिसका पत्ता काला हो। तगरवृक्ष.

कालपुच्छ, (पु०) कालः पुच्छोऽस्य। जिसकी पूछ काली हो। मृगविशेष। काली पूंछ.

कालपृष्ठ, (पु०) कालं पृष्ठं अस्य। जिसकी पीठ काली है। मृगभेद। कङ्क पक्षी। बाण। धनुष्। कालो यम इव पृष्ठं अस्य। जिसकी पीठ यमके समान हो। कर्णका धनुष्.

कालमूल, (पु०) कालं मूलं अस्य। रक्तचित्रकवृक्ष.

कालरात्रि, (स्त्री०) कालस्य रात्रिः नाशिका। कालको नाश करनेहारी। सम्पूर्ण जीवोंका नाश करनेवाली मृत्यु-देवी। यमकी बहिन। कल्पान्तरात्रि। जिसे दीपावली कहते हैं। उसेही कालरात्रि कहते हैं। कार्तिककी अमावास्याकी रात्रिका समय। दीवाली.

काललोह, (न०) कर्म०। कृष्णायस। कालालोहा.

कालशाक, (न०) कर्म०। श्राद्धीय शाकभेद। श्राद्धमें काम आनेवाला साग.

कालसर्प, (पु०) कृष्णसर्प। काला साप। बड़ी विषवाला सांप। (केउटा सांप).

कालसूत्र, (न०) कालस्य यमस्य सूत्र इव। कुललक्षक। सूत्रच्छेदनरूप नरकभेद। इक्कीस नरकोंमें एक.

कालस्कन्ध, (पु०) कालः स्कन्धो यस्य। जिसकी शाखा काली हो। तमालवृक्ष। तिन्दुकवृक्ष। उदुम्बर। जीरकवृक्ष.

काला, (स्त्री०) काल+अर्शआद्यच्। कृष्णत्रिवृत्। काली निरवी। अश्वगन्धा। मञ्जिष्ठा। अजीठ। कृष्णजीरक। काला जीरा। नीलिका। नील.

कालागुरु, (न०) प्राग्ज्योतिष देशमें उपजा काला अगुरुचंदन.

कालाग्नि, (पु०) कालवत् मृत्युकारी अग्निः। मृत्युको देनेहारी आग। प्रलयकी आग। कालानल इसी अर्थमें

कालिक, (पु०) काले वर्षाकाले चरति। ठञ्। जो वर्षा-के समय विचरता है। बकपक्षी। बगला पक्षी। "कालं कृष्णवर्णं अनुसरति" ठञ्। कृष्णचन्दन। कालागुरु। "प्रकृष्टः दीर्घः कालोऽस्य प्रकृष्टे ठञ्" वेद। "का-लेन निर्वृत्ते कालस्वेदं वा ठञ्"। कालमें होनेवाला। का-लसम्बन्धी (त्रि०) "कालो वर्णोऽस्त्यस्याः ठन्"। देवीभेद। कृष्णकपत्रवृक्ष। मेघ। काहल। पटोलकी शाखा। कालौ। कोवे। मिट्टी। हरीतकी। इसीका (स्त्री०)। काला सहल। बदलकी पौंत.

कालिङ्ग, (पु०) कुत्सितं लिङ्ग अस्य। हाथी। हस्ती। सर्प। सांप। खरबूजे। कलिङ्गानां राजा अण्। कलिङ्गदे-शका पति। कलिङ्गदेशका राजा। राजकर्कटी (स्त्री०).

कालिन्दी, (स्त्री०) कलिन्दस्य अपत्यं अण्। कलिन्द पर्व-तकी। यमुनानदी। जमना.

कालिन्दीभेदन, (पु०) भिनत्ति हलेनाकर्षणेन नदीभेद-दिशा अन्यथाकरोति। भिद्+ल्यु ६ त०। जो हलसे नदी-को तोड़ताहै। बलभद्र। श्रीकृष्णदेवका बड़ा भाई। (इसकी कथा हरिवंशमें है).

कालिमन्, (पु०) कालस्य भावः इमनिच्। कालापन। कृष्णता। कालता.

काली, (स्त्री०) कालो वर्णोऽस्त्यस्याः । अच् । ङीप् । जिसका काला रंग हो । देवीविशेष । मत्स्यगन्धा । व्यासदेवकी माता । मलवती । नये बादलोंकी माला । परीवाद । काली मलीज । रात्रि । कालाञ्जनी । आगकी जीभ.

कालेय, (पु०) कलेरपत्यं ढक् । दैत्यविशेष । कालचन्दन (न०) । कुत्ता । हल्दी (पु०).

काल्प, (त्रि०) (कल्प-अन्) विहित । नियम स्थिर करनेवाला । कल्पसम्बन्धी । जिस मन्त्रसे क्या करना चाहिये इस नियमको बतानेहारा.

काल्पनिक, (त्रि०) कल्पनया आगतः ठक् । कल्पनासे आया । कल्पित । बनावटी । कल्पनासे उपजा । आरोपित.

काल्या, (स्त्री०) कालः गर्भधारणयोग्यसमयः प्राप्तोऽस्य यत् । वह गौ कि जिसका गर्भधारण करनेका समय आपहुंचा.

कावचिक (त्रि०)-की (स्त्री०) कवच ठञ् । कवच (बख्तरजिरह, मंजोला) पहिना हुआ.

कावेरी, (स्त्री०) कस्य जलस्य वेरं शरीरं । तस्येदं अण् । नदीविशेष । "कुत्सितं शरीरं वेरं यस्याः "स्वाङ्गात् ङीप्" । वेश्या । ५ ब० । हल्दी.

काव्य, (पु०) कवेरेव स्वार्थे ष्यञ् । शुक्र । कविका काम । ग्रन्थभेद । कविता जिसमें अर्थ वा कविके गुण रहें । ग्रन्थभेद पुरु.

काव्यलिङ्ग, (न०) अर्थालङ्कारविशेष । सा० १० परि०.

काश्, चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । काशते । अचकाशि । चमकना । चमकीं । दिप् । अचकाशत्-त.

काश, दीप्ति-चमकना । दिवा० आ० अक० सेट् । काश्यते.

काश, (पु०) काश्+अच् । रोगभेद । खांसी । तृणभेद । तृणकी पुष्प.

काशिराज, (पु०) ६ त० टच् स० । एक राजाका भेद । दिवोदास । धन्वन्तरि । नृपभेद । एक राजा.

काशी, (स्त्री०) काश्+अच्+ङीप् । प्रसिद्ध नगरी बनारस नगरी.

काश्मीर, (न०) काश्मीरदेशेषु भवः अण् । कुङ्कुम । केसर । अदरक । काश्मीरदेशमें होनेवाला कुङ्कुम जब कि... काश्मीर देश कहते हैं । "केसर [illegible]" काश्मीरका राजा । काश्मीरका वासी.

काश्यप, कश्यपस्य गोत्रापत्यं अण् । मुनिविशेष । मृगभेद । मत्स्यका भेद । गोत्रभेद । काश्यपपुत्र (गरुड़ इत्यादि).

काश्यपि, (पु०) कश्यपस्य अपत्यं । इञ् । गरुड़का बड़ा भाई । अरुण.

काश्यपी, (स्त्री०) कश्यपस्येयं अण् । ङीप् । पृथ्वी.

काष, (पु०) कष-घञ् । रगड़ । कसौटी.

काषाय, (त्रि०) कषायेण रक्तं, अण् । गेरुआ । कषायसे रंगा हुआ । -यं (न०) लाल कपड़ा । गेरुए रंगसे रँगाहुआ.

काष्ठ, (न०) काश्+क्थन् । इन्धन । दारु । [illegible]

काष्ठकदली, (स्त्री०) काष्ठमिव कठिना कदली [illegible] वनका केला.

काष्ठकीट, (पु०) ६ त० । काठका कीड़ा । घुन [illegible]

काष्ठकुद्दाल, (पु०) कुं उद्दालयति । दल्+णिच् [illegible] अक० कुद्दालः । ६ त० । वेदी आदिके बनानेके लिये काठका बनाहुआ फांड़ा.

काष्ठतक्ष्, (पु०) काष्ठं तक्षति । क्विप् । [illegible] बढ़ई । तरखान । "काष्ठतक्षक" इसी अर्थमें [illegible]

काष्ठलेखक, (पु०) काष्ठं लिखति । ण्वुल् । घुन [illegible]

काष्ठा, (स्त्री०) काश्+क्थन् । दिशा । [illegible] सीमा । आखिरी हद । अन्ततक । [illegible] समयका परिमाण=$\frac{1}{30}$ कला । जल । पानी । [illegible]

कास्, भ्वा० आ० । कासते । कासित । खांसी करना.

कास्-कुत्सित, (धुप) शब्दकरना । भ्वा० अ० सेट् । कासते । अकासिष्ट । कासामास । लिट् । [illegible]

कास, (पु०) कास्+घञ् । रोगभेद । खांसी [illegible] खांसी.

कासघ्नी, (स्त्री०) कासं रोगं हन्ति टक् । [illegible] कंटयारी.

कासार, (पु०) केन जलेनासमन्तात् सार्यते [illegible] तालाब.

कासीस, (न०) क्षुद्रः कासः काशी वा [illegible] हीराकस उपधातुविशेष.

कासू, (स्त्री०) कस्+ऊ । शिव । [illegible] टकी आवाज । दीप्ति । चमक । बुद्धि । [illegible]

कासृतिः, (स्त्री०) कुत्सिता वा गुप्ता सृतिः [illegible] वा छिपा हुआ मार्ग । सांपका रास्ता.

काहल, (न०) कुत्सितं हलति विलसति । अच् । [illegible] कैसा । कुक्कुट । बिल्ली । आवाज । [illegible] भेद । बड़ी आवाज । सूखा । बहुत । नीच ([illegible]

कि-ज्ञाने, जुहो० पर० सक० अनिट् । चिकेति । [illegible]

किंकिरिथि, (पु०) किंकीति शब्दमिति [illegible] किन्+हन-नि० । जो किकी ऐसा शब्द करे । [illegible]

किङ्कर, (त्रि०) किञ्चित् कुत्सितं वा करोति । [illegible] नौकर । स्त्रियां ङीप्.

किङ्किणी, (स्त्री०) किञ्चित् किञ्चित् कणति [illegible] घंटी । कुछ शब्द करती है । करधनी । [illegible] क्षुद्रघंटिका । घुंघरूदार । घुंघरूदार [illegible]

किङ्किर, (पु०) किम्+कृ+क । कोयल । भौंरा । [illegible]

किङ्किरात, (पु०) किङ्किरं रक्तवर्णं अटति [illegible] हुआ अच् । जिसका पुष्प लाल [illegible] [illegible] । कामदेव । कटसरैया.

किञ्च, (अव्य०) आरम्भ । समुच्चय । कुछ और.

किञ्चन, (अव्य०) किम्+ चन । न पूरा । थोड़ा.

किञ्जल्क, (पु०) किंचित् जलति । जल्-छिपाना । क । केसर बहुत महीन तिरियें । फूलकी धूरी । नागकेसर.

किट्, जाना । सक० । डरना । अक० भ्वा० पर० सेट् । केटति । अकेटीत्.

किट्ट, (न०) किट्+क्त-इट् । नहिं होता । धातुओंका मल । गूँह.

किण, (पु०) कण्-जाना -अच् । पृषो० अको इ होता है । (घेटा) सूखा घाव । मांसकी गांठ, घसडका दाग

कित्, सन्देह करना रोगका दूरहोना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चिकित्सति । अचिकित्सीत् । रहना । अक० चाहना । सक० । केतति । अकेतीत्.

कित्, जाना । जुहो० पर० सक० सेट् । चिकेति । अकेतीत्.

कितव, (पु०) कि+भावे क्त । कितेन वाति । वा+क । जुआरिआ । ठग । नीच । चोरनामक गन्धद्रव्य । धतूरा.

किन्तनु, (पु०) किंचिन्मात्रा तनुर्यस्य । जिसका शरीर बहुत छोटा हो । आठ पांवका कीड़ा । मकड़ी.

किन्तु, (अव्य०) पूर्ववाक्यके संबंधको जनानेहारा । पहिले कहेगयेसे विरुद्ध अर्थ । फिर क्या । लेकिन.

किन्नर, (पु०) कुत्सितो नरः । घोडेका मुख और मनुष्यका शरीर । अथवा नरका मुख और घोडेका शरीर देवयोनिभेद । देवताओंका गवैया.

किन्नरेश, (पु०) ६ त० । किन्नरोंका स्वामी । कुबेर । धनका दाता.

किमु, (अव्य०) प्रश्न । वितर्क । सादृश्य । स्थान । क्या.

किम्, (अव्य०) प्रश्न । निषेध । वितर्क । निन्दा । क्या.

किमु, (अव्य०) विमर्श । सम्भावना । शङ्क.

किमुत, (अव्य०) प्रश्न । वितर्क । शङ्क । विकल्प । अतिशय । फिर क्या.

किम्पच, (त्रि०) किं पचति । अच् । सूम । कृपण । वह अपने पेट भरनेकोही पकाता है, आगन्तुक वा अतिथिओंके लिये नहिं.

किंपु (पू) रुष, (पु०) कुत्सितः पु (पू) रुषः । देवयोनिभेद । देवताओंका गवैया । हिमालय और हेमकूटके बीच भरतवर्षनामी जम्बुद्वीपका एक वर्ष.

कियत्, (त्रि०) किम्+परिमाणे वतुप्, किमः क्यादेश०, वस्य य०, कितना परिमाण । कितना.

किर, (पु०) कृ+क । शूकर । सूअर.

किरण, (पु०) कृ+क्यु । सूर्य । किरण । रश्मि.

किरणमालिन्, (पु०) किरणानां माला अस्ति अस्य इनि । जिसकी किरणोंकी माला है । सूर्य । सूरज.

किरात, (पु०) कीर्यन्तेऽवस्करा अत्र । कृ+क० पर्यन्तदेशमं अतति अण् । म्लेच्छजातिविशेष । भील । छोटे शरीरवाला । "तप्तकुण्डसे लेकर रामक्षेत्रतक किरातदेश है."

किरि, (पु०) कृ+इक् । शूकर । सूअर.

किरीट, (पु० न०) कॄ+कीटन् । मुकुट । शिरका घेरा । पगड़ी.

किरीटिन्, (पु०) किरीट+इनि । अर्जुन । मुकुटवाला । कोनसाभी किरीटधारी (त्रि०).

किर्मी, (स्त्री०) किरति किर् । किरं माति मा+क ङीप् । पलाशवृक्ष । घर । सोनेकी पुतली । लोहेकी पुतली.

किर्मीर, (पु०) कॄ+ईरन्-मुट् आगम. । नारङ्गवृक्ष । राक्षसविशेष । चित्रवर्ण । रंगबरंगी.

किल, (अव्य०) निश्चय । वात । पछतावा । प्रसिद्ध । प्रमाणका प्रकाश करनेवाला । सत्य । कारण । झूठ.

किलकिञ्चित, (न०) "हर्षसे रोकर गाना" । स्त्रिओंका विलासभेद.

किलकिला, (स्त्री०) किलकिलेति शब्दायां स्त्रियं ततः क्यच् तत क्विप् । हर्षकी आवाज । शेरकी आवाज । वानरोंके शब्दकी नकल करना.

किलाटक, (पु०) पकेहुए दूधका पिण्ड । दूधका विकार । मलाई । खोया । मावा.

किल्बिष, (न०) किल्+टिषच् बुक् । अपराध । पाप । रोग । धर्म और अधर्मका फल । अनिष्ट । संसार.

किंवदन्ति–न्ती, (स्त्री०) किम्+वद्+झच्+ङीप् । जनश्रुति । अपवाद । गप्प । सत्य लोकका अपवाद । (हांरा).

किंवा, (अव्य०) विकल्प । अथवा । या । वा.

किंशारु, (पु०) कुत्सितं शृणाति । किम्+शॄ+ञुण् । धानके बाल । बाण । तीर । कड़पक्षी । मांसखोर.

किसलय, (पु० न०) किंचित् शलति चलति कयन्-पृ० । पल्लव । पत्र । पत्ता.

किशोर, (पु०) कश्+ओरच् । नि० । हाथीका बच्चा । सूर्य । जवान । दशवर्षसे पीछे पन्द्रहवर्षतक.

किष्क, मारना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । किष्कयते । अचिकिष्कत.

किष्किन्ध–न्धा, (पु०) । ओड्रदेशका एक पर्वत । वहांकी गुफा (स्त्री०).

किष्कु, (पु० स्त्री०) किष्क+उ । बारह अंगुलीका माप । ओछोंका स्थान । हाथका परिमाण.

किसलय, (पु० न०) किंचित् सलति । सल्+कयन् कयन्-पृ० । पल्लव । पत्र । पत्ता.

कीकट, (पु०) किंचित् कुत्सितं कटति-पृ० । घोडा । मगधदेश । "कीकटेषु गया पुण्या" इति पुराणम् । कृपण । निर्धन । गरीब.

कीचका, (पु॰) कीति करोति । कच्-शब्द करना । अच् । [illegible].

कीचक, (पु॰) कीति अव्यक्तं चटीति-अच् । वंशभेद । जो बहुत छाड़न छिद्रोंसे शब्द करते हैं ऐसे बांस । (हल-स्वांच) । विराटराजका साला । केकयदेशका राजा-

कीचकजित्, (पु॰) कीचकं जितवान् । जि+क्विप् । जिसने कीचकको जीतलिया । भीमसेन । "कीचकभिद्" यही अर्थ.

कीड़, बांधना । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । कीड़यतीनें । [illegible].

कीड़, (पु॰) किर्+कन् । कीड़ीसोंसे मोटा सुकरमुखाय । कीड़ा । सर्वे बन्द यही अर्थ । मलयकरी । कठिन । [illegible] (त्रि॰).

कीटघ्न, (पु॰) कीटं हन्ति हन्+टक् । [illegible] । कीड़ोंको मारनेवाला.

कीटजा, (स्त्री॰) कीटोंसे उपजने । जन्+ड । कीटोंसे [illegible] । [illegible].

कीटमणि, (पु॰) कीटेषु मणिरिव । कीड़ोंमें मानो मणि है । खद्योत । [illegible]

कीटभृङ्ग, (पु॰) [illegible]

[illegible]

कीटजा, ([illegible]) [illegible]

[illegible] (पु॰) [illegible]

कीलाल, (न॰) कीलां वह्निशिखां अलति [illegible] अच् । जो आगकी लपटको हटादेवे । जल । [illegible] "कीलां अंशांभिः शिखां लाति" । ला+क । [illegible] कीलेन प्रतिबन्धेन अल्यते [illegible]" अल्+घञ् । [illegible]

कीश, (पु॰) "कस्य वायोरिव । अनद्रम् [illegible] ईशो यस्य" । जिसका स्वामी वायुका पुत्र हनुमान् [illegible] वानर । बन्दर.

कु, शब्दकरना । भ्वा॰ आ॰ सक॰ अनिट् । [illegible]

कु, दुःखसे शब्द करना । तुदा॰ आत्म॰ सक॰ [illegible] कुवते । [illegible].

कु, शब्द करना । अदा॰ पर॰ अक॰ अनिट् । [illegible] [illegible].

कु, (अव्य॰) पाप । निन्दा । थोड़ा । निवारण । [illegible] भूमि । पृथिवी (स्त्री॰).

कुकुद, (पु॰) आदरके साथ अलंकार [illegible] देनेवाला

कुकुन्दर, (पु॰) कुं भूमि दारयति । [illegible] र+अच् । नि॰ । स्त्रियोंके नितम्बमें स्थित [illegible] कमरके पीठकी हड्डीके नीचेके दो गर्त (ढोबे) [illegible] [illegible] होते हैं

कुकुर, (पु॰) कुं पृथिवी कुरति । कुर्+क । [illegible] एक राजा । इनको ययातिके शापसे राज्य नहीं [illegible] [illegible]

कुकूल, (पु॰) [illegible] पानी । [illegible] । "[illegible]" । [illegible] में [illegible] । "[illegible]".

कुकूलाग्नि, (न॰) [illegible]

[illegible]

कुक्षि, (पु॰) [illegible] । उदर । पेट । [illegible]

[illegible]

कुक्षिम्भरि, (त्रि॰) [illegible] । [illegible]

[illegible]

[illegible]

कुचर, (त्रि०) कुत्सिते चरति चर+अच् । दूसरेके दोष-को कहनेहारा.

कुज्, चुराना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कोजति । अकोजीत्.

कुज, (पु०) कौ पृथिव्यां जायते । जन्+ड । मङ्गलग्रह । नरकासुर । वृक्षमात्र । सीता । कात्यायनी (स्त्री०).

कुजराटि-टी. (स्त्री०) । कु+क्विप् कुत । शब्द-इकट्ठा होना । इन् वा ङीप् । नीहार । कुयागा । कुहार । पाला.

कुञ्चन, (न०) कुञ्च्+ल्युट् । कुटिलता । अनादर । आंख-का रोग.

कुञ्चि, (पु०) कुञ्च्, कुटिल होना । इन् । आठ मुट्ठीका व्यावहारिकमाप.

कुञ्चिका, (पु०) कुञ्च्+ण्वुल्+टाप् । कालाजीरा । मच्छी-का भेद । कुञ्जी । चाबी । बांसकी शाखा । रत्ती.

कुञ्चित, (न०) कुञ्च्+क्त । तगरका फूल । टेढा । सिकु-ड़ाहुआ (त्रि०).

कुञ्ज, (पु०) कौ पृथिव्यां जायते । जन्+ड (पु०) । हाथी । ठोडी । चारोंओर लताओंसे ढकाहुआ बीचसेशून्य (खुला) पर्वत आदिका स्थानविशेष । लतागृह । हाथीका दांत.

कुञ्जर, (पु०) कुञ्ज+अस्त्यर्थे र । हाथी । हस्ती.

कुञ्जरच्छाय, (पु०) त्रयोदशी और मघानक्षत्रका मेल होना.

कुञ्जराशन, (पु०) कुञ्जरैः अश्यते अश् खाना+ल्युट् । बडका दरख्त.

कुट्, कुटिल होना । तुदा० पर० सक० सेट् । कुटति । अकुटीत् । चुकोट.

कुट, (पु०) कुट्+अच् । दुर्ग । किला । गड । पर्वत । वृक्ष । घडा (पु०) (न०) घर (स्त्री०) ङीप् । शिलाकूट अस्त्र । हथौडा (पु०) "कूट".

कुटङ्क, (पु०) कुटं गृहं कपति । ड । (पु०) । घरका पडदा । लतागृह.

कुटज, (पु०) कुटे पर्वते जायते । जन्+ड (कुरची) वृक्षभेद (जिसका फल इन्द्रयव है) । कुटे (घटे) जायते "अगस्त्यमुनि" । द्रोणाचार्य.

कुटप, (पु०) कुट्+कपन् । मुनि । घरके पासका छोटा बन । १२ तोलेभर । कमल (न०).

कुटि(टी)र, (पु०) अल्पा कुटी ईरन् । पत्तोंकी कुटिया.

कुटिल, (त्रि०) कुट्+इलच् । वक्र । टेढा । अहुर । घुंघुराला । तगरका फूल.

कुटि(टी)चर, (पु०) कुट्यां कुटी वा चरति । सेन्दा-सीका भेद । "कुटी जले चरति" चर० अच् । जलमें विचरनेवाला सूअर.

कुटुम्ब्, धारण करना । चुरा० आत्म० अक० सेट् । कुटुम्बयते.

कुटुम्ब, (पु० न०) कुटुम्ब+अच् । पोष्यवर्ग । सम्बंधी । नातेदार । सन्तान.

कुटुम्बिनी, (स्त्री०) कुटुम्ब+इनि । पति और पुत्रवाली । सराहीगई स्त्री । बालबच्चेवाली स्त्री.

कुट्ट्, काटन-निन्दाकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कुट्टयति-ते.

कुट्टक, (पु०) कुट्ट्+ण्वुल् । लीलावतीमें प्रसिद्ध गणितका अङ्कभेद.

कुट्टनी, (स्त्री०) कुट्ट्+ल्युट्+ङीप् । (कुटनी) दूसरे पुरुषके साथ दूसरेकी स्त्रीको मिलानेवाली स्त्री.

कुट्टमित, (न०) मित्रके साथ मिलनेकी इच्छा होनेपरभी न आनेके लिये हाथका हिलाना । विलासभेद.

कुट्मल, (पु० न०) कुट्+कुमलच् । खिलनेपर आई कली । एक नरक जहां शस्त्रोंसे नारकियोंको पीडा पहुंचाई जातीहै.

कुठ्, घबराना-आलस्य करना । अक० । छुपाना । सक० इदित् भ्वा० पर० सेट् । कुण्ठति । अकुण्ठीत्.

कुठ, (पु०) कुठ्+अच् । वृक्ष । दरख्त.

कुठार, (पु० स्त्री०) कुठ्+आरन् । अस्त्रभेद । कुल्हाडा । वृक्ष (पु०)

कुठारु, (पु०) कुठ्+आरुन् । वानर । वृक्ष । शस्त्र बना-नेवाला.

कुड्, घबराना । भ्वा० इदित् । पर० अक० सेट् । कुण्डति.

कुड्, जलाना । भ्वा० इदित् । आत्म० सक० सेट् । कुण्डते.

कुड्, बचाना । चुरा० इदित् । उभ० सक० सेट् । कुण्ड-यति-ते.

कुड्, खाना-बालक होना अक० तुदा० पर० सेट् कुडति.

कुडप (व), (पु०) कुड्+कपन् (कवन्) वा सेरका चौथा भाग । एक पलभर

कुड्मल, (पु०) (न०) कुड्+कुमलच् । खिलनेपर आई कली । नरकविशेष (न०).

कुड्य, (न०) कुड्+यत् । दीवार । लेपन । कौतूहल । शौक.

कुणप, (पु०) कुण्+कपन् । प्राणरहित । मृतदेह । शव । मुरदा । बदबूदार.

कुण्डल सं-(पु० न०) कुण्ड+मत्वर्थे ल । कानोंकी बाली वा मुंदरी । कुण्डल.

कुण्डलिन्, (पु०) कुण्डल+अस्त्यर्थे इनि० । घेरादेनेहारा सर्प । सांप.

कुण्डलिनी, (स्त्री०) कुण्डलं अस्य इनि० । सांपके स्वरू-पसे तीन घेरेवाली तन्त्रमें प्रसिद्ध शक्ति । सांपनी.

कुण्डिका, (स्त्री०) कुण्ड+संज्ञायां कन् । कमण्डलु । मारी । छोटा । कुंडी.

कुण्डिन, (पु०) कुण्डि+इनच् । मुनिविशेष । विदर्भनगर । देशभेद.

कुतप, (पु०) कुत्सितं तपति । तप्+अच् । सूर्य । अग्नि । ब्राह्मण । अतिथि । गौ । भागिनेय । बहिनका पुत्र । दौहता । बाजा । नेपालका कम्बल । कुशाके तृण । दिनके दूसरे पहिरकी पिछली घडीसे तीसरे पहिरकी पहिली घडीतक समय.

कुतस्, (अव्य०) प्रश्न । सवाल । छिपाना । कहांसे । क्योंकर.

कुतुप, (पु०) कुतू+डुपच् । छोटासा चमडेका कुप्पा । घीका पात्र.

कुतूहल, (न०) कुतूं चर्ममयं स्नेहपात्रं हलति लिखति । हल्+अच् । अपूर्व (अजीब) वस्तुके देखनेमें यत्न करना । अच्छा । अजीब (त्रि०) । निहायत शौक.

कुत्र, (अव्य०) कस्मिन् स्थाने वा काले । किसजगह वा किसवक्तमें । कहां । कब.

कुत्स, निन्दा करना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । कुत्सयते.

कुत्सा, (स्त्री०) कुत्स्+अ+टाप् । निन्दा । परिवाद.

कुत्सित, (न०) कुत्स्+क्त । कुठनाम औषध । निन्दा कियाहुआ (त्रि०).

कुथ, (पु० स्त्री०) कुथ्+अच् । हाथीकी पीठका रंगीन रंगी कंबल.

कुद्दाल, (पु० न०) कुं भूमिं उद्दालयति । उद्+दल्+अण् शक० । कोविदारवृक्ष । कचनारका दरख्त । कुदारी माला । पृथ्वीको खोदनेका शस्त्र । औजार । कोदाल (न०).

कुनख, (पु०) वह रोग कि जिसमें नाखूनोंका रंग बदल जाताहै । कुनख रोगवाला जन (त्रि०).

कुन्त, (पु०) कुं भूमिं उनत्ति । उन्द्+त । शक० । गवेधुका धान्य । प्रासनामी शस्त्र । भला । भेडा । बरछा.

कुन्तल, (पु०) कुन्तं कुन्ताकारं लाति । ला+क । केश । पीनेका पात्र । हल । देशभेद.

कुन्ति, (पु०) कम्+झिच् । देशभेद । युधिष्ठिर आदिकी माता (स्त्री०) वा ङीप् । वह शूरसेन राजाकी औरसी पृथा नामी कन्या थी । पुत्ररहित कुन्तिभोजको जिसने गोदमें लिये थे.

कुन्द, (पु०) कुं भूमिं दायति द्यति वा । दैवी बाधक नि० मुम् । (कुन्द) फूलोंका वृक्ष । कुन्दुरु नाम गन्धद्रव्य । भूमिरूप । कनेर । कुबेरका निधिभेद । करवीरवृक्ष.

कुप, क्रोध करना । दिवा० पर० अक० सेट् । कुप्यति । अकुपत् । अकोपीत्.

कुपाणि, (त्रि०) कुत्सितः पाणिः अस्य । क०। टूं हाथवाला । वक्रहस्त । टेढे हाथवाला.

कुपिन्द, (पु०) कुप्+किन्दच् । तन्तुवाय । तांती । जुला

कुपूय, (त्रि०) कुत्सितं पूयते । पूय्+क्त... बुरी तरहसे फैलता है । जाति और आचार से निन्दित । दुष्ट आचरण करनेवाला.

कुप्य, (न०) गुप्+क्यप् नि० । सोने और ... तैजस रुपया... । इस नामसे प्रसिद्ध धातु । ... से बिना और सब धातु.

कुबेर, (पु०) कुम्बति धनं गुप्त... । नवोनिध । राजा । नलकूबरका "कुत्सितं बेरं देहोऽस्य" नि... देह बुरा हो । मूर्ख (त्रि०).

कुब्ज, (पु०) ईषत् उब्जं आर्जवं अस्य । श... की बांकीसी कोमलता हो । कुबडा (त्रि०)। अपामार्ग । अपुठकांटा.

कुमार, (पु०) कुमारयति क्रीडति । कुत्सितो मा... को मारयति दुष्टान् वा । तोता पक्षी । कार्ति... योकिसें युवराज । सिन्धुनद । वरुणद्रुम । ... का बालक.

कुमारभृत्या, (स्त्री०) भृ+क्यप् । ६ त० । ... गर्भिणीकी सेवा.

कुमारिका, (स्त्री०) कुमार+"वयसि प्रथमे" ... स्वार्थे कन् । पाव वर्षकी विवाह बिना कन्या । ... । भारतवर्षखण्डभेद । "वर्गेवरे कुमारिकाख्ये" इति सिद्धान्तशिरोमणि..

कुमारी, (स्त्री०) कुमार+ङीप् । नवमल्लिका । ... नदीभेद । अपराजिता । मोटी इलायची । ... १२ वर्षकी अविवाहिता कन्या । श्यामा पक्षी.

कुमुद, (न०) कौ भूमौ मोदते । मुद्+क । कल्हार । सितकमल । वानरभेद । दैत्यभेद । ...

कुमुदिनी, (स्त्री०) कुमुदानां समूहः इनि० । ... "अस्त्यर्थे इनि०" कुमुदवाली पुष्करिणी (... कुमुदलता.

कुमुदबान्धव, (पु०) ६ त० । चन्द्रमा । ...

कुमुद्वत्, (त्रि०) कुमुद+मतुप्+ईप् । ... हुआ । ती (स्त्री०) चिंह फूलवाला । ... किरणोंके स्पर्शसे खिलता है । कम्मी.

कुम्भ, (पु०) कुं भूमिं कुत्सितं वा उम्भति । ... अच् । घट । घडा । हृदयका रोग । हाथीके ... मोंगके मोडे । कुम्भकर्णका पुत्र । वेश्याका ... आयमका शस्त्र । श्वासको रोकनेकी चेष्टा । ... मान । ११ वीं राशि । गुग्गुल

कुम्भक, (पु०) कुम्भ इव कायति निश्चलतया प्रकाशते। कै+क। श्वास प्रश्वासको छोडकर प्राणवायुका रोकनारूप प्राणायामका अंग। जिसमें वायु न बाहिर और नहीं भीतरको जाय अर्थात् मध्यमें रोकलिया जाय। जैसे घडा भराहुआ नहीं डोलता.

कुम्भकर्ण, (पु०) कुम्भ इव कर्णौ अस्य। जिसके कान घडेके समान हैं। रावणका छोटा भाई। राक्षसका भेद। (रामसे मारा गया).

कुम्भकार, (पु०) कुम्भं करोति। कृ+अण्। उप०। कुम्हार। जातिभेद। ककुभ पक्षी.

कुम्भयोनि, (पु०) कुम्भो योनिः उत्पत्तिस्थानं यस्य। जो घडेसे उपजा। अगस्त्यमुनि। "कुम्भसम्भव"। द्रोणाचार्य। द्रोणपुष्पी.

कुम्भाण्ड, (पु०) कुम्भाकारः अण्डः। घडेके समान अण्डा। पेठा। बाणासुरका मन्त्री। "कूष्माण्ड" यही अर्थ.

कुम्भिन्, (पु०) कुम्भ+अस्त्यर्थे इनि। हाथी। कुम्भीर। गुग्गुल.

कुम्भिल, (पु०) कुम्भ+अस्त्यर्थे इलच्। चोर। शालमत्स्य। श्लोकके अर्थको चुरानेवाला। श्याल। साल.

कुम्भीपाक, (पु०) कुम्भ्यां तैलघटे पाको यस्मिन्। तेलके घडेमें जहां पकाते हैं। "जहां यमके चाकर तपेहुए तेलमें डालकर रीधते हैं" ऐसे लक्षणवाला नरकका भेद.

कुम्भीर, (पु०) कुम्भिनं हस्तिनं अपि ईरयति। जो हाथीकोभी हिला देताहै। ईर+अण्। (कुम्भीर) जल-का जन्तु। तंदुआ.

कुर्, शब्दकरना। तुदा० पर० अक० सेट्। कुरति। कुकोर। अकोरीत्.

कुरङ्ग, (पु०) कौ रङ्गति। रङ्ग+अच्। "जो थोडासा लाल (ताम्र) और हरिणके सरूपवाला हो" मृगभेद। हरिणमात्र.

कुरर, (पु०) कवते। कुङ्-शब्दकरना। कुमोरा पक्षी। कुंज पक्षी.

कुररव, (पु०) कुत्सितो रवोऽत्र। जहां बुरा रव हो। सदका भेद। बुरे रववाला (त्रि०)। मोतिहा लता (स्त्री०)। वाद्। बुरा रव (पु०).

कुरु, (पु०) कृ+कु। चन्द्रवंशका एक राजा। हस्तिनपुरसे ले कुरुक्षेत्रका दक्षिण और पंजाबके पूर्वका भाग। भात। कटसरैया। कौरवी। मध्यदेशसे जम्बुद्वीपका वर्षभेद.

कुरुक्षेत्र, (न०) कुरोः क्षेत्रम् ... वह स्थान कि जहां पाप दूर होता है। कौरवपाण्डवोंके युद्धका स्थान.

प० १०

कुरुबक, (पु०) ईषत् रौति। इ शब्द करना+ईषदर्थ बुन्। उणा०। रक्तस्निग्ध। पीतझिंटी। (कुरवी) कुरवक.

कुरुविल्व, (पु०) कुरु विल्व इव। पद्मरागमणि। माणिक.

कुरुविन्द, (पु०) कुरुन् विन्दति। विद्+श+मुम्। मोथा। कुल्माष। दर्पण। सीसा। हिङ्गुल। हींग। पद्मराग मणि (न०).

कुरुविस्त, (पु०) कुरु विस्त... सोनेका एक मान.

कुरुवृद्ध, (पु०) कुरूणां जनपदानां राजा। ... तद्विशय बहुषु इक्। तेषु कुरुषु वृद्धः। कौरवोंमें बूढा। भीष्मपितामह.

कुरूप्य, (न०) ईषत् रूप्यं ... रूपेके समान चिह्न होनेसे। रांग धातु। टीनधातु

कु(कू)र्द, खेलना। भ्वा० आत्म० अक० सेट्। कु(कू)र्दते। अकु(कू)र्दिष्ट.

कु(कू)र्दन, (न०) कु(कू)र्द+ल्युट्। कौतुक। खेल.

कुर्पर, (पु०) कुर+क्विप्-कुर् पिपर्ति अच्। जानु। कुहनी। गोडा। कफोणि.

कुर्वत्, (त्रि०) (कृ+शतृ)। कामकाजमें तत्पर। करनेहारा.

कुल्, बोधना-मेलकरना। भ्वा० पर० अक० सेट्। कोलति। अकोलीत्.

कुल, (न०) कुल्+क। वंश। सजाती जन्तुके समूह। देश। घर। शरीर.

कुलक, (न०) कुल्+अच्-संज्ञायां कन्। समूह। पद्य ... बनेहुए पांच आदि श्लोकोंका समूह। ... । कुरवक वृक्ष (पु०)

कुलकुण्डलिनी, (स्त्री०) कुले ... कुण्डलिनी शक्ति। ... आधारमें ... बली शक्ति। ... नीचे स्थित शक्तिभेद.

कुलघ्न, (त्रि०) कुलं हन्ति+हन्+टक्। कुल (वंश) को नाश करनेवाला.

कुलज, (त्रि०) कुले जायते। जन्+ड। अच्छे कुलमें उपजा.

कुलटा, (स्त्री०) कुलैः ... अन्य कुलोंमें ... अटति। अट+अच्। ... । ... व्यभिचारिणी स्त्री। असती.

कुलधारक, (पु०) कुलस्य वंशस्य धारकः। ... पुत्र। ... । औरस पुत्र

कुलपति, (पु०) ६ त० । मुनिविशेष । "जो दस हजार मुनिओंको अन्नादिसे पालता और विद्या पढाताहै" । सेनाका मालिक.

कुलपर्वत, (पु०) कौ पृथिव्यां लीयते । ली+ड । महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षपर्वत, विन्ध्य, और पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं । "कुलाचल" यही अर्थ.

कुलंधरः, (त्रि०) कुल+धृ+खच् मुम् । कुलको धारण करनेवाला.

कुलधर्म, (पु०) कुलस्य धर्मः ष० त० । कुल (खान्दान) का धर्म (कर्तव्य).

कुलविद्या, (स्त्री०) कुलागता विद्या । कुलकी परम्परासे आरही विद्या.

कुलव्रतं, (न०) कुलस्य व्रतं ष० त० । कुलका व्रत (नियम).

कुलाचार, (पु०) ६ त० । कुलोचित धर्म । कुलका धर्म । "जीव, प्रकृतितत्त्व, दिशा, काल, आकाश, पृथिवी, जल, तेज और वायु" इन सबको "कुल" कहते हैं । इन सबमें जो प्रकारकी बुद्धिसे विकल्परहित व्यवहार करना, इसीको कुलाचार कहतेहैं इसप्रकारका ज्ञान.

कुलाय, (पु०) कुलं पक्षिसंघातोऽयतेऽत्र । अय्+घञ् । पक्षिओंका घर । नीड । आलना । कोई जगह । "कौ लायो गतिः अस्मात्" शरीर । देह.

कुलाल, (पु०) कुल्+कालन् । कुलं अलति, अल्+अण् । कुम्भकार । कुम्हार । ककुभ पक्षी.

कुलिक, (पु०) कुल्+अस्त्यर्थे ठन् । आठ नागोंमेंसे एक । एक नाग । समयविशेष । कुलमें सबसे अच्छा (त्रि०).

कुलिङ्ग, (पु०) कौ पृथिव्यां लिङ्गति चरणार्थं गच्छति अच् । जो पृथिवीपर विचरनेके लिये जाताहै । चटक । चिडिया । धूम्याट (पिङ्गा) । बुरे चिह्नवाला (न०).

कुलिन्, (पु०) कुल+अस्त्यर्थे इनि । पर्वत । अच्छे कुलवाला (त्रि०).

कुलिश, (पु०) (न०) कुले हस्ते शेते । शी+ड । कुलिनं पर्वतं स्यति शो+ड वा । वज्र । अस्थिसंहार वृक्ष । मत्स्यभेद.

कुली, (स्त्री०) कौ लीयते-ङीप् । कण्टकारी । बडीसाली.

कुलीन, (पु०) कुले आकरे भवः । ख । अच्छा घोडा । अच्छे कुलका (त्रि०) । कुलाचारवाला (त्रि०).

कुली(लि)र, (पु०) कुल+ईरच् वा ईरन् । कर्कट (कांकडा) केकडा । मेषसे चौथी राशि.

कुल्माष, (पु०) कोल्ति-कुल+क्विप्-कुल्-माषोऽस्मिन् ब० । आधे मींडे हुए चनक आदि । दुष्धान्य जौ आदि.

कुल्य, कुल्-इक्षाहीना+यत् । अस्थि । हड्डी । छज । [illegible]
"कुले भव."+यत् । अच्छे कुलमें उत्पन्न [illegible]
कुल्+यत्+टाप् । बनावटी छोटी नदी । नहर । [illegible]

कुवङ्ग, (न०) कुत्सितं वङ्गम् । सीसक (सीस) [illegible]

कुवलय, (न०) कोर्वलयं इव शोभाहेतुत्वात् । [illegible] चित्राकमल । नीलाकमल.

कुवलयापीड, (त्रि०) कुवलयं आपीडं मूर्ध्नि [illegible] नीले कमलके भूषणवाला जन । एक दैत्य जिसने [illegible] रूप धारण कियाथा और कृष्णजीसे मारा गया.

कुवाद, (त्रि०) कुत्सितं वदति अण् । दूसरोंके दोष [illegible] वाला । "भावे घञ्" । कुत्सितवाक्य । कुवचन.

कुविन्द, (पु०) [illegible] मूर्ति विन्दति । विद्+श । [illegible] शूद्रजातिकी स्त्रीके गर्भमें विश्वकर्मासे उत्पन्नहुआ [illegible]

कुवेणि-णी, (स्त्री०) कुत्सितं वेणन्ते मत्स्या [illegible] वेण+इन् वा । मत्स्याधानी । मच्छिओंकी टोकरी.

कुश, (पु० न०) कौ शेते । शी+ड । कुशतृण [illegible] (घास) रामचन्द्रजीका पुत्र । घीके समुद्रसे घिरा [illegible] द्वीप (जजीरा) पापी । मस्त । पनला । इत्य.

कुशध्वज, (पु०) जनकराजाका छोटा भाई.

कुशपुष्प, (न०) कुशाकारं पुष्पं अस्य । जिसके [illegible] कुशाकी नाईं हों । ग्रन्थिपर्ण वृक्ष.

कुशबुद्धि, (त्रि०) कुशा इव तीक्ष्णा बुद्धिः यस्य । [illegible] समान तीक्ष्ण (तेज) बुद्धिवाला.

कुशल, (न०) कुश् कलन् । कल्याण । सुख । सुखी (त्रि०) [illegible] कुशान् लाति । ला+क । चतुर (त्रि०) कानमें कुश [illegible]

कुशस्थल, (न०) ६ त० । कन्नौज देश । कान्य[illegible] द्वारका (स्त्री०) ङीप्.

कुशा, (स्त्री०) कुश्+क । लगाम । रस्सी । मधुकर्कटी [illegible]

कुशाग्रम्, (न०) कुशाया अग्रं-ष० त० । कुशकी [illegible] तीक्ष्ण नोक.

कुशाग्रीय, (त्रि०) कुशाग्रं इव [illegible] । बहुत [illegible] अतिसूक्ष्म.

कुशाचीरम, (न०) कुशया निर्मितं चीरं । कुशके [illegible] बनाई गई पोशाक.

कुशासनम्, (न०) कुशाया आसनं-ष० त० । कु[illegible] आसन । कुशाकी बनीहुई चटाई.

कुशावती, (स्त्री०) कुश्+अस्त्यर्थे मतुप् । मस्य व [illegible] रामचन्द्रजीके पुत्र, कुशकी पुरी वा राजधानी

कुशिक, (पु०) कुश्+अस्त्यर्थे ठन् । जमदग्नि [illegible] विश्वामित्रका पिता । मुनिभेद । "कुश इव" [illegible] वृक्ष । बहेडा.

कुशिन्, (त्रि०) कुशा+इन् । कुशासे मिला हुआ [illegible]

कुशीलव, (पु०) कुत्सितं शीलं अस्त्यर्थे व । कुशीलं भाति । और देशमें यशको प्रसिद्ध करनेवाला । नट । कत्थक । मांगनेवाला । वाल्मीकमुनि । भाट.

कुशीलव, (पु०) द्वि० व० । कुश च लव च । द्वि० नि० । रामजीके दोनों पुत्र.

कुशूल, (पु०) कुश्+ऊलच् । कुशाग्नि । कोठेकी आग । अथवा कोठा । ईंट आदिका बनाहुआ धान्य आदि रखने-लायक जगह । भडोला.

कुशेशय, (न०) कुशे जले शेते । शी+अच्-अलुक् । कमल । सारसपक्षी । कनेरका वृक्ष.

कुशोदकम्, (न०) कुशयुक्तं उदकं । जलसे मिला हुआ कुशाका तृण.

कुष्, खेंचना-क्या० पर० सक० सेट् । कुष्णाति । अकोषीत्

कुष्टाकु, (पु०) कुष्णाति । कुष्+आकु । बन्दर सूर्य । आग । शरीर.

कुष्ठ, (न०) कुष्णाति रोगं देहं वा । कुष्+क्थन् । एक रोग । एक दवाई । कोढ़ । कूठ.

कुष्ठारि, (पु०) ६ त० । विट्खदिर । पटोल । गन्धक.

कुष्ठिन्, (त्रि०) कुष्ठ+अस्त्यर्थे इनि । कुष्ठरोगयुक्त । कोढ़ी.

कुष्माण्ड, (पु०) ईषत् ऊष्मा पित्तदेनुलाल् । अण्डेषु बीजेषु यस्य शाक० । जिसके बीजोंमें थोड़ीसी गर्मी हो । कुम्हड़ानामी वृक्ष । शिवजीके गणदेवताका भेद । "शिवां रीत्" । लताभेद । दुर्गा । उमा.

कुस्, आलिङ्गन करना । दिवा० पर० सक० सेट् । कुस्यति । अकुसत् । अकोसीत्.

कुसित, (पु०) कुस्+क्त । जनपद । आबाद नगर । थोड़ाथिड़ा.

कुसीद, (न०) जो निर्भय होकर कुसीदोदेहुल्लेकी चार या आठगुणा लियाजाता है । सूद । ब्याज । अर्धप्रयोग.

कुसुम, (न०) कुस्+उमक् । फूल । फल । स्त्रीरज । नेत्रका रोगभेद.

कुसुमचापेषुका-चापधन्वन्, (पु०) कुसुमानि चापेषुः धनु यस्य-ब० स० । फूल (अशोक-आम आदिके) ही जिसका धनुष् है । कामदेव.

कुसुमपुर, (न०) पटना नामसे प्रसिद्ध देश । पाटलीपुत्र "कुसुम" शब्दार्थ.

कुसुमपुरम्, (न०) कुसुमानां पुरम् । पाटलीपुत्र (पटना) नगरका नाम है.

कुसुमपत्र, (त्रि०) कुसुम+मतुप् । फूलोंवाला.

कुसुमवती, (स्त्री०) कुसुम+मतुप्+ङीप् । फूलवाली । रज स्त्री० जिसको मासिक ऋतुधर्म (फूल) आचुका हो । ऋतु-मती स्त्री.

कुसुमलता, (स्त्री०) कुसुमानां लता । फूलोंकी बेल.

कुसुमशयनम्, (न०) कुसुमानां शयनम् । फूलोंकी शय्या (सेज).

कुसुमस्तबकः, (पु०) कुसुमानां स्तबकः । फूलोंका गुच्छा.

कुसुमाकर, (पु०) ६ त० । फूलोंकी खान । वसन्त ऋतु । "ऋतूनां कुसुमाकरः" गीता.

कुसुमापीड, (पु०) कुसुमानां आपीडः-भूषणम् । फूलोंकी माला । फूलोंका भूषण (सेहरा)

कुसुमायुध, (पु०) कुसुमं आयुधं यस्य । जिसका फूल शस्त्र है । कामदेव

कुसुमासव, (न०) कुसुमस्य [illegible] । फूलके रसका मद्य । फूलका मधु । फूलका मद्य । [illegible] । फूलोंकी शराब.

कुसुमित, (त्रि०) कुसुम+इतच् । फूलवाला । जिसपर फूल निकल आये हों

कुसुमेषु, (पु०) कुसुमानि इषवो यस्य । फूल जिसके बाण हैं । कामदेव.

कुसुमोच्चय, (पु०) कुसुमानां उच्चयः । फूलोंका समूह । गुच्छा.

कुसुमोज्ज्वल, (त्रि०) कुसुमैः उज्ज्वलः । [illegible] । फूलोंसे चमकीला.

कुसुम्भ, (न०) कुस्+उम्भ । फूल जिसमें बहुत हो [illegible] । कुसुम्भा । कुसुं । "कर्दै" [illegible] । कमण्डलु

कुसृति, (स्त्री०) कुत्सिता सृतिः । [illegible] । [illegible] । शठता । धूर्तता

कुस्तुभ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । विष्णु । समुद्र

कुह, आश्चर्य होना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । कुहयते अचुकुहत.

कुह, (अव्य०) कुत्र । "कहां" इसी अर्थमें होता है

कुहक, (न०) कुह्+वुन् । [illegible] [illegible] प्रकारके [illegible] । [illegible] । इन्द्रजाल । छल । जादूगरी । धूर्त (त्रि०)

कुहर, (पु०) [illegible] । [illegible] । छिद्र । [illegible] । [illegible] । [illegible]

कुहू-हू, (स्त्री०) कुह्+ऊ वा कर । वह अमावस जिसमें चन्द्रमाकी कला बिलकुल नहीं दिखाई [illegible] हो । [illegible] (कोयल)

कुहूरव, (पु०) कुहूरिति रवः यस्य । जिसके शब्दमें कुहू ऐसा शब्द होता है । कोकिल । कोयल

कृ, [illegible] । [illegible] । [illegible] । अकर्षीत् । अकर्षीत्

कुलपति, (पु०) ६ त० । मुनिविशेष । "जो दस हजार मुनिओंको अन्नादिसे पालता और विद्या पढाताहै" । सेनाका मालिक.

कुलपर्वत, (पु०) कौ पृथिव्यां लीयते । ली+ड । महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षपर्वत, विन्ध्य, और पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं । "कुलाचल" यही अर्थ.

कुलंधर, (त्रि०) कुल+धृ+खच् मुम् । कुलको धारण करनेवाला.

कुलधर्म, (पु०) कुलस्य धर्मः ष० त० । कुल (खान्दान) का धर्म (कर्तव्य).

कुलविद्या, (स्त्री०) कुलागता विद्या । कुलकी परम्परासे आरही विद्या.

कुलव्रत, (न०) कुलस्य व्रतं ष० त० । कुलका व्रत (नियम).

कुलाचार, (पु०) ६ त० । कुलोचित धर्म । कुलका धर्म । "जीव, प्रकृतितत्त्व, दिशा, काल, आकाश, पृथिवी, जल, तेज और वायु" इन सबको "कुल" कहते हैं । इस सकलमें जो ब्रह्मकी बुद्धिसे विकल्परहित व्यवहार करना, इसीको कुलाचार कहतेहैं इस-प्रकारका ज्ञान.

कुलाय, (पु०) कुलं पक्षिसंघातोऽयतेऽत्र । अय्+घञ् । पक्षिओंका घर । नीड । आलना । कोई जगह । "कौ लायो गतिः अस्मात्" शरीर । देह.

कुलाल, (पु०) कुल्+कालन् । कुलं अलति, अल्+अण् । कुम्भकार । कुम्हार । कुक्कुभ पक्षी.

कुलिक, (पु०) कुल+स्वार्थे ठन् । आठ नागोंमेंसे एक । एक शाक । धनवानहोना । कुलमें सबसे अच्छा (त्रि०).

कुलिङ्ग, (पु०) कौ पृथिव्यां लिङ्गति चरणार्थं गच्छति अच् । जो पृथिवीपर विचरनेके लिये जाताहै । चटक । चिड़िया । भूम्याण्ड (सिंह) । कुरे चिह्नवाला (न०).

कुलिन, (पु०) कुल+अस्त्यर्थे इनि । पर्वत । अच्छे कुलवाला (त्रि०).

कुलिश, (पु०) (न०) कुले दमे शेते । शी+ड । कुलिनं पर्वतं श्यति शो+ड वा । वज्र । अस्थिसंहार वृक्ष । मत्स्यभेद.

कुली, (स्त्री०) कौ लीयतेऽसौ । कण्टकारी । कटेहरी.

कुलीन, (पु०) कुले जायते स्म । ख । अच्छा घोड़ा । अच्छे कुलका (त्रि०) । कुलपरम्परा (त्रि०).

कुली(लि)र, (पु०) कुल+ईर वा ईरच । कर्कट (केकड़ा) केकड़ा । [illegible]

कुल्माष, (पु०) [illegible]

कुल्य, कुल्+हकराद्दीना+क्यप् । अस्थि । हड्डी । छत्र । "कुले भवः"+यत् । अच्छे कुलमें उत्पन्न [illegible] कुल्+क्यप्+टाप् । बनावटी छोटी नदी । नहर । [illegible]

कुवङ्ग, (न०) कुत्सितं वङ्गम् । सीसक (सीसा) [illegible]

कुवलय, (न०) कोर्वलयं इव शोभाहेतुत्वात् । [illegible] विद्यकमल । नीलाकमल.

कुवलयापीड, (त्रि०) कुवलयं आपीडः मूर्ते [illegible] नीले कमलके भूषणवाला जन । एक दैत्य जिसने [illegible] रूप धारण कियाथा और कृष्णजीसे मारा गया.

कुवाद, (त्रि०) कुत्सितं वदति अण् । दूसरेका [illegible] वाला । "भावे घञ्" । कुत्सितवाक्य । कुवचन.

कुविन्द, (पु०) कुं भूमिं विन्दति । विद्+श । [illegible] शूद्रजातिकी स्त्रीके गर्भमें विश्वकर्मासे उत्पन्नहुआ [illegible]

कुवेणि–णी, (स्त्री०) कुत्सितं वेणते मत्स्य [illegible] वेण+इन् वा । मत्स्याधानी । मच्छिओंकी टोकरी.

कुश, (पु० न०) कौ शेते । शी+ड । कुश [illegible] (घास) रामचन्द्रजीका पुत्र । पीछे समुद्रसे [illegible] द्वीप (जजीरा) पापी । मत्त । पतला । कुश.

कुशध्वज, (पु०) जनकराजाका छोटा भाई.

कुशपुष्प, (न०) कुशाकारं पुष्पं अस्य । जिसके [illegible] कुशाकी नाईं हों । ग्रन्थिपर्ण वृक्ष.

कुशबुद्धि, (त्रि०) कुश इव तीक्ष्णा बुद्धिः यस्य । [illegible] समान तीक्ष्ण (तेज) बुद्धिवाला.

कुशल, (न०) कुश् कलन् । कल्याण । पुण्य । पुण्यी ([illegible] कुशान् लाति । ला+क । चतुर (त्रि०) कामने [illegible]

कुशस्थल, (न०) ६ त० । कन्नौज देश । [illegible] द्वारका (स्त्री०) द्वीप

कुशा, (स्त्री०) कुश्+क । लगाम । रस्सी । [illegible]

कुशाग्रम्, (न०) कुशाया अग्रं-ष० त० । कुशकी [illegible] तीक्ष्ण नोक.

कुशाग्रीय, (त्रि०) कुशाग्रं [illegible] छ । बहुत [illegible] अतिसूक्ष्म.

कुशाचीरम्, (न०) कुशया निर्मितं चीरं । कुशसे [illegible] बनाई गई पोशाक.

कुशासनम्, (न०) कुशाया आसनं-ष० त० । [illegible] आसन । कुशाकी बनीहुई चटाई.

कुशावती, (स्त्री०) कुश+अस्त्यर्थे मतुप् । [illegible] रामचन्द्रजीके पुत्र, कुशकी पुरी या राजधानी

कुशिक, (पु०) कुश+अस्त्यर्थे ठन् । [illegible] विश्वामित्रका पिता । मुनिभेद । "कुश इव" [illegible] वृक्ष । बहेड़ा.

कुशिन, (त्रि०) कुशा । [illegible]

कुशीलव, (पु०) कुत्सितं शीलं आस्त्यस्य । कुशीलं वाति । और देशमें यशको प्रसिद्ध करनेवाला । नट । चारण । मांगनेवाला । वाल्मीकिमुनि । भाट.

कुशीलव, (पु०) द्वि० व० । कुशश्च लवश्च । द्वि० नि० । रामजीके दोनों पुत्र.

कुशूल, (पु०) कुश्+ऊलच् । तुषाग्नि । तोहकी आग । अथवा कोठा । ईंट आदिका बनाहुआ धान्य आदि रखने-लायक स्थान । मडोला.

कुशेशय, (न०) कुशे जले शेते । शी+अच्-अलुक् । कमल । सारसपक्षी । कनेरका वृक्ष.

कुशोदकम्, (न०) कुशयुक्तं उदकं । जलसे मिला हुआ कुशका तृण.

कुष्, रोचना-क्र्या० पर० सक० सेट् । कुष्णाति । अकोषीत्.

कुषाकु, (पु०) कुष्णाति । कुष्+आकु । बानर सूर्य । आग । शरीर.

कुष्ठ, (न०) कुष्णाति रोगं देहं वा । कुष्+क्थन् । एक रोग । एक दवाई । कोढ़ । कुट.

कुष्ठारि, (पु०) ६ त० । विट्खदिर । पटोल । गन्धक.

कुष्ठिन्, (त्रि०) कुष्ठ+अस्त्यर्थे इनि । कुष्ठरोगयुक्त । कोढ़ी.

कुष्माण्ड, (पु०) ईषत् ऊष्मा पित्तहेतुत्वात् । अण्डेषु बीजेषु यस्य शक० । जिसके बीजोंमें थोड़ीसी गर्मी हो । कुम्हड़ानामी वृक्ष । शिवजीके गणदेवताका भेद । "स्त्रियां ङीप्" । लताभेद । दुर्गा । उमा.

कुस्, आलिङ्गन करना । दिवा० पर० सक० सेट् । कुस्यति । अकुसत् । अकोसीत्.

कुसित, (पु०) कुस्+क्त । जनपद । आबाद नगर । थोड़ाचिह्न.

कुसीद, (न०) जो निर्भय होकर दुःखीहोतेहुएसेभी धन या आठगुणा लियाजाताहै । सूद । ब्याज । अर्थप्रयोग.

कुसुम, (न०) कुस्+उमक् । फूल । फल । स्त्रीरज । नेत्रका रोगभेद.

कुसुमकार्मुकः-चापधन्वन्, (पु०) कुसुमानि कार्मुकं= धनुः यस्य-ब० स० । फूल (अशोक-आम आदिके) जिसका धनुष् है । कामदेव.

कुसुमपुर, (न०) पटना नामसे प्रसिद्ध देश । पाटलीपुत्र "कुसुम" यहीअर्थ.

कुसुमपुरम्, (न०) कुसुमानां पुरम् । पाटलीपुत्र (पटना) नगरका नाम है.

कुसुमवत्, (त्रि०) कुसुम+मतुप् । फूलोंवाला.

कुसुमवती, (स्त्री०) कुसुम+मतुप्+ङीप् । फूलवाली । वह स्त्री० जिसको मासिक ऋतुधर्म (फूल) आयगया हो । ऋतु-मती स्त्री.

कुसुमलता, (स्त्री०) कुसुमानां लता । फूलोंकी बेल.

कुसुमशयनम्, (न०) कुसुमानां शयनम् । फूलोंकी शय्या (सेज).

कुसुमस्तबकः, (पु०) कुसुमानां स्तबकः । फूलोंका गुच्छा.

कुसुमाकर, (पु०) ६ त० । फूलोंकी खान । वसन्त ऋतु । "ऋतूनां कुसुमाकरः" गीता.

कुसुमापीड, (पु०) कुसुमानां आपीडः-भूषणम् । फूलोंकी माला । फूलोंका भूषण (सेहरा).

कुसुमायुध, (पु०) कुसुमं आयुधं अस्य । जिसका फूल शस्त्र है । कामदेव.

कुसुमासव, (न०) कुसुमस्य तद्रसस्य आसवः । फूलके रसका मद्य । फूलका मधु । फूलका मद्य । शहत । फूलोंकी शराब.

कुसुमित, (त्रि०) कुसुम+इतच् । फूलवाला । जिसपर फूल निकल आये हों.

कुसुमेषु, (पु०) कुसुमानि इषवो यस्य । फूल जिसके बाण हैं । कामदेव.

कुसुमोच्चय, (पु०) कुसुमानां उच्चयः । फूलोंका समूह । गुच्छा.

कुसुमोज्ज्वल, (त्रि०) कुसुमैः उज्ज्वलः । तृ० त० । फूलोंसे चमकीला.

कुसुम्भ, (न०) कुस्+उम्भ । फूल जिसमें बहुत हों ऐसा वृक्ष । कुसुम्भा । फूल । "स्वार्थे" क । कमण्डलु.

कुसृति, (स्त्री०) कुत्सिता सृतिः । सृ+क्तिन् । शठता । शरारत । जालसाजी.

कुस्तुभ, (पु०) कुं भूमिं ईषत् वा स्तुभ्नाति । स्तुम्भ्+अच् । नलोपः नि० । विष्णु । समुद्र.

कुह, आश्चर्यहोना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । कुहयते अचुकुहत्.

कुह, (अव्य०) कुत्र । "कहां" इसी अर्थमें होताहै.

कुहक, (न०) कुह्+वुन् । इन्द्रजालकी मायासे किसी वस्तुका औरही प्रकारके दीखना । माया । इन्द्रजाल । छल । जालसाजी । धूर्त (त्रि०)

कुहर, (पु०) कुं हरति । हृ+अच् । गुहा । गुफा । नाग-भेद । गढा । छिद्र । गला । कान । एकप्रकारका नाच.

कुहु-हू, (स्त्री०) कुह्+कु वा ऊङ् । वह अमावस्या कि जिसमें चन्द्रमाकी कला और चतुर्दशीसे युक्त हो । कोकिला ...

कुहुकण्ठ, (पु०) यस्य । जिसके कण्ठमें कुहू ऐसा शब्द । कोकिल

कू, शब्द करना अक० सेट् । कूनीते ।

कुकुन्द, (पु०) [illegible] नहनेवालोंके सदृशाकर [illegible] । सिह । नितम्ब.

कूचिका, (स्त्री०) कूच+विद्-संज्ञायां कन् । कूचिया । [illegible] "कूचि".

कूज,-अव्यक्तशब्द । भ्वा० पर० सक० सेट् । कूजति-अकूजीत्

कूजित, (न०) कूज+क्त । पक्षीकी आवाज । अव्यक्तशब्द.

कूट, (पु०) कूट+अच् । कर्मणि घञ् वा । अगस्त्यमुनि । घर (पु०) (स्त्री०) न हिलनेवाला । धान आदिका ढेर । लोहेका मुद्गर । [illegible] । माया । यथार्थ वस्तुका ढांकना । पर्वतकी चोटी । [illegible] । हलका भाग । झूठा । मृगोंके फांसनेकी कला । मुद्गर (पु०).

कूटकृत्, (पु०) कूटं मिथ्याभूतं करोति । कूट+क्विप्-तुगागम । [illegible] । [illegible] । [illegible] । धूर्त । दगाबाज । धूर्त [illegible].

कूटकारः-कारक, (पु०) कूटं करोति=अयति । झूठी [illegible] देनेवाला.

कूटतुला, (स्त्री०) कूट=मिथ्या तुला । [illegible] [illegible] । झूठी तखरी.

कूटधर्म, (वि०) कूट. धर्म. यस्य । झूठे धर्मवाला स्थान-[illegible].

कूटमानम्, (न०) कूटं मानम् । झूठा मान.

कूटयुद्धम्, (न०) कूटं युद्धं । झूठा युद्ध (लड़ाई).

कूटशासन, (वि०) [illegible] देनेवाला । [illegible].

कूटस्थ, (वि०) जो [illegible] के समान स्थिर है । [illegible] । [illegible] [illegible] न बदलनेवाले [illegible] । [illegible] । [illegible] (पु०).

कूटस्वर्ण, (न०) कूटं स्वर्णम् । झूठा सोना.

कूटागार, (पु०) कूट+अगार । [illegible] । [illegible].

कूटार्थभाषितं, (न०) कूटं [illegible] । झूठी कथा । बनावटी [illegible] ।

कूटागार, (न०) [illegible] । [illegible] घर । [illegible] घर । [illegible].

कूटार्थ, (पु०) कूट अर्थ । [illegible] अर्थ जिसके हो [illegible] । [illegible].

कूटोपाय, (पु०) कूट उपाय । झूठा उपाय । छल.

कूप, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

कूप. [illegible] । [illegible], [illegible] । [illegible] [illegible].

कूपमण्डूकः-की, (पु० स्त्री०) कू[illegible]
मेंडक । एक अपरिचित (अनजान [illegible]
जिसको संसारका कुछ ज्ञान नहीं, [illegible]
लोगोंकोही जानता है । किसीको [illegible]
बेसमझके लिये.

कूपयन्त्रम्, (न०) कूपस्य यन्त्रम् । [illegible]
पानी निकालनेकी मशीन (कल),

कूपयन्त्रघटिका-घटी, (स्त्री०) [illegible]
कूएमेंसे जल निकालनेके लिये अरहट [illegible]
लगाई गई घड़ियें.

कूपकः, (पु०) कूप [illegible] । कन्-स्वार्थे [illegible]
थोड़े समयके लिये बनावटी कूआ । [illegible]
गुफा । चूतड़ोंके नीचेका गुठना । [illegible]
चिता । चिताके नीचेका गढ़ा । बनके [illegible]
मध्यका पर्वत वा वृक्ष । किसी नाव [illegible]
तरहके बीचका पत्थर.

कूपी, (स्त्री०) कूप+ई । छोटीमूई । [illegible]

कूर्च, (पु० न०) कुर्चते । कुर+चट्-नि [illegible]
दाढ़ी । छल । दर्भ । मोरकी पूंछ । [illegible]
घरण । शिर.

कूर्चशीर्ष, (पु०) कूर्चं इमश्रु तद्वत् [illegible]
शिर दाढ़ीके समान हो । नारियेल । [illegible]

कूर्पास, (पु०) कंचुकी । अंगिया.

कूर्म, (पु०) कुत्सितः [illegible] कर्मियोंसे [illegible]
देहका एक प्रकारका वायु.

कूर्मचक्र, (न०) कूर्माकारं चक्रम् । ग[illegible]
इनिहर्म्यके लायक । जलादि [illegible]
आकारका चक्र.

कूर्मपृष्ठ-ष्ठकम्, (न०) कूर्मस्य पृष्ठम् । [illegible]
कछुएकी पीठ.

कूर्मावतार, (पु०) कूर्मस्य अवतारः । [illegible]
अवतार विष्णुका.

कूल,-रोकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कू[illegible]

कूलंकष, (पु०) कूलं कषति । वह । [illegible]
नदी (स्त्री०)

कूवर, (पु० न०) [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]
रथ । शिरह.

कूष्माण्ड, (पु०) कुत्सितः ऊष्मा [illegible]
जिसके [illegible] धूमी [illegible] । कुम्हड़ा । [illegible]
[illegible]

कृ, [illegible] । स्वा० उभ० सक० अनि । [illegible]
[illegible] । [illegible].

रा । तना० उभ० सक० अनिट् । करोति । कुरुते ।
र्ष्ट् । अकृत.

ना । तुदा० पर० सक० सेट् । किरति । अकारीत् ।
:.

कु, (पु०) कृकेण कण्ठेन वक्ति । वच् बोलना-
बच । कुक्कुट । मोर । सारस पक्षी.

टका, (स्त्री०) कृकं कण्ठं अटति । अट्+ण्वुल्-
त्वमपि अाइत्वम् । ग्रीवामें ऊंची जगह । घण्टी.

(न०) कृत्+रक्-छोऽन्तादेशः । कष्ट । दुःख ।
वा कारण पाप । कष्टदेनेवाला प्राजापत्य आदि व्रत ।
कृच्छ्ररोग.

काटना । तुदा० पर० सक० सेट् । कर्तनं । कृन्तति ।
र्तीत् ।

कीर्तन करना । चु० उभ० सक० सेट् । कीर्तयति-न्ते ।
अचीकृतत्-त । कृतः.

(न०) कृ+क्त । देवताओंका बारहजार वर्ष ।
ष्योंके मानसे १७२८००० वर्ष । सत्ययुग । पूरा ।
। । बस । फल । रचागया (त्रि०).

, (न०) कृत+कुन् । बनावटी । झूठीकल्पना
रा गया.

र्मन्, (त्रि०) । कृतं कर्म । येन । जो अपना काम
चुका है । चतुर । परमात्मा । संन्यासी.

त्य, (त्रि०) कृतं कृत्यं कर्तव्यं येन । जो अपना
र करचुकाहो । कृतार्थ । समाप्तकार्य । धन्य । विद्वान्.

त्य-क्रिय, (त्रि०) कृतं कृत्यं येन । जिसने अपना
जन सिद्ध कर लिया है । कामयाब.

ण, (त्रि०) कृतः क्षणः समयो येन । जिसे समय
लगया हो । लब्धावकाश.

, (त्रि०) कृतं हन्ति । हन्+क । जो कियेको नाश
है । उपकारीका अपकार करनेहारा । "कृतघ्ने
नेत निष्कृतिः" पुराणम्

ड, (पु०) कृतं चूडाकर्म यस्य । जिसका चूडाकर्म
मुण्डनसंस्कार) हो चुका है.

, (त्रि०) कृतं जानाति ज्ञा+क । कियेको जाननेहारा ।
कृतज्ञ.

, (त्रि०) कृतं कृतोपकारं जानाति । ज्ञा+क । जो
कियेगये उपकारको जानता है । उलट कर उपकार
करनेवाला.

ी, (त्रि०) कृता सम्पादिता धीर्येन । जिसने शास्त्र-
अभ्याससे अन्तःकरणको शुद्ध कियाहै.

णाश, (पु०) कियेगये पुण्य और पापका भोगके
ना नाश होना । कृतहानि । पुण्यपापकी हानि.

कृतम्, (अव्य०) "अलं" इस अर्थमें । बस । निषेध ।
रोकना.

कृतलक्षण, (त्रि०) कृतानि लक्षणानि अस्य । जिसके
लक्षण कियेगये हों । गुणोंसे प्रसिद्ध कियागया.

कृतविद्य, (त्रि०) कृता अभ्यस्ता विद्या येन । जिसने
विद्याका अभ्यास किया हो । अभ्यस्तविद्य । विद्वान्.

कृतवीर्य, (पु०) कृतं वीर्यं अनेन । एकवीरराजाका
पुत्र । बली । एक राजा.

कृतश्रम, (त्रि०) कृतः श्रमो येन । (जिसने मिहनत
की हो । महोत्साही । बड़े चावबाला.

कृतस्वर, (पु०) कृतः स्वरो यत्र । सोनेके उपजनेकी
जगह । सोनेकी खान.

कृतहस्त, (त्रि०) कृतः अभ्यस्तः हस्तो येन । जिसके
हाथमें बाण आदि चलानेकी चतुराई हो । तिरंदाज सीखा-
हुआ जन.

कृताञ्जलि, (पु०) जो हाथ जोडनेके समान पत्तोंको
सिकोड लेताहै । लज्जालुवृक्ष । हाथ जोडेहुए (त्रि०).

कृतात्मन्, (पु०) कृतः शिक्षितः संस्कृतो वा आत्मा
अन्तःकरणं यस्य । जिसका चित्त सीखाहुआ है ।
जिसका मन साफ है । शिक्षितचित्त । शुद्धान्तःकरण.

कृतात्यय, (पु०) कृतस्य कर्मजन्यभोगस्य अत्ययोऽ-
वसानं । कर्मसे उत्पन्नहुए भोगका अन्त । भोगके विना
कियेगये कर्मका नाश.

कृतान्त, (पु०) कृतः अन्तो येन । जिसने अन्त कर-
दिया । सिद्धान्तको जानाहुआ । ज्ञातसिद्धान्त । "कृतो
नाशो येन" । नाशकरनेवाला । दैव । पाप । यम.

कृतार्थ, (त्रि०) कृतः अर्थः प्रयोजनं येन । जिसनें
काम करलिया । कृतकार्य.

कृतास्त्र, (त्रि०) कृतं शिक्षितं अस्त्रं येन । जिसनें अस्त्र-
का चलाना सीख लियाहो । शिक्षितास्त्र.

कृति, (स्त्री०) कृ+क्तिन् । पुरुषका प्रयत्न । कर्ताका
व्यापार । २० अक्षरके पादवाला छन्दोभेद.

कृतिन्, (पु०) कृतमनेन । पण्डित । योग । पुण्यवान् ।
चतुर । साधु । कृतार्थ.

कृतोदक, (त्रि०) कृतः उदकसंस्कारः यस्य । ब० स० ।
जिसका तर्पण या जलप्रक्षिसंस्कार किया गया हो ।
अञ्जली दिया हुआ.

कृतोद्वाह, (त्रि०) कृतः उद्वाहः येन । ब० स० । जिसका
विवाह होगया हो.

कृतोपकार, (त्रि०) कृतः उपकारः यस्य । ब० स० । उप-
कार किया गया । सहायता पहुंचाया गया.

कृतोपभोग, (त्रि०) कृतः उपभोगः येन । जिसका भोग
भोग लिया है । किसी वस्तुको काममें ला चुका हो.

कृत्त, (त्रि०) कृत्+क्त । काटागया । घेराहुआ.

कृत्ति, (त्रि०) कृत्+क्तिन् । चमड़ा । भोजपत्र.

कृत्तिका, (स्त्री०) कृत्+क्तिन्-संज्ञायां कन् । अश्विनीसे तीसरा तारा.

कृत्तिवासस्, (पु०) कृत्तिरेव वासो यस्य । चमड़ा जिनका कपड़ा है । कृत्ति वस्ते । वस्+असुन् । वा । शिवजी महाराज.

कृत्नु, (त्रि०) कृ+नु । अच्छा काम करनेवाला । शक्तिमान्.

कृत्य, (न०) कृ+क्यप् । काम । व्याकरणमें कहेगये ण्यत्, क्यप्, तव्य, अनीयर्, यत्, केलिम प्रत्यय (पु०) करनेलायक (त्रि०)

कृत्रिम, (न०) कृ+क्त्रि-मेनिर्वृत्त । विड्लवण । पांचलवन । एक प्रकारका निमक । तुरुष्कनाम गन्धद्रव्य । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक (पु०) बनावटी (त्रि०) । मुलम्मा.

कृत्स्न, (न०) कृत्+क्स्न । सारा । पानी । कुक्षि । कोख । सम्पूर्ण (त्रि०).

कृन्तन, (न०) कृत्+ल्युट् । मि० मुमुच । काटना । छेदन.

कृप्, कल्पना करना-रचना करना । भ्वा० आत्म० । घट् घट् वट् वृद्धमें उभ० अक० सेट् । कल्पते । अकल्पत् । अकल्पिष्ट-अक्लृप्त । कल्प्तासि । कल्पितासे-कल्प्स्यते । कल्प्स्यति । कल्पिष्यते.

कृप, (पु०) कृप्+क । शरद्वान्का पुत्र । द्रोणका साला । कृपाचार्य.

कृपण, (पु०) कृप्+ल्युट् । कीड़ा । मूर्ख । कमीना । दीन । क्षुद्र । न देनेवाला (त्रि०).

कृपा, (स्त्री०) कृप्+अङ् । दया । बदलेमें न चाहकर दीनजनोंपर अनुग्रह करनेकी इच्छा.

कृपाण, (पु०) कृपां नुदति । नुद्+ड । तलवार । "कॉप्" कृपाणी छुरी अर्थमें । छुरी । कैंची.

कृपालु, (त्रि०) कृपा अस्ति । अस्+डु । कृपायुक्त । दयावाला.

कृपी, (स्त्री०) द्रोणाचार्यकी स्त्री । शरद्वान्की पुत्री.

कृमि, (न०) कृ+ईटन् । उदर । पेट । तोंद । बठ । पर्दी.

कृमिपर्योनि, (पु०) कृमिरेव जन्म योनिः । जलका प्राणी । कृमि । अग्नि । अन्न.

कृमि, (पु०) क्रम्+इन् । सम्प्रसारणं च । कीड़ा । लाख । पेटके कीड़ेका रोग.

कृमिकोशोत्थ, (न०) कृमेः कोशात् उत्तिष्ठते । उद्+स्था+क । जो कीड़ोंके कोशसे बनता है । रेशम । रेशमी कपड़ा.

कृमिघ्न, (पु०) कृमिं हन्ति । हन्+क । बायबिडंग । हल्दी (स्त्री०) धूपपत्रा.

कृश्, छोटाकरना । दिवा० पर० सक० सेट् । अकृशत् । अकर्शीत्.

कृश, (त्रि०) कृश+क्त । नि० । थोड़ा महीन । सूक्ष्म.

कृशतनुः, (स्त्री०) कृशा तनुः यस्याः । जिसका पतला है । कोमल शरीरवाली । कृशोदरी.

कृशाङ्ग, (त्रि०) कृशानि अङ्गानि यस्य । कमजोर वाला । पतला.

कृशानु, (पु०) कृश्+आनुक् । आग । चित्रक

कृशानुरेतस्, (पु०) कृशानौ यस्य रेतो यस्य जिनका वीर्य पड़ाहै । शिवजी । पार्वती सहारसकी इसलिये आगमें फेंकगया । जिससे समान कार्तिकेय हुआ.

कृष्, खैंचना । तुदा० आत्म० सक० अनिट् । अकृक्षत्-अक्षत.

कृष्, खैंचना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । कर्षति अक्षीत्-अकार्क्षीत् । अकृक्षत्.

कृषक, (पु०) कृष्+वुन् । समय । हल । खेती करनेवाला (त्रि०) खेतीकरनेवाला.

कृषि, (स्त्री०) कृष्+इक् । वैश्यका काम । किसानी.

कृषीवल, (त्रि०) कृषिः अस्य अस्ति । खेतीकरनेवाला.

कृष्ट, (त्रि०) कृष्-कर्मणि क्त । खेंचा गया । हल

कृष्ण, (पु०) कृष्+नक् । भगवान्के अवतार वसुदेवका पुत्र । देवकीनन्दन । यशोदानन्दन । वेदव्यास । अर्जुन । काला । कौआ । नीला रंग । नीलेरंगवाला (त्रि०).

कृष्णगन्ध, (पु०) कृष्णा तमः गन्धोऽस्य ।

कृष्णद्वैपायन, (पु०) द्वीपे अयः । कन् । पराशरसे यमुनाद्वीपमें जन्म हुआ । ऋषि पुत्र

कृष्णपक्ष, (पु०) प्रतिपदासे अमावास्या तिथियें । मासका समय । अंधेरापाख.

कृष्णलोह, (न०) अयस्कान्त । चुम्बक (पत्थर.

कृष्णवर्त्मन्, (पु०) कृष्णं वर्त्म अस्य । जिसका काला है । आग । राहुग्रह । चित्रक । दुराचारी (त्रि०)

कृष्णवर्त्मन्, (पु०) कृष्णं वर्त्म यस्य । अग्निकोण । अग्नि.

कृष्णसा(सा)र, (पु०) कृष्णश्चासौ सारः (शारः) शबलश्च । कालसारमृग । हरिणका भेद । जो काला और चितित हो । टालीका दरख्त.

कृष्णसखः-सारथिः, (पु०) कृष्णस्य सखा वा कृष्णस्य सारथि:-टच् स० । श्रीकृष्णका मित्र वा रथवाही । अर्जुन.

कृष्णाजिन, (न०) कृष्णसार हरिणका चमडा.

कृष्णाटक, (पु०) कृष्णं वर्ण स्यति । स्यन्+क । चमूच । गुञ्जाफल । रत्ती । यह आधी काली होतीहै.

कृष्णाष्टमी, (स्त्री०) कृष्णस्य अष्टमी । कृष्णके जन्मदिन भाद्रपदकृष्णपक्षकी अष्टमी । गोकुलाष्टमी इसी अर्थमें.

कृष्णिकाक, (स्त्री०) कृष्णैव । संहस्त्री कन् । राई । राजसर्षप.

कृष्या, (स्त्री०) कृष्+अर्हार्थे यत् । खेंचनेलायक पृथिवी.

केकय, (पु०) देशभेद । सूर्यवंशीयराजाका भेद । दशरथ-राजाकी स्त्री (स्त्री०).

केकर, (पु०) के मूर्धि कर्तुं शीलं अस्य । कृ+अप् । अलुक् स० । तिर्य्नेत्रताक्षियुक्तपुरुष । नीची ऊंची आंखवाला पुरुष । टीरा.

केका, (स्त्री०) के मूर्धि कायते कर्मणि ट अलुक् स० । मोरकी वाणी.

केकिन्, (पु०) केका अस्त्यर्थे इनि । मोर । मयूर.

केतक, (पु०) कित-निवास करना । ण्वुल् । केतकीवृक्ष । क्योडा

केतन, (न०) कित्+ल्युट् । घर । झण्डा । चिह्न । काम । धया कृत्य.

केतु, (पु०) चाय्+तु कयादेशः । रोग । चमक । झण्डी । चिह्न । शत्रु । नवग्रहोंमेंसे एक ग्रह । धूमकेतु । बीमारी.

केदार, (पु०) के शिरसि दारोऽस्य । पर्वतभेद । केदा-रेश्वर महादेव । पृथिवीका भागविशेष । क्यारा.

केनिपात, (पु०) के जले निपातोऽस्य अलुक् स० । अरित्र । बेडी आदिकी गतिको रोकनेवाला । डाण्डनामसे प्रसिद्ध काठ । "केनिपातक" यही अर्थ.

केयूर, (पु०) के बाहुशिरसि याति । या+उरन् । अलुक् स० । जो भुजाके शिरेपर डालाजाताहै । बाजू । बुहटा.

केरल, (पु०) देशभेद । वह देश कि जहां वेदसे यज्ञ-करनेका अधिकार नहीं । क्षत्रियभेद.

केल्, हिलाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । केलति । अकेलीत्.

केलि, (पु० स्त्री०) केल्+इन् । परीहास । मखौल । खल । पृथिवी.

केव्, सेवाकरना । भ्वा० आ० सक० सेट् । केवते । अकेविष्ट.

केवल, (त्रि०) केव्+कलच् । के सरति पश्यति । बल+अच् । अलुक् स० । एक । अकेला । पूरा । निश्चय कियाहुआ । ज्ञानभेद । शुद्ध । साफ (न०).

केश, (पु०) क्लिश्यते क्लिश्नाति वा क्लिश्+अच् ललो-पश्च । कस्य ईशो वा । वरुण । दैत्यभेद । विष्णु । बाल । मध्यधातुका उपधातुविशेष.

केशपाशी, (स्त्री०) केश+पाश+ङीप् । शिखा । चोटी । केशोंके बीचकी चूडा (कलगी).

केशमार्जक, (न०) केशान् मार्ष्टि । मृज्+ण्वुल् । कंगी । कंकतिका.

केशर, (पु०) [illegible] जले शीर्यते । शृ+अच् । शेरके कंधेकी जटा । घोडेके कंधेपरके बाल । फूलकी तिरी । नागकेसरका दरख्त । सुपारीका पेड.

केश(स)रिन्, (पु०) केश(स)राः सन्त्यस्य इनि । सिंह । शेर । घोडा । पुन्नागवृक्ष । नागकेसर । बीज-पूरकवृक्ष । तरबूज । हनुमान्का पिता । वानरभेद.

केशव, (पु०) केशो ब्रह्मणो अपि अनुकम्प्यतया वाति वा+क । ब्रह्मा और रुद्रमीपरभी जो दया करता है । "केशं केशिनं वाति हिनस्ति [illegible] क" विष्णु । केशी-दैत्यके मारनेवाला । सूर्य आदि अंशवाला परमेश्वर । केश+प्रशस्त्ये व" । अच्छे बालोंवाला.

केशवेश, (पु०) केशस्य वेशः । बालोंकी सजावट । गुत्तका बंधन.

केशिका, (स्त्री०) केशिन [illegible] कायति । कै-क । शतावरी नाम एक वृक्ष.

केशिन्, (त्रि०) प्रशस्ताः केशाः सन्त्यस्य । केश+इनि । अच्छे बालोंवाला । विष्णु । दैत्यभेद । सिंह । शेर.

केशिनिषू(सू)दन, (पु०) केशिनं निषूदयति हिनस्ति । नि+सूद+णिच्+ल्युट् । केशीको मारनेवाला । कृष्ण । "केशिहा" यही अर्थ.

कै, शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । कायति । अकासीत्.

कैकसः, (पु०) कीकस-अण् । कीकस पुत्र । एक दैत्य । जिन.

कैकेय, (पु०) केकयानां राजा, अण् । केकय देशका राजा वा शासक.

कैकेयी, (स्त्री०) केकयस्यापत्यं स्त्री अण् । भरतकी मा । दशरथकी स्त्री.

कैटभजित्, (पु०) कैटभं जितवान् । जि+भूते क्विप् तुकच । विष्णु.

कैतकम्, (न०) केतक्याः पुष्पं-अण् । केतकी (केवडा) इसका फूल.

कैतव, (न०) कितवस्य कर्म अण् । कपटता । छल । जूआ । धतूरा.

कैदारिक, (न०) केदार+समूहार्थे ठञ् । ठञ् वा । खेतसमूह । बहुत खेत

कैरव, (न०) के जले रौति । रु+अच् । अलुक् समा० । "कैरवो हंसः तस्य प्रियं अम्" कुमुद । उत्पल । चिट्टा कमल । शत्रु.

कैरवी, (स्त्री०) कैरवाय हिता अम् । चन्द्रिका । चांदनी.

कैलास, (पु०) के जले लासो लसनं दीप्तिः अस्य अलुक् स० । केल्यः स्फटिकः तस्य इव शुभ्रः अण् । पानीमें चमकरहे बिल्लौरके समान चिट्टा । शिव और कुबेरजीका स्थान । एक पर्वत है.

कैलासपति, (पु०) ६ त० । कैलासके पति । शंकर । शिव.

कैवर्त, (पु०) के जले वर्तते । वृत्+अच्-अलुक् स० ततः स्वार्थे अण् । जो अधिक पानीमें रहे । धीवरजाति । मच्छी पकड़नेहारा.

कैवल्य, (न०) केवलस्य शुद्धस्य भावः । शुद्धहोना । निर्वाण । मोक्ष । मुक्ति.

कैशिक, (त्रि०) स्त्री-स्त्री० केश+ठक् । केशकी भांति । बालकी भांति सुन्दर.

कैशोर, (न०) किशोरस्य भावः अण् । किशोरपना । दश वर्षसे पीछेसे और पन्द्रह वर्षतक यह अवस्था है.

कैश्य, (पु०) केशानां समूहः ष्यञ् । केशों (बालों)-का समूह.

कोक, (पु०) कोकते । कुक् ग्रहणे+अच् । भेड़िया । चक्र (भेड़िया) नामका पक्षी । मेंडक । विष्णु.

कोकनद, (पु०) कोक+नद्+अच् । लाल कुमुद । लाल कमल । कोकनदेर.

कोकिल, ला (पु० स्त्री०) कुक्+इलच् । कोइलपक्षी । कोयल । कुम्भी.

कोकिलाक्ष, (पु०) कोकिलस्य अक्षीव रक्तं अक्षि पुष्पं अस्य । कोइलकी आंखके समान जिसके लाल फूल हों । तालमखाना.

कोकिलावास, (पु०) ६ त० । आमवृक्ष । आमका वृक्ष.

कोकुण्ड, (पु०) कोकैरिति कथ्यन्ते अत्र । एक देवता जन । कुबेरके और इन्द्रके बीचकी भूमि.

कोङ्क, (पु०) कुक्+अच् । कोकण । कोङ्कण । देशभेद । कर्णभेद.

कोङ्कणाक, (पु०) को भूमौ कृणाति स्वरूपं हृतिः अस्य । पु० । कुंकुमके भूषितक.

कोट, (पु०) कुट्+घञ् । कुटिलता । दुर्ग । गढ़ । किला.

कोटर, (पु०)(न०) कोटं कौटिल्यं राति । रा+क । वृक्षके खुर । खोड़ । कोटरा.

कोटवी, (स्त्री०) कोटं वाति । वा+क । नंगी । नंगी स्त्री । दुर्गा.

कोटि, (पु० स्त्री०) कुट+इन् । धनुषका अग्र भाग । करोड़ । खड्गादि आदि । उत्कर्ष । धनुषकी चोट । हद कोटि हजार.

कोटीर, (पु०) कोटिं ईरयति । ईर्+अण् । किरीट । मुकुट । जटा.

कोटीश्वर, (पु०) कोट्याः ईश्वरः । एक करोड़का पति (मालिक).

कोट्ट, (पु०) कुट्ट+घञ् । नि० । गुणः । दुर्ग । किला । राजधानीभेद.

कोट्टार, (पु०) कुट्ट+आरक् । जलपूर्ण कूआ । तलाव । फाटक.

कोण, (पु०) कुण्+करणे घञ्-कर्तरि अच् वा । वीणा आदि बजानेका साधन जो धनुषके समान होती है । घरआदिका एक देश । अस्त्रोंका सिरा । रुद्र । मंगल ग्रह । तलवारकी तेज धार.

कोदण्ड, (न०) कु-शब्दकरना-ड्विप् । कोदण्डोऽस्य । धनुष । भौंहकी लता । देश.

कोद्रव, (पु०) कु-क्विप् । कोः द्रवति । द्रु-अच् धान्यभेद । बाजरा.

कोप, (पु०) कुप्+भावे घञ् । क्रोध । गुस्सा । इच्छा पूर्ण होनेसे चित्तका विकार.

कोमल, (न०) कु+कलच् मुट् । नि० गुणः । जल । पानी । मृदु । नरम । नाजुक । मनोहर । सुन्दर (त्रि०

कोयष्टि, (पु०) कं जलं यष्टिरिव अस्य (पु०) जो होता है । जलकुक्कुटपक्षी । "मैनाया वन्" । टिटहरी पक्षी । "कोयष्टिक".

कोरक, (पु० न०) कुर्यते कुर्+वुन् । कली । फूलकी डंडी । यह शब्द प्रायः पुंलिंग है.

कोल, (पु०) कुल-संस्याने-गाढ़ाहोना+अच् । सूअर । शनिग्रह । बेड़ा । कूल । गोद । मिरच । एक देश । बेरका फल (न०)

कोलमूल, (न०) कोलस्य बदर्या इव मूलम् । जिसका मूल बेरके समान हो । पिप्पलीमूल.

कोलम्बक, (पु०) कुल+अम्बच्-संज्ञायां कन् । वीणाका शरीर । अम्बार.

कोलाहल, (पु०) कुल+घञ्-तं आहलति-अच् । अनेक प्रकारका शब्द करनेवालोंका अव्यक्त शब्द । शोर । रौला.

कोविद, (पु०) कुङ्-शब्दकरना-विद् । जो वेदको जाने । विद्वान् । पण्डित । निपुण.

कोविदार, (पु०) कुं भूमिं विदारयति । विद्+अण् । कचनार । कचनाल.

कोश-ष, (पु०), कुश्+घञ् । भण्डार । खजाना । डिब्बा । कली । तलवारकी म्यान । अण्डा । शब्दकोष । अर्थकोष । पनीर । थैली । धन । समूह । बर्तन । दिव्य कसम.

कोशकारकः, (पु०) कोशं करोति कृ+ण्वुल् । रेशमका खजाना बनानेवाला । रेशमी कीड़ा.

कोशल, (पु० स्त्री०) कुश्+कलच्-नि० गुणः । अयोध्यापुरी । -ला टाप्.

कोशलात्मजा, (स्त्री०) कोशलानां राजा ६ त० । तस्यात्मजा=बेटी । रामचन्द्रजीकी माता.

कोशशुद्धिः, (स्त्री०) कोशस्य शुद्धिः । पेटकी शुद्धि (सफाई).

कोशाध्यक्षः, (पु०) कोशस्य अध्यक्षः । कोश (खजाना)-का मालिक । खजाञ्ची.

कोषशायिका, (स्त्री०) कोषे शेते । शी+ण्वुल् । छुरी० खानेमें रक्खाहुआ चाकू.

कोष्ठ, (पु०) कुष्-थन् । घरका मध्य । धान आदि रखनेका पात्र । भण्डोला । कुठिया । अपना (त्रि०).

कोष्ण, (न०) ईषदुष्णं कोः कादेशः । जो छूनेमें थोड़ा गरम हो । गरमवस्तु (त्रि०).

कोहल, (पु०) की हलति स्पर्धते । अच् पृ० गुणः । बाजेका भेद । शराबका भेद.

कौकुटिक, (पु०) कुकुटीं मायां पादपतनभयेन च पश्यति । ठक् । पाखण्डी । कीड़े आदिके मरनेके डरसे पांव पड़नेकी जगहको देखनेहारा संन्यासी । दम्भी.

कौक्षेयक, (पु०) कुक्षौ सन्नद्धं बद्धः । ढकञ् । खड्ग कांखमें दबाईहुई तलवार । तरवार.

कौटतक्ष, (पु०) स्वतन्त्र तर्गाण । अपने घरमें इच्छापूर्वक काम करनेवाला.

कौटिक, (त्रि०) कूटेन मृगबन्धनयन्त्रेण चरति ठक् । मांस बेचकर जीविका करनेवाला व्याध (शिकारी) । जो जालके साथ घूमता है.

कौणप, (पु०) कुणपः शवः भक्ष्यत्वेन विद्यतेऽस्य अण् । जो मुर्दे खाता है । राक्षस.

कौतुक, (न०) कुतुक+स्वार्थेऽण् । इच्छा । तमाशा । अजीब देखनेका चाव.

कौतूहल, (न०) कुतूहल स्वार्थेऽण् । कौतुक । तमाशा । बड़ीचाह.

कौपीन, (न०) कूपे पतनं अर्हति अचार्याये नि० । पाप । पापी (त्रि०) । "गोप्यत्वात् पुरुषलिङ्गं अपि कौपीनं, तदाच्छादकत्वात्" । छिपानेलायक होनेसे पुरुषका लिङ्गका आच्छादन । लंगोटी.

कौबेरी, (स्त्री०) कुबेरस्य इयं अण् । कुबेरकी । उत्तर दिशा (जहां कुबेरजी वास करतेहैं) । कुबेरकी शक्ति । मनुभेद.

कौमार, (न०) कुमारस्य भावः अण् । वज्रपेही जिसने पृथ्वीको पांवसे मारा । पांच वर्षतककी अवस्था (उमर) । कार्तिकेयकी शक्ति (स्त्री०) कुमारी.

कौमारिकेयः-(पु०) कुमारिकायाः अपत्यं-ढक्+एय । कुमारीका पुत्र । कुमारीका लड़का.

कौमुदी, (स्त्री०) कुमुदानां हर्षहेतुरियं अण् । चांदनी । इसके छूनेसे कुमुद खिलतेहैं । कार्तिककी पूर्णिमा । आश्विनकी पूर्णिमा.

कौमोदकी, (स्त्री०) कोः पृथिव्याः पालकत्वात् मोदकः कुमोदको विष्णुः तस्येयं अण् । पृथिवीको पालन करनेहारे विष्णुकी जो हो । गदाका नाम है । (विष्णुकी गदा).

कौरव, (पु०) कुरोरयम्+अण् । कुरुराजाकी सन्तति । धृतराष्ट्र और पाण्डुके पुत्र (दोनों कुरुके वंशमें उपजनेसे)

कौरव्य, (पु०) कुरु+ण्य । कुरुवंशमें उपजा क्षत्रिय । " कुरवः " बहु०.

कौल, (त्रि०) कुले सत्कुले भवः अण् । अच्छे कुलका । तन्त्रमें कहेहुए कुलाचारमें लगा हुआ.

कौलटिनेय, (पु० स्त्री०) भिक्षुक्याः सत्या अपत्यं ढक् इनङादेशश्च । भीखमांगनेवाली सती (पतिव्रता स्त्री) का बेटा । "कुलटायाः अपत्यम्" । व्यभिचारिणीस्त्रीका बेटा । बदमाश औरतका पुत्र.

कौलटेय, (पु० स्त्री०) कुलटायाः सत्या भिक्षुक्या वा अपत्यं ढक् । व्यभिचारिणी स्त्रीका पुत्र । भेषधारक फकीरनीका पुत्र । बेटा.

कौलटेर, (पु० स्त्री०) कुलटायाः अपत्यम् अपत्यं ढक् । बदमाश स्त्रीका पुत्र.

कौलिक, (त्रि०) कुलात् आगत ठक् । कुलपरम्परासे चलाआया । "कुलेनाचरित ठक्" । कुलका आचार । "कौलं कुलधर्म प्रवर्तयति ठक्" । कुलधर्मको चलानेहारा तन्त्रमें कहाहुआ शिवजी । मनु आदि । सत्पुरुषों । जुलाहा । शाक्तधर्म.

कौलीन, (न०) कौ पृथिव्यां लीनं यस्मात् । अलुक् समा० । बड़ोंसे चलाआया । छिपाहुआ । निन्दा । लोक [illegible] वाद । फकीरनीका बेटा । पशुमार्गमें खड़िया इत्यादि । बुरी खबर । मुरगोंकी लड़ाई । लड़ाई । अच्छेकुलमें पैदा हुआ.

कौलूत, (पु०) कुलूतस्य राजा+अण् । कुलूत देशका अधिपति । राजा.

कौलेयक, (पु०) कुले भवः ढकञ् । अच्छे वंशका पुरुष.

कौशल, (न०) कुशलस्य भाव अण् । काममें चतुराई । खुशी । सम्पदा.

कौशलिका, (स्त्री०) कुशलस्य पृच्छा ठक् । कुशल प्रश्न । "कुशलस्य समाचारस्य दर्शने ठञ्" । जिसे अपनी खैरके लिये भेजतेहैं । उपायन । भेंट । मिलनेमें दूसरेका अच्छापन पूछना.

कौशल्येय, (पु०) कौशल्यायाः अपत्यं ढक् । रामचन्द्र

कौशल्या, (स्त्री०) कोशलदेशे भवा छण् । रामचन्द्रजीकी माता.

कौशाम्बी, (स्त्री०) कुशाम्बेन निर्वृत्ता नगरी । अण् । एकनाम पुराने नगरका जो गंगापर है । वत्सराजकी नगरी.

कौशिक, (पु०) कुशिकस्य गोत्रापत्यं । कुश+ठञ् । कुशिक+अण् वा । विश्वामित्र मुनि । "कोशे भवः" ठक् । नेवला पकडनेवाला । उल्लू । इन्द्र । गुग्गुल । "कोशेऽधिकृतः ठक्" । कोशाध्यक्ष । खजानची.

कौशिकी, (स्त्री०) इस नामकी दुर्गा । एक नदी । नाटकमें एक वृत्ति.

कौशेय, (त्रि०) कोशात् उत्थितं ढक् । कीडाके खजानासे बनाहुआ कपडा । रेशमी कपडा.

कौसल्यायनि:, (पु०) कौसल्याया अपत्यं फिञ् । श्रीरामचन्द्रजी.

कौसुम्भ, (पु०) कुसुम्भ+स्वार्थे अण् । वनका कुसुम्भा । शाकभेद । "कुसुम्भेन रक्तं अण्" । कुसुम्भेके रंगसे रंगाहुआ कपडा आदि.

कौसृतिक, (त्रि०) कुसृत्या चरति ठक् । मायाकरनेवाला । जादूगर । धूर्त.

कौस्तुभ, (पु०) कुं भूमिं स्तुभ्नाति कुस्तुभो जलधिः तत्र भवः अण् । समुद्रसे निकला । विष्णुकी छातीपर बडे तेजवाला मणि.

कौस्तुभवक्षस्, (पु०) ६ ब० । कौस्तुभो वक्षसि यस्य । भगवान् विष्णु.

क्नथ, मारना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सेट् । क्नथयति-ते । क्नथति । अचिक्नथत्-त । अक्नथीत्.

क्नस्, टेढाहोना । चमकना । बोलना । दिवा० चुरा० पर० अक० सेट् । क्नसति । अक्नसीत्-अक्नासीत् । क्नसयति-ते.

क्नूय्, दुर्गन्ध उठना । गीला होना । शब्दकरना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । क्नूयते । अक्नूयिष्ट । क्नोपयति-ते.

क्रकच, (पु०) क्रयति क्रदति शब्दायते । कच्+अच् । गाठदार वृक्ष । आरा (पु० न०) ज्योतिषमें एक योगका भेद.

क्रकचपाद्-द, (पु०) क्रकचमिव पादौ यस्य वा अन्त्यलोपः । जिसके पाव आरेके समान हों । कृकलास । किरला.

क्रकर, (पु०) क्रदति शब्दं कर्तुं शीलं अस्य । अच् । जो क क शब्द कर्ता है । एक प्रकारका तीतर । गरीब आदमी.

क्रतु, (पु०) कृ+क्तु । यूपवाला वा यूपके विना यज्ञ । सकल्प । मरीच आदि मुनिविशेष । वैश्वदेवभेद । इन्द्रिय । विष्णुका नाम । शक्ति । इच्छा । मेटा । पूजा । बुद्धि.

क्रतुद्विष्, (पु०) क्रतुं द्वेष्टि । द्विष+क्विप् । यज्ञका वैरी दैत्य । नास्तिक.

क्रतुध्वंसिन्, (पु०) क्रतुं दक्षयज्ञं ध्वंसयति । ध्वंस्+णिच्+णिनि । दक्षके यज्ञको नाश करनेवाला शिवजी.

क्रतुपति:, (पु०) क्रतोः पतिः ष० त० । यज्ञ यज्ञका अनुष्ठान करनेवाला.

क्रतुपशु:, (पु०) क्रतोः पशुः । यज्ञका पशु.

क्रतुपुरुष:, (पु०) क्रतो. पुरुषः । यज्ञका पुरुष । वि

क्रतुभुज्, (पु०) क्रतौ यज्ञे दत्तहविर्भागं भुज्+क्विप् । यज्ञमें डियेगये घीआदिको भक्ष अग्नि देवता.

क्रतुराज्, (पु०) क्रतुषु राजते-राज्+क्विप् । यज्ञोंमें है । यज्ञोंका राजा (अश्वमेध).

क्रतुराज, (पु०) क्रतूनां राजा । टच् समा० । राजा । अश्वमेध यज्ञ । राजसूय यज्ञ.

क्रथ्, मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । क्रथति । अ अक्रथीत्.

क्रथन, (न०) क्रथ् ल्युट् । मारना । काटना । "कन्" ऊंट.

क्रदि, रोना । घबराना । अक० । बुलाना । सक० सेट् । क्रन्दति । अक्रन्दीत्.

क्रन्दन, (न०) क्रदि-भावे ल्युट् । शोक आदिसे गिराना । रोना.

क्रप्, कृपा करना । भ्वा० अक० आत्म० सेट् । अक्रपिष्ट.

क्रम्, जाना । भ्वा० पक्षे दिवा० पर० सक० क्रमति । क्राम्यति.

क्रम, (पु०) क्रम्-भावकरणादौ घञ् । पांव रखना आना । एकके पीछे दूसरा । सिलसिलेवार । हमला.

क्रमण:, (पु०) क्रामति अनेन-करणे ल्युट् । जिसके चलता है । पाद । पाँव । अश्व । -णं (न०) क्रना । चलना । लांघना.

क्रमिक, (त्रि०) क्रमात् आगतः ठन्+इक । क्रमसे क्रमानुसार सिलसिलेवार.

क्रमुक, (पु०) क्रम्+उन् । तत संज्ञायां कन् । सुपारी.

क्रमेल, (पु०) क्रामति । क्रम्-विच् । एलति अच् । -क । "कन्" ऊंट.

क्रय, (पु०) क्री+भावे अच् । मोल देकर चीज खरीदना.

क्रयिक, (पु०) क्रयेण जीवति ठन् । जो खरीदने है । बनियाजन । व्यौपारी.

क्रय्य, (त्रि०) क्री+यत् । "खरीदनेवाले खरीदें" विचारसे जो फैलायाजाय । खरीदनेके लिये दुकानपर गई चीजें । "क्रय्यस्तदर्थे" इति नि०.

क्रव्य, (न०) क्रव्+ण्यत्-रलयोरेकत्वात् । आममांस । कच्चामांस.

क्रव्याद्, (पु०) क्रव्यं अत्ति । अद्+क्विप् । मांस खानाहै । राक्षस । गीध आदि.

क्रव्याद, (पु०) क्रव्यं अत्ति । अद्+अण् । राक्षस । शेर । बाज । मुर्देके मासको खानेवाली आग । "क्रव्यादो गृध्रभक्षणे".

क्रव्याद, (पु०) क्रव्यं अत्ति । अद्+क्विप् । मांस खाने-वाला । राक्षस । गीध.

क्रशिमन्, (पु०) कृशस्य भावः इमनिच् । कृशता । कमजोरी । दुबला.

क्रान्त, (पु०) क्रम्+क्त । घोडा । दबायाहुआ । लांघगया । घिराहुआ (त्रि०).

क्रान्तदर्शिन्, (त्रि०) क्रान्तं अतीतं पश्यति णिनि । जो पिछली बातको जानताहै । पण्डित । कवि । अतीतद्रष्टा.

क्रान्ति, (स्त्री०) क्रम्+क्तिन् । आक्रमण । चढाई करना । दबाना । जाना । चढना । आकाशके गोलेमें कुच्छ टेढी गोल रेखा जहांसे सूरज गति करता है.

क्रिमि, (पु०) क्रम्+इन् । इत्वादेः । कृमि । कीडा । मकोडा । छोटी कीडी.

क्रिया, (स्त्री०) कृ+भावे श टाप् । करना । पूराकरना । काम । आरम्भ । चेष्टा । इन्द्रियोंका व्यापार । धातुका अर्थ । बदला । पूजा सिखलाना । इलाज करना । गर्भाधा-नादि संस्कार । व्यवहारका एक भाग.

क्रियापद, (पु०) व्यवहारका तीसरा पाद । (गवाह लेकर किये गये दावेको पूरा करना । ये तीन पाद हैं).

क्रियाफल, (न०) ६ त० । कामका फल । यज्ञादिसे उत्पन्नहुआ पुण्यापुण्य.

क्रियायोग, (पु०) योगके लिये क्रियाका देवताका आरा-धन आदि.

क्रियासमभिहार, (पु०) सम्+अभि+हृ+घञ् ६ त० । किसी कामको बार२ करना । "क्रियासमभिहारेण विरा-ध्यन्तं क्षमेत कः" माघः.

क्री, मोल लेना । क्र्यादि० उभ० सक० अनिट् । क्रीणाति-क्रीणीते । अक्रैषीत् । अक्रेष्ट.

क्रीड्, खेलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । क्रीडति । विक्रीड । अक्रीडीत्.

क्रीडन, (न०) क्रीड्+ल्युट् । परिहास । मनोरञ्जन खेलन । खेलना.

क्रीत, (पु०) क्री+क्त । खरीदाहुआ । बारह प्रकारके पुत्रों-मेंसे एक । मोल लीगई कोई चीज (त्रि०).

क्रीतानुशय, (पु०) क्रीते अनुशयः पश्चात्तापो यत्र । खरीदकर किसी प्रकारकी दुरुष्टसे पछताना । १८६ व्यव-हार विवादोंमेंसे एक.

क्रुञ्च्, (पु०) क्रुन्च्+क्विप् । कुञ्च । एक प्रकारका बगला.

क्रुञ्च्, जाना । टेढा होना । अनादर करना । सक० पर० सेट् । क्रुञ्चति । अक्रुञ्चीत्.

क्रुञ्च, (पु०) क्रुञ्च+कर्मणि घञ् । क्रौंचपर्वत । "अनु-टाप्" । एकवीणा.

क्रुध्, क्रोधहोना । गले मिलना । क्र्या० पर० अक० सेट् । क्रुध्यति । अक्रुधीत्.

क्रुध्, गुस्सा करना । दिवा० पर० अक० उपसर्गरहित-सक० अनिट् । क्रुध्यति । अक्रुधत् । मन्युं अभिक्रुध्यति.

क्रुध्-धा, (स्त्री०) क्रुध्+क्विप् वा टाप् । इच्छाकी प्राप्ति न होनेसे उत्पन्न हुआ चित्तकी वृत्तिका भेद । क्रोध । गुस्सा.

क्रुश्, रोना । चिल्लाना । सक० भ्वा० पर० अनिट् । क्रोशति । अक्रुक्षत्.

क्रुष्ट, (न०) क्रुश्-भावेक्त । रोना । शब्द करना । आह्+ कर्मणि क्त । बुलायागया (त्रि०).

क्रूर, (त्रि०) कृत्+रक्-धातो: क्रू । कठिन । सख्त । निर्दय । बेरहम । दूसरेके साथ वैर करनेवाला । गरम । बाजपक्षी । कङ्कपक्षी । ज्योतिषमें कहागया सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु ग्रह । मुनहरी करनेका दरख्त.

क्रेय, (त्रि०) क्री+यत् । खरीदनेलायक कोई चीज । क्रेतव्य वस्तुमात्र.

क्रोड, (पु०) (न०) क्रुड्-दबा होना । आलिङ्गन । घनी-भाव । सेहराना बन्द । अंक । गोद । राक्षस । सूअर (पु०) घोडोंकी छाती और भुजओंका मध्य । (स्त्री०) टाप् । बाराही बन्द (पु० स्त्री०).

क्रोडाङ्घ्रि, (पु०) क्रोडे अङ्घ्रिर्यस्य । जिसके पाद गोदमें हो । कच्छप । कच्छ.

क्रोध, (पु०) क्रुध्+घञ् । दूसरेका अपकार (बुराई) करनेके लिये चित्तकी वृत्तिका भेद । दूसरेके अनिष्टकी इच्छा । गुस्सा

क्रोधकृत्, (त्रि०) क्रोधं करोति कृ+क्विप् । क्रोध करने-वाला । क्रोधी.

क्रोधज, (पु०) क्रोधात् जायते । जन्+ड । मोह । अज्ञान । बेसमझी । क्रोधके आठ गुण हैं जैसे चुगलखोरी, दिलेरी, वैर, ईर्षा, दूसरेकी उन्नति न सहसकना, असूया (गुणोंमें दोष लगाना), अर्थदूषण (धनको बिगाडना), वाग्दण्ड (कठोर वचन कहना), पारुष्य कठिनता । सख्ती.

क्रोधन, (पु०) क्रुध्+ल्यु । कोपयुक्त । गुस्सेवाला । कौश गोत्र । मेढक भेद.

क्रोधवश, (त्रि०) क्रोधस्य वशः । क्रोधके अधीन हुआ

क्रोधहन्, (पु०) क्रोधं हन्ति हन्+क्विप् । क्रोधको नाश करनेवाला । विष्णु.

क्रोधानलः, (पु०) क्रोधस्य अनल इव ष० त० । क्रोधकी आग.

क्षेत्रिन्, (त्रि०) क्षेत्र+अस्त्यर्थे इनि । खेतवाला । क्षेत्रका स्वामी.

क्षेत्रिय, (पु०) परक्षेत्रे देहान्तरे चिकित्स्यः । परक्षेत्र+घ-नि० । दूसरे देहमें इलाज करनेलायक असाध्य रोग । दूसरेके क्षेत्रमें उपजा पुत्र । क्षेत्रज पुत्र । क्षेत्रमें उपजा-हुआ लड़का.

क्षेप, (पु०) क्षिप्+घञ् । विक्षेप । निन्दा । अहंकार । लांघना । देरी । मेल । भेजना.

क्षेपः, (पु०) क्षिप्+घञ् । फेंकना । इधर उधर हिलना । अंगोंका हिलाना.

क्षेपक, (त्रि०) क्षिप् ण्वुल् । फेंकनेवाला । भेजनेवाला । गाली देनेवाला । निरादर करनेवाला.

क्षेपक, (त्रि०) क्षिप्+ण्वुल् । फेंकनेवाला । घञ् स्वार्थे कन् । ग्रन्थ आदिमें ग्रन्थकर्ताके विना किसी दूसरेसे लगा-गया पाठ । गुच्छा जोडनेलायक अंक (कुडक).

क्षेपणम्, (न०) क्षिप् ल्युट् । फेंकना । भेजना । चलाना । बिताना (समय).

क्षेपण, (न०) क्षिप्+ल्युट् । प्रेरण । भेजना । फेंकना । बिताना.

क्षेपणिका, (स्त्री०) क्षिप्यते चाल्यतेऽनया । क्षिप्+आनि । जिससे (बेड़ीको) चलाते हैं । नौका चलानेका दण्ड । चाटलेद.

क्षेपणीय, (त्रि०) क्षिप्+अनीयर् । भिन्दिपाल अस्त्र । पत्थर आदि फेंकनेवाला अस्त्र । फेंकनेलायक कोई चीज.

क्षेपिष्ठ, (त्रि०) अयं एषां अतिशयेन क्षिप्रः इष्ठन् । बहुत शीघ्र (जल्दी) करनेवाला । " वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता " इति श्रुतिः.

क्षेम, (न०) क्षि+मन् । योगक्षेम कल्याण । मिलीहुई वस्तुकी रक्षा (पु० न०) कुशल (न०) कुशल-वाला (त्रि०) मुक्ति । सुगन्ध (न०).

क्षेमिन्, (त्रि०) क्षेम । इन् । सुखी । खुशी.

क्षेम्य, (त्रि०) क्षेमाय साधु यत् । सुख देनेवाला । आराम पहुंचानेवाला । स्वस्थ । तन्दुरुस्त । आनन्दयुक्त । शान्ति-देनेवाला.

क्षै, [illegible] । [illegible] । भ्वा० पर० अक० अनिट् । [illegible] ।

क्षैरेय, (त्रि०) [illegible] । दूधमें मिलाकर किया [illegible] । [illegible] (स्त्री०) । [illegible].

क्षैत्र, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

क्षोणि-णी, (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । पृथिवी । [illegible] । [illegible].

क्षोद, (पु०) [illegible] । [illegible] । चूर्ण । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

क्षोदक्षम, (त्रि०) क्षोदं क्षमते अच् । विचारके वाला । तत्त्वको निश्चय करनेकेलिये दोष लगाने चन । पीसनेलायक.

क्षोदिष्ठ, (त्रि०) अयं एषां अतिशयेन क्षुद्रः । इ देशः । बहुत छोटा । बहुत कमीना.

क्षोभ, (पु०) क्षुभ+घञ् । व्यर्थ इधर उधर हिल भय आदिका कारण । अपने कामको न करने घबराहट । हलचल.

क्षोभण, (पु०) क्षोभयति क्षुभ्+णिच्+ल्यु । जो कामदेवके बाणका भेद । सांख्यमें कहागया प्र णकरनेवाला पुरुष । ईश्वर.

क्षौद्र, (न०) क्षुद्राभिः सरघाभिर्निर्वृत्तम् । शहद मांखी बनायाहुआ । "अण्" शहद.

क्षौद्रज, (न०) क्षौद्रात्जायते जन्+ड । शहदसे उ मोम । सिक्थक.

क्षौद्रधातु, (पु०) कर्म० । माक्षिक मधु । मा शहद । छत्ता.

क्षौम, (पु० न०) क्षुमाया अतस्या विकारः अण् (अलसी) की छाल (वल्कल) का बनाहुआ रेशमीवस्त्र । सनका बनाहुआ कपड़ा । क्षु+मन्+अ

क्षौर, (न०) क्षुरेण निर्वृत्तं अण् । उस्तरेसे किय (मुण्डन) आदि । हजामत.

क्षौरिकः, (पु०) क्षुरेण जीवति+क्षुर+ठट्+ठक् । जीता है । नापित । नाई.

क्ष्णु, तेजकरना । अदा०पर०सक० सेट् । क्ष्णौति । क

क्ष्मा, (स्त्री०) क्षमते भारं । क्षम्+अच् । उपधाप पृथिवी

क्ष्माभृत्, (पु०) क्ष्मां पृथिवीं बिभर्ति पात्यति क्विप् । तुक्च । जो पृथिवीका पालन करते हैं । रा पर्वत । पहाड़.

क्ष्मायि, कांपना । भ्वा० आ० सक० सेट् । अक्ष्मायिष्ट.

क्ष्विद्, प्यारकरना । भ्वा० आ० अक० सेट् । अक्ष्वेदिष्ट.

क्ष्विद्, गूजना । ऊंचे बोलना । भ्वा० पर० अक० अक्ष्वेदीत्.

क्ष्वेड, (पु०) क्ष्विद्+अच् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

क्ष्वेडा, (स्त्री०) क्ष्विड+अच्+टाप् । [illegible] । [illegible].

क्ष्वेडित, (न०) [illegible] । सिंहका नाद । [illegible]

क्ष्वेद, [illegible] । सक० । [illegible] सेट् । [illegible] । [illegible].

क्ष्वेला, (स्त्री०) [illegible] । खेल । [illegible].

ख

(पु०) खर्व्+ड । सूर्य । इन्द्रिय । शरीर । पुर । शून्य ।
ोष । बिन्दु । आकाश । स्वर्ग । सुख (न०).

स्, हगना । भ्वा० पर० अक० सेट् । खखसति.

, (पु०) खे आकाशे गच्छतीति । गम्+ड । सूर्य ।
देवता । बाण । पक्षी । वायु । सूर्य, चन्द्र आदिग्रह.

प, (पु०) खगान् पाति । पा+क । गरुड । "खग-
ति" यही अर्थ.

पति, (स्त्री०) ६ त० । पक्षीकी चालें (डीन, प्रडीन,
डीन, संडीन, परिडीन, विडीन, अवडीन, अभिडीन, डीन,
डीनक, गतागत, अपतित, सम्पात) । तरह २ की परि-
दोंकी चालें.

ोल, (पु०) खं गोल [illegible] । गोलेकी भांति आकाश ।
भूगोलके ऊपर ठहराहुआ गोलस्वरूपवाला आकाश.

, बांधना । चुरा० उभ० सक० सेट् । खचयति-ते ।
अचखचत्-त.

र, (पु०) खे आकाशे चरति । चर्+ट । जो आका-
में विचरताहै । राक्षस (स्त्रीलिङ्गमें ङीप् होताहै) ।
सूर्य । वायु । ग्रह । खचर । आकाशमें जानेहारा (त्रि०).

र, (पु०) खे चरति-वा -खेचर । आकाशमें घूमने-
ाला । पक्षी । मेघ । सूर्य । वायु । देव । आकाशीभूत ।
ांधर्व आदि.

चित, (त्रि०) खच्+क्त । बंधाहुआ । मिलाहुआ । बद्ध ।
हवद्ध । संयुक्त.

ज्, मथन करना । रिडकना । भ्वा० पर० सक० सेट् ।
खजति । अखाजीत् । अखजीत्

न्, विगडाहोना । भ्वा० इदित् पर० सक० सेट् । खञ्जति ।
अखञ्जीत्.

ज, (पु० स्त्री०) खज्+अच् । दधि । कडछी । चमचा ।
मथानी.

जलम्, (न०) खस्य जलम् । आकाशका जल । ओस ।
आकाशसे वृष्टि.

जिक, (पु०) खे आकाशे जीयते । अज्+घञ् । आजो
गति सोऽस्यास्तीति ठन् । लाजा । फुलियें । खील ।
थोडीसी वायु चलनेपरही ये आकाशमें उडने लगतीहैं.

ज्योतिस्, (पु०) खे आकाशे ज्योतिः यस्य । जिसका
प्रकाश आकाशमें हो । खद्योतकीट । टिटाणा । एककीड़ा.

ञ्ज-ञ्ज, (पु०) खजि-चालकी विकलता । ठीक न चल-
सकना । अच् । ण्वुल् । पादविकल । लूला । लंगडा.

ञ्जन, (पु०) खञ्ज्+ल्यु । एक पक्षी । ममोला । गमन ।
जाना (न०).

द्, चाहना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खटति । अखाटीत्-
अखटीत्.

खट, (पु०) खट्+अच् । अंधाकूआ । कफ । बलगम ।
हल । घास.

खटि, (पु० स्त्री०) खट्+इन् । शवरथ । मुर्देका तख्ता.

खटिक, (पु०) खट्+ठन् । कुबडे हाथवाला । टेढे हाथ-
वाला । खडियामट्टी । लिखनेका द्रव्य (स्त्री०).

खट्ट, घेरादेना । चुरा० उभ० सक० सेट् । खट्टयति-ते ।
अचखट्टत्-त.

खट्वा, (स्त्री०) खट्+क्वन् । आठ काठके खण्डोंसे बनीहुई
सेज । पलंग.

खट्वाङ्ग, (पु०) एक राजा । मानो सेजका अंग है । नर-
पञ्जर । मनुष्यकी हड्डिओंका पिंजरा । महादेवका शस्त्रवि-
शेष । पीठका वंश । ६ त० । खट्वाका अङ्ग (न०).

खट्वाङ्गभृत्, (पु०) खट्वाङ्गं बिभर्ति । भृ+क्विप्-तुक्च ।
जो खट्वाङ्ग(नरपञ्जर)को धारण करताहै । शिव । बटुकभैरव.

खट्वारूढ, (पु०) खट्वा+अम् । आ+रुह्+क्त । निखसमा० ।
प्रमादवाला । भूलनेवाला । बेपर्वाह । पलंगपर चढाहुआ.

खड्, रिडकना । तोडना । भ्वा० आत्म०सक०सेट् । खण्डते ।
अखण्डिष्ट.

खड्ग, (पु०) खडि+ग । नि० नलोपः । गैंडेका सींग ।
गैंडेके सींगवाला । गैंडापशु । चोरनाम गन्धद्रव्य । लोह(न०).

खड्गकोष, (पु०) ६ त० । चमडेका बनाहुआ तरवारका
ढकना । मिआन । ढाल

खड्गपिधान, (न०) खड्गः पिधीयतेऽनेन । जिसके द्वारा
तरवार छिपाई जातीहै । तरवारका खजाना । मियान.

खड्गिन्, (पु०) खड्ग+अस्त्यर्थे इनि । गैंडापशु । वह जन
कि जिसके पास तरवार है.

खण्ड, (पु०) खडि+घञ् । भेद । टुकडा । मणिका विकार ।
खांड । एकदेश.

खण्डकर्ण, (पु०) खण्ड इव कर्णं कन्दो यस्य । जिसकी
जड टुकडोंके समान है । शकरकन्दी । आलूका भेद.

खण्डधारा, (स्त्री०) खण्डे एकदेशे धारा यस्य । जिसकी
धार एकओर हो । कतेरी । कैंची.

खण्डन, (न०) खण्डि+ल्युट् । तोडना । फाडना । खण्ड
करना । निकालना.

खण्डपरशु, (पु०) खण्डयति खण्डः परशुः अस्य । जिसका
कुल्हाडा टूटाहुआ है । महादेव । महादेवका शिष्य परशु-
राम । "खण्डपर्शु" इसी अर्थमें होताहै.

खण्डित, (त्रि०) खडि+क्त । फाडागया । तोडागया ।
टोटुकडे कियागया । खण्डिता नायिका (स्त्री०).

खण्डीर, (पु०) खरडस्य खण्डी+र । पीली मूंगी । पीतमुद्ग.

खतिलक, (पु०) खस्य तिलकः । सूर्य

खद्, पक्का होना अक० । मारना-सक० भ्वा० पर० सेट् ।
खदति । अखादीत्-अखदीत्

खदिर, (पु०) खद्+किरण। खैरकी लकड़ी। एक वृक्ष। इन्द्र। चन्द्रमा.

खदिरसार, (पु०) ६ त०। खदिरवृक्षकी गोंदका सार.

खद्योत, (पु०) खे द्योतते। द्युत्+अच्। जो आकाशमें चमकता है। सूर्य। एक प्रकारका कीड़ा। टिडागा। पटबीजना.

खधूप, (पु०) खं आकाशं धूपयति। धूप्+अण्। आगकी मेल.

खन्, फाड़ना। खोदना। भ्वा० उभ० सक० सेट्। खनति। अखानीत्-अखनीत्। अखनिष्ट। खायात्-खन्यात्.

खनक, (पु०) खन्+वुन्। मूषिक। मूसा। चूहा। सन्धि-तस्कर। सन्धलगानेवाला चोर। पृथिवीको फाड़नेवाला (त्रि०).

खनन, (न०) खन्+ल्युट्। खोदना। फाड़ना। सन्धलगाना। गड्ढाकरना.

खनि-नी, (स्त्री०)। खन्+इ वा ङीप्। धातुरत्न आदिके उपजनेका स्थान। खान। पृथिवीको फाड़ना। खान.

खनित्र, (न०) खन्+इत्र। अस्त्रभेद। खोदनेका हथियार। अवदारण। रैंबा.

खपराग, (पु०) खस्य परागः। आकाशकी धूरि। अंधकार.

खपुष्पम्, (न०) खस्य पुष्पम्। आकाशका फूल। कोईभी असंभव नामुमकिन वस्तु.

खमूर्तिः, (स्त्री०) खम्य मूर्तिः। आकाशकी मूर्ति (शकल)। शंकरका नाम.

खर, (पु०) खं मुखबिलं अतिशयेन अस्ति अस्य+र। खं इन्द्रियं राति। रा+क वा। जिसके मुखका बिल बहुत बड़ा हो। गधा। गर्दभ। खचर। राक्षसभेद। कङ्कघी-वृक्ष। कामदेव। कङ्कपक्षी। तीक्ष्ण स्पर्श। कठिन स्पर्शवाला (त्रि०).

खरदूषण, (पु०) खरं उग्रं दूषणं उन्मादकताहेतुर्दोषो यत्र। जहां अत्यन्त उन्माद (पागलपना) उपजताहै। धत्तूरा। खर और दूषण नाम प्रसिद्ध राक्षस रावणके प्रधान। बड़े दोषवाला (त्रि०).

खरध्वंसिन्, (पु०) खरं खरनामानं राक्षसं ध्वंसयति। ध्वन्स्+णिच्+णिनि। खरनाम राक्षसको नाश करनेवाला। श्रीरामचन्द्रजी.

खरयानम्, (न०) खरवाहितं यानम्। गधोंसे चलाई गई गाड़ी। गधेगाड़ी.

खरशब्दः, (पु०) खरस्य शब्दः। गधेकी आवाज.

खरशाला, (स्त्री०) खरस्य शाला। गधोंका तबेला.

खरादया, (स्त्री०) खरैः अद्यते भुज्यते अद्+य। जो गधोंसे खाई जाती है। मयूरशिखा। मोरकी कलगी (चोटी)। रुद्रजटानामी बेल.

खरु, (पु०) खन्+कु। दर्पमें रहा अश्व। अहंकार। घोड़ा। दांत। कामदेव। सिद्धेश। शस्त्र। निर्बोध। बेसमझ। क्रूर। शिव। सफेद

खर्ज, पीड़ाहोना। भ्वा० पर० सक० सेट्। खर्जति। अखर्जीत्.

खर्जन, (न०) खर्ज+ल्युट्। कण्डूयन। खुजली। खुजाना.

खर्जु-र्जू, (स्त्री०) खर्ज+उ ऊङ्। खाज। एकप्रकारका कीड़ा। खजूरका वृक्ष.

खर्जुघ्न, (पु०) खर्जुं कण्डूयनं हन्ति। टक्-धतूरा। खुजलीको दूर करनेहारा आकका वृक्ष.

खर्द, दंशन। डंकमारना। डसना। भ्वा० पर० सक० खर्दति। अखर्दीत्.

खर्पर, (पु०) कर्परशब्दके समान पु० मानद्। चोर। धूर्त। नटखट। भीखका पात्र। कपाल। छाता। खापरी.

खर्ब्-र्व्, जाना भ्वा० पर० सक० सेट्। खर्वति।

खर्व,-र्ब, (पु०) खर्व् (र्ब्)+अच्। कुबेर। निधिभेद। संख्याभेद (हजार क्रोड़)। नीच। बौना (त्रि०).

खर्वट, (पु०) खर्व् (र्ब्)+अटन्। वह गांव कि पासही एक ओर नगर बसा रहाहो। और नदी भी वहां हो। पर्वतके पासका गांव।

खल्, चलना। हिलना। भ्वा० पर० अक० सेट्। अखालीत्.

खल, (न०) खल्+अच्। धान मलनेका स्थान। खाका। पृथिवी। तिलोंका चूर्ण। छल। नीच। निर्दय। बेरहिम (त्रि०) "खे छीयते छो+क"। आकाशमें छिपजाता है। सूर्य। "खं वर्णेन छ्यति" जिसका रंग आकाशके समान है। तमालवृक्ष.

खलति, (पु०) स्खल् हिलना। पृ०। इन्द्रलुप्त। गंजका रोग। गंजा (त्रि०).

खलपू, (त्रि०) खलं भूमिं पुनाति। पू+क्विप्। शोधन करनेहारा। साफ करनेहारा।

खलि, (पु०) खल्+इ। तैलकिट्ट। तेलका मैल।

खलि(ली)न, (पु० न०) खे मुखछिद्रे लीनः। वा ह्रस्वः। जो मुखके छेदमें छिपी हो। घोड़ेके मुखमें स्थित होरही कविका। कडियाल। जो घोड़ेके मुंहमें दिया जाता है.

खलिनी, (स्त्री०) खलानां धान्यमर्दनस्थानानां समूहः इनि। धान मलनेके स्थानोंका समूह। खल स्थानोंका समूह.

लु, (अव्य०) प्रश्न । सवाल । निश्चय । वाक्यकी शोभा करनेहारा । विशेष इच्छा । निषेध । वाक्यको पूरा करनेवाला । कारण.

लेकपोत, (पु०) खले धान्यमर्दनस्थाने यथा कपोता युगपत् पतन्ति । धान मलनेके स्थानपर जैसे कबूतर एकहीवार आ गिरते हैं वैसे विशेषणोंका एकही स्थानपर अन्वय होना । इस प्रकारका एक न्यायभेद.

ल्या, (स्त्री०) खलानां समूहः यत् । धान मलनेके स्थानका समूह.

ल, (पु०) खलतीति खिल् । अच् । सं खलतीति । हा+क । एकप्रकारका कपड़ा । खाल । मदा । धालक । पत्तीदा । मदक । औषध (दवाई) मलनेका पात्र । खल । गरल.

ापग्न, (न०) ६ त० । खानको आकाशमें बहनेवाला पानी । बरफ । ओस.

विद्या, (स्त्री०) खस्य विद्या । आकाशकी विद्या । एक प्रकारका ज्योतिःशास्त्र.

शा, (पु०) देशभेद । हिमालयके पासका देश । पतित । क्षत्रियभेद.

सखस, (पु०) पोस्तनामी फलवाला वृक्षभेद । जिसके रसको अहिफेन कहतेहैं । अफीम.

ाण्डव, (पु०) इन्द्रप्रस्थ । देहली नगरके पासका वन.

ात, (न०) खन्+क्त । गढ़ा । तलावकी आदि । "पूर्त खातादि कर्म च" इति स्मृतिः.

ातक, (पु०) खन+ण्वुल् । खाईमें बन्द । परिखा । खाई । "खात इव वायति । कै+क" अधमर्ण । कर्जदार । ऋणी.

ाद्, खाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खादति । अखादीत्.

ादक, (पु०) खादति । खाद्+ण्वुल् । खानेवाला । कर्जदार । खानेवाला । भवैया (त्रि०) । "खादिका" (स्त्री०).

ादतमोदता, (स्त्री०) खादतं मोदतं इति यत्नं कर्म अभिधीयते । खाओ खुशीमनाओ इस प्रकार जहां निरन्तर कहा जाता है.

ादन, (पु०) खाद्-करणे ल्युट् । जिसके द्वारा खाया जाता है । दांत । (भं० न०) खाना । चबाना । भोजन । खुराक.

ादिर, (त्रि०) खदिरस्य विकारः अण् । खदिर (खैर)-की लकड़ीका बनाहुआ यूप (खंभा) आदि.

ाद्य, (त्रि०) खादितुं योग्यम् । खानेलायक । -द्यम् (न०) भोजन । खाना.

ारि-री, (स्त्री०) खं आरति । ऋ+अच् । ङीष् । वा ह्रस्वः । धान आदिका परिमाण (तोल) जो १६ द्रोण अर्थात् १६ मन १६ सेरका होता है (५१२ सेर

खारीक, (त्रि०) खार्यां वापः । खारि(री) परिमाणं अस्य वा ईकन् । खारी (१६ द्रोण) परिमाण । धान्यके बोनेका क्षेत्र । खारीभर धानआदि.

खार्कार, (पु०) गर्दभशब्द । गधेकी आवाज । जो गधेके समान प्रतीत होती है.

खिट्, डरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । खेटति । अखेटीत्.

खिद्, दीन होना । दिवा० और रुधा० आत्म० अक० अनिट् । खिद्यते । खिन्ते । अखित्त । खिन्न

खिन्न, (त्रि०) खिद्+क्त । दैन्ययुक्त । दुःखमें पड़ाहुआ । आलसी । खेदयुक्त.

खिल्, कणियें चुगना । छाना २ लेना । तुदा० पर० सक० सेट् । खिलति । अखेलीत्.

खिल, (त्रि०) खिल्+क । हल आदि न लेकरका भेद आदि । वह खेत कि जहां हल नहीं चलाया गया । खेतमें सार । पहिले न कहेगयेका परिशिष्ट (बाकी) जैसे ऋग्वेद आदिमें खीलसूक्त । यजुर्वेदमें खिलशिक्षा आदि । महाभारतमें हरिवंश मारायण (यह खीलपटके [illegible])

खु, शब्द (आवाज) करना । भ्वा० आत्म० अक० अनिट् । खवते । अखोष्ट

खुज्, चुराना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खोजति । चुखोज । अखोजीत्

खुड्, फाड़ना । टुकड़े २ करना । तुदा० इम० सक० सेट् । खोडयति-ते । अचुखोडत्-त.

खुर्, काटना टुकड़े २ करना । ऐसा करना । तुदा० पर० सक० सेट् । खुरति । अखोरीत्

खुर, (पु०) खुर+क । सम । पशुओंके खुर । [illegible] गंधद्रव्य । खाटका अंश । छुरा । चलत [illegible]

खुरणस्-स, (त्रि०) खुर इव नासिका अस्य । चपटा नाक । वा अल्पनासिका । जिसका नाक खुरकी जैसी हो । चिपटी नासिकावाला । चैंहे नकटा

खुरालिक, (पु०) खुराणां आलिः [illegible] । कै+क । जो खुरोंको [illegible] है । [illegible] । [illegible] (इषिकाओं)का [illegible] । [illegible] । [illegible] । तकिया.

खुर्द्-र्द, खेलना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । खू (खु)र्दते । अखु(खू)र्दिष्ट

खेचर, (पु०) खे चरति । चर+अच् । अलुक् स० । जो आकाशमें विचरते हैं । विद्याधर । एवं आदि देव । [illegible] । खेचरी (स्त्री०)

खेट्, भोजन करना । खाना । चुरा० इम० सक० सेट् । खेटयति-ते । अचिखेटत्-त.

खेट, (पु०) खेटति । [illegible] है । [illegible] [illegible]

खेटक, (पु०) खेट+ण्वुल्। फलक। ढाल। "खेटकं पूर्णचापं च" इति दुर्गाध्यानम्.

खेद, (पु०) खिद्+घञ्। दुःख। शोक। दिलकी घबराहट.

खेय, (न०) खन्+यत्। परिखा। खाई। खोदनेलायक (त्रि०).

खेल्, हिलना जाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। खेलति। अखेलीत्.

खेलन, (न०) खेल्+ल्युट्। क्रीडा। खेल। खेलना.

खेला, (स्त्री०) क्रीडा। खेल खेलना.

खेव्, सेवाकरना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्। खेवते। अखेविष्ट। अचिखेवत.

खेचर, (पु०) खे आकाश इव शीघ्रगामित्वात् चरति। चर+ट। अलुक् समा०। जल्दी चलनेसे मानो आकाशमें चलती है। अश्वतर। खच्चर। अम्मर। एकप्रकारका पशु.

खोट्, गतिप्रतिघात चालका रुकना। भ्वा० पर० सक० सेट्। खोटयति-ते। अचुखोटत्-त.

खोटि-टी, (स्त्री०) खोट्+इन् ङीप्। चतुर स्त्री। अकलमन्द और खचरी (स्त्री०).

खोड्, चालका रुकना। भ्वा० पर० सक० सेट्। खोडति। अखोडीत्। अचुखोडत्-त.

खोड, (त्रि०) खोड्+अच्। खञ्ज। लंगड़ा। लूला। लंगा.

खोड्, गतिवैकल्य-चालका टूटना। भ्वा० पर० सक० सेट्। खोडति। अखोडीत्। अनुखोडत्-त.

खोर-ल, (त्रि०) खोड् (ल्)+अच्। खञ्ज। लंगड़ा। लूला। टूटा.

ख्या, कहना। अदा० पर० सक० सेट्। ख्याति। अख्यत्.

ख्यात, (त्रि०) ख्या+क्त। ख्यातिसमन्वित। प्रसिद्धिवाला। मशहूर। कथित। कहागया.

ख्यात, (त्रि०) ख्या+क्त। प्रसिद्ध। जाना गया। नामवाला पुकारा गया। कहा गया। जाना गया.

ख्याति, (स्त्री०) ख्या+क्तिन्। प्रशंसा। स्तुति। तारीफ। मशहूरी। कहना.

ख्यापक, (त्रि०) ख्या+णिच्+ण्वुल्। पुक् च। प्रकाश करनेहारा। प्रसिद्ध करनेवाला। मशहूर करनेहारा.

ग

ग, (त्रि०) गम्+ड। (केवल समासमें पीछे आताहै) जो जाताहै। जानेवाला। हिलना। होना। ठहरना। रहना। गंधर्व। गणेशजीका नाम। छन्दोग्रन्थमें गुरु अक्षरके लिये चिह्न (पु०) गीत। गै+क (न०).

गगन-ण, (न०) गम्+युच्। गाऽन्तादेशः। कई कहते हैं कि "णान्त" भी मूल है जैसे "फाल्गुने गगने फेने णत्वमिच्छन्ति बर्बराः"। आकाश। पोलाद। शून्य। छिद्र। स्वर्ग। बहिश्त.

गगनध्वज, (पु०) गगनस्य ध्वज इव। ... का झण्डा है। मेघ। बादल। सूर्य। सू...

गगनसद्, (त्रि०) गगने सीदति। आ... (पु०) स्वर्गवासीभूत। देवता.

गगनसिन्धु, (स्त्री०) गगनस्य सिन्धुः। ... गङ्गाका नाम.

गगनस्थ, (त्रि०) गगने तिष्ठति स्था+क। ... मेंवाला। स्थित। इसी अर्थमें.

गगनस्पर्शनः, (पु०) गगनं स्पृशति-अन... हारा। वायु। आठ मरुतोंमेंसे एक.

गगनाङ्गना, (स्त्री०) गगनस्य अङ्गना। ... अप्सरा.

गगनाम्बु, (न०) गगनस्य अम्बु। आ... वर्षाका पानी.

गगनेचर, (पु०) गगने चरति। चर्+टक् ... में विचरता है। सूर्य आदि ग्रह। न... पक्षी। देवता। राशियोंका चक्र.

गङ्गा, (स्त्री०) गम्+गन्। अपनेनामसे प्र... प। दुर्गा। देवी.

गङ्गाज, (पु०) गङ्गायां जायते। जन्+ड ... उपजा। भीष्म। कार्त्तिकेय। शिवजीने ... डाला यह सहार न सका इसलिये उसने ... दिया उससे कार्त्तिकेय उपजा यह पुराणकथा ...

गङ्गादत्त, (पु०) गङ्गया दत्तः। गंगाने ... भीष्म वा कार्त्तिकेयका नाम.

गङ्गाद्वारम्, (न०) गङ्गाया द्वारम्। गंगा... स्थान। हरिद्वार.

गङ्गाधर, (पु०) गङ्गा धरति। धृञ्+अच् ... शिवजी (इसने जटामें गंगाको धारण कि... पुराण है"। समुद्र.

गङ्गापुत्र, (पु०) गङ्गायाः पुत्रः ष० त०। ... भीष्म वा कार्त्तिकेय। एक प्रकारका नीच ज... जिसका काम मुर्दोंको लेजाना है। यात्रियों... करानेवाला ब्राह्मण.

गङ्गाभृत्, (पु०) गङ्गां बिभर्ति-भृ+क्विप्। ग... करनेवाला शंकर। महादेव.

गङ्गाम्बु-अम्भ, (न०) गङ्गाया अम्बु+अम्भ... जल। शुद्ध वृष्टिका जल जो आसुवा आ... गिरता है.

गङ्गालहरी, (स्त्री०) गङ्गायाः श्लोकात्मिका ... नाथ पण्डितका बनाया हुआ एक प्रकारका काव्य... स्तुतिमें है.

गङ्गावतारः, (पु०) गङ्गाया अवतारः । गङ्गाका पृथिवीपर उतरना.

गङ्गाष्टकम्, (न०) गङ्गायाः अष्टकं=अष्ट श्लोकानां समूहः । गंगाकी स्तुतिमें आठ श्लोकोंका समूह.

गङ्गासागर, (पु०) गङ्गायाः सागरः । वह स्थान जहां समुद्रमें गङ्गा गिरती है.

गच्छ, (पु०) गम्+श । वृक्ष । दरख्त । लीलावतीमें प्रसिद्ध अंकभेद.

गज, मदसे शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । गजति । अगजीत् । अगाजीत्.

गज, (पु०) गज्+अच् । हाथी । आठकी संख्या (गिनती) । मनुष्यकी ३० अंगुलतकका परिमाण । एक दैत्य जिसे महादेवने मारदियाथा.

गजच्छाया, (स्त्री०) भाद्र महीनेकी मघानक्षत्रवाली त्रयोदशी (इसमें श्राद्ध करनेका विशेष पुण्य होताहै)

गजता, (स्त्री०) गजानां समूहः तल् । हाथिओंका समूह.

गजदन्त, (पु०) गजस्य दन्तः इव दन्तो अस्य । गणेशजी । हाथीदांतके समान दांतवाला (त्रि०) ६ त० । हाथीका दांत । करिदन्त (पु०).

गजपुट, (पु०) हाथभरका गढा.

गजप्रिया, (स्त्री०) ६ त० । शल्लकीवृक्ष.

गजबन्धिनी, (स्त्री०) गजा बध्यन्तेऽत्र । ल्युट्+ङीप् । हाथीबांधनेकी शाला । अस्तबल । तबेला.

गजभक्ष्या, (स्त्री०) गजैर्भक्ष्या । जिसे हाथी खाते हैं । शल्लकीवृक्ष.

गजवल्लभा, (स्त्री०) ६ त० । बहुतसे बीजवाली गिरिकदली । कदली.

गजसाह्वय, (न०) गजेन हस्तिनामकनृपेण सहित आह्वयो नाम यस्य । हाथीनामी राजासे जिसका नाम प्रसिद्ध हुआ । हस्तिनापुर । कुरुजाङ्गल । दिल्ली । कुरुकी राजधानी.

गजा (द) दान, (पु०) गजैरद्यते । कर्मणि ल्युट् । जिसे हाथी खाते हैं । अश्वत्थवृक्ष । पीपलका दरख्त । शल्लकी (स्त्री०) ङीप्.

गजाजीव, (पु०) गजैरन्यपालनादिभिराजीवति । जीव्+अच् । हाथीओंका पालन करनेसे जिसका जीवन होताहै । हस्तिपालक । हाथीओंको पालनेवाला.

गजानन, (पु०) गजस्य इव आननं मुखं यस्य । हाथीके समान जिसका मुख हो । गणेश । "शनिकी दृष्टिसे इसका शिर जलगया पीछे हाथीके मस्तकसे इसका मुख हुआ" यह पुराणमें कथा है.

गजारोह, (पु०) गजं आरोहति । रुह्+अण् । जो हाथीपर चढता है । हस्तिपक । महावत । हाथीवान्

गजाह्व, (न०) गजसहिता आह्वा यस्य । हाथीके साथ जिसका नाम हो । हस्तिनापुर (दिल्ली) । "गजाह्वय" यही अर्थ.

गञ्ज, (पु०) गजि+घञ् । अवज्ञा । आदर न करना । "आधारे घञ्" । भाण्डागार । पात्रोंका घर । खनि । खान । गौओंके बांधनेकी शाला । नीचोंका घर । मद्यका घर । मद्यकी शाला (स्त्री०) टाप् । दुकान । बाजार । मंडी.

गड्, सींचना । बाहिर निकालना । रस निकालना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गडति । अगाडीत्—अगडीत् । चुरा० पर० । गडयति । "गड-छिपाना । ढाकना."

गड, (पु०) गड्+अच् । एक प्रकारकी मछली (गडुई) । विघ्न । रोक । खाई । व्यवधान । परदा । पीतमें प्रसिद्ध देशभेद.

गडि-लि, (पु०) गड्+(स) इन् । [illegible] [illegible] पुरानाले बोझा उठानेके डरसे लेटजाता हुआ (बैल) आदि । बछडा.

गडु, (पु०) गड्+उ । भालको चलानेवाला सीग । कुबड (पृष्ठ) जिस रोगविशेष । [illegible] रोग । कुबडा । बरछी.

गडुरि (लि) का, (स्त्री०) गडुर (ल) ई क कनुबन्धी । टप् । भेडके पीछे जानेवाली भेडोंकी कतार (पांत)

गण, गिनना । चुरा० उभ० सक० सेट् । गणयति ते । अजीगणत्-त । अजगणत्-त.

गण, गण+कर्तरि कर्मणि वा अच् । शिवजीका अनुचर । भूतसमूह । सेना । गिनती । १० हाथी, १० रथ, ८१ घोडे, १३५ पदाति (पैदल) इतनी गिनतीकी सेना । [illegible] आदि पशुओंका समूह । [illegible] आदि [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] "म य र" आदि आठ । [illegible]

गणक, (पु०) [illegible] । [illegible] । दैवज्ञ । ज्योतिषी.

गणदेवता, (स्त्री०) [illegible] देवताओंका समूह जैसे १२ आदित्य, १० विश्वेदेव, ८ वसु, ३६ तुषित, ६४ आभास्वर, ४९ वायु, २२० महाराजिक, १२ साध्य, ११ रुद्र । "[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]".

गणनाथ, (पु०) [illegible] । [illegible] । गणेश । शिव । "[illegible]" यही अर्थ.

[illegible], (न०) [illegible] । "[illegible] [illegible] [illegible]" । [illegible] [illegible] । [illegible]

गणरूप, (पु०) गणा बहूनि रूपाणि यस्य । जिसके बहुतसे रूप हों । अर्कवृक्ष । आकका वृक्ष.

गणशस्, (अव्य०) गणान् गणान् इति गण+शस् । अनेक वार । बहुतवार.

गणान्न, (त्रि०) गणाय दत्तमन्नं, गणानां वाऽन्नं । बहुतोंके लिये दियागया अन्न । बहुतोंका अन्न । मठ (भण्डार) आदिमें बहुतोंके लिये दिया गया अन्न । वह अन्न कि जिसके बहुतसे स्वामी हों । " गणान्नं गणिकान्नं चेति " मनुने निषिद्ध अन्नमें गिना है.

गणिका, (स्त्री०) गणः समूहोऽस्त्यस्याः भर्तृत्वेन ठन् । जिसके बहुतसे पति हों । वेश्या । कंचनी । कंजरी । हथिनी.

गणित, (न०) गण्+भावे क्त । गिनना । "करणे क्त" व्यक्त और अव्यक्तरूप अंकशास्त्र । पाटीगणित रेखा और बीजगणित । "कर्मणि क्त" गिनती कियागया । गिनागया (त्रि०).

गणेय, (त्रि०) गण्+ण्य । गिननेलायक । गणनीय.

गणेरु, (त्रि०) गण्+एरु । कनेरका वृक्ष । हथिनी । वेश्या । कंचनी.

गणेश, (पु०) गणानां ईशः । गणोंका मालिक । अपने नामसे प्रसिद्ध देवता । शिवजी.

गण्ड, (पु०) गडि+अच् । हाथीकी गाल । गाला । गण्डीर । गेंडा । चिह्न । निशान । वीर । घोडेका भूषण (जेवर) बुदबुदा । बुलबुला । स्फोटक । फोडा । विष्कम्भादिमें एक योग । पिटक । संदूकडी.

गण्डक, (पु०) गण्ड-स्वार्थे क विघ्न । गण्ड । चिह्न । दाग । फोडा । वियोग । चार कौडीका गंडा.

गण्डक, (पु०) गण्ड+स्वार्थे कन् । अपने नामका पशु । गेंडा । गंडा (चार कौडी) । अन्तराय । रुकावट । अंग । निशान.

गण्डकी, (स्त्री०) एक नदीका नाम जो गंगामें बहती है । गंडी.

गण्डकीशिला, (स्त्री०) गण्डक्या उत्पन्ना शिला । गण्डकीमें उत्पन्नहुई शिला (पत्थरका टुकडा) । शालग्रामशिला.

गण्डगात्र, (न०) गण्डाः स्फोटका गात्रेऽवयवे यस्य । जिसके शरीरपर सर्वांगमें फोडे हों । शीतलारोग । माता निकलना.

गण्डभित्ति, (स्त्री०) भित्तिरिव गण्डः । हाथीकी गालका फटना जिसमेंसे मद चूता है । भीतकी भांति हाथीकी गाल । बहुत ऊंचा, चौडी और सुन्दर हाथीकी गाल.

गण्डमाला, (स्त्री०) गण्डानां स्फोटकानां माला । फोडोंकी कतार । एकप्रकारका रोग जिसमें बहुत फोडे निकलतेहैं.

गण्डमूर्ख, (त्रि०) गण्ड इवात्यन्तः मूर्खः । गंड (बहुतही) मूर्ख । बडा अज्ञान.

गण्डशैल, (पु०) शैलस्य गण्ड इव । पर्वतसे गिरेहुए मोटे पत्थर । कपाल । मस्तक

गण्डस्थली, (स्त्री०) गण्डस्य स्थली । हाथीकी गाल । कपोल.

गण्डु, (पु० स्त्री०) गडि+उ । गांठ । उसीसा । तकिया

गण्डूपद, (पु०) गण्डयुक्तानि पदानि यस्य । फोडोंवाले हों । केंचुआ । शिशुकव.

गण्डूष, (पु०) गडि+ऊषन् । मुँह भरके अंजुली । हाथीके सूंडकी नोक । हाथकी अंगुली.

गण्य, (त्रि०) गण्+यत् । गणनीय । गिनने करनेके लायक.

गत, (त्रि०) गम्+क्त । जानागया । पायहुआ । गया । प्राप्त कियागया । गिरगया । समाप्त हुआ.

गतागत, (न०) गतं च आगतं च । जाना और गया और आया । पक्षीकी चालका भेद.

गतार्तवा, (स्त्री०) ऋतोरयं आर्तवः गतं गत आर्तवो यस्याः । जिसकी गर्भ धारण करनेकी नहिं रही । बांझ । बूढी.

गति, (स्त्री०) गम्+भावादौ क्तिन् । जाना । पथ । ज्ञान । पहुंचना । दशा । यात्रा । सफर । कामका फल.

गद, (पु०) गद्+अच् । श्रीकृष्णका छोटा भाई । बीमारी । "भावे क" । कथन । कहना । विष

गदा, (स्त्री०) गद्+अच्+टाप् । अपने नामसे लोहेके कीलवाली । लोहेका अस्त्र । पाटलावृक्ष । गदा.

गदाग्रज, (पु०) ६ त० । गदका बडा भाई । श्रीकृष्ण

गदाधर, (पु०) गदां धरतीति । धृ० अच् । श्रीकृष्ण.

गदाराति, (पु०) ७ त० । औषध । दवाई.

गद्गद, (पु०) गद् इत्यव्यक्तं गदति क । अच् वा । और अस्फुट शब्द । ऐसी आवाज कि जो प्रगट न रुका थाक सुनाई न पडे । गिडगिडाना.

गद्गदध्वनि, (पु०) गद्गदः अव्यक्तः ध्वनिः । रुका कण्ठसहित आवाजका ठीक न निकलना.

गद्य, (त्रि०) गद्+यत् । कथनीय । कहनेलायक । वर्णोंका रचाहुआ पादरहित पदसमूह । वह श्लोकोंमें नहीं.

गन्त्री, (स्त्री०) गम्यतेऽनया ष्ट्रन् । ङीप् । बैलोंसे लायक गाडी । जानेवाली.

गन्धीरथ, (पु०) गन्धी रथ इव आमीशस्थानप्रापकत्वात्। रथकी नाईं चाहे गये स्थानपर पहुंचा देनेहारा। गंधा। गदहा। बैलगाडी.

गन्द्, मैर करना। चुरा० आत्म० अक० सेट्। गन्धयते। अजगन्धत्.

गन्द्, हसना। भ्वा०पर० सक० सेट्। गन्धति। अगन्धीत्.

गन्ध, (पु०) गन्ध्+अच्। सम्बन्ध। लेश। गंधक। अहंकार। सुहांजना। पिसेगये चन्दन आदिका नासिकाइन्द्रियसे ग्रहण करने योग्य गुणभेद (वह गन्ध पांच प्रकारका है, जैसे चूर्ण कियागया, पिसागया, जलाया औ होमागया, भलीभांति मलागया, प्राणियोंके अंगोंसे उपजा हुआ) पिसाहुआ चन्दन आदि.

गन्धचूर्ण, (पु०) गन्धकप्रधानचूर्णः। ऐसा चूर्ण कि जिसमें गंधक बहुत हो। बारूदनामी पदार्थ.

गन्धकाष्ठ, (न०) गंधयुक्तं काष्ठं कर्म०। अगुरुचंदन.

गन्धज्ञा, (स्त्री०) गन्धं जानाति अनया। करणे क। जिससे गंधको जानता है। नासिका। नाक.

गन्धतैल, (न०) गंधयुक्तस्य चंदनस्य अग्निसंयोगेन जनितं तैलं। गंधवाले चंदनका आगके संयोगसे उपजा हुआ तेल। अत्तर आदि.

गन्धत्वच्, (स्त्री०) गंधान्विता त्वक् यस्याः। जिसका छिलका गंधवाला हो। एला। इलयची.

गन्धदला, (स्त्री०) गन्धयुक्तं दलं यस्याः। जिसके पत्तोंमें गंध हो। अजमोदा। अजवाईन। जवैन.

गन्धन, (न०) गन्ध्+भावादिषु ल्युट्। उत्साह। ढिठैरी। प्रकाशन। जाहिर करना। सूचन। चुगलखोरी। हिंसा। मारना.

गन्धपाषाण, (पु०) गंधयुक्तः पाषाणः। गंधवाला पत्थर। गंधक.

गन्धपलाशु, (पु०) ६ त०। आम्रवृक्ष। आमका दरख्त.

गन्धबीजा, (स्त्री०) गंधो बीजे यस्याः। जिसके बीज (बीजों) में गंध हो। मेथिका साग। मेथी.

गन्धमादन, (पु० न०) गंधेन मादयति। मद्+णिच्+ल्युट्। गंधसे जो मस्त कर्ताहै। पर्वतभेद। भ्रमर। भौंरा। वानर। बंदर। गंधक (पु०).

गन्धमादिनी, (स्त्री०) गंधेन मादयति। मद्+णिच्+णिनि। लाक्षा। लाख। मुरानामी गंधवाला द्रव्य.

गन्धमांसी, (स्त्री०) गंधयुता मासी। कर्म०। जटामांसीभेद। एक वनस्पति.

गन्धमुखी, (स्त्री०) गंधो मुखेऽस्याः। जिसके मुंहमें गंध हो। छुछुंदरी। छुंचा। छछुंदर.

गन्धमृग, (पु०) गंधप्रधानो मृगः [illegible] जिसमेंसे बहुत गंध निकलता है।

गन्धराज, (न०) गंधेन राजते। राज्+अच्। जो गंधसे चमकता है। चंदन। मुग्गल। अपने नामका वृक्ष.

गन्धर्व, (पु०) गंधं अर्वति। अर्व्-जाना। अच्। मृगभेद। घोडा। कोइल। स्वर्गका गवैया। देवयोनिभेद। देवोंका गायन.

गन्धर्वनगर, (पु० न०) गंधर्वाणां नगरं इव। मानो गंधर्वोंका नगर है। शून्यका आश्रयपुरका स्वरूप। नीले पीले आदि बादलोंकी रचनाका भेद। इन्द्रजाल। "गंधर्वपुरम्" इसी अर्थमें है.

गन्धर्वलोक, (पु०) ६ त०। गुह्यलोकके ऊपर विद्याधरोंके लोकके नीचेका स्थान.

गन्धर्ववेद, (पु०) ६ त०। सामवेदका उपवेद। संगीतविद्या। गाधर्व.

गन्धलोलुपा, (स्त्री०) गन्धे लोलुपा। गन्धका लालच करनेवाली। मक्खी.

गन्धवती, (स्त्री०) गंध्+मतुप्-मको व होता है। व्यासकी माता। पृथिवी। वायु और वरुणकी नगरी। सुरा। शराब.

गन्धवल्कल, (न०) गंधो वल्कलेऽस्य। जिसके छिलकेमें गंध हो। दारचीनी। दालचीनीका छिलका

गन्धवह, (पु०) गंधं वहति। वह्+अच्। ६ त०। वायु। हवा। गंधवाला नायक (स्वामी) आदि (त्रि०).

गन्धवहः (पु०) गन्धं वहति। गन्धको उडानेवाला। वायु। हवा.

गन्धवारि, (न०) गंधवासितं वारि। गंधवाले द्रव्यसे सुगंधीवाला जल (पानी).

गन्धवाह, (पु०) गन्धं वहति। वह्+अण्। उप०। हवा। वायु। जो गंधको उठातीहै। नासिका। नाक। (स्त्री०).

गन्धशाली, (पु०) गंधप्रधानः शालिः। बडी सुगंधीवाले चावल। आमोदवाले धान्यभेद। बासमती आदि.

गन्धसार, (पु०) गंधयुक्तः सारो यस्य। जिसका सार गंधवाला हो। चंदनका वृक्ष.

गन्धसोम, (न०) गंधार्थं सोमो विधुर्यस्य। चन्द्रमा जिसकी सुगंधीको बढाता है। कुमुद (फूल), चन्द्रमाके उदय होनेसे इसका गंध होताहै.

गन्धहारिका, (स्त्री०) गन्धं [illegible] द्रव्यको तयार करनेवाली स्त्री.

गन्धा, (स्त्री०) गंध्+णिच् [illegible] धारण। चम्पककलिका। चम्पेकी [illegible]

गन्ध[illegible], (पु० [illegible]) आजीवी। [illegible] द्रव्योंसे [illegible] जीता है।

गन्धाढ्य, (पु०) गंधेन आढ्यः । गंधसे भराहुआ । चंदनवृक्ष । नागरंग वृक्ष । गंधवाला दरख्त (त्रि०) । स्वर्णयूथी (स्त्री०).

गन्धाढ्य, (त्रि०) गन्धेन आढ्यः=पूर्णः । सुगन्धिसे भरा हुआ । बहुत खुशबूदार.

गन्धाधिकम्, (न०) गन्धे अधिकं । बहुत गंधवाला । एक प्रकारका अत्तर.

गन्धापकर्षण, (न०) गन्धं अपकर्षति । गन्धको निवारण करना.

गन्धाम्बु, (न०) (गन्धयुक्तं अंबु) गंधवाला जल । सुगंधिवाला (खुशबूदार) जल.

गन्धार, (पु०) गंधं ऋच्छति । ऋ+अण् । सप० राग । सिन्दूर । एक प्रकारका स्वर (आवाज) देशभेद.

गन्धाश्मन्, (पु०) गन्धवान्-अश्मा । सुगंधिवाला पत्थर । गन्धक । गंधक.

गन्धाष्टकम्, (न०) गन्धानां अष्टानां समूहः । आठ सुगन्धिवाले द्रव्य जो देवताओंपर चढाये जाते हैं.

गन्धाष्टक, (न०) गंधानां (गंधद्रव्याणां) अष्टकं । आठ सुगंधीवाले द्रव्य । चंदन आदि आठ गंधवाली चीजें.

गन्धिनी, (स्त्री०) गंधो विद्यते अस्याः इनिः । जिसका गंध हो । मुरानामी गंधवाला द्रव्य । शराब.

गन्धेभ, (पु०) गन्धप्रधानः इभः । गंधप्रधान हाथी । बहुत ही उत्तम हाथी.

गन्धोत्तमा, (स्त्री०) गंधेन उत्तमा उत्कृष्टा । बहुतही गंधवाली । मदिरा (मद्य) । शराब.

गभस्ति, (पु०) गम्यते (ज्ञायते) गम्-ड-भाः (विषयः) तं बभस्ति (भासयति) भस्+क्तिच् । विषय (पदार्थ) को प्रकाश करनेवाली । किरण । सूर्य.

गभस्तिमत्, (पु०) गभस्ति+मतुप् । किरणोंवाला । सूर्य.

गभस्तिहस्त, (पु०) गभस्तयो हस्ता इव यस्य । जसको खेंचनेमें जिसकी किरणें मानों हाथ हैं । सूर्य । सूरज.

गभीर, (त्रि०) गच्छति जलं अत्र । गम् ईरन् । आन्तादेशश्च । निम्न स्थान । नीचेकी जगह । जिसका तला न छूआ जाय । गहरा । जहां प्रवेश करना कठिन हो । न छूने आनेवाला.

गम्, जाना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । गच्छति । अगमत् । जगाम । गन्ता.

गम, (पु०) गम्+अप् । एक प्रकारका जूआ । जीतनेकी इच्छासे की यात्रा । जाना । मार्ग । सरल पाठ.

गमक, (त्रि०) गमयति (बोधयति) गम्+णिच्+ण्वुल् । बोधक । समझानेवाला । "गमक इसमें समास हुआ" यह अर्थ है । चतुरी । जनानेवाला.

गम्भीर, (त्रि०) गच्छति जलं अत्र । गम्+ईरन् । मुम् आगम हुआ । नि० जहां पानी जाता है । गंभीर मन्द । गहिरा । जम्भीर । कमल । ऋग्वेदका मन्त्र (पु०) । "स्वरे गर्ते च नाभौ च त्रिषु गंभीर..."

गम्भीरवेदिन्, (पु०) गम्भीरं (मन्दं) वेदि ... विन् । अभ्यास की गई शिक्षाको भी जो ... ताहै ऐसा हाथी । चमडा फाडनेसे टेढ़ ... काटनेसे भी जो अपनेको नहिं समझता उसे ... ग्रामी कहते हैं ऐसा हाथी । "गंभीरवेदि."

गय, (पु०) एक देशका भेद । वानरभेद । ... राजा । तीर्थविशेष (स्त्री०) टाप्.

गर, (पु०) गृ-निगलना । बोलना । पुकारना । ... अप् वा । विष । जहर । रोग । बीमारी । ...

गरल, (न०) गिरति जीवनं । गृ+अलच् । जो ... निगलजाय । विष । जहर । सर्पविष । ... तिनकोंका मूल.

गरिमन्, (पु०) गुरोर्भावः इमनिच् । गरुत्व । ... होना । गौरव । बडाई.

गरिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन गुरुः इष्ठन् । बहुतही ... "गुरुतर" "गरीयान्."

गरुड, (पु०) गरुतां डयते । डी+ड ड० तत्र ... कश्यपका बेटा विनताके गर्भसे उपजा पक्षियोंका रा...

गरुडध्वज, (पु०) गरुडो ध्वजः (चिह्नं) ... जिसका चिह्न गरुड है । विष्णु.

गरुडपुराण, (न०) गरुडेन प्रोक्तं पुराणम् । गरुडसे ... हुआ पुराण । पुराणोंमेंसे एक.

गरुडाग्रज, (पु०) ६ त० । विनताका बडा पुत्र ... सारथी अरुण.

गरुत्, (पु०) गृ-गृ-वा उति । पक्षियोंके आकाशमें ... कारण । पर । पंख.

गरुत्मत्, (पु०) गरुत् अस्ति अस्य मतुप् ... होना । परोंवाला गरुड । विहगमात्र । हरएक पक्षी

गर्ग, (पु०) गृ+ग । ब्रह्माका पुत्र । मुनिविशेष.

गर्गरि, (स्त्री०) गर्ग इति शब्दं राति । रा+क+ङीप् । ... रिडकनेका पात्र । कलश । घडा । मच्छका भेद । ... पशु (पु०).

गर्ज्, बडे जोरकी आवाज करना । भ्वा० पर० सक० ... गर्जति । अगर्जीत् । "गर्जे गर्जे क्षणं मूढ" ...

गर्जर, (न०) गृ+ रिच् । गर्ज जायति । ... गाजर । एकप्रकारका मूल (जड).

गर्जित, (न०) गर्ज+क्त । बादलकी आवाज । ... "कर्तरि+क्त" मतवाला हाथी । मतवारा हाथी । ... गरजना.

र्त, (पु०) गृ+तन् । पृथिवीका छिद्र । गढा । स्त्रियोंके नितम्ब (चूतड)में कूल्हेके स्वरूपका एक अंश । रोगभेद । टोआ.

र्द, शब्द करना । चुरा० उभ० पक्षे० भ्वा० पर० अक० सेट् । गर्दयति-ते । गर्दति । अजगर्दत्-त.

र्दभ, (पु०) गर्द+अभच् । गधा । गर्दभ । गंधका भेद । चिराबुघुर.

र्दभाण्ड, गर्दभं (गंधविशेषं) अमति । अम्+ड । इसको इकार न हुआ । जिसके पत्ते घट (कोड) के समान हों ऐसा वृक्ष । पाकुड । इस नामसे प्रसिद्ध.

र्दभी, (स्त्री०) गर्द+अभच् । ङीष् । गोमयकीट । गोहेका कीड़ा । विशोकदियारी । अपराजिता । रासभी । गधी.

र्द्ध, लिप्सा । लाभ करनेकी इच्छा करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । गर्द्धयति-ते । अजगर्द्धत्-त.

र्द्ध, (पु०) गृध्+घञ्+अच् वा बहुत चाह । अतिशय इच्छा । गर्द्धभाण्ड नामी वृक्ष.

गर्द्धन, (त्रि०) गृध्+युच् । लुब्ध । लोभी.

र्भ, गृ+भन् । भ्रूण । शुक्र (वीर्य) और शोणित (लोहू)-के मेलसे उपजा शरीरके जन्मका करनेहारा मांसका पिण्ड (गोला) । बच्चा । कुक्षि । पेट । नाटकमें सन्धिका भेद । अन्न । आग । पुत्र । गंगा आदि पवित्र नदिओंके पानका स्थान.

गर्भक, (पु०) गर्भं (केशमध्ये) कायति । कै+क । केशोंके बीचकी माला । केशमध्यस्थ माल्य.

गर्भकाल, (पु०) गर्भस्य कालः ष० त० । गर्भका समय.

गर्भक्लेश, (पु०) गर्भस्य क्लेशः । गर्भका क्लेश । बच्चा उत्पन्न होनेके समयका दुःख.

गर्भक्षय (पु०) गर्भस्य क्षयः । गर्भका नाश होजाना वा गिरजाना.

गर्भगृह, (न०) गर्भ इव गृहम् । गर्भकी नांई घर । घरके मध्यका भाग । बीचका कमरा.

गर्भघातिनी, (स्त्री०) गर्भं हन्ति । हन्+णिनि । लाङ्गलिका वृक्ष.

गर्भच्युत, (त्रि०) गर्भाद् च्युतः । गर्भसे गिर पड़ा जैसा कि बच्चा.

गर्भपोषण, (न०) गर्भस्य पोषणं=भरणम् । गर्भका पुष्ट करना । गर्भका पालना.

गर्भद, (पु०) गर्भं ददाति । दा+क । पुत्रजीव वृक्ष । गर्भ देनेहारा अर्थात् इसके सेवनसे गर्भ हो जाता है । क्षुपभेद.

गर्भपातक, (पु०) गर्भं पातयति । पत्+णिच्+ण्वुल् । जो गर्भको गिरा देताहै । रक्तशोभाञ्जन । लाल सजना । लाल मुहांजना.

गर्भवती, (स्त्री०) गर्भो विद्यते अस्याः । मतुप् । मको व होता है । आपन्नगर्भा स्त्री । बच्चा जनेवाली औरत । हामिलह.

गर्भशय्या, (स्त्री०) गर्भस्य शय्या इव स्थानम् । गर्भका वह स्थान जो छत्रके समान है । "शंखकी नाभीके समान तीन आवर्त (घेरे) हैं, इस प्रकारकी योनि है, इसके तीसरे आवर्तमें गर्भशय्या (गर्भकी सेज) है, जहां गर्भका निवास होताहै."

गर्भस्राव, (पु०) स्रु+घञ् ६ त० । प्रसूतिकाल आनेके पहिले रोग आदिसे गर्भका गिरना.

गर्भस्राविन्, (पु०) गर्भं स्रावयति । स्रु+णिच्+णिनि । गर्भको गिरा देता है । हिन्ताल वृक्ष.

गर्भागार, (न०) गर्भ इवागारं । घरका मध्य (बीच)का भाग । निवास करनेका स्थान (जगह) । गर्भरूपी घर । गर्भका स्थान.

गर्भाधान, (न०) गर्भः शुद्धतया आधीयतेऽनेन । जिसके द्वारा शुद्ध होकर गर्भ ठहरजाताहै । दश प्रकारके संस्कारोंमेंसे गर्भके पात्रको संस्कृत (साफ) करके वीर्यका सींचना.

गर्भाशय, (पु०) गर्भं आशेतेऽत्र । शी+अच् । जहां गर्भ सोता है । गर्भका वेष्टन (पड़दा घेरनेवाला) रूप चमड़ा । जरायु । जेर

गर्भाष्टम, (पु०) गर्भात् (गर्भग्रहणसमयात्) अष्टम गर्भधारण करनेके समयसे आठवां । गर्भग्रहणसे लेकर आठवां महीना अथवा वर्ष (बरिस) । "गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत" मनु.

गर्भिणी, (स्त्री०) गर्भोऽस्त्यस्याः इनि । जिसे गर्भ हो । गर्भवाली स्त्री । हामिलह.

गर्भेश्वरः, (पु०) गर्भात् एव ईश्वर । जन्मका धनी । जन्मसेही धनवानी.

गर्व्, मदकरना । अहंकार करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गर्वति । अगर्वीत्.

गर्व्, अहंकार करना । चुरा० आत्म० सेट् । गर्वयते । अजगर्वत.

गर्व, आना-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गर्वति । अगर्वीत्.

गर्व, (पु०) गर्व अहंकारकरना+घञ् । अहंकार । मगरूरी.

गर्व, (पु०) गर्व+घञ् । अभिमान । अहंकार । मगरूरी । "धन, रूप, जवानी, कुल, विद्या और बलको पाकर दूसरोंको कुछ न समझना" इस प्रकार अहंकारका भेद

गर्ह्, निन्दा करना । चुरा० १ले भ्वा० आत्म० सक० सेट् । गर्हयते । अजगर्हत । गर्हते । अगर्हिष्ट । भर्हत.

गर्हणं-णा, (न० स्त्री०) गर्ह्+ल्युट्+, अन । निन्दा । उपालम्भ । धिक्कार । गाली.

गर्हा, (स्त्री०) गर्ह्+अ । निन्दा । गाली.

गर्हित, (त्रि०) गर्ह्+क्त । निन्दा कियागया । उपालम्भ कियागया । तिरस्कार कियागया । निषेध कियागया । निकृष्ट । बुरा । तं० न० । उपालंभ वा पापजनक कर्मोंसे भराहुआ काम.

गर्ह्य, (त्रि०) गर्ह्+ण्यत् । निन्दाके योग्य । अत्यंत नीच । नालायक.

गर्ह्यवादिन्, (त्रि०) गर्ह्यं वदति । वद्+णिनि । निन्दा-के लायक बोलनाहै । खराब वचन बोलनेवाला । निंदवादी । "कद्वद".

गल्, खाना । बहाना । गालना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गलति । अगालीत्.

गल, (पु०) गल्+अच् । कण्ठ । गला । सर्जरस (धुना) बाजा । मच्छी.

गलक, (पु०) गल्+वुन्+अक । गला । कण्ठ । गर्दन । एक प्रकारकी मछी.

गलकम्बल, (पु०) गले कम्बल इव । गलमें मानों कंबल है । सास्ना । गौओंके गलेमें रहनेहारा मांसका गोला.

गलगण्ड, (पु०) ७ त० । (घेगण्ड) एक प्रकारका रोग.

गलग्रह, (पु०) जहां आरम्भ होकर प्रत्यारंभ (पीछे हटना) प्रतीत नहिं होता उसे गर्गादि सम्पूर्ण मुनिओंने गलग्रह कहाहै । फिर न (प्रत्यारम्भ) छोटकर शुरु होनेवाला पदार्थ । कृष्णपक्षकी चतुर्थी सप्तमी आदि तीन दिन, त्रयोदशी आदि चार दिनमें आठ गलग्रह कहे जाते हैं । आप डालीगई विपत्ति । मच्छीकी चटनी.

गलनं, (न०) गल्+भावे ल्युट्+अन । चूना । गिरना पिघलना.

गलन्तिका, (स्त्री०) गल्+शतृ+ङीप् । अल्पार्थे कन् । थोडेजलकी धारावाली गगरिया । झारा । कर्करी । "देवे देया गलन्तिका" स्मृतिः.

गल(ले)स्तनी, (स्त्री०) गले स्तनौ यस्याः वा अलुक् ब० । जिसके गलेमें स्तन (मम्मा) हो । छागी । बकरी.

गलहस्त, (पु०) गले हस्तः । निकालनेके लिये गलेमें दियागया हाथ । गलहथा.

गलित, (त्रि०) गल्+क्त । पतित । गिरपडा । खिसकगया । न्हटगया.

गलितकुष्टं, (न०) गलितं कुष्टं क० म० । निदान (वे-दुत्त) कोढ जिसमें अंगुलियें झड जातीहैं.

गलितनखदन्त, (त्रि०) गलिताः नखाः दन्ताश्च यस्य ब० स० । जिसके नख और दांत झड गयेहैं.

गलितयौवन, (त्रि०) गलितं यौवनं यस्य । जि यौवन (जवानी) नष्ट होचुकाहै । वृद्ध हैग.

गलितवयस्, (त्रि०) गलितं वयः यस्य । जि जा चुकीहै.

गल्या, (स्त्री०) गलानां (कण्ठानां) समूहः । कं हाय (समूह).

गल्ल, (पु०) गल्+ल । गाल । गड । गल्ल । कपोल

गल्लक, (पु०) गल्लति+क्विप्-गल् तं आप्नोति स्वार्थे कन् । चपक । पानपात्र । मदपीनेका शराबका पियाला.

गवय, (पु०) गु+अयच् । गौके समान गर्दनी बिना पशुका भेद । एकप्रकारका वानर.

गवल, (पु०) गुङ्-शब्दकरना+अप् तं लाति । बडा शब्द करनेहारा । वनमहिष । वनका भैंसा सींग (न०).

गवाकृति, (त्रि०) गोः आकृतिः इव आकृति यस स० । गौकी आकृति (शकल) वाला.

गवाक्ष, (पु०) गवां किरणानां अक्षि इवं स किरणोंकी आंख अर्थात् निकलनेका द्वार है समान कुलीन स्त्रियोंके देखनेका स्थान । वातायन.

गवेन्द्रः, (पु०) गवां इन्द्रः प० त० । गौओंका (मालिक) । उत्कृष्ट वृषभ । बैल व सांड.

गवेशः ईश्वरः, (पु०) । गवां ईशः वा ईश्वरः गौओंका स्वामी (मालिक).

गवेष्, अन्वेषण । तलाशकरना । खोजना । ढूंढना । आत्म० सेट् । गवेषयते । अजगवेषत.

गवेषणा, (स्त्री०) गवेष्+युच्+टाप् । अन्वेषण । खोजना । ढूंड.

गव्य, (त्रि०) गोर्विकारः गवि भव । गोर्हितं वा सर्वत्र यत् । गौका विकार, गौमें हुआ, हितकारी, गौका ये । गोसम्बन्धीय । दूध । दही न । गोबर । गोमूत्र । पीला.

गव्यूति, (स्त्री०) गोयूतिः । कोशयुग । दोकोस गांए मेलें.

गह्, गहन गाढा होना (जैसा कि जंगल) दुर्गम मिल होना । चुरा० उभ० सक० सेट् । गहय अजगहत्-त.

गहन, (न०) गाह्+युच् पृ० ह्रस्वः । जंगल दुःख । दुर्गम । दुष्प्रवेश । जहां दाखिल होना (त्रि०).

[illegible]र, (पु०) [illegible]+स्तम्भ्। नि०। निकुञ्ज। कुञ्ज। [illegible] दुखोंकी [illegible] ग्राम। गुहा। गुफा। वन। [illegible]। पाखण्ड। कठिन स्थान.

[illegible], आना। अ०। आत्म०। पर०। अनिट्। गाने। [illegible].

[illegible], स्तुति। तारीफ करना। पर०। अम्महोना। [illegible] जुते०। [illegible] अगादि। अगादीर.

[illegible]य, (पु०) गङ्गा+ढक्। गंगाका पुत्र। भीष्म। कार्तिकेय। [illegible]। [illegible].

[illegible], (त्रि०) गाह+क्त। [illegible] लगाया हुआ। महारा हुआ। [illegible] गाढ़ जलमें प्रविष्ट हुआ.

[illegible], (गाह+क्त)। अतिशय। बहुतही। दृढ़। पक्का। [illegible]। [illegible] "[illegible]" रघु:.

[illegible]पत्न, (त्रि०)-ती। (स्त्री०)। गणपति भक्त। गण (सेना) [illegible] स्वामी (मालिक)। गणपति (गणेश) [illegible].

[illegible]पत्य, (पु०) गणपति-अण्। गणेशजीकी पूजा करनेवाला। -त्यं -(न०) गणेशकी पूजा। सेनाका नायक होना। सर्दार होना.

[illegible]णिक्य, (न०) गणिकाओंका समूह+ष्यञ्। वेश्या (कं- [illegible]) ओंका समूह.

गाण्डि(ण्डी)व, (पु० न०) [illegible] [illegible] पूर्वपददीर्घ.। [illegible]। अर्जुनका धनुष। [illegible] प्रकारका धनुष.

[illegible](णिड)विन्, (पु०) [illegible] (ण्डी) [illegible]। अर्जुन धनुधारी। अर्जुनदूत.

[illegible], (त्रि०) [illegible]-[illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible].

[illegible], (त्रि०) धी-(धी) [illegible]। [illegible] (पु०) [illegible]। [illegible].

[illegible], [illegible]। [illegible] होना। [illegible]० [illegible]० [illegible]० [illegible]। [illegible]। [illegible]

[illegible], (न०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] ([illegible])

[illegible]-[illegible], (पु०) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] ([illegible])

गाधि, (पु०) गाध+इन्। [illegible] [illegible] [illegible]। विश्वामित्रका पिता। एक राजा.

गाधिज, (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। विश्वामित्र.

गाधेय, (पु०) गाधि+ढक्। [illegible]

गान, (न०) गै+ल्युट्। गीत। ध्वनि। [illegible]। [illegible]। [illegible].

गान्दिनी, (स्त्री०) [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

गान्धर्व, (त्रि०) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। वह विवाह जिसमें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। (पु०) [illegible] गन्धर्व। [illegible]। [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]) (न०)

गान्धर्वशाला, (स्त्री०) [illegible] [illegible] [illegible]। गन्धर्वों की [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

गान्धार, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] (न०)। [illegible] (न०)

गान्धारराज, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]। दुर्योधनका [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। दुर्योधनका [illegible]

गान्धारी, (स्त्री०) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] की [illegible]। [illegible] [illegible]

गान्धारेय, (पु०) [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (न०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (न०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

गारुडिक, (पु०) गरुडेन (विषमन्त्रेण) जीवति ठक् । जिसका जीवन विष निकालनेवाले मन्त्रपर हो । विषवैद्य.

गारुत्मत, (न०) गरुत्मान् देवता अस्य । जिसका देवता गरुड है । मरकतमणि.

गालित, (न०) [illegible] । [illegible] मसूर.

गार्हपत्य, (पु०) गृहपतिः [illegible] । गृहस्थीके [illegible] । [illegible] अग्नि.

गार्हमेध, ((त्रि०)-धी (स्त्री०) गृहमेधस्य इदं अण् । गृहस्थके योग्य ।-धः (पु०) गृहस्थके करने योग्य पांच यज्ञ.

गार्हस्थ्य, (पु०) गृहस्थस्य भावः कर्म वा । गृहस्थआश्रममें करनेलायक काम । गृहस्थीका धर्म.

गालव, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । एक मुनि । [illegible].

गालि, (पु०) [illegible] । [illegible] । निन्दा । बुरा वचन.

गालमालि, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible].

गाह, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

गाहन, (न०) [illegible] । [illegible] । दुसरी [illegible] । [illegible].

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] हुआ । दुसरी [illegible] हुआ । [illegible] हुआ.

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] दुसरी [illegible] । [illegible].

[illegible], (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] (स्त्री०).

[illegible], (न०) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible].

[illegible] (स्त्री०) [illegible] [illegible] । [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible].

[illegible] (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (स्त्री०)

[illegible] (न०) [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

गिरित्र, (पु०) गिरौ [illegible] । [illegible] है । शिव.

गिरिसुत, (पु०) पर्वतस्य पुत्र । पार्वती (स्त्री०).

गिरीश, (पु०) गिरिः कैलासः [illegible] । महादेव.

गिल्लित, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible].

गीत, (न०) [illegible] । गाना । [illegible]

गीतक्रमः, (पु०) गीतस्य क्रम । [illegible] । प्रकार । ढंग.

गीतज्ञ, (त्रि०) गीतं जानाति [illegible] । गायक । गवैया.

गीतप्रिय, (त्रि०) गीतस्य प्रिय । [illegible]

गीतमोदिन्, (पु०) गीतेन मोदते [illegible] हर्ष करनेवाला । किन्नर । [illegible].

गीतशास्त्र, (न०) गीतस्य शास्त्र । [illegible] गंधर्वविद्या.

गीता, (स्त्री०) गै+क्तः [illegible] । [illegible] उपदेशात्मक कथाविशेष । यह [illegible] मेंसे बहुत प्रकारकी है किन्तु [illegible] प्रसिद्ध है.

गीतायन, (न०) गीतस्य अयनः [illegible] । वीणा । सितार । बाजा

गीति, (स्त्री०) गै+क्तिन् । गाना । [illegible]

गीर्णि, (स्त्री०) गॄ+क्तिन् । [illegible] । [illegible]

गीर्वाण, (पु०) गीरेव [illegible] यस्य । [illegible] है । देव.

गीष्पति, (पु०) गिरां पतिः । [illegible] बृहस्पति । देवताओंका गुरु । [illegible] [illegible].

गु, [illegible]

गु, [illegible] । [illegible]

गुग्गुल, (पु०) [illegible]

गुच्छ, (पु०) [illegible]

. .क), (पु०) गुच्छाकृतीनि पत्राणि अस्य। पत्ते गुच्छेरी शकलके हों। तालका वृक्ष। इसका पत्र गुच्छेके स्वरूपका है.

क, गुच्छाकृतीनि फलानि अस्य। जिसके फल ी भाँति हों। रीठा। करंजा। राजादनी। कतक) अभिद्मनी। धावमाची। केला। दाख (स्त्री०)

तति। आवाज करना। गुजति। जुगोज अगुजिट.

करना। शब्दकरना। भ्वा० पर० सक० सेट्। गुञ्जति.

(स्त्री०) गुञ्जि+अच्। एक प्रकारकी लता (बेल) तीन। परिमाण (माप)। नगारा (पटह)। मीठी और ी आवाज। शराबका घर। रत्ती.

(स्त्री०) गुड+टिक् वा ङीप्। गोलस्वरूपकी गुटिका। ईकी गोली। मूर्ति। शतरंजकी नर्द। स्वार्थे कन्। ी वही अर्थ.

वेष्टन। घेराडाना। लपेटना। तुदा० उभ० सक० सेट्। डयति-ते। अजुगुण्ठत्-त.

लपेटना। तोडना। रोकना। तुदा० पर० सक० सेट्। ति। जुगोड अगुडीत्.

(पु०) गुड्+क। गोल। हाथीका सन्नाह (फन्दा)। पाक। गन्नेका पकाहुआ रस। गुड.

क, (पु०) गुडेन पक्व-वा कन्। गुडका गोला। र। गुडकी बनाई गई एक प्रकारकी मद्य.

क्-च्, (पु०) गुड इव मधुरा त्वक् (त्वचा) अस्य। सकी त्वचा (छाल) गुडके समान मीठी हो। छाल। क (२) चीनी.

पुष्प, (पु०) गुड [illegible] मधुरं पुष्पं अस्य। जिसका क गुडके समान मीठा हो। मधूक (महुआ) वृक्ष.

शिग्रु, (पु०) गुड इव मधुरः शिग्रुः। लालसुहाँजना.

का, (स्त्री०) गुड-विशेष। तोडना। रोकना। आक। । नींद.

केश, (पु०) गुडाकायाः (निद्रायाः) ईशः वशि-न्। नींदको काबू करनेवाला। शिव। अर्जुन.

शय, (पु०) गुड [illegible] मधुरः आशयः (फलमध्यं) स्य। जिसके फलमें गुडकी मिठास हो। आमरोटका । ह स०। गुड चाहनेवाला.

(ड)ची, (स्त्री०) गुड बचाना। उ (ऊ) चट्। पने नामकी लता। गिलोयकी बेल

, मण्डन। सजाइ करना। दूर करना। चुरा० उभ० सेट्। णयति-ते। अजुगुणत्-त.

गुण, (पु०) गुण्+अच्-घञ् वा। धनुषका चिल्ह। धनुष खेचनेकी रस्सी। रस्सी। शूरता आदि धर्म। राजाओंके संधि विग्रह यान आसन द्वैध और आश्रय छे साधन। ज्ञान विनय आदि। सांख्यके मतमें पुरुषके भोगका साधन होनेसे उसे बांधनेहारे सत्व रज तम पदार्थ। अप्रधान। न्यायमतमें रूप आदि चौवीस पदार्थ। व्याकरणमें अ ए ओ। अलंकारमें माधुर्य आदि। दुहराना। तन्तु। दूर्वा। घास.

गुणक, (पु०) गुण्। दुहराना। भरना+ण्वुल्। भरनेवाला। वह राशि जिसके साथ गुणा आता है। "गुण्यान्त्यमङ्कं गुणकेन हन्यात्" लीलावती.

गुणतः, (अव्य०) गुण+तसिल्। तीन गुणों (जगत्के सम्पूर्ण पदार्थोंमें) के अनुसार सत्व, रज, तम.

गुणता-त्वं, (स्त्री० न०) गुण+तल्-वा त्व-भावे। गुण-पना। अप्रधान। उत्कृष्टता। धर्म। गुणना। रस्सीपना.

गुणनं, (न०) गुण्-ल्युट् अन्। गुणना। प्रसिद्ध करना। गुणवर्णन करना.

गुणनिका, (स्त्री०) गुण्-भावे युच्-स्वार्थे क। अध्ययन अभ्यास। नृत्य। नाचनेकी विद्या। नाटककी प्रस्तावना। माला। हार.

गुणनीय, (त्रि०) गुण्+करणे अनीयर्। गुणा करने। देने-योग्य। सिख देनेलायक। उपदेश करने योग्य

गुणमय, (त्रि०) गुण+मयट्। छोटेसे तन्तु (धागे) वाला। प्रकृतिके तीन गुणोंवाला। अच्छे गुणोंवाला। धर्मात्मा.

गुणवृक्षक, (पु०) वृक्ष [illegible] कायति। कै+क। गुणानां (नौकाकर्षणरज्जूनां बन्धनाधारः) वृक्षः। बेडिओंको खेंचनेवाली रस्सिओंके बांधनेका आश्रय। मस्तूल.

गुणित, (त्रि०) गुण्+कर्मणि क्त। गुणागया। आहत। चोट कियागया। भरागया। पूरित.

गुणिन्, (पु०) गुणोऽस्त्यस्य इनि। चिल्हवाला। धनुष्। गुणवाला (त्रि०).

गुणीभूत, (त्रि०) अगुणः गुणः भूतः। च्वि+भू+क्त। अप्रधान कियागया.

गुणीभूतव्यङ्ग्य, (न०) गुणीभूतं वाच्यार्थात् अपकृष्टं व्यङ्ग्यं यत्र। वाच्यार्थ (असली अर्थ) से जहां व्यङ्ग्य (व्यञ्जना शक्तिसे जाना गया) अर्थ अपकृष्ट (छोटा) हो। अलंकारमें कहाहुआ मध्यम काव्य.

गुण्डिक, (पु०) गुण्ड्+अभि अर्थमें टन् (टक)। पीसे हुए चावल आदि.

ावारः, वा वासरः, (पु॰) गुरोः वारः । गुरुका वार । बृहस्पतिवार । वीरवार.

ावृत्तिः, (स्त्री॰) गुरौ वृत्तिः=वर्तनं । गुरुके सन्मुख शिष्यका व्यवहार.

ाव्यथ, (त्रि॰) गुरु॰ व्यथा यस्य । बडी पीडावाला । पीडासे व्याकुल होरहा.

ोर, (पु॰) देशभेद । गुजरात (दक्षिण) । उस देश-का वासी.

ोङ्गना, (स्त्री॰) गुरोः अङ्गना । गुरुकी स्त्री । अत्यन्त आदरके योग्य स्त्री.

ार्थ, (त्रि॰) गुरोः अर्थः । अत्यन्त उपयोगी आवश्यक ।–र्थः (पु॰) गुरुदक्षिणा । शिष्यको दिया पढानेकी.

र्विणी, (स्त्री॰) गुरुर्गर्भोऽस्त्यस्याः । इनि । नि॰ जिसे गर्भ हो । गर्भवती । गर्भवाली स्त्री.

र्वी, (स्त्री॰) गुरु+ङीष् । गर्भवती । "नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीप्रसववेदनाम्" । आदरवाली स्त्री बडी स्त्री.

ल्फ, (पु॰) गुल्+फक्-नि॰ । पाओंकी गांठ । पादग्रन्थि । गिट्टा.

ल्म, (पु॰) गुड=रक्षा करना-बचाना । लपेटना-घेर-लेना+मक् । डलयोरैक्यम् । प्रधानपुरुषोंके आश्रय दियागया रक्षा करनेहारा पुरुषोंका समूह । (हाथी ९, रथ ९ घोडे २७, पदाति ४५) इतनी संख्याकी सेना । एक प्रकारका रोग । तापी । प्लीहरोग.

ल्ममूल, (न॰) गुल्माकृति मूलमस्य । जिसकी जड झाडीके समान हो । आर्द्रक । अदरक.

ल्मवल्ली, (स्त्री॰) गुल्माकारा वल्ली । झाडीके समान बेल । सोमलता.

(गू)वाक, (पु॰) गु+आक । नि॰ । सुपारी । क्रमुक । पूगीफल.

ह्, संवरणे । छिपाना । ढांकना । भ्वा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । गूहति-ते । अगूहीत् । अगुक्षत् । अगूहिष्ट-अगूढ.

ह, (पु॰) गुह्+क । कार्तिकेय । घोडा । रामचन्द्रजीका मित्र शृङ्गवेरका स्वामी । चाण्डालोंका नाथ । गढा । विष्णु । सिंहपुच्छी बेल । पर्वतका गढा । हृदय (स्त्री॰) । "गुहां प्रविष्टौ" इति श्रुतिः.

हा, (स्त्री॰) गुह्+अङ् । गुफा । छिपनेका स्थान.

हाशय, (पु॰) गुहायां (गर्ते) आशेते । शी+अच् । जो गढेमें सोता है । अजगर । सिंह आदि । हृदय । बुद्धिमें रहनेहारा जीव । ईश्वर । "गुहाशयं गह्वरेष्ठं" इति श्रुतिः.

हाहित, (त्रि॰) गुहायां आहितः । गुप्त (हृदयमें) रक्खा गया.

गुह्य, (त्रि॰) गुह्+क्यप् । कच्छप । पाखण्ड । परमात्मा । एकान्त । भग । लिङ्ग (न॰) रहस्य । छिपानेके लायक (त्रि॰).

गुह्यक, (पु॰) गुह्यं कं (सुखं) यस्य । गुह्यं कुत्सितं कायति । कै+क वा । जिसका सुख छिपा हुआहो । जो बुरा शब्द करता है । कुबेरके धनको बचानेहारा । देवयोनिभेद.

गुह्यकेश्वर, (पु॰) ६ त॰ । गुह्यकोंका स्वामी । कुबेर.

गुह्यगुरुः, (पु॰) गुह्य-गुरु । छिपाने योग्य गुरु । शिवजी । गुह्यकेश्वर.

गुह्यभाषितं, (न॰) गुह्यं भाषितं । छिपीहुई बातचीत । गुप्तभाषण.

गू, विष्ठात्यागे । मलका छोडना । तुद॰ पर॰ अक॰ सेट् । गुवति । अगुवीत् । जुगाव । गूनः.

गूढ, (त्रि॰) गुह्+क्त । गुप्त । छिपाहुआ । ढका हुआ । गहन । एकान्त (न॰).

गूढचार-चारिन्, (त्रि॰) गूढं चरति-चर्-णिन् । छिपकर इधर उधर घूमनेवाला.

गूढज, (पु॰) गूढं गुप्त यथातथा जातः । गूढः सन् वा जातः । जन्+ड । छिपाकर पैदाहुआ । छिपाहुआ उपजा । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक.

गूढपथ, (पु॰) गूढः पन्थाः । छिपाहुआ मार्ग । गुप्तमार्ग.

गूढपाद्-द, (पु॰) गूढाः पादा अस्य वा पद्भाव । जिसके पांव छिपेहुए हों । सर्प । सांप

गूढपुरुष, (पु॰) छिपाहुआ पुरुष । गुप्तचर । प्रणिधि । जासूस.

गूढभाषितं, (न॰) गूढं भाषितं । गुप्तवार्ता । छिपीहुई बात । खबर.

गूढमैथुन, (पु॰) गूढं केनापि अदृश्यं मैथुनं यस्य । जिसे भोग करते कोई भी नहिं देख सक्ता । काक । कौआ.

गूढसाक्षिन्, (पु॰) छिपाहुआ गवाह । अर्थी (मुद्दई) अपने प्रयोजनकी सिद्धिके लिये प्रत्यर्थी (मुद्दालह)के छिपेहुए वचनको जिसके द्वारा स्पष्ट करके सुनवाता है इस प्रकारका गवाह । मुद्दईसे पोशीदह मुद्दालहके इजहार सुननेवाला गवाह.

गूढाङ्ग, (पु॰) गूढानि अङ्गानि अस्य । जिसके अङ्ग अर्थात् शरीरके भाग छिपेहुए हों । कच्छप । कछुआ.

गूढोत्पन्न, (पु॰) छिपकर उत्पन्नहुआ । जारसे उत्पन्नहुआ एक प्रकारका पुत्र । " ये किसका पुत्र है " ऐसा नहिं जान सके.

गूथ, (पु॰ न॰) गू+थक् । विष्ठा । मल । गूह.

गूर, उद्यम करना। चुरा० आत्म० अक० सेट्। गूरयते। अजूगुरत्.

गूर, मारना। जाना। दिवा० आत्म० सक० सेट्। गूर्यते। अगूरिष्ट.

गृ, सेक। सींचना। भ्वा० पर० सक० अनिट्। गरति। अगार्षीत्.

गृज, ध्वनि। शब्दकरना। भ्वा० पर० अक० सेट्। गर्जति। अगर्जीत्.

गृञ्जन, (पु०) गृञ्जते (अव्यक्तेन कथ्यते) रोगेषु। गृञ्ज्+ल्युट्। गाजर। विषवाले पशुका मांस (न०).

गृध्, लालच करना। लिप्सा। दिवा० पर० सक० सेट्। गृध्यति। अगृधत्-अगर्धीत्। गर्धित्वा. गृद्धा.

गृध्नु, (त्रि०) गृध्+क्नु। लुब्ध। लोभी। लालची.

गृध्र, (पु०) गृध्+क्रन्। शकुनि। पक्षी। गीध। लोभी। (त्रि०).

गृध्रराज, (पु०) ६ त०। गरुडका पुत्र। जटायु पक्षी। पक्षियोंका राजा.

गृष्टि, (स्त्री०) सकृत् गर्भं गृह्णाति। ग्रह+क्तिच्-पृ-नि०। एकबार ब्यानेवाली गौ। वाराहक्रान्ता। बड़रा औषध। वराहमी.

गृह्, ग्रहण लेना। पकड़ना। चुरा० आत्म० सक० सेट्। गृहयते-अजगृहत.

गृह, (न०) ग्रह्-धरके अर्थमें क। ईंट मट्टी आदिसे बना हुआ घर। गृह-रेका-अच्। कलत्र। स्त्री। औरत। नाम। जैसे अर्थ देवताका मन्दिर। एक घरके अर्थमें यह शब्द नपुंसक और बहुत घरोंके अर्थमें पुंलिङ्ग होताहै। "नन्नागारे धनगृहस्तत्" इति मेदनाम। और अर्थमेंभी दार शब्दके समान बहुवचनान्त होता है.

गृहकपोतः, (पु०) गृहस्थित कपोतः। घरका पालाहुआ कबूतर.

गृहच्छिद्र, (न०) गृहस्य छिद्रं=दोषः। घरेलू दोष.

गृहजः-जातः, (पु०) गृहे जातः-जन्+ड वा क्त। घरमें उत्पन्न हुआ (दास)

गृहजनः, (पु०) गृहस्थितः जनः। घरकी स्त्रियाँ (स्त्री०). घरके लोग.

गृहज्ञानिन् वा गृहेज्ञानिन्, (पु०) गृहे एव ज्ञानी-ज्ञा+इन्। घरके भीतर ही जो समझदार है। कमअक्ल.

गृहदासः, (पु०) गृहस्थितः दासः। घरका दास। घरेलू नौकर.

गृहदेवता, (स्त्री०) गृहस्य देवता। घरकी देवी। गृहस्थी देवताओंमें एक देवी ([illegible])

गृहदेहली, (स्त्री०) गृहस्य देहली। घरकी देहली। ड्योढ़ी। [illegible]

गृहपति, (पु०) ६ त०। गृहका पति। घरका मालिक। मन्त्री। वजीर। धर्म.

गृहपत्नी, (स्त्री०) गृहस्य पत्नी। Ved. घरकी मालकिन (स्वामिनी)। गृहस्थकी स्त्री.

गृहपालः, (पु०) गृहं पालयति। घरको बचानेवाला। घरका रखवारा.

गृहबलिः, (पु०) गृहस्य बलिः। घरेलू बलि। भोजनमेंसे घरके देवता सम्पूर्ण पशुपक्षियोंको देनेकी भेंट।

गृहमणि, (पु०) गृहे मणिरिव। घरमें मानो मणि है। प्रदीप। दीवा.

गृहमृग, (पु०) गृहस्य मृग इव। मानो घरका मृग। कुकुर। कुत्ता.

गृहमेधिन्, (पु०) गृहैः दारैर्मेधते (संगच्छते)। सङ्गम-मिलना+णिनि। जो घरका संग करते हैं। गृहस्थ।

गृहमेधीय, (पु०) गृहमेधिनोऽयं ■ (इव)। गृहस्थ-संबंधी धर्म.

गृहयालु, (त्रि०) गृह+आलु। ग्रहीता। लेनेवाला.

गृहवाटिका, (स्त्री०) गृहसमीपे वाटिका आरामः। घरके पासका छोटा बन। गृहके समीपका उपवन.

गृहशकुन्तिका, (स्त्री०) गृहे पालिता शकुन्तिका। पक्षिणी। घरमें पालाहुआ पक्षी (परिंदा).

गृहस्थ, (पु०) गृहेषु तिष्ठति (अभिरमते) स्था+क। स्त्रीके साथ विलासकर्ता है। घरमें रहनेवाला। द्वितीयाश्रमी। बालबच्चेदार.

गृहागत, (पु०) गृहं आगतः। आ+गम्+क्त। आगन्तुक। मेहमान वा पाहुना। घरमें आनेवाला (

गृहाधिपः, (पु०) गृहस्य अधिपः। घरका मालिक। गृहस्थ

गृहाराम, (पु०) गृहे (गृहसमीपे) आराम। पासका छोटा बन। गृहसमीपस्थ उपवन। बाग

गृहार्थः, (पु०) गृहस्य अर्थः। घरका काम काज। भी घरेलू प्रबन्ध.

गृहावग्रहणी, (स्त्री०) गृहं अवगृह्यतेऽनेन। जिससे घर पकड़ा जाय। अव+गृह्+करणे ल्युट्+ङीप्। देहरीकी। देहली.

गृहिणी, (स्त्री०) गृह+अस्त्यर्थे इनि। जिसका घर [illegible] घरवाली। भार्या। जोरू। औरत। स्त्री। घरकी [illegible] बहुत बड़ी। "गृहिणी सचिवः सखी मिथः प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ" इति र[illegible]

गृहिन्, (पु०) गृहाः दाराः सन्ति अस्य इनि। [illegible] जो हो। गृहस्थ। घरमें रहनेवाला.

र्हिन्, (पु॰) गृहे एव नर्दति न सम्पराये (युद्धे)। । घरहीमें गर्जता है। लड़ाईमें पीठ दिखानेवाला। टा आदमी। कायर। रणमें डरनेवाला। घरमेंही धम मचानेहारा.

त, (त्रि॰) ग्रह्+क्त। स्वीकार कियागया। मानागया। नज़ूर कियागया। प्राप्त। पाया। हासिल किया। ज्ञात। नागया। धृत। पकड़ागया.

त, (त्रि॰) ग्रह+क्त कर्मणि। लिया गया। पकड़ा गया.

तगर्भा, (स्त्री॰) गृहीतः गर्भः यया ब॰ स॰। गर्भ- ली स्त्री औरत.

तदेह, (त्रि॰) गृहीतः देहः येन। जिसने पृथिवीपर वतार लिया है.

तनामन्, (त्रि॰) गृहीतं नाम येन। नाम लेनेवाला। नमे पुकारा गया.

तवेतन, (त्रि॰) गृहीतं वेतनं येन। जिसने अपनी नख्वाह लेली है। मिहनतका फल चुका दिया गया.

तार्थ, (त्रि॰) गृहीतः अर्थः येन—ब॰ स॰। जिसने अर्थ प्रयोजन—मतलब समझ लिया है। समझे हुए मत- लबवाला.

तिन्, (त्रि॰) गृहीत+इनि। समझा हुआ। अच्छी- तरह जान चुका.

, (पु॰) ग्रह+क्यप्। गृहासक्त। घरमें फसाहुआ। क्षी और पशु। मकका द्वार (दरवाजा)। घरमें करेहुए कर्मके प्रयोग (व्यापार) को बतानेहारा गोभिलसूत्र आदि ग्रन्थविशेष। अस्वतन्त्र। पराधीन। जो आज्ञामें रहे। अपनी ओरका (त्रि॰) "गृहे भव" यत्। घरमें हुआ। घरका। वस्तु (चीज) (न॰) "अपने अर्थमें यत्"। नगरके बाहिरका गांव (स्त्री॰) टाप् गृह्या.

विज्ञापन। जताना। जनाना। इत्तिला देना। चुरा॰ आत्म॰ सक॰ सेट्। गारयते। अजीगरत.

शब्द आवाज करना। क्रया॰ पर॰ सक॰ सेट्। गृणाति। अगारीत्.

निगरण। निगलजाना। भक्षण करना। तुदा॰ पर॰ सक॰ सेट्। गिरति गिलति। अगारीत् अगालीत्.

, जाना गति। भ्वा॰ आत्म॰ सक॰ सेट्। गेवते। अगे- विष्ट। अजिगेवत्। गेवित्वा-गेत्वा.

दुक(ण्डुक), (पु॰) गच्छतीति गः इन्दुरिव। इवार्थे कन्। जो चांदकी भांति जाता है। कन्दुक। गेन्द। कपड़ेका बनाहुआ गोल लड़कोंका खिलौना। इसो॰ "गेण्डुक" यही अर्थ.

य, (त्रि॰) गै-गाना+यत्। कर्तरि। गवैया "भावे यत्" गीति। गाना। गीत। "कर्मणि यत्" गानेलायक (त्रि॰).

गेह, (न॰) गो (गणेशः) गन्धर्वो वा ईहः (ईप्सितः) यत्र। जहां गणेश वा गंधर्व होनेकी इच्छा की जाय। घर.

गै, गाना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। गायति। अगासीत्.

गैरिक, (न॰) गिरौ भव+ठक् (इक)। पर्वतमें उपजा उपधातु (छोटा धातु)। सोना। गेरी.

गो, (पु॰) गम्+डो। वृषभ। बैल। स्वर्ग। किरण। वज्र। जल। पशु। चांद। हवा। वायु। सूर्य। और ऋषभ- नामी औषध। सौरभेयी। गौ। दृष्टि। नजर। बाण। तीर। दिशा। माता। वाणी। भूमी (स्त्री॰).

गोकर्ण, (पु॰) गौरिव कर्णो यस्य। औरही जिसके कानहैं। सांप। "गोरिव कर्णो यस्य"। जिसके कान गौके समान [redacted]। अश्वतर। खचेरा। खचरा। एक प्रकारका पशु। गणदेवताका भेद। शैवतीर्थभेद। एकनाम.

गोकील, (पु॰) गोः पृथिव्याः कील [redacted]। मानो पृथिवी- की मेख है। लाङ्गल। मुसल। हल.

गोकुल, (न॰) गवां कुलं यत्र। जहां गौओंका समूह हो। गौओंकी जगह। गोठ। गौओंके बांधनेका स्थान। यमुनाके निकट नन्दके निवासका स्थान। व्रजनामी प्रसिद्ध स्थान। "गोकुले रामकेशवौ" पुराणे.

गोक्षीर, (न॰) गोः क्षीरम्। गौका दूध.

गोगृष्टिः, (पु॰) गोषु गृष्टि=सकृत्प्रसूता गौः। गौओंमें एक बार जनी हुई गौ.

गोगोष्ठ, (न॰) गवां गोष्ठं। गोवाश। गोभवन। गौओंके निवासका स्थान.

गोग्रासः, (पु॰) गवां ग्रासः। गौओंको देनेयोग्य ग्रास (घास) अन्न.

गोघातः–घातकः, घातिन्, (पु॰) गां घातयति हन्+क +ण्वुल्+णिन्। गौको मारनेवाला.

गोघृत, (न॰) गवां घृतं। वृष्टिका जल। शुद्ध मक्खन। गौका घी.

गोघ्न, (पु॰) गौर्हन्यते यस्मै। हन् सम्प्रदाने टक् (अ)। जिसके लिये गौ मारीजाती है। अतिथि। मेहमान। (इसके आनेपर मधुपर्कके लिये गौका मारना विहितहै। ये बहुत पुरानी चाल थी। जिस समय मरीहुई गौकोभी फिर जीवन देनेकी सामर्थ्य रखतेथे)। "कर्तरि टक्"। गौको घातकरनेहारा (कसाई) (त्रि॰).

गोचर, (पु॰) गावः (इन्द्रियाणि) चरन्ति अस्मिन्। त्रि॰ क॰। जहां इन्द्रियें विचरती हैं। इन्द्रियोंके विषय रूप रस आदि। "गावश्चरन्त्यस्मिन्" त्रि॰ क॰। गौओंके विचरनेका स्थान। देशमात्र। जन्मराशिसे उत्तर स्थानमें सूर्य आदि ग्रहोंका जाना.

गोचर्मन्, (न०) ६ त०। गवां चर्म। गौओंका चमडा। पृथिवीका परिमाण (माप) १०० गज लंबा और २ गजके निकट चौडा.

गोज, (त्रि०) गोः=पृथिव्याः जायते–जन्+ड। पृथिवीसे उत्पन्न हुआ.

गोजल, (न०) गवां जलम्। गौओं वा बैलोंका मूत्र। गोमूत्र.

गोजा, (स्त्री०) गवि (पृथिव्यां) [illegible] जायते जन्+ड। पृथिवीपर घास आदिके रूपसे जो उपजता है। घास आदि [illegible].

गोजिह्वा, (स्त्री०) गोजिह्वेव। मानों गौकी जीभ है। लताविशेष। गोजिया.

गोणी, (स्त्री०) गुण्+अच् नि० गुणः। गोण+ङीप्। धान्यका आधान। [illegible] प्रसिद्ध [illegible]। पुराना [illegible]। [illegible]। एक प्रकारका माप। [illegible].

गोतम, [illegible] पुत्र। अपने नामसे प्रसिद्ध मुनिभेद.

गोत्र, (पु०) गां (पृथिवीं) त्रायते। त्रै+क। जो पृथिवीको बचाता है। पर्वत। पहाड। नाम। वन। जंगल। क्षेत्र। खेत। घर। [illegible]। [illegible]। [illegible]। एक जातिका समूह। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] कहे गये [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

गोत्रज, (त्रि०) गोत्रे ([illegible]) जायते। जन्+ड। एक गोत्रमें उत्पन्न.

गोत्रभिद्, (पु०) गोत्रान् पर्वतान् भिनत्ति। भिद्+क्विप्। पर्वतोंको काटनेवाला। इन्द्र। देवताओंका राजा.

गोत्रा, (स्त्री०) गोत्राः (पर्वताः) सन्ति अस्याः। अच् [illegible] [illegible]। पृथिवी। "गोः समूहः त्रल्।" [illegible] [illegible].

गोदुग्ध, (न०) [illegible] [illegible] [illegible] दुग्ध। जिसके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] (पु०).

गोदान, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible]। [illegible] ([illegible])। जिसमें [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। "[illegible] [illegible]" [illegible]। [illegible] [illegible].

[illegible], (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

[illegible], (स्त्री०) [illegible]। [illegible] ([illegible] [illegible]).

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible].

गोधन, (न०) गवां धनं (समूहः)। [illegible]। "गौरेव धनं यस्य" गोधनम्। जिसके [illegible] [illegible] (त्रि०).

गोधा, (स्त्री०) गुध्यते (वेष्टयते) बाहुः अनया। घञ्। जो भुजाको घेरलेता है। धनुष्के [illegible] बचनेके लिये प्रकोष्ठ (कलाई) पर [illegible] "कर्तरि अच्"। गोधार नामसे प्रसिद्ध [illegible] "[illegible] [illegible] गोधा" मनुः.

गोधूम, (पु०) गुध्+ऊम। व्रीहिभेद। [illegible]। गेहूं। [illegible] प्रकारके धान.

गोधूलि, (पु०) गोभ्य उत्थितो धूलिर्यत्र [illegible]। [illegible] समय गौओंसे धूल उठती है। सूर्यके अस्त होनेका [illegible] सांझसमय.

गोनर्दीय, (पु०) गोनर्दे ([illegible] देशे) भवः। [illegible] देशके पास उत्पन्न हुआ। पाणिनी मुनि। ([illegible] पाठ, धातुपाठ, व्याकरणका) कर्ता.

गोनस, (पु०) गोरिव नासा अस्य। जिसकी [illegible] [illegible] समान है। एक प्रकारका सांप.

गोपति, (पु०) ६ त०। गौओंका पति बैल। [illegible] [illegible] पति शिव। पृथिवीका पति। श्रीकृष्ण। [illegible] पति सूर्य। स्वर्गका पति इन्द्र। [illegible] नाम [illegible].

गोपा, (स्त्री०) गां पाति। पा+क–टाप्। [illegible]

गोपानसी, (स्त्री०) गवां (किरणानां) पानं ([illegible]) [illegible]। [illegible]+क ङीप्। [illegible] [illegible] लगाया गया टेडा काठ। बल्ली। बल्ली। [illegible] के आगे तिरछी लकडी.

गोपाल, (पु०) गां (गो–[illegible]) [illegible] [illegible] गौ बैल वा पृथिवीकी रक्षा करनेहारा। [illegible]। [illegible] राजा। [illegible] पुत्र.

गोपुर, (न०) [illegible] पूर्यन्ते यत्र। पुर्+क। [illegible] जाती है। पुरद्वार। शहरका दर्वाजा। [illegible] [illegible] [illegible].

गोपुरीष, (न०) गवां पुरीषं। गौओंका गोबर.

गोप्य, (त्रि०) गुप्+यत्। रक्षाके योग्य। [illegible] [illegible] (पु०).

[illegible], (न०) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] गौ वा [illegible] [illegible].

गोभृत, (पु०) गोः=पृथिवी [illegible]। [illegible] [illegible]। पर्वत। पहाड

[illegible], (न०) गवां [illegible]। गौओंका [illegible] ([illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible]। [illegible] [illegible]

[illegible], (पु० न०) गवां [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible].

गोमायु, (पु०) गो:=विकृता वाचं=मिनोति। मा+उण्। जिसकी बिगड़ी हुई आवाज हो। शृगाल। गीदड़। सियार। गन्धर्व.

गोमिन्, (त्रि०) गो+अस्त्यर्थे मिनि। गौओंका स्वामी। गीदड़ (पु०).

गोमुख, (पु०) गोरिव मुखं अस्य। जिसका मुख गौके समान हो। मत्स्यविशेष। नक्र। तंदुआ। मगर। लिखा पर। एक प्रकारका बाजा। चोरसे कीगई एकप्रकारकी सन्धि (सुरंग) लेपन। जपमाला रखनेके लिये घड़के सूतका बनाहुआ एकप्रकारका वस्त्र। गुमी। हिमालयके एक ओरसे गंगाके गिरनेकी गुहा। गोमुखी। गंगोत्री (स्त्री०).

गोमूत्रिका, (स्त्री०) गोमूत्रं साधनत्वेन अस्या: ठन्। जो गौके मूत्रसे उपजती है। गोमूत्रसे उपजी लता (एकप्रकारकी बेल)। एक काव्यकी रचना जो आकृतिसे गौके मूत्रसमान बनाई हो.

गोमेद, (पु०) मणिविशेष। जवाहर। द्वीपभेद। एक जजीरा.

गोमेध, (पु०) गावो मेध्यन्ते यत्र। मेध्+आधारे घञ्। जहां गौएं मारीजाती हैं। एक प्रकारका यज्ञ.

गोयानं, (न०) गवां यानम्। बैलोंसे चलाया गया यान (रथ)। बैलगाड़ी.

गोयुगं, (न०) गवां युगं। गौओंका जोड़ा.

गोरसः, (पु०) गवां रसः। गौओंका रस (दूध).

गोरोचना, (स्त्री०) गोभ्यो जाता रोचना (हरिद्रा)। गौओंसे उपजी हरिद्रा। अपने नामसे प्रसिद्ध सुगन्धवाला द्रव्य। गौके मस्तकसे निकला पीलेरंगका पदार्थ.

गोल, (पु०) गुड+घञ्। (ड और ल समान हैं)। चारों ओरसे गोल। मदन (मैना) का वृक्ष। स्वामीके मरजानेपर जारसे उत्पन्न हुआ पुत्र। भूगोल। आकाशका गोला। एक राशिमें छ ग्रहोंका जुड़ना। "स्वार्थे कन्" गोलक। लकड़ीका गेंद.

गोलाङ्गूल, (पु०) गोरिव कृष्णं लाङ्गूलं अस्य। गौके समान जिसकी काली पूंछ हो। काले मुखवाला एक प्रकारका वानर.

गोलास, (पु०) गवि (गोमये) लसो (जन्म) यस्य। जो गोहेमें उपजा हो। गोमयकीट। गोहेका कीड़ा। शिलीन्ध्र। खुंबे.

गोलोक, (पु० न०) ६ त०। वैकुण्ठके दहिनी ओरका स्थान। विष्णु महाराजके निवासकी जगह (पु०).

गोवर्द्धन, (पु०) गां वर्द्धयति। वृध्+णिच्+ल्यु। गौको बढानेहारा। वृन्दावनका एक पर्वत। (घास आदि द्वारा यह गौओंको बढाता है)। यहां गौएं अच्छी भांति पलती हैं.

गोवर्द्धनधर, (पु०) गोवर्द्धनं (पर्वतं) धारयति। धृ+अच्। पर्वतको उठानेहारा। श्रीकृष्ण। नन्दजीके नन्दन.

गोविन्द, (पु०) गां विन्दति। विद्+श। गौको लाभ कर्ता है। श्रीकृष्ण। बृहस्पति। गौओंका अध्यक्ष (स्वामी).

गोशीर्ष, (न०) गो: शीर्ष इव। गौके शिरकी नाईं। गोशीर्ष: (पर्वत:) "तत्र जातत्वात्"। मलयके एक देशमें उपजा चन्दन। ६ त०। गोमस्तक (न०).

गोष्ठ, संघात-इकट्ठा होना। भ्वा० आ० अक० सेट्। गोष्ठते। अगोष्टिष्ट.

गोष्ठ, (न०) गावः तिष्ठन्ति अत्र। क-घत्वं। जहां गौएं ठहरें। गौओंका स्थान। गोबाड़ा। गोशाला। ग्वाल। गूजर.

गोष्ठी, (स्त्री०) गावः (अनेक वाच:) तिष्ठन्ति अत्र। क-षत्वम्। जहां बहुतसी वाणिएं निकलें। सभा। मजलस.

गोष्पद, (न०) "गो. पदं"। गौका पांव फंसनेसे उपजा गढा। गौके पांव जितना। गौओंसे सेवन किया गया देश। वह देश जहां बहुतसी गौएं [redacted] (त्रि०).

गोसव, (पु०) गावः सूयन्ते (वध्यन्ते) अत्र। सु+अप्। जिसमें गौओंको मारकर होम कियाजाय। गोयज्ञ। गोमेधयज्ञ.

गोस्तन, (पु०) गो: स्तना इव गुच्छो यस्य। जिसका गुच्छा गौके स्तनोंकी नाईं हो। चार लड़ोंवाला हार। गौका स्तन.

गोस्तनी, (स्त्री०) गोरिव स्तनः (फलं) अस्याः। जिसका फल गौके स्तनकी नाईं हो। एकप्रकारकी दाख.

गोस्थानक, (न०) गवां स्थानं स्वार्थे कन्। गौओंकी जगह। गोष्ठ। गौओंका घर.

गौड, (पु०) एक नगरका नाम। बंगालेसे लेकर भुवनेशतक एक देश। उस देशके लोग। बहु०। विन्ध्यपर्वतके उत्तर भागमें निवास करनेहारे ब्राह्मणविशेष। बहु०.

गौडी, (स्त्री०) गुडस्य विकार: अण्। गुड़का विकार। एकप्रकारकी मद्य (शराब)। मिठाई (न०)। अलंकारमें एकप्रकारकी रीति.

गौण, (त्रि०) गुणात् आगत +अण्। गुणसे आया। गुणके योगसे प्राप्त हुआ शब्द। अमुख्य वृत्तिसे सिद्धहुआ अर्थ। छोटा। दूसरा। व्याकरणमें प्रधानका विरोधी.

गौणपक्ष, (पु०) कर्म०। युक्तिका निर्बल भाग। जिस ओर दलीलकी कमजोरी हो.

गौणिक, (त्रि०) तीन गुणोंवाला (सत्व, रजस्, तमस्)। गौण। छोटा.

गौतम, (पु०) गोतमस्य अपत्यम्। शिष्यो वा अण्। गोतमकी सन्तान वा उसका चेला। नचिकेताका पिता। शतानन्दनामी एक मुनि। शाक्यसिंह। भरद्वाज ऋषि। बुद्धका नाम। न्यायशास्त्रके रचनेहारेका नाम.

गौतमी, (स्त्री०) गौतम+इदं अर्थे अण्। ततो ङीप्। गौतमकी। गौतमसे रची गई सोलह पदार्थोंवाली विद्या। गोदावरी नदी। एक राक्षसीका नाम। द्रोणकी स्त्री कृपी। बुद्धदेवकी विद्या। गोरोचना। कर्णकी बहिन। दुर्गा.

गौधार, (पु०) गोधाया अपत्यं आरक्। गोधाका पुत्र गिरगिट.

गौर, (पु०) गुड्+र नि० पिंगा रंग। पीली सरिसों। श्वेत सरसों। चन्द्रमा। धनूरा। विशुद्ध। बड़ा साफ। लालरंग.

गौरव, (न०) गुरोर्भावः अण्। गुरुत्व। बड़प्पन। सज्जनोंसे बड़ रहे होना आदि मान (इज्जत).

गौरी, (स्त्री०) गौर+ङीष्। गौरी। पार्वती। आठ वर्षकी अवस्थावाली (रज का अंकुर) रहित कन्या। हल्दी। गोरोचन। नदी। मञ्जीठ। तुलसी। सुवर्णकदली। आकाशमौली। [illegible] रागिणी.

गौरीशिखर, (न०) पर्वतीका तपस्यास्थान। पार्वतीके तप करनेकी जगह.

गौल्मिक, (न०) गुल्मे भवं गौल्मं ठञ्। झाड़ीकी भेंट। पुराना [illegible].

ग्रथ, [illegible]। [illegible]। [illegible]। गूथना। [illegible]। [illegible]। [illegible] शेर्। [illegible]। [illegible].

ग्रथित, (वि०) [illegible]। गुम्फित। गुथा हुआ। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

ग्रन्थ, (पु०) ग्रन्थ+घञ्। [illegible]। गूथना। धन। "करोंगे [illegible]"। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

ग्रन्थि, (पु०) ग्रन्थ+इन्। [illegible]। बांस आदिकी [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]।

ग्रन्थिच्छेद, (पु०) [illegible]। [illegible]।

ग्रन्थिपर्ण, (न०) [illegible]। [illegible]।

ग्रन्थिल, (वि०) [illegible]।

ग्रस, [illegible]।

ग्रसन, (न०) [illegible]।

ग्रस्त, [illegible]।

ग्रह, (पु०) ग्रह्+अच्। सूर्यादि नव। [illegible] अनुग्रह। हठसे पकड़ना। [illegible] दुःख देनेहारे पूतना आदि। चन्द्र और सूर्य [illegible]

ग्रहण, (न०) ग्रह्+भावादौ ल्युट्। स्वीकार। मानलेना। आदान। लेना। आदर। [illegible] सूरजका ग्रास। इन्द्रिय.

ग्रहणीहर, (न०) ग्रहणीं हरति। हृ+अच्। लौंग। ग्रहणी रोगको दूर करनेहारा (वि० [illegible]

ग्रहनायकः, (पु०) ग्रहाणां नायकः। ग्रहोंमें मुख्य सूर्य.

ग्रहपति, (पु०) ६ त० ग्रहोंका स्वामी। [illegible] सूर्य आदि".

ग्रहयाग, (पु०) ग्रहेभ्यो याग। ग्रहोंके [illegible] दूर करने वा पुष्टिके लिये ग्रहोंके होममें [illegible]

ग्रहराजः, (पु०) ग्रहाणां राजा+टच्। ग्रहोंमें [illegible]

ग्रहसंगमः, (पु०) ग्रहाणां संगमः। ग्रहोंका परस्पर मिलना.

ग्रहाधार, (पु०) ६ त०। ग्रहोंका आधार नक्षत्र (तारा).

ग्राम, (पु०) ग्रस्+मन्-आदन्तादेशः। [illegible] समूह। स्वरभेद। गांवका डेरा। [illegible] शूद्रोंकी बस्ती होवे है वैसा ग्रामोंका [illegible] है। ब्राह्मण आदि वर्णोंका वासस्थान। [illegible] करनेकी भूमि हो और जहां निवास करके [illegible]

ग्रामकण्टकः, (पु०) ग्रामस्य कण्टकः। गांव गांवको कष्ट पहुंचानेका कारण.

ग्रामकुक्कुटः, (पु०) ग्रामस्य कुक्कुटः। गांवका पालतुआ कुक्कुट.

ग्रामकुमार, (पु०) ग्रामस्य कुमारः। गांवका [illegible] [illegible]। गांवका लड़का

ग्रामगृहा, (स्त्री०) गृह्+कर्मणि कप्। [illegible] सेना, गांवमें गृहिन.

ग्रामज-जात, (वि०) ग्रामे जायते अथवा जात। उत्पन्न हुआ.

ग्रामणी, (पु०) ग्रामं नयति। नी+क्विप्। [illegible] [illegible] आगे [illegible] है। [illegible] [illegible]। [illegible] (वि०) [illegible]। [illegible] ([illegible])। [illegible] (स्त्री०).

ग्रामता, (स्त्री०) ग्रामाणां समूहः [illegible]। [illegible]

ग्रामदेवता, (स्त्री०) ग्रामस्य देवता। [illegible]

ग्रामद्रुमः, (पु०) ग्रामस्य द्रुम। एक [illegible] ([illegible]).

ग्रामधर्म, (पु०) ग्रामे (ग्राम्यः) धर्मः । गांवका धर्म । मैथुन । स्त्रीपुरुषका गुह्यकर विहार करना । "व्यवाय."

ग्रामयाजक, (पु०) १ त० । ग्रामके कई प्रकारके वर्णोंको यज्ञ करानेहारा नीच ब्राह्मण.

ग्रामाचारः, (पु०) ग्रामस्य आचारः । गांवका आचार (रसम-व्यवहार).

ग्रामाध्यक्षः, (पु०) ग्रामस्य अध्यक्षः । गांवका स्वामी (मालिक)

ग्रामान्तः, (पु०) ग्रामस्य अन्तः । गांवका किनारा । गांवके पासका स्थान.

ग्रामीन, (पु०) ग्रामे भवः खञ् । गांवका सुवर । कुत्ता । कौआ । गांवका सूअर । गांवमें उपजा (त्रि०).

ग्रामोपाध्यायः, (पु०) ग्रामस्य उपाध्यायः । गांवका पुरोहित अथवा पोथा.

ग्राम्य, (त्रि०) ग्रामे भवः य । गांवमें हुआ । प्राकृत । नीच । मूढ । गांवका । (ज्योतिषमें) मिथुन आदि राशिभेद । गालीको प्रकट करनेहारा भांड आदिका वचन.

ग्राम्यकर्मन्, (न०) ग्राम्यं कर्म । गांववासीका काम । इन्द्रियोंका सुख.

ग्राम्यधर्मः, (पु०) ग्राम्यः धर्मः–क० स० ग्रामवासीका कर्तव्य । विषयभोग.

ग्राम्यपशुः, (पु०) ग्राम्यः पशुः । गांवका पशु । पालित घरेलू पशु.

ग्राम्यबुद्धिः (त्रि०) ग्राम्या बुद्धिः यस्य । गांवमें निवास करनेवालेकी बुद्धिवाला । मूर्ख । अज्ञानी । बेसमझ.

ग्राम्यवल्लभा, (स्त्री०) ग्राम्याणां वल्लभा । गांव वासिओंकी प्यारी । वेश्या । कंजरी.

ग्राम्यसुखं, (न०) ग्राम्यं सुखं । गांववासीका सुख । इन्द्रियोंका सुख.

ग्राम्याश्वः, (पु०) ग्राम्यः अश्वः । गांवका घोडा । गर्दभ । खच्चर गधा.

ग्रावन्, (पु०) ग्रसते-ग्रस्+वन् । ग्रः । आवनति-वन्-बांदना । विद् । पत्थर । पर्वत । मेघ । बादल । दृढ । मजबूत (त्रि०).

ग्रास, (पु०) ग्रस्+घञ् । गोटमोल अन्नादिकी ग्राई (ग्रास) । इतना अन्न कि जिससे मुख भरजाय.

ग्राह, (पु०) ग्रह्+भावे घञ् । पकडना । ग्रास । लेना । "कर्तरि ण" । जलका जीव (तंदुआ वा संसार).

ग्राहक, (पु०) ग्रह्+ण्वुल् । राजपक्षी । सांप पकडनेवाला । लेनेवाला (त्रि०).

ग्राहिन्, (त्रि०) ग्रह्+णिन् । पकडनेवाला । इच्छा करनेवाला । खेंचनेवाला.

ग्राह्य, (त्रि०) ग्रह्+ण्यत् । लेनेके लायक । ग्रहणयोग्य । उपादेय । मानलेनेलायक । जानलेनलायक.

ग्रीवा, (स्त्री०) गृ+व-नि० । कंधरा । गला । गर्दन । कंठ.

ग्रीष्म, (पु०) ग्रस्+म-नि० । निदाघ । गरमी । पसीना । पसीनेको उपजानेहारी धूप आदि । जेठ हाडका महीना । गर्मीवाला (त्रि०).

ग्रुच, चोरीकरना । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ग्रोचति । अग्रुचत्-अग्रोचीत् । ग्रुचित्वा-ग्रुचा.

ग्रैव, (न०) ग्रीवायां भवं अण् । गलेमें हुआ । गलेका भूषण (जेवर).

ग्रैवेय, (न०) ग्रीवायां भवं ढञ् । ग्रीवाभूषण । गलेका अलंकार गलेका गहना । "ग्रैवेयकम्" स्वार्थे कन् । यही अर्थ.

ग्लस, भक्षण । खाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ग्लसते । अग्लसिष्ट । ग्लसित्वा-ग्लस्त्वा.

ग्लहू, आदानेपकडना वा जुआ० उभ० पक्षे भ्वा० सक० सेट् । ग्लाहयति-ते । अजग्लहत्-त । ग्लहति । अग्लहीत्.

ग्लह, (पु०) ग्लह्+अप । द्यूतादौ कृते पणे । जूवे आदिमें लगाया गया दाव वा शर्त । जूआ । द्यूत । पासा.

ग्लानि, (स्त्री०) ग्लै-हर्षक्षय । वीर्यक्षय । दिलका टूटना । खिन्न् । दिलकी घबराहट । थकना । हानि । नुकसान । चैन न होना । बीमारी.

ग्लास्नु, (त्रि०) ग्लै+स्नु । ग्लानियुक्त । थकाहुआ । घबरायाहुआ.

ग्लुच, चोरी करना और गति । भ्वा० पर० सक० सेट् । ग्लोचति । अग्लुचत्-अग्लोचीत् । वा वस्ता.

ग्लुञ्च, (चोरी करना और जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । क्त्वा वेट् । ग्लुञ्चति । अग्लुचत् । अग्लुञ्चीत्.

ग्लेपृ, देना । गरीबहोना । दुखीहोना । कांपना । हिलना । जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ग्लेपते । अग्लेपिष्ट । अजिग्लेपत्.

ग्लेवृ, सेवन-सेवा करना । पूजा करना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ग्लेवते । अग्लेविष्ट । अजिग्लेवत.

ग्लेषृ, अन्वेषण । तलाशकरना । ढूंढना । खोजना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ग्लेषते । अग्लेषिष्ट । अजग्लेषत,

ग्लै, हर्षक्षय । कष्टका अनुभव करना । थकजाना । घबराना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । ग्लायति । अग्लासीत्.

ग्लौ, (पु०) ग्लै+डौ । चन्द्र । चांद । कर्पूर । कापूर । पृथिवी.

घ

घ, (पु०) घट्+ड । घण्टा । घर्घर शब्द । (समासमें शब्दके पीछे आता है जैसे पाणिघ, राजघ आदि) मारना । ताडन करना । नाश करना) (त्रि०)

घग्घ्, हंसना । भ्वा० पर० अक० सेट् । घग्घति । अघग्घीत्.

घट्, चेष्टा । कामकरना । हरकत करना । यत्न करना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । घटादि । घटते । अघटिष्ट । घटयति.

घट्, शब्द करना । चुरा० उभ० अक० सेट् । इदित् । घण्टयति-ते.

घट, (पु०) घट्+अच् । कलस । घड़ा । जलकी घड़ी । कुंभराशिका चिह्न । बीस द्रोणका परिमाण.

घटक, (त्रि०) घटयति (अविशिष्टतया निष्पादयति) घट्+णिच्+ण्वुल् । साथ रहनेसे बनानेहारा । वाक्य आदिके बीचमें पड़नेहारा पदार्थ । योजक । जोड़नेहारा । अपने लिये यत्न करनेहारा । पूरा करनेहारा । बीचमें सिलाई बनानेहारा.

घटकारः-कृत्, (पु०) घटं करोति । घड़ा बनानेवाला । कुम्हार । कुम्भकार.

घटग्रहः, (पु०) घटं गृह्णाति । घड़ा लानेवाला । पानी भरनेवाला । भिश्ती.

घटना, (स्त्री०) चु० घट्+युच् । संहतकरण । इकट्ठा करना । जोड़ना । मेलना । हाथियोंका समूह । रचना । यत्न । बनाना.

घटस्थापनं, (न०) घटस्य स्थापनं । किसी देवताकी प्रतिष्ठाका चिह्न । घड़ेका स्थापन करना.

घटा, (स्त्री०) घट्+अ । यत्न । कोशिश । सभा । समूह । हाथियोंका झुण्ड । बादलोंकी फैलावट (आडम्बर).

घटिका, (स्त्री०) साठ पलोंका दण्डरूप काल । घड़ी । "घटते विहितकार्यकरणाय" घट्+णिच्+ण्वुल् । विहित (वेदमें कहागया) कार्य करनेके लिये जो आताता है । दो दण्ड । मुहूर्तरूप काल अर्थात् दोघड़ी । "अल्पो घटः कन्" । छोटा घड़ा "ह्रस्वमें कन्" । नितम्ब । चूतड़.

घटीयन्त्र, (न०) ६ त० । कूएमेंसे पानी निकालनेकी कला । अरघट्ट । माळ । रहट । डोलना । मूत्रकीरोगभेद.

घटोत्कच, (पु०) एक राक्षस । हिडिम्बा राक्षसीके पेटमें भीमसेनने उत्पन्न कियागया । यह बड़ा पराक्रमी था और कुरुक्षेत्रके युद्धमें पाण्डवोंकी ओरसे लड़ा परन्तु कर्णने इन्द्रसे प्राप्तकीगई शक्ति (बरछी) से मार दिया.

घटोद्भवः, (पु०) घटात् उद्भवति-उप० स० घटजः घटात् जायते । जन्-ड-घट योनिः । घटः योनिः यस्य-ब० स० संभवः+घटात् संभवति-उप० स० । घड़ेसे उत्पन्न होता है । अगस्त्य ऋषि.

घटोध्नी, (स्त्री०) घट इव ऊधः यस्याः । जिसके थन इतना घड़ेके समान पूरे होरहे हैं.

घट्, चलन । हिलना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । घट्टते । अघट्टिष्ट.

घट्ट, हिलना-चुरा० । उभ० सक० सेट् । घट्टयति । घट्टन-न.

घट्ट, (पु०) घट्टते+अच् । घञ् । नहानेके लिये इनके स्थान । घाट । शुल्क (फीस-महसूल) लेनेका स्थान । भावे घञ् । हिलाना.

घट्टकुटी, (स्त्री०) घट्टस्य कुटी-ष० त० । शुल्क (महसूल) लेनेकी कुटिया । महसूलकी चौकी.

घट्टित, (त्रि०) घट्+क्त । निर्मित । बनाहुआ । हिलायागया । रंगा गया । घोटागया.

घण, दीप्ति-चमकना । तना० उभ० सक० सेट् । घणोति । घणुते । अघाणीत्-अघणीत् । अघणिष्ट । घणित.

घण्ट्, बोलना । चमकना । भ्वा०-चुरा० पर० । घण्टति-घण्टयति

घण्टा, (घंट-अच्) घंटी । कांसी आदिका बना हुआ एक प्रकारका बाजा । अतिबला । नागबला । इसके वृक्षभेद.

घण्टानादः, (पु०) घण्टायाः नादः । घण्टाका शब्द । घंटीकी आवाज.

घण्टापथ, (पु०) घंटोपलक्षितः । घंटेसे पहिचाना गया मार्ग (रास्ता) । घंटेवालों (हाथी आदि) के चलने योग्य रास्ता । राह् । नगरका प्रधानमार्ग । दुतर्फी बड़ी सड़क.

घण्टाशब्दः, (पु०) घण्टायाः शब्दः । घंटीकी आवाज

घण्टिका, (स्त्री०) क्षुद्रा घंटा । अल्पार्थे कन् । छोटी घंटी । इसीके समान स्वरूप होनेसे तालुकी जीभ । घंटी.

घन, (पु०) हन्+अप् । घनादेशः । मेघ । बादल । मोथा । प्रवाह । दृढ़ । मजबूत । कठिन । ठोस । देहका शरीर । लोहेका मुद्गर । कफ । अभ्रक । बराबरके तीन अंकोंको आपसमें गुणना । जैसे चारका घन ४ और चारका ६४ है । निविड़ । गाढ़ा । मढ़ुआ । इस मध्यम नाच । लोहा (न०).

घनकफ, (पु०) घनस्य (मेघस्य) कफ इव । बर्फ बादलकी कफ है । बादलके पत्थर । गड़े । ओले.

घनच्छद, (पु०) घन. (निबिडः) छदः यस्य । निबिड़ गाढ़े पत्तेवाला या बादलके पड़देवाला.

घनध्वनिः, (पु०) घनस्य ध्वनिः । मेघगर्जना । बादलकी आवाज । मेघशब्द.

घनवासि, (पु०) ६ त० । धूम । धूआं । बादलका कारण होनेसे इसे नामिभिन्न प्राप्त हुआ । पर "धूमज्योतिः सलिलमरुतां" इस प्रकार मेघदूतमें धूमको भी कारण कहा है.

घनपदवी, (स्त्री०) ६ त० । बादलोंका मार्ग । आकाश (इसे मेघका आधार होनेसे ऐसा कहा है क्योंकि यहीं बादल घूमते हैं).

घनरस, (पु०) घनस्य रसः (निष्यन्दः)। बादलका रस। पानी। गाढा रस। कर्पूर। कपूर। पीलुपर्णी (पु०) गाढे रसवाला (त्रि०).

घनपट्टी, (स्त्री०) घनस्य पट्टीव। मानों बादलकी बेल है। बिजली.

घनश्याम, (त्रि०) घन इव श्यामः—उपमित–स०। मेघके समान श्याम। साँवला। बड़ा काला।—मः (पु०) श्रीराम। श्रीकृष्ण.

घनसार, (पु०) घनस्य सार इव शीतलत्वात्। ठंडा होनेसे मानों बादलका सार है। कपूर। पारद। पारा। जल। पानी। एक प्रकारका वृक्ष.

घनागम, (पु०) घनानां (मेघानां) आगमः यत्र= जिस समय बादल आजाय। वर्षाका काल। पानी बरसनेका समय (ऋतु).

घनागमः–ोदयः, (पु०) घनस्य आगमः अथवा उदयः। मेघ (बादल) का आना। वर्षाऋतु। वर्षातका समय.

घनाघन, (पु०) हन्+अच्–नि० इन्द्र। बरसनेवाला बादल। मतवाला हाथी। अन्योन्यघटन। एक दूसरेको धकेलना। निरन्तर। सदा। सदा मारनेवाला (त्रि०).

घनात्यय, (पु०) घनानां अत्ययः (नाशः) यत्र काले। जिस समय बादल छिपजाय। शरत्काल। शरद और वसन्त। शिशिर.

घनामय, (पु०) घनः (दृढः) आमयः यस्मात् ५ ब०। जिससे दृढ (पक्का) रोग होता है। खजूरका वृक्ष। (इरम)

घनाम्बु, (न०) घनस्य अम्बु—ष० त०। मेघजल। बादलका पानी.

घनोपल, (पु०) ६ त०। घनस्य उपल ██। कठिन होनेसे मानो बादलका पत्थर है। करक। शिल। गड़ा। ओला.

घम्ब्, जाना। हिलना। भ्वा० पर० सक० सेट्। घम्बति। अघम्बीत्

घरट्ट, (पु०) घृ+अच्। परः अट्टो यस्मात् ५ ब० शक० जाँता। घराट.

घर्घर, (पु०) पुनः पुनः घरति। घृ यङ्लुक् अच्। चलते हुए पानीका शब्द (आवाज)। घडानद। दर्वाजा। एकप्रकारकी स्वर (आवाज).

घर्घरिका, (स्त्री०) घर्घर+अल्पार्थे ठन्। छोटी घण्टी। एक बाजा। भुनेहुए धान। एक नद (पु०).

घर्म, (पु०) घृ सींचना+मक् नि० गुण। श्रमसे पीडित हुएके अंगोंसे बहरहा पानी। पसीना। धूप। गरमी.

घर्व्, जाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। घर्वति। अघर्वीत्.

घर्मान्तः, (पु०) घर्मस्य अन्तः। गरमीका अन्त। वर्षा ऋतु.

घर्मांशुः, (पु०) घर्मा अंशवः यस्य ब० स०। उष्ण किरणोंवाला। सूर्य.

घर्मोदकम्, (न०) घर्मस्य उदकं। पसीनेका पानी। पसीना.

घर्षणी, (स्त्री०) घृष्+कर्मणि ल्युट् ङीप्। हरिद्रा। हल्दी.

घस, खाना। भ्वा० पर० सक० अनिट्। घसति। अघसत्। घस्ता.

घस्मर, (त्रि०) घस्+क्मरच्। भक्षणशील। खानेवाला। खाऊ.

घस्र, (पु०) घस्+क्रन्। दिन। हिंस्र। मारनेवाला (त्रि०).

घाण्टिक (पु०) घण्टया चरति ठक्। घंटा लेकर फिरता है। राजाओंको जगानेके लिये घंटा बजायकर स्तुति पढनेहारा। धतूरा। घंटा बजानेहारा (त्रि०).

घात, (पु०) हन्+घञ्। प्रहार। चोट। मारना। अंकको पूरा करना। गुणना। "करणे घञ्" बाण। तीर.

घातिन्, (त्रि०) हन्+ताच्छील्यार्थे णिनि। घातुका मारनेके स्वभाववाला.

घातुक, (त्रि०) हन्+उकञ्। हिंस्र। मारनेवाला। क्रूर। निर्दय। बेरहम.

घार, (पु०) घृ–सींचना–घञ्। सेचन। सींचना। छिडकना.

घार्तिक, (पु०) घृतेन निर्मितः तस्य विकारो वा ठक्। घीका बनाहुआ। एकप्रकारका खाना। घ्यौर। घीसे भराहुआ.

घास, (पु०) घस्+कर्मणि घञ्। गौआदिके खाने योग्य तृण आदि.

घासिः (घस्+इण्) अग्नि। घास.

घु, शब्दकरना। भ्वा० आत्म० अक० अनिट्। घवते। अघोष्ट.

घुट्, लौटना। पीछे हटना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्। घुटते। अघुटत। अघोटि। अघोटिष्ट.

घुट्, सामनेसे चोटकरना। उलटकर मारना। तुदा० पर० सक० सेट्। घुटति। अघुटीत्। जुघोट.

घुट, (पु०) घुट+अच्। चरणग्रन्थि। पांवकी गांठ। गिट्टा (गुल्फ)। एडी.

घुण्, घूमना–लेना। तुदा० उभ० सक० सेट्। घुणति। अघोणीत्। घुणते। अघोणिष्ट.

घुण, (पु०) घुण्+क। अपने नामसे प्रसिद्ध लकडीको खानेहारा कीडा.

घुर्, शब्द करना। बडी आवाज करना। गुडगुडाना। तुदा० पर० अक० सेट्। घुरति। अघोरीत्.

घुर्घुर, (पु०) जो "घुर" इस प्रकार शब्द निकालता है। घुर्घुरिया कीडा। सूअरकी आवाज.

घुष्, स्तुति (तारीफ) करना-आविष्करण। जाहिर (प्रगट) करना। चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट्। घोषयति-ते। घोषति। अजुघुषत्-त। अघुषत्.

घुसृण, (न०) घुस्+क्सनच्। कुङ्कुम। केसर.

घूक, (पु०) "घु" इति कायति। कै+क। "घु" ऐसा चिल्लाता है। उल्लू। पेचक.

घूर्, मारना-सक०। पुराना होना। अक० दिवा० आत्म० सेट्। घूर्यते। अघूरिष्ट। घूर्णः.

घूर्ण्, घूमना। तुदा० उभ० सक० सेट्। घूर्णति-ते। अघूर्णीत्। अघूर्णिष्ट। घूर्णितः.

घृ, सींचना (सेक) भ्वा० पर० सक० अनिट्। घरति। अघार्षीत्.

घृण्, चमकना। तना० उभ० अक० सेट्। घृणोति-घृणुते.

घृणा, (स्त्री०) घृ+नक्। कारुण्य। दया। निंदा। घिन.

घृणि, (पु०) घृ+नि० नि० किरण। लाट। तरङ्ग। ज्वर। सूर्य.

घृत, (न०) घृ-चमकना। भावे क्त। चमक। "कर्तरि क्त" चमकाहुआ (त्रि०) सींचनेके अर्थमें "कर्तरि क्त" पानी। पकाहुआ मक्खन। घी.

घृतकुमारी, (स्त्री०) घृतप्रधाना कुमारी। एक औषधी (दवाई)। इसका पत्ता मलनेपर घीसीनाई बहताहै। घीमीकंद.

घृताची, (स्त्री०) एक अप्सरा। रात। चमकनेवाली। घीवाली.

घृष्, घसना-रगड़ना। सक० प्रगम होना। अक० भ्वा० आत्म० सेट्। घर्षते। अघर्षिष्ट.

घृष्टि, (पु०) घृष्+क्तिच्। वराह। सूअर। "क्तिन्" घिसना। रगड़ना.

घोट (क), (पु०) घुट्+अच्-ण्वुल् वा। अश्व। घोड़ा.

घोटकारि, (पु०) ६ त०। महिष। भैंसा (घोड़ेका शत्रु).

घोणा, (स्त्री०) घुण्+अच्। घोड़ेकी नासिका। नासा (नथनी).

घोणिन्, (पु०) घोणा नासा अस्ति अस्य इति। (लंबी) नासावाला। सूअर (इसकी लंबी नासा होती है).

घोर, (पु०) घुर्+अच्। शिव। एक ऋषि। (सांख्यमें, रजोगुणतमोगुण) अशान्तमोहादि विशेष धर्म। विष (जहर) (न०) (शब्द) भयानक। दुर्गम (त्रि०).

घोरवासन, (पु०) घोरं वासनं (शब्दः) अस्य। डरावनी आवाजवाला। गीदड़। सियार.

घोल, (पु०) (न०) घुड्+कर्मणि घञ्। कढ़ीव। तक्र। दही। छाछ। मथाहुआ दही। मट्ठा.

घोष, (पु०) घोषन्ति गावः अत्र। घुष्+अधिकरणे घञ्। जहां गौएं शब्द करती हैं। आभीरपल्ली। अहीरोंकी बस्ती। "भावे घञ्" शब्द। बादलकी आवाज। "कर्तरि अच्" एक प्रकारकी लता। (व्याकरणमें) बाह्यप्रयत्न भेद। कांसी (न०).

घोषकः, (पु०) घोष-स्वार्थे क। चिल्लानेवाला। घोषणा-ढिंढोरा करनेवाला। ढंढोरा देनेवाला.

घोषणा, (स्त्री०) घुष्+णिच्-युच्। लोकमें प्रसिद्ध करनेके लिये ऊंचे शब्द करना। डौंडी। मुनादी। ढंढोरा.

घ्रा, गंधलेना। भ्वा० पर० अक० लेना-सक० अनिट्। जिघ्रति। अघ्रासीत्। घ्राणः। घ्रातः.

घ्राण, (त्रि०) घ्रा-कर्मणि+क्त। सूंघा गया।-णः (पु०) णं-(न०) गन्ध-सूंघनेकी क्रिया। नासिका+नाक.

घ्राणचक्षुस्, (त्रि०) घ्राणं चक्षुः यस्य। घ्राण (नाक) से देखनेवाला। अंधा। जो मार्गमें सूंघता जाता है.

घ्राणतर्पण, (पु०) घ्राणं (नासिकां) तर्पयति। तृप्+णिच्+ल्यु। जो नासिकाको तृप्त करता है। सुगन्धि। सुगन्ध.

घ्राणपाकः, (पु०) घ्राणस्य पाकः। नासिका (नाक) की व्याधि.

घ्रातव्य, (त्रि०) घ्रा+तव्य। सूंघनेलायक.

घ्रेय, (त्रि०) घ्रा-यत्। सूंघनेके योग्य। सूंघनेलायक.

ङ.

(इस अक्षरका बोलचालमें आनेवाला कोई शब्द नहीं)

ङ, (पु०) डु+ड। विषयकी इच्छा। भोगकी वा इच्छा। शिवजीका नाम.

ङु, शब्द करना। भ्वा० आत्म० अक० अनिट्। ङवते। अङोष्ट.

च.

च, (अव्य०) चि-ड। अन्वाचय (एककी प्रधानतासे दूसरेको साथ कहना) जैसे "गांवको जा और बकरीको ला" यहां गांवमें जानाहि मुख्य और बकरीका लाना आनुषङ्गिक (उसके साथ) है। समुच्चय (एक दूसरेकी अपेक्षाके बिना बहुतोंका एक काम आदिमें अन्वय) जैसे "पिता और पुत्र गांवको जाता है" यहां एक एक का काममें पिताकी नाईं पुत्रका भी संबंध है। इतरेतरयोग (आपसमें अपेक्षावालोंका एक कर्ममें अन्वय) जैसे "पिता और पुत्र जाते हैं" यहां दोनोंहीका जानेरूप कर्ममें आपसमें अपेक्षासहित अन्वय है। समाहार (मिलेहुओंका अन्वय) जैसे हाथ और पांवको बजाता है, यहां हाथ आदि मिलेहुओंकाही अन्वय है। और। निश्चय। पादपूरण। चन्द्रमा। कछुआ। चोर (पु०)

,दीप्ति। रजना। तृप्तहोना। प्रसन्नहोना। सक० भ्वा० उभ०
द। चकति ते। अचकीत्-अचाकीत्। अचकिष्ट.

सृ, दीप्ति। प्रकाश होना। चमकना। अदा० पर० अक०
द्। चकास्ति। अचकासीत्। अचचकासत्.

त, (न०) चक्+भावे क्त। भय। डरना। "चकि-
त्ष"। डराहुआ। हैरानहुआ (त्रि०) सोलह अक्षरके
ादका एक छन्द (स्त्री०).

र, (पु०) चक्-तृप्त होना+ओरन्। अपने नामका
क्षी। (कहते हैं कि चन्द्रमाकी किरणोंका पान करता है).

, पीड़ित होना। धर्षि। तकलीफ उठाना। चुरा० उभ०
क० सेट्। चक्रयति ते। अचचक्रत्-त.

ट, (त्रि०) चक्र-अलन्। गोल। घेरेदार.

, (पु०) क्रियते अनेन। कृ+घञर्थे क। नि० द्वित्वम्।
का पक्षी चकर (पहिया) रथाङ्ग। चाक। सेनाके
ीत। सबके साथ राज। एक प्रकारका पाखण्ड। कुम्हा-
का साधन (चक्कर)। एक प्रकारका अस्त्र। जलावर्त।
भंवरपेर। (तन्त्रमें) मूलाधार आदिमें रहनेवाले छ पद्म।
िवताकी पूजा करनेके यन्त्र। (कला) एक प्रकारकी काव्य-
चना। तेलकी घानी। समूह। गांवका समूह। पुल-
का भाग। नदीकी गूंज। (इसके भेदोंकी इसका लिङ्ग
ोता है).

क, (पु०) चक्रं इव कायति। कै+क। जिसकी पहि-
ेकीसी आवाज निकलती है। (न्यायशास्त्रमें) एक प्रका-
का तर्क (दलील)। एक दोष.

चारिन्, (पु०) चक्रेण चरति-अण० ता०। चक्र (पहिये)
ी चलना है। रथ.

धर, (पु०) चक्रं (आयुधं) (जनमण्डलं वा)
ारयति। धृ+अच्। एक प्रकारके अस्त्र (हथियार) का
जनसमूहको पालनेहारा। विष्णु। सांप। सर्प। राजा.

धारा, (स्त्री०) चक्रस्य धारा (अर्ध)। पहियेकी
ोक। पहिये या चक्रके आगे जो एकभागमें तीक्ष्णता
(तेजी) होती है.

नदी, (स्त्री०) चक्रं इव चलती नदी। चक्रकी भांति
घूमती हुई बहनेवाली नदी। गण्डकी नदी.

नामन्, (पु०) चक्रं हरि नाम यस्य। चक्रके नाम-
वाला। चकवा पक्षी.

नायक, (पु०) चक्रस्य=सेनाके नायकः। सेना-
समूहके चलानेवाला। सेनापति। सेनान्य.

पाणि, (पु०) चक्रं (प्रहरणं) पाणौ यस्य। जिसके
हाथमें चक्रनामी अस्त्र (हथियार) है। विष्णु.

पाद, (पु०) चक्रं पाद इव यस्य। पहिया जिसको जिसका
पांव है। रथ। गाड़ी। "चक्रं इव पाद यस्य"। जिसका
पैर चक्रके सदृश है। हाथी। हस्ती.

चक्रपुष्करिणी, (स्त्री०) हरिचक्रेण निर्मिता पुष्करिणी।
हरिके चक्रसे खोदीगई तलैया। काशीमें मणिकर्णिका
चक्रतीर्थ.

चक्रबन्धु, (पु०) चक्रयोः बन्धुः (इव)। चकवोंका
(मेल करानेसे) मानो बंधु है। सूर्य। (जिसकेही स-
मय वे मिल जाते हैं)

चक्रभृत्, (पु०) चक्रं बिभर्ति-भृ+क्विप्। जिसके हाथमें
चक्र है। विष्णु

चक्रभेदिनी, (स्त्री०) चक्रं भिनत्ति (चकवोंको जुदेकरती)
भिद्+णिनि। जो चकवोंको आपसमें वियोग कराये।
रात्रि। रात। (रातको वे जुदे जाते हैं यह लोकमें
प्रसिद्ध है).

चक्रभ्रम, (पु०) चक्रं इव भ्रमति+अच्। पहियेकी तरह
घूमनेहारा। कुम्हारकी चाकीगोलीकी कल। पीसनेकी चक्की

चक्रवर्तिन्, (पु०) चक्रं (भूमण्डले) वर्तितुं, चक्र (सैन्य
चक्र) वा (सर्वभूमौ) वर्तयितुं शील अस्य। वृत्+णिनि
वा णिनि। जो पृथिवीमण्डलपर रहता है या जिसके रथ
का पहिया पृथिवीपर घूमनेहारा। समुद्रपर्यन्त पृथिवीका
स्वामी। महाराजाधिराज। सारी पृथिवीका बादशाह।
चकवेके समान घूमनेहारा। (त्रि०) श्रेष्ठ। मुख्य।
सबसे आगे। बथुआसाग (स्त्री०)

चक्रवाक, (पु०) चक्रशब्देन उच्यते। वच्+कर्मणि
"चर्कति" घञ्। जो "चक्र" शब्दसे बोला जाता है।
अपने नामका पक्षी

चक्रवाट-ल, (पु०) चक्रं इव वटते वेष्टयति अच्। जो
चक्रके समान घेर लेता है। पर्वतकी चोटी। नगर (क०).

चक्रवृद्धि, (स्त्री०) ब्याजकी वृद्धि। सूदका सूद।
सूदका सूद। सूददरसूद

चक्रव्यूह, (पु०) चक्रं इव व्यूहः। लड़ाईके लिये चक्रके
आकार गोल रचित सेनाको रचना

चक्रहस्त, (पु०) चक्रं हस्ते यस्य-ब० ब्री०। जिसके हाथमें
चक्र है। विष्णु

चक्रा, (स्त्री०) चक्र-टाप्। चक्रतीर्थ। चक्रवाकी.

चक्राङ्ग, (पु०) चक्रस्य अङ्ग (अवयवं) इव (अङ्ग)
यस्य। जिसके पहियेके समान [illegible] है। हंस।
"चक्रे अङ्ग यस्य" पहिया जिसका अङ्ग है। रथ। गाड़ी.

चक्रिन्, (पु०) चक्र+इनि अस्त्यर्थे। चक्र (पहिया) [illegible]
वाला। विष्णु। सर्प। चकवा। कुम्हार। कुलाल।
तेली। एक प्रकारका [illegible]। [illegible] राजा। चक्रवर्ती
(त्रि०).

चक्षिवस्, (पु०) [illegible]
[illegible]
[illegible]

चक्रेश्वर, (पु०) चक्रस्य ईश्वरः-ष०त० । सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका ईश्वर (स्वामी) । विष्णुका नाम । किसी प्रदेशका अधिकारी । जिलाहाकिम.

चक्रोपजीविन्, (पु०) चक्रेण उपजीवति । तेलके चक्र (कोल्हू) से जीता है । तेल निकालनेवाली । तेली आदमी.

चक्ष्, कहना । छोडना । ग्याल करना । अदा० आत्म० अक० सेट् । चष्टे । अख्यत-अख्यत् । (भाष्यके मतमें) अक्शासीत् । अक्शात । (छोडना इस अर्थमें तो) समचक्षिष्ट.

चक्षण, (न०) चक्ष्+ल्युट्-नस्यादेशः । कहना । बोलना । भूख बढानेके लिये एक प्रकारकी चटनी.

चक्षुस्, (न०) चक्ष्+करणे उसि । देखना । आंख । नजर । प्रकाश.

चक्षुश्रवस्, (पु०) चक्षुषा शृणोति । श्रु+असुन् । चक्षुरेव श्रवः कर्णो यस्य वा । आंखसे सुनता है । जिसकी आंखही कान है । सर्प । सांप.

चक्षुष्य, (पु०) चक्षुषे हितः यत् । नेत्रके लिये हितकारी । केतक (केवडा) । पुण्डरीकवृक्ष । सुहांजना । सुरमा । कज्जल । आंखका उपकारी (त्रि०) कजरारी । वनकुलत्थिका (स्त्री०).

चङ्क्रमण, (न०) क्रम्+यङ्+ल्युट् । बारबार घूमना । बहुत घूमना । इधर घूमना । तिरछे घूमना.

चञ्चरी, (स्त्री०) चञ्-जाना+यङ्-तं राति । रा+क । रको ल होता है । ङीप् । भ्रमरी । भौरी । तिन्तिडीवृक्ष । "चञ्चरीक" यही अर्थ.

चञ्चल, (पु०) चञ्+अलच् । तं लाति । ला+क । रको ल । कामुक । व्यभिचारी । विषयी और वायु । चपल और अस्थिर (त्रि०) बिजली और लक्ष्मी (स्त्री०).

चञ्च्, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चञ्चति । अचञ्चीत्.

चञ्चलदल-पत्रः, (पु०) चञ्चलानि दलानि यस्य । चंचल पत्तोंवाला अश्वत्थवृक्ष । पीपलका वृक्ष.

चञ्चलचित्तम्, (त्रि०) चञ्चलं चित्तं यस्य । चंचलचित्तवाला । अस्थिरमनवाला.

चञ्चा, (स्त्री०) चञ्+अच् । कट । चटाई । चांची । तिनकोंका बनाहुआ पुरुष । घासकी गुडिया । तिनकोंकी पुतली.

चञ्चु, (पु०) "चञ्+उ । अत वा ऊङ् इत्येके" चञ्चू । चोंच (पक्षियोंकी).

चञ्चुपुट, (पु०) बंद की गई पक्षीकी चोंच.

चट्, मारना । तोडना । फाडना । छांटना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चाटयति-ते । अचीचटत्-त.

चटक, (पु०) चटति (भिनत्ति) धान्यादि...
धान्य आदिको तोडडालती है । चिडिया । "...
चटकः । चटकिका (स्त्री०).

चटकाशिरस्, (पु०) चटकायाः शिर इ...
शिरकी नाई । पिप्पलीमूल । मद्य.

चटु, (पु०) चट्+उ । पियारा वचन । ...
आसन । उदर । पेट.

चटुल, (त्रि०) चट्+उलच् । चपल । सु...
टी (स्त्री०).

चड्, कोप । क्रोध करना । खफाहोना । हरि...
अक० सेट् । चाडयति-ते । अचचडत्-त.

चण, जाना । मारना । शब्दकरना और देना...
सक० सेट् । चणति । अचाणीत्-अचणीत्...
चाणयति । वा घटादि.

चणक, (पु०) चण्-देना+कुन् । हस्तभेद...
छोले चने । एक मुनिका नाम जिसके ...
मुनि हुआ.

चण्ड, (पु०) चडि-कोप+अण् । तिन्तिडी ...
दरख्त । यमके दूत और एक दैत्य । टी...
(न०) तेजीवाला और गुस्सेवाला (त्रि०) । "...
चण्डी, चण्डिका.

चण्डातक, (पु० न०) चण्डा (कोपना) ...
ण्वुल् । सुन्दरस्त्रियोंका आधे ऊरुओं (पट्टों) ...
छोटा कोट.

चण्डाल, (पु०) चडि+आलच् । अपनी ...
शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न कियागया संकीर्ण (मि...

चण्डांशु, (पु०) चण्डाः (तीव्राः) अंशवः ...
सकी किरणें तेज हों । सूर्य.

चण्डी, (स्त्री०) चडि+अच्+ङीप् । कोप...
देवी । उसीके माहात्म्यको कहनेसे सप्त...
स्तोत्रको चण्डी कहते हैं.

चण्डीश्वरः, (पु०) चण्ड्याः ईश्वरः । च...
(पार्वती) का ईश्वर । शिव.

चण्डुः, (पु०) चण्ड्+उन् । मूषक । मूसा । छो...

चत्, मांगना । जाना । भ्वा० उभ० द्विक० सेट् ।...
अचेतीत् । अचतिट.

चतुःशाला, (स्त्री०) चतसः शाला यत्र । ...
सामने स्थित होरहे चार घरोंवाला मन्दिर । चौ...

चतुर, (त्रि०) ब० चत्+उरन् । चारकी सं...
संख्यावाला । "त्रियां" चतसः । "नपुंसके" ...

चतुर, (पु०) चत्+उरच् । हस्तिशाला । ...
काममें कुशल । दक्ष । आंखोंके सामने । ...
(त्रि०).

रङ्ग, (न०) चत्वारि अंगानि यस्य । जिसके चार अंग हों । हाथी, घोड़ा, गाड़ी, पैदलरूप चार अंगोंवाली सेना । लाल, हरा, पीला और काले चार सेनाके समान खेलके साधन जिसके हों । शतरंज । चौपड़की खेल.

रन्ता, (स्त्री०) चत्वारः अन्ताः यस्याः–ब० स० । चार अन्तवारी । पृथिवी.

रशीति, (त्रि०) चतुरधिकः अशीतितमः । चुरा- रेसवां । चार ऊपर अस्सीवां.

रशीति, (स्त्री०) चतुरधिका अशीतिः । चुरासीकी संख्या.

रश्र–स्र, (त्रि०) चतस्रः अश्रयः=कोणाः यस्य । चार कोनवाला.

रस्र, (त्रि०) चतस्रः अश्रयः=कोणा यस्य । नि० । चतुष्कोण । चौकोना । चार कोनवाला । (ज्योतिषमें) लग्नसे चौथा और आठवां स्थान । "चतुरस्र" भी होताहै.

रानन, (पु०) चत्वारि आननानि यस्य । जिसके चार मुख हों । ब्रह्मा । "चतुर्मुख" आदि इसी अर्थमें होते हैं.

र्गुण, (त्रि०) चतुरावृत्ताः गुणाः यस्य । चारबार गुणा हुआ सोलहकी संख्या.

र्थ, (त्रि०) चतुर्णां पूरणः । जिससे चारकी संख्या पूर्ण (भर) होतीहै इस प्रकारका तुरीय (चौथा).

र्थांश, चतुर्थोऽशः । चार भागोंमेंसे एक भाग । चौथा.

र्थी, (स्त्री०) चन्द्रमाके पक्षका चौथा दिन । चौथी तिथि । (व्याकरणमें) के भ्यां भ्यस् ये तीनों प्रत्यय.

र्थ, (त्रि०)–र्थी । (स्त्री०) चतुर्णां पूरणः–डट् । चारोंको पूरा करनेवाला । चौथा । वा चौथी ।–र्थः (पु०) किसी श्रेणीका चौथा अक्षर ।–र्थं (न०) चौथा भाग.

तुर्थभक्त, (त्रि०) चतुर्थं भक्तं यस्य । चौथा भोजन कर- नेवाला । चौथीबार खानेवाला.

तुर्थभाज्, (त्रि०) चतुर्थं भजति–भज्+ण्वि । प्रत्येक आय (आमदन) का चौथा भाग लेनेवाला (प्रजासे) राजा.

तुर्थांशः, (त्रि०) चतुर्थः अंशः यस्य । चौथे अंश (हिस्से)का भागी । चौथा हिस्सा लेनेवाला ।–शः (पु०) चौथा भाग । चतुर्थांश.

तुर्थाश्रमः, (पु०) चतुर्थः आश्रमः यस्य । चौथे आश्रम (संन्यास)वाला ब्राह्मण.

तुर्थीकर्मन्, (न०) चतुर्थ्यां कर्म । विवाहसे चौथी रात- पर कर्तव्य कर्म (रीतरस्म).

तुर्दन्त, (पु०) चत्वारो दन्ता अस्य । जिसके चार दंत हों । ऐरावत । इन्द्रगज । इन्द्रजीका हाथी.

चतुर्दशन्, (त्रि०) ब० व० । चतुरधिका दश । चार ऊपर दश । चौदहकी संख्या (गिनती) । "तस्य पूरणे डट्"–चतुर्दशः (चौदवां) । "स्त्रियां" चतुर्दशी । चौदवीं तिथि.

चतुर्दिशं, (अव्य०) चतसृणां दिशां समाहारः–समा०द्वं० । चार दिशाओंका समूह.

चतुर्द्वार, (अव्य०) चत्वारि द्वाराणि यस्य । चार द्वार (दर्वाजों)वाला (घरआदि).

चतुर्धा, (अव्य०) प्रकारे धा प्रत्ययः । चार प्रकारसे । चार तरहसे.

चतुर्धा, (अव्य०) चतु प्रकार+धाच् । चार प्रकार (तरह) से.

चतुर्बाहुः, (पु०) चत्वारः बाहवः यस्य । चार हाथोंका । चार भुजावाला । विष्णु.

चतुर्भद्र, (अव्य०) चतुर्णां भद्राणां समूहः–समा० द्वं० । चार मानवजीवनके कल्याण (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.)

चतुर्भद्र, (न०) चत्वारि भद्राणि । धर्म, अर्थ, काम, मो- क्षरूप चारों इकट्ठे हुए कल्यान । मिलेहुए धर्म आदि चार.

चतुर्भुज, (पु०) चत्वारो भुजा (हस्ताः) अस्य । जिस- के चार हाथ हों । विष्णु.

चतुर्मुख, (पु०) चत्वारि मुखानि यस्य । चार मुखोंवाला । ब्रह्मा.

चतुर्युग, (न०) चतुर्णां युगानां समाहारः । सत्य, त्रेता, द्वापर और कलिरूप चारों युग । "विज्ञेयं तच्चतुर्युगं" इति मनुः.

चतुर्वर्ग, (पु०) चतुर्णां वर्गः (समुदाय.) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष समूह । चार प्रकारका पुरुषका अर्थ.

चतुर्वर्ग, (पु०) चत्वारः वर्गाः । मानव जीवनके चार समूह (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष).

चतुर्वर्णः, (पु०) चत्वारो वर्णाः येषु ब०स० । हिन्दुओंके चार वर्ण वा चार जातिएं अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र.

चतुर्वार्षिका, (स्त्री०) चत्वारि वर्षाणि वयो यस्याः (गोः) इत्यर्थः । चार वर्ष अवस्थावाली गौ । चार वर्षकी गौ.

चतुर्विद्य, (पु०) चतस्रो विद्याः (वेदज्ञानरूपाः) यस्य । चार वेदोंके जाननेहारा । चारों विद्यावाला भी होताहै.

चतुर्वेदः, (त्रि०) चतस्रः विद्याः अभ्यस्ताः येन–ब०स० । चार वेदोंको पढा हुआ । चारवेदोंका ज्ञाता.

चतुर्विद्या, (स्त्री०) चतस्रः विद्याः–क० स० । चार वि- द्याएं । चारों वेद.

चतुर्विध, (त्रि०) चतस्रः विधाः यस्य । चार प्रकारवाला । चार तरहका.

चतुर्विधशरीर, (न०) जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज्जरूप चार प्रकारके शरीर । "चतुर्विधशरीराणि धृत्वा मुक्ताः सहस्रशः" इति.

चक्रेश्वर, (पु०) चक्रस्य ईश्वरः-ष०त०। सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका ईश्वर (स्वामी)। विष्णुका नाम। किसी प्रदेशका अधिकारी। जिलाहाकिम.

चक्रोपजीविन्, (पु०) चक्रेण उपजीवति। तेलके चक्र (कोल्हू) से जीता है। तेल निकालनेवाला। तेली आदमी.

चक्ष्, कहना। छोड़ना। त्यक्त करना। अदा० आत्म० सक० सेट्। चष्टे। अचक्षत-अचख्यत्। (माघके मतमें) अचख्यासीत्। अचख्यात। (छोड़ना इस अर्थमें तो) अचक्षीत्.

चक्षण, (न०) चक्ष्+ल्युट्-भावे। कहना। बोलना। भूख बढ़ानेके लिये एक प्रकारकी चटनी.

चक्षुस्, (न०) चक्ष्+करणे उसि। देखना। आंख। नजर। प्रकाश.

चक्षुःश्रवस्, (पु०) चक्षुषा शृणोति। श्रु+असुन्। चक्षुरेव श्रवः कर्णौ यस्य वा। आंखसे सुनता है। जिसकी आंखही कान है। सर्प। सांप.

चक्षुष्य, (पु०) चक्षुषे हितः यत्। नेत्रके लिये हितकारी। केवड़ा (केतक)। पुण्डरीकवृक्ष। सुहांजना। सुरमा। [illegible]। आंखका काजल (त्रि०) [illegible]। चक्षुष्या (स्त्री०)

चङ्क्रमण, (न०) क्रम्+यङ्+ल्युट्। बारबार घूमना। [illegible]। इधर घूमना। [illegible] घूमना.

चञ्चरी, (स्त्री०) [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। भौंरा। भ्रमरी। भौंरी। [illegible]। "[illegible]" इति अर्थ.

चञ्चल, (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। बिजली और वायु। [illegible] और [illegible] (त्रि०) बिजली और लक्ष्मी (स्त्री०).

चञ्च्, [illegible]। भ्वा० पर० सक० सेट्। चञ्चति। अचञ्चीत्.

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible].

[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible] [illegible] (विशेष).

[illegible], (पु०) [illegible].

चट्, [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] सेट्। [illegible]। [illegible].

चटक, (पु०) चटति (भिनत्ति) [illegible] धान्य आदिको तोड़डालती है। [illegible] चटककः। चटकिका (स्त्री०).

चटकाशिरस्, (पु०) चटकायाः [illegible] सिरकी नाई। पिप्पलीमूल। मच.

चटु, (पु०) चट्+उ। पियारा [illegible] आसन। उदर। पेट.

चटुल, (त्रि०) चप्+उलच्। चञ्च[illegible] ली (स्त्री०).

चड्, कोप। क्रोध करना। खफाहोना। [illegible] अक० सेट्। चण्डयति-ते। अचचण्ड[illegible]

चण्, जाना। मारना। शब्दकरना और [illegible] सक० सेट्। चणति। अचाणीत्-[illegible] चाणयति। बा चणति.

चणक, (पु०) चण्-देना+क्वुन्। [illegible] छोले चने। एक मुनिका नाम जिस[illegible] मुनि हुआ.

चण्ड, (पु०) चडि-कोप+अच्। [illegible] दरख्त। यमके दूत और एक दैत्य (न०) तेजीवाला और गुस्सेवाला (त्रि[illegible] चण्डी, चण्डिका.

चण्डातक, (पु० न०) चण्डी (कोप[illegible] ण्वुल्। सुन्दरस्त्रियोंका आधे उरुओं (च[illegible] छोटा चोट.

चण्डाल, (पु०) चडि+आलच्। [illegible] शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न कियागया संकीर्ण ([illegible]

चण्डांशु, (पु०) चण्डाः (तीक्ष्णाः) अं[illegible] जिसकी किरणें तेज हों। सूर्य.

चण्डी, (स्त्री०) चडि+अच+ङीष्। [illegible] देवी। उसीके माहात्म्यको कहनेवे[illegible] कोशको चण्डी कहते हैं.

चण्डीश्वर, (पु०) चण्ड्याः ईश्वरः। (पार्वती) का ईश्वर। शिव.

चण्डु, (पु०) चण्ड्+उन्। मूषक। मूसा। [illegible]

चत्, मांगना। जाना। भ्वा० उभ० द्वि० से[illegible] अचतीत्। अचतिष्ट.

चतुःशाला, (स्त्री०) चतस्रः शाला यत्र [illegible] चारो तरफ जिसके मिले होते हैं ऐसा चौतरफा मकान। [illegible]

चतुर, (त्रि०) च० चत्+उरच्। चतुरि। [illegible] [illegible]। "[illegible]" [illegible]। "[illegible]"

चतुर, (पु०) चत्+उरच्। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] (त्रि०).

तुरङ्ग, (न०) चत्वारि अंगानि यस्य । जिसके चार अंग हों । हाथी, घोडा, गाडी, पैदलरूप चार अंगोंवाली सेना । लाल, हरा, पीला और काले चार सेनाके समान खेलके साधन जिसके हों । सतरंज । चौपडकी खेल.

तुरन्ता, (स्त्री०) चत्वारः अन्ताः यस्याः—ब० स० । चार अन्तवाली । पृथिवी.

तुरशीति, (त्रि०) चतुरधिकः अशीतितमः । चुरा-शिवां । चार ऊपर अस्सीवां.

तुरशीति, (स्त्री०) चतुरधिका अशीतिः । चुरासीकी संख्या.

तुरस्र-स्र, (त्रि०) चतस्र. अश्रयः=कोणाः यस्य । चार कोनवाला.

तुरस्र, (त्रि०) चतस्रः अश्रयः=कोणा यस्य । नि० । चतुष्कोण । चौकोना । चार कोनवाला । (ज्योतिषमें) लग्नसे चौथा और आठवां स्थान । "चतुरस्र" भी होताहै.

तुरानन, (पु०) चत्वारि आननानि यस्य । जिसके चार मुख हों । ब्रह्मा । "चतुर्मुख" आदि इसी अर्थमें होते हैं.

तुर्गुण, (त्रि०) चतुरावृत्तः गुणः यस्य । चारबार गुणा हुआ सोलहकी संख्या.

तुर्थ, (त्रि०) चतुर्णां पूरणः । जिससे चारकी संख्या पूर्ण (भर) होतीहै इस प्रकारका तुरीय (चौथा).

तुर्थांश, चतुर्थोऽशः । चार भागोंमेंसे एक भाग । चौथा.

तुर्थी, (स्त्री०) चन्द्रमाके पक्षका चौथा दिन । चौथी तिथि । (व्याकरणमें) के भ्यां भ्यस् ये तीनों प्रत्यय.

तुर्थ, (त्रि०)-र्थी । (स्त्री०) चतुर्णां पूरण –डट् । चा-रोंको पूरा करनेवाला । चौथा । या चौथी ।-र्थः (पु०) किसी श्रेणीका चौथा अक्षर ।-र्थं (न०) चौथा भाग.

तुर्थभक्त, (त्रि०) चतुर्थं भक्तं यस्य । चौथा भोजन कर-नेवाला । चौथीवार खानेवाला.

तुर्थभाज्, (त्रि०) चतुर्थं भजति–भज्+ण्वि । प्रत्येक भाग (आमदन) का चौथा भाग लेनेवाला (प्रजासे) राजा.

तुर्थांशः, (त्रि०) चतुर्थः अंशः यस्य । चौथे अंश (हिस्से)का भागी । चौथा हिस्सा लेनेवाला ।-शः (पु०) चौथा भाग । चतुर्थांश.

चतुर्थाश्रमः, (पु०) चतुर्थ आश्रम यस्य । चौथे आश्रम (संन्यास)वाला ब्राह्मण.

चतुर्थीकर्मन्, (न०) चतुर्थी कर्म । विवाहसे चौथे दिन पर करनेका कर्म (दिरागमन).

चतुर्दंष्ट्र, (पु०) चत्वारो दन्ता यस्य । जिसके चार दांत हों । ऐरावत । हस्तिराज । इन्द्रहाथी.

चतुर्दशन्, (त्रि०) ब० व० । चतुरधिका दश । चार ऊपर दश । चौदहकी संख्या (गिनती) । "तस्य पूरणे डट्"-चतुर्दश (चौदहवां) । "स्त्रियां" चतुर्दशी । चौदवीं तिथि.

चतुर्दिशं, (अव्य०) चतसृणां दिशां समाहारः-समा०द्विं० । चार दिशाओंका समूह.

चतुर्द्वार, (अव्य०) चत्वारि द्वाराणि यस्य । चार द्वार (दर्वाजों)वाला (घरआदि).

चतुर्धा, (अव्य०) प्रकारे धा प्रत्ययः । चार प्रकारसे । चार तरहसे.

चतुर्वा, (अव्य०) चतु प्रकार+धाच् । चार प्रकार (तरह) से.

चतुर्बाहु, (पु०) चत्वारः बाहवः यस्य । चार हाथोंवाला । चार भुजावाला । विष्णु.

चतुर्भद्रं, (अव्य०) चतुर्णां भद्राणां समूह –समा० द्विं० । चार मानवजीवनके कल्याण (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.)

चतुर्भद्र, (न०) चत्वारि भद्राणि । धर्म, अर्थ, काम, मो-क्षरूप चारों इकडे हुए कल्याण । मिलेहुए धर्म आदि चार.

चतुर्भुज, (पु०) चत्वारो भुजा (हस्ताः) यस्य । जिस-के चार हाथ हों । विष्णु.

चतुर्मुख, (पु०) चत्वारि मुखानि यस्य । चार मुखोंवाला । ब्रह्मा.

चतुर्युग, (न०) चतुर्णां युगानां समाहारः । सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग चारों युग । "विहेय स्वचतुर्युगं" इति मनुः.

चतुर्वर्ग, (पु०) चतुर्णां वर्गः. (समुदाय) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष समूह । चार प्रकारका पुरुषका अर्थ.

चतुर्वर्ग, (पु०) चत्वार वर्गः । अथवा जीवनके चार समूह (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष).

चतुर्वर्णः, (पु०) चत्वारो वर्णाः यस्य-ब०स० । हिन्दुओंके चार वर्ण या चार जातिएं अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र.

चतुर्वार्षिका, (स्त्री०) चत्वारि वर्षाणि यस्याः (गौ.) इत्यर्थः । चार वर्ष अवस्थावाली गौ । चार वर्षकी गौ.

चतुर्विद, (पु०) चतुरो वेदान् (वेदचतुष्टय) वेत्ति । चार वेदोंके जाननेवाला । चारों वेदजाननेवाला भी होताहै.

चतुर्वेदमय, (त्रि०) चतुर्णां वेदानां अध्ययनं येन-ब०स० । चार वेदोंसे बना हुआ । चारवेदोंका ज्ञाता.

चतुर्विद्या, (स्त्री०) चतस्रः विद्याः-ब० स० । चार वि-द्याएं । चारो वेद.

चतुर्विध, (त्रि०) चतस्रः विधाः यस्य । चार प्रकारका । चार तरहका

चतुर्विधशरीर, (न०) जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज्ज चार प्रकारके शरीर । "चतुर्विधशरीराणि धृत्वा मुक्त्वा सहस्रशः" इति.

चक्रेश्वर, (पु०) चक्रस्य ईश्वरः-ष०त० । सम्पूर्ण महाराज्यका ईश्वर (स्वामी) । विष्णुका नाम । किसी प्रदेशका अधिकारी । जिलाहाकिम.

चक्रोपजीविन्, (पु०) चक्रेण उपजीवति । तेलके चक्र (कोल्हू) से जीता है । तेल निकालनेवाली । तेली आदमी.

चक्ष्, कहना । छोड़ना । खयाल करना । अदा० आत्म० सक० सेट् । चष्टे । अचक्षत-अचख्यत् । (भाष्यके मतमें) अचख्यासीत् । अख्यात । (छोड़ना इस अर्थमें तो) समचक्षिट.

चक्षण, (न०) चक्ष्+ल्युट्-ख्यादेशः । कहना । बोलना । भूख बढ़ानेके लिये एक प्रकारकी चटनी.

चक्षुस्, (न०) चक्ष्+करणे उसि । देखना । आंख । नजर । प्रकाश.

चक्षुःश्रवस्, (पु०) चक्षुषा शृणोति । श्रु+असुन् । चक्षुरेव श्रवः कर्णौ यस्य वा । आंखसे सुनता है । जिसकी आंखही कान है । सर्प । सांप.

चक्षुष्य, (पु०) चक्षुषे हितः यत् । नेत्रके लिये हितकारी । केवड़ा (केवड़ा) । पुण्डरीकवृक्ष । सुहांजना । [illegible] । कमल । आंखको उपकारी (त्रि०) अजनवी । चक्षुर्लोचना (स्त्री०).

चङ्क्रमण, (न०) क्रम्+यङ्+ल्युट् । बारबार घूमना । बहुत घूमना । इधर घूमना । धीरे घूमना.

चञ्चरी, (स्त्री०) चर्-यङ्+अच्-ङीष् [illegible] । [illegible] । [illegible] । भ्रमरी । भौंरी । [illegible] । "चञ्चरीक" यहि शब्द.

चञ्चल, (पु०) चञ्च+अलच् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । बिजली और वायु । चपल और अस्थिर (त्रि०) बिजली और लक्ष्मी (स्त्री०).

चञ्चु, [illegible] । भ्वा० पर० सक० सेट् । चञ्चति । अचञ्चीत्.

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible].

[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible].

चञ्चु, (स्त्री०) चञ्च+उण् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] ([illegible]).

[illegible], (पु०) [illegible].

चट्, [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible].

चटक, (पु०) चटति (भिनत्ति) धान्यं धान्य आदिको तोड़डालती है । चिड़िया । चटककः । चटकिका (स्त्री०).

चटकाशिरस्, (पु०) चटकायाः शिरः सिरकी नाई । पिप्पलीमूल । मघ.

चटु, (पु०) चट्+कु । पियारा वचन । आसन । उदर । पेट.

चटुल, (त्रि०) चट्+उलच् । चपल । [illegible] ली (स्त्री०).

चड्, कोप । क्रोध करना । खफाहोना । [illegible] अक० सेट् । चण्डयति-ते । अचचण्डत्.

चण्, जाना । मारना । शब्दकरना और [illegible] सक० सेट् । चणति । अचाणीत्-अच[illegible] चाणयति । वा घटादि.

चणक, (पु०) चण्-देना+कुन् । इसले छोले चने । एक मुनिका नाम जिनके मुनि हुआ.

चण्ड, (पु०) चडि-कोप+अण् । तिन्तिडी दरख्त । यमके दूत और एक दैत्य । (न०) तेजीवाला और गुस्सेवाला (त्रि०) चण्डी, चण्डिका.

चण्डातक, (पु० न०) चण्डा (कोपना) ण्वुल् । सुन्दरस्त्रियोंका आधे बदनों (पर) छोटा कोट.

चण्डाल, (पु०) चडि+आलच् । अपनी शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न कियागया संतति ([illegible]

चण्डांशु, (पु०) चण्डाः (तीव्राः) अं[शवः] [यस्य] जिसकी किरणें तेज हों । सूर्य.

चण्डी, (स्त्री०) चडि+अच्+ङीप् । [illegible] देवी । उसीके माहात्म्यको कहनेवाले श्लोकको चण्डी कहते हैं.

चण्डीश्वरः, (पु०) चण्ड्याः ईश्वरः । (पार्वती) का ईश्वर । शिव.

चण्डुः, (पु०) चण्ड्+उन् । मूसक । मूषा ।

चत्, मांगना । जाना । भ्वा० उभ० द्वि० [illegible] अचतीत् । अचतिष्ट.

चतुःशाला, (स्त्री०) चतसृणां शालानां [समाहारः] जिसमें चारों तरफ घर हों [illegible] [illegible] [illegible]

चतुर, (त्रि०) च० चत्+उरच् । [illegible] [illegible] । "[illegible]" [illegible] । "[illegible]"

चतुर, (पु०) चत्+उरच् । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] । (त्रि०).

तुरङ्ग, (न०) चत्वारि अंगानि यस्य । जिसके चार अंग हों । हाथी, घोड़ा, गाड़ी, पैदलरूप चार अंगोंवाली सेना । लाल, हरा, पीला और काले चार रंगोंके समान खेलके साधन जिसके हों । शतरंज । चौपडकी खेल.

तुरन्ता, (स्त्री०) चत्वारः अन्ता यस्याः—ब० स० । चार अन्तवाली । पृथिवी.

तुरशीति, (त्रि०) चतुरधिकः अशीतितमः । चुरासिवां । चार ऊपर अस्सीवा.

तुरशीति, (स्त्री०) चतुरधिका अशीतिः । चुरासीकी संख्या.

तुरस्र-स्र, (त्रि०) चतस्रः अश्रयः=कोणाः यस्य । चार कोनवाला.

तुरस्र, (त्रि०) चतस्रः अश्रयः=कोणा यस्य । नि० । चतुष्कोण । चौकोना । चार कोनवाला । (ज्योतिषमें) लग्नसे चौथा और आठवां स्थान । "चतुरस्र" भी होताहै.

तुरानन, (पु०) चत्वारि आननानि यस्य । जिसके चार मुख हों । ब्रह्मा । "चतुर्मुख" आदि इसी अर्थमें होते हैं.

तुर्गुण, (त्रि०) चतुरावृत्ताः गुणाः यस्य । चारवार गुणा हुआ सोलहकी संख्या.

तुर्थ, (त्रि०) चतुर्णां पूरणः । जिससे चारकी संख्या पूर्ण (भर) होतीहै इस प्रकारका तुरीय (चौथा).

तुर्थांश, चतुर्थोऽशः । चार भागोंमेंसे एक भाग । चौथा.

तुर्थी, (स्त्री०) चन्द्रमाके पक्षका चौथा दिन । चौथी तिथि । (व्याकरणमें) के भ्यां भ्यस् ये तीनों प्रत्यय.

तुर्थ, (त्रि०)-र्थी । (स्त्री०) चतुर्णां पूरणः—डट् । चारोंको पूर्ण करनेवाला । चौथा । वा चौथी ।-र्थः (पु०) किसी श्रेणीका चौथा अक्षर ।-र्थं (न०) चौथा भाग.

तुर्थभक्त, (त्रि०) चतुर्थं भक्तं यस्य । चौथा भोजन करनेवाला । चौथीवार खानेवाला.

तुर्थभाज्, (त्रि०) चतुर्थं भजति-भज्+ण्वि । प्रत्येक आय (आमदन) चौथा भाग लेनेवाला (प्रजासे) राजा.

तुर्थांशः, (त्रि०) चतुर्थः अंशः यस्य । चौथे अंश (हिस्से)का भागी । चौथा हिस्सा लेनेवाला ।-शः (पु०) चौथा भाग । चतुर्थांश.

तुर्थाश्रमः, (पु०) चतुर्थः आश्रमः यस्य । चौथे आश्रम (संन्यास)वाला ब्राह्मण.

तुर्थीकर्मन्, (न०) चतुर्थ्यां कर्म । विवाहसे चौथी रात पर कर्तव्य कर्म (रितगमन).

तुर्दन्त, (पु०) चत्वारो दन्ता अस्य । जिसके चार दंत हों । ऐरावत । इन्द्रगज । इन्द्रजीका हाथी.

चतुर्दशन्, (त्रि०) ब० व० । चतुरधिका दश । चार ऊपर दश । चौदहकी संख्या (गिनती) । "तस्य पूरणे डट्"-चतुर्दशः (चौदवां) । "स्त्रियां" चतुर्दशी । चौदवीं तिथि.

चतुर्दिशं, (अव्य०) चतसृणां दिशां समाहारः–समा०द्वं० । चार दिशाओंका समूह.

चतुर्द्वार, (अव्य०) चत्वारि द्वाराणि यस्य । चार द्वार (दर्वाजों)वाला (घरआदि).

चतुर्धा, (अव्य०) प्रकारे धा प्रत्ययः । चार प्रकारसे । चार तरहसे.

चतुर्धा, (अव्य०) चतुर्प्रकार+धाच् । चार प्रकार (तरह) से.

चतुर्बाहु, (पु०) चत्वारः बाहवः यस्य । चार हाथोंका । चार भुजावाला । विष्णु.

चतुर्भद्रं, (अव्य०) चतुर्णां भद्राणां समूहः–समा० द्वं० । चार मानवजीवनके कल्याण (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.)

चतुर्भद्र, (न०) चत्वारि भद्राणि । धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूप चारों इकट्ठे हुए कल्याण । मिलेहुए धर्म आदि चार.

चतुर्भुज, (पु०) चत्वारो भुजा (हस्ताः) अस्य । जिसके चार हाथ हों । विष्णु.

चतुर्मुख, (पु०) चत्वारि मुखानि यस्य । चार मुखोंवाला । ब्रह्मा.

चतुर्युग, (न०) चतुर्णां युगानां समाहारः । सत्य, त्रेता, द्वापर और कलिरूप चारों युग । "विज्ञेयं तच्चतुर्युगं" इति मनुः.

चतुर्वर्ग, (पु०) चतुर्णां वर्गः (समुदायः) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष समूह । चार प्रकारका पुरुषका अर्थ.

चतुर्वर्ग, (पु०) चत्वारः वर्गाः । मानव जीवनके चार समूह (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष).

चतुर्वर्णः,(पु०) चत्वारो वर्णाः. येषु-ब०स० । हिन्दुओंके चार वर्ण वा चार जातियें अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र.

चतुर्वर्षिका, (स्त्री०) चत्वारि वर्षाणि वयो यस्याः (गोः) इत्यर्थः । चार वर्ष अवस्थावाली गौ । चार वर्षकी गौ.

चतुर्विद्य, (पु०) चतस्रो विद्याः (वेदज्ञानरूपाः) यस्य । चार वेदोंके जाननेवाला । चारों विद्यावाला भी होताहै.

चतुर्विद्यः, (त्रि०) चतस्रः विद्याः अभ्यस्ताः येन-ब०स० । चार वेदोंको पढा हुआ । चारवेदोंका ज्ञाता.

चतुर्विद्या, (स्त्री०) चतस्रः विद्या —क० स० । चार विद्याएं । चारों वेद.

चतुर्विध, (त्रि०) चतस्रः विधाः यस्य । चार प्रकारवाला । चार तरहका.

चतुर्विधशरीर, (न०) जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिदरूप चार प्रकारके शरीर । "चतुर्विधशरीराणि भूत्वा भुक्त्वा सहस्रशः" इति.

चतुर्विंशः, (त्रि०) चतुरधिका विंशतिः-डमिन्। चार अधिक बीसवाँ। चौबीसकी संख्यासहित.

चतुर्विंशति, (स्त्री०) चतुरधिका विंशतिः। चार ऊपर बीस। चौबीस। चौबीसकी गिनती। वा उस संख्यात्मक.

चतुर्वेद, (पु०) चत्वारः वेदाः यस्य। चार वेदोंको जाने- हरा.

चतुर्व्यूह, (पु०) [illegible] चत्वारो व्यूहा विभागा यस्य। सृष्टि आदि कार्यके लिये जिसके चार भाग हैं। वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्धसहित विष्णु.

चतुर्हायन-ण, (त्रि०) चत्वारि हायनानि यस्य-ब० स०। चार वर्षका.

चतुर्होतृकम्, (अव्य०) चतुर्णां होतॄणां समाहारः। चार पुरोहित.

चतुष्क, (न०) चतुर्भिः [illegible] कायति। कै+क (चार खम्भे (लंबे) [illegible] घर। जिसमें चार हों। चारों ओर घर (न०).

चतुष्टय, (त्रि०) चत्वारो अवयवा (विधा) अस्य तयप्। चार [illegible]। चार [illegible]। चार प्रकारका [illegible].

चतुष्पथ, (पु०) चत्वारः पन्थानः [illegible] आश्रमाः [illegible]। चार आश्रमोंवाला। ब्राह्मण। [illegible]। चार रास्तोंका मिलाप। [illegible]। [illegible]। चार मुखवाला मार्ग। चौक.

चतुष्पद, (पु०) [illegible]। चार पाँव- [illegible]। [illegible]। (ज्योतिषमें) एक करण। ([illegible]) "चतुष्पाद."

चतुष्पदी, (स्त्री०) [illegible]। [illegible] ([illegible]) चार [illegible]। चार [illegible] [illegible] ११ अक्षर हैं.

चतुष्फल (त्रि०)-ली (स्त्री०) [illegible]। चार [illegible]। चार [illegible].

[illegible], (न०) (स्त्री०) [illegible]। [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]। चार [illegible]

[illegible] (अव्य०) [illegible]। चार [illegible]

[illegible] (न०) [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible]

चत्वाल, (पु०) चत्+वालच्। होमका कुण्ड। [illegible] कुशा.

चद्, मांगना। भ्वा० उभ० द्विक० सेट्। [illegible] अचदीत्.

चदि, आह्लाद। खुश होना। प्रसन्न होना और चमकना। [illegible] पर० अक० सेट्। इदित्। चन्दति। अचन्दीत्.

चन्, शब्द करना। मारना। चनति। अचनीत्। [illegible]

चन, (अव्य०) न पूरा। जो कुछ। भी.

चन्दन, (पु० न०) चदि+णिच्+ल्यु। [illegible] गंधसार। लाल चन्दन। एक वानर। एक [illegible]

चन्दनधेनु, (स्त्री०) चन्दनेन अङ्किता धेनुः। [illegible] पर चन्दन छिड़का गया हो। यदि पती और [illegible] स्त्री मर्ताके पहिले मरजाय तो उसे स्वर्ग [illegible] के उद्देशमें ऐसी गौ दान की जाती है जिसके [illegible] चन्दन मला हो। [illegible] चन्दनके निशान [illegible] करनेयोग्य धेनु.

चन्द्र, (पु०) चदि+रक् चन्द्रमा। मृगशिर [illegible] कपूर। हीरा। पानी। सुन्दर। काम्पिल्य। [illegible] मोटी इलायची। रोशन.

चन्द्रक, (पु०) चन्द्र इव कायति। कै+क [illegible] मोरके पंखका चांदके समानवाला पदार्थ। [illegible] मछली। सुफेद मरिच। गोल मरिच.

चन्द्रकला, (स्त्री०) ६ त०। चन्द्रका सोलह भाग। [illegible] सोलहवां हिस्सा। [illegible] एक [illegible].

चन्द्रकान्त, (पु०) चन्द्रः कान्तः [illegible]। [illegible] का पियारा है। [illegible] (चांदको देखकर वह पिघलता है)। [illegible] श्वेतकमल। चन्दन (न०)। रात। चांदनी और [illegible] वाली स्त्री (स्त्री०).

चन्द्रकान्ति, (न०) चन्द्रमा इव कान्तिः [illegible]। [illegible] भांति चमकती है। चांदी। [illegible] चमक

चन्द्रकित, (पु०) [illegible]। [illegible]। मयूर। मोर

[illegible], (पु०) [illegible]

[illegible], (पु० बहु०) [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible]

चन्द्रनिभ, (त्रि॰) चन्द्रेण निभः=सदृशः । चन्द्रमाके समान चमकनेवाला रोशन । सुन्दर.

चन्द्रप्रभा, (स्त्री॰) चन्द्रस्य प्रभा । चन्द्रमाकी रोशनी । चांदनी.

चन्द्रबाला, (स्त्री॰) चन्द्रस्य (कर्पूरस्य) बाला इव । (समानगंध होनेसे) मानों कापूरकी कन्या है । मोटी इलायची.

चन्द्रभागा, (स्त्री॰) काश्मीरदेशकी एक नदी.

चन्द्रमण्डल, (न॰) ६ त॰ । चन्द्रमाका मण्डलाकार स्वरूप । चांदकी गोल शक्ल.

चन्द्रमस, (पु॰) चन्द्रं (आह्लादं) मिमीते । आनन्द देनेवाला । "चन्द्र" (कर्पूर) माति (तुल्यति) मा+असि-वा । कापूरके समान चमकनेहारा । चन्द्र । चन्द्रमा । चांद.

चन्द्रमुखी, (स्त्री॰) चन्द्र इव मुखं यस्याः-ब॰ स॰ । जिसका मुख चन्द्रमाके समान है । प्यारी सुन्दर स्त्री.

चन्द्रमौलि, (पु॰) चन्द्रः मौलौ यस्य । जिसके माथेपर चन्द्रमा है । चन्द्रशेखर । शिव । शंकर । महादेव.

चन्द्रलोकः, (पु॰) चन्द्रस्य लोकः । चन्द्रमाका लोक.

चन्द्रवल्लरी, (स्त्री॰) ६ त॰ । सोमलता । एकप्रकारकी बेल.

चन्द्रवदन, (त्रि॰) चन्द्र इव वदनं यस्य । चन्द्रमाके समान उज्ज्वल मुखवाला.

चन्द्रवंशः, (पु॰) चन्द्रस्य वंशः । चन्द्रवंशी राजालोग.

चन्द्रव्रत, (न॰) चन्द्रस्य (चन्द्रलोकप्राप्तये) व्रतं (नियमः) । चन्द्रमाके लोकमें जानेके लिये नियम । चान्द्रायण नामी व्रत.

चन्द्रशाला, (स्त्री॰) चन्द्रः शाला इव आधारः अस्याः । घरके समान चांद जिसका आश्रय है । चांदनी । "चन्द्र इव आह्लादिका शाला" । चन्द्रमाके समान प्रकाश करनेवाला घर । प्रासादोपरिस्थ गृह । बड़ा ऊंचा महलके ऊपरका घर.

चन्द्रशेखर, (पु॰) चन्द्रः शेखरे (शिरोभूषणे) यस्य । चन्द्रमा जिसके सिरका भूषण (जेवर) है । शिवजी । पूर्वदेशमें एक पर्वत.

चन्द्रसम्भव, (पु॰) शशाङ्कात् सम्भवः । चन्द्रः सम्भवः यस्य । चन्द्रमासे उत्पन्नहुआ । बुध । इसी प्रकार "सोमपुत्र" आदि भी इसी अर्थमें । नर्मदा नदी और मोटी इलायची (स्त्री॰).

चन्द्रहास, (पु॰) चन्द्र इव हासः (प्रकाशः) अस्य । चन्द्रं हसति वा । जिसका प्रकाश, चांदके समान हो । वा जो (सफेद होनेसे) चांदको भी हंस रहा है । रावणका खड्ग । तलवार । रूपा (न॰) । गुरुची (स्त्री॰).

चन्द्रा, (स्त्री॰) चदि+रक् । छत्र । इलायची । चन्द्रातप । चंदोआ.

चन्द्रातप, (पु॰) चन्द्रस्य आतः (गमनं) ततः पाति । पा+क । चंदोआ । चांदकी किरण । ज्योत्स्ना । चांदनी.

चन्द्रापीड, (पु॰) चन्द्रः आपीडः (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिसके सिरका अलंकार है । शिवजी । तारापीडका पुत्र एक राजा.

चन्द्रार्धः, (पु॰) चन्द्रस्य अर्धं । चन्द्रमाका आधा । आधा चन्द्रमा.

चन्द्रिका, (स्त्री॰) चन्द्रः आश्रयत्वेन अस्ति अस्याः ठन् । चन्द्रमा जिसका अपना आश्रय है । चांदनी । मोटी इलायची । तेरह अक्षरके पादवाला एक छन्द.

चन्द्रोपल, (पु॰) चन्द्रप्रियः उपलः । चन्द्रमाका प्यारा पत्थर । चन्द्रकान्तमणि.

चप्, चूर्णीकरण-पीसना । सान्त्वन-दिलासा देना । ढाढ़स देना । चुरा॰ वा भ्वा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चपयति-ते । अचीचपत्-त । चपति । अचपीत् । अचापीत्

चपल, (पु॰) चप्+अलच् । पारा । मछली । एक पत्थर । और राजमाष । चातक । क्षणिक । क्षिणभरके लिये रहनेवाला चञ्चल तुच्छ । और दुर्विनीत । अविनीत । बेसमझ (त्रि॰) लक्ष्मी । बिजली । पुंश्चली । खराब औरत । मद्य । पिप्पली । विजया । मदिरा । जिह्वा । जीभ । और अर्थछन्दका भेद (स्त्री॰)

चपेट, (पु॰) चप्-कर्मणि क । चपयति (सान्त्वयति) (दुःखानि) इट+क । जो दूसरेको दुःख सहनेके लिये लगी है । फैलीहुई अंगुलीओंवाला हाथ । थप्पड़ । "सखिशोरन्वय चिपटव चपेटा दर्शने" इति अन्य प्रयोगम् । "लर्पो वद्" । चपेटक । इसी अर्थ.

चम्, खाना । भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट् । चमति । आचमति । विचमति । चमेति । अचमीत् । कहीं पर चखना.

चमत्कार, (पु॰) चमत् इति अव्यय, क्रियते । कृ+घञ् । लोकोत्तरता । (अनोखे गुण) को देखकर चित्तका आनन्दका कारण प्रकार । विस्मय । हैरानी । आश्चर्य । अचम्भा हर्ष

चमर, (पु॰) चम्+अरच् । जैसे बालका एक हरिण । जिसकी पूंछसे चमर (चंवर) बनाये जाते हैं और एक दैत्य । "चमरी" कहते । चमर पंख (न॰)

चमस, (पु॰ न॰) चम्+असच् । यज्ञमें सोमपान करनेका एक पात्र । सोमपानकेलिए पात्र । चप् (पु॰) पापड़.

चमीकर, (पु॰) सुवर्णका आकर । सोनेकी खान । (जिस खानसे होनेसे "चामीकर" कहते हैं).

चन्द्रनिभ, (त्रि०) चन्द्रेण निभ=सदृशः । चन्द्रमाके समान चमकनेवाला रोशन । सुन्दर.

चन्द्रप्रभा, (स्त्री०) चन्द्रस्य प्रभा । चन्द्रमाकी रोशनी । चांदनी

चन्द्रबाला, (स्त्री०) चन्द्रस्य (कर्पूरस्य) बाला इव । (समानगंध होनेसे) मानों कपूरकी कन्या है । मोटी इलायची.

चन्द्रभागा, (स्त्री०) काश्मीरदेशकी एक नदी.

चन्द्रमण्डल, (न०) ६ त० । चन्द्रमाका मण्डलाकार स्वरूप । चांदकी गोल शकल.

चन्द्रमस्, (पु०) चन्द्रं (आह्लादं) मिमीते । आनन्द देनेवाला । "चन्द्र" (कर्पूरं) माति (तुलयति) मा+असि-चा । कापूरके समान दीखनेहारा । चन्द्र । चन्द्रमा । चांद.

चन्द्रमुखी, (स्त्री०) चन्द्र इव मुखं यस्याः-ब० स० । जिसका मुख चन्द्रमाके समान है । प्यारी सुन्दर स्त्री.

चन्द्रमौलि, (पु०) चन्द्रः मौलौ यस्य । जिसके माथेपर चन्द्रमा है । चन्द्रशेखर । शिव । शंकर । महादेव.

चन्द्रलोकः, (पु०) चन्द्रस्य लोकः । चन्द्रमाका लोक.

चन्द्रवल्लरी, (स्त्री०) ६ त० । सोमलता । एकप्रकारकी बेल.

चन्द्रवदन, (त्रि०) चन्द्र इव वदनं यस्य । चन्द्रमाके समान उज्ज्वल मुखवाला.

चन्द्रवंशः, (पु०) चन्द्रस्य वंशः । चन्द्रवंशी राजालोग.

चन्द्रव्रत, (न०) चन्द्रस्य (चन्द्रलोकप्राप्तये) व्रतं (नियमः) । चन्द्रमाके लोकमें जानेके लिये नियम । चान्द्रायण नामी व्रत.

चन्द्रशाला, (स्त्री०) चन्द्रः शाला इव आधारः अस्याः । घरके समान चांद जिसका आश्रय है । चांदनी । "चन्द्र इव आह्लादिका शाला" । चन्द्रमाके समान प्रसन्न करनेवाला घर । प्रासादोपरिस्थ गृह । बड़ा ऊंचा महलके ऊपरका घर.

चन्द्रशेखर, (पु०) चन्द्रः शेखरे (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिसके सिरका भूषण (जेवर) है । शिवजी । पूर्वदेशमें एक पर्वत.

चन्द्रसम्भव, (पु०) सम्भवति अस्मात् सम्भवः । चन्द्रसम्भवः यस्य । चन्द्रमासे उत्पन्नहुआ । बुध । इसीप्रकार "सोमसुत" आदि भी इसी अर्थमें । नर्मदा नदी और मोटी इलायची (स्त्री०).

चन्द्रहास, (पु०) चन्द्र इव हासः (प्रभा) अस्य । चन्द्रं हसति वा । जिसका प्रकाश, चांदके समान हो । वा जो (सुफेद होनेसे) चांदको, भी हस रहा है । अण् वा खड्ग । तरवार । रूपा (न०) । गुडूची (स्त्री०).

चन्द्रा, (स्त्री०) चदि+रक् । एला । इलायची । चन्द्रातप । चंदोआ.

चन्द्रातप, (पु०) चन्द्रस्य आतः (गमनं) ततः पाति । पा+क । चंदोआ । चांदकी किरण । ज्योत्स्ना । चांदनी.

चन्द्रापीड, (पु०) चन्द्रः आपीडः (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिसके सिरका अलंकार है । शिवजी । तारापीडका पुत्र एक राजा.

चन्द्रार्धः, (पु०) चन्द्रस्य अर्धः । चन्द्रमाका आधा । आधा चन्द्रमा.

चन्द्रिका, (स्त्री०) चन्द्रः स्वाश्रयत्वेन अस्ति अस्याः ठन् । चन्द्रमा जिसका अपना आश्रय है । चांदनी । मोटी इलायची । तेरह अक्षरके पादवाला एक छन्द.

चन्द्रोपल, (पु०) चन्द्रप्रियः उपल । चन्द्रमाका पियारा पत्थर । चन्द्रकान्तमणि.

चप्, चूर्णीकरण-पीसना । सान्त्वन-हौसला देना । शान्ति देना । चुरा० वा भ्वा० उभ० सक० सेट् । चपयति-ते । अचीचपत्-त । चपति । अचापीत् । अचपीत्.

चपल, (पु०) चप्-मंदगति-धीरे २ चलना+कल । पारद । पारा । मछली । एक पत्थर । और राजमाष । चपल । क्षणिक । छिनभरके लिये रहनेहारा घबराया हुआ । और दुर्विनीत । अनिश्चित । बेवकूफ (त्रि०) लक्ष्मी । बिजली । पुंश्चली । खराब औरत । मद्य । पिप्पली । विजया । मदिरा । जिह्वा । जीभ । और आर्याछन्दका भेद (स्त्री०).

चपेट, (पु०) चप्-समर्थे क । चपाय (सांत्वनाय) अटति (गच्छति) इट्+क । जो दूसरेको दंड करनेके लिये जाती है । फैलीहुई अंगुलीओंवाला हाथ । चपेड़ । "खण्डिकोपाध्यायः शिष्याय चपेटां ददाति" इति भाष्यप्रयोगात् । "स्वार्थे कन्" । चपेटकः । यही अर्थ.

चम्, खाना । भ्वा० स्वा० पर० सक० सेट् । चमति । आचामति । चिचमिरे । चम्नोति । अचमीत् । चमित्वा-चान्त्वा.

चमत्कार, (पु०) चमत् इति अव्ययं क्रियते । कृ+घञ् । लोकातीताद्भु । (अजीब चीज) को देखकर चित्तके आनन्दका कारण प्रकाश । विस्मय । हैरानी । आश्चर्य । अपामार्ग वृक्ष.

चमर, (पु०) चम्+अरच् । भैंसेके स्वरूपका एक हरिण । जिसकी पूछसे चमर (चंवरी) नामी पंखा बनाते हैं और एक दैत्य । "स्त्रियां" चमरी । चमर पंखा (न०).

चमस, (पु० न०) चम्+असच् । यज्ञीय बनाहुआ यज्ञका एक पात्र । सोमरसपीनेका पात्र । लड्डू (पु०) चमचा.

चमीकर, (पु०) इसनाम वाली सोनेके उत्पन्नेका स्थान । (जिस कारण सोनेको "चामीकर" कहतेहैं).

चमू, (स्त्री०) चम्+ऊ । सेना । (हाथी ७२९, रथ ७२९, घोड़े २१८७, पैदल ३६४५) इतनी संख्यावाली सेना.

चमूरु, (पु०) चम्+ऊरच् । मृगभेद । एक प्रकारका हरिण । कचनारका वृक्ष । "चारुचमूरुचर्मणः" इति माघः.

चम्पक, (पु०) चपि-गत्या+क्वुन् । चम्पा । चैत्रक वृक्ष । चंपेका फूल.

चम्पकमाला, (स्त्री०) ६ त० । सोनेके चम्पकोंसे बना हुआ स्त्रियोंके गलेका अलंकार । दस अक्षरके चरणवाला पंक्तिछंदका भेद । छंदोविशेष.

चम्पाधिप, (पु०) ६ त० । चम्पाका स्वामी कर्णराजा.

चम्पू, (स्त्री०) गद्यपद्यमिश्रित संस्कृत काव्य । गद्य और पद्यसे मिलाहुआ वचन । एक प्रकारका काव्य.

चम्ब्, गत्यां । भ्वा० प० सक० सेट् । चम्बति । अचम्बीत्.

चय्, गत्यां । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । चयते । अचयिष्ट.

चय, (पु०) चि+अच् । प्राकारमूल । कोट । समूह । चौकी [illegible].

चयः, (पु०) चि+अच् । समूह । ढेर.

चयन, (न०) चि+ल्युट् । एक प्रकारकी नीचे ऊपर ईंटों-की रचना । फूल आदिका चुनना । इकट्ठा करना.

चर्, गत्यां । भ्वा० पर० सेट् । चरति । अचारीत्.

चर, (पु०) चर्+अच् । अपने और दूसरे राज्यके वृत्तान्त-के जाननेके लिये राजाकी आज्ञासे घूमनेवाला दूत । प्रणिधि । [illegible] । खञ्जन । कौड़ी (ज्योतिषमें) मेष, कर्क, तुला और मकर राशियें । स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण ये तीनों तारे । और [illegible] (न०) । चलनेवाला । जानेवाला (त्रि०).

चरक, (पु०) चर्+वुन् [illegible] । एक मुनिका नाम (वैद्यकके [illegible]) । मुनिके बनाया ग्रन्थ ([illegible]) । चर । [illegible] दूत । [illegible] । भिक्षु ([illegible]) । [illegible] । "[illegible]" [illegible].

चरण, (पु० न०) चर्+करणे ल्युट् । जिससे चलते हैं । पैर । [illegible] । [illegible] । वेदकी एक शाखा । [illegible] । [illegible] । "[illegible]" [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (न०).

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] गिरा हुआ । [illegible].

[illegible], (पु०) ६ त० । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

[illegible], [illegible] (न०) [illegible] [illegible] । [illegible].

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

चरणारविन्दं, कमलं-पद्मं (न०) चरणः (पं) [illegible] इव-उप० स० । कमलके समान चरण (पां).

चरणव्यूह, (पु०) चरणानां (वेदशाखानां) [illegible] शेषेण ऊहः) निरूपणं यत्र । जिसमें वेदकी [illegible] विशेषरूपसे वर्णन हो । व्यासका बनायाहुआ [illegible].

चरम, (त्रि०) चर्+अमच् । अन्त । अन्त्य । [illegible] आखिरी.

चराचर, (न०) चर्+अच् नि० । चलने और [illegible] वाला । जगत् । दुनिआं । समा० द्वं० । जान [illegible] गम । आकाश । शिवजीकी जटा (पु०).

चरित, (त्रि०) (न०) चर्+क्त (इन क) । [illegible] पानिया । चरितिया । जानागया । अनुष्ठान । [illegible] विचरना । व्रतकर्मआदिमें यत्न करना । [illegible] कहानी । चालचलन । समाज.

चरित्रम्, (न०) चर्-इत्र । सदाचार । चालचलन.

चरिष्णु, (त्रि०) चर्+इष्णुच् । चलनेवाला । [illegible] इधर उधर घूमनेवाला.

चरु, (पु०) चर्+उ । हव्यान्न । होममें डालने [illegible] (घी दूध आदि) । अन्न पकानेका पात्र ([illegible]) [illegible] को घीमें पकाकर इसके ऊपर दूध छिड़कते हैं).

चर्च्, (पठना) चुरा० उभ० सक० सेट् । चर्च[illegible] अचचर्चत्-त । चर्चितः । चर्चा.

चर्च्, कहना । झिड़कना । भर्त्सन । तुदा० पर० स[illegible] चर्चति । अचर्चीत्.

चर्चक, (त्रि०) चर्च्+ण्वुल् । किसीके विषयमें [illegible] करनेवाला । दुबारा कहनेवाला.

चर्चनम्, (न०) चर्च्+ल्युट् । अभ्यास करना । [illegible] बार बार पढ़ना.

चर्चरी, (स्त्री०) चर्च्+अरन्+ङीष् । एक [illegible] छन्दका भेद । क्रीड़ाकेश । सिरके बाल । [illegible] अहंकारका वचन.

चर्चा, (स्त्री०) चर्च्+अ । विचार । चिन्ता । [illegible] चन्दनादिसे देहको लपेटना । दुर्गा.

चर्य, (त्रि०) चर्+कर्मणि यत् । करनेयोग्य । [illegible] करने योग्य । -र्या (स्त्री०) इधर उधर जाना । [illegible]

चर्चित, (त्रि०) चर्च्+क्त । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible].

चर्मचक्षुः, (पु०) [illegible] । [illegible]

चर्मचक्षुः, (पु०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible].

चर्मवाद्यम्, (न०) चर्मणः वाद्यम्। ढोल। एक प्रकारका चमड़ेसे बना हुआ बाजा.

चर्ममय, (त्रि०) चर्म+मयट्। चमड़ेका बना हुआ.

चर्व्, चबाना। खाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। चर्वति। चचर्व। अचर्वीत्.

चर्मकार, (पु०) चर्म (तन्मयं पादुकादिकं) करोति कृ+अण्। चमड़ेकी जूती आदि बनानेहारा। चर्मक। चमार। मोची.

चर्मण्वती, (स्त्री०) चर्म अस्ति अस्याः। मतुप्। नि० नदीभेदका नाम.

चर्मदण्ड, (पु०) चर्मणा कृतः दण्डः। चमड़ेका बनाहुआ डंडा। कशा। चाबुक। कोड़ा.

चर्मन्, (न०) चर्+मनिन्। फलक। ढाल। चाम। एक इन्द्रिय जिससे छूते हैं। "शरीरावरकं शस्त्रं चर्म इत्यभिधीयते".

चर्मपादुका, (स्त्री०) चर्मनिर्मिता पादुका। चमड़ेकी बनीहुई खड़ाऊ। उपानह्। जूता.

चर्मप्रसेविका, (स्त्री०) चर्मणा प्रसीव्यते। सिव्+ण्वुल्। (आग भड़कानेके लिये) चमड़ेसे सीया जाता है। भस्त्रानामी यन्त्र। भस्त्रा। धौंकनी। फूंकनी.

चर्मावकर्तिन्, (पु०) चर्म अवकर्तयति। चमड़ा काटनेवाला। जूतीबनानेवाला। मोची.

चर्मिक, (त्रि०) चर्म+ठन्+इक। ढालनामी हथियार धारण किया हुआ.

चर्मिन्, (पु०) चर्म (फलकं) अस्य अस्ति। इनि। जिसके पास ढाल नामी हथियार हो। ढालरूप चमड़ेवाला। भूर्जवृक्ष। भृङ्गरीट। कदली। चमड़ेवाला। सिपाही.

चर्या, (स्त्री०) चर्+यत्। नियमका न छोड़ना। गुरुके उपदेश कियेगये व्रतआदिका अनुष्ठान। विचरना। गाड़ीमें जाना। व्यवहार। स्वभाव। खाना.

चर्व, खाना (दांतोंसे चूर करना)। चाबना। चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर०। चर्वयति-ते। चर्वति। चचर्व। अचचर्वत्-त। अचर्वीत्.

चर्वण-णा, (न० स्त्री०) चर्व्+भावे ल्युट्। चाबना। खाना। स्वाद लेना। कठिन भोजन.

चर्वा, (स्त्री०) चर्व्+अङ्। चपेटमारना। चाबना.

चर्वित, (त्रि०) चर्व्+कर्मणि क्त। चाबागया। खाया गया। स्वाद लिया गया.

चर्व्य, (त्रि०) चर्व्+कर्मणि ण्यत्-यत् वा। चाबनेलायक। -र्व्यं (न०) कठिन भोजन.

चर्षणि, (पु०) कृष्+अनि पृ०। पहिले अक्षरको च होता है। जन। लोग। (वेद) देखना। प्रकाश करना। चालाक मनुष्य.

चल्, जाना-भ्वा० पर० सक० सेट्। चलति। अचालीत्। चलः। चालः.

चलचक्षुः, (पु०) चलः चक्षुः यस्य। चपल फुर्तीली आंखवाला। चकोर.

चलन, (त्रि०) चल्+भावे ल्युट्। चलनेवाला। हिलनेवाला। कांपनेवाला। (न०-पु०) पाद। पैर (पाव).

चला, (स्त्री०) चल्+अच्। चलनेवाली। लक्ष्मी.

चलाचल, (त्रि०) चल्+अच्-नि०। अत्यन्त चपल। चालू। कौआ (पु०).

चलात्मन्, (त्रि०) चलः आत्मा यस्य। चल स्वभाव। चपल मनवाला.

चलित, (त्रि०) चल्+क्त। कांपाहुआ। हिलाहुआ। चलागया। जुदाहोगया.

चलुः, (पु०) चल्+उन्। जलका घूंट.

चलुकः, (पु०) चलुना मीयते+कन्। अंजलीभर पानी। पानीकी चुल्ली.

चलेन्द्रिय, (त्रि०) चलानि इन्द्रियाणि यस्य-ब० स०। चपलइन्द्रियोंवाला.

चलेषुः, (पु०) चलः इषुः यस्य। चपल तीरवाला। जिसका तीर लक्ष्य (निशान) पर नहीं लगता.

चषति, (स्त्री०) चष्+अति-भावे। भक्षण करना। खाना। मारना.

चष्, खाना। भ्वा० उभ० सक० सेट्। चषति-ते। अचाषीत्-अचषीत्.

चषक, (पु० न०) चष्-करना+क्वुन्। मद्यपानपात्र। शराब पीनेका पात्र (पियाला)। "कर्मणि वुन्" इससे। एक प्रकारकी मद्य (न०).

चषाल, (पु०) चष्+आलच्। यज्ञका पशु बांधनेके लिये लकड़ी। यूप (खंभा) के मध्यमें देनेयोग्य कड़ेके भांति लकड़ी वा लोहेका पदार्थ.

चह्, ठगना। भ्वा० पर० सक० सेट्। चहति। अचहीत्.

चाकचक्य, (न०) चक्+अच्। चकः। प्रकारे द्वित्वं। चकचकः। तस्य भावः। उज्वलता। प्रकाशता। रोशनी। प्रकाश। चमक.

चाक्र, (त्रि०)-क्री (स्त्री०) चक्रेण निर्वृत्तं अण्। रथ० (गाड़ी)-से मराहुआ (युद्ध)। गाड़ीके पहियेका.

चाक्रिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) चक्रेण चरति। ठक्। चक्रके साथ संबंध रखनेवाला।-कः (पु०) कुम्हार (चाक चलानेवाला)। तेल निकालनेवाला। तेली.

चाक्रेय, (त्रि०) चक्र+ढञ्। चक्र पहियासम्बंधी। चक्रका.

चाक्षुष, (न०) चक्षुषा निर्वृत्तं+अण्। आंखसे उत्पन्न ज्ञान। देखना। नजर। दृष्ट वस्तु.

चाञ्चल्यं, (न०) चञ्चल+ष्यञ्। चञ्चलता। अस्थिर-

चाट, (पु॰) चट्-भेद । फाड़ना+णच् । पहिले विश्वास देकर पीछे धन लेजानेहारा चोर । "चाटचारणदासेषु दत्तं भवति निष्फलम्" स्मृतिः.

चाटकैर, (पु॰) चटकायाः चटकस्य वा अपत्यं एरक् । चिड़ियाका बच्चा । चटकापत्य.

चाटु, (पु॰ न॰) चट्+उण् । पियारा वचन । झूठ पियारा वचन । स्वार्थे कन्.

चाटुकार, (त्रि॰) चाटु करोति उप॰ स॰ । झूठा प्यारा वचन बोलनेवाला । चापलूसी करनेवाला.

चाटुपटु, (पु॰) चाटौ (मिथ्या परितोषणे वाक्ये) पटुः । झूठेही प्रसन्न करनेवाले वचनमें चतुर । भांड । खुशामदी । पृ॰ पक्षे च । "चाटुपटु" विदूषक । नाटकमें एक मसखरिया.

चाटूक्ति, (स्त्री॰) चाटुः उक्तिः । दूसरेके प्रसन्न करनेके लिये झूठा कथन । चापलूसीका वचन.

चाणकीन, (त्रि॰) चणकस्य भवनं क्षेत्रं, खञ् । चनों-छोलोंका खेत.

चाणक्य, (पु॰) चणकस्य मुनेर्गोत्रापत्यं+यञ् । चणक-मुनिके वंशमें हुआ । नौ नन्दोंको मारकर चन्द्रगुप्त राज्य देनेहारा विष्णुगुप्त (कौटिल्य) । प्रसिद्ध नीतिशास्त्रका बनानेहारा । एक नीतिका पुस्तक.

चाणूर, (पु॰) चण्+ऊरण् । कंस राजाका बड़ा पहिल-वान (मल्ल).

चाणूरसूदन, (पु॰) चाणूरं सूदयति+ल्युट् । चाणूरको मारनेहारा । श्रीकृष्ण.

चाण्डाल, (पु॰) चण्डाल एव+अण् । चण्डालही चाण्डाल । अन्त्यज । श्वपच.

चातक, (पु॰) चतति (याचते) सततं अम्भः (मेघं) चत्+ण्वुल् । जो सदा बादलका पानी मांगता है । चकवा । पपीहापक्षी.

चातकानन्दन, (पु॰) चातकं आनन्दयति–उप॰ स॰ । पपीहेको आनंद देनेहारा । वर्षाऋतु । बसांत.

चातुरक्ष, (न॰) चतुर्भिः अक्षैः निष्पाद्यते+अण् । चौपड़ खेलनेके चार पासे.

चातुरर्थिकः, (पु॰) चतुर्षु अर्थेषु विहित+ठक् । व्याकरणमें चार भिन्न अर्थोंमें शब्दके साथ प्रयोग कियागया एक प्रत्यय.

चातुराश्रमिक, (त्रि॰) चतुर्षु आश्रमेषु विहितः+ठक् । चार आश्रमोंमें विधान कियागया । चारोंमेंसे ब्राह्मणका एक आश्रम.

चातुरिकः, (पु॰) चतुरी=रथचर्यां वेत्ति+ठक् । रथकी सैरकी जाननेवाला । रथवाही । सारथि । गाड़ी चलानेवाला.

चातुरी, (स्त्री॰) चतुरस्य भावः । तस्येदं वा–अण् । चतुराई । होशयारी । छल.

चातुर्मास्य, (न॰) चतुर्षु मासेषु विहितं+ण्य । चार महीनोंमें विधान कियागया । चार महीनोंमें समाप्त होनेवाला यज्ञ वा व्रत । आषाढशुदी द्वादशीसे ले कार्तिकशुदी द्वादशीतक चार महीने (जो शुभ कर्मके लिये वर्जित).

चातुर्य, (न॰) चतुरस्य भावः+ष्यञ् । चतुराई । रूप सुन्दरता.

चातुर्वर्ण्य, (न॰) चत्वारः (ब्राह्मणादयः) वर्णाः । स्वार्थे ष्यञ् । ब्राह्मण आदि चारों वर्ण । "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं" गीता । "भावे ष्यञ्" । "चातुर्वर्ण्य" चारों वर्णोंका धर्म.

चातुष्पथ, (त्रि॰) चतुष्पथं वेत्ति+अण् । चारों ओर जानेवाला.

चान्दनिक, (त्रि॰)–की (स्त्री॰) चंदनेन सुगन्धि-चंदनका बनाहुआ । चंदनसे निकालाहुआ । चंदनरससे सुगन्धित कियागया.

चान्द्र, (पु॰) चन्द्रः देवता अस्य । तस्येदं वा–जिसका देवता चन्द्रमा है । वा चन्द्रमाका यह । चन्द्रकान्तमणि । तीस तिथिओंवाला पौर्णमासी वा अमावास्यातक एक महीना । चान्द्रायणव्रत (न॰) । चन्द्रमाका लोक (पु॰) । "चन्द्रेण प्रोक्तं" अण् । चन्द्रमाका कहागया । एक प्रकारका व्याकरण । "तदधीते" । "चान्द्र" चान्द्रव्याकरण पढनेहारा (त्रि॰).

चान्द्रमस, (त्रि॰)–सी (स्त्री॰) चन्द्रमस इदं । चन्द्रमाके साथ संबंध रखनेवाला । चन्द्रमाका वा चन्द्र-

चान्द्रायण, (न॰) चान्द्रः (चन्द्रलोकः) अयनं अय्+ल्युट् फलम् । जिससे चन्द्रलोक मिलता है व्रतका भेद.

चाप, (पु॰) चपस्य (वंशभेदस्य) विकारः । बांससे बनाहुआ । "अण्" । धनुष् । कमान । मेषसे नवमी राशि.

चापल, (न॰) चपलस्य भावः कर्म वा अण् । चंचल होना । दिलको आराम न होना । बिना सोचे काम करना । प्रयोजनबिन हाथपांवका हिलाना । चंचलता बेकरारी । "ष्यञ्" चापल्य (यही अर्थ).

चापिन्, (त्रि॰) चापः अस्ति अस्य इनि । धनुष चढायेहुए.

चामर, (पु॰ न॰) चमरस्य विकारः । चमर (गाय) की पूंछका बनाहुआ पंखा.

चामरग्राहः–ग्राहिन्, (पु॰) चामरं गृह्णाति । चंवर करनेवाला.

ामीकर, (न०) चमीकरे (आकरभेदे) भवः अण् । चमीकर नामी खानसे उपजा । सोना । स्वर्ण । धतूरा.

ामुण्डा, (स्त्री०) चमूं (सेनां-चिक्षुरादिमहासुरसैन्यं) लाति (आदत्ते) । ला+क । आकाशादि समूहरूप सेनाको ग्रहण करनेवाली । दुर्गादेवी । चण्ड और मुण्डको लानेवाली । "यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता । चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि".

ाम्पेयक, (न०) चम्पायां भवः+ढक्, ततः स्वार्थे कन् । चम्पक । चंपेका फूल । नागकेसर । सोना । किञ्जल्क.

ाय, दर्शन । देखना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । चायति-ते । अचायीत्-अचासीत् । अचायिष्ट-अचास्त.

ार, (पु०) चर एव+स्वार्थे अण् । चर । गुप्तदूत । "चारैः पश्यन्ति राजानः" इति नीतिशास्त्रम् । चर्+भावे घञ् । गमन । जाना । आधारे घञ् । कारागार (जेलखाना) । कैदखाना । कृत्रिमविष । बनावटी जहिर (न०).

ारण, (पु०) चारयति (कीर्ति) चर्+णिच्+ल्यु । यशको फैलानेहारा । कीर्तिप्रचारक । नट.

ारु, (पु०) चर्+उण् । बृहस्पति । मनोहर । सुन्दर । कान्त (त्रि०).

ार्चिक्य, (न०) चर्च्+धात्वर्थे ण्वुल् । चर्चिका । "स्वार्थे ष्यञ्" । चन्दन आदिसे शरीरको लीपना.

ार्म, (पु०) चर्मणा परिवृतः रथः अण् । चमडेसे ढका हुआ रथ । चारोंओर चमडेसे मढीहुई गाडी.

ार्वाक, (पु०) चारुः (लोकसिद्धः) वाकः (वचनं) यस्य (पु०) जिसका वचन संसारको अच्छा लगे । प्रत्यक्षप्रमाणको माननेहारा लौकायतिक (नास्तिक) । इस मतके चलानेवाले बृहस्पति हैं । एक राक्षसका नाम.

ार्वी, (स्त्री०) चारु+ङीप् । सुन्दर । सुन्दर स्त्री । चांदनी । बुद्धि । प्रकाश । कान्ति । दमक । कुबेरकी स्त्रीका नाम.

ालः, (पु०) चल्+ण । पक्षी छत । नीला । गरुड.

ालनम्, (न०) चल्+णिच्+भावे ल्युट् । हिलानेवाला । कंपानेवाला.

ालनी, (स्त्री०) चाल्यते धान्यादि अनया । चल्+णिच्+करणे ल्युट् । जिससे धानआदि छानते हैं । अपने आपको बहुत छेदोंवाला धानआदि चलनेका साधनरूप पदार्थ । छलनी.

ाष, (पु०) चष्-खाना+णिच्-अच् । सोनेकीसी चोटीवाला नीलेरंगका पक्षी । नीलकण्ठ.

चि, चयन-चुनना । स्वा० उभे भ्वा० उभ० द्विक० अनिट् । चयति-ते । चिनोति-ते । अचैषीत्-अचैष्ट । अचेषीत्-अचेष्ट

चिकित्सक, (पु०) कित्-रोगापनयन । रोग दूरकरना । इलाजकरना । "स्वार्थे सन् ण्वुल्" । रोग दूर करनेवाला वैद्य । हकीम.

चिकित्सा, (स्त्री०) कित्+स्वार्थे सन्+भावे अ । रोगप्रतीकार-करण । रोगका उपाय करना । बीमारीका इलाज करना.

चिकित्सित, (त्रि०) कित्+स्वार्थे सन्+कर्मणि क्त । चिकित्सा कियागया । इलाज कियागया.

चिकित्स्य, (त्रि०) चिकित्सयितुं योग्य । अर्हार्थे ण्यत् । उपायके योग्य (रोग) । इलाजके लायक । (बीमारी) रोग छुडानेलायक जन.

चिकीर्षक, (त्रि०) कृ+सन्+ण्वुल् । करनेकी इच्छा करनेवाला.

चिकीर्षा, (स्त्री०) कृ+सन्+अ । करनेकी इच्छा । इच्छा । चाह । ख्वाहिश.

चिकीर्षित, (त्रि०) कृ+सन्+क्त । चाहागया । करनेकी इच्छा कियागया ।-तं (न०) संकल्प । इरादा । प्रयोजन.

चिकीर्षु, (त्रि०) कृ+सन्+उ । करनेकी इच्छा करनेवाला.

चिकुर, (पु०) चि-इति अव्यक्तं शब्दं कुरति । कुर+क । जो "चि" इस शब्दको धीरेसे करे । केश । बाल (सिरके) । एक वृक्ष । पर्वत । और (सांपआदि) सरीसृप । चपल । चञ्चल । तरल (त्रि०).

चिक्क्, पीडन । तकलीफ पहुंचाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चिक्कयति-ते.

चिक्कण, (पु०) चिक्+क्विप् । चिक्, तं कणति+कण्-शब्द-आवाजकरना+अच् । सुपारी वृक्ष । उसका फल (न०) चिकना (त्रि०) । चिकनेपन गुणवाली हरड भी (स्त्री०).

चिक्किरः, (पु०) चिक्+इरच् । मूषक । मूसा । चूहा.

चिच्छ्वासः, (पु०) चित्तः उल्लास । हृदयको प्रसन्न करनेहारा.

चिच्छक्ति, (स्त्री०) चिदेव शक्ति । चैतन्यरूप सामर्थ्य । मन और बुद्धिकी ताकत । "चिच्छक्तिः परमेश्वरस्य विमलं चैतन्यमेवोच्यते" । चैतन्य.

चिञ्चा, (स्त्री०) "चि" इति अव्यक्तं शब्दं चिनोति । चि+ड । इमलीका दरख्त । तिन्तिडीका वृक्ष.

चिट्, प्रेषण । भेजना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चेटति । अचेटीत्.

चित्, ज्ञान । जानना । भ्वा० पर० पक्षे चुरा० आत्म० सक० सेट् । चेतति-चेतयते । अचेतीत्.

चित्, स्मृति । याददाश्त । चुरा० उभ० सक० सेट् । चिन्तयति-ते.

चित्, (स्त्री०) चित्+सम्पदा० क्विप् । ज्ञान । चैतन्य । होश.

चित्, (अव्य०) चित्+क्विप् । असाकल्य । अपूर्ण । जैसे किञ्चित्.

चित, (त्रि०) चि+क्त । चुनाहुआ इकट्ठा किया । ढेर । समूह । दुर्देको जलानेके लिये इकट्ठी हुई (चिता) (स्त्री०).

चिति, (स्त्री०) चित्+क्तिन् । चिता । समूह । चुना । (वेदान्तमें) निर्विषयसंवेदन । ऐसा ज्ञान कि जिसका विषय कोई नहीं । "निर्विशेषचितिरेव केवला" इति संक्षेपशारीरके । प्रासाद (महल) आदिमें ईंटोंकी गिनतीको जानेके लिये अंकशास्त्रमें कहागया "चय" इस नामसे प्रसिद्ध एक पदार्थ । आगका एक स्थान.

चित्त, (न०) चित्यते (ज्ञायतेऽनेन) चित्+क्त । जिससे जानते हैं । बुद्धि । मन । (वेदान्त) अनुसन्धान । (सोचना) स्मरणादि (खयाल) वाला अन्तःकरण । चित्तकी लहरी.

चित्तविक्षेप, (पु०) चित्तं विक्षिपन्ति (योगात् अपनयन्ति) क्षिप्+अण् । जो चित्तको योगसे हटालेते हैं । योगशास्त्रमें कहेगये योगके विरोधी व्याधिआदि नौ.

चित्तविभ्रम, (पु०) चित्तस्य विभ्रमः अनवस्थानं यस्मात् ५ ब० । जिससे चित्त स्थिर न रहे । उन्माद रोग । पागल होनेकी बीमारी.

चित्ताभोग, (पु०) सम्यक् भोग आभोग एकविषयता । ६ त० । चित्तका [illegible] लगना । इसका कारण अहंकार । चित्तका एक ओर लगना.

चित्तिः, (स्त्री०) चित्+भावे क्तिन् । खयाल करना । [illegible] । [illegible] । बुद्धि । ज्ञान.

चित्य, (पु०) [illegible] । चित्+यत् । जो चिनी जाती है । [illegible] । चिता (स्त्री०).

चित्र, ([illegible] । [illegible] होना । [illegible]) । (मूर्ति [illegible]) । [illegible] । चुरा० उभ० सक० सेट् । [illegible]

चित्र, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] वा [illegible] । [illegible] । यमका भेद । "[illegible]" यह [illegible] है । [illegible] वृक्ष । (चित्रा) [illegible] वृक्ष । [illegible] । [illegible] । एक प्रकारका कोढ़ । [illegible] नाना [illegible] । [illegible] (त्रि०) [illegible] । [illegible] । एक शब्दालंकार [illegible] (न०) । "[illegible]" [illegible] । ([illegible]) एक प्रकारका वृक्ष । "चित्र इव [illegible]" [illegible] । एक प्रकारका [illegible] ([illegible]).

चित्रकर, (पु०) चित्रं करोति [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible]

चित्रकार, (पु०) चित्रं करोति । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । "[illegible]" [illegible]

चित्रकूट, (पु०) चित्रं कूटं [illegible] । [illegible] चित्र है । एक पहाड़.

चित्रगुप्त, (पु०) यमका भेद । "[illegible]" इति तर्पणम्.

चित्रपट, (पु०) चित्रः पटः । रंगबरंगी [illegible] । मूर्ति । तसवीर.

चित्रपादा, (स्त्री०) चित्रौ पादौ यस्याः [illegible] हैं । सारिका पक्षी । मैना इस नामका पक्षि.

चित्रभानु, (पु०) चित्रा भानवः यस्य । [illegible] चित्र [illegible] । अग्नि । आग । सूर्य । [illegible] दरख्त.

चित्ररथ, (पु०) चित्रः रथः यस्य । जिसका [illegible] है । सूर्य । सूरज । गंधर्वभेद । एक गंधर्व [illegible] [illegible]का राजा । कश्यपके सोलह पुत्रोंमेंसे एक.

चित्रलेखा, (स्त्री०) अप्सरोभेद । [illegible] [illegible] कन्या) उषाकी सखी (सहेली) । [illegible] [illegible] पादवाला एक प्रकारका छन्द.

चित्रशिखण्डिन्, (पु०) चित्रः शिखण्डः [illegible] इनि । अजीब चोटीवाला । "मरीचि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, और वसिष्ठ ये [illegible] सात मुनि.

चित्राङ्गद, (पु०) शान्तनुराजाका पुत्र । [illegible] भाई । एक गन्धर्व.

चित्राक्षी, (स्त्री०) चित्रं [illegible] यस्याः । जिसका [illegible] अंग हो । मजीठ । कणेगलीका । [illegible].

चिदाकाश, (न०) चित् आकाशं इव । ([illegible] सबका आधार होनेसे) चैतन्य मानो आकाश ([illegible]) ब्रह्म.

चिदाभास, (पु०) चित् आभासः (प्रतिबिम्ब) [illegible] परछाहीं । बुद्धिमें आत्माका प्रतिबिम्ब । [illegible]

चिद्रूप, (पु०) चित् एव रूपं यस्य । जिसका [illegible] है । आत्मा । [illegible] । [illegible] । परमेश्वर

चिन्ता, (स्त्री०) चिन्ति+अ । पहिले अनुभव [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) फिकर । सोच.

चिन्तामणि, (पु०) चिन्तितप्रदाता मणिः । [illegible] [illegible] उत्पन्न करनेवाला मणि । [illegible] [illegible] वस्तुको देनेवाली मणि । एक मणि जो [illegible] [illegible] । बुद्धदेव.

चिन्मय, (पु०) चित्+मयट् । चित्र । [illegible] [illegible] परमेश्वर । "[illegible]" [illegible] [illegible].

चिन्मात्र, (न०) चित् एव । [illegible].

चिपिट, (पु०) [illegible] । एक प्रकार [illegible] । [illegible].

चिरम्, (अव्य॰) दीर्घ । चिरसे । देरीसे.

चिरक्रिय, (त्रि॰) चिरकालेन क्रिया यस्य । जो देरी-से काम करता है । दीर्घसूत्र । ढीला काम करनेवाला । आलसी.

चिरजीविन्, (पु॰) चिर जीवति+णिनि । जो देरतक जीता है । कौआ । जीवकवृक्ष । सेमलका पेड । मार्कं-ण्डेय । "अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम ये" सात देरतक जीने-वाले (त्रि॰).

चिरण्टी, (स्त्री॰) चिरेण ऊढाऽपि पितृगृहस्थ भर्तृगृहं । अट्+अच् (पु॰) जो पिताके घरसे पतिके घरको देरमें जाती है । पिताके घरमें निवास करनेहारी युवती (जवान औरत) (स्त्री॰).

चिरन्तन, (त्रि॰) चिरे भव+अर्थ । चिरकाल । देरका । पुरातन । पुराना.

चिरन्तन, (त्रि॰) चिर+अनु+तुट्च । पुरातन । पुराना । "ङीप्".

चिरराजाय, (अव्य॰) बहुकाल । बहुत समय । देरतक.

चिरायुष्, (पु॰) चिरं आयुः यस्य । जिसकी बडी उमर हो । देवता । देरतक जीनेवाला (त्रि॰).

चिर्भेंटी, (स्त्री॰) चिरेण भटति । अच्+ङीष् (पु॰) कचरी । ककडी । खीरा । फल.

चिल्, शिथिल्य । ढीलाढोला । भ्वा॰ पर॰ अक॰ सेट् । चिलति । अचिलीत्.

चिल्ल, (पु॰) चिल्+अच् । चीलनाम पक्षी । चुनसेचुए नेत्रवाला (त्रि॰).

चिल्लाभ, (पु॰) चिल्ल इव प्रकाश द्वारिणम् आभाति । आ+भ । (चोरके लेजानेके कारण) चीलकी तरह प्रतीत होनेवाले । चोर.

चिह्नक, (न॰) चिह्न्+धञ् । दागना । पु॰ हलः । कोटके सीधेका अग्र । ढोली । "स्पर्शे वधू" यही अर्थ । पुष्कर शब्द.

चीक्, वत्सन । सिखना । सत्पत्ति । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चिकयति-ते.

चीन, (न॰) चिन्+अप् । कामदेव । लक्षण । निशान । दाग । वत्सक (दांत).

चीन, (पु॰) चि+नक् । पु॰ दीर्घ । एक देशका नाम । चीनदेश । एकप्रकारका हरिण । एकप्रकारका महीन कपडा । चीनदेशके लोग (बहुवचन).

चीनाकर, (पु॰) चिर इति अक्षरत्वरूप कपट पु॰ वत् । एकप्रकारकी कपडेकी अयाच । पोशाक । चीन कपड.

चीम्, मनोरथा । बडाई करना । भ्वा॰ आत्म॰ सक॰ सेट् । चीमति.

चीर, (न॰) चि+क्रन्-दीर्घश्च । वल्कल । फटाहुआ कपडा । "चीराणि किं पथि न सन्ति" इति भागवतम् । (चंदी)

चीर्ण, (त्रि॰) चर्+क्त इ॰ । जो चला हुआ है । किया हुआ । इकट्ठाकिया । सीखाहुआ । कटगया.

चीव्, ग्रहण-लेना । संवृति-ढांकना । भ्वा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चीवति-ते । अचीवीत् अचीविष्ट । अचिचीवत्-त.

चीव्, चमकना । दीप्ति । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चीव-यति-ते, चिचीव.

चीवर, (न॰) चि+ष्वरच् । दीर्घश्च । भिक्षुकका । कटि-का कपडा । संन्यासीका वस्त्र । चिथडा (लंगोटी आदि).

चुक्क्, पीडन । पीडा देना । व्यथित करना । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चुक्कयति-ते । अचुचुक्कत्-त.

चुट्, अल्पीभव । थोडा होना । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चुटयति-ते.

चुट्, काटना-छेदन । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । [illegible] । चुटयति-ते

चुड्, [illegible] । भ्वा॰ पर॰ अक॰ सेट् । चोडति । अचुचुडत्-अचोडीत्.

चुड्ड्, [illegible] । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चुड्डय-ति-ते.

चुण्ट्, अल्पगति । थोडे चलना । भ्वा॰ पर॰ अक॰ सेट् । चोण्टति । अचोण्टीत्.

चुद्, भुगता । भुगतना । चुरा॰ उभ॰ व भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट् । चुदयति-ते । चुचोद । अचूचुदत्-त । अचु-दीत्

चुनक, (पु॰) चुद्+ण्वुल् । [illegible] । [illegible] । धूर्त । शठ । चुनेवाला (त्रि॰)

चुर, [illegible] । [illegible] । चु॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चोरयति-ते । चोरति । अचूचुरत् । अचोरीत्

चुरा, (स्त्री॰) चुर+अच्-टाप् । चोरी । चोरी.

चुल्, [illegible] । [illegible] । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । चोलयति-ते । अचूचुलत्-त

चुलुक, (पु॰) चुल+उकन् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) (न॰) चुल्लू.

चुल्ल, (पु॰) [illegible] । [illegible] (पु॰)

चुल्लि-ल्ली, (स्त्री॰) [illegible] । [illegible] । चूल्हा.

चूडा, (स्त्री०) चुड्+अङ्+स्त्री० । मोरकी शिखा (चोटी) मस्तकके मध्यमें रहनेवाली शिखामात्र (चोटी) । जुटिका (जूडा) । मकुट्या भूषण । बाले । भूषणमात्र । कूप (कूआ) । इस प्रकारके संस्कारोंमें एक । "प्रथमेऽब्दे तृतीये वा" मनुः.

चूडामणि, (पु०) ६ त० । शिरोरत्न । शिरकी मणि.

चूडाल, (न०) चूडा (शिखा) अस्ति अस्य । [illegible] । शिर । मस्तक । शिखावाला जन (त्रि०) । शिरोरत्न । [illegible].

चूर्, [illegible] । [illegible] । चुरा० उभ० सक० सेट् । चूरयति । [illegible].

चूर (पु०) चुर+अच्+डु० । चूराकना । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (न०) । "[illegible]" [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (कुस).

चूर्ण, [illegible] । [illegible] । चुरा० उभ० सक० सेट् । चूर्णयति ते.

चूर्ण, (पु०) [illegible] । [illegible] चूर्णी । अबीर [illegible] । [illegible] । "[illegible]" [illegible]

चूर्णक, (पु०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) । "[illegible]" [illegible] । [illegible] [illegible] (न०) । [illegible] । [illegible].

चूर्णकुन्तल (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]).

चूर्ण[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible]

चूर्णि[illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible].

[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible]

चेतन, (पु०) चित्+युन् । आत्मा । मन । [illegible] प्राणी । चैतन्यवाला (त्रि०).

चेतनकी, (स्त्री०) चेतनं करोति । [illegible] । [illegible] तकी । हरीड़ । जो चेतन बनाती.

चेतना, (स्त्री०) चित्+युच्+टाप् । बुद्धि । [illegible] जाना.

चेतनावत्, (त्रि०) चेतना+मतुप् । चेतना होनेवाला.

चेतस्, (न०) चित्+असुन् । चित्त । हिय । [illegible] "भाशी चेता केशवो निर्गुणश्च" इति श्रुतिः.

चेतोजन्मन्, (पु०) चेतसः जन्म यस्य । [illegible] कामदेव । प्यार.

चेतोमुख, (पु०) चेतो मुखं द्वारं यस्य । [illegible] द्वार है । (वेदान्तमें) सुषुप्ति अभिमानी [illegible]

चेतोविकार, (पु०) चेतसः विकार । [illegible] [illegible] । क्षोभ.

चेदि, (पु०) एकदेश । उस देशमें रहनेवाले लोग [illegible]

चेदिपति, (पु०) चेदीनां पतिः । चेदिदेशका [illegible] दमघोषका पुत्र । "चेदिराज" "चेदिभूप" [illegible] इसी अर्थमें.

चेल्, जाना । चलना । चपल होना । भ्वा० प० [illegible] सेट् । चेलति । अचेलीत्.

चेल, (न०) चिल, आच्छादन करना+कर्मणि घञ् [illegible] कपड़ा । पोशाक । (समासके अन्तमें आवे) [illegible] कुत्सित । "आर्यचेल" अधम मनुष्य । "चेल[illegible]" [illegible] । धोती.

चेल्ल, [illegible] । [illegible] । जाना । भ्वा० प० [illegible] [illegible] । अचेल्लीत्.

चेष्ट्, [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

चेष्टा, (स्त्री०) [illegible] । "[illegible]" [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible]

चेष्टित, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

चैतन्य, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

चैत्र, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible]

त्यगृह, (न०) चैत्यस्य समीपे गृहम्। (चौकमें) चैत्यके पासका घर.

त्र, (पु०) चित्रा नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी चैत्री सा अस्मिन् मासे+अण्। जिस महीनेमें चित्रा नक्षत्रवाली पूर्णिमा हो। चैतका महिना। "चैत्रिक ठक्" "कन् चैत्रकः" यही अर्थ। "चैत्रक" एक पहाड़.

त्ररथ, (पु०) चित्ररथेन (गन्धर्वेण) निर्वृत्तं+अण्। चित्ररथ नामी गन्धर्वके बनाया। कुबेरोद्यान। कुबेरका बाग। उद्यान.

त्य, (पु०) चेदीनां (जनपदानां) अयं ष्यञ्। शिशुपाल.

चोदना, (स्त्री०) चुद्+युच्। "चोदना, उपदेश, और विधि एकही अर्थको बतलाते हैं"। प्रवर्तनावाक्य। उपदेशका वचन। "चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः" इति मीमांसासूत्रम्। प्रेरण। तर्जना। झिड़कना.

चोद्य, (न०) चुद्+ण्यत्। प्रश्न। सवाल। पूर्वपक्ष। अजीब। प्रेरणाके लायक (त्रि०).

चोर, (पु०) चुर्+अच्। स्तेयकर्ता। चोरी करनेवाला। दूसरेका द्रव्य उठालेजानेवाला। एकप्रकारका गंधवाला द्रव्य.

चोल, (न०) चुल्+घञ्। स्त्रियोंका कञ्चुक नामी चौबन्द कपड़ा। चोला इस नामसे प्रसिद्ध पुरुषोंका वस्त्र। द्राविड और कलिङ्गके बीचका एक देश.

चोली, (स्त्री०) अल्पः चोलः। ङीप्। छोटा कंचुक। अंगिया.

चोष्य, (त्रि०) चूष्+ण्यत् (पु०) चूसने लायक। इक्षु-दण्ड (गन्ना) आदि। एक प्रकारका खाना (भक्ष्य).

चौड-ल, (न०) चूडा प्रयोजनं अस्य+अण्। चूड़ाकर्म। एक संस्कार (जिसमें बालकके बाल उतरवाते हैं)। डको ल विकल्पसे होता है.

चौर्य, (न०) चोरस्य भावः+ष्यञ्। चोरपन। चोरी। लुटेरबाजी। ठगपन.

चौर्यवृत्ति, (स्त्री०) चौर्यस्य वृत्तिः। चोरीका स्वभाव.

च्यवन, (न०) च्यु+ल्युट्। धीरे २ चूना। एक ऋषिका नाम.

च्यु, गति। जाना। भ्वा० आत्म० सक० अनिट्। च्यवते। अच्योष्ट.

च्यु, हास-हँसना। सहन-सहारना। चुरा० उभ० सक० अनिट्। च्यावयति-ते। अचुच्यवत्-त

च्युत्, क्षरण। बहना। बहना। भ्वा० पर० अक० सेट्। च्योतति। अच्युतत्। चुच्योत। अच्योतीत्.

च्युति, (स्त्री०) च्यु+क्तिन्। क्षरण। झरना। गिरना। बहना। नाश। "अपादाने क्तिन्" गुदा.

च्योत, (त्रि०) च्यु-गति+कर्मणि क्त। जानेवाला। छोड़ा-हुआ। बरमाश। धर्मसे रहित। अपनेसे करता हुआ। त्यागके योग्य.

छ

छ, (त्रि०) छो+क छेदक। काटनेहारा। निर्मल। साफ और चपल। घर (न०).

छगल, (पु०) छो+कलन् गुक्च्। एकप्रकारका पशु। छाग। बकरा.

छटा, (स्त्री०) छो+अटन्। दीप्ति। प्रकाश। चमक। परम्परा। लगातार.

छत्र, (पु०) छद्+णिच्-ष्ट्रन्-ह्रस्वः। गुंब। छिलीन्ध्र। और सोयेका साग। छाता। छतरी (न०).

छत्रक, (पु०) छत्रं इव कायति। कै+क। एक वृक्ष। एक प्रकारका पक्षी। "स्वार्थे कन्" छाता (न०).

छत्रधरः-धारः, (पु०) छत्रं धारयति उप० स०। छाता धारण करनेवाला। छाता उठानेवाला.

छत्रभङ्ग, (पु०) छत्रस्य भङ्गो यत्र। जहां छातेका भंग होगया। नृपनाश। राजाका नाश। वैधव्य। रंडापन। पराधीनता। तावेदारी। अस्वातन्त्र्य.

छत्राक, (न०) छत्रा [illegible] कायति (कै+क)। छिलीन्ध्र.

छद्, छादन-ढांकना। चुरा० पक्षे भ्वा० उभ० सक० सेट्। छदति-ते। छादयति-ते.

छद, (पु०) छद्+क। पत्र। पक्षियोंका पर। तमालपत्र। ग्रन्थिपर्ण.

छदन, (न०) छद्+ल्युट्। पत्र। पर। पक्ष। त्वचा। छाली। "भावे ल्युट्"। छिपाव। ढकना। बंदकरना.

छद्मपत्र, (पु०) छद्मार्थं पत्रं अस्य। जिसका पत्ता ढकने-के काममें आता है। भूर्जपत्र। भोजपत्र। मुनिलोग इसे पहिरते हैं.

छदि, (पु०) छद्+इन्। पटल। छान। छत। घरको आ-च्छादन करनेहारा तृणसमूह। ओलवत्स.

छद्मतापस, (पु०) छद्मना (छलेन) तापसः। छलसे तपस्या करनेहारा। लोगोंको ठगनेके लिये अपनेको तपस्वी प्रकट करनेकी इच्छासे तपस्वियोंके वेशको धारण करने-हारा। तपस्वियोंका काम करनेहारा बैडालव्रतिक (बिल्ले-का व्रत करनेवाला).

छद्मन्, (न०) छादयते स्वरूपं अनेन। छद्+मनिन्। जिसके द्वारा स्वरूप छिपाया जाय। कपट। छल.

छन्द, (पु०) छदि-संवरण-ढांकना। चतुर्थीके अर्थके अर्थ होनेसे यहां इच्छा (चाह) अर्थमें घञ् प्रत्यय हुआ। अभिलाष। चाह। वश्यता। आधीनता। विषभेद.

छन्दस्, (न०) छदि+असि। वेद। अपनी इच्छासे चल-ने वाली। स्वेच्छाचार। अभिलाष। चाह। पद्यवेदमें छन्द। पद.

छन्दोग, (पु०) छन्द (सामवेदं) गायति-गै+क। साम-वेद पढ़नेवाला ब्राह्मण.

छन्न, (त्रि०) छद्+णिच्+क नि०। आच्छादित। ढका-हुआ। निर्जन (एकान्त) तनहा (न०).

छर्द्, वमन-ऊपर छल होना। चुरा० उभ० सक० सेट्। छर्दयति-ते.

छर्दन, (पु०) छर्द+णिच्+ल्यु। नीमका वृक्ष। मदनका वृक्ष। "भावे ल्युट्" वमन (ऊपर छल होना) (न०).

छर्दि-र्दी, (स्त्री०) छर्द+णिच्+इन्। वमनरोग। वा ङीप्। वान्ति।

छल, (न०) छो+कलच्। शाठ्य। शरारत। स्वरूपको छिपाना। (न्यायमें) किसी और तात्पर्यसे प्रयोग कियेगये शब्दको वादीने दूसरे अर्थमें लगाना। प्रतिवादीसे दियागया दूषण। जैसे यह "नेपालसे आया है क्यों कि इसके पास नव कम्बल है" ऐसे वादीद्वारा कहेजानेपर "नव" शब्द "नये" इस अर्थमें लगाये जानेपरभी प्रतिवादीद्वारा "नव"-का नौ (संख्या) अर्थकी कल्पनासे यह कहना कि इसके पास तो एकही कंबल है नौ कम्बल कहां है इस प्रकार दोष लगाना.

छलना, (स्त्री०) छल। छलकरोति+णिच्+भावे युच्। वञ्चना। दूसरेको ठगाना.

छल्ली, (स्त्री०) छद्+क्विप् तां लाति। ला+क ङीप्। वल्कल। छाल। लता। बेल। सन्तति। औलाद.

छवि, (स्त्री०) छ्यति अपारं, छिनत्ति तमो वा नि०। अपारको दूर करती है। अंधेरेको काटती है। शोभा। कान्ति। चमक। भक्ष.

छाग, (पु०) छो+गन्। छगल। बकरा। स्त्रियां ङीप्। पुरोडाश। बद। "इदमर्थे अण्" बकरीका दूध। बकरेका मांस (न०).

छागवाहन, (पु०) छागो वाहनं अस्य। बकरा जिसकी सवारी है। अग्नि.

छात, (त्रि०) छो+कर्मणि-कर्तरि वा क्त। कटाहुआ। छिन्न। दुर्बल। कमजोर। "छातोदराम्बुधारैः" काव्य० प्र० १ उ.

छात्र, (त्रि०) गुरोर्दोषाच्छादनं छत्रं, तच्छीलं अस्य+ण। गुरुके दोषके छिपानेवाला शिष्य। शिष्य। चेला। छत्रका छात्र (न०)

छादन, (न०) छद्+णिच्+ल्यु। नीलका खिलाहुआ वृक्ष। "भावे ल्युट्" छादन। पर्दा। ढकना। "करणे ल्युट्" पत्र। पत्ता (न०).

छान्दस, (पु०) छन्दो वेदं अधीते+अण्। वेद पढनेवाला.

छान्दोग्य, (न०) छन्दोग+अण्ण्यत् बै ब्य। सामवेदकी उपनिषद्। छन्दोग पढनेवालोंका धर्म। सामवेदपढनेवाला छन्दोगाः.

छाया, (स्त्री०) छो+ण। आतपाभाव। धूप रहित। कान्ति। चमक। प्रतिबिम्ब। परछाई। पंक्ति। रिश्वत। घूंस। पंक्ति। कतार। सूर्यकी स्त्री। रोके पादवाला एक छन्द.

छायातनय, (पु०) ६ त०। शनैश्चर। "छायापुत्र" यही अर्थ। शनैश्चर.

छायातरु:-द्रुम:, (पु०) छायाप्रधानतरु:। वृक्ष। बहुत सायेदार दरख्त.

छायाद्वितीय, (त्रि०) छाया एव द्वितीयः यस्य। साथ दूसरी छाया है। एकान्त। अकेला.

छायापथ:, (पु०) छायायाः पन्थाः। आकाश.

छायापुरुष, (पु०) छायया पुरुष इव। उसके नाई। आकाशमें देखनेलायक अपनी उसके छायाके समानका पुरुष। (अपनी परछाईंको देखकर आकाशमें आंख उठाकर देखनेसे छायापुरुष देखा जाता है)

छायाभृत्, (पु०) छायां बिभर्ति-भृ+क्विप्। छायाको धारण करनेवाला। चन्द्रमा। चांद.

छिक्कनी, (स्त्री०) छिक् इति अव्यक्तं नासिकायां शब्दायते+अच्। ङीप्। नाकसे "छिक्" ऐसा शब्द होता है (नाकछिकनी) एक प्रकारका घास।

छिक्का, (स्त्री०) छिक् इति अव्यक्तं शब्दं करोति। छींक। क्षुत.

छिद्, काटना। रुधा० उभ० सक० अनिट्। छिनत्ति। छिन्ते। अच्छैत्सीत्। अच्छिदत्। अच्छित्त। छिद्

छिदिर, (पु०) छिद्+किरच्। कुठार। कुल्हाड़ा। अग्नि। एक प्रकारकी रस्सी। करवाल। तलवार.

छिदुर, (त्रि०) छिद्+कुरच्। वैरी। धूर्त। काटनेहारा। छेदनद्रव्य। काटनेका हथियार.

छिद्र्, भेदन। काटना। चुरा० उभ० सक० सेट्। छिद्रयति-ते। अचिच्छिद्रत्-त.

छिद्र, (न०) छिद्+रक्। छिद्र+अच् वा। दूषण। गर्त। गड्ढा। आकाश। (ज्योतिषमें) अष्टम स्थान.

छिद्रदर्शिन्, (त्रि०) छिद्रं पश्यति। दोष देखनेवाला.

छिन्न, (त्रि०) छिद्+क्त। काटागया। दूर किया गया.

छिन्नकेश, (त्रि०) छिन्नाः केशाः यस्य। जिसके बाल काटे गये हों। हजामत किया गया.

छिन्नद्रुम:, (पु०) छिन्नः द्रुमः। कटा वृक्ष।

छिन्नद्वैध, (त्रि०) छिन्नं द्वैध-द्विभावः यस्य। जिसका संशय दूर होगया हो। निस्संशय.

…नासिक, (त्रि०) छिन्ना नासिका यस्य । कटी हुई …सिका (नाक) वाला । बिननाकवाला.

…भिन्न, (त्रि०) छिन्नश्चासौ भिन्नश्च । इधर उधरसे …टा और फाड़ागया । कटा हुआ

…मस्ता, (स्त्री०) छिन्नं मस्तं यस्याः । जिसका सिर कटा … । दस महाविद्याओंमें एक महाविद्या । दुर्गा । देवी.

…मूल, (त्रि०) छिन्नं मूलं यस्य । जड़से कटा हुआ । …जिसकी जड़ काटी गई हो.

…रुह, (पु०) छिन्नोऽपि रोहति । रुह्+क । काटाहुआ …ी उगता है । तिलहस । गुड़ची (स्त्री०) गिलोय । स्वर्ण-…लती.

…द्र, (त्रि०) छिद्+रक् । इ० । दुष्ट । वैरी । …प्सव । धूर्त और छेदक । काटनेवाला । छेदन । …टना (न०).

…संशय, (त्रि०) छिन्नः संशयः यस्य । जिसका संशय …(शक) काटा गया हो । काटे गये संदेहवाला । निस्स-…न्देह । संशयरहित । पक्का किया गया.

…, काटना । चुरा० उभ० पक्षे तुदा० पर० सक० सेट् । …छोडयति-ते । छुटति । अच्छुटीत्.

…, छेद-काटना । भ्वा० पर० सक० सेट् । छोरति । …अच्छोरीत्.

…, छेदन । छेदकरना । तुदा० पर० सक० सेट् । छुरति.

…रिका, (स्त्री०) छुर्+वुन् । एकप्रकारका हथियार । …छुरी । चाकू । चाकू.

…र्द्, अड़काना । चमकना । खेलना । वमन । उल्टाउल्टीकरना । …चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । छर्दयति-ते । …छर्दति । अचच्छर्दत् । अचिच्छृदत् । अच्छर्दीत्.

…, (पु०) छो+इकन् । पदातुक पक्षी । पपैया …हिलाहुआ पक्षी । मृग । और हरिण । विदग्ध । चतुर । …नागर । नागरक (न०).

…कानुप्रास, (पु०) छेकस्य (विदग्धस्य) प्रियः अनुप्रा-…सः शाक० । पण्डितका पियारा अनुप्रास । अनुप्रासका …भेद । शब्दसम्बन्धी अलंकार.

…कोक्ति, (स्त्री०) छेकायाः विदग्धाया उक्ति. । चतुर-…स्त्रीका वचन । पेचदार वचन । वक्रोक्ति (टेढ़ावचन) …[illegible] अलंकारका भेद.

…त्तृ, (त्रि०) छिद् । तृच् । काटनेवाला.

…द्, छेदन-काटना । चुरा० उभ० सक० सेट् । छेदयति-ते.

…द, (पु०) छिद्+घञ् । काटना । तोड़ना । काटनेवाला । …भाजक । खण्ड । टुकड़ा "वंशदण्डच्छेदपिशङ्गरागा" …इति कुमार..

…दकरः, (पु०) छेदं=छिदं करोति । छेद निकालनेवाला । …लकड़ी काटनेवाला.

छेदक, (त्रि०) छिद्+ण्वुल् । काटनेवाला । विभाग (जुदा)-करनेवाला.

छेदन, (त्रि०) छिद्+ल्युट् । काटनेवाला । जुदा करनेवाला । न (न०) काटना । जुदा २ करना । फाड़ना । नाश करना । हटाना.

छेदि, (त्रि०) छिद्+इन्, काटनेवाला । तोड़नेवाला ।-दिः (पु०) बढ़ई । इन्द्रका वज्र.

छेदित, (त्रि०) छिद्+क्त । घटायागया । काटागया.

छेद्य, (त्रि०) छिद्+ण्यत् । काटनेके योग्य । काटनेलायक.

छैदिक, (पु०) छेदं नित्यं अर्हति । ठक् । वेतस । वेत्र । वेतकी छड़ी.

छो, काटना-दिवा० पर० सक० अनिट् । छ्यति । अच्छात् । अच्छासीत्.

छोटिका, (स्त्री०) चुरा० छुट्+ण्वुल् । तर्जनी और अंगूठेका शब्द । चुटकी.

छ्यु, जाना भ्वा० आत्म० सक० अनिट् । छ्यवते । अछ्योष्ट.

ज

ज, (पु०) (जि+जन्-वा ▪) (समासके अन्तमें आता है) उसमें और उससे पैदाहुआ (अधिनेत्रज, कुल-ज, जलज, अंडज), शिवजी । विष्णु । पिता । वेग । मुक्ति । विष । (छंदःशास्त्रमें) गुरुमध्यवाले तीन वर्ण (अक्षर).

जक्ष्, भक्षण-खाना । सक० । हसना । अक० अदा० पर० सेट् । जक्षिति । अजक्षीत् । जक्षित वा जग्ध.

जगच्चक्षुः, (पु०) जगतां चक्षुः इव । (सब पदार्थोंको दिखानेवाला होनेसे) संसारकी मानों आँख है । सूर्य । सूरज.

जगत्, (पु०) गम्+क्विप्-नि० । वायु । हवा । जंगम (त्रि०) लोक (न०).

जगती, (स्त्री०) गम्+क्विप् । नि० । पृथिवी । भुवन । जन । लोक । जम्बुद्वीप । दुनिया । १२ अक्षरोंके पादवाला एक छन्द.

जगत्प्राण, (पु०) जगतां प्राण. (जीवनहेतुत्वात् ।) (जीवनका कारण होनेसे) संसारका मानों प्राण है । वायु । हवा.

जगत्साक्षिन्, (पु०) जगतां साक्षीव । (सबको साक्षात् देखनेसे) संसारका मानों साक्षी (गवाह) है । सूर्य.

जगत्सेतुः, (पु०) जगतः सेतुः । जगत्का पुल । परमात्मा.

जगत्स्रष्टृ, (पु०) जगतः स्रष्टा । जगत्का रचनेवाला । ब्रह्मा । शिव ।

जगदम्बा, (स्त्री०) जगतः अम्बा वा अम्बिका=माता । जगत्की माता दुर्गा भगवतीका नाम.

जगदात्मन्, (पु०) जगतः आत्मा । जगत्का आत्मा । परमात्मा.

जगदाधार, (पु०) ६ त० । वायु । हवा । जगत्का आश्रय । "कालो हि जगदाधारः" इति स्मृतिः.

जगदीशः-पतिः, (पु०) जगतां ईशः वा पतिः । जगतोंका मालिक । परमेश्वर । परमदेव.

जगद्गुरुः, (पु०) जगतः गुरुः । जगत्का गुरु । परमेश्वर.

जगद्धात्री, (स्त्री०) धा+तृच् । ६ त० । जगत्की माता । एक दुर्गा.

जगद्योनि, (पु०) जगतां योनिः उत्पत्तिः यस्मात् । जिससे जगत्की उत्पत्ति होती है । शिव । विष्णु । हिरण्य-गर्भ । कुमार । ६ त० । पृथिवी.

जगन्नाथ, (पु०) ६ त० । जगत्का नाथ (मालिक) । विष्णु । विष्णुका क्षेत्र । विमलपीठका एक भैरव.

जग्ध, (त्रि०) अद्+क्त । वा जक्ष्+क्त । भुक्त । खाया-हुआ । खा लिया.

जग्धि, (स्त्री०) अद्+क्तिन् । भोजन । खाना । सहभोजन । इकट्ठे खाना.

जघन, (न०) हन्+यङ्+अच्-पृ० । स्त्रियोंकी श्रोणी (लङ्क)-का अगला भाग । स्त्रियोंकी कमर । जांघ । पद.

जघन्य, (स्त्री०) हन्+यङ्+अच्-(पुं०) । जघनं इव (इवार्थे यत्) जघनकी नाईं । अधम । नीच । चरम । सबसे पिछला और अहंकारी । शूद्र (पु०) उपस्थ । लिङ्ग.

जघन्यज, (पु०) जघन्ये (चरमे) जायते । जन्+ड । सबसे पीछे उत्पन्न होता है । शूद्र । कनिष्ठ । सबसे छोटा (त्रि०).

जङ्गम, (त्रि०) गम्+यङ्+अच् । गतिशक्तिसमन्वितः । चलनेकी सामर्थ्यवाला.

जङ्गल, (न०) गल्+यङ्+अच् । पृ० । वन । एकान्त । उजड़ा । मांस (पु०).

जङ्घा, (स्त्री०) जङ्घन्यते=कुटिलं गच्छति । "जंघा" शब्दके हन्धातुके आगे कौटिल्यअर्थमें यङ् हुआ । ... । (पु०) । घुटने और जानुके मध्यका अवयव । पिंडरी और घुटनेके बीचका भाग । जांघ । रान.

जङ्घाकरिक, (त्रि०) कृ+अप्-करः (विक्षेपः) ६ त० । ठन् अस्ति अर्थे ठन् । जंघाकरेण आजीवति । जंघाओंके चलनेसे आजीविका (रोजी) पाता । धावक । जिसका जीवन दौड़नेके आसरे है । दौड़नेवाला.

जङ्घाल, (त्रि०) जंघा वेगवती अस्ति अस्य । लच् । जिसकी जंघा (जांघ) में बड़ा वेग (जोर) हो । धावक । दौड़नेवाला । जंघाके सहारे जीनेवाला । हरिण मृग (पु०).

जज्, योधन-लड़ाई करना । भ्वा० प० ... इदित् । जञ्जति.

जट्, संहति । जुड़ना । इकट्ठा होना (जैसे बा... पर० अक० सेट् । जटति । अजटीत्-अजाटीत्.

जटा, (स्त्री०) जट्+अच् । अन्योन्यसंश्लेषे... जुड़ेहुये बाल । व्रतियोंकी शिखा । सिर (के... सटा । जूड़ा । वृक्षआदिका मूल । जटामांसी । ... रसे वेदका पाठ । महादेवकी जटा । ...

जटाजूट, (पु०) ६ त० । जटानां जूटं (ग्र...थ । जटाओंका बंधन । जटाओंका समूह.

जटामांसी, (स्त्री०) जटां मन्यते । मन्+अण्+ङी... ने नामसे प्रसिद्ध सुगन्धिवाला द्रव्य.

जटायु-स्, (पु०) जटां याति । या+कु । जट... थच् । जटं (संहतं) आयुः अस्य वा । जि... चमर हो । अपने नामका पक्षी । जटौर । गुग्गु...

जटाल, (पु०) जटा अस्ति अस्य लच् । मुस्ता... थोड । कर्पूर । कपूर । जटावाला (त्रि०) ... (स्त्री०).

जटिन्, (पु०) जटा अस्ति अस्य+इनि । प्लक्ष । ... पेड़ । बोड़के समान पत्तोंवाला वृक्ष । जटावाला (...

जटिल, (पु०) जटा अस्त्यर्थे । इलच् । जटावाला । ... शेर । ब्रह्मचारी । जटायुक्त (त्रि०) जटामांसी । ... मन । बचा । दमनवृक्ष (स्त्री०).

जठर, (न०) जायते जन्तुः गर्भो वा अस्मिन् । ... ठान्तादेशः । जिसमें जीव या गर्भ उत्पन्न है । ... पसली । पेट । वृद्ध । बंधाहुआ और कठिन । (... (त्रि०).

जठरयन्त्रणा, यातना, (स्त्री०) जठरस्य यन्त्र... तना । गर्भके भीतर लपेटे अनुभव की गई पीड़...

जठरव्यथा, ज्वाला, (स्त्री०) जठरस्य व्यथा वा ज्वा... पेटकी पीड़ा या दाह.

जठराग्निः, (पु०) जठरस्य अग्निः । पेटकी (अन्नको) प... वाली अग्नि.

जठरामयः, (पु०) जठरस्य आमयः । पेटकी बीमारी ...

जठरीकृत, (त्रि०) अजठरः जठरः कृत-च्वि+कृ+... क्त । छातीके भीतर (गर्भमें) छिपायागया.

जड, (त्रि०) जलति (घनीभवति) जल्+अच् ... हिताहितज्ञानरहित । भला बुरा न जाननेवाला । ... मूढ़ । गूंगा । बुद्धिसे हीन । बेअक्ल । ... पढ़नेमें असमर्थ और मूर्ख । जल और सीसा (न०) ...

जडता, (स्त्री०) जडस्य भावः । जड़पना । ... मन्दता । मूढ़ । बेवकूफी.

जडिमन्, (पु०) जड । इमनिच् । मूर्खपन.

, (त्रि॰) अजड: जड: कृत-जड+च्चि+कृ+क्त। या गया। बेहोश किया गया.

॰) जन्+उ। अन्तमें सत्व आदेश होता है। । जन्म। सत्व.

॰) जन्+उ। शान्तादेश॰। स्कन्ध और कलाकी कंधे और धारा (कन्ठ) का जोड़। गलेके नीचेकी र्यें.

न उत्पन्न होना। त्रिव॰ आत्म॰ अक॰ सेट्। । अजनिष्ट। जनयति। जात:.

॰) जन्+अच्। लोक। लोग। पामरलोक। नीच आम लोग। महोलोकसे ऊपरका लोक। जीव। या पुरुष)। "एवं जनो गृह्णाति".

पु॰) जन्+णिच्+ण्वुल्। पिता। बाप। मिथिला ा एक राजा (सीताजीका पिता)। कारण (कारक)).

ता, (स्त्री॰) जनकस्य सुता। ६ त॰। जनक- या। सीतादेवी। श्रीरामजीकी पत्नी (स्त्री).

(स्त्री॰) जनानां समूह:+तल्। जनसमूह। भीड़। लोग.

ी, (स्त्री॰) जन्+अनि वा ङीप्। माता। मां। म सुगंधवाला द्रव्य। दया। अलत्तक। जटामांसी। मजीठ.

(पु॰) जना यस्मै गच्छन्ति अत्र। पद्+घ। सेग जाते हैं। देश। मुल्क.

द, (पु॰) जनानां प्रवाद:। लोगोंका बहुत बो- किंवदन्ती। अपवाद। निंदा.

, (पु॰) जनानां प्रिय:। लोगोंका प्यारा। लोक- ारी.

य, (पु॰) जन+एज्+णिच् मुमच। परीक्षित ा पुत्र। हस्तिनापुरका प्रसिद्ध राजा। अर्जुनका । (इसका पिता सांपसे डसनेसे मरगया, जन- ने सांपोंके कुलको नाश करनेकी इच्छासे सर्पोंका या जिसमें तक्षक आग बिन सब सांप दग्ध मे यही राजा है जिसे वैशम्पायनने महाभारत ार अठारहपर्वोंसे सुनाया)। "जन्मेजय" ऐसाभी है (पु॰).

, (पु॰) जन्+णिच्+तृच्। उत्पन्न करनेवाला। । माता (स्त्री॰) ङीप्.

, (पु॰) महोलोकके ऊपर एक भुवन। जनका जगह.

पदार, (पु॰) जनानां व्यवहार:। लोगोंका व्यव- । रीतरसम.

पद्म॰ २७

जनश्रुत, (त्रि॰) जनेषु श्रुत:। लोगोंमें विख्यात। सबने जानाहुआ। मशहूर.

जनश्रुति, (स्त्री॰) जनानां श्रुति:। लोगोंकी सुनीहुई बात। किंवदन्ती। अफवाह.

जनश्रुति, (स्त्री॰) जनेषु श्रुतिरेव न दृष्टि: यस्या:। लोगों- ने सुनाही है देखा नहीं। सचा वा झूठा लोगोंका वचन। लोकप्रवाद। किंवदन्ती। अफवाह.

जनसंबाध, (त्रि॰) जनानां संबाध:-ष॰ त॰। लोगोंकी गाढी भीड़

जनस्थानं, (न॰) जनानां स्थानं। लोगोंका स्थान। दण्डक- वनका एक भाग

जनस्थान, (न॰) दण्डकवनके पास एक स्थान। लोगोंके रहनेकी जगह। "जनस्थाने भ्रान्तम्" इति कहते.

जनाकीर्ण, (त्रि॰) जनै: आकीर्णं। लोगोंसे ३ त॰ भरा- हुआ। लोगोंसे भराहुआ हुआ.

जनाचार, (पु॰) जनानां आचार:। ६ त॰। लोगोंका आचार। रीतरसम वा चालचलन.

जनान्तिक, (न॰) ६ त॰। जनसमीप। अनेक लोगोंके पास। अप्रकाश। छिपकर की गई बातचीत (नाटक)। अभिनय (नकल) करनेवाले लोगोंकी आपसमें गुप्त बातचीत.

जनार्णव, (पु॰) जनानां अर्णव:-ष॰ त॰। बहुत लोगोंका इकट्ठा जनसमुद्र। जनसमूह.

जनार्दन, (पु॰) जनै: अर्द्यते याच्यते पुरुषार्थं लाभाय। अर्द-याचना+णिच्+ल्युट्। लोग अपनी इच्छा जिससे पूरी किया चाहते हैं। "जनं अर्दयति वा अर्द+णिच्+ ल्यु वा"। जो जीवोंको (पापके कारण) मारता है। विष्णु। नारायण.

जनाशन, (पु॰) जनान् अश्नाति-अश+ल्यु। लोगोंको खाजाताहै। श्वान। भेड़िया.

जनाश्रम, (पु॰) जनस्य आश्रम:। लोगोंके विश्राम स्थान। सराय.

जनाश्रय, (पु॰) जनानां लोकानां आश्रय:। लोगोंका आसरा। मण्डप। कुटिया। घर.

जनि-नी, (स्त्री॰) जन्+इन् वा ङीप्। उत्पत्ति। पैदायश। "जननी भार्या: कथ्यते"। जिनमें गर्भ उत्प- न्न है। नारी। औरत। माता। स्त्री। पुत्र। बहु। वधू। "जननी जायेयं ब्रह्म" [illegible] (उद्भूत) होता है। एक [illegible] । एक सुगन्धद्रव्य.

जनुस्, ([illegible]+उस्।

जनु-नू, ([illegible]॰) जन्+उ

(त्रि०) जन्+णिच्+क्त । उत्पन्न कराया गया । किया गया.

(पु०) जन्+तृच् । उत्पन्न करनेवाला । पिता ।

, (स्त्री०) जन्+तृच्+ङीप् । उत्पन्न करनेवाली । । माँ.

(पु०) जनानां इन्द्रः ईशः-ईश्वरः । लोगोंका इन्द्र मी) राजा.

पु०) जन्+तु । प्राणी । प्राणवाला । अविद्यादोष- इसमें आत्माका अभिमान करनेवाला । जीव.

(पु०) जन्तून् कृमीन् हन्ति+टक् । विडङ्ग । हिङ्गु । । प्राणिओंको मारनेवाला (त्रि०).

ल, जन्तवः फले अस्य । जिसके फलमें जीव हों । र । गूलर.

ा, (स्त्री०) जन्तून् कीटान् लाति । ला+क । ण । काही । इसमें बहुतसे कीडे रहते हैं.

(न०) जन्+मनि । उत्पत्ति । आत्माका सम्बंध । रहकर योनिसे बाहिर आना । (न्यायमें) अपूर्व- से सम्बंध । (ज्योतिषमें) जन्मका नक्षत्र) । जन्मलग्न.

मन्, (न०) जन्मना नाम । जन्मसे बारहवें दिनमें गया नाम.

तिष्ठा, (स्त्री०) जन्मनः प्रतिष्ठा । जन्मका स्थान । पैदाइशकी जगह.

रा, (स्त्री०) जन्मना प्राप्ता माता । जन्मसे प्राप्त ता । मातृमाता.

मि, (स्त्री०) जन्मनः भूमिः । जन्मकी पृथिवी । स्थान.

स, (पु०) ६ त० । जन्मका महीना । जन्म- से अर्थात् तीस दिनका महीना.

गिन्, (त्रि०) जन्मना रोगः अस्ति अस्य । रोगी । जन्मसे रोगी है.

तु, (पु०) जन्मनः हेतुः । जन्मका कारण । पैदा- कारण.

र, (न०) अन्यद् जन्म मयू० स० । दूसरा जन्म । इसरा । परलोक । बडे दुनियाँ.

रं, (न०) अन्यद् जन्म-मयूरव्यं० स० । दूसरा । और जन्म.

र, (त्रि०) जन्मान्धः अन्धः । जो जन्महीसे अन्धा है.

ि, (स्त्री०) जन्मनो जन्मकी तिथि । सालग- जन्मदिनकी अवस्था.

(पु०) जन्म अस्ति अस्य इनि । प्राणी । जन्तु । प्राणधारी.

जन्य, (त्रि०) जन्+कर्तरि यत् । जायमान । पैदाहुआ । "जन्+णिच्+यत्" उत्पाद्य । पैदाकरनेलायक जनक । पिता । पैदाकरनेवाला । और नई विवा हुई स्त्रीके जातीके लोग । हाट । अटारी । परीवाद । नामी । प्रीति । युद्ध । लडाई और शरीर (पु०) "भावे यत्" जनन । उत्पन्न होना (न०) । सहेली (स्त्री०).

जप्, मनमें बोलना । उच्चारण । बोलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । जपति । अजापीत्-अजपीत्.

जप, (पु०) जप्+अच् । वेदके मन्त्रआदिका बार २ बोलना । बार २ उच्चारण करना । मन्त्र आदिका मानस.

जपा, (स्त्री०) जप्+अच् वा पम्प व० । अपने नामका उसका फूल.

जभ्, मैथुन-गुप्त-भोग करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । जम्भति । अजम्भीत्.

जभ्, जृम्भण । उबासी लेना । भ्वा० आत्म० सेट् । जम्भते । अजम्भिष्ट.

जम्, भक्षण । खाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । जमति । अजमीत्.

जमदग्नि, (पु०) परशुरामका पिता । एक मुनि.

जम्पती, (पु० द्वि० व०) जाया च पतिश्च । द्व० जाया जम् । दम्पती । स्त्री और पुरुषका जोडा.

जम्बाल, (पु०) जम्ब्+घञ् जम्बं आलाति । आ+ला+क । पङ्क । कीचड । शैवल । शैवाल । केतकी । केवडा.

जम्बालिनी, (स्त्री०) जम्बाल+अस्ति अर्थे इनि । कीचड़- वाली नदी.

जम्बु-म्बू, (स्त्री०) जन्+उ नि० । वृक्ष । [illegible] जामनका वृक्ष । "उसका फल" इस अर्थमें अण् का विकल्पसे लोप । "जाम्बव" या इससे "जम्बु" भी । जामनका फल.

जम्बुक, (पु०) जम्बु इव कायति । कै+क । गोलाकार मनुनामी वृक्ष । "स्वार्थे कन्" जम्बुशब्दके अर्थमें । गीदड.

जम्बुद्वीप, (पु०) जम्बुवृक्षचिह्नितो द्वीपः । शाक० । जामनुवृक्षके चिह्नवाला द्वीप (भारत) । सात द्वीपोंमेंसे एक.

जम्बूक, (पु०) जम् नि० । शृगाल । गीदड । नीच । पश्चिम । वरुण । अधम । लघु (स्त्री).

जम्भ, (पु०) जभि+अच् । एक दैत्य । दांत । अंश । हिस्सा । हनु । ठोडी और मूल । तर्कश "भावे घञ्" खाना । उबासी लेना । जृम्भण । "स्त्रीत्वे टाप्" उबासी । जम्हाई (स्त्री०).

जम्भभेदिन्, (पु०) जम्भं दैत्यं भिनत्ति । भिद्+णिनि । जो जम्भ नामी दैत्यको फाड़ता है । इन्द्र । "जम्भभेदन" आदि । यही अर्थ.

जम्भला, (स्त्री०) जम्भं जृम्भां लाति । ला+क । एक राक्षसी (इसका स्मरण करनेसे ज्वर (ताप-बुखार) नाश हो जाता है और ज्वरके उठनेपर उसके पहिले आनेहारी उदासीका भी नाश होता है) । "समुद्रस्योत्तरे तीरे जम्भला नाम राक्षसी".

जय, (पु०) जि+भावे अच् । शत्रुओंका अभिभवन (तिरस्कार-दबाना) । नारायणका पार्षदवर (पास विचरनेहारा) । विराटके पुरमें गुप्त नामवाला युधिष्ठिर । देवी (स्त्री०).

जयढक्का, (स्त्री०) जयसूचिका ढक्का । जीतको बतानेहारा बाजा । वाद्यभेद । एक प्रकारका बाजा.

जयद्रथ, (पु०) जयन् रथो यस्य । जिसका रथ जीतनेवाला है । सिन्धुदेशका राजा । दुर्योधनका भगिनीपति (बहनोई) । महाभारतकी लड़ाईमें इसीने अभिमन्युको मारा और आप अर्जुनसे मारागया.

जयन्त, (पु०) जि+झच् । इन्द्रके पुत्रका नाम । चन्द्रमा । शिवजी । विराटके पुरमें गुप्तनामवाला भीम.

जयन्ती, (स्त्री०) जयति रोगान् । जि० शतृ+ङीप् । एक दुर्गा । "जयन्ती मङ्गला काली" इति मन्त्र । झंडा । इन्द्रकी कन्याका नाम । जरा । बुढ़ापा । जयन्ती वृक्ष । "सावन (श्रावण) महीनेकी कृष्णपक्षकी अष्टमी यदि रोहिणी नक्षत्रके साथ हो और आधीरातके पहिले वा पीछे भी उसकी कोई कला (भाग) अवश्य हो उसका नाम जयन्ती हो जाता है" इस प्रकारका योग (इसी योगमें श्रीकृष्णदेवका जन्म हुआ) पताका । निशान । झंडी.

जयपत्र, (न०) जयस्य सूचकं पत्रम् । जीतको बतानेहारा पत्र । "पहिली और पिछली क्रियाका निर्णय (फैसला करनेके पीछे जो जीतनेवालेको दियाहुआ पत्र दिया जाता है" जीतका लेख (डिग्री) । अश्वमेधयज्ञमें घोड़ेके मस्तकपर बंधा पत्र (चिट्ठी).

जयपाल, (पु०) जयेन पालयति । पाल+अच् । वृक्षविशेष । ब्रह्म । विष्णु । राजा । जमालगोटेका वृक्ष.

जया, (स्त्री०) जि+अच् । हरीतकी । हरीड़ । जयन्ती । दुर्गा । विजया (भंग-भांग) । एक झंडी । श्रीकृष्णदुर्गा । शान्तलक्ष । (ज्योतिषमें) तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथिसमूह.

जय्य, (त्रि०) जेतुं शक्य. । जि+यत् । "शक्यार्थे यत्" त्रि० । जिसे जीत सकते हैं । जेतुं शक्यः । जीतने लायक.

जरठ, (त्रि०) जॄ+अठच् । कर्कश । कठोर । सख्त । पाण्डु । जर्द । जीर्ण । पुराना । बूढ़ा.

जरत्, (त्रि०) जॄ+अतृन् । वृद्ध । बूढ़ा । जीर्ण । पुराना । जरायुक्त । बुढ़ापेवाला । "स्त्रियां" जरती । बूढ़ी.

जरत्कारु, (पु०) मनसादेवीका पति । एकमुनि । मनसादेवी. (स्त्री०)

जरद्गव, (पु०) जरन् गौः कर्मधा० कृदोष । बूढ़ा बैल । एक गीध.

जरन्त, (पु०) जॄ+झच् । महिष । भैंसा । जीर्ण । बूढ़ा । (त्रि०).

जरा, (स्त्री०) जॄ+अङ् । वह अवस्था कि जिसमें शरीर शिथिल (ढीला) हो जाता है । बुढ़ापा.

जराजीर्ण, (त्रि०) जरया जीर्णः । बुढ़ेपेसे जीर्ण (पुराना) । शिथिल अंगोंवाला.

जरातुर, (त्रि०) जरया आतुरः-तृ० त० । बुढ़ेपेसे पीड़ित । ढीले अंगोंवाला । वृद्ध । बूढ़ा.

जराभीरुः, (पु०) जरायाः भीरुः । पं० त० । बुढ़ापेसे डरना । कामदेव । (बुढ़ेपेसे डरनेवाला).

जरायुज, (त्रि०) जरायुतो जायते । जन्+ड । जो जरायुसे युक्त उपजता है । पशु-मृग नाग-सांप आदि सर्पके राक्षस-पिशाच और मनुष्य जरायुज हैं । जो गर्भके समय झिल्लीसी होती है उसे जरायु कहते हैं वहींसे शुक्र (वीर्य) और शोणित (लोहू) का योग होकर गर्भ बनता है इससे वह जरायुज कहा जाता है "इस प्रकारका गर्भ" जो जेरसे निकले.

जरावस्था, (स्त्री०) जरायाः अवस्था । बुढ़ेपेकी अवस्था (हालत) बुढ़ापा । वृद्धावस्था.

जरासंध, (पु०) एक प्रसिद्ध राजाका नाम । जो बड़ा बहादुर था । बृहद्रथका पुत्र । इसे जरानाम राक्षसीने आधे आधे बटेहुए दो भागोंको जोड़ दिया इसी निमित्तसे इसका नाम जरासन्ध हुआ.

जरित, (त्रि०) जरा+इतच् । जिसे बुढ़ापा आगया । बूढ़ा । बड़ी उमरवाला.

जरिन्, (त्रि०)-णी । (स्त्री०) । जरा अस्ति अस्य-इनि । जिसे बुढ़ापा है । बूढ़ा । बड़ी उमरवाला.

जरूथ, (त्रि०) जॄ+ऊथन् । कठिन (सख्त) मांसकेटुकड़े.

जर्जरित, (त्रि०) जर्ज-ण्णिच्+कर्मणि क्त । जर्जर (चूर) होकर । छिन्न भिन्न.

जर्त-र्त्त-(र्ते), चमड़ा छिपानेका । दुर्ग० द० स० । चैर । अर्त (र्त) जीर्ण । आवर्त (र्त) और.

जर्जर, (पु०) (न०) जर्ज+अरन् ... । इन्द्रका ध्वज । वृद्ध (त्रि०).

जर्म्, पढ़ना। निन्दा करना। तुदा॰ पर॰ सक॰ सेट्। जर्मति.

जल्, आच्छादना। ढांकना। चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट्। जाल्यति-ते.

जल्, तेज होना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। जलति। अजालीत्। जल। जालः.

जल, (त्रि॰) जल्+अच्। जड। मूर्ख। ठंडा। उदर। पेट। गंधद्रव्य। (ज्योतिषमें) लग्नसे चौथा घर। पूर्वाषाढा नक्षत्र (न॰) पांच भूतोंमेंसे एक अर्थात् पानी (न॰).

जलकण्टक, (पु॰) जलस्य कण्टक इव। मानों पानीका कांटा है। शृङ्गाटक। सिंघाडा। कुम्भीर। मंगार.

जलकपि, (पु॰) जले कपिरिव। मानों पानीमें बानर है। शिशुमार। जलजन्तुभेद। घडियाल.

जलकरङ्क, (पु॰) जलस्य करङ्क इव आधारः। खोपडीके समान पानीका आधार। नारिकेल। नारियेल। नरैल। मेघ। बादल। कमलफूल। शंख। पानीकी तरंग (लहर).

जलकाक, (पु॰) जले काक इव। पानीमें मानों कौआ है। पानकौडी नामी एक प्रकारका पक्षी.

जलकुन्तल, (पु॰) जलस्य कुन्तलः केश इव। मानो पानीकी जुल्फ है। शैवाल.

जलक्रीडा, (स्त्री॰) जलस्य क्रीडा। जलकेली। जलकी खेल। आपसमें पानीसे खेल करना.

जलचर, (पु॰) जले चरति। चर्+टक्। मत्स्य-कूर्म ग्राह-आदि जलके जीव.

जलचारिन्, (पु॰) जले चरति+णिनि। जलमें फिरनेवाला मत्स्य। मच्छी.

जलज, (पु॰) जले जायते। जन्+ड। पानीमें उपजता है। शैवाल वा नीरवृक्ष। मत्स्य। मच्छ। (ज्योतिषमें) कर्क मीन और मकर राशिका पिछला आधा। कमलफूल (न॰) शंख (पु॰ न॰) पानीमें उपजी वस्तु (त्रि॰).

जलतरङ्ग, (पु॰) जलस्य तरङ्गः। जलकी तरंग (लहर).

जलताडनम्, (न॰) जलस्य ताडनम्। जलका ताडन करना (टकराना)। कोईभी निरर्थक (निष्प्रयोजन) क्रिया.

जलद, (पु॰) जलं ददाति दा+क। पानी देता है। मेघ। बादल। कर्पूर। कापूर। पानी देनेवाला (त्रि॰).

जलदागम, (पु॰) जलदानां आगमः यस्मिन् समये। जिस वक्त बादल आते हैं। वर्षाकाल। मेघका पानी बर्सनेका काल.

जलधर, (पु॰) जलानां धरः। धृ+अच्। पानी रखनेवाला मेघ। बादल कपूर। समुद्र। जलधारण करनेवाला (त्रि॰).

जलधि, (पु॰) जलानि धीयन्ते अत्र। धा+कि। जहां पानी ठहरता है। समुद्र। समुंदर। "सौ करोड़" भी इसी अर्थमें। चारकी संख्या। एकप्रकारकी गिनती.

जलधिजा, (स्त्री॰) जलधेः जायते। जन्+ड। समुद्रसे निकली है। लक्ष्मी.

जलनिधि, (पु॰) जलानि निधीयन्ते अत्र। नि+धा+कि। जहां पानी ठहरते हैं। समुद्र। चारकी संख्या.

जलनिर्गम, (पु॰) जलानां निर्गमः। जलोंका निकलना। नदी आदिके जलका घूमना। नीचे ठहरेहुए पानीका ऊपरको जाना। प्रकार। फसील.

जलप्राय, (न॰) जलं प्रायं यत्र। जहां अधिक पानी है। बहुजलदेश.

जलबुद्बुद, (न॰) ६ त॰। जलका बुलबुला। जलबिम्ब।

जलमार्ग, (पु॰) ६ त॰। प्रणाली। मोरी। नाली। जलका रास्ता.

जलमुच्, (पु॰) जलानि मुञ्चति। जो पानी छोड़ता है। मुच्+क्विप्। मेघ। बादल.

जलयन्त्र, (न॰) जलानां उत्क्षेपणार्थं यन्त्रं। पानीके ऊपर फेंकनेकी कला। फोहारा। फुआरा.

जलयानम्, (न॰) जलस्य यानं। जलकी सवारी। पोत। जहाज.

जलराशि, (पु॰) जलस्य राशिः। जलका समूह। समुद्र।

जलवाद्यम्, (न॰) जलस्य वाद्यं। जलका वाद्य (बाजा)। एक प्रकारका बाजा जिसे जलतरंगभी कहते हैं।

जलवेतस, (पु॰) जले जातः वेतसः। शाक॰। पानीमें उपजाहुआ। वेतसभेद। बेंत.

जलव्याल, (पु॰) जलस्थः व्यालः हिंसः। पानीमें मारनेवाला जीव। सर्प। सांप। क्रूर (बेरहम) कर्म करनेवाला जन्तु (जीव).

जलशायिन्, (पु॰) जले (समुद्रजले) शेते। शी+णिनि। जो समुद्रके पानीमें लेटता है (सोता है)। विष्णु। नारायण.

जलशुक्ति, (स्त्री॰) जलस्य शुक्तिरिव। मानों पानीकी सीपी है। एक प्रकारका जलका जीव। घोंघा। सिप्पी.

जलहस्तिन्, (पु॰) जले हस्तीव। मानों पानीमें हाथी है। ग्राह (तन्दुआ) नामी पानीका जीव। पानीमें हाथीके स्वरूपका एक जीव.

जलहास, (पु॰) जलानां हास इव। (बिद्ध इवार्थे) मानों पानीका हसना है। फेन। झाग। समुद्रफेन। समुद्रकी झाग.

जलहास, (पु॰) जलस्य हासः। जलका हसना। ... एकप्रकारकी मच्छी.

जलात्यय, (पु०) जलस्य अत्ययः ष० त० । जलका नाश । शरद् ऋतु । इसमें जल बरसना समाप्त होजाता है.

जलाधार, (पु०) ६ त० । छोटा तालाव । बड़ा तालाव । समुद्र । "जलं आधारो यस्य" जिसका आश्रय पानी है । शृङ्गाटक । सिंघाडा । उशीर (न०) चंदन । पानीमें ठहराहुआ (त्रि०) (इसी प्रकार "जलाशय" आदि शब्दभी इसी अर्थमें).

जलाधिदैवत सं. (पु० न) जलस्य अधिदैवतः षा-सं । जलका अधिष्ठातृ देवता । वरुण देवता.

जलाधिपः, (पु०) जलस्य अधिपः । जलका ईश्वर । वरुण देवता.

जलाम्बिका, (स्त्री०) जलस्य अम्बिका । जलकी माता । कूप । कूआ.

जलार्कः, (पु०) जलस्य अर्कः । जलमें प्रतिबिम्बित सूर्यका स्वरूप । पानीका सूर्य.

जलार्णवः, (पु०) जलस्य अर्णवः । जलका समुद्र । वर्षा-ऋतु । मौसिमी बहार । बर्सात.

जलार्थिन्, (त्रि०) जलस्य अर्थः अस्ति अस्य+णिनि । जल-के प्रयोजनवाला । तृषातु । प्यासा.

जलावर्त, (पु०) आ+वृत्+णिच्+अच् ६ त० । पानीके जलोंका घूमना । भंवर । घुंमरघेर.

जलूका, (स्त्री०) जलं ओको यस्याः ६ ब० । जिसका स्थान पानी है । जलौका । जोंक.

जलेचर, (पु०) जले चरति । चर्+टच्-अलुक् स० । पानीमें विचरता है । हंस आदि.

जलेन्धन, (पु०) जलानि एव इन्धनानि यस्य । पानीही जिसकी लकडियें हैं । वाडवानल । समुद्रकी आग.

जलेश्वर, (पु०) ६ त० । जलका स्वामी । वरुण । समुद्र.

जलोच्छ्वास, (पु०) जलानि उच्छ्वसन्ति एभिः । उद्+श्वस्+घञ् । जिनसे पानी बढ़ते हैं । बढ़ेहुए पानीके निकलनेका मार्ग । बहुत पानीका चारों ओर बहना.

जलोदर, (पु०) जलप्रधानं उदरं यस्मात् । ५ ब० । जिससे पेटमें पानी भरजाय । उदरामय । रोगभेद । एक प्रकारका पेटका रोग.

जलौकस्, (स्त्री०) जलं ओको यस्याः अस्य । जिसका पानीमें घर है । जोंक । रेंगू पीनेवाली । "जलौकसेव रक्तस्तिमिपुर्णेव [illegible]" उदाहरण.

जलौका, (स्त्री०) [illegible] नि० । जलं ओकः स्थानं यस्याः । जिसका स्थान पानी है । जोंक । रेंगू पीनेवाली.

जल्प्, व्यक्तिदेवोक्ति-वचन-अर्थक बोलना-बकना । बक-बकाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । जल्पति । अज-ल्पीत् । "यदि जल्पति [illegible]" इति [illegible] दिदेशसि.

जल्प, (पु०) जल्प्+घञ् । दूसरेके सिद्धान्त (तोड)-कर अपने मतको स्थापन (कायम) करनेहारा वचन । जैसे चाहनेवालेकी कथा । बात । जल्प । गप्प.

जल्पनम्, (न०) जल्प्+ल्युट् । बोलना । कहना । [illegible].

जल्पाक, (त्रि०) जल्प्+षाकन् । बहुनिन्दितवदनशील । बहुत बुरे वचन बोलनेवाला । बकवादी । [illegible] । [illegible] । बहुत बोलनेवाला.

जल्पित, (त्रि०) जल्प-कर्मणिक्त । कहागया । बोला गया । बकवाद किया गया ।-नं । बोलना । [illegible] । [illegible].

जव, (पु०) जु+अप् । वेग । और (इसी अर्थमें) [illegible].

जवन, (पु०) जु+ल्युट् । वेगवान् । जल्दी चलनेवाला । घोडा । एक देश । एक जाति.

जवनिका, (स्त्री०) जवनि अस्याः । जु+ल्युट्+[illegible] कन् । कनात । परदा सामने ओट करना.

जवस, (न०) जु+असच् । घास । "यवस" ऐसा भी होता है.

जविन्, (पु०) जव अस्ति अस्य । इनि । जिसमें वेग हो । घोडा । ऊंट । वेगवाला (त्रि०).

जष्, मारना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । जषति-ते

जस्, मोक्षण । छुडाना । दिव० पर० सक० सेट् । जस्यति । अजसत् । अजासीत् अजसीत्.

जस्, मारना । अनादर । वेइज्जतकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । जासयति-ते । अजीजसत्.

जहत्स्वार्था, (स्त्री०) जहत् स्वार्थो यां । अपना अर्थ जिसे छोडता है । एक लक्षणा । जैसे "कुन्तः प्रविशन्ति".

जहदजहत्स्वार्था, (स्त्री०) [illegible] धारी लक्षणा । एक प्रकारकी लक्षणा कि जिसमें एक अंश अपने अर्थको छोडता और दूसरा नहीं । वाच्य (अभिधेय) अर्थके एक देशको त्यागकर दूसरे देशमें रहनेवाली लक्षणा । जैसे "यह वही देवदत्त है" यहां "यह" और "वह" शब्दका अर्थके त्यागकर केवल देवदत्त [illegible] अर्थके ज्ञानमें [illegible] एक देशमें [illegible] (त्याग-पद) है.

जहत्स्वार्था, (स्त्री०) जहत् स्वार्थं [illegible] [illegible] जिससे अपना अर्थ छोड देता है । [illegible] लक्षणा । जैसे "कुन्ताः प्रविशन्ति".

जहु, (पु०) [illegible] एक राजा । ([illegible] [illegible] (जैसे [illegible]) के [illegible] [illegible]) वे पुत्रमें प्रसिद्ध है

जहुतनया, (स्त्री०) [illegible] है । उनके देहसे [illegible]

जागर, (पु०) [illegible]-अच् । [illegible] जागना । [illegible] । [illegible]

जातुधान, (पु०) जातु धानं (सन्निधानं) अस्य । कभी अवसर पाकर जिसे पकड़ते हैं । राक्षस । "यातुधान" भी.

जातुष (त्रि०) जतुनो विकार+अण् । चुगागमः । लाख-का बनाहुआ पदार्थ । लाखकी चीज.

जातूकर्ण, (पु०) एक मुनिका नाम । शिवजीका नाम.

जातेष्टि, (स्त्री०) यज्+क्तिन् इष्टिः । जात । उत्पन्नहुएके संस्कारके लिये कियागया यज्ञ । जातकर्म नामी एक संस्कार । यह संस्कार जो जन्मके समय कियाजाता है.

जातोक्ष, (पु०) जातः प्राप्तसिद्धणीयदशः उक्षा टच्+समा० सिरसाले लायक दशाको पहुचा साँड़ । जवान साँड़.

जात्य, (त्रि०) जातौ भव+यत् । जातिमें हुआ । कुलीन । श्रेष्ठ । कान्त । खान्दानी । अच्छा । सुन्दर.

जात्यन्ध, (त्रि०) जातौ (जन्मनि) एव अंधः । जन्म-का अंधा । जन्मान्ध । "जात्यन्धौ बधिरस्तथा" इति मनुः.

जात्युत्तर, (न०) जाल्या व्याप्तिहीनाभ्यां साधर्म्यवैध-र्म्याभ्यां उत्तरं । हेतु और साध्यके इकट्ठा रहनेके नियम बिन साधर्म्य और वैधर्म्यसे उत्तर देना । झूठा उत्तर । असत् उत्तर.

जानकी, (स्त्री०) जनकस्य इयं+अण् । जो जनककी (लड़की) हो । सीता.

जानपद, (त्रि०) जनपदे भवः । तत आगतो वा+अण् । देशका वा देशसे आयाहुआ । किर्सा क्षीपू.

जानु,जन्+ञुण् । करजंघामध्यभाग । पद और जांघोंके बी-चका हिस्सा । घुटना । गोड़ा । "स्वार्थे कन्".

जाप, (पु०) जप्+घञ् । चुपचाप मनहीकी प्रार्थना । गुनगुन । कानाफूसी । जप.

जापक, (त्रि०) जप्+ण्वुल् । जप करनेवाला.

जाप्य, (त्रि०) जप्+ण्यत् । जप करनेयोग्य.

जाबाल, (पु०) जबालया अपत्यं+अण् । जबालाकी सन्तान मुनिभेद । एक मुनि.

जामदग्न्य, (पु०) जमदग्नेः अपत्यं+यञ् । जमदग्निकी सन्तान । जमदग्निका पुत्र परशुराम.

जामा, (स्त्री०) जम् अदने+अण् स्त्रीत्वम् । कन्या । लड़की पतोहू । बहू.

जामातृ (पु०) जायां माति मिनोति-मिमीते वा तृच् । जो स्त्रीको मापता (हरएक काम उसका देखता है) फेंकता (काम बिगड़नेपर भिड़कता है) और मारता (बड़ा दोष करनेपर शासन भी करता) । पिसारा । स्वामी । लड़कीका पति । दुहितृपति । जवाई.

जामि, (स्त्री०) जम्+मिण् नि० वृद्धिः । भगिनी । बहिन । दुहिता । लड़की । बुवा । बहू । कुलस्त्री । निकट-की स्त्री । "जामयो यानि गेहानि" मनुः.

जामेय, (पु०) जाम्याः भगिन्याः अपत्यं+ढक् । भगिनी-सुत । बहिनका लड़का । भनेजा.

जाम्बवत्, (पु०) रामायणमें प्रसिद्ध भालूराज (रीछोंका राजा).

जाम्बवती, (स्त्री०) जाम्बवतः अपत्यं स्त्री । जाम्बवान्-की स्त्रीरूप सन्तान । कृष्णदेवकी भार्याओंमेंसे एक । जाम्बवान्की कन्या । सापोंको काबू करनेहारी.

जाम्बूनद, (न०) जम्बूनदे भवं+अण् । जम्बूनदमें हुआ स्वर्ण । सोना । एक प्रकारका शुद्ध सोना । धतूरा.

जाया, (स्त्री०) जन्+यक् । "पति स्त्रीमें प्रवेशकरके गर्भ होकर इस संसारमें उपजता है । जायाका जायापन यही कि इसमें पतिही पुत्र रूपसे उत्पन्न होता है" । स्त्री । औरत । लग्नसे सातवां घर.

जायाजीव, (पु०) जायया जीवति । जीव्+क । जो स्त्रीके आसरे जीता है । नट । नकल करनेवाला.

जायु, (पु०) जयति रोगान् । जि+उण् । जो रोगोंको जीत लेता है । औषध । दवाई । बूटी.

जार, (पु०) जीर्यते अनेन । जृ+करणे घञ् । उपपति । यार । यार.

जारज, (त्रि०) जारात् जायते जन्+ड । यारसे पैदा होता है । यारसे उत्पन्न हुआ । कुण्ड । गोलक पुत्र.

जाल, (पु०) जल्-सम्वरण-रोकना+घञ्, जल् मारना । णिच्+अच् । जले क्षिप्यते अण् वा । जिससे रोकते, मा-रते वा जिसे पानीमें फेंकते हैं । कदम्बका वृक्ष । बारीक झरोखा । गवाक्ष । छिद्र । मच्छिओंको पकड़नेके लिये सनके सूतका बनाहुआ आनाय (जाल) । न खिलीहुई कली । धुरमुल । और पक्षुपक्षिओंके पकड़नेके लिये फंदा (फाई-फंदा) । दाम्भ्य । धूर्तता । दम्भ । पाखण्ड । समूह । इन्द्रजाल (न०) स्वार्थे कन् । लोचकफल । नई कलिओंका समूह (न०).

जालक, (न०) जालं [illegible] वारयति कै+क । जालकी भांति शब्द करता है । जाल । समूह । दम्भ.

जालपद, (त्रि०) जाल+ण्वुल् । जालवत्ता । छलिया । कपटी । मायावी.

जालन्धर, (पु०) जाल+धृ+खच्+मुम् । भारतके उत्तर-पश्चिमका एक देश । व्यास और शतद्रु नदीओंके मध्यका एक देश.

जालिक, (पु०) जालेन चरति । जाल+ठक् । वागुरिक । फंदक । जालसे जीनेवाला । कैवर्त । धीवर । ऊर्णनाभ । मकड़ी.

जाल्म, (त्रि०) जल्व्यति "म" । (जो अपने दोषको) छिपाता है । मूर्ख । क्रूर । बेरहम । [illegible].

जाहम्, (न०) जाहच्-एक प्रत्यय है । मंज्ञावाचक शब्दोंके साथ लगाया जाता और शरीरके किसी अवयवको प्रकाश करता है जैसे "कर्णजाहं" कानका मूलस्थान.

जाह्नवी, (स्त्री०) स्वर्गसे आईहुई गंगाको वेगवती देखकर जह्नुराजर्षिने पहिले मुखसे पीलिया पीछे कानके मार्गसे निकाला इसलिये जह्नु राजर्षिकी कन्या होनेसे गंगाको जाह्नवी भी कहागया । गंगानदी.

जि, जय-जीतना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । जयति । अजैषीत्.

जिगीषा, (स्त्री०) जि+सन्+अ । जयेच्छा । जीतनेकी इच्छा । चाह । प्रकर्ष । रश्क । उद्यम । मिहनत.

जिगीषु, (त्रि०) जि+सन्+उ । जीतनेकी इच्छा करनेवाला.

जिघत्सा, (स्त्री०) अद्+सन्+घसादेशः । भावे । भक्षणेच्छा । खानेकी इच्छा.

जिघत्सु, (त्रि०) अद्+सन् घसादेशे-उ । खानेकी इच्छावाला । भूखा.

जिघांसु, (त्रि०) हन्+सन्-उ । मारनेकी इच्छावाला.

जिज्ञासा, (स्त्री०) ज्ञा+सन्+भावे अट् । जाननेकी इच्छा.

जिज्ञासु, (त्रि०) ज्ञातुं इच्छु । ज्ञा+सन्+उ । जाननेकी इच्छा करनेवाला । मुमुक्षु । छूटनेकी चाहवाला.

जित्, (त्रि०) जि+क्विप् । "समासके पीछे आता है" जीतनेवाला । "कंसजित्".

जित, (न०) जि+क्त (भावे) जय । जीत "कर्मणि क्त" । अभिभूत । दबायागया । पराजित । हरादियागया । जीतपानेवाला । वशीकृत । काबू कियागया । आयत्तीकृत.

जितकाशिन्, (त्रि०) जितेन (जयेन) काशते (प्रकाशते) णिनि । जो जीतसे चमक रहा है । जिताहव । जिसने लड़ाई जीती है । जयी । जीतनेवाला । फतहयाब.

जितमन्यु, (त्रि०) जितः मन्युः येन ब० स० । क्रोधको जीतनेवाला.

जितशत्रु, (त्रि०) जिताः शत्रवः येन । शत्रुओंको जीतनेवाला । विजयी.

जितस्वर्ग, (त्रि०) जितः स्वर्गः येन । स्वर्गको जीतनेहारा.

जितात्मन्, (त्रि०) जितः (वशीकृतः) आत्मा । (इन्द्रियं-मनो वा) येन । जिसने इन्द्रिय वा मनको वश किया है । जितेन्द्रिय.

जिति, (स्त्री०) जि+क्तिन् । जीत । लाभ । नफा । हासिल.

जितारि, (त्रि०) जिताः अरयः येन । जिसने अपने शत्रुको वा कामक्रोधादिको जीत लिया है ।-रिः (पु०) बुद्धदेव.

जितेन्द्रिय, (त्रि०) जितानि (वशीकृतानि) इन्द्रियाणि येन । जिसने अपनी इन्द्रियोंको वश किया है । "जो मनुष्य सुन, देख, छू, खा और सूंघकर राग द्वेष नहीं करता" हर्ष और विषाद (रंज) से रहित शान्त चित्त । कामको वशनेहारा पुरुष.

जित्वर, (त्रि०) जि+क्वरप् । जयशील । जीतनेवाली स्त्रियां ङीप्.

जिन, (पु०) जयति संसारं । जि+नक् । संसारको जीतनेहारा । बुद्ध । विष्णु "जितवा" (त्रि०).

जिष्, सेचन-सींचना । भ्वा० पर० सक० सेट्० । जेषति । अजेषीत्.

जिष्णु, (पु०) जिष्+ग्स्नु । अर्जुन । इन्द्र । विष्णु । पूर्व आठ वसु । जीतनेवाला (त्रि०).

जिष्णु, (त्रि०) जि+ग्स्नु । जीतनेवाला । जयशील.

जिह्म, (त्रि०) हा+मन्-द्वित्वादि नि० । कुटिल । टेढ़ा मन्द । मूर्ख । तगरका वृक्ष.

जिह्मग, (पु०) जिह्मं गच्छति । गम्+ड । जो टेढ़ा होके चलता है । सर्प । सांप । मदनका वृक्ष । धीरे जानेवाला कुटिल (त्रि०).

जिह्वा, (स्त्री०) लेढि अनया । लिह्+वा नि० । जिससे चाटता है । रसको जाननेवाली इन्द्रिय । रसना । जीभ जबान.

जिह्वामूलीय, (पु०) जिह्वामूले भव+छ । जीभकी जड़में हुआ । क और खसे पहिले आधी विसर्गका चिह्न । जैसे × क × ख.

जिह्वारद, (पु०) जिह्वैव रदो दन्तः चर्वणसाधनं यस्य । जीभही जिसके चाबनेका साधन है । दन्तहीन । दांतोंके बिना । जीभहीसे चाबनेहारा पक्षी.

जीन, (त्रि०) ज्या-वयोहानि । अवस्थाका घटना । बूढ़ा होना कर्तरि क्त सम्प्रसारणं-दीर्घश्च । वृद्ध । बूढ़ा । चर्मपुट । चमड़ेका होना.

जीमूत, (पु०) ज्या+क्विप्-जीः तया जरया मूतो बद्धः । मू+बाधना+क्त । बुढ़ापेसे बंधाहुआ । "जयति नभः" जो आकाशको जीतता है । "जीयते वायुना वा" जो हवासे जीता जाता है । जि+क्त-मूट्-दीर्घश्च । "जीवनस्य (जलस्य) मूतः (पटबन्ध)" पानीकी गठरी । मेघ । बादल । मोथा । पर्वत । (पहाड़) । देवताड़ वृक्ष । इन्द्र । कोषातकीलता (बेल).

जीर, (पु०) ज्या+रक् । जीरक । जीरा नामी पदार्थ । (जो मसालेमें डाला जाता है) । खड्ग । तरवार । थोड़ा छोटा.

जीर्ण, (पु०) जॄ+क्त । जीरा । शैलज (बूटी आदि) (न०) । जरान्वित । बुढ़ापेवाला (त्रि०) । भेद जीरा (स्त्री०).

जीर्णज्वर, (पु०) जीर्णः ज्वरः । पुराना ज्वर (बुखार)

जीर्णवस्त्र, (त्रि०) (जीर्णानि वस्त्राणि यस्य) । जिसने पुराने वस्त्र (कपड़े) पहिने हों.

जीर्णोद्धार, (पु०) जीर्णस्य (भग्नमन्दिरस्य) उद्धारो नवीकरणं यत्र । जहां टूटे फूटे मन्दिर आदिको नया बनवाया जाय । (संस्कार)

जीर्णोद्यानम्, (न०) जीर्णं उद्यानम् कर्म० स० । पुराना उद्यान (बाग).

जीव्, प्राणधारण । प्राणोंको पकड़ना । भ्वा० पर० अक० सेट् । जीवति । अजीवीद् । णिच् । अजिजीवत्-त । आजीजिवत्-त.

जीव, (पु०) जीव्+क । देहका अभिमानी । आत्मा । मनुष्यसे लेकर कीड़ों मकोड़ोंतक चेतन । "प्राणोंको क्षेत्रज्ञ (क्षेत्रको जाननेहारा) स्वरूपसे धारण करताहुआ जीव कहलाता है" प्राणी । "करणे घञ्" जीवनका उपाय "जीव्+णिच्+अच्" वृक्षविशेष । "भावे घञ्" प्राणोंको पकड़ना.

जीवगृह-मंदिर, (न०) जीवस्य गृहं । जीवका घर । शरीर.

जीवग्राहः, (पु०) जीवन्तं गृह्णाति जीव+ग्रह+ण्वुल् । जीतेजी पकड़ा गया अपराधी.

जीवघन, (पु०) जीव एव घनो मूर्तिः (सैन्धवशिलाशकल इव) यस्य । सैंधे लून (नून)की शिलाके टुकड़ेके समान जीवही जिसकी मूर्ति है । हिरण्यगर्भ.

जीवजीव, (पु०) जीवान् जीवयति+क । देखनेसे तृप्ति करता है । तृप्ति । जीवोंको । जिलानेहारा । चकोर पक्षी.

जीवथ, (त्रि०) जीव्-अथ । बड़ी आयु (उमर) वाला । -थः (पु०) जीवन (जिन्दगी) । प्राण । कछुए.

जीवन, (न०) जीव्यते अनेन । जीव+ल्युट् । जिससे जीते हैं । वृत्ति । जीविका । जल । दैवपूर्वीन । ताजामक्खन । "भावे ल्युट्" प्राणोंको धारण करना "जीवयति" । णिच्-ल्यु । पत्र । जीविक औषध । वायु । छोटे फलोंवाला वृक्ष (पु०).

जीवनयोनि, (स्त्री०) ६ त० । (न्यायमें) शरीरमें प्राणोंके चलनेका कारण इन्द्रियोंसे न जाननेयोग्य एक प्रकारका यत्न.

जीवनहेतु, (पु०) ६ त० । जीनेके कारण । "विद्या-शिल्प (कारीगरी), भृति (नौकरी) सेवा, गौओंकी रक्षा, विपणि (दुकानदारी) वृत्ति, कुसीद (ब्याज), कृषि (खेती), और भीख मांगना इस प्रकार जीनेके उपाय हैं.

जीवन्ती, (स्त्री०) जीव्+शतृ+ङीप् स्वार्थे कन् ह्रस्वे अत इत्वम् । गुडूची । जीवाख्यशाक । वन्दा । हरीतकी । हरीड़.

जीवन्मुक्त, (त्रि०) जीवन्नेव मुक्तः (त्यक्तसंसारः) । जिसने जीतेही संसारको छोड़दिया । आत्माको साक्षात् करनेहारा । जिसने आत्माको जानलिया । प्रारब्धकर्मोंके नाशतक सुषुप्तिके समान व्यवहार करनेहारा । आत्माको जाननेवाला जीव । ब्रह्मस्वरूप आत्माको जाननेवाला.

जीवन्मुक्ति, (स्त्री०) जीवत एव मुक्तिः । जीतेही कर्तृत्व भोक्तृत्व (मैं कर्ता हूं मैं भोक्ता हूं) से छूटना । जीतेही बंधकी निवृत्ति.

जीवपत्नी, (स्त्री०) जीवनः पत्नी । वह स्त्री जिसका पति जीता है.

जीवस्थान, (न०) ६ त० । जीवका स्थान । मर्म । छिपी हुई जगह । जहां चोट लगनेसे जल्दी प्राण छूटजाय.

जीवा, (स्त्री०) जीव्+अच् । जीवयतेरच् वा टाप् । धनुषका चिल्ला । जीवन्तिका औषधी । वचा । पृथिवी । जल । जीवनका उपाय.

जीवातु, (पु० न०) जीव्+आतु । अन्न । जीवन । जीवनकी औषध । मुर्देको जिलानेवाली दवाई.

जीवात्मन्, (पु०) कर्म० । देहका अभिमानी जीव.

जीवाधार, (पु०) जीवस्य आधारः । जीवका आधार । आश्रय । हृदय.

जीविका, (स्त्री०) जीव्+अ+कन्-अत इत्वम् । जीवनका उपाय । आजीवन । रोजी.

जीवितेश, (पु०) ६ त० । जीवनका मालिक । यम । प्राणोंका स्वामी । जीवन । चंद्रमा । सूर्य । पियारा स्वामी (त्रि०).

जीवोपाधि, (पु०) ६ त० । जीवकी उपाधि । स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत् अवस्था.

जीवोत्सर्गः, (पु०) जीवस्य उत्सर्गः । जीवन (जिन्दगी) प्राणका त्याग.

जु, रेह-जोरसे चलना-वेग । भ्वा० पर० अक० अनिट् । जवति । जवः.

जुङ्ग, त्याग-छोड़ना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । जुङ्गति.

जुगुप्सा, (स्त्री०) गुप्-निन्दा करना । स्वार्थे सन् अ-टाप् । निन्दा.

जुटिका, (स्त्री०) जुट्-संहति-इकट्ठा होना-टाप्-नि० पृ० शिखा । चोटी । इकट्ठे हुए २ बाल.

जुड्, बांधना-जाना । तुदा० पर० सक० सेट् । जुडति । अजोडीत्.

जुत्, चमकना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । जोतते.

जुन्, गति-जाना । तुदा० पर० सक० सेट् । जुनति.

जुष्, हर्ष खुशहोना । अक० सेवाकरना । सक० तुदा० आत्म० सेट् । जुषते । अजोषिष्ट.

जुष्ट, (न०) जुष्+क्त । उच्छिष्ट । जूठा । सेवित । सेवा कियाहुआ (त्रि०).

जुहू, (स्त्री०) जुहोति अनया । हु+क्विप्-नि० । जिससे होम करते हैं । पलाशकी लकड़ीका बनाहुआ आधे चंद्रमाके स्वरूपका यज्ञपात्रविशेष । पत्तोंका बनाहुआ एक प्रकारका यज्ञका पात्र.

ानसाधन, (न०) सिध्+णिच्-करणे ल्युट् । ६ त० । जानेका साधन । इन्द्रिय.

ानापोह, (पु०) अप-ऊह्+घञ् । ६ त० । विस्मरण । भूलना । ज्ञानका जाता रहना.

ानाभ्यास, (पु०) ६ त० । ज्ञानका अभ्यास । "उसीको सोचना । कहना, आपसमें समझना । और उसीमें लगे रहना" इत्यादिरूपसे ध्यान करनेयोग्य विषयकी चिन्ता.

ानिन्, (त्रि०) ज्ञानं अस्य अस्ति+इनि । जाननेवाला । सामान्यज्ञानवाला । तत्त्वज्ञानी । असली बातको जाननेवाला । दैवज्ञ । ज्योतिषी (पु०).

ानेन्द्रिय, (न०) ६ त० । ज्ञानकी इन्द्रिय । सुनने देखने आदि ज्ञानके साधन । कान, आंख, नाक, जीभ, त्वग्रूप इन्द्रिय । अन्तःकरण । मन.

ापक, (त्रि०) ज्ञा+णिच्+ण्वुल् । जनानेवाला । सिखानेवाला । जतलानेवाला ।–कः (पु०) शिक्षक । सिखानेवाला । आज्ञा करनेवाला । स्वामी । मालिक ।–कं (न०) (दर्शनमें) किसी नियमके नियत शब्दोंमेंसे अधिक अर्थको सूचन करनेवाला नियम.

ापनम्, (न०) ज्ञा+णिच्+ल्युट् । जतलाना । इत्तिला देना । सिखलाना । सूचन करना.

ापित, (त्रि०) ज्ञा+णिच्+क्त । जतलाया गया । इत्तिला दियागया । सूचना दियागया.

ीप्सा, (स्त्री०) ज्ञा+सन्+भावे अ । जानेकी इच्छा

ेय, (त्रि०) ज्ञा+कर्मणि यत् । जानेके योग्य । समझनेलायक । ध्यान करनेयोग्य । प्रत्यक्ष होनेलायक.

्या, बूढा होना । क्र्या० पर० अक० अनिट् । जिनाति । अज्यासीत्.

्या, (स्त्री०) ज्या+अङ् । मौर्वी । धनुषका चिल्ला । माता । भूमि । जमीन.

्यानि, (स्त्री०) ज्या+क्तिन् । जीर्णता । बूढापन । पुरानापन । हानि । नुकसान । नदी । दर्या.

्यायस्, (त्रि०) अतिशयेन वृद्धः ईयसुनि ज्यादेशः । इसी आ होताहै । बहुत बडा । बहुत बूढा । बुढापावाला । अतिशय वृद्ध । स्त्रियां ङीप्

्युत्, दीप्ति-चमकना । भ्वा० पर० अक० सेट् । ज्योतति.

्येष्ठ, (त्रि०) वृद्ध० इष्ठन् । ज्यादेशः । बहुतही बूढा । अतिवृद्ध । बहुत अच्छा । अग्रज (पु०) (बडा भाई) बडी बहिन । अवस्थामें बडी बडे भाईकी स्त्री (स्त्री०) टाप् । गंगा । अलक्ष्मी । अठारवां नक्षत्र (स्त्री०) । ङीप् । "ज्येष्ठी".

्येष्ठतात, (पु०) तातस्य ज्येष्ठः । पिताके आगे उत्पन्न हुआ ताया जेठा.

्येष्ठवर्णः, (पु०) ज्येष्ठः वर्णः । सबसे ऊंची जाति (ब्राह्मण).

ज्येष्ठांशः, (पु०) ज्येष्ठस्य अंशः । बडेभाईका भाग (हिस्सा) । उत्तमभाग.

ज्येष्ठाश्रम, (पु०) ज्येष्ठ आश्रमो यस्य । सबसे बडे आश्रमवाला । "तीनो आश्रमोंको अन्नादिद्वारा गृहस्थही धारण करता है इस लिये यही बडा आश्रम है" गृहस्थाश्रम.

ज्यैष्ठी, (पु०) ज्येष्ठानक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी ज्यैष्ठी सास्मिन् मासे अण् । अपने नामका चांद्रमास । जेठका महीना.

ज्यैष्ठ्य, (न०) ज्येष्ठस्य भावः ष्यञ् । ज्येष्ठता । बडापन । "विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यम्" इति मनुः.

ज्योक्, (अव्य०) सम्प्रति । अब । बहुत समय । जल्दी । सवाल । प्रश्न.

ज्योतिरिङ्ग, (पु०) ज्योतिरिव इङ्गति । इग्+अच् । रौशनीकी तरह चमकताहै । खद्योत । टणाणा ।–ङ्गण । आगकी मक्खी.

ज्योतिर्विद्, (पु०) ज्योतिषां (सूर्यादीनां) गत्यादिकं वेत्ति । जो सूर्य आदिकी गति (चाल) को जानताहै । विद्+क्विप् । ज्योतिःशास्त्रको जाननेवाला.

ज्योतिःशास्त्र, (न०) ६ त० । ग्रह और नक्षत्र आदिकी गति और स्वरूपका निश्चय करनेवाला । इस शास्त्रके पांच स्कन्ध शास्त्रमें कहे हैं "होरा, गणित, संहिता, केरल और शकुन".

ज्योतिश्चक्र, (न० ६ त० । सूर्यआदि ज्योतियोंका मण्डल (दायरा) । सत्ताईस नक्षत्रोंवाला मेषआदि राशिओंका चक्र.

ज्योतिष, (न०) ज्योतिः अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः । ज्योति (ग्रह आदि) के विषयमें रचागया ग्रन्थ । नि० न वृद्धिः । ज्योतिःशास्त्र । वृद्धि । तरक्की । "ज्यौतिषं" यही अर्थ.

ज्योतिष्टोम, (पु०) ज्योतींषि स्तोमा यस्य यज्ञम् । ज्योति जिसके स्तोम (धन या स्तोत्र) हैं । सोलह ऋत्विजोंसे सिद्ध करने योग्य यज्ञविशेष.

ज्योतिष्मत्, (पु०) ज्योतिः अस्ति अस्य मतुप् । ज्योतिवाला सूर्य । प्लक्षद्वीप (जजीरा)का एक पर्वत । और मालकांगनी नामी लता (बेल) । रात्रि । रात । (योगशास्त्रमें) चित्तकी हालतका एक भेद । (स्त्री०) ङीप् । ज्योतिष्वाला (त्रि०).

ज्योतिस्, (पु०) द्योतते द्युत्यतेऽनेन वा । द्युत्+इसुन् । आदि दको ज होता है । चमकता है या जिसे चमकाया जाता है । सूर्य । अग्नि । और मेथीका वृक्ष । आंखकी कनीनिका (पुतली) में देखनेका साधन । पदार्थ । नक्षत्र (तारा) । प्रकाश । आपही चमकनेवाला । सबको चमकानेहारा चैतन्य (न०).

ज्योत्स्ना, (स्त्री०) ज्योतिः अस्ति अस्यां । न । उपधालोप । जिसका प्रकाश हो । कौमुदी । चांदनी । चन्द्रमाकी किरण । ङीप् । ज्योतिवाली रात्रि (स्त्री०).

ज्यौतिषिक, (पु०) ज्योतिषां शास्त्रं वेत्ति अधीते वा ठक् (इक्) । ज्योति (ग्रह आदि) ओंके शास्त्रको जानता या पढता है । दैवज्ञ । भाग्यको जाननेहारा । ज्योतिषी.

ज्रि, अभिभव-दबाना-तिरस्कार करना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । ज्रयति । अज्रैषीत्.

ज्री, वयोहानि । बूढा होना । चुरा० उभ० पक्षे क्र्या० पर० अक० अनिट् । ज्राययति-ते । ज्रिणाति.

ज्वर्, रोग-रोगी होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । ज्वरति.

ज्वर, (पु०) ज्वर्+घ । अपने नामका एक रोग । बुखारकी बीमारी । ताप । कसस । बुखारकी गर्मी.

ज्वरघ्न, (पु०) ज्वरं हन्ति । हन्+टक् । जो ज्वर (बुखार) को मारता है । गिलोय । गुडूची । ज्वरका नाशक (त्रि०) मंजीठ (स्त्री०).

ज्वरप्रतीकार, (पु०) ज्वरस्य प्रतीकारः । ज्वरका उपाय (इलाज).

ज्वराग्निः, (पु०) ज्वरस्य अग्निः । ज्वर (बुखार) की अग्नि=ताप (आग).

ज्वरान्तक, (पु०) अन्तयति । अन्त+तत् करोति णिच् ण्वुल् । ६ त० । ज्वरको अन्त करनेवाला । नेपालकी नीम । लोहेकी बनीहुई दवाई । बुखारको दूर करनेवाली दवाई (त्रि०).

ज्वरापहा, (स्त्री०) ज्वरं अपहन्ति । अप+हन्+ड । ज्वरको दूर कर्ती है । बेल । सोंठ । बिल्वपत्र । ज्वरनाशक (त्रि०).

ज्वरित, (त्रि०) ज्वरः सञ्जातः अस्य । तारका० इतच् । जिसे बुखार होगया हो । ज्वरयुक्त । बुखार चढाहुआ.

ज्वल्, दीप्ति-चमकना-चलन-चलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । ज्वलति । अज्वालीत् । ज्वलयति । ज्वलः । ज्वालः.

ज्वलन, (पु०) ज्वलति । जलता है । चमकताहै । ज्वल्+युच् । वह्नि । आग । चित्रकका वृक्ष । "भावे ल्युट्" दीप्ति । चमकना । दाह । जलना.

ज्वलनाश्मन्, (पु०) ज्वलतीति ज्वलनो देदीप्यमान अश्मा (सूर्यकी किरणोंके पडनेसे) चमकताहुआ पत्थर । सूर्यकान्त मणि । सूर्यकी पियारी मणि । सूरजका पत्थर.

ज्वलित, (त्रि०) ज्वल्+क्त । दग्ध । जलाहुआ । दीप्त । चमका हुआ । उज्ज्वल । प्रकाशमान । भास्वर । चमकीला.

ज्वाल, (पु०) ज्वल्+ण । अग्निशिखा । आगकी लाट । दीपिकामें टार् । मशाल अर्थ । चमकताहुआ (त्रि०).

ज्वालजिह्व, (पु०) ज्वालः (तिमिर) जिह्वा यस्य । (जलनेवाली) वस्तुको चाटनेसे लाटकी भाई जिसकी जीभ है । वह्नि । अग्नि.

ज्वालामुखी, (स्त्री०) पीठस्थानविशेष । दुर्गाका स्था… "ज्वालामुख्यां महाजिह्वो देव उन्मत्तभैरवः । अम्बि… सिद्धिकानाम्नी स्तनो जालन्धरे ममेति" तन्त्रम्.

ज्वालावक्त्र, (पु०) ज्वाला एव वक्त्रं यस्य । लाटही जि… मुख है । शिवजीका नाम । अग्नि.

ज्वालिन्, (त्रि०) ज्वल्+णिनि । लाटवाला । चमकनेवा… शिवजी महाराजका एक नाम.

झ

झ, (पु०) झग-संहति-इकट्ठाहोना-ग्रह-पकडना-पिधानबंद… रना । ड । झञ्झावात । बडी जोरकी हवा (जिसमें वर्षा… साथ हो) । बृहस्पति । इन्द्र । ध्वनि । आवाज । नष्ट… खोईगई चीज (त्रि०).

झग (गि) ति, (अव्य०) शीघ्र । जल्दी । उसी समय… एकबारही.

झंकार, (पु०) झं इत्यव्यक्तशब्दस्य कारः । कृ+घञ् (अ… भ्रमर आदिका शब्द । भौंरेकी आवाज.

झंकृति, (स्त्री०) झन् इत्यव्यक्तशब्दस्य कृतिः । कृ+क्तिन्… कांसीआदिकी आवाज.

झञ्झा, (स्त्री०) एक प्रकारकी ध्वनि (आवाज) । … वायु (हवा) सख्तहवा.

झट्, (संहति) इकट्ठा होना । भ्वा० पर० अक० सेट्… झटति । अझाटीत्-अझटीत्.

झटिति, (अव्य०) शीघ्र । जल्दी । झट । उसीवक्त… एकहीवार.

झण, (न०)-त्कार, (पु०)-झणदित्यव्यक्तशब्दस्य का… करणम् । कृ+घञ् । झमझम करना । कङ्कण (कडे) आ… दिकी आवाज.

झम्प, (पु०) झम्+पत् झं इति कृत्य पतति । पत्+ड वा… बलके साथ ऊपरसे नीचेको गिरना । कूदना । (स्त्रियां)… "झम्पा".

झर, (पु०) झृ+अप् । निर्झर । झरना । झरनेसे निकला… जलका प्रवाह.

झर्च (छं) र्, कहना-झिडकना । चुरा० पर० सक० सेट्… झर्चं (छं) यति.

झर्झर, (पु०) झर्झ+अरन् । (झांझ) बाजेका भेद । दो… कलियुग । एकनद । बाजा.

झल्लक, (पु० न०) झर्झ+ण्वुल् पृ० । कांसीका बाजा । ए… प्रकारका बाजा । मंजीराह.

झल्लरी, (स्त्री०) झर्झ+अरन् । पृ० । एक प्रकारका बाजा… झुन्द । गच्छ । गीला । ढोल.

झष्, मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । झषति । अझषी… अझषीत्.

झट्, सेना-संदरना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । झटति-ते । अझटीत्

झष, (पु०) झष्यते कर्मणि घ (अ)। मत्स्य । मच्छ । मछली । मीनराशि "भावे घ (अ)"। ताप । गर्मी । धूप । वन (न०).

झषकेतु, (पु०) झषो (मीन) (मकरः वा) केतुः यस्य। जिसका निशान (झंडा) मछली हो । मदन । कामदेव । "झषकेतन" आदि.

झषोदरी, (स्त्री०) झषस्य उदरे [illegible] उदरं यस्याः-ब०स० । सत्यवतीका नाम । व्यासमाता.

झाट, (पु०) झट्+णिच्+अच् । वेलोंसे ढकाहुआ स्थान । कान्तार । जंगल । व्रण (फोड़ा वा जख़म) आदिका धोना

झामक, (न०) झम्+कर्मणि ण्वुल् (अक)। बहुत पकी-हुई ईंट.

झिङ्गिनी, (स्त्री०) ङी० । झिंगिनीका पेड़ । उल्का लुआठी.

झिल्ली, (स्त्री०) झिलति । झिल्+अच् ङी० । एक प्रकारका कीड़ा । झींगुर.

झुण्ट, (पु०) झुण्ट्+अच्-ङी० । स्तम्ब । गुल्म । झाड़ी.

झॄ, बूढा होना । दिवा० पर० अक० सेट् । झीर्यति । अझा-रीत् । झरा.

ञ

ञ, (पु०) वृष (बैल) । शुक्र । तिरछे जाना । गायन । गाना । घर्घर ध्वनि । घुरघुराना.

ट

ट, (पु०) टल्+ड । वामन । बौना । घाट । पाँव । निस्वन । चुपचाप । मरेलकी खोपड़ी । टंकार (न०).

टङ्क्, बांधना । चुरा० उभ० सक० सेट् । इदित् । टङ्कयति-ते । अटटङ्कत्-त.

टङ्क, (पु०) टकि+घञ्-अच् वा (अ)। कोप । गुस्सा । खजाना । कोष । तलवार । और पत्थर फाड़नेका अस्त्र (औज़ार) । चार माशेका माप । जांघ । खनित्र । रेखा । अहंकार (पु० न०).

टङ्कक, (पु०) टङ्कयते घञ् (अ) संज्ञायां कन् । रजतमुद्रा । चांदीकी मोहर । रुपया.

टङ्कार, (पु०) टं इति अव्यक्तशब्दस्य कारः । कृ+घञ् (अ)। टंकोर । एक प्रकारकी आवाज । धनुषसे चिल्ले चढ़ानेकी आवाज । विस्मयध्वनि.

टङ्कन (पु०) टकि+ल्युट्(अन्)एक प्रकारकी खार। सुहागा.

टिटि, (टि) भ, (पु०) टि टि (टि) इति अव्यक्तशब्दं भाषते । भाष्+ड । [illegible] टि शब्द करनेवाला । टिटहरा । "स्वार्थे कन्" यही अर्थ.

टिप् प्रेरण-प्रेरणा करना । चलाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । टेपयति ते.

टिप्पनी, (स्त्री०) टिप्+क्विप् । टिपा पन्थते (सूच्यते) अच् । अर्थद्योतक टीका.

टीकृ, गति-जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । टीकते । अटीकिष्ट.

टीका, (स्त्री०) टीक्+क । कठिनपदोंका वर्णन दिखाने-करनेहारी वृत्ति.

ठ

ठ, (पु०) मण्डल । चन्द्रमाका बिम्ब (स्वरूप) । सूना । महेश्वर । महादेव । बड़ी आवाज.

ठकुर, (पु०) ठाकुर । देवताकी प्रतिमा (मूर्ति) । ब्राह्म-णोंकी एक उपाधि.

ड

ड, (पु०) डी+ड (अ)। वाडवाग्नि । समुद्रकी आग । शब्द । आवाज । त्रासपक्षी । शिवजी.

डमरु, (पु०) डम् इति शब्दं ऋच्छति । ऋ+उन् । डौंरु । एक प्रकारका बाजा । कापालिक योगियोंके बजानेलायक । चमत्कार.

डल्लक, (न०) वांस आदिका रचाहुआ पात्र । डला.

डयित्थ, (पु०) काष्ठमयमृग । लकड़ीका बनाहुआ हिरन.

डाकिनी, (स्त्री०) डाकानां समूहः इनि । कालीके पार्षद गणोंमेंसे एक.

डामर, (पु०) शिवजीसे कहागया तन्त्रशास्त्र । भयानक । डांकनाक.

डिण्डिम, (पु०) डिण्डि इति शब्दं मिनोति प्रक्षिपति मि+ड । जो डि डि ऐसे शब्दको निकालता है । एक बाजा । वृक्षविशेष.

डिण्डि (णी) र, (पु०) डिण्डि इति शब्दः अस्ति अस्य रः (पहिले पदको दीर्घ हो जाता है) समुद्रकी फेन (झाग).

डित्थ, (पु०) लकड़ीका हाथी । श्यामरूप, जवान, विद्वान्, सुन्दर, सम्पूर्णशास्त्रोंके अर्थको जाननेहार कोई पुरुष.

डिप्, इकट्ठा होना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० आ० अक० सेट् डेपयति-ते । डेपते.

डिब्, प्रेरण-चलाना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । डिम्बयति-ते । डिम्बति.

डिम्, हिंसन-मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । डेमति । अडेमीत्.

डिम्ब, (पु०) डिबि+घञ् (अ)। विप्लव । बच्चा । अण्डा । भयानक शब्द । डर.

डिम्भ, (पु०) डिभि+अच् । मूर्ख । बच्चा । "स्वार्थे कन्" यही अर्थ.

डी, आकाशमें जाना । उडना । भ्वा० आ० अक० सेट् । डयते । अडयिष्ट.

डीन, (न०) डी+भावे क्त । पक्षिओंकी गति (चाल) । उड्डान उडना.

डुण्डुभ, (पु०) डुण्डु+भण्-भावे+ड । (ढोंडा) एक प्रकारका सांप.

ढ

ढ, (पु०) ढक्का । बाजा । कुत्ता कुत्तेकी पूछ । निर्गुण । गुणहीन । ध्वनि । आवाज । सांप.

ढक्का, (स्त्री०) ढक् इति कायति । कै+क । एक बाजा । बडा या दूना बाजा । यशका बाजा.

ढुण्ढ, अन्वेषण (ढूंढना । तलाश करना । खोजना) भ्वा० पर० सक० सेट् । ढुण्ढति.

ढुण्ढि, (पु०) ढुण्ढ्+इन् । गणेश (काशीमें प्रसिद्ध ढुण्ढि-राज).

ढौक, प्रेरण । चलाना और जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ढौकते । अढौकिष्ट.

ण

(इस "ण" अक्षरके साथ प्रारम्भ होनेवाला ऐसा शब्द कोई नहीं कि जिसे संस्कृतमें अधिक बोलचालमें लातेहों । बहुतसे धातु जो धातुपाठमें "ण" के लिखे जाते हैं वास्तवमें वे "न" के साथ प्रारम्भ होते हैं । "ण" के साथ लिखनेका कारण यह है कि जिस्से जाना जाय कि "न" कईएक उपसर्गों [प्र-अन्तर आदि] के पहिले आनेसे "ण" के साथभी बदला जायगा.

ण, (पु०) णम्-जाना-ड (अ) पृषो० । ज्ञान । इल्म । निर्णय । फैसला । भूषण । जेवर । जल । पानी । जलका स्थान । बुरा आदमी । शिवजी । नाहिंकी आवाज । देना । बख्शीश.

णट्, नाचना-बतायेके साथ नटका कामकरना-मारना । भ्वा० पर० अक० सेट् । नटति-प्रणटति । अनाटीत्-अनटीत् । (मारना) प्रनटति.

णद्, अव्यक्त शब्द । गुप्त आवाज करना । भ्वा० पर० अक० सेट् । नदति । प्रणदति.

णश्, अदर्शन । छिपाना । नाश होना । दिवा० पर० अक० । वेट् । नश्यति । प्रणश्यति । अनेशत्-अनशत् । प्रनष्टः.

णह्, बांधना । दिवा० उभ० सक० अनिट् । नह्यति- ते । प्रणह्यति-ते । अनात्सीत् । अनद्ध.

णिज्, शोधन । साफ करना । जुहो० उभ० सक० अनिट् । नेनेक्ति । प्रणेनेक्ति । नेनिक्ते । अनिजत् । अनैक्षीत् । अनिक्त.

णिस्, चूमना । अदा० सक० सेट् । इदित् । निंस्ते । प्रणिंस्ते । अनिंसीत्.

णी, प्रापण -पहुंचाना -लेजाना । भ्वा० उभ० द्विक० अनिट् । नयति । प्रणयति । अनैषीत् । अनेष्ट.

णु, स्तुति । तारीफ करना । अदा० पर० सक० वेट् । नौति । प्रणौति । अनावीत् । अनौषीत् । नुनुविव.

त

त, (पु०) तक्-हंसना-हराना । बाड (अ) । चोर । हाथी । पूछ । गोद । म्लेच्छ । रत्न । सियारकी पूंछ । छाती । लडाका । चंचल और पुण्य (न०).

तक्, दौस्थ्य-दुःखी होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । तङ्कति । अतङ्कीत्.

तक्र, (न०) तक्+रक् । चौथा भाग जलके संयोगसे मथाहुआ दही । छाछ । लस्सी.

तक्रकूर्चिका, (स्त्री०) [छाना] । पकेहुये गर्म दूधमें लस्सीके संयोगसे बनीहुई आमिक्षा.

तक्ष्, कार्श्य । कमजोर करना । काटना । छीलना । भ्वा० (पक्षे) स्वा० पर० सक० वेट् । तक्षति-तक्ष्णोति । अतक्षीत्-अताक्षीत् । (छिटकना) । संतक्षति.

तक्षक, (पु०) तक्ष+ण्वुल् । तर्खान । कारीगर । विश्वकर्मा । कश्यपका पुत्र । एक नागका नाम.

तक्षन, (पु०) तक्ष+कनिन् । विश्वकर्मा । तर्खान । चित्रा नामी नक्षत्र (तारा).

तक्षशिला, (स्त्री०) सिंधदेशमें एक नगरी.

तगर, (पु०) (तगर) एक वृक्षका नाम.

तङ्कन, (न०) तकि+ल्युट् (अन) । दु खसे जीना । डरना.

तच्छील, (त्रि०) तत् शीलं यस्य । उस स्वभाववाला कोई जन.

तञ्च्, सिकोडना । रुधा० पर० सक० वेट् । तनक्ति । अतञ्चीत् । अताङ्क्षीत्.

तट्, ऊंचा होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तटति । अताटीत्-अतटीत्.

तट, (त्रि०) तट्+अच् । कूल । किनारा । तीर । नदी आदिका कंडा.

तटस्थ, (त्रि०) तटे तिष्ठति । स्था+क । तीरका । किनारेका । पाराका । स्वरूपसे भिन्न विशेषण । मध्यस्थ उदासीन पुरुष.

तटाक, (पु०) तटं अकति । अक्-टेढाजाना+अण् (अ) । थोडेपानीवाला तालाव.

तटाग, (पु०) तटं अगति । अग्-टेढाजाना+अण् (अ) । तलाव (तडाग).

तटा (टा) घात, (पु०) । हाथीने सूंडको ऊंचे करना । वप्रक्रीडा । किनारेपर हाथीने सूंडसे खेलना.

तटिनी, (स्त्री०) तट्+अस्ति अर्थे इनि। नदी। दर्या.

तड़ाग, (पु०) तड्-घोट लगाना। नि०। तालाब। गहरा तालाब। हरिण पकड़नेका जाल.

तडित्, (स्त्री०) ताडयति मेघम्। जो बादलको फटकारती है। पुरा० तड्-नि०। बिजली.

तडित्वत्, (पु०) तडित् अस्ति अस्य मतुप् मको व। बिजलीवाला। बादल.

तडिद्गर्भ, (पु०) तडित् गर्भे यस्य। बिजली जिसके गर्भ (मध्य) में है। बादल। मेघ.

तडिल्लता, (स्त्री०) तडित् लता इव। बिजली जो बेलके स्वरूपमें है। तीक्ष्ण बिजली.

तडिल्लेखा, (स्त्री०) तडितः लेखा। बिजलीकी रेखा (लकीर).

तडिन्मय, (त्रि०) तडित्+मयट्। बिजलीवाला। बिजलीसे भरा हुआ.

तण्डक, (पु०) तडि+ण्वुल् (अक०)। ममोला। खाग। ऐसा वचन कि जिसमें समास (बहुत शब्दोंका एकशब्द हो जाना) बहुत हों। घरकी लकड़ी और वृक्षका स्कन्ध। मायावी। फरेबी। चलककरनेवाला जन (त्रि०).

तण्डुल, (पु०) तडि+उलच्। धानोंका सार। चावल। तोहरहित धान.

तत्, (अव्य०) तन्+क्विप्। हेतु। इसलिये। इसकारण.

तत, (न०) तन्+क्त। वीणा आदि बाजा। वायु। हवा (पु०)। विस्तृआ। फैलाहुआ (त्रि०)

ततम, (त्रि०) तद्+डतम्। बहुतोंमेंसे एक। "ततर"। दोनोंमेंसे एक.

ततस्-ततः, (अव्य०) तद्+तसिल्। उस पुरुष या स्त्रीसे या उस स्थानसे। वहांसे। उसके अनन्तर.

ततस्त्य, (त्रि०) अव्ययसे त्यप् होता है। तत्रभवः। वहां होनेहारा। वहांका.

तति, (स्त्री०) तन्+क्तिन्। श्रेणी। कतार। समूह। फैलना.

तत्काल, (पु०) सः कालः। वह समय। वर्तमानकाल। होरहासमय.

तत्कालधी, (त्रि०) तस्मिन् योग्ये समये धीर्मतिर्यस्य। जिसकी ठीक समयपर बुद्धि फुरे। सिरपर आई विपत्तिको दूर करनेवाली अक्कल.

तत्क्रिय, (त्रि०) वेतनं विना क्रिया यस्य। तनखाहके बिना काम करनेहारा.

तत्क्षण, (पु०) स चासौ क्षणः। उसी वक्त। झट्ही। सद्यः। जल्दीसे.

तत्त्व, (न०) तन्+क्विप्। ततो भावः। तस्य भावः। स वा तत्त्वेऽपः। सचाई। स्वरूप। असली हालत। परमात्मा। ब्रह्मज्ञान। नाचना। बजाना। गाना। चित्त। वस्तु। सांख्यके २५ पदार्थ.

तत्त्वज्ञान, (पु०) ६ त०। यथार्थज्ञान। सच्चाज्ञान। ब्रह्मज्ञान। ब्रह्मको जानना.

तत्त्वविद्, (त्रि०) तत्त्वं वेत्ति। ठीक २ जानता है। दार्शनिक। ब्रह्मके वास्तविक स्वरूपको जानेहारा.

तत्त्वाभियोगः, (पु०) तत्त्वेन अभियोगः। यथार्थ अपराध। सची नालिश.

तत्पर, (त्रि०) तत् परं (उत्तमं) यस्य। सद्गत। उसमें गया। उसीमें फसगया.

तत्परायण, (त्रि०) तदेव परं अयनं यस्य (मत)। वही जिसका बड़ा आश्रय है। तदासक्त। उसीमें निरंतर लगाहुआ.

तत्पुरुष, (पु०) मुख्य पुरुष। परमात्मा। समासोंमेंसे एक। (जिसमें पहिला पद दूसरे पदके अर्थको जताता है) जैसे "राजपुरुषः".

तत्पुरुष, (पु०) सः पुरुषः। वह मुख्य पुरुष या परमात्मा। एकप्रकारका समास जिसमें प्रथम पद प्रधान होता है.

तत्र, (अव्य०) तस्मिन् सप्तम्यर्थे त्रल्। उस समय। उस जगह। वहां.

तत्रत्य, (अव्य०) तत्र भवः (अव्ययसे त्यप्)। वहां होनेवाला। वहांकी चीज.

तत्रभवत्, (त्रि०) सः पूज्यो भवान् (प्रथमाके अर्थमें त्रल्) कर्म०। पूज्य। पूजा करनेके लायक। हजूर (जो आखोंसे परे हो उसके लिये बोला जाता है। इज्जतसे आदिर कर्ताहै).

तथा, (अव्य०) प्रकार अर्थमें थाल् (था)। साम्य। वैसेही। पहिलेकी भांति मानलेना। निश्चय। उसी तौरपर.

तथाकृत, (त्रि०) तथाकृतः इस प्रकार किया गया। वैसे किया हुआ

तथागत, (त्रि०) तथा गतः। ऐसी दशामें हुआ। ऐसी हालतमें प्राप्त हुआ.

तथागुण, (त्रि०) तथा गुणा यस्य। वैसे गुणोंवाला.

तथाच, (अव्य०) पहिले कहेहुए अर्थको पक्का करना। उपरसे। जैसा कि.

तथारूप, (त्रि०) तथा रूपं यस्य। वैसे रूप (शकल) वाला.

तथाविध, (त्रि०) तथा विधा यस्य। वैसे प्रकारवाला। इस तरहवाला

तथास्तु, (अ०) तथा स्तु। ऐसाहो.

तथाहि, (अव्य०) निदर्शन। मसाल। दृष्टान्त। प्रसिद्ध है। जैसा कि.

तथ्य, (न०) तथा। तत्र साधु+यत्। सत्य। सच। सचवाला (त्रि०).

तद्, (त्रि०) तन्+अदि। पहिले कहाहुआ। बुद्धिमें ठहराहुआ। विचार करनेलायक। दूरका विषय। ब्रह्म (न०) "ओं तत्सदिति" गीता.

तदनन्तर, (त्रि०) तस्मात् अनन्तरः । उसके अनन्तर (पीछे) वाला ।–रं (अव्य०) उसके अगला । इसपर.

तदर्थ, (त्रि०) तस्य अर्थः । उसके प्रयोजनवाला । उसवास्ते.

तदर्ह, (त्रि०) तस्य अर्हः । उसके योग्य । उसके लायक.

तदवधि, (अव्य०) वहांतक.

तदवस्थ, (त्रि०) सा अवस्था यस्य । उस दशाअवस्था (हालत) वाला.

तदा, (अव्य०) तस्मिन् काले दाच् । उस समय । तब । उसवक्त.

तदात्मन्, (त्रि०) स आत्मा यस्य । जिसका वह स्वरूप हो । उस रूपवाला.

तदानीम्, (अव्य०) तस्मिन् काले । तद्+दानीम् । तब । उसवक्त.

तदेकचित्त, (त्रि०) तस्मिन् एकं चित्तं यस्य । उसमें एक चित्तवाला । उसीपर एक चित्त लगाये हुए.

तद्गत, (त्रि०) तस्मिन् गत आसक्तः । तत्पर । एकमन होनेसे उसीमें लगाहुआ.

तद्गुण, (पु०) अर्थालङ्कारविशेष.

तद्गुणसंविज्ञान, (पु०) तत्र (बहुव्रीहौ) गुणस्य (विशेषणस्य) संविज्ञानं (विशेष्यपारतन्त्र्येण बोधनं) यत्र । व्याकरणमें बहुव्रीहिसमासका एक भेद । जहां विशेष्यके आधीन होकर विशेषणका ज्ञान हो जैसे "लम्बकर्णमानय" यहां गुणीभूत कर्णका भी लाना है.

तद्धन, (त्रि०) तदेव धनं यस्य । जिसका वही धन है । कृपण (सूम) । (इसे जितना मिले उसे थोड़ा समझकर अपनेमें उतनेही धनका अभिमान करताहै).

तद्धर्मन्, (त्रि०) किसी और उद्देश्यके बिना जिसका वही धर्म हो "यह अपना धर्म है" ऐसा समझकर धर्ममें लगाहुआ जन.

तद्धित, (पु०) तेभ्यः हितः । उनके लिये हितकारी । व्याकरणमें नामके आगे लगनेवाले प्रत्यय.

तद्वत्, (अव्य०) तेन तुल्यं वा तुल्या सा चेत् क्रिया । उसके समान क्रियावाला । उसके समान । "तद्वत् चित्तस्य विभुता."

तन्, फैलना-विस्तृत होना । उभ० सक० सेट् । तनोति-तनुते । अतानीत्-अतनीत् । अतत-अतनिष्ट.

तनय, (पु०) तनोति कुलम् । तन्+कयन् (अय) । जो कुलको फैलाता है । पुत्र । बेटा । लड़की । बेल । जीवीकंद (स्त्री०).

तनिमन्, (पु०) तनोर्भावः इमनिच् । छोटेका होना । पतलाई । कार्श्य । बारीक । नाजुकपना.

तनु, (स्त्री०) तन्+उ । देह । शरीर । मूर्ति । त्वक् (या ऊद) । थोड़ा । पतला । सूक्ष्म । बारीक । नाजुक । (स्त्रियां वा ङीप्) तन्वी-तनुः.

तनु(नू)ज, (पु०) तनोः तन्वा वा जायते । जन+ड । शरीरसे उपजा । पुत्र । बेटा । लड़की (स्त्री०) । जो देहसे उपजा हो (त्रि०).

तनुच्छाय, (पु०) तनुः छाया यस्य । जिसकी थोड़ी छाया हो । बबूलका वृक्ष । शरीरकी छाया या कवच । ६ त० । (स्त्री० न०).

तनुत्यज्, (त्रि०) तनुं त्यजति । शरीरको छोड़नेवाला । मरनेवाला.

तनुज, (पु०) तनोः वा तन्वाः जायते । शरीरसे उत्पन्न होता है । पुत्र । बेटा ।–जा (स्त्री०) पुत्री । बेटी.

तनुत्र, (न०) तनुं (देहं) त्रायते । त्रै+क । जो देहको बचाता है । कवच । जिरह । स्नुह् । "तनुत्राणं" यही अर्थ.

तनुमध्या, (स्त्री०) तनौ (देहस्य) मध्या इव । जो शरीरकी पूंछनी है । नासिका । नाक । कर्म० । है धौंकनी.

तनुभृत्, (पु०) तनुं (देहं) बिभर्ति । (आत्मत्वेन बहु मन्यते) भृ+क्विप् । जो शरीरको अपना मानता है जीव । "या सृष्टा तनुभृतां".

तनुवार, (न०) तनुं (देहं) वृणोति । वृ+अण् । उप० जो शरीरको ढांक लेता है । कवच । जिरह । बख्तर.

तनुस्, (न०) तन्+उसि (उस्) । देह । शरीर । वि...

तनूनपात्(द्), (पु०) तनुं न पातयति । पत्+णिच्+क्विप् । जो शरीरको न गिरनेदे । अग्नि । आग । देह रहकरभी खायेहुए अन्नको पचानेसे यह देहको गिरने नहिं देती । तनूं न पाति (रक्षति) । पा+अच् । जो शरीरको न बचावे । वह्नि । आग । (यह शरीरको जला देती है) । (पक्षे) तन्वा कनं कृशं पाति तनूनपं धृतं तत् अत्ति । अद्+क्विप् जो निर्बलको बचावे (घी) । घी खाजाय । वह्नि । आग.

तनूरुह, (न०) तनौ रोहति । रुह्+क । जो शरीरमें उगता है । लोम । रोम । रूं । पक्षिओंके पर.

तन्तु, (पु०) तन्+तुन् (तु) । ग्राह । एकप्रकार पानीका जीव । अपरर । सन्तान । औलाद । धागा । सूत । तान । तन्द.

तन्तुकीट, (पु०) तन्तूत्पादकः कीटः । सूतको निकालने वाला कीट (कीड़ा) । रेशमी कीड़ा.

तन्तुनाग, (पु०) तन्तुवत् दीर्घः नागः । बड़ा लंबा नाग (सर्प).

तन्तुनाभ, (पु०) तन्तुः नाभौ अस्य । अच् स० । जिसकी नाभिमें सूत हो । कृता । मकड़ी.

तन्तुनिर्यास, (पु०) तन्तुः इव निर्यासः यस्य । जिसकी गोंद तांतोंके समान हो । तालका वृक्ष.

तन्तुपर्वन्, (न०) तन्तोः यज्ञोपवीतस्य दानरूपं पर्व । यज्ञोपवीत (जनेऊ) के देनेका पर्व । सावन (श्रावण)- की पूर्णिमा । (इस दिन ब्राह्मणोंको अनेक दान करनेका उत्सव किया जाता है).

तन्तुर-ल, (न०) तन्तुः विद्यते अस्य । र । लच् वा । तांतवाला । मृणाल । कमलकी डण्डी । भें.

तन्तुभ, (पु०) तन्तुवत् भाति । तांतकी तरह चमकता है । सरसोंका बीज । बत्स । बच्छा । बछेरा.

तन्तुवर्धन, (पु०) तन्तुं=वंशं वर्धयति+वृध्+ल्यु । वंशको बढानेवाला । विष्णु । शिव.

तन्तुवाद्य, (न०) तन्तुमिश्रं वाद्यं । तान्तोंवाला बाजा । सितार । बीन.

तन्तुवाप, (पु०) तन्तून् वपति । वप्+अण् उप० । जो तांतोंको बोता है । तन्तुवाय । जुलाहा । बुनेवाला.

तन्तुवाय, (पु०) तन्तून् वयति । वे+अण् । जो तांतोंको बुनता है । जुलाहा । जातिविशेष.

तन्तुविग्रह, (स्त्री०) तन्तवः विग्रहे यस्याः । जिसके शरीरमें तांतें हों । कदली । केला । इसकी छालमें बहुत सूत प्रकट होते हैं.

तन्तुशाला, (स्त्री०) तन्तूनां वपनाय शाला । तांत बुनेका घर । सूत बुनेका घर । जुलाहेका घर.

तन्तुसन्तत, (त्रि०) तन्तुभिः सन्ततं (व्याप्तं) । जो तांतोंसे घिराहो । स्यूतवस्त्र । सीयागया कपडा.

तन्त्र, (न०) तन्+ष्ट्रन् । सिद्धान्त । फैसला । औषध । दवाई । कुटुम्ब (कुनबा) का कार्य । प्रधान । वस्त्र । जुलाहा । दूसरेके आधीन होकर चलना । परिच्छद । पौशाक । हेतु । सबब । अर्थ (कार्य) को सिद्ध करने- हारा । तंतु । तांत । अपने राज्यकी चिन्ता । परिजन । नौकर । चाकर । तन्तुवाय (जुलाहेकी खड्डी) । प्रबन्ध । बन्दोबस्त । शपथ । कसम । सौ । धन । घर । बोनेका साधन । कुल । वेदकी एक शाखा । वेदादि शास्त्र । अपने नामसे प्रसिद्ध शिवजीका कहाहुआ शास्त्र.

तन्त्रक, (न०) तन्त्रात् अचिरात् अपहृतं+कन् (क) । जल्दी लियागया । नवीन वस्त्र । नया कपडा.

तन्त्रवाय, (प), (पु०) तन्त्राणि (तन्तून्) वय(प)- ति । वप्-वा-वे+अण् । उप० । तन्तुवाय । जुलाहा । तांती.

तन्त्रिका, (स्त्री०) तन्त्रयते । तन्त्र+ई (डिर) स्वार्थे कन् (क) । गिलोय.

तन्त्री, (स्त्री०) तन्त्रि+ई । गिलोय । एक प्रकारकी वीणा- सितार । शरीरकी । रस्सी । एक नदी । एक जवान औरत.

तन्द्रा, (स्त्री०) तन्द्+र+अ । आलस्य । ऊंघना । नींद । आंखोंमीटी । प्रमीला.

तन्द्रालु, (त्रि०) तन्द्+आलुच् । निद्राशील । बहुत सोने- वाला.

तन्द्रित, (त्रि०) तन्द्रा जाता अस्य-तन्द्रा+इतच् । जिसे ऊंघ आगई है । आलसी.

तन्द्रिन्, (त्रि०) तन्द्रा+इन् । आलसी । सुस्त । विश्रान्त । थकाहुआ.

तन्मय, (त्रि०) तदेव । मयट् । वही । उसी स्वरूपको पहुंचा । अभेद । वही । तद्रूप.

तन्मय, (त्रि०) तद्+मयट् । उसका बनाया हुआ । उस स्व- रूपवाला.

तन्मात्र, (त्रि०) तदेव । तदात्मक । वही । उसी स्वरू- लक्ष । शब्द-स्पर्श-रूप-रस और गंध.

तन्वी, (स्त्री०) तनु+ङीप् । एक प्रकारकी बेल । इत्यादि । नाजुक स्त्री । क्षीणमध्या । पतली कमरवाली स्त्री । एक प्रकारका छन्द.

तप्, दाह-जलाना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । तपति-ते । अता- पीत्-अतापीत् । अतापिष्ट.

तप, (पु०) तप्+अच् (अ) ग्रीष्म । गरमी । जेठ और हाडका महीना.

तपःक्लेश, (पु०) तपसः क्लेशः । तपस्याका दुःख.

तपती, (स्त्री०) तप्+शतृ नि० । छाया नामवाली सूर्यकी स्त्री । एक नदी । सूर्यकी कन्या (जिसके योगसे कुरु तापत्य कहे जावेहैं).

तपन, (पु०) तप्+ल्यु (अन) सूर्य । ताप । गरमी । भल्लातक । एक नरक । गर्मीका मौसम (ऋतु) । आकका वृक्ष । सूर्यकान्तमणि.

तपनतनय, (पु०) ६ त० । यम । यमुना और शमी (जंडी) वृक्ष (स्त्री०).

तपनमणि, (पु०) तपनस्य मणिः । सूर्यमणि.

तपनात्मजा, (स्त्री०) तपनस्य=सूर्यस्य आत्मजा । सूर्यकी पुत्री । यमुना.

तपनी, (स्त्री०) तप्+ल्यु (अन) ङीप् । गोदावरी नदी.

तपनीय, (पु०) तप्+अनीयर् । स्वर्ण । सोना । तपने- लायक । स्वार्थे कन् । यही अर्थ.

तपश्चरण, (न०) तपसः चरणं । तपस्या करना । तपका अभ्यास.

तपस, (पु०) तप्+असुन् । माघका महीना । शिशिर ऋतु । जनलोकके ऊपरका लोक । आलोचन । शोधन । अपने आश्रमका विहित धर्म । चान्द्रायण आदि कर्म (ज्योतिषमें) लग्नसे नवम घर.

दपन्य, (पु०) दर्शति ऋतुः ([illegible]) यदा । दपन्या करनेके लिये जो अच्छा हो (जिसमें न तो बहुत सर्दी और न गर्मी हो) फल्गुनमास । फागनका महीना । "तपसि (फल्गुने) मासः" । कुन्दकानी पुष्प (फूल) । तपस्याने फल्गुन (मि०).

तपस्या, (स्त्री०) तपः चरति । तपस्+क्यङ् (य)+अ । तपश्चरण । तपस्या करना । व्रत करना । [illegible].

तपस्विन्, (वि०) तपस्+(है इस अर्थमें) विनि (विन्) जो तपस्या करता है । तापस । तपस्या करनेवाला । [illegible] करनेवाला । दीन । अच्छे तपवाला । [illegible] (पु०).

तपस्विनी, (स्त्री०) तपस्+(विनि-विन्)+ङीप् (ई) । तपस्या करनेवाली की (औरत) दीन । दुःखित औरत । तप करनेवाली की (औरत) । [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] । "[illegible]" [illegible] .

[illegible], (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । ([illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible]

[illegible] (वि०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] (न०) [illegible] ([illegible]).

[illegible], (वि०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible].

[illegible] (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible]

[illegible] (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible]

[illegible] (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

तप्तकाञ्चन, (न०) तप्तं काञ्चनं । अग्निमें तपा हुआ सुवर्ण (सोना).

तप्तकुम्भ, (पु०) तप्तः कुम्भः यत्र । जहां तप्त कुम्भ हो । नरकभेद । एक नरकका नाम.

तप्तकृच्छ्र, (न०) एक प्रकारका व्रत (जिसमें तीन दिन तपाहुआ जल (पानी) घी और वायु (हवा) पीता है अर्थात् पहिले तीन दिन गर्म पानी दूसरे तीन दिन गर्म घी पीना और तीसरे तीन दिन वायुको पान करके व्यतीत करना).

तम्, गेर-धकमाना । तकलीफ उठाना । [illegible] । (इच्छा) सक० दिवा० पर० सेट् । ताम्यति । [illegible] मीत् । तमिगा-तामना.

तम, (पु०) ताम्यति । तम्+अच् (अ) । [illegible] (एक भागमें) तमालका वृक्ष.

तमस्, (न०) तम्+असुन् (अस्) । [illegible] निरोध करनेवाला तम अविद्या [illegible] (अज्ञान) । पाप (गुनाह) कर्म ([illegible] और अधर्म (न करनेयोग्य) का न दिखाना । [illegible] दर्शनको रोकनेवाला दोष । "गुणसाम्यमेव तम" [illegible] एक गुण (जिसके साथ जीव मोहा हो जाता है) । [illegible]

तमस्विनी, तमस् (अन्धकार) विनि (विन्) । [illegible] अंधेरा हो । रात्रि । रात.

तमाल, (पु०) तम+अलच् (अल) । एक वृक्ष । [illegible] वरणवृक्ष । खड्ग । तलवार.

तमि-मी, (स्त्री०) तम+इन् वा ङीप् (ई) । [illegible] रात । रात्रि.

तमिस्र, (न०) तम अस्ति अत्र । र । [illegible] । अंधेरा । क्रोध । मूर्च्छा । [illegible] [illegible] अंधेरी रात (स्त्री०)

तमिस्रपक्ष, (पु०) तमिस्रयुक्त पक्ष । अंधेरा ([illegible]).

तमोघ्न, (पु०) तम. ([illegible]) [illegible] ([illegible]) । जो [illegible] है । सूर्य । अग्नि । चन्द्र । [illegible] । बुद्ध । [illegible] [illegible]

तमोज्योतिस्, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] है । [illegible]

तमोनुद, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

तमोपह, (पु०) तम ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) । सूर्य । चन्द्र । अग्नि । [illegible] [illegible]

तमोभिद्, (पु॰) (तमः भिनत्ति+भिद्+क्विप्) । अंधेरेको फाडनेवाला । खद्योत । टटाना.

तमोविकार, (पु॰) तमसो विकारः । अंधेरेका विकार । व्याधि । बीमारी.

तमोवृत, (त्रि॰) तमसावृत । अंधेरेसे ढका हुआ । बिगडा हुआ । बादलसे ढका हुआ । क्रोधसे भरा हुआ.

तरक्षु, (पु॰) तरं (गति-मार्गं वा) क्षिणोति । जो रास्तेको रोकता है । पशुओंको खानेवाला छोटा भेडिया.

तरङ्ग, (पु॰) तॄ+अङ्गच् (अङ्ग) । ऊर्मी । लहर । वायुसे हिलकर पानीका नीचे ऊपर उछलना.

तरङ्गिणी, (स्त्री॰) तरङ्ग (अस्त्यर्थे) इनि (इन)+ङीप् (ई) लहरोंवाली नदी । दर्या.

तरङ्गित, (त्रि॰) तरङ्ग॰ सञ्जाताः अस्य । इतच् । जाततरङ्ग । जिसमें लहरे हों । लहरीला । लहरोंवाला । चंचल.

तरण, (पु॰) तॄ+ल्यु (अन) भेलक । भेला । डोंगा । और स्वर्ग । भावे ल्युट् (अन) पारजाना । तरना (न॰).

तरणि, (पु॰) तॄ-अनि (अनि) । सूर्य । डोंगा । आकका वृक्ष । किरण और तांबा (मा) । बेडी । नौका । घीकुवार (स्त्री॰).

तरंत, (पु॰) तॄ+झच् । समुद्र । भारी मेघका धमाधम बरसना । मेंडक । एक देश । राक्षस । मच्छ । ती (स्त्री॰) नौका । किश्ती.

तरतम, (त्रि॰) न्यून (कम) अधिक (जियादा) भाववाला अर्थ । जो शब्दके अन्तमें लगानेसे दोमेंसे एककी (तर) और बहुतोंमेंसे एककी (तम) अधिकता जतानेवाले प्रत्यय.

तरपण्य, (न॰) तरस (नद्यादिपारयानस्य) पण्यं (शुल्कं) । नदी आदिके पार जानेका महसूल । नदी आदिके पारजानेके लिये देनेलायक फीस (महसूल).

तरल, (पु॰) तॄ+अलच् । हारके बीचकी मणि । हार । और तल । चपल । कामी । छिनार । चमकीला । बहा हुआ पदार्थ रिजकी । कम्पी । मद्य । शराब (स्त्री॰).

तरलनयना, (स्त्री॰) तरले नयने यस्याः ब॰ स॰ । चंचल नेत्रोंवाली.

तरलित, (त्रि॰) तरल+इतच् । चंचल । कांपनेवाला.

तरवारि, (पु॰) तरं (शत्रूणां गतिं) वारयति । तॄ+णिच् (इ)+इन् । जो शत्रुओंकी गतिको रोकता है । एक तरवार.

तरस्, (न॰) तॄ+असुन् (अस्) । बल । वेग । तेजी । जल्दीसे जाना । रोग । तीर । बन्दर.

तरसा, (अव्य॰) झटिति । बहुत जल्दी । झट.

तरस्विन्, (पु॰) तरस्+(अस्त्यर्थे) विनि (विन्) वायु । हवा । गरुड । वेग चलनेवाला शूर (बहादुर) (त्रि॰).

तरि-री, (स्त्री॰) नौका । द्रोणी । बेडी । कपडेकी पिटारी । कपडेका पल्ला.

तरु (प) खण्ड, (पु॰) तरूणां समूहः तरु+ष (रा) ण्ड । वृक्षोंका समूह । वृक्षोंके टुकडे.

तर, (त्रि॰) तॄ+भावे अप् । लांघनेवाला । तरनेवाला । जीतनेवाला.

तरण, (पु॰) तॄ+ ल्युट् । नौका । किश्ती । स्वर्ग.

तरुण, (पु॰) तॄ+उनन् (उन) । एरण्डका वृक्ष । मोटा जीरा । कुब्जपुष्प । एक प्रकारका फूल (न॰) । नूतन (नया) । जवान (त्रि॰) । फिर उदयहुआ । गर्म । कोमल । ताजा । सद्यः मट्टीके तेलका पौदा । जवान औरत (स्त्री) । "हृदय तरुणी विषम्" हि॰ प॰.

तरुणज्वर, (पु॰) एक ज्वर (बुखार) जो बराबर सात दिनतक रहता है । एक सप्ताहतक रहनेवाला ताप.

तरुमृग, (पु॰) तरोः मृगः । वृक्षका मृग । बंदर । वानर.

तरुराज, (पु॰) तरूणां राजा+टच् । वृक्षोंका राजा । ताल्का वृक्ष । पारिजातक.

तरुशायिन्, (पु॰) तरौ शेते-शी+णिनि । वृक्षपर सोनेवाला । पक्षी । परिंदा.

तरुणिमन्, (पु॰) तरुण+इमन् । जवानपना । जवानी । जवान । युवा.

तरुविलासिनी, (स्त्री॰) वृक्षकी मानों विलासिनी है । नवमल्लिका.

तर्क, (पु॰) तर्क्+घञ् (अ) । आकाङ्क्षा । अभेदकी चाह । दलील । वितर्क । ऊह । ख्याल । संभावना । ढकोसला । "अप्रमात्वे तर्कः" वे॰ सं॰ । विवाद (झगडा) । न्यायशास्त्र । हेतु । केवल दलीलको माननेवाला शास्त्र । जहां व्याप्य (हेतु) को मानकर व्यापककी माना जाय । जैसे "यदि यहां आग न होवे तो धूम भी न होता" । मीमांसा आदि शास्त्र । वेदशास्त्रके साथ विरोध न रखनेवाली दलीलसे वेदशास्त्रकी परीक्षा करना । व्यभिचार (हेतुमें दोष) की शंकाको मिटानेहारे । न्यायमें कहेहुए आत्माश्रय आदि पांच दोष । न कहेहुए अर्थको दलीलोंसे ठीक २ जानना.

तर्क्, दीप्ति (चमकना)-अक॰ वितर्क । अन्दाज करना । ऊह करना । अनुमान करना । पर॰ चुरा॰ उभ॰ सेट् । तर्कयति-ते । अतर्कयत्-त.

तर्कक, (त्रि॰) (तर्क+ण्वुल्) तर्क (दलील) करनेवाला.

तर्कविद्या, (स्त्री॰) तर्कस्य विद्या । तर्क (युक्ति) की विद्या (इल्म).

तर्कशास्त्रं, (न०) तर्कस्य शास्त्रं । तर्कका शास्त्र । न्यायशास्त्र (मंतक).

तर्काभास, (पु०) तर्कस्य आभासः निगमनं । बातका निचोडमें झूठा हेतु.

तर्किन्, (त्रि०) तर्क+णिनि । तर्क करनेवाला । दलीलबाज । नैयायिक । मंतकी.

तर्कु, (पु०) कृत्+उ-नि० । एकप्रकारका यन्त्र (जिसपर रुई निकालते हैं) बेलना । कातनेका साधन.

तर्ज्, भर्त्सन । झिड़कना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । तर्जयते । अततर्जत् । भ्वा० पर० सक० सेट् । तर्जति । अतर्जीत्.

तर्जनं-ना, (न० स्त्री०) तर्ज+भावे ल्युट् । झिड़कना । निरादर करना । निन्दा करना । धमकी करना.

तर्जित, (त्रि०) तर्ज+क्त । झिड़कागया । डराया गया । निन्दा किया गया । निरादर किया गया.

तर्जनी, (स्त्री०) तर्ज्यतेऽनया । तर्ज्+ल्युट् (अन) । जिससे झिड़कते हैं । अंगूठेकी पासकी अंगुली.

तर्ण, (पु०) तृण्+अच् (अ) । वत्स (पियारा) । त्रिल (अद०) । बौछा बच्चा । अभी उत्पन्न हुआ बचा.

तर्द्, हिंसा (मारना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । तर्दति । अतर्दीत्.

तर्दू, (स्त्री०) तर्द+ऊ बा+उ । लकड़ीकी बनी हुई दर्वी (कड़छी).

तर्पण, (न०) तृप्+ल्युट् । तृप्ति । रजना । "तृप्+णिच्+ल्युट् (अन) । तृप्त करना । राजी करना । प्रसन्न करना । तर्पणीयुक्तोंके करनेयोग्य । पांच यज्ञोंमेंसे पितृयज्ञ । यज्ञकी लकडी । देवता ऋषि और पितरोंको पानी देकर रजाना.

तर्पक, (त्रि०) तृप्+णिच्+वा ण्वुल् । तृप्त करनेवाला । प्रसन्न करनेवाला । पितर करनेयोग्य पांच यज्ञोंमेंसे एक । पितृयज्ञ.

तर्पित, (त्रि०) तृप्+णिच्+क्त । तृप्त (प्रसन्न) किया गया.

तर्ष्, पति-इच्छा । भ्वा० सक० पर० सेट् । तर्षति । अतर्षीत्.

तर्ष, (पु०) तृष्+घञ् (अ) । अभिलाष । चाह । तृष्णा । समुद्र.

तर्हि, (अव्य०) तद्+र्हिल् (र्हि) तदा । उसवक्त (समय).

तल्, प्रतिष्ठा । स्थिर होना । कायम करना । पूरा करना । इकरार पूरा करना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० अक० सेट् । तालयति-ते । तलति.

तल, (पु० न०) तल्+अच् (अ) । तलहर (जैसे पृथिवीका तल । पांवका तल) । नीचेका भाग । थप्पड़ । और तलका वृक्ष । तलवारकी मूठ । स्वरूप (स्वभाव) । और तलवार (पु०) वन (न०).

तलघात, (पु०) तलेन घातः । हाथकी तलीसे तमाचा मारना.

तलयुद्धं, (न०) तलेन युद्धम् । हाथकी तलीसे युद्ध करना.

तललोक, (पु०) तलः लोकः । तललोक । नीचेका संसार । पाताल.

तलिन, (त्रि०) तल्+इनन् । पतला । छोटा । स्वच्छ । दुर्बल । निर्बल.

तलप्रहार, (पु०) तलेन(चपेटेन) प्रहारः । प्रहार+अच् (अ) । चपेड़ मारना । चपेटका आघात (चोट).

तलातल, (न०) अतलादिमेंसे पांचवां पाताल.

तलित, (न०) तल्+इतच् । भृष्टमांस । भुनाहुआ मांस । तलाहुआ.

तलुन, (पु०) तृ+उनन् (उन) रको ल होता है । युवा । हवा । जवान । पशु (त्रि०) । जवान औरत (स्त्री०) भी है.

तल्प, (पु०) (न०) तल्+पक् (प) शय्या । सेज । अटारी । दारा । स्त्री.

तल्लज, (पु०) लज्-कान्ति-चाहना+अच् (अ) प्रशस्त । बहुत अच्छा (समासमें यह शब्द पीछे रहता है और पने लिङ्गको नहीं छोडता) (आम्रणीतल्लजः).

तष्ट, (त्रि०) तक्ष्+क्त (त) । छोटा कियागया । छोटे टुकडे कियागया । गुणागया.

तष्टृ, (पु०) तक्ष्+तृच् । एक प्रकारकी जाति । विश्वकर्मा । तखान.

तस्, अलंकार-सजाना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । तंसयति-ते । तंसति । अतंतसत् । अतंसीत्.

तस्, उत्क्षेप । ऊपर फेंकना । दिवा० पर० सक० सेट् । तस्यति । अतसीत्-अतासीत् । तसित्वा-तस्त्वा.

तस्कर, (पु०) तत् करोति । तद्+कृ अच् नि० । जो पीछे वा सामने दूसरेकी चीजको चुरानेहारा । चोर ।

ताच्छील्य, (न०) तत् शीलं अस्य ष्यञ् (य) । जिसका वही स्वभाव है । नियम । तत्स्वभाव । नियमसे चलना.

ताद्रूप्य, (न०) तद्रूपस्य समान+ष्यञ् (य) । उसके समान होना । पास होना.

ताडका, (स्त्री०) एक राक्षसी (जिसे रामचन्द्रने नष्ट किया.

ताडकेयः, (पु०) ताडकायाः अपत्यं+ढक् । ताडकाका पुत्र । मारीच.

ताडनी, (स्त्री०) ताड्यतेऽनया । जिससे चोट मारी जावे तड्+णिच्+ल्युट् (अन) । कशा (कोड़ा) । चाबुक.

ाण्डव, (न॰) तण्डुना (मुनिना) प्रोक्तं अनुष्ठानं यस्य अण् (अ)। जिसका प्रकार तण्डुमुनिने कहाहै। पुरुषके नाचको ताण्डव और स्त्रीके नाचको लास्य कहते हैं। पुरुषोंका नाच। एक प्रकारका घास। जोरसे नाचना.

ाण्डवप्रिय, (पु॰) ताण्डवं प्रियं यस्य। पुरुषका नाच जिसे पियारा लगता है। शिवजी। नाचका पियारा। (त्रि॰).

ात, (न॰) तन्+क्त (त) दीर्घश्च। पिता। दया करने लायक। और पूजाके लायक (त्रि॰)। पियारा। ताया.

ाततुल्य, (पु॰) तातेन तुल्यः। पिताके समान। चाचा। ताया.

ात्कालिक, (त्रि॰) तत्काले भवः+ठञ्। उसी समयमें होनेवाला.

ात्पर्य, तत्परस्य भावः ष्यञ् (य)। निचोड। मतलब। इरादा। कहनेवालेकी इच्छा (चाह)। अभिप्राय। एक कामर्में लगना.

ात्त्विक, (त्रि॰) तत्त्वे भव.। तत्त्वमें होनेवाला। असल। दरअसल। पारमार्थिक.

ादर्थ्य, (न॰) तस्मै इदं तदर्थं तस्य भावः ष्यञ् (य)। उसके लिये होना। उसके लिये तईयार। उसकी बाबत.

ादात्म्य, (न॰) स आत्मा (स्वरूपं यस्य) तस्य भावः ष्यञ् (य)। उसी स्वरूपका होना। अभेद। एकही स्वरूप। शकल.

तादृश, (त्रि॰) तस्य [redacted] दर्शनं अस्य। तद्+दृश। जो उसकी नाईं दिखलाई देता है। उस प्रकारका। उस जैसा.

तान, (पु॰) तन्+घञ् (अ)। एक भाग। कमलकी तांत। (संगीतशास्त्रमें) लंबी आवाज (सुर) "तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम्" कु॰ (तानोंकी संख्या ४९ बताइ हैं)। फैलाव.

तानव, (न॰) तनोर्भावः। छोटापन। पतलापन। सूक्ष्मता.

तान्तव, (त्रि॰) वी॰ (स्त्री॰) तन्तोर्विकारः+अण्। तन्तु (सूत) का बना हुआ.

तान्त्रिक, (त्रि॰) तन्त्रं (सिद्धान्तं) तन्नामके शास्त्रे वा अधीते वेद वा ठक् (इक)। सिद्धान्त (असली बात) वा इस नामके शास्त्रको जो पढता वा जानता है। ज्ञातसिद्धान्त। जिसने सिद्धान्त जान लिया। तत्त्ववादी। जो परमात्माके विषयमें बातचीत करता है। तन्त्रशास्त्रके जाननेहारा.

ताप, (पु॰) तप्+घञ् (अ) सन्ताप। शोक। गर्मी। कृच्छ्र। मुश्किल। दुःख.

ताप, (पु॰) तप्+घञ्। उष्णता। गर्मी.

तापक, (त्रि॰) तप्+ण्वुल्। तपानेवाला। गरमी देनेवाला। जलानेवाला।—कः—(पु॰) ज्वर (बुखार).

तापत्रय, (न॰) तापानां त्रयं। आध्यात्मिक आदि संसारके तीन ताप (दुःख).

तापन, (त्रि॰) तप्+णिच्+भावे ल्युट्। गरम करनेवाला। जलानेवाला.

तापस, (पु॰) तपसि साधुः अण् (अ)। तमालपत्र (इन दिनों तमाकूको भी इसी नामसे बोलते हैं। तेजपत्ता) "तपः अस्ति अस्य (अण्)" जो तप करताहै (तपस्वी) (त्रि॰)। दमनक वृक्ष (पु॰).

तापसतरु, (पु॰) तापसोपयुक्तः तरुः। तपस्वियोंके कामका वृक्ष। इङ्गुदीका वृक्ष (इसके तेल आदिसे तपस्वीओंके सब काम पूरे होतेहैं).

तापहर, (त्रि॰) तापं हरति। तापको दूर करनेवाला। शीतल करनेवाला। शान्ति (दिलासा) देनेवाला.

तापिच्छ-ञ्ज, (पु॰)। तापिनं छादयति जयति वा। छद्-जि वा ड (अ)। पृषो॰। ताप दूर करता है। तमालका वृक्ष.

तापित, (त्रि॰) तप+णिच्+क्त। तपायागया। गरम किया गया। पीडा पहुंचाया गया.

तापिन्, (त्रि॰) तप्+णिनि। तपानेवाला। किसी प्रकारकी व्याधिसे पीडित। गरम करनेवाला। गरम.

तापी, (स्त्री॰) तापयति। अच्। ङीप् (ई)। विन्ध्य पर्वतमें पश्चिमओर बहनेवाली एक नदी.

तामरस, (न॰) तामरे (जले) सरति। सृ+ड। जो जलमें होता है। पद्म। सोना। धतूरा। बारह अक्षरोंके पादवाला एक छन्द.

तामस, (पु॰) तमसि (अंधकारे) अविद्यागुणे वा रतः+अण् (अ)। अंधेरे वा अविद्या (बेसमझी) के गुणमें पडगया। सांप। उल्लू। नीच। "तमसा (गुणभेदेन) निर्वृत्तं+अण् (अ)"। जो तमोगुणसे बना है (सांख्यमें) तमोगुणसे उत्पन्नहुए अहंकार आदि (त्रि॰) "तमसः (राहोः अपत्यं) अण्" राहुकी सन्तान। (ज्योतिषमें) राहुका पुत्र केतु। तमसा व्याप्ता अण् (अ) ङीप् (ई)। रात्रि। रात। जटामांसी। वह बुद्धि जिसमें तमोगुण बहुत है (स्त्री॰).

तामसिक, (त्रि॰)-की (स्त्री॰) तमसा निर्वृत्तं+ठञ्। अंधकारसे बना। अंधेरा। अंधेरेके साथ संबंध रखनेवाला.

तामिस्र, (पु॰) तमिस्रं अस्ति अस्मिन् अ (अ) जिसमें अंधेरा हो। (सांख्यमें) अठारह प्रकारका विपर्यय (वस्तुको उलटा दिखानेहारा) एक अज्ञान। भोगकी इच्छाके रुकनेसे उपजा क्रोध (गुस्सा)। राक्षस (जिनके बुरे आचार हैं)। एक नरक। जिसमें अधिकही अंधेरा हो (न॰).

ताम्बूल, (न०) तम्+ऊलच् (ऊल) मुक् आगम है। और दीर्घ होजाता है। पानरूपसे प्रसिद्ध नागवल्लीका पत्ता। गुवाक.

ताम्बूलकरङ्क, (पु०) ६ त०। पानका डब्बा। पानदान। पान रखनेका पात्र.

ताम्बूलपेटिका, (स्त्री०) तांबूलस्य पेटिका। पानकी पीटारी (डब्बा)। पानदान। पानडुब्बा.

ताम्बूलदायक, वाहक, (पु०) तांबूलं ददाति–धारयति वा तांबूलस्य वाहकः। पानदान उठानेवाला भृत्य (नौकर) जो [illegible] [illegible] पान लगाकर देता है.

ताम्बूलवल्ली, (स्त्री०) तांबूलस्य वल्ली। तांबूल (पान) की बेल.

ताम्बूलाधिकार, (पु०) तांबूलस्य अधिकारः। पान देनेका काम.

ताम्बूलिक, (त्रि०) ताम्बूलं पण्यं अस्य+ठक् (इक)। [illegible] [illegible] [illegible]। पान बेचकर जीनेहारा। एक प्रकारकी जाति.

ताम्र, (न०) [illegible] (र) दीर्घ होजाता। एक प्रकारका धातु (तांबा)। एक प्रकारका कुष्ठ (कोढ) का रोग ([illegible])। [illegible] ([illegible]) [illegible] (रंग) (पु०)। [illegible] [illegible] (त्रि०).

ताम्रकर्णी, (स्त्री०) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]। जिसके [illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible]। एक नदी.

ताम्रकार, (पु०) [illegible] ([illegible]) करोति। कृ+अण् (अ) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। एक प्रकारकी [illegible].

ताम्रचूड, (पु०) [illegible] ([illegible]) चूडा [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible]। "[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible].

ताम्रकुट्ट, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]। जिसकी चोटी ([illegible]) [illegible] [illegible] है। [illegible]। [illegible].

ताम्र[illegible], (न०) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

ताम्र[illegible], (स्त्री०) एक नदी ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible])

ताम्र[illegible] (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]

ताम्र[illegible] (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] है. [illegible]। [illegible]

ताम्र[illegible] (स्त्री०) [illegible]। [illegible]। [illegible] ([illegible] [illegible]

ताम्र[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible].

ताम्रसार, (पु०) ताम्रवर्णं सारं अस्य। [illegible] [illegible] जिसमें सार हो। लालचन्दनका वृक्ष (रक्तचन्दन) तांबेका सार (न०).

ताम्रिक, (पु०) ताम्रघटनं शिल्पं अस्य। जो तांबेका [illegible] करता है। "ताम्रस्य अर्थे" ठक् (इक)। तांबेका [illegible] कार (कसेरा) एक जाति। तांबेका बनहुआ [illegible]

ताय्, पालन करना-विस्तार-फैलना। भ्वा० आत्म० [illegible] सेट्। तायते। अतायि-अतायिट। "णिच्" [illegible]

तार, (पु०) तॄ+अपने अर्थमें+अच् (अ)। [illegible] चलाना। "णिच् करनाहो घञ् वा"। एक [illegible]। [illegible] (साफ मोती)। प्रणव (ॐ)। देवीका मन्त्र ([illegible] और तरना। नक्षत्र (तारा)। नेत्र (आंख) के [illegible] कनीनिका (पुतली) (स्त्री०)। निर्मल (स्वच्छ) ([illegible] रूपा। बड़ी ऊंची आवाज। बहुत ऊंचा। निर्मल ([illegible] (त्रि०)। एक प्रकारकी महाविद्या। बालीकी [illegible] बृहस्पतिकी स्त्री (स्त्री०).

तारक, (पु०) तारयति। तॄ+णिच्+ण्वुल् (अक)। [illegible] नेवाला। नाविक (मल्लाह)। भेला। और एक [illegible] तारा। आंखकी पुतली (स्त्री०) टाप् (आ)। [illegible] (इ नहीं होता).

तारकजित्, (पु०) तारकं जितवान्। जी+क्विप्(०) जिसने तारक दैत्यको जीतलिया। कार्तिकेय। [illegible] [illegible]। "तारकघ्न".

तारकित, (न०) तारका जाताः अस्य इतच् ([illegible] जिसमें तारे निकल आये हों। तारोंवाला। [illegible] आकाश-आस्मान.

तारतम्य, (न०) तरतमयोर्भाव. ष्यञ् (य)। [illegible] विशेष। कमविशेष। थोडाबहुत। भेद। फरक.

तारापति, (पु०) ६ त०। ताराका पती। [illegible] चन्द्रमा। बृहस्पति। बालीनामी वानर और [illegible]

तारापथ, (पु०) ६ त०। तारोंका भ्रमण करनेका [illegible] आकाश। आस्मान.

ताराभूषा, (पु०) [illegible] [illegible]। तारोंका [illegible]। [illegible] आस्मान.

तारापीड, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] भूषण है। चन्द्रमा। [illegible] [illegible] [illegible] एक राजा.

तारेय, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible]। [illegible].

तार[illegible], (न०) [illegible]। [illegible]। [illegible] ([illegible] [illegible]) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]

तारावर्ष, (न०) ताराणां वर्षं । तारोंकी वृष्टि । बरसना-गिरना

तारिणी, (स्त्री०) तारयति । तॄ+णिच्+णिनि (इन्) ईप् (ई) । तारनेहारी । शिवजीकी स्त्री । पार्वती । दूसरी महाविद्या.

तारिन्, (त्रि०) तॄ+णिच्+णिनि । तारनेवाला । बचानेवाला.

तार्किक, (पु०) तर्कं वेत्ति अधीते वा ठक् (इक) । जो तर्क (दलील) को जानता है या पढता है । तर्कशास्त्रको पढनेहारा । तर्कशास्त्रको जाननेहारा । तर्कशास्त्र गौतम, कणाद और बृहस्पति आदिसे रचाहुआ है.

तार्क्ष्य, (पु०) तार्क्षस्य अपत्यं यञ् (य) । तार्क्ष (कश्यप)-की सन्तान । गरुड । अरुण (सूर्यका सारथि) । सांप । घोड़ा । सोना । रथ.

तार्क्ष्यध्वजः, (पु०) तार्क्ष्यः ध्वजो यस्य । गरुडके झण्डेवाला भगवान् विष्णु

तार्णः, (त्रि०)-र्णी (स्त्री०) तृणस्य इदं-अण् । घासका बना हुआ.

तार्तीय, (त्रि०) तृतीय एव+स्वार्थे अण् । तीसरा । तीसरेका सम्बन्धी ।-य-(न०) तीसरा भाग (हिस्सा).

तार्तीयीक, (त्रि०) तृतीय (अपने अर्थमें) +ईकक् । तीसरा । तृतीय.

ताल, (पु०) तल्+घञ् (अ) । णिच्-अच् वा । अपने नामका वृक्ष । हडताल । देवीका सिंहासन । मानपरिमाण । रागका वजन (शब्दकी क्रियाका मानआप) । दोनों हाथोंका शब्द (ताली बजाना) कांसीका बनाहुआ बाजा । त्सर (तलवारकी मूठ) । बारह बार जानु (गोड़ा) पर चारोंओर हाथ घुमानेसे जितना समय लगता है । ताला.

तालक, (न०) तल्+ण्वुल् (अक) । दर्वाजेको बंद करनेकी कला । ताला । हरताल.

तालध्वज, (पु०) तालचिह्नितः ध्वजः यस्य । जिसके झंडेपर तालका निशान है । बलभद्र । बलराम.

तालपत्र, (न०) तालस्य पत्रं इव । मानो तालका पत्ता है । कर्णभूषण । कानका जेवर । ताडंक । एक प्रकारका सुवर्णनिर्मित कानका भूषण.

तालवृन्त, (न०) ताले (करतले) वृन्तं (बन्धनं) अस्य । जिसका हाथकी तलीपर बंधन होता है । "तालस्य इव वृन्तं अस्य वा" । जिसका बंधन तालकी नाईं हो । व्यजन । पंखा (पंखा) "अपने अर्थमें कन्" यही अर्थ होता है.

तालव्य, (त्रि०) तालौ भवः+यत् । तालुसे संबंध रखनेवाला ।-वर्ण. (पु०) तालुसे उच्चारण किया गया अक्षर

तालाङ्क, (पु०) तालचिह्नितः अङ्कः (ध्वज.) अस्य । जिसके झंडेपर तालका चिह्न है । बलभद्र । बलदेव.

तालिक, (पु०) तालेन (करतलेन) निर्वृत्तः ठक् (इक) हाथकी तलीसे बना । चपेट । थप्पड़ । हाथकी तली.

तालु, (न०) तरन्ति अनेन वर्णाः । तॄ+ञुण् (उ) रको ल होता है । जिससे अक्षर तैरते हैं । जीभ (इन्द्रिय)-का आसरा.

तालुजिह्व, (पु०) तालु एव जिह्वा यस्य । तालुही जिसकी जीभ है । कुम्भीर (घड़ियार) । जीभके न होनेपरभी यह तालुहीसे रसका स्वाद लेता है.

तावक, (त्रि०)-की (स्त्री०) तव इदम् । तावकीन (त्रि०) (तव इदं+ख+ईन) तेरा.

तावत्, (अव्य०) तत्परिमाणं अस्य । नि० । उसका इतना माप है । इतना । सारा । मान । अवधि (हद) । निश्चय । प्रशंसा । तारीफ । वाक्यका भूषण (सजावट) । तदा । (तब) । इतना बड़ा.

तिक्, जाना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । तेकते । तेकांचक्रे । अतेकिष्ट.

तिक्त, (पु०) तिज्+क्त (त) । करेला । छह रसोंमेंसे एक.

तिग्म, तिज्+मक्-जको ग होता है । तीक्ष्ण । तेज । तेज चीज (त्रि०).

तिग्मरश्मि, (पु०) तिग्मा रश्मयः अस्य । जिसकी तेज किरणें हों । सूर्य । सूरज.

तिप्, पातन-क्षरण करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तेपति । अतेपीत्.

तिम्, तीक्ष्णीकरण । तेजकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । तेजयति-ते.

तिज्, क्षमा (मुआफ) करना । अपने अर्थमें सन् (स) होताहै । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । तितिक्षते । अतितिक्षिष्ट । (जब सन् नहीं होता तो) तेजते । तेजिष्ट.

तितउ, (पु०) छालनी । चलनी.

तितिक्षा, (स्त्री०) तिज् । क्षमा करना (अपने अर्थमें सन्-अ-टाप्) क्षमा (मुआफी) । दूसरेसे कियेगये अपमान आदिको सहारना । शीत (सर्दी) उष्ण (गर्मी) आदि सहारना.

तितिक्षु, (त्रि०) तिज्+सन् (स)+उ । शीत आदि सहारनेवाला । ऐसी रीतिसे कि जिसमें इन्द्रियोंका विरोध न हो जाय.

तित्तिर-रि, (पु०) तित्ति इति अव्यक्तशब्दं रौति । रु+ड (अ) कि वा । एक प्रकारका पक्षी (परिंदा) । तित्तिर । तीतर.

तिथि-थी, (पु० स्त्री०) अत्+इथिन्-पृ० वा ङीप् (ई) । चन्द्रमाकी पन्द्रह कलाओंके क्रियासे होनेवाली प्रतिपदा आदि तिथि । पन्द्रहकी संख्या.

तिथिक्षय, (पु०) तिथीनां (तिथ्युपलक्षितचन्द्रकलानां क्षयः यस्मिन्। जिसमें चन्द्रमाकी कलाओंका क्षय=नाश होजाता है। दर्श (सूर्य और चन्द्रमाका संगम-मेल) अमावास्या। ६ त०। तिथिओंका नाश.

तिथिपत्री, (स्त्री०) तिथीनां पत्री। तिथि (तारीख) बतानेवाली पत्री.

तिथिप्रणी, (पु०) तिथीन् प्रणयति (स्वगत्या निष्पादयति) प्र+णी+क्विप्। जो अपनी गति (चाल) से तिथिओंको बनाता है। चन्द्रमा.

तिम्, आर्द्रीभाव। गीला होना। भ्वा० पर० अक० सेट्। तेमति। अतेमीत.

तिमि, (पु०) तिम्+इन् (इ) मत्स्य। मच्छी। समुद्र। बडे शरीरवाला समुद्रका मच्छ.

तिमिङ्गिल, (पु०) तिमिं (मत्स्यं) गिरति। गॄ-निगल जाना+खश् मुम् च। एक प्रकारका मच्छ। जो तिमि मच्छको भी निगल जाता है। बडाभारी मच्छ.

तिमित, (त्रि०) तिम्+क्त (कर्तामें)। निश्चल (न हिलनेवाला। कायम)। गीला.

तिमिर, (न०) तिम्+किरच् (इर)। अंधकार (अंधेरा) एक प्रकारका नेत्रोंका रोग (बीमारी).

तिरस्कृत, (त्रि०) तिरस्+कृ+क्त। तिरस्कार किया हुआ। बेइज्जत किया गया.

तिरश्चीन, (त्रि०) तिर्यच्+ख (अपने अर्थमें) (ईन) टेढा हो गया। "गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः" इति माघः.

तिरस्, (अव्य०) अंतर्धान। छिपना। तिरस्कार (बेइज्जती) तिरछा। वक्र.

तिरस्करिणी, (स्त्री०) तिरस्+कृ+णिनि-ङीप्०। जवनिका (पडदा) "तिरस्करिण्यो जलदा भवन्ति" कुमारः.

तिरस्कार, (पु०) तिरस्+कृ+घञ्। अनादर। बेइज्जती। झिडक.

तिरोधान, (न०) तिरस्+धा+ल्युट् (अन)। अन्तर्धान। छिपना.

तिरोहित, (त्रि०) तिरस्+धा+क्त (त)। अन्तर्हित। छिपाहुआ। आच्छादित (ढकाहुआ).

तिर्यञ्च्, (अव्य०) वक्र। टेढा। निरुद्ध। रुकाहुआ। पशु। पक्षी। टेढा चलनेवाला (त्रि०).

तिल्, स्नेह-चिकना होना। तुदा० पर० अक० अनिट्। तिलति.

तिल, (पु०) तिल्+क (अ)। अपने नामका वृक्ष। उसका फल.

तिलक, (पु०) तिल्+वुन् (अक)। तिल+कन् (क) वा। तिलवृक्ष। एक प्रकारका घोडा। एक प्रकारका रोग। चन्दन आदिका टिक्क। (पु० न०)। प्रधान (त्रि०) "रघुकुलतिलकः" इति नाटकम्.

तिलकल्क, (न०) तिलस्य रजः। तिल+कल्क। ... चूरा। चूर्ण.

तिलकल्क, (पु०) तिलस्य कल्कः। तिलोंका ... पिन्याक। खल.

तिलकालक, (पु०) तिल इव कालकः (इव) ... तिलकी नाईं काला हो। शरीरपर तिलके सदृश ... एक प्रकारका रोग.

तिलतैल, (न०) तिलस्य स्नेहः। तिल+तैलच् (... तिलोंका स्नेह। तिलोंकी चिकनाईं। "तिलस्य" ... अर्थमें.

तिलधेनु, (स्त्री०) तिलनिर्मिता धेनुः। तिलोंकी ... गई गौ। दान मात्रको (देने) के लिये तिलोंकी ब... गौ (धेनु).

तिलोत्तमा, (स्त्री०) रत्नोंका तिल २ (छोटा २ टुकडा) ... बनाईगई एक अप्सरा (स्वर्गकी वेश्या। कंजरी).

तिल्य, (न०) तिलानां भवनं (क्षेत्रम्) तिल+यत्। ति... खेत.

तिष्ठद्गु, (अव्य०) तिष्ठन्ति गावो यत्र। नि०। जिस ... गौएं सोनेके लिये ए ठहरती हैं (एक घण्टा वा ... रात गये).

तिष्य, (पु०) तुष्यन्ति अस्मिन्। तुष्+क्यप् (य) ... पुष्यनक्षत्र। कलियुग। "तिष्यनक्षत्रमें उपजा" अर्... हुई। पुष्य नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ (त्रि०).

तिष्यफला, (स्त्री०) तिष्ये (कलियुगेऽपि) फलं ... ५ ब०। कलियुगमें भी जिसका फल होता है। ... की। आवला। आमला.

तीक्, याचन (मांगना)। भ्वा० आत्म० द्विक० ... तीकते। अतीकिष्ट.

तीक्ष्ण, (न०) तिज्+क्स्न (तीक्ष्ण हो गया)। ... लडाई। विष। तेज। लोहा। शस्त्र (औजार)। ... रहित और मोक्ष चाहनेवाला। योगी (पु०).

तीक्ष्णकण्टक, (पु०) तीक्ष्णः कण्टकः अस्य। जि... कांटा तेज हो। धतूरा। इङ्गुदीवृक्ष। और बांस.

तीक्ष्णकन्द, (पु०) तीक्ष्णः कन्दः (मूलं) अस्य। जि... जड तेज हो। पलाण्डु। गंडा.

तीक्ष्णकर्मन्, (त्रि०) तीक्ष्णं कर्म यस्य। तेज का... नेवाला। चालाक। उत्साही। दिलेर.

तीक्ष्णगन्धा, (पु०) तीक्ष्णः गन्धः अस्याः। जिसकी ते... हो। वचा। राजिका। कंथारी। छोटी इलायची। ...

तीक्ष्णतण्डुला, (स्त्री०) तीक्ष्णाः तण्डुला यस्याः। जि... तेज चावल हों। पिप्पली। मच.

तीक्ष्णदंष्ट्र, (पु०) तीक्ष्णाः दंष्ट्राः यस्य। तेज दाढें... व्याघ्र। चीता.

तीक्ष्णधारः, (पु०) तीक्ष्णा धारा यस्य । ६ त० । तेज धारवाला । तलवार.

तीक्ष्णपुष्प, (पु०) तीक्ष्णं पुष्पं अस्य । जिसका तेज फूल हो । स्वाद । लौंग । केतकी (स्त्री०).

तीक्ष्णबुद्धिः, (त्रि०) तीक्ष्णा बुद्धिः यस्य । तीक्ष्ण (तेज) बुद्धि (अक्केल) वाला । चतुर । चालाक.

तीक्ष्णरश्मिः, (पु०) तीक्ष्णाः रश्मयः यस्य । तेज किरणोंवाला । सूर्य.

तीक्ष्णरसः, (पु०) तीक्ष्णः रसः यस्य । तेज रसवाला । विषमय रस । कोईभी जहरीला रस । विष । जहर.

तीक्ष्णशूकः, (पु०) तीक्ष्णः शूकः अग्रं यस्य । जिसके आगेका भाग तेज हो । यव । जौ । जौ.

तीक्ष्णायस, (न०) तीक्ष्णं अयः+अच् समा० । तेज लोहा । स्टील । लोहेकी कलम । एक प्रकारका लोहा.

तीक्ष्णांशुः, (पु०) तीक्ष्णाः अंशवः यस्य । तीक्ष्ण (तेज–कठिन) किरणोंवाला । सूर्य । अग्नि.

तीक्ष्णोपायः, (पु०) तीक्ष्णः उपायः । कठिन उपाय । तीक्ष्ण (तेज) साधन.

तीम्, क्लेदन । गीला करना । भिगोना । दिवा० पर० अक० सेट् । तीम्यति । अतीमीत्.

तीर्, पारगति । पारजाना । तैरजाना । काम समाप्त करना । चुरा० उभ० अक० सेट् । तीरयति-ते । अतितीरत्-त.

तीर, (न०) तीर्+अच् (अ०) नदीआदिका तट (किनारा) । बाण । तीर । सीसक (शिक्षा) (पु०).

तीर्ण, (त्रि०) तॄ+क्त । उत्तीर्ण । तैरगया । पारहुआ । अभिभूत । दबाया गया । आहत (मराचाहुआ).

तीर्थ, (न०) तॄ+थक् (थ) । शास्त्र । यज्ञ । क्षेत्र (कुरुक्षेत्र आदि) उपाय । स्त्रीका रज (फूल) । नदी आदिका उतरना । घाट । विद्या आदि गुणोंवाला पात्र । उपाध्याय (पाधा) । पढानेहारा । मन्त्री (शिकत्तरवजीर) । पानीका स्थान । पवित्र स्थान । यात्राका स्थान । योनि । दर्शन । आगम । निदान (आदिकारण) । आग । कूएके पासका सरोवर (तालाव) । कोई पवित्र विषय (जो विशेषकर किसी पवित्र नदीके तीरपर वा पासही हो) । " शुचि मनो यदस्ति तीर्थेन किम्" भर्तृ० । शरीर, मन और पृथिवीके पवित्र स्थान । (शरीरके अङ्गुलीके आगे देव, अङ्गुलीओंके मूलमें प्राजापत्य, अगूंठे और अङ्गुलियोंके बीचमें पैत्र और अगूंठेके मूलमें ब्राह्म तीर्थ है,) मनके तीर्थ सत्य, क्षमा, इन्द्रिओंका निग्रह (रोकना), सब जीवोंपर दया, सबके साथ कोमल रहना, दान, दम । (अपनेको काबू करना) सन्तोष (सबकरना) ब्रह्मचारी होना बडा तीर्थ है । (वीर्यकी रक्षा करना, स्त्रीके निकट न जाना) । सिरता वचन बोलना । ज्ञान (अपने आपको जानना) । धीरज करना । पुण्य करना । (सबसे अधिक तत्त्वको पहिचाननेवाले कहते हैं कि सब तीर्थोंमें बहुत बडा तीर्थ तो मनकी विशुद्धि अर्थात् सच्चाई है) । पृथिवीके तीर्थ (जिस प्रकार शरीरके कईएक स्थान बहुत पवित्र होते हैं वैसेही पृथिवीके कईएक स्थान पुण्यतम अर्थात् बहुतही पुण्यको देनेहारे हैं जहां स्नान, ध्यान, पान होना बडेही शुभ भाग्यका फल समझागया है । पृथिवीके अधिक प्रभाव, जलके तेज, और मुनिओंके आश्रय लेनेसे तीर्थोंका सेवन पुण्यके देनेहारा है । पवित्र बातोंके सिखानेहारा गुरु " मया तीर्थादभिनयविद्या शिक्षिता " मृ०.

पद्म० ३०

तीर्थकर, (पु०) तीर्थं (हितशासनं आगमं) करोति । कृ+टक् (अ) । हितको कहनेहारे शास्त्रका उपदेश करनेवाला । गौतम, कपिल, कणाद आदि । जैन । जैनोंका सन्त । " तीर्थंकर " भी इसी अर्थमें होताहै.

तीर्थोदकं, (न०) तीर्थस्य उदकं । तीर्थका जल । पवित्र जल.

तीर्थकमण्डलु, (पु० न०) तीर्थस्य कमण्डलुः । तीर्थके जलसे भरा हुआ कमण्डलु । संन्यासिओंका पात्र वा घडा.

तीर्थकाकः-ध्वाङ्क्षः-वायसः, (पु०) तीर्थस्य काकः । तीर्थका कौआ । अर्थात् बहुतही लोभी (लालची) पुरुष.

तीर्थदेव, (पु०) तीर्थस्य देवः । तीर्थका देवता । शिव.

तीर्थयात्रा, (स्त्री०) तीर्थस्य यात्रा । तीर्थकी यात्रा (सफर).

तीर्थराज, (पु०) तीर्थानां राजा+टच् । तीर्थोंका राजा । प्रयागराज.

तीर्थविधि, (पु०) तीर्थस्य विधिः । तीर्थपर निवास करनेका नियम । तीर्थपर करने योग्य रीत रसम.

तीर्थसेविन्, (त्रि०) तीर्थं सेवते+णिनि । तीर्थकी सेवा करनेवाला । तीर्थयात्री.

तीव्, स्थौल्य । मोटा होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । तीवति । अतीवीत्.

तीव्र, (पु०) तीव्+रक् (र) । शिवजी । लोहा । जिस और तेज " न सहारा जानेहारा" । बहुत तेज (त्रि०) गरम । विकट । मजबूत.

तीव्रवेदना, (स्त्री०) कर्म० अत्यन्तपीडा (बहुतही दर्द । यातना (पीडा).

तु, (अव्य०) किन्तु । लेकिन । वाक्यको पूरा करताहै । और वा (कभी वाक्यके पहिले नहिं आता, परन्तु प्रायः पहिले शब्दके पीछे आता है) । यही तो । इसके सिवा । तौभी । पर । भी । और.

तुङ्ग, (पु०) तुङ्ग+घञ् (अ) । पर्वत (पहाड) पेंगरका ग्रन्थ । नारियल । और (ज्योतिषमें सूर्य आदि ग्रहोंके विशेष भागोंमें पहुँचनेको मेषआदि राशियें) कमलकर्णिका । ऊंचा । प्रधान (त्रि०).

तुङ्गभद्र, (पु०) बड़ा मस्त हाथी । दक्षिण देशमें इसनामकी एक नदी (स्त्री०).

तुच्छ, (न०) तुद्+क्विप् (तुदा-व्यथया छ्यति -छो+क) । चावलोंसे रहित धान्य । तोः । तुष । हीन । निकम्मा । थोड़ा । सूना (त्रि०).

तुज्, हिंसा । मारना । कतल करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोजति । अतोजीत्.

तुट्, द्विधाकरण । दो टुकड़े करना । तोड़ना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोटति । अतोटीत्.

तुण्ड, (न०) तुड्+अच् (अ) । मुख । मूं । चिहरा.

तुण्डिभ-ल, (त्रि०) तुण्ड+भ लच् वा । बहुत बोलनेवाला । बड़ी नाभि (धुन्नी) वाला । "तुन्दिल" यही । गोगडिया अर्थ.

तुत्थ्, स्तुति । सराहना । तारीफ करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । तुत्थयति-ते.

तुत्थ, (पु०) तुद्+थक् (थ) । अग्नि (आग) । एक प्रकारका अञ्जन (सुरमा) (न०).

तुद्, व्यथन । पीड़ा पहुंचाना । तुदा० उभ० सक० अनिट् । तुदति-ते । अतौत्सीत् । अतुत्त.

तुन्दकूपी, (स्त्री०) ह्रस्वः कूपः कूपी । तुन्दस्य कूपीव । मालों पेटकी खड्डे हैं । नाभी (धुन्नी) । (अपने अर्थमें कन् (क) "तुन्दकूपिका" यही अर्थ.

तुन्न, (पु०) तुद्+क्त (त) । (तुंद) वृक्ष । पीड़ा पहुंचाया गया । कटा गया (त्रि०).

तुन्नवाय, (पु०) तुन्नं छिन्नं वयति । वे+अण् (अ) । जो कटेहुएको जोड़ता है । सौचिक । दर्जी । सूईका काम करनेवाला.

तुभ्, हिंसा । मारना । कत्लकरना । दिवा० क्या० पर० सक० सेट् । तुभ्यति । तुभ्नाति-अतोभीत्.

तुमुल, (पु०) तु+मलच् (उल) कलिवृक्ष (बयड़ा) । घबरायाहुआ और लड़ाई । घबराहटकी लड़ाई (न०).

तुम्बुरु, (पु०) तुम्ब्+उरच् (उरु) । एक गंधर्व । एक प्रकारका बाजा.

तुर्, वेग । जल्दी आना । जु० पर० अक० सेट् । तुतोर्ति । अतोरीत्.

तुरग, (पु०) तुरेण (वेगेन) गच्छति । गम्+ड (अ) । जो बड़े जोर वा तेजीसे जाता है । घोड़ा । चित्त । मन । दिल.

तुरगस्कन्ध, (पु०) तुरग (समूहअर्थमें) स्कन्धच् (स्कन्ध) । घोड़ोंका समूह । ६ त० । घोड़ेका कंधा.

तुरङ्ग, (पु०) तुरेण गच्छति । गम्+ख मुम् वा । घोड़ा । चित्त । "तुरङ्गम" यही अर्थ होता है.

तुरङ्गवदन, (पु०) तुरङ्गस्य वदनं अस्य । जिसका घोड़ेकी नाई मुख हो । किन्नर (एक प्रकारकी देवता).

तुरङ्गारि, (पु०) ६ त० । कनीरवृक्ष । महिष । भैं

तुरासाह, (पु०) तुरां (वेगं) सहते । तुरं (वेगवन्तं) वा साहयते (अभिभवति) वा क्विप्-ण्वन् । जो वेगको सहारताहै अथवा जो वेगवालेको दबा लेते है । इन्द्र । देवताओंका राजा.

तुरि-री, (स्त्री०) । तुर्+इन् वा ङीप् । जुलाहेकी कूंची बनाहुआ सुमेका साधन (औजार).

तुरीय, (त्रि०) चतुर+पूरण अर्थमें .तीय प्रत्यय होते निपा० । चौथा । चार हिस्सोंवाला । शक्तिवाला । (वेदान्तदर्शनमें) आत्माकी चौथी दशा जिसमें यह ब्रह्म परमात्माके साथ एक हो जाता है । शुद्धचैतन्य निर्गुण ब्रह्म । तीनोंसे पहिली दशावाला.

तुरीयवर्ण, (पु०) कर्म० । चौथी चतुर्थ जातिका मनुष्य शूद्रवर्ण.

तुरुष्क, (पु०) तुर+उसिक्-स्वार्थे कन्-षत्वम् । एक प्रकारका गंधवाला द्रव्य (शिलारस) । तुर्क लोग (तुर्कस्तान).

तुर्य, (त्रि०) चतुर्णां पूरणः । यत् । नि० । चारोंको पूरा करनेवाला । चौथा.

तुर्व्, हिंस । कतलकरना । मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तुर्वति । अतुर्वीत् । तूर्ण.

तुर्वसु, (पु०) ययातिराजाका पुत्र.

तुल्, उन्मान । तोलना । मापना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । तोलयति-ते । तोलति । अतूतुलत् । तुला शब्दसे णिच् होकर "तुलयति" बनता है.

तुलनं, (न०) तुल्+ल्युट् । बोझा उठाना । बराबरी.

तुलसी, (स्त्री०) तुला अस्यति असु+अच् (अ) इत्यादि । जो बराबरीको फेंक देती है अर्थात् जिसके समान संसारमें और कोई वृक्ष नहिं । (तुलसी) अपने नामसे प्रसिद्ध एक वृक्ष.

तुला, (स्त्री०) तुल+अङ् (अ) । सादृश्य । बराबर । मान । माप । तकड़ी । एक बड़ा पात्र (बर्तन) । कन्या राशि । तोलनेका कण्डा.

तुलाकोटि-टी, (स्त्री०) । तुलया तुलां वा कोटयति (उत्तारयति) कुट्+इ वा ङीप् । नूपुर । पंजेब । कण्ठा । एक माप.

तुलाधर, (त्रि०) तुलाया (मानदण्डस्य) धर । तराजू पकड़नेवाला । धृ+अच् (अ) । वाणिआ । तुलाराशि.

तुलापरीक्षा, (स्त्री०) तुलया परीक्षा । तराजूसे तोलकर वा हलेकी पहिचान.

तुलापुरुष, (पु०) सोलह प्रकारके महादानोंमेंसे एक.

तुलायष्टि, (स्त्री०) तुलायाः यष्टिः । तकड़ीकी डंडी.

तुलासूत्र, (न०) तुलायाः सूत्रं। तखड़ीका लड़ वा सूत.
तुलित, (त्रि०) तुला+तत्करोति णिच् (कर्मणि क्त) परिमित। मापागया। सदृशीकृत। बराबर कियागया.
तुल्य, (त्रि०) तुलया संमितं यत्। सदृश। बराबर। समान.
तुल्यदर्शन, (त्रि०) तुल्यं पश्यति-दृश्+ल्यु। बराबर देखनेवाला.
तुल्यपान, (न०) तुल्यं पानम्। इकट्ठे मिलकर पीना.
तुल्ययोगिता, (स्त्री०) अर्थालंकारका एक भेद.
तुवर, (पु०) तरति (हिनस्ति) रोगान्। तु+ष्वरच्-निपा०। जो रोगोंको मारता है। एक प्रकारके धान। कषाय। कसैला स्वाद। कसैले स्वादवाला (त्रि०).
तुष्, तोष। प्रसन्न करना। रजाना। दिवा० पर० अक० अनिट्। तुष्यति। अतुषत्.
तुष, (पु०) तुष्+क (अ)। बिभीतक वृक्ष (बहेड़ा)। धानकी खाल। अपने नामका पदार्थ। भूसी.
तुष, (पु०) तुष्+धावलोंका छिलका वा भूसी। तोह.
तुषानल, (पु०) तुषस्य अनलः। तोहकी आग। तोहसे पैदाहुई आग.
तुषार, (पु०) तुष्+आरक् (आर)। हिम (बर्फ)। कर्पूर। कपूर। कपूर और शीत (सर्दी)। उसवाला (त्रि०).
तुषित, (पु०) तुष्+कितच् (इत)। लोपआदि बारह वा छत्तीस गणदेवता.
तुष्टि, (स्त्री०) तुष्+क्तिन् (ति)। सन्तोष (सबर)। अकृतार्थ (जो करना था वह न किया) दशामें भी ऐसी बुद्धि होना कि मैं कृतार्थ (जो करना था सो कर चुका) हो गया। सांख्यमें नौ प्रकारकी कही है.
तुह्, वध। मारना। भ्वा० पर० सक० सेट्। तोहति। अतुहत्। अतोहीत्.
तुहिन, (न०) तुह्+इनन् (इन)। हिम। बरफ। चन्द्रमाका तेज.
तुहिनांशु, (पु०) तुहिना अंशवो यस्य। जिसकी किरणें बरफ हों। चन्द्रमा। चांद। "हिमांशु" इसी अर्थमें होता है.
तूण, संकोच। सिकोड़ना। चुरा० उभ० सक० सेट्। तूणयति-ते। अतुतूणत्-त.
तूण्, पूरण। भरना। चुरा० आत्म० सक० सेट्। तूणयते। अतुतूणत-त.
तूण-णी, (पु० स्त्री०)। तूण्+क। बाण (तीर)का आधार। तरकस.
तूणीर, (पु०) तूणी (संकोचं) राति (ददाति) रा+क। तरकस। तीररखनेका थान.
तूर्ण, (न०) त्वर्+क्त (त) ऊठ्। (तको न हो जाताहै)। शीघ्र (जल्दी)। जल्दीवाला (त्रि०).
तूर्य, (न०) तुर्। हिंसा। मारना+यत् (य)। एक प्रकारका बाजा। तुरी बाजा.
तूल्, पूरण। चुरा० आत्म० सक० सेट्। तूलयते। अतूतुलत.
तूल, (पु० न०) (तुल्+क)। एक प्रकारकी कपास (कपाह)। आकाश। तूंद नामका वृक्ष (न०).
तूलिका, (स्त्री०) तूल्+अस्त्यर्थे ठन् (इक)। शय्या (सेज) का साधन। स्वल्प (अल्प)। मूर्ति लिखनेका साधन। कूची (द्रव्य).
तूवर, (पु०) तु+वर् -दीर्घश्च। वह गौ जिसके सींग नहीं। वह पुरुष जिसकी दाढी नहीं निकली। कसैला रस.
तूष्णीक, (त्रि०) तूष्णीं। चुप्पी शीलं यस्य। शीलअर्थमें कन् (क) मलोप हो जाता है। चुप रहनेहारा.
तूष्णीम्, (अव्य०) मौन (चुपचाप).
तूष्णींशील, (त्रि०) तूष्णीं शीलं अस्य। मौनावलम्बी। चुप रहना जिसका स्वभाव है (पु०).
तूस्त, (न०) तुस्+तन्-दीर्घश्च। जटा। सहनकेश। इकट्ठे हुए बाल। धूर। महीन.
तृण्, भक्षण-खाना। तना० उभ० सक० सेट्। तृणोति-त-र्णोति। तृणुते -तर्णुते। तर्णिता-तृण्ढा.
तृण, (न०) तृह्+नक्। नकार लोप होता है। मसारि। घास वगैरह। तिनका.
तृणकाण्ड, (न०) तृणानां समूहः। काण्ड् (काण्ड)। तृणसमूह। तिनकोंका ढेर
तृणद्रुम, (पु०) तृणजातीयो द्रुमः। शाक०। तृणजातिके वृक्ष (असार होनेसे)। नारिकेल (नारियेल-नरेल) ताल। खजूर.
तृणधान्य, (तृणं) इव धान्यं। शाक०। तिनकेकी तरहके धान। ऐसी भूमिमें उपजता है कि जिसे कर्षण नहीं कियागया। नीवार साठके चावल.
तृणराज, (पु०) तृणेषु राजते। राज्+अच् (अ)। १ त०। टच् वा। तालका वृक्ष.
तृणशून्य, (न०) तृणैः शून्यं। तृणों (तिनकों)से शून्य (रहित)। केतकी। मल्लिका.
तृणसिंह, (पु०) तृणेषु सिंह इव। तिनकोंमें शेरकी तरह। कुल्हाड़ी.
तृणहर्म्य, (पु०) तृणानां हर्म्यम्। तिनकोंका (कलगुआ) घर। तिनकोंसे आच्छादित.
तृणीकृत, (त्रि०) तृण+च्वि+कृ+क्त। तिनका बनाया गया। हलका किया गया। तिरस्कार किया गया। निरादर किया गया.

तृणौकस्, (न०) तृणनिर्मितं ओकः । तिनकोंका बना हुआ घर । मकान.

तृण्य, (त्रि०) तृणानां समूहः । य । तिनकोंका ढेर.

तृतीय, (त्रि०) त्रयाणां पूरणः । तृ+तीय । सम्प्रसारण । तीनोंका पूरा करना । वह पदार्थ जो तीनकी संख्याको पूरा करे.

तृतीया, (स्त्री०) चन्द्रमाके मण्डलकी तीनकलावाली पक्षकी तीसरी तिथि । तीज.

तृतीयाकृत, (त्रि०) तृतीयं कृतम् । तीरा कियागया । तिगुना कियागया । तृतीय+डाच्+कृ+क्त (त)। तीन बार खेंचाहुआ क्षेत्र (खेत).

तृतीयाप्रकृति, (स्त्री०) स्त्रीपुंसौ अपेक्ष्य तृतीया प्रकृतिः (प्रकारः)। स्त्री और पुरुष न होकर तीसरा प्रकार । नपुंसक । क्लीब । नपुंसक लिङ्ग.

तृद्, अनादर । आदर न करना । रुधा० उभ० अक० सेट् । तृणत्ति । तृन्ते । अतर्दीत्-अतृदत्.

तृन्ह्, हिंसा । मारना । तुदा० पर० सक० सेट् । क्त्वा वेट् । तृंहति । अतृंहीत्.

तृप्, प्रीणन । तृप्तहोना । रजना । दिवा० पर० सक० वेट् । तृप्यति । अतर्पीत् । अताप्सीत्.

तृप्त, (त्रि०) तृप्+क्त । तृप्त हुआ । प्रसन्न हुआ.

तृप्ति, (स्त्री०) तृप्+क्तिन् (ति) । बहुत खाजानेसे खाने-की इच्छा न रहना । रजना । प्रसन्न होना.

तृम्फ्, प्रीणन । प्रसन्न होना । रजना । तुदा० पर० सक० सेट् । तृम्फति । अतर्म्फीत्.

तृ (त्रि) फला, (स्त्री०) त्रयाणां फलानां समाहारः । या सम्प्रसारणम् । तीन फलोंका इकट्ठा होना । हरीतकी (हरीड़) । आमलकी (आमला) और अक्ष (बहेड़ा) यथाक्रमसे तीन फल.

तृष्, तृष्णा । चाहना । दिवा० पर० सक० सेट् । तृष्यति । अतृषत् । अतर्षीत्.

तृष्-षा, (स्त्री०) तृष्+क्विप् । भागुरीके मतमें हलन्त होनेके कारण विकल्पसे टाप् (आ) होताहै । तृष्णा । चाह । कामदेवकी कन्या.

तृषाभू, (स्त्री०) ६ त० । क्लोम । हृदयका एक स्थान । चाहकी जगह.

तृषित, (त्रि०) तृषा जाता अस्य । तार० इतच् (इत) । पियासा । चाहवाला । तृष्णावाला.

तृष्णाक्षय, (पु०) तृष्णायाः (लोभस्य) क्षयो यस्मात् । जिसमें लोभ नष्ट होजाताहै । शम (वासनाका छोड़ना) । मनको रोकना.

तृष्णालु, (त्रि०) तृष्णा+आलुच् । बड़ा पियासा (तृषार्त) । बड़ा लालची.

तृह्, हिंस् । मारना । तुदा० पर० सक० सेट् । तृ
अतर्हीत् । अतृहत्,

तॄ, तरण । तरना । प्लवन । उछलना । अभिभव । द
भ्वा० पर० सक० सेट् । तरति । अतारीत्,

तेज्, निशान । तेजकरना । पालना । भ्वा० पर०
सेट् । तेजति । अतेजीत्.

तेजःफल, (पु०) तेजस्करं फलं यस्य । जिसक
तेजी करता है । तेजवृक्ष.

तेजस्, (न०) तिज्+असुन् । उष्ण (गरम) स्प
अग्निआदि द्रव्य । (सांख्यमें) शब्द और स्पर्शतन्मात्रके
रूपतन्मात्रासे उत्पन्नहुआ भूत (आग)। प्रकाश । प्र
पराक्रम । वीर्य । मरुजनके उपजा थी । तत्तेज
ज्योति । सूर्य । शरीरकी कान्ति । सोना आदि ध
द्रव्य । पित्त । अपमान आदिका न सहारना । घे
स्वाभाविक बल (जोर)। चैतन्यस्वरूप परम ब्र
ब्रह्म । सांख्यमें सत्वगुण.

तेजस्विनी, (स्त्री०) तेजस्+विनि । तेजवाली
ज्योतिष्मती लता । तेजबल.

तेजीयस्, (त्रि०) तेजस्विन्+अतिशायने ईयसुनि वि
लोप । तेजवाला । "तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्व
यथा" भागवतं.

तेजोमय, (त्रि०) तेजस्+प्रचुरार्थे मयट् । बहुत तेजव
जिसमें प्रधान तेज हो । ज्योतिर्मय । प्रकाशस्वरूप ।
ङीप् । "तेजोमयी वाक्" श्रुतिः.

तेजोमात्रा, (स्त्री०) तेजसां (सत्वगुणानां) मात्रा (मन
सत्वगुणोंका अंश । इन्द्रिय (भूतोंके सात्विक अ
इनकी उत्पत्ति सांख्यमें स्वीकार की गई है)

तेप्, कांपना और गिरना । भ्वा० आ० अक० सेट् । ते
अतेपिष्ट.

तेम, (पु०) तिम्-घञ् (अ) आर्द्रीभाव । गीला होना । गि

तेमन, (न०) तिम्+ल्युट् (अन) । आर्द्रीकरण । गि
करना । कर्मणि ल्युट् । व्यञ्जन । नाल्हा । भाजी । ए
कारका सुप.

तैजस, (न०) तेजसः विकारः+अण् । तेजका विका
घी । और धातुका पदार्थ । (सांख्यमें) नपुं
उत्पन्न हुआ भूत (त्रि०) चमकीला । शक्तिवाला (
कलवाला) (त्रि०) । (वेदान्तमें) सूक्ष्मशरीर.

तैतिल, (पु०) गण्डक पशु । गेंडापशु । बालवे
करण (न०).

तैत्तिरीया, (स्त्री०) तित्तिरिभ्यः अधिगता+छण् (ईय)
तीतरों (याज्ञवल्क्यसे गुरुके साथ विवाद होनेके
वमन कीगई विद्याको वैशम्पायनके शिष्योंने तीतर
बनाकर ग्रहण किया यह उपनिषत्की कथा है) से
यजुर्वेदकी एक शाखा । कृष्णयजुः.

तैत्तिरीय-न०, (त्रि०) तैत्तिरीयाः शाखां वेत्ति अधी- ते वा+छ+अण् वा । तैत्तिरीय शाखाको पढनेवाला वा जा- ननेवाला.

तैमिरिक, (न०) तिमिर (नेत्ररोगभेदः) अस्ति अस्य+ (ठञ्+इक) । तिमिररोग आंखके रोगवाला.

तैर्थिक, (त्रि०) तीर्थं (दर्शनशास्त्र) कृतं अनेन+ठक् (इक) । दर्शनशास्त्रके रचनेवाला । शास्त्रके बनानेवाला कपिल कणाद आदि.

तैल, (न०) तिलस्य विकारः+अण् । तिल आदि चिकने पदार्थोंकी चिकनाईको तेल कहते हैं । तिल, सरसों और अलसी आदि स्निग्ध वस्तुओंका स्नेहरूप विकार । तेल.

तैलकार, (पु०) तैलं करोति । कृ+अण् । तेल निकालने- वाला । तेली.

तैलकिट्ट, (न०) ६ त० । तेलकी मैल । खल.

तैलङ्ग, (पु०) एक मुल्कका नाम (तैलंग) । कर्नाटक । तैलंगदेशके वासी (बहु०).

तैलपर्णी, (स्त्री०) तैलं पर्णे यस्याः । जिसके पत्तोंमें तेल हो । हलदीका वृक्ष । चिरौंजीका (बड़ेरा).

तैलम्पाता, (स्त्री०) तिलस्य पातः अत्र । अ नि० मुमच् । स्वधा । जहां तिलोंसे बहुत काम किया जाताहै । श्राद्ध । तैलमिश्रित (तेलिया) (त्रि०).

तैलीन, (त्रि०) (न०) तिलानां भवनं क्षेत्रं (ईन) । तिलोंका खेत.

तैष, (पु०) तिष्यनक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी तैषी साऽस्मिन्मासे+ अण् । पौषमास । पौषका महीना । पौषकी पूनौं (स्त्री०).

तोक, (न०) तु+क । अपत्य । सन्तान । पुत्र । बेटा । लड़की । दुहिता.

तोटक, (न०) द्वादशाक्षरपादका छन्द । बारह अक्षरके पादवाला छन्द.

तोड्, अनादर । बेइज्जत करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोडति । तुतोड

तोत्र, (न०) तुद्+ष्ट्रन् । गौ आदिके ताडन करनेका दण्डा । छडी । चाबुक । हाथीके चलानेका डंडा । अंकुश.

तोदन, (न०) तुद्यतेऽनेन+ल्युट् (अन) । तुद । तुं । "भावे ल्युट्" व्यथा । पीडा । दर्द.

तोमर, (पु० न०) तु+विच् । तोमेनो म्रियतेऽनेन । मृ+ अच् । एक प्रकारका अस्त्र (शस्त्र) । एक प्रकारका लोहेका दण्डा.

तोय, (न०) तु+विच् । तवे (पूर्त्यै) याति । या+क । जो भरजाताहै । जल । पानी । पूर्वाषाढा नक्षत्र (तारा)

तोयकाम, (पु०) तोयं कामयते । कम्+अण् । जो पानी चाहताहै । जलवेतस । पानीका बेंत । पानी चाहनेवाला.

तोयकाम, (त्रि०) तोयं कामयते । जलकी इच्छावाला । पिपासा । पिपासु.

तोयक्रीडा, (स्त्री०) तोयस्य क्रीडा । जलकी क्रीडा (खेल).

तोयद, (पु०) तोयं ददाति । दा+क । पानी देनेवाला । बादल । मेघ । मोथा । घास । घी (न०).

तोयधि, (पु०) तोयानि धीयन्तेऽत्र । धा+कि । जहां पानी रक्खे जाते हैं । समुद्र । समुंदर । "तोयनिधि." यही अर्थ.

तोयनिधि, (पु०) तोयस्य निधिः । जलका निधि (ख- जाना) समुद्र.

तोयसूचक, (पु०) तोयं (तोयवर्षं) सूचयति (रवेण) सूच+ण्वुल् (अक) । जो अपनी आवाजसे पानीके बर्ष- नेको जनलाताहै । मेंढ़ । मेंडक । दद्रु.

तोयेश, (पु०) तोयस्य ईशः । जलका स्वामी । वरुण देवता.

तोरण, (पु० न०) तुर्+युच् (अन) । बाहिरका दर्वाजा । खंभेके ऊपर टेढेके सहारेकी एक लकडी । दर्वाजेके बाहिरका भाग । गर्दन (न०)

तोल, (पु० न०) तुल्+अच् । तोलक । एक प्रकारका भार । षण्णवति रक्तिका (छियानवे रत्तीका परिमाण) एक तोला.

तोष, (पु०) तुष्+भावे घञ् । सन्तोष । सबर । तृप्ति । प्रसन्नता । हर्ष । खुशी.

तोषण, (त्रि०) तुष्+कर्तरि ल्यु । प्रसन्न करनेवाला । खु- श करनेवाला । ण (न०) (भावे ल्युट्) सन्तोष । प्रस- न्नता । तृप्ति । खुशी.

तोषित, (त्रि०) तुष्+णिच्+क्त । प्रसन्न किया गया । खुश किया हुआ.

तोषिन्, (त्रि०) तुष्+णिनि । समासके अन्तमें आता है । प्रसन्न होनेवाला । खुश होनेवाला.

तौर्य, (न०) तूर्ये (मुरजादौ) वाद्ये भवं+अण् (अ) । मुरज आदि बाजेकी आवाज.

तौर्यत्रिक, (न०) त्रयः परिमाणं अस्य+कन् (क) । बाजोंसे जानेवाले तीन । बाजना गाना और नचाना तीनों.

तौलिक, (पु०) तूल्या जीवति ठक् (इक) जो । तूली (मू- र्ति लिखनेकी कूचीं (कलम) से जीताहै) । चित्रकार । मूर्ति लिखनेवाला । नकाश.

त्यक्त, (त्रि०) त्यज्+क्त । छोडा गया.

त्यक्ताग्नि, (पु०) त्यक्तः अग्निः येन । गार्हपत्य पूजाको छोडनेवाला ब्राह्मण । अग्निहोत्ररहित

त्यज्, हानि । नुकसान । छोडना और ... भ्वा० पर० सक० अनिट् । त्यजति । अत्याक्षीत्

त्यद्, (त्रि०) त्यज्+अदि ।

त्यागिन्, (त्रि०) त्यज्+घिनुण् (इन)। दाता। देनेवाला शूर। (बहादुर)। वर्जनशील। जिसका स्वभाव त्याग (छोड़ने) का है। कर्मके फलको छोड़नेहारा.

त्रक्, गति जाना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्०। त्रकते। अत्रकिष्ट.

त्रप्, लज्जा। शरम करना। भ्वा० आ० अक० वेट्। त्रपते। अत्रपिष्ट। अत्रप्त.

त्रपा, (स्त्री०) त्रप्+भावे अङ्। लज्जा (शर्म)। अत्। व्यभिचारिणी (बदमाश औरत)। कुल। कीर्ति (यश)

त्रपु, (न०) (अग्निं दृष्ट्वा) त्रपते (लज्जते) इव, लज्जया द्रवीभवति वा। जो आगको देख शरम करता है। अथवा लज्जासे गल जाता है। सीसक (रांगा) टीन.

त्रपुटी, (स्त्री०) त्रप्+उटच् (उट) ङीप् (ई)। छोटी इलायची.

त्रपुस्, (न०) त्रप्+उसि (उस)। रांगा। टीन.

त्रय, (न० स्त्री०) त्रयाणां अवयवः। त्रयोऽवयवा येषां वा+अयच्। तीनोंका भाग। या तीन भागवाला। तीनों "[illegible]" मनुः। स्त्रीमें ङीप् (ई)। तीन देवस्वरूप (त्रि०)। ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद (तीनों वेद)। ब्रह्मादि तीनों मूर्त्तियें। कुटुम्बिनी स्त्री। अच्छी बुद्धि.

त्रयीतनु, (पु०) त्रयी एव तनुः यस्य। वेद (तीनवेद) ही जिसका शरीर है। सूर्य। शिवजीका नाम (त्रयीतप.).

त्रयीधर्म, (पु०) त्रय्या (वेदत्रयेण) विधीयमानो धर्मः। तीनों वेदोंसे निश्चय किया हुआ। वैदिक धर्म। ज्योतिष्टोमादि.

त्रयीमुख, (पु०) त्रयी एव मुखं यस्य। वेदही जिसका मुख है। ब्राह्मण.

त्रयोदशन्, (त्रि०) त्रयश्च दश च, त्र्यधिका दश वा। तीन ऊपर दसकी संख्या। तेरह। तेरहको पूरण करनेके अर्थमें डट् (अ) त्रयोदशः (त्रि०)। [illegible] तेरह [illegible] स्त्री० ङीप् (ई) त्रयोदशी.

त्रस्, भय। डरना। दिवा० पर० अक० सेट्। त्रस्यति- [illegible]। अत्रासीत्-अत्रसीत्। [illegible].

त्रसरेणु, (पु०) त्रसः (चरः) रेणुः। झरोखेके भीतर [illegible] (स्त्री०).

त्रस्त, (त्रि०) (त्रस्+क्त) डरपोक.

त्रस्नु, (त्रि०) त्रस्+क्नु (नु)। [illegible]। डरपोक। [illegible] (न०).

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

त्रास, (त्रि०) त्रस्+भावे घञ्। डरनेवाला। सरकनेवा[cut off]
—सः (पु०) डर। भय.

त्रि, (त्रि०) बहु० तॄ+ड्रि। तीनकी संख्यावाला। त्रि[cut off] तिसृ आदेशः.

त्रिंश, (त्रि०) त्रिंशत्+पूरणे डट् (अ)। तीसवें[cut off] करनेवाला। तीसवां.

त्रिंशक, (त्रि०) त्रिंशता क्रीतः+वुन् (अक)। ती[cut off] संख्यावाले द्रव्यसे खरीदी गयी वस्तु। तीसपर मोल[cut off] गई चीज.

त्रिक, (न०) त्रयाणां संघः+कन् (क)। तीनोंका स[cut off] पृष्ठवंशके नीचेका भाग। पीठकी हड्डीके नीचेका हि[cut off] कटिका भाग। त्रिफला (हरीड़ बहेड़ा और आमला)। त्रिकटु (सोंठ-मघ-और मिरच)। मिलेहुए तीन [cut off]

त्रिककुद्, (पु०) त्रीणि ककुदतुल्यानि शृङ्गाणि अ[cut off] (ककुदके अन्तका लोप हो जाता है)। तीन [cut off] समान जिसके तीनों सींग हैं। त्रिकूट नामी पर्वत (स[cut off]

त्रिकाल, (न०) त्रयाणां कालानां समाहारः। (भूत[cut off] ष्यत् और वर्तमान) तीनों समय। सवेरे दुपहर और [cut off]

त्रिकालज्ञ, (पु०) त्रिकालवर्त्तिपदार्थान् जानाति। [cut off] तीनों समयके पदार्थोंको जाननेहारा। ज्योतिषी। [cut off] सब कुछ जाननेहारा.

त्रिकूट, (पु०) त्रीणि कूटानि अस्य। जिसकी तीन चो[cut off] यें हों। लंकाके पास सुवेल नामी पर्वत ([cut off]

त्रिकोण, (त्रि०) त्रयः कोणा यस्य। जिसके तीन को[cut off] हों। तीन कोनोंवाला पदार्थ। (ज्योतिषमें) ल[cut off] नौवां और पांचवां स्थान (न०)

त्रिगर्त, (पु०) तीन गढ़े। पंजाबमें नाम [illegible] उस देशके लोग। ब० व०.

त्रिगुण, (न०) त्रयाणां गुणानां समाहारः। तीन गु[cut off] का मेल (सांख्यमें) प्रधान (सारे जगत्का मू[cut off] "त्रिभिर्गुणितं" गुण्-गिनती करना+क्त (अ) [cut off] गुणा किया (त्रि०)। तीनसे गुणा किया.

त्रिगुणाकृत, (त्रि०) त्रिगुणं कृत्वा कृषं। [cut off] (आ)। तीन बार हलसे जोता गया खेत आदि.

त्रिगुणात्मक, (न०) त्रयो गुणाः (सत्त्वादयः) [cut off] (स्वरूपं) यस्य+कप्। तीन गुण जिसका स्वरू[cut off] (सांख्यमें) प्रधान। (वेदान्तमें) माया

त्रिजटा, (स्त्री०) रामायणमें प्रसिद्ध एक राक्षसी.

त्रिणाचिकेत, (पु०) [illegible] [cut off] वेद। तीन बार [illegible] [cut off] [illegible]) वा वेद। "[illegible] [cut off] [illegible]" इति श्रुतेः.

त्रिणे(ने)त्र, (पु०) त्रीणि नेत्राणि यस्य । जिसकी तीन आंख हैं । शिवजी । तीन आंखवाला.

त्रितय, (न०) त्रयाणां अवयवाः, त्रयोऽवयवा येषां वा+तयप् । तीनोंका हिस्सा वा तीन हिस्सोंवाला । तीनों । तीन संख्यावाला (त्रि०).

त्रिदण्ड, (न०) त्रयाणां दण्डानां समाहारः । तीन दण्डों-का समूह । वचन, मन और शरीरके तीनदण्डोंसे पहिचाना गया संन्यास पदका आश्रम.

त्रिदण्डिन्, (त्रि०) त्रिदण्डं अस्ति अस्य । इनि । जिसके पास तीन दण्ड हों । वचन, मन और शरीरके दण्डको धारण करनेहारा । एक प्रकारका संन्यासी.

त्रिदश, (पु०) तिस्रः दशा येषां । जिनकी तीन (उत्पन्न होना, होना और नाश हो जाना) दशा हों अर्थात् जिनकी मनुष्योंकी भांई (बढना, बदलना और घटने जाना) दशा नहीं । देवता । व्यधिकाधिकरणत्वाच दशा परिमाणं एषां+डद् (अ) । तेतीस देवता (१२ सूर्य ११ रुद्र और ८ वसु आदि).

त्रिदशाधिप, (पु०) ६ त० । देवताओंका स्वामी (मालिक) इन्द्र.

त्रिदशाध्यक्ष, (पु०) तिसृणां दशानां, त्रिदशानां (देवानां) वा अध्यक्ष । तीनदशा (जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति)-ओंको देखनेहारा । देवताओंको अपनी आज्ञामें रखनेहारा । सर्वसाक्षी ब्रह्म । देखनेहारा ब्रह्म । सर्व (परमात्मा) । विष्णु.

त्रिदशालय, (पु०) ६ त० । त्रिदशानां आलयः । देवताओंका स्थान । स्वर्ग.

त्रिदिव, (पु०) त्रयो दीव्यन्ति अत्र । आधारे क (अ) । ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों जहां प्रकाशते हैं । सत्य आदि तीन प्रकारसे जो प्रकाशते हैं । दिव्‌+क वा । स्वर्ग । आकाश । सुख (न०).

त्रिदिवेश, (पु०) ६ त० । देव । देवता । "त्रिदिवौकस" आदि यही अर्थ । इन्द्र । देवताओंका राजा.

त्रिदोष, (पु०) त्रयाणां दोषाणां दोषं । वात, पित्त और श्लेष्मके सन्निपात (इकट्ठा होना) से दोष । वातादिके सन्निपातसे उनका विकारको करनेहारा एक प्रकारका रोग.

त्रिधा, (अव्य०) त्रि+प्रकारे धाच् (धा) । तीनप्रकार । तीन तरह.

त्रिधामन्, (पु०) त्रीणि धामानि यस्य । पृथिवी आदि तीनों स्थानवाला । स्वर्गादि तीनों लोकवाला । शिव । विष्णु । अग्नि (अग्न).

त्रिनयन, (पु०) त्रीणि नयनानि यस्य । जिसकी तीन आंख हैं । शिवजी । तीन आंखवाला (त्रि०) । दुर्गा (स्त्री०).

त्रिपताक, (न०) तिस्रः पताका इव यत्र । जहां मानों तीन झंडियें हैं । मस्तकके मध्यमें तीन रेखाओंवाला ललाट (मस्तक-माथा) । तीन अंगुलियोंके फैलानेवाला हाथ (मध्यमा और अनामिकाको मिलाकर बाकी अंगुलीओंको ऊपर उठाना), (पु०) । नाटकमें एक ओर होकर बात करनेके अवसरमें ऐसा ही हाथ बना लेतेहैं (जनान्तिक).

त्रिपथगा, (स्त्री०) त्रयाणां पथां गमनम् । सप्त गमा० । तीन गच्छति गम्+ड । तीन मार्गोंका मेल । इससे जानी है । गंगा । भागीरथी.

त्रिपदी, (स्त्री०) त्रय पदा अस्याः (पदकी पद् हुआ फिर ङीप् होनेके अनन्तर पद् हो गया) । तीनपदोंका मेल । एक प्रकारका छंद । हथकडी । हाथीके पांवका बंधन । हाथीको बांधनेका सांकल.

त्रिपर्ण, (पु०) त्रीणि त्रीणि प्रतिपत्रं पर्णानि अस्य । हर-एक पत्तेमें तीन २ पत्तोंवाला । त्रिपुर । कच्चनार दरख्त.

त्रिपाद्, (पु०) त्रय पादा अस्य । पद होता है । जिसके तीन पांव हों । विष्णु । "पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि" इति श्रुति । ज्वर । बुखार

त्रिपिबत्, (पु०) त्रिभि कर्णाभ्यां जिह्वया च पिबति । शतृ+शानु । जो तीनों (दोनों कान और जीभ) से पानीको पीता है.

त्रिपुट, (पु०) त्रय पुटा यस्य । तीन दोनावाला । हथेली की तली । मधुर् । मल्लिका (चमेली) । सुपारी । छोटी (इलायची) । त्रिकर (तिपाई) । एक दिवी (स्त्री०) इन्द्र । तिपाई और एलवा । वा ढीप् । तीन होनेका लक्षण । गंधै (वा ढीप्).

त्रिपुण्ड्र, (न०) त्रयाणां पुण्ड्राणां समाहारः । गन्ने (पुण्ड्र)-की भांति तीन आकारों (लकीरें) का समूह । माथेपर टेढी तीन रेखा (लकीरें) । एक तिलकका भेद जिसमें टेढी तीन रेखा होती हैं । माथेपर तीन टेढी लकीरें जो भस्मसे की जाती हैं.

त्रिपुर, (पु०) त्रीणि पुराणि अस्य । बना जिसके तीन पुरी (नगरी) थीं एक दैत्य । "त्रिपुरदहन" आदि तीन पुर (नगर).

त्रिपुरान्तक, (पु०) ६ त० । त्रिपुरको अन्त करनेहारा । शिवजी.

त्रिपुरभैरव, (न०) त्रीणि पुराणि भैरवेण तीन प्रकारका तंत्र । ज्योतिषके एक प्रकारका योग (जब पूरा मिले बनती, एक एक होकर उसके अस्तपर तीन योग और उसके त्रिपुरभैरव योग होता) है । पु० ।

त्रिपुष, (पु०) बहते पुष्प अस्य [illegible] तीन पुष्प हों । तीन कोनेवाला खेत.

त्रिभुवन, (न०) त्रयाणां भुवनानां समाहारः। तीनों लोक। त्रिलोकी (स्वर्ग मर्त्य पाताल).

त्रिमधु, (न०) त्रयाणां मधूनां समाहारः। तीनों मीठे [illegible] ऋग्वेदमें "मधु वाता" इत्यादि [illegible] "मधु वाता" आदि तीनों मन्त्रोंको जपने[illegible] (पु०).

त्रिमार्गगा, (स्त्री०) त्रिभिर्मार्गैर्गच्छति। गङ्गा (स)। [illegible] है। यथा "त्रिमार्गगेव त्रिदिवम्" [illegible].

त्रि[illegible], (स्त्री०) [illegible] जिनके तीन [illegible] (पांचों और [illegible]) [illegible].

त्रि[illegible], (न०) [illegible] समाहारः। [illegible] तीन [illegible] "त्रि[illegible]" [illegible].

त्रि[illegible], (पु०) [illegible] जहां तीन [illegible] हों। [illegible]

त्रि[illegible], (स्त्री०) [illegible] समाहारः। [illegible]

त्रि[illegible] (पु०) [illegible] तीन [illegible] त्रिभुवन। त्रिवली.

त्रि[illegible] (न०) [illegible] समाहारः। तीन [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

त्रिवेदिन्, (पु०) त्रयो वेदाः पठ्यत्वेन सन्त्यस्य इति। ऋग्वेद आदि तीनोंका पढ़ नेवाला.

त्रिशङ्कु, (पु०) सूर्यवंशका एक राजा। [illegible] [illegible]की तरह। शलभ। पतंग। कीड़ा। [illegible] [illegible].

त्रिशिख, (पु०) तिस्रः शिखाः शिखराः यस्य। [illegible] इसमें तीन शिखा हों। त्रिशूल। [illegible] रावण। त्रिशूल (न०)। तीन शिखा ([illegible]) [illegible] आदि.

त्रिशिरस्, (पु०) त्रीणि शिरांसि यस्य। जिसके [illegible] सिर हैं। एक राक्षस। ज्वर। कुबेर। कुबेर.

त्रिशीर्षक, (न०) त्रीणि शीर्षाणि यस्य। जिसके तीन (सिरे) [illegible]। [illegible]। त्रिशूल। तीन [illegible] (त्रि०).

त्रिशूल, (न०) त्रीणि शूलानि (शिखराणि) [illegible] जहां तीन सिरेकी नोकें हों। एक प्रकारका शस्त्र

त्रिशूलिन्, (पु०) त्रिशूलं अस्ति अस्य। [illegible] वाला। शिवजी। त्रिशूल धरनेवाला (त्रि०).

त्रिशृङ्ग, (पु०) त्रीणि शृङ्गाणि यस्य। तीन [illegible] [illegible].

त्रि-(ष्) टुभ्, (स्त्री०) त्रिषु स्थानेषु स्तुभ्नाति। [illegible] [illegible]। तीन जगह रुकता है। ग्यारह अक्षरके [illegible] एक छन्द.

त्रिसन्ध्य, (न०) तिसृणां सन्ध्यानां समाहारः। [illegible] दोनों सन्ध्या मिलकर। तीन समय ([illegible]).

त्रिस-(व)वन, (न०) [illegible] [illegible] तीन समय। तीन [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible] [illegible]

त्रि[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible]

त्रि[illegible], (स्त्री०) [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ता, (स्त्री०) त्रीन् इता-नि० । दक्षिणाग्नि गार्हपत्य आहवनीय तीनो इकट्ठी अग्नियें । सत्ययुगके पीछे आनेवाला हिन्दुओंका युग । जूएकी खेलका साधना । पासोंका ऊंचे होकर गिरना । जिस पासेसे तीन अंक हैं । तीन कौडियोंका ऊंच होकर गिरना । तीनों मिलेहुए.

धा, (अव्य०) त्रि+प्रकारार्थे धाच् । तीन प्रकार । तीन तरहसे । तीनभाव.

, पालन । बचाना । भ्वा० आत्म० सक० अनिट् । त्रायते । अत्रास्त.

गुणिक, (त्रि०) त्रिगुणार्थं प्रयच्छति । त्रिगुणा होनेके लिये देता है । त्रिगुणं गृहीतुं एकगुणं प्रयुङ्क्ते । ठक् । त्रिगुना लेनेके लिये एकगुणा देता है । एकगुना देकर त्रिगुना लेनेवाला । तीन तरहका एक प्रकारका सूद.

गुण्य, (न०) त्रयाणां सत्वादीनां गुणानां समाहारः । तीनों (सत्व रज तम) गुण । "स्वार्थे ष्यञ्" (य) । तीनों गुणोंके कार्य पुण्यपापरूप कर्मोंके फलवाला संसार । "त्रैगुण्यविषया वेदा." इति गीता.

धा, (न०) त्रिप्रकारे । तीन तरह.

लोक्य, (न०) त्रयाणां लोकानां समाहारः । "स्वार्थे ष्यञ् (य)" । तीनों (स्वर्ग मर्त्य पाताल) लोक.

लोक्यविजया, (स्त्री०) त्रैलोक्यं विजयते (सेवते, आधीनं करोति) । तीन लोकको जीतती है (सेवन करनेसे आधीन करती है) वि+जि+अच् (अ) । भङ्ग । भांग.

विद्य, (पु०) तिस्रो विद्याः समाहृताः । तीनो विद्या ली गई । ऋग् यजुः और सामवेदरूप तीनो विद्याओंको जानता वा पढता है । तीन वेदोंको जानेहारा.

यम्बक, (पु०) त्रीणि अम्बकानि (नेत्राणि) अस्य । जिसकी तीन आंख हैं । शिवजी । (यहाँ आगममें इयद् आदेश माना है इस लिये "त्रियम्बक" की इसी अर्थमें है).

यम्बकसख, (पु०) ६ त० । महादेवका मित्र । "षच् समा०" कुबेर.

यहस्पर्श, (पु०) त्रयाणां अह्नां (तिथीनां) स्पर्शो यत्रैकस्मिन् सौरदिने । सूर्यका वह दिन कि जिसमें तीन तिथियोंका मेल है । तीन तिथियोंको छूनेहारा सूर्यका एक दिन.

य, (त्रि०) अन्यस्मिन् । और । भिन्न । जुदा (वेदमें) एक.

यकपत्र, (न०) त्वगिव पत्रं अस्य । जिसका पत्ता छिलकेकी नाईं हो । गुडत्वच् । दालचीनी । तेजपत्ता । हींग (स्त्री०).

त्वक्ष्, (कार्श्य) कमजोर होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । त्वक्षति । अत्वक्षीत्.

त्वच्, सँवरण । ढांकना । छिपाना । तुदा० पर० सक० सेट् । त्वचति । अत्वाचीत्-अत्वचीत्.

त्वच्-चा, (स्त्री०) त्वच् +क्विप् वा टाप् । वल्कल । खलडी । छिलका । चमडा । बक्कल । गुडत्वच । दालचीनी.

त्वच, (न०) त्वच्+अच् । चमडा । छिलका (बक्कल) । तेजपात । दालचीनी.

त्वचिसार, (पु०) त्वचि सारोऽस्य (सप्तमीका अलुक् होता है) । जिसकी त्वचामें सार हो । बंश । बाँस.

त्वद्, (त्रि०) तन्+क्विप् । अन्को विकल्पसे लुक् होता है) और । दूसरा । (यह सर्वनाम है).

त्वर्, वेग । जल्दी करना । जोर करना । भ्वा० आत्म० अक० । सेट् । त्वरते । अत्वरिष्ट.

त्वरा, (स्त्री०) त्वर्+अङ् । वेग । जोर । चाहे गये पदार्थको पानेके लिये विलम्बका न सहारना "त्रिष्" । त्वरयति । अतत्वरत् । तरा.

त्वरित, (न०) त्वर्+क्त । शीघ्र । जल्दी । जल्दीवाला कोईभी (त्रि०).

त्वरितोदित, (त्रि०) त्वरितं यथा तथा उदितं । वद्+क्त । जल्दी बोल दियागया । शीघ्रोच्चारित.

त्वष्टृ, (पु०) त्वक्ष्+तृच् । देवताओंका शिल्पी (कारीगर) । विश्वकर्मा । १२ आदित्योंमेंसे एक । तक्षन । चित्रानक्षत्र.

त्वादृक्ष, (त्रि०) त्व [illegible] दर्शनं अस्य+क्स । जो तेरी नाईं दीखता है । तेरे समान । तेरे जैसा । त्वादृश-ह.

त्वाष्ट्र, (पु०) त्वष्टुरपत्यम् । विश्वकर्माकी सन्तान । वृत्रासुर । वृत्रनामी आदित्य । संज्ञा नामवाली सूर्यकी पत्नी (स्त्री०) । चित्रानक्षत्र.

त्विष्-षा, (स्त्री०) त्विष्+क्विप् [illegible] टाप् । दीप्ति । प्रकाश । चमक । रोशनी.

त्विष्, दीप्ति । चमकना । भ्वा० उभ० अक० अनिट् । त्विषति-ते । अत्विक्षत्-अत्विक्षत.

त्विषांपति, (पु०) ६ त० । अलुक् समास । किरणोंका (प्रकाशों)का मालिक.

त्सर्, छद्मगति । कपटसे जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । त्सरति । अत्सारीत्.

त्सरु, (पु०) त्सर्+उ । खड्गमुष्टि । [illegible] । (मूठ) । तलवारका [illegible].

त्सारुक, (त्रि०) त्सर्+उकञ् [illegible] देने चतुर.

थ

थ, (पु०) [illegible] (अ)। पर्वत (पहाड़)। [illegible]। [illegible] [illegible]। एक [illegible]। [illegible].

थुर, [illegible]। [illegible]। [illegible]। थुर्व० पर० अक० सेट्। थुर्वति। [illegible].

थुत्कार, (पु०) थुत् [illegible] कारः। [illegible] (अ)। थूकनेकी ध्वनि। [illegible] (थूक फें-[illegible]) की आवाज.

थैथै, (अव्य०) किसी तरहके बाजेके आवाजकी नकलका शब्द.

द

द, (पु०) (अक्षरके पीछे रहता है) देना। [illegible] [illegible]। पर्वत (पहाड़)। [illegible]। भार्या (औरत) (स्त्री०)। [illegible] (देनेवाला) (त्रि०).

दंश, (पु०) दंश+अल् (अ)। वनकी मक्खी। [illegible]। [illegible]। दंश। काटने वाद् (अ)। मर्म। [illegible] [illegible]। दोष। [illegible]। सांपका डंस मारना.

दंशक, (पु०) दंश+कर्तरि ण्वुल् (अक)। [illegible] [illegible]। डंस [illegible]। "काटने वाला" अर्थ (त्रिए).

दंशित, (त्रि०) दंश (कर्म) [illegible] [illegible]। जिरह [illegible] हुआ। [illegible] [illegible].

दंष्ट्रा, (स्त्री०) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (दांतोंकि [illegible])। [illegible].

दंष्ट्रिन्, (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]। [illegible] (त्रि०).

दक्ष, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible].

दक्ष, (त्रि०) [illegible]। निपुण। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] (पु०).

[illegible], (स्त्री०) ६ त०। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। "[illegible]" [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible].

[illegible] (पु०) [illegible]। [illegible] [illegible] (त्रि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] (त्रि०).

दक्षिणतस्, (अव्य०) दक्षिण+अतस्। दक्षिणसे [illegible]

दक्षिणपूर्वा, (स्त्री०) दक्षिणपूर्वयोः अन्तराल दिक्। दक्षिण और पूर्वके बीचकी दिशा। अग्निकोन.

दक्षिणमार्ग, (पु०) कर्म०। [illegible] ([illegible] अनेक रास्ता) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। एक प्रकारका मार्ग (आचार).

दक्षिणसागर, (पु०) दक्षिणस्य सागरः। दक्षिण [illegible] समुद्र.

दक्षिणस्थ, (पु०) दक्षिणे तिष्ठति। स्था+क। [illegible] ओर बैठता है। सारथि। रथ चलानेवाला.

दक्षिणा, (स्त्री०) दक्षिण+आप् (आ)। [illegible] [illegible] दिशा। यज्ञके अन्तमें कर्मको पूरा करने देनेलायक द्रव्य (धन)। यज्ञकी पत्नी। [illegible]। [illegible] [illegible]। इति प्रजापतिकी कन्या.

दक्षिणाग्नि, (पु०) कर्म०। यज्ञमें एक अग्निका भेद

दक्षिणाचल, (पु०) दक्षिणः अचलः। दक्षिण [illegible] पर्वत। मलयाचल.

दक्षिणाचार, (पु०) कर्म०। अपने [illegible] [illegible] [illegible] पूजन करे वही दक्षिणाचार है, [illegible] [illegible] पूजन करना। एकप्रकारका आचार.

दक्षिणात्, (अव्य०) दक्षिणा+आति। दक्षिणसे। [illegible]

दक्षिणापथ, (पु०) ७ त०। [illegible] ([illegible])। दक्षिण दिशाका देश। दक्षिनी ओरका रस्ता

दक्षिणाभिमुख, (त्रि०) दक्षिणस्य अभिमुख। [illegible] ओर मुख किया हुआ.

दक्षिणामूर्त्ति, (पु०) कर्म०। [illegible] [illegible]

दक्षिणायन, (न०) दक्षिणस्यां अयनं (गमनं)। [illegible] [illegible] जाना। वह जिस समयमें हो। वह [illegible] [illegible]। [illegible] लेकर ६ महीनेका समय

दक्षिणावर्त्त, (त्रि०) दक्षिणे [illegible]। [illegible] (अ)। दहिनी ओर घुमाहुआ [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible].

दक्षिणेतर, (पु०) दहिने [illegible] (अ) [illegible] [illegible]। जिसके दहिनी ओर [illegible] [illegible]। [illegible] जिसके दहिनी ओर [illegible] [illegible] [illegible] है

दक्षिणीय, (त्रि०) दक्षिणा [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] (देय) "[illegible]" [illegible]

दग्ध, (त्रि०) दह+क्त (त)। [illegible] ([illegible] [illegible].

दग्ध, [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible], [illegible].

दण्ड्, (दण्डपातन-सजादेना) चुरा० उभ० सक० सेट्। दण्डयति-ते । अददण्डत्-त.

दण्ड, (न०) दण्ड्+अच् (अ) । लगुड (लाठी) । डंडा । घोडा । घमण्ड । रिढकनेका डंडा (मथानी) । और सेना । साठ पलका समय । पृथिवीका एक माप । सूर्यका अनुचर (नौकर) (पु०) । "दण्ड्+भावे घञ् । राजाओंका चौथा उपाय ।" दण्ड+कर्तरि अच् (अ) । यमराज.

दण्डका, (स्त्री०) दण्डक वनमें जनस्थाननामका वन.

दण्डकारण्य, (न०) दण्डकनामी राजाका देश (शुक्रके शापसे वन बनगया) । जनस्थानका वन । एक तीर्थ.

दण्डधर-धार, (पु०) दण्डं धारयति । धृ+णिच्+अच् हलः अण् वा । दण्ड पकडनेहारा । यमराज । राजा । कुम्भकार । कुम्हार । जिसके हाथमें डंडा है (त्रि०).

दण्डनायक, (पु०) ६ त० । चार प्रकारकी सेनाका मालिक । कोतवाल । सिपाही.

दण्डनीति, (स्त्री०) दण्डो नीयते (बोध्यते) यया । नी+क्तिन् । जो दण्ड (सजा देना)को बोधन कर्ताहै । शुक्रादिसे कहाहुआ नीतिशास्त्र । फौजदारीका कानून.

दण्डपाणि, (पु०) दण्डः पाणौ यस्य । ष० ब० । जिसके हाथमें दण्ड (सजा वा डंडा है) यमराज । बनारसके शिवजीका नाम.

दण्डपारुष्य, (न०) दण्डेन पारुष्यं यत्र । जहां सजासे सरती है । अठारह प्रकारके विवादों (झगडों)मेंसे एक । राजाओंका एक प्रकारका व्यसन (बुरी आदत).

दण्डविधि, (पु०) दण्डस्य विधिः । दण्ड (सजा)का नियम (कायदा).

दण्डव्यूह, (पु०) (दण्डस्य व्यूहः=रचना । एक प्रकारसे सेनाको पंक्तिओंमें खडा करना.

दण्डशास्त्र, (न०) दण्डविधायकं शास्त्रम् । दण्डका विधान करनेवाला शास्त्र । फौजदारी कानून.

दण्डाजिन, (न०) दण्डः अजिनं च । दण्ड और मृगचर्म.

दण्डाज्ञा, (स्त्री०) दण्डस्य आज्ञा । दण्ड (सजा)की आज्ञा । राजाका हुकम.

दण्डादण्डि, (अव्य०) दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं प्रवृत्तं युद्धं । क्रियाव्यतिहारे (जो एक क्रिया कर्ताहै उसे वैसा दूसराभी वैसाही करे) इच्‌समा० पूर्वपददीर्घः । आपसमें डंडोंकी चोटके साथ कीगई लडाई । डंडमडंडा । लाठमलाठी.

दण्डाधिप, (पु०) दण्डस्य अधिप. । दण्ड (सजा) का स्वामी । बडा हाकिम । माजिस्ट्रेट.

दण्डानीक, (न०) दण्डस्य अनीकं । सैन्यविभाग । फौजका हिस्सा । बडी तेज सेना.

दण्डार्ह, (त्रि०) दण्डस्य अर्हः=योग्यः । दण्ड (सजा) देनेलायक.

दण्डाहत, (न०) दण्डेन आहन्यते । आ+हन्+क्त । डंडेसे चोट कियागया । तक्र । छाछ.

दण्डिन्, (पु०) दण्ड+अस्ति अर्थे इनि । जिसके पास डंडा हो । यमराज । राजा । द्वारपाल (दर्वान) । सूर्यके पास विचरनेहारा । जिनका भेद । चौथे आश्रमवाला । दण्डी । संन्यासी । काव्यादर्शनाम साहित्यग्रन्थके रचनेहारा एक कवि । दण्डवाला.

दण्ड्य, (त्रि०) दण्डयितुं योग्यः+यत् । सजावार । दण्ड देनेयोग्य (लायक) । जुर्मानेके लायक.

दत्त, (त्रि०) दा+क्त । विसृष्ट । दियागया । छोडा गया । और रक्खा गया । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक (दत्तक) । एकप्रकार वैश्यकी उपाधि । और दत्तात्रेयनामी भगवानका एक अवतार "भावे क्त" दान देना और एकप्रकारका दान (न०) । "स्वार्थे कन् (क)" एकप्रकारका पुत्र । जिसे माता और पिता आपही देवें (पु०).

दत्ताप्रदानिक, (न०) दत्तस्य अप्रदानं पुनः आदानं अस्ति अस्मिन्+ठन् (इक) । अठारह प्रकारके विवादों (झगडों)-मेंसे एक (जिसमें दीगई वस्तुको फिर लेलेते हैं) । नारदने कहा व्यवहारका भेद.

दत्तात्मन्, (पु०) दत्त आत्मा येन । जिसने अपनेको आपही देदिया है । एकप्रकारका पुत्र.

दत्त्रिम, (त्रि०) दानेन निर्वृत्त. । दा+क्त्रि+मप्‌ च । दाननिर्वृत्त । देनेसे हुआ (बनगया) । जिसे माता पिता आपत्तिका समय जान आपही देवें । दत्तक पुत्र (पु०).

दद्, दान देना । धीरज करना । भ्वा० आ० सक० सेट् । ददते । अददिष्ट । ददे.

दद्रु, (पु०) दद्+रु । एकप्रकारका रोग (दाद-धरी) । कछुआ.

दद्रुघ्न (पु०) दद्रुं हन्ति । हन्+टक् । जो दादको [illegible] करताहै । चक्रमर्दक । दादमर्दन.

दद्रुण, (त्रि०) दद्रु+अस्ति अर्थे न । दादकी बीमारीवाला.

दद्रू, (पु०) दरिद्रा+उ (निपा०) । शरीरके चमडेका रोग दाद । धरी.

दध्, देना । धारण करना । भ्वा० आत्म० सक सेट् । दधते । अदधिष्ट.

दधि, (न०) दध्+इन् (इ) दही । एकप्रकारका दूधका विकार । और कपडा (धा+कि) द्वित्वं । धारण करनेहारा (त्रि०).

दधिकूर्चिका, (स्त्री०) दहीके साथ दूध पकाहुआ । आमिक्षा (छना) । गरम दूधमें छाछ दही डालनेसे जो एक वस्तु बनती है.

दधिसार, (पु०) ६ त० । दहीका सार । नवनीत । मक्खन । माखन.

दधीचि-च, (पु०) अथर्वमुनिका औरस (असली) पुत्र । कर्दमप्रजापतिकी कन्यामें उपजा एक मुनि । वृत्र दैत्यको मारनेके लिये जिसकी हड्डियोंसे देवताओंने वज्र बनाया था.

दनु, (स्त्री०) कश्यपकी पत्नी (स्त्री०) । दक्षप्रजापतिकी कन्या । दानवमाता । राक्षसोंकी माता । दैत्योंकी माता.

दनुज, (पु०) दनोर्जायते । जन्+ड । दनुसे उपजता है । असुर । दैत्य.

दन्त, (पु०) दम्+तन् । चर्वणसाधन । चावनेका साधन । मुखमेंके दांत.

दन्तक, (त्रि०) दन्ते प्रसितः+कन् । दांतोंसे लगाहुआ । दांत साफ करके जीनेहारा । नागदन्त (खूंटी) । पहाडसे टेढा बाहिर निकलाहुआ पत्थर (पु०).

दन्तकाष्ठ, (न०) दन्तधावनार्थं काष्ठं । दांत साफ करनेका काठ.

दन्तच्छद, (पु०) दन्ताः छाद्यन्ते अनेन । जिससे दांत ढके जाते हैं । छद्+णिच्+घ ह्रस्वः । ओष्ठ । होट । ओठ.

दन्तधावन, (पु०) दन्तान् धावति (शोधयति) । धाव+ल्यु (अन) । खदिर (खैर)का वृक्ष । मौर बकुल । दातुन । "भावे ल्युट्" । दांतकी सफाई.

दन्तपत्रक, (न०) दन्त इव शुभ्रं पत्रं (दलं) यस्य । दांतकी नाई जिसका सफेद पत्ता हो । कुन्दपुष्प । कुन्दफलका फूल.

दन्तबीजक, (पु०) दन्तवत् बीजानि यस्य । जिसके बीज (बी) दांतोंकी नाई हो । दाडिम । अनारका वृक्ष.

दन्तवक्र, (पु०) दन्तप्रधानं वक्रं अस्य । जिसके मुखमें बडे २ दांत हों । कृष्णजीका विरोधी एक राजा.

दन्ताघात, (पु०) दन्तं आहन्ति । आ+हन्+अच् । निम्बूक । निम्बु । "भावे घञ्" । दांतोंसे चोट लगाना । दांत मुकीत.

दन्तालिका, (स्त्री०) दन्तान् अलति (भूषयति) तेभ्यो वा पर्याप्नोति । अल्+अच् । वा ण्वुल् (अक) । जो दांतोंसे मजा देती है । वा जो दांतोंके लिये पूरी है । लगाम । कटान.

दन्तावल, (पु०) दन्त+अतिशये वलच् (पक्तियोंको दीर्घ होता है) । दन्तोंवाला । हाथी । हस्ती.

दन्तिन, (पु०) दन्त+इनि (इन) । दन्तोंवाला । हाथी.

दन्तुर, (त्रि०) उन्नता दन्ताः सन्ति अस्य । दन्त+उरच् । जिसके ऊंचे दांत हों । ऊंचे दांतवाला । नीचे ऊपर आदि.

दन्त्य, (त्रि०) दन्ते (दन्तमूले वा) भवः (वर्ण) । तकी जडसे निकला । दांतोंसे "निकले" तवर्ग ऌ अक्षर "दन्तेभ्यः हितः+यत्" दांतोंके लिये हित दांतोंका हित करनेहारा.

दन्दशूक, (पु०) गर्हितं दशति । दन्श्+यङ्+ऊक् बुरी तरहसे डसता है । सरकनेहारा । सांप.

दन्भ्, दम्भ । पाखण्ड करना । स्वा० पर० अक० सेट् भ्नोति । अदम्भीत्.

दन्श्, दंशन । डसना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । अदाङ्क्षीत्.

दभ्, प्रेरण । चलाना । भेजना । चुरा० उभ० सक० इदित् । दम्भयति-ते । अददम्भत्-त.

दभ्र, (न०) दभ्+रक् । अल्प । थोडा । "अदभ्रदर्भाम्" इति भारविः.

दम्, शान्ति करना । दण्ड (सजा) देना । रोकना । अक० सेट् । दाम्यति । अदमत् । अदमीत् । दमित्वा । दान्त्वा.

दम, (पु०) दम्+घञ् । दण्ड (सजा) । बाहिरके इन्द्रियोंकि ध्यान करनेलायक विषयसे अतिरिक्त (बुरे) विषयोंसे निवर्तन (हटाना) । "बाहिरकी वृत्तियोंके रोकनेको दम कहते हैं" । विकार (बिगडने)का हेतु । कष्ट होनेपरभी मनका (स्थिर) कायम रहना । बुरे (खोटे) कामसे मनको हटाना । कीचड । रोकना.

दमघोष, (पु०) शिशुपालका पिता । चन्देरीमें एक राजा.

दमयन्ती, (स्त्री०) दम्+णिच्+शतृ । नलराजाकी स्त्री (स्त्री०) दमराजकी लडकी । मदमल्लिका.

दमित, (त्रि०) दम्+क्त । नि० । दान्त । रोकेहुए इन्द्रियोंकी वृत्तियोंको रोकनेहारा । बोझा उठानेवाले बैल आदिको सहारनेहारा.

दमु (मू) नस्, (पु०) दम्+उनसि-वा दीर्घः । अग्नि । शुक्राचार्य (दैत्योंका राजा वा गुरु).

दम्पती, (पु० द्वि० व०) जाया च पतिश्च (जायाके स्थानमें शब्दको दम् आदेश होता है) । मिलेहुए स्त्री और पुरुष (जोरू खाविन्द)

दम्भ, (पु०) दम्भ्+घञ् (अ) । कपट । छल । धूर्तता । पाप । अभिमान । गरूर.

दम्भोलि, (पु०) दम्भोलि (प्रेरयति) दम्भ+ओलि । नाम अस्त्र । एक प्रकारका हथियार । जोकि एक प्रकारका मुद्गर जिसको बडे वेगसे फेंकते हैं.

दम्य, (पु०) दम्+यत् नवत् वा । बोझा उठानेलायक होनेसे पहुंचाहुआ बच्छा (बछडा) । और बैल । दमनके लायक (त्रि०).

दय्, जाना। मारना। देना। और पालन करना। भ्वा० आत्म० अक० सेट्। दयते। अदयिष्ट.

दया, (स्त्री०) दय्-भिदा० अङ्। दल (कोशिश) सेमी दूसरेके दुःखको दूर करनेके लिये इच्छाका उपजना। मिहर्बानी.

दयालु, (त्रि०) दय+आलुच्। कृपायुक्त। दयावाला। रहमदिल। "दयालुरपि स कृष्णः" उद्भटः.

दयित, (पु०) दय+क्त। पति (खाविन्द)। पियारा (त्रि०) -ता। स्त्री (औरत) (स्त्री०).

दर, (अव्य०) दृ+अप्। ईषद्। थोडा। डर। और गढा (पु० न०).

दरकण्टिका, (स्त्री०) दरः कण्टः यस्याः। अपने अर्थमें कन्। जिसपर कोई २ (थोड़ा) कांटा हो। शतावरी.

दरद्, (स्त्री०) दृ+अदि। पहाडपर पानीका गिरना (प्रपात)। भय। पर्वत। बाण। म्लेच्छजातिविशेष। और हृदय। दरद (पु०)। म्लेच्छजाति.

दरिद्र, (पु०) दरिद्रा+अच् (आका लोप)। निर्धन। धनरहित (गरीब)। दीन (दुःखिया).

दरिद्रा, दुरेहाल होना। गरीब होना। अदा० पर० अक० सेट्। दरिद्राति। अदरिद्रीद्-अदरिद्रासीत्.

दर्दुर, (पु०) दृणाति कर्णौ शब्दैः+उरच्। आवाजोंसे जो कानको दुःख देवे। बादल। मेडक (डडू)। एक प्रकारका बाजा। एक पहाड। एकप्रकारका मट्टीका पात्र। दक्षिणमें एक पर्वतका नाम जिसका संबंध मलयसे है। "स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ" रघुः। एक प्रकारके चावल.

दद्रु, (स्त्री०) दरिद्रा+कु-नि०। (दाद)। रोगभेद। एक प्रकारकी बीमारी.

दर्प, (पु०) दृप्+घञ्-अच् वा। अहंकार। गर्व। मद। एक प्रकारका हिरन। कस्तूरी। इत्य.

दर्पक, (पु०) दर्पयति। दृप्+णिच्+ण्वुल् (अक)। कामदेव। अभिमानको उपजानेहारा (त्रि०).

दर्पण, (पु०) दृप्+ल्यु (अन)। रूपकी परछाई देखनेका आधार (आसरा) आदर्श। शीशा। एक सुप्रसिद्ध पहाडका नाम.

दर्भ, (पु०) दृभ् (गांठना) +घञ् (अ)। दृ+भ वा। "कुशा, काश, बल्वज, तीक्ष्ण रोमवाले (तेजरुंवाले) मौंज और शाद्वल" ये ६ दर्भ कहे जाते हैं। कुश आदि छ प्रकारका घास.

दर्वि-र्वी, (स्त्री०)। दृ+विन् वा ङीप्। अग्नि (चूल्हा) आदिको उठानेका साधन। देगचीसे चावल इसीसे निकालते और देखते हैं। कडछी। छकडी आदिका बनाहुआ पदार्थ। "स्वार्थे कन्" इसी अर्थमें। और गोजिह्वालता (बेल).

दर्वीकर, (पु०) दर्वीव करः फणो यस्य। दर्वीव फणं करोति वा कडछीके समान जिसका फन है अथवा जो कडछीकी नाई फन बनाता है। "कृ+अच्" सर्प। सांप.

दर्श, (पु०) दृश्यते (धात्रे) चन्द्रार्कसङ्गमो यत्र। दृश्+घञ् ([illegible])। जहां चांद और सूर्यका मेल होता है। अमावस्या तिथि। यज्ञविशेष। "दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत" श्रुतिः। "भावे घञ्" दर्शन। देखना। दृश्+अच्। देखनेहारा (त्रि०).

दर्शक, (पु०) दर्शयति राजानं आगतान्। जो आये हुओंको राजाका दर्शन करावे। दिखानेहारा (त्रि०).

दर्शन, दृश्+ल्युट् (अन)। जिससे देखते हैं। आंख (नेत्र)। स्वप्न (सुपना)। बुद्धि। धर्म। उपलब्धि। मिलाहुआ (हासल)। शीशा। अभ्यास (अपनाआप)। ज्ञानके उपाय। न्याय आदि शास्त्र.

दर्शनीय, (त्रि०) दृश्+अनीयर्। मनोहर। दिलपसंद। देखनेलायक.

दर्शयितृ, दृश्+णिच्+तृच्। दिखलानेहारा (त्रि०)। द्वारपाल (दर्वान) दर्शनेपर आयेहुओंको राजाका दर्शन कराता है (पु०).

दल्, भेदन। फाडना। तोडना। दलना। भ्वा० पर० सक० सेट्। दलति। अदालीत्। "मित्" दालयति-ते। अदीदलत्-त.

दल, (न०) दल्+अच्। अंशाई। टुकडा। द्रव्यराशि (मिलाव)। अपद्रव्य (खोट)। पत्ता। खाइस। तमालका पत्ता। आधा.

दलित, (त्रि०) दल्+क्त। प्रफुल्ल (फूलाहुआ-खिलाहुआ)। तोडागया। आधा कियागया.

दव्, गति-जाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। इदित्। दन्वति। अदन्वीत्.

दव, (पु०) दुनोति। दु+अच्। वन। जंगल। बनकी आग "भावे अच्"। उपताप। गरमी.

दवथु, (पु०) दु-दु-उपताप। गरम होना। अथुच्। गर्मी। अंग आदिकी जलन.

दवाग्नि, (पु०) दवस्य (बनस्य) अग्निः। जंगलकी आग। दावानल.

दविष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन दूरं। इष्ठन्। अन्तका लोप और गुण। बहुत दूर। "ईयसुन्" दवीयस्। यही अर्थ। स्त्रियां ङीप्.

दश्, डसना। चमकना। देखना। दशना। चुरा० आत्म० सक० सेट्। इदित्। दंशयते। अददंशत्। उभ० "अक०" दंशयति-ते। अददंशत्-त.

दशक, (न०) दश परिमाणं अस्य+कन्। दशकी संख्या (गिन्ती).

दशकण्ठ, (पु॰) दश कंठाः यस्य। जिसके दश गले हैं। दशमुख। रावण.

दशकर्म, (न॰) दश कर्माणि। दस प्रकारका संस्कार। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह.

दशत्, (पु॰) दश परिमाणं अस्य+अति। दशोंका समूह.

दशधा, (अव्य॰) दश+प्रकारे धाच्। दस प्रकारसे.

दशन्, (त्रि॰) दन्श्+कनिन्। दस एक संख्या.

दशन, (पु॰) दश्यतेऽनेन। जिससे डसाजाता है। नि॰ "नस्य लोप" होत। जिसर "करणे ल्युट् (अन)"। कवच (जिरह)। "भावे ल्युट्" दंशन (डसना)। दांत आदिसे चोट लगाना.

दशनोच्छिष्ट, (न॰) दशनेन उच्छिष्टं यत्र। जहां दस-नेसे जूठा होता है। ओठ (होठ) आदिका चूमना.

दशबल, (पु॰) दश बलानि यस्य। जिसके दस बल हैं। बुद्धमुनि। दान, शील, क्षमा, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा, बल, उपाय, प्रणिधि और ज्ञान ये दशबल हैं.

दशभुजा, (स्त्री॰) दश भुजा यस्याः। दस भुजावाली दुर्गा (देवी).

दशम, (त्रि॰) दशानां पूरणः+डट्-मट्। दसवां। जो दस-की संख्याको पूरा करदे.

दशमिन्, (त्रि॰) पूरण अर्थमें+इनि। नब्बेसे ऊपरकी उमरवाला। बहुत बूढ़ा.

दशमी, (स्त्री॰) दशानां पूरणी। दशोंको पूरा करनेवाली। दशमी तिथि। नब्बेसे ऊपरकी उमर। बहुत बूढ़ी उमर। कामदेवकी दसवीं अवस्था (मरनदशा).

दशमीस्थ, (त्रि॰) दशम्यां अवस्थायां तिष्ठति। स्था+क (अ)। अतिवृद्ध। बहुत बूढ़ा। नब्बेसे ऊपरकी उमर-वाला। क्षीणराग। जिसकी संसारके पदार्थोंसे प्रीति घीरी होगई। स्मृतिहीन (जो कुछ याद नहीं रख सकता)। जिसके कौरवी इन्द्रियों पहुंचनेसे कामियोंका जोश.

दशमूल, (न॰) दश मूलानि यत्र। जहां दस जड़ें हैं। एक प्रकारका पाचन (कायेसे अथवा पचनेसे)। बिल्व, श्योनाक, गम्भारी, पाटला, अग्निमन्थिका, शालपर्णी, पृश्नि-पर्णी, दोनों कटेरी और गोखुरु ये दस मूल हैं.

दशरथ, (पु॰) दशसु दिक्षु गतो रथो यस्य। जिसका रथ दसों दिशाओंमें जाता। सूर्यवंशी राजा। श्रीरामचंद्रके पिता.

दशरथसुत, (पु॰) ६ त॰। रामचन्द्र (दशरथका पुत्र)। "दशरथात्मज."

दशरथेश, (त्रि॰) दशरथेषु अस—ईश+स्य। दशरथके ...

दशविध, (त्रि॰) दश विधाः=प्रकाराः यस्य। दस प्रकार (तरह) का.

दशसहस्र, (न॰) दश सहस्राणि। दस हजार.

दशहरा, (स्त्री॰) दशविधानि दशजन्मार्जितानि च पापानि हरति। हृ+टच्। दस प्रकार वा दस जन्मोंके इकट्ठे पापोंको दूर करती है। गंगाके जन्मका दिन। जेठ महीने शुक्लपक्षकी दशमी.

दशा, (स्त्री॰) दन्श्+अङ्। नि॰। नखोर। अवस्था। हालत। दियेकी बत्ती (बाती)। "अयेऽस्मे न च दीपं पात्रं न दशान्तरम्। परोपकारनिरता मणयो दीपा इव" इत्युद्भटः। वस्त्रान्त। आँचल (पल्ला)। गर्भवासजन्म। बालकपन। जवानी। बुढ़ेपा। कामसे उपजी विरहकी दसप्रकारकी हालत। योगिनी दशा.

दशाकर्ष, (पु॰) दशाया (तैलादिकं) आकर्षति। जो दशा से तेल आदिको खेंचता है। आ+कृष्+अच्। दीया। आ। वस्त्राञ्चल। कपड़ेका पल्ला (आँचल).

दशाधिपति, (पु॰) दशाया अधिपतिः। दशाका स्वामी सूर्य वा अन्य ग्रह.

दशान्त, (पु॰) दशायाः अन्तः। बत्तीका अन्त (छोर).

दशार्ण, (पु॰) दश ऋणानि (दुर्गाणि जलानि वा) यत्र। जहां दस किले वा पानी हैं। एक देश। दशार्णा (स्त्री॰).

दशार्ह, (पु॰) यदुवंशका देश। उस देशके मनु॰ च॰.

दशावतार, (पु॰) दश मीनादयोऽवतारा यस्य। मत्स्य आदि जिसके दस अवतार हैं। विष्णु.

दशाश्व, (पु॰) दश अश्वा रथे यस्य। जिसके रथमें दस घोड़े हैं। चन्द्र। चाँद। चंद्रमा.

दशाश्वमेधिक, (पु॰) दश अश्वमेधा यत्र। अश्व+ठञ् (इक)। जहां ब्रह्माने दस अश्वमेध यज्ञ किये हैं। काशीजीमें एक तीर्थविशेष है.

दशाह, (पु॰) दशानां अह्नां समाहारः। द्वि॰-तत्पु॰। दस दिन। "दशाहं सूतकी भवेत्" इति स्मृतिः.

दशेन्धन, (पु॰) दशा वर्तिः एव इन्धनं यस्य। जो बत्तीसे जलती है। प्रदीप। दीया। दीपक। दीवा.

दस्, उत्क्षेप। फेंकना। डसना। दिवा॰ पर॰ सक॰। दस्यति। अदसत्-अदासीत्-अदसीत्.

दस्, दर्शन। देखना। दर्शन-कराना। चुरा॰ उभय॰। सेट्। दंसयति। दंसयते। अददंसत्.

दस्यु, (पु॰) दस्+युच् (अनु आदेश नहीं होता)। दुश्मन। शत्रु। अत्याचारी। चोर। डकैत.

दध, (पु॰) दध् । दद् । गर्दभ । गधा । अश्विनीकुमार (द्वि॰) अश्विनीतारा.

दह्, दाह । जलना । भ्वा॰ पर॰ अनिट् । दहति । अधाक्षीत्.

दहन, (पु॰) दह+ल्यु॰ (अन) । अग्नि । आग । चित्र-कारा । धराव दिन । "मारे मुद" दाह । जलना (न॰)

दहर, (पु॰) दह+अरन् । मूषिक । (मूसा) । धातुद्रव्य-के पिघलानेका पात्र (बर्तन) । सूक्ष्म । बारीक । दिल । हृदयका आकाश । "दहरोऽस्मिन् अन्तराकाश" । इति श्रुतिः.

दहराकाश, (पु॰) कर्म॰ । चिदाकाश । चैतन्यआकाश । हृदयस्थ ईश्वर.

दा, दान देना । जुहो॰ उभ॰ सक॰ सेट् । ददाति-दत्ते । अदात्-अदित.

दा, छेदन । काटना । अदा॰ पर॰ सक॰ अनिट् । दाति । अदात्,

दाक्षायणी, (स्त्री॰) दक्षस्य अपत्यं स्त्री+फिञ् ङीप्॰ ङीप् । अश्विनीआदि तारा । सतीजादी शिवकीरी पत्नी (स्त्री॰).

दाक्षिणात्य, (पु॰) दक्षिणस्यां दिशि भवः । दक्षिण+त्यक् (त्य) । जो दक्षिणदिशामें हो । नारिकेल । नरेल । दक्षिणी.

दाक्षिण्य, (न॰) दक्षिणस्य भाव+ष्यञ् । अनुकूलता । दूस-रेकी इच्छाको पूरा करना । "दक्षिणा अर्हति" यत् (य) । जिसे दक्षिणा देनी चाहिये । ऋत्विज् (पुरोहित).

दाक्षी, (स्त्री॰) दक्षस्य गोत्रापत्यं स्त्री+इञ् ङीप् । पाणिनि मुनिकी माता (स्त्री).

दाक्षीपुत्र, (पु॰) ६ त॰ । व्याकरणके कर्ता पाणिनिमुनि.

दाडि(डि)म, (त्रि॰) दल+इमच् । दाड़ । रोग विशेष । इमन् वा लक्ष । अनारका वृक्ष । "शिवा दीप्" "शिवो शिवीदेवता दाडिमीयवां" श्रीधर्व.

दाण्, दान देना । भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट् (णत्व होता है) । ददाति । अदात्.

दात, (त्रि॰) दो+क्त । छिन्न (कटाहुआ) । "दैवज्ञ" [illegible] (काट गिरायाहुआ).

दात्यूह, (पु॰) दो+क्विप् । दिति (अत्वर्थ) दायी (दि-[illegible]) ष ऊह क्व । दह [illegible] । [illegible] काली एक पक्षी । [illegible] । पपीहा.

दात्र, (न॰) [illegible] (हंसिया) [illegible] (दात्र) । [illegible] (फोड़ा)

दात्र, (न॰) दो [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । देन

दानव, (पु॰) दनोः अपत्यं अण् । दनुके [illegible] । असुर । दैत्य.

दानवारि, (पु॰) ६ त॰ । दैत्य [illegible] विष्णु । कर्म॰ । हाथीके मदका जल (न॰)

दानवीर, (पु॰) दाने वीरः । देनेमें वीर (बहादुर) । [illegible] उदार मनुष्य.

दानशील, (त्रि॰) दानं शीलं सततं अनुष्ठेयं यस्य । देनेके स्वभाववाला । बहुदाता । बहुत देनेवाला

दानशौण्ड, (त्रि॰) दाने शौण्डः दक्षः । देनेमें चतुर । बहुत देनेवाला

दापित, (त्रि॰) दा+णिच्+क्त । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] गया

दामन, (स्त्री॰ न॰) दो+मनिन् । [illegible] (बोझ) के [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] "[illegible]" [illegible]

दामोदर, (पु॰) दाम उदरे यस्य । न॰ । "[illegible] पीछे जाल [illegible] हैं" विष्णु

दाम्भिक, (त्रि॰) [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] (पु॰)

दाय, देना । [illegible] । [illegible] । [illegible]

दाय, (पु॰) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] (कन्या) [illegible] । "[illegible]" [illegible] (दहेज) । "[illegible]" [illegible] (स॰)

दायभाग, (पु॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] (हिस्से) [illegible]

दायाद, (पु॰) [illegible] (हिस्सेदार) [illegible] । [illegible] । पुत्र (बेटा) [illegible] । [illegible]

दार, (पु॰ ब॰) [illegible] । [illegible] (पुरुष) [illegible] । स्त्री (जो)

दारक, (पु॰) [illegible] (बिन्ना) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि॰) । [illegible] (पु॰)

दारकर्म, (पु॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] "[illegible]"

दारु, (न॰) दॄ+उण् । काष्ठ । लकड़ी । पीतल । और देवदारु (दियार) कारीगर । फाड़नेहारा (त्रि॰).

दारुक, (पु॰) कृष्णजीका सारथी (गाड़ी चलानेहारा).

दारुण, (पु॰) दारयति चित्तं । दॄ+णिच्+उनन् । चित्रा रौद्ररस और भयानक रस । डरावना । दुःसह । भीषण । भयका कारण (त्रि॰).

दारुसार, (न॰) दारुषु सारं (श्रेष्ठं) । लकड़ियोंमें बहुत अच्छी लकड़ी । चन्दन.

दारुसिता, (स्त्री॰) दारुमयी सिता (मधुरत्वात्) लकड़ीकी मिश्री (मीठी होनेसे) । दारचीनी । दालचीनी.

दार्वट, (न॰) दारुवत् निश्चलतया अटन्ति यत्र । अट्+क । जहां लकड़ीकी नाईं चुपचाप होकर घूमते हैं । चिन्तागृह । सोचनेका घर । विचार करनेका घर । कचहरी.

दार्वाघाट, (न॰) (पु॰) दारूणि आहन्ति । हन्+अण् वा टान्तादेशः । एक प्रकारका पक्षी (काठठोकरा).

दार्वी, (स्त्री॰) दॄ+उण् गौ॰ ङीप् । दियारकी लकड़ी । हल्दी । गोजिह्वा । दारुहरिद्रा.

दाव, (पु॰) दुनोति (दु+ण) । वन । जंगलकी आग । "भावे घञ्" ताप (गरमी).

दावाग्नि, (पु॰) दावस्य (वनस्य) अग्निः । वनकी आग । "दावानल".

दाविक, (त्रि॰) देविकायां (नद्यां) भवः । देविका नदीमें हुआ.

दाश्-स्, हिंसन मारना । स्वा॰ पर॰ सेट् । दाश्नो-(स्नो)-ति । अदाशी(सी)त्.

दाश्, देना । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । दाशयति-ते । अदिदाशत्-त.

दाश-स, (पु॰) दशति मत्स्यान् । दन्श्+घञ् । नि॰ । जो मच्छियोंको डसता है (पकड़ता है) "दासते मूल्यं अस्मै । दास्+घञ् वा" जिसे मोल दिया जाता है । दास (नौकर) । मच्छिओंपर जीनेवाला धीवर । मच्छी पकड़नेहारा.

दाशरथ, (पु॰) दशरथस्य अयं अण् । जो दशरथका हो । श्रीरामचन्द्र । "अदीप्तो दाशरथाय मैथिली" नाटकं.

दाशरथि, (पु॰) दशरथस्य अपत्यं+अत इञ् । दशरथ-राजाकी सन्तान । श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न.

दाशार्ह (पु॰) दाशं (दानं) अर्हति । अर्ह्+अच् । जो दानके योग्य है । "दशार्हस्य भवः अण् वा" दशार्हदेशमें उत्पन्न । विष्णु । दशार्ह देशमें जन्मा (त्रि॰).

दास्, देना । भ्वा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । दासति-ते । अदासीत्-अदासिष्ट.

दास, (पु॰) दास्+अच् । शूद्र । अपनेसे [...] धीवर । दानके लायक । शूद्रकी उपाधि । "दसते([...] अस्मै अपादि । दास्+घञ्" । जिसे अपने [...] है । भृत्य और सेवक । "स्त्रियां" दासी.

दासेय, (पु॰) दास्या अपत्यं ढक् (एय) । दासी[...] उपजा । दास । "दाशस्य (धीवरस्य) अपत्यं ढक्"([...] धीवरकी सन्तान । व्यासकी माता (स्त्री॰).

दासेर, (पु॰) दास+एरक् । ऊंट । "दास्या अपत्यं [...] (एर) । दासीका बेटा । कन्+स्वार्थे.

दासेरक, (पु॰) मालवा देश । उस देशके लोग [...]

दाह, (पु॰) दह्+घञ् । भस्मीकरण । जलाना । [...] शरीर आदिका तपना.

दाहक, (पु॰) दह्+ण्वुल् (अक) । चित्रा [...] चित्रा । जलानेवाला (त्रि॰) "स्त्रियां" दाहिका.

दिकर, (पु॰) दिक्षु कीर्यतेऽसौ । कॄ+अप् । जो दि[...] फेंकाजाय । तरुण । जवान । युवती (स्त्री॰).

दिक्चक्र, (न॰) दिशां चक्रम् । दिशाओंका समूह । [...] संसार.

दिक्पति, (पु॰) ६ त॰ । दिशाओंका ईश्वर (रक्षिक) "इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैरृतो वरुणो मरुत् । कुबेर[...] पतयः पूर्वादीनामधीश्वराः".

दिगम्बर, (पु॰) दिक् (शून्यं) एव अम्बरं यस्य । [...] जिसका कपड़ा है । शिवजी । एक प्रकारका बौद्ध । [...] शरीरके मात्र जितना जीव माननेहारा । बौद्धोंने [...] नग्न (नंगा) (त्रि॰) कालिका (स्त्री॰) और । "दि[...] कपड़ेकी नाईं ढकनेसे" । तम (अन्धकार-अंधेरा) ([...]

दिग्गज, (पु॰) ६ त॰ । पूर्व आदि दिशाओंमें पृथ्वी[...] पकड़नेके लिये ठहरेहुए ऐरावत आदि हाथी । "ऐरा[...] पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः । पुष्पदन्तः सार्व[...] सुप्रतीकश्च दिग्गजाः".

दिग्ध, (पु॰) दिह्+क्त । विष (जहर) से लिपटा हुआ [...] (तीर) और वह्नि (आग) । "भावे क्त" [...] । स्ने[...] नाईं (तेल) और लेपन (न॰) । "कर्मणि क्त" [...] "लिपटाहुआ" (त्रि॰).

दिङ्नाग, (पु॰) दिशां नागः ष॰ त॰ । दिशाओंके [...] (हाथी) । दिग्गज.

दिग्विजय, (पु॰) दिशां विजयः ष॰ त॰ । दिशाओं[...] विजय (जीत) । संसारका विजय.

दिग्वास, (न॰) दिशो वासो यस्य । एक देव । [...] ६ ब॰ । घोड़ाका (त्रि॰).

दिति-ती, (स्त्री॰) दो+क्ति ङीप् । छिन्न् । दैत्योंकी माता [...] कश्यपकी स्त्री । "भावे क्तिन्-ङीप् नहिं होता" छेद[...]

तिज, (पु०) दितेर्जायते । जन्+ड (अ)। दितिसे उपजा । असुर । दैत्य । "दितिसुत" यही अर्थ.

सा, (स्त्री०) दा+सन्+अद् । देनेकी इच्छा.

सु, (त्रि०) दा+सन्+उ । देनेकी इच्छा करनेवाला.

धिषु(षू), (पु०) दिधिषुं आत्मन इच्छति+क्यच् क्विप् । पु० ■ ह्रस्वः । दूसरी बार विवाही गई स्त्रीका स्वामी । दूसरा खाविंद.

धिषू, (स्त्री०) दिधि धैर्यं स्यति । सो क वा पतम् । जो धीरजको तोड़दे । द्विरूढा । दोवार विवाहीहुई औरत । बड़ी भगिनी (बहिन-बैन) के न होते छोटीका विवाह । "ज्येष्ठायां अनूढायां यस्यां ऊढायां कनिष्ठभगिन्यां च".

धिषूपति, (पु०) ६ त० । भाईके मरजानेपर जो उसकी स्त्रीमें विषयभोगकी इच्छासे किंवा धर्मसे अनुरक्त होता है । दूसरी बार विवाहीगई स्त्रीका पति । विधवाका पति । बड़ीके न विवाहे जानेपर विवाहीगई छोटी बहिनका पति । रंडी (वेश्या) का खसम.

धीर्षा, (स्त्री०) धृ+सन्+अ । धारण करनेकी इच्छा । आश्रय देनेकी इच्छा.

न, (पु०) द्यति तमः । जो अंधेरेको काटता है । सूर्यकी किरणोंसे पहिचाना गया (६०) साठ घड़ी वा आठ पहिरका समय । दिन । रोज.

नकर, (पु०) दिनं करोति स्वोदयेन । कृ+टच् । जो अपने उदयसे दिनको बनाता है । सूर्य । सूरज.

नक्षय, (पु०) जिस दिन तीन तिथियें इकट्ठी आजांय । दिनका नाश.

नपति, (पु०) ६ त० । दिनका पति सूर्य । आकका वृक्ष.

नमणि, (पु०) दिने मणिः इव (प्रकाश करनेसे) दिनके समय मानो मणि चमक रही है । सूर्य । आकका वृक्ष.

नमुखम्, (न०) दिनस्य मुखम् । दिनका मुख । प्रातः-काल । सवेरा.

नयौवनम्, (न०) दिनस्य यौवनम् । दिनकी जवानी । दिनमध्य । दुपहर.

नादि, (पु०) ६ त० । दिनका प्रारम्भ (शुरू) । प्रातः-काल । सवेर । सुबह.

नान्त, (पु०) ६ त० । दिनका अन्त । दिनका अव-सान । सायंकाल । शाम । सांझ.

भू, देरण । चलाना । पुरा० उभ० सक० सेट् । इदित् । दिम्भयती-ते । अदिदिम्भत्-त.

दीप, (पु०) पर्वतमें होनेवाला एक रत्न । रत्नका दिप.

व, क्रीडि । प्रसन्न होना । अक० पर० सक० सेट् । इदित् । दिन्वति । अदिन्वीत्.

द, क्रीडा चाहना-इच्छा स्तुति-व्यवहार-इच्छा-अनु-मोदन-द्युति कान्ति-गतिरोक-चलाना । दिव० पर० सक० (अन्य) सक० सेट् । दीव्यति । अदेवीत् । देविता । द्यूत.

दिव, (स्त्री०) दिव्+डिवि । स्वर्ग (बहिश्त) । आकाश । आस्मान.

दिव, (न०) दिव्+क । स्वर्ग । आकाश । दिन । वन । जंगल.

दिवस, (पु०) दीव्यन्ति अत्र । दीव्+असच् । दिन । रोज.

दिवसमुख, (न०) ६ त० । दिनका मुख (शुरू) । प्रभात । सवेर.

दिवसविगम, (पु०) दिवसस्य विगम-ष० त० । दिनका चला जाना । सायं । सांझ । सूर्यास्त.

दिवस्पति, (पु०) ६ त० । अलुक् समा० (षष्ठी अलोप) स्वर्गका पति । इन्द्र । देवताओंका राजा.

दिवस्पृथिवी, (स्त्री०) द्वि० । दिवश्च पृथिवी च । मि० सुद् । स्वर्ग और पृथिवी । मिलेहुए पृथिवी और स्वर्ग । जमीन-आस्मान.

दिवा, (अव्य०) दिव्+का । दिवस । दिन । रोज.

दिवाकर, (पु०) दिवा करोति । दिन करता है । सूर्य । कौआ । सूरजका फूल.

दिवाकीर्ति, (पु०) दिवैव कीर्तिः क्षुरकर्म यस्य । जिसका काम दिनहीके समयमें है (रातको हजामत्की मनाई है) नापित । नाई । बौआ.

दिवाटन, (पु०) दिवा अटति । दिनके समय घूमता है (रातको अंधा होजाता है) कौआ

दिवातन, (त्रि०) दिवा भव +ट्यु तुट् । दिनभव । दिनमें होनेवाला । दिनका भी

दिवानिशम्, (अव्य०) दिवा च निशा च समाहार । दिन और रात

दिवान्ध, (पु०) दिवा (दिनमें) अन्ध (देख न सकनेसे) जो दिनमें अंधा होता है । उल्लू । "[illegible] प्रतिम वैचित्र्य" यही

दिवाभीत, (पु०) दिवा (दिनमें) भीत । दिनके समय डरपुआ । चोर । चोर । उल्लू । "[illegible]" इति कुमार.

दिवामध्यम्, (न०) दिवा=दिवस मध्यम् । दिनका मध्य । मध्यदिन.

दिवारात्रम्, (अव्य०) दिवा च रात्रिश्च समाहार । दिन और रात

दिवावसानम्, (न०) दिवा=दिवस अवसान । दिनका अन्त (आखिर) सायं । शाम

दिवाशय, (त्रि०) दिवा शेते+अच् । जो दिनमें शयन करता है.

दिविज, (पु०) दिवि जायते (जन्+ड) स्वर्ग उत्पन्न । स्वर्गका । देवता

दिविषद्, (पु०) दिवि सीदति सद्+क्विप् । स्वर्गमें रहने हुए । देवता.

दारु, (न०) दृ+उन् । काष्ठ । लकड़ी । पीतल । और देवदारु (विचार) कारीगर । फाड़नेहारा (त्रि०).

दारुक, (पु०) कृष्णजीका सारथी (गाड़ी चलानेहारा).

दारुण, (पु०) दारयति चित्तं । दृ-स्वार्थे+उनन् । चित्रा रौद्ररस और भयानक रस । डरावना । दुःसह । भीषण । भयका कारण (त्रि०).

दारुसार, (न०) दारुषु सारं (श्रेष्ठं) । लकड़ियोंमें बहुत अच्छी लकड़ी । चन्दन.

दारुसिता, (स्त्री०) दारुमयी सिता (मधुरत्वात्) लकड़ीकी मिश्री (मीठी होनेसे) । दालचीनी । दारचीनी.

दार्घट, (न०) दारुवत् निश्चलतया घटन्ति अत्र । घट्+क । जहां लकड़ीकी नाईं गुपचुप होकर घूमते हैं । चिन्तागृह । सोचनेका घर । विचार करनेका घर । कचहरी.

दार्वाघाट, (न०) (पु०) दारूणि आहन्ति । हन्+अन् वा टान्तादेशः । एक प्रकारका पक्षी (कठफोड़ा).

दार्वी, (स्त्री०) दृ+उण् गौ० ङीष् । दियारकी लकड़ी । हल्दी । गोजिह्वा । दारुहरिद्रा.

दाव, (पु०) दुनोति (दु+ण) । वन । जंगलकी आग । "भावे घञ्" ताप (गरमी).

दावाग्नि, (पु०) दावस्य (वनस्य) अग्निः । वनकी आग । " दावानल ".

दाविक, (त्रि०) देविकायां (नद्यां) भवः । देविका नदीमें हुआ.

दाश्-ऋ, हिंसन मारना । स्वा० पर० सेट् । दाश्नो(श्नो)-ति । अदाशी(सी)त्.

दाश्, देना । चुरा० उभ० सक० सेट् । दाशयति-ते । अदि-दाशत्-त.

दाश-स, (पु०) दशति मत्स्यान् । दन्श्+घञ् । नि० । जो मच्छिओंको डसता है (पकड़ता है) "दाश्यते मूल्ये धर्मे । दाश्+घञ् वा" जिसे मोल दिया जाताहै । दास (नौकर) । मच्छिओंपर जीनेवाला धीवर । मच्छी पकड़नेहारा.

दाशरथ, (पु०) दशरथस्य अयं अण् । जो दशरथका हो । श्रीरामचन्द्र । "प्रहीयतां दाशरथाय मैथिली". नाटकं.

दाशरथि, (पु०) दशरथस्य अपत्यं+अत इञ् । दशरथ-राजाकी सन्तान । श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न.

दाशार्ह (पु०) दाशं (दानं) अर्हति । अर्ह+अण् । जो दानके योग्य है । "दशार्हवंशे भवः अण् वा" दशार्ह-वंशमें उपजा । विष्णु । दशार्ह देशमें जन्मा (त्रि०).

दास्, देना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । दासति-ते । अदासीत्-अदासिष्ट.

दास, (पु०) दास्+अच् । शूद्र । अपनेसे … धीवर । दानके लायक । मजूरी करनेवाला । "दासृ … धर्मे अनादि । दास्+घञ् " । जिसे कर्मके लिये … है । शूद्र और गोंड़ । " स्त्रियां " दासी.

दासेय, (पु०) दास्या अपत्यं ढक् (एय) । दासीसे उपजा । दास । "दासाय (धीवराय) भवं ढक्"(… धीवरकी सन्तान । मल्लाही मत्स्य (स्त्री०).

दासेर, (पु०) दास+ढ्रक् । ऊंट । "दास्या अपत्यं … (एर) । दासीका बेटा । पूर्वोक्तार्थ.

दासेरक, (पु०) ऊंटका बेटा । ऊंट देशके लोग …

दाह, (पु०) दह+घञ् । भस्मीकरण । जलना । घर … शरीर आदिका जलना.

दाहक, (पु०) दह्+ण्वुल् (अक) । चित्रा … चित्रा । जलानेवाला (त्रि०) " स्त्रियां " टाप्.

दिक्कर, (पु०) दिशु करोतिनां । कृ+अच् । जो दिशाओं … फैलजाय । तरुण । जवान । युवती (स्त्री०).

दिक्चक्र, (न०) दिशां चक्रम् । दिशाओंका समूह । … संसार.

दिक्पति, (पु०) ६ त० । दिशाओंका ईश्वर (मालिक) " इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् । कुबेर ईश पतयः पूर्वादीनामधीश्वराः ".

दिगम्बर, (पु०) दिक् (शून्यं) एव अम्बरं यस्य । … जिसका कपड़ा है । शिवजी । एक प्रकारका बौद्ध । … शरीरके साथ जिनका जीव माननेहारा । बौद्धोंमें … नग्न (नंगा) (त्रि०) कालिका (स्त्री०) ङीप् । "दिक् कपड़ेकी नाईं ढाकनेसे" । तमः (अन्धकार-अंधेरा) (…

दिग्गज, (पु०) ६ त० । पूर्व आदि दिशाओंमें पृथ्वीको पकड़नेके लिये ठहरेहुए ऐरावत आदि हाथी । "ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः । पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ".

दिग्ध, (पु०) दिह्+क्त । विष (जहर)से लिपटाहुआ … (तीर) और वह्नि (आग) । " भावे क्त " लेह । … नाईं (तेल) और लेपन (न०) । "कर्मणि क्त" … "लिपटाहुआ" (त्रि०).

दिङ्नाग, (पु०) दिशां नागः ष० त० । दिशाओंका … (हाथी) । दिग्गज.

दिग्विजय, (पु०) दिशां विजयः ष० त० । दिशाओंके विजय (जीत) । संसारका विजय.

दिङ्मात्र, (न०) दिशो मात्रा अंशः । एक देश । … ६ त० । थोड़ासा (त्रि०).

दिति-ती, (स्त्री०) दो+क्ति ङीप् । क्लिन् । दैत्योंकी माता कश्यपकी स्त्री । " भावे क्लिन्-ङीप् नहिं होता " …

ज, (पु०) दितेर्जायते । जन्+ड (अ)। दितिके पजा । असुर । दैत्य । "दितिसुत" यही अर्थ.

सा, (स्त्री०) दा+सन्+अट् । देनेकी इच्छा.

सु, (त्रि०) दा+सन्+उ । देनेकी इच्छा करनेवाला.

धिषु(षू), (पु०) दिधिषुं आत्मन इच्छति+क्यच् क्विप् । ० वा ह्रस्वः । दूसरी बार विवाही गई स्त्रीका स्वामी । सरा खाविंद.

धिषू, (स्त्री०) दिधिं धैर्यं स्यति । सो ऊ वा षत्वम् । जो धीरजको तोडदे । द्विरूढा । दोबार विवाहीहुई औरत । ी भगिनी (बहिन-भैन) के न होते छोटीका विवाह । ज्येष्ठायां अनूढायां सत्यां ऊढायां कनिष्ठभगिन्यां च".

धिषूपति, (पु०) ६ त० । भाईके मरजानेपर जो सकी स्त्रीमें विषयभोगकी इच्छासे किंवा धर्मसे अनुरक्त होता है । दूसरी बार विवाहीगई स्त्रीका पति । विधवाका ति । बडीके न विवाहे जानेपर विवाहीगई छोटी बहिनका ति । दैवी (देवा) का खसम.

ीर्षा, (स्त्री०) धृ+सन्+अ । धारण करनेकी इच्छा । आश्रय देनेकी इच्छा.

न, (पु०) द्यति तमः । जो अंधेरेको काटता है । सूर्यकी किरणोंसे पहिचाना गया (६०) साठ घडी का चार पहिरका समय । दिन । रोज.

कर, (पु०) दिनं करोति स्वोदयेन । कृ+टच् । जो अपने उदयसे दिनको बनाता है । सूर्य । सूरज.

क्षय, (पु०) जिस दिन तीन तिथियें हमको आजाय । दिनका नाश.

पति, (पु०) ६ त० । दिनका पति सूर्य । आकका वृक्ष.

मणि, (पु०) दिने मणिः इव (प्रकाश करनेसे) दिनके समय मानो मणि चमक रही है । सूर्य । आकका वृक्ष.

मुखम्, (न०) दिनस्य मुखम् । दिनका मुख । प्रातःकाल । सबेरा.

यौवनम्, (न०) दिनस्य यौवनम् । दिनकी जवानी । दिनमध्य । दुपहिर.

ादि, (पु०) ६ त० । दिनका प्रारम्भ (शुरू) । प्रातःकाल । सबेर । सुबह.

ान्त, (पु०) ६ त० । दिनका अन्त । दिवसका अवसान । सायंकाल । शाम । सांझ.

्, प्रेरण । चलाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । इदित् । दिम्भयति-ते । अदिदिम्भत्-त.

ीप, (पु०) सूर्यवंशमें होनेवाला एक राजा । रघुका पिता.

्, प्रीति । प्रसन्न होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । दिन्वति । अदिन्वीत.

्, जीत चाहना-शर्त लगाना-व्यवहार-इच्छा-क्रीडा-खेलना-स्तुति करना-खुशहोना-चमकना । दिवा० पर० अक० (और) सक० सेट् । दीव्यति । अदेवीत् । देविता । द्यूता.

पद० १२

दिव्, (स्त्री०) दिव्+दिवि । स्वर्ग (बहिश्त) । आकाश । आस्मान.

दिव, (न०) दिव्+क । स्वर्ग । आकाश । दिन । वन । जंगल.

दिवस, (पु०) दीव्यन्ति अत्र । दीव्+असच् । दिन । रोज.

दिवसमुख, (न०) ६ त० । दिनका मुख (शुरू) । प्रभात । सवेर.

दिवसविगम, (पु०) दिवसस्य विगमः-ष० त० । दिनका चला जाना । सायं । सांझ । सूर्यास्त.

दिवस्पति, (पु०) ६ त० । अलुक् समा० (सका आगम) स्वर्गका पति । इन्द्र । देवताओंका राजा.

दिवस्पृथिवी, (स्त्री०) द्वि० । दिवस् च पृथिवी च । नि० सुट् । स्वर्ग और पृथिवी । मिलेहुए पृथिवी और स्वर्ग । जमीन-आस्मान.

दिवा, (अव्य०) दिव-का । दिवस । दिन । रोज.

दिवाकर, (पु०) दिवा करोति । दिन करता है । सूर्य । कौआ । सूरजका फूल.

दिवाकीर्ति, (पु०) दिवैव कीर्तिः कृत्यं यस्य । जिसका काम दिनहीके समयमें है (रातको हजामतका करना मने है) नापित । नाई । नौआ.

दिवाटन, (पु०) दिवा अटति । दिनके समय घूमता है (रातको अंधा होजाता है) कौआ.

दिवातन, (त्रि०) दिवा भव+ट्यु-तुट् । दिवाभव । दिनमें होनेवाला । स्त्रियां ङीप्.

दिवानिशम्, (अव्य०) दिवा च निशा च तयोः समाहारः । दिन और रात.

दिवान्ध, (पु०) दिवा (दिने) अन्धः (देख न सकनेसे) जो दिनमें अंधा होता है । उलू आदि । "दिवान्धाः प्राणिनः केचित्" चण्डी.

दिवाभीत, (पु०) दिवा (दिवसे) भीतः । दिनके समय डराहुआ । चोर । चांद । उलू । "दिवाभीतमिवान्धकारम्" इति कुमार०.

दिवामध्यम्, (न०) दिवा=दिनस्य मध्यम् । दिनका मध्य । मध्यदिन.

दिवारात्रम्, (अव्य०) दिवा च रात्रिश्च तयोः समाहारः । दिन और रात.

दिवावसानम्, (न०) दिवा=दिवस्य अवसानं । दिनका अन्त (आखिर) सायं । सांझ.

दिवास्वाप, (त्रि०) दिवा स्वपि+णी+अ । जो दिनके समय सोता है.

दिविज, (पु०) दिवि जायते (जन्+ड) अलुक् समा० । स्वर्गका । दिविभव.

दिविषद्, (पु०) दिवि सीदति क्विप्-षत्वम् । स्वर्गमें रहनेवाला । देवता.

दारु, (न०) दृ+उण्। काठ। लकडी। पीतल। और देवदारु (दियार) कारीगर। फाडनेहारा (त्रि०).

दारुक, (पु०) कृष्णजीका सारथी (गाडी चलानेहारा).

दारुण, (पु०) दारयति चित्तं। दृ-डराना+उनन्। चित्रा रौद्ररस और भयानक रस। डरावना। दुःसह। भीषण। भयका कारण (त्रि०).

दारुसार, (न०) दारुषु सारं (श्रेष्ठं)। लकडियोंमें बहुत अच्छी लकडी। चन्दन.

दारुसिता, (स्त्री०) दारुमयी सिता (मधुरत्वात्) लकडीकी मिसरी (मीठी होनेसे)। दालचीनी। दालचीनी.

दार्वट, (न०) दारवस्तु निश्चलतया अटन्ति अत्र। अट्+क। जहां लकडीकी नाईं चुपचाप होकर घूमते हैं। चिन्तागृह। सोचनेका घर। विचार करनेका घर। कचहरी.

दार्वाघाट, (न०) (पु०) दारूणि आहन्ति। हन्+अण् वा टान्तादेशः। एक प्रकारका पक्षी (कठफोरा).

दार्वी, (स्त्री०) दॄ+वुण् गौ० ङीप्। दियारकी लकडी। हल्दी। गोजिह्वा। दारुहरिद्रा.

दाव, (पु०) दुनोति (दु+ण)। वन। जंगलकी आग। "भावे घञ्" ताप (गरमी).

दावाग्नि, (पु०) दावस्य (वनस्य) अग्निः। वनकी आग। "दावानल".

दाविक, (त्रि०) देविकायां (नद्यां) भवः। देविका नदीमें हुआ.

दाश्-स्, हिंसन मारना। स्वा० पर० सेट्। दाश्नो-(ष्णो)-ति। अदाशी(सी)त्.

दाश्, देना। चुरा० उभ० सक० सेट्। दाशयति-ते। अदिदाशत्-त.

दाश-स, (पु०) दशति मत्स्यान्। दन्श्+अच्। नि०। जो मच्छिओंको डसता है (पकडता है) "दाश्यते मूल्यं अस्मै। दाश्+घञ् वा" जिसे मोल दिया जाताहै। दास (नौकर)। मच्छिओंपर जीनेवाला धीवर। मच्छी पकडनेहारा.

दाशरथ, (पु०) दशरथस्य अयं अण्। जो दशरथका हो। श्रीरामचन्द्र। "प्रीयतां दाशरथाय मैथिली" नाटक.

दाशरथि, (पु०) दशरथस्य अपत्यं+अत इञ्। दशरथराजाकी सन्तान। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न.

दाशार्ह (पु०) दाशं (दानं) अर्हति। अर्ह+अण्। जो दानके योग्य है। "दशार्हवंशे भवः अण् वा" दशार्हवंशमें उपजा। विष्णु। दशार्ह देशमें जन्मा (त्रि०).

दास्, देना। भ्वा० उभ० सक० सेट्। दासति-ते। अदासीत्-अदासिष्ट.

दास, (पु०) दास+अच्। शूद्र। जिनसे दान (दिया) जाता है धीवर। दानके लायक। शूद्रकी उपाधि। "शर्मान्तं ब्राह्मणस्य... धर्मो अस्यादि। दास+घञ्"। [illegible] है। शूद्र और सेवक। "स्त्रियां" ङीप्.

दासेय, (पु०) दास्या अपत्यं ढक् (एय)। दासीसे उपजा। दास। "दासस्य (धीवरस्य) अपत्यं स्त्री" धीवरकी सन्तान। व्यासकी माता (स्त्री०).

दासेर, (पु०) दास+एरक्। ऊंट। "दास्या अपत्यं" (एर)। दासीका बेटा। कन्यार्थे.

दासेरक, (पु०) मालवा देश। उस देशके लोग पु०

दाह, (पु०) दह्+घञ्। भस्मीकरण। जलाना। रोग ... शरीर आदिका तपना.

दाहक, (पु०) दह्+ण्वुल् (अक)। चित्रा वृक्ष। चित्रा। जलानेवाला (त्रि०) "स्त्रियां" दाहिका.

दिकर, (पु०) दिशं करोति। कृ+अच्। जो दिशा फैलजाय। तरुण। जवान। युवती (स्त्री०).

दिक्चक्र, (न०) दिशां चक्रम्। दिशाओंका समूह। संसार.

दिक्पति, (पु०) ६ त०। दिशाओंका ईश्वर (मालिक) "इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत्। कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्".

दिगम्बर, (पु०) दिक् (सर्वं) एव अम्बरं वस्त्रं जिसका कपडा है। शिवजी। एक प्रकारका बौद्ध। ... शरीरके माप जितना ... बौद्धोंमें एक नग्न (नंगा) (त्रि०) कालिका (स्त्री०) ङीप्। "दिगम्बर करनेकी नाईं ढांकनेसे"। तमः (अन्धकार-अंधेरा) (न०).

दिग्गज, (पु०) ६ त०। पूर्व आदि दिशाओंमें पृथ्वीके पकडनेके लिये ठहरेहुए ऐरावत आदि हाथी। "ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः। पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः".

दिग्ध, (पु०) दिह्+क्त। विष (जहर) से लिपटाहुआ शर (तीर) और वह्नि (आग)। "भावे क्त" स्नेह। चिकनाई (तेल) और लेपन (न०)। "कर्मणि क्त" लिपटाहुआ (त्रि०).

दिङ्नाग, (पु०) दिशां नागः ष० त०। दिशाओंका नाग (हाथी)। दिग्गज.

दिग्विजय, (पु०) दिशां विजयः ष० त०। दिशाओंके विजय (जीत)। संसारका विजय.

दिङ्मात्र, (न०) दिशो मात्रा अंशः। एक देश। ... ६ व०। थोडासा (त्रि०).

दिति-ती, (स्त्री०) दो+क्ति ङीप्। दित्। दैत्योंकी मा। कश्यपकी स्त्री। "भावे क्तिन्-ङीप् नहिं होता" छेदन

॰) दिवेर्द्यति । दम्+ड (अ) । दितिके पुर । दैत्य । "दितिसुत" यही अर्थ.
॰) दा+सन्+अङ् । देनेकी इच्छा.
) दा+सन्+उ । देनेकी इच्छा करनेवाला.
(पु॰) दिधिषुं आत्मन इच्छति+क्यच् क्विप् । [illegible] । दूसरी बार विवाही गई स्त्रीका स्वामी । [illegible]
स्त्री॰) दिधि धैर्यं स्यति । सो क वा धन्यप् । जो [illegible] दोबारा विवाहीहुई स्त्री । (बड़ीन-ऐन) के न होने छोटीका विवाह । [illegible] कदापी [illegible]".
(पु॰) ६ त॰ । भाईके मरजानेपर जो [illegible] विषयभोगकी इच्छासे विना धर्मसे अनुराग [illegible] दूसरी बार विवाहीगई स्त्रीका पति । विधवा [illegible] के न विवाहे जानेपर विवाहीगई छोटी बहिन (वेदा) का स्वामी.
स्त्री॰) दृस्+सन्+अ । धारण करनेकी इच्छा । [illegible] की इच्छा.
। [illegible] जो अंधेरेको काटता है । सूर्यकी [illegible] (६॰) [illegible] पक्षी का [illegible] । दिन । रोज.
पु॰) दिवं करोति [illegible] । जो [illegible] दिनको बनाता है । सूर्य । [illegible].
पु॰) दिन दिन तीन तिथियें इसकी [illegible] ।
पु॰) ६ त॰ । दिनका पति सूर्य । [illegible]
पु॰) दिवे मणि इव (प्रकाश करनेसे) दिनके [illegible] मणि [illegible] है । सूर्य । [illegible]
(न॰) दिनस्य मुखम् । दिनका मुख । प्रभात । [illegible].
(न॰) दिनस्य यौवनम् । दिनकी [illegible] । दुपहर.
पु॰) ६ त॰ । दिनका प्रारम्भ (मुख) । प्रभात । सबेर.
पु॰) ६ त॰ । दिनका अन्त । दिनका अन्त । [illegible] । सन्ध्या । शाम
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] १४

दिव्, (स्त्री॰) [illegible] । स्वर्ग ([illegible]) । [illegible] । आस्मान.
दिव, (न॰) दिव्+क । स्वर्ग । [illegible] । दिन । वन । [illegible].
दिवस, (पु॰) [illegible] । दिन । रोज.
दिवसमुख, (न॰) ६ त॰ । दिनका मुख (मुख) । प्रभात । सबेर
दिवसविगम, (पु॰) [illegible] । दिनका चला जाना । [illegible] । सांझ । [illegible]
दिवस्पति, (पु॰) ६ त॰ । [illegible] ([illegible]) [illegible] पति । इन्द्र । [illegible]
दिवस्पृथिवी, (स्त्री॰) द्व॰ । [illegible] । स्वर्ग और पृथिवी । [illegible] पृथिवी और [illegible] । [illegible] आस्मान
दिवा, (अव्य॰) [illegible] । दिन । [illegible]
दिवाकर, (पु॰) [illegible] । सूर्य । [illegible] । [illegible]
दिवाकीर्ति, (पु॰) [illegible] ([illegible]) [illegible]
दिवाटन, (पु॰) [illegible] ([illegible]) [illegible]
दिवातन, (त्रि॰) [illegible] । [illegible]
दिवानिश, (अव्य॰) दिन व [illegible] । दिन और रात
दिवान्ध, (पु॰) [illegible] ([illegible]) [illegible]
दिवाभीत, (पु॰) [illegible] ([illegible]) [illegible]
दिवामध्य, (न॰) [illegible]
दिवारात्रम्, (अव्य॰) दिन व [illegible] । दिन और रात
दिवावसान, (न॰) [illegible]
दिवास्वप्न, (त्रि॰) [illegible]
दिविष्ठ, (पु॰) [illegible]
दिविषद्, (पु॰) [illegible]

दिवो(वौ)कस्—स, (पु०) दिवि-दिवं वा ओकम् यस्य प० अकारान्त भी होता है । देवता (जिसका स्वर्गमें स्थान है) । "तारकेण दिवौकसः" इति कुमारः.

दिवोदास, (पु०) चंद्रवंशमें काशीनगरीका एक राजा.

दिव्य, (न०) दिवि भवं यत् । लौंग । चंदन । शपथ (क-सम-सी) । गुग्गल । स्वर्गकी चीज । एक प्रकारका नायक (पु०) "दीव्यते अनेन-दिव्+क्यप्" । मनोहर । सुन्दर । अजीब । चमकीला (त्रि०).

दिव्यगन्ध, (पु०) दिव्यो मनोहरो गन्धोऽस्य । जिसका मनोहर गंध है । गंधक । लौंग (न०) । छोटी इलायची (स्त्री०) । कर्म० उत्तम गंध (पु०).

दिव्यगायन, (न०) कर्म० । अजीब गानेहारा । गंधर्व (देवताओंका गवैया).

दिव्यचक्षुस्, (पु०) दिव्यं चक्षुः यस्य । जिसकी अजीब आँख हो । जिसके सुन्दर नेत्र हों । जो ज्ञानकी आँख रखता है । अंधा.

दिव्यज्ञान, (न०) दिव्यं ज्ञानं क० स० । विचित्र (स्वर्गीय वा हैरान करनेवाला) ज्ञान (समझ) । आश्चर्यज्ञान.

दिव्यतेजस्, (स्त्री०) दिव्यं तेजो यस्याः । जिसका आश्चर्य तेज हो । ब्राह्मी लता । एक प्रकारकी बेल.

दिव्यदृश्, (पु०) दिव्यं पश्यति उप० स० । आश्चर्य रूपसे देखनेवाला । ज्योतिषी.

दिव्यदोहद, (न०) अभीष्टसिद्धि (चाहीगई चीजकी कामयाबी) के लिये जो पदार्थ देवताओंको दिया जाता है.

दिव्यप्रश्न, (पु०) दिव्यः प्रश्नः । स्वर्गीय (आश्चर्यजनक) बातोंका पूछना । भावी घटनाओंका पूछना.

दिव्यमान, (न०) दिव्यं मानं क० स० । आश्चर्य माप । देवताओंके वर्ष और दिनके अनुसार समयका परिमाण.

दिव्यरथ, (पु०) दिव्यः रथः । स्वर्गकी गाड़ी । आकाशमें चलती है.

दिव्यवस्त्र, (त्रि०) दिव्यानि वस्त्राणि यस्य ब० स० । जिसके दिव्य वस्त्र हैं । स्वर्गके पोशाकवाला ।—स्त्रः (पु०) धूप.

दिव्याङ्गना, (स्त्री०) दिव्या अङ्गना । कर्म० स० । स्वर्गकी अप्सरा । अत्यन्त सुन्दरी नारी.

दिव्यादिव्य, (त्रि०) दिव्यश्च अदिव्यश्च । दिव्य (स्वर्गीय) अदिव्य (मनुष्यीय) । आधा मनुष्य और आधा देवता.

दिव्यांशु, (पु०) दिव्याः अंशवः यस्य ब० स० । स्वर्गकी चमकीली किरणोंवाला । सूर्य.

दिव्योदक, (न०) दिव्यं उदकं । स्वर्गका जल । बर्फ (वर्षा) का पानी.

दिव्यौषधि, (स्त्री०) कर्म० । मन शिला । [illegible] । [illegible] [illegible].

दिश्, [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

दिश्, शा, (स्त्री०) दिश्+क्विप् । आशा (दिशा) ।

दिशा, (स्त्री०) दिश्+अङ् । ओर.

दिशोभाज, (पु०) दिशः भजति भज्+ण्वि । भागनेवाला । कांदिशीक । चपल.

दिश्य, (त्रि०) दिशि भवं [illegible] होनेवाला । दिशाओंसे लायागया । जो कुछ दिशामें.

दिष्ट, (न०) दिश्+क्त । भाग्य । किस्मत । काल (पु०) । उपदेश कियागया (त्रि०)

दिष्टान्त, (पु०) दिष्टस्य (भाग्यस्य) अन्तः । अन्त । मरण । मौत.

दिष्टि, (स्त्री०) दिश्+भावे क्तिन् । [illegible] वा । भाग्य । अपना भाग । किस्मत । भावी । अच्छा भाग्य । कोई मंगलदायक.

दिष्ट्या, (अव्य०) मङ्गल । हर्ष । भाग्यसे । मैं बहुत प्र

दिह्, लेपन । लीपना । चंदन आदि लगाना । अ० उ० सक० अनिट् । देग्धि-दिग्धे । अदिक्षत्-अदिक्षत । अ

दी, क्षय । घटना । नाशहोना । दि० आ० अ० अनिट् । यते । अदास्त । दिग्ये । दीनः.

दीक्ष्, मुंडवाना । यज्ञोपवीत करना । नियम वा व्रतो करना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । दीक्षते । अदी

दीक्षा, (स्त्री०) दीक्ष्+अ । नियम । संस्कार "नि निरवर्तमध्वरः" इति रघुः । अभीष्ट देनेहारा मन्त्र (तन्त्रमें) । मन्त्रका उपदेश और यज्ञ । देवी.

दीक्षागुरु, (पु०) मन्त्रआदिका उपदेश करनेहार उपदेशका दाता.

दीक्षान्त, (पु०) दीक्षायाः (प्रधानयागस्य) अन्तः मागको यागभेदः) । अवभृथनाम यागभेद । जो अन्तमें जो उसका अपहर दोष मत किया जाता है

दीक्षित, (त्रि०) दीक्ष्+क्त । सोमयाग आदिमें रके नियम लिया गया । "दीक्षा जाता अस्य" गये तन्त्रके अनुसार दीक्षा (मन्त्रका उपदेश)

दीदिवि, (पु०) दिव्+क्विन् -अभ्यास और दीर्घ । (देवताओंका गुरु) । अन्न (पु० न०) । (दादुआ) (त्रि०) । [illegible] (पु० न०).

दीधिति, (स्त्री०) दीधि+क्तिन् [illegible] किरण । उजाला.

दीन, (त्रि०) दी+क्त तस्य न । दुःखित । [illegible] (डरपुआ) । तगरका फूल (न०).

दीनार, (पु०) दी+आरक् नुट् । सोनेका भूषण (जेवर) । मोहर । [illegible] [illegible] [illegible]

दीप्, दीप्ति । चमकना । दिवा० आत्म० अक० से० । दीप्यते । अदीपि अदीपिष्ट । दीप्तः.

दीप, (पु०) दीप+क । प्रदीप । दीया । दिया । जो किसी प्रकारका दीप.

दीपक, (पु०) दीप्+स्वार्थे कन्। दिया। बाज पक्षी। एक प्रकारका राग। केसर। एकप्रकारका अर्थालंकार (न०)। कुशल। कामको प्रकाश करनेहारा (त्रि०) "स्त्रियां टाप्-अतो इ"। एक ग्रंथका नाम.

दीपन, (पु०) दीपयति भक्षणात् जठराग्निं उत्तेजयति। दीप्+णिच्+ल्यु (अन)। जो खानेसे पेटकी आगको भड़कानाहै। तगरकी जड़। पलाण्डु (प्याज)। केसर। और खांसीको दूर करनेहारे। चमकानेवाला (त्रि०)। मेथी (स्त्री०).

दीपनीय, (त्रि०) दीप्+अनीय। प्रकाश करनेयोग्य। जगानेलायक.

दीपमालिका, (स्त्री०) दीपानां माला यस्यां+कप् अतो इ होती है। जिसमें दीपोंकी कतार हो। दीपोंवाली अवस्था। दीवाली। ६ त०। दीपोंका समूह.

दीपित, (त्रि०) दीप्+क्त। अग्निमें जलाया गया। प्रकाश किया गया। तेज किया गया.

दीपिन्, (त्रि०) दीप्+णिनि। प्रकाश करनेवाला। जगानेवाला। चमकनेवाला। रोशन करनेवाला.

दीप्त, (पु०) दीप्+क्त। नींबू और सिंह (शेर)। सोना और हींग (न०) जलाहुआ। सताहुआ। चमकाहुआ। चमकीला (त्रि०).

दीप्तजिह्वा, (स्त्री०) दीप्ता ज्वलन्ती जिह्वा यस्याः। जिसकी जीभ जलरही है। उल्कामुखी (मुआतीमुर्द)। एक प्रकारकी गीदड़ी। (इसकी जीभ रातको जलती है यह प्रसिद्ध है).

दीप्तमूर्ति, (पु०) दीप्ता मूर्तिः यस्य। चमकरही मूर्तिवाला। सूर्य वा विष्णु.

दीप्तलोचन, (पु०) दीप्ते लोचने यस्य। चमकदार आंखोंवाला। बिल्ला। बिडाल। बिल्ली.

दीप्ताग्नि, (पु०) दीप्तः अग्नि जठरानलो यस्य। जिसकी पेटकी आग चमक रही है। अगस्त्यमुनि। तेज पेटकी आगवाला (त्रि०).

दीप्ति, (स्त्री०) दीप्+क्तिन् (ति)। कान्ति। बहुत बढ़ाई सुन्दरता। स्त्रियोंका एक प्रकारका गुण। चमक। अलक.

दीप्तिमत्, (त्रि०) दीप्ति+मतुप्। प्रकाशवाला। चमकदार.

दीप्य, (त्रि०) दीप्+यत्। प्रकाश करनेलायक। जगानेलायक.

दीर्घ, (पु०) दॄ+घञ् (द्राघीयस्-द्राघिष्ठ)। लता। शालका वृक्ष। ऊंट। दो मात्राका अक्षर जैसे "आ"। लंबा (आयत) (त्रि०).

दीर्घकण्ठ, (पु०) दीर्घः कण्ठो यस्य। जिसका लंबा गला हो। बक। बगुला। लंबे गलेवाला (त्रि०).

दीर्घग्रन्थि, (पु०) दीर्घो ग्रन्थिः पर्वे यस्य। जिसकी गांठ लंबी हो। गजपिप्पली.

दीर्घग्रीव, (पु०) दीर्घा ग्रीवा यस्य। लंबी गर्दनवाला ऊंट.

दीर्घच्छद, (पु०) दीर्घाः छदा यस्य। जिसके लंबे पत्ते हों। इक्षु। गन्ना.

दीर्घजङ्घ, (पु०) दीर्घा जङ्घा यस्य। जिसकी लंबी लातें हों। ऊंट। बगुला.

दीर्घजिह्व, (पु०) दीर्घा जिह्वा यस्य। जिसकी लंबी जीभ है। सर्प। सांप.

दीर्घतपस्, (पु०) दीर्घं तपः यस्य। लंबे तपवाला। अहल्याका पति गोतमऋषि.

दीर्घदर्शिन्, (पु०) दीर्घात् पश्यति। दृश्+णिनि। दूरसे देखनेहारा। दूरदर्शी। पण्डित और गिद्ध (भालूक)। आनेवाले कामको जानेहारा। दूरसे देखनेवाला (त्रि०).

दीर्घदृष्टि, (पु०) दीर्घा दृष्टिः यस्य। जिसकी लंबी नजर हो। पण्डित। दीर्घा दूरगा दृष्टिः यया। ३ ब०। दूर जाती है नजर जिससे। दूरबीक्षण। दूरबीन। एकप्रकारकी कला.

दीर्घनाद, (पु०) दीर्घो नादः यस्य। (दूर जानेसे) जिसकी लंबी आवाज हो। शंख (इसका शब्द दूर जाता है).

दीर्घनिद्रा, (स्त्री०) कर्म०। लंबी नींद। मृत्यु (मौत)। बहुत देरकी नींद.

दीर्घपल्लव, (पु०) दीर्घः पल्लवः यस्य। जिसका लंबा पत्ता हो। सनका वृक्ष। "कर्म०" लंबा पत्ता (पु० न०)। लंबे पत्तेवाला (त्रि०).

दीर्घपादप, (पु०) कर्म०। लंबा वृक्ष। ताड़का दरख्त। सुपारीका वृक्ष.

दीर्घपृष्ठ, (पु०) दीर्घं पृष्ठं यस्य। जिसकी लंबी पीठ हो। सर्प। सांप.

दीर्घरागा, (स्त्री०) दीर्घो (बहुकालस्थायी) रागो (रङ्ग) यस्याः। जिसका रंग बहुत देरतक रहता है। हरिद्रा। हल्दी। बड़ा पियार करनेवाली औरत.

दीर्घराव, (न०) कर्म०। लंबीरात। ७ ब०। बहुत रातवाला। देरतक.

दीर्घवक्त्र, (पु०) दीर्घं वक्त्रं यस्य। लंबे मुखवाला। हाथी.

दीर्घसत्र, (न०) कर्म०। बहुत कालमें होनेहारा एक प्रकारका यज्ञ। ६ ब०। उस यज्ञको करनेहारा (त्रि०) "हविषे दीर्घसत्रस्य सा चेदानीं प्रचेतसः" इति रघु.

दीर्घसूत्र, (त्रि०) दीर्घेण (बहुकालेन) सूत्रं (कर्तव्यकर्म) यस्य। जिसका बहुतसा काम देरसे होता है। प्रारम्भ किये कामको देरसे समाप्त करनेहारा। स्त्रियां "कर्म" लंबी तान (न०)

दीर्घायुष्य, (पु०) दीर्घं आयुष्यं यस्य। जिसकी लंबी उमर [illegible]। मार्कण्डेय.

दीर्घायुस्, (पु०) दीर्घं आयु (जीवनकाल) यस्य। जिसका जीनेका समय लंबा है। कौआ। सिंवलका पेड़.

दीर्घिका, (स्त्री०) दीर्घा एव। जिसकी फैलावट लंबी हो। एक प्रकारका जलका स्थान। बावली.

दीर्ण, (त्रि०) दृ+क्त। विदारित। फाड़ागया। डराहुआ। "भावे क्त" फाड़ना। डरना (न०).

दु, उपतापन। दुःख देना। तपाना। स्वा० पर० सक० सेट्। दुनोति। अदावीत्-अदौषीत्। दूनः। दवथुः.

दुःख, दुःख करना। चुरा० उभ० सक० सेट्। दुःखयति-ते.

दुःख, (न०) दुःख+अच् घञ् वा। जो अपनेको अच्छा न लगे। चित्तका धर्म। (न्यायमतमें) आत्माका धर्म। पीड़ा। तकलीफ और कष्ट। दुःख देनेवाला पदार्थ और दुःखवाला (त्रि०).

दुःखत्रय, (न०) ६ त०, तीन दुःख (आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधिदैविक).

दुःखलोक, (पु०) दुःखकरः लोकः। दुःख देनेहारा लोक। सांसारिक जीवन। निरा दुःखका दृश्य संसार.

दुःखशील, (त्रि०) दुःखकरं शीलं यस्य। जिसका स्वभाव दुःखदायी है। कठिनतासे प्रसन्न किया जानेवाला। बुरे स्वभाववाला। जिसका वशमें आना कठिन है.

दुःखसागर, (पु०) दुःखस्य सागरः। दुःखका समुद्र। सांसारिकजीवन.

दुःखातीत, (त्रि०) दुःखात् अतीतः। दुःखसे अतिक्रमण कर गया। निर्दुःख। दुःखरहित.

दुःखार्त, (त्रि०) दुःखेन आर्तः। दुःखसे पीड़ित। दुःखी.

दुःखित, (त्रि०) दुःख+इतच्। दुःखी हुआ। पीड़ित हुआ। निर्धन। अभागा। सं० न०। कष्ट.

दुकूल, (न०) दु+ऊलच्-कुक् च। पु०। क्षौमाम्बर। रेशमी कपड़ा। चिकना कपड़ा। महीन कपड़ा। दुपट्टा.

दुग्ध, (न०) दुह्+क्त। दूध। स्त्रीजातिके स्तनोंसे बहाहुआ द्रव्य। "कर्मणि क्त"। दोहीगई (दुहीगई) धेनु (गौ) आदि (स्त्री०)। प्रपूरित (बहुत भराहुआ) (त्रि०)। "भावे क्त" दोहन (दोहना) (न०).

दुन्दुभि, (पु०) दुन्दु इति शब्देन उभति (पूरयति) उभ्+इ। स्त्री० दुं दुं शब्दसे भरता है। बड़ादमामा। नक्कारा (ढँकर)। वरुण। एक दैत्य। एक राक्षस। विष। जह-र। ६० वर्षोंमें एक वर्ष। पाशक (पासा) (स्त्री०).

दुर्-स्, (अव्य०) दुष्ट। निन्दा। निषेध। दुःख.

दुरक्ष, (पु०) दुष्टः अक्षः। खोटा पासा। "दुरोदरो वा"। जहां बाजीका पासा है। खोटा जूआ। दुरोदर.

दुरतिक्रम, (त्रि०) दुःखेन अतिक्रम्यते। दुर्+अति+क्रम+खल् (अ)। जिसे मुश्किलसे लांघसकें। दुर्निवारणीय। दुःखसे अतिक्रमणीय। दुस्तर। जिसे दुःखसे लांघसकें.

दुरदृष्ट, (न०) दुष्टं अदृष्टं। बुरी किस्मत। दुर्भाग्य। दुर्गम। जहां पहुंचना कठिन है। जिसे कठिनतासे जा न सकें.

दुरधिगम, (त्रि०) दुःखेन अधिगम्यते। दुर्+अधि+गम्+खल्। जो दुःखसे हासिल किया जाय। दुष्प्राप्य। मुश्किलसे मिलने लायक.

दुरधीत, (त्रि०) दुष्टं अधीतः। बुरी तरहसे पढ़ा.

दुरध्यवसाय, (पु०) दुष्टः अध्यवसायः क० स०। बुरा काम। बुरा निश्चय.

दुरध्व, (पु०) दुष्टः अध्वा+अच्। बुराराह। दुर्गम। कुत्सितपथ.

दुरन्त, (त्रि०) दुष्टः अन्तः (अवसानं) यस्य। जिसका नतीजा बुरा है। द्यूत (शिकार), जूआ, मद्य (शराब) आदिका पीना आदि व्यसन (बुरीआदतें)। क्योंकि यह पहिले सुख देकर अन्तमें दुःख देते हैं। "दुष्टः अन्तः (परिच्छेदः) यस्य"। जिसका विचार न करसकें। दुर्ज्ञेय। गम्भीर। गहिरा.

दुराग्रह, (पु०) दुष्ट आग्रहः (निर्बन्धः)। युक्तिरहित अभिनिवेश। (दलीलके बिनाहठ)। हठीला (त्रि०).

दुराचार, (पु०) दुष्ट आचारः। बुरा चालचलन। बुरा आचरण। ६ ब०। बुरे आचारवाला (त्रि०)। "अपि चेत्सुदुराचारः" गीता.

दुरात्मन्, (त्रि०) दुष्ट आत्मा (चित्तं) यस्य। दुष्ट चित्तवाला। दुष्टचित्त जन। दुष्ट चित्तवाला जन (पुरुष वा स्त्री).

दुराधर्ष, (पु०) दुष्टान् (राक्षसान्) आधर्षति। जो राक्षसोंका तिरस्कार करे। पीली सरसों (क्योंकि इसके फेंकनेसे भूत आदि भाग जाते हैं। "दुःखेन (...) धर्षितुं शक्यम्" दुर्+आ+धृष्+खल् (...) "जिसे मुश्किलसे धोखादगी शिकस्त नहीं सके" (त्रि०).

दुराप, (त्रि०) दुःखेन आप्तुं शक्यः। दुःखसे प्राप्त होनेवाला.

दुराराध्य, (त्रि०) दुःखेन आराधयितुं योग्यः। दुःखसे सेवा किया जानेवाला। कठिनतासे वशमें आनेवाला.

दुरारोह, (पु०) दुःखेन आरुह्यते। दुर्+आ+रुह्+खल्। जहां चढ़ना कठिन है। खिजूरका पेड़ (खजूर)। मुश्किलसे चढ़नेलायक (त्रि०).

दुरालाप, (पु०) दुष्ट आलापः। बुरा वचन। दुर्वचन। अपशब्दोंका प्रयोग करना। ६ ब०। दुर्वचन बोलनेवाला (त्रि०).

दुरालोक, (त्रि०) दुःखेन आलोकयितुं शक्यः। दुःखसे देखा जानेवाला। बुरे प्रकाशवाला.

दाशा, (स्त्री०) दुष्टा आशा । बुरी आशा (उम्मीद).

सद, (त्रि०) दुःखेन आसद्यते (गम्यते) असौ । जिसके पास पहुंचना कठिन है । दुर्+आ+सद्+खल् । दुर्गम्य । दुर्धर्ष । जिसका सामना नहीं कर सके । "बभूव दुरासदः" इति रघुः.

ह्म, (न०) दुष्टं इतं (गमनं) नरकादिप्राप्तिः अनेन । जिससे नरक आदि बुरे स्थानकी प्राप्ति हो । पाप । बुरा काम । खोटा चलन.

क्त, (न०) दुष्टं उक्तं । बुरा कहा गया । शाप । गलत.

च्छेद्य, (त्रि०) दुःखेन उच्छिद्यते असौ । दुर्+उद्+छिद्+खल् । जिसे मुश्किलसे हटाया जाय । दुर्निवार.

त्तर, (त्रि०) दुःखेन उत्तीर्यते । दुर्+उद्+तॄ+खल् । जिसे कठिनतासे तरसकें । दुस्तर । "दुष्टं उत्तरं" बुरा उत्तर (न०).

द, (त्रि०) दुःखेन ऊह्यते (वितर्क्यते) । "ऊह+खल्" । जो बहुत दुःखसे खयालमें लाया जाय । दुर्विज्ञेय.

दर, (पु०) दुष्टं समन्तात् उदरं अस्य । चारों ओरसे जिसका परिणाम (नतीजा) खराब हो । बुरा है पेट जिसका । द्यूतकार । जुआरिआ । पण । दांव । दा । पासा । जूआ (न०) "दुरोदरच्छद्मजितां" भारविः.

र्ग, (पु०) दुःखेन गम्यते असौ । कर्मणि ड । जिसके पास मुश्किलसे पहुंचसकें । एक दैत्य । उस दैत्यको मारनेहारी देवी (स्त्री०) । "दुःखेन गच्छति अत्र" दुर्+गम्+आधारे ड । यहां पहुंचना कठिन है । ऐसा देश पर्वत जो आदिसे कठिन स्थान बनगया । कोट । किला । गढ़ (न०) । दुर्गमदेश । ऊंचा । दुःखसे मिलनेलायक (त्रि०) । काम क्रोध आदि दुःखके कारण कठिनतासे तराजानेवाला संसार (न०).

र्गत, (त्रि०) दुर्गच्छति । दुर्+गम्+क्त । दोषको प्राप्त हुआ । बुरी दशामें पहुंचा.

र्गति, (स्त्री०) दुर्+गम्+क्तिन् । बुरी दशा । नरक । निर्धनता.

र्गन्ध, (पु०) दुष्टः गन्धः । बुरी गंध । ६ ब० । बुरी गंधवाला (त्रि०) गंदा (पु०).

र्गानवमी, (स्त्री०) ६ त० । दुर्गा (देवी) की नवमी । कार्तिकके शुक्लपक्षकी नवमी (इस दिन जगद्धात्रीनामक दुर्गाकी पूजा होती है).

र्जन, (त्रि०) दुष्टः जनः । बुरा आदमी (जिसकी बुरे आचरण (चालचलन) करनेसे साधु (भला) भी दूषित हो जाता है । नीच (पु०).

र्जर, (त्रि०) दुर्+जॄ+अच् । दुःखेन जरा यस्य । जो मुश्किलसे पुरानी हो । वह पदार्थ जो मुश्किलसे जीर्ण होता है । ज्योतिष्मती लता (स्त्री०).

दुर्जात, (न०) दुष्टं जातं । प्रा० । व्यसन (बुरीआदत) । आपद् (मुसीबत) ६ ब० । जो अच्छा नहिं हुआ और अनुचित (नामुनासिब) (त्रि०).

दुर्नामा, (त्रि०) दुष्टं निन्दितं नाम यस्य । बुरेनामवाला.

दुर्दान्त, (पु०) दुष्टं दान्तं (दमनं) यत्र । जहां रोकना मुश्किल है । कलह (झगड़ा) । दुःखेन दम्यतेऽसौ । मुश्किलसे रोकागया । अशान्त (जिसे शान्ति नहिं) बछड़ा (त्रि०).

दुर्दिन, (न०) यत्र तमः इति दिनं । दुष्टं दिनं । प्रा० । मेघों (बादलों) के आच्छादन (ढांकना) आदिसे अंधेरेको दूर न करसकनेवाला दिन कि जिसका स्वरूप प्रतीत न हो । बादलोंसे अंधेरा । वर्षना । पानीका बरसना.

दुर्धर, (पु०) दुर्+धृ+खल् । एक नरक । एक दैत्य । "दुःखेन मुमुक्षुभिर्हृदये धार्यते, केनापि न धार्यते+वा खल्" । मोक्षके चाहनेहारे जिसे मुश्किलसे हृदयमें धारण करते हैं वा जो किसीसे भी पकड़ा नहिं जाता । विष्णु । वह पदार्थ कि जिसका पकड़ना वा धारण करना मुश्किल है (त्रि०).

दुर्धर्ष, (त्रि०) दुःखेन धृष्यते । जो मुश्किलसे पकड़ा वा सहाराजाय । जिसका सामना करना मुश्किल है । अक्षोभ्य । जो व्याकुलतासे रहित है.

दुर्निवार-निवार्य, (त्रि०) दुःखेन निवारयितुं योग्य. । दुःखसे हटाया जानेवाला.

दुर्नीतम्, (न०) दुष्टं नीतं कुत्सितनीति । बुरी चाल.

दुर्बल, (त्रि०) दुष्टं बलं यस्य । जिसका जोर बुरा है । निर्बल । कमजोर । कृश । थोड़े मांसवाला.

दुर्बुद्धि, (त्रि०) दुष्टा बुद्धिः यस्य । बुरी अकलवाला । मूढ़ । बेवकूफ.

दुर्भग, (त्रि०) दुष्टं भगं (भाग्यं) यस्य । जिसकी बुरी किस्मत है । अल्पभाग्य । अभागा । वह स्त्री जो पतिसे प्रेम नहिं करती (स्त्री).

दुर्भिक्ष, (अव्य०) भिक्षाया अभावः । खाद्य न मिलना । अकाल । केहत । काल.

दुर्मति, (त्रि०) दुष्टा मतिर्यस्य । जिसकी बुरी अकिल है । विचारको रोकनेवाले पापसे भारी बुद्धिवाला । बेअकिल । बेवकूफ । ६० वर्षोंमेंसे एक (पु०) प्रा० स० । दुर्बुद्धि । बुरी अकिल.

दुर्मनस्, (त्रि०) दुष्टं मनः अस्य । जिसका मन (चिन्ता आदिसे) व्याकुल (घबराया) है । विमनस्क । जिसका दिल बिगड़ा हुआ है.

दुर्मर्याद, (त्रि०) दुष्टा मर्यादा यस्य । जिसकी मर्यादा (सदाचार) बुरी है । अशिक्षित । अविनीत । दुष्ट.

दुर्मुख, (पु०) दुष्टं मुखं अस्य । जिसका मुं खराब है । घोडा । बन्दर । एक प्रकारका हाथी । एक देत्य । अप्रियवादी । कडवा वचन बोलनेहारा (त्रि०).

दुर्मेधस्, (त्रि०) दुष्टा मेधा यस्य । असिच् समा० । जिसकी बुरी बुद्धि है । मंदबुद्धि । जो विसासे विचार नहिं कर सक्ता.

दुर्योधन, (पु०) दुःखेन युध्यते असौ । युध्+युच् (कर्मके अर्थमें जिसके साथ लडाई करना कठिन है । धृतराष्ट्र राजाका बडा पुत्र । एक राजा । दुःखसे युद्ध करने-योग्य (त्रि०).

दुर्लभ, (पु०) दुर्+लभ्+खल् । जिसका मिलना मुश्किल है । कचूर । जो मुश्किलसे मिले (त्रि०) । "मानुष्यं दुर्लभं लोके" इति पुराणम्.

दुर्ललित, (न०) दुष्टं ललितं (इष्टं) । लल्+इच्छ । चाहना +क्त । बुरी चाहना । चन्द्रमा आदि न मिलनकनेवाले पदार्थोंमें चाहना । दुश्चेष्टित (बुरी चाल) । बुरे आशयवाला । दुश्चेष्ट (बदचलन) (त्रि०).

दुर्व(व)ष, (मारना) भ्वा० पर० सक० सेट् । दूर्वति । अदूर्वीत् । दूर्णः.

दुर्वर्ण, (न०) दुष्टोपि वर्ण्यते (रज्यते) अनेन । जो बुरे (मलआदि)को रंग देता है । अथवा जो मैलेको भी सुन्दर बना देता है । रजत । रंगरेज । बुरेरंगवाला । मैला (त्रि०)

दुर्विध, (त्रि०) दुष्टा विधा यस्य । जिसका प्रकार (हालत) बुरा है । दरिद्र (निर्धन) । गरीब । "हविषभैदुर्विधं" नैषधं । नीच । मूर्ख.

दुर्हृद्, दुष्टं हृदयं यस्य । बुरे हृदयवाला (शत्रुके अर्थमें निरलही हृद्का आदेश होता है) शत्रु (दुश्मन) बुरे चित्तवाला । "दुर्हृदयः" इसी अर्थमें होताहै.

दुल्, उत्क्षेप (ऊपर फेंकना । झुलाना) चुरा० उभ० सक० सेट् । दोलयति -ते । अदूदुलत्-त.

दुलि-ली, (स्त्री०) । दुल्+इन्-ङि० । कमठी । कछुवी स्त्री । एक मुनिका नाम (पु०).

दुःशासन, (पु०) दुःखेन शिष्यतेऽसौ । शास्+युच् (अन) जिसे दुःखसे आज्ञामें रक्खाजाय । दुर्योधनका छोटा भाई । धृतराष्ट्रका पुत्र (भारतमें प्रसिद्ध है).

दुश्चर्मन्, (पु०) दुष्टं चर्म यस्य । बुरे चमडेवाला । महापातकसे उपजे चिह्नवाला । "दुश्चर्मा गुरुतल्पी स्यात्" इति स्मृतिः.

दुश्च्यवन, (पु०) दुःखेन च्यवनं पतनं यस्य । जो मुश्किलसे गिरे अथवा जिस पर च्यवन मुनि क्रुद्ध हुआ । इन्द्र । च्यवनने निर्भीमान इसे कुपित होकर अपने पदसे गिरादिया.

दुष, वैकृत्य । बदल जाना । वैर करना । दिवा० प० अ० अनिट् । दुष्यति । अदुषत्-अदुक्षत्.

दुष्कर, (न०) दुःखेन क्रीयते । कृ०+खल् । जो दुःख से गिराया जाय वा फेंका जाय । आकाश (...) "कृ+खल्" मुश्किलसे करनेलायक (त्रि०).

दुष्कर्मन्, (न०) कर्म० प्रा० स० । बुरा काम । ... ६ ब० । पापात्मा (त्रि०).

दुष्कृत, (न०) दुष्टं कृतं कृतिः । बुरा काम । ... ६ ब० । पापी (त्रि०).

दुष्ट, (त्रि०) दुष्+क्त । दुर्बल । कमजोर । सबब । ... दुर्जन । खलआदमी आदि । दोषवाला (...) (कुष्ट) (पु०) । व्यभिचारिणी (कुलटा) (औरत) (स्त्री०).

दुष्ट, (त्रि०) दुष्+क्त । बिगडगया । दूषित होगया । होगया.

दुष्टचेतस्-धी-बुद्धि, (त्रि०) दुष्टं चेतः [illegible] दुष्ट बुद्धिर्वा यस्य । दुष्ट (बिगडे हुए) स्वभाववाला.

दुष्टात्मन्, (त्रि०) दुष्टः आत्मा यस्य । दुष्टस्वभाव बदमाश.

दुष्य-(ष्म)न्त, (पु०) चन्द्रवंशका एक राजा । भरतका पिता । शकुन्तलाका पति.

दुःसहा, (स्त्री०) दुःखेन सह्यते । दुर्+सह्+खल् । जो दुःख से सहारी जाय । नागदमनी.

दुःस्थ, (त्रि०) दुःखेन तिष्ठति । स्था+क । दुःखसे ... है । दीन । मूर्ख । लोभी । लालची.

दुःस्थित, (त्रि०) दुर्+स्था+क्त । अनवस्थित । (जिसका चित्त कायम नहिं-कभी कुछ २) । बेचारह । दुःखसे ...

दुःस्पर्श, (पु०) दुःखेन स्पृश्यतेऽसौ । जिसे दुःखसे ... है । दुर्+स्पृश् खल् । दुरालभा (स्त्री०) आकाशी कटिआरी.

दुह्, दोह । चोना । अदा० उभ० अक० अनिट् । दोग्धि । दुग्धे । अधुक्षत्-त । अदुग्ध.

दुह्, वध । मारना । भ्वा० पर० सक सेट् । दोहति । अदोहीत्.

दुहितुःपति, (पु०) ६ त० । अलुक् समा० । ... पति । जमाई.

दुहितृ, (स्त्री०) दुह्+तृच् । पुत्र न हुआ और ... गया । नि० गुणा । लडकी । बेटी.

दू, खेद । तकलीफ उठाना । दिवा-आत्म० अक० सेट् । ... अदविष्ट । दून.

दूत, (पु०) दु+क्त -दीर्घश्च । संदेश (खबर) को लेनेहारा । बात पहुंचानेवाला । कासिद.

ति, (स्त्री॰)। दु+णिच् वा ङीप्। संदेशा पहुंचा-
ी स्त्री.

(न॰) दूतस्य दूत्या वा भावः कर्म वा+यत्। दूत
तीका होना या कर्म। दूतका काम। दूतका स्वभाव.

(त्रि॰) दु+क्त। रास्ते (मार्ग)में चलने आदिसे
र (थका) हुआ। बहुत थकाहुआ। बहुत दुःखी
.

(त्रि॰) दुःखेन ईयते (प्राप्यते) दुर्+इण्+रक्
ा स्थेर। विप्रकृष्ट। दूर। अगोचर। जो आंखोंसे
है.

िन, (पु॰) दूरात् पश्यति। दूरसे देखता है।
+णिन्। गृध्र। गीध.

िन्, (पु॰) दूरात् (कार्योत्पत्तेः प्राक्) पश्यति।
कार्यके उपजनेसे पहिले देखता है। दृश्+णिनि।
डत। दूरसे देखनेहारा (त्रि॰).

(स्त्री॰) दूर्व्। हिंसा। मारना-अ। एक प्रकारका घास.

ण्ड, (न॰) दूर्वाणां समूहः+काण्डच्। दूबोंका
ह। घासका ढेर.

(त्रि॰) दूष्+अ। समासके पीछे आता है। "पंक्ति-
क" बिगाडनेवाला। दूषित करनेवाला.

, (त्रि॰)-षिका (स्त्री॰) दूष्+णिच्+ण्वुल्। दूषित
नेवाला। दाग लगानेवाला। बिगाडनेवाला.

, (पु॰) रावणकी मौसीका बेटा। एक राक्षस।
+णिच्+ल्युट्। दोषदान। ऐब लगाना। ऐब (न॰).

ा, (स्त्री॰) दूषयति (नेत्रं क्लिन्नं करोति) दुष्+
च्+ण्वुल्। नेत्रमल। आंखकी मैल। गिद्द.

, (त्रि॰) दुष्+णिच्+क्त। अभिशस्त। कलंकि-
गया। निन्दा कियागया। दोष लगायागया। तोहमत
गया हुआ.

(न॰) दुष्+णिच्+य। कपडेका बनाहुआ घर। तंबू।
ण देनेके लायक (त्रि॰)। हाथीकी बेटी (स्त्री॰).

। मारना। स्वा॰ पर॰ सक॰ अनिट्। दृणोति।
दार्षीत्.

ादर करना। तुदा॰ आत्म॰ सक॰ अनिट्। इसके
हले आङ् उपसर्ग रहता है। आद्रियते। आदृत.

रना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। दरति। अदारीत्।
णिच्) दरयति.

ाडना। दिवा॰ क्र्या॰ पर॰ सक॰ सेट्। दीर्यति।
ाति। अदारीत्.

साद, (पु॰) दृशं प्रसादयति। जो नजरको साफ
रे। कुलत्था। इसका अंजन डालनेसे आंखें साफ हो
ाती हैं.

दृढ, (न॰) दृह्+क्त नि॰। लोहा। अतिशय और बहुत।
मोटा। गाढा। बलवाला। ताकतवाला और दृढ़ (त्रि॰).

दृढभूमि, (त्रि॰) दृढा भूमिः अस्य। दृढ (मजबूत)
भूमिवाला। योगाभ्याससे संस्कृत अंतःकरणवाला। ऐसा
चित्त कि जिसे विषयसुखकी प्रीतिसे चला नहिं सके.

दृढमुष्टि, (पु॰) दृढा मुष्टिः यत्र यस्मात् वा। जहां
पक्की मुट्ठी है। खड्ग (तरवार)। इसके धारण करनेसे
मुट्ठी पक्की होती है। "दृढा (अशिथिला) मुष्टिः यस्य"।
जिसकी मुट्ठी ढीली नहिं होती। कृपण। सूम। कंजूस।
वह धन आदिको मुट्ठीमें रख न देनेकी इच्छासे दृढतर
बांधलेताहै (मुट्ठीसे निकलता नहिं).

दृढव्रत, (त्रि॰) दृढं व्रतं नियमः अस्य। जिसका पक्का
नियम हो। आरम्भ कियेगये कामको फलोदयपर्यन्त
(नतीजा निकलनेतक) न छोडनेहारा। एक इकरार
करनेहारा.

दृढसन्धि, (त्रि॰) दृढः सन्धिः सन्धानं यस्य। पक्के
जोडवाला.

दृता, (स्त्री॰) द्रियते। दृ+क्त। जीरक। जीरा.

दृति, (पु॰) दृ+क्तिन्। चमडेका बनाहुआ पानीका पात्र।
मशक। एकप्रकारकी मच्छी.

दृन्भू, (पु॰) दृभ्+ऊ॰ नि॰। वज्र। राजा। यम। सूर्य।
सांप। पहिया.

दृप्, बाधन। तकलीफ पहुंचाना। तुदा॰ पर॰ सक॰ सेट्।
दृपति.

दृप्, सन्दीपन। भडकाना। ॥ चुरा॰ उभ॰ पक्षे भ्वा॰ पर॰
सक॰ सेट्। दर्पयति-ते। दर्पति। अदीदृपत्-त। अदद-
र्पत्-त। अदर्पीत्.

दृप्, हर्ष-खुशहोना। गर्व-अहंकार करना। दिवा॰ पर॰ अक॰
सेट्। दृप्यति। अद्राप्त्। अदर्पीत्। दर्पिता। दृप्त्वा.

दृप्त, (त्रि॰) दृप्+क्त। गर्वित। मगरूर हुआ.

दृफ, क्लेश। तकलीफ उठाना। तुदा॰ पर॰ अक॰ सेट्।
दृफति.

दृब्ध, (त्रि॰) दृभ्+क्त। ग्रथित। गुथा हुआ। भीत।
डराहुआ.

दृभ्, ग्रथन। गांठना वा चुरा॰ उभ॰ पक्षे तुदा॰ पर॰ सक॰
सेट्। दर्भयति-ते। दृभति.

दृश, प्रेक्षण। देखना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ अनिट्। पश्यति।
अदर्शत्। अद्राक्षीत्.

दृश्-शा, (स्त्री॰) दृश्-भावे क्विप्। वा टाप्। देखना।
ज्ञान। "करणे क्विप्" नेत्र। आंख। दोकी संख्या।
"कर्तरि क्विप्" साक्षी। गवाह। देखने और जानने-
हारा (त्रि॰).

दृषद्, (स्त्री०) दृ फाड़ना+आदि गुक् (धुक्) वा ह्रस्वः । पाषाण । पत्थर । पीसनेकी सिल । शिला.

दृषद्वती, (स्त्री०) दृषद्+मतुप् (मस्य व) एक नदी "सरस्वतीदृष (द्व) त्योः" इति मनुः । आर्यावर्तकी पूर्वी सीमाको बनानेहारी सरस्वतीमें गिरती है.

दृष्ट, (न०) दृश्+क्त । अपनी वा शत्रुकी सेनाका भय । देखा गया डर । देखागया । और लौकिक (दुनिआवी) (त्रि०).

दृष्टकूट, (न०) कर्म० । कूटप्रश्न । मुश्किल सवाल । पहेली । बुझारत.

दृष्टान्त, (पु०) दृष्टः अन्तः यस्मिन् । जिसमें नाश सीमा और विचार देखा गया हो । मरण । मौत । शास्त्र । उदाहरण । मिसाल । एक प्रकारका अर्थालङ्कार.

दृष्टि, (स्त्री०) दृश्+भावे क्तिन् । दर्शन । देखना । बुद्धि । अकिल । "करणे क्तिन्" नेत्र । आंख । दोकी संख्या । मनका व्यापार.

दृष्टिगोचर, (त्रि०) दृष्टे गोचरः=प्रत्यक्षः । नेत्रका विषय । जिसे आंख देख ले.

दृष्टिपथ, (पु०) दृष्टेः पन्थाः पथिन्+ट+अ समासे । नेत्रका मार्ग । नेत्रका विषय.

दृष्टिपूत, (त्रि०) दृष्ट्या पूतः । दृष्टिसे पवित्र किया.

दृष्टिविभ्रम, (पु०) दृष्टेः विभ्रमः ष० त० । दृष्टिका विलास । रसभरी आंखोंसे देखना.

दृंह्, बढ़ना । भ्वा० पर० अक० सेट् । दृंहति । अदृंहीत् । (यह इदित् भी होता है) दृंहति । अदृंहीत्.

दे, पालन । बचाना । भ्वा० आ० सक० अनिट् । दयते । अदास्त.

देय, (त्रि०) दा+कर्मणि यत् । देनेयोग्य । देनेलायक.

देव्, खेलना । भ्वा० आ० अक० सेट् । देवते । अदेविष्ट.

देव, (पु०) दिव्+अच् । अमर । देवता । प्रकाशस्वरूप आत्मा । परमेश्वर । ब्राह्मणकी उपाधि । और इन्द्रिय (न०) । पूजाके लायक (त्रि०) नाट्योक्तिमें राजा (पु०).

देवक, (पु०) श्रीकृष्णका नाना (मातामह) । देवकीका पिता । एक राजा.

दे(दै)वकी, (स्त्री०) देवकराजाकी कन्या । श्रीकृष्णकी माता । वसुदेवकी स्त्री । "अपत्यार्थेऽण्" "दैवकी" यही अर्थ.

दे(दै)वकीनन्दन, (पु०) ६ त० । श्रीकृष्ण । वसुदेवका बेटा "देवकीसुत".

देवकुसुम, (न०) देवानां प्रियं (योग्यं) वा कुसुमम् । देवताओंके लायक फूल वा झाड़ । लवङ्ग । लौंग.

देवखात, (न०) देवेन खातं । खन्+क्त । देवताने खोदा अकृत्रिम जलाशय । ऐसा सरोवर (तालाब) जो किसीने नहिं बनाया । देवताके पास खोदा गया तालाब आदि.

देवखातबिल, (न०) देवेन खातं (निर्मितं) बिलं । देवताने फाड़ी गई बिल (सुराख) । गुहा । गुफ़ा.

देवगायन, (पु०) ६ त० । देवताओंका गंधर्व । गवैया.

देवद्रुम, (पु०) ६ त० । देवताओंका वृक्ष । मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन ये पंच वृक्ष.

देवच्छन्द, (पु०) देवैः छन्द्यते (प्रार्थ्यते) छन्द+कर्मणि घञ् । देवताओंसे प्रार्थना कियाजाता है । सौ लड़ोंवाला हार.

देवतरु, (पु०) ६ त० । देवताओंका वृक्ष । कल्पवृक्ष.

देवता, (स्त्री०) देव+स्वार्थे तल् । इन्द्र आदि देवता.

देवदत्त, (पु०) देवा एनं देयासुः+आशिषि क्त । "देवता इमं देयें" (व्याकरण) । देवताके अर्पण किया गया । इसनामवाला कोई जन । अर्जुनका शंख । जंभाई लानेवाला वायु (हवा) । "देवाय दत्तः" देवताके लिये छोड़ा हुआ (त्रि०).

देवदारु, (न०) देवानां प्रियं दारु यस्य । जिसकी लकड़ी (चन्दन) देवताओंको पियारी है । एक वृक्ष । "यह पुंल्लिङ्गमें भी होता है" "अमुं पुरः पश्यसि देवदारुम्" इति रघुः.

देवदासी, (स्त्री०) देवं (इन्द्रियं) दासयति दास् मारना+अण् । जो इन्द्रियको मारती है । वेश्या । कंजरी । वनका खजूर.

देवदीप, (पु०) देवेषु (इन्द्रियेषु) दीप इव । इन्द्रियोंमें मानों (रूपका प्रकाश करनेसे) दीपक अर्थात् दीवा है । नेत्र । आंख । लोचन.

देवदेव, (पु०) देवेषु मध्ये दीव्यति । दिव्+अच् । "देवताओंमें चमकता है" । महादेव । शंकर.

देवन, (पु०) दीव्यति अनेन । दिव्+करणे ल्युट् । जिससे खेलता है । पासक । पास्सा । "भावे ल्युट्" क्रीड़ा । खेल । चमक । व्यवहार । जीतनेकी इच्छा । स्तुति । तारीफ़ । (न०) "दीव्यति अत्र -आधारे ल्युट्" जहां खेलता है । खेलनेका बाग । कमल.

देवनदी, (स्त्री०) ६ त० । देवताओंकी नदी । गङ्गा । "अर्धबाधा देवनदी" म० भा०.

देवपथ, (पु०) देवैः उपलक्षितः पन्थाः । अच् समा० । देवताओंसे पहिचाना गया मार्ग । उत्तरको रस्ता । देवताओंका रास्ता । छायापथ (यमका मार्ग).

देवपुरोधस्, (पु०) ६ त० । देवताओंका पुरोहित । बृहस्पति.

देवभवन, (न०) देवानां भवनं इव । मानों देवताओंका मन्दिर है । स्वर्ग बहिश्त.

देवभूय, (न०) देवस्य भावः । भू+क्यप् । देवताका होना । देवत्व । देवपन । देवतापुरुष.

देवमणि, (पु०) देवेषु मणिरिव प्रकाशकत्वात्। देवताओंमें (प्रकाशक होनेसे) मानो मणि हैं। शिवजी। घोड़ेके गलेमें रोमावर्त (बालोंकी घोलावट)। कौस्तुभ मणि.

देवयान, (न०) ६ त० । देवरथ । देवताकी गाड़ी। देवताओंका रास्ता। अर्चिरादिमार्ग। शुक्राचार्यकी कन्या (स्त्री०) ङीप्.

देवयोनि, (पु०) देवाः एव योनिः कारणं अस्य । देवताही जिसके कारण हैं। देवताओंके अंशसे उपजे विद्याधर आदि.

देवर, (पु०) देव+अर । पतिका छोटाभाई.

देवराज, (पु०) देवानां राजा+टच् समा० । देवताओंका राजा । इन्द्र.

देवरात, (पु०) देवाः एनं रातायु+क्त । देवता इसे दें। अभिमन्युका पुत्र । परीक्षित राजा.

देवर्षि, (पु०) वेदस्य ऋषिः। देव एव सन् ऋषि। जो देवताही वेदके देखनेहारा है। नारद आदि मुनि.

देवल, (पु०) एक मुनि। व्यासका शिष्य (चेला)। धौम्यऋषिका बड़ाभाई । "देवान् जीविकार्थे लाति+ला+क" । जो जीविकाके लिये देवताओंको ग्रहण करता है। देवतर जीनेवाला। "स्वार्थे कन्" यही अर्थ। एकप्रकारका ब्राह्मण.

देवलोक, (पु०) ६ त० । देवताओंका लोक । स्वर्ग । ईश्वरकी सम्पदारूप लोक । भूरादि सात लोक.

देववर्धकी, (पु०) ६ त० । देवताओंका तखान । कारिगर । विश्वकर्मा.

देवव्रत, (पु०) देवं (इन्द्रियसंयमनं) व्रतं अस्य । इन्द्रियोंको रोकना जिसका नियम है। भीष्म । पितामह.

देवस्वात्, (अव्य०) देवेभ्यो देयं। देवताओंको देनेलायक। देवताओंके आधीन.

देवसायुज्य, (न०) युनक्ति-युज्+क । सह युजेन सयुजः तस्य भावः सायुज्यं । देवेन सायुज्यं । देवताके साथ एक आसनपर बैठनेकी योग्यता । देवताके साथ मेल.

देवसेना, (स्त्री०) इन्द्रकी कन्या । षष्ठीनामवाली कार्तिकेयकी स्त्री । सोलह माताओंमेंसे एक । ६ त० । देवताओंकी सेना.

देवसेनापति, (पु०) ६ त० । देवताओंकी सेनाका मालिक । कार्तिकेय । इन्द्रका पुत्र । देवसेनाका पति.

देवस्व, (न०) जो यज्ञ करनेवालोंका धन है। देवताओंका धन.

देवहूति, (स्त्री०) स्वायम्भुवमनुकी कन्या। कपिलमुनिकी मा.

देवाजीव, (त्रि०) देवं (देवप्रतिमाद्रव्यं) आजीवति। जीव्+अण् । देवताकी प्रतिमाके द्रव्यसे जीनेहारा। पुजारी। देवल । "देवाजीवी" इसी अर्थमें है.

पद्म० ३३

देवात्मन्, (पु०) देवो विष्णुः आत्मा यस्य । विष्णु जिसका स्वरूप है। पीपलीका पेड़ (अश्वत्थ)। देवता जैसा। देवस्वरूप. (त्रि०).

देवानांप्रिय, (पु०) अलुक् समा० । देवताओंका पियारा। बकरा । मूर्ख (बेवकूफ) (त्रि०)

देवापि, (पु०) चन्द्रमाके वंशका एक राजा.

देवार्ह, (न०) देवान् अर्हति+अण् । जो देवताओंके योग्य है। सुरपर्ण। सहदेवी लता (स्त्री०) देवयोग्य (त्रि०).

देवालय, (पु०) देवानां आलयः । देवताओंका स्थान (घर) । स्वर्ग । देवोंकी प्रतिमा (मूर्ति) ओंका घर। "देवायतन" यही अर्थ.

देविका, (स्त्री०) दिव्+ण्वुल् । एक नदी (जो दो कोस चौड़ी और बीस कोस लंबी है)। धतूरा.

देवी, (स्त्री०) दीव्यति दिव्+अण् ङीप् । जो अनेकप्रकारसे खेलती है। दुर्गा । देवताकी स्त्री । ङीप् । (नाटकमें) कृताभिषेका राजवनिता (पटरानी) । ब्राह्मणस्त्रियोंकी उपाधि । "देव्यन्ता विप्रयोषितः" इत्युक्तेः.

देवृ, (पु०) दिव्+ऋ । देवर । स्वामीका छोटाभाई । योर.

देवेश, (पु०) ६ त० । देवताओंका स्वामी । महादेव । उसकी स्त्री दुर्गा । ङीप्.

देवेष्ट, (पु०) देवानां इष्टः । देवोंका पियारा । गुग्गुल । वनबीजपूरक (स्त्री०).

देवोद्यान, (न०) ६ त० । देवताओंका बाग । वैभ्राज, मिश्रक, सिद्धचारण, और नंदन ये चार वन.

देश, दिश्+अच् । पृथिवीके गोलेका कोई विभाग । हिस्सा । मुल्क । कुरु पाञ्चाल आदि प्रसिद्ध जनपद (देश) । स्थान (जगह).

देशक, (पु०) दिश्+कर्तरि ण्वुल् । शासक । आज्ञा चलानेवाला । शिक्षक । मार्गप्रदर्शक । रास्ता दिखानेवाला.

देशकालज्ञ, (त्रि०) देशकालौ जानाति ज्ञा+क+अ । यथार्थ देश और कालको जाननेहारा.

देशज, जात, (त्रि०) देशात् जातः जन्+ड । देशसे उपजा । देशी पदार्थ.

देशदृष्ट, (त्रि०) देशे दृष्टः । शहरमें देखा गया.

देशना, (स्त्री०) दिश्+णिच्+युच्+अन । शिक्षा । उपदेश.

देशभाषा, (स्त्री०) देशस्य भाषा । देशकी भाषा । मुल्की जबान.

देशव्यवहार, (पु०) देशस्य व्यवहारः । देशका व्यवहार (चाल-रस्म).

देशान्तर, (न०) अन्यो देशः । और देश । परदेश । दूसरा मुल्क.

देशिक, (पु०) देशेषु प्रसित+ठन् । देशोंमें लगाहुआ । पथिक । राही । देशे । उपदेशे साधु+ठन् (इक) । उपदेश करनेमें अच्छा । गुरु । उपदेश करनेवाला.

देशिनी, (स्त्री०) दिशति । दिश्+णिन् । जनवातीहै । अंगूठेके सायकी अगुली । तर्जनी.

देशीय, (त्रि०) देशे भवः+छ+ईय । देशमें होनेवाला । देसी आदमी वा चीज.

देश्य, (न०) दिश्+ण्यत् । पूर्वपक्ष । पहिली राय । देशं अर्हति । देशके लायक (त्रि०).

देह, (पु०) (न०) दिह्+घञ् । शरीर । जिस्म । (स्थूल, सूक्ष्म और कारणरूप) । ज्योतिषमें लग्नका स्थान । "घञ्" लेपन । लेप करना (चन्दन आदि लगाना).

देहधारक, (पु० न०) देहं धारयति । धृ+णिच्+ण्वुल् । जो शरीरको पकड़ता है । अस्थि । हड्डियें । शरीरकी हड्डी.

देहवद्, (त्रि०) देहेन बद्धः—तृ० त० । देहसहित । देही । शरीरी । अवतार.

देहबन्ध, (पु०) देहस्य बन्धः । देहकी रचना । शरीरकी बनावट.

देहभाज्, (त्रि०) देहं भजति । भज्+ण्वि । देहसहित । शरीरी । (पु०) शरीरी वा जीवन धारण करनेहारा कोई भी प्राणी विशेषतः मनुष्य.

देहभृत्, (पु०) देहं बिभर्ति । जो देहको धारता वा पुष्टि करता है । भृ+क्विप् । जीव । जीवात्मा । रुद्र.

देहयात्रा, (स्त्री०) देहो याति (गच्छति) अनेन । या+ करणे ष्ट्रन् स टाप् । जिससे शरीर चलता है । शरीरकी रक्षा पालन । भोजन । अन्न आदि खाना । ६ त० । शरीरका चलना । मरण (मौत).

देहली-ली, (स्त्री०) देहं (लेपनं) लाति (गृह्णाति) । ला+ क [illegible] । वहां लेपन किया जाता है । लेप [illegible] द्वारेकी [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible].

देहसार, (पु०) ६ त० । देहका सार ([illegible]) । [illegible] । [illegible].

देहात्मवादिन्, (पु०) देहं एव आत्मतया वदति । वद्+णिनि । जो शरीरहीको आत्माका स्वरूप [illegible] है । [illegible] । [illegible].

देहिन्, (त्रि०) देह+अस्ति अर्थे इनि । शरीरवाला । [illegible] । देहधारक आत्माका अभिमान करनेहारा जीव.

देहिन्, (त्रि०) (स्त्री० [illegible]) (देह+इनी) । शरीरवा- [illegible] । [illegible] । [illegible] हुआ [illegible] विशेषतः मनुष्य.

दैतेय, (पु०) दितेः अपत्यं । दिति+ढक् (एय) । दि- तिकी सन्तान । असुर । दैत्य । "दैत्य" यही अर्थ.

दैत्यगुरु, (पु०) ६ त० । दैत्योंका गुरु । शुक्र । "दैत्याचार्य".

दैत्यनिसूदन, (पु०) दैत्यान् निसूदति (हिनस्ति) । सूद्+णिच्+ल्यु । दैत्योंका नाश कर्ता है । विष्णु.

दैत्यमेदज, (पु०) दैत्यानां मेदात् जायते । दैत्योंकी चर्बी बना । जन्+ड । गुग्गुल । पृथिवी । जमीन.

दैत्या, (स्त्री०) दैत्यस्य प्रिया+यत् । दैत्यकी प्यारी । [illegible] सी । सुरा (शराब).

दैत्यारि, (पु०) ६ त० । दैत्योंके शत्रु । विष्णु.

दैन, (न०) दीनस्य भावः । दीनपन । कायरता । दीने भवं अण्+दिनमें होनेहारा (त्रि०).

दैनन्दिन, (त्रि०) दिनं दिनं (प्रतिदिनं) इत्यर्थे । अण्-नि० । प्रतिदिन होनेहारा । हररोज होनेवाला.

दैनन्दिनप्रलय, (पु०) ७ त० । ब्रह्माके सोनेके अनुसार प्रति दिनका अन्त । सम्पूर्ण [illegible] क्षय (नाश).

दैन्य, (न०) दीनस्य भावः ष्यञ् (य) । दीनता [illegible] होना । दीनता । कायरपना । गरीबी । कार्पण्य ([illegible]).

दैप्, साफ करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । दायति-[illegible]

दैव, (न०) देवादागतं । देवतासे आया । "देवेभ्य इदं अस्य" देव (विष्णु आदि) जिसका देवता है । "तस्य इदं [illegible] अण्" ये देवताका है । भाग्य । किस्मत । पूर्व जन्ममें अर्जन (इकट्ठा) कियाहुआ कर्म (काम) । हाथकी अंगुलिओंके आगे देवताओंका तीर्थ है । इस [illegible] का विवाह । तीन प्रकारकी मूर्तोंकी रचना (पु०) । [illegible] सम्बन्धी श्राद्धहोम आदि (त्रि०).

दैवज्ञ, (पु०) दैवं जानाति । ज्ञा+क । जो [illegible] जन्ममें अर्जन किये गये शुभ वा अशुभको [illegible] (उत्पत्तिका समय) आदिसे जानता है । [illegible] वाला । ज्योतिर्विद् । ज्योतिषी । शकुन आदिसे [illegible] जाननेहारी स्त्री (स्त्री०) [illegible]

दैवत, (पु० न०) देव एव देवता ([illegible] अण्) [illegible] देवताओंका समूह (अण्) (न०) । [illegible]

दैवतन्त्र, (त्रि०) जो भाग्यहीके आधीन है । [illegible] (आदत्त) । भाग्याधीन.

दैवपर, (त्रि०) दैवं एव परं (श्रेष्ठं) यस्य । जो [illegible] हीको अच्छा समझता है । दैवपर । "जो [illegible] सो" कहनेहारा.

दैवप्रश्न, (पु०) रात के समय [illegible] ([illegible]) [illegible] आदिमें सुनागया शुभ-अशुभको सूचन ([illegible]) [illegible] वाक्य (वचन).

दैववाणी, (स्त्री०) देवस्य इयं+अण् [illegible] । [illegible] जो है । आकाशवाणी ([illegible]) [illegible]

दैवसर्ग, (पु०) देवानां (सत्त्वगुणप्रधान) सर्गः । (सांख्यमें) सात्त्विक(?)ओंकी सृष्टि (भूतोंकी रचनामें).

दैवात्, (अव्य०) दैवे अतति । क्विप् । हठात् । अचानकसे । ईश्वरकी इच्छासे.

दैविक, (न०) देवो देवता अस्य+ठक् (इक) । देवताओंके उद्देशमें कियागया श्राद्ध । देवताके आसा । देवसम्बन्धी । देवताका (त्रि०).

दैवी, (स्त्री०) देवस्य इयं+अण् । देवताकी । सात्त्विक प्रकृति । सत्त्व गुणका स्वभाव । देवसम्बन्धिनी । देवताओंकी । "दैवी सम्पद् विमोक्षाय" गीता.

दैवोदासी, (स्त्री०) दिवोदासस्य अपत्यं+अण ङीप् । दिवोदासकी सन्तान । प्रतर्दन राजा.

दैव्य, (न०) देवेन कृतं देवानां इदं वा+ष्यञ् । देवसे कियागया । वा जो देवताओंका है । भाग्य । किस्मत । देवताका (त्रि०).

दैशिक, (त्रि०) देशस्य इदं देशेन वा निर्वृत्तं ठक् । देशका । (न्यायमें) देशसे कियागया स्वरूपका कियाहुआ भेद । विशेषणसम्बन्ध.

दैष्टिक, (त्रि०) दिष्टं (भागधेयं) एव सर्वसाधनं इति यस्य मति+ठक् । भाग्यही सबका साधन है ऐसी बुद्धिवाला । भाग्याधीनतावादी.

दो, छेद-काटना । दिवा० पर० सक० अनिट् । द्यति । अदात्.

दोग्धृ, (पु०) दुह्+तृच् । दुहनेहारा । गोपाल । गुवार । बच्चा । बछड़ा । दोनेवाला (त्रि०) ग्धी (स्त्री०) ङीप्.

दोर्दण्ड, (पु०) दोर्दण्ड इव । (लंका और धनुषको सिद्ध करनेहारा होनेसे) भुजा (बाहु-ओं) मानो डंडा है । "भुजदण्ड" यही अर्थ.

दोर्मूल, (न०) ६ त० । भुजाका मूल । कक्ष । कच्छ.

दोल, (पु०) दुल्+भावे घञ् । श्रीकृष्णका दोलनरूप उत्सव । दोलयात्रा । दोलोत्सव । कृष्णको झूलनेमें झुलाया जाता है.

दोला, (स्त्री०) दुल्+अच् टाप् अ वा । (दोली) । एक प्रकारकी सवारी । बाग आदिमें खेलनेकेलिये दोलनयन्त्र (झूलनेकी कला) । पींग आदि.

दोलाधिरूढ, (त्रि०) दोलां अधिरूढः । पघूंडेपर चढा हुआ.

दोःशिखर, (न०) ६ त० । भुजाकी चोटी । स्कन्ध । कंधा । मोंढा.

दोलायमान, (त्रि०) दोलां आमयते । क्यप्+शानच् । कांपताहुआ । झूलताहुआ । दोलायन्त्र (पघूंडा) पर चढा हुआ.

दोष, (पु०) दुष्+घञ् । दूषण । ऐब । पाप । गुनाह । वात, पित्त, कफ, तीन दोष । (अलंकारमें) रस आदि बिगाड़नेहारा दुष्ट शब्द । (न्यायमें) राग, द्वेष, मोह.

दोषग्राहिन्, (त्रि०) दोषान् एव गृह्णाति न गुणान्+ग्रह्+णिनि । जो दोषोंकोही लेता है गुणोंको नहिं । दुर्जन । "दोषग्राही गुणत्यागी चालनीव हि दुर्जनः".

दोषज्ञ, (त्रि०) दोषान् जानाति । ज्ञा+क । दोषोंको जानता है । पण्डित । वात आदि दोषोंको जाननेहारा । चिकित्सक । हकीम.

दोषत्रय, (न०) दोषाणां त्रयं । तीनदोष । वात, पित्त, कफ.

दोषा, (अव्य०) दुष्+आच् । रात्रि । रात.

दोषाकर, (पु०) दोषां (रात्रिं) करोति । जो रात बनाता है । चन्द्र । चांद । दोषोंका समूह । दोषोंका आश्रय । कसूरवार.

दोषैकदृक्, (त्रि०) दोषे एव न गुणे एका दृक् यस्य । गुणको छोडकर जो केवल दोषहीको देखता है । खल । नीच । बहुत खराब.

दोस्-षा, (पु०) दम् करना+डोसि । भुजा । बाहु-ओं । टापि षत्वम्.

दोह, (पु०) दुह्+कर्मणि घञ् (अ) । दुग्ध । दूध । "आधारे घञ्" । दोहनपात्र । चोनेका बर्तन (भांडा) । "भावे घञ्" । दोहन । चोना.

दोहद, (पु० न०) द्वयोः (गर्भिणीतदपत्ययोर्हृदयं) अत्र । निपा० । जहां दोनों (गर्भिणी और सन्तान) का हृदय हो । गर्भ । "दोहं (आकर्षं) ददाति" । दा+का । गर्भिणीकी अभिलाषा (चाह) । लालसा । चिह्न (निशान) और गर्भका लक्षण (न०) । "पु० और" "दौहृदम्" यही अर्थ है.

दोहदिनी, (स्त्री०) दोहदः अस्ति अस्याः+इनि । जिसका गर्भ हो । गर्भिणी । गर्भवाली । द्विहृदया । दो हृदयवाली.

दोहनी, (स्त्री०) दुह्यतेऽत्र । आधारे ल्युट् । जहां चोया जाता है । चोनेका पात्र (दोहनपात्र).

दोहा, (स्त्री०) एक प्रकारका मात्राछन्द है (प्रायः भाषामें आता है).

दौत्य, (न०) दूतस्य भावः कर्म वा+ष्यञ् । दूतका होना (दूतपना) वा उसका काम.

दौर्भागिनेय, (पु०) दुर्भगाया अपत्यं+ढक् (एय) । इनङ् आदेश । दोनों पदोंको वृद्धि हो जाती है । दुर्भगा (पतिने स्नेह न करनेवाली) स्त्रीका पुत्र.

दौर्मनस्य, (न०) दुर्मनसो भाव+ष्यञ् (य) । बाहिरी वा भीतरके कई एक कारणोंसे मनका दौस्थ्य (बेआरामी) चित्तका बिगडना । फिकर । चिन्ताके घबराहट.

दौवारिक, (पु०) द्वारे नियुक्तः । ठञ् (इक) । दर्वाजेपर लगाया गया । द्वारपाल । दरबान । प्रतिहारी (स्त्री०) द्वाररक्षिका.

दौष्कुलेय, (त्रि०) दुष्कुलस्य अपत्यम्+ढक् (एय)। निन्दितकुलमें उपजा। खोटे खानदान वा छोटी जातियोंमें उपजा.

दौहित्र, (पु०) दुहितुः अपत्यं+अण्। दुहिता (लड़की) का लड़का। दोहतरा। दोहता.

द्यावापृथिवी, (स्त्री० द्वि० व०) द्यौश्च पृथिवी च-द्यावा-देशः। मिलेहुए स्वर्ग पृथिवीका इकट्ठा नाम। जमीन-आस्मान.

द्यु, (पु०) दिव+डिव्-उ० ह्रस्वः। अग्नि। सूर्य। आकका दरख्त। आकाश। दिन (न०).

द्युत्, दीप्ति। चमकना। भ्वा० आ० अक० सेट्। द्योतते। अद्युतत्-अद्योतिष्ट.

द्युति-ती, (स्त्री०) द्युत्+इन् वा ङीप्। कान्ति। शोभा। चमक। प्रकाश.

द्युपति, (पु०) ६ त०। दिनका पति। सूर्य। आकका पेड़। "द्युमणि".

द्युम्न, (पु०) दिव। मनी। आक। धन। दौलत। बल। जोर.

द्यूत, (न०) दिव+क्त। जूआ। पासोंकी खेल। कैतव। [illegible].

द्यूतकार, (त्रि०) द्यूतं करोति। द्यूत+कृ+अण्। पासों आदिकी खेल करनेवाला। जुआरिया। "धूर्त्त" "द्यूतकारक" "कितव" इत्यादि (यही अर्थ).

द्यूतपूर्णिमा, (स्त्री०) द्यूतस्य (द्यूतार्थं वा) पूर्णिमा। जुएकी वा जुएके लिये पूर्णिमा। आश्विनपूर्णिमा। आसूजकी पूर्णिमा। कोजागरी.

द्यूतवृत्ति, (पु०) द्यूतं एव वृत्तिः जीविका यस्य। जुआरी जिसकी जीविका है। सभिक। जुएसे जीविकावाला.

द्यो, (स्त्री०) द्युत्+डो। स्वर्ग। आकाश। आस्मान। बहिश्त.

द्योत, (पु०) द्युत्+घञ् (अ)। प्रकाश। आतप। धूप। चमक.

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

[illegible], (न०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]।

[illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

[illegible]। भ्वा० पर० सक० सेट्। [illegible]। [illegible]। [illegible].

[illegible] (पु०) [illegible] (अन्न)। [illegible] (१४४).

[illegible] (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] है

द्रवत्व, (न०) द्रवति (स्यन्दते)। द्रु+अच्। [illegible] बहनापन, बहनेका कारण, पृथिवी जल और तेजमें रहनेवाला एक गुण (न्यायमें).

द्रवद्रव्य (न०) द्रवतीति द्रवं कर्म०। जल। घी आदि बहनेवाली चीज.

द्रवन्ती, (स्त्री०) द्रु+शतृ। नदी। [illegible]।

द्रविड, (पु०) एक देश। उस देशके निवासी।

द्रविण, (न०) द्रु+इनन्। वित्त (धन)। सोना। बल.

द्रव्य, (न०) द्रु+यत्। पीतल। धन। औषध (चंदन आदि)। दवाई। लाख। विनय। द्रव्य (न्यायमें) पृथिवी आदि नौ। (व्याकरणमें) कि जिसका लिङ्ग और संख्यासे अन्वय हो। "द्रु विकारः"। वृक्षका विकार। वृक्षसम्बन्धी (त्रि०).

द्रव्यपरिग्रह, (पु०) द्रव्यस्य परिग्रहः। पदार्थ अधिकार (लेना).

द्रव्यसंस्कार, (पु०) द्रव्यस्य संस्कारः। [illegible] की शुद्धि (सफाई).

द्रव्यौघ, (पु०) द्रव्यस्य ओघः। द्रव्य (पदार्थ, धन) का समूह.

द्रष्टव्य, (त्रि०) दृश्+तव्य। देखने योग्य (दर्शनीय)। सुन्दर.

द्रष्टृ, (त्रि०) दृश्+तृच्। विचारमें कुशल। [illegible] [illegible])। साक्षी (गवाह)। देखनेहारा

द्रा, भाग। सोना। भागना। अदा० अक० अनिट्। अद्रासीत्.

द्राक्, (अव्य०) द्रा+कु। शीघ्र। जल्दी। [illegible]।

द्राख, [illegible]। भ्वा० पर० सक० सेट्। [illegible]। अद्राखीत्.

द्राक्षा, (स्त्री०) [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]

द्राघिमन्, (पु०) दीर्घस्य भावः। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]

द्राघिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन दीर्घः+इष्ठन्। [illegible]। "[illegible]" "[illegible]" [illegible] [illegible]

द्राण, (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible] ([illegible]। [illegible]। [illegible]

द्रावक, (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible]

द्राविडी, (स्त्री०) [illegible]। [illegible] [illegible]

द्राह्, जागना । भ्वा० आ० अक० सेट् । द्राहते । अद्राहिष्ट.

द्रु, जाना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । द्रवति । अदुद्रवत्.

द्रु, (पु०) द्रवति ऊर्ध्वं । द्रु+डु वा । जो ऊपरको बढता है । वृक्ष । द्रुम । शाखा । डाली.

द्रुघण, (पु०) द्रुं हन्ति अनेन । द्रु+हन्+करणे अप् हन्तः घुनं च । जिससे वृक्षको मारते हैं । मुद्गर । कुल्हाडा । ब्रह्मा । परशुधरवाला । भूमिचम्पक (चम्पा)

द्रुह, मज्जन । डुबकी मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । द्रोहति.

द्रुण, टेढाकरना । तुदा० पर० सक० सेट् । द्रुणति । अद्रोणीत्.

द्रुणस, (त्रि०) द्रु० [illegible] दीर्घा नासिका अस्य । जिसकी वृक्षके समान लंबी नासिका (नाक) हो । लंबेनाकवाला जन (मनुष्य).

द्रुणी, (स्त्री०) द्रुण+अच्+ङीप् (ई) । जलाम्बुवाहिनी । एक पात्र लकडीका जिससे बेडीमेंसे पानी निकालते हैं । क-च्छपी । कछुई (कच्छपकी स्त्री) । कर्णजलौका । कानख-जूरा । कनगजूरा.

द्रुत, (पु०) द्रवति ऊर्ध्वं । द्रु+क्त । ऊपरको बढता है । वृक्ष । जल्दी भागना । गाना और बजाना । और जल्दी । (न०) शीघ्रतावाला (जिसे जल्दी हो) । पिघलाहुआ । भागाहुआ (त्रि०).

द्रुपद, (पु०) चन्द्रवंशमें युधिष्ठिर आदिका श्वशुर (ससुर) एक राजा.

द्रुम, (पु०) द्रु। (शाखा) अस्ति अस्य+म । डालीवाला । वृक्ष । द्रुम । पारिजात । कुबेर.

द्रुह्, अनिष्ट चिन्तन । बुरा सोचाकरना । दिवा० पर० सेट् । द्रुह्यति । अद्रुहत् । द्रोहिता-द्रोग्धा होना.

द्रुहिण, (पु०) द्रुह+इनन् । ब्रह्मा । जगत् रचनेवाला । चतुर्मुख । चार मुखवाला । ब्रह्मा.

द्रेक्, स्वन । शब्दकरना । उत्साहकरना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । द्रेकते.

द्रै, स्वप्न । सोना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । द्रायति । अद्रासीत्.

द्रोण, द्रु+अच्-द्रु+न वा । भारतमें प्रसिद्ध एक योद्धा । द्रोणाचार्य । द्रोणप्रमाण (१६ सेर) । एक प्रकारका काक । एक वृक्ष । बैंतीस सेरका परिमाण (मन) । एक जलाशय (तालाब) जो चारों तरफ लंबा होता है.

द्रोणायन, (पु०) द्रोणस्य अपत्यं+फक् (अयन) । द्रोणा-चार्यकी सन्तान । अश्वत्थामा.

द्रोणि-णी, (स्त्री०) द्रु+अनि वा ङीप् । एक देश । एक नदी । कपुत्रकी द्रोणी (डलेडी) । लकडीका एक पात्र.

द्रोह, (पु०) द्रुह+घञ् । अनिष्टचिन्तन । बुरा सोचना । बैर । दुश्मनी.

द्रौपदी, (स्त्री०) द्रुपदस्य अपत्यं स्त्री+अण् । द्रुपदराजकी कन्या । पाण्डवोंकी स्त्री.

द्वन्द्व, (पु०) द्वौ द्वौ सहाभिव्यक्तौ । दो २ इकट्ठे प्रकट हुए । निपा० । रहस्य (भेद-गुप्तिभा) । कलह (झगड़ा) मिथुन (जोडा) स्त्रीपुरुषका संयोग (मैथुन) । विग्रह (लडाई) । एकप्रकारकी बीमारी । व्याकरणमें समास (जिसमें दोनों पद प्रधान रहते हैं) । [illegible] । दुर्ग । शीत-उष्ण.

द्वन्द्वचर, (पु०) द्वन्द्वीभूय चरति । चर+अच् । जोडाहो-कर विचरता है । चकवाक । चकवा.

द्वय, (न०) द्वौ अवयवौ अस्य । द्वि अवयवे वा । द्वि+अय-ट् । दोकी संख्या । "स्त्री० ङीप्" । दोकी [illegible] (त्रि०).

द्वाः(द्वा)स्थ, (पु०) द्वारि तिष्ठति । द्वार्+स्था+क । द्वारदेश । दरवाजेपर रहता है । द्वारपाल । दरबान । "द्वा (द्वा) स्थित".

द्वात्रिंशल्लक्षण, (स्त्री०) [illegible] । दो और तीस । बैत्तीस.

द्वादश, (त्रि०) द्वादशानां पूरणः+डट् । बारहवें पूरा करनेवाला । जिससे बारहकी संख्या पूरी हो जाती है.

द्वादशकर, (पु०) द्वादश कराः (हस्ताः) अस्य । जिसके बारह हाथ हैं । कार्त्तिकेय और बृहस्पति । "द्वादशभुज".

द्वादशलोचन, (पु०) द्वादश लोचनानि अस्य । जिसके १२ आंख हों । स्कन्द । कार्त्तिकेय । "द्वादशनेत्र" यही अर्थ

द्वादशाङ्गुल, (पु०) द्वादश अङ्गुलयः प्रमाणमस्य [illegible] । बारह अंगुलके प्रमाणका । [illegible] ।

द्वादशात्मन, (पु०) द्वादश आत्मानो (मूर्तिभेदाः) । जिसकी १२ मूर्तियें हैं । सूर्य । [illegible]

द्वापर, (पु०) द्वे परे प्रकारे [illegible] । जिसमें दो प्रकार [illegible] । संशय । युग । सत्ययुग और त्रेताके पीछेका युग (समय) । [illegible] हो जाता है.

द्वामुष्यायण, (पु०) [illegible] । [illegible]

द्वार्, (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । द्वारदेश.

द्वार, (न०) द्द+णिच्+अच् । घर आदिसे निकलनेकी जग- ह । द्वारपाल । दर्वाजा । उपाय । वसीला । मुख । तजवीज.

द्वारका, (स्त्री०) द्वारेण (प्रशस्तद्वारेण) कायति । कै+क । अच्छे दर्वाजेसे शब्द करती है । समुद्रके पास एक तीर्थ है । "द्वारवती" यही अर्थ.

द्वारकेश, (पु०) ६ त० । द्वारकाका स्वामी । श्रीकृष्णदेव.

द्वारप, (त्रि०) द्वारं पाति (रक्षति) । पा+क । दर्वाजेकी रक्षा करनेहारा । द्वारपाल । "पाल्+अण्-ण्वुल् च" यही अर्थ.

द्वारयन्त्र, (न०) ६ त० । दर्वाजेकी कला । ताला (अंद- रा) । कुलुफ.

द्वारवती, (स्त्री०) द्वाराणि (मोक्षोपायाः) सन्ति अस्य । मतुप्-दीर्घः । जहां मोक्षके उपाय हैं । एक तीर्थ । "द्वार +अस्त्यर्थे टप्" । "द्वारिका" यही अर्थ.

द्वारिन्, (त्रि०) द्वारं (पाल्यत्वेन) अस्ति अस्य+इनि । जिसे दरवाजेकी रक्षा करनी पडती है । द्वारपाल । दरबान.

द्वाविंशति, (स्त्री०) अधिका विंशतिः । द्वौ च विंशतिश्च आत्वं । दो अधिक बीस । वा दो और बीस । बाईस । बाई.

द्वि, (त्रि०) द्वि० ब० । द्वु+ड । द्वित्वसंख्या । दोकी गिन- ती । दो.

द्विक, (पु०) द्वौ कौ (ककारौ) यत्र । जहां दो ककार हैं । कौआ । "द्वि अवयवे कन्" दोकी संख्या । दो संख्या- वाला (त्रि०).

द्विककुद्, (पु०) द्वे ककुदे यस्य । अन्त्यलोपः । जिसके दो कुबड (कूड) हों । उष्ट्र । ऊंट । ऊंट.

द्विगु, (पु०) व्याकरणमें कहागया एक समास (जिसमें संख्यावाचक शब्द पहिले रहता है) ६ ब० । दो गौओंका मालिक (त्रि०).

द्विगुण, (त्रि०) द्वाभ्यां गुण्यते । गुण+कर्मणि क । दोसे गुणाकिया । दूना.

द्विगुणाकृत, (त्रि०) द्विगुणं कृतं हुआ हुई । डाच्+कृ+क्त । दूना करके खेतमेंगया । दोवार जोता (बाहा) गया खेत.

द्विज, (पु०) द्विर्जायते । जन्+ड । दोवार जन्मता है । ब्राह्मण । ब्राह्मण आदि तीनों वर्ण । दांत । पक्षी (अण्डे- से निकलना) । तुम्बुरुका एक वृक्ष । संस्कार किया गया ब्राह्मण.

द्विजदेव, (पु०) द्विजेषु देव इव । दो बार जन्मवालोंमें अच्छे देवता है । ब्राह्मण । ऋषि.

द्विजन्मन्, (पु०) द्वि जन्मनी यस्य । जिसके दो जन्म हैं । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य (तीनों वर्ण) । दांत । अण्डेसे निकला । पक्षी.

द्विजबन्धु, (पु०) द्विजो बन्धुरिव । द्विज जिसका बंधु है । (जाति मात्रसे ब्राह्मण) । कर्मसे रहित

जन्ममात्रसे जीनेहारे नीच ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य.

द्विजराज, (पु०) ६ त० । टच् समा० । द्विजोंका चन्द्र । चांद । अनन्त । गरुड । पक्षियोंका राजा.

द्विजवर, (पु०) द्विजेषु वरः । द्विजोंमें श्रेष्ठ । विप्र । ब्राह्मण.

द्विजाति, (पु०) द्वे जाती (जन्मनी) यस्य । (जिसके दो जन्म हैं) । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य (तीन वर्ण).

द्विजिह्व, (पु०) द्वे जिह्वे यस्य । जिसकी दो जीभ हैं (सांप) । खल (नीच) । चोर । चुगल (दो प्रकारकी बातें करनेहारा) (त्रि०).

द्वितय, (त्रि०) द्वौ अवयवौ यस्य । द्वि अवयवे । +तयप् । द्वित्वसंख्यान्वितं (दोकी संख्यावाला) संख्या (न०).

द्वितीय, (त्रि०) द्वयोः पूरणः । दोको पूरा करनेहारा । द्वितीया तिथि (दूज) (स्त्री०) । "अंश" दूसरा हिस्सा.

द्वितीयाकृत, (त्रि०) द्वितीयं कृतं हुआ हुई । डाच् । दोवार करके सींचा गया । दोवार जोता गया खेत.

द्विदत्, (त्रि०) द्वौ दन्तौ यस्य । दन्तको दत् आदेश है । वयसि । दो दांतोंसे पहिचानी गई अवस्था । दांतवाला । बैल आदि । त्रियां भी.

द्विदैव, (पु०) द्वौ देवौ अस्य+अण् । जिसके दो देवता हैं । विशाखा नामी नक्षत्र (तारा) । इसके इन्द्र और अग्नि देवता हैं.

द्विधा, (अव्य०) द्विप्रकारं । द्वि+धाच् । दो प्रकार दोतरहसे.

द्विप, (पु०) द्वाभ्यां (मुखशुण्डाभ्यां) पिबति । पा+क । (मुं और सूंड) से पीता है । पा+क । हाथी ।

द्विपद्, (पु०) द्वे पदे यस्य । जिसके दो पैर हैं । मनुष्य । देवता । पक्षी । राक्षस । ऋषि.

द्विपदा, (स्त्री०) द्वौ पादौ अस्याः (पादके अन्तमें लोप होता है) डाप् । ऋग्वेदका एक मन्त्रविशेष । ऋचा का भेद (जिसके दो पाद होते हैं) । "टाप्" यही अर्थ.

द्विमातृक, (पु०) द्वे मातरौ यस्य । जिसकी दो माता हों । गणेश और जरासन्धको पालन किया गया जरासंध.

द्विमुख, (पु०) द्वे मुखे यस्य । दो मुंहवाला । दो मुखवाला (त्रि०).

द्विरद, (पु०) द्वौ रदौ यस्य । जिसके दो दांत हैं । हाथी । दो दांतवाला (त्रि०).

द्विरागमन, (न०) द्विः आगमनं आगमनं । दो बार आना । विवाहके अनन्तर दूसरा फिर पिताके घर से मुकलावा । गौना.

द्विरुक्त, (त्रि०) द्विः उक्तं । (निपाद-सगड़ा) शाटिमें दोवार बोलगया । दोवार बदलगया । (व्याकरणमें) अभ्यस्तसंज्ञावाला.

द्विरूढा, (स्त्री०) द्विवारं ऊढा । वह+क्त । दोवार विवाही-गई स्त्री.

द्विरेफ, (पु०) द्वौ रेफौ (वाचकनाम्नि) यस्य । जिसके नामको बतानेहारे दो रेफ अर्थात् "रकार" हैं । भ्रमर । भौंरा.

द्विवचन, (न०) द्वौ वक्ति, द्वौ वा उच्येते अनेन । दो कहता है वा दो जिस्से कहे जाते हैं । (व्याकरणमें) दोको बतानेहारा प्रत्यय.

द्विवार्षिक, (त्रि०) द्वयोः वर्षयोः भवः+ठञ् । दो वर्षोंमें हुआ । दो बरसके चावल आदि.

द्विशफ, (पु०) द्वौ शफौ यस्य । जिसके दो खुर हैं । गौ, बकरी, भेंस आदि.

द्विशस्, (अव्यय) द्वौ द्वौ ददाति करोति वा । दो २ देना वा करना है । दोवार.

द्विष्, वैरकरना । अदा० उभ० सक० अनिट् । द्वेष्टि-द्विष्टे । अद्विक्षत्-अद्विक्षत.

द्विषत्, (पु०) द्विष्+शतृ । वैर करता हुआ । शत्रु । वैरी दुश्मन.

द्विषन्तप, (पु०) द्विषन्तं तापयति+तप्-णिच्-खच्+मुम्. शत्रुघ्न । जो वैर करते हुएको तपाता है । शत्रुओंका तपा-नेहारा.

द्विष्ठ, (त्रि०) द्वयोः तिष्ठति । स्था+क यत । दोनोंमें ठहरता है । दोनोंके बीचका । संयोग आदि पदार्थ.

द्विस्, (अव्य०) द्वि+सुच् । दोवार कीगई क्रिया । दोवार.

द्विस्तरति, (स्त्री०) ... । द्वौ ... आर्य । दो ऊपर पत्तर वा दो ओर पत्तर । ... पीतल.

द्विहल्य, (त्रि०) द्विवारं हलेन हल्यम् । यत् । दोवार हलसे खेला गया । दोवार हलसे खेला हुआ खेत (क्षेत्र).

द्विहायनी, (स्त्री०) द्वौ हायनौ (वर्षौ) यस्याः । जिस-की उमरका मान दो वर्षका है । ङीप् । दो बरसकी गौ.

द्विहृदया, (स्त्री०) द्वे हृदये यस्याः । जिसके दो हृदय हैं । गर्भवती स्त्री । (अपना और गर्भका हृदय)

द्वीन्द्रियग्राह्य, (पु०) द्वाभ्यां (नेत्रत्वगिन्द्रियाभ्यां) ग्राह्यः । जो दोनों (नेत्र और त्वचा) इन्द्रियोंसे ग्रहण किया जाता है । (न्यायमें) संख्यासे लेकर परत्व-अपरत्व, द्रव्य और वेग (ये गुण दोनों इन्द्रियोंसे जानेजाते हैं).

द्वीप, (न०) द्वयोः पार्श्वयोः आपः यस्य । जिसके दोनों ओर पानी हो । पानीके बीच ... । समुद्र आदिसे घिरेहुए पृथि-वीके ... । ... । द्वीप । ... । टापू.

द्वीपवत्, (पु०) द्वीप+अस्ति अर्थे मतुप्-मको व होताहै । द्वीपवाला नद (बड़ा दर्या) । समुद्र । नदी और भूमि (स्त्री०) ङीप्.

द्वीपिन्, (पु०) द्वौ वर्णौ यस्ते । ... । द्वीपं (द्विवर्णं) चर्म । तद् अस्ति अस्य+इनि । जिसका चमड़ा दुरंगा हो । चीता । बाघ । एक प्रकारका बाघ (मेडिया).

द्वृ, संवरणे । ढांकना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । द्वरति । अद्वार्षीत्.

द्वेधा, (अव्य०) द्वि+प्रकारे धमुञ् दो ... है । द्विधा । दो तरहसे

द्वेष, (पु०) द्विष्+घञ् । विरोध । वैर । दुश्मनी । ... ।

द्वेषण, (त्रि०) द्विष्+युच् (अन) । शत्रु । दुश्मन । "अने ल्युट्" वैर (न०)

द्वेष्य, (त्रि०) द्विष्+ण्यत् (य) । शत्रु । दुश्मन । विरोधी.

द्वैगुणिक, (त्रि०) द्विगुणं गृह्णाति एकगुणं प्रयच्छति ठक् । जो दुगुना लेकेको एकगुना देता है । वृद्धि (ब्याज) खा-जीनेवाला । ... । ब्याज बटानेवाला

द्वैत, (न०) द्विधा इतं द्वीतं तस्य भाव+अण् । दो प्रकारके भेदवाला । दोकी संख्या । "अद्वैत" की भाईके भेदवाला (त्रि०)

द्वैतवन, (न०) द्वे इते (गते) ... । ... । जिसमें दोनों चले रहे हैं । शोक, मोह, सुख, दुःख आदि ... रहित । एक बन

द्वैतवादिन्, (त्रि०) द्वैतं वदति । ... । जो दो करके बोलता है । जीव और ईश्वरका भेद ... करके ... नैयायिक आदि.

द्वैध, (न०) द्वि+प्रकारे धमुञ् । ... ।

द्वैप, (पु०) द्वीपिनो विकार+अण् । ... (...) ... । ... ।

द्वैपायन, (पु०) द्वीप अयन (जन्मभूमि) यस्य । ... । ... । जिसकी जन्मभूमि द्वीप है । ... । ... ।

द्वैमातुर, (पु०) द्वयोः मात्रोः अपत्यं+अण् । ... । दो माताओंका लड़का । ... और ... । ...

द्व्यणुक, (न०) द्वाभ्यां अणुभ्यां (परमाणुभ्यां) ... । ... दो परमाणुओंसे हुआ । ... ।

द्व्यह, (...) ... (...) । ... । जो ... और ... होता है । ... । ... ।

द्व्यामुष्यायण, (पु०) अमुष्य (...) अपत्यं (...) ... । ... और ... करके जो ... है । ... हुआ.

ध

धः, (पु०) धे-धावा+ड । धर्म । कुबेर और ब्रह्मा । धन (दौलत) (न०).

धक्क्, नाशकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । धक्कयति-ते । अदधक्कत्-त.

धट, (पु०) धन्+अच्-टान्तादेशः । तुला । लकड़ी । तराजू । दिव्य प्रमाणरूप एक प्रकारकी परीक्षा । ७ वीं राशि.

धटक, (पु०) एक परिमाण-माप (४२ रत्तीका होताहै).

धण, ध्वान । शब्द करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । धणति । अधाणीत्-अधणीत्.

धत्तूर, (पु०) धयति धातून् । धा+ऊर कृ० । जो धातुओंको फूंकता है । धतूरा.

धन्, धानोंको उत्पन्न करना । जुहो० पर० सक० सेट् । दधन्ति । अधानीत्-अधनीत्,

धन्, रव । शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । धनति । अधानीत्-अधनीत्,

धन, (न०) धन्+अच् । वसु । अर्थ । दौलत । धन । सेद । निधान । धनिष्ठा नक्षत्र (तारा).

धनञ्जय, (पु०) धनं जयति । जि+खच्-मुम्च । जो धनको जीतता है । अर्जुन । वह्नि (आग) । एक हाथी । पुष्टकरनेवाला शरीरका वायु (पेटको फुला देता है) । [illegible].

धनद, (पु०) धनं ददाते-देनेवाला-बचाता । जो धनकी रक्षा करता है । कुबेर । हिज्जल वृक्ष । "दा+क" धनके देनेहारा (त्रि०).

धनदण्ड, (पु०) धनस्य दण्डः । धनका दण्ड (सजा) । जुर्माना.

धनदानुचर, (पु०) ६ त० । धनदका अनुचर । यक्ष (एक प्रकारका देवता) (कुबेर यक्षोंका राजा होनेसे).

धनदानुज, (पु०) ६ त० । कुबेरका छोटा भाई । रावण.

धनपति, (पु०) धनस्य पतिः । धनका स्वामी (मालिक).

धनपाल, (पु०) धनं पालयति उप० स० । धनका पालन करनेहारा । कुबेर.

धनमद, (त्रि०) धनेन मदः यस्य । धनसे मद होनेवाला । [illegible].

धनवत्, (त्रि०) धन+मतुप् । धनवान्.

धनव्यय, (पु०) धनस्य व्ययः । धनका व्यय (खर्च).

धनहर, (पु०) धनं हरति उप० स० । धनको हरनेवाला । [illegible] । चोर.

धनहार्य, (त्रि०) धनेन हर्तुं-अर्हः [illegible] । धनसे वश [illegible]

धनहीन, (त्रि०) धनेन हीनः तृ० त० । निर्धन । धनसे रहित

धनाधिप, (पु०) ६ त० । कुबेर धनोंका मालिक

धनिक, (पु० न०) धनिवत् कायति । [illegible] समान शब्द करता है । धन्याक (धनियां) । (दौलत) (पु०) । "धनं विद्यते अस्य" [illegible] पास धन हो (धनी-दौलतमंद) । [illegible] धन-कर्जा देनेहारा (त्रि०).

धनिष्ठा, (स्त्री०) अतिशयेन धनवती । [illegible] लोप होता है । बहुत धनवाली । [illegible] नक्षत्र (तारा).

धनुर्गुण, (पु०) ६ त० । धनुषका गुण (चिल्ला) [illegible] चिल्ला.

धनुर्ग्रह, (प्रादिः) (पु०) धनुः गृह्णाति धनुष [illegible] को पकड़नेवाला.

धनुर्ज्या, (स्त्री०) धनुषः ज्या । धनुषका चिल्ला.

धनुर्धर, (पु०) धनुः धारयति । धृ+अच् । [illegible] पकड़ता । धानुष्क । तीरन्दाज । तीर चलानेहारा.

धनुर्विद्या, (स्त्री०) धनुषः विद्या । धनुषकी [illegible]

धनुर्वेद, (पु०) धनुषः वेदः । यजुर्वेदका [illegible] शास्त्र कि जिसमें शस्त्र और अस्त्र चलाने [illegible] करनेहारे मन्त्र पाये जाते हैं.

धनुर्वेदिन्, (पु०) धनुः वेत्ति । धनुर्विद्या [illegible] शिवजी.

धनुष्पाणि, (त्रि०) धनुः पाणौ यस्य । जिसके [illegible] धनुष है.

धनुष्मत्, (पु०) धनुः अस्ति अस्य-मतुप् [illegible] धानुष्क । तीरंदाज.

धनुस्, (पु०) धन्+उसि । पियालका वृक्ष । [illegible] पकड़नेहारा (त्रि०) चाप । धनुष । तीर । [illegible] राशि (न०).

धन्य, (पु०) धनाय हितम् । धनके लिये हितकारी । [illegible] असम्बन्धीका वृक्ष । श्लाघ्य । नष्टहनेवाला । [illegible] भाग्य । पुण्यशील । धन देनेहारा [illegible] । [illegible] हितकारी । धनके कारण (त्रि०).

धन्यंमन्य, (त्रि०) आत्मानं धन्यं मन्यते-मन् [illegible] अपने आपही धन्य माननेवाला । जो अपने [illegible] भाग्यवान् समझता है.

धन्यवाद, (पु०) धन्यस्य वद्+घञ् [illegible] प्रशंसा करके पुकारी.

धन्याक, (न०) धन+आकन् । त्रि० । [illegible] एक वृक्ष.

धन्वन्, (त्रि०) धन्व+कनिन् । मरु । [illegible] (बिजली) देश.

धन्वन्तरि, (पु०) धन्वन् (शिल्पशास्त्रं) तस्य अन्तं इयर्ति । ऋ+इन् । शिल्पशास्त्र । (कारीगरीकी) विद्या-का अन्त करनेहारा । स्वर्गका एक वैद्य (हकीम जो समुद्र-के मथन करनेमे नारायणका अंश प्रकट हुआ) । दिवो-दास नामी काशीका राजा । विक्रमादित्यकी सभामें बैठने-हारा एक पण्डित.

धन्वी, (पु०) धन्वं विद्यते अस्य+इनि । अर्जुन । ककुभका वृक्ष । दुरालभा । और बकुल । विदग्ध । चतुर । धनुष पकडनेहारा (त्रि०).

धम्, धब्दकरना । तुदा० पर० सक० सेट् । धमति । अधमीत्.

धमक, (पु०) धम्+ण्वुल् (अक) । फुंकनेहारा लुहार । लोहार.

धमन, (पु०) धम्यते अनेन । धम्+ल्यु (अन) । नल । धौंकनी (फूंकनी) के धौंके (फुंकने)हारा । क्रूर । (बेर-हम) (त्रि०).

धमनि-नी, (स्त्री०) धम्+अनि वा ङीप् । नाडी । शिरा । ग्रीवा (गर्दन) । हल्दी.

धम्मिल्ल, (पु०) धम्+विच्+मिल्+क-पृ० । संयतकेश । बंधेहुए बाल । मध्यमें फूल रखकर ऊपरसे मोतिओं वा और किसी रत्नकी लडिओंसे बंधाहुआ बालोंका जूडा.

धर, (पु०) धृ+अच् । पर्वत (पहाड) कच्छुओंका राजा । वसुओंमेंसे एक । कार्पासतूल । कपासका सूत्र (धागा वा तार).

धरण, (पु०) धृ+ल्युट् (अन) । एक पहाड । लोक । स्तन । धान । सूर्य । सेतु (पुल) । चौबीस वा दस रत्तिओंका भार.

धरणि, (पु०) धृ+अनि वा ङीप् । पृथिवी (जमीन) वनका कंद (स्त्री०).

धरणि(णी)धर, (पु०) धरणिं(णीं) धरति । धृ+अच् । पर्वत । (पहाड) । विष्णु । और कच्छप (कछुआ अवतार).

धरणिपति, (पु०) धरण्याः पतिः । पृथिवीका पति (मालिक) राजा.

धरणीधर, (पु०) धरणीं धारयति । पृथिवीको उठाता है । शेषनाग । विष्णु । पर्वत । पहाड । कच्छ । राजा । दिग्गज.

धरा, (स्त्री०) धृ+अच् । पृथिवी । गर्भका आशय । (वीर्य-की जगह) । जरायु । मेद (चर्बी) को उठानेहारी नाडी.

धरात्मजा, (स्त्री०) धरायाः आत्मजा । पृथिवीकी पुत्री । सीता । रामभार्या.

धराधर, (पु०) धरां धारयति । धृ+अच् । जो पृथिवीको धारण करता है । पर्वत । विष्णु (वराह-सूअररूप).

धरामर, (पु०) धरायां अमर [illegible] । पृथिवीपर मनों देवता है । ब्राह्मण । "भूदेव" आदि शब्दभी इसी अर्थमें है.

धरित्री, (स्त्री०) धृ+इत्र् । ङीप् । पृथिवी । भूमि । जमीन.

धर्म, (पु० न०) धृ+मन् । जो (नदी-संसाररूपमें बहे जाते-को) पकडता है । श्रुति (वेद) स्मृति (धर्मशास्त्र) में कहा गया कर्म । कर्मसे उपजा अदृष्ट (शुभ वा अशुभ) । आत्मा (देहको धारण करनेसे) जीव । आचार । स्वभाव । उपमा । यज्ञ आदि । अहिंसा (किसीको न मारना) । न्याय-उपनिषद् । यमराज । सत्सङ्ग । धनुष् । (ज्योतिषमें) लग्नसे नवम (नवां) स्थान । दान आदि (न०).

धर्मक्षेत्र, (न०) धर्मका क्षेत्र । (स्थान) । कुरुक्षेत्र (जहां कौरव और पाण्डव अत्यन्त घोर युद्ध हुआ) ६ त० । धर्मका स्थान.

धर्मगुप्त, (त्रि०) धर्मः गुप्तः अनेन । धर्मकी रक्षा करनेवाला.

धर्मचारिणी, (स्त्री०) धर्मं (दाम्पत्यधर्मं) चरति चर+णिनि । जो धर्मको करती है । भार्या । जाया । (स्त्री०) । जोरू । एक लता (बेल)

धर्मजिज्ञासा, (स्त्री०) धर्मस्य जिज्ञासा=(ज्ञातुं इच्छा) (स्त्री०) धर्म (नियम) जाननेकी इच्छा.

धर्मदान, (न०) किसी प्रयोजनको चित्तमें न रखके धर्म-बुद्धिसे जो वस्तु पात्र (योग्य पुरुष)को दीजाय.

धर्मद्रवी, (स्त्री०) धर्मजनको द्रवो यस्याः । जिसका बहना धर्मको उत्पन्न करता है । गङ्गा "महानदी" " देवनदी."

धर्मध्वजिन्, (त्रि०) धर्मो ध्वज [illegible] अस्ति अस्य+इनि । जिसका धर्म झण्डेकी नाईं हो । जीविकाके लिये जटा आदि रखनेहारा.

धर्मपत्नी, (स्त्री०) धर्मार्थं पत्नी । धर्मके लिये स्त्री । पहिले विवाही गई अपने वर्णकी स्त्री । कीर्ति । लक्ष्मी । स्तुति । मेधा । धृति । क्षमा.

धर्मपुत्र, (पु०) ६ त० । धर्मका पुत्र । युधिष्ठिर.

धर्मपाठक, (पु०) धर्मस्य पाठकः ६० त० । धर्मशास्त्रके पढानेवाला.

धर्मराज, (पु०) धर्मस्य राजा+टच् । धर्मका राजा । यमराज.

धर्मराज, (पु०) धर्मेण राजते+अच् । धर्मसे शोभा पाता है । "धर्मस्य राजा च+टच् समा०" धर्मका राजा । यमराज और युधिष्ठिर.

धर्मलक्षण, (न०) धर्मो लक्ष्यते अनेन । लक्ष्+ल्युट् । जिससे धर्म पहिचाना जाता है । धृति, क्षमा, दम, चोरी, शौच, इन्द्रियोंको रोकना, धी, विद्या, सत्य और क्रोध न करना ये दस.

धर्मवाद, (पु०) धर्मस्य वादः । धर्मविषयक विवाद (झगडा).

धर्मविधि, (पु०) धर्मस्य विधिः । धर्मका नियम । धर्मकी हुक्म.

धर्मविप्लव, (पु०) धर्मस्य विप्लवः। विप्लवका होजाना। दुराचार.

धर्मशास्त्र, (न०) धर्मप्रतिपादकं शास्त्रम्। धर्मका वर्णन करनेहारा शास्त्र। मनु आदिने रचाहुआ स्मृतिशास्त्र.

धर्मशील, (त्रि०) धर्मः शीलं यस्य। जो सदा धर्मविधिका अनुष्ठान करता है। धार्मिक। धर्म करनेहारा.

धर्मसंस्थापन, (न०) धर्मस्य सम्यक् (अधर्मनिराकरणेन) स्थापनम्। अधर्मको दूर करके धर्मको स्थिर करना। "धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे" गीता। वेदमें कहेहुए धर्मको धारण करना.

धर्मसंहिता, (स्त्री०) धर्मप्रतिपादकं संहिताभाग-(पिता [illegible]। धर्मकी इनिके लिये रचीगई। मनु आदिने कहाहुआ धर्मको प्रतिपादन करनेहारा शास्त्र.

धर्मसेतु, (पु०) धर्मस्य सेतुः। धर्मका सेतु (पुल)। शंकर.

धर्माचार्य, (पु०) धर्मस्य आचार्यः। धर्मका आचार्य (गुरु)। [illegible] गुरु.

धर्मात्मज, (पु०) धर्मका आत्मज। धर्मका पुत्र। युधिष्ठिर.

धर्माध्वज, (पु०) धर्म ध्वज (जताने) वाला। जिसका [illegible] है। [illegible] लगानेहारा.

धर्माधिकरण, (पु०) धर्माणां अधिकरणं [illegible]। "धर्माधि[illegible]"। [illegible] अधिकार किया जाता है। धर्मा[illegible] (कुर्सी) [illegible] धर्मशास्त्रों [illegible] है। [illegible] धर्मका [illegible] जिससे [illegible] विचार [illegible] है)। [illegible] (न०)

[illegible]

धर्म्य, (त्रि०) धर्मात् अनपेतः, धर्मेण [illegible] धर्मसे न छूटाहुआ। [illegible] धर्मसे लाभ करनेलायक.

धर्ष, (पु०) धृष्+घञ्। प्रागल्भ्य (चतुराई)। [illegible] (घमण्ड)। शक्तिबंधन (ताकतका रोकना)। [illegible] (मेल मलना)। हिंसा (मारना)। [illegible]

धर्षण, (न०) धृष्+भावे ल्युट् (अन)। [illegible] करना। मलमल करना)। "कर्मणि ल्युट्" [illegible] (स्त्रियोंके मिलनेकी खातिर संकेतकियेहुए [illegible]

धर्षित, (न०) धृष्+भावे क्त। मैथुन (भोग करना और "कर्मणि क्त"। कृतधर्षण (अपमान किया[illegible]) [illegible] कियाहुआ (त्रि०)। असती स्त्री (व्यभिचारिणी)[illegible]

धव्, गती। जाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। [illegible] धवति। अधवीत्.

धव, (पु०) धवति धुवति धुनोति धुनाति। [illegible] पति (मालिक)। स्वामि[illegible]। धूर्त (मक्कार आदमी) [illegible] आने नामका वृक्ष। "भावे अप्"। कम्प[illegible]

धवल, (पु०) [illegible] (कपूर) [illegible] [illegible] मिर्च। अच्छा बैल। चीन देशका [illegible] रंग (वर्ण)। सफेद रंगवाला। और सुन्दर ([illegible] [illegible] रंगकी गौ (स्त्री०).

धवलपक्ष, (पु०) धवली पक्षौ यस्य। जिसके [illegible] पर हैं। हंस। कर्म०। शुक्लपक्ष। [illegible]

धवलमृत्तिका, (स्त्री०) कर्म०। खडिनी। [illegible] मट्टी। सफेद मट्टी

धवलोत्पल, (न०) कर्म०। [illegible] रातको खिलनेहारा कमल.

धवित्र, (न०) धूननेऽत्र (धूञ्+त्र)। [illegible] जाता है। वायु। पंखा। पखा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धारागृहम्, (न०) धारायाः गृहम्। छमाछम पानी बरसने-का घर। भुआरेवाला घर (नहानेका कमरा).

धाराट, (पु०) धारार्थं अटति+अच्। जो (मेघकी) धाराके लिये घूमता है। पपीहा (चातक)। घोडा। बादल। मत्तगज। मस्त हाथी.

धाराधर, (पु०) धारयति। धृ+णिच्+अच् ह्रस्वः। जिसकी धारा होतीहै। मेघ। बादल। मेह। मीं। मींह.

धारानिपात, (पु०) धारायाः निपातः। वृष्टि (वर्षा)-का गिरना। छमाछम भारी वृष्टिका पड़ना.

धारावाहिन्, (त्रि०) धारया (सन्तत्या) वहति। वह्+णिनि। जो निरन्तर बहताहै। निरन्तर गिरनेहारा। धीरे २ लगातार हो रहा। "स्वार्थे कन्" "धारावाहिक" यही अर्थ.

धारासम्पात, (पु०) धाराणां सम्पातः (पतनम्)। (पानीकी) धाराका गिरना। महावृष्टि। बड़ी वर्षा। बहुत बरसना.

धारिणी, (स्त्री०) धृ+णिनि। जो धारणकरे भूमि। (जमीन)। सिम्भलका पेड.

धारिन्, (पु०) धृ+णिनि। पीलुका वृक्ष। धारण करनेहारा। आसरा देनेहारा। बचानेहारा (त्रि०).

धार्तराष्ट्र, (पु०) धृतराष्ट्रे (कुराजदेशे) भव+अण्। अच्छे राजावाले देशमें हुआ। अथवा कुराजनाम देशमें हुआ। एक गोर। एक हंस (जिसकी चोंच और चरण (पांव) काले रंगके हो और शरीर चिट्टा हो)। "धृतराष्ट्रस्य सापत्यं+अण्" । धृतराष्ट्रकी सन्तान। दुर्योधन आदि.

धार्म, (त्रि०) धर्मस्य इदं+अण्। धर्मसंबंधी। धर्मका.

धार्मिक, (त्रि०) धर्मं चरति (सततं अनुशीलयति)+ठक्। जिसका निरन्तर धर्महीं करनेका अभ्यास है। धर्मशील। धर्मात्मा। धर्मकर्ता। धर्मी.

धार्ष्ट्य, (न०) धृष्टस्य भावः+ष्यञ्। ढीठपन। निर्लज्जता। बेशर्मी.

धाव्, जव। जल्दी चलना। भागना। अक० सेट्। और शुद्धि। साफ करना। भ्वा० आ० अक० सेट्। धावते। अधावि-ष्ट (जब "सृ" को "धाव" आदेश होता है तब परस्मैपदी है).

धावक, (पु०) धाव्+णिच्+ण्वुल्। रजक (धोबी रंगरेज)। धाव्+ण्वुल्। जल्दी जानेहारा। शीघ्र। भागने-हारा। (त्रि०) धावनेवाला.

धावन, (न०) धाव्+ल्युट्। शोधन। साफकरना। जल्दी जाना.

धावल्यम्, (न०) धवलस्य भावः। सितता। श्वेतता.

धावित, (त्रि०) धाव्+क्त। शुद्ध किया गया। दौड़ा हुआ। भागा हुआ.

धि, धृति। पकड़ना। रखना। तु० पर० सक० धियति। अधेषीत् (सं-के साथ इसका अर्थ सन्धि करना).

धिक्, (अव्य०) अनिष्ट शब्दोंसे भय उपजाना। निन्दा। "धिग् धिग् शक्रजितम्" इति। निन्दाके लायक। छिः, शरम, शोकके अर्थोंमें प्रायः द्वितीया होती है। "धिक्तां च तं च मदनं च इमां च मां च".

धिक्कार, (पु०) धिक्+कृ+घञ्। तिरस्कार। बेइज्जती.

धिक्कृत, (त्रि०) धिक् (निन्दनीय) कृत। निन्दाके योग्य कियागया। निर्भर्त्सित। तिरस्कार कियागया.

धिक्ष्, सन्दीपन। जगाना। रहना। सक०। क्लेश अर्थमें अक० भ्वा० आत्म० सेट्। धिक्षते।

धिषण, (पु०) धृष्+क्यु-धिष्का आदेश। देवताओंके गुरु.

धिषणा, (स्त्री०) धृष्णोति अनया। धृष्+क्यु-धिष् आदेश। जिससे धीरज और बहादुरी करता है। बुद्धि।

धिष्ण्य, (न०) धृष्+ण्य-नि०। स्थान। जगह। घर। शक्ति। ताकत और तारा। अग्नि-आग। रकी आग। और शुक्र (पु०) ऊंचे पदके योग्य

धी, अनादर। खयाल न करना। तिरस्कार करना। करना। सेवा करना। दिवा० आत्म० सक० धीते-अधेष्ट। धीन..

धी, (स्त्री०) ध्यै+क्विप् सम्प्रसारणं च। बुद्धि। ज्ञान। अक्किल। समझ.

धीति, (स्त्री०) धे+क्तिन् (ति)। पीना। स। (वेदमें) अंगुलियें। खयाल। बेइज्जत करना-खयाल न करना.

धीन्द्रियम्, (न०) चक्षु, श्रोत्र आदि इन्द्रिय.

धीमत्, (पु०) धी (प्रज्ञा) अस्ति अस्य-मतुप्। बृहस्पति। बुद्धिवाला-पण्डित आदि (त्रि०).

धीर्+अव तिरस्कार करना। चुरा० उभ० सक० (बिना "अव" उपसर्ग इसके पहिले रहता है। धीरयति-ते। अदीधिरत्.

ट, (त्रि॰) धियं राति (रा+क) धियं ईरयति (ईर +अण्) धीरजवाला (हौंसलेवाला) । नम्र (हलीम) । अक्लवाला और पण्डित । राजा बलि । बुद्धिको प्रेरनेहारा । बुद्धिका साक्षी (गवाह) और परमेश्वर (पु॰) केसर (न॰) एक नायिका । ठहरीहुई चित्तकी वृत्ति (स्त्री॰).

ट्चेतस्, (त्रि॰) धीरं चेतः यस्य । ब॰ स॰ । धीर चेतवाला । पक्का । दृढ । धीरजवाला.

टता, (स्त्री॰) धीरस्य भावः+तल् । धीरपना । हौंसला.

टप्रशान्त, (पु॰) धीरः प्रशान्तश्च । कर्म॰ स॰ । किसी काव्य वा नाटकका नायक जो धीर और शान्त स्वभाववाला है

टोदात्त, (पु॰) एक नायक (एक प्रकारका पुरुष).

धर, (पु॰) दधाति मत्स्यान् । धा+ष्वरच्-नि॰ । कैव-र्त । मच्छी पकडनेहारा.

शक्ति, (स्त्री॰) ६ त॰ । शुश्रूषा (सेवा) आदि आठ प्रकारके गुण.

सख, (पु॰) धियः सखा । टच्-समा॰ । अमात्य (वजीर) बुद्धिका मित्र.

सचिव, (पु॰) मन्त्री-वजीर । "धीसख" यही अर्थ.

कम्पन । कांपना । भ्वा॰ उभ॰ सक॰ अनिट् । धुनोति-धुनुते । अधौषीत् अधोष्ट.

क्ष्, सन्दीपन । जगाना । रहना । भ्वा॰ आ॰ सक॰ सेट् । धुक्षते । अधुक्षिष्ट.

त, (त्रि॰) धु+क्त । छोडागया । कांपगया । त्यक्त । कोपित । कम्पित.

नि-नी, (स्त्री॰) धुनोति वेगवतीन् । जो वेगआदिको कंपाती है । नदी (दर्या).

धुमार, (पु॰) धुन्दरभ राजाका पुत्र । इन्द्रगोपकीट । (बीरबहूटी).

र्-रा, (स्त्री॰) धुर्व+क्विप्-वा टाप् । चिन्ता (फिकर) । रथ आदिके आगेका भाग (हिस्सा) । गाडीका धुं और भार (बोझा).

रन्धर, (त्रि॰) धुरं धारयति । धृ+णिच्+खच्-मुम्-ह-स्व । भारवाहक (बोझा उठानेहारा) बैल आदि । बोझा उठानेहारा

रीण, (त्रि॰) धुरं वहति+ख । बोझा उठाता है । श्रेष्ठ । अच्छा.

र्य, (त्रि॰) धुरं वहति+यत् । भार उठानेहारा । अच्छा.

र्व, हिंसा मारना-भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट् । धुर्वति । अधु-र्वीत् । धूर्त .

वित्र, (न॰) धु+इत्र । यज्ञ आदिमें आगको (संधुक्षण) सुलगाना.

धू, कांपना । भ्वा॰ उभ॰ सक॰ वेट् । धवति-ते । अधा-वीत् । अधविष्ट । अधोष्ट.

धू, कांपना । वा चुरा॰ उभ॰ पक्षे तुदा॰ पर॰ सक॰ सेट् । धूनयति-ते । धुवति । अदूधुनत्-अधुवीत्.

धू, कांपना । स्वा॰ क्र्यादि॰ उभ॰ सक॰ वेट् । धूनोति-धूनुते । धुनाति-धुनीते.

धूत, (त्रि॰) धू+क्त । कांप गया । चलागया । पंखा किया-गया । छोडा गया । जुदा कियागया । छिड़कागया.

धूप्, दीप्ति । चमकना । चुरा॰ उभ॰ अक॰ । जगाना-स-क॰ सेट् । धूपयति-ते.

धूप्, तपना-अक॰ तपाना-सक॰ भ्वा॰ पर सेट् । धूपायति.

धूप, (पु॰) धूपयति रोगान् (दोषान् वा) धूप्+अच् । गुग्गल आदि सुगन्धिवाले द्रव्योंसे निकलाहुआ धूम (धुआं) उसका साधन द्रव्य.

धूपित, (त्रि॰) धूप्+क्त वा आयका अभाव । मार्ग आदि चलनेसे श्रान्त (थका) हुआ । सन्ताप दिया गया.

धूम, (पु॰) धू+मक् । गीली लकड़ीसे उपजा मेघ और कम-लका कारण । आगका झण्डा.

धूमकेतन, (पु॰) धूमः केतनो यस्य । धूआं जिसका झण्डा है । धूम इव केतन. । धूएंकी नाईं झण्डा । उत्पात(उपद्रव)-रूप अशुभको बतानेहारा एक प्रकारका तारोंका समूह । ६ ब॰ । आग.

धूमयोनि, (पु॰) धूमः योनिः अस्य । धूम जिसका कारण है । मेघ (बादल) मोथा (मुश्क) । ६ त॰ । आग । गीली लकड़ी

धूमल, (पु॰) धूम (धूमवर्णं) लाति । ला+क । जो धूएंवाले रंगको लेता है । काला और लाल रंग । उस-वाला (त्रि॰).

धूम्या, (स्त्री) धूमानां समूहः+य । धूमका समूह । धूमका साधन (त्रि॰).

धूम्र, (पु॰) धूमं (तद्वर्णं) राति । रा+क-पृ॰ । गधेके रोमकी भांति । काला और लाल रंग । उसवाला (त्रि॰) शिलहक.

धूम्रक, (पु॰) धूम्र इव कायति । कै+क ऊंट । ऊंट.

धूम्रलोचन, (पु॰) धूम्रे लोचने यस्य । जिसके नेत्र धूमिले हैं । कपोत (कबूतर) । महिषासुर नामी एक सेनाका पति (अफसर).

धूम्रवर्ण, (पु॰) धूम्रः वर्णः अस्य । जिसका धूमिला रंग है । शिलहक । काला और लाल रंग, ऐसे धूंएवाले रंगवाला (त्रि॰)

धूम्रिका, (स्त्री॰) धूम्र वर्ण सारे अस्ति अस्य+ठन् (टप्) । शीशमका दरख्त.

धूर्, वध । मारना और जाना (गति)। दिवा॰ आत्म॰ सक॰ सेट् । धूर्यते । अधूरिष्ट । धूर्णः.

धूर्जटि, (पु॰) जट-संघात (इकट्ठा होना)+इन् । धूः (त्रैलोक्यचिन्तायाः) जटिः (संघातः) अत्र । जहां तीनों लोककी चिन्ता इकट्ठी हो रही है । शिवजीमहाराज.

धूर्त, (पु॰) धुर्व्-धूर् वा+क्त । धतूरेका वृक्ष । और एक-प्रकारका नायक । सजग । जुआ खेलनेहारा । वञ्चक (ठग) (त्रि॰).

धूर्तक, (पु॰) धूर्त इव (वञ्चक इव) । इसके अर्थमें कन् । जो ठगकी नाईं है । शृगाल (सिआर) । गीदड़.

धूर्वह, (त्रि॰) धुरं वहति । वह्+अच् । भारवाहक । बोझा उठानेहारा । धुरंधर । "धुर्वह".

धूलि-ली, (स्त्री॰) । धू+लिक् वा ङीप् । रजस् । पराग । धूरी । धूल.

धूलिध्वज, (पु॰) धूलिः एव ध्वजः अस्य । धूरीही जिस-का झंडा है । वायु । हवा.

धूसर, (पु॰) धू सर । गर्दभ (गधा) । ऊंट । कबूतर । तैलकार । जिसका स्वरूप तेलकी नाईं हो । काला, चिट्टा, पीला उस रंगवाला (त्रि॰).

धूस्तूर, (पु॰) धूस्+क्विप्-तूर+क पृ॰ वा ह्रस्वः । धतूरा.

धृ, पतन । भ्वा॰ आत्म॰ अक॰ अनिट् । धरते । अधृत.

धृ, स्थिति ठहरना । अक॰ । धृति-पकड़ना-सक॰ । भ्वा॰ उभ॰ अनिट् । ध्रियते । अधृत.

धृ, धारण । पकड़ना । चुरा॰ उभ॰ सक॰ अनिट् । धारय-ति-ते । अदीधरत्-त.

धृत, (त्रि॰) धृ+क्त । कर्मणि । धारण कियागया । उठाया गया । आश्रय दियागया । पहिरा गया । इस्तिमाल किया गया.

धृतराष्ट्र, (पु॰) एक राजा (चन्द्रवंशमें दुर्योधनका पिता) । साँप । पक्षी.

धृति, (स्त्री॰) धृ+क्तिन् । तुष्टि । प्रसन्न होना । पकड़ना । यज्ञ । आठवां योग । सुख । धारणा । (चित्तका किसी एक देशमें रुकजाना) । दुःखमें भी शरीर आदिको रोक-नेकी शक्ति । अठारह अक्षरके पादवाला एक छन्द । १८ की संख्या.

धृतिमत्, (त्रि॰) धृति+मतुप् । धैर्यवाला । दृढ । पक्का । निश्चल । एक चित्तवाला । प्रसन्न । सन्तुष्ट.

धृष्, प्रागल्भ्य । चतुराई दिखाना । स्वा॰ पर॰ अक॰ सेट् । धृष्णोति । अधर्षीत् । धृष्टः.

धृष्, सामर्थ्यबन्धन । ताकतको रोकना । चुरा॰ आत्म॰ अक॰ सेट् । धर्षयते.

धृष्, क्रोध । गुस्सा करना और अभिभव । दबाना । चुरा॰ उभ॰ पक्षे भ्वा॰ सक॰ सेट् । धर्षयति-ते । धर्षति.

धृष्णु, (त्रि॰) धृष्+क्नु । [illegible] बेशरम.

धृष्ट, (त्रि॰) धृष्+क्त । [illegible]

धृष्टद्युम्न, (पु॰) धृष्टं (प्रगल्भं) द्युम्नं [illegible] जिसका [illegible] हो । द्रुपदराजाका पुत्र

धेनु, (स्त्री॰) [illegible]

धेनुक, (पु॰) धेनुः इव । (इसके अर्थमें कन्) । [illegible] हथिनी (स्त्री॰) "आगे अर्थमें [illegible]

धेनुकसूदन, (पु॰) धेनुकं सूदयति (छिनत्ति) [illegible] (बल) । श्रीकृष्णजीने "धेनुक" [illegible]

धेनुदुग्धकर, (पु॰) धेनोः दुग्धं [illegible] जो गौके दूधको [illegible] । गाजर (गाजर) [illegible]

धेनुष्या, (स्त्री॰) धेनु+मंडलमें [illegible] (कर्जा उतारने) के लिये उत्तमर्णको (जिसे [illegible] जाता है) बंधकके तौरपर दीगई गौ.

धैनुक, (पु॰) धेनूनां समूहः+ठक् । धेनुओंका [illegible] बहुत गौएं.

धैर्य, (न॰) धीरस्य भाव+ष्यञ् (य) । मनकी [illegible] धीरज । कंचाई । कारणोंके होनेपर भी मनका [illegible] रहना (न बिगड़ना) । न घबड़ाना.

धैवत, (पु॰) एकप्रकारकी गलेसे निकलीहुई [illegible]

धोर्, गतिचातुर्य । चालकी चतुराई । भ्वा॰ पर॰ सेट् । धोरति । अधोरीत् । णिच् । अदुधोरत्-त.

धोरण, (न॰) धोरति अनेन । धोर+ल्युट्-ल्युट् [illegible] वा । हाथी, घोड़ा, गाडी आदि सवारी ([illegible] "भावे ल्युट्" । एकप्रकारकी घोड़ेकी चाल.

धौत, (त्रि॰) धाव्+क्त-ऊठ् । मार्जित (साफ कि[illegible] धोयागया । उत्तेजित (भड़काया गया) । [illegible] चांदी (न॰).

धौतकौशेय, (न॰) कर्म॰ । धोया हुआ । कीड़ों[illegible] से उपजा कपड़ा.

धौरेय, (त्रि॰) धुरं वहति+ढक् (एय) । भा[illegible] हारा । बैल आदि.

ध्मा, अग्निसंयुत फूंकना । ऐसा शब्द करना कि जि[illegible] सांस निकले । भ्वा॰ पर॰ । वैदी आवाजसे [illegible] सक॰ अनिट् । धमति । अध्मासीत्.

ध्मात, (त्रि॰) ध्मा+क्त । संधुक्षित । भड़का[illegible] फूंकागया.

ध्माङ्क्ष्, आकाङ्क्षा चाहना सक॰ । घोरख । हराव[illegible] अक॰ भ्वा॰ पर॰ सेट्-इदित् । ध्माङ्क्षति । अध्मा[illegible]

ध्माङ्क्ष, (पु॰) ध्माङ्क्षि+अच् । काक (कौआ) [illegible] ओंको खानेहारा । और भिक्षुक (भीखमांगनेहारा[illegible]

ध्यात, (त्रि०) ध्यै+क्त । ध्यान किया गया । चिन्तन किया गया.

ध्यापित, (त्रि०) ध्या+णिच्+क्त । भस्म किया गया । भस्म हो गया । फूंका गया । जलाया गया.

ध्यात, (त्रि०) ध्यै+क्त । खयाल किया गया । सोचा गया । चिन्तन किया गया.

ध्यातव्य, ध्येय (त्रि०) ध्यै+तव्य+यत् । ध्यान करनेयोग्य । सोचनेलायक.

ध्यानम्, (न०) ध्यै+भावे ल्युट् । खयाल । चिन्तन । सोच । ध्येयकी एकतानता.

ध्यानयोग, (पु०) ध्यानस्य योगः । ध्यानका योग (अ-ध्यान) । गाढ समाधि.

ध्यानस्थ, (त्रि०) ध्याने तिष्ठति । स्था+क । ध्यानमें स्थित । एकचित्त होगया.

ध्यै, भ्वा० प० । ध्यायति । ध्यात । दध्यौ । दिध्यासति । ध्यायते । ध्यान करना । खयाल करना.

ध्रु, स्थैर्य-टिकना-पक्काहोना-जाना-चलना-मारना । भ्वा० तुदा० ध्रवति-ध्रुवति । आशीर्लिङ्-ध्रूयात्.

ध्रुव, (पु०) ध्रु+अच् । शंकु (एकप्रकारका कील) । विष्णु । महादेव । उत्तानपादराजाका पुत्र । एकप्रकारका योग । आकाशके आगेका भाग । माथेपर एकप्रकारकी गोलावट । भूगोलके दोनों (उत्तर और दक्षिण) केन्द्री (सिरों) के ऊपरका भाग । और एक तारा जो स्थिर रहता है । निश्चित (पक्का) । दृढ़तीत (तर्क) । आकाश (न०) । सनातन (सदावार) । न बदलनेवाला । स्थिर (कायम) (त्रि०) । "संज्ञा (नाम) में कन्" । एक गीत (न०).

ध्रौव्य, (न०) ध्रुवस्य भाव +ष्यञ् । पक्काहोना । स्थिर रहना.

ध्वज्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ध्वजति.

ध्वज, (पु०) ध्वज+अच् । झंडा । निशान । एक प्रसिद्ध पुरुष । "कुलध्वज" अपने वंशमें विशेष पुरुष । शौण्डिक (कलाल) । वेश्याका धन्धा । सेना (स्त्री०) । मेढ़ (पुरुषका चिह्न) (पु० न०).

ध्वजिन्, (पु०) ध्वज+अस्ति (है) अर्थमें इनि । राजा । झंडेवाला । रथ (गाडी) । ब्राह्मण । घोड़ा । सांप । कलाल । मोर.

ध्वजिनी, (स्त्री०) ध्वजा अस्ति अस्या +इनि । जिसकी ध्वजा हो । सेना (फौज).

ध्वन्, शब्द । बोलना । आवाज निकलना । चुरा० उभ० सक० सेट् । ध्वनयति.

ध्वन, (पु०) ध्वन्+घञ् (अ) शब्द (आवाज) । गुर.

ध्वनि, (पु०) ध्वन्+इन् । वीणा मृदंग आदिका शब्द । अलंकारमें एक उत्तम काव्यभेद.

ध्वस्म-ध्वंस, (पु०) ध्वन्स्+घञ् (अ) । विनाश । बर्बादी.

ध्वॄस्, गति । जाना । विनाश । होना गिरना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । ध्वंसते । "क्त" में विकल्पसे इट् होता है.

ध्वस्त, (त्रि०) ध्वन्स्+क्त । गिरपड़ा । नष्ट । नाश हो गया । चलागया.

ध्वाङ्क्ष, ध्वाङ्ख । डरावना । शब्द करना । भ्वा० पर० सक० सेट्-इदित् । ध्वांक्षति । आशीर्लिङ् ...

ध्वाङ्क्ष, (पु०) ध्वांक्ष+अच् । कौआ । बगला । फकीर । ...

ध्वान, (पु०) ध्वन्+घञ् । शब्द । आवाज.

ध्वान्त, (न०) ध्वन्+क्त । नि० । अंधकार । ...

ध्वान्तारि, (पु०) १ स० अन्धेरेका शत्रु । सूर्य । ... वृक्ष । चांद । और आग.

न

न, (अव्य०) नह् बांधना (बन्धन) । ... वेध (रोकना) "क्रियाके साथ योग ..." (अभाव) और उपमा । खाली । ... (त्रि०) मोती (पु०).

नकुट, (न०) न+कुट्+अ । नाक । ...

नकुल, (त्रि०) नास्ति कुलं यस्य । ... निष्कुल सांपका वैरी नेवला । "... पुनः पिशुनः" । बाणभट्ट । ... (पु०) । कुडली । ...

नक्त, (न०) नज्+क्त । ... सारा दिन बिताकर रात्रिमें ... करना होता है.

नक्तम्, (अव्य०) नज् ...

नक्तचारिन्, (पु०) ... जो रातको विचरे ... विचरनेहारा कोई ...

नक्तञ्चर, (पु०) ... उल्लू और विल्ली ...

नक्तन्दिव, (न० ...) ... गोल ।

नक्र, (पु०) ... पांव । पांव ... दूर ... तेंदुआ ... (नक्र ... । स्तन और ... इन दोनोंमें

नक्षत्र, ... रूप । नि० । ... होता ।

...) सादनका

नक्षत्रनेमि, (पु०) नक्षत्राणां नेमिरिव । मानों नक्षत्रोंकी धारा है । ध्रुव नामी तारा । चांद । विष्णु.

नक्षत्रपाठक, (पु०) नक्षत्राणि पठति । पठ्+ण्वुल् । नक्षत्रों (तारोंको पढनेवाला) । ज्योतिषी.

नक्षत्रमाला, (स्त्री०) नक्षत्राणां इव माला । तारोंकी नाईं माला है । २७ मोतिओंका बनाहुआ एक हार । ६ त० । तारोंकि कतार " सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः" कोश.

नक्षत्रलोक, (पु०) नक्षत्राणां लोकः । नक्षत्रों (तारों)का लोक । आकाश.

नक्षत्रविद्या, (स्त्री०) नक्षत्राणां विद्या । तारोंकी विद्या । ज्योतिःशास्त्र.

नक्षत्रसूचक, (पु०) नक्षत्राणि शुभाशुभतया सूचयति+ण्वुल् । जो तारोंका अच्छा या बुरा फल कहता है । सिद्धान्तको न जाननेहारा ज्योतिषी । "णिनि" "नक्षत्रसूची".

नक्षत्रेश, (पु०) ६ त० । तारोंका मालिक । चन्द्रमा । चांद । "नक्षत्रपति" आदि यही अर्थ है.

नख्, गति । सर्पण । जाना । चलना । सरकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । नखति । अनखीत्-अनाखीत्.

नख, (पु० न०) नखं (छिद्रं) अत्र । जहां छेक-सुराख है । नखून । नौं अंगुलीका कांटा.

नखकुट्ट, (पु०) नखान् कुट्टयति । कुट्ट+अण् । जो नखूनोंको कूटता-उतारता है । नापित । नाई.

नखर, (पु० न०) नखं राकते । रा+क । नख । नखून । नौं.

नखरायुध, (पु०) नखरं आयुधं यस्य । नखून जिसका शस्त्र (औजार) है । सिंह (शेर) व्याघ्र । (भेडिया) और कुक्कड । "नखायुध" यही अर्थ.

नखानखि, (अव्य०) "नखैः नखैः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्त" । आपसमें नखूनो (नौं) की लडाई करना.

नग, (पु०) न गच्छति । गम्+ड । जो नहिं चलता । पर्वत (पहाड) वृक्ष (दरख्त).

नगण, (पु०) लघु (एक मात्रावाला) रूप तीन अक्षर । न गण्यते (नहिं गिनी जाती है) गण्+अच्.

नगभिद्, (पु०) नगान् भिनत्ति । भिद्+क्विप् । पर्वतोंको फोडता है । इन्द्र । पहाडोंको तोडनेहारा (त्रि०)

नगभू, (स्त्री०) नग एव भूः (उत्पत्तिस्थानं) यस्याः । जो पहाडमें निकलती है । छोटा पत्थर.

नगर, (न०) नगाः (वृक्षाः पर्वता वा) सन्ति अस्मिन् । नग+र । पुर । शहर (जहां अच्छे २ काम करनेहारे सभी वर्ण हों । बहुत मकानोंसे भरीहुई अनेक जातियें हों और सब देवताओंके स्थान भी हों) । नगरी (स्त्री०).

नगरजन, (पु०) नगरस्थः जनः । नगरके लोग.

नगरन्ध्रकर, (पु०) "नगस्य रन्ध्रं करोति" । ... (क्रौञ्च पर्वत) में छेक सुराख करता है । ... कार्तिकेय (महादेवका बडा पुत्र).

नगरप्रदक्षिणा, (स्त्री०) नगरस्य प्रदक्षिणा । ... नगरकी प्रदक्षिणा । किसी ... और घुमाना.

नगरप्रान्त, (पु०) नगरस्य प्रान्तः । नगर ... (सिरा).

नगरमर्द्दिन्, (पु०) नगरं मर्दयति । उप० स० । ... मलनेवाला । मतवाला हाथी.

नगरमार्ग, (पु०) नगरस्य मार्गः । ष० त० । ... रस्ता । बडी सडक । राजमार्ग.

नगाट, (पु०) नगेषु (वृक्षेषु) अटति+अच् । ... घूमता है । वानर । बन्दर.

नगाधिप, (पु०) नगानां अधिपः । पहाडोंका ... हिमालय पर्वत.

नगौकस्, (पु०) नग ओको यस्य । पहाड जिसका ... पक्षी (परिंदा) । शेर । शरभ । कौआ.

नग्न, (त्रि०) नग्न्+क्त । वस्त्ररहित । कपडेके बिना । ... दिगम्बर नामी बौद्धोंका भेद (पु०) । तीन वेदरूप ... (आवरण) को छोडनेहारा जन । "नग्नक्षपणके ... रजकः किं करिष्यति."

नग्निका, (स्त्री०) नग्नैव+स्वार्थे कन् । नंगी । ... जिसे अभी स्त्रीधर्म (रज) नहिं हुआ । वेश्या ...

नग्नीकृत, (त्रि०) अनग्नः नग्नः कृतः । नग्न+च्वि+... नंगा किया गया.

नज्, व्रीडा । शरम करना । भ्वा० आ० अक० ... नजते । अनजिष्ट । नग्नः.

नञ्, (अव्य०) एक निषेध शब्द निषेध अर्थके ... नहिं । न होना । रोकना । थोडापन । बुरा । ... थोडा । बराबर । विरोध । फरक । ... अभावे-अपापम् । भेदे-अघटः पटः । ईषदर्थे-अनुदरा ... अप्राशस्त्ये-अकेशा । विरोधे-असुरः.

नट्, नृत्य-नाचना और हिंसा-मारना । भ्वा० पर० ... सेट् । नटति । अनटीत्-अनाटीत् । परिनटति.

नट, (पु०) नटति । नट्+अच् । नाटक आदि खेलके ... अभिनय (नकल) करनेहारा । एक प्रकारका ... खीपर जीनेवाला । एकप्रकारका वर्णसंकर (... अशोक वृक्ष.

नटन, (न०) नट्+ल्युट् (अन) । नाच । नृत्य.

नटी, (स्त्री०) नट्+अच् । ङीप् (ई) । वेश्या । ... नटकी औरत.

.., गिरना । पुरा० उभ० अक० सेट् । नाटयति-ते.

.., (पु०) नट्+अच् । नटनृत्य । नट । नटपाश । पूर्वीगर.

..या, (स्त्री०) नटानां समूहः+य । नट (धाम) । नृत्यका समूह.

..ल, (त्रि०) नटाः गणिन अस्य+कुलच् । नटवाला देश.

.., (त्रि०) नम+क्त । नम । झुकाहुआ । आधा दिन बीतजानेपर जन्मकी घडी (पु०) । नगरकी जड (न०).

..नासिक, (त्रि०) नता नासिका अस्य । जिसका नाक झुका है । चिपटीनाकवाला (नान्हा).

..ाङ्गी, (स्त्री०) नतं अङ्गं अस्याः+ङीप् । स्तन और जघनके बोझेसे जिसका अंग झुका हो । एक औरत.

..ति, (स्त्री०) नम्+क्तिन् । नमना । झुकना । सात नरहका निरना.

..द, गर्जना । गुलाचोला । शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । नन्दति । अननदीत् । ननन्दुः । प्रनन्दति.

..द, (पु०) नद्+अच् । सिन्धु-भैरव-शोण आदि मामांसक जलके प्रवाह.

..थु, (पु०) नद्+अथुच् । शब्द । बडी ऊंची आवाज । बैलका शब्द.

..दपति-राज, (पु०) नदीनां पतिः वा नदीनां राजा । नदिओंका स्वामी । समुद्र.

..दी, (स्त्री०) नद्+अच्+ङीप । गंगा, यमुना आदि बहुत या थोडे जलके प्रवाह । (एक हजार आठ धनुष् जितने मार्गमें बहनेहारी नदी कही जाती है) । दर्या.

..दीज, (पु०) भीष्म । नदा समीपे जायते । जन्+ड (अ) । अर्जुनवृक्ष । और अग्निमंथवृक्ष । जो नदीमें जाजाता है (त्रि०).

..दीश, (पु०) १ त० । नदिओंका स्वामी । समुद्र । और वरुण की वरुण.

..दीमातृक, (त्रि०) नदी माता [illegible] पोषिका अस्य । नदी जिसे नापारीमाई [illegible] बनी है । नदीके जलसे उसके धान्योंसे धान्य सदा देता

..दीरय, (पु०) नदीका वेग । नदीका वेग (तेजी).

..दीष्ण, (त्रि०) नदी [illegible] । [illegible] । नदीमें [illegible] करना [illegible] है । जिस [illegible] नदीके [illegible]

..द्ध, (त्रि०) नह+क्त । बंधाहुआ । [illegible]

..द्धी, (स्त्री०) [illegible] । नदीकी [illegible]

..नन्द, (स्त्री०) न [illegible] । [illegible] ([illegible]) जो [illegible] ([illegible]) । [illegible] । "[illegible]" [illegible].

नतु, (अव्य०) प्रश्न (सवाल) । [illegible] । [illegible] । [illegible] यन । निन्दा.

नन्द, (पु०) नन्द्+अच् । श्रीकृष्णके पिता । एक [illegible] । महानन्दका पुत्र । एक राजा । आनन्द । एक [illegible].

नन्दक, (पु०) नन्दयति । नन्द्+णिच्+ण्वुल् । [illegible] (तलवार) । और मेंडक । आनन्द देनेहारा । और कुलको पालनेहारा.

नन्दथु, (पु०) नन्द्+अथुच् । आनन्द । [illegible]

नन्दन, (पु०) नन्दयति । नन्द्+णिच् । [illegible] । पुत्र । मेंडक । एक पर्वत । और ६० में से एक वर्ष । इन्द्रका बन (न०) । आनन्द करनेहारा (त्रि०).

नन्दनन्दन, (पु०) नन्दस्य नन्दनः । नन्दजीको [illegible] देनेहारा । श्रीकृष्ण । "नन्दसुत" आदि यही अर्थ

नन्दभगिनी, (स्त्री०) ६ त० । दुर्गा । नन्दकी [illegible]

नन्दा, (स्त्री०) नन्द्+अच । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । एक [illegible] । ([illegible], [illegible] और [illegible]) । [illegible] । [illegible].

नन्दिग्राम, (पु०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १४ वर्ष [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])

नन्दिन, (पु०) नन्द्+णिनि (इन्) । [illegible] [illegible] ([illegible])

नन्दिनी, (स्त्री०) नन्दयति । नन्द्+णिनि । [illegible] [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

नन्दिमीसुत, (पु०) ६ त० । [illegible] [illegible] । [illegible].

नन्दिपुराण, (न०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] पुराण । [illegible].

नन्दी, (पु०) नन्द्+इन् । [illegible] । [illegible] । [illegible] एक [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । शिव.

नन्दीश्वर, (पु०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] है.

नपात्, (पु०) [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible].

नपुंसक, (पु० न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] है । [illegible] [illegible]

नभ, (पु०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])

नभ, (न०) [illegible] । [illegible] ([illegible] [illegible]) (पु०).

माला, (स्त्री०) नराणां माला । मनुष्योंकी (सिरोंकी) माला । "नरमालाविभूषणा" इति चण्डी.

मेध, (पु०) नरः मेध्यते (वध्यते) यत्र । जिसमें मनुष्यको मारकर होम किया जाता है । एक यज्ञ । जिसमें नरके मांससे होम किया जाता है.

वाहन, (पु०) नराः वाहनानि अस्य । मनुष्य जिसकी सवारी है । कुबेर (इसे मनुष्य उठाते हैं) । जो मनुष्योंसे उठाया जाय (त्रि०).

सिंह, (पु०) नरश्चासौ सिंहश्च । मनुष्य शेर । नर और सिंहके स्वरूपवाला । हिरण्यकशिपुको नाश करनेके लिये प्रगटहुआ भगवान्का एक अवतार । "नरः सिंह इव" । मनुष्य मानो शेर है । शौर्य आदिसे अच्छा आदमी.

स्कन्ध, (पु०) नर-समूहे स्कन्धः । नरोंका समूह । बहुतसे आदमी.

न्द्र, (पु०) नर इन्द्र इव । मनुष्य मानो इन्द्र है । राजा । विषवैद्य (जहिर निकालनेहारा) । २१ अक्षरके पादवाला एक छन्द.

त्तम, (पु०) नरेषु उत्तमः । पुरुषोंमें उत्तम । नारायण । वैरागी पुरुष । और राजा.

क, (पु०) नृत्+ण्वुल् (अक) । चारण (तारीफ करनेहारा) । नलतृण । नाचके जानेहारा नट (त्रि०) "नर्तकी" (स्त्री०).

न, (न०) नृत्+ल्युट् (अन) नृत्य । नाच.

, शब्द । आवाज करना । अक० जाना । सक० भ्वा० पर० सेट् । नर्दति-अनर्दीत्.

द, (पु०) नर्म (परिहासं) ददाति । दा+क । जो मखौल देता है । केलिसचिव । मखौलके लिये वजीर । मखौलिया (त्रि०) । नदी (स्त्री०).

न्, (न०) नृ+मनिन् । परिहास । ठठोठा । केलि । क्रीडा । खेल.

लकिनी, (स्त्री०) नलकं (नलिकं अस्थि) अस्य+ इनि । जिसकी टेकवाली हड्डी हो । जङ्घा । रान.

कूबर, (पु०) नलः कूबरो युगंधरोऽस्य । इस नामका कुबेरका पुत्र.

लिका, (स्त्री०) नल+स्वार्थे कन्-टाप् । नाडी । नाली । सुगन्धिद्रव्य.

लिनीखण्ड, (न०) नलिनी+समूहे षण्ड । कमलिनी- ओंका समूह.

घ, (पु०) नल्+व । चारसौ हाथका गिनाहुआ खेत । चार- सौ हाथ.

नव, (पु०) नु+अप् । स्तव । तारीफ+अच् । नूतन हुआ (त्रि०).

नवग्रह, (पु०) कर्म० । सूर्य आदि नौ ग्रह.

नवति, (स्त्री०) नव दशतः परिमाणं अस्य नि० । नब्बेकी संख्या.

नवदल, (न०) कर्म० । कमलकी कर्णिकाके पासका पत्ता । नया पत्ता.

नवदुर्गा, (स्त्री०) कर्म० । शैलपुत्री आदि नौ दुर्गाकी मूर्तिए.

नवद्वारपुर, (न०) नव द्वाराणि यत्र तादृशं पुरम् । वह पुर कि जिसके नौ दर्वाजे हैं । देह । शरीर (इसमें दो कान दो आंख, दो नाशा और एक मुख । ये ऊपरके सात स्थान) गुदा और लिङ्ग (ये नीचेके दो) इसतरह ९ हैं.

नवधा, (अव्य०) नवन्+प्रकारे धाच् । नवप्रकार । नौ तरह.

नवधातु, (पु०) कर्म० । सोना आदि ९ धातु.

नवन्, (त्रि०) बहु० । ९ की संख्या.

नवनीत, (न०) नवं नीयते स्म । नी+क्त । नया निकालागया । दूधका सार । मक्खन.

नवनीतक, (न०) नवनीतस्य विकारः+कन् । मक्खनसे बनाया गया । घी । घृत.

नवम, (त्रि०) नवानां पूरणः+डट्-मट् । ९ की संख्याको पूरा करनेहारा । नवां ।-मी । "नवमी" एक तिथि (स्त्री०)

नवमल्लिका, (स्त्री०) कर्म० । नवमालिका । बहुतफूलों- वाला वृक्ष.

नवयज्ञ, (पु०) नवः यज्ञः । ऋतु (मौसिम) पर उपजे फलोंकी पहिली भेट देवताके लिये.

नवयौवन, (न०) नवं यौवनं । नई जवानी ।-ना (स्त्री०) नई जवानीवाली.

नवरत्न, (न०) नवानां रत्नानां समाहारः । ९ रत्नोंका मेल । विक्रमादित्यकी सभाके ९ पण्डित.

नवरात्र, (न०) नवानां रात्रीणां समाहारः । ९ रात । और ९ दिन.

नववध्वागमन, (न०) ६ त० । नववध्वाः आगमनम् । नई बहूका (पिताके घरसे पतिके घरमें) आना.

नववस्त्र, (न०) कर्म० । अनाहत नूतनवस्त्र । पहिलेही पहिरा गया नया कपड़ा । नूतन कपड़ा.

नववस्त्र, (न०) नवं वस्त्रं । नया वस्त्र (कपड़ा).

नवशशिभृत्, (पु०) नवं शशिनं बिभर्ति-भृ+क्विप् । नये चन्द्रमाको धारण करनेवाला.

नवशायक, (पु०) माली, तन्दि करि.

नवश्राद्ध, (न०) कर्म० १।३।५।७।९।११ आदि विषम दिनोंमें करने योग्य श्राद्ध। ग्यारहवेंदिन करनेलायक श्राद्ध.

नवसूतिका, (स्त्री०) नवं सूतं अस्ति अस्याःअस्त्(इक)। जिसका नयाही प्रसव हुआ है। धेनु। नई प्रसूता गौ.

नवान्न, (न०) कर्म०। नवीन अन्न। नया अनाज। "नवं अन्नं यत्र"। नये अनाज आनेका समय.

नवीन, (त्रि०) नव+ख (ईन)। नूतन। नया.

नवोढा, (स्त्री०) नवा ऊढा वह्+क्त+आ। नई विवाही गई (स्त्री०).

नवोदक, (न०) कर्म०। नवजल। नया पानी। "नवं उदकं यत्र"। नये पानीका समय.

नवोद्धृत, (न०) कर्म०। नवनीत। मक्खन। नया निकाला गया (त्रि०).

नव्य, (त्रि०) नु+यत्। नूतन। नया.

नष्ट, (त्रि०) नश्+क्त। तिरोहित। छिपाहुआ। जो दीखता नहीं.

नष्टचेष्टा, (स्त्री०) नष्टा चेष्टा यस्य तस्य भावः+तल्। हर्ष (खुशी) या शोक (अफसोस) आदिसे सब चेष्टा (हरकत) ओंसे रहित। बेहोश.

नष्टाग्नि, (पु०) नष्टः अग्निः यस्य। प्रमाद (भूल) आदिसे जिसने अग्निहोत्र करना छोड दिया। निरग्नि.

नष्टेन्दुकला, (स्त्री०) नष्टा चन्द्रकला यस्याम्। जिसमें चन्द्रमाकी कला छिपगई हो। चतुर्दशीसे मिलीहुई अमावस्या.

नस्य, (न०) नसे हितं। नाकके लिये अच्छा। मिरगी आदि रोगकी निवृत्तिके लिये नाकमें देनेलायक चूर्ण। [illegible].

नस्योत, (पु०) नसि [illegible] [illegible]। आ+वे+क्त। [illegible] [illegible] परोया गया। बलीवर्द। बैल.

नहि, (अव्य०) निषेध। रोकना। नहीं.

नहुष, (पु०) चन्द्रवंशका एक राजा। एक नाग (सांप).

नहुषात्मज, (पु०) [illegible] राजा। नहुषका बेटा.

ना, (अव्य०) निषेध। नहीं.

नाक, (पु०) न कं सुखं (दुःखं) [illegible] यत्र। जहां दुःख नहीं। [illegible] स्थान.

नाकिन्, (पु०) नाक अस्ति अस्य। (जिसके रहनेका स्थान) स्वर्ग है। देव। देवता.

नाग, (पु०) न [illegible] (अग) न अगः। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] (वायु) [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] है। [illegible] [illegible]। [illegible] (त्रि०).

नागकन्यका, (स्त्री०) नागानां कन्यका। [illegible] की कन्या.

नागदन्त, (पु०) नागस्य दन्त इव। [illegible] है। घरसे निकली हुई लकड़ी (किसी)। [illegible]

नागपञ्चमी, (स्त्री०) नागानां पंचमी। [illegible] पंचमी (पांचवां दिन).

नागपाश, (पु०) नागः पाश इव। ([illegible] होनेसे) नाग मानो पाश है। वरुण देवताका [illegible]

नागर, (त्रि०) नगरे भवः। नगरका। [illegible] यार। नागरमोथा.

नागरक, (पु०) नगरे भवः (बुरे और चतुर अर्थ में)+वुन्। (अक) चोर। सूरत दिखानेवाला। कारीगर.

नागराज, (पु०) नागानां राजा+टच्। [illegible] हाथियोंका राजा। अनन्तनामी सांप। [illegible] हाथी। हाथी.

नागराज, (पु०) नागानां राजा-राजन्+टच्। [illegible] राजा। शेषनाग.

नागलता, (स्त्री०) नागाकारा लता। एक [illegible] शकल सांपजैसी है। ताम्बूली (पानकी बेल) [illegible].

नागलोक, (पु०) ६ त०। नागोंका लोक। [illegible]

नागाङ्गना, (स्त्री०) नागस्य अङ्गना। [illegible]

नागान्तक, (पु०) नागस्य अन्तकः। सांप [illegible] वाला। गरुड। मयूर। मोर.

नागाशन, (पु०) नागान् अश्नाति। अश्+ल्यु। नागोंको खाता है। गरुड.

नागाह्व, (पु०) नागेन पुरा अह्वः [illegible] नामवाला। हस्तिनापुर.

नागेन्द्र, (पु०) नागानां इन्द्रः। हाथियोंका [illegible]

नाचिकेतस्, (पु०) अग्नि। आग। एक [illegible] कही हुई एक कथा.

नाट, (पु०) नट्+घञ्। नृत्य। नाच। [illegible]

नाटक, (पु०) [illegible] [illegible] एक [illegible] योग्य एकप्रकारका काव्य (प्रसिद्ध [illegible] [illegible]).

नाटार, (पु०) नटस्य अपत्यं+आरक्। [illegible]

नाटिका, (स्त्री०) एकप्रकारका [illegible]

नाटेय-र, नटया अपत्यं+ढक् (ढक्) [illegible] [illegible] पुत्र.

नाट्य, (न०) नटानां कर्म+ष्यञ्। नाच [illegible] गाना और बजाना).

ट्यप्रिय, (पु०) नाट्यस्य प्रियः । नृत्यका पियारा । ीरका नाम.

ट्यशाला, (स्त्री०) नाट्यस्य नाट्यार्थं वा शाला । नाच वा नाटकके लिये शाला । नटमन्दिर । नाचने गाने बजानेकी शाला । नाचघर । देवमन्दिरके सामनेका घर.

ट्यशास्त्रम्, (न०) नाट्यस्य शास्त्रम् । नाटक विद्या । नाच विद्या

ट्याचार्य, (पु०) नाट्यस्य आचार्यः ष० त० । नाट्यका आचार्य । नाचका सिखानेवाला.

ट्योक्ति, (स्त्री०) नाट्ये (नटकर्मणि) उक्तिः । नाटकसम्बन्धी वचन । नाटकमें उपयोगी वचन.

ड़ि-डी, (स्त्री०) । नड्-भ्रंश गिरना+इन् वा ङीप् । शरीरकी शिरा (नाड़ी) । दण्डकी डाण्डा । घड़ी । नाड़ी । ६० पल.

ड़िन्धम, (पु०) नाडीं धमति । ध्मा+खश् धमादेशः । मुम् हस्वश्च । जो सोना आदिकी नालीको फूंकता है । स्वर्णकार । सुनार.

ड़ीयन्त्र, (न०) नाभिस्थनाडीनिस्सरणचक्र । शुण्डोंमें रहनेहारा नाड़िओंके निकलनेका चक्र.

ड़ीजङ्घ, (पु०) नाड़ीव जंघा अस्य । जिसकी लात नालीके समान है । कौआ । ब्रह्माका पियारा एक बगला । एक मुनि.

ड़ीपरीक्षा, (स्त्री०) नाड्याः परीक्षा । नाड़ीकी परीक्षा (पहिचान).

ाणक, (पु०) न आणकः कुत्सितः । जो बुरा नहिं । प्रशस्त । अच्छा । मोहर आदि (जिसपर निशान छापा हो) (न०).

ाथ्, उपताप । गरम होना । तपना । मांगना । पर० । आशीर्वाद देना । आत्म० सक० । ऐश्य-हकूमत करना-सेट् । नाथति । अनाथीत् । नाथते । अनाथिष्ट (आशीष).

ाथ, (पु०) नाथ्-ऐश्य+अच् (अ) । अधिप । स्वामी । मालिक । शिवजी । प्रार्थना करनेलायक (त्रि०).

ाथवत् (त्रि०) नाथः अस्ति अस्य मतुप् (मस्य व) । जिसका मालिक हो । पराधीन । परतन्त्र । बचानेहारा.

ाद, (पु०) नद्+घञ् (अ) । शब्द (आवाज) । चन्द्रबिन्दु । बड़ी ऊंची आवाज । एक प्रकारकी प्राणोंकी हवा (वायु).

ादेय, (न०) नद्या नदस्य वा इदं+ढक् (एय) । नदी वा नदका । सैन्धवलवण । सेंधानोन । नदी वा नदका पानी । काश और वेतस (बेंत) (पु०) नदीका (त्रि०).

ाधृ, मांगना (नाथके सब अर्थ) । भ्वा० आ० सक० सेट् । नाधते.

नाना, (अव्य०) विना । अनेक (बहुत) । दोनों.

नानाजातीय, (त्रि०) नानाजातौ भव+ईय । कई जातिमें होनेवाला । कई प्रकारका । कई तरहका.

नानारूप, (त्रि०) नाना रूपाणि यस्य । कई स्वरूप (शकल) वाला.

नानार्थ, (त्रि०) नानाविधाः अर्थाः यस्याः । बहुत नाम और प्रयोजन (मतलब)वाला.

नानाविध, (त्रि०) नाना विधाः प्रकाराः यस्य । नाना (कई) प्रकारवाला । कई तरहका.

नानावीर्य, (त्रि०) नाना वीर्याणि यस्य । कई प्रकारकी शक्तिवाला.

नान्तरीयक, (त्रि०) अन्तरे (व्यवधानं) अनुभवति । (नञ्के अर्थवाले "न" के साथ समास होनेसे) नान्तरीयं । फिर अपने अर्थमें कन् (क) होता है । अवश्यम्भावी । जरूर होनेहारा । फैलाहुआ । व्याप्त.

नान्दी, (स्त्री०) नन्दन्ति देवाः पितरो वा यत्र । नन्द्+इन् ङीप् । पृ० । जहां देवता वा पितर प्रसन्न होते हैं । "नान्दीश्राद्धं ततः कुर्यात्" इति स्मृतिः । समृद्धि । सम्पदा । इक्बाल । नाटकमें सूत्रधारसे करनेयोग्य एक प्रकारका मङ्गलाचरण.

नान्दीमुख, (पु०) नान्द्यर्थं (वृद्ध्यर्थं) बन्धनान्वितं मुखं यस्य । वृद्धिके लिये जिसका मुख बांधा गया है । घड़ेका पड़दा । "नान्दी (वृद्धिः) तदर्थं श्राद्धम्" । विवाहआदिके पहिले किया जानेहारा मङ्गलश्राद्ध । नान्दीश्राद्धमें भोजन करनेहारे पितर.

नान्दीवादिन्, (पु०) नान्द्यर्थं वदति वादयति वा । नाटकके आदिमें मङ्गलपाठ करने वा करानेहारा सूत्रधार । उसके लिये तूर्य (बाजे आदि बजानेहारा नटआदि.

नापित, (पु०) क्षौरका काम करनेहारा । एक जातिका नाम । नाई.

नापितायनि, (पु०) नापित+आयन् । नापित (नाई)-का पुत्र.

नाभि, (पु०) नह्यन्ते अत्र, नह्यते अनेन वा । नह्+इञ् भान्तादेश । १२ राजाओंके चक्रका बीच । पहियेकी धुरी । मुख्य राजा । और क्षत्रिय । कस्तूरी (स्त्री०) । धुन्नी (पु० स्त्री०) । प्रधान । मुख्य (त्रि०).

नाभिज, (पु०) नाभौ जायते । जन+ड । जो विष्णुकी नाभिमें उपजता है । चतुर्मुख । ब्रह्मा । "नाभिजन्मा".

नाभिल, (त्रि०) नाभिः अस्ति अस्य+लच् । नाभि (नाफ-धुन्नी) वाला । नाभीसे उपजा वा आया.

नाभ्य, (त्रि०) नाभि+यत् । नाभिवाला । नाभिमें ।-भ्यः (पु०) शिव.

नाम, (अव्य०) स्वीकार । विस्मय । स्मरण । सम्भावना । निन्दा । प्राकाश्य । विकल्प । अलीक (झूठ) । क्रोध.

नामकरण, (न०) नाम क्रियते अत्र । कृ+ल्युट् (अन) । जिसमें नाम रक्खा जाता है । दसवें आदि दिनमें करनेलायक एक प्रकारका संस्कार.

नामधेय, (न०) नामन्+स्वार्थे धेय । नाम । वाचकशब्द । संज्ञा । "वाचारम्भणं विकारो नामधेयं" इति श्रुतिः.

नामन्, (न) मन्यते अभिधीयते अर्थः अनेन । "नामन् ईमन्" नि० । जिससे अर्थ कहा जाता है । आकाश आदि पदार्थके अर्थको बतानेहारा संज्ञाशब्द । नाम.

नामशेष, (त्रि०) नाम एव शेषः अस्य । जिसका केवल नाम बाकी रहा । मृत । मरणशील । "नाममात्रं शेषः यस्य" जिसमें केवल नाम बचरहा । मरना (पु०).

नाममाला, (स्त्री०) नाम्नां माला । नामोंकी पंक्ति (कनार-लिस्ट).

नाममुद्रा, (स्त्री०) नाम्नः मुद्रा । नामका चिह्न । नामकी मोहर.

नामानुशासनम्, (न०) नाम्नां अनु-शासनम् । नाम ([illegible]) शब्दोंके लिंगोंका नियम

नायक, (पु०) नी+ण्वुल् (अक०) नेता । लेजानेहारा । [illegible] । प्रभु । हारके बीचकी मणि । सेनाका पति । शृङ्गाररसको [illegible] करनेहारा पति वा उपपति (यार) आदि । पहुंचानेहारा (त्रि०).

नायिका, (स्त्री०) नी+ण्वुल् (अक०) । शृङ्गाररसको आलम्बन करनेहारी स्त्री आदि । जिसमें अनुरागहुई [illegible] [illegible] । [illegible] । नायिका ३ प्रकारकी होती है अपनी, दूसरी और [illegible].

नार, (पु०) [illegible] अर्थे+अण् । [illegible] । और पानी । [illegible] और मनुष्यका (त्रि०) । [illegible] समूह । [illegible] (न०)

नारङ्ग, (पु०) [illegible] (अङ्ग) । "[illegible]"+ [illegible] । [illegible] (त्रि०).

[illegible], (त्रि०) [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]

[illegible], ([illegible]) [illegible]

नाराच, (न०) नराणां समूहः । नारं आचामति [illegible] ड (अ) । सर्वलोहमय अस्त्र । लोहेका [illegible] बाण । तीर.

नारायण, (पु०) "नार" नाम जलका है, [illegible] से उपजे हैं, सबसे पहिले जलही [illegible] अर्थात् निवासस्थान है ऐसे मनुजीके [illegible] अर्थ होता है । नरसमूहका आश्रय ([illegible]).

नारायणक्षेत्र, (न०) ६ त० । [illegible] चार २ हाथ जगह.

नारायणबलि, (पु०) धर्मशास्त्रमें [illegible] क्षिप्त जो मरेहुए पापग्रीआदिकोंका [illegible]

नारायणी, (स्त्री०) विष्णुकी शक्ति । [illegible] तावरी.

नारिकेल, (पु०) नल्+इण्-नालिः । केन ([illegible] न वा इलति चलति) इण्+क । कर्म० । [illegible] जलसे हिलता है । एक वृक्ष । नारियेल । [illegible]

नारी, (स्त्री०) नृ-नर-वा जातौ+ङीष् नि० [illegible]

नारीदूषणम्, (न०) नार्या दूषणम् । [illegible]

नारीरत्नम्, (न०) नारीषु रत्नं नारीरत्नमें [illegible] उत्तम स्त्री । ऊंची औरत.

नार्पत्य, (त्रि०) नृपतेः अयं+यत् । [illegible] राजसंबंधी.

नाल, (न०) नल+ण । कमलकी डण्डी । [illegible]

नालीक, नाल्या कायति । कै+क । भनुर । [illegible] स । [illegible].

नाविक, (पु०) नावा चरति+ठक् (इक) । [illegible] विचरता है । कर्णधार । जहाजका चलानेहारा [illegible] मल्लाह । मांझी

नाव्य, (त्रि०) नावा तीर्यते यत् । [illegible] नावसे तराजाता है । नावसे तैरनेलायक [illegible]

नाश, (पु०) नश+घञ् (अ) । [illegible] । अदर्शन । न दीखना । विध्वंस । मरना । [illegible] न मिलना.

नाशक, (त्रि०) नश+णिच्+ण्वुल् । नाश करनेहारा [illegible]

नाशन, (त्रि०) नश+णिच्+ल्युट् । नाश ([illegible]) करनेहारा.

[illegible], (पु० द्वि० व०) [illegible]

…सा, (स्त्री०) नस्-शब्द+अ । नासिका । गन्धको ग्रहण करनेहारी एक इन्द्रिय और शब्द । नाक.

…सिका, (स्त्री०) नास् शब्दकरना+ण्वुल् । नाक । नासा । नाककी मूर्तिवाला.

…सिकामल, (पु०) नासिकायाः मल । नाकका मैल.

…सिक्य, (त्रि०) नासिकायै हितः-तत्र भवो वा+यत् । नासिकाके लिये हितकारी वा उसमें होनेहारा । नासासे उपजे अश्विनीकुमार (पु० द्वि० व०)

…सीर, (न०) नास+ईरन् । अग्रेसर सैन्य (आगे जानेहारी फौज) सेनाका मुख । आगे जानेहारा । अग्रसर (त्रि०).

…स्ति, (अव्य०) अविद्यमानता । न होना । "अस्ति नास्ति न जानाति" वाक्यवत्.

…स्तिक, (त्रि०) नास्ति परलोकादिकं इति मतिः अस्य+ठन् । जिसका विचार ऐसा है कि "परलोक, उसका साधन धर्म वा अधर्म, उसका साक्षी (गवाह) ईश्वर कुछ भी नहीं" चार्वाक आदि । स्वर्ग, स्वर्गका साधन, और ईश्वर तीनोंको न माननेवाला.

…स्तिकता, (स्त्री०) नास्तिकस्य भावः । नास्तिकका होना । मिथ्यादृष्टि । झूठी नजर (स्वर्ग आदि न मानने).

…, (अव्य०) उपसर्ग । नीचे । बहुत । सदा । संदेह । कौशल । फेंकना । हटना । पास । आदर । देना । छूटना । रोकना.

…कट, (न०) नि+कट्+अच् (अ) । समीप । पास.

…कर, (पु०) नि+कृ+ अप् । समूह । सार । वित्त (धन) । निधि । खजाना.

…कर्षण, (न०) निर्गतं कर्षणात् । खेंचनेसे निकला । गांव आदिमें घर आदिको बनानेके लिये नापा हुआ देश । बाहिर सैर करनेकी भूमि । बहिर्विहारभूमि.

…कष ण, (पु०) नि+कष् (ष्) अच् वा (अ) । कपकालक्ष्य । शाण । सोना आदि कसनेका पत्थर । कसौटी । हथियार आदिको तेज करनेवाला पत्थर.

…कषा, (अव्य०) निकट (पास) । मध्य (बीच) । राक्षसोंकी माता (स्त्री०).

…कषोपल, (न०) कर्म० । शाण । सान । सोने आदिको परिखनेहारा एक पत्थर । कसौटी । "कसिपत्थर."

…काम, (न०) नि+कम्+घञ् (अ) । यथेच्छ । इच्छाके अनुसार । जैसा चाहता । अतिशय (बहुत) । एह । घर । परमात्मा.

…काय, (न०) नि+चि+घञ् कुत्वम् । समानधर्मियोंका समूह । एकधर्मवालोंका झुंड । निलय । निवास । [illegible]

निकाय्य, (न०) निचीयते अत्र । नि+चि+ण्यत्-कुत्वम् । गृह । घर.

निकार, (नि+कृ+घञ्) । पराभव । तिरस्कार । बेइज्जती । अपकार । कृ+घञ् । धन आदिका ऊपर फेंकना । उठाना.

निकाश, (पु०) नि+काश्+घञ् । मूर्ति । शकल । आकार । दर्शन । निकट गत्या (बराबर) (समासमें पीछे रहता है).

निकुञ्ज, (न०) नि नेपेण को जायते । जन+ड-पृ० । लतादिपिहित स्थल । बेल आदिसे ढका हुआ स्थान

निकुम्भ, (पु०) नि+कुम्भ+अच् । पृ० । कुम्भकर्ण राक्षसका पुत्र । दन्तीवृक्ष.

निकुम्भिला, (स्त्री०) लङ्काके पश्चिमकी ओर एक गुफा । वहांकी एक देवी.

निकुरम्ब, (न०) नि+कुर्-शब्दकरना+अम्बच् । समूह । बहुतता.

निकृत, (त्रि०) नि+कृ+क्त । पराभूत । बेइज्जत किया गया । वञ्चित । ठगा हुआ । ठगनेवाला । नीच । शठ । धूर्त.

निकृति, (स्त्री०) नि+कृ+क्तिन् । शाठ्य । क्षेप । तिरस्कार और दैन्य । बेइज्जत करना । दरिद्रता । गरीबी.

निकृष्ट, (त्रि०) नि+कृष्+क्त । जाति और आचार आदिसे निन्दित । अपकृष्ट । नीच । अधम । बुरा.

निकेत, (पु०) नि+कित् निवासकरना । अच् वा+घञ् । गृह । घर । निकेतन.

निक्त, (त्रि०) निज+क्त । धोया गया । साफ किया गया.

निक्व (ा) ण, (पु०) नि+क्वण्+अप्-घञ् वा । वीणाका शब्द । वीनकी आवाज

निःक्षत्रिय, (त्रि०) नास्ति क्षत्रियः यत्र । जहां क्षत्रिय नहीं रहा । बिनाक्षत्रिय जमीन आदि.

निक्षिप्त, (त्रि०) नि+क्षिप्+क्त । न्यस्त । रखा गया । फेंका गया । स्थापित

निक्षेप, (पु०) नि+क्षिप्+कर्मणि घञ् । दूसरेमें अर्पित किया गया अपना धन आदि । अमानत । शिल्पी (कारीगर) के हाथमें ठीक करनेके लिये दिया गया धन.

निक्षेपण, (न०) नि+क्षिप+ल्युट् । फेंकना । डाले रखना

निक्षेप्तृ, (पु०) नि+क्षिप्+तृच् । फेंकनेवाला । [illegible]

निखर्व, (पु०) [illegible] एक हजार करोड़ [illegible] ([illegible]) । [illegible]

निखात, (त्रि०) नि+खन्+क्त । [illegible] । [illegible]

निखिल, (त्रि०) [illegible] । [illegible]

निगड, (पु० न०) नि+गल्+अच् । बन्धन । शृंखला । बेड़ी । सांकल । हथकड़ी । बेड़ी.

निगडित, (त्रि०) निगडः जातः अस्य । इतच् । बद्ध । बंधन । बंधाहुआ.

निगद, (पु०) नि+गद्+अप् । भाषण । बोलना । थोड़ोंकी [illegible].

निगम, (पु०) [illegible] अनेन वा । नि+गम्+घञ् । निश्चय । प्रतिज्ञा । वेद । न्यायके पांच अवयवोंमेंसे [illegible] अवयव । व्यापार । बाजार । वेदकी शाखा । [illegible].

निगमन, (न०) नि+गम्+ल्युट् (अन) । प्रतिकूल ([illegible]) [illegible] ([illegible]) को तोड़कर [illegible] ([illegible]) [illegible] निश्चय करनेहारा न्यायके पांच अवयवोंमेंसे [illegible] "इसलिये यहां अग्नि है" [illegible].

निगा(ग)र, (पु०) नि+गृ+अप्-घञ् वा । भोजन । [illegible] । [illegible].

निगाल, (पु०) नि+गल्-अदन-गाल+घञ् । अश्व (घोड़े) के [illegible] स्थान.

निगीर्ण, (त्रि०) नि+गृ+क्त । निगला गया । खाया गया । [illegible] । छिपाया गया.

निगूढ, (त्रि०) नि+गुह्+क्त । छिपाया गया । गुप्त । [illegible].

निगूढ, [illegible] । [illegible] । [illegible] । छिपाहुआ और [illegible] । [illegible] (त्रि०).

निगृहीत, (त्रि०) नि+ग्रह्+क्त । [illegible] ([illegible]) । [illegible] हुआ । [illegible].

निग्रह, (पु०) नि+ग्रह+अप । [illegible] । सीमा (हद) । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible] करना । [illegible] । [illegible] हटाना । [illegible] ([illegible]).

निग्रहस्थान, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible]) को [illegible] । [illegible] [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]).

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible].

निघ्न, (त्रि०) नि+हन्+क के अर्थमें ड [illegible] (ताबेदार) । गुणित । गुणाया ([illegible]) "द्विगुणान्तर्गनिघ्न" इति टीकाकार.

निचय, (पु०) नि+चि+कर्मणि अच् । [illegible] (बढ़ाहुआ) पदार्थ । [illegible] बढ़ाहुआ । समूह । ढेर.

निचाय, (पु०) नि+चि+घञ् । [illegible] ([illegible] हुआ) धान्य आदि ([illegible] आदि अन्न) । [illegible]

निचित, (त्रि०) नि+चि+क्त । व्याप्त । [illegible] फैलाहुआ । सङ्कीर्ण । मिलाहुआ । [illegible] । [illegible]

निचोल, (पु०) नि+चुल्+अच् । [illegible] । [illegible] आदि [illegible] जाती है [illegible]) । [illegible] श्रीपिधानपट ([illegible]) । [illegible]

निज्, जु० उभ० । नेनेक्ति, नेनिक्ते । [illegible] करना । धोना । शुद्ध करना.

निज, (न०) नि+जन्+ड । आत्मीय । [illegible]

निटिल, (न०) कपाल । मथा । चोटी.

नितम्ब, (पु०) नि+तम्ब्+अच् । [illegible] कामुकैः । कालीतक जिसकी इच्छा [illegible] हैं । स्त्रियोंकी कमरका पिछला भाग । [illegible] कंधा । किनारा । कमर.

नितम्बबिम्बम्, (न०) नितम्बस्य बिम्बम् । [illegible] (चूतड़).

नितम्बवती, (स्त्री०) नितम्ब+मतुप्+ई । [illegible] और बड़े जघनवाली औरत.

नितम्बिनी, (स्त्री०) नितम्ब+[illegible] [illegible] नितम्बवाली स्त्री । [illegible] औरत.

नितराम्, (अव्य०) नि+तर+आम् । [illegible] अतिशय । विशेषकरके.

नितल, (न०) नि [illegible] तले ([illegible]) [illegible] जो बहुत नीचे है.

नितान्त, (न०) नि [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । बहुत ही । [illegible]

नित्य, (न०) [illegible] वा [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०) । [illegible] (पु०) । [illegible] । [illegible] । [illegible] यथा "[illegible]".

[illegible], (न०) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible]

[illegible], (स्त्री० न०) [illegible] [illegible] । [illegible].

नित्यतृप्त, (त्रि॰) नित्यं तृप्तः (सदा तृप्त-रज्यहुआ) "नित्यं ब्रह्मानन्देन वा तृप्तः"। ब्रह्मस्वरूप आनन्दसे तृप्त। आनन्दके लाभसे सदा तृप्त। "नित्यतृप्तो निराश्रयः" स्मृतिः.

नित्यदा, (अव्य॰) सातत्य। सदा। हमेशहसे.

नित्यमुक्त, (पु॰) नित्यं मुक्तः। सदा मुक्तहुआ। तीन कालमें भी बंधनसे रहित। परमात्मा.

नित्ययज्ञ, (पु॰) कर्म॰। फलकी इच्छा न रखके जीवनपर्यन्तके लिये विधान कियागया यज्ञ। अग्निहोत्र आदि.

नित्ययौवना, (स्त्री॰) नित्यं यौवनं यस्याः ब॰ स॰। नित्य (सदा) यौवन (जवानी) वाली स्त्री। द्रौपदीका नाम.

नित्यशङ्कित, (त्रि॰) नित्यं शङ्का जाता अस्य+इतच्। सदा संशय करनेवाला.

नित्यसत्त्वस्थ, (त्रि॰) नित्यं (अचल) सत्त्व (सत्त्व) (गुणभेदो वा) तत्र तिष्ठति। स्था+क। न डिगनेके धीरजरूपी गुणमें रहनेहारा। धैर्य करनेहारा। रजतमको दबाकर सदा सत्त्वगुणका आश्रय लेनेहारा.

नित्यसमास, (पु॰) कर्म॰। एक प्रकारका समास। (अस्वपद समास। जिसका अर्थ समासभिन्न भिन्न पदोंसे कभी समासमें नहिं आसकता)। दूसरा अर्थ एकहीमें हुआ। यथा "अमदग्नि" "जयद्रथ" "कामोविन".

नित्यस्वाध्याय, (पु॰) सदैव वर्जनीय वेदपाठादि हुतीका न। वेद न पढनेकी छुट्टी.

नित्याभियुक्त, (त्रि॰) नित्यं अभि (समन्तात्) युक्तः योगे व्याप्त.)। सदाही चारों ओरसे योगाभ्यासमें लगाहुआ। केवल शरीरके रक्षाके लिये काम करनेहारा.

निदर्शन, (न॰) नि+दृश्+ल्युट्। उदाहरण। निशान। अर्थालङ्कार.

निदाघ, (पु॰) निरन्तर दहते अत्र। जिस समय बहुत तपते हैं। नि+दह+घञ्। उष्ण। घाम। घर्म। पसीना। गर्मीका मौसम (जेठ और हाड़)

निदाघकर, (पु॰) निदाघं (घर्म) करोति। कृ+अच्। जो गर्मी करते है। सूर्य। तपन.

निदान, (न॰) निरन्तर दीयते। दा+ल्युट्। आदिकारण। कारण। हेतु। दृष्टि (तद्दर्ध)। बछड़ा बांधना। बछड़ेकी रस्सी। अवसान। आखिर। रोगका निर्णय करनेहारा एक ग्रन्थ। और रोगका कारण.

निदिग्ध, (त्रि॰) नि+दिह्+क्त। वस्त्रीन। बढ़ाहुआ। चैनकरिके बढ़हुआ। समीपरस्थित.

निदिध्यासन, (न॰) सुनेसे सुनसे सुनेहुए अर्थका निरन्तर (लगातार) विचार करना। एक प्रकारका ध्यान। शोचहुए अर्थसे ह्रदयन.

निदिध्यासन, (न॰) नि+ध्यै+सन्+अन। निरन्तर ध्यान लगाना। निरन्तर (लगातार) समाधि लगाना.

निदेश, (पु॰) नि+दिश+घञ्। शासन। आज्ञा। हुक्म। कहना। निकट (पास)। भजन (वर्तन).

निद्रा, (स्त्री॰) नि+द्रा+अङ्। शयन। सोना। नींद। जीवकी वह अवस्था कि जिसमें कर्मेन्द्रिय विषयोंसे हटजाती है.

निधन, (पु॰) (न॰) नि+धा+क्यु। मरण। नाश। कुल। लग्नसे ८ वाँ स्थान.

निधान, (न॰) नि+धा+ल्युट्। धन धन आदि निधि (खजाना)। आश्रय (आसरा)। कर्णका अङ्ग

निधि, (पु॰) नि+धा+कि। धन रत्न आदि खजाना। फिर लेनेके लिये किसी स्थानमें अर्पण करना। वह द्रव्य कि जिसका कोई मालिक नहिं। आधार जैसे "गुणनिधि" "जलनिधि".

निधीश, (पु॰) ६ त॰। खजानेका मालिक। कुबेर। "निधिपति".

निधुवन, (न॰) नितरां धुवनं (हस्तादिकम्पनं) यत्र। जिसमें हाथ आदि अंग बहुत कांपते हैं। सुरत। मैथुन। स्त्री और पुरुषकी केल। क्रमविलास। मैथुन.

निध्यै, भ्वा॰ प॰ ध्यायति। दृष्टी। ध्यान। विशेष ध्यान। ध्यान करना। विशेषतर ध्यान लगाना। एक विषयमें लगाना करना

निन(ना)द, (पु॰) नि+नद्+अप्‌ वा घञ्। शब्द। आवाज। रवका शब्द। गर्जनेकी आवाज

निन्द्, भ्वा॰ प॰ निन्दति। निन्दन। बुराई निन्दा करना। कलङ्क लगाना। दोष निकालना.

निन्दक, (त्रि॰) निन्द्+ण्वुल्+अक। निन्दा करनेवाला। दोषलगानेवाला.

निन्दा, (स्त्री॰) निन्द्+अ। अपवाद। बुराई। कुत्सा। निन्दन। बदनामी। ऐब। दूषण। दोष

निन्द्य, (त्रि॰) निन्दितुं योग्य निन्द्+यत्। निन्दाके लायक.

निन्दित, (त्रि॰) निन्द्+क्त। निन्दा किया गया। दोषलगाया गया.

निनाद, (स्त्री॰) निन्दाकी आज्ञा आदि बात। बुराई। बदनामी बात.

निपठ, (पु॰) निपुण वचन। अतिनिपुण। बात्यकी सिरा। सराय। आसरा "यह" आदि "यह" बात.

निपान, (न॰) नितरां पीयते अत्र। जहां पिलाये जाते हैं। कुएके समीप जलाशय (हौज)। कुआं। दोहनेका पात्र (बर्तन).

निपीडित, (त्रि॰) नितरां पीडितः । नि+पीड+क्त । बहुतही पीडा पहुंचाया गया । कृतनिष्पीडन । निचोडा गया.

निपुण, (त्रि॰) नि+पुण्+कर्मणि क । प्रवीण । चतुर । कामर्में दक्ष (होसियार).

निबन्ध, (पु॰) नि+बन्ध्+घञ् । अमुक समयपर मैं देऊंगा इस प्रकार प्रतिज्ञा करना । ग्रन्थ । ग्रन्थकी रचना । मूत्र रुकनेकी बीमारी (रोग) । बंधन । "निबध्नाति कोष्ठं+ अच्" नीमका वृक्ष । (इसके सेवनसे कोठा=पेटका भाग रुकजाता है.)

निबन्धन, (न॰) निबध्यते अनेन अत्र वा+ल्युट् । जिससे या जहां फस जाता है । हेतु (सबब) । बांधना । बीन बाजेका ऊपरला भाग (हिस्सा).

निभ, (पु॰) निभाति । नि+भा+क । व्याज (बहाना) । "यदि पिछले पदमें रहे" सदृश । समान (त्रि॰) जैसे "पितृनिभः" "मातृनिभः" इत्यादि अर्थात् उसके समान.

निभृत, (त्रि॰) नि+भृ+क्त । भृत (धो) । विनीत । (सीखाहुआ) । निश्चल (न हिलनेहारा) । एकाग्र । गुप्त (चुपचाप) निर्जन (एकान्त) । अस्तके लिये उपस्थित हुआ । छिपनेपर आगया.

निमग्न, (त्रि॰) नि+मस्ज्+क्त । डूबा हुआ.

निमज्जथु, (पु॰) नि+मस्ज्+अथुच् । अवगाहन । दाखिल होना । स्नान करना । जल आदिमें प्रवेश करना । चुपचाप ठहरना.

निमज्जन, (न॰) नि+मस्ज्+ल्युट् । अवगाह । जल आदिमें प्रवेश करना । चुपचाप ठहरना । निश्चलस्थिति.

निमन्त्रण, (न॰) नि+मन्त्र+ल्युट् । श्राद्ध आदिमें भोजनके लिये बुलाना । आह्वान । बुलाना.

निमरद्, पु॰ प॰ । ममति । ममन्द । अमार्दीत् । मम । दूबना.

निमान, (न॰) निमीयते (मीयते) अनेन । मा+ल्युट् । जिस्से खरीदते हैं । मूल्य । मोल । कीमत.

निमि, (पु॰) इक्ष्वाकुके वंशमें और चन्द्रमाके वंशमें एक राजा.

निमित्त, (न॰) नि+मिद्+क्त् । कारण । हेतु । सबब । लक्ष्य (निशाना) चिह्न । निशान । भाविशुभअशुभको सूचना करनेहारा शकुन । उद्देश्य । सुरआ.

निमित्तकारण, (न॰) कर्म॰ । न्यायमें कहागया समवायि और असमवायिसे भिन्न कारण जैसे घट आदिमें मट्टीआदि समवायि कारण और कपालोंका संयोग असमवायि कारण है, इन दोनोंसे भिन्न कुम्भार (कुम्हार) आदि निमित्तकारण है.

निमि(मे)ष, (पु॰) निमेषति । नि+मिष् ... एक समय । आंखके स्वाभाविक फुरकनेका ... "भावे अच्" आंखका मीटना.

निमीलन, (न॰) नि+मील्+ल्युट् । मरना । ... आंखका मीटना.

निम्न, (त्रि॰) निकृष्टं मनति । म्ना+क । पदी (ए... नीचे । नीच.

निम्नगा, (स्त्री॰) निम्नं गच्छति । गम्+ड । ... है । हरएक नदी । दर्या । नीचे जानेवाला (त्रि॰)

निम्नोन्नत, (त्रि॰) निम्नं च उद् उन्नतं च ।... नीचे ऊपर । बंधुर.

निम्ब, (पु॰) निम्बति स्वास्थ्यम् । निम्बं ... नीमका वृक्ष.

निम्लोचन, (न॰) नि+म्लुच्+ल्युट् । अस्त ...

नियत, (त्रि॰) नि+यम्+क्त । निश्चित (पट) आचारवाला । नियमवाला । जिसकी इन्द्रियां ... है । नित्यका काम (न॰).

नियति, (स्त्री॰) नि+यम्+क्तिन् । नियम । ... सत । "नियतिः केन बाध्यते" इति पुरुष ... भले बुरे काम और पुण्य.

नियन्तृ, (पु॰) नियच्छति वाहान् । नि+यम्+तृ ... घोड़ों आदिको काबू करता है । सारथि । ... प्रभु (मालिक) । सजा देनेवाला और ... (त्रि॰)

नियन्त्रित, (त्रि॰) नितरां यन्त्रितः । नि+यन्त्र+... और प्रतिरुद्ध । रुकाहुआ । अच्छीतरह ...

नियम, (पु॰) नि+यम्+घञ् । प्रतिज्ञा । निश्चय । रोक । इकरार । यकीन । अंगीकार । ... करका व्रत । मीमांसाकी एक विधि । ... उपासा । वेदका पढ़ना । ईश्वरमें मन देना.

नियामक, (पु॰) नि+यम्+ण्वुल् । कर्णधार । हुकम चलानेहारा । मालिक (त्रि॰).

नियुत, (न॰) दसलाख संख्या । दस लाख ...

नियोग, (पु॰) नि+युज्+भावे घञ् । आज्ञा (... निश्चय । आज्ञा (हुकम) । नियोजन (... काममें लगाना) "नियुज्यते अस्मिन्" ...

नियोग्य, (त्रि॰) नियोक्तुं अर्हति+यत् । ... लगाना है । प्रभु । मालिक.

नियोजन, (न॰) नि+युज्+ल्युट् । ... मिलाना । कायम करना.

नियोज्य, (त्रि॰) नियोक्तुं शक्यते+... काम दिया जासकता है । प्रेष्य । सेवक । नौकर.

...र्, (अव्य०) नृ+क्विप्। निषेध। नहीं। निश्चय। (यकीन) निकलना। बाहिर.

...रग्नि, (पु०) नास्ति अग्निः यस्य। जिसकी आग नहीं। अग्निसे सिद्ध होनेलायक वैदिक कर्मसे शून्य ब्राह्मण आदि तीनों वर्ण.

...रङ्कुश, (त्रि०) निर्गतः अङ्कुशात्। जो अंकुश (रोकसे) निकलगया। बाधशून्य। जिसे रोक नहीं सके.

...रञ्जन, (त्रि०) निर्गतं अञ्जनं यस्मात्। जिससे मैल निकल गई। निर्मल (साफ) तमोगुणसे निकलगया है तम जिससे निकलगया। परब्रह्म। परमात्मा। "निरञ्जनः साम्यमुपैति दिव्यम्" इति श्रुतिः.

...रतिशय, (त्रि०) निर्गतः अतिशयः अस्मात्। अतिशयशून्य। परमोत्कृष्ट। सबसे बहुतही अच्छा.

...रत्यय, (त्रि०) निर्गतः अत्ययः अस्मात्। नाशसे रहित। न रहनेहारा। अमाविक। जिसमें छल नहीं.

...रनुक्रोश, (पु०) निर्गतः अनुक्रोशः यस्मात्। ब० स०। निकल गई है दया जिससे। निर्दय। बेरहम.

...रनुनासिक, (पु०) निर्गतः अनुनासिकः यस्मात्। जो वर्ण नासिका (नाक) से नहीं बोला जाता.

...रन्तर, (त्रि०) निर्गतं अन्तरात्, निर्गतं अन्तरं वा यस्मात्। बीच निकलगया। निबिड। घना। निरवधि (असीम)। लगातार। बगैर फरकके.

...रन्वय, (त्रि०) नास्ति अन्वयः=वंशः यस्य। ब० स०। जिसका वंश नहीं। सन्तानरहित। असंबद्ध। वाक्यमें अन्वयके साथ संबंध न रखनेवाला.

...रपत्रप, (त्रि०) निर्गतः अपत्रपायाः। लज्जासे निकला हुआ। बेशरम.

...रपराध, (त्रि०) नास्ति अपराधः यस्य। अपराधरहित। निर्दोष.

...रपाय, (त्रि०) निर्गतः अपायः दुःखं यस्य। दुःखरहित। अक्षय। अविनाशी.

...रपेक्ष, (त्रि०) निर्गता अपेक्षा यस्य। अपेक्षा (अपनाइच्छा। अदरल) रहित। बेपर्वाह। लापर्वाह.

...रभिमान, (त्रि०) निर्गतः अभिमानो यस्मात्। ब० स०। निकल गया है अभिमान जिससे.

...रर्गल, (त्रि०) निर्गतं अर्गलं यस्मात्। जिससे ऐंड़ा (रोक) निकल गई। न रुकनेहारा। स्वतंत्र। प्रतिबंधरहित.

...रर्थक, (त्रि०) निर्गतः अर्थः यस्मात्+कप्। जिससे मतलब निकल गया। निष्प्रयोजन। विना मतलब। जिसका कुछ अर्थ नहीं.

निरवग्रह, (त्रि०) निर्गतः अवग्रहात्। बेरोक। निरप्रतिबंध। आजाद। वृष्टिप्रतिबंधाभाव। बरिसनेमें रोकना न होना.

निरवद्य, (त्रि०) निर्गतः अवद्यात्। निन्दासे निकला हुआ। दोषरहित। और उत्कृष्ट (अच्छा).

निरवयव, (पु०) निर्गतः अवयवात्। हिस्सेसे निकल गया। परमाणु (सबसे छोटा)। आकार (साफ) शून्य आकाश आदि (त्रि०).

निरवशेष, (त्रि०) निर्गतः अवशेषः यस्मात्। जिससे बाकी निकलगया। सर्वस्मिन्। सब। सारा.

निरवसित, (त्रि०) निर्+अव+सो+क्त। वर्णसे बाहिर कियागया। (जिसका खानेका पात्र-बर्तन संस्कार (साफ) करनेसेभी शुद्ध नहीं होता)। चण्डाल आदि नीच वर्ण.

निरंश, (त्रि०) निर्गतः अंशः यस्य। जिसका हिस्सा नहीं रहा। अंशरहित। क्लीब (जो जन्मसे निकम्मा) नपुंसक आदि पुत्र। संक्रान्तिका दिन.

निरसन, (न०) निर्+अस्+ल्युट्। परित्याग। छोड़ना। तिरस्कार करना। मारना। निकलना.

निरस्त, (त्रि०) निर्+अस्+क्त। जल्दी बोला गया। (त्वरितोच्चरित)। छूटा गया। फेंक दियागया। तिरस्कार कियागया.

निराकरण, (न०) निर्+आ+कृ+ल्युट्। निरसन (हटाना)। दूर करना। तिरस्कार करना.

निराकरिष्णु, (स्त्री०) निर्+आ+कृ+इष्णुच्। निराकरणशील। निकाल देनेवाला.

निराकृति, (स्त्री०) निर्+आ+कृ+क्तिन्। निरसन। हटाना.

निरामय, (त्रि०) निर्गतः आमयात्। रोगसे निकला। रोगरहित। बकरा बकरी और सूअर (पु०).

निरुक्त, (न०) निश्चयेन उच्यते अत्र। निर्+वच्+क्त। प्रकृतिप्रत्यय आदि अवयवोंके अर्थको विवेक कर प्रतिपादन करनेहारा वेदका एक अङ्ग। एक ग्रन्थ। पदोंको तोड़नेहारा व्याकरण। कहागया (त्रि०).

निरुक्ति, (स्त्री०) निर्+वच्+क्तिन्। निर्वचन। किसी शब्दके विवरणमें पद व वाक्य। प्रकृति (धातु) प्रत्यय आदि अवयवोंके अर्थको प्रकार निर्देश करके बोधन करना। जिसके अपभ्रंश रूप जो निरुक्तार किरतार है.

निरुत्तर, (त्रि०) निर्गतं उत्तरं यस्मात्। जिससे उत्तर दिया नहीं। अनुत्तर (न देनेवाला उत्तर) जैसा (बंध की) का पुत्र आदि। जब न कर्तृके जिसे प्रश्न नहीं कर सके ऐसा समाधान। अनुत्तमार.

निरूढ, (पु०) निर्+रुह्+क्त । शक्तिके समान लक्षणासे अर्थको बतानेहारा शब्द । न बिगड़ा हुआ (त्रि०).

निरूढलक्षणा, (स्त्री०) निरूढा (शक्तितुल्या) लक्षणा । जो अर्थ [illegible] बोलनेसे प्रसिद्ध है उसमें शक्तिके समान लक्षणासे शब्दके अर्थको बतानेहारी शक्ति.

निरूढि, (स्त्री०) निर्+रुह्+क्तिन् । प्रसिद्धि । मजबूती.

निरूपण, (न०) नि+रूप्+ल्युट् । [illegible] अनुकूल [illegible] प्रयोग करनेहारा विचार । निदर्शन । दृष्टान्त । [illegible] एक [illegible] लेखना । [illegible] । प्रकाश [illegible] (दुकानदारना).

निरूपित, (त्रि०) नि+रूप्+क्त । नियुक्त । किसी काममें [illegible] । [illegible] । [illegible] किया गया । दिखलाया.

निरोध, (पु०) नि+रुध्+घञ् । नाश । तबाही । "न [illegible]" इति पुराणम् । प्रलय । प्रतिरोध । [illegible] । कैद.

निरोधन, (न०) नि+रुध्+ल्युट् । कारागार (जेलखाना) आदिमें डालकर [illegible] रोकना । बंद करना.

[illegible], (पु०) [illegible] (रूपा) [illegible] । जहां बाहर [illegible] है । दक्षिण और पश्चिम दिशाका पति । [illegible] (दुर्गन्ध) (स्त्री०) । [illegible] (दैत्य) (त्रि०).

[illegible], (पु०) [illegible] । रूप, रस, गन्ध, [illegible] रहित । [illegible] परमात्मा । [illegible] (ब्राह्मणी) [illegible] गुण निकल [illegible] (पुष्प) (त्रि०).

[illegible], (स्त्री०) [illegible] (वैराग्य) । नीरस । [illegible] । [illegible] गुण । वटिका.

[illegible], (पु०) [illegible] । जो सबसे निकल- [illegible] । [illegible] । [illegible] भेद । [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०)

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] (त्रि०).

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] (त्रि०) [illegible] । [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible] (त्रि०) [illegible]

निर्जर, (पु०) निर्गता जरा यस्मा[illegible] निकल गया । देवता । बुढ़ापेसे रहि[illegible] अमृत.

निर्जरा, (स्त्री०) निर्गता जरा यस्याः [illegible] तालपर्णी । गिलोय.

निर्झर, (पु०) निर्+झृ+अप् । पर्व[illegible] प्रवाह । झरना.

निर्झरिणी, (स्त्री०) निर्झरः अस्ति ([illegible] इनि । झरनेसे निकली । नदी । इति[illegible]

निर्णय, (पु०) निर्+नी+अच् । निश्[illegible] लक्ष्य । सन्देह (शक) । [illegible] पांच अवयवोंमें सबसे पिछला । फैसला.

निर्णिक्त, (त्रि०) निर्+निज्+क्त । [illegible] किया गया । अपगतमल (जिसकी मैल[illegible]

निर्णेजक, (पु०) निर्+निज्+ण्वुल् । [illegible] रजक । धोबी.

निर्दहन, (पु०) निःशेषेण दहति । [illegible] देता है । भल्लातक । मूर्वा (स्त्री०) [illegible] निकल गई" आगके बिना (भौम [illegible] सिरसिं (त्रि०).

निर्दिष्ट, (त्रि०) निर्+दिश्+क्त । [illegible] हुआ । दिखलाया हुआ । और बतलाया[illegible]

निर्देश, (पु०) निर्+दिश्+भावे घञ् । [illegible] आज्ञा । हुकम । और आदेश । "[illegible] बतलानेहारा उच्चारण नाम । वेतन । [illegible] प्रतीहेन निर्देशं बतको यथा" इति [illegible] देशसे निकल गया (त्रि०).

निर्द्वन्द्व, (त्रि०) निर्गतः द्वन्द्व । [illegible] आदि [illegible]) [illegible] दुःख, शीत उष्ण, लाभ अलाभ, आदि [illegible]

निर्धन, (पु०) निर्गत धन अस्मात् । [illegible] हीन (त्रि०) गरीब.

निर्धारण, (न०) निर्+धृ+णिच्+ल्युट् । [illegible] और अवयव समुदायसे एक देशको पृथ[illegible] मनुष्योंमें क्षत्रिय शूर है" यहां क्षत्रिय[illegible]

निर्धारित, (त्रि०) निर्+धृ+णिच्+क्त । [illegible] निश्चय किया गया । और [illegible] किया हुआ.

निर्बन्ध, (पु०) निर्+बन्ध्+घञ् । [illegible] हठ । आग्रह । आवेश.

ांध, (त्रि०) निर्गता बाधा यस्मात् । जिससे पीडा नेकल गई । निरुपद्रव । बाधारहित । विनरोक । फ़लीफके बिना

र्भय, (पु०) निर्+भी+अच् । हस्तश्रेष्ठ । अच्छा घोडा । भयरहित (त्रि०) बेखौफ़.

र्भर, (न०) नि:शेषेण भरः (भारः) अत्र । जहां उरादी भार हो । अतिमात्र । निहायत । ज़ुराद । जो बहुतही हो (त्रि०).

र्मक्षिक, (अव्य०) मक्षिकाया अभावः । जहां मक्खीका भी न होना । एकान्त.

र्मम, (त्रि०) निर्गतः ममकारः यस्मात् । जिससे मे- रापन जाता रहा) पुत्रके शरीर आदिमें ममतासे रहित एक योगी.

र्मल, (त्रि०) निर्गतः मलात् । मलसे निकल गया । रज०, तमः आदि मलसे रहित । पाप आदि मलरहित अ- शुद्धीसे रहित । शुद्ध (साफ) । "जिससे मल दूर हो जाता है" कतक (निर्मली) इसका फल पानीमें मिलानेसे पानी- की सारी मैल दूर हो जाती है (यह बात प्रसिद्ध है).

र्माल्य, (न०) देवताका विसर्जन करनेके अनन्तर देव- ताको दियागया द्रव्य । देवोच्छिष्ट (देवताका जूठा) देव- ताके ऊपर चढाये हुए द्रव्यका बाकी.

र्मुक्त, (पु०) निर्+मुच्+क्त । केंचुली (खुंज) उतार चुका साँप । पूरा छोड दिया । निष्परिग्रह (जो अपने पास कुछभी नहिं रखता । संगरहित । कम्परहित (त्रि०).

र्मोक, (पु०) निर्+मुच्+घञ् । सर्पकञ्चुक । साँपकी केंचुली मोचन (छोडना) । सन्नाह (संजोह वा जिरह) और आकाश (आसमान).

र्याण, (न०) निर्+या+ल्युट् । गजापाङ्गदेश । हाथीकी आँखका कोना । पशुओंके पाँवको बांधनेकी रस्सी । "जंजीर" शरसे आदिसे निकलना (सफर) । और मोक्ष.

र्यातन, (न०) निर्+यत्+णिच्+ल्युट् । वैरशुद्धि । वैर निकालना । प्रतिदान । लौटकर देना । देना । न्यास । समर्पण । अमानत देना.

र्यास, (पु०) निर्+यस्+घञ् । वृक्षके फूलनेसे निक- लता और समय पाकर कठिन हो जाता है । रस । गोंद । वृक्षका रस । काढा (क्वाथ).

र्यूह, (पु०) निर्+ऊह्+क । पु० । नागदन्तक (मिठी) । द्वार (दर्वाजा) । गोंद । मुकुट । शेखर । चोटी.

र्वचन, (न०) निर्+वच्+ल्युट् । धातु और प्रत्ययके विभा- गसे अर्थको कहनेहारी निरुक्ति । अर्थ पूरा २ कहना.

निर्वपण, (न०) निर्+वप्+ल्युट् । अन्न आदिका वित- रण करना । दान । देना । पितरोंके लिये श्राद्ध करना । खे- तीमें बीज बोना.

निर्वर्तित, (त्रि०) निर्+वृत्+णिच्+क्त । ... अन्ततक पहुंचायाहुआ.

निर्वहण, (न०) निर्+वह्+ल्युट् । ... (शुरु कीगई) कथाकी समाप्ति । ... धारा । नाटककी एक संधि.

निर्वाण, (न०) निर्+वा-भावे क्त । ... आत्यन्तिक मोक्ष (ऐसा छूटना कि फिर ...) निवृत्ति (हटना) । विनाश । ... डीवट । "कर्तामें क्त" निर्वृत (...) मुक्त । निश्चल । शून्य । और ... शमित । (त्रि०).

निर्वाद, (पु०) निर्+वद्+घञ् । ... लोकनिन्दा । बोहत.

निर्वापण, (न०) निर्+वप्+... मार डालना । देना.

निर्वासन, (न०) निर्+... करना । निकालना । ... करना । विसर्जन । ...

निर्वाह, (पु०) निर्+... और ... बंदोबस्त । निष्पत्ति । ... उत्तम । औषिद्ध । ...

निर्विकल्प, (त्रि०) ... विशेष्यविशेषण... आलेलायक, ... समंध ... विभाग... और प्रार्द... विषय... वैयाक... गेय... (क्रम).

...अनुर्वर । ... दुःख सहनन । ... बना । उद्+ववद् । ... स्थान । बजार । ... खटोला । छोटा बांस ।

निर्... ... प् । निवद् की हस्ती । ... ... निरह) कमतेर. ... (ऊपर वा दी-

निर्वृति, (स्त्री॰) निर्+वृ+क्तिन् । सुख । सुस्थिति । आराममें रहना । अस्त हो जाना । मोक्ष (छुटकारा) । और मौत.

निर्वृत्त, (त्रि॰) निर्+वृत्+क्त । निष्पन्न । पूरा कियाहुआ "निर्गता वृत्तिः यस्य" वृत्तिरहित । जिसकी कोई जीविका नहिं (त्रि॰).

निर्वेद, (पु॰) निर्+विद्+घञ् । अपना अवमान । धाकशारी । अनुताप । "इतना यत्न करनेपरभी काम न बना" इस तरह पछताना । उदासीनता । उदासी । वैराग्य । संसारके पदार्थोंसे मुं मोड़ना.

निर्वेश, (पु॰) निर्+विश्+घञ् । भोग । वेतन (मजदूरी) । मूर्च्छन (बेहोशी) । विवाह (शादी) । प्राप्ति (हासिल).

निर्व्यूढ, (त्रि॰) निर्+वि+वह्+क्त । त्यक्त (छोड़ाहुआ) । असमाप्त (जो खतम नहिं हुआ) । पूरा हुआ । समाप्त हुआ । उपजा । "उपचित" "जो काम सचाईसे पूरा कियागया हो" । पूरा दिखलाया गया.

निर्हरण, (न॰) निःशेषेण हरणम् । पूरा २ ले जाना । दाह (जलाना) के लिये शव (मुर्दा) आदिका लेजाना और निकालना.

निर्हार, (पु॰) निर्+हृ+घञ् । निखात (फसेहुए) शल्य (तीर) आदिका उद्धरण (निकालना) । मल, मूत्र आदिका त्याग । "आहारनिर्हारविहारयोगाः" इति स्मृतिः । प्रेत (मराहुआ) के शरीरको जलानेके लिये बाहिर लेजाना । जड़से उखाड़ना । छोड़ना । अपनी इच्छासे विनियोग (खर्च) करना.

निर्हारिन्, (पु॰) निर्हरति (दूरं गच्छति) निर्+हृ+णिनि । दूर जानेहारा गन्ध । जलानेके लिये शवको बाहिर लेजानेहारा (त्रि॰).

निर्ह्राद, (पु॰) निश्चयेन ह्रादः । ह्रद्+घञ् । शब्द । आवाज.

निलय, (पु॰) निलीयते अत्र । ली+अच् । जहां छिपरहते हैं । गृह । घर । आवासस्थान । रहनेकी जगह.

निलयनम्, (न॰) नि+ली+अन । छिपना । आश्रयस्थान । निवास । बाहिर जाना.

निलीन, (त्रि॰) नि+ली+क्त । चिपटगया । बंद किया गया । किसीमें छिपगया । गिराहुआ । नाश किया गया । बदलगया.

निवचन, (अव्य॰) वचननियम । वाणी रोक कर । कण्ठ रोककर.

निवप्, भ्वा॰ प॰ । छितराना । बोना । बीजारोपण करना । देना (उचा कर) विशेषतः पितरोंको.

निवपन, (न॰) निवपनं करणम् । पितृ आदिके वास्ते देना । पितरोंके लिये दान.

निवर्तन, (न॰) दोनों ओरसे बीस ... आदि । सौ वर्ग गज पृथिवी । नि+वृत्+...

निवर्हण, (न॰) नितरां वर्हणं । ... ल्युट् । मारना.

निवसति, (स्त्री॰) नि+वस्+आधारे ... निवासस्थान । घर.

निवसथ, (पु॰) न्युष्यते अत्र । निवस्... हती ग्राम गांव.

निवसन, (न॰) न्युष्यते अत्र । ... नि+वस्-आच्छादन-ढांकना+ल्युट् । वस्त्र । ...

निवह, (पु॰) नितरां उह्यते । वह्+घ ... नि+वह्+अच् । सात हवाओंमेंसे एक.

निवात, (पु॰) निवृतः निरुद्धः वा वातः ... वायु हटजाता वा रुकजाता है । ... वह जिरह जिससे शस्त्र (औजार) आदि ... सके । और आश्रय (आसरा) । ... (बेहवा जगह) (त्रि॰).

निवातकवच, (पु॰) हिरण्यकशिपुके ... बेटा । एकदैत्य.

निवाप, (पु॰) न्युप्यते । नि+वप्+घञ् ... दान देना.

निवापक, (पु॰) नि+वप्+ण्वुल् । बोने... रनेवाला.

निवास, (पु॰) नि+वस्+आधारे घञ् ... और आसरा । "जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि ...

निवासिन्, (त्रि॰) नि+वस्+णिनि । ... करनेवाला । कपड़े पहिरे हुए.

निविड, (त्रि॰) नितरां विडति (संह... +क । सान्द्र । घन । नीरन्ध्र । मोटा । ...

निविद्, भ्वा॰ प॰ । प्रायः प्रेरणार्थक ... कहना । खबर देना । इत्तिला देना । ... किया जाता है.

निवीत, (न॰) नि+व्ये+क्त । गले ... कण्ठलम्बित यज्ञसूत्र । पोशाक पहिनेहुए ...

निवृत्त, (न॰) नि+वृत्+भावे क्त । नि... निरत (हटाहुआ) । हटगया । ... होगया (त्रि॰).

निवृत्ति, (स्त्री॰) नि+वृत्+क्तिन् । ... ति । "निवृत्तिस्तु महाफला" इति मनु...

निवेदन, (न॰) नि+विद्+णिच्+ल्युट् । ... पन । आदरसे जतलाना (... (सौंपना).

निषाद, (पु०) निषीदति मनः पापं वा यस्मिन्। षद्+घञ्। "निषादं रौति कुञ्जरः" वीणा वा गलेसे निकलीहुई आवाज। चाण्डाल। ब्राह्मणसे शूद्रामें उपजा पारशव नाम वर्णसंकर। दोगला.

निषादित, (त्रि०) नि+षद्+णिच्+क्त। बैठाया गया। दुःखी किया गया.

निषादिन्, (पु०) निषादयति हस्तिनम्। नि+सद्+णिच्+णिनि। जो हाथीको बैठाताहै। हस्तिपाल। हस्तिपक। हाथी चलानेवाला.

निषिक्त, (त्रि०) नि+सिच्+क्त। सींचा गया। छिनका गया.

निषिद्ध, (त्रि०) नि+सिध्+क्त। निषेधका विषय। हटायाहुआ। रोका गया.

निषेक, (पु०) नि+सिच्+घञ्। गर्भाधान। हमल ठहरना। सींचना "निषेकादि श्मशानान्तम्" इति मनुः.

निषेचनम्, (न०) नि+सिच्+ल्युट्। सींचना। छिड़काव करना.

निष्क्, मान। मापना। चुरा० आत्म० सक० सेट्। निष्कयति। अनिनिष्कत। प्रादिसे णत्व नहीं होता.

निष्क, (पु० न०) निश्चयेन कामति। कैत्क। सोलह मासेका परिमाण। १०८ एकसौ आठ रत्तिभर सोना। वक्षोभूषण। छातीका जेवर (हार) सोना। एक तरहका सोनेका बर्तन.

निष्कण्टक, (त्रि०) निर्गताः कण्टकाः यस्मात्। ब० स०। जिसमेंसे कांटे निकल गये हों। शत्रुरहित। भयरहित.

निष्कपट, (त्रि०) निर्गतं कपटं यस्मात्। छलरहित। निरपराध। सरलहृदय। साफ दिलवाला.

निष्कम्प, (त्रि०) निर्गतः कम्पः यस्य। न कांपनेवाला। स्थिर। निश्चल.

निष्करुण, (त्रि०) निर्गता करुणा यस्मात्। ब० स०। निर्दय। बेरहम.

निष्कर्ष, निर्+कृष्+घञ्। इयत्तापरिच्छेद। बड़ी बातका सार (निचोड़)। निश्चय। यकीन.

निष्कल, (त्रि०) निर्गता कला यस्मात्। कलाशून्य। बेहुनर। और नष्टवीर्य (जिसका वीर्य नाशहोचुका) क्लीब (पु०)। "कला" (अवयवः) तच्छून्यः। निरवयव ब्रह्म.

निष्कलङ्क, (त्रि०) निर्गतः कलङ्कः यस्य। कलंक (दोष)-रहित। बेदाग.

निष्काम, (त्रि०) निर्गतः कामः यस्य। इच्छारहित। बेगरज.

निष्कारण, (त्रि०) नास्ति कारणं यस्य। कारणरहित। बिना किसी प्रयोजनके.

निष्कासित, (त्रि०) निस्+कस्+णिच्+क्त। निकासित (निकाला गया) (न०).

निष्किंचन, (त्रि०) नास्ति किंचन यस्य। कुछ नहीं। निर्धन.

निष्कुट, निस्+कुट्+क। घरके पासका बगीचा। खेत। अन्तःपुर। रनवास। (स्त्री०) इलाइची.

निष्कुल, (त्रि०) नास्ति कुलं यस्य। अकेला रह गया.

निष्कुषित, (त्रि०) निर्+कुष्+क्त। निस्त्वचीकृत। खाल उतारा गया.

निष्कृति, (स्त्री०) निर्+कृ+क्तिन्। छुटकारा। पाप आदिसे निकलना। "...कृतिः" इति स्मृतिः.

निष्क्राथ, (त्रि०) निर्+क्रथ्+क्त। काढ़ा हुआ.

निष्कोषण, (न०) निर्+कुष्+ल्युट्। (हिस्सों)को बाहिर निकालना.

निष्क्रमण, (न०) निर्+क्रम्+ल्युट्। जाना। चौथे महीनेमें करनेलायक एक संस्कार.

निष्ठा, (स्त्री०) नि+स्था+अङ्। समाप्ति। निष्पत्ति। नाश। अन्त। दुःख। व्रत। गुरुकी सेवा। धर्म आदिमें रहना। व्याकरणमें "क्त" "क्तवतु" ...

निष्ठी(ष्ठि)व, (पु०) नि+ष्ठिव्+घञ् ... श्लेष्म निकालना। थूक। खखार ... (३) वन".

निष्ठुर, (न०) नि+स्था+उरच्। ... कठोर (सख्त) (त्रि०)। ... वचन बोलना (न०)। ... (त्रि०).

निष्ठ्यूत, (त्रि०) नि+ष्ठिव्+क्त। ... हुआ.

निष्णात, (त्रि०) निगतं ... नि+स्ना+क्त ... वा ... निपुण (चतुर) ...

निष्पत्ति, (स्त्री०) निर्+पद्+क्तिन्। ... सिद्धि। फल। नदीमद.

निष्पत्राकृति, (स्त्री०) पत्रं (पुंखं) ... पत्रः (शरः) ... इति "सपत्रनिष्पत्राद्..." ... दूसरी ओरसे निकालना। ... (दरद).

॒, (त्रि०) निर्+पद्+क्त। सिद्ध। समाप्त। पूराहुआ.

ग्रह, (त्रि०) निर्गतः परिग्रहः यस्मात्। कन्था दरी) कौपीन (लंगोटी) और पुस्तक आदिके सिवा के पास कुछ नहिं। परमहंस संन्यासी। जिसने सब संग छोडदिया। लक्तसंग (त्रि०).

ल, (त्रि०) निर्गतं फलं यस्मात्। जिससे फल निकल या। फलसे रहित। वेफायदह। फलरहित (पु०).

(अव्य०) निषेध। निश्चय। साकल्य। पूरा २। दगया.

ह, (त्रि०) निवृत्ता स्पृहा यस्य। जिसकी इच्छा रही। विषयोंके सुखकी इच्छासे रहित.

ह, (पु०) नि+स्वन्+घञ्। स्वभाव। स्वरूप और सृष्टि.

त्व, (त्रि०) निर्गतं सत्त्वं यस्य। जहां हौंसला न रहा। त्त्व। जिसमें वीर्य नहिं। कमजोर। जीवरहित.

म्पात, (पु०) निर्गतः सम्पातः (गतागतं) यत्र। समें आना जाना नहिं रहा। अर्धरात्र। निशीथ। ती रात.

रण, (न०) निःसरति अस्मात्। निर्+सृ+अपादाने द्। जिससे निकलता है। गेहादिद्वार। घर आदिका शा "भावे ल्युट्" निकलना। मरना। और क्षोण। फुसना.

ार, (पु०) निर्गतः सारात्। सारसे निकलगया। सोढका वृक्ष। साररहित (त्रि०)। केलेका वृक्ष। दली (स्त्री०).

ारण, (न०) निःसार्यते अनेन। निर्+सृ+णिच्+ट्। घर आदिसे निकलनेका पंथ (रास्ता).

दन, (न०) निः+सूद्+ल्युट्। मारण। मारना। वध। च्छेद। नाश.

ता, (स्त्री०) नितरां सृता। सृ+क्त। बहुत फैलनई ओदी। त्यूरी.

ष्ट, (त्रि०) नि+सृज्+क्त। त्यक्त। छोडाहुआ। त्यागा। आ। मध्यस्थ। बीचमें.

ष्टार्थ, (पु०) "दोनोंके भावको समझकर जो आप त्तर दे और कहेहुए कामको करे" एक प्रकारका दास.

तरण, (न०) निः+तॄ+करणे+ल्युट्। "भावे ल्युट्" निस्तार। पार जाना। तरना। और निकलना.

तल, (त्रि०) निरस्तं तलं (प्रतिष्ठा) यस्य। वर्तुल (गोल)। जिसका तला (नीचेका भाग) न हो। हिलनेहारा.

तार, (पु०) निःशेषेण तारः। पूरातरना (पारजाना) उद्धार। छुटकारा। पार पहुंचना। अपनी इच्छाको पाना.

निस्तुषक्षीर, (पु०) निस्तुषं अन्तःसारं क्षीरं इव शुभ्रं यस्य। तोडनेसे रहित-जो भीतरसे दूधकी नाई श्वेत हो। गोधूम (कनक)। इसका आटा दूधकी नाईं चिट्टा होताहै.

निस्तेजस्, (त्रि०) निर्गतं तेजः यस्मात्। जिसमेंसे तेज (गया) निकल गया हो। अग्निरहित। अग्निरहित। नपुंसक। आलसी.

निस्राव-निस्रव, (पु०) निः+स्रु+अप्। "घञ् वा" नदी। प्रवाह। उबलेहुए चावलोंकी पीछ (माड)। अपक्षरण-बहना.

निस्त्रप, (त्रि०) निर्गता त्रपा यस्य। जिसकी लज्जा (शर्म) जाती रही। बेशरम। निर्लज्ज.

निस्त्रिंश, (पु०) निर्गतः त्रिंशतः अङ्गुलिभ्यः+डच्। समा०। जो तीस अंगुलिओंसे निकलगया। खड्ग (तलवार) तीस अंगुलसे अधिकहीको कहते हैं, उससे छोटी छुरी होता है। उसके समान मारनेवाला होनेसे निर्दय। बेरहम (त्रि०).

निस्त्रैगुण्य, (त्रि०) निष्क्रान्तः त्रैगुण्यात्। तीन गुणोंके कार्यमें, संसारसे वा कामादिसे निकलाहुआ। कामना (इच्छा-चाह) आदिसे रहित। संसारसे पारहुआ.

निःश्रेणी, (स्त्री०) निर्गच्छति क्लेशः यस्मात्। जिससे क्लेश निकलगया। असलीका वृक्ष। क्लेशसे रहित (त्रि०).

निस्य(ष्य)न्द, (पु०) नि+स्यन्द वा ष्यन्द+घञ् वा-पत्नम्। स्यन्दन। "ईषत् क्षरण"-थोडासा बहना। निमाना। "निष्क्रान्तं स्यन्दनं यस्मात्"। जिसके पास रथ नहिं (त्रि०).

निःस्व, (पु०) नास्ति स्वं अस्य। जिसके पास धन नहिं। दरिद्र। निर्धन। गरीब

निस्वा-स्व, नि+स्वन्+अप् वा। शब्द। आवाज.

निहत, (त्रि०) नि+हन्+क्त। मारागया। कतल किया गया। लगा हुआ.

निहनन, (न०) नि+हन्+ल्युट्। वध। मारना। कतलकरना.

निहन्तृ, (त्रि०) नि+हन्+तृच्। मारनेवाला। मारा करनेवाला.

निहव, (पु०) नि+ह्वे+अप्। आह्वान। बुलाना। पुकारना.

निहित, (त्रि०) नि+धा+क्त। स्थापित। रक्खाहुआ। गुप्त। छिपाहुआ। ठहराहुआ। डालाहुआ। "नितरांहित" बहुत हितकारी.

निह्नव, (पु०) नि+ह्नु+अप्। शङ्का। और प्रकारसे स्थित होरही वस्तुको औरही प्रकारसे सूचन करना। धस्टत। छिपाना.

निह्नवनम्, (न०) नि+ह्नु+अन । मुकर जाना । अपने ज्ञानको छिपाना । प्रतिवाद करना.

निह्नुत, (त्रि०) नि+ह्नु+क्त । छिपाया गया । प्रतिवाद किया गया.

निह्नुति, (स्त्री०) नि+ह्नु+क्तिन् । छिपाना । मुकरना.

निह्राद, (पु०) नितरां ह्रादः । नि+ह्रद्+घञ् । अव्यक्त शब्द । ऐसा शब्द कि जिसका अर्थ प्रकट नहि.

नीकाश, (पु०) नि+काश्+घञ्-दीर्घः । निश्चय । यकीन । अव्य० । सदृश । समान (बराबर) । "वज्रनीकाश" वज्रसरीखा आदि.

नीच, (त्रि०) निकृष्टां ईं लक्ष्मीं चमति । चम्+ड । पामर । नीच । वामन (बौना) । चोरनामी गन्धद्रव्य हस्व (पु०).

नीचैस्, (अव्य०) । नीचे । थोड़ा । और क्षुद्र (कमीना).

नीड, (पु०) निविशन्ते इलन्ति अत्र । इल्+क । निवासस्थान । रहनेकी जगह । पक्षियोंका कुलाय-घोसला (घोंसला).

नीडज, (पु०) नीडे जायते । जन्+ड । घोंसलेमें उपजता है । विहग । पक्षी । परिंदा । "नीडोद्भव" यही अर्थ.

नीत, (त्रि०) नी+क्त । लेजाया गया । पठाया गया । काम किया गया । व्यतीत होगया.

नीति, (स्त्री०) नीयन्ते उपनीयन्ते अर्था अनया । नी+क्तिन् । जिसके द्वारा अर्थ समझा जाय । नी+क्तिन् । शुक्राचार्य आदिसे कहीहुई शास्त्रविद्या । एक शास्त्र "माने" पहुंचाना । इसलाकका इल्म । न्याह (इनसाफ) । हासिल करना.

नीतिमत्, (त्रि०) नीति+मतुप् । नीतिवाला । नीतिमें चतुर । दाना.

नीतिशास्त्र, (न०)नीतिबोधकं शास्त्रं । नीतिविद्या सिखानेहारे शास्त्र । बृहस्पति । शुक्राचार्य । कामन्दक । चाणक्य । विष्णुशर्मा आदिके रचेहुए पञ्चतन्त्र । हितोपदेश आदि.

नीप, (पु०) नी+पक् । कदम्ब । बन्धूक । नील अशोकका वृक्ष । नियक.

नीर, (न०) नी+रक् । निर्गतं रात् अग्नितो वा । जो आगसे निकला जल । पानी । रस.

नीरज, (न०) नीरे जायते । जन्+ड । पानीमें हुआ कमल । मोती । जो पानीमें उपजे (त्रि०) एक जलका जीव (पु०).

नीरद, (पु०) नीरं ददाति । दा+क । मेघ (जो पानी देता है) बादल और मुस्तक (मोथा) । "निर्गताः रदः दन्ताः यस्मात्" । दंतोंसे शून्य (त्रि०).

नीरन्ध्र, (त्रि०) निर्गतं रन्ध्रं यस्मात् । जिससे छेद (सुराख) निकलगया । गाढ़ (गाढ़ा) घन.

नीरस, (पु०) निःसरन् रसः यस्मात् । जिससे रस निकलगया । दाड़िम (अनार) जिस्में रस नहीं (त्रि०).

नीराजन, (न०) नीरस्य अजनम्० नि० । निःशेषेण राजनं यत्र वा । जिस्में [illegible] फेंकते है । अथवा जहां पूरा २ शोभा है आदिसे आदर करना । पहिले दीप देकर पानी दिखाना- १ वस्त्र करना दिखा- [illegible] पीपलके पत्तेसे पानी सींचना-५ दंडवत [illegible] आरार्त्रिक । आरती करना । अश्वि ([illegible] घोड़े आदिकी पूजा करनी.

नीरुज, (स्त्री०) निर्गता रुक् । बीमारी [illegible] (आरोग्य) । "निर्गता रुक् यस्मात्" । [illegible] हुई । रोगरहित (त्रि०).

नील, (पु०) नीला रंग । क । [illegible] पर्वतका मर्यादापर्वत । भारतवर्ष [illegible] वानर । एक निधि (खजाना) । [illegible] बोड़का वृक्ष । इन्द्रनीलमणि । नील । [illegible] बैल । नीले रंगवाला (त्रि०).

नीलकण्ठ, (पु०) नीलः कण्ठः यस्य । जिन [illegible] है । शिवजी महाराज । मयूर (मोर) । [illegible] चिडिया । खञ्जन (ममोला) । कन्द.

नीललोहित, (पु०) नीलः कण्ठे, लोहितः [illegible] नीला और बालोंमें लाल शिवजी । [illegible] काला और लाल मिलाहुआ रंग.

नीलवसन-वासस्, (त्रि०) नीलं वसनं [illegible] नीले वस्त्रोंवाला । नीली पोशाकवाला.

नीलाम्बर, (पु०) नीलं अम्बरं यस्य । [illegible] नीला है । बलदेव । शनैश्चर । नीला [illegible] व० (त्रि०).

नीलोत्पल, (न०) कर्म० । इन्दीवर । [illegible] वाला । नीले रंगका नीलोफर कमल । [illegible]

नीवार, (पु०) नि+वृ+घञ् दीर्घः । तृण [illegible] चावल.

नीवि-वी, (स्त्री०) । नितम्बवि । [illegible] ब्ये-दन्-यज्ञ दोष । बनियोंका मूलधन । [illegible] कमरबंद.

नीवृत्, (पु० स्त्री०) नियतं वर्तते यत्र । [illegible] दीर्घः । जहां बहुत रहता है । देश । [illegible] तत्लोग रहते हैं.

नीशार, (पु०) नितरां शीर्यते हिमादिर्येन [illegible] जहां वा जिसे पास वा वायु हटता [illegible] +घञ्-दीर्घः । हिम और वायुसे दूर [illegible] (पर्दा) । कनात । काण्डपट.

नीहार, (पु०) निह्रियते । नि+हृ+घञ्-दीर्घः । शिशिर । बरफ । कोहरा.

व्य०) विकल्प । अनुनय । अतीत । प्रश्न । हेतु ।
र्क । अपमान । अपदेश । अनुताप । निश्चय ।
स.

(स्त्री०) नु+क्तिन् । स्तव । तारीफ । और प्रणाम ।
। । पूजा.

, (त्रि०) नुद्+क्त-विकल्पसे न होता है । प्रेरित ।
। । चलायाहुआ.

(त्रि०) नव एव । नव+तन । नवस्य नुः । अभि-
। नवीन । नया । क "नूत" यही अर्थ.

पु०) नुदति पापं । क । पृ० दीर्घः । वृक्षविशेष । शाखः
। दरख्त.

, (अव्य०) वितर्क । निश्चित । स्मरण । वाक्यपूरण ।
वेशाद्योतन । दलील । यकीनन । याद होना.

, (न०) नू+क्विप्-नूपुर्+क । पादाङ्गद । पाँवका भूषण ।
ल्ला.

टुकम्, (न०) निघण्टवो=नाम्नां=अभिधानानां वा
हः+कन् । वैदिक शब्दोंका कोष (खजाना) (पांच
ध्यायोंमें है, जिसपर यास्कने टीका की है).

की, (स्त्री०) नीचैः अराम्यं चरति+ठक्+ङीप् ।
म गौ.

(त्य)क, (न०) नित्यं अनुष्ठेयम्+ष्यञ्-ठञ् वा । नि-
नुष्ठेय । प्रतिदिन करनेलायक.

य-ण, (न०) निपुणस्य भावः+ष्यञ्-अण् वा । दक्षता ।
तुराई.

त्तिक, (त्रि०) निमित्तात् आगतम्+ठक् । पुत्रजन्म
दि निमित्तका आश्रयकर क्रियामात्र जातेष्टिआदि ।
बबसे.

त्तिकलय, (पु०) कर्म० । "चार हजार (सहस्र)
गोंके पीछे नैमित्तिक लय होता है" । ब्रह्माका दिन बीत
नेपर जगतोंका प्रलय.

ष, (न०) एक तीर्थ । यहां निमेष (विष्णु) ने
त्यका नाश किया.

ग्रोध, (न०) न्यग्रोधस्य विकारः+अण् । वटफल ।
ड़का फल.

यिक, (त्रि०) न्यायं वेत्ति-अधीते वा+ठक् । जो
यायको जानता या पढता है । न्यायज्ञ । न्यायशास्त्रके
ननेहारा.

न्तर्य, (न०) निरन्तरस्य भावः+ष्यञ् । अविच्छेद ।
गातार होना.

श्य, (न०) निराशस्य (निष्कामस्य) भावः+ष्यञ् ।
शा न रखना । आशाराहित्य । आशासे रहितपन ।
"नैराश्यं परमं सुखम्".

नैरुक्तः-नैरुक्तिकः, (पु०) निरुक्तं वेत्ति-अधीते वा+अण्+
ठञ्+इक । शब्दोंके प्रकृतिप्रत्ययको जाननेहारा.

नैर्गुण्यम्, (न०) निर्गुणस्य भाव+य । निर्गुणपन । गुणोंका
न होना.

नैर्घृण्यम्, (न०) निर्घृणस्य भावः निर्घृण्यम् । निर्दय होना ।
बेरहमी.

नैर्देशिक, (पु०) निर्देशं करोति+ठक्+इक । आज्ञाको माने-
वाला । भृत्य । नौकर.

नैर्मल्य, (न०) निर्मलस्य भावः+ष्यञ् । निर्मलता । स्व-
च्छता । सफाई । विषयोंसे वैराग्य.

नैर्लज्ज्यम्, (न०) निर्लज्जस्य भावः+य । निर्लज्जपना । शर-
मिंदगी.

नैल्यम्, (न०) नीलस्य भावः+ष्यञ् । नीलापन । काला ।
नीला रंग.

नैवेद्य, (न०) निवेदं (निवेदनं) अर्हति+ष्यञ् । नि+
विद्+णिच् कर्मणि यत्+स्वार्थे अण् वा । जो निवेदनके
योग्य है । देवताके उद्देशसे छोडनेलायक पदार्थ । देवताके
आगे चढानेका पदार्थ.

नैःश्रेयस, (त्रि०) निःश्रेयसाय हित+अण्+स्त्री+ङी । निश्चित
श्रेय (कल्याण)को पहुंचानेवाला । आनंददाता । मोक्षका
देनेवाला.

नैषध, (पु०) निषधानां (जनपदानां) अर्थ+अण् ।
निषधदेशका नलनामा राजा । इसीके विषयमें बनाया
हुआ ग्रन्थ (न०) उस देशमें हुआ और उसका सम्बधी
(त्रि०).

नैष्कर्म्य, (न०) निष्कर्मणो भावः । कामसे रहित होना ।
विधिसे सब कामोंको छोडना । "न कर्मणामनारम्भान्नै-
ष्कर्म्यं" गीता.

नैष्किक, (पु०) निष्के (टंक-टीकारे) नियुक्त+ठक् ।
सोने या मोहरोंके काममें लगाया गया । कोषाध्यक्ष (खजा-
नची) । टंकशालानियुक्त (टकसालिया).

नैष्ठिक, (पु०) निष्ठा (संसारसमाप्तिः) प्रयोजनं अस्य+ठक् ।
संसारको समाप्त करना जिसका प्रयोजन है । जो सारा
जीवन ब्रह्मचारी होकर गुरुके गृहमें निवास करता है । एक
प्रकारका ब्रह्मचारी । "निश्चल स्थितिमें लगाहुआ" एकनिष्ठ
(त्रि०).

नैष्ठुर्यम्, (न०) निष्ठुरस्य भाव+य । निठुरपन । निर्दयता ।
बेरहमी.

नैसर्गिक, (त्रि०) निसर्गेण (स्वभावेन) निर्वृत्त+ठक् ।
स्वभावसे बना । स्वाभाविक । कुदरती.

नैस्त्रिंशिक, (त्रि०) निस्त्रिंशः प्रहरणं अस्य+ठक् । तल-
वार जिसका शस्त्र है । तलवारसे लडनेहारा (त्रि०)

निह्नवनम्, (न०) नि+ह्नु+ल्युट् । मुकर जाना । अपने ज्ञानको छिपाना । प्रतिवाद करना.

निह्नुत, (त्रि०) नि+ह्नु+क्त । छिपाया गया । प्रतिवाद किया गया.

निह्नुति, (स्त्री०) नि+ह्नु+क्तिन् । छिपाना । मुकरना.

निह्राद, (पु०) नितरां ह्रादः । नि+ह्रद्+घञ् । अव्यक्त शब्द । ऐसा शब्द कि जिसका अर्थ प्रकट नहि.

नीकाश, (पु०) नि+काश्+घञ्-दीर्घः । निश्चय । यकीन । अच् । सदृश । समान (बराबर) । "वज्रनीकाश" वज्रसदृश आदि.

नीच, (त्रि०) निकृष्टां ईं लक्ष्मीं चमति । चम्+ड । पामर । नीच । वामन (बौना) । चोरनामी गन्धद्रव्य हव्य (पु०).

नीचैस्, (अव्य०) । नीचे । थोड़ा । और क्षुद्र (कमीना).

नीड, (पु०) निश्चिता इलन्ति अत्र । इल्+क । निवासस्थान । रहनेकी जगह । पक्षिओंका कुलाय-आलना (घोंसला).

नीडज, (पु०) नीडे जायते । जन्+ड । घोंसलेमें उपजता है । विहग । पक्षी । परिन्द । "नीडोद्भव" यही अर्थ.

नीत, (त्रि०) नी+क्त । लेजाया गया । चलाया गया । लाभ किया गया । व्यतीत होगया.

नीति, (स्त्री०) नीयन्ते उपायन्ते अर्था अनया । नी+क्तिन् । जिनके द्वारा अर्थ समझा जाय । नी+क्तिन् । शुक्राचार्य आदिसे कहीहुई शास्त्रविद्या । एक शास्त्र "न्याय" पहुंचाना । [illegible] । व्याह (इनगाह) । हासिल करना.

नीतिमत्, (त्रि०) नीति+मतुप् । नीतिवाला । नीतिमें चतुर । [illegible].

नीतिशास्त्र, (न०) नीतिबोधकं शास्त्रं । नीतिविद्या सिखानेहारे ग्रन्थ । बृहस्पति । शुक्राचार्य । कामन्दक । चाणक्य । विष्णुशर्मा आदिके रचेहुए पञ्चतन्त्र । हितोपदेश आदि.

नीप, (पु०) नी+पक् । कदम्ब । बन्धूक । नील अशोकका वृक्ष । [illegible].

नीर, (न०) नी+रक् । निर्गतं रन् अग्निर्यो वा । जो आगसे [illegible] । पानी । रस.

नीरज, (न०) नीरे जायते । जन्+ड । पानीमें हुआ [illegible] । मोती । जो पानीमें उपजे (त्रि०) एक [illegible] (पु०).

नीरद, (पु०) नीरं ददाति । दा+क । मेघ (जो पानी देता है) [illegible] और [illegible] (मोथा) । "निर्गतः रदः [illegible]" । [illegible] (त्रि०).

नीरन्ध्र, (त्रि०) निर्गतं रन्ध्रं [illegible] । जिसमें छेद ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible].

नीरस, (पु०) [illegible] । जिसमें रस [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] (त्रि०)

नीराजन, (न०) नीरस्य शान्त्युदकस्य [illegible] नि० । निःशेषेण राजनं अत्र वा । [illegible] फेंकते हैं । अथवा जहां पूरा २ चांदन [illegible] आदिसे आदर करना । पहिले दीप [illegible] पानी दिखाना- ३ पवित्र कपड़ा दिखा- [illegible] पीपलके पत्तेसे पानी सींचना-५ दंडवत [illegible] आरात्रिक । आरती करना । आश्विन ([illegible] घोड़े आदिकी पूजा करनी.

नीरुज, (स्त्री०) निर्गता रुक् । बीमारी [illegible] (स्वास्थ्य) । "निर्गता रुक् यस्मात्" । [illegible] हुई । रोगरहित (त्रि०).

नील, (पु०) नीला रंग । क । इलावृतसे [illegible] वर्षका मर्यादापर्वत । भारतवर्षका [illegible] वानर । एक निधि (खजाना) । [illegible] बोड़का वृक्ष । इन्द्रनीलमणि । नील्य । [illegible] भैल । नीले रंगवाला (त्रि०).

नीलकण्ठ, (पु०) नीलः कण्ठः अस्य । [illegible] है । शिवजी महाराज । मयूर (मोर) । [illegible] चिड़िया । खञ्जन (ममोला) । चन्दन.

नीललोहित, (पु०) नीलः कण्ठे, लोहित [illegible] नीला और बालोंमें लाल शिवजी । इसके [illegible] काला और लाल मिलाहुआ रंग.

नीलवसन-वासस्, (त्रि०) नीलं वसनं [illegible] नीले वस्त्रोंवाला । नीली पोशाकवाला.

नीलाम्बर, (पु०) नीलं अम्बरं यस्य । [illegible] नीला है । बलदेव । शनैश्चर । नीला [illegible] व० (त्रि०).

नीलोत्पल, (न०) कर्म० । इन्दीवर । [illegible] वाला । नीले रंगका नीलोफर कमल । [illegible]

नीवार, (पु०) नि+वृ+घञ् दीर्घ । [illegible] चावल.

नीवि-वी, (स्त्री०) । नियतवी । [illegible] ओ-इन्-यस्य लोप । वनियोंका मूलधन । [illegible] कमरबंद.

नीवृत्, (पु० स्त्री०) नियतं वर्तते अत्र । [illegible] दीर्घः । जहां बहुत रहता है । देश । [illegible] स्थान रहते हैं.

नीशार, (पु०) नितरां शीतैः हिमादिभि [illegible] जहां वा जिससे ताप वा वायु [illegible] +घञ् दीर्घः । हिम और वायुसे [illegible] (पर्दा) । कनात । कम्बल.

नीहार, (पु०) निह्रियते । [illegible] हिमहिम । पाला । कोहरा

...व्य०) विकल्प । अनुनय । अतीत । प्रश्न । हेतु । ...ई । अपमान । अपदेश । अनुताप । निश्चय । ...ज.

...(स्त्री०) नु+क्तिन् । स्तव । तारीफ । और प्रणाम । ... । पूजा.

...त, (त्रि०) नुद्+क्त-विकल्पसे न होता है । प्रेरित । ... । चलायाहुआ.

... (त्रि०) नव एव । नव+तन । नवश्च नुः । अभि- ... । नवीन । नया । ... "नूत्न" यही अर्थ.

...(पु०) नुदति पापं । ... । पु० दीर्घः । हस्तविशेष । ... । द्वारल.

... , (अव्य०) वितर्क । निश्चित । स्मरण । वाक्यपूरण । ...क्षेपोत्तन । दलील । ... । याद होना.

... , (न०) नू+क्विप्-नूर्+क । पादाङ्गद । पाँवका भूषण । ...ता.

...हुकम्, (न०) निघण्टुनां=नाम्नां=अभिधानानां वा ...दु+कन् । वैदिक शब्दोंका कोष (खजाना) (पांच ...ध्यायोंमें है, जिसपर यास्कने टीका की है).

...की, (स्त्री०) नीचैः अशब्दं चरति+ठन्+ङीप् । ...म भी.

...(त्य)क, (न०) नित्यं अनुष्ठेयम्+कन्-ठन् वा । नि- ...त्यानुष्ठेय । प्रतिदिन करनेलायक.

...ण्य-ण, (न०) निपुणस्य भावः+ष्यञ्-अण् वा । दक्षता । ...राई.

...त्तिक, (त्रि०) निमित्तात् आगतम्+ठक् । पुत्रजन्म ...दि निमित्तका आश्रयकर कियागया जातेष्टिआदि । ...बसे.

...त्तिकलय, (पु०) कर्म० । "चार हजार (सहस्र) ...गोंके पीछे नैमित्तिक लय होता है" । ब्रह्माका दिन बीत ...नेपर जगतोंका प्रलय.

...य, (न०) एक तीर्थ । यहां निमेष (विष्णु) ने ...सुरोंका नाश किया.

...ग्रोध, (न०) न्यग्रोधस्य विकारः+अण् । वटफल । ...बड़का फल.

...यिक, (त्रि०) न्यायं वेत्ति-अधीते वा+ठक् । जो ...न्यायको जानता वा पढ़ता है । न्यायज्ञ । न्यायशास्त्रके ...जाननेहारा.

...न्तर्य, (न०) निरन्तरस्य भावः+ष्यञ् । अविच्छेद । ...लगातार होना.

...श्य, (न०) निराशस्य (निष्कामस्य) भाव+ष्यञ् । ...आस न रखना । आशाराहित्य । आशासे रहितपन । "नैराश्यं परमं सुखम्".

नैरुक्त-नैरुक्तिक, (पु०) निरुक्तं वेत्ति-अधीते वा+अण्+ठक्+इक । शब्दोंके प्रकृतिप्रत्ययको जाननेहारा.

नैर्गुण्यम्, (न०) निर्गुणस्य भावः+ष्य । निर्गुणपन । गुणोंका न होना.

नैर्घृण्यम्, (न०) निर्घृणस्य भावः निर्घृण्यम् । निर्दय होना । बेरहमी.

नैर्देशिक, (पु०) निर्देशं करोति+ठक्+इक । आज्ञाको माननेवाला । भृत्य । नौकर.

नैर्मल्य, (न०) निर्मलस्य भावः+ष्यञ् । निर्मलता । स्वच्छता । सफाई । विषयोंसे वैराग्य.

नैर्लज्ज्यम्, (न०) निर्लज्जस्य भावः+ष्य । निर्लज्जपना । शरमिंदगी.

नैल्यम्, (न०) नीलस्य भावः+ष्यञ् । नीलापन । काला । नीला रंग.

नैवेद्य, (न०) निवेदं (निवेदनं) अर्हति+ष्यञ् । नि+विद्+णिच् कर्मणि यत्+स्वार्थे अण् वा । जो निवेदनके योग्य है । देवताके उद्देशसे छोड़नेलायक पदार्थ । देवताके आगे चढ़ानेका पदार्थ.

नैःश्रेयस, (त्रि०) निःश्रेयसाय हितं+अण्+ङी+ङी । निश्चित श्रेय (कल्याण)को पहुंचानेवाला । आनंददाता । मोक्षका देनेवाला.

नैषध, (पु०) निषधानां (जनपदानां) अयं+अण् । निषधदेशका नलनामा राजा । इसीके विषयमें बनाया हुआ ग्रन्थ (न०) उस देशमें हुआ और उसका सम्बन्धी (त्रि०).

नैष्कर्म्य, (न०) निष्कर्मणो भावः । कामसे रहित होना । विधिसे सब कामोंको छोड़ना । "न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं" गीता.

नैष्किक, (पु०) निष्के (हेम्नि-दीनारे) नियुक्त+ठक् । सोने वा मोहरोंके काममें लगाया गया । कोशाध्यक्ष (खजानची) । टंकशालानियुक्त (टकसालिया).

नैष्ठिक, (पु०) निष्ठा (संसारसमाप्तिः) प्रयोजनं अस्य+ठक् । संसारको समाप्त करना जिसका प्रयोजन है । जो सारा जीवन ब्रह्मचारी होकर गुरुके घरमें निवास करता है । एक प्रकारका ब्रह्मचारी । "निश्चल स्थितिमें लगाहुआ" एकनिष्ठ (त्रि०).

नैष्ठुर्यम्, (न०) निष्ठुरस्य भाव+य । निठुरपन । निर्दयता । बेरहमी.

नैसर्गिक, (त्रि०) निसर्गेण (स्वभावेन) निवृत्त+ठक् । स्वभावसे बना । स्वाभाविक । कुदरती.

नैस्त्रिंशिक, (त्रि०) निस्त्रिंशः प्रहरणं अस्य+ठक् । तलवार जिसका शस्त्र है । तलवारसे लड़नेहारा (त्रि०)

नो, (अव्य०) अभाव । नहिं । न होना.

नोचेत्, (अव्य०) निषेध । नहिं तो । यदि न हुआ.

नोदनम्, (न०) नुद्+भावे ल्युट् । प्रेरणा । चलाना । धकेलना.

नोधा, (अव्य०) नवप्रकारं । नौ प्रकार । नौ तरहसे.

नोपस्थातृ, (त्रि०) न उपतिष्ठति । स्था+तृच् । दूरस्थ । दूररहनेहारा दूरका । दुष्टवादी । बुरेवचन बोलनेहारा.

नौ, (स्त्री०) नुद्+डौ । पानीपर तरनेका साधन । बेडी "नौका".

नौकर्णधार, (पु०) नावः कर्णधारः=चालकः । बेडीके चलानेवाला । मल्लाह । मला.

नौकादण्ड, (पु०) ६ त० । बेडी चलानेके लिये दोनो ओर बंधाहुआ काठका डंडा । चप्पा.

नौयायिन्, (त्रि०) नावा याति-उप० स० । किश्तीमें जाने-वाला । मुसाफिर.

नौव्यसनम्, (न०) नावःव्यसनम् । बेडीकी तकलीफ । जहाजका टकराना वा टूटजाना.

नौसाधनम्, (न०) नावां साधनम् । किश्तिओंका साधन (उपाय).

नृ, (पु०) नी+ऋन् । मनुष्य । और पुरुष । नर । "जातौ ङीष्" नारी.

नृकरोटिका, (स्त्री०) ६ त० । नरकपाल । मनुष्यकी खोपरी.

नृग, (पु०) इक्ष्वाकुके वंशमें एक राजा.

नृत्, नाचना । दिवा० पर० अक० सेट् । नृत्यति । अन-र्तीत् । नर्तिष्यति-नर्त्स्यति.

नृत्त-त्त्य०, (न०) नृत्+क्त+क्यप् वा । ताल और स्वरसहित विलासवाला अङ्गोंका निक्षेप । नाचना.

नृप, (पु०) नृन् पाति । पा+क । जिसका १६ कोशतक अधिकार हो । एकप्रकारका राजा । और राजा । बादशाह.

नृपति, (पु०) ६ त० । कुबेर । और राजा । मनुष्योंका मालिक.

नृपप्रिय, (पु०) ६ त० । राजपलाण्डु । बडा पियाज । शालिधान्य । और आम्र (आम) । राजाका पियारा । (त्रि०).

नृपसम, (न०) नृपाणां सभा-शाला-संहतिर्वा । राजाओंकी सभा वा शाला-समूह । राजाके रहनेकी शाला.

नृयज्ञ, (पु०) नृणां यज्ञः । अतिथिका पूजन । "नरयज्ञ" यही अर्थ.

नृवराह, (पु०) ना वराहः । मनुष्य और वराह (सूअर) के स्वरूपमें नारायणका एक अवतार.

नृवाहन, (पु०) ना वाहनं यस्य । मनुष्य जिसकी सवारीहै । ईश्वरीका कुबेर.

नृशंस, (त्रि०) नॄन्+शंसति । शन्स-हिंस-द्वा । क्रूर । परद्रोही । कलह करनेहारा । बेदर्द । गाय घेर करनेहारा.

नृसिंह, (पु०) ना सिंहइव । मनुष्य और सिंह (रूपवाला भगवान्‌का एक अवतार (जिसने रक्षा की).

नृसोम, (पु०) ना सोम=चन्द्र इव । ईश्वर । महापुरुष । बडा आदमी.

नॄ, नय । इन्साफकरना । क्र्या० पर० स० सेट् । नारीत् । नरयति (णिच्).

नेजक, (पु०) निज्-शुद्धि+ण्वुल् । रजक (धोबी) करनेहारा (त्रि०).

नेतृ, (त्रि०) नी+तृच् । प्रभु । निर्वाहकरनेहारा । चलानेहारा । पहुंचानेहारा । नीमका वृक्ष (पु०).

नेत्र, (न०) नयति नीयते वा अनेन+ष्ट्रन् । मथनेकी एक प्रकारका कपडा । वृक्षका मूल (जड) । रथ नाडी । शलाका और आँख । पहुंचानेहारा । साधन । प्रवर्तक (त्रि०).

नेत्रगोचर, (त्रि०) नेत्रयो. गोचरः=प्रत्यक्ष विषय । आंखोंके सामने प्रतीत होनेवाला.

नेत्रच्छद, (पु०) नेत्रयोः छदः=आवरणम् । नेत्रों

नेत्रमलम्, (न०) नेत्रयोः मल । आखोंकी मैल

नेत्ररोगहन्, (पु०) नेत्ररोगं हन्ति । हन्+क्विप् काली वृक्ष (यह नेत्रोंके रोगको दूर करताहै).

नेत्राञ्जनम्, (न०) नेत्राय अञ्जनं-च० त० । नेत्र के लिये अंजन (सुर्मा).

नेत्रान्त, (पु०) नेत्रस्य अन्तः । नेत्रका बाहिरी कोना

नेत्राभिष्यन्द, (पु०) नेत्रयोः अभिष्यंद. । नेत्रों एक प्रकारका नेत्ररोग.

नेत्राम्बु-अम्भ्, (न०) नेत्रस्य अंबु । नेत्रका अश्रु । आंसु.

नेत्रोत्सव, (पु०) नेत्रयोः उत्सवः । नेत्रोंका नेत्रोंके लिये सुखदाई कोई पदार्थ.

नेदिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन अन्तिकः । इष्ठन् जो बहुतही पास हो । अतिशय निकटस्थ.

नेदीयस्, (त्रि०) अतिशयेन अन्तिकः । ईयसुन् अत्यन्त समीपस्थ । बहुतही पास.

नेपथ्य, (न०) नी+विच्-नय -नेतुः पथ्यम् । भूषा वेश । वेशका स्थान । नाटक आदिकी तरहकी भूमि (अखाडा).

नेपाल, (पु०) अपने नामसे प्रसिद्ध एक देश ।

(पु०) नी+मन। अवधि (हद)। काल। अर्ध भाग)। (आधेके अर्थमें यह शब्द सर्वनाम गाहै).

, (पु०) नी+मि। निमिशका हरन। गाड़ीके पहियेका नारा। पहियेका घेरा (परिधि) धरती। जिनदेवता पु०).

ण्य, (न०) "ब्रह्माजे रचेहुए चक्रकी धुरी जहां टूट गयी है" णु+ड। नैमिषारण्य क्षेत्र। "स्वार्थे अण्" नैमिषम्.

नेमिवृत्ति, (त्रि०) नेमि० इव वृत्ति व्यवहारः यस्य-ब० स०। चक्रकी धारके समान नियमसे चलनेवाला.

द्, भ्वा० आ०। नेदते। चलना। सरकना.

ष्ट्, (पु०) नेष्+तृ। सोमयज्ञमें प्रधान पुरोहित जिसकी सोलवीं संख्या है.

क, (त्रि०) न एकः-अ० स०। जो एक नहीं। जो अकेला नहीं (प्रायः समासमें प्रयुक्त होताहै)

कचर, (त्रि०) न एकः चरति। बहुतों (समाज)में रहनेवाला.

कट्यम्, (न०) निकटस्य भावः निकटता। समीपता। पासहोना। पड़ोसीपना.

कधा, (अव्य०) न एकप्रकारेण। कई प्रकारसे। कई तरहसे.

कभावाश्रय, (त्रि०) न एकं भावं आश्रयते-उप० स०। एक भाव (खयाल) का आश्रय न करनेवाला। चंचलपरिणामी.

कशस्, (अव्य०) न एकवारं। सैंकड़ोंमें बहुत। बारबार। कईबार.

कृतिक, (त्रि०) निकृतिं करोति+ठक् इक+वृद्धिः। तिरस्कार करनेवाला। जो सरलहृदय न हो। बदमाश। निर्दय। नीच। बदमाश.

गम, (पु०) निगम एव+अण्। नीति। उपनिषद्। ब्रह्मविद्या (उसका कहनेहारा वेदान्तशास्त्र। "निगमे भव+अण्।" वणिग्जन। बनियां (व्यापारी)। नगरका.

न्यक्कार, (पु०) न्यच्+कृ+घञ्। नीचकरण। तिरस्कार। निरादर करना.

न्यग्रोध, (पु०) न्यक् रुणद्धि। रुध्+अच्। वटवृक्ष। बोड़का दरख्त। सबको नीचे करके ठहरा हुआ। विष्णु। चार हाथका माप। शमीका दरख्त.

न्यङ्कु, (पु०) नितरां अयति। नि+अय्+कु-फुलम्। एक मुनि। एक हरिण जिसके बहुत सींग होते हैं.

न्यच्, (त्रि०) निम्नं अञ्चति। नि+अञ्च्+क्विन्। नीचे। नीचला। निम्न.

न्यक्षिप्त, (त्रि०) नि+अस्+क्त। अध. क्षिप्त। नीचे फेंकागया.

न्यस्त, (त्रि०) नि+अस्+क्त। क्षिप्त। फेंकागया। त्यक्त। छोड़ाहुआ। और रक्खागया.

न्याद, (पु०) नि+अद्+घञ् (घस् आदेश नहीं होता)। भोजन। खुराक.

न्याय, (पु०) नि+ई+इण् वा घञ्। उचित (मुनासिब)। गौतमसे कहाहुआ एक शास्त्र। प्रतिज्ञा आदि पांचोंको प्रतिपादन करनेहारा एक प्रकारका वाक्य। नीति। नीतिका उपाय। योग। युक्ति (दलील)। दलीलसे मिलाहुआ दृष्टान्त (मिसाल).

न्यायशास्त्रम्, (न०) न्यायस्य शास्त्रम्। तर्कका शास्त्र। युक्तिविद्या.

न्यायसूत्रम्, (न०) न्यायस्य सूत्राणि। न्यायशास्त्रके संकेतवाक्य.

न्याय्य, (त्रि०) न्यायात् अनपेतं+यत्। जो न्यायसे बाहिर नहीं। उचित (मुनासिब)। युक्तियुक्त। दलीलसे मिलाहुआ.

न्यास, (पु०) नि+अस्+कर्मणि, भावे वा घञ्। स्थाप्यद्रव्य। रखनेलायक चीज (अमानत)। त्याग देना। संन्यास.

न्युब्ज, (त्रि०) नि+उब्ज+घञ्-कुत्व नहीं हुआ। अधोमुख। नीचेमुंह। कुब्ज (कुबड़ा)। यज्ञका एक पात्र। कुश। सुवा। मूंधा (औंधा) मारागया.

न्यून, (त्रि०) न्यूनयति। नि+ऊन-परिमाणे अच्। ऊन। कम। गर्ह्य (निन्दाके लायक).

न्योजस्, (त्रि०) तिरछा। टेढा। बुरा। बदमाश.

प

प, (पु०) पत्-पा-वा ड (समासमें पीछे रहता है)। पीना। "ड्रिप" बचाना। रखवारी करना। हकूमत करना। वायु (हवा)। पत्ता। अण्डा.

पक्किम, (त्रि०) पच्+क्रि-ततो मप्। पाकनिर्वृत्त। पकानेसे निपटाहुआ। पकाकर तयार किया.

पक्व, (त्रि०) पच्+क्त-तस्य व.। पकाहुआ। दग्धहुआ। भुनाहुआ.

पक्व, (त्रि०) पच्+क्त (तको व होता है) परिणत। पकाहुआ। दृढ (मजबूत)। विनाशोन्मुख। नाश होनेपर आगया। कृतपाक। पकाया गया.

पक्वण, (पु०) पचति। पच्+क्विप्। कण्+अच्। कर्म०। शबरालय। भीलोंका घर। चाण्डालकी कुटिया

पक्ष्, लेना पकड़ना-कबूल करना (परिग्रह)। चुरा० उभ० सक० सेट्। भ्वादिमें पर०। पक्षयति-ते। पक्षति.

पक्ष, (पु०) पक्ष्+अच् । पञ्चदशदिन । १५ दिन (पखवाडा । पक्षी । परिंदह । समय । पक्षिओंके पर । "केशसे परे समूह अर्थमें" केशपक्ष (बालोंका समूह) । पास । घर । दोहफते । न्यायमें जहां साध्यका संदेहहो-जैसे "पहाडपर आग है" विरोध । बल । सहाय । मित्र । हाथी । समूह । शरीरका आधा भाग.

पक्षक, (पु०) पक्ष इव कायति । कै+क । पार्श्वद्वार । पासेका दर्वाजा । खिडकी.

पक्षता, (स्त्री०) पक्षस्य भावः । पक्षका होना । अनुमित्साविरहविशिष्टसिद्ध्यभाव । एक पक्ष पकडना । न्यायशास्त्रमें "जहां वह्निमत्व (आगका होना) का निश्चय नहिं वहीं पक्षता होतीहै, उसका निश्चय होनेपर यदि अनुमानकी इच्छा रहे तो भी होसक्तीहै नहिं तो नहिं" इस प्रकार मानते हैं.

पक्षति, (स्त्री०) पक्षस्य मूलं-ति । पखवाडेकी जड । पक्षको आरम्भ करनेहारी प्रतिपदा । पडवा । एकम । एक तिथि । पक्षिओंके परोंका मूल । परकी जड.

पक्षद्वयम्, (न०) पक्षस्य द्वयम् । युक्तिके दोनों ओर । दो पक्ष (युक्तियें).

पक्षपात, (पु०) पक्षे (अन्याय्यसाहाय्ये) पातः (अभिनिवेशः । एक ओर गिरना (जहां इन्साफ नहिं) । अन्यायके लिये सहायता करना । तरफदारी । मुलाजा.

पक्षहोम, (पु०) पक्षाय होमः । एक पक्ष (पखवाडे) में समाप्त होनेवाला होम वा यज्ञसंबंधी संस्कार वा रीति.

पक्षाघात, (पु०) पक्षस्य आघातः । युक्तिके एक अंशका हटजाना.

पक्षान्त, (पु०) पक्षस्य अन्तः यत्र । जहां पक्षका अन्त होताहै । अमावास्या । और पूर्णिमा तिथि.

पक्षाभास, (पु०) पक्षस्य आभासः=प्रतीतिमात्रम् । मिथ्यायुक्ति । झूठी दलील.

पक्षाहार, (पु०) पक्षे आहरति । पक्ष (१५ दिन) में एकही बार भोजन करनेवाला.

पक्षिणी, (स्त्री०) पक्षतुल्ये अहनी विद्येते अस्याः+इनिः । जिसके दोनों दिन परोंकी तरह हों । दोनों (आनेवाले और वर्तमान) दिनोंसे मिलीहुई रात । पक्षिओंका समूह.

पक्षिन्, (पु०) पक्ष+अस्ति अर्थे इनि । जिसका पर हो । परिन्दह । बाण (तीर) । "विहगम."

पक्षिल, (त्रि०) पक्षः साहाय्यं+अस्ति अर्थे इलच् । साहाय्यकारक । सहायता देनेहारा । मदत करनेहारा । न्यायका भाष्य बनानेहारा वात्स्यायन मुनि (पु०) परवाला (त्रि०).

पक्ष्मन्, (न०) पक्ष+मनिन् । नेत्राग्रलोम । आंखको बंद करनेहारा रोम (बं) । झिम्मणी । पलक । कमलपुष्पकी रिसे । पक्षिओंका पर । बहुत छोटा सूत.

पक्ष्मल, (त्रि०) पक्ष्मन्+लच् । नेत्रोंके सुन्दर रोम

पक्ष्य, (त्रि०) पक्षे भवः+यत् । पखवाडेमें उत्पन्न । एक ओर होनेवाला । प्रत्येक पक्षमें बदलनेवा

पङ्क, (पु० न०) पचि+घञ्-नि० । कुत्व । कीचड । बुरा, पाप.

पङ्क(ङ्कि)ज, (न०) पङ्के जायते जन्+ड । समासः । जो कीचडमें उपजता है । पद्म । सारस.

पङ्किल, (त्रि०) पङ्क+अस्ति अर्थे इलच् । जहां कीचड हो । कर्दमवाला देश.

पङ्केरुह, (न०) पङ्के रोहति । रुह्+क । अलुक् । पद्म (कमलफूल) । सारस पक्षी । सारस

पङ्क्ति, (स्त्री०) पचि+क्तिन् । सजातीयसन्तति । कतार । पाँच वा दस अक्षरके पादवाला छन्द । गिनती । पृथिवी । गौरव । बडाप्पन । दस । प्रपञ्च । विस्तार (फैलावट).

पङ्क्तिदूषक, (पु०) श्राद्धमें भोजनके लिये लोगोंकी पाँतिको जो दूषित कर देता है (दुष्+णिच्+ण्वुल् । जो पङ्क्तिके लायक नहिं । श्राद्धमें भोजन न देना चाहिये । धूर्त.

पङ्क्तिपावन, (पु०) श्राद्धमें भोजनके लिये लोगोंकी कतारको जो पवित्र कर्ता है । श्राद्धभोजनके लिये बैठेहुओंकी पङ्क्तिको पवित्र करनेहारा विद्वान् आदि.

पङ्गु, (त्रि०) खजि+कु । (पङ् आदेश) गतिहीन । जो चल नहिं सक्ता । (ठाँवें डा लंगडा । शनैश्चर । शनीचर (पु०).

पच्, पाक-पकाना-भ्वा० उभ० सक० अपाक्षीत् । अपक्त । पक्ष्मिम । पक्व.

पच्, व्यक्तीकार । प्रकटकरना । आदिकर्तामें अनिट् । पचते (अपक्त).

पच्, विस्तार । फैलाना । चुरा० उभ० सक० सेट् पचयति-ते । अपपचत्-त.

पचेलिम, (त्रि०) पच्+केलिमर् । पकाहुआ.

पज्, आवरण-ढांकलेना । भ्वा० पर० सक० सेट् पजति । अपजीत्.

पज्र, (पु०) पद्भ्यां (ब्रह्मणः चरणाभ्यां) जायते+ड । जो ब्रह्माके चरणोंसे उपजता है । अजायत" इति श्रुतिः.

पञ्चक, (न०) पञ्चानां अवयवः+कन् । पांचकी गिनती और धनिष्ठासे ले पांच नक्षत्र । युद्धक्षेत्र (लडाईका मैदान).

कषाय, (पु०) कर्म० । पांचप्रकारकी कसैली चीजें । जम्बु (जामन्, जम्बु) शाल्मली (सिंबल), वाट्याल, बकुल और बदर (बेर).

कोष, (पु०) पञ्च कोषा आवरका यस्य । राजानोंकी नाईं जिसके पांच पड़दे हैं । वेदान्तमें कहाहुआ अन्नमय आदि पांच कोषका अभिमान करनेहारा जीव । समा० द्विगुः । अन्नमय आदि पाँच कोषवाले देह (न०) । (अन्नमय कोष) (स्थूल शरीर) प्राणमय, मनोमय और विज्ञानमय (लिङ्गशरीर) एवं आनन्दमय (कारणशरीर) है सबसे पिछला शरीर मोक्षकी दशा है । अर्थात् इसी आनन्दमयकोषरूप शरीरमें मुक्त पुरुष आपही आनन्दका भोक्ता है.

कोशी, (स्त्री०) पञ्चानां कोशानां समाहारः । पांच कोसका अंतर (फासले).

खट्वम्-ट्वी, (न० स्त्री०) पञ्चानां खट्वानां समाहारः । पांच खाटों (खाँट) का समूह । पांच पलंग । पांच मेजे.

गवम्, (न०) पञ्चानां गवां समाहारः । पांच गौओंका समूह । पांच गौएं.

गव्य, (न०) गोर्विकारः यत्-पञ्चानां गव्यानां समाहारः । गौका विकार । पाँच गव्योंका मेल । दही-दूध-घी-गोमूत्र (गमूतर)-और गोबर ये पाँच.

चूडा, (स्त्री०) पञ्च चूडा यस्याः । जिसकी पाँच चोटी हों । एक अप्सरा.

जन, (पु०) पञ्चभिः भूतैः जन्यते । जन्+घञ् (वृद्धि नहिं होती) । जिसे पाँचों भूत उत्पन्न करतेहैं । मनुष्य । एक दैत्य (जिसकी हड्डीसे कृष्णचन्द्रका पाञ्चजन्य नामका शङ्ख बना).

तत्त्व, (न०) पाँचो तत्त्व इकट्ठे (पृथिवी-जल-तेज-वायु और आकाश) मद्य (शराब), मांस-मत्स्य (मच्छी) मुद्रा और मैथुन "तन्त्रशास्त्रमें कहेहुये पाँच ।" पञ्चमकार क्योंकि सबका पहिला अक्षर म है).

बाण, (पु०) पञ्च बाणा अस्य । जिसके पांच बाण हैं । कामदेव "पञ्चशर".

वटी, (स्त्री०) वटः (वृक्ष) समा० द्विगुः । "अश्वत्थ (पीपल) बिल्व (बिल्व), वट (बोह), धात्री (आमला), और अशोकवृक्ष । दण्डक वनका एक भाग है जहां रामचन्द्रजी सीता और लक्ष्मणके साथ विचरते रहे (यही गोदावरीका उद्गम होता है) । यह नासिक शहरसे दो मीलकी दूरीपर है.

वर्षदेशीय, (त्रि०) पञ्चवर्ष+देशीयर् । पांच वर्षके लगभग आयु (उमर) वाला.

शाख, (पु०) पञ्च शाखा यस्य । जिसके हाथकी अंगुलियोंके रूपमें पांच अङ्गुलियें हैं । हस्त । हाथ.

पञ्चसूना, (स्त्री०) पञ्चसूनाः (प्राणिवधस्थानानि) । जीवोंके मरनेकी पांच जगह । "चुल्ही, पेषणी (चक्की), उपस्कर (घरकी सामग्री), कण्डनी (बुहारी) और पनीहारा घड़ा" ये पांच जगह जहां कीड़े कीड़ियां मरते हैं.

पञ्चाग्नि, (पु०) पञ्च अग्नयः उपास्या यस्य । जो पांच अग्नियोंकी उपासना करता है । पांच अग्निवाला (त्रि०).

पञ्चाङ्ग, (न०) समा० द्विगुः । एक वृक्षके तरह (छिलका) आदि पाँच । "तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण" ये पाँच । जिसके पाँच अङ्ग हैं । "जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मणभोजन" इस प्रकार तन्त्रशास्त्रका पुरश्चरण । पाँच अंग जिसके वशमें हैं । कूर्म (कछुआ) (पु०) । (यह अपने अङ्गोंको इच्छापूर्वक सिकोड़ लेताहै).

पञ्चामृत, (न०) समा० द्वि० "दूध, शर्करा (खंड), घी, दही और शहद" ये पाँच.

पञ्चाल, (पु०) एक देश । और उस देशका राजा । उस देशके वासी (बहु०)

पञ्चाली, (स्त्री०) पञ्च (अवयवं) अलति (पर्याप्नोति) अल्+अण् । वस्त्रकृतपुत्तलिका । कपड़ेकी बनीहुई पुतली । गुड़ी । एक प्रकारका गीत.

पञ्चाशत्, (स्त्री०) पंच दशतः परिमाणं अस्य । नि० । पचास । पचासकी संख्या । पचास.

पञ्चेन्द्रिय, (न०) समा० द्वि० । पांच ज्ञानेन्द्रिय "(श्रोत्र-कान), त्वक्, नेत्र, रसन (जीभ) और (घ्राण नासिका)" वाक्, पाणी, पाद, पायु (गुदा), उपस्थ (लिङ्ग) ये कर्मेन्द्रिय हैं.

प(पि)ञ्जर, (पु० न०) पञ्जि-पिञ्जि क+अरन् । पसलीकी हड्डियोंका समूह । पञ्जर । पक्षीआदिके रोकनेकी जगह (पिंजरा) (न०).

पञ्जि-जी, पञ्जि+इन् वा ङीप् । एकपञ्चक लम्बिका (रूईकी बत्ती) "कर्मे कत्" लिपि कर और पञ्जिकामें बन्देहरी । पञ्जिका । पत्री (जंत्री).

पञ्चतपस्, (त्रि०) पञ्चभिरग्निभिः तपः अस्य । जिसकी तपस्या पञ्च अग्नियोंसे सिद्ध होती है । चारोंओर चार अग्निसे और ऊपर सूर्यके तेजसे तपनेहारा.

पञ्चदश, (न०) पञ्चाधिका दश देशे वा-अन्तर् । पंद्रह की संख्या । उस दिनवाला (त्रि०).

पञ्चतन्त्राय, (न०) तन्त्र एव तन्त्रं । पञ्चानां तन्त्राणां समाहारः । पांच तन्त्रवाला देश । सोलह वर्षके प्रसिद्ध वस्तुओं (पृथिवी आदि) के जानने तक जहां रस, रस और रूपस्वरूप पांच तन्मात्र"

पञ्चत्व, (न०) पञ्चानां (पृथिव्यादिभूतानां) भाव. । त्व । पाँचपन । मरण । मौत (इसमें शरीरके आरम्भ करनेहारे भूतोंका अपने २ अंशोंमें प्रवेश होता है) "पञ्चता".

पञ्चदश, (त्रि०) पञ्चदशानां पूरणः+डट् । पन्द्रहको पूरा करनेहारा । जिससे १५ हवीं संख्या भरजाती है । पन्द्रह । पन्द्रहवां "पञ्चदशी" पूर्णिमा । वेदान्तका एक ग्रन्थ है (स्त्री०).

पञ्चधा, (अव्य०) पञ्च प्रकारैः । पञ्च प्रकार । पांचतरहसे.

पञ्चनख, (पु०) पञ्च नखा यस्य । जिसके पाँच नाखून हों । हाथी । व्याघ्र (भेड़िआ) । पाँच नखोंवाला (त्रि०).

पञ्चनद, (पु०) पञ्च नद्यो यत्र । जहां पाँच नदियें हों (वितस्ता-इरावती-चन्द्रभागा-शतद्रु और विपाशा) । पञ्जाब नामसे प्रसिद्ध मद्रका देश । काशीमें विन्दुमाधव तीर्थके पासकी पाँच नदियें.

पञ्चभूत, (न०) पञ्चानां भूतानां समाहारः । पाँच भूतों-का मेल । वैशेषिक आदिसे कहेहुए पृथिवी-जल-तेज-वायु और आकाश स्वरूप पाँच भूत.

पञ्चम, (त्रि०) पञ्चानां पूरणः । पञ्चन्+मट् । जिससे पाँचकी संख्या पूरी होती है । पांचवां । +स्त्रियां ङीप् । पञ्चमी तिथि.

पञ्चमकार, (न०) पञ्चानां (मकारादिवर्णानां) समाहारः । तन्त्रमें कहेहुए मद्य -मांस-मत्स्य-मुद्रा -और मैथुन । (ये पाँच शब्द जिनका पहिला वर्ण "म" है).

पञ्चमहायज्ञ, (पु०) महान् यज्ञः=महायज्ञः । ततः कर्म० । पाँच हत्याओंके दोषको दूर करनेहारे पाँच बड़े यज्ञ । स्वाध्यायपाठ-अग्निहोत्र-अतिथिपूजन-पितृतर्पण और बलिकर्म.

पञ्चमास्य, (पु०) पञ्चमः (स्वरभेद) आस्ये (तदेक-देशकण्ठे) यस्य । जिसके गलेमें पञ्चमका सुर निकलता है । कोकिल । कोइल.

पञ्चहायन, (त्रि०) पञ्च हायनानि यस्य पांच वर्षकी उमरवाला.

पट्, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पटति । अपा-टीत्-अपाटीत्.

पट्, दीप्ति । चमकना । चु० उभ० अक० सेट् । पाटय-ति-ते । अपीपटत्-त.

पट्, वेष्टन-घेरदेना-लपेटना । चु० उभ० सक० सेट । पटयति । ते अपपटत्-त.

पटकार, (पु०) पटं करोति । कृ+अण् । कपड़ा बनाता है । तन्तुवाय । जुलाहा.

पटकुटी, (स्त्री०) पटनिर्मिता कुटी । शा० । कपड़ेका घर । कपड़ेका घर (तंबू) । "पटकुटी" अर्थके-वही अर्थ.

पटच्चर, (न०) पटच्चते (जीर्णत्वात्ते) । ... पटत्+चरट् । जीर्णवस्त्र । पुराना कपड़ा । "... चेष्टित इव चरति" चर+अच् । "जो अपनेको ... चलताहै" चोर (पु०).

पटल, (न०) पट्-वेष्टन+कलन् । छदि । ... नेत्रका रोग । और पटारी । वृक्षविशेष । ... ग्रन्थ (पु०).

पटवासक, (पु०) पटान् वासयति (... जो कपड़ोंको सुगन्धीवाला करता है । ... वसनवासक । केसरआदिका चूर्ण । अन्धा । ...

पटह, (पु० न०) पटेन हन्यते-हन् । "... शब्दं जहाति वा । हा-वाह । पटमें ताड़न ... वा पट २ शब्दको छोड़ता है । ढकावाद्य । ...

पटिमन्, (पु०) पटु+इमनिच् । चतुरता । चतुराई । ... की । सख्ती । उग्रत्व.

पटीर, (न०) पट्+ईरन् । चालनी (छलनी) । ... (खेत) । मेघ (बादल) । कंदर्प (... खदिर (खैर) । उदर (पेट) कंदर्प (... चंदन.

पटीयस्, (त्रि०) अतिशयेन पटु+ईयसुन् । ... करनेमें बहुतही चतुर हो.

पटुजातीय, (त्रि०) पटुप्रकारः+जातीयर् । ... अच्छीतरहका.

पटुरूप, (त्रि०) प्रशस्तः पटुः । प्रशंसायां+रूपप् । ... प्रायदक्ष । बहुत चतुर.

पटोल, (पु०) पट्+ओलच् । इस नामकी ... वस्त्रविशेष (न०).

पट्ट, (न०) पट्+क्त । ट वा । नगर । मुख्य । ... कुरस्या (चौक) । राजा आदिका ... पटरा । फलक (तख्त) । राजाका सिंहासन (... कपड़का कपड़ा । क्षौरेय (रेशम) । पीसनेका ... (पु०).

पट्टज, (न०) पट्टात् जायते । पट्टनिर्मित ... कपड़ा.

पट्टदेवी, (स्त्री०) पट्टे (राजासने) (देवी ... स्त्री) । राजाके साथ सिंहासनपर बैठने... औरत । पटरानी । "राजमहिषी" "पट्टमहिषी".

पट्ट (त्त) न, (न०) पट (त) न्ति जना ... वा+तनन् । जहां बहुत लोग चलतेहैं । ... राजधानी । बड़ा मुल्क.

पट्, ग्रन्थन-गूंथना । वाचन-सिखाना ... भ्वा० पर० सक० सेट् । पठति । अपाठीत्...

, गति (इन गमन और प्रीति) करना । भ्वा० आ० सक० सेट् । पनते । अपनिष्ट.

, व्यवहार । क्रयविक्रय । मोल देना और बेचना । और स्तुति-तारीफकरना । भ्वा० आ० सक० सेट् । पणाय-तिन्ते । पणते । "व्यवहारमें तो" पणायति । अपणायीत् । अपणायिष्ट । अपणिष्ट.

, (पु०) पण्यते अनेन । पण्+अप् । जिससे व्यव-हार करें हैं । मूल्य (कीमत) धन । ताम्र (तांबा) एक पैसा । "भावे अप्" । भृति (मजदूरी) । द्यूत (जूआ) । ग्लह (दाव) । नियम । और व्यवहार । चार काकिनी । अस्सीकौड़ियोंका । अस्सी कौड़ियें.

न, (न०) पण्+भावे ल्युट् । विक्रय । बेचना । फरोख्त करना.

व, (पु०-स्त्री०) पणं (व्यवहारे) वाति । वा+क । पटहभेद । एकप्रकारका ढोल । "पणवानकगोमुखाः" इति गीता.

णाया, (स्त्री०) पण्+स्वार्थे आय तत०-आ । व्यवहार । "नचोपलेभे वणिजां पणायां" इति भट्टिः.

णायित, (त्रि०) पण्+आय+क्त । स्तुत । सराहागया । तारीफ कियागया । "आय" न होनेपर "पणित" ऐसाभी होता है.

णितव्य, (त्रि०) पण्+तव्य । विक्रेतव्य (खरीदनेकी योग्य) । स्तोतव्य (तारीफके लायक) । और व्यवहार्य (व्यवहारके योग्य) +यत् । इसी अर्थमें "पण्य" भी होता है.

ण्डित, (पु०) पण्डा (तत्त्वानुगा बुद्धिः) जाता अस्य । तार० इतच् । जिसकी बुद्धि तत्त्वको पहिचानती है । शास्त्रके तात्पर्यको जाननेहारा । विद्वान् । आलिम । दाना । चतुर । समझवाला.

ण्डितम्मन्य, (पु०) आत्मानं पण्डितं मन्यते । जो अपनेको पण्डित मानता है.

ण्यवीथी, (स्त्री०) ६ त० । विक्रेयद्रव्य । विक्रेयशाला । बेचनेलायक पदार्थोंके बेचनेका स्थान । विपणि । दुकान । हट्ट । "स्वार्थे कन्" । पण्यवीथिका "पण्यशाला".

ण्यस्त्री, (स्त्री०) कर्म० । वह स्त्री जिसे मोल ले सके हैं । वेश्या । कंजरी.

ण्याजीव, (पु०) पण्येन आजीवति । आ+जीव्+अच् । जिसका जीवन (खरीद फरोख्त कियेहुए द्रव्यसे) होता है । वणिग्जन । बनियां । व्यापारी (व्यवहारी).

पत्, गति । जाना । गिरना । उतरना । नीचे आना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पतति । अपप्तत्.

पतग, (पु०) पतति अनेन-पत्रः (पक्ष) तेन गच्छति-गम्+ड । जो परसे जाता है । विहङ्गम । पक्षी । परिन्दह.

पतङ्ग, (पु०) पतन् सन् गच्छति । गम्+खच् । जो गिरताहुआ आता है । सूर्य (सूरज) । शलभ (मक्खी) । खग (पक्षी) । महुएका दरख्त.

पतञ्जलि, (पु०) पतन् अञ्जलिः यस्मै । (नमस्कार करनेके योग्य होनेसे जिसके लिये दोनों जुड़ेहुए हाथ गिर रहे हैं) । पाणिनी मुनिके सूत्रोंपर भाष्यकी रचना करनेहारा । योगके सूत्र बनानेहारा । और एक मुनि । (यह साँपके स्वरूपमें आकाशसे पाणिनीकी अंजलीमें गिराथा).

पतत्, (पु०) पत्+शतृ । पक्षी । परिंदह.

पतत्र, (पु०) पतन्तं त्रायते । त्रै+क । पक्षिओंका पर जो गिरते हुएको बचाता है.

पतत्रि, (पु०) पत्+अत्रिन् । पक्षी । पतत्री । परिंदह.

पतत्रिन्, (पु०) पतत्रः अस्य अस्ति+इनि । पक्षी । पतत्री । परिंदह । परवाला.

पतद्ग्रह, (पु०) पतत् (मुखादिभ्यः स्रवत्) जलादि गृह्णाति । मुख आदिसे गिरतेहुए जल आदिको लेता है । पीकदानी । एकप्रकारका पात्र.

पतयालु, (त्रि०) पत्+आलुच् । पतनशील । पातुक । गिरनेवाला.

पताका, (स्त्री०) पत्यते (बोध्यते) योधादिभेदः अनया । पत्+आकन् । जो जुदा २ लडनेवालोंको जता-ता देती है । बांस (लकड़ी) पर देनेलायक तीन को-नके स्वरूपवाला कपड़ेका टुकड़ा । झण्डी । सौभाग्य । नाटकका एक अंग । छंदमें एक चक्र.

पताकिन्, (त्रि०) पताका+अस्त्यर्थे इनि । पताकाधारी । झण्डी पकड़नेहारा । ज्योतिषमें इस शकलका दुःख-को सूचन करनेहारा एक चक्र (पु०)

पति, (पु०) पा+डति । भर्ता । स्वामी । खाविंद । शौहर । शासक । अधिपति (मालिक) (त्रि०) । स्त्रियां वा ङीप्.

पतित, (त्रि०) पत्+क्त । च्युत । हिलगया । गिरा-हुआ । अपने धर्मसे गिराहुआ.

पतिधर्म, (पु०) पत्युः धर्मः । पतिके सम्बन्धमें स्त्रीका कर्तव्य.

पतिप्राणा, (स्त्री०) पतिः एव प्राणो यस्याः । पतिही जिसका प्राण (जीवन) है । पतिव्रता स्त्री.

पतिलङ्घनम्, (न०) पत्युः लङ्घनं=तिरस्करणम् । दूसरे पतिसे विवाह करके मृतपतिका तिरस्कार करना.

पञ्चत्व, (न०) पञ्चानां (पृथिव्यादिभूतानां) भावः । त । पाँचपन । मरन । मौत (इसमें शरीरके आरम्भ करनेहारे भूतोंका अपने २ अंशोंमें प्रवेश होता है) "पञ्चता".

पञ्चदश, (त्रि०) पञ्चदशानां पूरणः+डट् । पन्द्रहको पूरा करनेहारा । जिससे १५ हवीं संख्या भरजाती है । पन्द्रह । पन्द्रहवां "पञ्चदशी" पूर्णिमा । वेदान्तका एक ग्रन्थ है (स्त्री०).

पञ्चधा, (अव्य०) पञ्च प्रकारे । पञ्च प्रकार । पांचतरहसे.

पञ्चनख, (पु०) पञ्च नखा यस्य । जिसके पाँच नाखून हों । हाथी । व्याघ्र (बेड़िआ) । पाँच नखोंवाला (त्रि०).

पञ्चनद, (पु०) पञ्च नद्यो यत्र । जहां पाँच नदियें हों ([illegible] और विपाशा) । पञ्चनद नामसे प्रसिद्ध [illegible] देश । काशीमें बिन्दुमाधव [illegible].

पञ्चभूत, (न०) पञ्चानां भूतानां समाहारः । पाँच भूतों-का [illegible] कहेहुए पृथिवी-जल-तेज-[illegible] और आकाश [illegible] पाँच भूत.

पञ्चम, (त्रि०) पञ्चानां पूरणः । पञ्चन्+मट् । जिससे [illegible] पूर्ति होती है । पांचवां । [illegible].

पञ्चमकार, (न०) पञ्चानां (मकारादिवर्णानां) समाहारः । [illegible] कहेहुए मद्य मांस-मत्स्य-मुद्रा और मैथुन । ([illegible] आदि "म" है).

पञ्चमहायज्ञ, (पु०) [illegible] पाँच [illegible] और [illegible].

पञ्चशाखा, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] मुख निकलती है । [illegible].

[illegible], (त्रि०) [illegible] पाँच [illegible].

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पटच्चर, (न०) पट्यते (आवेष्ट्यते) । [illegible] पटत्+चरट् । जीर्णवस्त्र । पुराना कपड़ा । [illegible] वेष्टित इव चरति" चर+अच् । "जो [illegible] चलताहै" चोर (पु०).

पटल, (न०) पट-वेष्टन+कलच् । छत । [illegible] नेत्रका रोग । और पटारी । [illegible] ग्रन्थ (पु०).

पटवासक, (पु०) पटान् वासयति ([illegible] जो कपड़ोंको सुगन्धीवाला करता है । [illegible] वसनवासक । केसरआदिका चूर्ण । [illegible].

पटह, (पु० न०) पटेन हन्यते हन् । [illegible] शब्दं जहाति [illegible] । ढोल-बाजा । [illegible] वा पट २ शब्दको छोड़ता है । [illegible].

पटिमन्, (पु०) पटु+इमनिच् । चतुरता । [illegible] की । सरनी । [illegible].

पटीर, (न०) पट्+ईरन् । [illegible] ([illegible]) । (खेत) । मेघ (बादल) । [illegible] ([illegible]) शरीर ([illegible]) । उदर (पेट) [illegible] चंदन.

पटीयस्, (त्रि०) अतिशयेन पटु+ईयसुन् । [illegible] करनेमें बहुतही चतुर हो.

पटुजातीय, (त्रि०) पटुप्रकारः+जातीयर् । [illegible] अच्छीतरहका.

पटुरूप, (त्रि०) प्रशस्तः पटुः । प्रशस्ते+रूपप् । [illegible] सामर्थ्य । बहुत चतुर.

पटोल, (पु०) पट्+ओलच् । [illegible] वस्त्रविशेष (न०).

पट्ट, (न०) पट्+क्त । [illegible] । नगर । [illegible] मुण्डा (चौक) । राजा आदिका [illegible] पट्टा । [illegible] ([illegible]) । राजाका [illegible] कागज । कौशेय (रेशम) । [illegible] (पु०).

पट्टज, (न०) [illegible].

पट्टदेवी, (स्त्री०) [illegible] ([illegible]) ([illegible]) । [illegible].

पठ् ([illegible]) ([illegible]) [illegible].

[illegible]

पतिवत्नी, (स्त्री०) पति· अस्त्यस्याः [illegible] । [illegible] । दीप् च । सधवा स्त्री । सुहा[illegible] [illegible]

पतिंवरा, (स्त्री०) पतिं वृणोति । [illegible] जो अपनी इच्छासे पतिको स्वीकार करती है [illegible]

पतिंवरा, (स्त्री०) पतिं वृणोति-पति+वृ+खच्+मुम् । [illegible] [illegible] (स्वीकार) करनेवाली स्त्री

पतिव्रता, (स्त्री०) पति (पतिसेवन) [illegible] पतिकी सेवा करना जिसका नियम है । [illegible] औरत । पतिकी आज्ञामें रहनेवाली

पतिसेवा, (स्त्री०) पत्युः सेवा । पतिकी सेवा । ([illegible] [illegible])

पत्ति, (पु०) । पद्+क्तिन् । सेना (पैदल [illegible] पांच) । "क्तिन्" गति (जाना) । एक रथ [illegible] ३ घोड़े, ५ पैदल) इतनी सेनावाला एक [illegible] सेनाका नाम.

पत्नी, (त्रि०) पति+ङीप् यज्ञसम्बन्धमें नोप-नुक् [illegible] धर्मपत्नी । वह स्त्री जो यज्ञमें पतिके [illegible] है । विधिसे विवाहीहुई स्त्री.

पत्र, (न०) पतत्+ष्ट्रन् । वाहनमात्र (अथवा) (पत्ता) । पक्षिओंका पक्ष (पर-पङ्ख) [illegible] आधार द्रव्य (कागज) । चिट्ठी

पत्रभङ्ग, (पु०) पत्रस्य इव भङ्ग (खण्ड) [illegible] आदिपर पत्तोंके टुकड़ोंकी नांई लिखावट [illegible] आदि । जहां पत्तेकी नांई रचना है

पत्ररथ, (पु०) पत्र (पक्ष) रथ इव (गमनके [illegible] यस्य । जिसका पैर गाडीकी नाई साधन है । [illegible] पक्षिराज.

पत्रसूचि, (स्त्री०) पत्राणां सूचि इव । पत्तोंमें [illegible] गई है । कण्टक । कांटा । कांटा.

पत्राञ्जन, (न०) पत्रं (लेखनपत्र) अज्यते [illegible] ल्युट् । जिसके द्वारा लिखनेका पत्र सजाया या [illegible] या जाता है । मसी । स्याही.

पत्रिन्, (पु०) पत्रं (पक्ष) अस्ति अस्य+इनि । [illegible] [illegible] । पक्षी । शर (तीर) । श्येन (बाज) । [illegible] (गाडीपर चढ़ाहुआ) । पर्वत और ताल

पथ्, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पथति । [illegible]

पथ, (पु०) पथ्+अच् । मार्ग । पथ । रास्ता

पथिक, (त्रि०) पन्थानं गच्छति । पथिन्+कन् । [illegible] [illegible] जानेके लिये घरसे निकलकर मार्गमें जानेहारा । [illegible] [illegible] । राही.

पथिन्, (पु०) पथ+इनि । पथ । पन्था । मार्ग । रास्ता

पद्मालय, (पु०) पद्मं एव आलयः यस्य । कमलके घर-वाला । ब्रह्माका नाम.

पद्मासन, (न०) पद्माकारं आसनं । एक प्रकारका योगा-सन । कमलासन । वाम (बायां) पावको दहिने पदपर और दहिने पावको बायें पदपर धरना पद्मासन नामसे प्रसिद्ध है.

पद्मासन, (न०) पद्मं इव आसनं । कमलफूलकी नांई आ-सन (बैठना) । योगशास्त्रमें प्रसिद्ध एक प्रकारका आसन.

पद्मिन्, (पु०) पद्मं (बिन्दुजालं) अस्ति अस्य+इनि । बिन्दुसमूहवाला । हस्ती । हाथी । कमलोंवाला (त्रि०).

पद्मिनी, (स्त्री०) पद्मानां समूहः नलिन्यादेरे [illegible]+इनि । कमलोंका समूह । कमलोंवाला देश । तालाबकी [illegible] (त्रि०) एक प्रकारकी औरत (स्त्री०).

पद्मेशय, (पु०) पद्मे शेते । शी+अच् । अलुक् समा० । कमलमें सोता है । विष्णु.

पद्य, (न०) पदं (चरणं) अर्हति । पद+यत् । [illegible] [illegible] [illegible] पदोंवाला (छन्दोंका भेद) श्लोक । एक वाक्य.

पन्, स्तुति-व्यवहार करना । भ्वा० आ० स० सेट् । पनायते.

पनस, (पु०) पन्+असच् । वृक्षविशेष । कण्टक । कटहल फल । कटहर.

पन्न, (त्रि०) पद्+क्त । गलित । च्युत । गिराहुआ ।

पन्न, (त्रि०) पद्+क्त । गिराहुआ । [illegible] । नीचे चल-गया । उतर गया । "पद्+क्त" [illegible] (न०).

पन्नग, (पु०) पन्नं (अधोमुखं) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । जो नीचे मुख करके [illegible] है [illegible] से नहीं [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] "[illegible]" [illegible] । [illegible].

पन्नगाशन, (पु०) पन्नगान् अश्नाति । अश्+ल्यु । [illegible] [illegible] है । गरुड़.

पन्नद्धा, (स्त्री०) [illegible] (पद) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible]

पम्पा, (स्त्री०) [illegible] [illegible] एक नदी है । "पम्पा [illegible]! [illegible]" [illegible]

पय, गति-जाना । भ्वा० आ० स० सेट् । पयते । [illegible]

पयस्य, (पु०) पयस्· [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible]

पयस्, (न०) पय+असुन् ([illegible] [illegible] [illegible] है) । दूध । दूध । जल । पानी

पयोमुदर-न्द्, (पु०) पयस् [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible].

पतिवत्नी, (स्त्री॰) पतिः अस्ति अस्या:+मतुप् । नि॰ । [illegible] । [illegible] । पतिवाली स्त्री । सुहागन । पतीवाली औरत.

पतिंवरा, (स्त्री॰) पतिं वृणीते । वृ+खच् । वह कन्या जो अपनी इच्छासे पतिको मोहार करती है । कन्या-औरत.

पतिंवरा, (स्त्री॰) पतिं वृणोति-पति+वृ+खच्+टाप्) पतीको वरने (मंजूर) करनेवाली स्त्री.

पतिव्रता, (स्त्री॰) पतिः (पतिसेवनं) व्रतं यस्याः । पतिकी सेवा करना जिसका नियम है । सती । अच्छी औरत । पतिकी सेवामें रहनेवाली.

पतिसेवा, (स्त्री॰) [illegible] । पतिकी सेवा (खाविंदकी खिदमत)

पत्ति, (पु॰) । पत्+तिन् । सेना (पैदल चलनेवाली फौज) । "[illegible]" [illegible] (अमर) । एक रथ, एक हाथी, ३ घोड़े, ५ पैदल) इनकी संख्यावाली एक प्रकारकी [illegible].

पत्नी, (स्त्री॰) पति+ङीप् [illegible] । पति-[illegible] । [illegible] पतिके साथ रहती है । [illegible]

पत्र, (न॰) [illegible] । [illegible] (अमरकोश) । पत्ता (पत्ता) । [illegible] (पत्र) [illegible] । [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पथ्य, (त्रि॰) पथे (चिकित्सानुसारिकर्म) [illegible] चिकित्सा (इलाज) के उपयोगी सेवी (सेवन करनेलायक वस्तु । और हितकारक ([illegible] हारा) । हरीतकी (हरीड) का [illegible] (स्त्री॰)

पद्, गतौ (जाना) दिवा॰ आ॰ सक॰ अनि॰ । [illegible] आदि.

पद्, गतौ । जाना या दर्शन करना । चुरा॰ [illegible] सेट् । पदने.

पद, (न॰) पद्+क्विप् । [illegible] मन ([illegible] किरण (पु॰).

पद, (न॰) पद्+अच् । चिह्न (निशान) । [illegible] चीज । वह शब्द कि जिसके अन्तमें सुप् [illegible] हो । श्लोकका एक पाद (हिस्सा).

पदग, (त्रि॰) पैदल चलनेवाली । [illegible] । [illegible] जानेवाले । पैदल.

पदवि-वी, (स्त्री॰) पद+अवि वा ङीप् । [illegible]

पदाजि, (पु॰) पादाभ्यां अजति (चलता है) [illegible] चलनेवाला.

पदाति, (पु॰) पादाभ्यां अतति । [illegible] पैदल चलनेवाला.

पदाति, (पु॰) पदाभ्यां अतति+इण् । [illegible] ता है । पादचारी योद्धा । पैदल.

पदातिक, (त्रि॰) पदाभ्यां अतति+[illegible] चलनेवाला । (पु॰) पैदलयोद्धा.

पदारविन्द, (न॰) पदं अरविन्दं [illegible] कमल है । [illegible]

पदार्थ, (पु॰) पदस्य अर्थः । [illegible] शब्दका अर्थ । [illegible]

पदि, (पु॰) पदाभ्यां [illegible] चलनेवाला.

पद्धति-ती, (स्त्री॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] ग्रन्थ.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पद्मखण्ड-षण्डं, (न०) पद्मानां खण्डं+षण्डं । कमलोंका समूह.

पद्मगर्भ, (पु०) पद्मं (विष्णुनाभिपद्मं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) यस्य । जो विष्णुकी नाभि (धुन्नी) के कमलपुष्पमें उत्पन्न है । चतुर्मुख । ब्रह्मा । चारमुखवाला ब्रह्मा । कर्म० । कमलका मध्य.

पद्मगन्ध-गन्धि, (त्रि०) पद्मस्य गन्धः । कमलकी गंधवाला.

पद्मजा-जात-भव-भू-योनि-सम्भव, (पु०) पद्मात् जायते+ जन-ड । कमलसे उत्पन्न । ब्रह्मा.

पद्मतन्तु, (पु०) पद्मस्य तन्तुः । कमलकी नाल । कमलकी नालकी डंडी

पद्मनाभ, (पु०) पद्मं नाभौ यस्य+अच । जिसकी नाभि में कमल है । विष्णु.

पद्मपुराण, (न०) पद्मं अधिकृत्य कृतं+अण् । उसका कोष । कर्म० । महापुराणोंमेंसे एक पुराण.

पद्मबन्ध, (पु०) पद्मस्येव बन्धः (वर्णविन्यासः) । जिसकी रचना कमलकी भाँति है । शब्दालंकारमेंसे एक अलंकार

पद्मबन्धु, (पु०) ६ त० । सूर्य । भ्रमर (भौंरा) । कमलपुष्पका मित्र । "पद्ममित्र".

पद्मभू, (पु०) पद्मं (विष्णोर्नाभिपद्मं) भूः (उत्पत्तिस्थानं यस्य ।) जिसकी उत्पत्तिका स्थान विष्णुकी नाभिकमल है । चतुर्मुख ब्रह्मा । "पद्मोद्भव" यही अर्थ होताहै

पद्मराग, (न०) पद्मस्य इव रागो यस्य । जिसका कमल की भाँति रंग है । लाल रंगका एक प्रकारका मणि । माणिक.

पद्मरेखा, (स्त्री०) पद्माकारा रेखा । हाथमें कमलके आकारकी रेखा सामुद्रिकशास्त्रानुसार.

पद्मलाञ्छन, (पु०) पद्मं लाञ्छनं अस्य । कमल जिसका चिह्न है । सूर्य । ब्रह्मा । राजा । (राजा) । और कुबेर (धनका राजा)

पद्महस्तकार, (त्रि०) पद्मं हस्ते यस्य । जिसके हाथमें कमल है । विष्णुका नाम.

पद्माकर, (पु०) पद्मं एव मुख्यः इति [illegible] । [illegible] मान प्रत्ययात्त [illegible] । विष्णुका नाम.

पद्मा, (स्त्री०) पद्मं अस्ति अस्याः+अच् । [illegible] । लक्ष्मी । लवंग (लौंग) । कमलकेसी । कुसुम्भेका फूल

पद्माकर, (पु०) पद्मानां आकर । कमलोंकी खान । तालाब जिसमें बहुतसे कमल होवें

पद्मारा, (त्रि०) पद्मं [illegible] अस्ति [illegible] । [illegible] कमलके समान [illegible] । स्त्री (पु०) विष्णुका नाम

पद्मावती, (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । एक नदी.

पद्मालय, (पु०) पद्मं एव आलयः यस्य । कमलमें वास । ब्रह्माका नाम.

पद्मासन, (न०) पद्मस्य आसनं । एक प्रकारका योग [illegible] । कमलासन । ब्रह्म (पु०) [illegible] और [illegible] [illegible] प्रसिद्ध है

पद्मासन, (न०) पद्मं इव आसनं । [illegible] मान (बैठना) । योगशास्त्रमें प्रसिद्ध एक प्रकारका [illegible]

पद्मिन, (पु०) पद्म (विष्णुकमल) [illegible] विष्णुपुराण [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०

पद्मिनी, (स्त्री०) [illegible] कमलोंका समूह । [illegible] । [illegible] एक प्रकारकी स्त्री (स्त्री०)

पद्मेशय, (पु०) पद्मे शेते । [illegible] । [illegible] कमलमें सोता है । विष्णु

पद्य, (न०) [illegible] (वर्णे) [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०) [illegible] वचन

पद्य, [illegible] । [illegible] पदमें

पद्मक, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible]

पद्म, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

पद्म, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] (स्त्री०)

पद्मान, (पु०) [illegible] (वर्णे) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

पद्मनाल, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] है । [illegible]

पद्मावती, (स्त्री०) [illegible] (वर्णे) [illegible] । [illegible] । [illegible]

पद्मा, (स्त्री०) [illegible] [illegible] है । [illegible] [illegible]

पद्म, [illegible] । [illegible] । [illegible]

पद्मरान, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

पद्मन, (न०) [illegible] । [illegible] है । [illegible] । [illegible]

पद्मपुष्पि, (पु०) [illegible] । [illegible]

परा, (अव्य०) पृ+आ । विमोक्ष (छुटकारा) । प्रातिलोम्य- (उलटापन) । प्राधान्य (बडापन) । घर्षण (बुरे वचन कहना) । आभिमुख्य (सामने) । त्याग (देना) । विक्रम (बहादुरी) । भृश (निहायत) । गति (जाना) । भङ्ग (टूटना) । अनादर । तिरस्कार । प्रत्यावृत्ति (लौटना) । मूलाधारमें रहनेहारा एक प्रकारका शब्द । " परा वह है कि जिससे अविनाशी पुरुष जानाजाय" ब्रह्मविद्या (स्त्री०) दूसरा उपसर्ग जो नाश-तिरस्कार-लौटना, इन सब अर्थोंमें है.

पराक, (पु०) बारह दिनतक उपवाससे सिद्ध होनेयोग्य प्रायश्चित्तरूप एक प्रकारका व्रत । १२ दिनका फाका । तरवार । एक प्रकारका रोग । छोटा.

पराक्रम, (पु०) परा+क्रम्+घञ् । बल (जोर) । देहज सामर्थ्य । बहादुरी.

पराक्रमिन्, (त्रि०) पराक्रमः अस्ति अस्य+इन् । पराक्रमी । बलवाला । धैर्यवाला । बहादुर.

पराक्रान्त, (त्रि०) परा+क्रम्+क्त । दृढ । बहादुर । उत्साहवाला । आक्रमण किया गया । हमला किया गया । लौटाया गया.

पराग, (पु०) परागच्छति । परा+गम्+ड । धूलिमात्र । धूर । पुष्परज । फूलोंका रज (जरां) । केसरका चूर्ण आदि । उपराग (ग्रहण) । चन्दन.

पराङ्मुख, (त्रि०) पराङ् (प्रत्यावृत्तं) मुखं यस्य । फेरा है मुख जिसका । विमुख (मुं मोडेहुए) । आरम्भ कियेहुए कामसे हटना.

पराचित, (त्रि०) परेण आचितः (पुष्टः) व्याप्तो वा । दूसरेसे पुष्टहुआ या घिराहुआ । आ+चि+क्त । दूसरेसे पालाहुआ.

पराचीन, (त्रि०) पराग्भवः । पराच्+ख । पराङ्मुख । मुं मोडेहुए । परकालिक । पिछले समयका । पुराना.

पराजय, (पु०) परा+जि+अच् । पराभव । तिरस्कार । हटाना । हार.

पराजि, भ्वा० आ० (पराजयते) । शिकस्त खाना । हारना । वश करना.

पराजित, (त्रि०) परा+जि+क्त । जीतागया । वश कियागया । शिकस्त दियागया । कानूनसे हारगया.

पराजिष्णु, (त्रि०) परा+जि+इष्णुच् । जीतनेवाला । जीता हुआ । शिकस्तदिया हुआ.

पराधीन, (त्रि०) परस्य+ख । परस्य अधीनो वा । परवश । दूसरेके आधीन । परवश । दूसरेके मातहत.

परान्न, (त्रि०) परस्य अन्नं एव अन्नं यस्य । दूसरेका अन्नही जिसका अन्न है । दूसरेके अन्नपर जीनेहारा । (न०) । अन्य अन्न । दूसरेका अन्न (न०).

पराभव, (पु०) परा+भू+अप् । तिरस्कार । हेटी । अभिभव । दबाव । विनाश । तबाही.

पराभूत, (त्रि०) परा+भू+क्त । हरायागया । दबाया गया । तिरस्कार कियागया.

पराभूति, (स्त्री०) परा+भू+क्तिन् तिरस्कार । पराभव । हार.

परामर्श, (पु०) परा+मृश्+घञ् । युक्ति (हेतु) विवेचन (विचार) । न्याय आदिमें कहेहुए "व्याप्ति (हेतु और साध्यका इकट्ठा रहना) विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान जैसे यह पर्वत वह्निव्याप्य धूमवाला है अर्थात् पर्वतमें आग है".

परामर्शन, (न०) परा+मृश्+अन । स्मरण । विचार । खयाल.

परामृष्ट, (त्रि०) परा+मृश्+क्त । स्पृष्ट । छूआगया । गया । विचारागया । दबायागया.

परायण, (न०) परं अयनं (गमनम्) । मतलब किसी काममें बहुत लगजाना । उत्तमाश्रय । बहुतही लगनेहारा । जैसे "धर्मपरायण." (धर्ममें लगाहुआ) । तत्पर और पियारा (त्रि०).

परारि, (अव्य०) पूर्वतरवत्सर । पहिलेसे पहिला परार । गत तृतीय वत्सर (पिछला बरिस) । अत्यन्तशत्रु (बड़ाही दुश्मन) (त्रि०)

परार्ध, (न०) ऋधू+अच् कर्म० । चरम संख्या । गिनती । १००००००००००००००००० का दूसरा आधा.

परार्घ्य, (त्रि०) परार्धं (चरमसंख्या उपचारात्) अर्हति यत् । श्रेष्ठ । बहुत अच्छा.

परावर्त, (पु०) परा+वृत्+घञ् । परिवर्त । बदलना । बदल । लौटना.

परावर, (त्रि०) परः अवरश्च । दूर और निकट । पीछे । पहिला पिछला । नीचे ऊपर । पौर्वापर्य

परावृत्, भ्वा० आ० । परावर्तते । लौटना । मुडना.

परावृत्त, (त्रि०) परा+वृत्+क्त । लौटाहुआ । घुमायागया । बदलागया । उलटा पलटा (व्याय-दस्तावेज) । लौटा दियागया.

पराशर, (पु०) व्यासदेवका पिता । एक मुनि.

परासन, (न०) परा+अस्+ल्युट् । मारण । मारना

परासु, (त्रि०) परागता असवो यस्य । जिसके प्राण हो गये । मृत । मरगया.

परास्त, (त्रि०) परा+अस्+क्त । निरस्त (निकाला) पराजित (हरायाहुआ).

पराह, (पु०) परं (उत्तरं) अहः । कर्म० स (दूसरा होता है) । परदिन । दूसरा दिन.

पराह्न, (पु०) परं अह्नः । एकदेशि समा०टच् गमा०अहा-देशः । णत्वं । दिनका पिछला भाग । स्मृतिमें कहाहुआ अपराह्न काल । दिनका पिछला पहिर.

परि, (अव्य०) सर्वतः (चारों ओरसे) । वर्जना । व्याधि (बीमारी) । शेष (बाकी) । निरसन (निकालना) । पूजा । भूषण । उपरम । शोक । सन्तोष । बोलना । बहुत । त्याग और नियम.

परिकर, (पु०) परि+कृ+अप । पर्यङ्क (पलंग) । परिवार (खान्दान) । समारम्भ (शुरू) । समूह । अच्छी तरह-से अंगोंको बांधना । कमर कसना । विवेक (विचार) और सहचारी (साथी).

परिकर्तन, (न०) परि+कृत्+ल्युट्+अन । काटना । काट-डालना । व्यथा पहुंचाना.

परिकर्तृ, (पु०) परि+कृत्+तृ । बड़े भाईके विवाहे बिन छोटे भाईका विवाह करानेवाला पुरोहित । काटनेवाला.

परिकर्मन्, (न०) कर्म (संस्कारादि) तत् करणार वा ५ ब० । देहका संस्कार (सजावट) । केशरआदि अंगोंपर मलनेका द्रव्य । भूषण (गहना-जेवर) । उब-टन । लगाना । शरीरका धोना । ६ ब० । सेवक (नौकर) (त्रि०).

परिकल्पन, (न०) परि+क्लृप्+अन । रचना करना । निश्चय करना । निर्णय करना । विभाग करना

परिकल्पित, (त्रि०) परि+क्लृप्+क्त । निर्णय कियागया । रचागया । बनायागया । विभाग कियागया । दिखागया

परिकीर्ण, (त्रि०) परि+कॄ+क्त । बिखरा हुआ । फैलाया-गया । घिराहुआ.

परिकीर्तन, (न०) परि+कृत्+अन । घोषित करना । ढण्ढोरा देना । कहना । बोलना । अहंकार करना । नाम लेना.

परिकीर्तित, (त्रि०) परि+कृत्+क्त । घोषित किया-गया । मशहूर कियागया । कहागया । अहंकार किया-गया.

परिकूल, पु० उभ० परिकीर्तयति-ते । कथन करना । घो-षणा करना । प्रसिद्ध करना.

परिक्रम, (पु०) परि+क्रम्+घञ् । चौरा आदि (मेल मेंगरह) । दूसरे प्रदक्षिणा करनेके लिये फेंकते समय (जाना).

परिक्रय-अवक्रय, (पु० न०) परि+क्री+अच्+अप अव । मजूरी । किराया । दरदीतिए निश्चय करना । कौलनामा

परिक्रान्त, (त्रि०) परि+क्रम्+क्त । चला हुआ । हीन होगया

परिक्लिष्ट, (त्रि०) परि+क्लिश्+क्त । खिन्न हुआ । बड़ दिन तक.

परिक्षी, क्या० आ० । परिक्षीयते । दरिद्र । क्षय [illegible]

परिक्षित्, (पु०) अभिमन्युसे उत्तरामें उत्पन्न किया हुआ कुरुवंशका एक राजा । "परीक्षित" यही अर्थ होता है.

परिखा, (त्रि०) परितः खन्यते । खन्+ड । चारों [illegible] से खोदी जाती है । पुर आदिमें शत्रु आदि प्रवेश [illegible] करनेके इसलिये चारोंतरफ पानी रहनेकी जगह । खाई.

परिखिन्न, (त्रि०) परि+खिद्+क्त । दुःखी । कष्ट [illegible] पायागया । खिन्न किया गया.

परिख्याति, (स्त्री०) परि+ख्या+क्तिन् । जिन्दगी । [illegible] गौरव । प्रसिद्धि.

परिगत, (त्रि०) परि+गम्+क्त । प्राप्त (मिला) । [illegible] (जानाहुआ) । विस्मृत (भूलाहुआ) । चेष्टित ([illegible] किया गया) । वेष्टित (घिराहुआ) । और गत ([illegible] गया)

परिगम-परिगमनम्, (पु० न०) परि+गम्+अप+अन [illegible] चारों ओर जाना । घेरा देना । घूमना । [illegible] जाना । इरादा करना । निश्चय करना

परिगर्जित, (त्रि०) परि+गर्ज+क्त । दुर्घटना । [illegible] विगलगया । छिपगया । [illegible] । [illegible]

परिगूढ, (त्रि०) परि+गुह्+क्त । पूरा छिपा हुआ । [illegible] रक्षित हुआ । न जानागया । कठिनतासे [illegible].

परिगृहीत, (त्रि०) परि+ग्रह्+क्त । स्वीकार कियागया । [illegible] । [illegible] । अंगीकार कियागया । [illegible] कियागया । विवाह कियागया

परिग्रह, परि+ग्रह्+अप् । [illegible] (बहुत [illegible]) [illegible] पत्नी ([illegible]) । "[illegible]" । [illegible] (कौन) और । परिजन (नौकर चाकर) । "[illegible]" । शपथ (कसम).

परिघ, (पु०) परि+हन्+अप [illegible] । [illegible] मारा हुआ । [illegible] । घर ([illegible]) । गृह (घर) । [illegible] । "[illegible]" [illegible] १० व [illegible] ११ [illegible].

परिचय, (पु०) परि+चि+अप् । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible])

परिचर्या, (स्त्री०) परि+चर्+यत् । सेवा । [illegible] । पूजा.

परिचायक, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

परिचारक, (पु०) परि+चर्+ण्वुल् । सेवक । [illegible] ([illegible]).

परिच्छद, (पु॰) परि+छद्+घ ह्रस्वः । उपकरण (सामान) (हाथी, घोडा, रथ, पैदल वगैरह) । कपडा गहना आदि । परिवार । " सेना परिच्छदस्तस्य " रघुः.

परिच्छेद, (पु॰) परि+छिद्+घञ् । विशेषरूपसे इयत्ताकरण । ग्रन्थांतरपर हद बांधनी । ग्रन्थके ठहिरावकी जगह (सर्ग-अध्याय आदि) । सीमा (हद) । विचार.

परिजन, (पु॰) परिगतः जनः । चारोंओरके लोग । परिवार । प्रतिपाल्यजन (पालन करनेलायक जीव पुत्रादि).

परिणत, (त्रि॰) परि+नम्+क्त । णत्वम् । परिपक्व । पकाहुआ । वृद्धिंगत (बढाहुआ) । दूसरी अवस्थाको पहुंचा । टेडे दांत चलानेहारा हाथी.

परिणय, (पु॰) परि+नी+अच् । विवाह । शादी.

परिणाम, (पु॰) परि+नम्+घञ् । प्रकृतिका अन्यथाभाव । विकार । स्वभावका बदलना । बदलना । शेष । बाकी । नतीजा । अर्थालंकार.

परिणाह, (पु॰) परि+नह्+घञ् । विस्तार । फैलाव.

परिणेतृ, (पु॰) परि+नी+तृच् । विवाह करनेहारा । भर्ता । खाविंद.

परितस्, (अव्य॰) परि+तसिल् । सर्वतः । चारोंओरसे.

परिताप, (पु॰) परितप्यते (भावादौ घञ्) । तपना । दुःख । उष्णता (गरमी) । शोक (अफसोस) । भय (डर) । कम्प (कांपना) । एक प्रकारका नरक.

परित्राण, (न॰) परि+त्रै+ल्युट् । रक्षण । बचाना । बुराईमें लगेहुएको निवारण करना (हटाना).

परिदान, (न॰) परिवर्तेन दानम् । दा+ल्युट् । विनिमय । द्रव्यान्तरग्रहणेन द्रव्यान्तरदानं । बदल्ना । एक चीज लेकर दूसरी देना.

परिदेवन, (न॰) परि+दिव+ल्युट् । अनुशोचना । बार २ सोचना । विलाप (रोना) । कियेगये कामको सोचना कि "अनुचित किया है".

परिधान, (न॰) परि धीयते । पहिरना । परि+धा+कर्मणि ल्युट् । परिहितवस्त्र । पहिराहुआ कपडा.

परिधि, (पु॰) परि+धा+कि । चन्द्रमा और सूर्यके पास मेघ (बादल) आदिके निकट होनेसे उत्पन्नहुआ वेष्टन (घेरा) के स्वरूपमें मण्डल । सूर्यकी सभा । चन्द्रकी सभा । परिवेष । गोल । दायरा । गूलरके वृक्षकी शाखा । चारोंओर और पास.

परिधिस्थ, (त्रि॰) परिधौ तिष्ठति । स्था+क । घेरेमें रहनेवाले । परिचारक । चाकर । लडाईमें रथीको बचानेकेलिये चारोंओर ठहरीहुई सेना.

परिनिष्ठा, (स्त्री॰) परि+नि+स्था+अङ् । पूर्णज्ञान । पूरा समझ । पूरा परिचय । पूरी समाप्ति (खातिमा) । ... सीमा (हद).

परिनिष्ठित, (त्रि॰) परि+नि+स्था+क्त । पूर्णतया विषय पूरा जानाहुआ.

परिपक्व, (त्रि॰) परि+पच्+क्त+व । पूरा पकाहुआ । जलाहुआ.

परिपण, (न॰) परिपण्यते (व्यवह्रियते) अनेन ... घञ् । मूलधन । पूंजी.

परिपन्थक, (पु॰) परिपन्थयति (दोषमुक्तं करोति) ण्वुल् वा कन् पन्थादेशः । पन्थानं वर्जयित्वा वर्तते । जो दोषको प्रकट करता है वा जो मार्गके ... जाता है । शत्रु (दुश्मन).

परिपन्थिन्, (पु॰) परि+पन्थि+इनि । शत्रु (दुश्मन).

परिपाक, (पु॰) परि+पच्+घञ् । नैपुण्य (चतुराई) । उत्तमपाक । अच्छी तरहसे पकना.

परिपाटि-टी, (स्त्री॰) परि+पट्+इन् । अनुक्रम । सिलसिला । कायदह । रीति.

परिप्लव, (न॰) परि+प्लु+अच् । चंचल । अस्थिर । कायम न हो.

परिबर्ह, (पु॰) परि+बर्ह+घञ् । राजाके योग्य घोडा, रथ आदि सामान । हस्त्यश्वरथादि परिच्छद.

परिभ(आ)व, परि+भू+अप्-घञ् वा । अनादर । तिरस्कार । हिकारत । बेइज्जती.

परिभाषण, (न॰) परि+भाष्+ल्युट् । निन्दासे ... पूर्ण बातचीत । और नियम (कायदह).

परिभाषा, (स्त्री॰) परि+भाष्+अ । इतिमित्तेड ... बडी नाम । अवयवार्थका अनादरकर ... विशेष नाम.

परिभूत, (त्रि॰) परि+भू+क्त । तिरस्कृत । बेइज्जत कियाहुआ । हिकारत कियागया.

परिमण्डल, (त्रि॰) परितो मण्डलं । चारोंओर से वर्तुलाकार । गोल शकल.

परिमल, (पु॰) परि+मल्+अच् । केशर चंदन ... का मलना । मलनेसे निकली सुगन्धि.

परिमाण, (न॰) परिमीयते अनेन । परि+मा+ल्युट् जिससे परिमाण किया जाय । माप । बराबरी । ... प्रमाण । समता । परिसर.

परिमित, (त्रि॰) परि+मा+क्त । इयत्तापरिच्छिन्न । ... गया । युक्त । मुनासिब । ठीक माप । यथार्थ ...

परिमितकथ, परिमिता कथा यस्य । थोडा बोलनेवाला.

परिमिताभरण, (त्रि॰) परिमितानि आभरणानि ... ब॰ स॰ । थोडेसे भूषण (जेवर) पहिरे हुए.

परिमितायुस्, (त्रि॰) परिमितं आयुः यस्य । ... आयु (उमर) वाला.

परिमिताहार-भोजन, (त्रि॰) परिमितः आहारः ... थोडा खानेवाला । अल्पभोजन.

रिमेय, (त्रि०) परि+मा+यत् । मापनेयोग्य । थोडासा । परिच्छिन्न.

रि(री)रम्भ, (पु०) परि+रभ+घञ्-मुम् च वा दीर्घः । आलिङ्गन । छातीसे लगाना । गलबांही.

रियर्जन, (न०) परिवर्ज्यते अनुभिः अनेन । वृज्+णिच्+ल्युट् । मारण । मारना । वृज्+भावे ल्युट् । त्याग । छोडना । देना.

रि(री)वर्त, (पु०) परि+वृत्+भावे घञ् वा दीर्घः । विनिमय । बदली । आधारे घञ् । युगके अन्तका समय । अध्यायआदि । "कर्तरि अच्"। कूर्मराज (कछुओंका राजा)। "भावे ल्युट्" परिवर्त.

रिवाद, (पु०) परि+वद्+घञ् । गान बाजुओंमेंसे एक.

रि(री)वाद, (पु०) परि+वद्+घञ् वा दीर्घ. । अपवाद । निन्दा । बदनामी । [illegible].

रिवादिनी, (स्त्री०) परितो वदति (स्वरसार इव व-दति) । जो साथ [illegible] साथ बोलती है । वद्+णिनि । सात तारोंवाली बीन । निन्दा करनेवाली स्त्री.

रि(री)वाप, (न०) । वप्+णिच्+घञ् । मुण्डन (मुंडना) । ल्युट् । परिवापन.

रियापित, (त्रि०) परि+वप्+णिच्+क्त । मुण्डित । मुण्डाहुआ.

रि(री)वार, (पु०) परिव्रियते अनेन । अनेन वा । परि+वृ+घञ् वा दीर्घः । परिजन । कुटुंब आदि । तलवारकी मियान.

रि(री)वाह, (पु०) परि+वह्+घञ् वा दीर्घ । जलो-च्छ्वास । पानीका प्रवाह । चारोंओर पानीके बहजानेसे । [illegible].

रिविज, (त्रि०) परिविद्यते अग्नी । [illegible] । छोटे भाईके विवाहसमय न विवाहा हुआ बडा भाई । बैसी बहिन (स्त्री०) । अनुजविवाहवाले अनूढ ऐसा ज्येष्ठ.

रिविन्दि, (पु०) परि विन्दते अग्नी । परि+विद्+[illegible] । बडे भाईके न विवाहनेपर विवाहाकर होता भाई । ब्याहेहुए छोटे भाईका बडा भाई (न विवाहुआ).

रिवृढ, (त्रि०) परि+वृह्+क्त । अधिप । प्रभु । [illegible] । (स्वामी).

रिवेदन, (न०) परिवेदित [illegible] वेदनम् । (विवाह करनेसे) । बडे भाईके बैठे छोटेका ब्याह [illegible] होजाना.

रिवेश, (पु०) परि+विश् [illegible] घञ् । घेरा । घेरा । [illegible] सूर्यके चारो [illegible] और [illegible] पड़ा [illegible] । [illegible] । [illegible]

रिवेषण, (न०) परि+विष्+णिच्+ल्युट् । भोजनके लिये [illegible] । भोजन परोसना । घेरा । [illegible].

कल० ३९

परिवेष्टृ, (पु०) परि+विष्+तृच् । भोजनके लिये [illegible].

परिव्राज्, (पु०) परि+व्रज्+क्विप्० । [illegible] ([illegible]) [illegible] जानेवाला । चौथे आश्रमवाला । यति । संन्यासी.

परिव्राज-क (पु०) । [illegible] । व्रज+घञ्+ण्वुल् वा । [illegible] है । चौथे आश्रमवाला यति । संन्यासी.

परिशिष्ट, (न०) परि+शिष्+क्त । "[illegible]" । अवशिष्टग्रन्थ [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

परिशीलन, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

परिशुद्धि (स्त्री०) परि+शुध्+क्तिन् । [illegible]

परिशुष्क, (त्रि०) परि+शुष्+क्त । [illegible]

परिशोषण, (न०) परि+शुष्+ल्युट् । [illegible] । [illegible] ।

परिश्रम, (पु०) [illegible]

परिश्रय, (पु०) [illegible]

परिश्रान्ति, (स्त्री०) [illegible]

परिषद्, (स्त्री०) [illegible]

परिषद, (पु०) [illegible]

परिष्कृत, (त्रि०) [illegible]

परिष्क [illegible] (त्रि०) [illegible]

परिष्कार, (पु०) [illegible]

परिष्वङ्ग, (पु०) [illegible]

परिसर, (पु०) [illegible]

परिसर्ग, (पु॰) परितः सृज्यते । सृज्+घञ् । चारों ओरसे लपेटना (परितो वेष्टन) । चारों ओर जाना (समन्तात् गमन).

परिसर्या, (स्त्री॰) परि+सृ+यत् । सर्वतो गमन । चारों ओर जाना । सेवा.

परिसंख्या, (स्त्री॰) परि+सम्+ख्या+अङ् । गिनती । राशि । जमा । नम्बर.

परिसंख्यात, (त्रि॰) परि+सम्+ख्या+क्त । गिनागया । समझागया.

परिस्पन्द, (पु॰) परि+स्पन्द्+घञ् । चारों ओर चलना । कांपना फूल और पत्तेआदिकी रचना । सजाई । चाकर । नौकर । परिवार.

परि(री)हार, (पु॰) परि+हृ+घञ् वा दीर्घः । त्याग देना । दोषाकरण । दोष दूर करना । अनादर (बेइज्जती) । छोड़ना । तोड़ना.

परि(री)हास, (पु॰) परि+हस्+घञ् वा दीर्घः । केलि । क्रीडा । मखौल । ठट्ठा.

परीक्षक, (त्रि॰) प्रमाणेन परीक्षते । परि+ईक्ष्+ण्वुल् । प्रमाण (सबूती) की रचनासे विषयको जाचनेहारा । परीक्षा करनेहारा । इम्तिहान करनेहारा । मुम्तहिन.

परीक्षण, (न॰) परि+ईक्ष्+ल्युट् । प्रमाणसे वस्तुका निरूपण करना । परखना.

परीक्षा, (स्त्री॰) परि+ईक्ष्+अ । दुष्टादुष्टत्वावलोकन । बुराई भलाई देखना । प्रमाणसे वस्तुको पहिचानना । "स्मृतिमें" बुरे भलेको दिखलानेहारा तुला (तकडी) आदिका प्रमाण (माप).

परीक्षित्, (पु॰) परि+ईक्ष्+क्विप् । परीक्षा करनेवाला । अभिमन्युका पुत्र और अर्जुनका पौत्र (पोता) एक राजा.

परीक्षित, (त्रि॰) परि+ईक्ष्+क्त । परीक्षा कियागया । इम्तिहान कियागया.

परुत्, (अव्य॰) पूर्वस्मिन् वर्षे+उत् परभावान्तादेशः । गतसम्वत् । पिछला वारिस । पिछला साल.

परुत्न, (त्रि॰) परुत्+त्न । गतवर्षभव पदार्थ । पिछले सालका । पिछले बरसका.

परुष, (न॰) पृ+उषन् । निठुरवचन । मेहराकठोर । बुरा बोलना । कठी । चित्रवर्ण (रंगबरंगी) । और कठोर (सख्त) (त्रि॰).

परुस्, (न॰) पृ+उसि । ग्रन्थि (गांठ) और पर्व (गिरह).

परेत, (त्रि॰) परा+इन्+क्त । मृत । मरगया । दूरहटगया.

परेतराज-ज्, (पु॰) ष॰ । राज् [illegible] राजते । राज+अन्+क्विप् वा । मरेहुओंका [illegible] मरेहुओंमें प्रकाशता है । यमराज । यम । [illegible]

परेद्युम्, (अव्य॰) परस्मिन्नहनि । पर+द्युस् । [illegible] दूसरा दिन.

परोक्ष, (अव्य॰) अक्ष्णः परम् । (अव्य॰) इन्द्रियोंसे परे । अप्रत्यक्ष । छिपाहुआ । जो इन्द्रियों [illegible] "परोक्षे लिट्" सि॰ कौ॰.

परोक्षवृत्ति, (त्रि॰) परोक्षा वृत्तिः यस्य । छिपा रहनेवाला.

पर्जन्य, (पु॰) पृषु सेचने-सींचना+अन्य [illegible] इन्द्र । मेघ । बादल । "यज्ञाद्भवति पर्जन्यः" गीता बादलका शब्द.

पर्ण, हरितभाव । हरा होना । चु॰ उभ॰ सक॰ सेट् पर्णयति-ते.

पर्ण, (न॰) पॄ+न । पर्ण्+अच् वा । पत्र (पत्ता) (पर) । पलाशका वृक्ष (पु॰) ताम्बूल (पान) । पत्तेवाला (त्रि॰).

पर्णनर, (पु॰) पर्णनिर्मितः नराकारः शवः । पत्तेका बना हुआ मनुष्यके स्वरूपका मुर्दा । पलाशके पत्तेका पुतला जिसे हिन्दुलोग पलाशका पता न मिलनेपर जलाते हैं [illegible] की पीढ़ी मल शवका प्रतिनिधि समझकर दाह [illegible]

पर्णलता, (स्त्री॰) पर्णानां लता । नागवल्ली । पान पानकी बेल.

पर्णशय्या, (स्त्री॰) पर्णानां शय्या । पत्तेका बिछौना (छेज).

पर्णशाला, (स्त्री॰) पर्णनिर्मिता शाला । पत्तों [illegible] निर्मित कुटीर । पत्तोंकी बनीहुई कुटिया.

पर्णास-सि, (पु॰) पर्णानि अस्यति । अस्+अच् [illegible] पत्ते फेंकती है । तुलसी.

पर्द, अपानवायुक्रिया । नीचेसे हवा छोड़ना । पाद मारना । भ्वा॰ आत्म॰ अक॰ सेट् । पर्दते । अपर्दिष्ट.

पर्वणी, (स्त्री॰) पर्व+करणे ल्युट् स्त्रियां ङीप् । पूर्णिमा दिन । नये चंद्रमाका दिन । उत्सवदिन । [illegible] (बीमारी) मरना.

पर्पट, (पु॰) पर्प+अटन् । पापड नामसे प्रसिद्ध [illegible] पतला पटकभेद.

पर्यङ्क, (पु॰) परिगतः अङ्कं । प्रा॰ । खट्वा । खाट । मञ्चा । पलंग । एक प्रकारका आसन जो [illegible] अभ्यास करते हैं । योगपट्ट । वीरासन । [illegible] पीठ जानु और स्तनोंको बांधना या कपड़ा [illegible]

पर्यटन, (न॰) परितः अटनं । चारोंओर घूमना । [illegible] घूमना सैर करना । पुन पुनर्भ्रमण.

ुयोग, (पु०) परितः अनुयोगः (प्रश्न.)। अच्छी-तरह पूछना। सवाल.

न्त, (पु०) परिगतः अन्तं (सीमां)। हदतक पहुंचा हुआ। गांव वा वनआदिकी हद सीमा.

न्तभू, (स्त्री०) पर्यन्तस्य भूः। ग्राम आदिकी हद सीमाका स्थान। परिसर। हदकी जगह.

य, (पु०) परितस्य शास्त्रलोकमर्यादां अयः। इण्+अच्। ऐसा आचार (चालचलन) कि जो शास्त्र और लोकव्यवहारसे बाहिर है। समयका खोना। कर्म-क्रमका भूलना.

पस्था, (स्त्री०) परि+अव+स्था+अङ्। विरोध। प्रतिपक्षता। खिलाफ ठहरना। (मिद्) हरएक बातमें होना। साबित करना.

स्त, (त्रि०) परि+अस्-फेंकना+क्त। क्षिप्त (फेंका हुआ)। पतित। गिराहुआ। हत (माराहुआ).

ाण, (न०) परि+पा+ल्युट्। पु०। अश्वरक्षा (घोड़ेकी काठी)। पायधन (जीन)। "इण्+ल्युट्"। "पर्ययणम्" यही अर्थ.

ाप्त, (न०) परि+आप्+भावे क्त। यथेष्ट (इच्छा-पूर्वक)। पूरा २। तृप्ति (रजना)। सामर्थ्य (ताकत)। निवारण (हटाना)। और योग्यता (लायकपन)

ाय, (पु०) परि+इण् घञ्। अनुक्रम (सिलसिला)। प्रकार (तरीका)। निर्माण (रचना)। एक अर्थको बोधन करनेहारा शब्द। एक जैसे अर्थवाला समान (शब्द)

ुदञ्चन, (न०) पर्युदस्यते (हटाइयते) कर्मणि ल्युट्। जो हटाया (दुबाया वा उतारा) जाय। ऋण। क़र्ज़.

ुदस्त, (त्रि०) परि+उद्+अस्+क्त। निषिद्ध। हटाया गया.

ुदास, (पु०) परि+उद्+अस्+घञ्। निषेध। एक प्रकारका हटाना.

ुषित, (त्रि०) परिवास (लगातार अधिवास) उ-षितः। वस्+क्त। अपने समयको बिताकर रहा। बासी। पिछला। यह पदार्थ [illegible] जिसे बने एक रात्रिसे ऊपर होगया.

ुषणा, (स्त्री०) परि० (सब तरफ़ इच्छा) [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पर्यन्त, (पु०) परि+अन्तः। पर्वत (पहाड़) [illegible] अन्त न था। जिसके जिसने हो। गिरि। भूधर। पहाड़। एक मुनि। एक मछली। वृक्ष। [illegible].

पर्यन्तीय (पु०) पर्वते भवः (छ)। एक प्रकारका [illegible]। पहाड़िया.

पर्वन्, (न०) पृ+वनिप्। उत्सव। [illegible] (गांठ)। पु-राणमें लिखाहुआ [illegible]। पौष (चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और सूर्यका संक्रमण) पर्व (ग्र-न्थोंमें).

पर्यवसान, (पु०) पर्यन्तः [illegible] [illegible]।

पर्यन्तसन्धि, (पु०) पर्वणः सन्धिः। [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]

पर्शुका, (स्त्री०) पर्शु [illegible] (स्वार्थे) [illegible] जो [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। पार्श्वकी हड्डी.

पर्द्, भ्वा०। [illegible] [illegible]। आ० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

परिसर्ग, (पु०) परितः सज्यते । सृज्+घञ् । चारों ओरसे लपेटना (परितो वेष्टन) । चारों ओर जाना (समन्तात् गमन).

परिसर्या, (स्त्रि०) परि+सृ+यत् । सर्वतो गमन । चारों ओर जाना । सेवा.

परिसंख्या, (स्त्री०) परि+सम्+ख्या+अङ् । गिनती । राशि । जमा । नम्बर.

परिसंख्यात, (त्रि०) परि+सम्+ख्या+क्त । गिनागया । समझागया.

परिस्पन्द, (पु०) परि+स्पन्द्+घञ् । चारों ओर चलना । कांपना फूल और पत्तेआदिकी रचना । सजाई । चाकर । नौकर । परिवार.

परि(री)हार, (पु०) परि+हृ+घञ् वा दीर्घः । त्याग देना । दोषाकरण । दोष दूर करना । अनादर (बेइज्जती) । छोड़ना । तोड़ना.

परि(री)हास, (पु०) परि+हस्+घञ् वा दीर्घः । केलि । क्रीड़ा । मखौल । ठट्ठा.

परीक्षक, (त्रि०) प्रमाणेन परीक्षते । परि+ईक्ष+ण्वुल् । प्रमाण (सबूती) की रचनासे विषयको जाचनेहारा । परीक्षा करनेहारा । इम्तिहान करनेहारा । मुम्तहिन.

परीक्षण, (न०) परि+ईक्ष्+ल्युट् । प्रमाणसे वस्तुका निरूपण करना । परखना.

परीक्षा, (स्त्री०) परि+ईक्ष्+अ । गुणागुणत्वावलोकन । बुराई भलाई देखना । प्रमाणसे वस्तुको पहिचानना । "स्मृतिमें" बुरे भलेको दिखलानेहारा तुला (तकडी) आदिका प्रमाण (माप).

परीक्षित्, (पु०) परि+ईक्ष्+क्विप् । परीक्षा करनेवाला । अभिमन्युका पुत्र और अर्जुनका पौत्र (पोता) एक राजा.

परीक्षित, (त्रि०) परि+ईक्ष्+क्त । परीक्षा कियागया । इम्तिहान कियागया.

परुत्, (अव्य०) पूर्वस्मिन् वर्षे+उत् परभावादेशः । गतवत्सर । पिछला बरस । पिछला साल.

परुत्न, (त्रि०) परुत्+त्न । गतवर्षभव पदार्थ । पिछले बरसका । पिछले बरसका.

परुष, (न०) पृ+उषन् । निठुरवचन । बेरनकाफल । कुराबेंतआ । फली । चितकबरी (रंगबरंगी) । और कठोर (सख्त) (त्रि०).

परुस्, (न०) पॄ+उसि । सन्धि (जोड़) और पर्व (गिरह).

परेत, (त्रि०) परा+इण्+क्त । मृत । मरगया । इन्तकालकर.

परेतराज-न्, (पु०) त० । टच् । परेतेषु राजते । राज+अन्+क्विप् वा । मरेहुओंके ऊपर मरेहुओंमें प्रकाशता है । यमराज । दम । ...

परेद्युस्, (अव्य०) परस्मिन्नहनि । ... दूसरा दिन.

परोक्ष, (अव्य०) अक्ष्णः परम् । (अव्य०) आँखोंसे परे । अप्रत्यक्ष । छिपाहुआ । जो ... "परोक्षे लिट्" सि० कौ०.

परोक्षवृत्ति, (त्रि०) परोक्षा वृत्तिः यस्य । ... रहनेवाला.

पर्जन्य, (पु०) पृषु सेचने-सींचना+अन्य ... इन्द्र । मेघ । बादल । "यथाकृषति पर्जन्य" ... बादलका शब्द.

पर्ण, हरितभाव । हरा होना । चु० उभ० सक० ... पर्णयति-ते.

पर्ण, (न०) पॄ+न । पर्ण्+अच् वा । पत्र (पत्ता) (पर) । पलाशका वृक्ष (पु०) ताम्बूल (पान) पत्तेवाला (त्रि०).

पर्णनर, (पु०) पर्णनिर्मितः नराकारः ... हुआ मनुष्यके स्वरूपका पुतला । पत्तोंके ... जिसे हिन्दुलोग परदेशका पता न मिलनेसे ... आदि पीछे मल दाघका प्रतिनिधि समझकर ...

पर्णलता, (स्त्री०) पर्णानां लता । नागवल्ली । पानकी बेल.

पर्णशय्या, (स्त्री०) पर्णानां शय्या । पत्तोंका बिछौना (छंग).

पर्णशाला, (स्त्री०) पर्णनिर्मिता शाला । ... निर्मित कुटीर । पत्तोंकी बनीहुई कुटिया.

पर्णास-सि, (पु०) पर्णानि अस्यति । अस्+अण् पत्ते फेंकती है । तुलसी.

पर्द, अपानवायुक्रिया । नीचेसे हवा छोड़ना । ... भ्वा० आत्म० अक० सेट् । पर्दते । अपर्दिष्ट.

पर्वणी, (स्त्री०) पर्व+करणे ल्युट् स्त्रियां ङीप् । पूर्णिमाका दिन । नये चंद्रमाका दिन । ... (बीमारी) मरना.

पर्पट, (पु०) पर्प+अटन् । पापड नामसे प्रसिद्ध ... पत्रक बरवमेद.

पर्यङ्क, (पु०) परिगतः अङ्कं । प्रा० । ... पलंग । पर्यंक । एक प्रकारका आसन ... अभ्यास करते हैं । योगपट्ट । बीटमन । ... पीठ जानु और जंघोंको बांधना वा कपड़ा ...

पर्यटन, (न०) परितः अटनं । चारोंओर घूमना । घूमना फेर करना । पुन पुनर्भ्रमण.

त, (पु०) परितः अनुयोगः (प्रश्न.)। अच्छी-
पूछना । सवाल.

(पु०) परिगतः अन्तं (सीमां)। हद्तक पहुं-
ना । गांव वा वनआदिकी शेष सीमा.

, (स्त्री०) पर्यन्तस्य भूः। ग्राम आदिकी शेष
का स्थान । परिसर । हद्दकी जगह.

(पु०) परित्यज्य शास्त्रलौकिकमर्यादां अयः।
अच् । ऐसा आचार (चालचलन) कि जो शास्त्र
लोकव्यवहारसे बाहिर है । समयका खोना । कर्त-
भूलना.

त, (स्त्री०) परि+अव+स्था+अङ् । विरोध ।
प्रघात । बरखिलाफ ठहरना । (णिच्) हरएक ज-
होना । साबित करना.

(त्रि०) परि+अस्-फैंकना+क्त । क्षिप्त (फेंका
) । पतित । गिराहुआ । हत (माराहुआ).

(न०) परि+या+ल्युट् । पृ० । अश्वसज्जा (घो-
काठी) । पल्ययन (जीन)। " इण्+ल्युट् " ।
प्रणम्" यही अर्थ.

(न०) परि+आप्+भावे क्त । यथेष्ट (इच्छा-
) । पूरा २ । तृप्ति (रजना) । सामर्थ्य (ताकत)।
ण (हटाना) । और योग्यता (लायकपन).

(पु०) परि+इण् घञ् । अनुक्रम (सिलसिला)।
(तरीका) । निर्माण (रचना) । सम अर्थको
करनेहारा शब्द । एक जैसे अर्थवाला लफज (शब्द).

न, (न०) पर्युदस्यते (उद्भियते) कर्मणि ल्युट् ।
टाया (चुकाया वा उतारा) जाय । ऋण । कर्ज.

,(त्रि०) परि+उद्+अस्+क्त । निवारित । हटाया

, (पु०) परि+उद्+अस्+घञ् । निवारण । एक
का हटाना.

, (त्रि०) परिक्रम्य (स्वकालं अतिक्रम्य) उ-
। वस्+क्त । अपने समयको बिताकर रहा । बासी ।
। वह पदार्थ कि जिसे बने एक पहिरसे ऊपर
ा.

, (स्त्री०) परितः (तर्कादिना एषणा (परीक्षा)।
दिद्वारा पदार्थकी परीक्षा । दलील वगैरहसे किसी
को पहिचानना । अन्वेषणा (तलाश).

गति आना) भ्वा० पर० सक० सेट् । पर्वति ।
ीत्,

र्ण-भारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पर्वति ।
ीत्,

मिन्, (पु०) पर्वणि गच्छति+गम्+णिनि । अमावा-
र शास्त्रनिषिद्ध दिनोंमें स्त्रीसंग करनेवाला.

पर्वत, (पु०) पर्व्+अतच् । पर्वाणि (भागाः) सन्ति
अस्य त वा । जिसके हिस्से हों । गिरि । भूधर । पहाड़ ।
एक मुनि । एक मच्छी । वृक्ष । एकप्रकारका साग.

पर्वतीय (पु०) पर्वते भवः (छ) । एक प्रकारकी जाति ।
पहाड़िआ.

पर्वन्, (न०) पृ+वनिप् । उत्सव । ग्रन्थि (गांठ) । पु-
स्तकमें विश्रामका स्थान । पांच (चतुर्दशी, अष्टमी,
अमावास्या, पूर्णिमा और सूर्यका संक्रमण) काल (ध-
र्मशास्त्रमें).

पर्वभाग, (पु०) पर्वण· भागः मणिबंधः । आंकडी.

पर्वसन्धि, (पु०) पर्वणः सन्धिः । पर्वका मेल । पूर्णि-
मा और अमावास्याका मेल । चंद्र और सूर्यग्रहणका काल.

पर्शुका, (स्त्री०) पर्शुः [illegible] कायति (प्रकाशते) कै+क ।
जो कुल्हाडीकी नाईं प्रकाशती है । पार्श्वस्थअस्थि ।
पसलीकी हड्डी.

पर्ष्, स्नेह । पियार करना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् ।
पर्षते । अपर्षिष्ट.

पर्षद्, (स्त्री०) पृष्+अदि । सभा । धर्मको उपदेश
करनेहारा पण्डितोंका समाज । " उसमें अस्ति अर्थमें
मतुप् " । सभासद (त्रि०).

पल्, गति जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पलति ।
अपालीत्

पल्, रक्षण (बचाना) । चुरा० उभ० सक० सेट् । पाल-
यति-ते.

पल, (न०) पल्+अच् । मांस । एक प्रकारके समयका
माप । चार कर्षभर वजन । घडीका साठवां हिस्सा.

पलगण्ड, (पु०) पलं (मांसं) गण्डति (गण्डमिव)
करोति । जो मांसको गालकी नाईं करता है । लेप करने-
हारा । राजा । कारीगर.

पलल, (न०) पल्+कलच् । मांस । पङ्क (कीचड़)।
तिलोंका चूरा । " जो मांसको ग्रहण करता है " ला+
क । राक्षस (पु०).

पलाण्डु, (पु०) पलं (मांसं) अण्डति । अण्ड्+उ ।
पियाज । मूलभेद । एक प्रकारकी जड़.

पलायन, (न०) परा+अय्+ल्युट् (रको ल होता है)।
डर आदिसे एक जगह छोड़कर दूसरी जगह जाना ।
भागना.

पलाल, (पु० न०) पल्+आलच् । घास । धान्य । धान्य-
काण्ड । शोभा । नाश । पोआल.

पलाश, (न०) पल् गति (चलना)+क । पलं (चलनं)
अश्नुते । अपने नालका दल । "नवपलाशपलाशवनम्"
इति माघः । हरा रंग (पु०).

र्ध, (पु०) अपरं अर्धं (पश्चात् आदेश) । शेषार्ध । तरीका शाखा । अपर भाग । दूसरा (पिछला) हिस्सह । "पश्चार्धेन प्रविष्ट" शाकुन्तल.

त्य, (त्रि०) पश्चात् भवः । त्यक् । शेषभव । पिछेको । प्रतीचि । अस्ताचलके पासकी दिशा (मगरब) स्त्री०)

श्चिमावस्था, (स्त्री०) पश्चिमा अवस्था । पिछली अवस्था (हालत) । मृत्युका समय । पश्चिम दिशावाली.

श्यतोहर, (पु०) पश्यन्तं अनादृत्य हरति । हृ+अच् । अलुक् ६ त० । जो देखते २ लेजाता है (चुराता है) । एक प्रकारका चोर । गांठ काटनेहारा । सुनार.

श्यन्ती, (स्त्री०) दृश्+शतृ+ङीप् । "परा" आदि चार प्रकारके शब्दोंमेंसे एक प्रकारकी (वाणी).

, बाध । रोकना और ग्रन्थ गांठना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । पसति-ते । अपसीत्-अपासीत् । अपसिष्ट.

स्त्यम् (न०) पस्+त्यक् घर । निवासस्थान-स्त्या (स्त्री०) घरके कामकाजकी देवता.

प, (पु०) श्मश्रुधारि म्लेच्छ जातिभेद । दाढ़ी रखनेहारी म्लेच्छोंकी जाति.

, पान । पीना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । पिबति । अपात् । णिच् । पाययति.

, रक्षण । बचाना । अदा० पर० सक० सेट् । पाति । अपासीत् । (णिच्) पालयति

शु-सु, (पु०) पश् परि वा कु० कु० । धूलि । खेतीके लिये देरमें रक्खा कियाहुआ सूखा गोमय (गोबर) । एक प्रकारका कपूर.

शुल, (पु०) पांशु (पापतुल्यं पापं) अस्य अस्ति । मट्टीके समान पापवाला । पापी । कुलटा (बदमाश औरत) (स्त्री०) । विभूतिवाला । महादेव (पु०) । धूरवाला (त्रि०)

क, (पु०) पच्+भावे घञ् । पचन । पकाना । परिणाम (नतीजह) । एक दैत्य । "आधारे घञ्" स्थाली (थाली) आदि "पिबति स्तनम्" पा+क बच्चा (त्रि०).

कज, (न०) पाकात्जायते । जन्+ड । जो पकानेसे उपजता है । काचलवण.

कल, (न०) पाकं लाति । ला+क । कुष्ठौषधि । आग और हवा । ज्वर.

कशाला, (स्त्री०) ६ त० । पाकस्थान । पकानेकी जगह । रसोईखाना "पाकगृह" । "पाकस्थान" यही अर्थ.

कशासन, (पु०) पाकं (तन्नामासुरं) शास्ति । शास्+ल्यु । जो पाकनामी दैत्यके ऊपर हुक्म चलाता है । इन्द्र । देवताओंका राजा.

पाकाभिमुख, (त्रि०) पाकस्य अभिमुखः । पकनेके सामने हुआ । पाकमया.

पाकिम, (त्रि०) पाकेन निर्वृत्तं+इमप् । पाकनिष्पन्न । पककर तयार हुआ.

पाक्ष, (त्रि०)-पाक्षी-(स्त्री०) पक्षे भवः+अण् । शुक्लपक्षवाला । पखवाड़ेवाला । पार्टीको बतानेवाला.

पाक्षपातिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) पक्षपातं करोति+ठक् +इक । पक्षपात (लिहाज) करनेवाला.

पाक्षिक, (त्रि०) पक्षतः प्राप्तः+ठक् । पक्षसे प्राप्तहुआ । एकतरफसे आया प्राप्ति और अप्राप्तिकी सम्भावनाका विषय । दोनोंमेंसे एक पक्ष । हाथ देनेहारा । नियम । पखवा । पखवाड़ेका.

पाखण्ड, (पु०) पाति इति पाः=वेदादिशास्त्रं-तत् खण्डयति । वेदकी आज्ञाको तोड़नेवाला पाखण्डी । मक्र करनेवाला.

पाङ्क्तेय, (त्रि०) पङ्क्तौ भवः वा पङ्क्तौ योग्यः । भोजन एक पंक्ति (कतार) में बैठनेलायक संबंध करनेयोग्य । मिलापके लायक.

पाचक, (पु०) पचति । पच्+ण्वुल् । वह्नि । आग । पकानेहारा सूद आदि । खायेगये अन्नको पचानेहारी औषधि (त्रि०) । पित्तधातु (न०).

पाचन, (न०) पच्+णिच्+ल्युट् । पित्त आदि दोषको नाश करनेहारा वैद्यकमें कहाहुआ एक प्रकारका क्वाथ (काढा) । और प्रायश्चित्त (पछतावा) । "पच्+णिच् कर्तरि ल्यु" । वह्नि (आग) । अम्ल (खटरस) । और लाल एरण्ड.

पाञ्चजन्य, (पु०) पञ्चजने (दैत्यभेदे) भवः+ञ्य । पञ्चजन नामी दैत्यमें हुआ । विष्णुका शंख । "पाञ्चजन्यं हृषीकेशः" गीता.

पाञ्चनद, (त्रि०) पञ्चनदीभिः निर्वृत्तः । पांचनदियोंसे बना (प्रसिद्धहुआ) । पंजाबदेः (पु०) पंजाबका राजा । (बहुवचन) पंजाबके वासी (लोग).

पाञ्चभौतिक, (त्रि०) पञ्चभिः भूतैः निर्वृत्त+ठक्+इक । पृथिव्यादि पांच भूतोंसे सिद्धहुआ.

पाञ्चाल, (त्रि०) पञ्चालदेशे भवः+अण् । पञ्चाल देशमें हुआ । स्त्रियां ङीप् । पाञ्चाली.

पाटच्चर, (पु०) पटचर एव+स्वार्थे अण् । चौर । चोर.

पाटल, (पु०) पाटयति । पट्+णिच्+कलच् । श्वेतरक्तवर्ण । चिट्टा और लाल रंग । गुलाबी । उसवाला (त्रि०) । पाटलीपुष्प । गुलाबका फूल.

पाटलिपुत्र, (न०) पटना नामसे प्रसिद्ध एक नगर.

पाटव, (न०) पटोर्भावः+अण् । पटुता । क्रियायोग्यता । होशियारी । आरोग्य । तन्दुरुस्ती.

पाठ, (पु०) पठ+घञ् । अक्षरोंका उच्चारण करना । और गुरुके मुखसे सुन कर बोलना । पढना । सबका धन यज्ञ.

पाठक, (पु०) पठति-पाठयति वा+ण्वुल् । पढनेहारा । पढानेहारा.

पाठशाला, (स्त्री०) ६ त० । पढने पढानेका स्थान । पाठमन्दिर । स्कूल.

पाठिन्, (पु०) पठ+इनि । चित्रवृक्ष । पाठक (पढानेहारा) (त्रि०).

पाठीन, (पु०) पाठिं (पृष्ठं) नमयति । नम्+ड दीर्घः । जो पीठको झुका दे । गुग्गुलका वृक्ष । मत्स्यभेद । एक मछली । "पठ+ईनण्" पाठक (पढानेहारा) (त्रि०).

पाणि, (पु०) पण्+इण् -आयाभावः । कर (हाथ) पुलिक वृक्ष.

पाणिगृहीती, (स्त्री०) पाणिः गृहीतो यस्याः+ङीप् । हाथ पकडा है जिसका । भार्या । औरत । स्त्री.

पाणिग्रहण, (न०) पाणिः गृह्यते अत्र । ग्रह्+आधारे ल्युट् । हाथ पकडा जाता है जिसमें । विवाह । शादी.

पाणिघ, (पु०) पाणिं हन्ति । पाणिना वा हन्ति (वाद्यति) हन्+टक् कुत्वम् । हाथ बजानेहारा । और हाथसे मृदङ्ग आदि बाजा बजानेहारा । पाणिताडक । और मृदङ्गादिवादक.

पाणितलम्, (न०) पाणेः तलम् । हाथकी तली.

पाणिधर्म, (पु०) पाणेः=पाणिग्रहणस्य धर्मः । विवाहका यथार्थलक्षण.

पाणिनि, (पु०) पणनं (पणः) तत्र अस्त्यर्थे इनि । तस्यापत्यं+अण् तस्य युवापत्य+इञ् । अष्टाध्यायीरूप व्याकरणके बनानेहारा दाक्षीका पुत्र । शालातुरीय नामी गांवमें उत्पन्न हुआ एक मुनि.

पाणिनीय, (त्रि०) पाणिनिना प्रोक्तं, तस्येदं वा+छ । पाणिनि मुनिसे बनायागया अष्टाध्यायीरूप व्याकरण.

पाणिपल्लव, (पु०) पाणिः पल्लव इव+उप स० । पत्तेके समान (नरम) हाथ उंगलियें.

पाणिपात्र, (त्रि०) पाणिः एव पात्रम् । हाथही पात्र है । हाथसे पीनेवाला.

पाणिसर्गा, (स्त्री०) पाणिना सृज्यते अर्गा सृज्+अच् । जो हाथसे बनाई जाती है । रस्सी । रस्सी.

पाण्डर, (पु०) पडि+अरु दीर्घश्च । मरुवक वृक्ष । श्वेत वर्ण (चिट्टा रंग) । तद्वान् (त्रि०) । कुन्दका फूल और गेरिक (गेरु) (न०).

पाण्डव, (पु०) पाण्डोः अपत्यं+अण् । पाण्डुकी सन्तान । पाण्डुके एक राजाके बेटोंमें देवता युधिष्ठिर आदि.

पाण्डित्यम् (न०) पण्डितस्य भावः ष्यञ् । पण्डिताई । चतुराई । बुद्धिमत्ता.

पाण्डु, (पु०) पडि+कु-नि० दीर्घः । ए… राजा । चिट्टारंग । श्वेतवर्णवाला एक … एक रोग । और पटोलका वृक्ष (पु०).

पाण्डुपुत्र, (पु०) पाण्डोः पुत्रः । पाण्डुके … एक.

पाण्डुर, (पु०) पाण्डुः वर्णः अस्य अस्ति-र । … श्रित वर्ण । चिट्टा पीला मिलहुआ … (त्रि०) कामलेका रोग (न०).

पाण्ड्या, (पु०) बहुवचन एक नगरका … निवासी ।-ड्यः (पु०) उसी देशका राज.

पात, (पु०) पत्+घञ् । पतन । गिरना … रक्षित । बचाया हुआ । (त्रि०) … (ज्योतिषमें).

पातक, (न०) पातयति (अधोगमयति) … ण्वुल् । नीचे ले जाता है । नीचे गिरानेवाला … पापजनक । प्राणिओंका बध करना.

पातञ्जल, (न०) पतञ्जलिना प्रोक्तम्+अण् । … रचेहुए सूत्रोंपर व्याख्यान । "अथ शब्द… इत्यादि महाभाष्यम् । "अथ योग… इत्यादि योगशास्त्रम्.

पातन, (त्रि०) पत्+णिच्+ल्यु+ल्युट् वा । … काटनेवाला ।-नं (न०) गिराना । फेंकना । …

पाताल, (न०) पत्+आलञ् । पृथिवीके नीचे … लग्नसे ४ थी राशी.

पातालगङ्गा, (स्त्री०) पातालस्य गङ्गा । …

पातालनिलयः, निवासः-वासिन् (पु०) … लयः=निवासस्थानं यस्य । पातालके रहनेवाले …

पातित, (त्रि०) पत्+णिच्+क्त । गिरा हुआ । … (ऊपरसे).

पातुक, (त्रि०) पत्+उकञ् । पतनशील । गिरने…

पात्र, (न०-स्त्री०) पाति (रक्षति आधेयं) … (बीचमें धरेहुए चीज) को बचाता है … अनेन वा पा+ष्ट्रन् स्त्रियां ङीप्" । जल आदि … भोजनके योग्य बर्तन । जिस आदिका … भाजन । दक्षन्न यज्ञा आदि । दोनों किनारे … बीचमें जल टिकनेका स्थान । … (न०).

पात्रीय, (त्रि०) पात्रं (यज्ञपात्रं) अर्हति … द्रव्य । "पात्रे छ" योग्य (लायक) … मिश्रम्" इति स्मृतिः.

पात्रेसमित, (त्रि०) पात्रे (भोजन… एव) समितः (मयूर.) । भोजनका … ही पहुंचा । भोजनके बिना न पहुंचनेहारा … चतुर नहीं.

(न०) पीनेसे अदः (प) । जिसे पीजाय । (पानी) । "पाति (रक्षति) (प)" जो ता है । धाति (प्राण) और मूर्ख.

ह, (न०) पाति (रक्षति) । पीयने का । पानीना । बचाना । अमृत् (पुर) । जल । पानी । अन्न (इन-खानेसे शरीरकी रक्षा होती है).

प, (त्रि०) पथि [illegible] । [illegible] लायक [illegible] । [illegible] वाला । पथि [illegible].

(पु०) पद्+णिच्+क्विप् । चरण । पाद । पैर । पाँव.

(पु०) पदने (गच्छने) [illegible] पत्र । जिसे [illegible] हैं । चरण । पाँव । पशुपांत । पौधा [illegible] । [illegible] मूल.

पादक, (पु०) पादस्य कटक इव । पाँवका गहनों पहना है । नूपुर । पैजेब । झांझर.

पादकृच्छ्र, (पु०) पादे हनः (पशुयां इव) [illegible] । [illegible] । एक अगमें आया हुआ [illegible] (भं) । एक [illegible] । एक दिनका उपवास । एक दिनका [illegible].

पादग्रहण, (न०) पादयोः ग्रहण यत्र । जिसमें पाँव-को पकड़ते हैं । पाँव पकड़कर [illegible] प्रणाम । "आयुष्य पादग्रहणं प्रणतं वाभिवादनं" मनु..

पादचारिन्, (पु०) पादेन चरति । पाद+णिनि । १ न० । पाँवसे चलता है । पदाति । पैदल । पांवसे चलनेवाला (त्रि०)

पादत्राण, (न०) पादौ त्रायते जैन । [illegible] जो पाँवको बचाता है । पादुका । जूती । [illegible]

पादप, (पु०) पादैः (मूलैः) पिबति (पिबतं जलं) पा+क । जो पाँवसे [illegible] पानीको जड़से पीता है । वृक्ष (दरख्त) । पादं पाति (रक्षति) पा+क । पाँवको बचाता है । पादपीठ । पाँवका पीढ़ा । [illegible] । [illegible] आसन.

पादमूल, (न०) ६ त० । [illegible] । [illegible] हिस्सा । पाँवकी [illegible].

पादरज्जु, (पु०) पादस्य रज्जुः । पाँवकी रस्सी । [illegible] । हथी । [illegible].

पादविक, (त्रि०) पदवीं धावति+ठञ् । [illegible] है । पथिक । [illegible] । [illegible] । [illegible] जो [illegible] हैं । पैदल.

पादशस्, (अ०) पादस्य [illegible] । पैदल [illegible] । [illegible] (त्रि०)

पादशाद, (पु०) पादस्य [illegible] । [illegible] (त्रि०)

पादाङ्गद, (न०) पादस्य अङ्गदं इव । [illegible] है । नूपुर । पैजेब । झांझर.

पादाङ्गुष्ठ, (पु०) पादस्य अङ्गुष्ठः । पाँवका अंगूठा.

पादात, (न०) पदातीनां समूहः+अण् । [illegible] । [illegible] । "[illegible] (पदाति) [illegible]" । पाँवसे चलती है । पैदल चलने-वाली सेना । "पदाति" "पादातिक".

पादावन्दन, (न०) पादयोः वन्दनं-वंद्+ल्युट् । [illegible] । पाँवका वंदना करना.

पादाभ्यङ्ग, (न०) (पादयोः [illegible]) । पाँवका [illegible] (मर्दन)

पादावेष्टनतत्र, (न० क्री०) पादयोः वेष्टनम् । पाँव-की सेवा । [illegible].

पादुका, (स्त्री०) पद्+णिच्+उ [illegible] । [illegible] । [illegible] । जूती । [illegible].

पादोदक, (न०) पादस्य उदकम् । पाँवका जल (पानी) । [illegible] । [illegible] पाँवका जल ([illegible] है)

पाद्य, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] पाँव धोनेके लिये [illegible] है । [illegible]

पान, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०) [illegible] । [illegible] । "[illegible]" । "[illegible]" पीनेका पात्र (बर्तन)

पानगोष्ठी, (स्त्री०) [illegible] (पान) । (सभा) पीनेके लिये [illegible] । [illegible]

पानभाजन, (न०) पीनेका [illegible] । [illegible] । [illegible]

पानीय, (न०) पीने [illegible] । [illegible] । जल (पानी) [illegible] (त्रि०)

पानीयशालिका, (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

पान्थ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

पाप, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] है । [illegible] (आदि) । [illegible] । [illegible]

पापग्रह, (पु०) [illegible] । [illegible]

पापघ्न, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

पापघ्न, (पु०) पापं हन्ति+टक्। जो पापको नाश करता है। तिल। इसके दानसे पाप दूर होता है। पापनाशक (त्रि०).

पापपुरुष, (पु०) पापात्मकः पुरुषः (पुरुषाकारः)। पुरुषकी शकलमें पापका स्वरूप। गुनहगार आदमी। तन्त्रमें कहाहुआ बाई कुक्षि (बगली) में पापस्वरूप ध्यान करनेलायक मनुष्यके आकारका पदार्थ.

पापसङ्कल्प, (त्रि०) पापः सङ्कल्पः यस्य। बुरे संकल्प (इरादे) वाला.

पापहन्, (त्रि०) (पापं हन्ति) पाप (बुराई) को मारने (नाश करने) वाला.

पापात्मन्, (पु०) पापयुक्तः आत्मा (अन्तःकरणं) यस्य। जिसका मन पापसे भरा है। पापात्मिन (पापी) जीव.

पापाशय-चेतस्, (न०) पापः आशयः यस्य। जिसका हृदय पापसे भराहो। बुरे चित्तवाला.

पापिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन पापः+इष्ठन्। बहुत पापी (गुनहगार).

पाप्मन्, (पु०) आप्नोति (प्राप्नोति)। आप+मनिन्। नि०। जो पैठ जाता है। पाप। गुनाह.

पामन्, (न०) पा+मनिन्। [illegible]। [illegible] (शुष्क)-की [illegible]। "[illegible]" इसी अर्थमें होता है.

पामघ्न, (पु०) पाम हन्ति। हन्+टक्। गंधक (जो [illegible] दूर करता है).

पामन, (त्रि०) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]के रोग-[illegible]। "[illegible]".

पामर, (त्रि०) [illegible]। पाः (शरीरधर्मः) [illegible] जिसने [illegible]। [illegible]। जो तीन [illegible] धर्मोको मार डालता है। [illegible]। मूर्ख। नीच। बेवकूफ.

पायस, (पु०) [illegible] (दूध) [illegible]+अण्। दूधमें [illegible] [illegible]। [illegible]। इससे अच्छा अन्न (खाना)। [illegible]। [illegible] (त्रि०).

पायु, (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible].

पार, ([illegible])। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible].

पार, (न०) [illegible]। [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। दूसरा [illegible]। "[illegible]"। [illegible]। [illegible]। [illegible].

पारक्य, (त्रि०) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] दूसरे लोकके लिये हितकारी हैं। [illegible] [illegible].

पारग, (त्रि०) [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। दूसरे किनारे पर [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible].

पारगामिन्, (त्रि०) पारं गच्छति [illegible] जानेवाला। दूसरे किनारे पार जानेवाला.

पारण, (न०) पार+ल्युट्। व्रतान्तभोजन। भोजन करना। "युच्" यही अर्थ (स्त्री०).

पारतन्त्र्य, (पु०) परतन्त्रस्य भावः ष्यञ्। [illegible] दूसरेके काबूमें रहना। ताबेदारी.

पारत्रिक, (त्रि०) परत्र भवं, हितं वा ठञ्। [illegible] होनेहारा। परलोकके लिये हितकारी। [illegible] परलोकमें भला करेगा। और परलोक [illegible] में होनेहारा.

पारद, (त), (पु०) पृ+णिच्+तन्। [illegible]। [illegible] [illegible] होता है। धातुविशेष। पारा। "पारं [illegible] दा+क" पारदेनेहारा (त्रि०).

पारदार्य, (पु०) परस्य दारा एव दाराः यस्य। [illegible] ष्यञ्। दूसरेकी स्त्रीको ही अपनी स्त्री [illegible]। [illegible] गमन। दूसरेकी स्त्रीसे गमन (भोग) [illegible]। "[illegible] पारसितं" स्मृतिः.

पारदृश्वन्, (त्रि०) पारं दृश्वन्-दृश्+क्वनिप्। [illegible] देखनेवाला। पण्डित। ज्ञाता। चतुर। [illegible] वस्तुको पूरे तौरपर देखलिया.

पारदेशिक, (त्रि०) -की (स्त्री०) (परदेशे [illegible] ठक्) दूसरे देशमें होनेवाला। दूसरे देशका। [illegible]

पारमार्थिक, (त्रि०) परमार्थ (परलोक [illegible]) [illegible]+ठक्। जो दूसरे लोकके धर्मके लिये है। [illegible] असली वस्तुका [illegible] [illegible] [illegible] असली.

पारम्पर्य, (न०) परम्परा+स्वार्थे ष्यञ्। [illegible] लगातार चला आना। एक पुरुषके पीछे दूसरे [illegible] आरहा.

पारम्पर्योपदेश, (पु०) पारम्पर्येण ([illegible]) उपदेशः [illegible] [illegible])। [illegible] [illegible] [illegible] चला आता है परन्तु [illegible] [illegible]। जैसे इस "[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] उपदेश ही [illegible] है परन्तु [illegible] [illegible] नहिं.

पारलौकिक, (त्रि०) परलोकाय हितम् ठक्। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दूसरे [illegible] [illegible] [illegible] दूसरे लोकका.

पारवश्य, (न०) [illegible] [illegible]। [illegible] ([illegible]) [illegible]। [illegible]। [illegible]

पारशव, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] (त्रि०).

ध्यघ, (पु०) परभधः प्रहरणं अस्य+अण् । कुल्हाडेसे द्ध करनेहारा+ठक् । "परश्वधिक" यही अर्थ है.

सीक, (पु०) एक देश । उस देशके वासी । फारसके । ० ब० । उस देशका घोडा (पु०) । अरबी घोडा.

स्त्रैणेय, (त्रि०) परस्त्रिया अपत्यं+ढक् इनङादेशः । जारज । पराई स्त्रीका पुत्र । परस्त्रीसुत.

पत, (पु०) परात् अपि आपतति प्रेम्णा । आ+त्+अच् । दूरजाकर भी चला आता है (पियारसे) । पारावत । कबूतर.

पा(वा)र, (न०) पारं अवारं च अस्ति अस्य+अच् । जिसका पार अवार दोनों हों । समुद्र । समुंदर । दोनों किनारे । "पारावार".

रायण, (न०) पारं (समाप्तिं) अयते अनेन+अय्+ल्युट् । जिसके द्वारा एक कामको खतम कर्ता है । (पार पहुंचता है) । साकल्य (पूरापन) । ग्रन्थ आदिके आदिसे अन्ततक । किसी ग्रन्थका पूरा २ पाठ करना.

रावारीण, (त्रि०) पारं अवारं च गच्छति+खञ् । तटद्वयगामी । दोनों किनारोंपर जानेहारा । समुद्रके पार जानेहारा । "पारापारीण" यही अर्थ.

राशर, (पु०) पराशरस्य अपत्यं+अण् । पराशरका बेटा । वेदव्यास । अको इ होनेसे "पाराशरि" यही अर्थ.

राशरिन्, (पु०) पराशरेण प्रोक्तं (भिक्षुसूत्रं) अध्ये-यतया अस्ति अस्य+इनि । जो पराशरसे रचेहुए भिक्षुसू-त्रको पढता रहता है । भिक्षुक । सब कर्मोको त्यागने-हारा । संन्यासी.

राशर्य, (पु०) पराशरस्य अपत्यं+यञ् । पराशरका बेटा । वेदव्यास.

रिकाङ्क्षिन्, (पु०) पारं अस्य अस्ति+इनि । पारि (ब्रह्म-ज्ञानं) तत् काङ्क्षति+णिनि । जो ब्रह्मके ज्ञानको चाहता है । मौन (चुप रहना) व्रतको धारण करनेहारा । वाचं-यम (वाणीको काबू रखनेहारा) एकप्रकारका मुनि.

रिजात, (पु०) पारं अस्य अस्ति पारी (समुद्रः) तत्र जात अन्+क्त । समुद्रमें उपजा । देवताओंका एक वृक्ष.

रिणाय्य, (त्रि०) परिणयकाले लभ्यं+ण्यत् । (स्त्री-धन) जो विवाहके समय मिलाहो.

रिपन्थिक, (पु०) परिपन्थं दृश्यति+ठक् । पन्थका आदेश । जो राहमें रोकलेता है । चोर.

रिपा(या)त्र, (पु०) विन्ध्य पर्वतके पश्चिमकी ओर मालवदेशकी सीमा (हद) का पर्वत (पहाड).

रिपार्श्विक, (पु०) परिपार्श्वे वर्तते । तत्र चरति वा+ठक् । जो पासको घूमता या अपनाय विचरता है । एकपासके पास विचरनेहारा भट.

पारिप्लव, (न०) परि+प्लु+अच् । स्वार्थे अण् । चपल । आकुल.

पारिभाव्य, (न०) परिभावाय (रोगप्रशमनाय) हित+ष्यञ् । जो रोगकी शान्तिके लिये हितकारी है । कुट औषधि । परिभुव (प्रतिभुवो भावः)+ष्यञ् । प्रति-भूभवन । जामिन होना । "साक्षित्वं प्रातिभाव्यं च" इति स्मृतिः.

पारिभाषिक, (त्रि०) परिभाषायां भव+ठक्+इक् । सामान्य रूपमें होनेवाला । साधारण नियम । सबसे स्वीकार किया गया (माना हुआ) सांकेतिक । संकेतसे जाना गया शब्द आदि । सबकी बोलीमें आया हुआ शब्द.

पारिमाण्डल्य, (न०) परितो मण्डलं यस्य । सर्वत्र विद्यमानत्वात् परिमण्डलः (परमाणुः) तस्य भाव+ष्यञ् । सब जगह विद्यमान होना । न्यायमें कहा हुआ कारणपनेसे रहित परमाणुका परिमाण (मान) । अणु.

पारिषद, (त्रि०) परिषदि भवः । परिषद्+अण् । सभामें हुआ या रहता है । सभ्य । साम्य । सभामें बैठनेहारा । सभासद्का सेवक.

पारिहार्य, (पु०) परिह्रियते असौ । परि+हृ+कर्मणि घञ् । स्वार्थे ष्यञ् । वलय । कडा । कडा.

पारीण, (त्रि०) पारं गच्छति । पार+खञ् । पारग । पार जाता है । कामको समाप्त करनेहारा.

पार्थ, (पु०) पृथायाः अपत्यं+अण् । पृथाका पुत्र । युधि-ष्ठिर आदि । अर्जुनवृक्ष । पृथिवीका पति । राजा.

पार्थिव, (पु०) पृथिव्या ईश्वर+अण् । पृथिवीका मालिक । राजा । "पृथिव्या विकार, इदं वा+अण्" । पृथिवीसे होनेहारा (त्रि०) ।-वी । सीता (स्त्री०).

पार्वण, (त्रि०) पर्वणि (पूर्णिमादौ) भव+अण् । पूर्णिमा आदिमें होनेहारा । "पर्वणि (अमावस्यादौ) विहितं+अण्" । इसलिये करनेका एक श्राद्ध (न०) । पूर्णिमा+अण् । एकप्रकारका यज्ञ (पु०).

पार्वत, (पु०) पर्वते भव+अण् । पहाडमें हुआ । पर्वतका (त्रि०).

पार्वतीनन्दन, (पु०) ६ त० । पार्वतीका पुत्र । स्कन्द । कार्तिकेय

पार्वतीय, (त्रि०) पर्वते भव+ईय । पर्वत (पहाड) में निवास करनेवाला । (बहुवचन) । एक प्रकारकी पहाडी जाति

पार्वतेय, (त्रि०) पर्वते भव+ढक्+एय । पर्वत (पहाड) में उत्पन्न हुआ.

पार्श्व, (पु० न०) स्पृश्+श्वण् पृ० । कक्षाके नीचे । कांख (बगल) के नीचेका हिस्सा । समीप (पास) । चक्र (पहिया).

पार्श्वग, (पु०) पार्श्वे गच्छति+गम्+ड । पास जानेवाला । सेवक । परिचारक.

पार्श्वनाथ, (पु०) पार्श्वः नाथः । पास रहनेवाला स्वामी । जैनोंकी देवता.

पार्श्ववर्तिन्, (त्रि०) पार्श्वे वर्तते । पास रहनेवाला । परिचारक । सेवक.

पार्श्वशय, (त्रि०) पार्श्वे शेते+शय-स० शी+अ । पास सोने (शयन) वाला.

पार्श्वस्थ, (त्रि०) पार्श्वे तिष्ठति+स्था+क+अ । पास रहनेवाला । सहचर । साथी.

पार्श्वस्थित, (त्रि०) पार्श्वे स्थितः+स्था+क्त । पास ठहरा हुआ । अनुचर.

पार्श्विक, (त्रि०)-की (स्त्री०) पार्श्वभव+ठक्+इक । पास हुआ । निकटवर्ती । पास रहनेवाला । कः-(पु०) सहचर । साथी । जादूगार । चोर.

पार्षद, (पु०) पर्षदि भवः, तत्र स्थितो वा+अण् । सभास्थ । सभामें बैठाहुआ । मेम्बर । सभ्य । मीरमजलिस.

पार्ष्णि, (पु० स्त्री०) पृष्+नि । नि० । वृद्धिः । गुल्फाधोभाग । गिट्टेके नीचेका हिस्सह । एडी । अडी । सेनाकी पीठ.

पार्ष्णिग्राह, (पु०) पार्ष्णिं (पृष्ठदं) गृह्णाति+अण् । पीठ । पीछे आज्ञा देनेहारा । पीछे रहनेहारा । शत्रु । (दुश्मन).

पार्ष्णिघात, (पु०) पार्ष्णौ घातः । पावकी चोट । लत्ता । लात मारना.

पाल, रक्षण (बचाना) चु० उभ० सक० सेट् । पालयति-ते.

पाल, (त्रि०) पालयति (पाल्+अच्) । जो बचाता है । रक्षक.

पालक, (पु०) पालयति । पाल्+ण्वुल् । अश्वरक्षक । घोडेका रखवारा और चित्रकवृक्ष । बचानेहारा (त्रि०).

पालकाप्य, (पु०) एक ऋषिका नाम । करेणुका पुत्र । जिसने पहिले पहिले गजविद्या (हाथीके वशकरनेकी) सिखाई.

पालङ्क, (पु०) पाल्+क्विप्-पाला-अङ्कते । अङ्क+घन् । पलग । एकप्रकारका साग । कुन्दुरुक (स्त्री).

पालन, (त्रि०) पाल्+भावे ल्युट्+ल्युट्वा+अन । रक्षा करनेवाला । बचानेवाला ।-नं (न०) रक्षा करना । बचाना । बचाव.

पालनीय, (त्रि०) पाल्+अनीय । रक्षा करनेके योग्य । बचानेलायक । पालनेलायक । ख्याल करनेलायक (प्रतिज्ञादि).

पालिशिषू, (पु०) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible].

पाल्वल, (न०) पल्वले (पर्दे) भव [illegible] । "[illegible]" इति [illegible] सम्बन्धी (त्रि०)

पालित, (त्रि०) पाल्+क्त । [illegible] पूरा किया गया.

पावक, (पु०) पुनाति । पू+ण्वुल् । [illegible] वह्नि (आग) । चित्रकाग्नि । चित्रकी [illegible]

पावकात्मज, (पु०) पावकस्य आत्मजः । [illegible] कार्त्तिकेय । सुदर्शन ऋषिका नाम.

पावकि, (पु०) पावक+अपत्यार्थे इञ् । [illegible] कार्त्तिकेय (वह शिवजीके अग्निमें रहके [illegible] उपजा) पुराणमें.

पावन, (पु०) पावयति । पू+णिच्+ल्यु । [illegible] है । अग्नि (आग) । व्यासदेव । और [illegible] (गोहा) । प्रायश्चित । [illegible] (न०) "पाव्यते अनया+ल्युट् [illegible]" । [illegible] क्रियाजय । गङ्गा । हरीतकी । [illegible] (स्त्री० पतिव्रताको सिद्ध करनेहारा (त्रि०)

पावनध्वनि, (पु०) पावनः ध्वनिः । [illegible] शङ्ख । (जिसका आवाज पावन है).

पाश, (पु०) पश्यते (बध्यते) अनेन । [illegible] पशु और पक्षिओंको बांधनेहारा एक प्रकार[illegible] फाँद । फंदा । हरएक प्रकारकी रस्सी । [illegible] परे यह शब्द शोभाके लिये लगाया जाता है [illegible] पाशः" (अच्छे कानवाला)

पाशक, (पु०) पश+ण्वुल् । [illegible] खेलका साधन । गुटिका आदि । [illegible] । [illegible].

पाशपाणि, (पु०) पाशः पाणौ यस्य (जिन[illegible] फांद है) । वरुण । "पाशहस्त" इसी अर्थमें [illegible]

पाशव, (त्रि०)-वी (स्त्री०) पशो. इदं+अण् । [illegible] पशुके साथ सबंध रखनेवाला । पशुसे [illegible] वाला ।-वं (न०) पशुओंका समूह ([illegible]).

पाशिन्, (पु०) पाशः अस्ति अस्य+इनि । [illegible] वरुणदेवताका नाम । यमराज । फंदक । [illegible]

पाशुपत, (पु०) पशुपतेः इदं । स. तस्य देवता [illegible] पशुपतिका । वा पशुपति जिसका देवता है । [illegible] एक शस्त्र । औजार (न०) महादेवका अस्त्र ([illegible]

पाशुपतास्त्रम्, (न०) पशुपतेः इदं अस्त्र । [illegible] देवका शस्त्र जो अर्जुनने लाभ किया था.

पाशुपाल्य, (न०) पशून् पालयति+अण् [illegible] धम् । पशुओंका पालना । वैश्यधर्म । वैश्य[illegible]

…श्च, (त्रि०) पश्चाद् भवः। पश्चिम देशभव। प…म देशका.

…र, (स्त्री०) पाशानां समूहः+मतु। पाशोंका समूह। …तोंसे फंदे.

…(स)ण्ड, (पु०) पाति (रक्षति दुरितेभ्य) । पा+…र। पाः (वेदधर्म) तं स(ष)ण्डयति (निष्फ-करोति)। जो बुराइओं (पापों) से बचाता है ऐसा न है वेदका धर्म उसे जो तोड़ता है वा फलरहित …र्ता है। वेदाचारत्यागी। वेदके आचारको छोड़नेवाला.

…पेडन्, (पु०) पा (वेदधर्म) खण्डयति। खण्ड+…ण्+इनि। जो वेदके धर्मको तोड़ता है। पाखण्ड.

…पा, (पु०) पिनष्टि। पिष्-ऊगुणैन। पृग (१ दलना। पीसना) आनच्। पृ०। जो पीस डालता है। प्रस्तर। …त्थर.

…पाहारण, (पु०) पापाणं दारयति। दरयति। …काल। टंक नामी औज़ार (छेनी-पत्थरको काटने-…ति)

…गति (जाना)। तु० गच्छ० पर० अनिद्। पियति.

…क, (पु०) अपि+कायति। कै+क। अपिके "अ"-का …लोप होता है। मीठा शब्द करता है। कोकिल। कोइल.

…पिकबन्धु, (पु०) १ त०। पिक (कोइल) का बंधु। …आम्रका वृक्ष.

…ल, (पु०) पिजि-वर्ण (रंगना)+अच्। मूसक। मूसा। …ऊँचकी काट (शिला) के समान पीला रंग। तद्वाला (त्रि०) हरिताल (न०)

…जट, (पु०) पिङ्गा जटा यस्य-ब० स०। पीली जटावाला। महादेव.

…ङ्गल, (पु०) पिङ्गं करोति। कर+ल। पिजि+कलच् …वा कुलच्। एक नाग। रुद्र। सूर्यके पास रहनेवाला। बानर। एक निधि (खजाना)। एक मुनि। अग्नि। …मद। छन्द शास्त्री छन्दोग्रन्थको बनानेवाला शास्त्रके …कर्त्ता एक मुनि। एक नाड़ी। राजनीति। और एक …वेश्या (स्त्री०).

…ङ्गाक्ष, (पु०) पिङ्गे अक्षिणी यस्य+षच् समा०। …जिसकी पीली आँखे हैं। शिवजी। (इसकी तीसरी आँख आगका स्वरूप है)। "पिङ्गेक्ष" यही अर्थ है

…पिचण्ड, (पु०) अपि+चम्+ड। "अपि" के "अ" का लोप होता है। उदर। पेट। पशुका अवयव (अंग) …इ० "इ" भी होता है। "पिचिण्ड" यही अर्थ.

पिचु, (पु०) पच्+उ इ०। कर्पास (कपास। रुई)। …रुई। एकप्रकारका कोढ़ (कुष्ठ).

पिच्, पेर (काटना)। चुरा० उभ० सक० सेट्। पिच्-यति वे। अपिपिचत्.

पिचट, (न०) पिच्+अटन्। रीगा। रांगा। …रोगविशेष। आँखकी बीमारी.

पिच्छ, बाध (रोकना), मोड़ना। तु० प० सक० सेट् पिच्छति। अपिच्छीत्.

पिच्छ, (न०) पिच्छ+अच्। मयूरपुच्छ। मोरकी पूंछ और चूड़ा (चोटी)। लांगूल (पूंछ) (पु०)। शिवट… पेड़। सुपारी। बाण। खजाना (कोष).

पिज्, दीप्ति-चमकना। बल-शक्ति। बध और दान, … अक०। हिंसा (मारना) और दान (देना)। … पु० उभ० …। पिञ्जयति ते.

पिञ्ज, (न०) पिजि+अच्। बल (ज़ोर)। … कापूर (पु०)। व्याकुल (घबराया हुआ-हैरान) (त्रि०) … तूल (रुई)। हल्दी (हल्दी)। … (स्त्री०).

पिञ्जट, (पु०) पिजि+अटन्। नेत्रमल। आंखकी मैल (कीचड़).

पिञ्जर, (न०) पिजि+अरच्। हरिताल (…) स्वर्ण (सोना) … पक्षी आदिके बन्धन स्थान (पिंजरा)। वेदविशेष। शरीरकी हड्डियोंका समूह। एकप्रकारका घोड़ा (पु०)। … रंग (पु०)। तद्वाला (त्रि०).

पिट्, शब्द-सड़ा होना। … अक० … सक० सेट्। पिटति-अपेटीत्.

पिटक, (पु०) पिट+क्वुन्। … हुआ … (…)। पिटारी। … (फोड़ा)। "…" यही अर्थ.

पिठ्, … अक०। … सक० … सेट्। पेठति। अपेठीत्.

पिठर, (पु०) पिठ+करन्। … मोथा। … (…) (न०) … (पु० क्ली०)

पिण्ड्, …(…) … पिण्डते … होता है" इत्या०। पिण्डयति ते.

पिण्ड, (पु०) पिडि+अच्-… । … और … एक … लक्ष … (…) … पिण्ड। … समूह। … (…) … (…) … (पु०)। … (…)। … कंपे … श्राद्ध … (न०).

पिण्डकः-कं, (पु॰ न॰) पिण्ड इवार्थे कन् । पिण्डके समान । अन्नका गोला ।-क-भूत.

पिण्डखर्जूर, (पु॰) (स्त्री॰) पिण्डाख्यः खर्जूरः । पिण्ड-खजूरका दरख्त.

पिण्डद, (त्रि॰) पिण्डं ददाति+दा+क+अ । अन्नदाता । भोजन देनेवाला.

पिण्डनिर्वपणम् (न॰) पिण्डस्य निर्वपणं निर्+वप्+अन । पितरोंके लिये पिण्ड (अन्न) का निर्वपण (दान).

पिण्डभाज्, (त्रि॰) पिण्डं भजति+भज्+णि । मृत-कके लिये दियेगये पिण्डको लेनेका अधिकारी । (पु॰ बहुवचन) मृतपितर.

पिण्डयज्ञ, (पु॰) पिण्डस्य यज्ञः । मरेहुए पितरोंके लिये पिण्डका यज्ञ.

पिण्डलोप, (पु॰) पिण्डस्य लोपः । पुत्रके न होनेसे पितरोंके पिण्डका समाप्तहोजाना.

पिण्डसंबन्ध, (पु॰) पिण्डस्य संबन्धः । पिण्डका सम्बन्ध (रिश्ता) पीढीतक पिण्डका संबन्ध (जैसे हुओंका मरेहुओंके साथ).

पिण्डायस, (न॰) पिण्डं (संहतं) अयः । अच् समा॰ । तीक्ष्णायस । तेज लोहा.

पिण्डार, (पु॰) पिण्डं (संघातं) ऋच्छति । ऋ+अण् । विकंकत वृक्ष । क्षपणक (बुद्धोंका संन्यासी) और गोप (गूजर ग्वाल).

पिण्डी-ण्डिका, (स्त्री॰) बाणलिङ्गकी योनिके आकारवाली बैठक । आसन.

पिण्डीशूर, (पु॰) पिण्ड्यां (भोजने एव) नान्यत्र शूरः । जो खानेमें ही बहादुर है और जगह नहिं । घर-हीमें कड़कनेहारा । युद्ध आदिमें असमर्थ । लड़ाई आदिमें जिसकी ताकत नहिं.

पिण्डोदकक्रिया, (स्त्री॰) पिण्डोदकयोः क्रिया । मृतक (मरेहुये) के लिये पिण्ड (चावलोंका गोला) और जलकी सेवा (दान).

पिण्याक, (पु॰ न॰) पुण्-व्यवहार+आकन्-नि॰ । ति-लोंका चूरा । खल हींग । और बाल्हीक । सिल्हक (पु॰ स्त्री॰).

पितामह, (पु॰) पितुः पिता । पितृ+डामह । पितुः पितरि । पिताका पिता । बाबा । दादा । इसकी स्त्री (दादी) (स्त्री॰ ङीप्) । ब्रह्माका नाम । बहु॰ व॰ । पितर.

पितृ, (पु॰) पाति (रक्षति) पा+तृच् । नि॰ । जनक । जो रक्षा कर्ता है । पिता । बाप । "पितरौ" माता पिता दोनों । "पितरः" (बहु॰ व॰) बडे लोग (बापदादा आदि).

पितृतर्पण, (न॰) पितॄणां तर्पणं ...
कर्म (अथवा नहुषण).

पितृकानन, (न॰) ६ त॰ । पितरोंका ...
स्थान । "पितृवन" "पितृगृह".

पितृगण, (पु॰) पितॄणां गण । पितरोंका ...
मरीचि पुत्रोंका समूह स्तुक.

पितृगृहम्, (न॰) पितृ+गृह । पितृघर.

पितृघातक, घातिन्, (पु॰) पितरं हन्ति ...
घात+णिनि वा । पिताको मारनेवाला

पितृतर्पणम्, (न॰) पितॄणां तर्पणम् । पितरों...
को दक्षिणे हाथसे जल देना । पितरोंको ...
तृप्त करना.

पितृतिथि, (स्त्री॰) पितॄणां तिथिः । पितरों...
वार्षिक-का दिन । अमावास्या.

पितृतीर्थ, (न॰) ६ त॰ । पितरोंका तीर्थ । ...
नी और अंगूठेका बीच.

पितृपति, (पु॰) ६ त॰ । पितरोंका पति । ...
"पितृराज" यही अर्थ.

पितृप्रसू, (स्त्री॰) पितॄणां प्रसूः इव । ...
माता है । (अन्न देनेके योग्य काल होने) ...
संध्या (सांझ) का समय । पिताकी माता ...

पितृबन्धु, (पु॰) ६ त॰ । पिताकी बांधें ...
ताके पिताकी बहिनके बेटे । पिताके माता ...
पुत्र । पिताके मामाके लडके.

पितृभोजनम्, (न॰) पितॄणां भोजनम् । ...
उद्देश्यसे दिया गया भोजन.

पितृयज्ञ, (पु॰) ६ त॰ । पितुरुद्देश यज्ञ । ...
निमित्त यज्ञ । पितृतर्पण । "पितृयज्ञस्तु तर्प...

पितृयाण, (पु॰) पितृभिः यायते ...
मार्ग । जिधरसे पितर आते हैं । धूम मार्ग ...
या मरेहुए कर्मियोंके जाने योग्य मार्ग (...

पितृलोक, (पु॰) ६ त॰ । चन्द्रमाके ऊपर ...
एक लोक.

पितृव्य, (पु॰) पितुः भ्राता । पितृ+व्यत् । ...
पिताका भाई । चाचा वा ताया.

पितृष्वस्रीय, (पु॰ स्त्री॰) पितुः स्वसुः अपत्यं ...
पिताकी भगिनीका सन्तान । भूआका बेटा ...

पितृसन्निभ, (पु॰) पित्रा सन्निभः (तुल्य) ...
पितृतुल्य । जो पिताके समान हो.

पित्त, (न॰) अपि+दो+क्त । तस्य अकारस्य । ...
दीर्घ नहिं हुआ । देहस्थ धातुविशेष । मर्दन ...

त, (न०) पित्तं सारि । लाक्ष । साल्यादिजलाधातु-लेद । उसे आदिसे बनाहुआ एक प्रकारका धातु । पल । गरमी स्वभावका (त्रि०).

र्जित, (त्रि०) पित्रा अर्जित+नृ-त० । पितासे लाभ ःया गया (कमाया गया) पैतृकसंपत्ति.

र, (त्रि०) पितुः इदं, प्रियं वा, पितुन आगतं वा त् । पितृसम्बन्धी । पितामह । पितासे आया । पितृ-र्थे । मधु (शहद) । और मघा नक्षत्र (तारा) । पि-रोंका पियारा (माघ-मा) (पु०) अमावास्या तिथि -- स्त्री०).

,सन्, (पु०) पत्+सन्+शतृ । पक्षी । गिरनेकी इच्छावाला (त्रि०).

धान, (न०) अपि+धा ल्युट् (अका लोप) । ढादन । ढकना । उद्घन । ढकना.

नद्ध, (त्रि०) अपि+नह्+क्त । अका लोप । परिहित वस्त्र आदि । पहिराहुआ कपडा आदि । बंधाहुआ.

नाक, (पु० न०) पाति । पा+आकन् । नि० । शिव-जीका धनुष् (कमान) । शिवजीका त्रिशूलरूपी औजार । धूलिका बरसना.

नाकिन्, (पु०) पिनाक (अस्त्यर्थे)+इनि । पिनाक-वाला महादेव.

पासा, (स्त्री०) पातुं इच्छा । पा+सन्+अ । पानेच्छा । पीनेकी चाह.

पेपासु, (त्रि०) पातुं इच्छुः । पा+सन्+उ । पीनेकी इच्छावाला । पियासा.

पेपीलक, (पु०) अपि+पील+ण्वुल् । अका लोप । एक प्रकारका कीडा । "पिपीलिका" काला कीडा वा काली कीडी.

पेप्पल, (न०) पा+अलच् । (पु०) । जल (पानी) । और एक कपडेका टुकडा । अश्वत्थ (पीपलका पेड) । और पक्षी (पु०).

पियाल, (पु०) पी-पान-पीना+कालन् । पेयाल मुरगी । एक वृक्ष.

पिल, प्रेरण-चलना । चु+उभ० सक० सेट् । पेलयति-ते. अपीपलत्-त.

पिश्, सेचन-सींचना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पिन्वति । अपिन्वीत् । "इदित्".

पिश, अवयव (हिस्सा करना) तु० पर० सक० सेट् । पिंशति । अपेशीत्.

पिशङ्ग, (पु०) पिश्+अङ्गच् । कमलफूलकी धूलिके समान पीला रंग । उसवाला (त्रि०).

पिशाच, (पु०) पिशितं अश्नाति । अश्+अण् । पृ० । जो मांसको खाता है । देवयोनिभेद । एक प्रकारकी देवता । और प्रेत । भूत.

पिशाचभाषा, (स्त्री०) (पिशाचानां भाषा) । भूतोंकी भाषा (जबान) । बहुत निन्दी प्राकृत.

पिशाचसभम्, (न०) पिशाचानां सभा । पिशाचोंकी सभा (मण्डली.).

पिशाचालय, (पु०) पिशाचानां आलयः । भूतोंका घर । अत्यन्त अपवित्र स्थान.

पिशित, (न०) पिश्+क्त । मांस । जटामांसी । (स्त्री०) वा ङीप्.

पिशुन, (न०) पिश्+उनन् । कुङ्कुम (केसर) । नारद और कौंआ (पु०) सूचक (चुगलखोर) । क्रूर (निर्दय-बेरहम) (त्रि०).

पिष्, चूर्णन-पीसना । रु० पर सक० अनिट् । पिनष्टि । अपिषत्.

पिष्ट, (न०) पिष्+क्त । सीसक । पिष्टक । सीसा । पीठी । चूर्णित (चूरा किया हुआ) । दलागया (त्रि०).

पिष्टक, (पु० न०) पिष्टानां (तण्डुलचूर्णानां) विकारः+कन् । चावलोंके चूरेका बना हुआ पीठी । एक प्रकारका खाना.

पिष्टप, (पु० न०) पिष्यते, पिष्यते वा+अप् । पिष्+टप-न् । भुवन । जगत् । सर्ग.

पिष्टात, (पु०) पिष्टं अतति । अत्+अण् । कपडोंकी सुग-न्धिके लिये रखाहुआ किसी प्रकारका गंध । केसर आदि । वास्ता.

पिस्, आना-चमकना सुगन्धिउगाना-जोरकरना-मारना-और देना । भ्वा० पर० सक० सेट् आदि । पेसति । पिस-यति । पेसयति-ते । अपीपसत् त.

पिहित, (त्रि०) अपि+धा+क्त । अका लोप । तिरोहित । आच्छादित । बंद कियाहुआ । छिपाहुआ.

पी, पान-पीना । दि० आ० अनिट् । पीयते । अपेष्ट । "ल्युप्" निरीय.

पीठ, (पु० न०) पीयते (पिअते वा अन्न) । पा+ठक् । पिट्+क वा । पृ० दीर्घः । पीढा (हुडक) । एक प्रकारका आसन । व्रतिओंका आसन । वेदी । चौकी । वह नगर जहांपर देवीके शरीरसे कईएक खण्ड (टुकडे) गिरे हैं.

पीठमर्दिका, (स्त्री०) पीठं-नायिकायाः आसनं मर्दयति+टक्+टक्+अ । नायिकाके पास रहकर उसको नायकके साथ मिला देनेमें सहायता करनेवाली एक स्त्री । सुन्दरि-ओंको नृत्यविद्या (नाच) सिखानेवाली.

पीड, वध-मारना-विलोडन-प्रवेश [illegible] करना । चु० उभ० सक० सेट् ।

पीडन, (न०) [illegible] राजआदिसे अभि-भव ([illegible] धातु [illegible] आक्रमण ([illegible] दबाना [illegible] हना.

पीडा, (स्त्री०) पीड्+अ । व्यथा । दुःख । दरद । तकलीफ । तरस.

पीडाकर, (त्रि०) पीडां करोति+कृ+अच् । कष्टदायक । तक्लीफ देनेवाला । दर्दनाक.

पीडित, (त्रि०) पीड+क्त । मर्दित । मलाहुआ । निचोडाहुआ । यन्त्रित । तक्लीफ पहुंचायाहुआ । दुःखित । दुःख दियागया.

पीत, (न०) पा+क्त । पान । पीना । और हरिताल । हरिद्रावर्ण । हल्दीका रंग (पु०) । "कर्मणि क्त" (पीनेका काम) पीले रंगवाला (त्रि०).

पीतक, (न०) पीत+स्वार्थे कन् । कुङ्कुम । केसर । और हरिताल । पीतल.

पीतवासस्, (पु०) पीतं वासो यस्य । जिसका कपडा पीला है । श्रीकृष्ण.

पीताम्बर, (पु०) पीतं अम्बरं यस्य । पीले वस्त्रवाला । विष्णुका नाम । श्रीकृष्ण.

पीन, (त्रि०) प्याय्+क्त सम्प्रसारण । स्थूल । मोटा । दृढ । बढाहुआ । सम्पन्न । भरपूर । धन आदिसे पूर्ण.

पीनस, (पु०) पीनं (पीनतां) स्यति । सो+क । जो मोटाईको नाश कर्ता है । नासिकाका रोग । जुकाम । खांसी.

पीनस्तनी, (स्त्री०) पीनौ स्तनौ यस्याः । मोटे स्तनों-कुचों-वाली स्त्री (औरत).

पीनोध्नी, (स्त्री०) पीनं ऊधः अस्याः+ङीप् । अन्तमें "अनङ्" का आदेश । पीवरोधस्का गौ । बहुत मोटे थनों-वाली गौ.

पीय्, प्रीणन-प्रसन्न होना । पर० सक० सेट् । पीयति । अपीयीत्.

पीयूष, (न०) पीय+ऊषन् । देवताओंके पीनेकी एक चीज । अमृत । दूध.

पील्, रोध-रोकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पीलति । अपीलीत्.

पीलु, (पु०) पील्+उ । परमाणु । "पीलुपाक" "पिठरपाक" (वैशेषिकोंका भेद) । हाथी । हड्डिओंका टुकडा । और फूल.

पीव्, स्थौल्य-मोटा होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । पीवति । अपीवीत्.

पीवन्, (त्रि०) प्यै+क्वनिप् । स्थूल । मोटा । और बलवाला । जोरवाला । वायु (पु०).

पीवर, (त्रि०) प्यै+ष्वरच् । स्थूल । मोटा "ङीप्" अथवा । "टाप्" स्त्रीतारी । "ङीप्" तरुणी गौ । जवान गौ । शतमूली शतपर्णी.

पुंलिङ्ग, (न०) ६ त० । पुरुषका चिह्न । एक अन्न । जिसका पुरुषकी नाईं चिह्न हो । व्याकरणमें कहाहुआ संस्कारविशेषवाला एक शब्द (पु०).

पुंश्चली, (स्त्री०) पुंसः (मनुः) गच्छन् (प्रां पान्तरं) गच्छति+अच् ङीप् । जो अपने दूसरे पुरुषके पास जाती है । असती स्त्री (व्यभिचारिणी स्त्री) । बदमाश औरत.

पुंस्, मर्द-मलना । चु० उभ० सक० सेट् । पुंसयति । अपुपुंसत् त.

पुंसवन, (न०) पुमान् सूयते अनेन सू+ल्युट् । जिससे उपजता है । एक प्रकारका गर्भका संस्कार । और दूध.

पुंस्त्व, (पु०) पुंसः भावः (चिह्नं वा) । पुरुषपन । पुरुषका निशान । एक प्रकारका अंग । तथा शुक्र (वीर्य) । पुंलिङ्गपना.

पुक्कस (श), (पु०) पुक् (कुत्सितं) कसति । बुरा आना । अच् । पृ० श वा स । जो बुरी चीजसे मेल रखता है । चाण्डाल । अधम (नीच) (त्रि०).

पुङ्ख, (पु०) पुमांसं खनति । खन्+ड । जो पुरुषको खोदता है । बाणमूल । तीरका सिरा । जिसमें पर लगाया गया तीरका हिस्सह । पुष्कल । पूरा । काफी.

पुङ्गव, (पु०) पुमान् गौः । कर्म० षष्-समा ० । (बैल) "उत्तरपदमें आनेसे श्रेष्ठ (अच्छे) का वाचक है । "जैसे" "नरपुङ्गव" "नरः पुङ्गव इव" यह सो समासका वाक्य "मनुष्योंमें अच्छा" इस अर्थमें है.

पुच्छ्, प्रमाण (मापना) । भ्वा० पर० अक० सेट् । पुच्छति । अपुच्छीत्.

पुच्छ, (न०) पुच्छ+अच् (पश्चाद्भाग) । पीछेका हिस्सा और पूंछ.

पुञ्ज, (पु०) (समस्त) पुमांसं जयति । जि+ड । जो इसे पुरुषको जीत लेता है । राशि । ढेर । समूह । ढीग । ढेर.

पुट्, दीप्ति-चमकना । अक० चूर्णन पीसना-सक० चु० उभ० सेट् । पोटयति-ते । अपूपुटत् त.

पुट्, श्लेष-जुडना मिलना । पुटति । अपुटीत् । पुपोट.

पुट, (न०) पुट्+क । जातिफल (जायफल) । दवाई पकानेके लिये मट्टी आदिके रचेहुए दो पात्र (सिरवे) जिनको नीचे ऊपर धर बीचमें दवाई रख आंच दी जाती है । आच्छादन (ढकना) । (पु०) । पत्तों आदिसे बनाहुआ दूध आदि पीनेका पात्र । दोना (डोना) (त्रि०)

पुटभेद, (पु०) पुटं (संश्लेषं) भिनत्ति+अण् । जो पुट को फाडडालताहै । नदी आदिका पहियेके समान जलावर्त (घुंमरपेर) । नगर । बाजा.

टिका, (स्त्री०) पुट्+क+स्वार्थे कन् । एला । इलाइची.

टित, (त्रि०) पुट्+क्त । मर्दित (मसलाहुआ) । फटित । फाड़ाहुआ । (तन्त्रमें कहाहुआ) आदि अन्तमें "प्रणव" ओंकार आदियुक्त मन्त्र.

पुड, अनादर-बेइज्जत करना । पु० उभ० सक० सेट् । पुड-यति-ते.

पुड्, मर्दन मलना-पीसना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । पुण्डति । अपुण्डीत्.

पुण्, धर्मकृत्यकरण । धर्मका काम करना । तु० पर० सक० सेट् । पुणति । अपोणीत्.

पुण्डरीक, (पु०) पुडि+ईक-नि । अग्निकोणका दिग्गज । और व्याघ्र (भेड़िया) । गिनरुध । सिद्ध कमलका वृक्ष । सिद्ध पत्ता । भेषज (दवाई) (न०).

पुण्डरीकाक्ष, (पु०) पुण्डरीकं इव अक्षिणी यस्य+षच् समा० । जिनकी आंखें खिले कमलके समान खिलरही हैं । विष्णु । श्रीकृष्णजी.

पुण्ड्र, (पु०) पुडि+रक । इक्षुभेद । एक प्रकारका गन्ना (पौंडा) । माधवी लता । तिलक । तिलवृक्ष । एक देशका नाम.

पुण्य, (न०) पुनाति । पुञ्+य । शुभादृष्ट । धर्म । अच्छा काम । सुन्दर (त्रि०).

पुण्यकीर्ति, (त्रि०) पुण्या कीर्तिः यस्य । पवित्रयशवाला । अच्छे नामवाला । प्रसिद्ध.

पुण्यकृत्यम्, (न०) पुण्यं कृत्यं । पवित्रकाम.

पुण्यक्षेत्रम्, (न०) (पुण्यं क्षेत्रं) पवित्र स्थान । तीर्थ-स्थान.

पुण्यगृहम्, (न०) पुण्यं गृहम् । पवित्र घर । मन्दिर (जहां दानका सिक्षा मिलतीहै).

पुण्यजन, (पु०) पुण्य (विरुद्धलक्षणया) पापी जनः । कर्म० । राक्षस.

पुण्यजनेश्वर, (पु०) ६ त० । पुण्यजनोंका ईश्वर । कुबेर.

पुण्यभाज्, (त्रि०) पुण्य भज्+अञ्+ण्वि । पुण्यको भजनेवाला । धर्मिष्ठ । धर्मपुरुष । दानको करनेवाला । महात्मा.

पुण्यभूमि, (स्त्री०) पुण्यस्य (पुण्येन इत्यर्थः) भूमिः । अच्छा काम करनेका स्थान । आर्यावर्त्त । "विन्ध्य और हिमालयका बीच".

पुण्यश्लोक, (पु०) पुण्य श्लोकः । पुण्य (दानादि) में मग्न हुआ श्लोक । सर्व.

पुण्यसमम्, (न०) पुण्यं समम् । पवित्र वर्ष । एक वर्षपर्यन्त (अश्वमेधादि पुण्य पुण्यकी इच्छासे [illegible] यज्ञ).

पुण्यश्लोक, (त्रि०) पुण्यः (पुण्यजनकः) श्लोकः (यशः चरितं) यस्य । जिसका चरित्र पुण्यके देनेवाला है । नल आदि.

पुण्याह, (न०) पुण्यं अहः+टच् समा० । पुण्य करनेके लिए दिन.

पुण्याहवाचन, (न०) पुण्याहम् (पुण्याहमस्तिति वाचन (ब्राह्मणद्वारा कहना) वच्+णिच्+ल्युट्) । वैदिक कर्मके आरम्भमें उस दिनकी पवित्रताका [illegible] उच्चारण.

पुत्तिका, (स्त्री०) पुत इति शब्दं करोति । [illegible] स्वार्थे कन् । क्षुद्रमक्षिका । छोटी मक्खी । [illegible]

पुत्र-त्र, (पु०) पुत्र अवते । पुत्+त्रै+क [illegible] (नरक)से बचाता है । तनय । पुत्र । [illegible] "औरस" आदि १२ प्रकारका पुत्र । [illegible] से ५ वां स्थान (घर) (पु०) । [illegible] कन्या

पुत्रक, (पु०) पुत्र+कन् । पुत्र ([illegible]) (एक पशु) । कृत्रिम पुत्र ([illegible]) वर्धन । "पुत्रिका" (स्त्री०) [illegible]

पुत्रकर्मन, (न०) पुत्रस्य कर्म [illegible] बीजाई रीति (रसम उवत)

पुत्रकाम्या, (स्त्री०) आत्मनः पु[illegible] पुत्रकी इच्छा करनेवाली.

पुत्रदात्र, (पु०) पुत्र [illegible] (बेटा) । दत्तक पुत्र.

पुत्रदा, (स्त्री०) पुत्रं [illegible] बीजको गर्भ है [illegible] सवेत । [illegible]

पुत्रप्रतिनिधि, (पु० [illegible] जैसा । दत्तक पु[illegible]

पुत्रवधू, (स्त्री० [illegible]

पुत्रादिनी, (स्त्री० [illegible] [illegible]

पुत्रादाद्, [illegible] । इकट्ठा । [illegible]

[illegible]

पुत्रेष्टि, (स्त्री०) पुत्रस्य पुत्राणां वा इष्टिः । यज्-क्तिन् । पुत्रका वा पुत्रके लिये यज्ञ । पुत्रनिमित्तक यागभेद.

पुथ्, हिंसा-मारना । नुकसान पहुंचाना । दि० पर० सक० सेट् । पुथ्यति.

पुद्गल, (पु०) पतत्यतीति गल्-अच् । पुत् (कुत्सितं) गलो यस्मात् । २ व० । अच्छा स्वरूप । मनोहर द्रव्य । परमाणु । शरीर । आत्मा । शिवजी महाराजका एक नाम.

पुनःपुनर्, (अव्य०) मुहुः । अनीक्ष्ण । बारबार.

पुनःपुना, (पु०) पुनः पुनाति । पू-क्वन् । पृ० । एक नदी.

पुनःसंस्कार, (पु०) पुनरपि संस्कारः । दूसरीवार संस्कार (यज्ञोपवीत-जनेउ-विवाह आदि) होना । (ज्योतिष) जिसका "पुनर्वसु" में वज्ञोपवीत हो "वा" जिस कन्याका एकवार विवाहहुए पतिने विवाह होने फिर संस्कारके योग्य होते हैं.

पुनर्, (अव्य०) अवधारण (निश्चय) । भेद । फिर । [illegible].

पुनरुक्तवदाभास, (पु०) एक अलंकार (जिसमें वह २ [illegible]).

पुनर्भव, (पु०) [illegible] भवि पुनः भवि भवः । [illegible] फिर [illegible] हो । नख । नाखून । [illegible].

पुनर्भव, (पु०) [illegible] पुनर्भवति । भू-अच् । [illegible] फिर [illegible] है । नख । [illegible] । नाखून.

पुनर्भू, (स्त्री०) पुनर्भवति । फिर होती है ([illegible]) । [illegible] । दुबारा [illegible] । फिर [illegible] (त्रि०).

पुनर्वसु, (पु०) [illegible] । विष्णु । और शिवजी । [illegible] ([illegible]) [illegible].

पुनर्विवाह, (पु०) पुनः विवाहः । दूसरी शादी.

[illegible], (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] आदमी.

[illegible], (पु०) [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पुरत्रय, (पु०) काशुत्स्थनामी सूर्यवंशका [illegible]

पुरतस्, (अव्य०) अग्रतः । आगेसे.

पुरन्दर, (पु०) पुरं दारयति । दृ-खच् । इ[illegible] जो पुरको फाड़ता है) । अग्नी । [illegible] । [illegible] गंगानदी (स्त्री०).

पुरन्ध्रि-न्ध्री, (स्त्री०) पुरं (गेहं) धरती [illegible] धृ-खच् । गौरा० ङी० [illegible] (पकड़ती है) । बहुत कुटुम्बवाली [illegible] स्त्री । बहुत परिवारवाली औरत.

पुरश्चरण, (न०) पुरस्+चर्+ल्युट् । [illegible] किसी मन्त्रको सिद्ध करना (मन्त्रका जप, [illegible] अभिषेक और ब्राह्मणभोजनका [illegible])

पुरस्, (अव्य०) पूर्वस्मिन् कालादौ । [illegible] पहिले समयमें.

पुरःसर, (त्रि०) पुरः (अग्रे) सरति । [illegible] जानेहारा.

पुरस्कार, (पु०) पुरस्+कृ+घञ् । [illegible] इनाम.

पुरस्कृत, (त्रि०) पुरस्+कृ+क्त । पूजया । [illegible] किया गया । अभिशस्त (दबाया हुआ) । [illegible] से पकड़ा गया । स्वीकृत (मंजूर कियाहुआ) [illegible] (गीलाहुआ).

पुरस्तात्, (अव्य०) पूर्व+अस्ताति ([illegible] तः । आगेसे.

पुरा, (अव्य०) पहिले । बीतेहुए । [illegible] निकट (पास) और पुराण (पहली) [illegible] दार । पूर्वदिशा.

पुराण, (त्रि०) पुरा भवः+ञु नि० । [illegible] [illegible] । पहिलेका । व्यास आदिके [illegible] शास्त्र (न०) (जिसमें सर्ग [illegible] [illegible] । वंश, मन्वन्तर और [illegible])

पुराणपुरुष, (पु०) [illegible] [illegible] कर्म० [illegible] । [illegible] पुरा पुरुष

पुरातन, (त्रि०) पुरा भवः । [illegible] पुराना । पहिलेका

पुरावृत्त, (न०) पुरा (पूर्वस्मिन् [illegible]) [illegible] [illegible]

[illegible]

पुरीतत्, (त्रि०) [illegible] ([illegible]) में [illegible] । (पु०) [illegible]

पुरि, (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

तत्, (स्त्री०) (न०) पुरीं (देहं) तनोति । तन्+क्विप् । शरीरको फैलाती है । देहको आरम्भ करनेवाली आकि- । आंतरी.

र, (न०) पृ० दीर्घः+ईषन् । मिष्टा गूह । (वेदमें) ल (पानी).

(पु०) पृ+कु । ययाति राजाका छोटा पुत्र । जिसके रण कुरुओंकी पौरव संज्ञा हुई । स्वर्ग । एक दैत्य । क नदी । प्रचुर (बहुत) (त्रि०).

र, (पु०) पुरि=देहे+शी+ड पृषो० पुर् आगे जाना+ पन्+ ष्प । मनुष्य । देहरूपी शहरमें सोताहै । सबसे आगे रहताहै (सृष्टिमें) । आदमी । आत्मा । इ.

ष्कार, (पु०) पुरुषस्य कारः । कृ+घञ् । पौरुष । रुषका यत्न । हिम्मत । मिहनत । उद्योग । पुरुषार्थ । रुषका काम.

केसरिन्, (पु०) पुरुषः केसरीव । पुरुषसिंह (वीर आदमी) विष्णुका नाम (नृसिंह) चौथे अवतारमें.

र्सिंह, (पु०) पुरुषः सिंह इव । उपमि० । पुरुष मानों र है । पुरुषोंमें श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) । "पुरुषनाग" ही अर्थ.

ाधम, (पु०) पुरुषेषु अधमः । पुरुषोंमें नीच । बहुत ीच आदमी.

ार्थ, (पु०) ६ त० । पुरुषका अर्थ । धर्म, अर्थ, काम ौर मोक्षरूप पुरुषका प्रयोजन (मतलब).

ोत्तम, (पु०) पुरुषेषु उत्तमः । कर्म० वा । पुरुषोंमें त्तम । विष्णु । और उत्तम पुरुष.

ूत, (पु०) पुरूणि (प्रचुराणि) हूतानि (नामानि) स्य । जिसके बहुत नाम हों । इन्द्र । देवतोंका राजा.

रवस्, (पु०) पुरुषे इलामें उत्पन्न फिरागया उर्वशीका ान्त (पियारा) । चन्द्रवंशी राजा.

ग, (त्रि०) पुरः (अग्रे) गच्छति । गम्+ड । अग्र- ामी । आगे जानेहारा । और प्रधान । बड़ा । "अत्" पुरोगमः । "जिति" पुरोगामी.

ाश-श, (पु०) पुरो दाश्यते । दाश्+कर्मणि क्विप् घञ् वा । जो आगे दिया जाता है । हवि । घी आदि यज्ञका द्रव्य । चरु.

धस्, (पु०) पुरः (अग्रे) धीयते । धा+असि । जो आगे किया जाता है । पुरोहित.

ोभागिन्, (त्रि०) पुरः (पूर्वं) भजते । भज्+घिनुण् । गुणको छोड़कर केवल दोषको ग्रहण करनेहारा । अग्र- भागी । पहिले हिस्सेवाला (त्रि०).

पुरोहित, (पु०) पुरः (अग्रे) दृष्टादृष्टफलेषु धीयते असौ । धा+क्त । लौकिक वा पारलौकिक में जिसे आगे किया जाता है । राजाओंके परलो कामोंमें आगे कियाहुआ जन । आगे कियाहुआ । आदि कर्म करानेहारा.

पुर्व, पूर्ति-भरना । पूरा करना । भ्वा० पर० सक० पूर्वति । अपूर्वीत्.

पुल, उच्छ्रिति-ऊंचा होना । चु० उभ० पक्षे तु० सेट् । पोलयति-ते । पुलति । अपूपुलत्-त । अपोली

पुल्, महत्त्व । बड़ा होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ति-ते । अपोलीत्.

पुलक, (पु०) पुल+क+स्वार्थे कन् वा । रोमा रोंओंकी फूट । अंगूठा । कीड़ा । मणिका चिह्न । पिआला । हाथीका भोजन । राई । एक प्रका पर्वतकी मट्टी । विपुल (चौड़ा) । पुल (सेतु).

पुलकित (त्रि०) (पुलक+इतच्+पुलकाः । जाता जिसके रोंगटे खड़े होगये हैं । बड़ा प्रसन्न हुआ.

पुलकोद्गम, (पु०) पुलकानां उद्गमः । शरीरके पुल (रूओं वा रोंगटों) का खड़ा होना । रूंगटे होना.

पुलस्ति-स्त्य, (पु०) मुनिका नाम.

पुलह, (पु०) एक मुनिका नाम । धान्य (धान क्षिप्र । जल्दी.

पुलाक, (पु०) पुल्+अक+अण् । संक्षेप । धान्यशून्य । अ जके बिना.

पुलिन, (न०) पुल+इनन् । तोयोत्थित तट । पा निकला हुआ किनारा । चड़ा । जमीरा.

पुलिन्द, (पु०) पुल्+किन्दच् । एक प्रकारका चाण्डाल.

पुलोमजा, (स्त्री०) पुलोमा (असुरभेदः) तस्मात् यते । जन्+ड । पुलोमा नाम दैत्यसे उत्पन्न हु इन्द्राणी । इन्द्रकी स्त्री । शची.

पुष्, पुष्टि-पालना । क्र्या० पोषण-पालना । सक० पर० अनिट् । पुष्यति । अपुषत्.

पुष्पित, (त्रि०) पुष्+क्त । [illegible] । फलाहुआ । फूल खिलाहुआ.

पुष्कर, (न०) पुष्+करन् । जलस्थान । हाथीकी के आगेका सिरा (नोक) । एक प्रकारका बाजा । मुख खनी । म्यानकड (निखाद) । कमल । एक तीर्थ एक औषध (तीर) और कराई । एक रोग । एक द्वी एक राजा । एक पहाड़ (पु०).

पुष्करशिफा, (स्त्री०) पुष्करस्य शिफा । कमलकी ज

पुष्करस्रज, (स्त्री०) पुष्कराणां स्रक् । कमलोंकी माला.

दुष्कीर्ति. (स्त्री०) [illegible]

[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

दुष्कृति. (स्त्री०) [illegible] खोट बरतन.

दुष्करता. (स्त्री०) [illegible] विगत.

[illegible] (पु०) [illegible]

[illegible] (स्त्री०) [illegible]

[illegible] (पु० स्त्री०) [illegible]

[illegible]

[illegible] (पु०) [illegible]

[illegible]

…तायी, (स्त्री०) पूतक्रतो (इन्द्रस्य) पत्नी+ङीप् । ऐच । इन्द्रकी स्त्री शची । इन्द्राणी.

…तु, (पु०) क्रतुभिः पूतः । "यज्ञोंसे पवित्र" । पूताः विघ्नतासम्पादकाः क्रतवः (यज्ञाः) यस्य वा । जिसके यज्ञ विघ्नताको सम्पादन करते हैं । इन्द्र । देवताओंका राजा.

…ना, (स्त्री०) पूतं करोति । पूत+णिच्+ण्वुल् । पवित्र …ती है । हरीतकी । हरीर । एक राक्षसी (जो विषसे …लपटेहुए स्तनको पिलाती हुई श्रीकृष्णजीसे मारीगई) । …क रोग.

…, (स्त्री०) पू+क्तिन् । पवित्रता । पाकीजगी । दुर्गन्ध । बदबू । रोहिषघास (न०).

…क, (न०) पूत्या (दुर्गन्धेन) कायति । कै+क । जिसमें बड़ी बदबू चलती है । विष्ठा । गूंह । पूतिकरञ्जनामी वृक्ष । (पु०) । एक सांप (स्त्री०).

…गन्ध, (पु०) पूतिः (दुष्टः गन्धः) यस्य । जिसकी बुरी गंध हो गंधक । और इङ्गुदीका वृक्ष । दुर्गन्ध (बदबू).

…, (पु०) पूप्+अच् । पिष्टक । बड़ा । पीठीका बनाहुआ पूआ.

…ष्टका, (स्त्री०) अष्ट परिमाणं यस्याः+कन् । अष्टका (अष्टमी) उपचारात् तत्कर्तव्यं श्राद्धम् । पूपद्रव्यसाधनाष्टका । कर्म० । अगहनबदि अष्टमीके दिन विधान कियाहुआ श्राद्ध । पीठीके बड़ोंसे सिद्ध होनेहारी अष्टमी । बड़ों (पूप) की अष्टमी.

…य, दुर्गन्ध-बदबू चलना । अक० । भेदन-फाड़ना । सक० दिवा० आत्म० सेट् । पूयते । अपूयिष्ट.

…य, (न०) पूय्+अच् । व्रण (घाव-या फोड़ा) आदिसे निकलाहुआ कोठूका विकार । पूंज । पीब.

…र, पूर्ति-भरना-तृप्त होना-प्रीणन । दिवा० आत्म० सक सेट् । पूर्यते । अपूरि.

…र, (पु०) पूर+क । जलका समूह । एक प्रकारका खाना । घावकी सफाई.

पूरक, (पु०) पूर+ण्वुल् । बीजपूर । एक प्रकारका नींबू । भंडारामें प्रसिद्ध (गुणक) गुणानेहारा । एक प्रकारका प्राणायाम । एक नासिकासे प्राणोंका ऊपर खेंचना । पूरा करनेहारा (त्रि०) प्रेतके शरीरको बनानेहारे दश पिण्ड (न०).

पूरुष, (पु०) पुर+उषन् । पुरुष । नर । आदमी.

पूर्ण, (त्रि०) पूर+क्त । नि० । पूरित । भराहुआ । समस्त । सारा । ज्योतिषमें दोनों पक्षोंकी पंचमी, दशमी और पूर्णिमा तिथियें । (स्त्री०).

पूर्णपात्र, (न०) कर्म० । भराहुआ पात्र (बर्तन) । हर्षका समय । पुत्रकी उत्पत्ति आदि हर्षके समय छीनकर वस्त्र आदिका लेना । होमके अन्तमें ब्रह्माकी दक्षिणाके स्वरूपमें चार पुष्कल अर्थात् २५६ मुट्ठी चावलोंसे भराहुआ एक पात्र.

पूर्णमास, (पु०) पूर्णमासो निहितः+अण् । पूर्णमाके दिन करनेयोग्य एक प्रकारका यज्ञ । "दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत" श्रुतिः.

पूर्णिमा, (स्त्री०) पू+क्तिन् । नि० । पूर्णि (पूरणं) चन्द्रकलापूरणं मिमीते मा+क । चन्द्रमाकी पन्द्रहवीं कलाको भरनेहारी तिथि । पूर्णमासी.

पूर्त, (न०) पुर+क्त । नि० । खातादिकर्म । तालाब, कूआ आदिका काम । विश्वजन (सब लोग) के उद्देशसे जलाशय (तालाब) आदि बनवाकर दान करना । "भावे क्त" पूरण भरना (न०) काल (समय) । छन्न (ढकाहुआ) । पूरित (भराहुआ) (त्रि०).

पूर्वकाय, (पु०) कायस्य पूर्वः । शरीरका अगला भाग । हिस्सा (विशेषतः पशुओंका).

पूर्व-र्व,-निवास-बसाना । अद० । निमन्त्रण-बुलाना । सक० चुरा० उभ० सेट् । पर्वे । भ्वा० । पर० । पूर्व- (र्व)-यति । पूर्व(र्व)ति.

पूर्व-र्व, (त्रि०) । पूर्व(र्व)+अच् । प्रथम । पहिला । समस्त । सारा । ज्येष्ठ भ्राता । बड़ा भाई । (यह शब्द सर्वनाम है).

पूर्व-र्व-ज, (पु०) पूर्वं (र्वं) जायते । जन्+ड । ज्येष्ठ भ्राता । बड़ा भाई । जो पहिले उत्पन्न है । बड़ी भगिनी (बहिन) (स्त्री०).

पूर्व (र्व) देव, (पु०) पूर्वं (र्वं) देवः (पश्चात् पापाचरणात् भ्रष्टः) । पहिला देवता पीछे पाप करनेसे गिरगया । असुर । दैत्य । अथवा पूर्वः (र्वः) श्रेष्ठो देवः । अच्छा देवता.

पूर्व (र्व) देश, (पु०) कर्म० । पूर्वका देश । पूर्वी देश । प्राच्यो अवस्थित जनपद.

पूर्व (र्व पक्ष), (पु०) कर्म० । पहिला पक्ष । अठारह प्रकारका विवाद (झगड़ा)रूप व्यवहार । प्रतिज्ञारूप पहिला अवयव (भाग) । पहिली तरफ । (मीमांसामें) सिद्धान्तसे विरुद्ध ओरको प्रतिपादन करनेहारा वाक्य.

पूर्व (र्व) पद, (न०) कर्म० । समास या वाक्यका पहिला भाग । पहिला पद । जिसके अन्तमें सुप् या तिङ् हो.

पूर्व (र्व) पर्वत, (पु०) कर्म० । पूर्वका पहाड़ । उदयाचल । जहां सूर्यका पहिले दर्शन होता है वहांका पर्वत । "पूर्वशैल" यही अर्थ.

पूर्व (र्व) फ (फा) ल्गुनी, (स्त्री०) अश्विनीसे ग्यारहवां नक्षत्र (तारा).

पूर्व (र्व) भाद्रपद, (पु० स्त्री०) अश्विनीसे पचीसवां नक्षत्र (तारा).

पूर्व (र्व) राग, (पु०) रञ्ज्+ घञ् । कर्म० । स्त्री और पुरुषके कारणमें मेलसे पहिली दशा । पहिला प्रेम (मुहब्बत).

पूर्व (र्वे) रूप, (न०) कर्म० । (वेदकर्म) आनेवाला होनेका निशान (आदि कारण) सदृश चिह्न (निशान). चिह्न । पहिला रूप.

पूर्व (र्वे) वादिन्, (पु०) व्यवहारे पूर्व (र्वं) वदनं करोति । वद्+णिनि । पहिले अभियोग (मामला-या नालिश) करनेवाला । पहिले बोलनेवाला.

पूर्वमीमांसा, (स्त्री०) पूर्वा मीमांसा । पहिली परीक्षा । पहिला विचार । वेदके कर्मकांडका विचार (इसीके अन्तमें ग्रन्थको "कर्ममीमांसा" कहते हैं).

पूर्वरङ्ग, (पु०) नाटकमें नटद्वारा पहिले करनेयोग्य संगीत [illegible].

पूर्ववयस्, (वि०) पूर्वं वयः यस्य । पहिली आयु (उमर)-वाला । युवा । जवान.

पूर्ववैरिन्, (वि०) पूर्वः वैरी । पहिला शत्रु.

पूर्वाभ्यास, (पु०) पूर्वः अभ्यासः । पहिले (पूर्वजन्म) का अभ्यास ([illegible]).

पूर्वाम्बुधि, (पु०) पूर्वः अम्बुधिः । पूर्वदिशाका समुद्र । [illegible].

पूर्वार्जित, (वि०) पूर्वं अर्जितः । पूर्व (पहिलेजन्म) के [illegible] । [illegible] देशी अवस्था । पैतृक-[illegible].

पूर्वार्द्ध, (पु० न०) । पूर्वः [illegible] आधा वा पहिला टुकड़ा.

पूर्वाभाद्रपद, (स्त्री०) अश्विनीसे [illegible] नक्षत्र (तारा).

पूर्वा [illegible] (पु०) पूर्व (र्वं) [illegible] । [illegible] । पहिला दिन । आगा दिन । "[illegible]) पूर्व (र्वा) [illegible]" पुराणम्.

पूर्वे (र्वे) द्युस्, (अव्य०) पूर्व (र्वे) [illegible] । प्रथम [illegible].

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पृ [illegible]

पृ [illegible]

पृ [illegible]

पृ [illegible]

पृक्त, (वि०) पृच्+क्त । मिश्रित । [illegible]

पृक्ति, (स्त्री०) पृच्+क्तिन् । मिलना.

पृक्थम्, (पृच्+थन्) । [illegible] । [illegible] भरना विशेष.

पृच्, सम्पर्क-जोडना । मिलना । [illegible] सेट् । पृंक्ते । अपर्चिष्ट । "ग्" । [illegible]

पृच्, सम्पर्क । मिलना-जुड़ना । [illegible] सेट् । पृणक्ति । अपर्चीत्.

पृच्छक, (पु०) पृच्छ्+ण्वुल्+[illegible] मालूम करनेवाला.

पृच्छा, (स्त्री०) पृच्छ्+अङ् । [illegible] । पूछना । पूछ.

पृतना, (स्त्री०) पृ+तनन् । सेना ([illegible] की सेना) । (रथ २४३, हाथी २४३, [illegible] -पैदल १२१५.

पृथ, प्रक्षेप (फेंकना) फैलाना । पु० प० पार्थयति-ते.

पृथक्, (अव्य०) भिन्न । जुदा । [illegible] बिना । सिवा.

पृथक्त्व, (न०) पृथक् भावः त्व । [illegible] एक गुणविशेष । जुदा होना । [illegible]

पृथगात्मता, (स्त्री०) पृथक् आत्मा ([illegible]) [illegible] भाव +तल् । [illegible] भिन्न होना । [illegible] है । भेदविशेष । फरक.

पृथग्जन, (पु०) पृथक् (भिन्न) [illegible] जनकी गिनतीमें नहीं । नीच । मूर्ख । [illegible]

पृथग्विध, (वि०) पृथक् (भिन्न भिन्न) विधके भिन्न २ प्रकार हों । [illegible] ([illegible]) [illegible].

पृथा, (स्त्री०) कुन्तिभोजकी कन्या । [illegible]

पृथि (थ) वी, (स्त्री०) [illegible] ([illegible]) [illegible].

पृथिवीपति, (पु०) [illegible]

पृथिवीश, (पु०) [illegible]

पृथु, (पु०) [illegible]

पृथुक, (न०) [illegible]

पृथुल, (वि०) [illegible]

पृथुश्री, (वि०) [illegible]

(पु०) पृथु उदरं यस्य । जिसका बड़ा पेट हो ।
मेढ़ा) । बड़े पेटवाला (त्रि०).

स्त्री०) पृथुवगुणयुक्ता । ङिवो ङीप् । भूमि । अमी-
टी इलाइची । काला जीरा.

(पु०) पर्द्-गति+काकु-सम्प्रसारण । सर्प । सांप ।
। । बिच्छू । व्याघ्र (भेड़िया) । गज (हाथी) ।
5 वृक्ष.

त्रि०) स्पृश्+नि । प्रच्छ+निपा पृ० । सर्व । बौना ।
। पतला । दुर्बल । कमजोर । और स्वल्प (थोड़ा) ।
। (कृष्णजीकी माता) (स्त्री०).

र्भ, (पु०) ६ त० । पृश्निका गर्भ । देवकीसुत । देव-
। बेटा । श्रीकृष्ण.

क-सींचना । भ्वा० आ० सक० सेट् । पर्षते । अपर्षिष्ट.

(न०) पृष्+अति । बिन्दु । (दाग) बूंद (त्रि०)
नेहारा.

(पु०) पृष्+अतच् । चित्ती बिन्दुवाला एक प्रकारका
प । श्वेतबिन्दुयुक्त मृग । और बूंद.

, (पु०) पृषत्+ (संज्ञायां) कन् । बाण । तीर.

श्व, (पु०) पृषतो बिन्दोः अश्व इव (वाहकत्वात्) ।
ग मानों घोड़ा है (उठानेसे) वायु । हवा.

ज्य, (न०) पृषद्-युक्तं (दधिबिन्दुयुक्तं) दधिसेक-
. वा आज्यं । शाक० । दहीकी बूंदोंवाला वा दहीसे
ाहुआ घृत (घी) । दहीसे मिलीहुई घी.

र, (पु०) पृष्+क्षिप् । बिन्दु । बूंद.

र, (त्रि०) पृषत् उदरे यस्य । पृषो० नि० ।
के पेटपर बिन्दियां हों । बिन्दुगर्भित । बिन्दुवाला ।
ोंवाला.

(न०) पृष्+थक् । शरीरके पीछेका भाग । पीठ ।
त्रविशेष.

त्, (अव्य०) पृष्ठ+तसिल् । पश्चात् भाग । पीछेसे ।
छे २.

ष्टि, (पु०) पृष्ठे (पश्चात्) दृष्टिः यस्य । जिसकी
र पीछेको हो । भालूक । भालू । रीछ.

ांस, (न०) पृष्ठस्य मांसम् । पीठका मांस.

श, (पु०) ६ त० । पीठका बांस । पीठकी (कन्धे-
ढालमें) हड्डी.

(न०) पृष्ठानां (सोपानां) समूह+यत् । सो-
का समूह । एक यज्ञ । पृष्ठेन वहति+यत् । पीठपर
ाता है । घोड़ा बैल आदि (त्रि०).

, (पु०) पच्+उन् इच् । इट्रक । उन् । हाथीकी
उस सिरा । पर्यङ्क । चारपाई । जूं (यूका) । और
य । बादल.

पेटक, (पु० न०) पिट्+ण्वुल् । पुस्तक आदि पदार्थोंके
टिकानेके लिये वेत्र (बेंत) आदिका बनाहुआ पदार्थ ।
और समूह । पटार । टोकरी । संदूक । थैला । ढेर.

पेय, (त्रि०) पा-पीना+कर्मणि यत् । पान करनेयोग्य ।
पीनेलायक । (पुं-न०) जल । पानी । दूध । वा
(स्त्री०) चावलोंकी खिचड़ी.

पेल्, कम्प । कांपना । अक० जाना० । सक० भ्वा० पर०
सेट् । पेलति । अपेलीत्.

पेल, (न०) पेल्+अच् । पुरुषका चिह्न (निशान) ।
एक अंग । अण्डकोष । फोता.

पेलव, (त्रि०) पेल्+वम् । पेलं वाति । वा+क । कोमल ।
कृश । विरल । नाजुक । नरम । कंदा । सुंदर.

पेश(स)ल, (त्रि०) पिश् (ए)+अलच् । सुंदर ।
दक्ष । चतुर । और कोमल । नरम । नाजुक.

पेशि-सी, (स्त्री०) पिश्+इन् वा । ङीप् । अण्डा । मांसपिण्ड ।
मांसका गोला । तलवारकी मियान । एक नदी । पिशाची ।
एक राक्षसी । इन्द्रका वज्र (पु०) । जूता.

पेष्, सेवाकरना । निश्चयकरना । भ्वा० आ० सक० सेट् ।
पेषते । अपेषिष्ट.

पेषण, (न०) पिष्+ल्युट् । चूर्णन । पीसना । " स्युट् "
खल (नीच).

पेषणी, (स्त्री०) पिष्यते अनया । अनि ■ ङीप् । पेषण-
शिला । पीसनेकी शिला.

पेस्, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पेसति । अपेसीत्.

पैठीनसि-सी, (पु०) मुनिभेद । एक मुनिका नाम.

पैतृक, (न०) पितृतः आगतम्+ठण् । पितासे प्राप्त
हुआ । दाय (जायदाद) वा विरसा.

पैतृष्वसेय-स्रीय, (पु० स्त्री०) । पितुः स्वसुः अपत्यं+
ढक् छण् वा । पिताकी बहिन (भूआ) का बेटा.

पैत्र, (न०) पितुः इदं । पिता देवता अस्य वा+अण् ।
पितामह वा पिता जिसका देवता है । तर्जनी और
अंगूठेके बीचका स्थान । पितृतीर्थ । पितरोंका । पितृ-
सम्बन्धी । पिताका (त्रि०).

पैशाच, (पु०) पिशाचेन विहित+अण् । एकप्रकारका
विवाह । जिसमें बरजोरी, वा मदमाते आदि दशामें
कन्याके न चाहनेपर भी पकड़लेता है (यह आठ प्रकारके
विवाहोंमें बहुतही निन्दित है) । एकप्रकारका देश.

पैशुनं-न्यम्, (न०) पिशुनस्य भाव+अण्+ष्यञ् वा ।
चुगलखोरी । सूचकपन । निन्दा.

पैष्टी, (स्त्री०) पिष्टस्य विकार+अण्+ङीप् । आटेसे बि-
नाई हुई शराब.

पूर्व (र्वे) क्र, (न०) कर्म० । (वैयकर्म) आनेवाला [illegible] (आदि कारन) सब्ज चिह्न (निशान). [illegible] । पहिल्य क्र.

पूर्व (र्वे) वादिन्, (पु०) व्यवहारे पूर्व (र्वं) प्रथमं वद-ति । वद्+णिनि । पहिले अभियोग (मामला-या नालिश) करनेहारा । पहिले बोलनेहारा.

पूर्वमीमांसा, (स्त्री०) पूर्वा मीमांसा । पहिली परीक्षा । पहिला विचार । वेदके कर्मकांडका विचार (इसीके [illegible] "उत्तरमीमांसा" कहते हैं).

पूर्वरङ्ग, (पु०) [illegible] पहिले करनेयोग्य संगीत [illegible].

पूर्ववयस्, (वि०) पूर्व वयः [illegible] । पहिली आयु (उमर)-[illegible] । [illegible] । जवान.

पूर्ववैरिन्, (वि०) पूर्वः वैरी । पहिला शत्रु.

पूर्वाभ्यास, (पु०) पूर्वः अभ्यासः । पहिले (पूर्वजन्म) का [illegible] ([illegible]).

पूर्वाम्बुधि, (पु०) पूर्वः अम्बुधिः । पूर्वदिशाका समुद्र । पूर्व समुद्र.

पूर्वाह्ण, (वि०) पूर्वः [illegible] । पूर्व (पहिलेजन्म) के [illegible] । [illegible].

पूर्वाह्ण [illegible], (पु० न०) । पूर्व. अर्ध+अहि [illegible] आधा [illegible].

पूर्वा [illegible], (स्त्री०) [illegible] नक्षत्र (तारा).

पूर्वा [illegible] (पु०) पूर्व (र्वं) [illegible] । प्रकाशित [illegible] । [illegible] विभाग [illegible] । पहिला दिन । आगा दिन । "अम-[illegible]) पूर्व (र्वं) के [illegible]" [illegible]

पूर्वे (र्वे) [illegible], (अव्य०) पूर्व (र्वे) [illegible] । [illegible]

[illegible]

पृक्त, (त्रि०) पृच्+क्त । मिश्रित । मिलाहु [illegible]

पृक्ति, (स्त्री०) पृच्+क्तिन् । मिलन.

पृक्थम्, (पृच्+थन्) । आयदाद । [illegible] आना विरसा.

पृच्, सम्पर्क-जोड़ना । मिलना । छूना । [illegible] सेट् । पृचे । अथर्वेद । "क" । पृक्त.

पृच्, सम्पर्क । मिलना-जुड़ना । [illegible] सेट् । पृणक्ति । आर्चति.

पृच्छक, (पु०) पृच्छ्+ण्वुल् । [illegible] मालूम करनेवाला.

पृच्छा, (स्त्री०) पृच्छ+अङ् । [illegible] न । पूछना । पूछ.

पृतना, (स्त्री०) पृ+तनन् । सेना (फौज) [illegible] की सेना) । (रथ २४३, हाथी २४३, [illegible] ति -पैदल ११९५.

पृथ, प्रोर (फेंकना) फैलाना । चु० [illegible] पार्थयति-ते.

पृथक्, (अव्य०) भिन्न । जुदा । [illegible] बिना । सिवा.

पृथक्त्व, (न०) पृथक् भाव [illegible] । [illegible] एक गुणविशेष । जुदा होना । जुदाई । [illegible]

पृथगात्मता, (स्त्री०) पृथक् आत्मा ([illegible] तस्य भाव+तल् । [illegible] भिन्न होना [illegible] है । भेदविशेष । फरक.

पृथग्जन, (पु०) पृथक् (भिन्न) [illegible] जनकी गिनतीमें नहीं । नीच । मूर्ख । [illegible]

पृथग्विध, (वि०) पृथक् (भिन्न भिन्न) [illegible] जिसके भिन्न २ प्रकार हों । [illegible] ([illegible]) [illegible].

पृथा, (स्त्री०) युधिष्ठिरादिकी [illegible]

पृथि (थ) वी, (स्त्री०) [illegible] ([illegible] [illegible] ([illegible]) का [illegible] । [illegible]

[illegible]

[illegible] करना । म्ना० आ० आ० [illegible] । [illegible]
[illegible]

[illegible] (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible] ओरसे होना) [illegible] । प्रसिद्धि । और [illegible].

[illegible] (त्रि०) प्र+[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

[illegible], (त्रि०) [illegible] प्रकट (आदि) हुआ । [illegible] हुआ.

[illegible], (पु०) प्र+[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । बहुत बोलनेवाला.

[illegible], (त्रि०) प्र+[illegible] । बोलनेवाला.

[illegible], (पु०) प्र+[illegible] । [illegible] । और अधिकार [illegible] " [illegible] ([illegible]) [illegible] आदि त्रि०)

[illegible], (न०) प्र+[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होता है । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) प्र+[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । प्रा० । [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible]) (न०)

[illegible], (त्रि०) [illegible] । प्रा० शा० । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible] ([illegible])

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible].

[illegible], (पु०) प्र+[illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible].

[illegible], (पु०) प्र+[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] (त्रि०)

[illegible], (त्रि०) प्र+[illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible].

[illegible], (न०) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible].

[illegible], (त्रि०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible])

[illegible], (पु०) [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०).

प्रकीर्ण, (न०) प्र+कॄ+[illegible] । [illegible] । [illegible] "[illegible]" [illegible] । [illegible] । [illegible] हुआ । [illegible] [illegible] । [illegible] (त्रि०)

प्रकीर्तित, (त्रि०) प्र+[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible]

प्रकुप्, [illegible] । [illegible] । [illegible] करना । [illegible] करना । [illegible] करना.

प्रकृत, (त्रि०) प्र+कृ+क्त । [illegible] । [illegible] [illegible] अधिकार [illegible] हो । [illegible] । [illegible] [illegible]

प्रकृति, (स्त्री०) [illegible] । प्र+कृ+क्तिन् । [illegible] [illegible] है । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible] ([illegible])

प्रकृतिस्थ, (त्रि०) [illegible] । [illegible]

प्रकृतिलय, (पु०) [illegible] । [illegible]

प्रकृतिसिद्ध, (त्रि०) [illegible] । [illegible]

प्रकृतिसुभग, (त्रि०) [illegible] ([illegible]) [illegible]

प्रकृतिस्थ, (त्रि०) [illegible]

प्रकृष्ट, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

प्रकोष्ठ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

प्रक्रम, (पु०) [illegible] । [illegible]

प्रक्रिया, (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

[illegible] (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

पोगण्ड, (त्रि॰) पवते पुनाति वा+पू मिच् । पौगण्डः एकदेशो यस्य । विकलाङ्ग । न्यूनाधिकाङ्ग । विगडे हुए अंगवाला । जिसके अंग छोटे बडे हों । पांचवे वर्षसे दस वर्षके नीचेकी अवस्थावाला बालक (पु॰) " पौगण्ड " यही अर्थ.

पोटा, (स्त्री॰) पु॰ पुट्+अच् । पुरुषलक्षणान्विता स्त्री । वह स्त्री कि जिसके लक्षण पुरुषके हों । दाढीमूछवाली स्त्री.

पोत, (पु॰) पू+तन् । बालक । नौकारूप यान । जहाज (नाव) की सवारी । समुद्रकी सवारी । घरका स्थान । कपडा और दसवरिसका हाथी (पु॰) ङीप्.

पोतवणिज्, (पु॰) पोते वणिक् । जहाजमें व्यापारी । नावसे व्यापार करनेहारा.

पोतवाह, (पु॰) पोतं (नावं) वहति । वह्+अण् । नाव चलानेहारा मल्लाह.

पोष, (पु॰) पुष्+घञ् । रक्षाकरना । पालना । परवरिश करना । आश्रयदेना.

पोषक, (पु॰) पुष्+ण्वुल् । पुष्टकरनेवाला । आश्रय देनेवाला.

पोषित, (त्रि॰) पुष्+णिच्+क्त । पालागया । पुष्ट किया गया.

पोषिन् पोष्टृ, (त्रि॰) पुष्+णिनि+तृच् वा । पालनेवाला । रक्षक.

पोष्यवर्ग, (पु॰) पोष्याणां (पालनीयानां) वर्गः (समुदायः) । वे लोग कि जिनका पालन करना उचित है । अवश्य पालनेलायक समूह (माता, पिता, गुरु, स्त्री, सन्तान, अतिथि आदि).

पौण्ड्र (पु॰) एक देश । उसके वासी ब॰ व॰ । +अर्थे अन् । इक्षुभेद । एकप्रकारका गन्ना । देश । पोंडा.

पौत्र, (पु॰) पुत्रस्य अपत्यं+अण् । पुत्रकी सन्तान । पोता । " ङीप् " पौत्री । पोती.

पौनःपुन्य, (न॰) पुनः पुनः इत्यस्य भावः+ष्यञ् । बारबार (बार २ होना) बहुत होना.

पौनर्भव, (पु॰) पुनर्भुवि (द्विरूढायां) भवः+अण् । दूसरी बार विवाहीहुई स्त्रीसे हुआ । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक प्रकार । पुनर्भूसम्बन्धीयि (पुनर्भूका) (त्रि॰) । बार २ होनेवाला (पु॰).

पौर, (न॰) पुरे (नगरे) भव+अण् । नगरमें हुआ । [illegible] । पुरवासी । नगरवासी । नागरी । [illegible] (त्रि॰).

पौरव, (पु॰) [illegible] । पुरुकी सन्तान । [illegible].

पौरस्त्य, (त्रि॰) [illegible] । पूर्वदिशामें हुआ । [illegible] । पूर्व हुआ । [illegible].

पौराण, (त्रि॰)-णी (स्त्री॰) पुराण+अण् साथ संबंध रखनेवाला । पुराणमें [illegible] निकला । पुराणके जाननेवाला.

पौराणिक, (पु॰) पुराणं वेत्ति ([illegible] पुराणको जानता वा पढाता है । [illegible] जाननेहारा.

पौरुष, (न॰) पुरुषस्य भावः कर्म वा+अण् । [illegible] वा काम । हिम्मत । विक्रम । बहादुरी । [illegible] इयत्तेदं+अण् । ऊपर फैलेहुए भुज और [illegible] प्यका परिमाण (माप).

पौरुषेय, (त्रि॰)-यी (स्त्री॰) पुरुष+ढञ् [illegible] थाया । पुरुषका सम्बन्धी । पुरुषका बनाया [illegible]

पौरोगव, (पु॰) पुरः (अग्रे) [illegible] यस्य पुरोगुः । ततः स्वार्थे अण् । [illegible] जिसकी आँख है । पाकशालाका अध्यक्ष ([illegible]

पौरोधसम्, (न॰) पुरोधसः कर्म+अण् । कर्तव्य (काम).

पौरोभाग्यम्, (न॰) पुरोभागस्य=दोषैकदृष्टेः [illegible] दूसरेके दोष (चूक) को देखनेका स्वभाव.

पौरोहित्यम्, (न॰) पुरोहितस्य कर्म+ष्यञ् । [illegible] पुरोहितका अधिकार.

पौर्णमास, (पु॰) पौर्णमास्यां विहितं+अण् । [illegible] दिन कियागया एकप्रकारका यज्ञ । " पौर्णमास [illegible] इति श्रुतिः.

पौर्वापर्यम्, (न॰) पूर्वापरस्य भावः+ष्यञ् । [illegible] पहिलेका संबंध । यथाक्रम । तरतीबवार । सिलसिला [illegible]

पौलस्त्य, (पु॰ स्त्री॰) पुलस्त्यस्य अपत्यं [illegible] स्त्यकी सन्तान । कुबेर । रावण आदि । [illegible] पनखा) (स्त्री॰)

पौलोमी, (स्त्री॰) पुलोम्नः अपत्यं स्त्री+अण् की कन्या । इन्द्रकी स्त्री । इन्द्राणी.

पौष, (पु॰) पुष्यनक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी [illegible] +अण् । जिस महिनेमें " पुष्य " नक्षत्र [illegible] हो । पूस । पौष । " पौषी " (स्त्री॰) । [illegible] पूर्णिमा (पूनो).

पौष्प, (त्रि॰)-ष्पी । (स्त्री॰) पुष्प+अण् [illegible] फूलसे निकला । फूलवाला । (स्त्री॰) [illegible] अरक) का नाम । एक प्रकारका मद्य ([illegible]

प्यान, (त्रि॰) [illegible] । [illegible] " [illegible] " भी इसी अर्थमें होता है.

प्याट्, [illegible] । [illegible] बुलाना । [illegible].

प्रक्व(क्वा)ण, (पु०) प्र+क्वण्+अप् घञ् वा । वीनकी आवाज । वीणाका शब्द.

प्रक्ष्वेडन, (पु०) प्र+क्ष्वेड+ल्यु । नाराचास्त्र । बिलकुल लोहेका तीर.

प्रखर, (त्रि०) प्रकृष्टः खरः । प्रा० स० । अत्यन्तोष्ण । बहुत तीखा । हयसज्जा । घोडेका साज । कुक्कुर । कुत्ता । अश्वतर (खच्चर) (पु०).

प्रख्या, (स्त्री०) प्र+ख्या+अ । सादृश्य । बराबरी । उत्तरपदमें रहता है । तुल्य अर्थमें " पितृप्रख्यः " ऐसे ही " निभ " आदि होते हैं.

प्रगण्ड, (पु०) प्रकृष्टः गण्डः (अवयवः) । अच्छा गाल (कपोल) । कोहनी (कूर्पर) से ले कक्ष (बगल). तक भुजा । दुर्ग (किले) की दीवार.

प्रगल्भ, (त्रि०) प्र+गल्भ+अच् । प्रत्युत्पन्नमति । जिसकी बुद्धि समयपर झट फुर्ती है । प्रतिभावाला । हाजिर जवाब । एक प्रकारकी नायिका (स्त्री०).

प्रगाढ, (त्रि०) प्रकर्षेण गाढं । गाह्+क्त । बहुत गाढा । अत्यन्त । भृश । दृढ । मजबूत.

प्रगुण, (त्रि०) प्रकृष्टो गुणो यस्य । सीधे स्वभाववाला । दक्ष । चतुर.

प्रगृह्य, (न०) प्र+ग्रह्+क्यप् । व्याकरणमें स्वरसन्धि न होनेलायक पद.

प्रगे, (अव्य०) प्रगीयते अत्र । प्र+गै+के । अतिप्रातःकाल । बहुत सवेर.

प्रगोपन, (न०) प्र+गुप्+अन । रक्षण । बचाव.

प्रग्रथन, (न०) प्र+ग्रन्थ्+अन । गुथना । गुथा । एक दूसरेको इकट्ठा करना.

प्रग्रह-ग्राह, (पु०) प्र+ग्रह्+अप्+घञ् वा । ग्रहण । पकडना । घोडे आदिकी रस्सी । लगाम । किरण । बन्दी । भाट । भुज । बाजू.

प्रघण, (न), (न०) प्र+हन्+अप् । बाहिरके दर्वाजेका कमरा । बरांडा । लोहेका मूसल (मोला).

प्रचण्ड, (त्रि०) प्रकर्षेण चण्डः । प्रा० । दुर्धर्ष । दुर्वह । दुरन्त । मुन्द । प्रतापी.

प्रचण्डघोष, (त्रि०) प्रचण्डः घोषो यस्य । बडे नादवाला । ऊंची नादवाला.

प्रचण्डसूर्य, (त्रि०) प्रचण्डः सूर्यः यत्र । तीक्ष्ण (तेज) सूर्यवाला (देश-स्थान).

प्रचण्डातप, (पु०) प्रचण्डः आतपः । भीषण (डरावनी) गरमी (धूप).

प्रचय, (पु०) प्र+चि+अच् । समूह । बढना । शिथिल (ढीला) नामी संयोग.

प्रचुर, (त्रि०) प्र+चुर+क । बहुल । बहुत.

प्रचेतस्, (पु०) प्र+चित्+असि । व[...] अच्छे दिलवाला (त्रि०).

प्रच्छ, जिज्ञासा । पूछना । तु० पर० द्विक[...] अप्राप्तीन्.

प्रच्छद, (न०) प्र+छद्+घ । गुनहार[...] द । अन्तर्द्वार (भीतरका दर्वाजह) [...]

प्रच्छन्नतस्कर, (पु०) प्रच्छन्नः तस्कर[...] (नजातागया) चोर.

प्रच्छर्दिका, (स्त्री०) प्रच्छर्दयति । छर्दि[...] रोग । छाटीकी बीमारी.

प्रच्छादन, (न०) प्रच्छाद्यते अनेन । छद्[...] जिस्से ढांपते हैं । उत्तरीय वस्त्र । कपडे[...]

प्रजन, (पु०) प्रजायते अनेन । प्र+जन्+[...] दिषु पुंगवस्य संयोजनम् । पहिले गर्भके लि[...] बैल आदिसे मिलाना । पशुओंके गर्भ ठह[...] उत्पत्ति.

प्रजा, (स्त्री० प्र+जन्+ड । सन्तति । जन । बे[...] रइयत.

प्रजाद, (त्रि०) प्रजां ददाति+दा+क । [...] वाला । वंध्यापनको दूरकरनेवाला.

प्रजानन, (त्रि०) नी (स्त्री०) प्र+जन्+णि[...] करनेवाला । उत्पादक.

प्रजान्तक, (पु०) प्रजा अन्तयति-ना, प्रज[...] यमराज । मृत्युकी देवता जो उत्पन्नहुए[...] डालता है.

प्रजापति, (पु०) ६ त० । प्रजाका पति । [...] ब्रह्मा । प्रजा रचनेहारा । दक्ष आदि नौंमें[...] जामाता (जवाई) । सूर्य । अग्नि । त्वष्टा । [...]

प्रजावती, (स्त्री०) प्रजा विद्यते अस्या +मतुप्[...] है । जिसकी सन्तान हो ऐसी स्त्री । माईकी[...] पुत्र भी अपना होनेसे).

प्रजेप्सु, (त्रि०) प्रजायाः ईप्सु =आप्तुं इच्छु[...] उ । प्रजाकी इच्छा करनेवाला.

प्रज्ञा, (स्त्री०) प्र+ज्ञा+अ । बुद्धि । सरस्वती । [...]

प्रज्ञान, (न०) प्र+ज्ञा+ल्युट् । बुद्धि । "[...] (निशान) "अच्".

प्रज्ञु, (त्रि०) प्रगते (विरले) जानुनी यस्य[...] के स्थानमें "ज्ञु" होता है) । बिरले घुटने [...]

प्रडीन, (न०) प्र+डी+क्त (तस्य न) । [...] (गति).

प्रणय, (पु०) प्र+नी+अच् । प्रीति । प्रीतिसे [...] उत्पत्ति । प्रेम (पियार) । विश्वास (भरोस[...] निर्वाण । शान्ति.

…न्, (पु०) प्रणयः (प्रेम) अस्ति अस्य+इनि । प्रेम वाला । भर्ता । नायक.

… (पु०) प्रकर्षेण नूयते अनेन । प्र+नु+अप् । जिससे स्तुति की जाती है । ओंकार । वेदके आदिमें पढने-य शब्द.

…, (पु०) प्र+नद्+घञ् । ऊंचाशब्द । कानका रोग.

…म, (पु०) प्र+नम्+घञ् । प्रणति । झुकना (आठ अंगों-व्यापारविशेष).

…य्य, (त्रि०) प्र+नी+ण्यत् । असम्मत । द्वेष्य । प्रीति-य । दुश्मन । प्रीतिरहित । साधु और पियारा (प्रिय).

…धान, (न०) प्रणिधीयते । प्र+नि+धा+ल्युट् । प्रयत्न । शिश । अभिनिवेश । एक बातपर झुकजाना । योगशास्त्र-"ध्यान" खयाल बांधना.

…धि, (पु०) प्रणिधीयते । प्र+नि+धा+कि । चर । दूत गुप्त-खुफिआ) । अनुचर (नौकर-चाकर) । याचन मांगना) और अवधान । खयाल.

…पत्, भ्वा० प० । पतति । अपातीत् । किसीके आगे झुकना । प्रणाम करना । आदरसे चरणोंपर गिरना । प्रणाम करना.

…पात, (पु०) प्र+नि+पत्+घञ् । झुकना । प्रणाम । "तद्विद्धि प्रणिपातेन" गीता.

…पातपुरःसर, (अव्य०) प्रणिपातः पुरः सरति यथा तथा । नमस्कारके साथ.

…पातशिक्षा, (स्त्री०) प्रणिपातस्य शिक्षा । प्रणाम करना । सिखलाना । झुकनेकी शिक्षा (इत्य).

…हित, (त्रि०) प्र+नि+धा+क्त । प्राप्त । पाया । स्थापित । रक्खाहुआ । समाधिमें लगाहुआ.

…ीत, (त्रि०) प्र+नी+क्त । वह पदार्थ कि जिसका रूप रंग आदि पकनेसे बदल गया हो । क्षिप्त । फेंकाहुआ । रक्खा हुआ । और किया हुआ । अग्नि । संस्कार की गई अग्नि (पु०) । यज्ञका पात्रविशेष (स्त्री०).

…तृ, (पु०) प्र+नी+तृच् । नायक । लेजानेवाला । बनानेवाला । रचना करनेवाला । शिक्षा देनेवाला.

…ेय, (त्रि०) प्र+नी+यत् । वश्य । आधीन । काबूमें आयाहुआ.

…तति, (स्त्री०) प्र+तन्+क्तिन् । विस्तार । फैलाव । वल्ली । लता । बेल.

…तन, (पु०) प्र+क्षुत्+घञ् । पुरातन पदार्थ । पुरानी चीज

…तल, (न०) प्रसृतं तलं । पातालविशेष । "प्रसृतं तलं यस्य" फैलीहुई अंगुलिओंवाला हाथ । चपेट (पु०).

प्रताप, (पु०) प्र+तप्+घञ् । कोष और दण्डसे उत्पन्न तेज । पराक्रम । गर्मी । उष्णता तप.

सं० ४१

प्रतारण, (न०) प्र+तृ+णिच्+ल्युट् । वंचन । ठगना "तुच्" प्रतारण.

प्रति, (अव्य०) व्याप्ति । फैलाना । अल्प भाग । उलटकर देना । को । ओर । फिर.

प्रतिकर्मन्, (न०) प्रति+कृ+मनिन् । कृत्रिम भूषा । बनावटी सजावट । सजाना.

प्रति(ती)कार, (पु०) प्रति+कृ+घञ् वा दीर्घ । वैरनिर्यातन । बदला निकालना । किये हुए अपकारका बदला अपकार करके शोधन करना । रोग आदिकी चिकित्सा । इलाज । हटाना.

प्रति(ती)काश (स), (त्रि०) । प्रतिरूपं काशते । काश+घञ् वा दीर्घ । तुल्यरूप । सदृश । समान । एक जैसा.

प्रतिकूल, (त्रि०) प्रतिरूपं कूलं यस्य अस्य । विरुद्धपक्षका । अनुकूल । विरुद्ध । बरखिलाफ । विरुद्धपक्षको अवलम्बन करनेवाला

प्रतिकृति, (स्त्री०) प्रति+कृ+क्तिन् । प्रतिमा । सादृश्य । तसवीर । मुआविजा । प्रतिनिधि । इवजी । बदली.

प्रतिक्षण, (अव्य०) क्षणं क्षणं व्याप्य । व्याप्ती अव्ययी० । अभीक्ष्ण । बार बार.

प्रतिक्षिप्त, (त्रि०) प्रति+क्षिप्+क्त । प्रेरित । फेंकाहुआ । अधिक्षिप्त । तिरस्कारयुक्त । बाधित । हटाया । गिराहुआ । निरादर कियाहुआ.

प्रतिगृहम्, (अव्य०) गृहंगृहं-अव्य० स० । हरघर । हर-एक घरमें.

प्रतिग्रह, (पु०) प्रति+ग्रह+अप् । स्वीकार । ग्रहण । धर्मके लियेगये द्रव्यका लेना । सेनाकी पीठ । दान लेना । थूकदान

प्रतिघातन, (न०) प्रति+हन्+स्वार्थे णिच् ल्युट् । वध । मारना.

प्रतिच्छन्दस्, (न०) छन्दः अभिप्रायः । प्रतिगतं छन्दः । अभिप्रायानुरूप । आशयके अनुसार । इच्छाके मुताबिक । प्रतिरूप । तसवीर

प्रतिच्छाया, (स्त्री०) प्रतिरूपं छाया । प्रा० । प्रतिमा । तसवीर । दूसरी छाया । प्रतिबिम्ब । सादृश्य । दूसरेकी सूरतका होना.

प्रतिज्ञा, (स्त्री०) प्रति+ज्ञा+अङ् । कर्त्तव्यत्वेनांगीकार । इकरार । स्वरूपेण वस्तुनिर्देश । स्वरूपसे वस्तुके कहना । "पर्वत वह्निमान् है" (यहां वह्निरूपसे पर्वतका निर्देश किया है) । स्वीकार (इकरार) जैसे इसने मेरा कहना स्वीकार किया है ऐसा जहां "कबूल" "प्रतिज्ञात".

प्रतिहत, (त्रि०) प्रति+हन्+क्त । रुकाहुआ अनुकूल प्रतिकूल विरुद्ध । द्वेष किया हुआ.

प्रक्र(का)ण, (पु०) प्र+कण्+अप् घञ् वा । वीनकी आवाज । वीणाका शब्द.

प्रक्ष्वेडन, (पु०) प्र+क्ष्वेड्+ल्यु । नाराचास्त्र । निपट्ठित लोहेका तीर.

प्रखर, (त्रि०) प्रकृष्टः खरः । प्रा० ग० । अत्यन्तोष्ण । बहुत तीखा । हयसज्जा । घोडेका साज । कुकुर । कुत्ता । अश्वतर (खच्चर) (पु०).

प्रख्या, (स्त्री०) प्र+ख्या+अ । सादृश्य । बराबरी । उत्तरपदमें रहता है । तुल्य अर्थमें " पितृप्रख्यः " ऐसे ही " निभ " आदि होते हैं.

प्रगण्ड, (पु०) प्रकृष्टः गण्डः (अवयवः) । अच्छा गाल (कपोल) । कोहनी (कूर्पर) से ले कक्ष (बगल). तक भुजा । दुर्ग (किले) की दीवार.

प्रगल्भ, (त्रि०) प्र+गल्भ+अच् । प्रत्युत्पन्नमति । जिसकी बुद्धि समयपर झट फुर्ती है । प्रतिभावाला । हाजिर जवाब । एक प्रकारकी नायिका (स्त्री०).

प्रगाढ, (त्रि०) प्रकर्षेण गाढं । गाह्+क्त । बहुत गाढा । अत्यन्त । मृश । दृढ । मजबूत.

प्रगुण, (त्रि०) प्रकृष्टो गुणो यस्य । सीधे स्वभाववाला । दक्ष । चतुर.

प्रगृह्य, (न०) प्र+ग्रह्+क्यप् । व्याकरणमें स्वरसन्धि न होनेलायक पद.

प्रगे, (अव्य०) प्रगीयते अत्र । प्र+गै+के । अतिप्रातःकाल । बहुत सवेर.

प्रगोपन, (न०) प्र+गुप्+अन । रक्षण । बचाव.

प्रग्रथन, (न०) प्र+ग्रंथ्+अन । गुथना । गुथा । एक दूसरेको इकट्ठा करना.

प्रग्रह-ग्राह, (पु०) प्र+ग्रह्+अप्+घञ् वा । ग्रहण । पकडना । घोडे आदिकी रस्सी । लगाम । किरण । बन्दी । भट । भुज । बाहु.

प्रघण, (न), (न०) प्र+हन्+अप् । बाहिरके दर्वाजेका कमरा । बरोठा । लोहेका मुग्दल (मोटा).

प्रचण्ड, (त्रि०) प्रकर्षेण चण्डः । प्रा० । दुर्धर्ष । दुर्वह । दुरन्त । प्रचण्ड । प्रतापी.

प्रचण्डघोण, (त्रि०) प्रचण्डा घोणा यस्य । बडे नाकवाला । ऊंची नाकवाला.

प्रचण्डमूर्ति, (त्रि०) प्रचण्डः मूर्तिः यस्य । तीक्ष्ण (तेज) मूर्तिवाला (वेग-मदन).

प्रचण्डातप, (पु०) प्रचण्डः आतपः । तीक्ष्ण (कडकती) धूप (घाम).

प्रचय, (पु०) प्र+चि+अच् । समूह । बटना । शिथिल (ढीला) अन्यः कर्पम.

प्रचुर, (त्रि०) प्र+चुर्+क । बहुत । बहुत.

प्रचेतस्, (पु०) प्र+चित्+असि । वरु. अच्छे दिलवाला (त्रि०).

प्रच्छ, जिज्ञासा । पूछना । तु० पर द्वि० अं० अग्राक्षीत्.

प्रच्छद, (न०) प्र+छद्+क । ... द । अन्तर्द्वार (भीतरका दर्वाजह) । ...

प्रच्छन्नतस्कर, (पु०) प्रच्छन्नः तस्करः (नजानागया) चोर.

प्रच्छर्दिका, (स्त्री०) प्रच्छर्दयति । छर्दि, रोग । दस्तकी बीमारी.

प्रच्छादन, (न०) प्रच्छाद्यते अनेन । ... जिससे ढांपते हैं । उत्तरीय वस्त्र । ऊपरके ...

प्रजन, (पु०) प्रजायते अनेन । प्र+जन्+अ ... दिषु पुंगवस्य संयोजनम् । पहिले गर्भ ... बैल आदिसे मिलाना । पशुओंके गर्भ ... उत्पत्ति.

प्रजा, (स्त्री० प्र+जन्+ड । सन्तति । जन । ... रय्यत.

प्रजाद, (त्रि०) प्रजां ददाति+दा+क । ... वाला । वंध्यापनको दूरकरनेवाला.

प्रजानन, (त्रि०) नी (स्त्री०) प्र+जन्+णिच्+... करनेवाला । उत्पादक.

प्रजान्तक, (पु०) प्रजा अन्तयति+णिच्, ... यमराज । मृत्युकी देवता जो उत्पन्नहुए ... करता है.

प्रजापति, (पु०) ६ त० । प्रजायाः पतिः । ... ब्रह्मा । प्रजा रचनेहारा । दक्ष आदि नवोंके ... जामाता (जमाई) । सूर्य । अग्नि । त्वष्टा ...

प्रजावती, (स्त्री०) प्रजा विद्यते अस्या+मतुप् ... है । जिसकी सन्तान हो ऐसी स्त्री । भाईकी ... पुत्र भी अपना होनेसे).

प्रजेप्सु, (त्रि०) प्रजायाः ईप्सु=आप्तुं इच्छु ... उ । प्रजाकी इच्छा करनेवाला.

प्रज्ञा, (स्त्री०) प्र+ज्ञा+अ । बुद्धि । मति ...

प्रज्ञान, (न०) प्र+ज्ञा+ल्युट् । बुद्धि । ... (निशान) "अब".

प्रज्ञु, (त्रि०) प्रगते (फिरके) जानुनी यस्य । ... के स्थ नमें "ज्ञु" होता है) । फिरके घुटने ...

प्रडीन, (न०) प्र+डी+क्त (तस्य न) । ... (गति).

प्रणय, (पु०) प्र+नी+अच् । प्रेम । ... प्रार्थना । धैर्य (विश्वास) । विनय (...) विश्वास । याचना.

…य, (पु०) प्रणयः (प्रेम) अस्ति अस्य+इनि । प्रेम वाला । भर्ता । मालिक.

…(पु०) प्रकर्षेण नूयते अनेन । प्र+नू+अप् । जिससे … स्तुति की जाती है । ओंकार । वेदके आदिमें पढने-… शब्द.

…, (पु०) प्र+नम्+घञ् । छेकाशब्द । बालका रोग.

…, (पु०) प्र+अम्+घञ् । प्रणति । झुकना (आठ अंगों-… नमस्कारविशेष).

…य, (त्रि०) प्र+नी+यत् । अभिमत । इष्ट । प्रीति-… य । दुश्मन । प्रीतिरहित । साधु और पियारा (प्रिय).

…धान, (न०) प्रणिधीयते । प्र+नि+धा+ल्युट् । प्रवेश । … शिष्टा । अभिनिवेश । एक बातपर झुकजाना । योगशास्त्र- "ध्यान" लगाना बांधना.

…धि, (पु०) प्रणिधीयते । प्र+नि+धा+कि । चर । दूत … गुप्तचर-गूप्तिया) । अनुचर (नौकर-चाकर) । याचना मांगना) और अवधान । सवाल.

…पत्, भ्वा० प० । पतति । अपप्तत्-अपातीत् । किसीके आगे … देना । प्रणाम करना । आदरसे चरणोंपर गिरना । … नम्र करना.

…णिपात, (पु०) प्र+नि+पत्+घञ् । झुकना । प्रणाम । "तद्विद्धि प्रणिपातेन" गीता.

…णिपातपुरःसर, (अव्य०) प्रणिपातः पुरः सरति यथा तथा । नमस्कारके साथ.

…णिपातशिक्षा, (स्त्री०) प्रणिपातस्य शिक्षा । प्रणाम करना । सिखलाना । झुकनेकी शिक्षा (इल्म).

…णिहित, (त्रि०) प्र+नि+धा+क्त । प्राप्त । पाया । स्थापित । रक्खाहुआ । समाधिमें लगाहुआ.

…णीत, (त्रि०) प्र+नी+क्त । वह पदार्थ … जिसका रूप रस आदि पकनेसे बदल गया हो । क्षिप्त । फेंकाहुआ । रचाहुआ । और कियाहुआ । यज्ञ । संस्कार की गई अग्नि (पु०) । यज्ञका पात्रविशेष (स्त्री०).

…णेतृ, (पु०) प्र+नी+तृच् । नायक । लेजानेवाला । बनानेवाला । उत्पन्न करनेवाला । शिक्षा देनेवाला.

…णेय, (त्रि०) प्र+नी+यत् । वश्य । अधीन । काबूमें आयाहुआ.

…तति, (स्त्री०) प्र+तन्+क्तिन् । विस्तार । फैलाव । बाढी । लता । बेल.

…तन, (पु०) प्र+तन्+ट्यु-तुट्च । पुरातन पदार्थ । पुरानी चीज.

…तल, (न०) प्रकृष्टं तलं । पाताळविशेष । "प्रकृष्टं तलं अस्य" फैलीहुई अंगुलिओंवाला हाथ । चपेट (पु०).

प्रताप, (पु०) प्र+तप्+घञ् । कोप और दण्डसे उपजा तेज । उपताप । गर्मी । आकका वृक्ष.

प्रतारण, (न०) प्र+तॄ+णिच्+ल्युट् । वंचन । ठगना "युच्" प्रतारणा.

प्रति, (अव्य०) व्याप्ति । फैलाना । प्रत्येक भाग । उलटकर देना । को । ओर । फिर.

प्रतिकर्मन्, (न०) प्रति+कृ+मनिन् । कृत्रिम भूषा । बनावटी सजावट । सजाना.

प्रति(ती)कार, (पु०) प्रति+कृ+घञ् वा दीर्घः । वैरनिर्यातन । बदला निकालना । कियेहुए अपकारका वैसाही अपकार करके शोधन करना । रोग आदिकी चिकित्सा । इलाज । हटाना.

प्रति(ती)काश (स), (त्रि०) । प्रतिरूपं काशते । काश+ अच् वा दीर्घ । तुल्यरूप । सदृश । समान । एक जैसा.

प्रतिकूल, (त्रि०) प्रतिरूपं कूलं पक्षः अस्य । विरुद्धपक्षवाला । अननुकूल । विरुद्ध । बरखिलाफ । विरुद्धपक्षको अवलम्बन करनेहारा.

प्रतिकृति, (स्त्री०) प्रति+कृ+क्तिन् । प्रतिमा । सादृश्य । तसवीर । मुआफिक । प्रतिनिधि । इवजी । बराबरी.

प्रतिक्षण, (अव्य०) क्षणे क्षणे व्याप्य । व्याप्तौ अव्ययी० । अभीक्ष्ण । बार बार.

प्रतिक्षिप्त, (त्रि०) प्रति+क्षिप्+क्त । प्रेषित । भेजाहुआ । अधिक्षिप्त । छिटकागया । बाधित । हटगया । तिरस्कृत । निरादर कियाहुआ.

प्रतिगृहम्, (अव्य०) गृहंगृहं-अव्य० स० । प्रतिघर । हरएक घरमें.

प्रतिग्रह, (पु०) प्रति+ग्रह+अप् । स्वीकार । कबूल । धर्मार्थ दियेगये द्रव्यका लेना । सेनाकी पीठ । दान लेना । सूर्य.

प्रतिघातन, (न०) प्रति+हन्+स्वार्थे णिच् ल्युट् । मारण । मारना.

प्रतिच्छन्दस्, (न०) छन्दः अभिप्रायः । प्रतिगतः छन्दः । अभिप्रायानुरूप । आशयके अनुसार । इरादेके मुआफिक । प्रतिरूप । तसवीर.

प्रतिच्छाया, (स्त्री०) प्रतिरूपा छाया । प्रा० । प्रतिमा । तसवीर । एकसी छाया । प्रतिरूपता । सादृश्य । एकजैसी शकलका होना.

प्रतिज्ञा, (स्त्री०) प्रति+ज्ञा+अ । कर्तव्यतयोपदेश । इकरार । साध्यत्वेन पक्षनिर्देश । साध्यस्वरूपसे पक्षको कहना । "पर्वत वह्निवाला है" (यहां वह्निमत्त्वसे पर्वतका निर्देश किया है) । व्यवहार (दावा) जैसे इसने मेरा अमुक पदार्थ लिया है देता नहीं "ल्युट्" "प्रतिज्ञानम्".

प्रतिज्ञात, (त्रि०) प्रति+ज्ञा+क्त । पहिला कहाहुआ प्रतिज्ञाका विषय । इकरार कियागया.

प्रतिदान, (न॰) प्रतिरूपं (तुल्यरूपं) दानं । प्रा॰ स॰ । विनिमय । बदला । तुल्यरूप दान । एक चीज देकर दूसरी लेना । न्यस्त द्रव्यका फिर अर्पण करना । अमानत हवाले करना.

प्रतिध्वनि, (पु॰) प्रतिरूपः ध्वनिः । प्रतिशब्द । एक जैसी आवाज । गूंज.

प्रतिध्वान, (पु॰) प्रति+ध्वन्+घञ् । प्रतिशब्द । गूंज । उलटाहुआ शब्द.

प्रतिनप्तृ, (पु॰) प्रतिनिहितः नप्ता । पौत्रः । प्रा॰ । पोतेका पोता । पड़पोता । प्रपौत्र.

प्रतिनिधि, (पु॰) प्रति+निधीयते । तुल्यरूपतया स्थाप्यते)। प्रति+नी+धा+कि । प्रतिरूप । वैसी शक्लवाला । अपनी जगह वैसाही कायम करना । एवजी । प्रतिमा । तस्वीर.

प्रतिनिर्यातनम्, (न॰) प्रतिकूलं निर्यातनं । लौटादेना । चुकादेना.

प्रतिनिविष्ट, (त्रि॰) प्रति+नि+विश्+क्त । अभिमानी । घमण्डस्वभाववाला । उलटा । कुटिल.

प्रतिपक्ष, (पु॰) प्रतिकूलः पक्षो यस्य । विरुद्ध पक्षवाला । शत्रु । व्यवहार । विरुद्ध प्रतिवादी । बरखिलाफ बोलनेहारा । प्रा॰ स॰ । समान.

प्रतिपत्ति, (स्त्री॰) प्रति+पद्+क्तिन् । प्राप्ति । प्रागल्भ्य । गौरव । चतुराई । गौरव । प्राप्ति । पदकी प्राप्ति । कर्तव्य ज्ञान.

प्रतिपद्, (स्त्री॰) प्रतिपद्यते (उपक्रम्यते) पक्ष. अनया । प्रति+पद्+क्विप् । पक्षको आरम्भ करनेवाली तिथि । प्रतिपदा । पड़वा । एकम.

प्रतिपन्न, (त्रि॰) प्रति+पद्+क्त । अवगत । जानाहुआ । स्वीकृत । मानाहुआ । निकाला । बदलाहुआ.

प्रतिपादन, (न॰) प्रति+पद्+णिच्+ल्युट् । दान देना । समझाना । बदला.

प्रतिप्रसव, (पु॰) प्रति+प्र+सू+अप् । निषिद्धकी फिर प्रवृत्ति सम्भावना । फिर पैदा होना.

प्रतिबन्ध, (पु॰) प्रति+बन्ध+घञ् । कार्यप्रतिघात । कामका रुकना+ल्युट् । प्रतिरोधक । रोकनेवाला (त्रि॰).

प्रतिबल, (पु॰) प्रतिकूलं बलं यस्य । विरुद्ध बलवाला शत्रु । "प्रतिरूपं बलं यस्य" । समान बलवाला (त्रि॰) "दो मे प्रतिबले होंके" बली.

प्रतिबिम्ब, (न॰) प्रतिगतं बिम्बं । बिम्बसदृश । परछाईं । प्रतिच्छाया.

प्रतिभय, (त्रि॰) प्रतिगतं भयं अस्मात् । भय देनेवाला । ह । भयदाई.

प्रतिभा, (स्त्री॰) प्रति+भा+अङ् । बुद्धि । ... फुर्तीकी अक्लि.

प्रतिभू, (पु॰) प्रतिनिधिः भवति । भू+क्विप् है । ज़ामिन । जामिन.

प्रतिमन्दिरम्, (अव्य॰) मन्दिरे-मन्दिरे (एक-एक) मन्दिर (घर) में.

प्रतिमा, (स्त्री॰) प्रति+मा+अङ । सदृश करना । मृत्तिकाशिलादिमूर्ति । मट्टी वा पत्थरकी तस्वीर । सदृश (समान । एक जैसा) (त्रि॰) "देवप्रतिमा".

प्रतिमान, (न॰) प्रतिमीयतेऽनेन । प्रति+मा+ल्युट् । प्रतिबिम्ब । परछाईं । प्रतिमा.

प्रतिमुक्त, (त्रि॰) प्रति+मुच्+क्त । पहिना । और छोड़ाहुआ । बांधागया । पहनाया । ...

प्रतियत्न, (पु॰) प्रति+यत् । नङ् । ... ग्रह । निग्रह । रोकना । एक चीजको दूसरी ... कामना । संस्कार । लेना मेहनती । "प्रतिरूपं ... ब॰ । एक जैसा यत्न करनेहारा । (त्रि॰)

प्रतियातना, (स्त्री॰) प्रति+यात्यते अनया । ... युच् । प्रतिमा । तसवीर । प्रा॰ स॰ । ... एक जैसी पीड़ा.

प्रतियोगिन्, (त्रि॰) प्रतिरूपं युनक्ति । ... युज् । विरुद्ध जुड़ता है । प्रतिकूल सम्बन्ध ... अभावका प्रतिकूल संबंधवाला होने ... प्रतियोगी है । विरुद्ध पक्षवाला । विरोधी.

प्रतिरूप, (न॰) प्रतिगतं रूप । प्रतिच्छाया । तसवीर । परछाईं "प्रतिगतं का रूप" । (समान एक जैसा) (त्रि॰).

प्रतिलोम, (त्रि॰) प्रतिगतं लोम (अनुलोमं ... प्रति+लोमन्+अच् । जो अनुकूलताके फिर ... विपरीत । उलटा.

प्रतिलोमज, (पु॰) प्रतिलोमात् जात । ... वर्णकी स्त्रीमें नीच वर्णसे उत्पन्न हुआ । ... संकर । दोगला.

प्रतिवचन, (न॰) प्रतिरूपं वचनं । ... वाक्य । उत्तर । जवाब विरुद्ध वाक्य । ... उलटा बोलना.

प्रतिवात, (त्रि॰) प्रतिगतो वातो यत्र । ... उलटा हुआ । जिस ओरसे वायु ओर ...

प्रतिवादिन्, (पु॰) प्रतिकूलं वदति । ... विरुद्ध पक्षवाला व्यवहार । प्रत्यर्थी । ... बोलनेवाला (त्रि॰).

ी (वेदि) न्, (त्रि०) प्रत्यासन्नं वसति (वि-प्रति+वस्+विन्) वा णिनि । पास रहनेवाला । । गृहासन्नवासी । घरके निकट वास करनेवाला । या.

धान, (न०) प्रति+वि+धा+ल्युट् । प्रतीकार । । बदलालेना.

रोध, (पु०) प्रति+रुध्+भावे घञ् । बाध । । प्रतिबंध । विघ्न । निरोध । तिरस्कार । चोर (चोरी) । "अच्".

श, (पु०) प्रति+विश्+घञ् । प्रतिवेशी । पड़ोसी । या.

शिन् (त्रि०)-नी (स्त्री०) प्रति+विश्+णिनि । सी । हमसाया । घरके साथ निवास करनेवाला.

शासन, (न०) प्रति+शास+ल्युट् । निकृष्ट भृत्यादि-आज्ञा करना । हुकम करना । विरुद्ध आज्ञा । वर्जि-त हुकम । "अप्रतिशासनं जगत्" रघुः.

श्या, (स्त्री०) प्रति+श्यै+अङ् । पीनसकी व्याधि । ला । "प्रतिश्यान", "प्रतिश्याय" भी इसी अर्थमें.

श्रय, (पु०) प्रतिश्रीयते । प्रति+श्रि+अप् । यज्ञका । सभा । घर । आसरा.

श्रव, (पु०) प्रति+श्रु+अप् । स्वीकार । कबूल कर-। मान लेना । गूंज.

श्रुत्, (स्त्री०) प्रतिरूपं श्रूयते । श्रु+क्विप् । एक जैसा ना जाता है । प्रतिशब्द । प्रतिध्वनि । गूंज । प्रतिज्ञा । करार.

षेध, (पु०) प्रति+षिध+घञ् । निषेध । रोकना । "मत कर" ऐसा कहना.

ष्टम्भ, (पु०) प्रति+स्तम्भ+घञ् । प्रतिबंध । रोक । अड़चन । विघ्न.

ष्ठा, (स्त्री०) प्रति+स्था+अङ् । क्षिति । पृथिवी । अ-वा यज्ञ आदिकी समाप्ति । चार अक्षरोंके चरणवाला एक छन्द । कूप आदिका संस्कार । अन्न आदिकी समाप्तिमें कर्तव्य कर्म । इज्जत । आश्रय । आसरा । "प्रतिष्ठा" इति श्रुतिः.

ष्ठापयितृ, (त्रि०) प्रति+स्था+णिच्+तृच्+पुगागमः । स्थित करनेवाला । कायम करनेवाला.

ष्ठित, (त्रि०) प्रति+स्था+क्त । बनजाया । स्थिर किया गया । स्थापा गया । प्रतिष्ठित किया गया । समाप्त किया गया.

सर, (पु०) प्रति+सृ+अच् । सेनाका पिछला भाग । हाथका सूत्र (कंगन) । हस्तसूत्र.

प्रतिसर्ग, (पु०) प्रतिरूपः प्रतिकूलो वा सर्गः । ब्रह्मादि सृष्टिके पीछे दक्ष आदि प्रजापतिओंकी सृष्टि । विरुद्ध रचना । प्रलय.

प्रतिसीरा, (स्त्री०) प्रति सिनोति सियते वा । रह दीर्घश्च । अवनिका । कनात । पड़दा.

प्रतिसूर्यक, (पु०) प्रतिरूपः सूर्यः+स्वार्थे कन् । उपसूर्य-कमण्डल । सूर्यकी सभा । इसके समान दिखनेवाला ज्योति (किरला).

प्रतिसृष्ट, (त्रि०) प्रति+सृज्+क्त । प्रत्याख्यात । तिरस्कार कियागया । भेजागया.

प्रतिसृष्ट, (त्रि०) प्रति+सृज्+क्त । भेजागया । इन्कार (निषेध) कर दियागया । दियागया । मस्त होगया.

प्रतिहत, (त्रि०) प्रति+हन्+क्त । वैर कियागया । रोका-गया । टक्कर मारा हुआ.

प्रति(ती)हार, (पु०) प्रति+हृ+घञ् वा दीर्घः । टक्कर चोट करना । दरवाजा । "अण्" । द्वारपाल । दरबान । (त्रि०) । "णिनि" प्रतीहारी "मायावी" इत्यादि.

प्रतीक, (पु०) प्रति+कन् । नि० दीर्घः । अवयव । हिस्सा । प्रतिरूप । दूसरी शकल । विलोम । करण । (त्रि०)

प्रतीक्षा, (स्त्री०) प्रति+ईक्ष+अ । अपेक्षा । इन्तिजारी । अवलम्बन । आशा.

प्रतीक्ष्य, (त्रि०) प्रति+ईक्ष+ण्यत् । पूज्य । इन्तजारके ला-यक । प्रतीक्षा कियागया

प्रतीच्य, (त्रि०) प्रतीच्यां भव+यत् । पश्चिमदिशामें होनेवाला । "यत्" "प्रतीच्य" यही अर्थ.

प्रतीत, (त्रि०) प्रति+इण्+क्त । ज्ञात । प्रसिद्ध । मश-हूर । हृष्ट । जानाहुआ । दृढ़ । खुश होगया । आदर-सहित । जीताहुआ । मानाहुआ । विश्वास कियागया.

प्रतीति, (स्त्री०) प्रति+इण्+क्तिन् । ज्ञान । ख्याति । इज्जत । मशहूरी । आदर । हर्ष । निश्चय.

प्रतीप, (त्रि०) प्रति+अप्+अच्० । अत् नि० । प्रतिकूल । खरण । चन्द्रवंशका एक राजा

प्रतीपदर्शिनी, (स्त्री०) प्रतीपं (प्रतिकूलं) दर्शयति । दृश्+णिच् । जो विरुद्ध कार्यको दिखला देती है । "णिनि" अर्थ । स्त्री । औरत.

प्रतीपवचनम्, (न०) प्रतीपं वचनं । विरुद्ध वचन । कर-नेके केवल.

प्रतीर, (न०) प्रतीरते । प्रति+तीर+अच् । तट । किनारा । जो दरवाजा.

प्रतोद, (पु०) प्रतुद्यते अनेन । तुद्+घञ् । जिससे पीड़ा होती है । घोड़े आदिके ताड़न करनेके लिये दण्ड । चाबुक.

प्रतोली, (स्त्री०) प्र+तुल्+अच् । ङीप् । रथ्या । गली-कूचा । शहरके बीचका मार्ग । हद्द आदिके पासका रास्ता.

प्रत्त, (त्रि०) प्र+दा+क्त । दियागया । देडालागया । भेंटा कियागया । विवाहमें दियागया । विवाहागया.

प्रत्न, (त्रि०) प्र+त्न । पुरातन । पुराना.

प्रत्यक्ष, (अव्य०) प्रतिरूपं अक्ष्णः । अव्ययी० अच् । आंखके सामने । इन्द्रियोंसे उत्पन्न हुआ ज्ञान । इन्द्रियजन्य ज्ञान । "अक्ष् वस्तवाला" (त्रि०).

प्रत्यक्षकृता-कृत्, (स्त्री०) प्रत्यक्षं कृता । साक्षात् देवताको संबोधन करनेवाला सूक्त (गीत).

प्रत्यक्षज्ञानम्, (न०) प्रत्यक्षं ज्ञानं । साक्षात् अनुभवसे प्राप्त हुआ ज्ञान.

प्रत्यक्षदर्शन-दर्शिन्, (पु०) प्रत्यक्षं पश्यति+दृश्+अन+वा इन् । साक्षात् देखनेवाला । आंखोंसे देखनेवाला.

प्रत्यक्षदृष्ट, (त्रि०) प्रत्यक्षं दृष्टः । साक्षात् (आंखोंके सामने) देखागया.

प्रत्यक्षपरीक्षणम्, (न०) प्रत्यक्षं परीक्षणं । साक्षात् परीक्षा करना (परखना । इम्तिहान लेना).

प्रत्यक्षप्रमा, (स्त्री०) प्रत्यक्षं प्रमा । इन्द्रियोंसे प्रत्यक्ष हुआ कोई ज्ञान । निश्चित ज्ञान.

प्रत्यक्षप्रमाण, (न०) प्रत्यक्षं प्रमाणम् । प्रत्यक्ष होनेका प्रमाण (सबूत).

प्रत्यक्षफल, (त्रि०) प्रत्यक्षं फलं यस्य । व्यक्त (प्रकट-जाहिर) फलवाला.

प्रत्यक्षभोग, (पु०) प्रत्यक्षः भोगः । इन्द्रियोंके सामने आया हुआ भोग.

प्रत्यक्षवादिन्, (पु०) प्रत्यक्षं वदति+णिनि । नेत्र आदि इन्द्रियोंसे जानीगई बात (सबूती) को स्वीकार करनेवाला । एकप्रकारका बौद्ध जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाणही मानता है.

प्रत्यक्षविहित, (त्रि०) प्रत्यक्षं विहितम् । साक्षात् विधान कियागया । वेदमें साक्षात् आज्ञा दियागया.

प्रत्यग्र, (त्रि०) प्रतिगतं अग्रं (अग्रभागम्) प्रा० । आगेहुआ । नूतन । नया । ताजहुआ.

प्रत्यच्, (त्रि०) प्रति+अञ्च्+क्विन् । पश्चिम काल । पिछला समय । पश्चिमका देश । पश्चिम दिशा "प्रतीची".

प्रत्यनीक, (पु०) प्रतिकूलं अनीकं यस्य । जिसकी सेना विरुद्ध हो । शत्रु । विघ्न । रोक.

प्रत्यन्त, (पु०) प्रतिगतः अन्तं । प्रा० । अन्ततक गया । म्लेच्छोंका देश । सीमापर देश । पासका देश (त्रि०).

प्रत्यन्तपर्वत, (पु०) प्रत्यन्तः (समीपस्थः) पर्वतः । बड़े पर्वतके पासका पर्वत.

प्रत्यपकार, (पु०) प्रतिगतः अपकारः । बदला । उलटकर अपकार (बुराई) करना.

प्रत्यभिज्ञा, (स्त्री०) प्रति+अभि+ज्ञा+अङ् । प्र... चाना.

प्रत्यभियोग, (पु०) प्रतिरूपोऽभियोगः । ... सवाल । अभियुक्त (मुद्दालय) ने ... (सवाल) ...

प्रत्यभिवाद, (पु०) प्रति+अभि+वद्+णिच्+... उठकर वंदना करना । आशीष्का वचन । "प्रत्य-भिवादन" (न०).

प्रत्यय, (पु०) प्रति+इण्+अच् । शपथ । सौ... जाना । विश्वास । अधीन । शब्द । छिद्र ... आधार । निश्चय । स्वादु । मजेदार । ज्ञान । ... धातु वा नामको निमित्तकरके विधान किया... प्रकारका शब्द.

प्रत्ययकारिन्-कारक, (त्रि०) प्रत्ययं करोति । ... ण्वुल् वा । निश्चय करने वा करानेवाला.

प्रत्ययित, (त्रि०) प्रति+अय्+क्त । प्राप्त । ... नेहारा । विश्वासी । प्रतिगत । उलटकर गया । ...

प्रत्यर्थिन्, (त्रि०) प्रत्यर्थयते । प्रति+अर्थ । ... णिनि । शत्रु । दुश्मन । "प्रतिकूलं अर्थयते" ... हारमें प्रत्यर्थी । मुद्दालय.

प्रत्यर्पण, (न०) प्रति+ऋ+णिच् पुक्+ल्युट् । ... फिरदेना । लियेहुए धनका फिरदेना । लौटना.

प्रत्यवयवम्, (अव्य०) अवयवं अवयवं (... प्रत्येक (हरएक) भागमें । विस्तारसे.

प्रत्यवसान, (न०) प्रति+अव+सो+ल्युट् । ... खाना.

प्रत्यवसित, (त्रि०) प्रति+अव+सो+क्त । ... लिया । खालिया.

प्रत्यवस्कन्द, (पु०) प्रति+अव+स्कन्द्+घञ् । ... (धर्मशास्त्र-कानून) में चार प्रकारके जवाबों... एक प्रकारका औषध (न०).

प्रत्यवस्थातृ, (त्रि०) प्रत्यवतिष्ठते । विरुद्ध ... है । प्रतिपक्षवादी । बरखिलाफ बोलनेवाला । शत्रु ...

प्रत्यवाय, (पु०) प्रति+अव+इण्+घञ् । ... गुनाह । दोष । विघ्न.

प्रत्यवेक्षणं-प्रत्यवेक्षा, (न० स्त्री०) प्रति+अव+... +अङ् । खबरगीरी रखना । ध्यान रखना । ...

प्रत्याख्यात, (त्रि०) प्रति+आ+ख्या+क्त । ... तिरस्कार कियाहुआ । दूर कियागया । ...

प्रत्याख्यान, (न०) प्रति+आ+ख्या+ल्युट् । ... इनकार । तिरस्कार.

प्रत्यागमन, प्रत्यागमनम्, (पु० न०) प्रति-आ+गम्+अप् । लौटना । पीछे आना । पहुंचना.

प्रत्यादिष्ट, (त्रि०) प्रति+आ+दिश्+क्त । निरस्त । निराकृत । पीछे हटाया हुआ । तिरस्कृत.

प्रत्यादेश, (पु०) प्रति+आ+दिश्+घञ् । निराकरण । रोकना । दुत्कार । हटाना । इनकार करना.

प्रत्यानयन, (न०) प्रति+आ+नी+ल्युट् । लौटाना । पीछे करना । फिर मिलाना.

प्रत्यालीढ, (न०) प्रति+आ+लिह्+क्त । धनुर्धरस्थिति-विशेष । बायें पांवको सिकोड़कर दहिने पांवके फैलानेसे तीरंदाजका खड़ा होना । धनुर्धारीका पैतरा । आक्रान्त । चाटाहुआ (त्रि०) "आलीढ" से उल्टा.

प्रत्यासन्न, (त्रि०) प्रति+आ+सद्+क्त । अतिनिकटस्थ । बहुत नज़दीक.

प्रत्याहार, (पु०) प्रति+आ+हृ घञ् । पीछे खेंचना । योग-शास्त्रमें "इन्द्रियोंको अपने २ विषयोंसे निराकरण हटाना" । संक्षिप्त होना । व्याकरणमें "अण्" आदि.

प्रत्युद्यम, (पु०) प्रति+उद्+यम । युद्धके लिये उद्योग (हिम्मत) । प्रधान प्रयोजनके साथ ही अप्रधानका आरम्भ करना । प्रत्येक कार्यमें जो पहिले पहिले करना उचित है । आरम्भ करना.

प्रत्युत्तर, (न०) प्रतिरूपं उत्तरं यस्य । जिसका ठीक उत्तर हो । उत्तरका उत्तर वचन । जवाबका जवाब.

प्रत्युत्थान, (न०) प्रति+उद्+स्था+ल्युट् । अभ्युत्थान । आये हुएके सम्मानके लिये आसनसे उठना । आगेसे उठना.

प्रत्युत्पन्नमति, (त्रि०) प्रत्युत्पन्ना (तत्कालोचिता) मतिर्यस्य । उसकालमें उचित बुद्धिवाला । जिसकी अकिल समयपर पूरी हो.

प्रत्युद्गमनीय, (न०) प्रति+उद्+गम्+अनीयर् । आगेसे उठनेलायक । धौतवस्त्रयुग्म । धोयेहुए दो कपड़े । उपस्थानके लायक । पूजाकरनेके योग्य (त्रि०).

प्रत्यूष, (पु०) प्रत्युषति (दहति) कामुकान् । उपरोगी होना+क । प्रभात । सबेर । दिनका मुख । कामिओंको पीड़ा देता है । आठ वसुओंमेंसे एक.

प्रत्यूह, (पु०) प्रति+उह्+घञ् । विघ्न । रुकावट.

प्रथ, प्रसिद्ध होना । भ्वा० आ० सक० सेट् । प्रथते । अप्र-थिष्ठ । "अट्" प्रथा.

प्रथम, (त्रि०) प्रथ्+अमच् । प्रधान । बड़ा । आद्य । पहिला । "जस्" ॥ सर्वनाम.

प्रथमकल्पित, (त्रि०) प्रथमं कल्पितः । पहिले चिन्तन (खयाल) किया गया.

प्रथमगर्भ, (त्रि०) प्रथमः गर्भः । पहिला गर्भ । पहिले पहिल गर्भधारी.

प्रथमदिवस, (पु०) प्रथमः दिवसः । पहिला दिन.

प्रथमपुरुष, (पु०) प्रथमः पुरुषः । पहिला पुरुष (अंग्रेजी मे तीसरापुरुष).

प्रथमयौवन, (न०) प्रथमं यौवनम् । पहिली जवानी जवानीकी हालत । युवावस्था.

प्रथमवयस्, (न०) प्रथमं वयः । पहिली उमर (आयु

प्रथमविरह, (पु०) प्रथमः विरहः । पहिला वियो (विछोड़ा).

प्रथमवृत्तान्त, (पु०) प्रथमः वृत्तान्तः । पहिली का (हाल) । पहिली अवस्था.

प्रथमसुकृत, (न०) प्रथमं सुकृतम् । पहिला पुण्य (ने काम) । पहिली मिहरबानी (दया) । पहिली सेवा.

प्रथमाश्रम, (पु०) प्रथमः आश्रमः । पहिला आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम.

प्रथमेतर, (त्रि०) प्रथमात् इतरः । पहिलेसे दूसरा.

प्रथित, (त्रि०) प्रथ+क्त । ख्यात । मशहूर । प्रसिद्ध जाहिर.

प्रथिमन्, (पु०) पृथोर्भावः । बड़ेका होना । पृथु+इम निच् । स्थूलत्व । मोटाई । मोटापन.

प्रदर, (पु०) प्र+दृ+अप् । विदारण । फाड़ना । भङ्ग तोड़ना । एक प्रकारका योनिका रोग.

प्रदीप, (पु०) प्र+दीप्+क । दीप । दीवा । दीआ । लैम्प

प्रदीपन, (पु०) प्रदीपयति जठराग्निं । प्र+दीप्+णिच्+ल्यु जो पेटकी आगको भड़काता है । एक प्रकारका विष (ज़हिर) । चमकानेहारा (त्रि०).

प्रदीप्त, (त्रि०) प्र+दीप्+क्त । जगाया हुआ । रौशन किया गया.

प्रदीप्तप्रज्ञ, (त्रि०) प्रदीप्ता प्रज्ञा यस्य । जगीहुई बुद्धि वाला । तीक्ष्ण बुद्धिवाला.

प्रदुष्ट, (त्रि०) प्र+दुष्+क्त । बिगड़गया । नीच । बद मास । पापी । बुरा.

प्रदेश, (पु०) प्र+दिश+घञ् । एकदेश । एक ज़िलह देश । मुल्क । भित्ति । दीवार.

प्रदेश(शि)नी, (स्त्री०) प्रदिश्यते अनया । प्र+दिश करणे ल्युट्-ङीप् । तर्जनी (अंगूठेके साथकी अङ्गुली) । इसीसे वस्तुका निर्देश कियाजाता है ।+णिनि "प्रदेशिनी" यही अर्थ.

प्रदोष, (त्रि०) प्र+दुष्+अ बुरा । बड़े दोष (ऐब) वाला । चूक । भूल । सायंकाल । रजनीमुख । रातका प्रारंभ । प्रदोष.

प्रद्युम्न, (पु॰) प्रकृष्टं द्युम्नं (बलं) यस्य । जिसका बड़ा बल हो । कंदर्प । कामदेव । श्रीकृष्णजीका पुत्र (बेटा).

प्रद्रव, (पु॰) प्र+द्रु+अप् । पलायन । भागना । यम् "प्रद्राव" यही अर्थ है.

प्रधन, (न॰) प्र+धा+क्यु । युद्ध । लड़ाई । जंग.

प्रधान, (न॰) प्र+धा+ल्युट् । सांख्यमतमें सिद्ध होगई सत्त्वरजस्तमोरूप तीन गुणोंवाली प्रकृति । उसका कार्य बुद्धितत्त्व । परमात्मा । प्रशस्त । बहुत अच्छा । और सचिव (वजीर) । सेनापतियोंका अध्यक्ष (मालिक) (पु॰) । श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) (त्रि॰).

प्रधानपुरुष, (पु॰) प्रधानः पुरुषः । राज्यमें बड़ा प्रसिद्ध वा मुख्य पुरुष । शंकरका नाम.

प्रधानमन्त्रिन्, (पु॰) प्रधानः मन्त्रः । मुख्य मन्त्री (वजीर).

प्रधानामात्य, (पु॰) प्रधानः अमात्यः । मुख्य मन्त्री । वज़ीर.

प्रधि, (पु॰) प्रधीयन्ते काष्ठानि अत्र । प्र+धा+कि । जहां लकड़ियें रक्खी जाती हैं । पहियेके भागरूप लकड़ियोंके जुड़नेका स्थान । रथकी नाभि । पहिया । धुरा.

प्रध्यान, (न॰) प्रकृष्टं ध्यानं । गाढ़ा ध्यान । मनका धीरे २ एक ओर लग जाना.

प्रपञ्च, (पु॰) प्र+पचि-फैलाना+घञ् । फैलाव । संसार । उल्लंघन । इकट्ठा । संचय । प्रतारण । ठगना.

प्रपञ्चबुद्धि, (त्रि॰) प्रपञ्चे-कपटे बुद्धिः यस्य । धूर्त । वंचक । ठगनेवाला । दगाबाज़.

प्रपञ्चित, (त्रि॰) प्र+पञ्च्+क्त । विस्तृत । फैलायागया । पूरा वर्णन कियागया.

प्रपतन, (न॰) प्र+पत्+ल्युट् । गिरना । मृत्यु । मौत । नाश.

प्रपतित, (त्रि॰) प्र+पत्+क्त । गिरगया । नाश होगया । मरगया.

प्रपथ्या, (स्त्री॰) प्रकृष्टा पथ्या । स्त्री॰ । अभया । बहुत हित करनेवाली । हरीतकी । हरिड़.

प्रपद, (न॰) प्रकृष्टं पदं । प्रा॰ स॰ । पांवके आगेका भाग । पादाग्रभाग.

प्रपन्न, (त्रि॰) प्र+पद्+क्त । शरणागत । शरणमें आयाहुआ । "प्रपन्नोऽस्मि" [illegible].

प्रपा, (स्त्री॰) [illegible] । बहुत पीते हैं इसमें । [illegible] । पानीका घर । प्याऊ.

प्रपात, (पु॰) [illegible] । [illegible] । बहुत गिरते हैं इसमें । तट (किनारे) के बिना । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

प्रपितामह, (पु॰) प्रगतः पितामहं यत् पितामहो वा । तिर्दे बाबा (परदादा) । अथवा अच्छा बाबा प्रजाके जनक [illegible] उत्पन्न करनेहारा चार मुखवाला ब्रह्मा [illegible] परबाबा उसकी । स्त्री । ङीप् (स्त्री).

प्रपौत्र, (पु॰) प्रगतः कारणतया पौत्रं । पोतेका पुत्र । पड़पोता.

प्रफुल्ल, (त्रि॰) प्र+फुल्-खिलना+अच् । [illegible] खिलाहुआ । "प्रफुल्त" यही अर्थ । [illegible]

प्रबन्ध, (पु॰) प्र+बंध+घञ् । संदर्भ । [illegible]

प्रबन्धकल्पना, (स्त्री॰) ६ त॰ । [illegible] थोड़ासा सत्य और बहुतही मिथ्या (झूठ) [illegible] रचना.

प्रबाल, (न॰) प्रकर्षेण बलति । [illegible] । कांपता है । नवपल्लव । नया पत्ता । [illegible] मूंगा । वीनका डण्डा.

प्रबुद्ध, (त्रि॰) प्र+बुध्+क्त । जागाहुआ । [illegible] शिक्षित । चतुर.

प्रबोध, (पु॰) प्र+बुध्+घञ् । [illegible] जागना । नींदसे रहित होना.

प्रबोधन, (न॰) प्र+बुध्+णिच्+ल्युट् । [illegible] जोसे पहिली गन्धके न्यून हो जानेपर [illegible] उद्दीपन करना । जागना । [illegible] समझाना.

प्रबोधनी, (स्त्री॰) प्रबुध्यते अनया । [illegible] जिससे जागता है । तुलसी । "प्रबुध्यते [illegible] समय विष्णु जागता है । कार्तिक [illegible] (कातक) के शुक्लपक्षकी एकादशी । "[illegible] अर्थ "प्र+बुध्+णिच्+णिनि+ङीप्.

प्रभञ्जन, (न॰) प्रभनक्ति वृक्षादीन् । [illegible] जिससे आदिको तोड़ता है । वायु । [illegible].

प्रभद्र, (पु॰) प्रकृष्टं भद्रं अस्मात् । [illegible] कल्याण होता है । नीमका वृक्ष.

प्रभव, (पु॰) प्रभवति अस्मात् । प्र+भू+[illegible] है इससे । पहिला प्रकाशका स्थान । [illegible] हारा । ६० वर्षोंमेंसे एक । "प्र+भू+[illegible] कम । [illegible] । जन्म.

प्रभविष्णु, (पु॰) प्र+भू+इष्णुच् । [illegible] अच्छा सकनेवाला । बड़ा स्वामी (मालिक).

प्रभविष्णु, (त्रि॰) प्र+भू+इष्णुच् । [illegible] पुरुष । [illegible] । शक्तिवाला.

प्रभा, (पु॰) प्र+भा+अङ् । दीप्ति । [illegible]

(पु०) प्रभां करोति । कृ+अच् । प्रकाश कर्ता । एक मीमांसाशास्त्रके बनानेहारा.

न०) प्र+भा+क्त । प्रकृष्टं भातं अत्र । जिस समय प्रकाश होता है । प्रात काल । सवेर । सुबह.

(पु०) प्र+भू+घञ् । राजाओंका कोप (राजाना) दण्ड (सजा) से उत्पन्न हुआ तेज । तेज । सामर्थ्य । । ताकत.

(पु०) एकप्रकारका तीर्थ । "प्रभासं पुष्कराणि च" इत्य०.

(पु०) प्र+भिद्+क्त । प्रभिन्नमदगज । वह हाथी की मस्ती चू रही हो । मद बहानेहारा हाथी । प्रभेद- । फरकवाला (त्रि०).

पु०) प्र+भु+डु । विष्णु । शब्द । पारद (पारा) । मी (अधिपति) (त्रि०).

, (पु०) प्र+भू+क्त । प्रचुर । बहुत । ज्यादा । (निक- हुआ) ऊंचा.

ि, (अव्य०) तदारभ्य । तबसे लेकर । "बहुब्रीहि समासमें यह शब्द पीछे रहता है" । "इन्द्रप्रमुखा देवाः".

, (त्रि०) प्र+मद्+क्त मस्त होगया । जिसको भारी मद चढगया है ।

थ, (पु०) प्र+मथ्+अच् । शिवजीका एक अनुचर नौकर) । और घोड़ा । हरीतकी (हरीड) (स्त्री०)

थन, (न०) प्र+मथ्+ल्युट् । वध । मारना । क्लेश पहुं- चाना । विलोडन.

प्रमथाधिप, (पु०) ६ त० । प्रमथोंका स्वामी । शिवजी महादेव.

प्रमाथिन्, (त्रि०) प्र+मथ्+णिनि । आचार करदेनेवाला । क्लेश देनेहारा.

प्रमथित, (त्रि०) प्र+मथ्+क्त । आचार कियागया । कष्ट पहुंचाया गया.

प्रमदवन, (न०) प्रमदस्य (हर्षस्य) वनं । राजाके अन्त पुर (जनाना) का वन । राजाके विलास करनेके लिये एक बाग.

प्रमदा, (स्त्री०) प्रमाद्यति अनया+अप् । जिससे बहुत मस्त हो जाताहै । उत्तम योषिता । उत्तम स्त्री । बहुत सुन्दर स्त्री.

प्रमनस्, (त्रि०) प्रहृष्टं मनो यस्य (इस पदका लोप होता है) । जिसका मन बहुत खुश होता है । प्रहृष्टचित्त । खुशदिल.

प्रमा, (स्त्री०) प्र+मा+अङ् । जिससे पदार्थका निश्चय हो । यथार्थ ज्ञान । ठीक ज्ञान । भ्रमरहित ज्ञान । ऐसा ज्ञान कि संदेह न रहे.

प्रमाण, (न०) प्रमीयते अनेन । जिससे सच्चा ज्ञान हो । यथार्थ ज्ञानका साधन । इन्द्रिय आदि । मर्यादा । शास्त्र । सच बोलनेवाला । हेतु । कारण । प्रमाता । "भावे ल्युट्" । सच्चा ज्ञान.

प्रमातामह, (पु०) प्रारब्धो मातामहो येन (आरब्ध पदका लोप होता है) । जिससे "नाना" का प्रारम्भ होता है । पडनाना । नानेका पिता । उसकी स्त्री "ङीप्" प्रमातामही (पडनानी).

प्रमाद, (पु०) प्र+मद्+घञ् । अनवधानता । बेपरवाही । कर्तव्यको अकर्तव्य समझकर न करना और अकर्तव्यको कर्तव्य समझ करना.

प्रमापण, (न०) प्र+मीञ् हिंसा-मारना+स्वार्थे णिच्-आत्व पुक्+ल्युट् । मारण । मारना.

प्रमिति, (स्त्री) प्र+मा+क्तिन् । प्रमा । यथार्थज्ञान । सच्चा ज्ञान । ठीक २ ज्ञान.

प्रमीत, (त्रि०) प्र+मीञ्-हिंसा+क्त । मृत । मरगया । यज्ञके लिये मारागया पशु.

प्रमीला, (स्त्री०) प्र+मील्+अ । तन्द्रा । ऊंघना । आंख मूंदना.

प्रमुक्त, (त्रि०) प्र+मुच्+क्त । खोल दियागया । त्याग कियागया.

प्रमुख, (न०) प्रकृष्टं मुखं (आरम्भः) । अच्छा आरम्भ । उससे लेकर । बहुब्रीहि समासमें यह पीछे रहता है । उप- वाला । मान्य । पहिला और श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) जिसका मुख सामने हो (त्रि०) समूह । सुपारी (पु०).

प्रमुदित, (त्रि०) प्र+मुद्+क्त । [illegible] । हर्षयुक्त । खुशी । प्रसन्न । खुश हुआ+सिध+णि+ल्युट् । सजाव.

प्रमेह, (पु०) रो । जेवर । पेश । भेद । "करणे ल्युट्" प्रमेय.

प्रमोद, (पु०) खी । खीप.

प्रयस, (त्रि०) धि, (पु०) प्रसाधनस्य विधिः । सजावटका नियम हंग) । सजावट.

प्रयत, विशेष, (पु०) प्रसाधनस्य विशेषः । विशेष- शो अर (सजावट) । भारी सजावट.

धिका, (स्त्री०) प्र+सिध्+णिच् ण्वुल्+टाप्-इ । सजानेवाली । सेंगार करनेवाली । किसी स्त्रीकी परि- चारिका.

प्रसाधित, (त्रि०) प्र+सिध्+णिच्+क्त । अलंकृत । सजा- याग्या । पूरा कियागया.

प्रसार, (पु०) प्र+सृ+घञ्+अ । फैलाव । मुंह खोलना । विस्तार.

प्रसारण, (न०) प्र+सृ+णिच्+ल्युट् । विस्तारकरना फैलाना.

प्र.

प्रद्युम्न, (पु०) प्रकृष्ट द्युम्न (धन) वाला । जिसका बड़ा बल हो । कंदर्प । कामदेव । श्रीकृष्णजीका पुत्र (बेटा).

प्रद्रव, (पु०) प्र+द्रु+अप् । पलायन । भागना । घञ् "प्रद्राव" यही अर्थ है.

प्रधन, (न०) प्र+धा+क्यु । युद्ध । लड़ाई । जंग.

प्रधान, (न०) प्र+धा+ल्युट् । सांख्यमतमें सिद्ध होनेवाली [illegible] तीन गुणोंकी प्रकृति । उसका कार्य बुद्धितत्त्व । [illegible] । [illegible] । बहुत अच्छा । और सचिव (वजीर) । [illegible] ([illegible]) (पु०) । श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) (त्रि०).

प्रधानपुरुष, (पु०) प्रधानः पुरुषः । [illegible] बड़ा [illegible] [illegible] पुरुष । [illegible].

प्रधानमंत्रिन, (पु०) प्रधानः मन्त्री । मुख्य मन्त्री (वजीर)

प्रधानामात्य, (पु०) प्रधान अमात्यः । मुख्य मन्त्री । [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible].

[illegible] (न०) [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible].

[illegible] (त्रि०) [illegible].

[illegible] (त्रि०) [illegible].

[illegible] (न०) [illegible].

[illegible] (त्रि०) [illegible].

[illegible] (पु०) [illegible].

[illegible] (न०) [illegible].

[illegible] (त्रि०) [illegible].

[illegible] (पु०) [illegible].

[illegible] (पु०) [illegible].

प्रपितामह, (पु०) प्रगतः पितरौ [illegible] पितामहो वा । जिसे बाबा (दादे) अथवा ब्रह्मा [illegible] प्रजाके जनक [illegible] उत्पन्न करनेहारा [illegible] [illegible] पड़बाबा [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]).

प्रपौत्र, (पु०) प्रगतः [illegible] पोतेका पुत्र । पड़पोता.

प्रफुल्ल, (त्रि०) प्र+फुल्-विकसने+[illegible] खिलाहुआ । "प्रफुल्त" यही अर्थ [illegible]

प्रबन्ध, (पु०) प्र+बंध+घञ् । [illegible]

प्रबन्धकल्पना, (स्त्री०) [illegible] थोडासा सत्य और बहुतही मिथ्या (झूठी) रचना.

प्रबाल, (न०) [illegible] । [illegible] बोलता है । [illegible] । नया पत्ता । [illegible] मूंगा । बीनका [illegible].

प्रबुद्ध, (त्रि०) प्र+बुध्+क्त । [illegible] । [illegible] । चतुर.

प्रबोध, (पु०) प्र+बुध+घञ् । [illegible] जागना । नींदसे रहित होना.

प्रबोधन, (न०) प्र+बुध्+णिच्+ल्युट् । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बोधन करना । जागना । [illegible] जगाना.

प्रबोधनी, (स्त्री०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] जागता है । [illegible] । [illegible] जब विष्णु जागता है । [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], (न०) [illegible] [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]

भद्र, (पु०) बल+अच् । बलो बलवानपि भद्र । (सौ-
र) । बलवाला होकर भी भद्र है । बलदेव और गवय
. गोवैद).

राम, (पु०) बलेन रमते । रम्+कर्तरि घञ् । कृष्णका
.. भाई । रोहिणीका नन्दन (प्रियपुत्र) । "संकर्षण"
.. राम".

वत्, (अव्य०) बल+अतिशये मतुप् "म" को "व"
होता है । अतिशय । बहुतही बलविशिष्ट । (बलवान्)
त्रि०).

वर्धन, (त्रि०) बलं वर्धयति । बलको बढानेवाला ।
वैदिक कर्मका अग्नि । "पौष्टिके बलवर्धन."

विन्यास, (पु०) बलानां (सैन्यानां) विशेषेण न्यासः
स्थापनम्) । व्यूह । एक प्रकारसे सेनाको खडा करना ।
सेनाकी रचना.

शालिन्, (त्रि०) बलेन शालते । शाल्+णिनि । बलसे
शोभता है । बलविशिष्ट । बलवाला । जोरावर.

सूदन, (पु०) बलं (तन्नामकं असुरं) सूद्+ल्यु ।
बल नामी दैत्यको नाश करता है । इन्द्र । "बलनिषूदनः".

ला, (स्त्री०) बलं अस्ति अस्याः । बलवाली । विश्वामित्र
मुनिसे रामचन्द्रको सीखाई एक प्रकारकी अस्त्रविद्या.

लाका, (स्त्री०) बलं (कम्पनं) अकति (गच्छति) ।
अक्+अच् । जो कांप जाता है । बकभेद । एक प्रकारका
बगला । बकश्रेणि । बगलोंकी कतार । पियारी स्त्री ।
प्रणयिनी.

लाट, (पु०) बलं अटति (ददाति) अट्+अच् । जो
बल (जोर) देती है । मुद्ग । मूंगी.

लात्, (अव्य०) बल+अत्+क्विप् । हठात् । जोरसे ।
जोरावरी । अवश्य । (पञ्चम्यन्त "बल" शब्दके
साथ इसकी गतार्थता नहीं क्योंकि "बलात्कार" इत्या-
दिकी सिद्धिके लिये इसे अवश्य स्वीकार करनाही पडेगा).

बलात्कार, (पु०) बलात्+कृ+घञ् । बलपूर्वक करण ।
जोरसे करना (हठात्करण).

बलानुज, (पु०) अनु जायते । अनु+जन्+ड । ६ त० ।
बलभद्रका छोटा भाई । श्रीकृष्णजी.

बलाय, (पु०) बलस्य अयः (स्थानं) । अय+घञ् । बल-
की जगह । वरुणनामी वृक्ष.

बलाराति, (पु०) बलस्य (तन्नामासुरस्य) अरातिः ।
बलनामी दैत्यका शत्रु । इन्द्र । "बलशत्रु" यही अर्थ.

बलाहक, (पु०) बलं (कम्पनं) आजहाति । आ+हा
क्वुन् । जो नहिं थोपता है । मेघ (बादल) । मुस्तक ।
मुथा । मोथा । पर्वत (पहाड) । और नागभेद । प्रलय-
कालके सात मेघोंमेंसे एक । विष्णुके चार घोडोंमेंसे एक.

बलि, (पु०) बल+इन् । पूजोपहार । पूजाकी भेट । राज
लेने योग्य भाग (कर-खिराज) । उपहार । उपर
चामरदण्ड । चौंरी । गृहस्थसे करनेलायक पांचयज्ञोंमें
"भूतयज्ञ" । "बलिकर्म ततः कुर्यात्" इति स्मृति
एक दैत्य । विरोचनका पुत्र । जरा (बुढापा) से चमें
शिथिल होना (स्त्री०) वा ङीप् । सिलवट । "गृहस्थ
सदा पश्येत् बलीरक्षितमात्मनः" इति स्मृतिः । उदर
यव । पेटका अंग । "वलित्रयं चारु बभार बाला"
कुमारः । गुदामें अंकुरके स्वरूपका मांसका पिण्ड.

बलिध्वंसिन्, (पु०) बलिं ध्वंसयति । स्वस्थानात् प
यति । ध्वंस्+णिच् णिनि । जो बलि दैत्यको अपने स्थान
गिराता है । विष्णु (वामनस्वरूपमें उसका ऐसा क
हुआ).

बलिन्-(भ), (त्रि०) । बलि+अस्त्यर्थे इन् भ वा । व
वाला । जरा (बुढेपा) से खीके चमडेवाला.

बलिन्, (त्रि०) बलं अस्ति अस्य इनि । बलवाला । जो
वाला । ऊंट । भैंसा । बैल । शूकर (सूअर) । बकरा

बलिनन्दन, पुत्र=सुत, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलि
पुत्र । बाण नामा दैत्य.

बलिपुष्ट, (पु०) बलिना (पूजोपहारद्रव्येण) पुष्टः । पु
क । पूजाकी भेटाके द्रव्यसे पकगया । काक । कौआ । क

बलिभुज्, (पु०) बलिं (पूजोपहारद्रव्यं) गृहस्थद
बलिं वा भुङ्क्ते । क्विप् । पूजाके साधनरूप पदार्थ वा गृहस्थ
दीगई बलिको खाता है । काक । वायस । कौआ । क

बलि(ली)मुख, (पु०) बलि (ली) युक्तं मुखं अस्य
बहु० । जिसका मुख बलि (सिलवट) वाला है । बा
र । बन्दर.

बलिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+इष्ठन् । बहु
बलवाला । अत्यन्तबलवान् । ऊष्ट्र । ऊंठ (पु०).

बलिसद्मन्, (न०) ६ त० । बलिका घर । पाताल
" बलिपुर ".

बलिहन्, (पु०) । बलिं हन्ति । बलिको मारनेवाला
विष्णु.

बलीयस्, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+ईयसु
बहुत जोरवाला.

बलीवर्द, (पु०) वृ+णिच्+अच् । ई (लक्ष्मीम्) बल=
बलो वा वृणाति । वा+क ईवर्दे । बली बलो ईवर्दयति
वृष । बैल.

बल्य, (न०) बलाय हितं । बल+यत् । प्रधान धा
वली बीज । शुक्र । वीर्य । मुसक्कर । और बलका साधन
बलीवर्द (बैल)(स्त्री०).

ब(व)ष्ट, तुदि-वध्या । अक० आत्म० सेट० है । [illegible]
द । बं(बं)हते.

वध्यभूमि, (स्त्री०) हन्+भावे यत्-वधादेशः । वध्यस्य भूमिः । मारनेलायक जगह (स्थान) । श्मशान । मसान । वधका स्थान । "वध्यस्थान".

वध्र, (न०) बन्ध+ष्ट्रन् । "न" का लोप । सीसक । सीसा । चमड़ेकी रस्सी (तसमा) (स्त्री०).

वन्, याचन । मांगना । तना० आत्म० द्विक० सेट् । वनुते । अवनिष्ट । वता वेट्.

बन्ध्, बन्धन । बांधना । क्र्या० पर० सक० अनिट् । बध्नाति । अभान्त्सीत्.

बन्ध, (पु०) बन्ध्+घञ् । संयमन । रोकना । निगड़ (संकली) आदिसे किसीकी गति (चाल) को रोकना । बांधना । "कर्मणि घञ्" देह । शरीर । ऋण (कर्ज) शोधन (चुकाना) के विश्वासके लिये रक्खा गया द्रव्य (कोई चीज) । आधि.

बन्धक, (पु०) बन्ध्+ण्वुल् । विनिमय । बदला । तुल्यरूप द्रव्य (एक जैसी चीज) देकर किसी दूसरे द्रव्यको बदलना (परिवर्त आदि । (न०) गिरवी रक्खी हुई चीज । पुंश्चली । असती स्त्री । व्यभिचारिणी । छिनार औरत । स्त्रियां ङीप्.

बन्धन, (न०) बन्ध्+भावे ल्युट् । निगड़ आदिसे संयमन (रोकना) बांधना । और वध (मारना) । "करणे ल्युट्" रज्जु । रस्सी.

बन्धनस्तम्भ, (पु०) ६ त० । बांधनेका थंभा (खंभा) हस्तिसंयमनकाष्ठ । हाथीके बांधनेकी लकड़ी । आलान । गजबंधन । किल.

बन्धनवेश्मन्, (न०) ६ त० । बांधनेका घर । जेलखाना । कैदखाना । "कारागार" "बंधनागार" आदि इसी अर्थमें हैं.

बन्धित्र, (पु०) बंध्+इत्र । प्यारका देखना । कामदेव । चमड़ेका पंखा । चर्मव्यजन । दाग । निशान.

बन्धु, (पु०) बध्नाति मनः (स्नेहादिना) । बंध+उ । जो स्नेह आदिसे मनको बांध लेता है । ज्ञाति । जात । मातृस्वसृपुत्रादि । मामेके बेटा आदि । बांधव । मित्र । पिता । माता । भाई । एक वृक्ष.

बन्धुता, (स्त्री०) बंधु+भावे तल् । वा समूहे । बंधुपन । बंधुओंका समूह.

बन्धुर, (न०) बंध्+उरच् । मुकुट । स्त्रीका चिह्न । चिड़ियोंका चूर्ण । बन्दिर । बहिरा । हंस । हंस । बगला । और खली । मनोहर । नम्र । ऊंचानीचा (ऊंचानीचा) (त्रि०) बहरा । बंजरी । सुन्दर । नम्र (स्त्री०).

बन्धुल, (त्रि०) बन्धु+उलच् । असतन । झुका हुआ । अन्य करनेवाला । दैत्य । सुन्दर । वेश्यागृहका एक सेवक । दुष्टार.

बन्ध्य, (पु०) (त्रि०) बन्ध्+यत् । समय पर फलसे शून्य वृक्ष । निष्फल । फलरहित । बंधनीय (रुकनेलायक) (त्रि०) । पुत्रशून्य (जिसे पुत्र नहीं होता) स्त्रियां टाप्.

बन्ध्याकर्कोटी, (स्त्री०) बन्ध्याया उत्तानं स्थान) कर्कोटी । पुत्र देनेसे बांझ औरतका नाश करनेवाली कर्कोटी (बांझ करोड़) बूटी । "बंध्यकन इत्यम्" । यही अर्थ.

बभ्र, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० से० । अबभ्रीत्.

बभ्रु, (पु०) भृ+कु (द्वित्वं) । बभ्र+उ वा । विष्णु । नकुल । नेवला । वह्नि । आग । एक देश । उस देशके वासी । ब० व० । पिंगल रंग । (पु०) । पीलेरंगवाला (त्रि०).

बभ्रुधातु, (पु०) कर्म० स्वर्ण । सोना । और गेरी (अल्वाक).

बभ्रुवाहन, (पु०) अर्जुनका बेटा (चित्रांगदासे

बर, (न०) वृ+अप् । । कुंकुम केसर । वृ+अप् । अदरक । "कर्मणि अप्" । जामाता (जमाई) देवता आदिसे मांगा करनेलायक । धूर्त और ष, "भावे अप्" वरण । कबूल करना । स्वीकार । त्रिफला । मेदा । ब्राह्मी । हरिद्रा (स्त्री).

बर्ब्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । अबर्बीत्.

बर्ह्, देना । मारना । स्तुति करना । और ढेर आत्म० सक० सेट् । बर्हते । अबर्हिष्ट.

बर्ह, (न०) बर्ह्+अच् । मयूरपिच्छ । मोरका पंख । पत्र । परीवार.

बल्, जीना । मारना । निष्पण-धपान । ढेर । भ्वा० उभ० सक० सेट् । बलति-ते । अबलीत् ।

बल, (न०) बल्+अच् । सैन्य । सेनाके जोर । सामर्थ्य (ताकत) । रूप । मोटाई । बल । वीर्य । देह । शरीर । पत्र । । पत्र । और रस (बलवाला (त्रि०) । कौआ । बखेरा । बलदेव (पु०).

बलक्ष, (पु०) बलं क्षायति अस्मात् । ऊंचा । जिस (ओर) घटता है । दुबला । सिर । बल वाला (त्रि०).

बलद, (पु०) बलं ददाति । बालक । शरीरको पुष्ट करनेवाला काम । एक प्रकारकी आग । बल देनेहारा (त्रि०).

बलदेव, (पु०) बलेन दीव्यति । दिव्+अच् । बल करता है । बलेन्द्रियो देवो वा । कर्म० । एक देवता । बलराम । श्रीकृष्णदेवका बड़ा भाई

भद्र, (पु०) बल्+अच् । बलो बलवानपि भद्रः (सौ-) । बलवाला होकर भी भद्र है । बलदेव और गवय (गेयँद).

-(म, (पु०) बलेन रमते । रम्+कर्तरि घञ् । कृष्णका -ठ भाई । रोहिणीका नन्दन (प्रियपुत्र) । "संकर्षण" -राम".

वत्, (अव्य०) बल+अतिशये मतुप् "म" को "व" ता है । अतिशय । बहुतही बलविशिष्ट । (बलवाला) त्रि०).

वर्धन, (त्रि०) बलं वर्धयति । बलको बढानेवाला । ष्टिक धर्मका अग्नि । "पंक्तिके बलवर्धन."

विन्यास, (पु०) बलानां (सैन्यानां) विशेषेण न्यास(स्थापनम्) । व्यूह । एक प्रकारसे सेनाको खड़ा करना । नाकी रचना.

शालिन्, (त्रि०) बलेन शालते । शाल्+णिनि । बलसे शोभता है । बलविशिष्ट । बलवाला । जोरावर.

सूदन, (पु०) बलं (तन्नामकं असुरं) सूद्+ल्यु । ल नामी दैत्यको मारा करता है । इन्द्र । "बलनिषूदनः".

ा, (स्त्री०) बलं अस्ति अस्याः । बलवाली । विश्वामित्र मुनिसे रामचन्द्रको दीगई एक प्रकारकी अस्त्रविद्या.

ाका, (स्त्री०) बलं (कम्पनं) अकति (गच्छति) । र्+अच् । जो कांप जाता है । बकभेद । एक प्रकारका बगला । बकश्रेणि । बगलोंकी कतार । पियारी स्त्री । कामिनी.

ाद, (पु०) बलं अदति (ददाति) अद्+अच् । जो बल (जोर) देती है । मुद्ग । मूंगी.

ात्, (अव्य०) बल+अत्+क्विप् । हठात् । जोरसे । जोरावरी । अचानक । (पञ्चम्यन्त "बल" शब्दके साथ इसकी गतार्थता नहीं क्योंकि "बलात्कार" इत्यादिकी सिद्धिके लिये इसे अवश्य स्वीकार करनाही पड़ेगा).

ात्कार, (पु०) बल त्+कृ+घञ् । बलपूर्वक करना । जोरसे करना (हठात्करण).

ानुज, (पु०) अनु जायते । अनु+जन्+ड । ६ त० । बलभद्रका छोटा भाई । श्रीकृष्णजी.

ाय, (पु०) बलस्य अयः (स्थानं) । अय+घञ् । बलकी जगह । वरुणनामी वृक्ष.

ारााति, (पु०) बलस्य (तन्नामकासुरस्य) अरातिः । बलनामी दैत्यका शत्रु । इन्द्र । "बलशत्रु" यही अर्थ.

ाहक, (पु०) बलं (कम्पनं) आजहाति । बल+हा क्वुन् । जो नहीं कांपता है । मेघ (बादल) । मुस्तक । मुथा । मोथा । पर्वत (पहाड) । और नागभेद । प्रलयकालके सात मेघोंमेंसे एक । विष्णुके चार घोड़ोंमेंसे एक.

बलि, (पु०) बल-इन् । पूजोपहार । पूजाकी भेट । राजाके लेने योग्य भाग (कर-खिराज) । उपहार । उपद्रव । चामरदण्ड । चौंरी । गृहस्थके करनेलायक पांचयज्ञोंमेंसे "भूतयज्ञ" । "बलिकर्म ततः कुर्यात्" इति स्मृतिः । एक दैत्य । विरोचनका पुत्र । जरा (बुढापा) से चर्मका शिथिल होना (स्त्री०) वा ङीप् । सिकुडि । "गृहस्थस्तु यदा पश्येत् वलीपलितमात्मनः" इति स्मृतिः । उदरावयव । पेटका अंग । "वलित्रयं चारु बभार बाला" इति कुमारः । गुदामें अंकुरके स्वरूपका मांसका पिण्ड.

बलिध्वंसिन्, (पु०) बलिं ध्वंसयति । स्वस्थानात् पातयति । ध्वन्स्+णिच् णिनि । जो बलि दैत्यको अपने स्थानसे गिराता है । विष्णु (वामनस्वरूपमें उनका ऐसा नाम हुआ).

बलिन्-(भ), (त्रि०) । बलि+मत्वर्थे इन् भ वा । बलिवाला । जरा (बुढेपा) से ढीले चमडेवाला.

बलिन्, (त्रि०) बलं अस्ति अस्य इनि । बलवाला । जोरवाला । ऊंट । भैंसा । बैल । शूकर (सूअर) । बलराम.

बलिनन्दन, पुत्र-सुत, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलिका पुत्र । बाण नामा दैत्य.

बलिपुष्ट, (पु०) बलिना (पूजोपहारद्रव्येण) पुष्टः । पुष+क्त । पूजाकी भेटाके द्रव्यसे पलाया । काक । कौआ । कां.

बलिभुज, (पु०) बलिं (पूजोपहारद्रव्यं) गृहस्थदत्तबलिं वा भुंक्ते । क्विप् । पूजाके साधनरूप पदार्थ वा गृहस्थसे दीगई बलिको खाता है । काक । वायस । कौआ । कां.

बलि(ली)मुख, (पु०) बलि (ली) युक्तं मुखं अस्य । शाक० । जिसका मुख बलि (सिकुडि) वाला है । बानर । बन्दर.

बलिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+इष्ठन् । बहुत बलवाला । अत्यन्तबलवान् । उष्ट्र । ऊंठ (पु०).

बलिसद्मन्, (न०) ६ त० । बलिका घर । पाताल । "बलिपुर".

बलिहन्, (पु०) । बलिं हन्ति । बलिको मारनेवाला । विष्णु.

बलीयस्, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+ईयसु । बहुत जोरवाला.

बलीवर्द, (पु०) वृ+क्विप्-वर् । ई (कन्दर्प) वर्धन=ईवर्दः तां ददाति । दा+क ईवर्दः । बली चासौ ईवर्दश्च । वृष । बैल.

बल्य, (न०) बलाय हितं । बल+यत् । प्रधान धातु । बडी धैंच । शुक्र । वीर्य । पुष्ट । और बलका साधन । अतिबला (बैल)(स्त्री०).

ब(व)ह, वृद्धि-करना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । इदित् । बं(वं)हते.

वध्यभूमि, (स्त्री०) हन्+भावे यत्-वधादेशः । वध्यस्य भूमिः । मारनेलायक जगह (स्थान) । श्मशान । मशान । वधका स्थान । "वध्यस्थान".

वध्र, (न०) बन्ध+ष्ट्रन् । "न" का लोप । सीसक । सीसा । चमडेकी रस्सी (तसमा) (स्त्री०).

वन्, याचन । मांगना । तना० आत्म० द्विक० सेट् । वनुते । अवनिष्ट । वता वेट्.

वन्ध्, बन्धन । बांधना । क्र्या० पर० सक० अनिट् । बध्नाति । अभान्त्सीत.

वन्ध, (पु०) वन्ध्+घञ् । संयमन । रोकना । निगड (सांकली) आदिसे किसीकी गति (चल) को रोकना । बांधना । "कर्मणि घञ्" देह । शरीर । ऋण (कर्जा) शोधन (चुकाना) के विश्वासके लिये रक्खा गया द्रव्य (कोई चीज) । आधि.

वन्धक, (पु०) वन्ध्+ण्वुल् । विनिमय । बदला । तुल्यरूप द्रव्य (एक जैसी चीज) देकर किसी दूसरे द्रव्यको बदलना (परिवर्त आधि । (न०) गिरवी रक्खी हुई चीज । पुंश्चली । असती स्त्री । व्यभिचारिणी । छिनार औरत । स्त्रियां ङीप्.

वन्धन, (न०) वन्ध्+भावे ल्युट् । निगड आदिसे संयमन (रोकना) बांधना । और वध (मारना) । "करणे ल्युट्" रज्जु । रस्सी.

वन्धनस्तम्भ, (पु०) ६ त० । बांधनेका थंभा (खंभा) हस्तिसंयमनकाष्ठ । हाथीके बांधनेकी लकडी । आलान । गजबंधन । किला.

वन्धनवेश्मन्, (न०) ६ त० । बांधनेका घर । जेलखाना । कैदखाना । "कारागार" "बंधनागार" आदि इसी अर्थमें हैं.

वन्धित्र, (पु०) बंध्+इत्र । प्यारका देवता । कामदेव । चमडेका पंखा । चर्मव्यजन । दाग । निशान.

वन्धु, (पु०) बध्नाति मनः (स्नेहादिना) । बंध+उ । जो पियार आदिसे मनको बांध लेता है । ज्ञाति । जात । मातुलपुत्रादि । मामेके बेटा आदि । बांधव । मित्र । पिता । माता । भाई । एक वृक्ष.

वन्धुता, (स्त्री०) बंधु+भावे तल् । वा समूहे । बंधुपन । बंधुओंका समूह.

वन्धुर, (न०) बंध्+उरच् । मुकुट । स्त्रीका चिह्न । तिलोंका चूर्ण । बधिर । बहिरा । तोता । हंस । बगला । और [illegible]सी । मनोहर । नम्र । इटीम । उन्नतानत (ऊंचानीचा) (त्रि०) वेश्या । कंजरी । खल्लु । खल्लू (स्त्री०).

वन्धुल, (त्रि०) बन्धु+उलच् । अवनत । झुका हुआ । प्रसन्न करनेवाला । हर्षप्रद । सुन्दर । वेश्यापुत्र । एक पेड़ । दुफ्फस.

वन्ध्य, (पु०) (त्रि०) बन्ध्+यत् । [illegible] फलसे शून्य वृक्ष । निष्फल । [illegible] नीय (रुकनेलायक) (त्रि०) । पु[illegible] (जिसे पुत्र नहीं होता) स्त्रियां टाप्.

वन्ध्याकर्कोटी, (स्त्री०) वन्ध्याया [illegible] स्यात्) कर्कोटी । पुत्र देनेमें बांझ [illegible] नेवाली कर्कोटी (बांझ ककोड) वृ[illegible] थन इयम्" । वही अर्थ.

वभ्र्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० [illegible] अवभ्रीत्.

वभ्रु, (पु०) भृ+कु (द्वित्वं) । [illegible] विष्णु । नकुल । नेवला । वह्नि । आग । [illegible] देश । उस देशके वासी । ब० व० । पि[illegible] रंग । (पु०) । पीलेरंगवाला (त्रि०).

वभ्रुधातु, (पु०) कर्म० स्वर्ण । सोना । [illegible] और गेरी (कालाक).

वभ्रुवाहन, (पु०) अर्जुनका बेटा ([illegible]

वर, (न०) वृ+अप् । । कुङ्कुम केशर । वृ+अप् [illegible] अदरक । "कर्मणि अप्" । जामाता ([illegible] देवता आदिसे आशा करनेलायक । पूर्व और [illegible] "भावे अप्" वरण । कबूल करना । [illegible] निष्पत्ति । मेदा । माल्ली । हरिद्रा (स्त्री).

वर्ध्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । [illegible] अवर्धीत्.

वर्ह्, देना । मारना । स्तुति करना । और [illegible] आत्म० सक० सेट् । बहते । अवर्हिष्ट.

वर्ह, (न०) वर्ह्+अच् । मयूरपिच्छ । मोरका पं[illegible] पत्र । परीवार.

वल्, जीना । मारना । निष्पन्न-पयान । [illegible] भ्वा० उभ० सक० सेट् । वलति-ते । अवलीत् । [illegible]

वल, (न०) वल्+अच् । सैन्य । सेनाके [illegible] सामर्थ्य (ताकत) । स्थौल्य । मोटाई । गंध । र[illegible] वीर्य । देह । शरीर । पत्र । रूप । और रस ([illegible] बलवाला (त्रि०) । कौआ । बलदेव । [illegible] देत्य (पु०).

वलक्ष, (पु०) वलं क्षायति अस्मात् । क्षै+क । [illegible] (ओर) घटता है । शुक्लवर्ण । सि[illegible] वाला (त्रि०).

वलद, (पु०) वलं ददाति । दा+क । शरीरमें पु[illegible] रनेवाला काम । एक प्रकारकी आग । [illegible] देनेहारा (त्रि०).

वलदेव, (पु०) वलेन दीव्यति । दिव्+अच् । [illegible] कता है । वलोद्दिष्टो देवो वा । कर्म० । [illegible] एक देवता । बलराम । श्रीकृष्णदेवका बड़ा भाई.

द्र, (पु०) बल+अन् । बली बलवानपि भद्रः (सौ-) । बलवाला होकर भी भद्र है । बलदेव और गवय गोर्हद).

राम, (पु०) बलेन रमते । रम्+कर्तरि घञ् । कृष्णका भाई । रोहिणीका नन्दन (प्रियपुत्र) । "संकर्षण" राम".

वत्, (अव्य०) बल+अतिशये मतुप् "म" को "व" होता है । अतिशय । बहुतही बलविशिष्ट । (बलवाला) त्रि०).

वर्धन, (त्रि०) बलं वर्धयति । बलको बढानेवाला । पौष्टिक कर्मका अग्नि । "पौष्टिके बलवर्धनः"

विन्यास, (पु०) बलानां (सैन्यानां) विशेषेण न्यासः (स्थापनम्) । व्यूह । एक प्रकारका सेनाको खड़ा करना । सेनाकी रचना.

शालिन्, (त्रि०) बलेन शालते । शल्+णिनि । बलसे शोभता है । बलविशिष्ट । बलवाला । जोरावर.

सूदन, (पु०) बलं (तन्नामकं असुरं) सूद्+ल्यु । बल नामी दैत्यको मारा करता है । इन्द्र । "बलनिषूदनः".

, (स्त्री०) बलं अस्ति अस्याः । बलवाली । विश्वामित्र मुनिसे रामचन्द्रको दीगई एक प्रकारकी मन्त्रविद्या.

का, (स्त्री०) बलं (कम्पनं) अकति (गच्छति) । अक्+अच् । जो कांप जाता है । बकभेद । एक प्रकारका बगला । बकश्रेणि । बगलोंकी कतार । पियारी स्त्री । कामिनी.

ट, (पु०) बलं अटति (ददाति) अट्+अच् । जो बल (जोर) देती है । मुद्ग । मूंगी.

त्, (अव्य०) बल+अत्+क्विप् । हठात् । जोरसे । जोरावरी । अचानक । (पञ्चम्यन्त " बल " शब्दके साथ इसकी गतार्थता नहीं क्योंकि "बलात्कार" इत्यादि सिद्धिके लिये इसे अवश्य स्वीकार करनाही पड़ेगा).

त्कार, (पु०) बलात्+कृ+घञ् । बलपूर्वक करण । जोरसे करना (हठाकरण).

नुज, (पु०) अनु जायते । अनु+जन्+ड । ६ त० । बलभद्रका छोटा भाई । श्रीकृष्णजी.

य, (पु०) बलस्य अय. (स्थानं) । अय+घञ् । बल- की जगह । वरुणनामी वृक्ष.

राति, (पु०) बलस्य (तन्नामासुरस्य) अरातिः । बलनामी दैत्यका शत्रु । इन्द्र । "बलशत्रु" यही अर्थ.

ाहक, (पु०) बलं (कम्पनं) आजहाति । आ+हा ण्वुन् । जो नहीं कांपता है । मेघ (बादल) । मुस्तक । मुथा । मोथा । पर्वत (पहाड़) । और नागभेद । प्रलय- कालके सात मेघोंमेंसे एक । विष्णुके चार घोड़ोंमेंसे एक.

बलि, (पु०) बल+इन् । पूजोपहार । पूजाकी भेट । राजासे लेने योग्य भाग (कर-खिराज) । उपप्लव । उपद्रव । चामरदण्ड । चौरी । गृहस्थसे करनेलायक पांचयज्ञोंमेंसे "भूतयज्ञ" । "बलिकर्म ततः कुर्यात्" इति स्मृतिः । एक दैत्य । विरोचनका पुत्र । जरा (बुढापा) से चर्मका शिथिल होना (स्त्री०) वा ङीप् । सिलवटि । "गृहस्थस्तु यदा पश्येत् वलीपलितमात्मनः" इति स्मृतिः । उदरावयव । पेटका अंग । "वलित्रयं चारु बभार बाला" इति कुमारः । गुदामें अंकुरके स्वरूपका मांसका पिण्ड.

बलिध्वंसिन्, (पु०) बलिं ध्वंसयति । स्वस्थानात् पातयति । ध्वन्स्+णिच् णिनि । जो बलि दैत्यको अपने स्थानसे गिराता है । विष्णु (वामनस्वरूपमें उसका ऐसा नाम हुआ).

बलिन्-(भ), (त्रि०) । बलि+अस्त्यर्थे इन् भ वा । बलि- वाला । जरा (बुढेपा) से ढीले चमडेवाला.

बलिन्, (त्रि०) बलं अस्ति अस्य इनि । बलवाला । जोर- वाला । ऊंट । भैंसा । बैल । सूकर (सूअर) । बलराम.

बलिनन्दन, पुत्र=सुत, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलिका पुत्र । बाण नामा दैत्य.

बलिपुष्ट, (पु०) बलिना (पूजोपहारद्रव्येण) पुष्टः । पुष+क्त । पूजाकी भेटके द्रव्यसे पलगया । काक । कौआ । कां.

बलिभुज्, (पु०) बलिं (पूजोपहारद्रव्यं) गृहस्थदत्तबलिं वा भुङ्क्ते । क्विप् । पूजाके साधनरूप पदार्थ वा गृहस्थसे दीगई बलिको खाता है । काक । वायस । कौआ । कां.

बलि(ली)मुख, (पु०) बलि (ली) युक्तं मुखं अस्य । शाक० । जिसका मुख बलि (सिलवटि) वाला है । बानर । बन्दर.

बलिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+इष्ठन् । बहुत बलवाला । अत्यन्तबलवान् । उष्ट्र । ऊंठ (पु०).

बलिसद्मन्, (न०) ६ त० । बलिका घर । पाताल । " बलिपुर ".

बलिहन्, (पु०) । बलिं हन्ति । बलिको मारनेवाला । विष्णु.

बलीयस्, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+ईयसु । बहुत जोरवाला.

बलीवर्द, (पु०) वृ+क्विप्=वर् । ई (लक्ष्मीम्) वर्दः=ई- वर्दो तो ददाति । दा+क ईवर्दः । बली चासौ ईवर्दश्चेति । वृष । बैल.

बल्य, (न०) बलाय हितं । बल+यत् । प्रधान धातु । बड़ी धातु । शुक्र । वीर्य । जुगतद । और बलका साधक । अतिबला (बेल)(स्त्री०).

ब(व)ह, वृद्धि-बढना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । बर्हते । बं(वं)हते.

वध्यभूमि, (स्त्री०) हन्+भावे यत्-वधादेशः । वध्यस्य भूमिः । मारनेलायक जगह (स्थान) । श्मशान । मशान । वधका स्थान । "वध्यस्थान".

वध्र, (न०) वन्ध+ष्ट्रन् । "न" का लोप । सीसक । सीसा । चमड़ेकी रस्सी (तसमा) (स्त्री०).

वन्द्, याचन । मांगना । तना० आत्म० द्विक० सेट् । वनुते । अवनिष्ट । वना वेट्.

वन्ध्, बन्धन । बांधना । क्या० पर० सक० अनिट् । बध्नाति । अभान्त्सीत्.

वन्ध, (पु०) बन्ध्+घञ् । संयमन । रोकना । निगड (सँकली) आदिसे किसीकी गति (चल) को रोकना । बांधना । "कर्मणि घञ्" सेट् । शरीर । ऋण (कर्ज) शोधन (चुकाना) के विश्वासके लिये रक्खा गया द्रव्य (कोई चीज) । आधि.

वन्धक, (पु०) बन्ध्+ण्वुल् । विनिमय । बदला । तुल्यरूप द्रव्य (एक जैसी चीज) देकर किसी दूसरे द्रव्यको बदलना (परिवर्त आदि । (न०) गिरवी रक्खी हुई चीज । पुंश्चली । असती स्त्री । व्यभिचारिणी । छिनार औरत । स्त्रियां ङीप्.

वन्धन, (न०) बन्ध्+भावे ल्युट् । निगड आदिसे संयमन (रोकना) बांधना । और वध (मारना) । "करणे ल्युट्" रज्जु । रस्सी.

वन्धनस्तम्भ, (पु०) ६ त० । बांधनेका थंभा (खंभा) हस्तिसंयमनकाष्ठ । हाथीके बांधनेकी लकड़ी । आलान । गजबंधन । किला.

वन्धनवेश्मन्, (न०) ६ त० । बांधनेका घर । जेलखाना । कैदखाना । "कारागार" "बंधनागार" आदि इसी अर्थमें हैं.

वन्धित्र, (पु०) बंध्+इत्र । प्यारका देवता । कामदेव । चमड़ेका पंखा । चर्मव्यजन । दाग । निशान.

वन्धु, (पु०) बध्नाति मनः (स्नेहादिना) । बंध+उ । जो पियार आदिसे मनको बांध लेता है । ज्ञाति । जात । मातुलपुत्रादि । मामेके बेटा आदि । बांधव । मित्र । पिता । माता । भाई । एक वृक्ष.

वन्धुता, (स्त्री०) बंधु+भावे तल् । वा समूहे । बंधुपन । बंधुओंका समूह.

वन्धुर, (न०) बंध्+उरच् । मुकुट । स्त्रीका चिह्न । तिलोंका चूर्ण । बधिर । बहिरा । बोरा । हंस । बगला । और पक्षी । मनोहर । नम्र । हलीम । उन्नतानत (ऊंचानीचा) (त्रि०) वेश्या । कंजरी । राण्ड । स्त्रू (स्त्री०).

वन्धुल, (त्रि०) बन्ध्+उलच् । असती । झुका हुआ । प्रसन्न करनेवाला । हर्षकर । सुन्दर । वेश्यापुत्रका एक सेवक । एकजार.

वन्ध्य, (पु०) (त्रि०) बन्ध्+यत् । फला... फलसे शून्य वृक्ष । निष्फल । फलहीन । ... नीय (रुकनेलायक) (त्रि०) । पुत्रहीन (जिसे पुत्र नहीं होता) स्त्रियां टाप्.

वन्ध्याकर्कोटी, (स्त्री०) बन्ध्याया ... (स्नात्) कर्कोटी । पुत्र देनेसे बांझ औरत ... नेवाली कर्कोटी (बांझ कोड़) स्त्री । "... भन इत्यम्" । वही अर्थ.

वभ्र, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० ... अवभ्रीत्.

वभ्रु, (पु०) भृ+कु (द्वित्वं) । ... विष्णु । नकुल । नेवला । वह्नि । आग । ... देश । उस देशके वासी । व० व० । पिङ्ग... रंग । (पु०) । पीलेरंगवाला (त्रि०).

वभ्रुधातु, (पु०) कर्म० स्वर्ण । सोना । ... और गेरी (लालखाक).

वभ्रुवाहन, (पु०) अर्जुनका बेटा (चित्रांगदा...).

वर, (न०) वृ+अप् । । कुङ्कुम केसर । वृ+अप् । ... अदरक । "कर्मणि अप्" । जामाता (... देखना आदिसे आदर करनेलायक । पूर्वको स... "भावे अप्" वरण । कबूल करना । ... त्रिफला । मेदा । ब्राह्मी । हरिद्रा (स्त्री).

वर्ब्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ... अवर्बीत्.

वर्ह्, देना । मारना । स्तुति करना । और ... आत्म० सक० सेट् । बर्हते । अबर्हिष्ट.

वर्ह, (न०) बर्ह्+अच् । मयूरपिच्छ । मोरका पंख । पत्र । परीवार.

वल्, जीना । मारना । निरूपण-बनाना । ... भ्वा० उभ० सक० सेट् । बलति-ते । अबलीत् । ...

वल, (न०) बल्+अच् । सैन्य । सेनाके ... सामर्थ्य (ताकत) । स्थौल्य । मोटाई । गंध । रस । ... वीर्य । देह । शरीर । पत्र । । पत्र । और रस (... बलवाला (त्रि०) । कौआ । बलदेव । ... दैत्य (पु०).

वलक्ष, (पु०) बलं क्षायति अस्मात् । क्षै+क । ... (जोर) घटता है । शुक्लवर्ण । सित... वाला (त्रि०).

वलद, (पु०) बलं ददाति । दा+क । शरीरको पुष्ट करनेवाला काम । एक प्रकारकी आग । ... देनेहारा (त्रि०).

वलदेव, (पु०) बलेन दीव्यति । दिव्+अच् । ... करता है । क्योंकि... देवो वा । ष० ... एक देवता । बलराम । श्रीकृष्णदेवका बड़ा भाई.

...द्र, (पु०) बल+अच्। बलो बलवानपि भद्रः (सौ- ...)। बलवाला होकर भी भला है। बलदेव और गवय ... गौदैद).

...राम, (पु०) बलेन रमते। रम्+कर्तरि घञ्। कृष्णका ...र भाई। रोहिणीका नन्दन (प्रियपुत्र)। "संकर्षण" ...नाम".

...वत्, (अव्य०) बल+अतिशये मतुप् "म" को "व" ...ता है। अतिशय। बहुतही बलविशिष्ट। (बलवाला) त्रि०).

...वर्धन, (त्रि०) बलं वर्धयति। बलको बढानेवाला। ...ष्टिक कर्म वा अग्नि। "पौष्टिके बलवर्धनः"

...विन्यास, (पु०) बलानां (सैन्यानां) विशेषेण न्यासः (स्थापनम्)। व्यूह। एक प्रकारसे सेनाको खड़ा करना। ...नाकी रचना.

...शालिन्, (त्रि०) बलेन शालते। शाल्+णिनि। बलसे शोभता है। बलविशिष्ट। बलशाला। जोरावर.

...सूदन, (पु०) बलं (तन्नामकं असुरं) सूदयतेऽनेन ...। बल नामी दैत्यको नाश कर्ता है। इन्द्र। "बलनिषूदनः".

...ला, (स्त्री०) बलं अस्ति अस्याः। बलवाली। विश्वामित्र मुनिसे रामचन्द्रको दीगई एक प्रकारकी ब्रह्मविद्या.

...ाका, (स्त्री०) बलं (कम्पनं) अकति (गच्छति)। ...अक्+अच्। जो कांप जाता है। बकभेद। एक प्रकारका बगला। बकपंक्ति। बगलोंकी कतार। पियारी स्त्री। प्रणयिनी.

...ाट, (पु०) बलं अटति (ददाति) अट्+अच्। जो बल (जोर) देती है। मुद्र। मूंगी.

...ात्, (अव्य०) बल+अत्+क्विप्। हठात्। जोरसे। जोरावरी। अवश्यक। (पञ्चम्यन्त "बल" शब्दके साथ इसकी सतार्थता नहीं क्योंकि "बलात्कार" इत्यादिकी सिद्धिके लिये इसे अवश्य स्वीकार करनाही पडेगा).

...लात्कार, (पु०) बलात्+कृ+घञ्। बलपूर्वक करण। जोरसे करना (हठात्करण).

...लानुज, (पु०) अनु जायते। अनु+जन्+ड। ६ त०। बलभद्रका छोटा भाई। श्रीकृष्णजी.

...लाय, (पु०) बलस्य अयः (स्थानं)। अय+घञ्। बलकी जगह। वरुणनामी वृक्ष.

...लाराति, (पु०) बलस्य (तन्नामासुरस्य) अरातिः। बलनामी दैत्यका शत्रु। इन्द्र। "बलशत्रु" यही अर्थ.

बलाहक, (पु०) बलं (कम्पनं) आजहाति। आ+हा+वुन्। जो नहीं कांपता है। मेघ (बादल)। मुस्तक। मुथा। मोथा। पर्वत (पहाड)। और बगलभेद। प्रलयकालके सात मेघोंमेंसे एक। विष्णुके चार घोडोंमेंसे एक.

बलि, (पु०) बल+इन्। पूजोपहार। पूजाकी भेट। राजासे लेने योग्य भाग (कर-खिराज)। उपद्रव। उपद्रव। चामरदण्ड। चोरी। गृहस्थसे करनेलायक पांचयज्ञोंमेंसे "भूतयज्ञ"। "बलिकर्म ततः कुर्यात्" इति स्मृतिः। एक दैत्य। विरोचनका पुत्र। जरा (बुढापा) में चर्मका शिथिल होना (स्त्री०) वा ङीप्। शिकुडि। "गृहस्थस्तु यदा पश्येत् बलीपलितमात्मनः" इति स्मृतिः। उदरावयव। पेटका अंग। "बलित्रयं चारु बभार बाला" इति कुमारः। गुदामें अंकुरके स्वरूपका मांसका पिण्ड.

बलिध्वंसिन्, (पु०) बलिं ध्वंसयति। स्वस्थानात् पातयति। ध्वन्स्+णिच्+णिनि। जो बलि दैत्यको अपने स्थानसे गिराता है। विष्णु (वामनस्वरूपमें उसका ऐसा नाम हुआ).

बलिन्-(भ), (त्रि०)। बलि+अस्त्यर्थे इन् भ वा। बलिवाला। जरा (बुढेपा) से ढीले चमडेवाला.

बलिन्, (त्रि०) बलं अस्ति अस्य इनि। बलवाला। जोरवाला। ऊंट। भैंसा। बैल। शूकर (सूअर)। बलराम.

बलिनन्दन, पुत्रः-सुत, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलिका पुत्र। बाण नामा दैत्य.

बलिपुष्ट, (पु०) बलिना (पूजोपहारद्रव्येण) पुष्टः। पुष्+क्त। पूजाकी भेटोंके द्रव्यसे पलगया। काक। कौआ। कां.

बलिभुज्, (पु०) बलिं (पूजोपहारद्रव्यं) गृहस्थदत्तबलिं वा भुङ्क्ते। क्विप्। पूजाके साधनरूप पदार्थ वा गृहस्थसे दीगई बलिको खाता है। काक। वायस। कौआ। कां.

बलि(ली)मुख, (पु०) बलि (ली) युक्तं मुखं अस्य। वानर। जिसका मुख बलि (शिकडि) वाला है। बानर। बन्दर.

बलिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बली। बलिन्+इष्ठन्। बहुत बलवाला। अत्यन्तबलवान्। उष्ट्र। ऊंठ (पु०).

बलिसद्मन्, (न०) ६ त०। बलिका घर। पाताल। "बलिपुर".

बलिहन्, (पु०)। बलिं हन्ति। बलिको मारनेवाला। विष्णु.

बलीयस्, (त्रि०) अतिशयेन बली। बलिन्+ईयसुन्। बहुत जोरवाला.

बलीवर्द, (पु०) वृ+क्विप्-वर्। ई (लक्ष्मीं) बलति। बली वरो ईं ददाति। दा+क ईवर्दः। बली चासौ ईवर्दश्चेति। वृष। बैल.

बल्य, (न०) बलाय हितं। बल+यत्। प्रधान धातु। बली शक्ति। शुक्र। वीर्य। बुरादह। और बलका साधन। अतिबला (बैल)(स्त्री०).

ब(व)ह्, वृद्धि-बढ़ना। भ्वा० आत्म० अक० सेट्। इदित्। ब(ब)हते.

ब(व)हु, (त्रि०) बं(वं)हि+कु-न लोपः । तीन आदि अनेक संख्यावाला । विपुल । बहुत । "स्त्रियां वा ङीप्" । बही (बह्वी) । बहु.

ब(व)हुकर, (त्रि०) ब(व)हूनि किरति । कृ+अच् । बहुतोंको फेंकती है । (फराश) मार्जनकर । साफ करनेहारा । झाडूदेनेहारा । संमार्जनी (स्त्री०) बुहारी । कृ+अच् । ६ त०.

बहुक्षम, (त्रि०) बहु क्षमा यस्य । बडी क्षमा करनेवाला । सहारनेवाला.

बहुतिथ, (त्रि०) ब(व)हूनां पूरणः । ब(व)हु डट् तिथुक् च । अनेक संख्यात । बहुत संख्या (गिन्ती वाला) । "काले गते बहुतिथे" इत्युद्भटः.

बहुत्र, (अव्य०) ब(व)हु त्रल् । बहुतोंमें । बहुतसे समय आदिमें.

बहुत्वच्, (पु०) ६ ब० । बहुतसी त्वचावाला । भूर्ज-भोजपत्रका पेड.

बहुदर्शक-दर्शिन, (त्रि०) । बहु पश्यति । बहुत देखनेवाला । चतुर.

बहुदायिन्, (त्रि०) बहु ददाति । बहुत देनेवाला । उदार । फियाज.

बहुधन, (त्रि०) बहु धनं यस्य । बडे धनवाला । धनी । दौलतमंद.

बहुधा, (अव्य०) ब(व)हु+प्रकारे धाच् । अनेक प्रकार । कई तरहसे.

बहुपुत्र, (पु०) ब(व)हवः पुत्रा इव पर्णानि अस्य । बहुतसे पुत्रोंकी नाईं जिसके पत्ते हों । सप्तच्छद । सतौनेका वृक्ष.

बहुपत्नीक, (पु०) बह्व्यः पत्न्यः यस्य । बहुत स्त्रियोंवाला.

बहुप्रज, (त्रि०) ६ ब० । जिसकी बहुत सन्तान हो । शूकर (सूअर) (पु०) । प्रजाके समान बहुत तृणवाला होनेसे मुंजका तृण.

बहुमञ्जरी, (स्त्री०) ६ ब० । [illegible] होनेसे [illegible] न हुआ । बहुत मिञ्जरोंवाला । तुलसीका वृक्ष.

बहुमल, (पु०) ६ ब० । बहुत मलवाला । सीसक । सीसा.

बहुरूप, (पु०) ६ ब० । सर्जरस (धुना) । शिव । विष्णु । हिरण्यगर्भ । कामदेव और केश (बाल) । नानारूपवान् । बहुत रूपवाला (त्रि०).

बहुल, (त्रि०) ब(व)हि+कुलच् । नि० । "न" का लोप । अनेक संख्यावाला । प्रचुर । बहुत । बहूनि लाति । क+क । [illegible] । [illegible] । और काला रंग (पु०) उसवाला (त्रि०) [illegible] (पु०).

बहुविक्रम, (त्रि०) । बहु विक्रमः [illegible]
वाला । बडाबहादुर । बडी शक्तिवाल[illegible]

बहुव्ययिन्, (त्रि०) । बहु व्यय[illegible]
(खर्च) वाला । बाहर खर्च करने[illegible]

बहुव्रीहि, (त्रि०) ६ ब० । [illegible]
धानवाला । व्याकरणमें कहाहुआ [illegible]
(जिसमें प्रायः अन्यही पद प्रधान हो

बहुशस्, (अव्य०) । ब(व)हु+श[illegible]
बहुतवार । कईवार.

बहुशल्य, (पु०) ६ ब० । रक्तखदिर [illegible]
अनेक कीलोंवाला (त्रि०).

बहुसूति, (स्त्री०) ६ ब० । अनेक प्र[illegible]
संतानवाला (त्रि०).

बहुस्वामिक, (त्रि०) बहवः स्वामि[illegible]
स्वामिओं (मालिकों) वाला.

बहूदक, (पु०) (बहूनि उदकानि [illegible]
रका संन्यासी जो एक स्थानपर न [illegible]
का जल पीताहै.

बह्वर्थ, (त्रि०) बहवः अर्थाः यस्य । [illegible]
बहुत पदार्थवाला । असाधारण । आवश्[illegible]

बह्वाशिन्, (त्रि०) बहु अश्नाति । [illegible]
खाऊ.

ब(व)ह्वृच, (पु०) ६ ब० । ऋच्-समा[illegible]
वाला । ऋग्वेद । सूक्त (गीत) (न० [illegible]
(त्रि०) । उसकी स्त्री (स्त्री०).

बाडव, (न०) बडवानां समूहः +अण् । [illegible]
बहुत घोडे । ब्राह्मण (पु०) । बडवा[illegible]
घोडीमें उपजा । और्व । समुद्रकी आग ([illegible]
यही अर्थ.

बाडवेय, (पु०) (द्वि०) बडवायाः अपत्यं [illegible]
कुमार (दोनों).

बाडव्य, (न०) बाडव+संघे यत् । ब्रिाह्मण[illegible]
का समूह.

बा(वा)ण, (पु०) बण्-शब्द करना । [illegible]
संज्ञायां कर्तरि घञ् । शर । तीर । [illegible]
विरोचनका पुत्र । एक दैत्य । एक कवि [illegible]
पुङ्ख (बाणका पर) (स्त्री०).

बाणिज्य, (न०) वणिजो भावः कर्म । [illegible]
पन या बनियेका काम । क्रयविक्रयादि । [illegible]
वगैरह (मोल लेना और बेचना आदि) [illegible]

बाणि-णी, (स्त्री०) । वण्+इ णिच् । [illegible]
कपडा आदि बुनेका काम । वायन । [illegible]
वचनकी देवी.

बाहुज, (पु०) बाहुभ्यां (ब्रह्मबाहुभ्यां) जायते । जन्+ड । ब्रह्माकी भुजाओंसे उपजा । क्षत्रिय । यथा "बाहू राजन्यः" इति श्रुतिः.

बाहुत्र, (पु० न०) बाहुं त्रायते । त्रै+क । अस्त्र (औ-जार) की चोटसे बचनेके लिये हाथमें बंधाहुआ लोहा वा चमड़ा आदि.

बाहुमूल, (न०) ६ त० । भुजाकी जड़ । कक्ष । काँख । कन्धा.

बाहुयुद्ध, (न०) ६ त० । भुजाओंसे लड़ना । मल्लयुद्ध । पहलवानोंकी कुस्ती.

बाहुल, (पु०) बहुलानां (कृत्तिकानां) अयं (स्वामी)+अण् । जो कृत्तिकाओं (कई एक तारे) का मालिक है । वह्नि । आग । "बहुलाभियुक्ता पौर्णमासी+अण्" कार्तिक (कत्तक) की पूर्णिमा तिथि (स्त्री०) "सा अत्र मासे पुनरण्" । कार्तिकका महीना (पु०).

बाहुलेय, (पु०) बहुलानां अपत्यं+ढक् । कृत्तिकाओंकी सन्तान । कार्तिकेय । महादेवका बड़ा पुत्र.

बाहूत्क्षेपम्, (अव्य०) । बाह्वोः उत्क्षेपः यथा तथा । भुजाओंको उठाकर.

बाहुशिखरम्, (न०) बाहोः शिखरम् । भुजा (बांह) का ऊपरला भाग (चोटी) । कंधा.

बि(वि)ट्, आक्रोश । जिल्लाना । कसम खाना । शाप देना । भ्वा० पर० सक० सेट् । बेटति । अबेटीत्.

बिद्, अवयव जुदा २ करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । बिन्दति । अबिन्दीत्.

बिन्दु, (पु०) बिदि+उ । बिद्+उ-नि वा । अल्पांश । थोड़ा हिस्सह.

बिल, भेदना । वा चुरा० उभ० पक्षे तु० पर० सक० सेट् । बेल्यति-ते । बेलति । अबिल्त्-त । अबलीत्.

बिस्-क्षेप, फेंकना । दि० पर० सक० सेट् । बिस्यति । अबिसत् अबेसीत्.

बीभत्स, (त्रि०) बध् निन्दाकरना+स्वार्थे सन्-कर्मणि घञ् । पापी गुनाहगार । जुगुप्सित । निन्दा कियाहुआ । और घृणाका विषय (घिनके लायक) । अर्जुन (पु०) । एक रस.

बुक्, बुक्कादि शब्द । कुत्ते आदिकी आवाज करना । और कहना । चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । बुक्कयति-ते । बुक्कति.

बुक्क, (न०) बुक्+अच् । हृदयस्थमांसपिण्ड । हृदयमें एक मांसका गोला (टुकड़ा) । और हृदय.

बुद्ध, (पु०) बुध्+क्त । भगवदवतारभेद । भगवान्का नवम (९ वां) अवतार (जिसने दैत्योंको मोहनेके लिये वेद और उसमें कहेगये कर्मोंकी निन्दा की है) । जागा-हुआ (जगाहुआ) (त्रि०).

बुद्धि, (स्त्री०) बुध्+क्तिन् । ... । ...
... मेंमें कहीगया गुण ... ...
... । अन्तःकरण । ...
... अन्तःकरण.

बुद्धिपूर्व, (त्रि०) बुद्धिः पूर्वं यस्य । ...
... । इरादतन.

बुद्धिशालिन्-शालस, (त्रि०) बुद्ध्या ...
...से शोभायमान । बुद्धिमान् । अक्लमं...

बुद्धिहीन, (त्रि०) बुद्ध्या हीनः । ...
बेअक्ल । मूढ़ । बेवकूफ.

बुद्धिमत्, (त्रि०) बुद्धि+मतुप् । बुद्धिवा...

बुद्धीन्द्रिय, (न०) ६ त० । बुद्धिकी इन्द्रि...
मन, श्रवण, नेत्र (आंख), रसना (जीभ...
गन्ध (नाक), ये सब ज्ञानकी इन्द्रियें हैं...

बुद्बुद, (न०) बुद्+क० पृ० । पानीका ...
विकार । बुलबुला.

बुध्, ज्ञान-जानना भ्वा० उभ० सक० सेट् ।
अबोधीत्-अबोधि । अबोधिष्ट । बोधः । बु...

बुध्, जानना । दिवा० आत्म० सक० अनिट्...

बुध, (पु०) पण्डित । समझनेवाला । ...
की तारामें चन्द्रमासे उत्पन्न हुआ पुत्र । "...

बुधजनः, (पु०) बुधः जनः । ज्ञानि वा ...
पण्डित वा शिक्षितलोग.

बुधरत्न, (न०) बुधप्रियं रत्नं । शाक० । ...
रत्न । मरकतमणि । पन्ना.

बुधाष्टमी, (स्त्री०) बुधवारयुता अष्टमी । ...
रसहित अष्टमी । बुधवारकी अष्टमी । और ...
लायक एक व्रत.

बुधित, (त्रि०) भ्वा० उभ० बुध्+क्त ...
यथा.

बुध्न, (न०) बंध+नक् "न" का लोप ...
आदेश । वृक्षका मूल (जड़) । और मूलम...
शिवजी (पु०).

बुभुक्षा, (स्त्री०) भुज+सन्+अ । भो...
क्षुधा । भूख.

बुभुक्षित, (त्रि०) बुभुक्षा+तार० इतच्...
जिसे भूख लग आई । "बुभुक्षितः किं ...

बुभुत्सा, (स्त्री०) बोद्धुं इच्छा-बुध्+सन्+...
इच्छा (चाहना).

बुभूषा, (स्त्री०) भवितुं इच्छा+भू-सन्+अङ् ।

बुस-(प), (न०) बुस्यते (उत्सृज्यते)
(छोड़ना)+क पृ० वा घञ् । तुच्छ धा...
धान । फलसे रिता धान । "बुस" ...

बृह्, तु० प० बर्हति- बृहति । बढ़ना । फेंकना

ड़, (त्रि०)-ती (स्त्री०) बृह्+अति। बड़ा। मोटा। लम्बा। ताकतवाला.

ड़ारण्यकम्, (न०) बृहत् आरण्यकम्। बड़ा बनमें पढनेलायक। प्रसिद्ध उपनिषद्का नाम। शतपथ ब्राह्मणके अन्तिम छ अध्याय.

र, (त्रि०)-स्त्री (स्त्री०) बिल्वस्य इदं+अण्। बिल्व (बिल) वृक्षका बना हुआ। बिल्व वृक्षसे ढका हुआ.

ध, (पु०) बुध्+घञ्। ज्ञान। जतना। और जागरण (जागना)। "बुध+क" ज्ञानवाला (त्रि०)। "ण्वुल्" बोधक। जानेहारा (त्रि०).

धकर, (पु०) बोधं (निशान्ते जागरणं) करोति। कृ+अच्। जो रात बीत जानेपर जगाता है। रात्रीके अन्तमें जगानेहारा वैतालिक भाट। जतानेहारी (स्त्री०).

धन, (न०) बुध्+णिच्+ल्युट्। विज्ञापन। जताना। इश्तिहार। नोटिस। जागरण। जागना.

धनी, (स्त्री०) बोध्यते अनया। बुध्+णिच्+ल्युट्+ङीप्। पिप्पली। मद्य। (इससे मूर्छित हुआ जगाया जाता है)। कार्तिककी एकादशी.

धि, (पु०) बुध्+इन्। अश्वत्थवृक्ष। पीपलका दरख्त। समाधिविशेष। जानेहारा (ज्ञाता) (त्रि०).

धः, बुध+अण्+बुधस्य अपत्यं। बुधदेवका पुत्र। पुरूरवाका नाम.

द्ध, (न०) बुद्धेन प्रोक्तं+अण्। बुद्धसे रचागया निरीश्वरवाद (जिसमें ईश्वरको नहिं माना जाता) शास्त्र। बौद्ध शास्त्रके पढनेहारा (त्रि०).

ध्, उत्सर्ग-छोडना और विभाग-जुदा करना। चु० उभ० सक० सेट्। ब्योधयति-ते। अबुब्रुधत् त.

ू, शब्द करना। भ्वा० पर० सक० सेट्। ब्रणति। अब्रणीत्-अब्राणीत्.

ति, (स्त्री०) प्रतनोति। प्र+तन्+क्तिन्। पृ०। "प" को "ब" होता है। लता। बेल। बहु विस्तार। बहुत फैलाव। "ब्रतती" भी.

र, (पु०) बंध+नक्-"ब्रध" का आदेश होता है। सूर्य। आकका वृक्ष। शिव। घोड़ेका मूल। कभी "नी" होता है.

ब्र)ह्मकूर्च, (न०) एक प्रकारका व्रत (जिसमें पौर्णमासीको दिन रात उपवास करके दूसरे दिन प्रातःकाल दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर मिलाकर पीते हैं).

ब्र)ह्मचर्य, (न०) ब्रह्मणे (वेदाध्ययनाय) चर्यते चर्+यत्। वेद पढनेके लिये आचरण करना है। वेद जानेके लिये यज्ञोपवीत डालनेके अनंतरका आश्रम। स्त्रीसंभोगसे रहित होना। मैथुनरहित। जितेन्द्रियका संयम (रोकना).

ब्रह्मचारिन्, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मणे (वेदाय तद् ग्रहणाय) चरति चर्+णिनि। वेद पढनेके लिये करता है। यज्ञोपवीत (जनेउ) के अनन्तर पहिले आश्रमवाले ब्राह्मण आदि तीन वर्ण। स्त्रीका संग न करनेहारा। ब्रह्मचारीके व्रतको करनेहारी स्त्री (स्त्री०) ङीप्.

ब्र(ब्र)ह्मज्ञ, (त्रि०) ब्र(ब्र)ह्म (वेदं), तुरीयं शुद्धचैतन्यं वा जानाति वेत्ति। ज्ञा+क। वेद वा शुद्ध चैतन्यको जानेहारा.

ब्र(ब्र)ह्मज्ञान, (न०) ६ त०। त्रिगुणावच्छिन्नातीततुरीयशुद्धचैतन्यविषयज्ञान। तीन गुणोंवालेसे परे चौथे शुद्ध चैतन्यका ज्ञान.

ब्र(ब्र)ह्मण्य, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणे (वेदाय) प्रभवति। शुद्ध चैतन्यज्ञानाय वा साधु। ब्र(ब्र)ह्मणे हितो वा यत्। ब्राह्मण और वेदोंकी रक्षा करनेहारा। विष्णु। ब्राह्मणका धर्म.

ब्र(ब्र)ह्मतीर्थ, (न०) ६ त०। ब्रह्माका तीर्थ। पुष्करतीर्थ। पुष्करराज। कमलकी जड.

ब्र(ब्र)ह्मत्व, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणो भावः। त्व। ब्रह्मपन। ऋत्विग्विशेष। ब्रह्माका धर्म। शुद्धतुरीय ब्रह्मभाव। निर्विचार ब्रह्मकी प्राप्ति.

ब्रह्मदण्ड, (पु०) ६ त०। ब्रह्माका दण्ड। ब्राह्मणसे किया गया अभिशापरूप दण्ड (सजा)। ब्राह्मणकी लकुआ। ब्राह्मणकी यष्टि (लाठी).

ब्र(ब्र)ह्मदाय, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मणि (वे) वा वेदाध्ययनसमाप्तौ विभाग वा राज्ञा दीयते। दा+कर्मणि घञ्। गुरुके घरसे विद्या पढके आयेहुए ब्राह्मणको जो धन दिया जाता है। समावर्तनविधाय देये धने। लौटे हुए ब्राह्मणको देनेलायक धन.

ब्र(ब्र)ह्मन्, (न०) बृह्+मनिन्। वेद। तपस्या। तत्त्व। सच। सत्य। अपनी। यथार्थ। ठीक। तुरीय (चौथी दशावाला) सर्वगुणातीत (सब गुणोंसे परे विशुद्ध) चिद्रूप सत और चित्स्वरूप (ज्ञानरूप)। हिरण्यगर्भ। विप्र। ब्राह्मण। ऋत्विग्विशेष (एक प्रकारका पुरोहित) (पु०).

ब्र(ब्र)ह्मनाल, (न०) काशीमें मणिकर्णिकाके पास तीर्थविशेष.

ब्र(ब्र)ह्मनिर्वाण, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणि निर्वाणं (निर्वृतिः)। ब्रह्ममें विश्राम (आराम)। ब्रह्मस्वरूप पाना। सम्पूर्ण अविद्याका निवृत्त (दूर) होना। परमानन्द (बहुत खुशी).

ब्र(ब्र)ह्मपुत्र, (पु०) ब्रह्मणः पुत्र इव (कपिलवर्णत्वात्)। पीला रंग होनेसे मानो ब्रह्माका पुत्र है। विष (जहर)। उत्तर देशमें प्रसिद्ध एक नद (बड़ा दर्या)। एक क्षेत्र (खास जगह)। सरस्वती नदी (स्त्री०)। यह ब्रह्मासे उत्पन्न हुई है ऐसा प्रसिद्ध है.

ब्र(ब्र)ह्मपुरी, (स्त्री०) ६ त० । ब्रह्मकी पुरी । ब्रह्मकी उपासनाका स्थान । हृदय । दिल । उसके आधारका स्थान । सत्यलोक । काशी.

ब्र(ब्र)ह्मबन्धु, (पु०) ब्र(ब्र)ह्म । निन्द्यो बन्धुः उत्पाद-को यस्य । जिसके उत्पन्न करनेहारा । ब्राह्मण है । विप्रा-चाररहित । ब्राह्मणके आचारसे रहित । निन्दाके लायक । काम करनेहारा । जातिसे ब्राह्मण (कामसे नहिं) । विप्र-तुल्य मद्यादि । ब्राह्मणके समान भाट आदि.

ब्र(ब्र)ह्मभूय, (न०) ब्रह्मणो भावः । भू+क्यप् । ब्रह्म-भाव । ब्रह्मत्व । सायुज्य । ब्रह्मके साथ मिलना.

ब्र(ब्र)ह्मयज्ञ, (पु०) ब्रह्मनिमित्तको यज्ञः । ब्रह्मके लिये यज्ञ । वेदका पढना और पढाना.

ब्र(ब्र)ह्मरन्ध्र, (न०) ६ त० । ब्रह्मका रन्ध्र (मुखच्छेद) । उत्तमाङ्ग (शिर) में स्थित ब्रह्मकी प्राप्तिका कारण छेदकी जगह । उस छिद्र (मुराख) से निकलनेपर जीवका ब्रह्म होजाना सुनाजाता है । सिरकी खोपरीमें एक छेद है जहां समाधिके समय ब्रह्मकी प्राप्तिके लिये योगिजन ध्यान लगाते हैं.

ब्र(ब्र)ह्मराक्षस, (पु०) ब्र(ब्र)ह्म (विप्रोऽपि) कुक-र्मभिः राक्षसः । ब्राह्मण होकर भी बुरे काम करनेसे राक्षस है । राक्षसके स्वरूपको प्राप्तहुआ एक प्रकारका भूत । "अपहृत्य च विप्रस्वं भवति ब्रह्मराक्षसः" इति मनुः.

ब्र(ब्र)ह्मर्षि, (पु०) ब्र(ब्र)ह्म (विप्रः) चतुर्मुख-तुल्यो वा ऋषिः (वेदस्य) स्मर्ता । ब्राह्मण वा चारमुख-वाले (ब्रह्मा) के समान ऋषि (वेदका स्मरण करनेहारा) । वेदका स्मरण करनेहारे वसिष्ठ आदि ऋषि.

ब्र(ब्र)ह्मर्षिदेश, (पु०) ६ त० । ब्रह्मर्षिओंका देश । कुरुक्षेत्र आदि चारो देश । कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल और शूरसेन । जहां ब्राह्मण वा ऋषि रहते हैं.

ब्र(ब्र)ह्मलोक, (पु०) ६ त० । ब्रह्मका लोक । ब्रह्मा-धिष्ठानभुवन । वह लोक जहां ब्रह्मा निवास करता है । सत्य-लोक । तुरीय (तीनों अवस्थासे परे) ब्रह्मका स्वरूप.

ब्र(ब्र)ह्मवर्चस, (न०) ब्रह्मणा (वेदाध्ययनेन) कृतं वर्चः (तेजः) अच् समा० । वेदके पढनेसे उत्पन्न हुआ तेज । "ब्रह्मवर्चसकामस्य कुर्याद्विप्रस्य पञ्चमे" इति मनुः.

ब्र(ब्र)ह्मवादिन्, (पु०) ब्र(ब्र)ह्म (वेदं) वदति (पठति) णिनि । वेदपाठक । वेद पढनेहारा । "ब्र(ब्र)ह्म (शुद्धं चैतन्यं) सर्वात्मकतया । वदति-वेत्ति वा" । जो "शुद्ध चैतन्यही सबका स्वरूप है" ऐसा बोलता वा जानता है । वेदान्तमें कहेगये "सब ब्रह्म" ब्रह्मको जाननेवाला । "शुद्धचैतन्यं वदति-बोधयति" जो शुद्ध चैतन्यको जानता वा समझाता है । ब्रह्मको बोधन करनेहारा शास्त्र.

ब्र(ब्र)ह्मविद्या, (स्त्री०) ६ त० । "द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये" ... शुद्धचैतन्यस्वरूप ब्रह्म ... यह विद्या जो जीव और ब्रह्मको एक कर दिखाती है । ... ब्रह्मकी विद्या.

ब्र(ब्र)ह्मबि(वि)न्दु, (पु०) ब्र(ब्र)ह्म ... पाठकाले । बि(वि)न्दु । वेदपाठके ... बि(वि)न्दुः । वेद पढनेके समय मुखसे ... जलकी बूंद.

ब्र(ब्र)ह्मवैवर्त, (न०) अठारह पुराणोंमें ... १८००० श्लोक हैं).

ब्र(ब्र)ह्मसंहिता, (स्त्री०) वेदार्थके ... करनेहारा एक सौ अध्यायका एक ग्रन्थ.

ब्र(ब्र)ह्मसायुज्य, (न०) सह युनक्ति । ... सयुक्तस्य भावः सायुज्यं । ६ त० । ब्र(ब्र)ह्म ... ब्रह्मत्व । ब्रह्मके साथ मिलना.

ब्र(ब्र)ह्मसू, (पु०) ब्र(ब्र)ह्माणं सूते ... क्विप् । ब्रह्माको उत्पन्न किया । चार ... गणविशेष । अनिरुद्ध । उसका अवस्थाविशेष ... पति । उषाका पति.

ब्र(ब्र)ह्मसूत्र, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणे (वेदाय) ... उचितं सूत्रम् । वेद पढनेके समय धारने ... सूत्र । जनेऊ । यज्ञोपवीत । ब्रह्मको प्रतिपादन करनेहारा ... शारीरक सूत्र । वेदान्तके सूत्र.

ब्रह्महत्या, (स्त्री०) हन्+क्यप् । ६ त० । ब्रह्म... हत्या । विप्रहनन । ब्राह्मणको मारना.

ब्रह्महन्, (त्रि०) ब्र(ब्र)ह्माणं हतवान् । हन्+... ब्राह्मणको मारनेवाला । विप्रहत्याकारी । ...

ब्र(ब्र)ह्महुत, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणे (विप्राय) ... हुतं (दत्तम्) । ब्राह्मण वा अतिथिके लिये ... नित्य गृहस्थके करनेलायक पांच यज्ञोंमें अतिथि... करनारूप यज्ञविशेष.

ब्र(ब्र)ह्माञ्जलि, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मणे (वेदाय) ... अञ्जलिः । वेद पढनेके समय गुरुके सामने ... वा स्वर आनेके लिये हाथोंका जिकोडना.

ब्रह्माणी, (स्त्री०) ब्र(ब्र)ह्माणं (आनयति) ... अन्+णिच् । ब्रह्मशक्ति । ब्रह्माकी शक्ति । "... ब्रह्मजननात्" इति पुराणम्.

ब्रह्माण्ड, (न०) ६ (त०) । ब्रह्माका अण्डा । ... अण्डाकार अंडेके स्वरूपमें भुवनकोष (सकल संसार) ...

ब्र(ब्र)ह्मावर्त, (पु०) देशभेद । सरस्वती और ... नदियोंके बीचका देश (मुक).

ब्र(ब्र)ह्मासन, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणो ध्यानं ... ईश्वरका ध्यान करनेके लिये आसन (... बैठना) । स्वस्तिक-पद्मासन आदि.

ब्रा)ह्म, (न०) ब्रह्मण इदम् । ब्रह्माका । ब्रह्मसे स्थापना । वा अण् टीका लोप । अंगुठेका मूल (एक-तीर्थ) । इस तीर्थसे ब्राह्मणोंको आचमन करनेका विधान है । पुराण । विवाहभेद । धारा (पु०) । राजाका धर्म (पु०).

ब्रह्मिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन ब्रह्म=वेदं जानाति+इष्ठन् । वेद-शास्त्रका पूर्णशास्त्री । बड़ा पण्डित । पवित्र.

ब्राह्म, (त्रि०)-ह्मी-स्त्री० ब्रह्मण इदं-तेन प्रोक्तं वा+अण् । ब्रह्मा (कर्ता)का अथवा परमात्माका । ब्राह्मणोंका । ज्ञान-का । वैदिक । दिव्य । पवित्र । -ह्मः (पु०) आठ प्रकारके विवाहोंमें एक जिसमें कन्या अलंकृत करके वरको दीजाती और कोई भेटा वरसे नहीं लीजाती सर्वोत्तम.

ब्रा(ब्रा)ह्मण, (पु०) ब्र-(ब्र)ह्म (वेदं) शुद्धं परचैतन्यं वा वेत्ति अधीते वा अण् । जो वेद वा शुद्ध परम् चैत-न्यको जानता वा पढ़ता है । " ब्रह्मणः अपत्यं+अण् " ब्रह्माकी सन्तान (मुखसे उपजा है) । विप्र । ब्राह्मण जाति । "ब्र(ब्र)ह्म जानाति ब्रा(ब्रा)ह्मण. । परम(ब्र) ह्मको जाननेहारा (त्रि०)

ब्रा(ब्रा)ह्मणब्रुव, (पु०) ब्रा(ब्रा)ह्मणं (जातिमात्रेण आत्मानं) ब्रूते । जो केवल जातिसे अपनेको ब्राह्मण कहता है । कदाचारवान् विप्र । बुरे आचारवाला ब्राह्मण.

ब्राह्मणसात्, (अव्य०) ब्राह्मण+सातिच्-आधीनार्थे । ब्राह्मणके आधीन (करनेमें).

ब्रा(ब्रा)ह्मण्य, (न०) ब्रा (ब्रा) ह्मणानां समूहः भावो वा+ ष्यञ् । ब्राह्मणोंका समूह वा होना । विप्रसमूह । ब्राह्म-णोंका धर्म । विप्रत्व । ब्राह्मणपन.

ब्रा(ब्रा)ह्ममुहूर्त, (पु०) ब्रह्मा देवता अस्य+अण् । कर्म० । अरुणके उदय होनेसे पहिली दो घड़ियें । रातके पिछले पहिरकी बाकी दो घड़ियां.

ब्रू, कथन । कहना । अदा० उभ० द्विक० सेट् । ब्रवीति-आह । ब्रूते । अवोचत्-अवोचत.

भ

भ, (न०) भा+क । नक्षत्र (तारा) । मेष आदि राशि और ग्रह । शुक्राचार्य (पु०) भन्+क । भ्रमर (भौंरा) । भ्रान्ति । भरम भूल । आदि गुरुवाला "भगण."

भक्त, (पु० न०) भज्+क्त । अन्न । खाना । और ओदन (भात) । भक्तियुक्त । भक्ति करनेवाला । विभक्त (बाँटागया) (त्रि०).

भक्तकंस, (पु०) भक्तस्य कंसः । अन्नकी थाली (रकाबी).

भक्तदास, (पु०) भक्तेन (भक्तमात्रलाभेन) दासः (अंगीकृतदासभावः) । केवलभोजनपरही जो दास होना स्वीकार करता है । पन्द्रह प्रकारके दासोंमेंसे एक.

भक्तमण्ड, (पु० न०) ६ त० । चावलोंकी मांड । चाव-लोंकी पीछ.

भक्तरुचि, (स्त्री०) भक्तस्य रुचिः । अन्न (भोजन) की इच्छा । भूख.

भक्तवत्सल, (त्रि०) भक्तस्य वत्सलः । भक्त (भजनकरने-वाला-पूजक) का पियारा । भक्तोंपर दया करनेवाला.

भक्तशाला, (स्त्री०) भक्तस्य शाला भोजनगृह । खानेका बड़ा कमरा.

भक्ताभिलाष, (पु०) भक्तस्य=अन्नस्य अभिलाषः । अन्न (खुराक)की इच्छा । क्षुधा.

भक्ति, (स्त्री०) भज्+क्तिन् । भजन । सेवा । आराधना । चित्तको आराधनामें लगाना । विभाग (बांट) । गौणी वृत्ति । उपचार । अवयव । भंगी । रचना । श्रद्धा (विश्वास) । "भवति विरलभक्तिः" रघु.

भक्तिमान्, (त्रि०) भक्ति भजति-भज्+म्बि । भक्ति करनेवाला.

भक्तियोग, (पु०) भक्तिरेव योगः (एकाग्रचित्तवृत्तिभेदः) । प्रेमसे चित्तका एकही ओर लगाना । भक्तिरूपी योग.

भक्तृ, (त्रि०) भज्+तृच् । भक्ति करनेवाला । स्तुति करने-वाला । पूजा करनेवाला.

भक्ष्, भक्षन । खाना । चु० उभ० सक० सेट् । भक्षयति-ते । "भक्षति."

भक्षक, (त्रि०) क्षिका (स्त्री०) भक्ष्+ण्वुल् । खानेवाला । खाऊ.

भक्षण, (त्रि०)-णी (स्त्री०) भक्ष्+अन् । खानेवाला । -णं (न०) (भावे ल्युट्) खाना.

भक्षशेष, (पु०) भक्षस्य शेषः । खानेसे बचा हुआ.

भक्षित, (त्रि०) भक्ष्+क्त । खाया गया । -तं (न०) खाना.

भक्ष्य, (त्रि०) भक्ष्+कर्मणि यत् । खानेलायक । भोजनके योग्य । -क्ष्य (न०) कोई चीज खानेलायक । खानेका पदार्थ । खाना । भोजन.

भग, (पु० न०) भज्+घ । सूर्य । अणिमा आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य । वीर्य । और यश । लक्ष्मी । ज्ञान । वैराग्य । योनि । इच्छा । माहात्म्य । यत्न । धर्म । मोक्ष । सौभाग्य । कान्ति । और चन्द्रमा । गुदा और मुष्कके बीचका स्थान (कुस).

भगदत्त, (पु०) महाभारतमें प्रसिद्ध कामरूप देशका राजा.

भगन्दर, (पु०) भगं (गुदमुष्कमध्यस्थानं) दारय-ति । "दृ+खच् मुम् च" । एक प्रकारका रोग (जो भगको फाड़ता है).

भगवत्, (त्रि०) भगं (ऐश्वर्यादि) अस्ति अस्य । म-तुप् । "म" को "व" होता है । ऐश्वर्य आदिवाला परमे-श्वर । दुर्गा (स्त्री०) शौन्.

भग्नाङ्कुर, (पु०) भग्ने (गुदस्थाने) अंकुर इव । गुदा-पर मानो अंकुर है । अर्शरोग । बवासीरकी बीमारी.

भगिनी, (स्त्री०) भगं (यत्नः) [illegible] इत्यादाने अस्ति अस्याः इनि । [illegible] द्रव्य लेनेमें जिसे यत्न करना पड़ता है । सोदरा । स्वसा । बहिन । भैन.

भगीरथ, (पु०) सूर्यवंशमें दिलीपराजाका पुत्र एक राजा (जिसने गंगाको पृथिवीपर उतारा है).

भग्न, (त्रि०) भञ्ज्+क्त । पराजित । हारगया । और खण्डित (टूटगया) । "[illegible]" इति नाटकम्.

भग्नप्रक्रम, (पु०) भग्नः प्रक्रमो यत्र । जहां आरम्भ टूट-गया है । अलंकारमें कहाहुआ एक काव्यका दोष.

भग्नप्रतिज्ञ, (त्रि०) भग्ना प्रतिज्ञा येन । प्रतिज्ञा (इकरार)-को तोड़नेवाला.

भग्नमनोरथ, (त्रि०) भग्नः मनोरथः यस्य । जिसका मनो-रथ (मुराद) पूरा नहीं हुआ (टूट गया) । निरुत्साह.

भग्नव्रत, (त्रि०) भग्नं व्रतं येन । अपने व्रत (नियम) को तोड़नेवाला.

भग्नसंकल्प, (त्रि०) [illegible] यस्य । जिसका संकल्प (इरादा) टूट गया.

भङ्ग, (पु०) [illegible] । [illegible] । हार । [illegible] । [illegible] । टुकड़ा । भेद । [illegible] । [illegible] (लहर) । कौटिल्य । [illegible] । भय । डर । [illegible] । एक प्रकारकी [illegible] । [illegible] और [illegible] (पानीका [illegible]) । [illegible] ([illegible]) और भांग (स्त्री०).

भङ्गा, (स्त्री०) एक प्रकारकी मद देनेवाली बूटी.

[illegible], (स्त्री०) [illegible] । पु० का [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

भङ्गुर, (त्रि०) [illegible] । कुटिल । [illegible] । [illegible] [illegible].

[illegible], (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] [illegible].

[illegible] । [illegible]

[illegible] । [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भट्, पोषन पालना । भ्वा० पर० सक० से० । अभाटीत् अभटीत् । "बोलना" [illegible]

भटित्र, (न०) भट्+इत्र । [illegible] पकाहुआ मांस आदि । कबाब.

भट्ट, (पु०) भट्+तन् । [illegible] (तारीफ) का पाठ करके जीनेवाला । [illegible] स्वामिन् । मालिक । वेदको [illegible] (चतुर शास्त्रवेत्ता).

भट्टार, (पु०) भट्टं (स्वामिनं) [illegible] पूज्य । पूजाके लायक । "[illegible]" । [illegible]

भट्टारक, (पु०) भट् भाषण बोलना । [illegible] ण्वुल् । कर्म० । नाटकोंमें राजा । [illegible] पड़ाहुआ.

भट्टिनी, (स्त्री०) भट्टं (स्वामिनं) [illegible] ङीप् । ब्राह्मणकी स्त्री । [illegible] । [illegible] अभिषेक नहीं मिला । [illegible]

भड्, परिभाषण, बहुत बोलना । भ्वा० [illegible] भण्डते

भण, कथन कहना । भ्वा० पर० सक० सेट् । [illegible] अभाणीत् । अभणीत् । अबीभणत्-न । [illegible]

भणिति, (स्त्री०) भण्+क्तिन् । कथन । [illegible]

भण्ड, (पु०) भडि+अच् । [illegible] वचन बोलनेवाला । भांड । "[illegible] मैरिशावकाः" इति [illegible]

भन्द, हर्ष सुख होना । शुभ कथन । [illegible] प्रसन्न होना । भ्वा० आ० अक० सेट् [illegible] अनिट्.

भन्द्, कल्याण करना । चु० उभ० सक० से० [illegible] [illegible].

भन्दन, (पु०) भदि+ल्यु "न" का लोप । [illegible] [illegible] (त्रि०).

भद्र, (न०) [illegible] "न" [illegible] [illegible] और [illegible] ([illegible]) । [illegible] (स्त्री० न०) । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] और [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] ([illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible]

तुरग, (न०) भद्राः तुरगा यत्र । जहाँ अच्छे घोड़े होते हैं । जम्बुद्वीपके ९ वर्षोंमेंसे एक । "भद्राश्व".

पदा, (स्त्री०) ब० व० । भद्रम (शुभम्) इव पदं यस्याः । जिनके पाँव बैलकी भाँइ हैं । पूर्व, और उत्तर भाद्रपदा (नक्षत्र तारे).

पीठम्, (पु०) भद्रं पीठम् । श्रीमिमान् आसन । पादशाही कुरसी । सिंहासन.

श्रय, (न०) भद्राय श्रीयते । श्री+अच् । कल्याणके लिये सेवन किया जाता है । चंदनवृक्ष । संदलका पेड़.

आसन, (न०) भद्राय (लोकक्षेमाय) आस्यते अत्र । लोगोंके कल्याणके लिये जिसपर बैठते हैं । आस् "आधारे ल्युट्" नृपासन । राजाका आसन.

य, (न०) बिभेति अस्मात् । भी+अच् । जिससे डरते हैं । अथवा । "भावे अच्" डरना । डर

यङ्कर, (त्रि०) भयं करोति । कृ+अच्+मुमच । जो भय देता है । भयका कारण । डरावना । एक रस (पु०).

यदर्शिन्, (त्रि०) भयं दर्शयति । भय दिखानेवाला । डरावना.

यप्रद, (त्रि०) भयं प्रददाति । भय देनेवाला । डरावना.

यहेतु, (पु०) भयस्य हेतुः । डरका कारण (तमस).

यानक, (पु०) बिभेति अस्मात् । भी+आनक । जिससे डरता है । व्याघ्र । भेड़िया । राहु । और रसविशेष । डरवना (त्रि०)

र, (पु०) भृ+अप् । अतिशय । बहुत । जियादा । "कर्मणि अप्" भरण करो । पालन करनेवाला (त्रि०)

रण, (न०) भृ ल्युट् । वेतन । मजदूरी । पोषण । पालन (परवरिश) और धारण (पकड़ना) । भरणी नक्षत्र (तारा) । और पोषणता (स्त्री०) ङीप्.

रण्यभुज, (त्रि०) भरण्यं (वेतनं) भुङ्क्ते । भुज्+क्विप् । जो मजदूरी खाता है । वेतनिक कर्मकार । मजदूरीपर काम करनेवाला.

रत, (पु०) भरं तनोति । तन्+ड । [illegible] ऋषिके एक मुनि । [illegible] और [illegible] करनेवाला । शबर (भील) । तन्तुवाय (तांती जुलाहा) । क्षेत्र (खेत) । कैकेयीका पुत्र और रामानुज । "[illegible] भ्रमण (भ्रमणार्थं) करोति+अच्" [illegible] भरत (नकल करनेवाला) । दुष्यंत राजाके शकुन्तलाके उदरसे उत्पन्न एक राजा (पु०) । "[illegible] एक बहुत हुए" [illegible] । (पु० ब० व०)

रतखण्ड, (न०) भरतस्य [illegible] खण्डं । [illegible] [illegible] । [illegible] और [illegible] । हिन्दुस्तान एक [illegible].

भरतवर्ष, (न०) ६ त० । भरतका वर्ष । भरतखण्ड हिन्दुस्तान.

भरताग्रज, (पु०) ६ त० । दशरथका बड़ा पुत्र । श्रीरामचन्द्र.

भरद्वाज, (पु०) बड़े भाई । [illegible] [illegible] इसलिये [illegible] [illegible] मुनिविशेष । एक पक्षी.

भर्ग, (पु०) भ्रस्ज+घञ् । [illegible] [illegible] शिवजी । ज्योति पदार्थ ([illegible]) । [illegible] [illegible] । सूर्यके भीतर [illegible] तेज । [illegible]

भर्तृ, (पु०) भृ+तृच् । स्वामी । [illegible] । [illegible] पादशाह । राजा । पालन करनेवाला । और धारण (करनेवाला) (त्रि०)

भर्तृदारक, (पु०) भर्तृ (अधिपति) का [illegible] राजाका पुत्र । [illegible] राजकुमार ([illegible]) [illegible] [illegible] (स्त्री०) टाप् । "भर्तृदारिका".

भर्तृहरि, (पु०) भर्ता हरिरिव । [illegible] [illegible] [illegible] इस नामसे प्रसिद्ध [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भर्त्स, [illegible] । [illegible] । [illegible] । चु० उ० [illegible] सेट् । [illegible] । [illegible]

भर्त्सन, (न०) भर्त्स+ल्युट् । [illegible] । [illegible] [illegible] (स्त्री०)

भर्व्, [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] सेट् । [illegible]

भर्म-न्, (न०) भृ+मन् । [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] । [illegible]

भर्व, [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] सेट् । [illegible]

भल्, [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible]

भल्, [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]

भल्ल, [illegible] (पु० [illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] (पु०) [illegible] । [illegible]

भव, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] और [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (पु० [illegible])

भवत्, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] है । [illegible] । [illegible]) । [illegible] [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] [illegible] ([illegible]).

भवादृश(क्ष), (त्रि॰) भवतः सव इव दर्शनं यस्य। भवत्+दृश्+क्विप्-टक्। क्स् वा। तुमारी नाईं दीखना है। भवत्तुल्यजन। आपके समान जन.

भवानी, (स्त्री॰) भवस्य पत्नी। भव+ङीप्-आनुक्च। शिवभार्या। शिवजीकी स्त्री। पार्वती। दुर्गा.

भवितव्य, (न॰) भू+भविष्यति कर्त्तरि च। नि॰ तव्यत्। अवश्य भव्य। जरूर होनेलायक। जरूर होगा.

भवितव्यता, (स्त्री॰) भवितव्यस्य भावः+तल्। अवश्यम्भाव। जरूर होना। और भाग्य। किस्मत.

भविष्णु, (त्रि॰) भू+इष्णुच्। भवनशील। होनेवाला। होनहार.

भविष्य-त्, (पु॰) भू+स्यतः सद्वेति शतृ-स्य-ऋन्-तृ वा तलोपः। भविष्यकाल। होनेहारा समय। आनेवाला वक्त। उस कालमें होनेहारा पदार्थ (त्रि॰)। स्त्रियां ङीप्-शुमुच.

भव्य, (त्रि॰) भू+कर्त्तरि नि॰ यत्। भावि। होनेहारा। होगा। और मंगल (कल्याण) (न॰) शुभ। सत्य। और योग्य (न॰) उसवाला (त्रि॰).

भष्, कुकुरशब्द। कुत्तेकी आवाज करना। भौंकना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। भषति। अभषीत्। अभाषीत्.

भषक, (पु॰) भष्+वुन्। कुकुर। कुत्ता.

भस्, भर्त्सना-दीप्ति। अक॰। भिड़कना। सक॰ जुहो॰ पर॰ सेट्। बभस्ति। अभासीत्-अभसीत्.

भस्त्रा, (स्त्री॰) भस्+त्रन्। भस्त्रिकाख्य चर्मरचित यन्त्रविशेष। आग सुलगानेहारी चमड़ेकी कला। धौंकनी। फूंकनी। धरनाई। मशक। चमड़ेका यन्त्र। थैली। "भस्त्रका" भस्त्रि "भस्त्रिका" (छोटा थैला).

भस्मक, (न॰) भस्म करोति। कृ+क। भस्मकीट नामी रोगविशेष। एक बीमारी जिसमें बहुतसा खानेवालेभी भूख बढ़ीही बनी रहे। "भस्म इव" इवार्थे कन्। विडङ्ग (दूसरा)। और स्वर्ण (सोना).

भस्मन्, (न॰) भस्+मनिन्। (भस्मन्-टर)। सड़े गंधेका विकार। शिवजीकी विभूति। राख.

भस्मशायिन्, (पु॰) भस्मनि शेते। भस्म (राख) पर सोने (लेटने) वाला। शिवजीका नाम.

भस्मसात्, (अव्य॰) भस्म कार्त्स्न्येन भस्मतां करोति। भस्मन्+साति। पूरा २ राख कर डालना। भस्म करना.

भस्मावशेष, (त्रि॰) भस्म एव अवशेषः यस्य। जिसका शेष (बाकी) भस्म (राख) रहजाय.

भा, दीप्ति। चमकना। अदा॰ पर॰ अक॰ अनिट्। भाति। अभासीत्.

भा, (स्त्री॰) दीप्ति। चमकना। प्रभा। भा+अङ्+टाप्।

भाग, (पु॰) भज्+भावे घञ्। भजन। [illegible] घञ्" अंश। टुकड़ा। इस (बड़ी के) [illegible] (हिस्सा)। एकदेश। एक टुकड़ा। हिस्सा [illegible] किस्मत। एक राशिका तीसवां भाग (डिग्री) [illegible]

भागधेय, (न॰) भाग+(स्वार्थे) धेय। [illegible] "भागेन धीयते धर्मा। धा+यत्। राजाके [illegible] देनेलायक कर (खिराज)। "भागो अंश [illegible] धा+सम्प्रदाने यत्। जिसे अंश दिया जाय [illegible] सपिण्ड। शरीक.

भागवत, (त्रि॰) भगवतः भगवान् वा इदं [illegible] वा अण्। भगवान् वा भगवतीका भक्त। [illegible] भगवान्की बाबत। उनके गुणोंके वर्णन [illegible] और उपपुराण (न॰).

भागदास्, (अव्य॰) भागं भागं ददाति। [illegible] भागका देना.

भागहर, (त्रि॰) भागं (अंशं) हरति (अंश [illegible] गृह्णाति) हृ+अच्। जो अधिकारी होनेसे हिस्सा [illegible] अंशग्राही। अंश लेनेहारा। हिस्सा बंटनेवाला [illegible]

भागहार, (पु॰) भज्यते इति भागो विभक्त [illegible] हरणम्। विभाग करनेलायकका लेना। हृ+घञ्। [illegible] (हिसाबका इल्म) में कहाहुआ भाग (अंश [illegible] का विभाग करना (बाँटना).

भागिन्, (त्रि॰) भज्+घिनुण्। भागनिशिष्ट। [illegible] हिस्सेदार.

भागिनेय, (पु॰) भगिन्या अपत्यं+ढक्। (बहिन [illegible] बेटा। स्वस्रपुत्र। भनेजा। उसकी कन्या [illegible] भनेजी+ङीप्.

भागीरथी, (स्त्री॰) भगीरथेन आनीता [illegible] यत+अण्। भगीरथसे लाई गई गंगा। "भागीरथी [illegible] शीकराणां" कुमार॰.

भागुरि, (पु॰) धर्मशास्त्र और व्याकरणके कर्ते [illegible] एक मुनि.

भाग्य, (न॰) भज्+ण्यत्-कुत्वम्। शुभाशुभ [illegible] भले और बुरेको बतानेहारा काम। "[illegible] यत्" भागवत्। हिस्सेदार (त्रि॰).

भाग्योदय, (पु॰) भाग्यस्य उदय। [illegible] (वृद्धि)। किस्मतका खुलना.

भाङ्गीन, (न॰) भङ्गाया धिजलका भवनं क्षेत्र। [illegible] (भांग) उपजनेका खेत। खञ्। "भाङ्गी [illegible]

भाज्, पृथक् करण। जुदा करना। चु॰ उ॰ [illegible] सेट्। भाजयति-ते। अबभाजत्-त.

भाजक, भज्+ण्वुल्। बाँटनेवाला। बाँटनेहार। [illegible]

भाजन, (न॰) भाजते अनेन। भज्+ल्युट्। [illegible] आधार। आधारा। योग्य। आयत.

य, (त्रि०) भाज्यते विभज्यते । भाज्+कर्मणि यत्। विभजनीय । बांटनेलायक.

टक, (न०) भट्-पोषण-पालना+ण्वुल् । दूसरेके घर वा सवारी आदिको भोगनेके लिये उसके स्वामीको देनेलायक धन । भाड़ा । किराया.

ट, (पु०) भट्टस्य अनुयायी+अण् । भट्ट (कुमारिल भट्ट-मीमांसादर्शनका कर्ताका अनुसरण करनेवाला.

ण, (पु०) भण्+घञ् । दृश्य (देखनेलायक) काव्यका भेद.

ण्ड, (न०) भा+अण्डच् भण्+ड स्वार्थे अण् वा । पात्र । भांडा । बर्तन । तेल रखनेका पात्र । एक प्रकारका घर । भंडार । बनिओंका मूलधन । पूंजी । नदीके दोनों किनारोंके बीचका । भण्डस्य भावः+अण् । भांडका चरित्र (न०).

ण्डशाला, (स्त्री०) भाण्डानां शाला । भांडो (बर्तनो और तरह-तरह खान पानके पदार्थ) का घर.

ण्डारिन्, (पु०) भाण्डं ऋच्छति । ऋ+णिनि । भण्डारी । जिसे अन्न आदि द्रव्यवाले घरोंका अधिकार दियागया है.

ण्डवाह, (पु०) भाण्डि (क्षुराद्याधारं) वहति+अण् । जो छुरछी रखताहै । नापित । नाई । नौआ । भाण्डि+अ-स्त्यर्थे लच् । "भाण्डिल" यही अर्थ.

ति, (स्त्री०) भा+क्तिन् । शोभा । चमक । मनोहरता.

द्र, (पु०) भद्रानिर्युक्ता पौर्णमासी भाद्री सा यस्मिन् मासे+अण् । जिनसे छठा महीना (भादों) । उस महीनेकी पूर्णिमा (स्त्री०) ङीप् । "भद्रैव स्वार्थे अण्" पूर्व और उत्तर भाद्रपदतारे (न०).

द्रमातुर, (पु०) भद्रायाः सत्याः मातुः अपत्यं+अण् उरच् । सतीका पुत्र.

नु, (पु०) भा+नु । सूर्य । आकका वृक्ष । किरण । स्वामी । राजा.

नुमत्, (पु०) भानुः किरणः अस्ति अस्य । मतुप् । किरणवाला । सूर्य । "भानुमाली" इसी अर्थमें.

नुमती, (स्त्री०) विक्रमादित्य राजाकी पत्नी (स्त्री०).

म्, क्रोध । गुस्सा करना । खफा होना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भामते.

म, (पु०) भाम्+घञ् । क्रोध (गुस्सा) और दीप्ति (चमक) । "कर्तरि अच्" सूर्य । क्रोधवाली औरत भामिनी (स्त्री०).

मिनी, (स्त्री०) भाम्+णिनि । क्रोधशीला स्त्री । क्रोध करनेवाली स्त्री । स्त्रीमात्र । हरएक औरत.

र, (पु०) भृ+घञ् । गुरुत्वपरिमाण । बोझेवाला माप । बोझेवाला द्रव्य । बीस तुलाका माप । आठ हजार तोलेका परिमाण । बोझा.

भारक, (पु०) भारं वहति । भार+ठञ् । भारवाहक । बोझा उठानेहारा.

भारत, भरतान् (भरतवंश्यान्) अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+अन् । भारः (वेदादि शास्त्रेभ्योऽपि सारांशः अस्ति अस्य वा) । वह ग्रन्थ कि जिसमें भरतवंशके लोकोंका वर्णन है । अथवा जिसमें वेदादि शास्त्रोंसे भी सारभाग लिया-गया है । वेदव्यासका बनाया हुआ लाख श्लोकका ग्रन्थ । "भरतेन विहितं तस्येदं वा+अन्" । भरतसे निशान लगा-गया वा भरतका । जम्बुद्वीपके भीतरका एक वर्ष (भारत-वर्ष) । "भरतस्य गोत्रापत्यं+अण्" भरत राजाके वंशमें हुआ । "भरतेन मुनिना प्रोक्तं अण्" भरत मुनिसे बना-यागया नाटकशास्त्र आदि (न०) "तदधीयते+पुनरण्" उसे पढ़तेहैं । नट । और आग.

भारती, (स्त्री०) भृ+अतच् । स्वार्थे अण् । वाक्य (वचन) । वचनकी अधिदेवता (जिसके आश्रय वचन रहता है) । सरस्वती । पक्षिविशेष । अलंकारमें एक प्रकारकी वृत्ति । संस्कृत भाषा

भारद्वाज, (पु०) भरद्वाजस्य गोत्रापत्यं+अण् । भरद्वाजके गोत्रमें हुआ । गोत्रको चलानेहारा एक मुनि । द्रोणाचार्य । अगस्त्यमुनि । व्याघ्राट पक्षी । और बृहस्पतिका पुत्र । वनकी कपास (स्त्री०) ङीप्.

भारयष्टि, (स्त्री०) भारस्य वहनार्था यष्टिः । शाक० । बोझा उठानेके लिये लाठी । भारवहनदण्ड । भार उठानेका दण्डा.

भारवाह-क, (पु०) भारं वहति । अण्+ण्विः वा । भार उठानेवाला । भारवाही । ण्वुल् । "भारवाहकः" इसी अर्थमें है.

भारवि, (पु०) किरातार्जुनीय काव्यके बनानेवाला । एक कवि.

भाराक्रान्त, (त्रि०) भारेण आक्रान्तः । भार (बोझ) दबाहुआ (लदा हुआ).

भारोपजीविन्, (त्रि०) भारेण उपजीवति । बोझा ढोकर जीविका (रोजी) कमानेवाला.

भार्गव, (पु०) भृगोरपत्यं तद्गोत्रापत्यं वा+अण् । भृगुकी संतान वा उसके गोत्रमें हुआ । शुक्राचार्य । परशुराम । धन्वी । तीर चलानेवाला । और हाथी । "तेन प्रोक्तम्, तेनाधीता, ज्ञाता वा अण्" । उससे कहीगई, पढ़ीगई वा जानीगई । वेदमें प्रसिद्ध एक प्रकारकी विद्या । पार्वती । लक्ष्मी । और दूर्वा (दूब) । स्त्रियां ङीप्.

भार्या, (स्त्री०) भृ+ण्यत् । विधिसे विवाहीगई स्त्री । पालन करनेके लायक (त्रि०).

भार्याट, (त्रि०) भार्यया अटति । अपनी स्त्रीको वेश्या-बनाकर जीनेवाला.

भाल, (न०) भा+लच् । ललाट । मस्तक । माथा । मनोंका ऊपरका हिस्सा.

भालचन्द्र, (पु०) भाले चन्द्रः यस्य। जिसके मस्तक (माथे) पे चन्द्रमा है। शिवजीका नाम.

भालदर्शन, (न०) भाले दृश्यते+कर्मणि ल्युट्। माथेपर दिखाई देता है। सिन्दूर। सिंदूर.

भालनेत्र, (पु०) भाले नेत्रं यस्य। जिसके माथेपर आँख है। शिवजी। "भाललोचन" आदि इसी अर्थमें.

भालाङ्क, (पु०) भालस्य इव अङ्को यस्य, भाले अङ्को यस्य वा। माथेकी भाईं निशानवाला, वा जिसके माथेपर निशान है। शाकभेद। एक प्रकारका साग। करपत्रनामी अस्त्र (औजार)। रोहितनामी मच्छ। महापुरुषके चिह्नवाला। शिव। और कछुआ। माथेका निशान। [illegible] आदमी.

भालु(लू)क, (पु०) भालूक०+स्वार्थे अण्। वा पृ० [illegible]। एक जीव। [illegible]। रीछ। "भालूक" यही अर्थ.

भाव, (पु०) भावयति (चिन्तयति) पदार्थान्। चु० भू० अच्। [illegible] पदार्थचिन्तक (कई तरहके पदोंके अर्थोंको [illegible]) पण्डित। "भावयति (प्राप्नोति) [illegible]+भू+णिच्+अच्" इसकी अवस्था (दशा) को [illegible] मानस विकार (मनके [illegible]) [illegible] (पसीना) और [illegible] (कांपना) [illegible]। भू+घञ्। [illegible], सिद्ध, वा [illegible] अर्थ। [illegible] (मुस्कान) और आशय। [illegible].

भावक, (पु०) [illegible]+स्वार्थे कन्। मनका विकार। [illegible] [illegible]। और [illegible] (उपजानेहारा) (त्रि०).

भावगम्य, (त्रि०) [illegible] गम्यः। भावसे [illegible]। [illegible].

भावदर्शिन्, (त्रि०) भावं [illegible]। [illegible] (मतलब) को [illegible].

भावन्द, (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

भावना, (स्त्री०) भू+णिच्+युच्। [illegible] एक [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] (स्त्री०)

भावबोधक, (पु०) [illegible] (मनके) [illegible]। [illegible] (मुस्कान) [illegible]। [illegible] (इशारा)। [illegible]

भावमूर्ति, (स्त्री०) [illegible]। [illegible]। [illegible].

भावस्थिर, (त्रि०) भावे स्थिरः। मनमें [illegible] जड़ पकड़ गया (जम गया).

भावाद्वैतम्, (न०) भावे अद्वैतं। [illegible] उपादान कारण। (जैसे सूत कपडेका).

भावानुगा, (स्त्री०) भावं (पदार्थं) अनु [illegible] गच्छति। गम्+ड। पदके अर्थ [illegible] करती है। छाया। टीका [illegible] पीछे रहनेहारा (त्रि०).

भावान्तरम्, (न०) अन्यो भावः। [illegible] दूसरा ख्याल। दूसरा भाव.

भावाभास, (पु०) भावस्य आभासः। [illegible] झूठा मतलब.

भावार्थ, (पु०) भावस्य अर्थः। [illegible] किसी शब्द वा वाक्यका तात्पर्य। [illegible]

भावित, (त्रि०) भू+णिच्। [illegible] (पु०) प्राप्त (पाया)। शुद्ध। [illegible]। [illegible] और मिलाहुआ। पैदाकिया। जाहिर हुआ। [illegible]

भावित्रम्, (न०) भू+णि+इत्र। तीनो लोक (स्वर्ग, [illegible] पाताल).

भाविनी, (स्त्री०) भाव० (हावभावोंवाली) [illegible] अस्या+इनिः। एक प्रकारकी स्त्री। जिसके हावभाव [illegible] हारकी चेष्टा होरही है। और [illegible]। [illegible] भविष्यत्कालवाली (आगेके समयमें होनेहार)। [illegible]

भावुक, (न०) भू+उकञ्। मङ्गल। [illegible] (त्रि०)। (जिसे काव्य पढनेका रस है) [illegible] रसिका भुवि भावुकाः" इति [illegible]। [illegible]

भाव्य, (त्रि०) भू+ण्यत्। होनेवाला.

भाष्, कहना-बोलना। भ्वा० आ० द्वि० [illegible] अमरसिंह.

भाषक, (त्रि०) भाष्+ण्वुल्। [illegible] बोलनेवाला.

भाषण, (न०) भाष्+भावे ल्युट्। बोलना। [illegible] [illegible].

भाषा, (स्त्री०) भाष्+अ। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]

भाषान्तर, (न०) अन्या भाषा। [illegible] अनुवाद.

भाषासार, (पु०) [illegible]। [illegible] [illegible].

भाषित, (न०) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] (त्रि०)। [illegible] [illegible]

रन, (त्रि०) भास्+णिनि (समासके अन्तमें) दिनेवाला। बका.

ज, (न०) सूत्रोंकी व्याख्या करनेहारा ग्रन्थविशेष। ख्यनीय (कहनेलायक) (त्रि०).

, दीप्ति चमकना। भ्वा० आ० अक० सेट्। भासते। भासिष्ट.

, (स्त्री०) भास्+क्विप्। दीप्ति। रौशनी। मयूख। केरण। इच्छा.

स, (पु०) भास्+घञ्-अच् वा। दीप्ति। चमक। गोष्ठ। गोशाला। कुक्कुर। कुत्ता। और शुक.

सक, (त्रि०) भास्+ण्वुल्+अक। प्रकाश करनेवाला। चमकानेवाला.

सुर, (त्रि०) भास्+घुरच्। दीप्तिशील। चमकनेवाला। और स्फटिक (बल्लौर)। वीर (बहादुर) (पु०)। कुष्ठौषध। (न०).

स्कर, (पु०) भासं करोति। भास्+कृ-ट्च्। जो प्रकाशको करता है। सूर्य। अग्नि (आग)। वीर (बहादुर)। आकका वृक्ष। सिद्धान्तशिरोमणि नाम ग्रन्थके बनानेहारा पण्डित.

स्करप्रिय, (पु०) ६ त०। सूर्यका पियारा। पद्मरागमणि (चुनि).

स्वर, (त्रि०) भास्+वरच्। दीप्तियुक्त। चमकनेवाला। सूर्य। दिन। आकका वृक्ष। अग्नि (आग) (पु०).

स्वत्, (पु०) भास्+अस्ति अर्थे मतुप् "म" को "व" होता है। सूर्य। आकका वृक्ष। और वीर (बहादुर)। चमकनेवाला (त्रि०).

भक्ष्, लोभ। लालच करना। सक० मांगना-द्विक०। क्लेश। तकलीफ देना। अक० भ्वा० आत्म० सेट्। भिक्षते। अभिक्षिष्ट.

भक्षा, (स्त्री०) भिक्ष्+अ। याञ्चा। मांगना। प्रार्थना करना। भीख.

भक्षाक, (त्रि०) भिक्ष्+षाकन्। भिक्षाकारक। भीख मांगनेहारा। संन्यासी। स्त्रियां ङीप्। "भिक्षाकी".

भक्षाटन, (न०) भिक्षार्थं अटनम्। भिक्षा (भीख) के लिये घूमना.

भक्षाशिन्, (त्रि०) भिक्षालब्धं अश्नाति। अश्+णिनि। जो भीख पाकर जीता है। मांगनेवाला फकीर। संन्यासी.

भिक्षु, (पु०) भिक्ष्+उ। फकीर। संन्यासी। चौथे आश्रमवाला.

भिक्षुक, (पु० स्त्री०) भिक्ष्+उकञ्। भिक्षोपजीवी। भीखपर जीनेहारा। फकीर। संन्यासी। "भिक्षुकी" (स्त्री०).

भित्त, (न०) भिद्+क्त० नि०। खण्ड। टुकड़ा। हिस्सा। दीवार.

भित्त, (न०) भिद्+क्त+नि तस्य न मः। भाग। टुकड़ा दीवार.

भित्ति, (स्त्री०) भिद्+क्तिन्। तोड़ना। भिन्न-करना दीवार.

भित्ति, (स्त्री०) भिद्+क्तिन्। घर आदिकी दीवार तोड़ना। विभाग करना। मौका। अवसर.

भिद्, द्विधाकरण। दो टुकड़े करना। विशेष करण जियादा करना। रुधा० उभ० सक० अनिट्। भिनत्ति। भिन्ते। अभिदत्-अभैत्सीत्-अभित्त.

भिदा, (स्त्री०) भिद्+अङ्। विदारण। फाड़ना द्वैधीकरण। दो टुकड़े करना। विशेषकरण। जियादा करना.

भिदुर, (न०) भिद्+कुरच्। वज्र। "हरम्" भिदिर (यही अर्थ)। प्लक्षवृक्ष। पाकड़का दरख्त। तोड़नेवाला (त्रि०).

भिन्दिपाल, (पु०) भिदि-फाड़ना+इन्=भिन्दि-भेदनं पालयति। पाल्+अण्। हाथसे फेंकनेलायक नालीके तरहका अस्त्र (औजार)। हस्तप्रमाण। एक औजार जो हाथके मापका हो। हाथसे चलानेका तीर.

भिन्न, (पु०) भिद्+क्त। विदारित। फाड़दिया गया मिश्रित। मिलाया गया। संगत। मिलाहुआ। अन्य। और प्रस्फुटित। फूटगया। तोड़ दिया। जुदा किया.

भिन्नभिन्नात्मन्, (पु०) भिन्नः प्रकारः। प्रकारे द्वित्वम्। तादृश आत्मा यस्य। जिसका स्वरूप जुदा २ हो। चणक। छोले.

भिन्नोदर, (पु०) भिन्नं उदरं यस्य। दूसरी (भिन्न) द्वितीयासे उत्पन्न हुआ। सोतेला भाई.

भिन्नक्रम, (त्रि०) भिन्नः क्रमः येन। नियमसे बाहिर हुआ.

भिन्नगति, (त्रि०) भिन्ना गतिः यस्य। टूटीहुई चालवाला.

भिन्नदर्शिन्, (त्रि०) भिन्नं पश्यति। भेद देखनेवाला। पक्षपाती.

भिन्नदेश, (त्रि०) भिन्नः देशः यस्य। भिन्न २ देशमें रहनेवाला.

भिन्नमर्याद, (त्रि०) भिन्ना मर्यादा येन। उचित नियम (कायदा) को तोड़नेवाला.

भिन्नरुचि, (त्रि०) भिन्ना रुचिः यस्य। भिन्न (जुदा) रुचि (स्वाद) वाला.

भिन्नमर्मन्, (त्रि०) भिन्नं मर्म यस्य। मर्म (कोमल स्थान) पर घाव लगाया गया.

भिन्नस्वर, (त्रि०) भिन्नः स्वरः यस्य। भिन्न (जुदा) स्वरवाला। बदली हुई आवाजवाला.

भिल्, भेदन (फाड़ना) तु० । पक्षे तु० पर० सक० सेट् । भेलयति-ते । भिलति । अबीभिलत्-त । अभेलीत्.

भिल्ल, (पु०) भिल्+लक् । म्लेच्छजातिभेद । एक जंगली कौम । भील । लोधका दरख्त.

भिष्, रोगप्रतीकार-रोगका उपाय करना । पर० सक० सेट् । भेषति । अभेषीत्.

भिषज्, (पु०) भिषति (चिकित्सते) । भिष्+अजिक् । जो रोगका इलाज करता है । वैद्य । हकीम । रोगप्रतीकार । इलाज.

भिस्सटा, (स्त्री०) भिस्सां (अन्नं) टीकते । टीक्+ड-पृ० । दग्धान्न । जलाहुआ अन्न । "भिस्सिटा" "भिस्सिदा" "भिस्सिटा" भिस्सिदा".

भी, भय-डरना । अक० । भरण-पालना-सक० क्र्यादि० पर० अनिट् । भीनाति-भिनाति । अभैषीत्.

भी, (स्त्री०) भी+क्विप् । भय । डरना । खौफ.

भीति, (स्त्री०) भी+क्तिन् । भय (डर) । कम्प । काँपना । "क्त" भीतः । भययुक्त । डराहुआ.

भीम, (त्रि०) बिभेति अस्मात् । भी+मक् । जिससे डरता है । भयहेतु । भयका कारण । डरावना । भयानक रस । महादेव । भीमसेन । अम्लवेतस (अमलबेत) (पु०) । दुर्गा (देवी) (स्त्री०) । "भीमा देवीति विख्याता तन्मे नाम भविष्यति" इति मार्क०.

भीमपराक्रम, (त्रि०) भीमः पराक्रमः यस्य । डरावनी [illegible]-विष्णु.

भीमसेन, (पु०) युधिष्ठिरका अनुज (छोटा भाई) । [illegible] । एक प्रकारका कपूर (कपूर) । कुन्तीके [illegible] हुआ दूसरा पाण्डव.

भीमैकादशी, (स्त्री०) भीमसेनोपास्या एकादशी । माघ० [illegible] एकादशी (जिसे भीमने उपासा).

भीरु, (त्रि०) भी+क्रु । भयशील । डरनेवाला [illegible] । [illegible].

भीरुक, (पु०) भी+क्रु-कन् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । एक प्रकारका इक्षु (गन्ना) । [illegible] (त्रि०).

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] है । [illegible] । [illegible] (त्रि०).

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] ([illegible]) (त्रि०) । [illegible] [illegible] [illegible] पुत्र । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (पु०).

[illegible] (न०) [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] ([illegible]) के [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible].

भीष्माष्टमी, (स्त्री०) ६ त० । भीष्मके [illegible] शरीर छोड़नेका दिन माघके [illegible] (इसलिये इस दिन सब वर्णोंको [illegible] चाहिये).

भुक्त, (त्रि०) भुज्+कर्मणि क्त । [illegible] "भावे क्त" भक्षण । खाना (न०) । [illegible] जन । भोग । एक कवल.

भुक्तसमुज्झित, (त्रि०) पूर्वं भुक्तं पश्चात् [illegible] (त्यक्तं) । भोजनोत्तर त्यक्त अन्नादि । [illegible] छोड़ा गया अन्न आदि.

भुक्तिप्रद, (पु०) भुक्तिं (भोगं) भोजनं [illegible] (स्वल्पायासमदस्थानात्) । जो भोग [illegible] है (थोड़े यत्नसे पायाजाता है) । [illegible]

भुग्न, (त्रि०) भुज्-कौटिल्य-भुग्न । क्त । [illegible] कुटिल कियागया । झुकगया । [illegible]

भुज्, भक्षण-खाना । आ० । पालना । पर० । [illegible] अनिट् । भुङ्क्ते अन्नं । अभौक्षीत् । [illegible] मही) । "दिवं मरुत्वानिव भोक्ष्यते [illegible] भुवः.

भुज, (पु० स्त्री०) भुज्यतेऽनेन । भुज्+[illegible] भुजा । कर । हाथ । त्रिकोणादिमें [illegible] कोनवाला क्षेत्रका रेखाविशेष । [illegible] सूंड़ । वृक्षकी शाखा.

भुजग, (पु०) भुज्-वक्रण-टेढ़ा होना [illegible] टिलंभवन् सन् गच्छति । गम्+ड । [illegible] चलता है । सर्प । सांप । और [illegible]

भुजगान्तक, (पु०) ६ त० । [illegible] गरुड़.

भुजगाशन, (पु०) भुजगान् अश्नाति । [illegible] सर्पोंको खाता है । गरुड़ । "भुजगभुक्"

भुजङ्ग, (पु०) भुज० सन् गच्छति । [illegible] कुटिल होकरहुआ जाता है । सर्प । [illegible] । [illegible] [illegible]

भुजङ्गप्रयात, (न०) बारह अक्षरोंके [illegible]

भुजङ्गम, (पु०) भुज० ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] । जो [illegible] [illegible] है । [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible])

भुजङ्गेश्वर, (पु०) भुज० [illegible] [illegible] । [illegible] भुज० ([illegible])

भुजमध्यगत, (न०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]

भुजबलवीर्य, (न०) [illegible] [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible]

भुजशिखर, (पु०) ६ त० । [illegible]

...न्तर, (न०) भुजयोरन्तरं (मध्यं)। बाहुओंका ...च। क्रोड। कुच्छड। गोद.

...ष्य, (पु०) भुज्+किष्यन्। दास। रोग। स्वतन्त्र। ...त्य। हस्तसूत्र। हाथका सूत (डोरा)। दासी (गोली) ...ौर वेश्या (कंचनी) (स्त्री).

...न, (न०) भवति अत्र। भू+क्युन्। होता है इसमें ...गत्। दुनियाँ। लोक। आकाश। आस्मान। १४ की ...ंख्या.

...नकोष, (पु०) भुवनस्य कोष इव। मानों संसारका ...ज़ाना है। भूगोल। पृथिवीका गोला। ज्योतिषका एक ...न्थ.

...नेश-ईश्वर, (पु०) भुवनस्य ईशः। पृथिवीका ...स्वामी। राजा.

...नत्रय, (न०) भुवनानां त्रयं। तीनों भुवन (स्वर्ग, ...मर्त्य, पाताल).

...नपावनी, (स्त्री०) भुवनं पावयति। संसारको पवित्र ...करनेवाली। श्रीगंगाजीका नाम.

...नमर्त्, (पु०) भुवनं बिभर्ति। पृथिवीको पालने-...वाला (अभय).

...नशालिन्, (त्रि०) भुवनं शास्ति। पृथिवीपर आज्ञा ...चलानेवाला.

...वर्, (अव्य०) आकाशास्वरूप दूसरा लोक.

...,) प्राप्ति। पाना। चु० आ० सक० सेट्। भावयते। अभी-...भवत्.

...,) पाना। भ्वा० उभ० सक० सेट्। भवति-ते। अभूत्-...अभविष्ट.

...,) शुद्धि पाक करना। भ्वा०। सोचना और मिलाना। सक० ...चुरा० उभ० सेट्। भावयति-ते। अबीभवत्-त.

...,) सत्ता होना। भ्वा० पर० अक० सेट्। भवति। अभूत्.

...,) (स्त्री०) भू+क्विप्। पृथिवी। जमीन। एककी संख्या। ...स्थानमात्र। और यज्ञकी अग्नि (आग).

भूकम्प, (पु०) भुवः कम्पः। पृथिवीका कांपना। भूचाल.

भूकेश, (पु०) भुवः (पृथिव्याः) केश [illegible]। पृथिवीका ...मानो बाल है। बड़। वड और शैवाल। सेवार.

भूगोल, (पु०) भूगोल [illegible]। गोलाकारपदार्थ पृथिवी-...का मण्डल (दायरा)। "भवे सकलस्यकस्य भूगोलो ...व्योम्नि तिष्ठति। बिभ्रत् परां ... ...मिदम्" इति सूर्यसिद्धान्तः.

भूच्छाया, (स्त्री०) भुवश्छाया। सूर्यकिरणप्रतिबन्धकत्वात् पृथिवीकी छाया (सूर्यकी किरणोंके रुकनेसे उत्पन्न हुआ पृथिवीका अंधेरा)। तमस्.

भूजम्बू, (स्त्री०) भुवो जम्बूरिव (जम्बूरत्न)। जम्बो पृथिवीका जामन है। गेहूँ। गेहुँ। विकङ्कतफल.

वाच० ४६

भूत, (न०) भू+क्त। न्याय। मुनासिब। उचित। पृथिवी, जल, तेज, वायु, और आकाश रूप, गंध आदि विशेष गुणवाले द्रव्य। यथार्थ। ठीक। वास्तविक। असली। और सत्यका अनुसन्धान। पिशाच आदि। कुमार। योगि-योंका राजा। कृष्णपक्ष (पु०)। अतीत (बीतगया)। सदृश। सत्य (त्रि०)। कृष्णपक्षकी चतुर्दशी। क्रिया दाद्.

भूतघ्न, (पु०) भूतं हन्ति। हन्+टक्। भूर्जपत्र (भोज-पत्र)। इसके धारण करनेसे बालकोंके ग्रह भूत आदि भागजाते हैं। "भूतं (प्राणं गन्धं) हन्ति (अप करोति)" जो अपनी गंधसे तिरस्कार करता है। लहसुन। और ऊंट (ऊंठ)। भूतनाशक (भूतोंके नाश करनेहारा) (त्रि०)। तुलसी (स्त्री०) ङीप्.

भूतचतुर्दशी, (स्त्री०) भूतप्रिया चतुर्दशी (चतुर्दश्यां तस्यां दीपदानात्)। यमकी पियारी चतुर्दशी। इसके बड़ेपने उसमें दीपक दिया जाता है। कार्तिक (मास) के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी। यमचतुर्दशी। कार्तिककृष्ण चौदस। कार्तिककृष्णचतुर्दशी.

भूतधात्री, (स्त्री०) भूतानि (जन्तून्) धरति। धा+ तृच् ङीप्। जो जीवोंको धारण करती है। पृथिवी। जमीन.

भूतनाथ, (पु०) ६ त०। भूतोंका नाथ। शिवजी। और बटुकभैरव। "भैरवो भूतनायक" इति बटुकस्तोत्रम्.

भूतनाशन, (न०) भूतानि नाशयति। नश्+णिच्+ल्यु०। जो भूतोंको नाश करता है। रुद्राक्ष। सर्षप। (भूतोंके नाश करनेहारा रुद्राक्ष)। सरसों। भल्लातक (पु०).

भूतपत्र, (पु०) भूतमिव पत्र (अंधकारकत्वात्)। अंधेरा होनेसे पत्र भूतोंका दिखता है। कृष्णपत्र.

भूतभावन, (पु०) भूतानि (पृथिव्यादीनि) भावयति (जनयति) भू+णिच्+ल्यु। जो पृथिवी आदिको उत्पन्न करता है। "भूत (सत्य यथार्थं) भावना यस्य"। जिसकी भावना सभी का ठीक है (विष्णु) और बटुकभैरव। ब्रह्मा स्तोत्र.

भूतयज्ञ, (पु०) भूतेभ्यः (प्राणियोंके वास्तेही दीयमान) यज्ञ (बलिः)। कौवा आदि जीवोंके लिये बलि देना। प्रतिदिन गृहस्थके करनेयोग्य पांच यज्ञोंमेंसे एक (देवऋणका यज्ञ)। "भूतेभ्यो बलिहरणं भूतयज्ञ" इति स्मृतिः.

भूतल, (न०) भुवस्तलं। पृथिवी। ६ त०। पाताल। पृथिवीका तल.

भूतशुद्धि, (स्त्री०) भूतानां (देहारम्भकपृथिव्यादीनां) शुद्धिःशोधनं (विशेषेण शोधनम्)। तन्त्रशास्त्रमें प्रसिद्ध देहके आरम्भ करनेवाले पंचभूत तत्त्वोंका क्रमसे विशेष स्वभावसे देखना शोधन। पूजा आदिके पहिले अपने शरीरका शोधन करना। इत्यादि भरा।

भूतहर, (पु०) भूतानि हरति (अपसारयति) ह+अच् । भूतोंको भगा देता है । गुग्गुल । गुग्गल.

भूतात्मन्, (पु०) भूतानि (पृथिव्यादीनि पंचद्रव्याणि) स्वरूप है । परब्रह्म । "सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलान्" इति श्रुतिः । सब भूतोंका स्वरूप हिरण्यगर्भ । विष्णु । बटुक-भैरव । और उनका स्तोत्र.

भूतारि, (पु०) ६ त० । भूतोंका शत्रु । हींग । इसके गंधसे भूत भाग जाते हैं.

भूतावास, (पु०) भूतानां (प्राणिनां) आवासः (अ-धिष्ठानत्वात्) । (आधार-आश्रय होनेसे) प्राणियोंकी निवासकी जगह) । विष्णु । और विभीतक वृक्ष । बहे-ड़ेका दरख्त.

भूति, (स्त्री०) भू+क्तिन् । भस्म । होना । अणिमा आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य (सम्पदा) । शिवजीके अङ्गोंका भस्म । [illegible] । उत्पत्ति । जाति । जन्म । और वृद्धिनाम औषध.

भूदार, (पु०) भुवं [illegible] (खनति) भुजायन्ते । द+अण् । [illegible] जो पृथिवीको खोदता है । [illegible] ([illegible]).

भूदेव, (पु०) भुवि देव इव । पृथिवीपर मानो देवता है । [illegible] ([illegible]).

भूधर, (पु०) भुवं धरति । धृ+अच् । पृथिवीको धारण करते है । [illegible] । [illegible].

भूप, (पु०) भुवं [illegible] । [illegible] । भूमिपाल । पृथिवीको [illegible] । "भूमिप" आदि । राजा.

भूपाल, (पु०) भुवं पालयति । पाल+अण् । भूपति । पृथि-वीको [illegible] है । राजा । [illegible].

भूभुज, (पु०) भुवं भुङ्क्ते भुनक्ति ([illegible]) [illegible] । पृथिवीको [illegible] है । भूपाल । [illegible].

भूभृत्, (पु०) भुवं बिभर्ति ([illegible]) [illegible] । पृथिवीको [illegible] है । [illegible] । [illegible].

भूमन्, (पु०) [illegible] । [illegible] । त्रि० । "बहु" को [illegible] । [illegible]

भूमि, (स्त्री०) [illegible]

[illegible]

भूमिज, (पु०) भूमेर्जायते । [illegible] जता है । मङ्गल नामी ग्रह । नरक [illegible] । जो पृथिवीमें उपजता है (त्रि०).

भूमिजीविन्, (त्रि०) भूम्या जीवति । [illegible] (खामदन) पर जीनेवाला.

भूमिदेव, (पु०) भूमौ देवः । पृथिवीपर [illegible]

भूमिपुत्र, (पु०) भूमेः पुत्रः । भूमीका पुत्र । मंगलग्रह.

भूमि(मी)रुह, (पु०) भूम्यां भूमौ वा रोहति । जो पृथिवीपर उगता है । वृक्ष । दरख्त.

भूमिष्ठ, (पु०) भूमौ तिष्ठति । [illegible] है । भूमिस्थ । पृथिवीपर रहनेवाला । [illegible]

भूमिस्पृश्, (पु०) भूमिं स्पृशति । [illegible] मनिओं । मनुष्य । एक प्रकारका चोर । [illegible] अंधा.

भूमीन्द्र, (पु०) भूमौ इन्द्र इव । पृथिवीपर [illegible] [illegible] । राजा.

भूयस्, (अव्य०) पुनः । फिर । बहुत ([illegible] ईयसुन् (त्रि०).

भूयिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बहु+इष्ठन् । [illegible] । बहुतही.

भूयोभूयस्, (अव्य०) पुनः पुनः । बार बार

भूयोविद्य, (त्रि०) भूयः विद्या यस्य । [illegible] वाला । बहुविद्य.

भूरि, (पु०) भू+क्रिन् । विष्णु । शिव । [illegible] (सोना) (न०) । प्रचुर । बहुत (त्रि०)

भूरिगम, (पु०) भूरि ([illegible]) [illegible] । बोझा होनेपर भी बहुत [illegible] गधा.

भूरिसार, (पु०) [illegible]

भूरिशस्, (अव्य०) भूरि+शस् । बहुत । [illegible]

भूरिश्रवस्, (पु०) [illegible]

भूर्ज, (पु०) [illegible]

भूर्जपत्र, (पु०) [illegible]

भूष, (पु०) [illegible]

भूषण, (पु०) [illegible]

;, मण्डन सजाना । चु० उभ० पक्षे भ्वा०पर० सक० ...ट् । भूषयति-ते । भूषति.

...ण, (न०) भूष्यतेऽनेन । भूष्+करणे ल्युट् । जिससे ...जाया जाता है । अलंकार । जेवर । गहना । मुकुट । ...ाज.

...ा, (स्त्री०) भूष्+अ । मण्डनक्रिया । सजावट.

...षेत, (त्रि०) भूष्+क्त । अलंकृत । सजाया गया । सजाहुआ.

...ष्णु, (त्रि०) भू+ष्णु । भवनशील । होनेवाला । होनहार.

...स्वर्ग, (पु०) भुवः स्वर्गः । पृथिवीका स्वर्ग (बहिश्त) । सुमेरपर्वत.

...ृ, भरण-पालना । भ्वा० उभ० सक० अनिट् । भरति-ते । अभार्षीत्.

...ृ, धारण करना । पोषण पालना । जु० उभ० सक० अनिट् । बिभर्ति । बिभृते । अभार्षीत् । अभृत.

...ंस-सा, (पु०) । भ्रुवा भ्रंशः (सा) दर्शितज्ञापनं यस्य । पृ० । "भ्रु" को सम्प्रसारण होता है । जो भौंसे अपने हृदयकी चेष्टाको प्रकट करता है । स्त्रीका वेश धारण करनेहारा नट.

...कुटि-टी, (स्त्री०) भ्रुवः कुटिः (भङ्गि) सम्प्रसारणम् वा ङीप् । भौंका तिर्छा करना । भ्रूभङ्ग । भौंका चढाना.

...गु, (पु०) भ्रस्ज्+कु-पृ । एक मुनि । शिव । शुक्रग्रह । पर्वतशानु । पहाडकी चोटी । जमदग्नि । और ऊंची जगह । भृगोर्गोत्रापत्यं+अण् (बहुवचनमें लोप हो जाता है) । भृगुके वंशका (ब० व०).

...गु, (पु०) एक ऋषिका नाम । भृगुवंशके चलानेवाला । अग्निकी झालके साथ उत्पन्न होनेसे इसका नाम भृगु हुआ.

भृगुतनय-नन्दन, (पु०) भृगोः तनयः । भृगुका पुत्र । शुक्राचार्य । परशुराम.

भृगुपति, भृगूणां (भार्गववंशस्य) पतिः । भृगुके वंशका पति । परशुराम । इनकी इसने हैहयपति (कार्तवीर्य)-से रक्षा की थी.

भृगुसुत, (पु०) ६ त० । परशुराम । और शुक्राचार्य.

भृङ्ग, (पु०) भृ+गन् गुट्च । भ्रमर । भौंरा । कलिङ्गपक्षी । भृङ्गराज । जार । यार । भृङ्गार (सोने आदिका पात्र) और भृङ्गरोल । अबरक (न०).

भृङ्ग, (पु०) भृ+गन् कित्+नुट्च । बडी काली मक्खी । एक प्रकारका कीडा । बडा काला भौंरा.

भृङ्गरिट-रि, (पु०) भृङ्ग इव रटति+अच् । इन् वा पृ० । अत इत्वम् । शिवपार्श्वचरभेद । शिवजीके पास रहनेवालोंमेंसे एक शिवजीका द्वारपाल । शिवजीका दरबान । "रीट".

भृङ्गाभीष्ट, (पु०) अभि+इष्+क्त । ६ त० । भौंरेका पियारा । आमका वृक्ष.

भृङ्गि, (पु०) भृ+गिक्-नुट्च् । शिवजीके पास रहनेवालोंमेंसे एक.

भृज्, भर्जन-भूना । भ्वा० आ० सक० सेट् । भर्जते । अभर्जिष्ट । भृक्तः.

भृतक, (त्रि०) भृ+क्त । स्वार्थे कन् । वेतनद्वारा कर्मकर । मजदूरी लेकर काम करनेहारा । मजदूर । "भृतकाध्यापको यश्च" इति मनु०.

भृति, (स्त्री०) भृ+क्तिन् । भरण । पोषण । पालना । "करणे क्तिन्" वेतन । मजदूरी । और मूल्य । मोल.

भृतिभुज्, (त्रि०) भृतिं (वेतनं) भुङ्क्ते । भुज्+क्विप् । वेतनोपजीवी कर्मकर । मजदूरी लेकर काम करनेहारा मजदूर.

भृत्य, (पु०) भृ+क्यप्-तुक्च । दास । गुलाम । भरणीय (पालन करने लायक) (त्रि०) । "भावे क्यप्" पालना (स्त्री०) टाप् "भृत्या".

भृत्याध्यापन, (न०) भृत्येन अध्यापनम् । नौकर बनके पढाना । फीस लेकर वेद पढाना.

भृत्यवर्ग, (पु०) भृत्यानां वर्गः । बहुतसे भृत्य । बहुत नौकर । नौकरोंकी जमात.

भृ(भ्र)मि, (पु०) भ्रम्+इन् । पृ० वा सम्प्रसारणम् । घूर्णा । वायुभेद । बावरोला । पानी आदिका घूमना । चक्कर.

भृश्, अधःपतन । नीचे गिरना । दिवा० पर० अक० सेट् । भृश्यति । अभृशत्-अभशींत् । क्त्वा वेट्.

भृश, (न०) भृश्+क । अतिशय । जियादा । बहुत । इस-वाला (त्रि०).

भृष्ट, (त्रि०) भ्रस्ज्+क्त । जलोपसेक (पानी सींचने)के विना रेत और आगके संयोगसे पकाहुआ । भुनाहुआ.

भॄ, भर्जन-भूनना-भर्त्सन-झिडकना-भरण-पालना । क्र्या० पर० सक० सेट् । भृणाति । अभारीत्.

भेक, (पु०) भी+कन् । मेंडक । डरु । और मेघ(बादल).

भेड, (पु०) भी+ड । मेष । मेंढा । भेडा । एक ऋषिका नाम.

भेत्तृ, (त्रि०) भिद्+तृच् । फाडनेवाला । तोडनेवाला.

भेद, (पु०) भिद्+घञ् । पृथक्करण । जुदा करना । फरक । शत्रु वश करनेके चार उपायोंमेंसे तीसरा । भेदको तोड डालना । फाडना । न्यायमतमें अन्योन्याभाव (एकका दूसरेमें न होना) । जैसे घटसे पटका भेद है अर्थात् घटमें पट नहीं रहता.

भेदक, (त्रि०) भिद्+ण्वुल् । फाडी करनेवाला । विदारक । फाडनेहारा । भेद करनेहारा । जुदा करनेहारा । वैमनस्यक.

भेददर्शिन्, दृष्टि-बुद्धि, (त्रि॰) भेदं पश्यति, भेदस्य दृष्टिः यस्य वा । भेदको देखनेवाला । भेदकी नजरवाला । भेदकी बुद्धिवाला । संसारको परमात्मासे भिन्न चिन्तन करनेवाला.

भेदन, (त्रि॰) भेदयति । भिद्+णिच्+ल्यु । फाड़नेवाला । फाड़नेवाला । "म्लुद्" विरेचन । दस्तलेना । जुलाब और दर्द । हींग । और अंबलताश (पु॰ न॰) "भिद्+भावे ल्युट्" । विदारण । फाड़ना.

भेदवादिन्, (पु॰) भेदं वदति । द्वैतवादको माने (स्वीकार) [illegible].

भेदित, (त्रि॰) भिद्+णिच्+क्त । विदारित । फाड़ागया और भिन्न (जुदाकिया).

भेद्य, (त्रि॰) भिद्+ण्यत् । विदार्य । फाड़नेलायक । विरेच्य (जुदा करनेलायक) । "शिरोवा भेदयामि यद्" [illegible].

भेरि-री, (स्त्री॰) [illegible] । भि॰ वा ङीप् । [illegible] । ढोल.

भेल, (पु॰) [illegible] । "र" को "ल" होता है । नदी॰ [illegible] (भेला) । [illegible] । "[illegible]" [illegible].

[illegible] । [illegible] मेरठी से.

[illegible], (न॰) [illegible] । [illegible] (शोभनं) [illegible] । [illegible] । [illegible] । दवाई.

[illegible], (न॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] (स्त्री॰) । अनुपान.

[illegible], (न॰) [illegible] । भिक्षा । भीख । और [illegible].

[illegible], (स्त्री॰) [illegible] । [illegible] । भीख [illegible] । [illegible].

[illegible], (न॰) [illegible] । भीखका समूह.

[illegible], (स्त्री॰) [illegible] । [illegible] वा [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

[illegible], (न॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । (पु॰) । [illegible] । [illegible] (त्रि॰) । [illegible] । [illegible] (पु॰).

[illegible] (न॰) [illegible] । [illegible].

[illegible] (अव्य॰) [illegible].

[illegible] (पु॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । "[illegible]" [illegible] । [illegible].

भोगकर, (त्रि॰) भोगं करोति । भोग (सुख) भुगानेवाला.

भोगगुच्छ, (न॰) भोगाय गुच्छं [illegible] (फीस).

भोगगृह, (न॰) भोगस्य गृहं । भोगका कमरा । जनानखाना । अंतःपुर । महल.

भोगतृष्णा, (स्त्री॰) भोगस्य तृष्णा । [illegible] लालसा (इच्छा) (चाह) । [illegible] रातिमें ठहरना । [illegible] । [illegible] (धनका बाँटना).

भोगदेह, (पु॰) भुज्यते सुखदु [illegible] कर्म॰ । जिसमें सुख दुःख भोगा जाता है । [illegible] पापका फल भोगनेके लिये शरीर । "[illegible] भोगदेहं प्रपद्यते" इति स्मृतिः.

भोगभूमि, (स्त्री॰) भोगस्यैव भूमिः (स्थान) जगह । भारतवर्ष (हिन्दुस्तान) से भिन्न [illegible] केवल भोग होता है । कर्म नहीं.

भोगभृतक, (पु॰) भोगाय भृतकः । [illegible] करनेवाला सेवक.

भोगवती, (स्त्री॰) भोग (सांपोंके) [illegible] । मतुप् "म" को "व" होता है । [illegible] नागके शरीर हैं । पातालकी गंगा । "भोगवती" इति पुराणम्.

भोगस्थान, (न॰) भोगस्य स्थानं । [illegible] शरीर । स्त्रियोंका कमरा.

भोगिन्, (पु॰) भोग+इनि [illegible] । [illegible] राजा । ग्रामाध्यक्ष (गाँवका मालिक) । [illegible] नाई । भोगवाला (त्रि॰) । "भोगार" [illegible] भोगनेवाला (त्रि॰).

भोगिवल्लभ, (पु॰) ६ त॰ । चन्दन.

भोगीन्द्र, (पु॰) भोगिनां इन्द्र (भोगी) इन्द्र इव वा । [illegible] । [illegible] । [illegible].

भोग्य, (न॰) भुज+ण्यत् । [illegible] । [illegible] । [illegible] भोग्य (स्त्री).

भोज, (पु॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

भोजक, (त्रि॰) भुज+णिच्+ण्वुल् । [illegible].

भोजन, (न॰) भुज+ल्युट् । [illegible] । [illegible] । [illegible] (पु॰).

भोजनकाल, (पु॰) [illegible] । [illegible].

नत्याग, (पु०) भोजनस्य त्यागः । भोजनका छोड़ना । त रखना । रोजा रखना.

नभूमि, (स्त्री०) भोजनस्य भूमिः । भोजनस्थान । भोजनशाला । खानेका कमरा.

नव्यग्र, (त्रि०) भोजने व्यग्रः । भोजन (खाने) में लगा हुआ.

नव्यय, (पु०) भोजनस्य व्ययः । भोजनका व्यय (खुराकात खर्च).

जनीय, (त्रि०) भुज्+अनीयर् । खानेयोग्य । भक्षणीय । खानेलायक.

जयितृ, (त्रि०) भुज्+णिच्+तृच् । खिलानेवाला । पालनेवाला.

जिन्, (त्रि०) भुज्+णिनि+इन् (समासके अन्तमें आता है) खानेवाला । पालनेवाला.

ज्य, (त्रि०) भुज्+ण्यत् । भक्षणीय द्रव्यमात्र । खानेकी कोई चीज.

टाङ्ग, (पु०) भोटान । एक देशका नाम.

तिक, (त्रि०) भूतानि (पृथिव्यादीनि-पिशाचान् वा अधिकृत्य जातानि) । भूत+ठक् । पृथिवी आदि वा पिशाचोंसे आयेहुए उपद्रव । व्याधि (बीमारी) आदि.

म, (त्रि०)-मी (स्त्री०) भूमेरपत्यं तस्या इदं वा+अण् । पृथिवीसम्बन्धी । पृथिवीका । जो पृथिवीपर हो । पृथिवीका बनाहुआ ।-मः । मंगलग्रह । नारकनामी दैत्य । पानी । रोशनी । आकाश । अग्निकणिका नाम (पु०) -मी । जनककी कन्या । सीता (स्त्री०).

मरत्न, (न०) भौमप्रियं रत्नं । शाक० । मंगलका प्यारा रत्न । प्रवाल । मूंगा.

मिक, (त्रि०) भूमौ अधिकृत+ठक् । भूमिपर अधिकार दियागया । पृथिवीपर जीनेहारा । जिमीदार । भूम्यधिकारी.

रिक, (त्रि०) भूरिणि (स्वर्णे) अधिकृत+ठन् । स्वर्णाध्यक्ष । राजाके खजानेमें सोनेपर अधिकार रखनेहारा । खजानेका अधिकारी । कोशाध्यक्ष । खजानची.

भ्यस्, भय-करना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भ्यसते । अभ्यसिष्ट.

भ्रण्, शब्द करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । भ्रणति । अभ्राणीत्-अभ्रणीत्.

भ्रकुंश-स, (पु०) भ्रुवा कुं (वा) शः यस्य । पृ० नि० । स्त्रीका वेष (भेस) धारण करके नाचनेहारा नट.

भ्रकुटि-टी, (स्त्री०) । भ्रुवः कुटिः (भंगः) पृ० वा ङीप् । भ्रूभङ्ग । भौंका चढाना.

भ्रम्, चलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । भ्रमति । अभ्रमत्-अभ्रमीत्.

भ्रम्, चलना-घूमना । दिवा० पर० सक० सेट् । भ्राम्यति । अभ्रमीत्.

भ्रम, (पु०) भ्रम्+घञ् । मिथ्याज्ञान । झूठी समझ । और स्वरूपसे स्थित पदार्थका किसी औरही स्वरूपसे जानना । जलनिर्गमस्थान । पानीके निकलनेकी जगह । पानीका झरना । कुन्द (फूल) । भ्रमण (घूमना).

भ्रमण, (न०) भ्रम्+ल्युट्+अन । घूमना । चक्कर लगाना । इधर उधर टहलना.

भ्रमर, (पु०) भ्रम्+करन् । मधुकर । भौंरा.

भ्रमरक, (पु०) भ्रमर [illegible] कायति । कै+क । माथेपर लटक रही भौंरेके समान चूर्णकुन्तल (जुल्फें).

भ्रमराभिलीन, (त्रि०) भ्रमरैः अभिलीनः । भौंरोंसे घिरहुआ (व्याप्त) । भ्रमरोंसे आक्रान्त.

भ्रमरकरण्डक, (पु०) भ्रमराणां करण्डकः । भौंरोंका संदूक । भौंरोंसे भरीहुई छोटीसी संदूकची (चोरोंके पास होती है प्रकाश (रोशनी) को बुझानेके लिये भौंरों (मक्खियों) को छोड देते हैं.

भ्रमरबाधा, (स्त्री०) भ्रमराणां बाधा । भ्रमरोंकी बाधा (तकलीफ).

भ्रमरविलसित, (न०) भ्रमराणां विलसितम् । भ्रमरों-भौंरोंकी खेल । एक प्रकारका छन्द.

भ्रश्, अधःपतन । नीचे गिरना । दिवा० पर० सक० सेट् । भ्रश्यति । अभ्राशीत्-अभ्रशीत् । चला वेद.

भ्रष्ट, (त्रि०) भ्रश्+क्त । च्युत । गिरपडा । अधःपतित । दुष्ट । लुचा.

भ्रस्ज्, पाक (पकाना) । तु० उ० सक० अनिट् । भृज्जति । अभ्राक्षीत्.

भ्राज्, दीप्ति-चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भ्राजते । अभ्राजिष्ट.

भ्राजिष्णु, (त्रि०) भ्राज्+इष्णुच् । दीप्तिशील । चमकनेवाला.

भ्रातृ, (पु०) भ्राज्+तृच् । पृ० । एक पितासे हुआ । भाई । सगाभाई.

भ्रातृगन्धि-गन्धिक, (त्रि०) भ्रातुः गन्धः यत्र ब० स । भाईकी गन्धवाला । नाम मात्र भाईवाला (वास्तविक भाईका धर्म छोडनेवाला भाई).

भ्रातृज, (पु०) भ्रातुर्जायते । जन्+ड । भ्रातृपुत्र । भाईका लडका । भतीजा । उसकी लडकी (भतीजी) (स्त्री०).

भ्रातृजाया, (स्त्री०) भ्रातुः जाया । भाईकी स्त्री । भरजाई.

भ्रातृद्वितीया, (स्त्री०) कार्त्तिकके शुक्लपक्षकी द्वितीया । भाईदूज । इसे यमद्वितीया भी कहते हैं.

भ्रातृव्य, (पु०) भ्रातुः पुत्रः । भ्रातृ+व्यत् । भाईका लडका । और शत्रु (दुश्मन).

भ्रातृत्व, (न०) भ्रातृ+त्व । भ्रातृभावः । भाईपन । भाईचारा.

भ्रातृश्वशुर, (पु०) भ्राताऽपि (पत्युर्ज्येष्ठभ्राताऽपि) श्वशुरस्थानीयः । पितृतुल्यत्वात् । स्वामीका बड़ा भाई (पिताके समान होनेसे वह भी ससुर माना जाता है).

भ्रात्रीय, (पु०) भ्रातुः अपत्यं, इदं वा छ । भ्रातृपुत्रः । भाईका लड़का । भाईका (भ्रातृसम्बन्धी) (त्रि०).

भ्रान्त, (न०) भ्रम्+भावे क्त । भ्रमण । घूमना । "कर्तरि क्त" (भूलाहुआ) मिथ्या ज्ञानवाला । घूमनेवाला (त्रि०).

भ्रान्ति, (स्त्री०) भ्रम्+क्तिन् । भ्रमण । घूमना । अयथार्थज्ञान । झूठी समझ.

भ्रान्तिमत्, (भ्रान्तिवाला) अलंकारमें अर्थालंकारभेद.

भ्राम, (पु०) भ्रम्+अण् । इधर उधर घूमना । मोह । भ्रम (गलती) भूल । चूक.

भ्रामक, (पु०) भ्रामयति । भ्रम्+ण्वुल् । शृगाल । गीदड़ । सियार । घुमानेवाला (त्रि०) । (भुलानेवाला).

भ्रामर, (न०) भ्रमरेण सम्पादितं, तस्येदं वा+अण् । भौंरेने बनाया । मधु । शहद । भ्रमरसम्बन्धि (भौंरेका) (त्रि०) । भ्रमरकान्त (चुम्बक पत्थर) (पु०).

भ्राष्ट्र, (न०) भ्रष्टुः इदं+अण् । आस्मान (आकाश) । भर्जनपात्र (भुनेका पात्र-कड़ाही) (पु० न०).

भ्रु(भ्रू)कुंस, (पु०) भ्रुवः कुंसा यस्य । पृ० वा ह्रस्वः । स्त्रीका वेष बनाके नाचनेवाला पुरुष.

भ्रु(भ्रू)कुटि(टी), (स्त्री०) ६ त० । पृ० वा ह्रस्वः । क्रोधसे भौं चढ़ाना.

भ्रू, (स्त्री०) भ्रम्+डू । नयनोर्ध्वरोमराजी । आँखोंके ऊपर रोम (बालों) की कतार । भौं । भवें.

भ्रूक्षेप, (पु०) ६ त० । भौंका चढ़ाना । संकेत (इशारह) को जतानेके लिये भवोंका टेढ़ा चलाना । भौंका फेंकना.

भ्रूण, आशा-उम्मीद करना । निश्चय करना । चाहना और डरना । चु० आत्म० सक० सेट् । भ्रूणयते.

भ्रूण, (पु०) भ्रूण+घञ् । स्त्रियोंका गर्भ । भीरु बालक.

भ्रूणघ्न, (त्रि०) भ्रूणं (गर्भं) हन्ति । हन्+क । गर्भकी हत्या करनेवाला । "क्विप्" "भ्रूणहा" यही अर्थ.

भ्रेज्, चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भ्रेजते । अभ्रेजिष्ट.

भ्रे(म्ले)ष्, डरना-चलना । अक० भ्वा० उभ० सेट् । भ्रे (म्ले) षति-ते.

भ्रेष, (पु०) भ्रेष्+घञ् । स्थान स्थानसे गिरना.

म्लास, चमकना । भ्वा० उभ० अक० सेट् । म्लाशति-ते.

म्लाश्, चमकना । दि० भ्वा० आ० अक० सेट् । म्लाश्यते । म्लाशते.

म

म, (पु०) मा+क । चन्द्र । चांद । शिव । ...
समय । मधुसूदन । विष.

मंख्, भूष-सजाना-गति-जाना । भ्वा० प० स...
इदित् । मङ्खति.

मकर, (पु०) मनुष्यं कृणाति (हिनस्ति) ...
जलजन्तुभेद । मगरमच्छ । कामदेवके ...
बारह राशियोंमेंसे दसवीं । द्वादशराश्यन्तर्गत ...
" मं (विषं) किरति ".

मकरकुण्डल, (पु०) मकराकृति कुण्डलं (...
एक कानका गहना । जिसका मकर मगर ...

मकरकेतन, (पु०) मकरः (मकराकृतिः) ...
(ध्वजो) यस्य । जिसका झंडा मच्छके ...
कामदेव । "कन्दर्प" "मकरकेतु" यही अर्थ ...

मकरध्वज, (पु०) मकरः ध्वजः यस्य । ...
वाला । कामदेव.

मकरन्द, (पु०) मकरं अपि याति (...
दो-अवखण्डने । तोड़ना+क पृ० मुम् । ...
शहद । फूलका रस । कुंदवृक्ष । त्रिबन्ध (...

मकरसंक्रमण, (न०) मकरे संक्रमणं । ...
राशिमें परिणाम (जाना).

मकरिन्, (पु०) मकराः सन्त्यत्र+इनि । ...
समुद्र.

मकुट, (न०) मकि-सजाना-भूषण+उट पृ० ...
मुकुट । ताज.

मकुर, (पु०) मकि+उरच् । पृ० । दर्पण । ...
का पेड़ । कुलालदण्ड । कुम्हारकी छड़ी । ...

मक्क्, गति-जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । ...
किट.

मख्, रोष-गुस्सा करना-गया होना-...
अक० सेट् । मखति । अमखीत्.

मखवीर्य, (पु०) मखं (यज्ञं) वीर्य ...
जिसमें वीर्य इकट्ठा हो जाता है । ...

मक्षि(क्षी)का, (स्त्री०) मश+वुन् । टा(...
पृ० वा दीर्घः । एक प्रकारका कीड़ा । मक्खी ...

मग्, सर्पण-सरकना रींगना-जाना । भ्वा० प० ...
मगति । अमागीत्, अमगीत्.

मग्न, (पु०) मस्ज्+क्त । डूबा । मग्न । (...
डूबाहुआ । बड़ेआदिमें डूबाहुआ ...
(त्रि०).

मग्, सर्दना । भ्वा० प० सक० सेट् । ...
अमगीत्.

र, (पु०) मगन्ते (अधो गच्छते) अनेन । मगि+ ष् । पृ० । जिस्से नीचे जाता है । मगं (दोषं) पापं दधाति । धा+क । जो दोष वा पापको धारण कर्ता है । क देश । उस देशके लोग (ब० व०).

ईश्वर, (पु०) मगधका राजा । जरासन्धराजा । बेहा- ■ सूबह.

धोद्भवा, (स्त्री०) मगधदेशे बाहुल्येन उद्भवति । अच् । पिप्पली । मघ इस देशमें बहुत होती है.

, कैतव-छल करना । जूएकी खेल आदि करना । अक० । गति-जाना । निन्दा करना । और आरम्भ (शुरू करना) । सक० भ्वा० आत्म० सेट् । इदित् । मङ्घते । अमङ्घिष्ट.

, भूषण । सजाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । मङ्घति-अमङ्घीत्.

घवत्, (पु०) मह्+क । "ह" को "घ" होता है । मघः (पूजा) । अस्त्यर्थे मतुप् । "म" को "व" होता है । इन्द्र । मघवन्तौ । मघवतः । उसकी स्त्री । ङीप् "मघवती".

घवन्, (पु०) मह्+कनिन् । नि० । इन्द्र । मघवा । म- घवानौ । मघोनः । उदार (धनादिसे) (त्रि०) । उस- की स्त्री "मघोनी" ङीप्.

घा, (स्त्री०) मह्+घ । "ह" को "घ" होता है । अश्वि- नीसे दसवां नक्षत्र (तारे) । ये पाँच तारोंके स्वरूपमें होनेसे बहुवचन भी होता है । "पितरः स्वहमन्त्यखमट- न्तु मघासु च" स्मृति..

कुर, (पु०) मकि+उरच् । दर्पण । शीशा । आईना.

क्षु, (अव्य०) मखि+उन् । शीघ्रता । जल्दी । बुध । बहुत । पृ० । "क्ष" "क्ष" भी होता है.

ङ्गल, (पु०) मगि+अलच् । भूमिसुत । पृथिवीका पुत्र । एक ग्रह । प्रशस्त । अच्छा । चाहेहुए अर्थकी सिद्धि । उसवाला (त्रि०) दुर्गा । कुशा (स्त्री०).

ङ्गलकाल, (पु०) मङ्गलस्य कालः । मंगलका समय । खुशीका वक्त.

ङ्गलच्छाय, (पु०) मंगला छाया यस्य । जिसकी अच्छी छाया हो । वटवृक्ष । बड़का दृक्ष.

ङ्गलपाठक, (पु०) मङ्गलार्थं स्तुतिं पठति । पठ्+ण्वुल् । भलाईके लिये प्रशंसाओंको पढता है । स्तुतिपाठक.

मङ्गलप्रदा, (स्त्री०) मङ्गलं प्रददाति । प्र+दा+क । मङ्गल देती है । हरिद्रा । हल्दी.

मङ्गलवाद्य, (न०) मंगलकरं वाद्यम् । मंगलके समयका बाजा । तुरी-तूतिये ढोल.

मङ्गलसूत्र, (न०) मङ्गलकरं सूत्रम् । पतिके जीवन- पर्यन्त विवाहिता स्त्रीसे धारण किया गया मंगल (खुशी) का सूत (कंगन).

मङ्गल्य, (न०) मंगलाय हितं यत् । चंदन । सोना । सिंदूर । और दही । रुचिर (सुंदर) । और मंगल कर- नेवाला (त्रि०) । बोड़ । बिल्व.

मच्, कथनकरण-कथाकरना । ठगाना । अभिमानी होना । पूजाकरना । चकना । सक० । चमकना । अक० भ्वा० आत्म० सेट् । इदित् । मचते । अमचिष्ट.

मचर्चिका, (स्त्री०) यह शब्द संज्ञावाचक शब्दके पीछे रहता है । और अपनी जातिमें अच्छेको सिद्ध कर्ता है । जैसे "गोमचर्चिका" एक बहुत ऊंचा गौ वा बैल । प्रशस्त । बहुत अच्छा.

मज्जन, (न०) मस्ज्+ल्युट् । स्नान । नहाना.

मज्जसमुद्भव, (न०) मज्जात् समुद्भवति । सम्+उद्+भू+ अच् । ५ त० । मज्जासे उपजता है । शुक्र । वीर्य । रेत । मनि.

मज्जा, (स्त्री०) मस्ज्+अच्+टाप् । अस्थिसार । हड्डिओंका सार । इसका सार अंश.

मज्जाज, (न०) मज्जातो जायते । जन्+ड । जो मज्जासे उत्पन्न होता है । भूमिसे उपजा गुग्गल.

मज्जारस, (पु०) मज्जायाः रसः (परिपाकः) । मज्जाका पकना । वीर्य । मनि.

मञ्च, (पु०) मचि-उच्छ्राय । ऊंचा होना+घञ् । खट्वा । मचा । बांसका बनाहुआ ऊंचा आसन । उच्च मण्डप- विशेष.

मञ्जरि-री, (स्त्री०) मञ्जु ऋच्छति । ऋ+इन्-वाक० पर० वा ङीष् । नई उत्पन्न हुई कोमल पत्तेके अङ्कुर- स्वरूपकी वल्लरी । मिंजर । गुच्छा । मोती । तिल नामी लता (बेल) और तुलसी.

मञ्जिष्ठा, (स्त्री०) अतिशयेन मञ्जिमती+इष्ठन् । एक बेल । मजीठ.

मञ्जीर, (न०) मञ्ज् शब्द करना+ईरन् । नूपुर । झांझर । पजेब । पांवमें पहिरनेका जेवर । दधिमन्थनदण्डः । थम्ब । खम्भ । मथा (था, नीकी रस्सी बांधनेका खंबा.

मञ्जु, (त्रि०) मञ्ज्+उन् । मनोहर । दिलको अच्छा लगने- वाला । खूबसूरत.

मञ्जुघोष, (पु०) तन्त्रमें एक उपासना करनेलायक देवता । अच्छे शब्दवाला (त्रि०) अप्सरा (स्त्री०).

मञ्जुभाषिन्, वाद्-वादिन्, (त्रि०) मञ्जु भाषते-वदति वक्ति वा । मधुरभाषी । मीठा बोलनेवाला.

मञ्जुल, (त्रि०) मञ्ज्+उलच् । मनोहर । खूबसूरत । जल- रंक पक्षी (मकोला) (पु०) वह स्थान जो लताओंसे आच्छादित हो । निकुञ्ज (न०).

मञ्जुवक्त्र, (त्रि०) मञ्जु वक्त्रं यस्य । सुन्दर मुखवाला । सुन्दर.

मद, (पु॰) मद्+अच् । हस्तिगण्डजल । हाथीकी गालका पानी (मस्ती) । आमोद । सुरा । अहंकार । वीर्य । मृगमद । कस्तूरी । मत्तता या मस्ती । कल्याण करनेहारा पदार्थ.

मदकट, (पु॰) मदेन कटति । कट्+अच् । खण्ड । खांड । चीनी । "मदोत्कट".

मदकल, (पु॰) मदेन कलति । कल्+अच् । मत्तहस्ती । मस्तहाथी । मदोत्कट । बहुत मस्त । और अव्यक्त (नामालूम) शब्द करनेवाला (त्रि॰).

मदगन्ध, (पु॰) मदस्य (हस्तिदानस्य) इव गन्धः अस्य । हाथीके मदके समान जिसका गंध है । सप्तच्छद वृक्ष । मदिरा (शराब) (स्त्री॰).

मदज्वर, (पु॰) मदेन जातः ज्वरः । अहंकारसे उपजा ज्वर (बुखार) । बड़ा अभिमान.

मदद्विप, (पु॰) मदप्रधानः द्विपः । बड़ी मस्तीवाला हाथी । खूनी हाथी । डरावना हाथी.

मदन, (पु॰) माद्यति अनेन । मद्+करणे ल्युट् । जिससे मस्त होता वा खुश होता है । कामदेव । धतूरका पेड़ । बसन्त । मौसम । एक वृक्ष । सुरा (शराब) (स्त्री॰).

मदनचतुर्दशी, (स्त्री॰) मदनस्य (तदुपासनायां) चतुर्दशी । कामदेवकी उपासना करनेकी चतुर्दशी (चेतकी [illegible]चतुर्दशी).

मदनमोहन, (पु॰) मदनं अपि मोहयति । मुह्+णिच्+ल्यु । कामदेवको भी मोह देता है । श्रीकृष्णदेव.

मदनलेख, (पु॰) मदनस्य लेख. । कामदेवका पत्र । प्रेमपत्र.

मदनवश, (त्रि॰) मदनस्य वशः वशीभूतः । कामदेवके वश (अधीन-काबू) में होगया.

मदनसदन, (न॰) ६ त॰ । कामदेवका घर । स्त्रीका [illegible] । भग । (ज्योतिषमें) लग्नसे सातवां स्थान.

मदनान्तक, अरिः, दमनः, दहनः, नाशनः-रिपुः (पु॰) मदनस्य अन्तकः । कामदेवका नाश करनेवाला । शिवजी.

मदनावस्था, (स्त्री॰) मदनकृतावस्था । कामदेवसे बौराई दशा । कामिनीकी कामदेवसे बौराई उन्माद (पागल [illegible]) [illegible] दशा (कामदेवकी दस दशा हैं । १० [illegible]).

मदनोन्माद, (पु॰) मदनस्य उन्मादः । कामदेवका उन्माद ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) का उन्माद जो कामदे- [illegible] दिखलाता है.

मदयित्नु, (पु॰) [illegible] । कामदेव । मेघ (बादल) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] (न॰) । [illegible] ([illegible]) (त्रि॰).

मदलेखा, (स्त्री॰) मदस्य लेखा । हा[illegible] मस्तीकी रेखा.

मदविह्वल, (त्रि॰) मदेन विह्वलः । [illegible] (पागल-व्याकुल) होगया । मद ([illegible]) होगया.

मदात्यय, (पु॰) मदस्य अत्ययः । [illegible] (जियादती) अधिक मद्य (शराब) [illegible] (सिरदर्द) नशेका होजाना.

मदान्ध, (त्रि॰) मदेन अन्धः । मदसे [illegible] (कुछ नहीं सूझता) । बड़ा भारी नशा [illegible]

मदालापिन्, (पु॰) मदेन आलपति । [illegible] मस्तीसे बोलती है । कोकिल । कोइल.

मदिरा, (स्त्री॰) मद्+किरच् । मद्य [illegible] तरहकी शराब । (ये "माध्वीक" आदि [illegible] प्रकारकी होती है) । और मत्त खञ्जन [illegible] खदिर (लाल खैर) (पु॰).

मदोत्कट, (पु॰) मदेन (दानवारिणा) [illegible] टः) । मस्तीसे जोरमें आयाहुआ । मत्त[illegible] मदिरा (शराब) (स्त्री॰) । मदोदरा । [illegible]

मदोदग्र, (पु॰) मदेन उदग्रः (उग्र) । [illegible] -मा । नारी (स्त्री॰).

मदोद्धत, (त्रि॰) मदेन उद्धतः । मदसे [illegible] मस्त.

मद्गु, (पु॰) मस्ज्+उ-पृ॰ धातुको "मद्" [illegible] है । मुद्गर । (पनकौड़ि) एक प्रकारका [illegible] प्रकारका सांप । एक जंगली पशु । [illegible] वर्णसंकर । डोंगला । नगुला । नाव.

मद्गुर, (पु॰) मद्+उरच्-मुद्गर । ([illegible]) [illegible] मच्छ.

मद्य, (न॰) माद्यति अनेन । करणे यत् । [illegible] खुश होता है । मदिरा । शराब ([illegible])

मद्र, (पु॰) मद्+रक् । देशविशेष । [illegible] हर्ष.

मधु, (न॰) मन्+उ । "न" को "ध" [illegible] (शराब) । शहद । मकरन्द (मधुमक्खी [illegible] फूलका रस । जल (पानी) । और [illegible] पानी रस) । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) (पु॰) । [illegible] [illegible] ([illegible]) (न॰) । [illegible] "[illegible]" [illegible] (न॰).

–न, (पु०) मधु करोति (संचित्य निष्पादयति) –प् । शहत (छाता) बनाता है । भ्रमर । भौंरा.

–र, (पु०) मधु (मधुरं) क्षीरं यस्य । मीठे दूध- । खजूरका दरख्त.

(न०) मधुनो जायते । जन्+ड । शहतसे उप- है । सिक्थक (मोम)। मधुरत्व । मेदसे उपजी (स्त्री०).

–त्, (पु०) मधुनामासुरं जितवान् । जि+भूते क्विप्। ने मधु नामी दैत्यको जीतलिया । विष्णु.

–र, (न०) मधूनां (मधुराणां) त्रयं । तीन मीठे । त, घृत (घी) और मिसरी.

, (पु०) मधु पिबति । पा+क । शहत (रस) पीता । भ्रमर (भौंरा)। शहत पीनेवाला (त्रि०).

र्क, (न०) पृच्+घञ् । मधुनः पर्को योगो यत्र । समें शहतका मेल हो । कांसीके पात्रमें रक्खाहुआ । जिसमें शहत मिलाहो और ऊपरसे कांसीके पात्रसे ढाहो । दही, घी, पानी, शहत और मिसरी ये ५ चीजें.

री, (स्त्री०) मधोर्दैत्यस्य पुरी । मधु नामी दैत्यकी । मथुरा.

क्षिका, (स्त्री०) मधुसम्पादिका मक्षिका । शहत करनेवाली मक्खी । शहतकी माखी । एक प्रकारकी ला

–रस्, (त्रि०) मधु (मधुरता) अस्ति अस्य+मतुप् । ठे रसवाला । माधुर्यवान् । एकनदी । योगशास्त्रमें सिद्ध योगियोंकी एक प्रकारकी चित्तकी वृत्ति । वेदमें सिद्ध "मधुवाता" इत्यादि तीन ऋचा । तन्त्रमें एक देवी स्त्री०).

यष्टि, (स्त्री०) मधुरा यष्टिः (काण्डं)। मीठी छड़ी । हठी । गन्ना.

र, (पु०) मधु (माधुर्यं) राति । रा+क । अतिशय अर्थमें "र" का । गुड़ आदिका मीठा रस । (मीठे रस- वाला) । [illegible] (मद्य) आदि । मनोहर (मन हरण) । और प्रिय (पियारा) (त्रि०) । मन्द जाना । गुड़ । शालि (धान) । और जीरा (पु०).

मधुरक, (पु०) मधुर इव रसो यस्य । दूधके समान ... होता है । इक्षु । गन्ना । और जल (पानी) । ... । दुग्धिका । गाजरी (स्त्री०).

मधुरफला, (स्त्री०) मधुरं फलानि । ... । वोदेको ... होती है । पिण्डखर्जूर । पिण्डखजूर.

मधुलिट्, (पु०) मधु लेढि (आस्वादयति)। लिह+ क्विप् । शहतको चाटता है । भ्रमर । भौंरा । "लिहि" मधुलेहि.

मधुवन, (न०) मधुदैत्याधिष्ठितं वनं । यह वन जहां "मधु" दैत्य निवास करता है । मथुरा क्षेत्रमें एक वन है । किष्किन्धा नगरीमें वानर मधुरस्ता एक वन.

मधुबीज, (पु०) मधु (मधुरं) बीजं यस्य । मीठे बीज- वाला दाडिम । अनार.

मधुवार, (पु०) मधुनो मद्यस्य वारः (क्रमः) यत्र । मद्यका पीना । शराबकी बारी.

मधुशेष, (पु० न०) मधुनः शेषः (उच्छिष्टम्) । शहतका बाकी (जूठ) । सिक्थक । मोम.

मधुसख, (पु०) मधोर्वसन्तस्य सखा (सहचरः)+टच् स० । वसन्तका मित्र कामदेव । "मधुसारथि".

मधुसूदन, (पु०) मधुं (तन्नामासुरं) सूदयति । मधु (जीवानां शुभाशुभकर्म, हननेन) सूदयति वा । सूद्+युट् । मधुनामी दैत्यको नाश करता है । अथवा जीवोंके भले और बुरे कर्मको हान देकर काट देता है । श्रीकृष्ण । "मधु" नामीके सूदयति अश्नाति । जो शहतके रसको पीता है । भ्रमर । भौंरा । "मधु रस सूदते (भक्षते) ल्युट् ङीप्" मधूनि मरे सकारात्मा है । पाकी शाक.

मधुस्वर, (पु०) मधु. (मधुर.) स्वरः अस्य । मीठी आवाज है जिसकी । कोकिल । कोयल । मीठी आवाज- (स्वर) वाला (त्रि०).

मधुहन्, (पु०) मधुनामासुरं अहिंसीत् वा हन्ति । हन्+क्विप् । मधुनामी दैत्य वा ... बधके ... नाश करता है । विष्णु । नारायण.

मधूच्छिष्ट, (न०) मधुन उच्छिष्टं (अवशिष्टं) । शह- तका जूठी । मोम । सिक्थक । "मधुच्छिष्ट" इसी अर्थमें.

मधूपघ्न, (पु० न०) मधुदैत्यस्य समीपे (आश्रयः) । मधुदैत्यका आश्रय (रहनेका स्थान) मथुरा पुरी । मथुरा नगर.

मध्य, (पु०) मन्+यत् "न" को "ध" होता है । बीच । बीचका । बीचका भाग । (शरीरका) मध्य । बीचका हिस्सा । शरीरका बीच (कद) । पेट (उदर) । किसी वस्तुका बीच वा बीचका भाग । बीचकी वस्तु । अन्त (पूरा) आदि समय और बीचका ... । ... और दस ... बीचका बीच । ... । ज्योतिषमें ... (स्त्री०) । ... (पु०) । ... (...) । और बीचके ... (...) (त्रि०)

मध्यगन्ध, (पु०) मध्ये (...) गन्धं ... । ... बीचमें ... है । ... । ...

मध्यतस्, (न०) मध्य+तसिल् । प्रथमा, पञ्चमी और सप्तमीके अर्थमें वर्तमान मध्यशब्दका अर्थ । बीच, बीचमें और बीचमें.

मध्यदेश, (पु०) कर्म० । किसी चीजका बीचका भाग । कमर । हिमालय और विन्ध्य पर्वतका बीच, कुरुक्षेत्र (विनशन) से पहिले और प्रयाग (इलाहाबाद) के पश्चिमकी ओर "मध्यदेश" कहा है । एक देश.

मध्यन्दिन, (न०) मध्यं दिनस्य । अलुक् समा० । दिनका बीच । मध्याह्न (दुपहिर).

मध्यम, (त्रि०) मध्ये भवः । म । मध्यमत्र । बीचमें हुआ । बीचका । बिचला । सात स्वरोंमें पांचवां स्वर (सुर) (पु०)

मध्यमपदलोपिन्, (पु०) मध्यमपदस्य लोपः अस्ति अस्य+इनि । जिसके बीचमें आये पदका लोप होता है । व्याकरणमें प्रसिद्ध "शाकपार्थिव" (शाकप्रियः पार्थिवः) आदि समास विशेष.

मध्यमपाण्डव, (पु०) कर्म० (पहिले और पिछले दोनों-के बीचमें होनेसे) अर्जुन । बिचला पाण्डुका पुत्र.

मध्यमभृतक, (पु०) कर्म० । "मध्यमस्तु कृषीवलः" खेती करनेवाला नौकर । किसान.

मध्यमलोक, (पु०) कर्म० । पृथिवी । (यह पाताल और स्वर्गलोकके बीचमें है) । "मध्यमलोकपालः" इति रघुः । बीचका लोक.

मध्यमवयस्क, (त्रि०) मध्यमवयः यस्य । मध्यम (बीचकी) आयु (उमर)वाला । मझली (जवानी) अवस्थावाला.

मध्यमसंग्रह, (पु०) कर्म । दूसरेकी स्त्रीको सुगन्धिवाली माला, भूषण और वस्त्र भेजना एवं खाने पीनेकी चीजोंसे लोभ दिखाना । मध्यम (बीचका पकड़नारूप) विवाद.

मध्यमसाहस, (पु०) कर्म० । बिचला साहस (दिलेरी । बिना सोचे काम करना) । दूसरेके कपड़े आदिको फाड़ना । फेंकना आदि । जोरसे कोई काम करना । पांच पणका दण्ड (सजा) विशेष (पु०).

मध्यमा, (स्त्री०) मध्य+म । रजस्वला नारी । वह स्त्री कि जिसे महीनेका ऋतु (रजफूल) आचुका हो । बीचकी अंगुली । कमल आदिकी कर्णिका (डण्डी) । हृदयमें उत्पन्न हुई वैखरी आदिमें एकप्रकारकी वाणी । एक प्रकारकी स्त्री (औरत) । नायिकाविशेष.

मध्यमाहरण, (न०) बीजगणितमें प्रसिद्ध अव्यक्त (अप्रकट) मान (माप)को बतानेहारी गणना । (क्रिया).

मध्यरात्र, (पु०) मध्यं रात्रेः । एकदेशि त० अच् समा० । रातका बीच । निशीथ । अर्धरात्र । आधीरात.

मध्यवर्तिन्, (त्रि०) मध्ये वर्तते । इ... रहता है । वादिप्रतिवादी या और कि... प्रतिपक्षके विषयको विचार कर ... करनेहारा । अपने अर्थको न ... अर्थको सम्पादन करनेहारा । ... (मध्यस्थ) । बीचमें पड़ा । मुन्सिफ.

मध्यस्थ, (पु०) मध्ये तिष्ठति । स्था+क । ... है । मध्यवर्ती । उदासीन । "मध्यस्थ... तेऽस्थे" कुमारः.

मध्या, (स्त्री०) त्रियां टाप् । तीन ... एक छन्द । नायिकाविशेष । मध्यमा अ... अंगुल.

मध्याह्न, (पु०) मध्यं अहः । एक० त० ... अह्नादेश । तीन भागमें बंटेहुये दिनका ... पांच भागमें बांटेहुए दिनका तीसरा भाग (... दुपहिर । कुतुपकाल.

मध्वासव, (पु०) मधुना (पुष्परसेन) ... मधु (शहद) वृक्षके फूलोंके रससे बनाई ... (शराब).

मन्, पूजा करना । सक० । अहंकार करना... पर० सेट् । मनति.

मन्, अहंकार करना । अक० चु० आ० सेट् । ... अभीमनत.

मन्, बोध-जानना । तना० आ० सक० सेट् । ... लिट.

मन्, जानना-दिवा० आ० सक० अनिट् । मन्यते । ...

मनःपति, (पु०) मनसः पतिः । मनका ... विष्णुका नाम.

मनःपूत, (त्रि०) मनसा पूतः । मनमें पवित्र ... मनसे शुद्ध चिन्तन कियागया । हृदयसे ...

मनःशिला, (स्त्री०) मन शब्दवाच्या शिला । ... लाल रंगका एक प्रकारका धातु (मेंनसिल) । "... विच्छुरिता निषेदुः" इति कुमारः । (पु०) ...

मनस्, (न०) मन्यते अनेन । मन्+असुन् । ... दुःखे । सर्वेन्द्रियप्रवर्तक अन्तरिन्द्रिय । ... बतानेवाला भीतरका इन्द्रिय । (वह वेदान्त... ज्ञानिकज्ञानस्वरूप वृत्तिवाला अन्तःकरण-सुख ... आधार, न्यायमतमें वह ज्ञानका साधन है) । ... संकल्प.

मनसा, (स्त्री०) मननं मनः सर्पि । ... सिद्धि माया । वासुकीकी भगिनी (बहिन) । ... पत्नी.

..ज, (पु०) मनसि जायते । जन्+ड । सप्तमीका लुगे अलुक् । मनमें उपजता है । कामदेव । "मनो- यही अर्थ है.

शय, (पु०) मनसि शेते । अच् वा अलुक् । मन- सोता है । कामदेव । "मन शय" यही अर्थ होता है.

सृष्टि, (स्त्री०) मनसः सृष्टिः । मनकी रचना (कुलि-) । मनके पुलाव.

हार, (पु०) हृ+घञ् । मनसः हारो व्यापारभेदः । लका दुरायें तत्पर होना । दिलका मुख चाहना.

ताप, (पु०) मनसस्तापः (अनुतापः) । मनका पना । मनकी पीड़ा.

स्विन्, (त्रि०) प्रशस्तं मनः अस्ति अस्य । अच्छा न है इसका । प्रशस्तमनस्क । अच्छे मनवाला । "विनि" ला । पण्डित । बड़े दिलवाला । और बड़े चित्तवाला 'शरमनामी पशु" (पु०) । "स्त्रीलिङ्गमें ङीप् होता है" ड़े दिलवाली अथवा मगरूर (अहंकार करनेवाली) औरत । दाना अथवा धर्मात्मा स्त्री । दुर्गाका नाम । वादकी मा.

क्, (अव्य०) ईषत् (थोड़ा) । मन्द (धीरे) । थोड़ासा.

यी, (स्त्री०) मनोः पत्नी । वा ङीप्-औत् च । मनुकी स्त्री.

त, (त्रि०) भ्वा० मन्+क । ज्ञात । जानाहुआ.

षा, (स्त्री०) ईष्+अङ् । मनस ईषा । शक० । बुद्धि । अकिल । इच्छा । चाह । समझ । दानाई । (वेदमें) सूक्त (गीत).

षिन्, (पु०) मनीषा अस्ति अस्य+इनि । मनीषा- वाला । पण्डित । बुद्धियुक्त । अकिलवाला (त्रि०).

, (स्त्री०) मन्+उ । मनुकी स्त्री । एक प्रजापति । धर्मशास्त्रके बनानेवाला । और स्वयम्भु (ब्रह्मा) से उत्पन्न हुआ मुनि (पु०).

ज, (पु०) मनो' (स्वायम्भुवात्) जायते । जन्+ड । मनुसे हुआ । मनुष्य.

ष्य, (पु०) मनोरपत्यं । यत्-षुक्च । मनुकी संता- न । मानव । मनुष्यकी जाति । स्त्रियां जातौ ङीप्.

ष्यधर्मन्, (पु०) मनुष्यस्य इव धर्मो यस्य (नरवाहन- त्वात्) । अनिच् समा० । नरवाहन (मनुष्योंपर चढ़ने- वाला) होनेसे मनुष्यके समान है धर्म जिसका । कुबेर । धनका राजा.

गत, (त्रि०) मनः गतं । मनमें गया हुआ । मनमें रहनेवाला । मनका । हृदयमें छिपा हुआ । भीतरका । गुप्त । छिपा हुआ.

मनोग्राहिन्, (त्रि०) मनः गृह्णाति । मनको पकड़नेवाला । आकर्षण करनेवाला.

मनोजव, (त्रि०) जु+अप् । मनोजवं वेगवत् गमनाय यस्मिन् । पितृतुल्य । पिताके समान । "मनस इव जवो यस्य" मनके समान है वेग जिसका । बड़े वेगवाला । (त्रि०) आगकी जीभ (स्त्री०).

मनोजवृद्धि, (पु०) मनोजस्य (कामस्य) वृद्धिर्यस्मात् ५ ब० । कामदेवकी वृद्धि (बढ़ती) होती है जिससे । कामवृद्धिकर.

मनोज्ञ, (त्रि०) मनो जानाति (ज्ञापयति) बोधनाय प्रवणीकरोति अन्तर्भावितण्यर्थे ज्ञा+क । मनको जताता है वा समझनेको झुकाता है । मनोहर । मनको खींचने- वाला । सुन्दर । मन शिला । मदिरा (स्त्री०).

मनोभव, (पु०) मनसि भवति । भू+अच् । मनमें होता है । कामदेव । "मनोज" "मनोभू" इत्यादि-यही अर्थ.

मनोरथ, (पु०) मन एव रथः अत्र । मनसो रथ इव वा । मनही है रथ यहां । मनका मानों रथ है । इच्छा । ख्वाहिश.

मनोरम, (त्रि०) मनो रमयति । रम्+णिच् । अच्-उप० मनको प्रसन्न करता है । मनोहर । सुन्दर । गोरोचना । (स्त्री०).

मनोहर, (त्रि०) मनो हरति (स्वदर्शनाय) हृ+अच् । अपने देखनेके लिये मनको खींचता है । रुचिर । सुन्दर । मनोहर । कुंदका वृक्ष (पु०) । सोना (न०).

मन्त्र, मार्जन-पोंछना । सक० । ध्वनि-शब्द करना-अक० भ्वा० पर० सेट् । मन्थति । अमन्थीत्.

मन्तु, (पु०) मन्+तुन्-ह्रस्व । अपराध । कसूर । मनुष्य आदमी । और प्रजापति (प्रजाका मालिक).

मन्त्र, (पु०) मन्त्रि+अच् । गुप्तभाषण । छिपाहुआ बोलना । सलाह । देवता आदिको सिद्ध करनेके लिये तन्त्र आदि- में कहाहुआ शब्दविशेष । वेदका हिस्सह.

मन्त्रकुशल, (त्रि०) मन्त्रे कुशलः । उपदेश (सला) देनेमें चतुर (सिखाना).

मन्त्रजिह्व, (पु०) मन्त्र एव जिह्वा (आस्वादनसाधनं) यस्य । मन्त्रही है जीभ (स्वाद लेनेका साधन) जिसकी । अग्नि (आग) । (मन्त्रसे दियेहुए हविको लेता है).

मन्त्रज्ञ, (त्रि०) मन्त्रं जानाति+ज्ञा+क-अ । मन्त्रको जाने- हारा । श्रुतिका ज्ञाता । उपदेश देनेवाला । नेक सलाह- देनेवाला.

मन्त्रणं णा, (न० स्त्री०) मन्त्र+ल्युट् । गुप्त विचार । सलाह । उपदेश.

मन्त्रदर्शिन्, (त्रि०) मन्त्रं पश्यति । वेदके सूक्तों (गीतों)- को देखनेवाला । वेदको अच्छी भांति जाननेहारा ब्राह्मण.

मरुत्सख, (पु०) मरुतः (वायोः) सखा (टच्) । वायुका मित्र । इन्द्र । अग्नि (आग) । और चित्रक नामी दवाका वृक्ष.

मरुदान्दोल, (न०) मरुतं आन्दोलयति अनेन+करणे घञ् । हवा (वायु) को हिलाता है इससे । व्यजन । पंखा.

मरुदिष्ट, (पु०) मरुतां (देवानां) इष्टः । देवताओंका पियारा । गुग्गुल । गुग्गुल.

मरुभू, (पु०) ७ ब० । मरुर्भूमिर्यत्र । मारवाड देश । कर्म० । निर्जलभू । जलरहित पृथिवी.

मरुस्थलं-स्थली, (न० स्त्री०) मरोः स्थलं । निर्जल-प्रदेश (जंगल) का स्थान । मारवाडकी भूमि.

मर्क्, गति । जाना । पर० सक० सेट् । मर्कति । अमर्कीत्.

मर्कट, (पु०) मर्क्+अटन् । वानर । बंदर । ऊर्णनाभ । मकडी । एक पक्षी.

मर्कटीजाल, (न०) छन्दोग्रन्थमें एक प्रस्ताव जिसमें लघु और गुरुके विचारको जानेके लिये एक चक्र.

मर्कर, (पु०) मर्क्+अरच् । भृङ्गराज वृक्ष । भांड । बांझ औरत (स्त्री०).

मर्च्, ग्रहण (पकडना) चु० उभ० सक० सेट् । मर्चयति-ते । अममर्चत्-त.

मर्त, (पु०) मृ+तन् । मनुष्य । और पृथिवीका लोक । "मराहुआ" यत् । "मर्त्यः" मनुष्य.

मर्दन, (न०) मृद्+ल्युट् । गात्रपादादिसंवाहन । मुट्ठी चापी करना । चूर्णन । चूरा करना । पीसना । मलना.

मर्दित, (त्रि०) चु० मृद्+क्त । चूर्णित । मलागया । पीसागया । और गुथागया.

मर्व, गति । भ्वा० पर० सक० सेट् । मर्वति । अमर्वीत्.

मर्मच्छिद्-भिद्-छेदिन्-भेदिन्, (त्रि०) मर्माणि छिनत्ति जीवनस्थान (जिगर) को काटनेवाला । जोडोंकी जगहको फाडनेवाला.

मर्मज्ञ, (त्रि०) मर्म जानाति । छिपीहुई बातको जाननेवाला । दूसरेकी निर्बल बातोंको जाननेहारा.

मर्मज्ञ, (पु०) मर्म जानाति । ज्ञा+क । तत्त्वज्ञ । छिपीहुई बातको जाननेहारा । दाना । रहस्यके पानेहारा । "मर्मवित्" यही अर्थ.

मर्मन्, (न०) मृ+मनिन् । जीवनस्थान । जीनेकी जगह । सन्धिस्थान । जोडोंकी जगह । और तात्पर्य । मनतत्व । सार । भेद.

मर्ष, धर्ष भरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मर्षति । अमर्षीत्.

मर्मर, (पु०) मृ+अरन्-मुट् च । कपडों और पत्तोंकी आवाज (खरखराहट) । मर्मर । हल्दी (स्त्री०).

मर्मस्पृश्, (त्रि०) मर्म (प्राणस्थानं) स्पृशति क्विन् । जो जीवनके स्थानको छूता है । मर्मपीडक.

मर्या, (अव्य०) म्रियते (अवशिष्यते) यत्र यत् । सीमा । हद् । (स्त्रीलिङ्ग भी होता है) "यत्" मनुष्य (पु०).

मर्यादा, (स्त्री०) मर्यायां (सीमायां) दीयते । अच् । परि आदीयते वा । परि+आ+दा+अङ् । "प" को "म" । न्याय्यपथस्थिति । (उचित-इन्साफवाले) मार्गमें रहना । सीमा और कूल । तट.

मल्, धृति-पकडना-काबूकरना । भ्वा० आ० स० मलते । अमलिष्ट.

मल, (पु०) मृज्यते (शोध्यते) मृज+कल् जो (प्रायश्चित्तद्वारा) साफ कियाजाता है (गुनाह) । पुरीष । विष्ठा (गूह) त्यागा कियाजाता है । लोहे आदिका मल । कलंक । उत्पन्नहुआ पसीना और श्लेष्म (खकार) आदि कृपण । सूम । वात पित्त और कफ । मैल.

मलघ्न, (पु०) मलं (विष्ठां) हन्ति (रेचयति) क । मलको खाली करनेवाला । शाल्मलीकन्द "मलहा" यही अर्थ.

मलद्राविन्, (पु०) मलं द्रावयति (रेचयति) । णिच्-अण् । मलको पिघलाता है । जयपाल । जमालगोटा.

मलधारिन्, (पु०) मलं धारयति । मलको धारनेवाला जैनमतको एक धार्मिक संन्यासी.

मलमास, (पु०) मलः (दुष्टः) मास । मैला (बुरा) महीना । सूर्यकी संक्रान्तिसे शून्य शुक्ल (पडवा) से अमावास्यातक चन्द्रमासम्बन्धी मास । अधिकमास । बढाहुआ महीना । लौंदका महीना.

मलय, (पु०) मल्+कयन् । दक्षिणमें एक पर्वत (जहां) चंदन उपजता है । उस पर्वतके पासका देश । उपवन (छोटावन) । नन्दनवन । और ऋषभदेवका एक पुत्र.

मलयज, (न०) मलये (पर्वते) जायते । जो मलय पहाडमें उपजता है । चंदन । मलय देश की (हवा) (पु०) । उस देशमें उपजा (त्रि०).

मलाकर्षिन्, (पु०) मलं आकर्षति । मलको खेंचनेवाला । चाण्डाल । भंगुला.

मलारि, (पु०) मलस्य (कलंकादिदोषादेः) अरिः । का शत्रु । सर्जिक्षारद्रव्य । हरएक तरहकी सज्जी.

मलापरोध, (पु०) मलस्य अवरोधः । मलका रुकना

–ाशय, (पु०) मलस्य आशयः । मलके रहनेका स्थान । पेट.

लिन, (त्रि०) मल+अस्त्यर्थे इनच् । मलयुक्त । मैल-वाला । मैला । दूषित । और काला । इनि "मली" यही अर्थ । सुहागा.

लिनमुख, (पु०) मलिनं मुखं यस्य । जिसका मैला मुख है । वह्नि (आग) । उसका पहिले धूम-धूआं होनेसे काला मुख होता है । और वानर (बंदर) । क्रूर (बेरहम) और नीच (त्रि०).

लिम्लुच, (पु०) मली (वैदिककर्मानर्हत्वेन दुष्टः) सन् म्लोचति (गच्छति) । म्लुच्+क । वेदमें कहेहुए कर्मोंके अयोग्य होनेसे चलाजाता है अर्थात् इसमें शुभ कार्य नहिं हो सके । मलमास । वायु (हवा) । अग्नि (आग) और तस्कर (चोर).

लीमस, (त्रि०) मल+ईमसच् । मलिन । मैला । लोहा.

लोपहत, (त्रि०) मलेन उपहतः । मलसे माराहुआ (बिगड़ा हुआ).

ल्ल, धृति-पकड़ना । भ्वा० आ० अक० सेट् । मल्लते । अमल्लिट.

ल्ल, (पु०) मल्ल्+अच् । बाहुयुद्धकारक । भुजाओंसे लड़ाई करनेवाला । पहिलवान । बलवान । वर्धन । (पात्र) । कपोल (गाल-भाग) । देशविशेष । जाति-विशेष.

मल्लभू, (स्त्री०) मल्लक्रीडनस्य (बाहुयुद्धस्य) योग्या भूः (स्थानम्) । भुजाओंसे लड़ाई करनेके लायक जगह । अखाड़ा । एकदेश । पहिलवानों (मल्लों) के लड़नेकी जगह.

मल्लयुद्ध, (न०) ६ त० । पहिलवानोंकी लड़ाई । बाहु-युद्ध.

मल्लार, (पु०) मल्ल इव ऋच्छति । ऋ+अण् । पहिल-वानकी तरह जाता है । रागविशेष । एक रागिणी । वसन्तरागकी रागिनी । मेघरागकी रागिनी.

मल्लि ल्ली, (स्त्री०) मल् इन्-वा ङीप् । मल्लिका (मालती-की बेल) । स्वार्थे कन् । एक प्रकारका हंस (जिसका शरीर श्वेत और चोंच एवं चरण लाल होते हैं).

मश्, ध्वनि । आवाज करना । अक० । क्रोध करना । सक० पर० सेट् । मशति । अमशीत्-अमाशीत्.

मशक, (पु०) मश्+वुन् । एक प्रकारका कीड़ा । मच्छर.

मशि-शी, (स्त्री०) मश (ष्)+इन् वा ङीष् । पत्र लिखनेका द्रव्य । स्याही । शाई.

मष्, वध । मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मषति । अम-षीत् । अमाषीत्.

मस्, परिणाम-बदलना-पकना-परिमाण-मापना । दि० प० अक० सेट् । मस्यति । अमसत् । अमसीत्-अमासीत्.

मसिधान, (न०) मसिः धीयते अत्र+आधारे ल्युट् । जहां स्याही डाली जाती है । दवात । द्वात (स्त्री०) भी होता है । ङीप्.

मसिपण्य, (पु०) मसिः (तदुपलक्षितं अक्षरं) एव पण्यं (विक्रेयं) यस्य । स्याहीसे पहिचानाहुआ अक्षरही जिसका सौदा है । लेखनोपजीविन् । लिखनेकी जीविका करनेहारा । मुनशी । बाबू.

मसूरा, (स्त्री०) मस्+ऊरच् । मसूर । मसूर (मसरी)-की दाल.

मसूरिका, (स्त्री०) मसूरेव+इवार्थे कन् । कुटनी (दूसरे पुरुषोंके साथ पराई स्त्रियोंको मिलानेवाली औरत) । चेच-ककी बीमारी.

मसृण, (त्रि०) मस्=ऋण । स्निग्ध । चिकना । और अक-र्कश । नरम.

मस्क, गति । जाना । भ्वा० पर० अक० सेट् । मस्कति । अमस्किट.

मस्कर, (पु०) मस्क्+अरच् । वंश (बांस) । छेकवाला बांस । "भावे अरच्" गति (जाना) । और ज्ञान (जाना).

मस्करिन्, (पु०) मस्करो (ज्ञानं) गतिर्वास्ति अस्य इनि । ज्ञान वा गतिवाला । "माकर्तुं (कर्म निषेद्धुं) शीलं अस्य । मा+कृ+इनि" । जिसका स्वभाव कर्मोंको निषेध करनेका है । "मस्करमस्करिणौ" इति नि० । परिव्राजक । संन्यासी । विधिसे कर्मोंका परित्याग करनेवाला भिक्षु (फकीर-साधु) । और चन्द्रमा । चांद.

मस्ज, स्नान (नहाना) तु० पर० अक० अनिट् । मज्जति । अमाङ्क्षीत् । ममज्ज.

मस्त-क, (न०) मस्+क्त । मस्तक (माथा) । उच्च (ऊंचा) (त्रि०) । और शीर (संज्ञामें कन्).

मस्तकस्नेह, (पु०) ६ त० । माथेकी चिकनाई । शिरःस्थित मज्जा । शिरकी मज्जा (घीके स्वरूपमें चिक-नाई) । मस्तिष्क (मगज).

मस्तमूलक, (न०) मस्तस्य मूलं इव (इवार्थे कन्) । माथेकी मानों जड है । शिरोधरा । शिरको उठानेहारी गर्दन । गला.

मस्तिष्क, (न०) मस्त+इष्क् । मस्ति (परिणतिर्नेरं) मुष्कति । मुष्क् गति (जाना)+अच् इ० । मस्तकस्थ-स्नेहरूप पदार्थ । माथेमें घिरने समानका एक पदार्थ । मगज.

मस्तु, (न०) मस+तुन् । दधिमण्ड । दहीका पानी । छाछ । लस्सी.

मह्, पूजा करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । महति । अमहीत्.

ानाद, (पु०) महन् नादः अस्य । जिसका बड़ा शब्द है । गज (हाथी) । गर्जन्मेघ । गाजने (गजने)वाला बादल । सिंह (शेर) । और ऊंट.

ानिद्रा, (स्त्री०) कर्म० । बड़ी नींद । मरण । मौत । (इसमें फिर नहिं उठते).

ानिशा, (स्त्री०) बड़ी रात । रात्रिके बीचले दो पहिर.

ानुभाव, (पु०) महान् अनुभावः आशयो यस्य । जिसका बड़ा आशय (खयाल) हो । महाशय । नेक.

ापथ, (पु०) कर्म० । बड़ा मार्ग । राजमार्ग । राजाकी सड़क । बड़ी सड़क । हिमालयके उत्तरमें स्वर्गके चढनेका रास्ता.

ापद्म, (पु०) कर्म० । आठ नागोंमेंसे एक । एक नाग (सांप) । कुबेरका खजाना (निधि) । अयुत कोटी संख्या । एक खास बड़ी गिन्ती (संख्या) । उस संख्यावाला । एक राजा.

ापातक, (न०) बड़ा पातक (पाप) । ब्रह्महत्या । (ब्राह्मणको मारना) सुरापान (शराबका पीना) स्तेय (चोरी करना) गुर्वङ्गनागम (गुरुकी स्त्रीके साथ संभोग करना) और इन चारोंके साथ मेल करना (तत्संसर्ग) ये पाँच "महापातक" हैं.

ापुराण, (न०) सृष्टि आदि ग्यारह लक्षणोंवाला व्यासमुनिका रचाहुआ पुराणविशेष

ापुरुष, (पु०) कर्म० । बड़ा पुरुष । पुरुषश्रेष्ठ । देवताओंमें बहुत अच्छा । और नारायण । "वन्दे महापुरुष ! ते चरणारविन्दं" इति भागवतम्.

महापूजा, (स्त्री०) महती पूजा । बड़ी पूजा । विशेष अवसरोंपर कीगई खास पूजा.

महापृष्ठ, (पु०) महत् पृष्ठं यस्य । बड़ी ऊंची पीठवाला । वट्ट । ऊंट.

महाप्रतीहार, (पु०) महान् प्रतीहारः । मुख्य द्वारपाल । खास दर्बान.

महाप्रपञ्च, (पु०) महान् प्रपञ्चः । बड़ा विस्तार । बड़ी दुनियां । बड़ा जगत्.

महाप्रभु, (पु०) महान् प्रभुः । बड़ा स्वामी.

महाप्रलय, (पु०) कर्म । बड़ी प्रलय । "ब्रह्मणो दिनावसाने जायमानः सर्वभूतक्षयः प्रलयः" (ब्रह्माका एक दिन समाप्त होजानेपर उत्पन्नहुआ सम्पूर्ण भूतोंका नाश प्रलय है) "तस्यैव स्वमानेन शतवर्षावसाने जायमानस्तु महान् प्रलयः" (उसीके अपने मापसे एक सौ वर्ष बीत जानेपर उत्पन्नहुआ महाप्रलय होता है) । वह समय कि जब उत्पन्नहुए पदार्थोंका कोईभी आश्रय नहिं रहता । अथवा वह काल कि जब उपजनेलायक भावका अधिकरण (अवलम्ब आसरा) कोई नहिं । तीन लोकोंका नाश । ब्रह्माका एक सौ बरस.

महाप्रसाद, (पु०) बड़ा प्रसाद । प्रसन्नता-खुशी । विष्णु आदि देवताओंको निवेदन कियाहुआ । देवनैवेद्य (देवताको निवेदन कर प्रसाद लेना उचित है).

महाप्राण, (पु०) महान् (बहुकालस्थायित्वात्) श्रेष्ठः प्राणः अस्य । (बहुत समयतक रहनेसे) जिसका प्राण बहुत अच्छा है । द्रोण नामी एक प्रकारका कौवा । कर्म० । अक्षरके उच्चारण (बोलना) करनेका बाह्य प्रयत्नविशेष (एक प्रकारका बाहिरसे हुआ यत्न-कोशिश).

महाफल, (पु०) महत् (पत्रापेक्षया) बृहत् फलं अस्य । पत्तेकी अपेक्षा (बनिस्बत) जिसका फल बड़ा हो । बिल्ववृक्ष (बिल्वका दरख्त) । इन्द्रवारुणी (स्त्री०).

महाबल, (पु०) महत् बलं अस्य । जिसका बड़ा बल (जोर) है । वायु (हवा) और बुद्ध (अवतार) । बलवाला (त्रि०) "महत् बलं यस्मात्" ५ ब० । सीसक (सीसा) (न०).

महाबाहु, (त्रि०) महान् बाहुः यस्य । बड़ी भुजा (बांह)वाला । शक्तिमान् । ताकतमंद.

महाब्राह्मण, (पु०) महान् ब्राह्मणः । बड़ा वा शिक्षित ब्राह्मण । नीच [illegible] निन्दाके योग्य ब्राह्मण.

महाभाग, (त्रि०) महान् भागः यस्य । बड़े भाग्यवाला । भाग्यवर । धन्य । बड़ा दौलतमन्द.

महाभागवत, (न०) महत् भागवतम् । बड़ा भागवत । अठारहमेंसे एक पुराण.

महाभारत, (पु० न०) "किसी समय सम्पूर्ण देवताओंने मिलकर साङ्ग सरहस्य चारों वेदों और भारतको तोलकर देखा तो वही सबसे अधिक (जियादा) हुआ तभीसे इसका नाम "महाभारत (बड़ा भारत)" हुआ । व्यासदेवका रचाहुआ लाख श्लोकका एक ग्रन्थ.

महाभाष्य, (न०) महत् भाष्यम् । बड़ा भाष्य (व्याख्या) । पाणिनीके सूत्रोंपर पतञ्जलि मुनिकी बड़ी व्याख्या.

महाभीता, (स्त्री०) कर्म० । लज्जालुलता (छनेहीसे सिकुड जाती है इससे बहुत डरनेवाली है) । बहुत डराहुआ (त्रि०).

महाभूत, (न०) कर्म० । बड़ी चीजका स्वरूप होनेसे मोटे हो गये बड़े पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पांच भूत । बड़ा भूत (त्रि०).

महामद, (त्रि०) महान् मदः यस्य । बहुत मद (मस्तता) होगया । बड़ामस्त.

महामनस, (त्रि०) महत् उदारं मनः (व्यापारः) अस्य । जिसके मनका व्यापार बड़ा हो । महाशय । खुशदिल । दिलवर । फैयाज.

महा-महावारुणी, (स्त्री०) एक प्रकारका योग । शनिवार, शतभिषा नक्षत्र, शुभ योगयुक्त चैत्रमासके कृष्णपक्षकी त्रयोदशी.

महामहोपाध्याय, (पु०) महत् महान् उपाध्यायः। बड़ेसे उपाध्याय (शिक्षक) बड़ाभारी शिक्षक। यह उपाधि भारी विद्वान् और प्रसिद्ध विद्वानोंको दीजाती है.

महाशय, (वि०) सबसे बड़ा। बहुत बड़ा। बहुत ऊंचा। —आः। [illegible]। बड़ा शरीर। "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] न महती [illegible] महा-[illegible] ते [illegible]"। हाथी चलाने या रखनेवाला। हाथीकोतर [illegible] [illegible].

महामाया, (स्त्री०) कर्म०। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महत्। जीवोंमें जीवही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। सारे जगत्का मूलकारण [illegible] [illegible] है। जगत्का कारणरूप अविद्या [illegible] [illegible] (उस अविद्याका [illegible]) दुर्गा। "महा-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जगत्" [illegible] [illegible].

[illegible], (स्त्री०) [illegible] [illegible]। बड़ी मृत्यु (मौत) [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] बीमारी.

[illegible], (पु०) कर्म०। [illegible]। [illegible] (मूंगी आदिसे [illegible])

[illegible], (वि०) [illegible] [illegible] [illegible]। बड़े मोलवाला।

[illegible], (पु०) [illegible] (पशु) बड़ा पशु। [illegible] ([illegible])। [illegible]

[illegible] (पु०) कर्म०। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] (कौ [illegible]).

[illegible] (पु०) (स्त्री०) [illegible]। [illegible] प्रसिद्ध एक [illegible] [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible]) [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

महाराज-(जि)क, (पु०) [illegible] [illegible] पु० [illegible] था। दो सौ बीस [illegible] गणदेवता.

महाराज्ञी, (स्त्री०) बड़ी रानी। [illegible] (खास) रानी। राजाकी मुख्य स्त्री ([illegible])

महारात्रि, (स्त्री०) "[illegible] [illegible] [illegible] होता है उसेही महारात्रि कहते हैं"। [illegible] महाप्रलय। तन्त्रमें आधीरातके पीछेके [illegible] [illegible]

महाराष्ट्र, (पु०) कर्म०। महाराष्ट्र देश। [illegible] और एक प्रकारकी बोली (स्त्री०) [illegible]

महारोग, (पु०) कर्म०। [illegible] [illegible] आठ रोग (बीमारियां)। [illegible]

महारौद्र, (त्रि०) महान् रौद्रः। बड़ा [illegible] —द्री (स्त्री०) दुर्गाका नाम.

महारौरव, (पु०) [illegible] [illegible]। कर्म०। [illegible] [illegible]विशेष.

महार्घ, (त्रि०) महान् अर्घः (मूल्य) [illegible] बड़ा मोल हो। बड़े मोलवाला। [illegible].

महार्णव, (पु०) कर्म०। बड़ा समुद्र। [illegible]

महालय, (पु०) महान् ([illegible]) [illegible] जहां पूरा [illegible] है। परमात्मा ([illegible] [illegible] [illegible] जाता है) कर्म०। बड़ा आलय (घर)। [illegible] विहार (मोक्ष)। [illegible] ([illegible] [illegible]) (न०).

महालक्ष्मी, (स्त्री०) कर्म०। बड़ी लक्ष्मी। [illegible] [illegible] दुर्गाकी शक्तिका भेद। [illegible] [illegible]

महावराह, (पु०) कर्म०। बड़े [illegible] ([illegible]) [illegible] धारण करनेवाला भगवानका एक [illegible]

महावरोह, (पु०) महान् [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

(पु०) नास्ति अवीचिः (सुखं) यत्र । कर्म० ।
नहीं । सुखसे रहित । एक नरक.

(पु०) कर्म० । बडा बहादुर । गरुड । हनुमा-
(शेर) । महती अग्नि (आग) । बडा ।
डा । कोकिल (कोइल) । धनुर्धर (तिरंदाज).

(पु०) ६ ब० बडे वीर्यवाला (त्रि०).

, (पु०) कर्म० । बडी बीमारी । महारोग
दि).

ते, (स्त्री०) कर्म० । वेदमें "भूः" "भुवः"
तीन मन्त्र.

(न०) कर्म० । सुख्यल । बडा आराम । बडा फोडा.

(न०) कर्म० । अतिशयमन । बडा मन । शर-
दुर्गापूजा आदि । बारह बर्षका एक व्रत.

, (पु०) महती शक्तिः यस्य । बडी शक्तिवाला ।
कार्तिकेय.

(पु०) कर्म० । तन्त्रमें एक प्रकारकी जप-
जो मनुष्योंकी खोपडीसे बनाई जाती है । कान
के बीचकी हड्डी । बडा शंख । "पौण्ड्रं दध्मौ
" इति गीता.

(पु०) कर्म० । राजधतूरा । बडा धूर्त (त्रि०).

(त्रि०) महान् शब्दः यस्य । बडे शब्द (आ-
वाला.

(त्रि०) महान् (उदारः) आशयः यस्य । बडे
ला । महानुभावः । दिलावर । फैयाज । साहिब.

, (पु०) महती शाला यस्य । बडी शालावाला ।
ी गृहस्थ.

न, (त्रि०) महत् शासनं यस्य । बडी आज्ञा
) वाला । बडी शक्तिवाला ।–नं (न०) राजाकी
ज्ञा (हुक्म).

(पु०) कर्म० । आभीर (अहीर) बकाइन ।
वे.

ाम, (न०) कर्म० । काशी । यहां सम्पूर्ण एक
त सब जीवोंकी फिर उत्पत्ति न होनेके लिये
आधार होनेसे ऐसा कहा है । बडा मसान.

, (पु०) महान् श्रमणः । बुद्धदेवका नाम ।
वासी.

(स्त्री०) कर्म० । आश्विन (आसु) के शुक्ल-
अष्टमी.

पन, (न०) कर्म० । एक व्रत जो सात दिनमें
होता है.

(पु०) महती सेना अस्य । कार्तिकेय (जिसकी
सेना है) । बडी सेनाका अधिपति (मालिक)
).

महाहविस्, (न०) महत् हविः । बडा हविः । शुद्ध
किया हुआ मक्खन । घी.

महिन्दी, (स्त्री०) मह्+इन् वा ङीप् । पृथिवी । मालव-
देशमें एक नदी (मही).

महिका, (स्त्री०) मह्यते । मह्+कन् । हिम । बर्फ.

महिमन्, (पु०) महतो भावः । महत्त्व । बडापन । बडाई ।
ईश्वरका एक ऐश्वर्य । आठ सिद्धिओंमेंसे एक.

म(मि)हिर, (पु०) मह् (मिह्) किरच् । सूर्य । सूरज.

महि(हे)ला, (स्त्री०) मह्+इलच् । योषित् । औरत ।
स्त्री । प्रियङ्गुलता । रेणुका नामी गंधका द्रव्य । मत्ता स्त्री ।
मस्त औरत । "महेला".

महिष, (पु०) मह्+टिषच् । अपने नामसे प्रसिद्ध एक
पशु । भैंसा । महिषासुर (भैंसेके स्वरूपका एक दैत्य) ।
राजाकी कृताभिषेका (जिसका राजाके साथ अभिषेक
हुआ) स्त्री । महिषजातिकी स्त्री । और एक औषध
(दवाई).

महिषध्वज, (पु०) महिष ध्वजः (चिह्न-वाहनत्वेन)
अस्य । जिसकी सवारी भैंसा है । यमराज । "महिष-
वाहन" यही अर्थ.

महिषमर्दिनी, (स्त्री०) महिषं (महिषासुरं) मृद्नाति ।
मृद्+णिनि+ङीप् । ६ त० । महिषको मल डालती है ।
दुर्गाभेद । एक देवी.

महिषासुर, (पु०) रम्भनामी दैत्यसे महिषीमें उत्पन्न
कियागया एक दैत्य । महिषनामी गुग्गुल.

महीक्षित्, (पु०) महीं क्षयते (ईष्टे) । क्षि-ऐश्वर्यंदह-
मत करना । क्विप्-तुकुच । पृथिवीपर हुकूमत (आज्ञा)
कर्ता है । नृप । राजा.

महीज, (न०) मह्या जायते । जन्+ड । पृथिवीसे उप-
जता है । आर्द्रक । अदरक । मङ्गलनामी ग्रह । और नर-
कासुर (पु०).

महीध्र, (पु०) महीं धारयति । धृ+क । पृथिवीको धारण
कर्ता है । पर्वत (पहाड) अच् । "महीधर" यही अर्थ.

महीप्राचीर, (न०) मह्याः प्राचीरं [illegible] (आवरकत्वात्) ।
पृथिवीका मानो प्राचीर (फसील) है (क्योंकि यह
पृथिवीको ढांकेहुए है) । समुद्र । समुंदर.

महीभृत्, (पु०) महीं बिभर्ति (धारयति-पालयति वा)
भृ+क्विप् । पृथिवीको धारण वा पालन कर्ता है । पर्वत
(पहाड) । और राजा.

महीयस्, (त्रि०) अतिशयेन महान् । महत्+ईयसु ।
अति महान् । बहुत बडा । "महतो महीयान्" इति श्रुतिः.

महीयमान, (त्रि०) महीयते । मही+यक्-आ० लट् शा-
नच् । पूज्य । पूजाके लायक । और बहुत अच्छा । श्रेष्ठ.

…ल्य, (न०) मङ्गलं एव मङ्गलाय हितं वा+ष्यञ् । …ल या मङ्गलके लिये हितकारी । और मङ्गलका …धन । भलाईके लिये उपकारी.

…का, (स्त्री०) मक्ष्+ण्वुल् । मक्षिका । मक्खी.

…ष्ठ, (न०) मञ्जिष्ठया रक्तं+अण् । मजीठसे रँगाहुआ …ल रँग । रंगवाला (त्रि०).

…र, (पु०) मन्+अरन् । टान्तादेशः । ततः स्वार्थे …ण् । सूर्यस्य पारिपार्श्वे मठति । अरण् वा । सूर्यका पारि-…र्श्विक (आसपास रहनेवाला) एक गण.

…व, (पु०) मनोः अपत्यं+अण् । अल्पार्थे णत्वं । अल्प-…रक मनुष्य । छोटी उमरका आदमी । "स्वार्थे कन्" । …कहार.

…वीन, (त्रि०) माणवस्य इदं+खञ् । बालकका । …लकसम्बन्धी.

…व्य, (न०) माणवानां समूहः+यत् । बालकोंका समूह.

…क्य, (न०) माणिरिव कायति । कै+क । स्वार्थे ष्यञ् । …णिक । लाल रँगका एक रत्न । [illegible].

…मन्थ-मन्थ, (न०) मणिमन्थ (मन्थ) पर्वते भव.+ …ण् । मणिमन्थ (मन्थ) पहाड़में हुआ । सैंधव लवण । …धानोन.

…ङ्ग, (पु०) मतङ्गस्य मुनेः अयम्+अण् । गज । हाथी । …क प्रकारकी किरात (भील) की जाति । पीपलका …ड़ । दश महाविद्याओंमेंसे एक (स्त्री०).

…रपितृ, (स्त्री०) माता च पिता च । द्वन्द्वे मातुर्वा मा-…रादेशः । माता और पिता । पक्षे मातापितर् । कन्हीके …र्थमें.

…रिश्वन्, (पु०) मातरि (आकाशे) श्वसिति (वर्ध-…) । श्वि+कनिन् । अलुक् समा० । आकाशमें चलता … । वायु (हवा).

…लि, (पु०) मतं अति । अत्+क । मतलः तस्य …अपत्यं+इञ् । मतलकी सन्तान । इन्द्रका सारथी (रथ …चलानेवाला).

…ा, (स्त्री०) मा+तृच् । जननी-मां । "विश्वेश्वरी विश्व-…माता" दुर्गास्तवः.

…तामह, (पु०) मातुः पिता । मातृ+डामहच् । [illegible] …सेरा । नाना.

…ुल, (पु०) मातुर्भ्राता । मातृ+डुलच् । [illegible] भाई । …र मां.

…ुलुङ्ग, (पु०) [illegible] [illegible] । [illegible] । बीज-…पूर । बीजू । [illegible] । [illegible].

…, (त्रि०) मा+क्तुप । प्रमत्त [illegible] । [illegible] । [illegible] …[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

"मा+तृ" शिवजीके साथ रहनेवाली आठ माताएँ (ब्राह्मी-माहेश्वरी-चण्डी-वाराही-वैष्णवी-कौमारी-चामुण्डा-और चर्चि-का) । जननी (माँ) । पृथिवी । विभूति । लक्ष्मी । रेवती । इन्द्रवारुणी । जटामांसी । मार्कण्डेयमें प्रसिद्ध देवीकी शक्तियें (स्त्री०).

मातृका, (स्त्री०) माता इव कायति । कै+क । उपमाता । दाई । ब्रह्माणी आदि चण्डीमें प्रसिद्ध देवीकी मूर्तियें । अकार आदि क्षकार ४९ वर्ण जिनसे सम्पूर्ण शब्द बन-जाते हैं । स्वर । मातृ+स्वार्थे कन् माता । मां.

मातृबन्धु, (पु०) ६ त० । माताके बन्धु ("मातुः पितृ-ष्वसुः पुत्रा मातुर्मातृष्वसुः सुताः । मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबान्धवाः" इसी अर्थमें "मातृबान्धव" भी होता है.

मातृमण्डलम्, (न०) मातॄणां मण्डलम् । ब्राह्मी आदि माताओं-(देवियों०) का मण्डल (समूह).

मातृवत्सल, (पु०) मातुः वत्सलः । माता प्रियवत्सल । कार्तिकेयका एक नाम.

मातृष्वसृ, (स्त्री०) ६ त० । माताकी भगिनी । मासी । "अलुक् समा०" मातुःष्वसा.

मातृष्वसेय, (पु०) मातृष्वसुः अपत्यं+ढक् । माताकी भगि-नीका पुत्र । मासीका लड़का । "मातृष्वस्रीय".

मात्र, (न०) मा+त्रन् । साकल्य (सम्पूर्ण) । और अवधारण (निश्चय) । [illegible] ([illegible]) । अल्प । थोड़ा । परिमाण । मात्रा । धन । [illegible] [illegible] करनेके समय वर्णका एक अवयव ([illegible]) । [illegible] लने समयमें [illegible] ([illegible]) का [illegible] । [illegible] [illegible] कहा है" ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत आदि (स्त्री०) । "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" । जिससे विषय [illegible] [illegible] [illegible] । "[illegible] [illegible] [illegible]" गीता.

मात्राच्युतक, (न०) एक मात्राके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रकाश करनेवाला एक [illegible] [illegible]

मात्राछन्दस्-वृत्तं, (न०) [illegible] छन्द । [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] समय) से [illegible] [illegible] छन्द [illegible] [illegible].

मात्राभस्त्रा, (स्त्री०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible].

मात्रास्पर्श, (पु०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]- (विषयों) का सम्बन्ध । इन्द्रियकी [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]).

मात्सर्य, (न०) मत्सरस्य भाव [illegible] । [illegible] । दूसरेके [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] । "[illegible]" [illegible].

माथ, (पु०) मथ+घञ् । पन्था । मार्ग । रास्ता । बन्द । मन्थन । बिलोना । रिडकना.

माथुर, (त्रि०) मथुरायां भवः । मथुरायाः आगतः वा । मथुराका वा मथुरासे आया । मथुरानगरीभवः । तत आगतो वा.

माद, (पु०) मद्+घञ् । दर्प । अहंकार । गर्व । और हर्ष । खुशी.

मादक, (त्रि०) मादयति । मद्+णिच्+ण्वु । मत्त करता है । मतवारा करनेवाला पदार्थ । "मादयति" कर्तरि ण्वुल् । दात्यूह (पपीहा) (पु०).

मादन, (न०) मादयति । मद्+णिच्+ल्यु । लवंग । लौंग । कामदेव । और मदनवृक्ष (पु०)। विजया (भांग) (स्त्री०).

मादृक्ष-श (ए), (त्रि०) मम इव दर्शनं अस्य । दृश्+क्सट क्विप् वा । ममतुल्यदर्शन । जो मेरे समान दीखता है । मेरेसमान.

माद्री, (स्त्री०) मद्रे भवा+अण् । मद्रदेशमें हुई । पाण्डु राजाकी दूसरी स्त्री (औरत) । और अतिविषा.

माद्रीनन्दन, (पु०) माद्र्याः नन्दनः । माद्रीका प्यारा । नकुल । सहदेव.

माधव, (पु०) मायाः धवः । लक्ष्मीका पति । नारायण । "मधु+स्वार्थेऽण्" वसन्त । बहार । "मधुने पुष्परसाय मद्याय वा) हितः अण्" । वैशाखका महीना (इसमें बहुत फूल होते हैं इसलिये उनका रस निकालनेको हितकारी है) मधूकवृक्ष (महुआ) । इसके फूलोंसे मद्य (शराब) निकाली जाती है । "मधु बाहुल्येन अस्ति अस्याः अण्" जिसका बहुतायतसे मधु होता है । वासन्ती लता (स्त्री०).

माधवीलता, (स्त्री०) वसन्ती बेल.

माधुकर, (त्रि०)-री (स्त्री०) मधुकर+अण् भ्रमर (भौंरों) का वा भ्रमरके समान । माधुकरी वृत्तिः । भ्रमरकी जीविका । भौंरा जैसे प्रत्येक फूलसे मधु शहतको इकट्ठा कर्ता वैसेही भिन्न २ द्वारसे प्राप्तकीगई भिक्षा.

माधुर, (न०) मधु राति (भ्रमरेभ्यो ददाति) । रा+क-स्वार्थे अण् । भौंरोंके तई बहुत फूलका रस देता है । मल्लिकाका फूल । मालती.

माध्य, (त्रि०) मध्य+अण् । मध्यम । बीचका । मध्यमें होनेवाला.

माध्यन्दिन, (न०) मध्यन्दिनं एव+अण् । मध्यमदिन । दिनका बीचला भाग । शुक्लयजुर्वेदकी एक शाखा.

माध्यम, (त्रि०)-मी (स्त्री०) मध्यम+अण् । बीचवाला । बीचका.

माध्यस्थ्य, (न०) मध्यस्थ भाव+ष्यञ् । म... रहना उदासीनमें) होना । पक्षपात ... बीनता । किसी इधर न करना.

माध्वीकफल, (पु०) माध्वीकं इव ... माध्वीक (शराब)के समान जिसका ...

मान्, विचार करना । भ्वा० आ० सक० से... मीमांसते.

मान्, पूजा करना । वा चुरा० उभ० पक्षे भ्व... सेट् । मानयति-ते । मानते । अमीमनत् ।...

मान, (न०) मा+ल्युट् । परिमाण । माप । ... जातिसे इसको मापना । प्रमाण जिनका ... किया । मन्+घञ् । अभिमान । अहंकार । ...

मानग्रन्थि, (पु०) मानस्य ग्रन्थिः (... जिसमें मान (इज्जत)का बंधन (रोक) ... राध । गुनाह । भूल । चूक.

मानरन्ध्रा, (स्त्री०) मानाय (कालप्रमाणकर... यस्या । समयके प्रमाणको जाननेके लिये ... दिया है । तांबेका बनाहुआ छेकवाला ... कारण एक प्रकारका घटीयन्त्र (घड़ी).

मानव, (पु०) मनोरपत्यं+अण् । मनुष्य । ... स्त्रियां ङीप्.

मानवधर्मशास्त्र, (न०) मनुना प्रोक्तं धर्मशा... कहागया धर्मशास्त्र.

मानवराक्षस, (पु०) मानवः राक्षसः कर्म० ... ष्यके स्वरूपमें राक्षस (दैत्य).

मानस, (न०) मन एव+अण् । मन । दिल । कैलाश... पास ब्रह्माजीसे रचाहुआ एक प्रकारका सरोवर । ...

मानसव्रत, (न०) मनसा कृतं मानसं । कर्म० ... कियाहुआ व्रत । अहिंसा (किसी प्राणीको न मा... सत्य (सच बोलना) । अस्तेय (चोरी न करना) ... (स्त्रीके निकट न जाना) अकल्कता (लालची न ...

मानसालय, (पु०) मानसः आलयः यस्य । मनस... ब्रह्माके संकल्पसे उपजा एक तालाब । जिसका ... स्थान है । हंस.

मानसोत्क, (त्रि०) मानसे उत्कण्ठते । मानसरोवर ... उत्कण्ठित (चाहवाला).

मानसौकस्, (पु०) मानसं ओको यस्य । जो मानसरो... निवास कर्ता है । हंस (इसका उसी सरोवरसे प्यार ...

मानित, (त्रि०) मन्+णिच्+क्त प्रतिष्ठित । आदर ... गया । इज्जत किया हुआ.

मानिन्, (त्रि०) मान्+इनि, मन्+णिनि वा । ... करनेवाला । ध्यान करनेवाला । माननेवाला । समादर... आता है.

...ि, (स्त्री०) मान+इनि । फलीवृक्ष । और मान कर-
ली (स्त्री).

..., (पु०) मनोरयं अण्-वृत्त्व । मनुष्य । मानव । इसी " ततो जातौ स्त्रियां ङीप् " मानुषी । नारी.

...य, (न०) मनुष्यस्य भावः+यत् । मनुष्यत्व । मनुष्य । आदमी.

..., (न०) मन्दस्य भावः+ष्यञ् । धीमापन । मूर्खपन । ...पन । रोग । बीमारी । बुराई । सुस्ती । न्यूनता । ...मी.

...ाता, (पु०) मां (इन्द्रं) धास्यति । धे+तृच् । सूर्य-वंशी राजाका नाम । युवनाश्वका पुत्र (इसके अपने पेटसे निकला)। जब यह पेटसे बाहिर आया तो ऋषि-योंने कहा " कं एव धास्यति " (किसे यह पान करेगा) उसी समय इन्द्रने स्वर्गसे नीचे आकर कहा कि " मां धास्यति " (मुझसे पान (दूध पीना) करेगा) तभीसे इसका ऐसा नाम हुआ.

...मथ, (त्रि०)-थी (स्त्री०) मन्मथ+अण् । मन्मथ (कामदेव) वाला या मन्मथका । कामदेव (प्यारा) से उत्पन्न हुआ.

...न्य, (पु०) मान् पूजाकरणे+कर्मणि ण्यत् । पूज्य । पूजाके लायक.

...मक, (त्रि०) मम इदं । अस्मद्+वुञ्-ममादेश । कृपण । मुझसे संबंध रखनेवाला । मेरा+वत् । " मामकीन ".

...या, (स्त्री०) मा+य । मेधा । कपट । ... । इन्द्रजाल आदि । मिथ्याबुद्धि (झूठे ख्याल)का कारण । एक प्रकारका अज्ञान । कृपा । दया । दम्भ । पाखण्ड । लक्ष्मी । बुद्धकी माता (मां) । ईश्वरकी उपाधि । अघटितघटनसाधिका शक्ति. (एक ऐसी ताकत जो न बन सकनेवाली बातको भी बनादे)

...यावत्, (पु०) मायां (इन्द्रजालं) करोति । कृ+क्विप् । इन्द्रजाल रचनेवाला । मदारी । बाजीगर.

...यादेवीसुत, (पु०) ६ त० । मायादेवीका पुत्र । बुद्धदेव.

मायाप्रयोग, (पु०) मायायाः प्रयोग । छलको काममें लाना । वंचना.

मायायोधिन्, (त्रि०) मायया युध्यते । छलसे युद्ध करनेवाला.

मायावचन, (न०) मायाया वचनं । छलका वचन । छलकी बोली । झूठी बात कहना.

मायावाद, (पु०) मायायाः वादः । माया (झूठ कपट)का सिद्धान्त (बौद्धलोग ऐसा मानते हैं).

मायाविन्, (त्रि०) माया+अस्ति अर्थे विनि । मायाकार माया रचनेवाला । ऐन्द्रजालिक । मदारी । छलिया.

मायिक, (त्रि०) माया अस्ति अस्य+ठन् । मायावान् । मदारी । कपटी.

मायु, (पु०) मा+उ । देहस्थपित्त । शरीरका पित्त । एक रोग.

मायूर, (न०) मयूराणां समूहः । तस्येदं वा+अण् । मयूर-संघ । मोरोंका समूह । मयूरसम्बन्धी । मोरवाला (त्रि०).

मार, (पु०) मृ+घञ् । मारण । मौत । "मारयति" । मृ+णिच्+अच् । मार डालता है । कामदेव । विघ्न । रंज । धतूरा.

मारक, (पु०) मृ+णिच्+ण्वुल् । मृ+णिच्+घञ् स्वार्थे कन् वा । मारण । मारना । कतल करना । एक पक्षी (बाज).

मारकस्थान, (पु०) मारनेकी जगह । जन्मलग्नसे सातवां और दूसरा स्थान.

मारण, (न०) मृ+णिच्+ल्युट् । मारना.

मारि, (स्त्री०) मृ+णिच्+इन् । मरण । मरना । वा ङीप् " मारी " । मौत । वध.

मारिष, (पु०) रिष् हिंसा । बनजारा । निषेधअर्थके " मा " शब्दके साथ समास होता है । मानोंसियोंमें (आर्य) हिंसाको निवारण करनेसे उसे ऐसा कहते हैं.

मारीच, (पु०) ताड़का राक्षसीका पुत्र । रावणका अनुचर (नौकर) । एक प्रकारका राक्षस.

मारुतात्मज, (पु०) ६ त० । वायुका पुत्र । हनुमान् । और भीमसेन । " मारुतिः " इञ्.

मारुति, (पु०) मरुतः अपत्यं+इञ् । भीमहनुमानोंका नाम । वायुका बेटा.

मार्कण्ड, (पु०) मृकण्डोः अपत्यं+अण् । पु० । मृक-ण्डुकी सन्तान । एक मुनि । वृद्ध । स्व० । "मार्कण्डेय" यही अर्थ.

मार्ग, (पु०) अन्वेषण-तलाश करना । ढूंढना । च० पु० उभ० सके० स्व० सट० सेट् । मार्गयति-ते । मार्गति । अममार्गत्-त । अमार्गीत् " मृगयेरन्मार्ग " इति मौ० । स्व० आ० मार्गते । मार्गयते.

मार्ग, (पु०) मृज्-शुद्धिकरणे-मार्ग-अन्वेषणे-घञ् । रस्ता । रस्ता । पथ.

मार्गण, (न०) मार्ग+ल्युट् । अन्वेषण । तलाश । याचना । ढूंढना और ग्रहण । तलाश करना । "मार्गी रतु" मार्ग-वेषक (त्रि०)

मार्गरक्षक, (पु०) मार्गका रक्षक । मार्ग (रस्ता) का रक्षक (रखवाल).

मार्गशोधक, (पु०) मार्गस्य शोधकः । मार्गका संस्कार (सफाई) करनेवाला.

मार्गस्थ, (त्रि०) मार्गे तिष्ठति । मार्गमें रहनेवाला । पथिक मुसाफिर.

मार्गशिर } मार्गशीर्ष } (पु०) मृगशिरेण युक्ता पौर्णमासी+अण् । सा यत्र मासे । पुनः अण् । मृगशिर नक्षत्र-वाली पूर्णिमा । जिस महीनेमें वैसी पूर्णिमा हो । अगहन । अग्रहायण (मग्गर) । उसकी पूर्णिमा (स्त्री०).

मार्गित, (त्रि०) मार्ग+क्त । अन्वेषित । तलाश कियागया । ढूंढागया.

मार्ज्, मार्जन-साफकरना । सक० ध्वनि-शब्द करना-अक० चुरा० उभ० सेट् । मार्जयति-ते । अममार्जन्-त.

मार्जन, (न०) मार्ज+ल्युट् । पोंछकर साफ करना । स-म्मार्जनी (बुहारी) (स्त्री०).

मार्जना, (स्त्री०) संस्कार । सफाई । एक प्रकारका वाद्य (बाजा) का शब्द.

मार्जार-ल, (पु०) मृज्+आरन् । वा रस्य लः । बिलाव । बिल्ला । " ततः संज्ञायां कन् " मयूर । मोर.

मार्जारी(ली)य, (पु०) । मार्जार+ (ल) स्वार्थे छ । मृज्+आरीन् । रस्य लत्वं वा । बिलाव । बिल्ला और शूद्र (चौथा वर्ण) । कायशोधन । शरीरकी सफाई (न०).

मार्जित, (पु०) मार्ज+क्त । शोधित । साफ कियाहुआ । एक प्रकारकी रसा या चटनी (जिसमें दही, घी, मरिच, शक्कर आदि चीजें मिला कपूरकी सुगंधि दीजाती है).

मार्तण्ड, (पु०) मृते अण्डे भव+अण् । शक० । मरेहुए अण्डेमें हुआ । सूर्य । आकका वृक्ष । शूकर । सूअर.

मार्त्तिक, (पु०) मृत्तिकया निर्मित+अण् । मट्टीसे बनाहुआ । शराव । कुल्हड़ । सिपाला । मृन्मय । मट्टीका (त्रि०).

मार्दङ्गिक, (त्रि०) मृदङ्गं (तद्वादनं शिल्पं) अस्य+ठक् । मृदङ्ग बजानेवाला.

मार्दव, (न०) मृदोर्भावः । कोमलता । मृदुत्व । दूसरेके दुःखसे व हृदयमें शिथिल हो जाना.

मार्ष्टि, (स्त्री०) मृज्+क्तिन् । शोधन । सफाई.

माल, (पु०) मल्+संज्ञायां घञ् । एक प्रकारकी जाति । देशभेद.

मालक, (न०) मल्+ण्वुल् । बकाइन वृक्ष (स्वनामख्यात) । नारियलका बनाहुआ एक पात्र (बर्तन).

मालती, (स्त्री०) मा (लक्ष्मी) शोभां वा लाति (लेती) ला+क+ङीप् । चमेली । ज्योत्स्ना । एक नदी । ... । ... (रात).

मालतीमन्दु, (पु०) ... (...) ... । ... । ... (...) । "...".

मालतीपत्री, (स्त्री०) मालत्या इव पत्रं ... पत्ता मालतीके समान हो । जलवत्री । ...

मालतीफल, (न०) मालत्याः (तदनन्तर ... जायफल.

मालभारिक, (त्रि०) मालायां भारोऽस्य ... पहिले पदको ह्रस्व हो जाता है । मालाधारी ...

मालव, (पु०) अवन्तिदेश (मालवा देश) । ... राग । भैरव रागकी स्त्री.

मालवाधीशः-इन्द्रः-नृपतिः, (पु०) मालवस्य ... मालवदेशका राजा.

मालविका, (स्त्री०) मालवे भवा+ठक् । निशो... त्यूडी.

माला, (स्त्री०) मल्+संज्ञायां कर्मणि घञ् । ...

मालाकार, (पु०) मालां करोति । कृ+अण् । ... है । माली । एक प्रकारका वर्णसंकर (...)

मालादीपक, (न०) अलंकारमें अर्थालंकारके ...

मालिक, (पु०) माला (तन्निर्माणं) शिल्पं ... मालाकार । माली । एक जाति । एक ... नानेवाला (त्रि०).

मालिका, (स्त्री०) माला इव कन् । [illegible] हर्ष । ... मालतीकी बेल । ग्रैवालंकरण । गलेका भूषण । ... एक नदी । सुरा (शराब) । अलसी । ... माला । "पाशाक्षमालिकाम्भोज" इति ...

मालिन्, (पु०) माला (शिल्पं) अस्ति अस्य ... मालाकार । माला बनानेवाला । माली । ... (त्रि०) । मालीकी पत्नी (औरत) । ... पादवाला एक छन्द । गौरी । ... (आकाशकी गंगा) । कण्व ऋषिके आश्रमके ... नदी । अभिशिरबाधा । दुरालभा (स्त्री०) ...

मालिन्य, (न०) मलिनस्य भावः+ष्यञ् । ... पन । मलाजन.

मालूर, (पु०) मां (लक्ष्मीं परेषां) ... बिल्व । कपित्थ.

मालेय, (त्रि०) मालायां साधु+ढञ् । ... चतुर । अच्छी माला बनानेहारा.

माल्य, (न०) माला+ष्यञ् । ... पुष्प । कुसुम । "स्वार्थे ष्यञ्" पुष्पमाला । ... (हार) । माथेपर पहिननेका हार । ...

माल्यवत्, (त्रि०) माल्यं अस्ति अस्य+मतुप् । ... को "व" । मालावाला । ... सीमापर्वत (पहाड़) । सुकेशराक्षसका पुत्र ... भ्राता । एक राक्षस.

मालिनीयुक्, (त्रि०) मेरि ... निर्देश करनेवाला । "... " ...

…(पु॰) मन्‌-संज्ञायां+घञ्। मोहिनेद (उड़द)। एक …माण (माशा)। एक प्रकारका तोल। मूर्ख। एक …रका रोग। मों.

…र्धिक, (पु॰) माषं (मानपरिमितं स्वर्णं) वर्धयति …अवच्छिनत्ति-अपहरति)। वर्ध-काटना+ण्वुल्। स्वर्णकार …(सुनार)। मासाभर सोना काट लेता है या चुरा लेता है.

…ष्य, (न॰) माषाणां भवनं (क्षेत्रं)+यत्। जिस खेतमें …उड़द उपजते हो। माषवीहिभवनयोग्यं क्षेत्रं+यत्। …माष्यं" इसी अर्थमें होता है.

…, (पु॰) माति (परिच्छिनत्ति) समयका परिमाण+ …+असुन्। अपनी गतिसे समयको माप देता है। चन्द्र। …चाँद। चन्द्रमा। तीस दिनका समय। त्रिंशद्दिनात्मक …काल। महीना.

…, (पु॰) मा एव+अण्। चंद्र। चाँद। त्रिंशद्दिनात्मक …काल। तीस दिनका समय। यह (सौर-सावन चान्द्र और …नाक्षत्रके भेदसे) चार प्रकारका होता है। चान्द्रमास। …महीना। "मस्-मापना+करणे घञ्" मासाभर.

…क, (त्रि॰)-की (स्त्री॰) मासे भव+ठञ्+इक। …मासके साथ संबन्ध रखनेवाला। प्रत्येक महीने होनेवाला। …मासमें देनेयोग्य। भृति। तनख्वाह.

…देय, (त्रि॰) मासेन देय.। एक महीनेमें देनेलायक.

…मन, (न॰) मासे नयति। नी+ड। सोमराजीलता। …बकुचेल.

…प्रवेश, (पु॰) मासस्य प्रवेशः। महीनेका प्रवेश। …मासका प्रारंभ

…र, (पु॰) मस्-मापना+घञ्। मसे (परिमाणे) राति। …रा+क। भातमण्ड। मांड। पीच। भातको (पकातेहुए) …माड़ रस.

…न्त, (पु॰) मासस्य (शेषस्य) चान्द्रस्य वा अन्तः। …सौर वा चांद्र मासका अंत। महीनेका अवसान। अमावस। …संक्रान्ति (सूर्यका एक राशिसे दूसरीमें जाना).

…साहार, (त्रि॰) मासे आहरति। एक महीने केवल …एक बार खानेवाला

…सिक, (त्रि॰) मासे भव+ठञ्। मासमव। महीनेका। …[illegible] लिये महीनेकी तिथि। हरएक महीनेमें अमावस्याके …दिन करनेलायक श्राद्ध (न॰)

…मीन, (त्रि॰) मास+खञ्+इन्। एक महीनेका पुरुष। …महीनेवाला.

…सोपवासिनी, (स्त्री॰) मासे उपवसति। पूरे एक महीना …का उपवास करनेवाली स्त्री.

…स, (अव्य॰) निरन्तर। हमेशा। सदैव। [illegible] …रम्.

…र्, पर स्मै॰। अक॰ [illegible] सेट्। [illegible] …[illegible].

माहाकुल, (त्रि॰) महाकुले भव+अञ्। महाकुलोद्भव। बड़े कुलमें उपजा। "खञ्"। "महाकुलीन" । यही अर्थ.

माहात्म्य, (न॰) महात्मनो भाव+ष्यञ्। बड़ापन। महिमा। महत्त्व.

माहिष, (न॰) महिष्या इदम्+अञ्। महिषी (भैंस) भैंस-का दूध आदि "महिष्या इदम्"+अञ्। उसका घी आदि (त्रि॰).

माहिष्मती, (स्त्री॰) एक नगरी। हैहय राजाओंकी पैतृक राजधानी

माहिष्य, (पु॰) महिष्या भव+ष्यञ्। क्षत्रियसे वैश्य जातिकी कन्यामें उत्पन्न पिता-पुत्रका संकर। [illegible]

माहेन्द्र, (पु॰) महेन्द्रस्य अयं+अण्। इन्द्रका। ज्योतिषमें महेन्द्रसम्बन्धी एक समय (मुहूर्तविशेष)। पूर्व दिशा। इन्द्रकी स्त्री (शची)। और गौ (स्त्री॰) ङीप्

माहेय, (पु॰) मह्याः अपत्यम्। मही+ढक्। पृथिवीकी सन्तान। मंगल ग्रह। और [illegible] असुर (दैत्य)। गौ (स्त्री॰) ङीप्.

माहेश्वर, (त्रि॰) महेश्वरम् अधिकृत्य [illegible]+ अण्। महेश्वर (शिवजी)के [illegible]। [illegible] (स्त्री ङीप्) "[illegible] अण्" [illegible]। एक प्रकारकी [illegible]। प्रत्येक दुर्गा (देवी) (स्त्री॰) ङीप्.

मि, [illegible]। [illegible] उभ॰ [illegible] अनिट्। [illegible] [illegible]। [illegible].

मिच्छ, [illegible]। [illegible] पर॰ सक॰ सेट्। [illegible]। अभिघटीर्.

मित, (त्रि॰) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible].

मितगम, (पु॰) मितं (परिमितं) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] (न॰).

मितद्रु, (पु॰) [illegible] [illegible]। [illegible]।

मितध्वज, (पु॰) [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] (पु॰).

मितमुख, (त्रि॰) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible].

मितम्पचिक, (त्रि॰) [illegible]। [illegible] (सर्वं) [illegible]। [illegible].

मिथि, (स्त्री॰) [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]

मिथ, (स॰) [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible]

मित्रघ्न, (त्रि०) मित्रं हन्ति। मित्रको मारनेवाला। मित्रकी हत्या करनेवाला.

मित्रयु, (पु०) मित्रं याति। या+कु। मित्रवत्सल। मित्रका पियारा.

मित्रलाभ, (पु०) मित्राणां लाभः। मित्रोंकी प्राप्ति (मिलाप).

मिथ्, वध-मारना। मिलना। सक० भ्वा० उभ० सेट्। मेथति-ते.

मिथस्, (अव्य०) मिथ्+असुन्। रहसि। अकेले। एकान्तमें। आपसमें.

मिथिला, (स्त्री०) मिथ्+किलच्। अपने नामसे प्रसिद्ध राजधानी तिरहुत। जनक राजाकी पुरी.

मिथुन, (न०) मिथ्+उनन्। स्त्री और पुरुष (जोडा-मर्द और औरत)। मेषसे तीसरी राशि। विषयके लिये मिलना। जोडा.

मिथ्या, (अव्य०) मिथ्+क्यप्। अयथार्थ। जो ठीक नहीं। असत्य। झूठ.

मिथ्यादृष्टि, (स्त्री०) मिथ्या-सफलस्यापि अफलत्वेन दृष्टिः। फलवाले पदार्थको भी फलरहित देखना। नास्तिकता। नास्तिकपना। फलवाले भी वेदमें कहेहुए कर्मको फलरहित जानना। भूल.

मिथ्यानिरसन, (न०) मिथ्या निरस्यतेऽनेन। निर्+अस्। फेंकना। करणे ल्युट्। शपथ। कसमसे। कसम खाकर इन्कार करना.

मिथ्याभियोग, (पु०) मिथ्याभूतेन (असत्येन) अभियोगः (राजसन्निधौ वेदनम्)। राजाके पास झूठा सवाल देना। मिथ्यावाद। झूठी नालिश। अभि+युज्+घञ्। "इसने मेरा सौ रुपया देना है" इस प्रकार झूठ बनाकर राजाके पास सवाल करना.

मिथ्याभिशंसन, (न०) मिथ्याभूतेन (असत्येन) अभिशंसनम् (अपवादः)। झूठा कलंक। "तूने मेरा सोना चुराया" ये दोष लगाना.

मिथ्याभिशाप, (पु०) मिथ्याभूतेन (असत्येन) अभिशापः (अपवादः)। मिथ्यापवाद। झूठा कलंक (तोहमत).

मिथ्यामति, (स्त्री०) मिथ्याभूतस्य मतिः। मन्+क्तिन्। झूठा निश्चय। भ्रान्ति। भ्रम। भूल। औरमें औरका जानना.

मिद्, स्नेह-चिकना करना। भ्वा० आ० द्युतादि पर० सेट्। मेदते। अमिदत्.

मिद्, स्नेहन। चु० उभ० सक० सेट्। मेदयति। अमीमिदत्.

मिन्द्, स्नेह-चीकना। भ्वा० पर० सक० सेट्। मिन्दति। अमिन्दीत्.

मिल्, श्लेषण-मिलना और संग (जुडना) करना। तु० प० अक० सेट्। मिलति.

मिश्र-स, योजन-मिलाना। चुरा० उभ० सेट्। मिश्र(स)यति-ते.

मिश्र, (त्रि०) मिश्र+अच्। संयुत। मिला। (अगला) पदमें आयाहुआ श्रेष्ठ (पूज्य) अर्थमें होता है। जैसे "आर्यमिश्राः"। एक प्रकारका हाथी। ज्योतिषमें कृत्तिका (तारा) का गण (समूह) (पु०)। मिश्रित (त्रि०).

मिश्रकावण, (न०) मिश्रकनामकं वनं। [illegible] और फल होता है। इन्द्रोद्यान। इन्द्रका वन.

मिश्रव्यवहार, (पु०) लीलावतीमें [illegible] (एक प्रकारकी गिनती).

मिष्, सेचन-सींचना। भ्वा० पर० सेट्। मेषति। "कला वेद".

मिष्, पराभिभवेच्छा-दूसरेको दबानेकी इच्छा करना। तु० प० सक० सेट्। मिषति। अमेषीत्.

मिष, (न०) मिष्+क। छल। बहाना। स्पर्धा (पु०).

मिषिका, (स्त्री०) मिषी+कन्। जटामांसी। एक प्रकारकी औषध.

मिष्ट, (त्रि०) मिष्+क्त। सिक्त। सींचागया है। [illegible] कियाहुआ। मधुररस (मीठा रस) (पु०)। [illegible] (त्रि०).

मिह्, सेचन-सींचना। भ्वा० पर० सक० अनिट्। मेहति। अमिक्षत्.

मिहिका, (स्त्री०) मिह्+क्वुन्। [illegible] पाला। बरफ.

मिहिर, (पु०) मिह्+किरच्। सूर्य। आकाश [illegible] बादल (मेघ)। वायु (हवा)। चन्द्र (चांद)। [illegible] दिल्लीकी सभाका एक पण्डित.

मी, वध-मारना। दिवा० आ० सक० अनिट्। मीयते।

मी, मारना। क्र्या० उभ० सक० अनिट्। मीनाति। अमासीत्। अमास्त। मीनः.

मीढ, (त्रि०) मिह्+क्त। मूत्रित। मूताहुआ.

मीढुष्टम, (पु०) मीढुष्+तमप् शि०। शिव। [illegible]

मीढ्वस्, (पु०) मिह्+क्वसु। शि०। शिव। [illegible]

मीन, (पु०) मी+नक्। मत्स्य। मछली (मच्छी)। १२ वीं राशी। भगवान्का अवतार। [illegible]

मीनकेतन, (पु०) मीनः केतनो यस्य। [illegible] निशान है। कंदर्प। कामदेव। "मीनकेतन" [illegible]

मीनाण्डी, (स्त्री०) मीनस्य अण्ड [illegible] मीनके अण्डा। [illegible] समान है। खाँड। चीनी। मिश्री। [illegible]

...ई, शब्दकरना। अक० जाना। सक० म्वा० पर सेट्। मीमति.

मीमांसक, (पु०) मीमांसां वेत्ति-अधीते वा वुन्। मीमांसाको जानता वा पढता है। मीमांसाशास्त्रको जाननेहारा और उसको पढनेहारा। "मान्+स्वार्थे सन् ण्वुल्"। परीक्षक। सिद्धान्तकारक। फैसला करनेवाला। असल करनेवाला.

मीमांसा, (स्त्री०) मान्+स्वार्थे सन्-अ। विचारसे तत्त्वका निर्णय (फैसला) करना। उसे प्रतिपादन करनेहारा एक प्रकारका ग्रंथ। इस ग्रन्थके दो भाग हैं (एक भाग धर्मको प्रतिपादन करता है वह जैमिनिमुनिका रचाहुआ है और पूर्वमीमांसा नामसे प्रसिद्ध है। एवं दूसरा भाग ब्रह्मविषयको निरूपण करता है और वेदान्त नामसे प्रसिद्ध है यह व्यासदेवने वर्णन किया है)। विचार। इत्यादि। परीक्षा.

मील्, निमेष-मीटना-बंदकरना (जैसा कि आँखका)। भ्वा० पर० अक० सेट्। मीलति। अमीलीत्.

मीलन, (न०) मील्+ल्युट्। मुद्रण। बंदकरना। मीटना। सिकोडना.

मीलित, (त्रि०) मील्+क्त। अमुद्रित। न खिलाहुआ। सिकुडाहुआ.

मीव्, मोटाहोना। मुटीभवन। भ्वा० पर० अक० सेट्। मीवति। अमीवीत्.

मुर, (पु०) मोक्षयति शोकात्। क्वचित् मुच्-उ। महेश। महादेव.

मुक, (पु०) मुच्+उ-पृ० "च" को "क"। मोक्ष। छुटकारा। उत्सर्ग। त्याग.

मुकुट, (पु०) मकि+उटन्-पृ०। शिरोभूषण। सिरका जेवर। ताज.

मुकुन्द, (पु०) मुकुं ददाति। दा+क। पृ०। मुम्। मोक्ष देता है। विष्णु.

मुकुम्, (अव्य०) निर्वाण मोक्ष। निर्विकल्पक समाधि.

मुकुर, (पु०) मकि+ उरच्। पृ०। दर्पण। शीशा। बकुल वृक्ष। कुलालदण्ड (कुम्हारका डण्डा)। मल्लिकावृक्ष। मालतीका दरख्त। कली.

मुकुल, (पु० न०) मकि+उलच्-पृ०। फोलैकी विरीदेई कली। कली। शरीर (जिस्म)। आत्मा (रूह).

मुकुलित, (त्रि०) मुकुल+इतच्। जिसमें कलियें निकल आई हों। कलियोंवाला। खिला हुआ। आधाबंद (नेत्र).

मुक्त, (त्रि०) मुच्+क्त। त्यक्त (छोडाहुआ)। मुक्तमोक्ष। जिसका छुटकारा हो गया। फैंका-हुआ (तुल फेंकना).

मुक्तकञ्चुक, (पु०) मुक्तं कञ्चुकं येन। वह सर्प जिसने अपनी कुंज उतार डालीहो। छुटे अवयवसे (छुटे) कच्च (त्रि०).

मुक्तकण्ठ, (त्रि०) मुक्तः कण्ठः येन। खुले गलेवाला। ऊंची आवाज (चिल्हाहट)। ठं (अव्य०) चिल्लाकर (रोना) कुंचे.

मुक्तकर, (त्रि०) मुक्तः करः येन। खुले हाथवाला। उदार। खुला दिल। दानी.

मुक्तकेश, (त्रि०) मुक्ताः केशाः येन। खुले बालोंवाला.

मुक्तलज्ज, (त्रि०) मुक्ता लज्जा येन। निर्लज्ज। लज्जाको छोडनेवाला.

मुक्तसङ्ग, (त्रि०) मुक्तः सङ्गो विषयासक्तिः येन। जिसने सम्पूर्ण विषयोंका संग छोडदिया है। परिव्राजक। संन्यासी (पु०).

मुक्तहस्त, (त्रि०) मुक्तः (दानाय प्रसारित, न बद्ध इति यावत्) हस्तो येन। जिसने देनेके लिये हाथको फैला दिया है अर्थात् रोका नहीं। बहुदानशील। बहुत देनेवाला। उदार.

मुक्ता, (स्त्री०) मुच्+क्त। सीपीमेंसे निकला एक प्रकारका रत्न। मोती.

मुक्तात्मन्, (त्रि०) मुक्तः आत्मा यस्य। (दुःखजालसे) छुटे हुए आत्मावाला। मोक्षको प्राप्त हुआ.

मुक्तामणि, (स्त्री०) मुक्तां मणुते। मुक्ता+मण्+क्विप्। ए० द०। शुक्ति (सीपी).

मुक्ताफल, (न०) मुक्ता फलं इव। मौक्तिक। मोती। लवलीफल। सीताफल। कर्पूर (कपूर)। बेपरवाहका बनायाहुआ अधिप्रसाद संस्कारोन.

मुक्तावली, (स्त्री०) मुक्तानां आवली (हारभेदः)। मोतीयोंका हार, न्यायशास्त्रका मुख्य ग्रन्थ.

मुक्तास्फोट, (पु० स्त्री०) मुक्तानां (सिपीकेहि) स्फोटः। मुक्ताके स्फोट। मोतीके लिये फूटना। शुक्ति। सीपी.

मुक्ति, (स्त्री०) मुच्+क्तिन्। मोक्ष। छुटना। संसारके बन्धनसे रहित होना। इसके भेदमें "अत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः (ऐसा दुःखका छूटना कि फिर कभी न हो)"। न दुःखस्पर्शाभावः (उसके निश्चयरूप अर्थात् कछुवा दुःख)। अन्यथा देह और इन्द्रियोंके बंधनसे छुटा होना.

मुख, (न०) खन्+अच्। धातुके पहिले "मुट्" होता है। "प्रयासाः यस्य धर्मा स्कारमुखेन मुखम्"। शरीरका अवयवविशेष (मुँ)। मकानमें जाने आनेका दरवाजा (मु)। घरके निकलनेका अर्थ (रस्ता)। आरम्भ। उपाय। नाटकमें एक प्रकारकी सन्धि (जिससे बीजकी उत्पत्ति होती है)। वचन (बोलना)। प्रथम। शब्द। नाटक। और वेद.

मुखज, (पु०) मुखसे उत्पन्न होने वाले। मुख+ज। ब्राह्मण उत्पन्न हुआ है। विप्र। ब्राह्मण। "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" श्रुतिः.

मुखनिरीक्षक, (त्रि॰) मुखं (इतरवदनं) निरीक्षते+ ण्वल् । अलस । आलसी । मुख । वह "यदि दूसरा अपना काम करेगा तो मैं नहिं करूंगा" इस आशयसे दूसरेके मुखको देखताहुआ अपने काममें नहि लगता.

मुखपूरण, (न॰) मुखं पूरयति । पूर+ल्यु । गण्डूषमितजल । चुल्लूभर पानी । मुखको भरदेता है.

मुखभूषण, (न॰) मुखं भूषयति । भूष्+ल्यु । मुखको सजादेता है । ताम्बूल । पान.

मुखर, (त्रि॰) मुखं (मुखव्यापारं-कथनं) राति (आदत्ते-करोति) रा+क । जो कह डालता है । अप्रियवादी । कडवा बोलनेवाला । अग्रवादी । आगे बोलनेवाला । मंडल । कौआ । और शंख.

मुखरित, (त्रि॰) मुखर इव आचरति । मुखर+क्विप्+क्त । ध्वन्यमान । शब्द करनेवाला.

मुखलाङ्गल, (पु॰) मुखं लाङ्गलं इव भूमिविदारकं यस्य । जिसका मुख हलकी नाईं पृथिवीको फाडनेवाला है । शूकर । सूअर.

मुखप्रिय, (पु॰) ६ त॰ । दाडिमवृक्ष । अनारका दरत (इसका फल मुखको पियारा लगता है) । मुखका पियारा (त्रि॰).

मुखवास, (पु॰) मुखं वासयति (सुरभीकरोति)+अण् । मुखको सुगन्धिवाला करता है । गंधतृण । कपूर । काफूर.

मुखवासन, (पु॰) मुखं वासयति । वासि+ल्यु । मुखको सुगंधवाला (खुशबूदार) करता है । अच्छा गंध । उगन्धवाला (त्रि॰).

मुखव्यादान, (पु॰) वि+आ+दा+ल्युट् । ६ त॰ । मुखप्रसारण । मुख खोलना-फैलाना.

मुखशोधन, (न॰) मुखं शोधयति । शुध्+णिच्+ल्यु । मुखको शुद्ध करदेता है । दालचीनी । कटुरस (कौडा रस) (पु॰).

मुखस्राव, (पु॰) स्रवति । स्रु+ण । ६ त॰ । मुखका बहना । लारवाली मुखसे बहाहुआ पानी.

मुखाग्नि, (पु॰) मुखं एव अग्निरूपं [illegible] दाहकत्वात् यस्य । आग देकर जला देनेसे मुखही जिसका आग है । विप्र । ब्राह्मण । दावानल । जंगलकी आग.

मुख्य, (त्रि॰) मुखे (आदौ) भव+यत् । आदिमें हुआ । प्रधानतम । अगुआ । और श्रेष्ठ (बहुत अच्छा).

मुग्ध, (त्रि॰) मुह्+क्त । मूढ । मूर्ख । बेवकूफ । मोहित । [illegible] । सुन्दर । एक [illegible] (स्त्री॰).

मुच, [illegible] । तु॰ उभ॰ सक॰ अनिट् । मुञ्चति-ते । [illegible].

मुचुकुन्द, (पु॰) मुच्+कु: मुचुः कुन्द इव । [illegible] फूलोंवाला वृक्ष । एक राजा.

मुज्, शब्द करना-अक॰ । साफ करना-सक॰ । [illegible] पक्षे भ्वा॰ पर॰ सेट् । मोजयति-ते । [illegible] भी इसी अर्थमें" मुञ्जयति-ते । मुञ्जति । [illegible] अमुञ्जीत्.

मुञ्ज, (पु॰) मुजि+अच् । मूंज । एक [illegible] जिससे रस्सी बनाई जाती है.

मुट्, केशादिच्छेद । बालोंका काटना और मर्द [illegible] भ्वा॰ सक॰ सेट्-इदित् । मुण्डति । अमुण्डीत्.

मुण्ड, (पु॰ न॰) मुडि+कर्मणि घञ् । [illegible] मस्था । सिर । एक दैत्य । नापित (नाई) । [illegible] (शाखा और पत्रविहीन) वृक्ष (पु॰) । [illegible] (त्रि॰) (मूंडाहुआ) । महाश्रावणी । और [illegible] (स्त्री॰) टाप्.

मुण्डक, (पु॰) मुण्डयति । मुडि+णिच्+ण्वुल् । [illegible] नाई.

मुण्डन, (न॰) मुडि+भावे ल्युट् । केशों [illegible] कटवाना । वपन । मुंडवाना । मुंडना.

मुण्डफल, (पु॰) मुण्डं शिर इव फलं यस्य [illegible] फल शिरकीनाई हो । नारियेल । नारिकेल । [illegible]

मुण्डिन्, (पु॰) मुण्डयति । मुडि+णिच्+णिनि [illegible] वाला । नापित । नाई । नौआ.

मुद्, हर्ष (खुशी करना) । भ्वा॰ आ॰ अक॰ [illegible] दते । अमोदिष्ट.

मुद्-दा, (स्त्री॰) मुद्+क्विप् वा टाप् । [illegible] आमसाग औषध.

मुदिर, (पु॰) मुद्+किरच् । मेघ (बादल) [illegible] (कामी) (त्रि॰).

मुद्ग, (पु॰) मुद्+गक्-भेद् । मूंग । एक [illegible]

मुद्गर, (न॰) मुदं गिरति । गॄ+अच् । [illegible] कली । मोहली । मुदगर । फूलोंका वृक्ष [illegible] कन्द".

मुद्गल, (न॰) मुदं गिलति । गॄ+अच्-" [illegible] होता है । बनका तृण (घास) । और [illegible] [illegible] घास । [illegible]

मुद्रा, (स्त्री॰) मुद्+रक् । [illegible] । [illegible] । मोहर (अंगूठी) । [illegible] मुद्री । एक प्रकारका [illegible] । [illegible] [illegible]

मुद्रायन्त्र, (न॰) [illegible]

मुद्राराक्षस, (न०) मुद्रया प्राप्तः राक्षसः यस्मिन्-तादृशं नाटकं । सर्वदोपचारात्तामासः । विशाखदत्तका रचाहुआ एक नाटक.

मुद्रालिपि, (स्त्री०) मुद्रया लिपिः । पांच प्रकारके लिखा-वटोंमेंसे एक । छापेके अक्षर.

मुद्रिका, (स्त्री०) मुद्रेव । मुद्रा वा मुद्रा या कन् । सोने वा चांदीका बनाहुआ अंगुलिमें स्थित अंकोंके छापन करने-वाला एक पदार्थ । मोहर । रुपया.

मुद्रित, (त्रि०) मुद्रा जाता अस्य-इतच् । अप्रकाशित । छिपाहुआ । अंकित । छापाहुआ.

मुधा, (अव्य०) मिथ्या । झूठ । बेफायदा । वृथा.

मुनि, (पु०) मन्+इन्-पृ० उत्वम् । ऋषि । पवित्रपुरुष । संत । भक्त । यति । अगस्त्य । व्यास । बुद्ध । पाणिनि । " जिसका मन दुःखमें व्याकुल नहीं होता, सुखमें जिस-की इच्छा नहीं, वासना, भय, और क्रोधसे रहित, स्थिर-बुद्धिवाला मुनि होता है " । स्थिरचित्त और विषयकी वास-नासे रहित जन (वे मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत आदि हैं) । सात संख्या । सातकी गिनती.

मुनित्रयम्, (न०) मुनीनां त्रयम् । तीन मुनि (पाणिनि-कात्यायन-पतञ्जलि.

मुनिपुङ्गव, (पु०) (मुनिषु पुङ्गवः=श्रेष्ठः) मुनिओंमें श्रेष्ठ प्रसिद्ध बालक मुनि.

मुनिभेषज, (न०) मुनीनां भेषजं इव । मुनिओंकी मानो दवाई है । हरीतकी (हरीड) । अगस्त्य मुनि । व्रत मे खाना.

मुनिवृत्ति, (त्रि०) मुनीनां वृत्तिः यस्य । मुनिओंकी जी-विका । मुनिकी भान्ति जीवनका निर्वाह करनेवाला.

मुनीन्द्र, (पु०) मुनिः इन्द्र इव । मुनि मानो इन्द्र है । बुद्धदेव । ७ त० । ऋषिश्रेष्ठ । मुनिओंमें बहुत अच्छा.

मुन्था, (स्त्री०) ताजकमें प्रसिद्ध जन्मके वर्षसे लेकर एक १ वर्ष । लग्नसे एक १ राशिका अन्तर (फरक) इसी अर्थमें "मुथहा".

मुन्यन्न, (न०) मुनियोग्यं अन्नम् । मुनिओंके लायक अन्न । नीवार कन्दादि । स्वांकके चावल । कन्द आदि.

मुमुक्षु, (त्रि०) मोक्तुं इच्छुः । मुच्+सन्+उ । मोक्षकी इच्छावाला । जो संसारसे छूटना चाहता है । यति (पु०).

मुमुचान, (पु०) मुच्+कान-पृ० दीर्घः । मेघ (बादल).

मुमूर्षु, (त्रि०) मर्तुं इच्छुः । मृ+सन्+उ । आसन्नमरण । जो मरनेकी इच्छासे भरा है । जिसकी मौत नजदीक है.

मुर, वेष्टन । घेरलेना । तु० पर० सक० सेट् । मुरति । अ-मोरीत्.

मुर, (पु०) मुर+क । एक दैत्य । वेष्टन । घेरना । एक गन्धद्रव्य । स्त्रियां टाप्.

मुरज, (पु०) मुरात् (वेष्टनात्) जायते । जन्+ड । घेरलेसे उपजता है । मृदंग । एक प्रकारका बाजा । कुबेरकी स्त्री । (स्त्रियां टाप्).

मुररिपु, (पु०) ६ त० । मुरदैत्यका शत्रु । विष्णु । "मुरारी" "मुरमथन".

मुरला, (स्त्री०) मुरं लाति । ला+क । नर्मदा नदी । एक-बाजा । मुरली । बंसरी.

मुरलीधर, (पु०) मुरलीं धरति । धृ+अच् । श्रीकृष्ण । "मुरलीवादन".

मुर्च्छ, मोहमूर्च्छित होना । बेसुधहोना । वृद्धि-बढना । मू-र्च्छति । अमूर्च्छीत् । भावे क्त । मूर्त । मूर्च्छितम्,

मुर्मुर, (पु०) मुर्+क । पृ० द्वित्वम् । तुषाग्नि । तुस (तोह)-की आग । कंदर्प । कामदेव । और सूर्यका घोडा.

मुशा(स)ली, (स्त्री०) मुस-मुस् वा अलक्-पृ० "र" को "श" ङीप् । तालमूली, मुसलीदवाई । गृहगोधिका । छिपकली (नित्) । बलराम (पु०).

मुष्, (स्तेय) (स्टना) । क्र्या० पर० द्विक० सेट् । मु-ष्णाति । अमोषीत्.

मुष-(स-शा-)ल, (पु०) मुष्+कलन् । पृ० । षस्य वा सः (शः) वा । अयोग । जिसके आगे लोहा लगाहुआ होता है ऐसा धान आदि कूटनेका साधन । एक पदार्थ । मोहल । मुंगली.

मुषित, (त्रि०) मुष्+क्त । अपहृतद्रव्यजन । ठुगया हुआ । वह जन कि जिसकी चोरी होगई.

मुष्क, (पु०) मुष्+कक् । मुष्कका चिह्नविशेष । अंडकोष । पलाश । घण्टापाटलनामी वृक्ष । तस्कर । चोर । मोटा.

मुष्कशून्य, (पु०) ३ त० । वृषण (पताल) से रहित । राजाओंके अंतःपुर (जनानखाने)का रखवाला । खोजा । नपुंसक.

मुष्टि, (पु० स्त्री०) मुष्+क्तिच् । बद्धपाणि । बंधहुआ हाथ । मुट्ठी । पल (चार तोले)का परिमाण (मान) क्तिन् । मुष्टिका (स्त्री०).

मुष्टामुष्टि, (अव्य०) मिथो मुष्टिप्रहारकरणम् । आपसमें मुट्ठीओंसे लडना.

मुष्टिक, (पु०) मुष्टया चरति । ठैक+क । कंस राजाका एक मल्ल (पहिलवान) "मुष्टिमोदनं प्रयोजनं अस्य" ठन् । मुट्ठना जिसका मतलब है । सर्णकार । सुनार.

मुष्टिकान्तक, (पु०) ६ त० । बलदेव (इसका मुष्टिक-दैत्यको मारनेसे ऐसा नाम है).

मुष्टिन्धय, (पु०) मुष्टिं धयति । धे+खश्-मुम् च । मुट्ठी-को पीता है । बालक । बच्चा.

मुष्टिबन्ध, (पु०) मुष्टेर्बन्धो यत्र । जहां मुट्ठी बांधी जाती है । संग्रह । जमा करना । ६ त० । " मुष्टिबंधन " मुट्ठिका बांधना.

मुस-(प-शा)-लिन्, (पु०) मुस (ष) (श) ल+अस्त्यर्थे इनि । बलदेव । बलराम.

मुस्त, (पु०) (स्त्री०) मुस्त+अच् । स्त्रीत्वे टाप् । मुस्तक । मोथा । तृणमूलविशेष.

मुह्, मोह-वैचित्त्य । बेसुध होना । दि० उभ० अक० सेट् । मुह्यति । अमुहत् । मोहिता । मोग्धा । मोढा.

मुहिर, (पु०) मुह्+किरच् । कामदेव । मूर्ख । बेवकूफ.

मुहुस्, (अव्य०) पौन:पुन्य । बारबार.

मुहूर्त, (पु० न०) हुर्च्छ्+क्त-धातुको "मुट्" का आगम होता है । बारह क्षणके मानका समय । दिनका पंद्रहवां भाग । किञ्चिन्न्यूनाधिक घटिकाद्वयरूप काल । थोडासा कम वा जियादा दोघडीका समय । लहजा । थोडासा समय । [illegible] निवडका वक्त । ज्योतिषी (पु०).

मू, बंध-बांधना । भ्वा० आ० सक० सेट् । मवते । अमविष्ट.

मूक, (पु०) मू+कक् । मत्स्य । मछली । एक दैत्य । दीन । और बोलनेकी शक्तिसे रहित । गूंगा (त्रि०).

मूढ, (त्रि०) मुह्+क्त । मूर्ख । बाल । जड । बेवकूफ । [illegible].

मूर्च्छना, (स्त्री०) मूर्च्छ+युच् । "स्वर (आवाज) । [illegible] मूर्च्छित हुआ रागपनको प्राप्त होता है, [illegible] मूर्च्छना कहीजाती है" । [illegible] एक [illegible] । बेसुध होना.

मूर्च्छा, (स्त्री०) मूर्च्छ+अङ् । मोह । बेहोशी । [illegible] इन्द्रियोंके व्यापारसे रहित होनेकी दशा । [illegible].

मूर्च्छाल, (त्रि०) मूर्च्छा+अस्त्यर्थे लच् । मूर्च्छाविशिष्ट । [illegible] । बेहोश.

मूर्च्छित, (त्रि०) मूर्च्छा जाता अस्य+इतच् । मूर्च्छावाला । [illegible].

मूर्त, (त्रि०) मूर्च्छ+क्त । मूर्च्छित । मूर्च्छावाला । [illegible] "मूर्ति." [illegible] मूर्ति- [illegible] अग्नि, [illegible]

मूर्ति, (स्त्री०) [illegible] । देह । शरीर । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । प्रतिमा । मूरत । [illegible].

मूर्तिमत्, (पु०) मूर्ति [illegible] । मूर्तिवाला । [illegible] । देह । शरीर । [illegible] ([illegible]) । [illegible] (त्रि०).

मूर्ध (पु०) [illegible] । [illegible] (त्रि०).

मूर्धाभिषिक्त, (पु०) [illegible].

मूर्धन्य, (त्रि०) मूर्ध्नि भवः+यत् । शिरसे जात । माथेमें उपजा । "ऋ-ट, ठ, ड, ढ, ण [illegible] वर्ण (पु०).

मूर्धन्, (पु०) मूर्ध+कनिन्-पुंस्त्व । मस्तक । [illegible]

मूर्धवेष्टन, (न०) मूर्धा वेष्टते अनेन+ल्युट् । [illegible] द्वारा (शिर) लपेटा जाता है । पगडी । [illegible]

मूर्धाभिषिक्त, (पु०) मूर्ध्नि अभिषिक्त । [illegible] अभिषेक कियाहुआ । राजतिलक [illegible] राजा । वर्णसंकर । एकजाति । मन्त्री.

मूर्वा, (स्त्री०) मूर्व+अच् । [illegible] (बेल).

मूल्, प्रतिष्ठा । कायम होना । स्थिर होना । [illegible] भ्वा० उभ० अक० सेट् । मूलति-ते । [illegible]

मूल्, रोपण । लगाना । चुरा० उभ० सक० [illegible] मति ते.

मूल, (न०) मूल+क । शिफा (जड) । आद्य ([illegible]) निकुंज (पेडोंसे ढकाहुआ स्थान) । [illegible] मूलधन (पूंजी) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] पास । पिप्पलीमूल । टीका आदिसे [illegible] ग्रन्थ । उन्नीसवां नक्षत्र (त्रि०).

मूलक, (न०) मूल+संज्ञायां कन् । एक [illegible] (जड) । मूली (इसका मापनी [illegible]

मूलकर्मन्, (न०) मूलेन (मन्त्र [illegible]) [illegible] करणादि कर्म । मन्त्र और औषध (जडी) [illegible] करनेका काम । पहिला काम

मूलकृच्छ्र, (न०) मूलेन ([illegible]) [illegible] इसकी जडको काटनेमें मुशकिल है । [illegible] लगाला (त्रि०).

मूलप्रकृति, (स्त्री०) मूलभूता (प्रधान) [illegible] सबके पहिली प्रकृति । [illegible] "[illegible] समान [illegible] प्राप्तहुआ, सत्व, रज, [illegible]

मूलविभुज, (पु०) [illegible] है । रथ । गाडी । छकडा

मूलस्थान, (न०) [illegible] जड । [illegible]

मूलहर, (त्रि०) [illegible]

मूलाधार, (पु०) [illegible] (जडमूली) [illegible]

मूलिक, (पु०) [illegible] "[illegible]" [illegible]

मूलेश्वर (पु०) [illegible] (शहर)

.., (न०) मूल्याय (पठादिकारणतन्त्वादये) इदं+यत् । ; हेनेके लिये दियागया धन । मोल । कीमत । मुख.

लुण्ठन । घटना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मूषति । मूषीत.

:, (पु०) (स्त्री०) मूष्+ण्वुल् । स्त्रीत्वे टाप् । अत नम् । मूसा । चूआ । उन्दुर.

क, (पु०) मूष्+किकन् । उन्दुर । मूसा । चूआ.

, (स्त्री०) मूष+ङीष् । सोने आदिके पिघलानेका "त्र । कुठाली.

मृति-मरना । तु० लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लुङ्, ाशीलिङ्में आत्मनेपद और लकारोंमें परस्मैपद होता ^ । अक० अनिट् । म्रियते । अमृत । ममार । मर्तासि । मृषीष्ट.

ण्डु, (पु०) मुनिविशेष । एक मुनिका नाम.

., अन्वेषण । तलाश करना । और मांगना । चु० आ० सक० सेट् । मृगयते । अममृगत.

, (पु०) मृग+क । पशुमात्र । हरिण । एक हाथी । अश्विनीसे पाँचवां नक्षत्र (तारा) । "मृग्+भावे अच्" अन्वेषण (ढूंढना-तलाश करना) । मांगना । और एक यज्ञ । कस्तूरी । और मकर राशि (पु०).

गगामिनी, (स्त्री०) मृग [illegible] गच्छति । गम्+णिनि । मृगतुल्यगमनवती । हरिणके समान जानेहारी.

जीवन, (पु०) मृगैः (तन्मांसादिभिः) जीवति । जो पशुओंके मांस आदिसे जीताहै । व्याघ्र । शिकारी । जीव्+ल्यु.

ृणा, (स्त्री०) मृग्+युच्+टाप् । नष्टहुए द्रव्यका खो- जना । तलाश.

ातृष्णा, (स्त्री०) मृगाणां तृष्णेव (तृष्णाहेतुत्वात्) । मानो हरिणोंकी लालच है (लालचका कारण होनेसे) । सूर्यकी किरणोंमें जलभ्रान्ति (पानीका खयाल होना) । जलरहित देशमें दूरसे सूर्यकी किरणोंको देख तृष्णासे पीडितहुए मृगजलकी भ्रान्तिसे बार २ घूमते हैं परन्तु पानी नहि मिलता । निर्जल देशमें रेतपर गिरीहुई किरणमें पानीका खयाल.

गदंशक, (पु०) मृगं दशति । दंश्+ण्वुल् । पशुको डसता है । कुकुर । कुत्ता.

गधूर्तक, (पु०) मृगेषु धूर्तकः । पशुओंमें धूर्त (स- यरा) । शृगाल । सियार । गीदड़.

गनाभि, (पु०) मृगस्य नाभिः (नाभिजन्यः) । हरिण- की नाभि (धुन्नीसे उत्पन्न हुआ) । कस्तूरी । एक प्रकार- का हरिण.

मृगनेत्रा, (स्त्री०) मृगः (मृगशिरोनक्षत्रं) नेत्रं इव (प्रकाशकं) यत्र (रात्रिषु) । जिन रात्रिओंमें मृग- शिर तारा आंखकी तरह प्रकाश करता है । मार्गशिरकी रात्रियें । हरिणके समान चपल नेत्रोंवाली स्त्री (औरत).

मृगपति, (पु०) ६ त० । मृगाणां (पशूनां) पतिः । पशुओंका मालिक । सिंह (शेर) । "मृगेन्द्र" आदि इसी अर्थमें है.

मृगबन्धनी, (स्त्री०) मृगो बध्यते अनया । बन्ध+ल्युट्- ङीप् । जिससे पशु बांधलिया जाता है । पशुओंको बांध- नेका जाल.

मृगमद, (पु०) मृगस्य मदः (गर्वः) यस्मात् । हरिणको जिससे अभिमान होता है । कस्तूरी.

मृगया, (स्त्री०) मृगं याति अनया । या+क । जिससे पशुपर झपटता है । शिकार । अहेर । आखेटक.

मृगयु, (पु०) मृग+अस्ति अर्थे यु । हरिणवाला । ब्रह्मा (हरिणके स्वरूपमें इसका सिर काटागया था) । शृगाल (गीदड) आदि एक प्रकारका व्यापार । शिकार । व्याध । शिकारी.

मृगराज, (पु०) मृगाणां (पशूनां) राजा । टच् । पशु- ओंका राजा । सिंह (शेर) "मृगेण राजते" अच् । हरिणसे शोभता है । चन्द्रमा । चांद । "मृगाङ्क" "शशाङ्क".

मृगलक्ष्मण, (पु०) मृगो लक्षणं यस्य । हरिण जिसका लक्षण (निशान) है । चन्द्र । चांद । "मृगाङ्क" आदि.

मृगवधाजीव, (पु०) मृगवधेन आजीवति । जीव्+अच् । पशुओंको मारनेसे जिसका जीवन होता है । व्याध । शिकारी.

मृगवाहन, (पु०) मृगो वाहनं यस्य । हरिण जिसकी सवारी है । वायु । हवा । "धावत् हरिणपृष्ठस्थ" इति ध्यानम्.

मृगव्यथ, (न०) मृगान् व्यथते अत्र । जिसमें पशुओंको पीडा पहुंचती है । मृगया । शिकार । अहेर.

मृगशाव, (पु०) मृगस्य शावः=पोतकः । मृग (हरिण)- का बच्चा.

मृगशिरस्, (न० पु०) मृगस्य [illegible] शिरः अस्य । जिसका शिर हरिणके समान है । अश्विनीसे पांचवां तारा । "मृगशिरा" "मृगशीर्षन्" "मृगशीर्ष" एकही अर्थ.

मृगश्रेष्ठ, (पु०) मृगेषु श्रेष्ठः । मृगोंमें श्रेष्ठ । सिंह शेर.

मृगहन्, (पु०) मृगान् हन्ति । मृगोंको मारता है । व्याध शिकारी.

मृगाक्षी, (स्त्री०) मृगस्य इव अक्षि (पुष्पं) यस्य । षच् सम्य० ङीष् । जिसका फूल हरिणके समान है । विशाला । हरिणके समान नेत्रोंवाली स्त्री.

मृगाण्डजा, (स्त्री०) मृगस्य अण्डजात् (नाभिनि-रक्त-मांसपिण्डात्) जायते । अन्+ड । हरिणकी नाभिमें रहनेहारे मांसके गोलेमें उपजता है । कस्तूरी.

मृगादन, (पु०) मृगान् अत्ति । अद्+ल्यु । क्षुद्रव्याघ्र । छोटाभेड़िया । पशुओंको खाता है । "मृगान्तक" इसी अर्थमें है.

मृगाराति, (पु०) ६ त० । पशुओंका शत्रु । कुत्ता । सिंह । शेर । भेड़िया.

मृगाविध, (पु०) मृगं विध्यति । विध्+क्विप् । पहिलेको दीर्घ होता है । पशुओंको वेधता है । व्याध (शिकारी).

मृगित, (त्रि०) मृग+क्त । अन्वेषित । तलाश किया-हुआ । मांगागया.

मृगेन्द्र, (पु०) मृगः इन्द्र इव । पशुका मानों राजा है । सिंह । शेर.

मृगेन्द्रचटक, (पु०) मृगेन्द्र इव हिंस्रचटकः (पक्षी) । शेरकी नाईं हिंसा करनेवाला पक्षी । श्येन । बाज । परिंदा.

मृज्, शोधन (साफकरना) और (भूषण) सजाना । वा चुरा० उभ० पक्षे अदा० सक० वेट् । मार्जयति-ते । मार्ष्टि । अमीमृजत्-त-अममार्जत्-त । अमार्क्षीत् अमार्जीत् अमृक्षत्.

मृजा, (स्त्री०) मृज्+अङ् । मार्जन । साफकरना.

मृड्, तोषण (प्रसन्न करना) । क्या० और० तु० पर० सक० सेट् । मृड्णाति । मृडति । अमर्डीत्.

मृड, (पु०) मृड्+क । शिव । उसकी पत्नी (स्त्री०) ङीप्-आनुक्च.

मृण्, हिंसा (मारना) तु० प० स० सेट् । मृणति । अमर्णीत्.

मृणाल, (न०) मृण्+कालन् । कमलफूलकी डण्डीका सूत । और वीरणमूल । में । "मृणाली".

मृणालिन्, (पु०) मृणालं विद्यते अस्य+अच् । "मृणालं (पद्मं) ततः–समूहे-तद्युक्तदेशे वा इनि" । कमलफूलकी डण्डीके सूतवाला । भेवाला । बिसतन्तुवाला । कमलोंका समूह । और कमलोंवाला देश । कमलोंकी बेल (स्त्री०).

मृत, (न०) मृ+भावे क्त । मरण । मरना । उसके समान दुःखको उपजानेहारा मांगनेका व्यापार (याचितक वृत्ति).

मृतक, (न०) मृतेन (मरणेन) कायति । कै+क । मरणाशौच । शव (मुर्दा) । मरनेकी अपवित्रता । पातक.

मृतकल्प, (त्रि०) ईषदसमाप्तो मृतः । मृत+कल्पप् । मृतप्राय । मरनेवाला । मरनेपर आपहुंचा.

मृतवत्सा, (स्त्री०) मृतो वत्सो यस्याः । जिसका पियारा (बेटा) मरगया । मरीहुई सन्तानवाली स्त्री (औरत) और गौ । "मृतवत्सा च या नारी" इति वचनम्.

मृतसञ्जीवनी, (स्त्री०) मृतम् संजी- [illegible] जीव+णिच्+ल्युट्+ङीप् । मरेहुएको जिला [illegible] मृतान् सञ्जीवयति (दूती) । [illegible] विद्या.

मृतस्नात, (त्रि०) मृतं मतं स्नातः [illegible] मरनेके निमित्तसे जिसने स्नान कि[illegible] करनेवाला.

मृत्तिका, (स्त्री०) मृद्+तिकन्-टाप् । [illegible]

मृत्यु, (पु०) मृ+त्युक् । यम । शरीर [illegible] वियोग (अलग होना) । मरण । मरना [illegible] कामदेव.

मृत्युनाशक, (पु०) मृत्युं नाशयति । [illegible] (पारा) । (रसायन क्रियासे शुद्ध [illegible] पारा मृत्युको नाश करता है) मौतको [illegible] (त्रि०).

मृत्स्ना-स्ना, (स्त्री०) । मृद्+स्नच्-स्नाच् [illegible] प्रशस्त मृत्तिका । बहुत पाक मट्टी । सुग[illegible]

मृद्, क्षोद (चूराकरना) । क्या० प० [illegible] मृद्नाति । अमर्दीत्.

मृद्-दा, (स्त्री०) मृद्यते । क्षुद्यते । मृद्+क्वि[illegible] मट्टी । "मृदा" भी.

मृदङ्ग, (पु०) मृद्+अङ्गच् । वाद्यभेद । [illegible] बाजा.

मृदु, (त्रि०) मृद्+कु । कोमल (नरम) [illegible] वा ङीप्" मृद्वी-मृदुः । चित्रा, अनुराधा, [illegible] रेवती तारे.

मृदुत्वच्-त्व, (पु०) मृदु लघ त्वचा [illegible] जिसका छिलका मुलायम हो । भूर्जपत्र । भोज[illegible]

मृदुभाषिन्, (त्रि०) मृदु भाषते । कोमल [illegible] मीठा (मधुर) बोलनेवाला.

मृदुल, (न०) मृद्+कुलच् । जल (पानी [illegible] (नरम) (त्रि०).

मृदुस्पर्श, (त्रि०) मृदु स्पर्शः यस्य । कोमल [illegible] स्पर्शवाला.

मृदुहृदय, (त्रि०) मृदु हृदयं यस्य । कोमल [illegible] दयालु । सिहृर्वान.

मृद्वीका, (स्त्री०) मृदु+स्वार्थे ईकन् । द्राक्षा [illegible] मीठीदाख.

मृध, (न०) मृध्यते अत्र । क । युद्ध । लड़ाई । [illegible]

मृधु, आर्द्रीभाव-गीलाहोना । भ्वा० उभ० सक[illegible] मर्धति-ते.

मृश्, सर्शन (छूना) । प्रणिधान-खयालकरना । [illegible] सक० अनिट् । मृशति । अम्राक्षीत्-अमार्क्षीत् । [illegible] कइओंने इसे "मृष्" ऐसा लिखा है.

[illegible], (पु०) ६ त० । इन्द्रियोंका स्वामी । विष्णु.

[illegible]) हृष+क्त । प्रीत (प्रसन्नहुआ) । [illegible] के रोयें खड़े हो गये हैं) । हैरानहुआ.

[illegible]न, (त्रि०) हृष्टं मानसं अस्य । हर्षित । प्रसन्न-[illegible]हा । जिसका दिल खुश है.

[illegible], (त्रि०) हृष्टं इव आगतुं रोम यस्य । जिसके [illegible] होगये, मानों प्रसन्नहुए हैं.

[illegible] (स्त्री०) हृष+क्तिन् । आनन्द । हर्ष (खुशी) । हाल.

[illegible] (अ०) हा+हे । संबोधन । बुलाना.

[illegible] आदर करना । भ्वा० आ० सक० सेट् । हेडते.

[illegible] (स्त्री०) हन्+करणे क्तिन् । नि० । जिससे मारते [illegible] । बाण (तीर) । आगकी शिखा (लाट) । [illegible] किरण । हरएक प्रकारका तेज । साधन.

[illegible] (पु०) हि+तुन् । कारण (सबब) । अनुमितिका [illegible] व्याप्य (धोके देखनेसे सहनेहारा) । और कल.

[illegible] (स्त्री०) हेतोर्भावःतल् । हेतुपन । कारणपना । [illegible] विशेष.

[illegible], (त्रि०) हेतुः अस्ति अस्य+मतुप् । हेतुवाला । [illegible] वाला कार्य । लिये हेतु.

[illegible]स, (पु०) हेतुः इव आभासते । आ+भास+[illegible] हेतोः वा आभास । आ+भास+घञ । हेतुसा मालूम [illegible] होता है । अथवा हेतुका आभास (दोष) । दुष-[illegible] यह दोष पांच प्रकारका है । सव्यभिचार-विरुद्ध-[illegible] द्विसत्प्रतिपक्ष और बाध । इनमेंसे कोई भी दोष [illegible] पर अनुमिति नहीं होती.

[illegible] (न०) हि+मन् । स्वर्ण (सोना) । धतूरा । और एक [illegible] का परिमाण (माष तोल) । काकेसर सोना । और [illegible] (पु०).

[illegible]र, (पु०) हेम-सम्मर्दं सुवर्णं करोति । कृ+अण् । [illegible] गहना बनाता है । सुनार.

[illegible]ट, (पु०) हेमाढ्य कूटो यस्य । जिसकी चोटी सोने-[illegible] । हिमालयके एक पहार.

[illegible], (न०) हिमसिद्ध । स्वर्ण (सोना) । धतूरा । धतूरा । [illegible]मशाल । और हिम । बरफ.

[illegible], (पु० न०) हि+मन्+पुट् वा । सफेद रंग (कर्केतन-[illegible]) और पीत (पीले) के सहितवाले सनु ([illegible]).

[illegible], (पु०) हेम इव [illegible] प्रस्य । [illegible] की किरणें [illegible] । सूर्य । हरि.

[illegible]-[illegible], (न०) हेम [illegible] । [illegible] । एक प्रकारका रत्न.

[illegible], (पु०) हेम [illegible] । [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । और [illegible] [illegible] (त्रि०) । [illegible]

हेमाद्रि, (पु०) हेम्नः अद्रिः । सोनेका पहाड़ । सुमेरुगिरि.

हेय, (त्रि०) हा+यत् । त्याज्य । छोड़नेके लायक.

हेरम्ब, (पु०) हे (शिवे) रम्बते । जिसके अन्दर [illegible] है । रवि+अच् अलुक् समा० । गणेशजी

हेरम्बजननी, (स्त्री०) ६ त० । गणेशजीकी माता । दुर्गा । पार्वती । शिवकी स्त्री.

हेलन, (न०) हिड्+ल्युट् । अनादर । तिरस्कार करना.

हेला, (स्त्री०) हेड-अनादरे (बेकदरी करना) । भावे अ । "ड" को "ल" होता है । स्त्रियोंके [illegible] [illegible] [illegible] चेष्टा ([illegible]) । "[illegible] [illegible] [illegible] बहुत [illegible]" [illegible].

हेव, [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible] [illegible] सेट् । हेवते । [illegible].

हेषा, (स्त्री०) हेष+अ । घोड़ोंका शब्द । हिन हिन.

हेहे, (अव्य०) संबोधन । बुलाना.

हैतुक, (त्रि०) हेतोः [illegible] । हेतु[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible].

हैम, (त्रि०) हिमे भव+अण् । बरफमें हुआ । "हैम [illegible]" [illegible] । सोनेका [illegible] । [illegible] पदार्थ.

हैमन, (पु०) हैमन्त [illegible] । हेमन्ते [illegible] ([illegible] का [illegible] होता है) । [illegible] ([illegible]) । उसमें हुआ (त्रि०)

हैमवत, (न०) हिमवत् [illegible] देश । [illegible] [illegible] हिमालय [illegible] देश । [illegible] । हिमालयके [illegible] (त्रि०) । [illegible] (अद्रि) । [illegible] पार्वती । हरीतकी । हरीर (स्त्री०)

हैयङ्गवीन, (न०) [illegible] [illegible] [illegible].

हैहय, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]

होड, (पु०) होड् ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] है । [illegible]

होतृ, (पु०) हु+तृच् । [illegible] [illegible] (त्रि०) [illegible]

होत्र, (न०) हु+त्र । [illegible] । [illegible] [illegible]

होत्रीय, (पु०) [illegible]

होम, (पु०) [illegible]

मेधाविन्, (पु॰) मेधा+अस्त्यर्थे विनि। अच्छी अकलवाला। शुकपक्ष। तोतापक्षी। मेधावाला (त्रि॰) स्त्रियां डीप्। "मेधावती".

मेधातिथि, (पु॰) मनुसंहितापर टीका करनेवाला। अरुन्धतीका पिता.

मेधिर, (त्रि॰) मेधा+अस्त्यर्थे इरच्। मेधावाला। अच्छी बुद्धिवाला।

मेधिष्ठ, (त्रि॰) अतिशयेन मेधावान्। इष्ठन्। मतोर्लुक्। बहुत बुद्धिवाला जन। जिसकी न भूलनेवाली बुद्धि हो.

मेध्य, (त्रि॰) मेध्+ण्यत्। पवित्र (पाक)। और शुचि (पाक)। "मेधाय (यज्ञाय) हितः" जो यज्ञके लिये उपकारी हो। छाग (बकरा)। खदिर (खैरकी लकड़ी) और यव (जौ) (पु॰)। केतकी। शङ्खपुष्पी। रोचना (स्त्री॰).

मेनका, (स्त्री॰) मिन+नक्। (सर्वेस्वाभेद)। एक प्रकारकी स्वर्गकी वेश्या (कंचनी)। "मेनेन" कन्। हिमालयकी स्त्री (मैना).

मेनकात्मजा, (स्त्री॰) ६ त॰। मेनकाकी लड़की। हिमालयकी कन्या। दुर्गा। पार्वती। "मेनासुता" यही अर्थ.

मेना, (स्त्री॰) मिन+अ। हिमालयपत्नी। पितरोंकी मनसे [illegible] कन्या (लड़की).

मेन्धी, (स्त्री॰) मा (लक्ष्मीः) इव [illegible]। [illegible]। जो लक्ष्मीकी [illegible] है। (मैंदी) वृक्ष। इसको [illegible] लक्ष्मीके समान लाल हाथ हो जातेहैं.

मेय, (त्रि॰) [illegible] यत्। परिच्छेद्य। मापनेलायक। [illegible].

मेरु, (पु॰) मि+रु। [illegible] उत्तरका एक पर्वत ([illegible])। [illegible]के [illegible]। [illegible] बीजविशेष। [illegible] पर्वतोंका [illegible] (मांड) विशेष.

मेरुपृष्ठ, (न॰) मेरोः पृष्ठम्। मेरुकी पीठ। स्वर्ग। [illegible]। [illegible].

मेरुसावर्णि, (पु॰) [illegible] मनुओंमें [illegible]। [illegible]मनु.

मेलक, (त्रि॰) [illegible]। मिल+णिच्+ण्वुल्। [illegible] है। [illegible]। [illegible]। [illegible].

मेला (स्त्री॰) मिल+णिच्+अच्+टाप्। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। और [illegible].

मेषाम्बु (पु॰) [illegible] ([illegible]) [illegible]। [illegible] है। [illegible] ([illegible]).

मेष, [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

मेष, (पु॰) [illegible]। (मेढा) एक प्रकारका पशु। [illegible] (दिग्गज)। [illegible] [illegible] एक [illegible]। [illegible] [illegible]

मेघाण्ड, (पु॰) मेघस्य अण्ड इव [illegible] अंडाही जिसका अण्ड है। इन्द्र ([illegible]) नाश होनेपर मेघहीका अंड [illegible] (पुराणमें).

मेह, (पु॰) मिह्+घञ्। प्रस्राव। पेशाब। [illegible] विशेष। सुजाकाकी बीमारी। "अच्" [illegible]

मेहघ्नी, (स्त्री॰) मेहं हन्ति। [illegible] (हलदी)। इसकी जड़का [illegible] [illegible] बीमारी दूर हो जाती है यह वैद्यकमें [illegible]

मेहन, (न॰) मिह्यते अनेन। मिह्+करणे [illegible] लिंग। "कर्मणि ल्युट्" मूत्र (मूत)। [illegible] मूत्रोत्सर्ग। मूतका छोड़ना। पेशाब [illegible].

मैत्र, (न॰) मित्रो देवता अस्य+अण्। [illegible] तस्येदं पुनरण्। गुदाका। विष्ठोत्सर्ग। [illegible] "मित्रो देवता अस्य" "मित्र [illegible]" [illegible] अण्" अनुराधा नक्षत्र (न॰) [illegible] मित्रसे पाया। सुहृत्संबन्धी (त्रि॰) "[illegible]" अण्। मित्र। और ब्राह्मण.

मैत्रावरुण, (पु॰) मित्रश्च वरुणश्च। [illegible] तयोः अपत्यं+अण्। मित्र और वरुण दोनों [illegible] अगस्त्य। वसिष्ठ। इञ्। "मैत्रावरुणि" [illegible] कल्पभेदसे यह उनका पुत्र है (यह पुराणमें [illegible]

मैत्री, (स्त्री॰) मित्रस्य भावः+अण् ङीप्। [illegible] दोस्ती "ष्यञ्" "मैत्र्यं" इसी अर्थमें [illegible]

मैत्रेय, मित्रायाः अपत्यं+ढक्। मित्राकी [illegible] और बुद्धदेव.

मैथिली, (स्त्री॰) मिथिलायां भवा+अण्। [illegible] [illegible]। सीता। "मिथिलाया [illegible]" देशका राजा (पु॰).

मैथुन, (न॰) मिथुनेन (स्त्रीपुरुषाभ्यां) [illegible] स्त्री और पुरुषसे पूराहुआ। [illegible] ([illegible] कर्म (यज्ञमें [illegible] [illegible] स्त्री और पुरुषके [illegible] [illegible]

मैनाक, (पु॰) मेनकायां भव+अण्। [illegible] एक पहाड़.

मैरेय, (पु॰) मिरायां (देशविशेष[illegible]) [illegible] ढक्। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]).

मोक्ष, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मोक्ष, (पु॰) [illegible]। मुक्ति (मुक्ति) और [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]

मोचक, (त्रि०) मोच्+ण्वुल्+अक । छुटकारा देनेवाला । मनाश (मुक्ता) करनेवाला.

मोक्षण, (न०) (मोक्ष्+ल्युट्+अन) छुटकारा । छुड़ा छोड़ देना । बचाना । गांठ खोलना.

मोक्षेच्छिन्, (त्रि०) मोक्ष्+णिनि+इन् । मोक्षकी इच्छा करनेवाला । सर्वथा (बिलकुल) छूटाहुआ.

मोघ, (त्रि०) मुह्+घ-अच्-वा कुत्वं । निरर्थक (बेमतलब) । और हीन (कम-छोटा).

मोचक, (पु०) मुच्+ण्वुल् । मोक्ष (नजात) । केलेका पेड़ (कदली) । और शोभांजन (सुहांजना) । वैराग्यवाला (त्रि०).

मोटक, (न०) मुट्+ण्वुल् । श्राद्धमें पितरोंको देनेके लिये देदे दो कुशाके पत्ते.

मोट्टायित, (न०) एक प्रकारकी स्त्रियोंकी अभिलाष (चाह).

मोद, (पु०) मुद्+घञ् । हर्ष । खुशी.

मोदक, (पु०) मोदयति । मुद्+णिच्+ण्वुल् । खुशीदेता है । एक प्रकारका खाना (खाद्यभेद) (लड्डू) (लड्डुआ) । खुश करनेवाला (त्रि०) एक प्रकारका दोगला (कहार).

मोदिनी, (स्त्री०) मोदयति । मुद्+णिच्+णिनि । अजमोदा । अजवाइन । मल्लिका (मालती) । यूथिका । कस्तूरी । और मदिरा.

मोषक, (पु०) मुष्णाति । मुष्+ण्वुल् । चुराता है । तस्कर । चोर । चोर.

मोषण, (न०) मुष्+ल्युट् । लुण्ठन । लूटना । छेदन । फाड़ना । मारना.

मोह, (पु०) मुह्+घञ् । मूर्छा । बेहोशी । अज्ञान । बेसमझी । भ्रान्ति (भ्रम) का साधन (कारण) । वेदान्तमें अविद्याकी एक प्रकारकी वृत्ति । दुःख । शरीर आदिमें आत्माका अभिमान । (ये मेरे हैं या मैं इनका हूं).

मोहकलिल, (न०) मोहस्य कलिलं । बड़ा भारी मोह (मूढ-ममत्व) का जाल । मोहरूपी कीचड़.

मोहन, (पु०) मोहयति । मुह्+णिच्+ल्यु । धतूरा (बेहोश करदेता है) । और कामदेवका एक प्रकारका बाण (तीर) मोहके करनेवाला (त्रि०) । (किसी चीज).

मोहरात्रि, (स्त्री०) ब्रह्माके बरसे पचास (वर्ष) के बरस बर्षे व्यतीत होनेपर एक प्रकारका प्रलय । जन्माष्टमीकी रात । भादों वदि अष्टमी.

मोहित, (त्रि०) मुह्+णिच्+क्त । मोह किया हुआ । भुलाया गया.

मौक्तिक, (न०) मुक्तैवस्वार्थे ठक् । मुक्ता । मोती.

मौक्तिकप्रसवा, (स्त्री०) मौक्तिकं प्रसूते । प्रसू+अच् । शुक्तिमत्स्य । एकतरह प्रकारकी सीपी । मुक्तास्फोट.

मौक्तिकस्रज, (पु०) मौक्तिकानां स्रक् । मोतियोंकी लड़ी या हार.

मौञ्जी, (स्त्री०) मुञ्जस्य इयं+अण् । कटिसूत्र । कमरका सूत । तगाडी । तिहरी मूंजकी बनीहुई मेखला (तगडी).

मौञ्जीबन्ध (न), (पु०) मौञ्ज्याः (मेखलायाः) बन्धनम् । जिसमें तगडी बांधते हैं । उपनयनसंस्कार । यज्ञोपवीतकी रसम । "मौञ्जीबन्ध ततः प्रोक्तवंशे मौनगते रवौ" इति स्मृति । तगडीका बांधना (न०) "द्वितीयं मौञ्जीबन्धनं" स्मृति०.

मौढ्य, (न०) मूढस्य भावः+ष्यञ् । मूढपना । मोह । बालकपन । बाल्य.

मौद्गल्य, (पु०) मुद्गलस्य मुनेः अपत्य+यञ् । गोत्र चलानेवाला एक मुनि । मुद्गल मुनिकी सन्तान

मौद्गीन, (न०) मुद्गानां भवन क्षेत्रं । मूंग उत्पन्न करनेयोग्य खेत.

मौन, (न०) मुनेर्भावः । मुनिपना । बातोंके कहनेसे रहित होना । "उच्चारे, मैथुने, चैव प्रस्रावे, दन्तधावने । स्नाने, भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत्" पुराण.

मौनिन्, (त्रि०) मौनं अस्ति अस्य+इनि । बातचीतसे रहित । जो बोल नहीं सकता । चुप रहनेवाला । मुनि (पु०)

मौरजिक, (त्रि०) मुरजवादनं शिल्पं अस्य+ठक् । मृदंग बजानेवाला । मृदंग बजाके कमानेवाला

मौर्ख्य, (न०) मूर्खस्य भाव ष्यञ् । मूर्खपन । बेवकूफी । जड़ता । मूर्खता.

मौर्वी, (स्त्री०) मूर्वा (लता) तस्याः विकारः+अण् । मूर्वा बेलकी तांतोंसे तयार हुई । धनुष । धनुषका गुण । कमानका चिल्ला । धनुर्गुण.

मौल, (त्रि०) मूलं वेत्ति । मूल+अण् । मूलको जानता है या मूलसे चलाआया । मूलि अर्थात् अपना आदिका कुल जानेवाला । पुराना । देशके अच्छे बड़ (तीन पुश्त आदि) । अच्छे वंशका । बाप दादोंसे है राजाके यहां काम करनेवाला.

मौलि, (पु० स्त्री०) मूलस्य अदूरभव+इञ् । मूलके न दूर होनेवाला । चूड़ा । चोटी । किरीट । मुकुट (ताज) । शिरोभूषण (सिरपर का) और सिर । अशोकवृक्ष (पु०) । भूमि (स्त्री०) या पृथ्वी

मौसल, (न०) मुसलस्य इदं तस्य अण् । मुसल (मोहरा) के समान चिह्न (हैरोल) । "मौसलं मौसलपर्व वो । यदुकुलका नाश वर्णन है ।" इति पुराणम् । "मुसल अन्य कुछ हुआ अन्य" आदि । यह पर्व कि जिसमें मुसलका विवरण लिखा जाता है । महाभारतमें एक "मुसल मुसल अन्य हुआ" इत्यादि इतिहासका वर्णनवाला पर्व (सोलहवां) (इसमें श्रीकृष्ण और बलरामके आदि यदुवंशके परस्पर मरनेका वर्णन है ।

मौहूर्त, (पु॰) मुहूर्त (ज्योतिषशास्त्र) [illegible] [illegible]+अण्। मुहूर्तको बतलानेवाले शास्त्रको जाननेवाला। ज्योतिष-शास्त्रको जाननेवाला। ज्योतिषी। ठग। यही अर्थ है.

म्ना, (अभ्यास) पर २ (मनमें) कहना। [illegible] घोखना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। मनति। अमनासीत्.

म्रक्ष्, संयोजन-जोड़ना। इकट्ठा करना। [illegible]। [illegible]। साफ २ बोलना। मंदन आदि लगाना। चु॰ उ॰ स॰ सेट्। म्रक्षयति से.

म्रक्षण, (न॰) म्रक्ष+ल्युट्। संयोजन (जोड़ना)। राशीकरण (इकट्ठा करना)। तेल। और मलना (मर्दन).

म्रद्, थोड़-थोड़ा करना-पीसना। भ्वा॰ आ॰ सक॰। म्रदते। अम्रदिष्ट.

म्रदिमन्, (पु॰) मृदोर्भावः। मृदु+इमनिच्। म्रदादेशः। मृदुत्व। कोमलता। नाजुकता.

म्रदिष्ठ, (त्रि॰) अतिशयेन मृदु+इष्ठन् म्रदादेशः। बहुत कोमल। बहुत मुलायम.

म्रियमाण, (त्रि॰) मृ-लिवा॰ आ+शानच्। मुमूर्षु। मराहुआसा। मरनेपर आया.

म्लान, (त्रि॰) म्लै+क्त। मलिन। मैला। म्लानियुक्त। ग्लानिवाला। जिसका वीर्य क्षय हो चुका। कुम्हलाया हुआ। हैरान। विषण्ण (थकाहुआ)। सूखा.

म्लानि, (स्त्री॰) म्ला+क्तिन्। कान्तिक्षय। मलिन होना। मुरझा जाना.

म्लानिः, (स्त्री॰) (म्लै+क्तिन्+ति) कुम्हलाना। क्षय होना। थकना। उदासहोना.

म्लास्नु, (त्रि॰) म्लै+स्नु। कुम्हलाया हुआ। पतला होगया। थक गया.

म्लिष्ट, (न॰) म्लेच्छ्+क्त। नि॰। अविस्पष्ट वाक्य। वह वचन जो साफ नहीं। ऐसे वचनवाला और मुरझा-याहुआ (त्रि॰).

म्लेच्छ्, अपशब्द (बुरा वचन बोलना-साफ न बोलना-जंग-लियोंके समान बोलना) वा चु॰ उभ॰ पक्षे भ्वा॰ पर॰ अक॰ सेट्। म्लेच्छयति-ते। म्लेच्छति.

म्लेच्छ, (पु॰) म्लेच्छ्+घञ्। अपशब्द (बुरा वचन) बिगड़ी हुई बोली। "म्लेच्छो ह वा यदपशब्दः" इति श्रुतिः। "कर्तरि अच्" पामरजाति। नीचजाति और बुरा काम करनेवाली कौम (पु॰) पापरत (गुनाहगार) (त्रि॰) (किरात, शबर, पुलिंदादि)। हिङ्गुल (हींग) (न॰).

म्लेच्छकन्द, (पु॰) म्लेच्छप्रियः कन्दः। म्लेच्छोंका पियारा कन्द (जड)। लशुन। लसन। पियाज.

म्लेच्छजाति, (स्त्री॰) म्लेच्छजाति [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]

म्लेच्छदेश, (पु॰) म्लेच्छोंका देश। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मुल्क

म्लेच्छमुख, (न॰) म्लेच्छानां मुखं [illegible] [illegible] इसीसे इसको म्लेच्छोंका मुख है। [illegible] म्लेच्छोंका मुख। "म्लेच्छमुख".

म्लै, कान्तिक्षय कान्तिका नाश होना। [illegible] मुरझाना, भ्वा॰ पर॰ सक॰ अनिट्। म्लायति। म्लानीद्। म्लानि.

य

य, (पु॰) या+ड। वायु। [illegible]। यश। य[illegible] (जाना)। संयम (काबू करना)। "य [illegible] [illegible] जाता (जानेवाला) (त्रि॰).

यकृत्, (न॰) यं (संयमं) करोति। [illegible] संयम करता है। कुक्षि (जग्मी)। कलेजा। आमाशय मांसपिण्ड। दहिनी ओर आमाशय [illegible] बढ़ानेवाली एकप्रकारकी बीमारी.

यक्ष्, पूजा करना। चु॰ आ॰ स॰ सेट्। [illegible] अययक्षत.

यक्ष, (पु॰) यक्ष्यते (यक्ष्+कर्मणि घञ्। [illegible] एक प्रकारका देवता। उसका ईश्वर (मालिक) इन्द्रका घर.

यक्षकर्दम, (पु॰) यक्षप्रियः कर्दमः। यक्षोंका कर्दम। "केसर, कस्तूरी, कपूर, चंदन [illegible] समभाग (एक जितना) मिलाहुआ लेवा [illegible]

यक्षतरु, (पु॰) यक्षाणां आश्रयोस्य वट। निवास करनेलायक वृक्ष। वटवृक्ष। बोहका [illegible]

यक्षधूप, (पु॰) यक्षे (पूजने) योग्यो धूप। जो पूजनमें उचित है। सर्जरस। धुना। [illegible]

यक्षराज, (पु॰) यक्षाणां राजा। टच् समा॰। राजा। कुबेर। "यक्षेषु राजते" राज्-क्विप्। शोभता है। "यक्षराट्".

यक्षरात्रि, (त्रि॰) यक्षप्रिया रात्रिः। यक्षोंकी रात। कार्तिककी पूर्णिमारात्रि। कार्तिक (कातक) पूनोंकी रात.

यक्षवित्त, (पु॰) यक्षेण वित्तः सदृशः। [illegible] समान है अर्थात् धनका केवल रक्षक (रखवा[illegible] परन्तु कभी काममें नहीं लाता.

यक्षामलक, (न॰) यक्षाणां आमलक इव। [illegible] का फल.

पी, (स्त्री०) (यक्षस्य पत्नी) यक्षकी स्त्री। कुबेरकी
वा नाम है। दुर्गाकी सेवामें रहनेवाली कोई स्त्री.

घ्नी, (स्त्री०) यक्ष्माणं हन्ति। हन्+टक्+ङीप्।
र्गोंके रोगको नाश करती है। द्राक्षा। दाख। किसमिस.

ान्, (पु०) यक्ष्+मनिन्। रोगभेद। एक प्रकारकी
ीमारी। मिर्गी.

, देवताकी पूजा करना। दान देना और आदर करना।
वा० उभ० अनिट्। यजति-ते। अयाक्षीत्। अयष्ट.

ति, (पु०) यज्+अतिच्। एक प्रकारका याग
यज्ञ)। "यजतिषु मे यजामहे" इति श्रुतिः.

न, (पु०) यज्+ल्युट्। होता आदिसे मन्त्र पढकर
अग्निमें घी आदि डालना। यज्ञ। ब्राह्मणके छह कामोंमेसे
एक। "देवयजनः" देवताका यज्ञ करनेवाला (त्रि०).

मान, (पु०) यज्+शानच्। होता (पुरोहित)
आदिको नियोग करनेहारा। पूजा करनेवाला। यज्ञ
आदिके करनेवाला.

र्वेद, (पु०) यजुषां (ऋक्सामभिन्नानां मन्त्राणां)
प्रतिपादको वेद। ऋक् और सामसे भिन्न मन्त्रोंको
बतानेहारा वेद। यह शुक्ल और कृष्णके भेदसे दो
प्रकारका है.

ुस्, (न०) यज्+उसि। ऋक् और सामसे भिन्न पद-
विभागसे रहित मन्त्रविशेष। यजुर्वेद.

, (पु०) यज्+भावे न। यज्ञ याग। किसी प्रकारकी
भेंट.

पशु, (पु०) यज्ञका पशु (जिसकी यज्ञमें बलि दी
जाती है)। अश्व। घोडा। छाग। बकरा.

पुरुष, (पु०) यज्ञरूपः पुरुषः। यज्ञस्वरूप पुरुष।
विष्णु.

भूषण, (पु०) यज्ञं भूषयति। भूष्+णिच्+ल्यु।
श्वेतदर्भ। चिट्टीकुशा.

योग्य, (पु०) यज्ञे योग्यः। उदुम्बरका वृक्ष (इसकी
लकडियें यज्ञमें काम आती हैं)। यज्ञके लायक.

वल्ली, (स्त्री०) यज्ञार्थं वल्ली। यज्ञके लिये बेल।
सोमलता.

वराह, (पु०) यज्ञरूपो वराहः। यज्ञस्वरूप सूअर।
आदिवराह। भगवान्का अवतारविशेष.

वाट, (पु०) ६ त०। यज्ञस्थान। यज्ञकी जगह.

सूत्र, (न०) यज्ञार्थं योग्यं संस्कृतं वा सूत्रं। यज्ञके
लायक। वा यज्ञके लिये संस्कार कियाहुआ। उपवीत।
यज्ञोपवीत। जनेऊ.

स्थाणु, (पु०) यज्ञस्य स्थाणुः। यज्ञका खंभा.

ाङ्ग, (पु०) यज्ञस्य अङ्ग (साधनत्वेन) अस्ति अस्य
अच्। उदुम्बर (गूलर)। खदिर (खैरका दरख्त), सोमबेल
(इनकी लकडी और पत्तोंसे यज्ञ सम्पादन करते हैं).

यज्ञान्त, (पु०) ६ त०। अवभृथ। यज्ञकी समाप्तिमें
स्नान (न्हाना) यज्ञका शेष.

यज्ञिक, (पु०) यज्ञ (यज्ञार्थं) साध्यत्वेन अस्ति अस्य
(ठन्)। पलाश। पलाशका दरख्त (इसकी लकडियें
यज्ञमें काम आती हैं).

यज्ञिय, (त्रि०) यज्ञाय हितः। घ। यज्ञके लिये अच्छा।
यज्ञके कामके लायक। द्वापरयुग (पु०).

यज्ञियप्रदेश, (पु०) कर्म०। "यज्ञका काम करनेलायक
देश। जिस देशमें स्वभावसे कृष्णसार (बिलकुल काला)
हरिण विचरता है" वह देश.

यज्ञेश्वर, (पु०) यज्ञस्य प्रवर्तयिता ईश्वरः। यज्ञके चला-
नेहारा विष्णु.

यज्ञोपवीत, (न०) यज्ञेन संस्कृतं उपवीतम्। यज्ञसे
संस्कार कियागया उपवीत। यज्ञसूत्र। उपनयनसंस्का-
रसे पवित्र कियाहुआ जिहरा कंधे लियाहुआ बायें कंधेसे
दहिनी कुक्षिकी ओर लटकरहा एक प्रकारका सूत।
जनेऊ.

यज्वन्, (पु०) यज्+भूते क्वनिप्। विधिसे यज्ञ करानेवाला.

यत्, यत्न-कोशिश करना। भ्वा० आ० अक० सेट्। निडावी
अनिट्। यतते। अयतिष्ट.

यत, (त्रि०) यम्+क्त। निरोध किया गया। रोका गया।
तावमें रखा हुआ। आशामें रक्खा गया। बस किया
हुआ.

यतस्, (अव्य०) यद्+तसिल्। यस्मात्। जिससे।
क्योंकि.

यतम, (त्रि०) एषां मध्ये यः। यद्+डतमच्। इनमेंसे
एक.

यतमानस, (त्रि०) यतं मानसं येन। मनको वश कर-
नेवाला.

यतव्रत, (त्रि०) यतं व्रतं येन। नियमका पालन करनेवाला
व्रत पालनेवाला। इकरारपर रहनेवाला।

यतर, (त्रि०) अनयोर्मध्ये यः। डतरच्। इन दोनोंमेंसे
एक.

यतात्मन्, (त्रि०) यतः आत्मा यस्य। अपनेको वश
करनेवाला। इन्द्रियोंको रोकनेवाला.

यति, (पु०) यतते मोक्षाय। यत्+इन्। जोग (अज्ञान-
रूपसे छुटना)के लिये यत्न करता है। यतिवक।
संन्यासी। "यम्यते जिह्वा यत्र, यम्+क्तिन्" जहां जीभ
रुक जाती है। छन्दोंमें पदके विश्रामका स्थान।
बोलनेके समयका विच्छेद (ठहराव) (स्त्री०)। (ज्या-
करण व्युत्पत्ति) "यद्+डति" [illegible]। जितना।
जितने (त्रि०).

यतिन्, (पु॰) यमनं-यतं । यम्+क्त । यतं अनेन । इनि । जिसने इन्द्रियोंको दमन किया है । संन्यासी । परिव्राजक । विधवा (बेवा-रंडी) (स्त्री॰).

यत्न, (पु॰) यत्+नङ् । आयास । कोशिश । उद्योग । हिम्मत । वैशेषिकमें एक प्रकारका गुण (जो प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवनयोनिभेदसे तीन प्रकारका है) । वह "आत्माका गुण है" ऐसा नैयायिक कहते हैं । "चित्तका गुण है" सांख्य और वेदान्तिओंका मत है.

यत्र, (अव्य॰) यद्+त्रल् । यस्मिन् । जिसमें । जहां.

यन्त्र, संकोचन-सिकोड़ना । भा॰ सु॰ उभ॰ पक्षे भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट् । इदित् । यन्त्रयति-ते । यन्त्रति.

यथा, (अव्य॰) यद्+प्रकारे थाल् । येन प्रकारेण । जिस तरह । जिस प्रकारसे । जैसे.

यथाकाम, (अव्य॰) कामं अनतिक्रम्य । अव्ययी॰ । इच्छाके अनुसार । स्वाच्छन्द्य । यथेष्टता । मरजीके मुआफिक । जैसा चाहें.

यथाक्रम, (अव्य॰) क्रमस्य आनुरूप्यं तस्य अनतिक्रमो वा । अव्ययी॰ । क्रमानुसार । सिलसिलेवार.

यथाजात, (त्रि॰) जातं (समयविशेषं) अनतिक्रम्य [illegible] भवति इति अच् । जैसा पैदा हुआ वैसाही रहा । मूर्ख और नीच । बेवकूफ.

यथातथ, (अव्य॰) तथा अनतिक्रम्य । अनतिवृत्तौ अव्ययी॰ । यथार्थ । ठीक २ । जिस वस्तुका जैसा रूप होना उचित है वैसाही होना । " यथातथम् " इसी अर्थमें.

यथार्थ, (अव्य॰) अर्थं अनतिक्रम्य । अव्ययी॰ । अर्थके अनुसार । ठीक २ । सत्यता । सचाई । अर्थका न छूटना । [illegible] । " अच् " [illegible] । सच (त्रि॰).

यथार्ह, (अव्य॰) अर्हं (योग्यता) अनतिक्रम्य । अव्ययी॰ । [illegible] । [illegible]+अच् । [illegible] (त्रि॰).

यथार्हवर्ण, (पु॰) यथार्ह (यथायोग्यं) वर्णयति । वर्ण+अण् । जो ठीक २ वर्णन करता है । चर । दूत । [illegible].

यथाशक्ति, (अव्य॰) शक्तेः आनुरूप्यम् । आनुरूप्ये अव्ययी॰ । शक्तिके अनुसार । ताकतके मुआफिक.

यथाशास्त्र, (अव्य॰) शास्त्रम् अनुसृत्य । अव्ययी॰ । शास्त्रानुसार । शास्त्रके मुआफिक.

यथास्थित, (अव्य॰) यथा (येन प्रकारेण) स्थितं [illegible] [illegible] । जैसे पहला था वैसा रहा । [illegible] अव्ययी॰ । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि॰).

यथेप्सित, (अव्य॰) [illegible] अनतिक्रम्य । अव्ययी॰ । [illegible] न छूटना । जैसे [illegible] । [illegible] । " [illegible] " [illegible] । इच्छाके अनुसार । " यथेष्ट " [illegible].

यथोचित, (अव्य॰) उचितस्य अनतिक्र[illegible] न लांघना । औचित्य । यथायोग्य । [illegible] (त्रि॰).

यद्, (त्रि॰) सर्वनाम जो । यस्मात् (जिसे [illegible]

यदा, (अव्य॰) यद्+दाच् । यस्मिन् काले । [illegible] जब.

यदि, (अव्य॰) यद्+णिच्-इन्-णिलोप । [illegible] जो । अगर.

यदु, (पु॰) ययातिराजाका बड़ा पुत्र ([illegible] श्रीकृष्णजीका अवतार हुआ) । "तस्य [illegible] बहुषु तस्य सुत्" । यदुके वंशमें हुआ [illegible] (ब॰ व॰).

यदुनाथ, (पु॰) यदूनां नाथः । यदुओंके [illegible] करनेसे) । श्रीकृष्णदेव । " यदुपति " [illegible]

यदृच्छा, (स्त्री॰) यत्+ऋच्छ+अ-टाप् । [illegible] स्वैरता । अपनी इच्छासे अचानक । स्वाधीन[illegible]

यदृच्छासंवाद, (पु॰) यदृच्छया संवाद [illegible] (अचानक) बातचीत (गुप्त).

यन्तृ, (पु॰) यम्+तृच् । सारथि । [illegible] और हाथीको पालनेवाला । संयमयुक्त ([illegible] रखनेवाला (त्रि॰).

यन्त्र, (न॰) यन्त्र+अच् । संयमन (रोकना) [illegible] आसन । ज्योतिषकको देखनेका साधन । [illegible] पदार्थ कला (कल) । एक प्रकारका पात्र ([illegible]

यन्त्रगृह, (न॰) ६ त॰ । कलघर । तेल निका[illegible] घर । कोल्हुघर.

यन्त्रण, (न॰) यन्त्र+ल्युट् । नियमन । रोक[illegible] बचाना और बन्धन (बांधना) । " [illegible] " (स्त्री॰) टाप्.

यन्त्रित, (त्रि॰) यन्त्र+क्त । नियत । रोक[illegible] किया हुआ । बांध लिया गया । [illegible] [illegible] लगाया गया.

यभ, मैथुन-भोगकरना । भ्वा॰ पर॰ सक॰ अ[illegible] अयाप्सीत्.

यम, उपरति । हटना । भ्वा॰ पर॰ [illegible] [illegible] । अयंसीत्.

यम, (पु॰) यम्+अच् । अहिंसा, [illegible] अस्तेय (चोरी न करना) [illegible] । और [illegible] संयमन (रोकना) " यमयति " [illegible] और बुरे कर्मोंके अनुसार दण्ड देनेवाला [illegible] [illegible] दक्षिण दिशाके एक [illegible] और काक (कौआ) । [illegible] (जैसा) (त्रि॰) । ([illegible]) [illegible] [illegible] । [illegible] और [illegible] (पु॰)

यमकोटि, (पु० स्त्री०) लंकासे पूर्वकी ओर देवताओंसे निर्माण कीगई पुरी.

यमज, (त्रि० द्वि० व०) यमः (एकदा, एकत्र गर्भे सहचरः) सन् जायते । जन्+ड । एकही समयमें एक-गर्भमें उत्पन्न हुए दो) (जौड़े).

यमद्रुम, (पु०) यमस्य द्रुमः । यमका वृक्ष । यमके दर्वाजेके पास शाल्मली (सिंबल)का दरख्त.

यमद्वितीया, (स्त्री०) ६ त० । कार्तिक (कतक) के शुक्लपक्षकी द्वितीया (दूज).

यमदग्नि, (पु०) मुनिविशेष । एक प्रकारका मुनि.

यमधानी, (स्त्री०) यमः धीयते अस्याम् । यमका निवास-स्थान । यमकी नगरी.

यमन, (न०) यम्+ल्युट् । बंधन । बांधना और हटना । " यमयति ल्यु " यमराज (पु०).

यमराज, (पु०) ६ त० । (चौदह) यमोंका राजा । यमोंके नियमपर चलनेहारा राजा । टच् समा० । प्रेतोंका राजा । धर्मराज । " यमोंमें शोभता है " राज्+क्विप्.

यमल, (न०) यमं (योगं) लाति । ला+क । युग्म । जोड़ा । वृन्दावनके पास एक वृक्ष । " यमलार्जुन ".

यमवाहन, (पु०) यमं वाहयति (स्थानात् स्थानान्तरं) नयति । वह्+ण्यर्थे णिच्+ल्यु । यमको एक जगहसे दूसरी जगहपर ले जाता है । महिष । भैंसा । यमराजकी सवारी.

यमानी, (स्त्री०) यच्छति अभिमान्द्यं जनता । यम्+करणे ल्युट्+ङी० आनुक् । जो अग्निकी मन्दताको दूर करती है । अजमोदा । यमानिका । अजवैन । अवेन.

यमुना, (स्त्री०) यम्+उनन् । कालिन्दी नदी । जमना नदी । यमकी बहिन । सूर्यकी कन्या । और दुर्गा.

ययाति, (पु०) यत्न (यातोः इव) याति (सर्वत्र) गति. अस्य । जिसकी इच्छाके समान गति है । नहुषका पुत्र । एक राजा । (इसने शुक्रकी कन्या देवयानीको विवाही थी, सबसे छोटे पुत्र पुरुको युवापन देकर एक-हजार वर्षतक भोगोंके भोग भोगे तौभी तृप्त नहीं हुआ, पीछे विषयोंकी निन्दाकर पुरुको राज्य देकर वनमें तपस्वी हुआ).

ययु, (पु०) या+उ-द्वित्वं च । अश्वमेधका घोड़ा । वेगवान् घोड़ा.

यव, (पु०) यु+अच् । जौ । " यवान्ने सब छलोंके सबसे श्रेष्ठ कहते हैं । और यवकेही सब औषधयव हुए कहते हैं."

यवक्षार, (न०) यवस्य क्षारं क्षेत्रम् । यव्य । जौ-जौकेलायक खेत.

यवन, (पु०) यु+ल्यु । एकदेश । उस देशके लोग । ब० व० । वेग । जोर । बहुत जल्दी चलनेवाला घोड़ा । गोधूम । आढ़ । तुरुष्क जाति । तुरक लोग । वेगवाला (त्रि०).

यवनप्रिय, (न०) ६ त० । यवनोंका पियारा । मरिच । मिरच.

यवनानी, (स्त्री०) यवनानां लिपिः । ङीष्-आनुक् । यवनोंकी लिपि । तुरकोंका हाथका लिखा.

यवनारि, (पु०) यवनस्य अरिः । यवनका दुश्मन । श्रीकृष्ण.

यवनिका, (स्त्री०) युवतिः अस्याः । यु+ल्युट्-ङीप्-कन् । जवनिका । इसमें छिपते हैं । कनात । जवनिका.

यवनी, (स्त्री०) यु+ल्युट्+ङीप् । यवनी जन औरत । यवनकी स्त्री.

यवमध्य, (न०) यवस्येव मध्यं यस्य । जौके समान जिसका मध्य है । एक प्रकारका चान्द्रायण व्रत.

यवस, (न०) यु+असच् । घास । तृण.

यवागू, (स्त्री०) यूयते (मिश्र्यते) यु+आगू । छःगुना पानीसे पकाहुआ एक प्रकारका द्रवद्रव्य । लप्सी । लिवसी.

यविष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन युवा । युवन्+इष्ठन् । यवादेशः । बहुत जवान । कनिष्ठ भ्राता । छोटा भाई

यव्य, (न०) यवानां भवनं क्षेत्रं यत् । जौ जौकेलायक खेत । "युतः चतुर्थी अन्त" । जहां यव और प्रायः मिलते हैं । चान्द्रमास (चान्द्रमासवाली महीना) (पु०)

यशःपटह, (पु०) यश इत्यस्य पटह । यशको प्रकट करनेहारा बाजा । ढक्का । एक प्रकारका बाजा

यशःशेष, (त्रि०) यश एव शेषं अस्य । जिसका यश ही बाकी है । मृत । मरामरा । "यशःशेष" इसी अर्थमें है.

यशस्, (न०) अश्+असुन् युट् च । ...उत्पन्न हुआ "यशस्" इस शब्दसे अन्तर्गत करते । कीर्ति । सत्कीर्ति.

यशस्या, (स्त्री०) यशसे हिता । यशस्+यत् । जीवन्ती । ऋद्धि नाम औषध । यशका साधक (त्रि०).

यशस्वत्, (त्रि०) यशस्+मतुप्-"म" को "व" होता है । यशवाला । "कीर्ति" "यशस्वी" इसी अर्थमें । कीर्तिमान्

यशोद, (पु०) यशो ददाति । पारद । पारा । यश देता है । पारद । यशको देनेहारा (त्रि०) । यश्+उद्+द । कर्पूरयुक्त पारी (औषध).

यशोदर, (त्रि०) यशः ददाति । यशको देनेवाला । कर्पूरपर (

युग्य, (न०) युगं अर्हति+यत् । जिसके साथ जूआ लगाना चाहिये । वाहन । सवारी । यान । "जूएको उठानेवाला" घोडाआदि.

युच्छ्, प्रमाद (भूलना) । बेपर्वाह होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । युच्छति । अयुच्छीत्.

युज्, संगम-मिलना-जुडना । चु० उभ० पक्षे भ्वा० प० सक० सेट् । योजयति-ते । योजति.

युज्, युति (जुडना) रुधा० उभ० सक० अनिट् । युनक्ति-युङ्क्ते । नियुङ्क्ते । प्रयुङ्क्ते । निर्युनक्ति । अयुजत्-अयौक्षीत्-अयुक्त.

युज्, योग-जुडना और समाधि लगाना । दिवा० अक० अनिट् । युज्यते । अयुक्त.

युज्, (पु०) दि० युज्+क्विप् । समाधिवाला । युक्-युजौ । रु० युज्+क्विप् । संयोगवाला । मिलाहुआ (त्रि०) युङ्.

युञ्जान, (पु०) युज्+शानच् । योगविशेषवाला । भावनाके साथ सम्पूर्ण पदार्थोंको जानेहारा । "चिन्तासहकृतोऽपरः" योगविद्यासे सब कुछ जानेहारा योगी । रथसारथि । गाडीवान । और विप्र (ब्राह्मण).

युत्, (दीप्ति) चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । योतते । अयोतिष्ट.

युत, (त्रि०) यु+क्त । संयुक्त । मिलाहुआ और न मिलाहुआ.

युतक, (पु०) युत+क । युत+क वा । ततः स्वार्थे कन् । संशय । शक । युग । जोडा । स्त्रीके कपडेका पल्ला (किनारा) । पाँवके आगेका भाग । यौतुकधन । दहेज (दाज) । मैत्रीकरण । दोस्ती लगाना । संयुक्त (मिलाहुआ) (त्रि०).

युतवेध, (पु०) विवाहआदिमें लग्न देनेलायक चंद्रमाके साथ पापग्रहोंका योग (जुडना).

युद्ध, (न०) युध्+क्त । शस्त्रआदि चलानेका व्यापार (काम) । लडाई । संग्राम.

युध्, युद्ध-लडाई करना । दिवा० आ० सक० अनिट् । युध्यते । अयुद्ध.

युध्-धा, (स्त्री०) युध+क्विप् । वा टाप् । युद्ध । जंग । लडाई.

युधान, (पु०) युध+आनच् । लडनेवाला । क्षत्रिय.

युधिष्ठिर, (पु०) युधि (युद्धे) स्थिरः "गवियुधिभ्यां स्थिरः" इति षत्वम् । लडाईमें स्थिर (कायम-पक्का) । पाण्डवोंमें ज्येष्ठ.

युमिथुन, (मिलना) अमिश्रण (न मिलाना) । अ० प० स० सेट् । यौति । अयावीत्.

युयुधान, (पु०) युध+कानच् । इन्द्र । सात्यकिनामी यादव । एक क्षत्रिय । शत्रुदमन.

युवखलति, (स्त्री०) युवतिः एव खलती । ह... ही सिरकी गंजी है । एक प्रकारके रोगवाली... "युवजरती" इसी अर्थमें है.

युवति-ती, (स्त्री०) । युवन्+ति ङीप् वा । ... स्त्री । जवान औरत । युवन्+ङीप् । "यूनी" है...

युवन्, (त्रि०) यु+कनिन् । श्रेष्ठ । बहुत बल... बलवाला । जवान । सोलह वरिसतक "बाल"... न्तर तरुण अर्थात् "जवान" कहाजाता है

युवनाश्व, (पु०) सूर्यवंशमें हुआ मान्धाता... एक राजा.

युवराज, (पु०) युवैव राजा+टच् सना० । ... राजा । राजाके लायक कुछ काम करनेवाला... (राजकुमार).

युप्, भजन (सेवा करना) पर० सक० सेट् । ... अयोपीत्.

युष्मत्, (त्रि०) युष्+मदिक् । भवत्शब्दके स... सर्वनाम है । आप । तुम्हारा । यह तीनों लिं... जैसा है.

यूक, (पु० स्त्री०) यु+क्विप्-कन् । मत्कुण । ... (स्त्री०) टाप्.

यूति, (स्त्री०) यु+क्तिन् । नि० । दीर्घः । मि... मिलाप । मिलाना.

यूथ, (न०) यु+थक् । पृ० । दीर्घः । सजातीय... एकजातका समूह । समूह.

यूथनाथ, (पु०) ६ त० । वन्यगजयूथन । जंग... ओंका सर्दार । "यूथप" आदि इसी अर्थमें है.

यूप, (न०) यु+पक् । पृ० । दीर्घः । यज्ञमें ... नेकी लकडी । संस्कार कीगई एक प्रकारकी ... का खंबा । और यज्ञकी समाप्तिका चिह्न (... नेके लिये एक खंभ । जयस्तम्भ । जीतका चिह्न ((पु०).

यूष, वध (मारना) भ्वा० पर० सक० सेट् । ... अयूषीत्.

योक्त्र, (न०) युज्यते अनेन । युज्+ष्ट्रन् । ... दाम । जूएके साथ हल बांधनेकी रस्सी

योग, (पु०) युज्+भावादौ घञ् । संयोग । मे... ना । उपाय । कवचादिधारण । त्रिरक्षणीय ... ध्यान । "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" इस पत... सार सब विषयोंसे मनकी वृत्तिओंका निरोध (... जीवात्मा और परमात्माका एक होना । युक्ति । ... छल । विश्वास आदि । अप्राप्तप्राप्तिरूप । ... हना । सम्प्रयोग.

पित्त, (न०) रक्तेन दुष्टं पित्तं यस्मात्। जिससे लोहूके वे पित्त बिगड़ जाता है। एक प्रकारका रोग। "रक्तपित्त भवेत् कास." इति वैद्यकम्

ोक्षण, (न०) ६ त० । लोहू (खून) का छुड़ाना। धरसावण। लोहू बहाना (निकल्वाना).

यष्टि, (स्त्री०) रक्तवर्णा यष्टिः अस्याः। जिसकी लता बेल) लाल रंगकी हो। मंजिष्ठा। मजीठ। "सार्थे न्" यही अर्थ.

वर्ग, (पु०) रक्तानां वर्गः (समुदायः)। लाल रंगवा- लेका समूह। दाडिम (अनार)। किंशुक (केसू)। लाक्षा (लाख), बंधूक, हरिद्रा (हरदी), जवा, कुसुम्भे- के फूल, मंजिष्ठा (मजीठ), और अलक्तकरसमूह.

वृष्टि, (स्त्री०) ६ त० । लोहूकी वर्षा। दैवसे किया- हुआ एक प्रकारका उपद्रव। खूनकी बारिश.

सरोरुह, (न०) कर्म० । लाल कमल। रक्तपद्म.

सर्षप, (पु०) कर्म० । लालसरिसों। राजिका। रती.

सार, (न०) रक्तः सारः अस्य। लाल सारवाला। रक्तचन्दन। लाल चंदन। अम्लवेतस (पु०) अम्लवेत.

सौगन्धिक, (न०) कर्म० । रक्तवर्णकह्लार। लाल रंगवाला कमल.

ाक्ष, (पु०) रक्ते अक्षिणी यस्य+षच् समा०। जिसकी लाल आँखें हों। पारावत। मीठी आवाज निकालनेवाला कबूतर। महिष (भैंसा)। चकोर। और सारस। लाल आँखवाला। क्रूर (बेरहम)। और जन (त्रि०) ङीप्.

ाङ्ग, (न०) रक्तं अङ्गं यस्य-यस्माद्वा। कुङ्कुम। केसर। मंगलग्रह (पु०) प्रवाल (मूंगा) (पु० न०)। मजीठ (स्त्री०).

क्ति, (स्त्री०) रञ्ज्+क्तिन्। प्रसन्न होना। प्यार होना। अनुराग होना। मनोहरता। आसक्ति। भक्ति। मुहब्बत.

क्तिका, (स्त्री०) रक्तैव+कन् अत इत्वं। गुञ्जा। रत्ती। एकमाप.

क्ष्, पालन (रक्षा करना-बचाना)। भ्वा० सक० प० सेट्०। रक्षति। अरक्षीत्.

क्षःसभ, (न०) रक्षसां (राक्षसानां) सभा। राक्षसोंका समूह.

क्षक, (त्रि०) रक्ष्+ण्वुल्। रक्षाकर्ता। रक्षाकरनेवाला.

क्षस्, (न०) रक्ष्यते हविः अस्मात्। रक्ष्+अपादानेऽसुन्। जिससे यज्ञका हविः (घी आदि) बचाया जाता है। राक्षस.

क्षा, (स्त्री०) रक्ष्+अ-टाप्। रक्षण। बचाना। अनु- टाप्। जतु (लाख)। और भस्म (राख-खाक) (स्त्री०) रक्ष्+अच्। रक्षक। बचानेवाला (त्रि०).

क्षाकरण्डः-करण्डकं, (पु० १ न०) रक्षायाः करण्डकः-कं रक्षाका करण्डक (गंडा-तबीज)। एक जादूकी टोकरी.

रक्षापत्र, (पु०) रक्षार्थं पत्रं अस्य। जिसका पत्ता रक्षाके लिये हो। भोजपत्रका वृक्ष। भूर्जपत्रतरु.

रक्षित, (स्त्री०) रक्ष्+क्त। रक्षा कियाहुआ। हिफाजत कियागया.

रक्षितृ, (त्रि०) रक्ष्+तृच्। रक्षा करनेवाला। बचानेवाला.

रक्षिवर्ग, (पु०) रक्षिणां वर्गः। सैन्यादिरक्षक। सेना आदिका रखवारा। रखवारोंका समूह। बहुतसे सिपाही। बहुत पहिरवाले.

रक्षोघ्न, (न०) रक्षो हन्ति। हन्+टक्। राक्षसको मारता है। काञ्जिक। कांजी और हींग। इनका गंध सूंघनेसे राक्षस भाग जाते हैं। भल्लातकवृक्ष। और पिंडी सरिओं (श्वेतसर्षप) (पु०)। ऋग्वेद आदिमें प्रसिद्ध "कृणुष्व- पाजः" इत्यादि सूक्त (गीत) विशे। (न०) वचा (स्त्री०)। राक्षसोंको घात करनेवाला कोई द्रव्य (पदार्थ) (त्रि०).

रक्षोहन्, (पु०) रक्षो हन्ति। हन्+क्विप्। गुग्गुल (इस- का गंध सूंघनेसे राक्षस भाग जाते हैं) और पिंडी (गोरी) सरिओं। राक्षसको मारनेवाला (त्रि०)। "रक्षोहा बल- गहन" श्रुतिः.

रख्, सर्पण (सरकना)। भ्वा० प० अ० सेट्। रखति। अरखीत्-अराखीत्.

रग्, गति (जाना)। भ्वा० आ० सेट्। इदित्। रंगति। अरंगीत्.

रघ्, गति (जाना)। भ्वा० आ० सक० सेट्। इदित्। रङ्घते। अरङ्घिष्ट.

रघु, (पु०) लघ्-उ। "ल" को "र" होता है। सूर्यके वंशमें दिलीप राजाका पुत्र। "रघो अपत्यं" अण् (बहुव- चनमें प्रत्ययका लोप होता है)। रघुके वंशमें अज आदि क्षत्रिय। ब० व०। "तान् अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+अण्" उनके विषयमें ग्रन्थ बनायागया। आख्यायिका (अण्का लोप होता है)। कालिदासके रचाहुआ उन्नीस सर्गका महा- काव्यविशेष (पु०)

रघुनन्दन, (पु०) रघून् नन्दयति। नन्द्+णिच्+ल्यु। रघु- ओंको प्रसन्न करता है। दशरथका बड़ा पुत्र श्रीरामचन्द्र.

रघुनाथ, (पु०) रघूणां नाथः (रक्षकत्वात्-श्रेष्ठत्वात् वा)। रघुओंका स्वामी (मालिक)-रक्षा करनेसे वा उनमें बहुत अच्छा होनेसे। श्रीरामचन्द्र। "रघुपतिः".

रघुवर, (पु०) रघुषु वरः (श्रेष्ठः)। रघुओंमें बहुत अच्छा। श्रीरामचन्द्र.

रघूद्वह, (पु०) रघुषु उद्वहः (रक्षादिभारधारकः)। उद्- वह्+अच्। रघुओंमें रक्षा आदि बोझको उठानेहारा। दश- रथका बड़ा पुत्र (बेटा)। श्रीरामचन्द्र महाराज.

रङ्क, (त्रि०) रकि+अच्। कृपण (सूम)। और मन्द (सुस्त).

रङ्कु, (पु०) रकि+उ। मृगविशेष। एक प्रकारका हरिण

योद्धृ, (पु०) युध्+तृन् । युद्धकर्ता । लडाई करनेवाला । बहादुर.

योध, (पु०) युध्+अच् । युद्धकारक । जंग करनेहारा । "भावे घञ्" । युद्ध लडाई । जंग.

योधन, (न०) युध्+भावे ल्युट् । युद्ध । लडाई । जंग । "करणे ल्युट्" अस्त्र आदि आयुध (औजार) । "कर्तरि ल्युट्" युद्धकर्ता । लडाई करनेवाला । जंगी (पु०).

योधसंराव, (पु०) योधाना (युद्धाय) संरावः (आह्वानं) । योधाओंका युद्धके लिये आपसमें बुलाना.

योनि, (पु० स्त्री०) यु+नि । मणिआदिके उपजनेकी जगह । आकर (खान-खान) । कारण (सबब) । जल । स्त्रियोंका असाधारण (खास) चिह्न (निशान) । कुल । पूर्वफल्गुनी नाम नक्षत्र (तारा) । वा ङीप्.

योनिज, (न०) योनिस्थानात् जायते । जन्+ड । योनिकी जगहमें निकलता है । एक प्रकारका शरीर । मनुष्य आदि.

योनिमुद्रा, (स्त्री०) योन्याकारा मुद्रा । तन्त्रमें देवताकी पूजाका अंग योनिके आकारमें अंगुलिओंको दिखलाना.

योषा, (स्त्री०) युष्+अच्-टाप् । स्त्री । नारी । औरत.

योषित्, (स्त्री०) युष्+इति । नारी । औरत । "योषिता" [illegible] अर्थ.

[illegible], (त्रि०) [illegible] । युक्तिसिद्ध । [illegible] [illegible] ([illegible]) । "[illegible] अधिष्ठानः [illegible]" [illegible] । [illegible] मानी [illegible] वजीर.

[illegible], (त्रि०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] और [illegible] मालूम [illegible] । [illegible] । [illegible] "[illegible]" [illegible] "[illegible]," [illegible] [illegible] के लायक.

[illegible], (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] मिलाहुआ धन । [illegible] धन

[illegible], (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] [illegible] मिलाहुआ धन.

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] होता है.

[illegible] (त्रि०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (पु०)

[illegible] (न०) [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

यौवनकण्टक, (पु० न०) [illegible] जवानीका मानों कांटेकी नाईं निकल [illegible] फोडा.

यौवनदर्प, (पु०) यौवनस्य दर्पः [illegible]

यौवनदशा, (स्त्री०) कर्म० । तारुण्य । [illegible]

यौवनलक्षण, (न०) ६ त० । [illegible] [illegible] । और सुन्दरता (खूबसूरती) । [illegible]

यौवनस्थ, (त्रि०) यौवने स्थितः । [illegible] होगया । विवाह करदेनेके लायक.

यौवनाश्व, (पु०) मांधाता राजा । [illegible]

यौवराज्य, (न०) यौवराज्ये अभिषिक्त [illegible] अभिषेक कियागया । पिताके जीतेजी [illegible] मिलना । युवराजका काम.

यौष्माक, } (त्रि०) युष्माकं इदं । [illegible]
यौष्माकीण, } युष्माकारेका । [illegible]

र

र, (पु०) रा+ड । वह्नि । [illegible] । उग्र । तेज । तेज की अग्नि.

रंहस्, (न०) रहि+असुन् । वेग । तेजी । [illegible] जल्दीपन.

रक्त, (न०) रञ्ज् (करणे) क्त । कुंकुम । केसर [illegible] तांबा । सिंदूर । शरीरकी सात धातुओंमेंसे [illegible] नामी धातु (पु०) "कर्त्तरि क्त" लाल ([illegible] और लालरंग (पु०) । लालरंगवाला (त्रि०) [illegible]" अनुरक्त । क्रीडारत (जो रंगमें लगाहुआ है) (त्रि०) । गुञ्जा (रत्ती) (स्त्री०).

रक्तकन्द, (पु०) रक्तवर्ण कन्द [illegible] । [illegible] [illegible] । विद्रुम । मूंगा.

रक्तचन्दन, (न०) कर्म० । [illegible]

रक्तचूर्ण, (न०) कर्म० । सिंदूर.

रक्ततुण्ड, (पु०) रक्तं तुण्डं [illegible] । [illegible] तोता

[illegible], (स्त्री०) [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] का नाम.

[illegible], (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible]

[illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] होता है ।

[illegible] (पु०) [illegible] (त्रि०) । [illegible] (स्त्री०).

[रक्त]पित्त, (न०) रक्ताय दुष्टं पित्तं यस्मात्। जिससे लोहूके लिये पित्त बिगड़ जाता है। एक प्रकारका रोग। "रक्तपित्तं भवेद् यातः." इति वैद्यकम्.

[रक्त]मोक्षण, (न०) ६ त० । लोहू (खून) का छुड़ाना। शिरावेध। लोहू बहाना (निकलवाना).

[रक्त]यष्टि, (स्त्री०) रक्तवर्णा यष्टिः अस्याः । जिसकी लता (बेल) लाल रंगकी हो । मंजिष्ठा । मजीठ । "रक्तयष्टि" यही अर्थ.

[रक्त]वर्ग, (पु०) रक्तानां वर्गः (समुदायः) । लाल रंगवालोंका समूह । दाड़िम (अनार) । किंशुक (केसू) । लाक्षा (लाख), बंधूक, हरिद्रा (हरदी), जवा, कुसुम्भेके फूल, मंजिष्ठा (मजीठ), और अलक्तकादिसमूह.

[रक्त]वृष्टि, (स्त्री०) ६ त० । लोहूकी वर्षा । दैवसे गिरा हुआ एक प्रकारका उपद्रव । लाल रंगकी वारिश.

[रक्त]सरोरुह, (न०) कर्म० । लाल कमल । रक्तपद्म.

[रक्त]सर्षप, (पु०) कर्म० । लाल सरसों । राजिका । राई.

[रक्त]सार, (न०) रक्तः सारः अस्य । लाल सारवाला । रक्तचन्दन । लाल चंदन । अम्लवेतस (पु०) अम्लवेत.

[रक्तो]त्पलगन्धिक, (न०) कर्म० । रक्तोत्पलवत् । लाल रंगवाला कमल.

[रक्ता]क्ष, (पु०) रक्ते अक्षिणी यस्य-बहु० समा० । जिसकी लाल आँखें हों । पारावत । मीठी आवाज निकालनेवाला कबूतर । महिष (भैंसा) । चकोर । और सारस । लाल आँखवाला । क्रूर (बेरहम) । और भय (त्रि०) डीप्.

[रक्ता]ङ्ग, (न०) रक्तं अङ्गं यस्य-बहुव्रीहि । कुंकुम । केसर । मंगलग्रह (पु०) प्रवाल (मूंगा) (पु० न०) । मजीठ (स्त्री०)

[रक्ति], (स्त्री०) रञ्ज्+क्तिन् । प्रसन्न होना । प्यार होना । अनुराग होना । मनोहरता । आसक्ति । भक्ति । सुन्दरता.

[रक्ति]का, (स्त्री०) रक्त+कन् आप् इत्वं । गुंजा । रत्ती । घुंघची.

[रक्ष्], भ्वादि० (रक्षा करना-बचाना) । भ्वा० सक० प० सेट्० । रक्षति । अरक्षीत्

[रक्षः]सभ, (न०) रक्षसां (राक्षसानां) सभा । राक्षसोंका समूह.

[रक्ष]क, (त्रि०) रक्ष्+ण्वुल् । रक्षक । रक्षा करनेवाला.

[रक्ष]ण, (न०) रक्षते [illegible] रक्ष्+ल्युट् । जिससे रक्षा होवे (जो कार्य) बचाया जाता है । रक्षण

[रक्ष]ा, (स्त्री०) रक्ष्+अ+टाप् । रक्षण । बचाव । भस्म । लाक्षा (लाख) । और रक्षा (रक्षण) (स्त्री०) रक्ष+अच् । रक्षक । बचानेवाला (त्रि०).

[रक्षा]करण्डक-करण्ड, (पु० न०) रक्षायाः करण्डक-कं रक्षाका डिब्बा ([illegible]) । एक प्रकारकी पेटी.

रक्षापत्र, (पु०) रक्षायै पत्रं अस्य । जिसका पत्ता रक्षाके लिये हो । भोजपत्रका वृक्ष । भूर्जपत्र.

रक्षित, (स्त्री०) रक्ष्+क्त । रक्षा किया हुआ । हिफाजत किया गया.

रक्षितृ, (त्रि०) रक्ष्+तृच् । रक्षा करनेवाला । बचानेवाला.

रक्षिवर्ग, (पु०) रक्षिणां वर्गः । सिपाहियोंका । पहरेदार आदिका समूह । रक्षकोंका समूह । बहुतसे सिपाही । बहुत रक्षिकोंके.

रक्षोघ्न, (न०) रक्षो हन्ति । हन्+टक् । राक्षसोंको मारता है । कांजिक । कांजी और हींग । इसके गन्धसे राक्षस भाग जाते हैं । भल्लातक । और हिंगुवृक्षकी ([illegible]) (पु०) । [illegible] "[illegible]" इत्यादि मन्त्र ([illegible]) विशे० (न०) वच (स्त्री०) । राक्षसोंको नाश करनेवाला कोई द्रव्य (पदार्थ) (त्रि०)

रक्षोहन, (पु०) रक्षो हन्ति । हन्+क्विप् । गुग्गुल (इसका धूम राक्षसोंको नाश करता है) और हिंगु (हींग) [illegible] । राक्षसोंको नाश करनेवाला (त्रि०) । "[illegible]" श्रुति.

रख्, गत्यर्थ (गमन) । भ्वा० प० अ० सेट् । रखति । अरखीत्-अराखीत्.

रग्, शङ्कायां (शंका) । भ्वा० प० सेट् । रगति । रेगे । अरगीत्

रङ्घ्, गतौ (जाना) । भ्वा० आ० अक० सेट् । रङ्घते । रङ्घ्ने । अरङ्घिष्ट.

रघु, (पु०) लङ्घ+उ । "ल" को "र" होता है । [illegible] सूर्यवंशी दिलीप राजाका पुत्र । [illegible] ([illegible] बहुत प्रकारका भेद होता है) । [illegible] हारित । [illegible] । "[illegible]" [illegible] जिसकी [illegible] । [illegible] ([illegible] होते हैं) । [illegible] (पु०)

रघुनन्दन, (पु०) [illegible] । [illegible] ।

रघुनाथ, (पु०) रघूणां नाथः ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] "[illegible]"

रघुपति, (पु०) रघुपतिः ([illegible]) । [illegible]

रघुवंश, (पु०) रघुवंशः ([illegible]) । [illegible]

रघ्व, ([illegible]) [illegible]

रङ्क, (पु०) [illegible]

रङ्ग, (पु॰) रञ्ज्+घञ् । एक प्रकारका धातु (रांगा) । "रञ्ज्+भावे घञ् । राग । "आधारे घञ्" रणभूमि (जंगकी जगह) । और नाट्यस्थान (तमाशेकी जगह) । "करणे घञ्" नृत्य (नाच) । टङ्कण (सुहागा).

रङ्गज, (न॰) रङ्गात् (रङ्गधनोर्जायते) जन्+ड । रङ्ग् धातुसे उत्पन्न होता है । सिंदूर । सिंधूर । सन्दूर.

रङ्गजीवक, (पु॰) रङ्गेन (रञ्जनेन) जीवति । जीव्+ण्वुल् । रंगनेसे जीता है । रंगरेज । छिपारी । एक प्रकारका कारीगर । चित्रकर । मूरत लिखनेवाला । नाट्यजीवी । [illegible] करके जीनेवाला.

रङ्गद, (पु॰) रङ्गं (रञ्जनं रागं) ददाति । दा+क । टंकण । [illegible].

रङ्गभूमि, (स्त्री॰) रज्यते अत्र रञ्ज्+घञ् । कर्म॰ । नाट्यभूमि । नाचनेका स्थान । और रणभूमि (पहिलवानोंका [illegible]).

रङ्गमातृ, (स्त्री॰) रङ्गस्य (रागस्य) माता इव उत्पादिका । [illegible] । [illegible] (लाख) । और कुटिनी ([illegible] और [illegible] आदिसे राग प्रेम [illegible] है).

रङ्गशाला, (स्त्री॰) रज्यते अत्र । कर्म॰ । नृत्य होनेकी जगह । [illegible] । [illegible].

रङ्गाजीव, (पु॰) रङ्ग (रञ्जनं) आजीवनं (वा) [illegible] । [illegible] । रंग का आधार जो जीता है । [illegible] । एक प्रकारका कारीगर । चित्र लिखनेवाला । नट.

रङ्गावतारक, (पु॰) रङ्गे (रङ्गस्थाने) अवतरति ([illegible]) । अव+तॄ+ण्वुल् । [illegible] ([illegible]) [illegible] । नट । [illegible] "[illegible]" [illegible].

रङ्गुर, (न॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

रचना, (स्त्री॰) [illegible] । [illegible] । बनाना । [illegible] [illegible] ([illegible])

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रजताचल, (पु॰) रजतकल्पितः अचलः । [illegible] के लिये कल्पना कियाहुआ चांदीका पहाड़ । शुभ्रः अचलः" चांदीकी नाईं [illegible] पहाड "रजतगिरिः" आदि-यही अर्थ है.

रजन, (न॰) रञ्ज्+ल्यु । राग । रंग.

रजनी, (स्त्री॰) रज्यते अत्र । [illegible] (रात) । हरिद्रा (हल्दी).

रजनीकर, (पु॰) रजनीं करोति । [illegible] है । चन्द्र । चांद.

रजनीचर, (पु॰) रजन्यां चरति । [illegible] फिरता है । राक्षस । चोर । और [illegible] देनेवाला.

रजनीजल, (न॰) रजन्याः जलं इव । [illegible] नीहार । बर्फ.

रजनीमुख, (न॰) [illegible] । [illegible] [illegible] होनेके पीछे चार घड़ी [illegible].

रजस्, (न॰) रञ्ज्+असुन् ("न" का लोप) । फूलोंकी रिरी । पराग । धूरी । [illegible] नेवाला प्रकृतिका गुणविशेष.

रजस्वल, (त्रि॰) रजः अस्ति अस्य+वलच् । रजोगुणवाला । महिष (भेंसा) (पु॰) । [illegible] मानुमती (स्त्री॰)

रज्जु, (स्त्री॰) सृज्+उ । नि॰ । [illegible] दाम । वेणी । गुण.

रञ्जक, (न॰) [illegible] । [illegible] प्रीति करनेवाला (त्रि॰) । [illegible]

रञ्जन, (न॰) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] (स्त्री॰) [illegible] । "[illegible]" । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] (पु॰)

[illegible] ([illegible]) [illegible]

रञ्जनी, (स्त्री॰) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रा, (स्त्री॰) (रणस्य धुरा) युद्धका जुआ । युद्धका र.

मक, (पु॰) रणः (शब्दः) तत्प्रकारः । द्विर्त्वं । ः ऐसाही बन्। उद्वेग । घबराहट । अभिलाष । गुण

रंकुल, (न॰) रणे रण संकुलम् । घमुलयुद्ध । बड़ा री जंग

ग, (न॰) रणस्य अङ्गं । रण (युद्ध)का अङ्ग (साधन) । ईमी युद्धका शस्त्र । धनुष्यबाण । तरवार.

जिर, (न॰) रणस्य अजिरम् । युद्धका आङ्गन (मैदा-) । युद्धक्षेत्र.

पेत, (त्रि॰) रणात् अपेतः । युद्धसे बाहिर हुआ भागाहुआ)

ताश्रमिन्, (पु॰) रण्डः (विफलः) (प्रजाहीनत्वात्) आश्रमः अस्ति अस्य । सन्तान न होनेसे जिसका आश्रम नेष्फल (बेफायदा) है । "चालीस या अड़तालीस बर्षकी उमरमें जो स्त्रीसे बिछुड़ गया हो" । जैसे (४० या ४८ वर्षकी उमरमें) बिछुड़ाहुआ पुरुष.

, (न॰) रम्+भावे क्त । रमण । क्रीड़ा करना । सोहबत । स्त्री और पुरुषका संगम (आपसमें मेल-जुड़ना) मैथुन । भोग । और । गुप्त (गोह) । "कर्तरि क्त" अनुरक्त (प्रीतिमें फसगया-आसक्त) (त्रि॰)

, (स्त्री॰) रम्+क्तिन् । राग । प्रीति । सुरत्यान । गुप्त । गोह । रमण । भोग विलास करना । कामदेवकी स्त्री.

तेपति, (पु॰) ६ त॰ । रतिका मालिक । कंदर्प । कामदेव । "रतिनन्दन" "रतिप्रिय" "रतिरमण" एकही अर्थ है.

बन्ध, (पु॰) रतस्य बन्धः । रत (स्त्री पुरुषकी क्रीड़ा)- का बंध (रचना) । भोगके समय स्त्री पुरुषका परस्पर- मिलाप.

तेरस, (पु॰) रतेः रसः । भोगका स्वाद (मजा) । भोगविलासका सुख.

तिसर्वस्वम्, (न॰) (रतेः सर्वस्वं) भोगविलासका सारा धन (सारा स्वाद).

, (न॰) रमते अत्र । रम्+न (तान्तादेशः) । जहां सुख होता है । माणिक्य (मणि) आदि पत्थर । अपनी २ जातिमें श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) । मानिक और हीरा.

लकूट, (पु॰) रत्नमयकूटः शृङ्गं अस्य । जिसकी चोटी रत्नोंकी हो । एक पहाड़.

लगर्भ, (पु॰) रत्नयुक्तं गर्भं मध्यं यस्य । जिसके बीच रत्न हों । समुद्र । और कुबेर । पृथिवी (जमीन) । अच्छे पुत्रवाली औरत (स्त्री॰).

रत्नद्वीप, (पु॰ न॰) रत्नमयो द्वीपः । रत्नोंका द्वीप (ज- जीरा) । तन्त्रमें अमृतके समुद्रमें रहनेके कारण ध्यान करनेलायक रत्नोंका बनाहुआ अन्तरीप.

रत्नपारायण, (न॰) रत्नानां पारायणं (साकल्येन स्था- नं) । सम्पूर्ण रत्नोंका पूरा २ स्थान । जहां सब रत्न रहते हैं.

रत्नमुख्य, (न॰) रत्नेषु मुख्यं । रत्नोंमें सार (अव्वल) । हीरक । हीरा.

रत्नवती, (स्त्री॰) रत्नानि सन्ति अस्याः+मतुप् । "म" को "व" होता है । रत्नोंवाली । पृथिवी । जमीन । रत्न- वाला (त्रि॰).

रत्नसानु, (पु॰) रत्नानि सानौ अस्य । जिसकी चोटीपर रत्न हों । सुमेरुपर्वत । सुमेरुका पहाड़.

रत्नसू, (स्त्री॰) रत्नानि सूते । सू+क्विप् । रत्नोंको उत्पन्न करती है । पृथिवी.

रत्नाकर, (पु॰) ६ त॰ । रत्नोंकी खान । समुद्र रत्नोंकी उत्प- त्तिका स्थान । मणिओंकी खान.

रत्नाभरण, (न॰) रत्नघटितं आभरणम् । शाक॰ । रत्नोंसे रचाहुआ भूषण (जेवर) । जड़ाऊ गहना.

रत्नावली, (स्त्री॰) ६ त॰ । रत्नोंकी कतार । रत्नोंका समूह । उनका बनाहुआ हार । वत्सराजकी पत्नी "रत्नावलीं अधिकृत्य कृतः ग्रन्थः+अण्" आख्यायिका (जिसमें रत्नावलीका वर्णन है) । एक नाटिका (जिसे श्रीहर्षने बनाया है.)

रत्नि, (पु॰ स्त्री॰) ऋ+क्त्निच् । बद्धमुष्टिहस्तपरिमाणम् । बंधीहुई मुट्ठीवाले हाथका माप । कोहनीसे छोटी अंगुलीतक का माप.

रथ, (पु॰) रम्यते अनेन । अत्र वा । रम्+क्थन् । जिससे आनंद उठाते हैं । एक प्रकारकी सवारी । गाड़ी । और शरीर (जिस्म) । "आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथ- मेव च" इति श्रुतिः । पाद (पाँव) । बेंत.

रथकट्या, (स्त्री॰) रथानां समूहः । रथ+कट्यच् । रथों- का समूह.

रथकार, (पु॰) रथं करोति । कृ+अच्-अण् वा । रथ- निर्माणकारक वर्णसंकरविशेष । गाड़ी बनानेवाला (सूत्र- धार) एक प्रकारका दोगला । तखान.

रथकूबर-र्न, (पु॰ न॰) रथस्य कूबरः । रथ (गाड़ी)का धुरा.

रथक्षोभ (पु॰) रथस्य क्षोभः । गाड़ीका इधर उधर हिलना (होये लगना).

रथगुप्ति, (स्त्री॰) रथस्य गुप्तिः । शस्त्रवारणार्थं रथा उप- धारात् तत् स्थानम् । रथका वह स्थान कि जहां पड़े- हुए शस्त्र (तलवारआदि) को रोकलिया जासकता है । रथका गुप्त स्थान.

रथचर्या, (स्त्री०) रथस्य चर्या । गाडीकी यात्रा (सफर)

रथन्तर, (त्रि०) रथेन तरति । तृ+खच्‌ मुम्‌ च । रथ-नेता । रथ लेजानेवाला । "अभि त्वा शूर" इस ऋचामें गायागया एक सामवेदका मन्त्र.

रथयात्रा, (स्त्री०) रथस्य यात्रा । रथकी यात्रा (चलना) । आषाढ (हाड) के शुक्लपक्षकी द्वितीयाके दिन करनेलायक एक उत्सव । इसमें मूर्तिको रथमें बैठाकर मनुष्य चलाते हैं.

रथाङ्ग, (न०) अङ्ग्यते (गम्यते) अनेन । अगि+करणे घञ्‌ । ६ त० । चक्र । पहिया । "रथाङ्गशब्दः वाचकत्वेन अस्ति अस्य+अच्‌" । रथाङ्गशब्द जिसका वाचक है । चक्रवाक (चकवा) (पु०).

रथाङ्गपाणि, (पु०) रथाङ्गं (चक्रं) पाणौ यस्य । जिसके हाथमें चक्र है । चक्रधर विष्णु । चक्रको धारण करनेवाला, परमेश्वर.

रथाभ्र, (पु०) रथ इव आध्रियते असौ । आ+धृ+क । बेतसवृक्ष । बेतका दरख्त.

रथारोहिन्‌, (पु०) रथं आरोहति । आ+रुह्‌+णिनि । रथपर चढता है । रथी । रथपर चढाहुआ । और रथपर युद्ध करनेहारा.

रथिक, (पु०) रथः (युद्धसाधनाधारत्वेन) अस्ति अस्य+ठन्‌ । रथ जिसके युद्ध करनेके लिये साधन है । रथी । रथपर चढकर लड़ाई करनेवाला । "इर" रथिरः "इन" रथिनः । "इनि" रथी । ये सब एकही अर्थमें.

रथोपस्थ, (न०) रथस्य उपस्थ इव । गाडीका मानो उपस्थ है । रथका मध्य (बीच).

रथ्य, (पु०) रथं वहति+यत्‌ । रथको लेजानेवाला घोडा । "रथस्य इदं" यत्‌ । रथसम्बन्धी (रथका) (त्रि०) । "रथस्य (तद्गमनस्य) योग्या सरणिः" । गाडी जानेके लायक सडक । प्रशस्तपथ (बहुत अच्छी सडक) । बीचका रास्ता । गली । "रथानां समूहः, यत्‌" । रथोंका समूह (बहुत गाडियें) (स्त्री०).

रद्‌, उत्खात (उखाडना) खोदना । भ्वा० प० स० सेट्‌ । रदति । अरादीत्‌ । अरदीत्‌.

रद, (पु०) रदति (उत्खनति) । रद्‌+अच्‌ । खोदता है । टुकडे २ कर्ता है । दन्त । दाँत । "भावे अप्‌" उत्खनन । खोदना.

रदच्छद, (पु०) रदान्‌ छादयति । छद्‌+णिच्‌ वा ह्रस्वः । दांतोंको ढांकता है । ओष्ठ । ओठ । होठ । "रदनच्छद".

रदन, (पु०) रद्‌+ल्यु । दंत । दांत । "भावे ल्युट्‌" विदारण । फाडना.

रध्‌, हिंसन (मारना) । पाक (पकाना) । दि० प० स० सेट्‌ । रध्यति.

रन्ध्‌, गण (गणन-गणना) ... (...) अक० ... उभ० सेट्‌ । आरशीट्‌ । अरन्‍ "णिच्‌" । "रशति" । मारने-शिकार करनेके अर्थमें तो) "रशति" ...) होता है.

रन्तिदेव, (पु०) रम्‌+क्तिन्‌ ... । एक राजा और कुत्ता । कुकुर.

रन्धन, (न०) रध्‌-पाक (पकाना) ल्युट्‌ । पकाना । रींधना.

रन्ध्र, (न०) रम्‌+क्रिप्‌ । धृ+क । कर्म० । छिद्र । सुराख । सूराग । दोष । ऐब । ज्योतिषमें आठवां स्थान.

रब, गति (जाना) सक० प० । शब्द करना । अ० भ्वा० सेट्‌ । इदित्‌ । रम्बति-न्ते । अरम्बीत्‌.

रभ्‌, औत्सुक्य (किसी वस्तुके लिये बहुत चाह करना । गले मिलना । भ्वा० आ० अक० रभते । अरब्ध । णिच्‌ । रम्भयति.

रभ्‌, शब्द करना । भ्वा० आ० अक० सेट्‌ । रम्भते । अरम्भिष्ट.

रभस, (पु०) रभ्‌+असच्‌ । वेग । तेजी । औत्सुक्य । बडी चाह । पहिले और पिछले ... करना.

रम्‌, क्रीडा-खेलना । भोगविलास करना । भ्वा० आ० अनिट्‌ । रमते । विरमति । उपरमति । ... सीत्‌ "प" राम.

रम, (पु०) रम्‌+अच्‌ । कान्त । पियारा । और कामदेव.

रमण, (पु०) रमयति । रम्‌+णिच्‌+ल्यु । गधा । वृषण । महारिष्ट । बडी तकलीफ । ... मालिक । जंबुद्वीपमें "रम्यक" नाम एक वर्ष (... "रम्‌+भावे ल्युट्‌" सुरत क्रीडा । भोगविलास । ल्युट्‌" । पटोलमूल । नीमकी जड । "कर्तृ" ... अगला भाग । (न०) । "रम्यते अनया" ... जिससे आनंद भोगते हैं । नारी । औरत । ...

रमणीय, (त्रि०) रम्यते अत्र । रम्‌+आधारे ल्युट्‌ । खूब सूरत.

रमल, (न०) एक प्रकारका ज्योतिःशास्त्र.

रमा, (स्त्री०) रमयति । रम्‌+अच्‌ । लक्ष्मी देवी है.

रमापति, (पु०) ६ त० । रमाका पति । विष्णु । "रमानाथ".

रमाप्रिय, (न०) ६ त० । लक्ष्मीका पियारा । कमल । विष्णु (पु०).

• (पु०) रमि+अच् । रेणु । धूली । और महिषासु-
.। पिता । एक दैत्य । कदली । केला । एक अप्सरा ।
या (कंजरी) । गौओंका शब्द (आवाज) । और
री (पार्वती) (स्त्री०).
(त्रि०) रम्यते अत्र+यत् । सुंदर । और बल्कर
ओर करनेवाला) । चम्पक (चंपा) । और बकाल ।
।रेश्यूल (न०) "रेंळयो वन्" जम्बूद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे
क.
।, (स्त्री०) रम्यते अत्र+यत् । जिसमें क्रीडा किया
ाता है । रात्रि । रात.
गति-जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । रयते-अरयिष्ट.
(पु०) रय्+अच् । वेग । तेजी । और प्रवाह.
क, (पु०) रम्+क्तिप् । "म" का लोप होनेपर "तुक्"
ा+क । कर्म० । एक मृग.
, गति (जाना) भ्वा० आ० सक० सेट् । ररिन् ।
ल्यते । अरल्पिष्ट.
(पु०) र-ध्वनि-शब्दकरना+अप् । शब्द । आवाज.
ग, (पु०) र+युच् । कोकिल । कोइल । और उष्ट्र ।
ऊंट । शब्द करनेवाला । और तीक्ष्ण । तेज (त्रि०).
, (पु०) र+इन् । सूर्य । सूरज । और अर्कवृक्ष ।
आकका वृक्ष.
ज, (पु०) रवेर्जायते । जन्+ड । सूर्यसे उपजता है ।
ालि । सावर्णिमनु । वैवस्वतमनु । सुग्रीव वानर । यम
यमुना (स्त्री०) । "रवितनय" आदि-इसी अर्थमें.
नेत्र, (पु०) रवि: नेत्रं यस्य । सूर्य जिसकी आंख है ।
विष्णु.
प्रियरत्न, (न०) रवे: प्रियं रत्नं । सूर्यका पियारा रत्न ।
मानक । और तामा.
प्रियलोह, (न०) रवे: प्रियं लोहं धातु: । सूर्यका पियारा
धातु । तामा.
, रस (शब्दकरना) । भ्वा० प० अक० सेट् । रसति.
ना, (स्त्री०) रश्+स्यु । कांची । तड़ागी । और
जिह्वा । जीभ.
श्म, (पु०) अश्+मि । धातो रट् । रश्+मि वा । किरण ।
घोड़े आदिकी रस्सी (लगाम) । और पक्ष्म (पलक) (न०).
, आस्वाद-स्वादलेना । चु० उ० स० सेट् । रसयति-ते.
, (पु०) रस्यते+अच् । आस्वाद्य । स्वादलेनेलायक ।
रसना (जीभ) इन्द्रियसे ग्रहण करनेलायक माधुर्य
(मिठास) आदि गुणविशेष । वह छह प्रकारका है).
मधुर (मीठा) अम्ल (तुरश्) लवण (सलोना) कटु
(कड़वा) तिक्त (तीखा) कषाय (कसैला) । शरीर-
में खायेहुए अन्नआदिका पहिला परिणाम (बदलना) ।
एक प्रकारका धातु । मीठे आदि रसवाला गुड आदि ।
फूलका मधु (मीठा) । अलंकारशास्त्रमें संचारी, व्यभि-
चारी, सहकारीसे प्रकट होनेवालक, रति आदि स्थायिभा-
वसाला शृङ्गार आदि । द्रव (बेल) । वीर्य । राग (मुह-
ब्बत) । द्रव (बहना) । पारद (पारा) । और जल
(पानी) । गंधरस (पु० न०).

रसकर्पूर, (न०) रसेन कर्पूर इव । रससे मानों कापूर
है । एक प्रकारका गंधवाला पदार्थ । कर्पूररस । पारा ।
रसका फूल.

रसघ्न, (पु०) रसं (पारदं) हन्ति । हन्+ टक् । पारेको
मारता है । सुहागा.

रसज, (न०) रसात् (भुक्तान्नात्) प्रथमधातोर्जायते ।
जन्+ड । खायेहुए अन्नके सारका पहिली धातुसे उप-
जता है । रुधिर । लोहू । लून । "गन्ने आदिके द्रवसे
उपजता है" गुड और मद्य कीट (शराबका कीड़ा) (पु०).

रसज्ञा, (स्त्री०) रसं जानाति अनया । ज्ञा+क ।
जिससे रसको जानता है । जिह्वा । जीभ । रस जाननेका
साधन । जीभके स्थानकी इन्द्रिय.

रसतेजस्, (न०) रसस्य (भुक्तान्नसारस्य) तेजः (सारः) ।
खायेहुए अन्नके सारका तेज । रुधिर । लोहू । लून.

रसन, (न०) रस्+ल्युट् । स्वाद । मजा और ध्वनि
(शब्द) । "करणे ल्युट्" । जिह्वा । जीभ । "पित्ते-
न दूने रसने सितापीनि" नैषधम्.

रसना, (स्त्री०) रसयते अनया । रस्+करणे ल्युट् । टाप् ।
जिससे रस लिया जाता है । जिह्वा । जीभ । तड़ागी ।
और रस्सी.

रसराज, (पु०) रसेषु-रसो वा राजा [redacted] श्रेष्ठत्वात्-राजते ।
रसोंमें चमकता है-वा रस मानों राजा है । पारद । पारा.

रसवती, (स्त्री०) रस (आस्वाद्यद्रव्यं) अस्ति अस्यां+
मतुप् । मस्य वः । जिसमें स्वाद लेनेलायक अन्नादि पदार्थ
हैं । पाकस्थान । पकानेकी जगह । रसोईखाना । महानस.

रसशोधन, (न०) रसं (पारदं-द्रवीभूतं द्रव्यं-स्वर्णादि [redacted])
शोधयति, शुध्+णिच्+ल्यु । पारा, बहाहुआ पदार्थ, अथ-
वा सोने आदिको जो साफ करदेता है । टंकण । सुहागा.

रसा, (स्त्री०) पाकजः रसः (माधुर्यादिरूपः) अस्ति
अस्या+अच् । पकाहुआ मीठा आदि रस जिसका है ।
पृथिवी । दाख.

रसातल, (न०) रसायाः तलं । एक पाताल । पृथिवीका
तला । भूमिके नीचेका सातवाँ पड़दा.

रसाभास, (पु०) रस इव आभासते । आ+भास्+अच् ।
रसकी नाईं प्रतीत होता है, वास्तविक नहीं.

रसायन, (न०) रसस्य अयनं इव । रसका मानों घर है ।
तक्र । छाछ । ... । कटी (कमर) । एक
द्दिर) । एक औषध (दवाई) । इस
... घर होजाती है.

रसायनफला, (स्त्री॰) रसायनं इव फलं यस्याः । जिस-का फल रसायनकी नाईं हो । हरीतकी । हर्रड.

रसाल, (न॰) रसं आलाति । आ+ला+क । सिल्हक । एक खुशबूदार चीज । गंधरस । सिखरिणी (एक पीने-का पदार्थ) । दूर्वा (दूब) । और द्राक्षा (दाख किस-मिस) (स्त्री॰) । आम्र (आम) । इक्षु (ईख-गन्ना) । पनस । गोधूम । गेहूं । पौंडागन्ना (पु॰).

रसास्वादिन्, (पु॰) रसं (पुष्परसं) आस्वादते । आ+स्वद्+णिनि । फूलके रसका स्वाद लेता है । भ्रमर । भौंरा । मधुर (मीठा) वा शृङ्गार आदिका स्वादलेने-वाला (त्रि॰) स्त्रियां ङीप्.

रसिक, (पु॰) रसं वेत्ति (अनुभवति)+ठन् । सारस-नामी पक्षी । अश्व (घोडा) । और हाथी । रसज्ञ । रसके जाननेवाला और रसवाला (त्रि॰).

रसेन्द्र, (पु॰) रसः (द्रवीभूतः) इन्द्र इव श्रेष्ठत्वात् । पिघलाहुआ, मानो इन्द्र है (सबमें अच्छा होनेसे) । पारद । पारा.

रसोत्तम, (पु॰) रस उत्तमो यस्य । जिसका उत्तम स्वाद है । मुद्ग । मूंगी.

रस्य, (न॰) रसात् (भुक्तान्नपरिणामात्) आगत+यत् । खायेहुए अन्नके पाकसे आया । रुधिर । लोहू । "रस्यते (आस्वाद्यते) रस्+यत्" । आस्वाद्य (स्वाद लेनेलायक (त्रि॰) "रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्याः" इति गीता.

रंह्, गति-जाना । चु॰ उ॰ अक॰ सेट् । रंहयति-ते । अररं-हत्-त.

रंहस्, (न॰) रंह्+असुन् । वेग । तेजी । जोर.

रह्, गति । जाना । भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट् । इदित् । रंह-ति । अरंहीत्.

रह्, त्याग (छोडना) । भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट् । रहति । अरहीत्.

रह्, त्याग (छोडना) । चु॰ उ॰ सक॰ सेट् । रहयति-ते.

रहस्, (न॰) रह्+असुन् । निर्जन । एकान्त । अकेले । गोप्य । छिपानेलायक । याथार्थ्य । ठीकपन । निर्जन । (अव्य॰).

रहस्य, (त्रि॰) रहसि भवः+यत् । एकान्तमें हुआ । गोप्य । छिपानेलायक । पोशीदह.

रहस्यभेद, (पु॰) रहस्यस्य भेदः । गुप्त बातका खोल देना (प्रकाश करडालना) । समझमें न आसकनेवाली बात । अद्भुतमाया.

रहस्याख्यायिन्, (त्रि॰) रहस्यं आख्याति । गुप्त बात (छिपी हुई बात)को कहनेवाला । रहस्यका वक्ता.

रहित, (त्रि॰) रह्-त्याग । कर्मणि क्त । वर्जित । छोड-दियाहुआ.

रा, दान (देना) और ग्रहण (लेना) । अद॰ अनिट् । राति । अरासीत्.

रा, (स्त्री॰) रा+क्विप् । काञ्चन (सोना) । देना.

राका, (स्त्री॰) रा+क । प्रतिपदा (शुक्लपक्ष ...) पूर्णमासी । पूरे चंद्रमावाली तिथि । ... जिसे पहिले पहिले रज (फूल) आई हो.

राक्षस, (पु॰) रक्ष एव+स्वार्थे अण् । ... जाति (जो प्राणियोंकी हिंसा करते है) ... मन्त्रीका नाम । एक प्रकारका विवाह । ... राजातिकी स्त्री । "रक्षस इदं अण्।" ... स्त्रियां ङीप् । दंष्ट्रा । दाड । चण्डिका.

राक्षसेन्द्र, (पु॰) राक्षस इन्द्र इव श्रेष्ठ ... मानो इन्द्र है । विश्रवाका बडा पुत्र । रावण.

राक्षा, (स्त्री॰) लक्ष्यते अनया । ... वृद्धिः । लभ्य रक्ष । लाक्षा । लाख.

राख्, शोषण (साफ करना) । भूषण (सजा... रण (हटाना) । सक॰ । सामर्थ्य (ताकत ... अक॰ भ्वा॰ पर॰ सेट् । राखति । अराखीत्...

राग, (पु॰) रञ्ज्+भावे घञ् । नि॰ । स्तव... वर्णन (बयानकरना) । प्रीति (प्रसन्न हो... राग (प्रेमकरना) । राजा । और चन्द्र... "करणे घञ्" लालरंग । उस रंगवाली ... "तेन रक्तं रागात्" इति पाणिनिसूत्रम् ... घञ्" वसन्त आदि नामसे प्रसिद्ध स्वरविशे... छह राग हैं-भैरव-कौशिक-हिंदोल-दीपक ... राग । प्रत्येक रागकी छह रागिनी हैं) । गुण...

रागाङ्गी, (स्त्री॰) रागयुक्तं अङ्गं यस्याः+ङी... अंग लाल है । मंजिष्ठा । मजीठ । २ त॰ । ... यही अर्थ (स्त्री॰).

रागारु, (त्रि॰) राग+आरुत् । जो दानकी ... ताहै परन्तु उसे पूर्ण नहिं करता.

रागिणी, (स्त्री॰) रागः अस्ति अस्याः+इनि । ... गीतका अंग । एक प्रकारका स्वर । रागवाली ... तवाली औरत) । गुस्सेवाला । अनुरक्त (... नेवाला) । कामुक (चाहनेहारा) । रतियुक्त (भोगविलास करनेवाला) (त्रि॰).

राध, (शक्ति)-लायक होना-समर्थ होना । ... सक॰ सेट् । राघते । अराघिष्ट.

राघव, (पु॰) रघोः गोत्रापत्यं+अण् । रघुके ... उस कुलमें प्रधान श्रीरामचन्द्रजी महाराज.

राङ्कव, (न॰) रङ्कोः अयं, विकारो वा+अण् । ... रोम(बालों)से बनायागया एकप्रकारका वस्त्र...

राजस, (त्रि०) रजसा निर्मितः+अण् । रजोगुणसे उत्पन्न-हुआ कर्मेन्द्रिय (वाक्-पाणि-पाद-पायु-उपस्थ) । और प्रसिद्धिके लिये कियागया कर्म (काम).

राजसभा, (न० स्त्री०) राज्ञां (नृपाणां) सभा । राजा-ओंकी सभा । नृपसमाज.

राजसूय, (पु०) राजा सूयते कण्ड्यतेऽस्मिन् । सू+क्यप् । राजाका करनेलायक एकयज्ञ.

राजस्व, (न०) राज्ञे देयं स्वं (करूपम्) धनम् । राजाको देनेलायक (कर-मसूल-खिराज) धन । ६ त० । राजाका धन.

राजहंस, (पु०) हंसानां राजा (श्रेष्ठत्वात्) । पर० नि० । एक हंस (जिसकी चोंच और चरण लाल हों और रंग चिट्टा हो) । कलहंस । " राजा हंस इव (सारग्रहणात्) । राजा मानों हंस है (सारग्रहण करनेसे) । अच्छा राजा.

राजादन, (न०) राज्ञा अद्यते । अद् । कर्मणि ल्युट् । (उसके फल और बीजके लुबनाकर) राजासे खाया जाता है । पियालवृक्ष (जिसके फल और बीजसे लुब-नाकर राजासे खाये जाते हैं) । क्षीरिका । और केसु.

राजाधिकारिन्, (पु०) राजानं अधिकरोति । सरकारी अफसर (अधिकारी) न्यायकर्ता । जज । इन्साफ कर-नेवाला.

राजाधिष्ठान, (न०) राज्ञः अधिष्ठानं । राजधानी । राजाके निवासका नगर ।

राजाम्र, (पु०) आम्राणां राजा (श्रेष्ठत्वात्) नि० । आम्र-विशेष.

राजाम्ल, (पु०) अम्लानां राजा (श्रेष्ठत्वात्) पर० नि० । आम्लवेतस । अंबलवेत । खट्टा बेत.

राजार्ह, (न०) राजानं अर्हति । अर्ह्+अण् । अगुरुचंदन । राजाके लायक (त्रि०) । जम्बू (जामन) (स्त्री०).

राजि-जी, (स्त्री०) राज्+इन्-वा ङीप् । श्रेणि (कतार) पंक्ति । रेखा (लकीर) । " राजते " । राज्+ण्वुल् । श्वेतसर्षप.

राजिल, (पु०) राज्+इलच् । डुण्डुभ सर्प । डोंडासांप । जलका सांप.

राजीव, (न०) राजी (दलराजी) अस्ति अस्य वा । कमलफूल । एक हरिण । एक मत्स्य (मच्छ) । हाथी । और सारस (पु०).

राजेन्द्र, (पु०) राजा इन्द्र इव (श्रेष्ठत्वात्) । बहुत अच्छा होनेसे) राजा मानो इन्द्र है (जिसका चार योजन १६ कोशतक अधिकार है उसे राजा-राजासे भी सौगुण अधिकारवाला । मण्डलेश्वर-और मण्डलेश्वरसे दशगुण अधिक अधिकारवाला " राजेन्द्र " कहाजाता है) । एक प्रकारका बडा राजा.

राज्ञी, (स्त्री०) राज्ञः पत्नी+ङीप् । ... कनिन्-ङीप् । रानी । महारानी ...

राज्य, (न०) राज्ञो भावः कर्म वा ... होना या काम.

राज्यधुरा, (स्त्री०) ६ त० । ... समा० । प्रजाका पालन आदि.

राज्याङ्ग, (न०) ६ त० । राज्यके ... मन्त्री-कोश-राष्ट्र-दुर्ग और बल) । ...

राट्, (पु०) राज्+क्विप्-पृ० इत्वम् ... " राज्ञा " (स्त्री०).

राढीय, (त्रि०) राढो निवासः ... उत्पन्न हुआ.

रात्रि-त्री, (स्त्री०) रा+त्रिप् वा ... अपने ? देशमें सूर्यमण्डलके न ... हरिद्रा । हल्दी.

रात्रिकर, (पु०) रात्रिं करोति । ... किरणः अस्य वा" । रातको ... रातमें होती हैं । चन्द्र । चांद और ...

रात्रि(त्री)चर, (पु०) रात्रौ चरति ... रातमें विचरता है । राक्षस । उम ...

रात्रिमणि, (पु०) रात्रौ मणिः इव । ... समय मानों मणि है (प्रकाशवाला ...

रात्रिवासस्, (न०) रात्रेर्वास इव ... (कपडेकी नाईं) ढाकनेहारा । ... " रातके समय पहिरनेलायक कपडा ...

रात्रिविगम, (पु०) ६ त० । ... प्रभातसमय.

रात्रिहास, (पु०) रात्रिहांस इव (शु... मानो हासा (चिट्टा-सफेद होनेसे) । ...

रात्र्यन्ध, (त्रि०) रात्रौ अधः (दृष्टिश... जो देख नहिं सका । कौआ आदि.

राद्ध, (त्रि०) राध्+कर्तरि-कर्मणि वा ... हुआ) । पक्व (पकाहुआ).

राद्धान्त, (पु०) राद्धः (सिद्धः) अ... यस्मात् । ५ ब० । जिससे तत्त्वका नि... सिद्धान्त । नतीजा । संदेह उठाकर वादी... पक्षका निराकरण कर यथार्थ पक्षका ... वचन । "वादिप्रतिवादिनिर्णीतार्थ.".

राध्, सिद्धि-साधना । अक० । निष्पादन (... और पाक (पकाना) सक० स्वा० भै... अनिट् । राध्नोति । राध्यति । अरात्सीत् । ...

र, (न॰) राध्+ल्युट्। साधन (पूरा करना)। पाना। ...प्त होना। "राध्+णिच्+युच्"। पूजा करना। टाप्.

, (स्त्री॰) राध्+अच्। पार्वती। परमात्माकी एक ...क्ति। श्रीरामके शापसे वृन्दावनमें उपजी वृषभानुकी कन्या ...वालगोपी। कर्णकी पालन करनेहारी और माता (माँ).

...धाकान्त, (पु॰) ६ त॰। राधाका कान्त (पियारा) ...कृष्ण "राधावल्लभ" आदि.

...तनय, (पु॰) ६ त॰। राधाका पुत्र। कर्ण। वह ...मारी अवस्थामें सूर्यसे कुन्तीके गर्भमें उपजा। कुन्तीने ...याग करदिया, सूतकी पत्नी राधाने पाला.

...रमण, (पु॰) राधायाः रमणः। राधाके साथ प्यार करनेवाला श्रीकृष्ण.

...य, (पु॰) राधाया अपत्यम्+ढक्। राधाकी सन्तान। ...र्ण.

...र, (पु॰) रम्+कर्त्तरि घञ् ण वा। परशुराम। दशरथका बड़ा पुत्र श्रीरामचन्द्र। और बलराम। मनोहर। सूफेद- रंग। और शुभ (त्रि॰).

...मगिरि, (पु॰) रामाश्रितः गिरिः। चित्रकूटपर्वत (वनवासमें गयेहुए रामने इसीका पहिले आश्रय लिया).

...मचन्द्र, (पु॰) रामचन्द्र इव (आह्लादकरत्वात्)। राम मानों चन्द्रमा है (आनंद देनेसे)। दशरथका बड़ा पुत्र श्रीराम.

...मजननी, (स्त्री॰) ६ त॰। रामकी माता। वसुदेवकी पत्नी (औरत) रोहिणी। जमदग्निकी पत्नी रेणुका। दशरथकी पत्नी कौशल्या.

...मणीयक, (न॰) रमणीयस्य भावः। रमणीयं एव वा। रमणीय+वुञ्। रमणीयत्व। मनोहरपन। मनोहर.

...मतरुणी, (स्त्री॰) रामा (अभिरामा) तरुणीव। सेओतीफूल। ६ त॰। रामकी स्त्री। सीता। और रेवती.

...मदूत, (पु॰) रामस्य दूतः (वार्ताहरः)। हनूमान् (जो रामचन्द्रकी बातको लंकामें सीताके पास पहुंचाताहुआ).

...मनवमी, (स्त्री॰) रामस्य जन्माधारो नवमी। राम- जन्मकी नवमी। चैतके शुक्लपक्षकी नवमी.

...मभद्र, (पु॰) राम एव भद्रः (मङ्गलदायकत्वात्)। रामही कल्याण वा पियारा है (भलाई करनेसे)। श्रीराम.

...मवल्लभ, (न॰) रामस्य वल्लभं (प्रियम्)। रामका पियारा। भूर्जपत्र (भोजपत्र) यह रामने वनवासाश्रममें पियारा समझकर धारण किया.

...मसख, (पु॰) ६ त॰। टच्। रामका मित्र। सुग्रीव (वानरोंका राजा).

...रामा, (स्त्री॰) रम्+णिच्+कर्त्तरि घञ्। गीतआदि कलाओं जाननेहारी नारी (औरत)। नारी। नदी। हींग। वरकी लकड़ी। अशोक। गोरोचना। कलगेरी.

रामानुज, (पु॰) प्रसिद्ध धर्मप्रवर्त्तकका नाम। वेदान्तकी एक शाखा (विशिष्टाद्वैत)का प्रवर्तक और भी अनेक ग्रंथोंका रचनेहारा.

रामायण, (न॰) रामस्य अयनं (चरितं) अधिकृत्य कृतो ग्रन्थोऽण्। रामचन्द्रके चरित्रको प्रतिपादन करनेहारा वाल्मीकिमुनिका बनायाहुआ एक प्रकारका महाकाव्य.

राव, (पु॰) रु+घञ्। शब्द। आवाज। बोलना.

रावण, (पु॰) रवणस्य अपत्यम्+अण्। रावयति शत्रून्। णिच्+ल्यु वा। रवणकी सन्तान वा जो शत्रुओंको रुलाता है। लंकाका मालिक राक्षस.

रावणगङ्गा, (स्त्री॰) रावणनिर्मिता गङ्गा नदी। रावणसे बनाईगई गङ्गा नदी। सिंहल (लंका-सीलोन) के देशमें एक नदी.

रावणारि, (पु॰) ६ त॰। रावणका शत्रु। श्रीरामचन्द्र। "रावणान्तक" आदि.

रावणि, (पु॰) रावणस्य अपत्यम्+अत इञ्। मेघनाद- नामी रावणका बड़ा पुत्र.

राशृ, शब्द-आवाज करना। भ्वा॰ आ॰ अक॰ सेट्। राशते। अराशिष्ट.

राशि, (पु॰) अश्नुते (व्याप्नोति) अश्+इञ्। धातुको रुट्का आगम होता है। धान्य आदिका पुञ्ज (समूह)। ज्योतिषकथा बारहवाँ अंश मेष आदि। व्यक्त और अ- व्यक्त गण। समूह। ढेर.

राशिचक्र, (न॰) राशिघटितं चक्रं (वृत्तम्)। राशि- ओंका बनाहुआ चक्र। मेष आदि बारह राशिवाला, गोलाकार (गोलस्वरूपवाला), वायुके कारण पूर्वसे पश्चि- मकी ओर निरन्तर घूमनेवाला ज्योतिस्स्वरूप चक्र.

राशिभोग, (पु॰) राशीनां स्वस्वगत्या ग्रहैर्भोगः। भुज्+ घञ्-कुत्वं। सूर्य आदि ग्रहोंका अपनी २ गतिके अनुसार राशिओंमें आना.

राशी(शि)कृत, (पु॰) अराशिः राशिः कृतः। राशि+ अभूततद्भावेच्वि-तदर्थे समासो वा। ढेरी। पुञ्जीकृत। इकट्ठा कियागया। एक जगह लगायागया.

राष्ट्र, (न॰) राज्+ष्ट्रन्। जनपद। देश। राज्य। उप- द्रव। मुसीबत.

राष्ट्रिय, (पु॰) राष्ट्रे भवः। घ+नाट्योक्तिमें राजाका स्याल (साला).

रास्, शब्द-आवाज करना। भ्वा॰ आ॰ स॰ सेट्। रासते.

रास, (पु॰) रस्+घञ्। रास्+घञ् वा। शब्द। ध्वनि। आवाज। शृंखला (सांकली) बांधकर दो २ के बीचमें एक प्रकारकी क्रीडा (खेल)। श्रीकृष्णभगवान्की क्रीड़ा। कोलाहल। भैंसा। रौप्य (हीरा).

रासभ, (पु॰) रास्+अभच्। गर्दभ। गधा। खोता.

रासमण्डल, (प०) रासायं मण्डलं मण्डलाकारेण भ्रमणं यत्र । रासके लिये (सोगनी बांधकर दो २ के बीचमें ठहरेहुए खेलनेंगे) जहां मण्डलाकार (दायरा बांधकर) घूमते हैं । रासकी खेल करनेकी जगह । श्रीकृष्णजीके रास करनेका स्थान । एक प्रकारका मण्डप.

रासेश्वरी, (स्त्री०) ६ त० । रासकी मालिक । राधिका.

रास्ना, (स्त्री०) रस्+नण् । इस नामकी एक वेल । रासनवेल.

राहु, (पु०) रह+उण् । त्याग । छोड़ना । छोड़नेवाला । ज्योतिषफर्में सूर्यकी किरणोंके न छूनेसे उत्पन्नहुई पृथिवीकी छायाका आश्रय एक ग्रह । सिंहिकाका बेटा (एक राक्षस).

राहुदर्शन, (न०) राहोर्दर्शनं यत्र । जिसमें राहुका दर्शन होता है । चंद्रमा और सूर्यका उपरागरूप ग्रहण । चन्द्रमा और सूर्यका उपराग होनेपरही वह दीख सक्ता है । अन्यथा नहिं.

राहुमूर्धभिद्, (पु०) राहोः (सिंहिकासुतस्य) मूर्धानं भिनत्ति । भिद्+क्विप् । राहुके माथेको तोड़ता है । विष्णु । अमृत पीनेके समय देवताओंकी कतारमें देवरूपसे स्थित होकर अमृत पीतेहुएको देख विष्णुने उसका सिर तोड़ा.

राहुरत्न, (न०) राहोः प्रियं रत्नम् । एक खास रत्न । गोमेदरत्न.

राहुसूतकम्, (न०) राहोः सूतकम् । राहु (दैत्य-सिरके स्वरूपमें)का जन्म । सूर्य वा चन्द्रमाका ग्रहण.

रिक्त, (त्रि०) रिच्+क्त । शून्य । खाली । सूना । वन । निरर्थक । बे फायदा.

रिक्तभाण्ड, (न०) रिक्तं भाण्डम् । तेल आदिसे शून्य भांडा (बर्तन).

रिक्तहस्त, (त्रि०) रिक्तो (धनादिशून्यो) हस्तो यस्य । जिसका हाथ धनआदिसे शून्य है । खालीहाथ । निर्धन । गरीब । बहुत दान आदिसे जिसका धन खर्च होगया.

रिक्ता, (स्त्री०) रिच्+क्त । दोनों पक्षोंकी चतुर्थी । नवमी और चतुर्दशी तिथियें.

रिक्थ, (न०) रिच्+थक् । धन । मिताक्षरामें कहाहुआ अप्रतिबंध (न रुकनेवाला) दाय (विरसा).

रिक्थहारिन्, (त्रि०) रिक्थं (ग्राह्यत्वेन) अस्ति अस्य+इनि । दायहारी । विरसालेनेवाला । दायाद । शरीक.

रिख्, (सर्पण) सरकना । भ्वा० प० सक० सेट् । इदित् । रिङ्खति.

रिग्, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट्-इदित् । रिङ्गति । अरिङ्गीत्.

रिङ्गण, (न०) रिगि+ल्युट् । स्खलन । खिसकना । रींगना.

रिच्, संपर्क (मिलना) और वियोग (अलग होना) । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । रेचयति-ते । रेचति (अरीरिचत्,त) । अरेचीत्.

रिच्, विरेच (खाली करना) । रुधा० उभ० सक० अनिट् । रिणक्ति-रिंक्ते ...

रिपु, (पु०) रप्+उ-पृ० । शत्रु । दुश्मन । ... स्थान.

रिपुघातिनी, (स्त्री०) रिपुं हन्ति । ... बेल । शत्रुको मारनेवाला (त्रि०).

रिपुञ्जय, (त्रि०) रिपुं जयति । जि+खच् । ... नेवाला । एक राजा (पु०).

रिम्फ, वध (मारना) । तु० प० स० सेट् । रि...

रिफ, (पु०) रिफ्+अच्-पृ० । सबसे बारहवां ...

रिरंसा, (स्त्री०) रम्+सन्+अ । रमनेच्छा । ... नेकी चाह (ख्वाहिश).

रिव्, गति-जाना । भ्वा० प० स० सेट् । रिन्व...

रिश्, हिंसा (कतलकरना) । तु० पर० सक० ... रिशति । अरिशत्.

रिश्य (ष्य), (पु०) रिश्यते । रिश्+क्यप् । ...

रिष्ट, (न०) रिष्+क्त । मंगल । और अशुभ । ... बुरा "भावे क्त" नाश । और पाप (बुरा ... आदिवाला (त्रि०) । खङ्ग (तरवार) (पु० ...

रिष्टि, (स्त्री०) रिष्-रिष्-वा+क्तिन् । अशुभ । ... रका शस्त्र (औजार) । "क्तिच्" रूप । ...

री, क्षरण-बहना । दि० आ०अ० अनिट् । रीयते ...

रीठा, (स्त्री०) री+ठक् (ठस्य न इत्वम्) । ... रीठा.

रीढा, (स्त्री०) रिह्+क्त । अवज्ञा । अवमान... मानी । न मानना.

रीण, (त्रि०) री+क्त । क्षरित । चुत । बहगया ...

रीति, (स्त्री०) री+क्तिन् । पित्तल । प्रकार ... बहना । सीमा । गति । जाना । स्वभाव । ... आदि रचना । तरीक.

रु, ध्वनि (शब्दकरना) अदा० प० अक० वेट् । ...

रुक्प्रतिक्रिया, (स्त्री०) रुजः प्रतिक्रिया (प्रति ... प्रति+कृ+भावे श । रोग दूर होनेका उपाय । ...

रुक्प्रतिक्रिया, (स्त्री०) रुजः प्रतिक्रिया=उपाय ... (रोग-बीमारी)का इलाज.

रुक्म, (न०) रुच्+मन्-नि-कुत्वम् । सोना । ... धतूरा । लोहा । नागकेसर.

रुक्मकारक, (पु०) रुक्मं (तन्निर्मितभूषणं) ... कृ+ण्वुल् । सोनेके जेवर बनाता है । सुनार ...

रुक्मिन्, (पु०) रुक्मं विद्यते अस्य+इनि । ... सोना है । एकराजा । सोनेका स्वामी (त्रि०) ...

रुक्मिणी, (स्त्री०) रुक्मिन्+ङीप् । विदर्भ दे... भीष्मककी कन्या.

स्थान्, (न०) रुजः स्थम । रोगका घर । मल । विष्ठा ।
।

रुक्ष, (त्रि०) रुक्-वस पु० वा दीर्घः । अचिक्कण । जिसमें चिकनाई न हो । निःस्नेह । और कठोर । सख्त.

, (त्रि०) रुज्+क्त । रोगान्वित । बीमार । रोगवाला । न । टेढ़ा.

। प्रीति (प्रसन्न होना)। प्रकाश (चमकना)। भ्वा० । अक० सेट् । रोचते (अरुचत्-अरोचिष्ट).

क, (न०) रुच्+वुन् । सज्जी । सर्जिकाक्षार । अश्वा-भरण (घोड़ेका जेवर) । माला । सुहागा । और निम्बू । और कबूतर (पु०).

-च्, (स्त्री०) क्विप् वा टाप् । दीप्ति । प्रकाश । और शोभा.

-ची, (स्त्री०) रुच्+कि-वा ङीप् । अनुराग । सुहब्बत । चाह । स्पृहा (इच्छा) । अभिलाष । किरण । शोभा । क्षुधा । भूख । गोरोचना । एक प्रजापति (पु०).

रुचिकर, (त्रि०) रुचिं करोति+कृ+अच् । स्वाद देनेवाला । दिलपसंद.

रुचिधामन्, (पु०) रुचेः=दीप्तेः धाम-गृहम् । प्रकाशका घर । सूर्य.

रुचिर, (त्रि०) रुचिं राति (ददाति) रा+क । मनोहर । सुन्दर । और मधुर (मीठा) । रुचि (इच्छा) को देता है (पैदा करता है) । केसर और लौंग (न०).

रुच्य, (त्रि०) रुचये हितः+यत् । रुचिके लिये हितकारी (अच्छा) । सुन्दर । और रुचिकर । पति । कतकवृक्ष (पु०).

रुज्, भञ्जन (तोड़ना) तु० पर० सक० अनिट् । रुजति । अरौक्षीत् । रुग्णः.

रुज् (जा), (स्त्री०) रुज्+क्विप् । वा टाप् । रुज्+अङ् वा । रोग (बीमारी) । भंग । टूटना । मेथी । मेढी । कोढ़.

रुजाकर, (न०) रुजां (रोगं) करोति । कृ+अच् । रोगको करता है । कर्मरंग (कामारांगा) फल । रोग करनेवाला (त्रि०).

रुट्, चौर्य (चोरी करना) भ्वा० पर० सक० सेट् । रुटित । रुण्टति.

रुट्, रोध (रोकना) । सक० दीप्ति चमकना । अक० चुरा० उभ० सेट् । रोटयति-ते.

रुण्ड, (पु०) रुटि+अच् । पृ० । "ट" को "ड" होता है । मस्तकसे शून्य शरीर (जिस्म) । कबंध । धड़.

रुत, (न०) रु+क्त । रव । आवाज । पशु और पक्षी आदिका शब्द

रुद्, रोदन (रोना) । अदा० पर० अक० सेट् । रोदिति । अरुदत् । अरोदीत्.

रुदित, (न०) रुद्+भावे क्त । क्रन्दन । चिल्लाना । रोना । "कर्तरि क्त" कृतरोदन । जो रोता है । रोनेवाला (त्रि०).

रुद्ध, (त्रि०) रुध्+क्त । आवरणादिवेष्टित । पड़दे आदिसे घेराहुआ । रोकागया । बंदकिया । दबाहुआ.

रुद्र, (पु०) रोदिति । रुद्+रक् । रोता है । शिवजीकी एकमूर्ति । "सोऽरोदीत् यदरोदीत्तत् रुद्रस्य रुद्रत्वम्" "अज एकपात्," इति श्रुतिः । अहिर्बुध्न्य, विरूपाक्ष, सुरेश्वर, जयन्त, बहुरूप, त्र्यंबक, अपराजित, वैवस्वत, सावित्र, हर, और शम्भु इस प्रकार शिवजीकी ग्यारह मूर्तियें.

रुद्रज, (पु०) रुद्रात् जायते । जन्+ड । रुद्रसे उपजता है । शिवजीके वीर्यसे उत्पन्न हुआ । पारद (पारा).

रुद्रजटा, (स्त्री०) रुद्रस्य जटेव पिङ्गत्वात् । जटिलत्वात् । मानो रुद्रकी जटा है (पीली और जटावाली होनेसे) एक प्रकारकी बेल । शंकरजटाबेल.

रुद्रप्रिया, (स्त्री०) ६ त० । रुद्रकी पियारी । हरीतकी । हरीड़ । और दुर्गा । देवी.

रुद्रविंशति, (स्त्री०) रुद्रस्वामिका विंशतिः । वह बीसी जिसका स्वामी रुद्र है । प्रभव आदि साठ वर्षोंमेंसे अन्तकी बीसी.

रुद्रसावर्णि, (पु०) चौदह मनुओंमेंसे बारवां मनु.

रुद्राक्रीड, (न०) रुद्रस्य आक्रीडः यत्र । जहां रुद्रजी खेल करते हैं । श्मशान । मसान । मरघट.

रुद्राक्ष, (पु०) रुद्रस्य अक्षीव-अच् । मानो रुद्रकी आंख है । अपने नामवाला वृक्ष.

रुद्राणी, (स्त्री०) रुद्रस्य पत्नी । रुद्र+ङीप्-आनुक् च । रुद्रकी स्त्री । शिवपत्नी । पार्वती । शिवकी औरत । ग्यारह बरि-सकी लड़की.

रुद्रारि, (पु०) रुद्रः अरिर्यस्य । रुद्र जिसका शत्रु है । कामदेव.

रुद्रावास, (पु०) ६ त० । रुद्रके निवास करनेका स्थान । कैलास । काशी । श्मशान (मसान).

रुद्रिय, (त्रि०) रुद्रस्य अयं-रुद्र+घ+इय । रुद्रका वा रुद्रसे उत्पन्न हुआ । रुद्रायत्ता । (वेदमें) स्तुतिका उच्चारण करना । सुख पहुंचाना । यजुर्वेदका एक मन्त्र.

रुध्, काम (चाहना-मांगना) । आ० सक० अनिट् । प्राय इस धातुके साथ अनु उपसर्ग लगता । है । अनुरुन्धते । अन्वरुद्ध.

रुध्, आवरण (रोकना [illegible] अनिट् । रुणद्धि-रुन्धे ।

रुधिर, (न०

रुधिरपायिन्, (पु०) रुधिरं पिबति । रुधिर (लोहु) पीताहै । दैत्यः.

रुप्, आकुलीकरण-घबराना । बिगाडना । (वेद) बडी पीडा सहारना । दि० प० स० सेट् । रुप्यति । अरुपत्-अरोपीत्.

रुमा, (स्त्री०) रु+मक् । सुग्रीव वानरकी भार्या (औरत) । लवण राक्षसका स्थान । एक देश.

रुरु, (पु०) रु+कु । मृगविशेष । एक प्रकारका हरिण.

रुशु, (पु०) रु+शु । एरण्डका वृक्ष । "पत्" एरण्ड । "रुवूक".

रुश्, हिंसा (कतलकरना मारना) तु० प० स० अनिट् । रुशति । अरुक्षत्.

रुष्, (वध) मारना । भ्वा० प० सक० सेट् । रोषति । अरोषीत्.

रुष्, क्रोध (गुस्सा करना) । दि० प० अक० सेट् । रुष्यति । अरुषत् अरोषीत्.

रुष्-षा, (स्त्री०) रुष्+क्विप्-वा टाप् । क्रोध । कोप । गुस्सा.

रुषित, (त्रि०) रुष्+क्त वा इट् । क्रोधयुक्त । गुस्सेवाला । "रुष्ट".

रुह्, उद्भव-उत्पन्न होना । भ्वा० प० अ० अनिट् । रोहति । अरुक्षत्.

रुह, (त्रि०) रुह+क । जात । उपजा । उत्पन्नहुआ । रुहा (स्त्री०) अगले पदमें रहनेसे "उससे निकला" अर्थ होता है । जैसे "भूरुह" (पृथिवीसे उपजा-वृक्ष) "वारिरुह्" पानीसे निकला-कमल.

रूक्ष्, पारुष्य-सख्तहोना-कठोरहोना-और रूखाहोना । चुरा० आ० अक० सेट् । रूक्षयति-ते । अरुरूक्षत्-त.

रूक्ष, (त्रि०) रूक्ष्+अच् । अचिक्कण । रूखा । जो चिकना नहीं । और स्नेहसे रहित । वृक्ष (पु०) । दन्तीवृक्ष (स्त्री०).

रूक्षगन्ध, (पु०) रूक्षो गन्धो यस्य । जिसका गंध रूखा है । गुग्गुल.

रूढ, (त्रि०) रुह्+क्त । जात । उत्पन्नहुआ । निकला । और प्रसिद्ध (मशहूर) । "रूढिः अस्य अस्ति+अच्" जिसकी रूढि (प्रसिद्धि) हो । प्रकृति (धातु) और प्रत्ययके अर्थकी अपेक्षा न करके समुदायशक्ति (सारे शब्दकी [illegible]) बतानेहारा शब्द-जैसे "घटः" "गौ.". [illegible] (न०) [illegible] यस्य । बड गई है जवानी [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) [illegible]

रूढि, (स्त्री०) रुह्+क्तिन् । जन्म । [illegible] (मशहूरी) । प्रकृति और प्रत्ययके अर्थसे [illegible] भिन्न समुदाय शक्तिसे अर्थका बोध [illegible] "डित्थ".

रूप्, रूपान्वितकरण शकलवाला बनाना । चु० [illegible] सेट् । रूपयति-ते । अरुरूपत्-त.

रूप, (न०) रूप्+क । भावे अच् वा । [illegible] सौन्दर्य (खूबसूरती) । पशु । नाम । [illegible] वृत्ति (ग्रन्थको दुबारा पढना) । [illegible] नाटक आदि । श्लोक । शब्द और पदमें [illegible] लगानेसे बनाहुआ शब्द । और [illegible] वाला (त्रि०) । "अगले पदमें [illegible] "पितृरूपस्तनयः" पिताके समान पुत्र । [illegible] (गिन्ती).

रूपक, (न०) रूपयति अत्र । रूप्+अच्-कन् । प्रदर्शक दृश्यकाव्यप्रभेद । नकल ([illegible] दिखानेहारा एक प्रकारका देखनेलायक [illegible] अस्ति अस्य पुष्" रूपवाला । मूर्त ([illegible] (त्रि०) । "रूप+स्वार्थे कन्" [illegible] ([illegible] रंग) । आकार (शकल) । एक [illegible] तीन रत्तीका मान । चाँदी.

रूपधारिन्, (त्रि०) रूपं धारयति । [illegible] वाला । खूबसूरत । दूसरा वेष [illegible] (स्वांग बनानेवाला).

रूपवत्, (त्रि०) रूप+मतुप् "म" को "व" [illegible] चिह्न आदि रूपवाला । सौन्दर्ययुक्त ([illegible] (शकल)वाला.

रूपशालिन्, (त्रि०) रूपेण शालते । [illegible] सुन्दर.

रूपसंपद्-संपत्ति, (स्त्री०) रूपस्य [illegible] । [illegible] पूरी सुन्दरता । बडी भारी खूबसूरती.

रूपाजीवा, (स्त्री०) रूपं (सौन्दर्य) [illegible] खूब सूरती लेकर जीती है । "आ+जीव्+अ" [illegible] कंजरी.

रूप्य, (न०) [illegible] आहन्यते [illegible] । [illegible] बनानेके लिये जो सोना आदि [illegible] अलंकार (जेवर) आदि बनानेको [illegible] और चाँदी । "स्वार्थे यत्" [illegible] और रुपया । सुन्दर (पु०).

रूप्याध्यक्ष, (पु०) रूप्येषु अध्यक्ष । [illegible] मालिक । कोषाध्यक्ष । खजांची.

रूष्, (धूलि आदिसे भिजादेना) । चु० [illegible] सेट् । रूषयति-ते.

रूषित, (त्रि०) रूष्+क्त । धूलि आदिसे [illegible] लिपटाहुआ.

लोभिन्, (त्रि०) लुभ्+णिनि । दूसरेके द्रव्योंमें बहुत तृष्णावाला । लालची.

लोभ्य, (पु०) लुभ्+ण्यत् । मुद्ग । मूंग । लालचके लायक पदार्थ (त्रि०).

लोम, (न०) लू+मन् । शरीरपर उत्पन्नहुआ बालोंके स्वरूपका रोआँ नाम द्रव्य । उसवाला पूंछ.

लोमकर्ण, (पु०) लोमबहुलौ कर्णौ यस्य । जिसके कान बहुतरोआँवाले हैं । शशक । सहा.

लोमकूप, (पु०) लोम्नां कूप इव । रोओंका मानो कूआ है । रोओंका आश्रय बिन्दुका स्वरूप । गर्त । रोआं । सुराख.

लोमघ्न, (न०) लोमानि हन्ति । हन्+टक् । रोओंको नाश कर्ता है । एक प्रकारका रोग (टाक).

लोमपाद, (पु०) लोमयुक्तौ पादौ अस्य । जिसके पाँव रोआँवाले हैं । अंगदेशका एक राजा.

लोमश, (पु०) लोमानि बाहुल्येन सन्ति अस्य+श । जिसके शरीरपर बहुत रोम हैं । एकमुनि । रोआँवाला (त्रि०).

लोमहर्षण, (न०) लोम्नां हर्षणं हर्षजनकव्यापार इव उद्भेद इति यावत् । रोओंका खुश होना (प्रकट होना-निकलना) रोमाञ्च (रोओंका खडेहोना) । "लोमानि हर्षयति उत्तमकथया" "हृष्+णिच्+ल्यु" । जो अच्छी कथासे रोमोंको खुश कर्ता है । व्यासदेवका शिष्य (चेला) । सूतके वंशमें हुआ इस नामका पौराणिक.

लोल, (त्रि०) लोड्+अच् । डस्य लः । सतृष्ण । लालची और चञ्चल । जिह्वा (जीभ) । और लक्ष्मी (स्त्री०).

लोलजिह्व, (त्रि०) लोला जिह्वा यस्य । चपल (हिलने-वाली) जीभवाला । लालची । लोभी.

लोलाक्षि, (न०) लोले अक्षि । चपल नेत्र (आंख) । हिलनेवाली आंख । अक्षिका (स्त्री०) चपल नेत्रोंवाली स्त्री (औरत).

लोलुप, (त्रि०) लुभ्+यङ्+अच्-द्वि० यस्य वा-पः । अति-लोभयुक्त । बहुत लालचवाला.

लोड्, लोडति, (इकट्ठा होना) भ्वा० आ० सक० सेट् । लोडते । अलोडिट.

लोष्ट, (पु० न०) लोट्+घञ् वा । मृत्तिखण्ड । मट्टीका ढेला । ढीम । ढेला । और लोहेकी मैल । लोहमल.

लोष्टघ्न, (पु०) लोष्टं हन्ति (मर्दयति) हन्+क । ढेले-को तोडनेवाला मुद्गर आदि.

लोह, (पु० न०) लू+हिच् । लौहं वहति । हा+क । एकप्रकारका धातु । लोहा । अगुरुचन्दन (न०).

लोहकार, (पु०) लोहं (लोहमयं शस्त्रादि) करोति । कृ+अण् । जो लोहेके शस्त्र आदि बनाता है । लुहार.

लोहकिट्ट, (न०) ६ त० । लोहेका मैल.

लोहद्राविन्, (पु०) लोहानि (धातून् ...
द्रु+णिच्+णिनि । जो धातुका द्रवे...
है । सोहागा.

लोहित, (न०) रुह्+इतन् । रस्य लः । ...
दन और रुधिर (लोहू) । लाल ...
(पु०) । उसवाला (त्रि०).

लोहितग्रीव, (पु०) लोहिता ग्रीवा यस्य । ...
ण्टवाला । अग्निदेवताका नाम.

लोहिताक्ष, (पु०) लोहिते अक्षिणी यस्य । ...
जिसकी लाल आँखें हैं । विष्णु । और कोकि...
लाल आँखवाला (त्रि०).

लोहिताङ्ग, (पु०) लोहितं अङ्गं अस्य । ...
मंगलग्रह । काम्पिल्ल वृक्ष.

लोहितायस, (पु०) लोहितं अय+अच् ...
लोहा । ताम्र । तांबा । एक प्रकारका लाल ...

लोहिनी, (स्त्री०) लोहितवर्णा । स्त्रियां ...
"न" होता है । लालरंगवाली स्त्री (औरत) ...

लोहोत्तम, (न०) लोहेषु (धातुषु) ...
उत्तम । स्वर्ण । सोना.

लौकायतिक, (न०) लोकायतं (चार्वाक ...) अधीते वा+ठण् । चार्वाकमतको आमेहारा ...
मतका ज्ञाता.

लौकिक, (त्रि०) लोके विदित (प्रसिद्ध ...) लोकमें जानाहुआ या मशहूर । लोकविदित ...

लौकिकज्ञ, (त्रि०) लौकिकं जानाति+ज्ञा+क ... व्यवहारोंको जाननेहारा । लौकिक रीत समझ...

लौकिकाग्नि, (पु०) कर्म० । विधिसे न ... गई आग.

लौड्, उन्माद (पागल होना) भ्वा० । प० ...
लौडति.

लौह, (पु०) लोहं एव । स्वार्थेऽण् । लोहा । ...

लौहज, (न०) लोहात् जायते । जन्+ड । ...
जाता है । मण्डूर.

लौहभाण्ड, (पु०) लोहस्य विकारः+अण् । ...
दस्ता । चटू । लोहेका पात्र (बर्तन).

लौहित्य, (न०) लोहितस्य भाव+ष्यञ्+अ... रक्तपणी । लालरंग । एक नदी (स्त्री०) ...
हित्ये" रघु०.

ल्यी, (श्लेष) मिलना । क्या० पर० सक० अनि० ...
अल्यैषीत्.

ल्वी, (गति) जाना । क्या० पर० सक० ...
अनि । अल्वैषीत्.

व

(पु॰) वा+ड। वायु (हवा)। राहु। सम्पण (स-
ह)। सान्त्वन (तसल्ली)। कल्याण (भलाई)। बल-
ला। समुद्र। व्याघ्र (भेड़िया)। वमन (वमन)।
र वंदना करना। वरुण (पु॰ न॰)। सादृश्यअर्थमें
, अव्य॰) "मणीवोष्ट्रस्य लम्बेते" इति.

, वन्+प। नि॰नुम्। पुत्रपौत्रआदि सन्तानका समूह।
क प्रकारका तृण। बांस। पीठका अवयव (हिस्सा)।
क्षु (गन्ना)। और सालवृक्ष। एक प्रकारका बाजा
, स्त्रियां ङीष्)। "वंशीकलेन वधिरेण" इति वृन्दाव-
त्वम्.

कार, (त्रि॰) वंशं करोति। वंश (खान्दान) के
चलनेवाला। वंशप्रवर्तक.

कर्पूररोचना, (स्त्री॰) कर्पूर इव रोचते। रुच्+ल्यु।
६ त॰। वंशरोचना। बंसलोचन। कपूरकी नाई सुगं-
धिवाला.

ज, (पु॰) वंशात् जायते। जन्+ड। बांसके उससे
उत्पन्नहुआ जौके सदृशका एक पदार्थ। अच्छे कुलमें
उत्पन्नहुआ (त्रि॰)। वंशरोचना (स्त्रियां टाप्).

तण्डुल, (पु॰) ६ त॰। बांससे उपजा चावलोंके
सदृशका पदार्थ। बांसके चावल.

धर, (त्रि॰) वंशं धरति। वंशको पकड़ना है। कुलको
चलानेवाला। "वंशवर्धन" इसी अर्थमें.

शर्करा, (स्त्री॰) वंशस्य शर्करेव। बांसकी मानो
खाँड है। वंशलोचनपदार्थ। तबाशीर.

स्थविल, (न॰) बारह अक्षरके पादवाला एक प्रका-
रका छन्द.

ाग्र, (न॰) वंशस्य अग्रं (मूले)। वंशकी जड़।
कुलमें पहिला.

ीधर, (पु॰) वंशी (वंशवाद्यं) धरति। धृ+अच्।
बंसीबजानेवाला। श्रीकृष्णजी.

्य, (त्रि॰) वंशे (सत्कुले) जात। अच्छे कुलमें
उपजा। खान्दानी.

क्, कौटिल्य (कुटिल होना)। तिरछा होना। अक॰।
जाना (गति)। सक॰ भ्वा॰ आ॰ सेट्। वङ्कते।
वंकते। अवंकिष्ट.

क, (पु॰) वकि+अच्। पृ॰ "न" का लोप होना है।
इस नामका पक्षी। बगला। एक फूलोंवाला वृक्ष। कुबेर।
एक राक्षस (जिसे भीमसेनने मारा था) एक प्रकारकी
दवाई फाड़नेकी कला। श्रीकृष्णसे मारागया एक दैत्य.

कपञ्चक, (न॰) कार्तिक (कतक) के शुक्लपक्षकी
एकादशीसे लेकर पांच तिथियें.

वकवृत्ति, (पु॰) वक [illegible] स्वार्थपरा वृत्तिश्चेष्टा यस्य।
जिसकी चेष्टा बगलेकी नाई अपने मतलबको सिद्ध कर-
नेहारी है। दूसरेको ठगनेवाला जीव.

वकव्रतिन्, (क), (पु॰) वकव्रत+अस्त्यर्थे इनि ठन् वा।
बगलेके व्रतको धारण करनेहारा। वकव्रतधर.

वकुल, (पु॰) वकि+उरच्। लत्वेपः। इस नामका फूलों-
वाला वृक्ष.

वक्, (गति) जाना। भ्वा॰ आ॰ सक॰ सेट्। वकते।
अवकिष्ट.

वक्तव्य, (न॰) वच्+तव्य। कुत्सित। निन्दित। हीन।
और तुच्छ। कथनीय। कहनेलायक (त्रि॰) "भावे क्त"
कथन (कहना) (न॰)

वक्तृ, (त्रि॰) उचितं बहु वक्ति। वच्+तृच्। सुनातिब।
बहुत बोलनेवाला.

वक्त्र, (न॰) वक्ति अनेन+ष्ट्रन्। जिससे बोलता है। मुख।
मूं। एक प्रकारका कपड़ा। एक प्रकारका छंद.

वक्त्रशोधिन्, (पु॰) वक्त्रं शोधयति। शुध्+णिच्+
णिनि। जम्बीर (नींबू)। मुखको साफ करनेवाला ताम्बूल
(पान) आदि (त्रि॰)

वक्त्रासव, (पु॰) वक्त्रस्य आसवं [illegible]। मुखका मानो
मद है। अधररस। होठका रस.

वक्र, (न॰) वकि+रन्। पृ॰ न लोपः। नदीवङ्क (नदीकी
टेढ)। शनैश्चर। शनीचर। मंगलग्रह। [illegible]। त्रिपुर
दैत्य। और तिरछाजाना। उसवाला (टेढा) (त्रि॰)।
"राहुकेतू सदा वक्रौ" इति ज्योतिषम्.

वक्रतुण्ड, (पु॰) टेढे मुखवाला। "वक्रं मुखं अस्य"
गणेशजी.

वक्रभाव, (पु॰) वक्रः भावः। टेढा भाव (छल्ल)।
टेढापन। कुटिलता। छल.

वक्राङ्ग, (पु॰) वक्राणि अङ्गानि अस्य। टेढे अंगोंवाला।
हंस। कुटिल अवयववाला (त्रि॰)। कर्म॰। कुटिल।
टेढा शरीर (न॰).

वक्रिमन्, (न॰) वक्रस्य भाव+इमनिच्। कौटिल्य। टेढापन.

वक्रोक्ति, (स्त्री॰) कर्म॰। कुटिलोक्ति। टेढावचन (यह
काव्यका जीवन है)। काव्यका अंग। और काकुवचन।
व्यङ्ग। ठट्ठा.

वक्ष्, रोष (गुस्साकरना) भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। वक्षति।
अवक्षीत्.

वक्षस्, (न॰) वह्+असुन्-सुट्च। हृदय। उरस्। छाती.

वक्षः(स)स्थल (न॰) वक्षः स्थलं इव। वा विसर्ग-
लोपः। अपनी छाती.

वक्षोज, (पु॰) वक्षसि जायते। जन्+ड। छातीपर निक-
लता है। स्तन। कुच। निपल। "वक्षोजद्वन्द्व"
इत्यादि.

वक्षोरुह, (पु०) वक्षसि रोहति । रुह+क । छातीपर उत्पन्न होता है । स्तन । मम्मा । पिस्तान.

वख्, (गति) जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । वङ्खति.

वगाह, (पु०) अव+गाह्+घञ् । "अव" के अका लोप विकल्पसे होता है । "अवगाहन" । स्नान । नहाना.

वङ्घ, गति (जाना) । निन्दा करना । और शुरू करना । सक० । जव (जल्दी जाना) । अक० भ्वा० आ० सेट् इदित् । वंघते.

वङ्क, (पु०) वकि+घञ् । नदीवक । नदीकी टेड । पल्यपन । पलाना । काठीका मोहडा.

वङ्ग, (न०) वगि+अच् । एक प्रकारका धातु । रांगा । "रत्नाकरसे ले ब्रह्मपुत्रतक बंगदेश है" । एकदेश । पु० ब० ब० । चन्द्रवंशी एक राजा (पु०).

वङ्गज, (न०) वंगात् जायते । जन्+ड । वंगसे उपजा । सिन्दूर । वंगदेशमें उत्पन्न हुआ (त्रि०).

वङ्गशुल्वज, (न०) वंगशुल्वाभ्यां (रंगताम्राभ्यां) जायते । जन्+ड । रांगा और तामासे मिलाहुआ एक धातु । कांसी,

वङ्गसेन, (पु०) वङ्गं इव शुभ्रा सेना (पुष्पं) अस्य । रांगेकी नाईं जिसका फूल चिट्टा है । वकवृक्ष.

वङ्गारि, (पु०) ६ त० । हरिताल । यह रांगे धातुको जलादेती है.

वच्, कहना । अदा० द्विक० पर० अनिट् । वक्ति । अवोचत् । वक्ता,

वचन, (न०) वच्+ल्युट् । कथन (कहना) । वाक्य फिकरा) । सोंठ । व्याकरणमें सख्याके अर्थवाला सुप्-तिङ्रूप प्रत्यय.

वचनग्राहिन्, (त्रि०) वचनं गृह्णाति (तदनुसारेण आचरति) ग्रह्+णिनि । जो वचनके अनुसार आचरण कर्त्ता है । वचनमें रहनेवाला । वशीभूत । काबूमें रहनेवाला.

वचनीय, (त्रि०) वच्+अनीयर् । कथनीय । कहनेके लायक । निन्दाके लायक । और लोकापवाद । तोहमत.

वचनेस्थित, (त्रि०) वचने (वाक्ये-तदुपदिष्टाचारे) स्थिति । स्था+क्त । अलुक् समा० । वचनपर ठहरता है । वाक्यका ठीक २ पालन करनेवाला । वशमें आया हुआ.

वचस्, (न०) वच्+असुन् । वाक्य । वचन.

वचसांपति, (पु०) ६ त० । अलुक् स० । बृहस्पति । देवगुरु.

वचस्कर, (त्रि०) वचः करोति । कृ+अच् । वचनको [illegible] "[illegible]"

वचा, (स्त्री०) वच्+अच् । "वच" इस [illegible]

वज्, गति (जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । अवाजीत् । अवजीत्,

वज्र, (पु० न०) वज्+रन् । हीरक (ही[illegible] इन्द्रका एक अस्त्र । (यह दधीचि मुनिके [illegible] गयाथा) । बालक । एक लोहा । [illegible] म्भ आदि सत्ताईस योगोंमेंसे एक (न०)। श्रीकृष्णका पडपोता । एकराजा (पु०)

वज्रचर्मन्, (पु०) वज्रं इव कठिनं चर्म यस्य [illegible] चमडा वज्रकी नाईं सख्त हो । गण्डक । [illegible]

वज्रदन्त, (पु०) वज्रं इव कठिनो दन्तो यस्य [illegible] दांत वज्रकी नाईं सख्त हो । शूकर ([illegible] मूषिक (मूसा) । "वज्रदशन" यही अर्थ.

वज्रधर, (पु०) वज्रं धरति । धृ+अच् । [illegible] भृत्"

वज्रनिर्घोष, (पु०) ६ त० । वज्रकी आ[illegible] "वज्रनिष्पेष".

वज्रपाणि, (पु०) वज्रं पाणौ यस्य । जिसके [illegible] है । इन्द्र । "वज्रहस्त" "वज्रकर".

वज्रपातः-पतनं, (पु० न०) वज्रस्य पातः । [illegible] रना । बिजलीका गिरना.

वज्रपुट, (न०) वज्र इव कठिनं पुटं अस्य [illegible] पडदा वज्रकी नाईं सख्त है । औषध (रां[illegible] पात्र (बर्तन) "औषधीपाचनपात्र".

वज्रमय, (त्रि०) वज्रात्मकं । मयट् । वज्र[illegible] सख्त.

वज्रिन्, (पु०) वज्रं अस्ति अस्य+इनि । [illegible] इन्द्र.

वञ्च्, (प्रतारण) ठगना । भ्वा० पर० सक० सेट् । वञ्चति-अवञ्चीत् .

वञ्चक, (पु०) वञ्च्+णिच्+ण्वुल् । शृगाल । [illegible] (नीच) और प्रतारक (ठगनेवाला) । ठग ([illegible]

वञ्चन, (न०) वञ्च्+ल्युट् । प्रतारण । ठग[illegible] चीजको औरतरहसे वर्णन करके दूसरेको [illegible] करना (भुलाना) । "युच्" वञ्चना (स्त्री०)

वञ्जुल, (पु०) वञ्च्+उलच् । पृ० । वञ्च [illegible] अशोकवृक्ष । वेतसवृक्ष (बेतका वृक्ष) । [illegible] वक (टेढा) (त्रि०).

वट्, (वेष्टन) घेरना । हिस्साकरना । चुरा० उभ० वटयति-ते.

वट्, (विभाजन) हिस्सा करना । चुरा० उभ० पर० सक० सेट् । इदित् । वण्टयति-ते । [illegible] ण्टत्-त । अवण्टीत्,

, (बधन) बढ़ना । भ्वा० पर० द्विक० सेट् । इदित् । न्धति.

(स्तेय) चोरी करना । पर० सक० सेट् । इदित् । न्धति.

(पु०) वट्+अच् । इस नामका एकवृक्ष । सनकी बनी-ई तांत । रस्सी.

क, (पु०) वट्+वुन् । पिष्टकभेद । बड़ा.

, (स्त्री०) वट्+अच्+ङीप् । गोलसखरका पदार्थ । टी । "स्वार्थे कन् ह्रस्व." । "वटिका" यही अर्थ.

, (पु०) वट्+उ । माणवक । बालक । और ब्रह्मचारी.

क, (पु०) वट्+उक । बालक । भैरवविशेष । एक री.

, सामर्थ्य (ताकतवाला होना) । भ्वा० पर० अक० सेट् ठति । अवाठीत्-अवठीत्.

र, (पु०) वठ्+अरन् । मूर्ख । बेवकूफ । और अम्बष्ठ । कप्रकारका वर्णसंकर । शठ । छुच्चा (त्रि०).

, (विभजन) बाँटना । चुरा० उभ० सक० सेट् । दित् । वण्टयति-ते.

, (वेष्टन) घेरावेना । भ्वा० आ० सक० सेट् । वण्ठते.

भि-भी, (स्त्री०) वभ्यते (आरभ्यते) अत्र । वट्+ भि वा ङीप् । जहां पकते हैं । छज्जा । एहवृक्ष । वरकी चोटी । प्रासादाग्रस्थगृह । महलके शिखरका घर.

डिश, (न०) वड्+इश् । वडि इयति । लोक । मच्छि-ओंको पकड़नेके लिये टेढे लोहेके कांटेवाला पदार्थ । मच्छी पकड़नेवाली कुण्डी.

, (त्रि०) वल्+रक् । लस्य डः । बृहत् । श्रेष्ठ । अच्छा.

टक, (पु०) वण्ट+घञ् । स्वार्थे कन् । भावे ण्वुल् । विभाजक (बांटनेवाला) । हिस्सा करनेवाला.

त्, (अव्य०) सादृश्य (बराबरी).

, (अव्य०) वन्+क्त । खेद (तकलीफ) । अनुकम्पा (दया) । हर्ष (खुशी) । विस्मय (हैरानी) । आमन्त्रण.

तण्ड, (पु०) अव+तडि+अच् (एक मुनिका नाम.

तंस, (पु०) अव+तंस्+घञ् । "अव" के अका लोप । एक कानका भूषण (जेवर) । शेखर (चोटी) । शिरका भूषण । हरएक प्रकारका गहना । कानफूल.

तोका, (स्त्री०) अवगतं तोकं यस्याः । "अव" के "अ" का लोप । जिसका सन्तान दूर होगया । सन्तान-रहित स्त्री.

त्स, (न०) वद्+स । वद स्थल (छातीकी जगह) । गौ आदि-का शिशु (बच्चा) । (बछड़ा) और बच्चर (बरिस) (पु०).

वत्सक, (न०) वत्स इवऽस्वार्थे कन् । पुष्पकासीस । हीरा-कसीस । इन्द्रयव (इन्द्रजौ) और वत्स (बछड़ा) (पु०).

वत्सतर, (पु० स्त्री०) क्षुद्रः वत्स+तरप् । क्षुद्रवत्स । छोटा बछड़ा । दम्य । छोटा सांड.

वत्सनाभ, (पु०) वत्सान् (पशुशिशून्) नभ्यति (हिनस्ति) नभ्+अण् । पशुओंके बच्चोंको मारता है । एक प्रकारका विष । । जहिर.

वत्सपत्तन, (न०) वत्सस्य (वत्सराजस्य) पत्तनं । वत्स-राजाका नगर । उत्तरदेशमें कौशाम्बी नाम नगरी.

वत्सपाल, (पु०) वत्सान् पालयति । पाल्+अण् । बछड़ों-को पालता है । श्रीकृष्ण.

वत्सर, (पु०) वस्+सरन् । बारह महीनेका वक्त । बरिस.

वत्सराज, (पु०) चंद्रवंशका एक राजा.

वत्सरान्तक, (पु०) वत्सरस्य अन्तं करोति । अन्त+ णिच्+ण्वुल् । बरिसको समाप्त कर्ता है । फाल्गुन (फागन) का महीना (वर्ष चैतसे शुरू होता है).

वत्सल, (त्रि०) वत्सं लाति लाऽक । स्नेहयुक्त । प्यारवाला । पियारा । "वात्सल्यरस" (पु०) । तत्परवाला (त्रि०).

वत्सशाला, (स्त्री०) वत्सानां शाला । बछड़ोंका घर । गोशाला.

वद्, भृश (मापना) अक० । अभिवादन (सक०) भ्वा० आ० सेट् । इदित् । वन्दते । अवन्दिष्ट.

वद्, (वाक्य) बोलना (संदेशा देना) । भ्वा० उभ० सक० सेट् । वदति-ते । अवादीत् । अवदिष्ट.

वद् (वाचि), बोलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । वदी.

वद, (त्रि०) वदति । वद्+अच् । वक्ता । बोलनेवाला.

वदन, (न०) उद्यतेऽनेन । वद्+करणे ल्युट् । जिससे बोलाजाता है । मुख । मुं । "भावे ल्युट्" । कथन । कहना (न०).

वदा(दा)न्य, (पु०) वद्+अन्य । इ० वा दीर्घः । भूरिदानशील । बहुत दान देनेवाला । बड़ा दाता.

वदाम, (न०) वद्+आमन् । एक प्रकारका फल । बदाम.

वदावद, (पु०) अत्यर्थं वदति । वद्+अच् । नि० । बहुत बोलनेवाला.

वधू, (स्त्री०) उह्यते पितृगेहात् पतिगृहं । वह्+ऊ० धुक्च् । पिताके घरसे पतिके घरमें पहुंचाई जाती है । भार्या । जोरू । औरत । नई विवाहिता युवति स्त्री । बहू । नूं.

वधूजन, (पु०) वर्ग० । भार्याजन । औरतें । स्त्री । नारि.

वधू(धु)टी, (स्त्री०) अल्पा वधूः [illegible] स्त्री । छोटी उमरवाली स्त्री । "ओघवधूटीशुकलं गत"

पु० न०) उप्पलेडन । जहां बोया जाता है । दुर्गन-
ई । किलेका नगरआदि । बखालोट । खर्चल । खाईसे
ला गया मट्टीका ढेर । भेन । धूरी । किनारा । और
▪ (सीसा) । जनद । किना । प्राचीर (सफील) ।
प्रजापति (पु०).

गति (जाना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । वमति ।
मीत.

उद्गार (वमन-ऊपर उल करना) । भ्वा० पर० सक०
। वमति । अवमीत् । "टु" वमथु । "ण" वामः.

(न०) वम्+ल्युट् । मर्दन (मलना) । छर्दन
) । अर्दन (मांगना) । और बहुत निकालना ।
(सन) (पु०).

(स्त्री०) वम्+इन् । छर्दन । कै । अग्नि (आग)
•) । धूर्त (छल) (त्रि०).

, (पु०) वम्+णिच्+क्त । उल्गोद्गार । जिसने वमन
। । कै कीगई.

(गति) जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । वयते ।
यिष्ट.

, (न०) अम्+असुन्-बीभावः । विहग । परिंदह ।
ने । बालपन आदि अवस्था । उमर । और जवानी.

(वा)स्य, (पु०) वयसि तिष्ठति । मित्र (दोस्त) ।
त्रि०) युवा (जवान) (स्त्री०) "वयस्था" आमला ।
ड । गिलोय । छोटी इलायची । सहेली । जवान
स्त.

, (पु०) वयसा तुल्यः+यत् । एक जैसी उमरवाला ।
नानवयस्क । सखी । सहेली । (स्त्रियां टाप्).

, (न०) वय्+उनन् । ज्ञान । इल्म । दानाई । देव-
का मंदिर (पु०) । तरीका । नियम.

ध्स्, (पु०) वयो यौवनं धत्ते । धा+असुन् । जवा-
नीको धारण कर्ता है । तरुण । जवान.

ईप्सा (चाहना) । चु० उ० स० सेट् । वरयति-ते.

(न०) व्रियते । वृ+अप् । वर्+घञ् वा । कुंकुम ।
सर । मनागमीष्ट (थोडा प्यारा) । "वरं प्रणान्
रितव्ये" इति तन्त्रं । "भावे अप्" "वर्+घञ् वा"
च्छा (चाह) । याचन (मांगना) । आवरण (पड्दा) ।
और वेष्टन (घेरा) । "कर्मणि अप्" अभीष्ट (प्यारा) ।
और श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) (त्रि०) । यार । गुग्गल ।
जवाई । और पति (खाविन्द) (पु०).

ट, (न०) वृ+अटन् । कुन्दनामी फूल । एक प्रकारका
कीडा । और हंस (पु० स्त्री०)

पद्म० ५५

वरण, (न०) वृ+ल्युट् । कन्यादिदानाय जामात्रादेरभ्यर्थ-
नानुकूलव्यापारभेदः । कन्याआदि देनेके लिये जवाईको
एक प्रकारकी प्रार्थना करना । लपेटना (वेष्टन) । पुरो-
हितआदिको कियाओंमें लगानेके लिये पूजना । उष्ट्र
(ऊंट) । आकार (कोट शफील) । और वरुणवृक्ष ।
बनारस (काशी)की उत्तर सीमाकी एक नदी (दर्या)
(स्त्री०).

वरण्ड, (पु०) वृ+अण्डच् । एक प्रकारका मूंहका रोग ।
हाथियोंकी लडाईका अखाडा.

वरत्रा, (स्त्री०) वृ+अत्रन् । हस्तिकक्षास्थरज्जु । हाथीकी
पेटी । तसमा.

वरत्वच, (पु०) वरा त्वचा यस्य । जिसका छिलका अच्छा
है । नीमका वृक्ष.

वरद, (त्रि०) वरं ददाति । दा+क । अभीष्टदाता । चाही-
गई वस्तुको देनेहारा । और प्रसन्न (राजी हो गया) ।
कन्या (लडकी) । असगंधा । आदित्यभक्ता । दुर्गा (स्त्री०).

वरदाचतुर्थी, (स्त्री०) माघके शुक्लपक्षकी चतुर्थी.

वरम्, (अव्य०) वृ+अम् । ईषदभीष्ट । थोडा प्यारा ।
बहुत अच्छा । बेहतर.

वररुचि, (त्रि०) वरा रुचिः यस्य । अच्छी प्रीतिवाला ।
पाणिनिमुनिके सूत्रोंपर वार्तिक बनानेवाला कात्यायन
मुनि । विक्रमादित्यकी सभाका एक पण्डित.

वरलब्ध, (पु०) वर उत्कर्ष. पुष्पेषु लब्धो येन । फूलोंमें
जिसने अच्छापन लाभ किया है । चंपक
(चंबेका फूल) । प्रासवर । जिसने वर हासिल किया है
(त्रि०).

वरवर्णिनी, (स्त्री०) वरः श्रेष्ठो वर्णः प्रशंसा अस्ति
अस्याः+इनि । तारीफवाली । उत्तम स्त्री । नेक औरत ।
लाख । हल्दी । रोचना । पार्वतीआदि.

वरतनु, (स्त्री०) वरा तनुः यस्याः । सुन्दर स्त्री । अच्छे
शरीरवाली.

वरवर्णिनी, (स्त्री०) वरः वर्ण. अस्याः । अच्छे रंगवाली स्त्री
(औरत) । बहुतही उत्कृष्ट मुख (चिहरे)वाली स्त्री.

वराक, (पु०) वृ+आकन् । शिवजी । युद्ध (न०) ।
अवर (छोटा) । शोचनीय (बेचारा) (त्रि०).

वराङ्ग, (न०) वर्म । मस्तक (माथा) । "व्रियते" आ-
व्रियते (अच्छाद्यते) । वृ+अप् । कर्म० । गुप्त । गुदा ।
योनि । गुण । १ व० । गज (हाथी) । विष्णु । और
कामदेव (पु०) । अच्छे अंगोंवाला (त्रि०)
हाथीनी (म०) हस्ती+स्त्रियां ङीष्.

वराङ्गिन्, (पु०) वराङ्गं अस्ति अस्य+इनि । अच्छे
अंगवाला । अम्लवेतस । अंवलवेत । अच्छे अंगवाला (त्रि०).

…ऽ (ली), (स्त्री०) वर्णानां लेखनसाधनं तूलिः, …के लिखनेका साधनरूप तूलि। लेखनी। कलम+ कन्। यही अर्थ.

…र्म, (पु० न०) ६ त०। वर्णोंका धर्म। ब्राह्मण… वर्णोंका असाधारण (खास) धर्म। जैसे ब्राह्मणका पढ़ना, पढ़ाना, दान लेना आदि, क्षत्रियका …ओंका पालन आदि.

…कर, (पु०) संकीर्णे। सम्+कृ-अप्। वर्णतः संकरः। …का मेल दोगला। मूर्धाभिषिक्त आदि जाति। …न्ति वर्णसंकरः" गीता.

…र, (स्त्री०) वर्णाः अक्षराणि अङ्क्यन्ते अनया। अङ्क+ …। जिससे अक्षरोंके निशान कियेजाते हैं। लेखनी। …म.

…त्मन्, (पु०) वर्णः आत्मा स्वरूपं यस्य। अक्षरोंके …रवाला। ध्वनिस्वरूपसे विलक्षण आकार आदि …रवाला एक प्रकारका शब्द.

…का, (स्त्री०) वर्णाः अक्षराणि लेख्यत्वेन सन्ति अस्याः+ …। जिससे अक्षर लिखे जाते हैं। लेखनी। कलम.

…त, (त्रि०) वर्ण्+क्त। स्तुत (तारीफ कियागया)। …न कियागया। और रूपान्तरप्रापित (भेस बदला…था).

…न्, (पु०) वर्णः अस्ति अस्य+इनि। रंगवाला। चित्र-…र। मूरत लिखनेवाला। लिखनेवाला। और ब्रह्मचारी। …अथवा वर्णी विदितो महेश्वरः" इति कुमारः। ब्राह्मण …आदि जाति। "वर्णिनां हि वधो यत्र" स्मृतिः.

…क, (पु०) वृत्+ण्वुल्। एक प्रकारका पक्षी। बतरई। …तक। "वर्तक" इसी अर्थमें। घोड़ेका खुर.

…न, (न०) वृत्+ल्युट्। वृत्ति। जीविका। रोजी। "णिच् भावे ल्युट्" स्थापन (ठिकाना)। "णिच् …करणे ल्युट्" जीवनका उपाय (न०)। "ल्यु"। जीविकावाला। रहनेवाला (त्रि०)। वायस। कौआ। (पु०).

…नी, (स्त्री०) वर्त्तन्ते यान्ति अत्र। जहां पाँव चलते हैं। पीसना। "वृत्+णिच्+आधारे ल्युट्" पथ। बाट। रास्ता.

…मान, (पु०) वृत्+शानच्। आरम्भापरिसमाप्तकाल होरहा। हाल। मौजूद। शुरू कियाहुआ। जो खतम नहीं हुआ.

…ति-र्ती, (स्त्री०) वृत्+क्तिन्-वा ङीप्। लेख०। लिखना। नयनाञ्जन। आँखका कज्जल। शरीरपर लेप करना। दीपदशा। दीयेकी बत्ती। बटी.

…तिक, (पु०) वृत्+तिकन्। बटेरनामी पक्षी। "वृत्-अच् वर्त तत्र साधु' हितो वा ठन्"। भार (बोझा).

वर्तिन्, (त्रि०) वृत्+णिनि। वर्तनशील (प्रायः समासमें पीछे रहता है)। रहनेवाला। ठहरनेवाला। लौटनेवाला.

वर्तिष्णु, (त्रि०) वृत्+इष्णुच्। वर्तनशील। रहनेवाला। होनेवाला.

वर्तुल, (त्रि०) वृत्+उलच्। गोलसूरतवाला पदार्थ। गोल। गाजर (न०).

वर्त्मन्, (न०) वृत्+मनिन्। पथ। रास्ता। बाट। आचार। तरीका। आँखका पड़दा.

वर्ध, छेदन (काटना)-पूरा करना। चु० उ० स० सेट्। वर्धयति-ते.

वर्धक, (पु०) वृध्+ण्वुल्। ब्राह्मणयष्टि (बामनहाटी)। पूराकरनेवाला। भरनेवाला। काटनेवाला। छेदक.

वर्धकिन्, (पु०) वर्धका वर्धः अस्ति अस्य+इनि। त्वष्टा। बढ़ई। तरखान.

वर्धन, (न०) वृध्+ल्युट्। काटना। और पूरण (भरना)। वृध्+णिच्+ल्यु। वृद्धिकारक। बढ़ानेहारा (त्रि०) "वृध्+ल्यु"। वृद्धियुक्त। बढ़ाहुआ। (त्रि०)। "श्री" शब्द.

वर्धमान, (पु०) वृध्+शानच्। एरंडका वृक्ष। वृद्धिशील। बढ़ाहुआ (त्रि०)। शराव (प्रकारका मट्टीका पात्र। कुज्जा)। विशाल। विष्णु। धनिओंका एक घर। एक देश। एक नगर। बढ़ाहुआ (त्रि०).

वर्धापन, (न०) वर्धं (छेद) करोति। वर्ध्+णिच्-आपुक्-स्वार्थे भावे ल्युट्। नाड़ी काटनेके कर्मका अंगस्वरूप एक प्रकारका संस्कार। नाड़ीछेदन.

वर्धिष्णु, (त्रि०) वृध्+इष्णुच्। वृद्धिशील। बढ़ाहुआ.

वर्मन्, (न०) वृ+मनिन्। कवच। सन्नाह। संजोह। क्षत्रियकी उपाधि (पु०) नामके पीछे आता है.

वर्महर, (पु०) वर्म हरति। हृ+अच्। कवच धारण करनेलायक अवस्थाविशेष। तरुण। जवान.

वर्मित, (त्रि०) वर्म करोति। णिच्+क्त। जिरह पहिरेहुए। कृतसन्नाह। और हिम्मत कियेहुए (उद्युक्त).

वर्वणा, (स्त्री०) वर्वति वणति शब्दायते अच्। बर बर शब्द करनेवाली एक प्रकारकी मक्खी। स्याह। मक्खी.

वर्वर, (पुं) र, (न०) वर्व् (वृ)+अरन्। हींग पीला चन्दन। और मयरस। पामर (नीच)। मूर्ख (त्रि०)। "पलमिच्छन्ति वर्वराः" इत्युद्भटः। एकदेश। कालुमकी हरड़ (पु०).

वर्ष, (पु०) वृष्+अच्। वृष्टि (बरसना)। जम्बुद्वीपका एक भाग। और जम्बुद्वीप। "वर्षति अच्" मेघ (बादल)। और बारह महीनेका समय (वत्स)। बरिस। "प्रभव" आदि साठ बरिस (पु०).

वाग्यत, (त्रि॰) वाक् यतो येन । जिसने बोलनेवाली इन्द्रियको रोका है । मौन । चुपचाप रहनेवाला । "वाग्यतस्त्रिसवनं चरेत्" इति स्मृतिः.

वाङ्मय, (त्रि॰) वाक् स्वरूपं+मयट् । चस्य ङः । वाक्य-स्वरूप शास्त्र । शास्त्र (जिसका स्वरूप वाक्य है) । (वाङ्मयी) सरस्वती । फसाहत.

वाङ्मती, (स्त्री॰) एक नदी (जो हिमालयकी ऊंची चोटीसे निकल मिथिला देशके पास होकर बहती है) । एक दर्या.

वाचंयम, (त्रि॰) वाचां यच्छति । वाचा+यम्-ख मुम् ह्रस्वश्च । वाणिओंको रोकता है । मितभाषी । थोडा बोलनेवाला । मौनावलम्बी मुनि (चुपरहनेवाला सन्त) (पु॰).

वाचक, (पु॰) वक्ति (अभिधाद्वत्त्या बोधयति) ण्वुल् "संकेत कियेहुए अर्थको जो साक्षात् कहता है" एक शब्दका असली अर्थ । कथक (कहनेहारा) (त्रि॰) । "वाचयति वच्+णिच्-ण्वुल्" -पुराण आदि पढने पढाने वा बाचनेहारा (त्रि॰) "वाचक. पूजितो येन" पुराणम्.

वाचन, (न॰) वच्+णिच्-स्वार्थे वा णिच्-ल्युट् । पठन । पढना । वा कथन (कहना) । "युच्" पठन (पढना) (स्त्री॰)

वाचनिक, (त्रि॰) वचनेन निर्वृत्त+ठक् । वचनसे हुआ । [illegible] पाप आदि । वाणीसे कियाहुआ पाप.

वाचस्पति, (पु॰) ६ त॰ । अलुक् समा॰ । वाणीका पति । बृहस्पति.

वाच्-चा, (स्त्री॰) । वाक्य । वचन । कहना । वाणी । "उच्यतेऽसौ अनया" जिससे वह कहाजाता है । वच्+क्विप्-नि॰ वा टाप् । वागिन्द्रिय । बोलनेकी इन्द्रिय.

वाचाट, (त्रि॰) वाच्+कुत्सायां-बहुत्वेऽर्थे आटच् । कुत्सित बहुभाषी । बहुत बुरा बोलनेवाला । "आलप् [illegible]" बही.

वाचिक, (त्रि॰) वाचा कृतम् । वाच्+ठक् । वाणीसे कियाहुआ पाप । वाक्यनिष्पादित पाप.

वाचोयुक्ति, (स्त्री॰) ६ त॰ । अलुक् समा॰ । वाचा [illegible] । वचनसे दिखलाई गई दलील । वचनकी [illegible] ([illegible]) । अच्छा वचन.

वाच्य, (न॰) वच्+कर्मणि [illegible] कः । कुत्सा । दोष । [illegible] ([illegible]) । और कथन (कहना) । "[illegible]" [illegible] । वचन करनेके लायक । [illegible] अर्थ । असली अर्थ.

[illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible]

[illegible], ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) (पु॰).

वाजपेय, (पु॰ न॰) वाजं (अन्नं [illegible]) [illegible] एक प्रकारका यज्ञ । जिसमें [illegible] होता है.

वाजसनेयिन्, (पु॰) वाजसनेय +इनि । यजुर्वेदकी एक शाखाको [illegible] और उसमें कहीगई रीतिके [illegible] "शाखा वाजसनेयिनः" इति स्मृतिः.

वाजिन्, (पु॰) वाजः वेगः पक्षो वा [illegible] तेजी वा पर हो । घोटक (घोडा) । [illegible] (त्रि॰).

वाजिन, (न॰) वाजिभ्यो देवेभ्यः [illegible] यक । आमिक्षानिःसृतजल । आमिक्षा ([illegible] दही डालनेसे जो कुटसे बनजाते हैं) [illegible] तोड़न ([illegible]) । झ़रता ([illegible]).

वाजिभक्ष, (पु॰) वाजिभिः भक्ष्यते । [illegible] ६ त॰ । घोडोंका खाना । चणक । [illegible]

वाजीकरण, (न॰) अवाजी वाजी [illegible] +च्वि+कृ+ल्युट् । जिसके [illegible] है । वह चीज (दवाई) [illegible] ([illegible]) घोडेकी नाई भोग [illegible] प्रकारकी वीर्यको [illegible] ([illegible]) [illegible]

वाञ्छा, (स्त्री॰) [illegible] इच्छा । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

वाट, (पु॰) वट [illegible] ( ) [illegible] [illegible] [illegible] वृतिस्थान । वाट [illegible] । [illegible]

वाटिका, (स्त्री॰) [illegible] होनेवाला [illegible] घरकी ओर । बाग ।) [illegible] ([illegible]

वाढ्, [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] । वाडते । [illegible]" आदि [illegible]

वाडवेय, (पु॰) [illegible])" आदि [illegible] । [illegible]

वाढ, (न॰) [illegible] । नि॰ । [illegible] । [illegible] (त्रि॰) । पु॰ [illegible] । "[illegible]" [illegible] । और [illegible] ([illegible]).

वाण, (पु॰) [illegible] । [illegible] । तीर । [illegible] एक [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible] । मूंज.

[illegible], (पु॰) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] । पु॰ [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible], (पु॰) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] ।

[illegible]े, (स्त्री०) बड़ी चतुर औरत । नाचनेवाली लड़की । [illegible] । मस्त औरत । शराब पीनेवाली औरत.

[illegible] (स्त्री०) वच्+इण्-वा ङीप् । कुमा । वचन । कुमे-[illegible]ण्डा । "ङीप्" वाक्य । वचन । बोलना । शब्द । [illegible]वती.

[illegible] जाना-सेवा करना । खुशीकरना । सक० कु० उ० सेट् । [illegible] यति ते.

[illegible] (पु०) वा+क्त । स्पर्श (छूना)मात्र विशेष गुणवाला [illegible] भूत । पवन (हवा) । और शरीरका एक धातु । [illegible]नेवाला (गन्त) (त्रि०) । यार । ढीठ । कामुक.

[illegible]केन्, (त्रि०) वातोऽस्ति अस्य+इनि कुक् च । वात-[illegible]ी । वातके रोगवाला । जिसे वायुकी बीमारी है.

[illegible]केतु, (पु०) ६ त० । हवाका झण्डा । धूलि । धूर । [illegible].

[illegible]ध्वज, (पु०) ६ त० । मेघ । बादल.

[illegible]प्रमी, (स्त्री०) वातं प्रमिमीते । प्र+मा+ई । हवाके [illegible] चलाजाता है । शीघ्रग मृग । जल्दी जानेवाला [illegible]

[illegible] वातेन दुष्टं रक्तं रुधिरं यत्र । वायुसे [illegible] दूषित । एक प्रकारका रोग । गठि-[illegible]

[illegible]) । [illegible]+क्त । तनत्राणम् । वातसे अदर्न [illegible] पागल) । प्रयोजनशून्य (बिन-[illegible] काष्ठ । टाट । कवच (खाल) ।

[illegible]मेदं) रूपानि । वा+क । चपल । [illegible] रोगको उपजानेहारी चीज) [illegible]

[illegible] जनितो व्याधिः । शाक० । [illegible]ारी । वातरोग । बाईका रोग.

[illegible] (वातनिवृत्तये) अद्यते अर्थः । [illegible] जिसे जो खाया जाता है । अद्+यत् । [illegible]) । फलवाला वृक्ष.

[illegible]ापि, (पु०) अगस्त्यसे मारा कियागया एक दैत्य.

[illegible]ापिसूदन, (पु०) वातापिं सूदयति (हिनस्ति) । सूद्+ल्यु । वातापिको मारता है । अगस्त्य नाम मुनि.

[illegible]तामोदा, (स्त्री०) वातेन आमोदो यस्याः । हवासे जिसकी सुगन्धि उड़ती है । कस्तूरी.

[illegible]तायन, (न०) वातस्य अयनं गतिः येन । जिससे हवा निकलती है । झरोखा । बारी । खिड़की । गवाक्ष । "वात-स्येव शीघ्रं अयनं (गतिः) अस्य" । हवाकी भाँई जो बहुत चलता है । अश्व । घोड़ा (पु०).

[illegible]तायु, (पु०) वातं अयते । अय्+उण् । हवाकी ओर चलता है । हरिण । हिरन.

वातारि, (पु०) वातस्य (रोगभेदस्य) अरिः । बाईकी बीमारीका शत्रु । एरण्डका वृक्ष । शतमूली । शेफालिका । यवानी । भार्गी । थूही । विडंग । चतुका (लाप).

वाति, (पु०) वा+क्तिच् । वायु । हवा.

वातिक, (पु०) वातात् आगतः+ठक् । हवासे आया । बाईकी बीमारी.

वातीय, (न०) वाताय (वातनिवृत्तये) हितं+छ । बाईको दूर करनेके लिये भला । काञ्जिक । कांजी.

वातुल, (पु०) वातानां समूह +उलच् । वातका समूह । सरसर । जिसे हवाकी बीमारी होगई (बाईसे बीमार) (त्रि०).

वातूल, (त्रि०) वात+अस्त्यर्थे ऊलच् । बाईके रोगवाला । पागल (उन्मत्त) । समूहके अर्थमें ऊलच् । वातसमूह (पु०).

वात्या, (स्त्री०) वातानां समूहः+यत् । वातसमूह । बहुत हवामें सरसर आँधी.

वात्सक, (न०) वत्सानां समूहः+वुञ् । वत्ससंघ । बछ-ड़ोंका समूह । बहुत बछड़े.

वात्सल्य, (न०) वत्सलस्य भाव +ष्यञ् । पुत्रआदिमें स्नेह-को जतानेहारा एक प्रकारका रस । पियार । मुहब्बत । स्नेहविशेष.

वात्स्य, (पु०) वत्सस्य अपत्यं+यञ् । गोत्रको चलानेहारा मुनिविशेष । वत्सकी सन्तान.

वात्स्यायन, (पु०) वत्सस्य गोत्रापत्यं युवा । वत्स+यञ् । तब "जवान" के अर्थमें फक् । वत्सके गोत्र (वंश) में उत्पन्नहुआ न्यायसूत्रपर भाष्य रचनेहारा "पक्षिल" नाम मुनि । वत्सके वंशमें उत्पन्न हुआ एक युवा । कामसूत्र (विषयभोगसम्बन्धी शिक्षाओंके प्रकार)के रचनेवाला मुनि.

वाद, (पु०) वद्+घञ् । तत्त्वबुभुत्सया कथनम् । असली बातके जाननेकी इच्छासे (आपसमें) कहना (बातचीत करना) । "प्रमाणतर्कसाधनोपालम्भः सिद्धान्ताविरुद्धः पञ्चावयवोपपन्नः पक्षप्रतिपक्षपरिग्रहो वादः" । प्रमाण और तर्करूप साधनवाला सिद्धान्तके अविरोधी, पाँच (प्रतिज्ञा आदि) अवयवोंसे पूर्ण, दोनों पक्षोंमेंसे एकको स्वीकार करना । एक प्रकारका विचारस्वरूप वाक्यविशेष (कथा).

वादन, (न०) वद्+णिच्+कर्मणि ल्युट् । जो बजाया जाता है । मृदंग आदि बाजा । "भावे ल्युट्" मृदंग आदि बाजा बजाना । बाजेका शब्द.

वादर, (न०) बदरायाः कार्पास्याः विकार+अण् । कपासका बनाहुआ । कपासके सूतसे बनाहुआ कपड़ा । सूती वस्त्र (कपड़ा).

वारिद, (न०) वारि ददाति । दा+क । पानीको देता है । मेघ (बादल) । और मोथा । जलदाता (पानी देनेवाला । (त्रि०).

वारिधारा, (स्त्री०) वारेः-रां धारा । धारप्रवाह वृष्टि (वर्षाका होना).

वारिधि, (पु०) वारीणि धीयन्ते अस्मिन् । धा+कि । ६ त० । जिसमें पानी रक्खे जावे हैं । समुद्र । इसी प्रकार "वारिनिधिः" आदि.

वारिमसि, (पु०) वारि (जलं) मसिः इव (नीलतापादकं) यस्य । जिसका पानी स्याहीके समान नीले रंगका हो । मेघ । बादल.

वारिराशि, (पु०) वारीणां राशयः अत्र । जहां पानीके ढेर हों । समुद्र.

वारिरुह, (न०) वारिणि रोहति । रुह्+क । पानीमें उगता है । पद्म । कमलका फूल । जो पानीमें उत्पन्न हुआ है (त्रि०).

वारिवाह, (पु०) वारीणि वहति । वह्+अण् । पानीको उठाता है । मेघ । बादल.

वारिशा, (पु०) वारिणि (समुद्रजले) शेते । शी+ड । समुंदरके पानीमें सोता है । विष्णु । नारायण.

वारीश, (पु०) ६ त० । जलका मालिक । समुद्र । और वरुण । "वारिनाथ".

वारुण, (न०) वरुणस्येदं+अण् । वरुणका यह । पानी । जल । वरुणका (त्रि०).

वारुणि, (पु०) वरुणकी सन्तान+इन् । अगस्त्यमुनि (घड़ेसे उपजने और मैत्रावरुणकी सन्तान होनेसे).

वारुणी, (स्त्री०) वरुणः देवता अस्य । वरुणस्य इदं वा+अण् वा ङीप् । जिसका देवता वरुण है या वरुणकी पश्चिम दिशा । मदिरा (शराब) । शतभिषा नक्षत्रवाली चैत्र (चेत) मासके कृष्णपक्षकी त्रयोदशी । वरुणकी स्त्री.

वार्त, (न०) वृत्ति+अण् । आरोग्य (तन्दुरुस्ती) । निरामय (किसी रोगका न होना) । और वृत्तिशील । जीविका-रोजीवाला (त्रि०) । दुर्गा । खेतीका काम । जीविका । जनश्रुति (होरा-अफवाह) । वृत्तान्त (हाल) । और वातसे दियाहुआ भूसीका अन्न (स्त्री०).

वार्ताक, (पु०) वार्तं (आरोग्यं) आकयति (गमयति) । अक+णिच्+अण् । जो तन्दुरुस्ती (आरोग्य) को दूर करती है । वार्ताकु । बैंगन । बनाई । स्त्रियां ङीप्-वृ-अर्थ । "वार्ताकुः" (स्त्री०) । "वार्ताकुरेखा गुणगमुक्ता" इति वैद्यम्.

वार्तावह, (पु०) वार्तां आवहति । … बातको लेजाता है । खेती या … एक प्रकारका बनियां या सेठ या व्या… हक । हाल पहुंचानेहारा (त्रि०) । दू…

वार्तिक, (न०) वृत्तिरूपेण कृतो ग्रन्थः … सूत्रसे रचागया ग्रन्थ । … ग्रन्थविशेषं । सूत्रमें न कहेगये … करनेहारा एक ग्रंथ । "उक्तानुक्तदुरुक्त… वार्तिकम्".

वार्तिककार, (पु०) वार्तिकं करोति । … वर्णन) करनेवाला । कात्यायन मुनिका नाम.

वार्धक्य, (न०) वृद्धानां समूहः तस्य … ष्यञ् । कुक् च । बुढापा । बूढेका काम । … पन । "बूढोंका समूह" वार्धक (न०).

वार्धि, (पु०) वारि (जलानि) धीयन्ते … उप० । जहां पानी रहते हैं । समुद्र । छंद…

वार्धुषि, (पु०) वृद्ध्या जीवति+अण् । … वाला । ब्याजखाऊ । वृद्ध्याजीवी । "सर्वे…

वार्धुषिन्, (त्रि०) वृद्धि+अस्त्यर्थे इनि । … भवः । वृद्ध्याजीवी । ब्याजपर जीनेवाला (… सूदखोर.

वार्धुष्य, (न०) वार्धुषेर्भावः+ष्यञ् । धान्य… धान आदिके बढनेका उपाय । ऋणदान । …

वार्ध्रीणस, (पु०) वारि (जलं) पतति … वार्ध्रीणसा (नासिका) यस्य-यावत् । पु० … पानी भरा रहता है । गण्डक (गैंडा) … णसः" एक पशुविशेष.

वार्षण, (न०) वर्षणां समूहः+अण् । … संदोह.

वार्मुच्, (पु०) वारि (जलानि) मुञ्चति … पानीको छोडता है । मेघ । बादल.

वार्षिक, (त्रि०) वर्षे वर्षासु वा भव+ठञ् … बरसमें हुआ । वर्षाकालभव । वर्षामें हुआ … बरसके पीछे करनेलायक पूजा । (क्रिया … स्कालै महापूजा क्रियते या च वार्षिकी" इ…

वार्हद्रथ-थि, (पु०) बृहद्रथस्य अपत्यं+अण् … बृहद्रथ राजाकी सन्तान । जरासंध राजा.

वार्हस्पत्य, (न०) बृहस्पतिना प्रोक्तं अधी… लिये कहेहुएको पढता है । चार्वाक । एक … लिङ । "तेन प्रोक्तं तदर्थं वा+अण्" … उसका । नीतिशास्त्र । चार्वाकोंका एक शा…

वार्क, (न०) वल्कल निर्मित+अण् । वल्कल … कपड़ा.

वाल्मीकि, (पु०) वल्मीके भव+इञ् । वाल्मीकि मुनि । रामायणके रचनेवाले एक मुनिविशेष.

वाल्मीक-कि, (पु०) वल्मीके भव+अण् इञ् वा । वल्मीकमें हुआ । मुनिविशेष

वावदूक, (त्रि०) वद्+यङ्+ऊक वक्ता । बहुत बोलनेहारा । बहुतबकनेवाला । वक्ता । बड़बोला.

वावृत्, वर्त्तन । वृत्त । वरण करना । सम्भजना । दिवा० आ० सक० सेट् । वावृत्यते । वाव-ृते । "तन्वी श्यामावपुरिव तमसा वावृतेरन्" इति भट्टि .

वाश्, शब्द करना (पशुपक्षियोंका शब्द) अक० । आ-ह्वान (बुलाना) । सक० दिवा० आत्म० सेट् । वाश्यते । अवाशिष्ट । "उलूकवाश्यमानं दिव्यम्" इति भट्टि .

वाशित, (न०) वाश्+भावे क्त । पक्षियोंका शब्द । पशु-ओंके आह्वान और शब्दन । बुलाना । पुकारना.

वाशिता, (स्त्री०) वाश्+क्त । करिणी । हथिनी । हरएक औरत (स्त्री०).

वाशि(सि)ष्ठ, (न०) वशि(सि)ष्ठेन प्रोक्तं तेन प्रोक्तं वा+अण् । वशि(सि)ष्ठका [redacted] उससे कहाहुआ । वशिष्ठसे कहाहुआ एक उपपुराण । एकयोनिविद्या ग्रन्थ । वशि(सि)ष्ठका (त्रि०) । गोमती नदी (स्त्री०).

वाश्र, (न०) वाश्+रक् । गृह । घर । चतुष्पथ (चौराहा) कैं लगा । और दिवस (दिन) (पु०).

वाष्प-ष्म, (पु०) वा+प्प (ष्म) धन । ऊष्मा । भाफ । लोहा । और अश्रु (आंखका पानी) आंसू । "वाष्पिका".

वास्, सुरभीकरण (सुगन्धित करना) । चु० उ० सक० सेट् । वासयति ते । अववासत्-त.

वास, (पु०) वस्+घञ् । गृह । घर । वस्त्र । कपड़ा । अवस्थान । रहना । "वास्+अच्" वासक । और सुगंध । वास्+.

वासक, (पु०) वास्+ण्वुल् । इस नामका वृक्ष । अडूसा वृक्ष । "येन केन प्रकारेण वासकः कासनाशकः" वैद्यकम्.

वासकसज्जा, (स्त्री०) एक प्रकारकी नायिका (स्त्री) "जो अपने सजेहुए मंदिरमें सजधजकर तयार रहती है.

वासगृह, (न०) वासयोग्यं गृहम् । रहनेलायक घर । मध्यघर । घरके बीचका कमरा (जहां. जहां शयन आदि करते हैं).

वासतेयी, (स्त्री०) वसतये हिता+ढक् । रहनेके लिये भली । रात्रि । रात । वसतियोग्य (रहनेलायक) (त्रि०)। "वनेषु वासतेयेषु" इति भट्टि .

वासन, (न०) वास्+ल्युट् । सुरभीकरण (सुगन्धित कर-ना) । धूपन । धूप देना । वस्त्र । कपड़ा । वासस्थान । रहनेकी जगह । और ज्ञान (जानना).

वासना, (स्त्री०) वास्+युच् । प्रत्याशा । भरोसा । देहात्माभि-मानजनितसंस्कारः । शरीरमें आत्माकी समझसे उपजा हुआ संस्कार (शरीरही आत्मा है) । सुगन्धित करना.

वासन्त, (पु०) वसन्तस्य इदं, वसन्ते भवः वा+अण् । वसन्तका या उसमें हुआ । वसन्तका सिपाही । ऊंट । और कोयल । वसन्तमें हुआ । मलय पर्वतकी वायु । मूंग (मूंग) । मदनका दूत । जो वसन्तमें हुआ (त्रि०) । इस समय फूलनेवाली जुही (स्त्री०).

वासभवनं-मन्दिरं-सदनम्, (न०) (वासस्य भवनं) निवास (रहने) का घर । घर (गृह).

वासयष्टि, (स्त्री०) वासाय यष्टिः । कबूतर आदि पक्षि-ओंके निवासके लिये लकड़ी लाठाठी.

वासर, (पु० न०) वस्+अरन् । दिवस (दिन) । एकप्रका-रका नाग (पु०).

वासवदत्ता, (स्त्री०) वासवदत्तां अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+ अण् । आख्यायिकाअर्थमें उस (प्रत्यय)का लुक् (लोप होता है) । वासवदत्ताके चरित्रको प्रसिद्धकरनेहारा एक ग्रंथ । १ त० । इन्द्रसे दीगई (त्रि०).

वासस्, (न०) वस्+असि । वस्त्र । कपड़ा.

वासागार, (न०) वासयोग्यं अगारम् । रहनेलायक घर । रहनेका घर । घरके बीचका कमरा.

वासि-सी, (स्त्री०) वस्+इण्-वा ङीप् । कुठारभेद । एक प्रकारका कुल्हाड़ा । रहना.

वासित, (त्रि०) वास्+क्त । सुरभीकृत । सुगन्धित किया हुआ.

वासित, (त्रि०) वास्+क्त । सुगंधित । सुगन्धित किया गया । पोशाक पहिराया गया । प्रसिद्ध हुआ.

वासु, (पु०) वस्+उण् । विष्णु । नारायण

वासुकि, (पु०) (वसुना) रत्नेन कायति । कै+क-स एव इञ् । जो रत्नसे शब्द करता है । सर्पराज । सांपोंका राजा.

वासुदेव, (पु०) वसुदेवस्य अपत्यं+अण् । वसुदेवकी स-न्तान । विष्णु.

वासुरा, (स्त्री०) वस्+उरण् पृथिवी । (जमीन) । रात्रि (रात) । स्त्री (औरत) । हथिनी.

वासू, (स्त्री०) वास्+ऊ । नाट्योक्तिमें बाला (सोलहवर्षकी लड़की).

वास्तव, (न०) वस्तु एव+अण् । चीजही । सत्यभूत पदार्थ । असली । ठीक ठीक.

वास्तविक, (त्रि०) वस्तुनो निर्वृत्तं+ठक् । वस्तुसे बना । सत सिद्ध । आपही बना । सत्यभूतपदार्थ । असली चीज । ठीक ठीक.

वास्तव्य, (त्रि०) वसति । वस्+तव्य । नि० । वासकर्ता । रहनेहारा । निवास करनेलायक जगह । और वसति (रह-ना) (पु०)

विकस्व(श्व)र, (त्रि०) वि+कस् (श्)+वरच् । प्रकाशमान । चमकनेवाला.

विकसा, (स्त्री०) विशेषेण कसते आर्ती । मञ्जिष्ठा । मजीठ.

विकसित, (त्रि०) वि+कस (स्)+क्त । प्रकाशयुक्त । खिलाहुआ.

विकार, (पु०) वि+कृ+घञ् । प्रकृतेरन्यथापरिणाम । स्वभावका औरतरहसे बदलना । तबदीली । बीमारी । रोग.

विकारहेतु, (पु०) विकारस्य हेतुः । चित्तके विकृत (बिगड़ने) होनेका कारण (साधन-सामान).

विकारिन्, (त्रि०) विकार+इनि । विकारवाला । बदलनेवाला । बिगड़जानेवाला.

विकाल, (पु०) विरुद्धः कालः । बिगड़ाहुआ-वर्जितकाल (देवता और पितरोंआदिका काम न करनेलायक) समय । सायंकालका वेला । सायंकालका समय । दिनके अन्तका समय । शाम.

विकाश, (न०) विरुद्धः काशः । रहः । अकेले । प्रकाश । चमक । आकाश । आसमान । हर्ष.

विकाशिन्, (त्रि०) वि+काश+णिनि । प्रकाशशील । चमकनेवाला । विकस्वर । खिलाहुआ.

विकिर, (पु०) वि+कॄ+क । विहग । परिन्दा । और कुआ । "विकिरौ कूपे-क" । विघ्न दूर करनेकेलिये फेंकेगये श्वेतसर्षप (गौर सरसों) आदि.

विकिरण, (न०) वि+कॄ+ल्युट् । वि० । क्षेपण । फेंकना । हिंसन । मारना । और ज्ञान (जानना) । आकका वृक्ष (पु०) । ब० । किरणोंरहित (बगैर) (त्रि०).

विकीर्ण, (त्रि०) वि+कॄ+क्त । विक्षिप्त (फेंकाहुआ) । फैलागया.

विकुक्षि, (पु०) सूर्यवंशमें इक्ष्वाकु राजाका पुत्र । एक राजा.

विकुर्वाण, (त्रि०) वि+कृ+शानच् । हर्षके हेतु (सखीका शब्द विवाह पुत्रकी उत्पत्ति इत्यादि) से जिसके रोयाँ खड़े होगये हैं । चित्तविभ्रम । बिगड़रहा.

विकृत, (त्रि०) वि+कृ+क्त । बीभत्स । घिनौना हो-गया । मलिनीकृत । मैला होगया । और रोगयुक्त । बीमार होगया.

विकृति, (पु०) वि+कृ+क्तिन् । रोग । बीमारी.

विक्रम, (पु०) विशेषेण क्रामति । बहुत उत्साह करता है । वि+क्रम्+घञ्-अच् वा । त्रिविक्रम विष्णु (वामनावतार) । विक्रमादित्य राजा । "भावे घञ्" क्रमण । पाँव रखना । "करणे घञ्" (पाँव) । बहुत बहादुरी (शौर्यातिशय) । शक्ति सामर्थ्य (ताकत) । ६० वर्षोंमेंसे एक वर्ष.

विक्रमादित्य, (पु०) विक्रमेण आदित्य । सामर्थ्यमें मानों सूर्य है । इस नामसे प्रसिद्ध एक राजा (इसके समयमें ज्योतिषका बहुतही प्रचार था-इसीसे संवत् चलता है) । "विक्रमार्क" यही अर्थ.

विक्रमिन्, (पु०) वि+क्रम्+णिनि । सिंह (शेर) और विष्णु । विक्रमयुक्त (बहादुर) (त्रि०).

विक्रय, (पु०) वि+क्री+अच् । मोल लेकर दूसरेके द्रव्य (रुपये) को प्राप्त करनेहारा व्यापार । बेचना.

विक्रयानुशय, (पु०) विक्रयस्य अनुशयः (पश्चात्तापः) । बेचकर पीछे पछताना.

विक्रयिक, (पु०) विक्रयः अस्ति अस्य+ठन् । विक्रेता । बेचनेवाला.

विक्रयिन्, (त्रि०) वि+क्रि+णिनि । विक्रयकर्ता । बेचनेवाला.

विक्रान्त, (पु०) वि+क्रम्+क्त । सिंह (शेर) । शूर (बहादुर) । "भावे क्त" । विक्रम । बहादुरी.

विक्रान्ति, (स्त्री०) वि+क्रम्+क्तिन् । पादविक्षेपण । पसारना । चलना । घोड़ेकी गति (उछलना) । बहादुरी । शक्ति । प्रवेश.

विक्रिया, (स्त्री०) वि+कृ+श । विकार । बद-... (और शक्लमें तबदील रही) ... है । अन्यथा परिणाम (औरतरहसे बदलना).

विक्रेय, (त्रि०) वि+क्री+यत् । विक्रययोग्य पदार्थ । बेचनेलायक चीज.

विक्लव, (त्रि०) वि+क्लु+क्त । व्याकुलीभाव । घबराहट । घबराहुआ.

विक्लिन्न, (त्रि०) वि+क्लिद्+क्त । आर्द्र (गीला) । शीर्ण (ढहाहुआ) और जीर्ण (पुराना).

विक्षेप, (पु०) वि+क्षिप्+घञ् । त्याग (छोड़ना) । प्रेरण (चलाना) और दूर करना । फेंकना.

विक्षेपशक्ति, (स्त्री०) विक्षेपस्य (दूरीकरणस्य) जनिका शक्तिः । दूर करनेको उत्पन्न करनेहारी शक्ति । वेदान्तमें कहीगई एक प्रकारकी अविद्याकी ताकत । यह शक्ति ही ब्रह्माण्डको रच देती है.

विख, (त्रि०) विगता नासिका यस्य । खादेशः । गतनासिक । जिसका नाक दूर होगया । नकटा । "ख्यादेशः" । "विख्य" भी.

विख्यात, (त्रि०) विशेषेण ख्यातः (प्रसिद्धः) । बहुत मशहूर हुआ.

विगणन, (न०) विशेषेण गणनम् । गण्+ल्युट् । बहुत गिना । ऋण (कर्जा) चुका देनेके लिया रकमका गिना.

विगत, (त्रि०) वि+गम्+क्त । प्रमादरहित । खबरदार । विशेषगत । बहुत गया । और अपगत (दूर गया).

विभावना, (स्त्री०) एक प्रकारका अलंकार (जिसमें का-रणके बिना कार्यकी उत्पत्ति प्रतीत होती है)

विभावरी, (स्त्री०) वि+भा+वनिप्-ङीप्-वनोरच् । रात्रि । रात । हल्दी । कुटनी.

विभावसु, (पु०) विभावसु वसु अस्य । जिसकी किरणें बहुत चमकनेवाली हैं । सूर्य । चांदका हरन । आग । चित्रक वृक्ष । एक हार.

विभाव, (पु०) वि+भू+णिच्+घञ् च (साहित्यशास्त्रमें) शरीर वा मनके संस्कारको उत्पन्न करनेवाली कोई एक अवस्था (हालत) (भावके तीन मुख्य विभागमेंसे एक).

विभाषा, (स्त्री०) विरुद्धा भाषा । वि+भाष्+अ । विशेष विकल्प । व्याकरणमें एक पक्षमें होनेवाला विकल्प-विधान । "नवेति विभाषा" । दोनों तरह.

विभिन्न, (त्रि०) वि+भिद्+क्त । प्रकाशित । चमकाहुआ । विदलित । खिलाहुआ । विभक्त । बांटाहुआ । जुदा । कलमहुआ.

विभीतक, (पु०) विशेषेण भीत इव । डरासे कन् । मानों बहुत डराहुआ है । बहेड़ेका दरख्त.

विभीषण, (पु०) विशेषेण भीषयते शत्रून् । भी+णिच्-षुक् च ल्यु । जो शत्रुओंको बहुत डराता है । रावणका भाई । राक्षस । नरकुल.

विभीषिका, (स्त्री०) वि+भी+णिच्-षुक् च । धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल् । भयप्रदर्शन । डर दिखाना । डर.

विभु, (पु०) वि+भू+डु । सर्वमूर्तसंयुक्त । सब स्थान-वालोंसे मिलाहुआ । प्रभु । मालिक । ताकतवाला । महादेव । और ब्रह्म

विभूति, (स्त्री०) वि+भू+क्तिन् । भस्म । धन । राख । अणिमा आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य.

विभूषा, (स्त्री०) वि+भूष्+अ । शोभा । और भूषण । सजाना । गहना.

विभ्रम, (पु०) वि+भ्रम्+घञ् । स्त्रियोंके शृङ्गारका अंग । एक प्रकारकी चेष्टा (हरकत) । बहुत घूमना । शोभा । संदेह । और भ्रमण (घूमना) । स्त्रियोंका विलास.

विभ्राज्, (त्रि०) वि+भ्राज्+क्विप् । भूषण (जेवर गहना) आदिसे चमकाहुआ.

विमत, (त्रि०) वि+मन्+क्त । विरुद्धमतियुक्त । बर्खिलाफ-रायवाला । गैरमतवाला । दुश्मन.

विमनस्, (त्रि०) विरुद्धं मनो यस्य बा+कप् । चिन्ता (फिकर) आदिसे व्याकुलचित्त (घबरायेहुए दिलवाला).

... (पु०) विमृद्यतेऽसौ । वि+मृद्+घञ् । ... । वृक्ष । "भावे घञ्" मर्दन । मलना । वटना.

... (न०) वि+मृश्+ल्युट् । परामर्श । सोच । ... । वितर्क । दलील । "घञ्" यही अर्थ (पु०).

विमर्श, (पु०) वि+मृश्+घञ् । विचार । नाटकका एक अंग.

विमल, (त्रि०) विगतो मलो यस्मात् । जिससे मल दूर हुआ । स्वच्छ (साफ) । निर्मल । ' विगतो मलो यस्मा " । उत्कल क्षेत्रमें एक प्रकारकी देवी (स्त्री०)

विमातृ, (स्त्री०) विरुद्धा माता । मातृसपत्नी । मांकी सौतिन । सौतेली मां.

विमातृज, (पु०) विमातुर्जायते । जन्+ड । सौतेला भाई.

विमान, (पु० न०) वि+मन्+घञ् । वि+मा+ल्युट् वा । देवयान । देवताओंकी गाड़ी । रथ । चक्रवर्तीका एक घर । घोड़ा (पु०) हरएक सवारी और परिमाण (माप) (न०).

विमानचारिन्, (त्रि०) (विमाने चरति) । विमान (स्वर्गकी गाड़ी)में घूमनेवाला.

विमार्ग, (पु०) विरुद्धो मार्गः । बुरा रास्ता । कुपथ । खराब सड़क । निन्दिताचार । बुरा चालचलन.

विमुख, (त्रि०) विरुद्धं (अननुकूलं) मुखं अस्य । बर्खिलाफ मुखवाला । दुश्मन । बहिर्मुख । और निवृत्त (हटाहुआ) । मुंमोड़ेहुए.

विमुद्र, (त्रि०) विगता मुद्रा (मुकुलीभावः) यस्य । जिसका बंदहोना दूरहुआ । विकसित । खिलाहुआ । मोहरबिन.

बिम्ब, (पु० न०) वी+वन्+मुम् ह्रस्वौ । दर्पण (शीशा-आईना) में प्रतीत होरही परछाहीका आश्रय । और कमण्डलु । सूर्य आदिका मण्डल (दायरा) । और कृकलास (गिरगट) (पु०) । "बिम्बायाः फलं+अण् तस्य लुक्" । बिम्बिकाफल.

वियत्, (न०) वि+यम्+क्विप्-मलोप तुक् । आकाश । आस्मान.

वियद्गङ्गा, (स्त्री०) वियतस्था गंगा । आकाशकी गंगा । स्वर्गकी गंगा । मंदाकिनी.

वियात, (त्रि०) वि+या+क्त । धृष्ट । ढीठ । बेशरम । निर्लज्ज.

वियोग, (पु०) वि+युज्+घञ् । विच्छेद । बिछोड़ा । ६ स० । पक्षियोंका मेल.

वियोगिन्, (पु०) वि+युज्+घिनुण् । चकवाक । चकवा पक्षी । बिछोड़ेवाला (त्रि०).

विरक्त, (त्रि०) वि+रञ्ज्+क्त । विच्छिन्न । जुदा । और विरत । हटाहुआ । बेमुहब्बत.

विरचित, (त्रि०) वि+रच्+क्त । कृत । कियाहुआ । बनायागया । निर्मित.

विरजस्, (स्त्री०) विगतं रजो यस्याः । जिस स्त्रीसे रज दूरहुआ । मनारीका स्त्री । ऋतुरहित स्त्री । जिसे महीनेका ऋतु आना बंदहोगया । रजोगुणसे रहित (त्रि०).

विभावना, (स्त्री॰) एक प्रकारका अलंकार (जिसमें कारणके बिना कार्यकी उत्पत्ति प्रतीत होती है).

विभावरी, (स्त्री॰) वि+भा+वनिप्-ङीप्-वनोरश् । रात्रि । रात । हल्दी । कुटनी.

विभावसु, (पु॰) विभावसु यस्य । जिसकी किरणें बहुत चमकनेवाली हैं । सूर्य । आकका दरख्त । आग । चित्रक वृक्ष । एक हार.

विभाव, (पु॰) वि+भू+णिच्+अच् अ (साहित्यशास्त्रमें) शरीर वा मनके सहजमें उत्पन्न करनेवाली कोई एक अवस्था (हालत) (भावके तीन मुख्य विभागोंमेंसे एक)

विभाषा, (स्त्री॰) विरुद्धा भाषा । वि+भाष+अ । निषेध । विकल्प । व्याकरणमें एक पक्षमें होनेवाला विकल्पविधान । "नवेति विभाषा" । दोनों तरह

विभिन्न, (त्रि॰) वि+ भिद्+क्त । प्रकाशित । चमकाहुआ । विदलित । मिलाहुआ । विभक्त । बाँटाहुआ । जुदा । अलगहुआ.

विभीतक, (पु॰) विशेषेण भीत इव । इवार्थे कन् । मानों बहुत डराहुआ है । बहेडेका दरख्त.

विभीषण, (पु॰) विशेषेण भीषयते शत्रून् । भी+णिच्-षुक् च ल्यु । जो शत्रुओंको बहुत डराता है । रावणका भाई । राक्षस । नलतृण.

विभीषिका, (स्त्री॰) वि+भी+णिच्-षुक्-ण्वुल् । भावयितेरिति ण्वुल् । भयप्रदर्शन । डर दिखाना । डर.

विभु, (पु॰) वि+भू+डु । सर्वमूर्तसंयुक्त । सब शकलवालोंसे मिलाहुआ । प्रभु । मालिक । ताकतवाला । महादेव । और ब्रह्म.

विभूति, (स्त्री॰) वि+भू+क्तिन् । भस्म । राख । ताकत । अणिमा आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य.

विभूषा, (स्त्री॰) वि+भूष्+अ । शोभा । और भूषण । सजाना । गहना.

विभ्रम, (पु॰) वि+भ्रम्+घञ् । स्त्रियोंके शृङ्गारका अंग । एक प्रकारकी चेष्टा (इशारा) । बहुत घूमना । शोभा । संदेह । और भ्रमण (घूमना) । स्त्रियोंका विलास.

विभ्राज्, (त्रि॰) वि+भ्राज्+क्विप् । भूषण (जेवर गहना) आदिसे चमकाहुआ.

विमत, (त्रि॰) वि+मन्+क्त । विरुद्धमतियुक्त । भिन्नमतावलम्बी । गैरमतवाला । दुश्मन.

विमनस्क, (त्रि॰) विविधं मनो यस्य कप्+कप् । चिन्ता (फिकर) आदिसे व्याकुलचित्त (घबराहुआ दिलवाला).

विमर्द, (पु॰) विमर्दयति । वि+मृद्+घञ् । क्षोदन । घुसिड़ना चूर । "मले पद्" करेंक । मसलना । रगड़

विमर्श, (पु॰) वि+मृश्+घञ् । परामर्श । तर्क । विचार । विमर्श । दृष्टांत । "मृष्" की अर्थ (पु॰).

विमर्ष, (पु॰) वि+मृष्+घञ् । विचार । नाटकका एक अंग.

विमल, (त्रि॰) विगतो मलो यस्मात् । जिससे मल दूर हुआ । स्वच्छ (साफ) । निर्मल । "विगतो मलो यस्य" । [illegible] क्षेत्रमें एक प्रकारकी देवी (स्त्री॰)

विमातृ, (स्त्री॰) विरुद्धा माता । सपत्नमाता । [illegible] । सौतेली माँ.

विमातृज, (पु॰) विमातुर्जायते । जन्+ड । सौतेला भाई.

विमान, (पु॰ न॰) वि+मन्+घञ् । वि+मा+ल्युट् वा । देवयान । देवताओंकी गाडी । रथ । [illegible] एक घर । घोडा (पु॰) इज्जत [illegible] और [illegible] (मान) (न॰)

विमानचारिन्, (त्रि॰) (विमाने चरति) । विमान ([illegible] गाडी)में घूमनेवाला.

विमार्ग, (पु॰) विरुद्धो मार्गः । बुरा रस्ता । कुपथ । खराब सडक । [illegible] । [illegible] [illegible].

विमुख, (त्रि॰) विरुद्धं (अनुकूलं) मुखं यस्य । [illegible] मुखवाला । दुश्मन । बहिर्मुख । और [illegible] ([illegible]) । मुँहफेरेहुए.

विमुग्ध, (त्रि॰) विशेषा मुग्धः ([illegible]) [illegible] । [illegible] बहुतोंका [illegible] । [illegible] । [illegible] । मोहरहित.

विम्ब, (पु॰ न॰) वी+वन् मुम् [illegible] । प्रतिबिम्ब ([illegible]) में प्रतीत होती वास्तविक [illegible] । और कमण्डलु । सूर्य [illegible] मण्डल ([illegible]) । और [illegible] ([illegible]) (पु॰) । "[illegible]" [illegible] [illegible] । बिम्बिकाफल.

वियत्, (न॰) वि+यम्+क्विप् [illegible] तुक् । आकाश । आसमान.

वियद्गङ्गा, (स्त्री॰) वियतस्था गङ्गा । आकाशकी गंगा । [illegible] । [illegible].

वियात, (त्रि॰) वि+या+क्त । धृष्ट । ढीठ । बेशरम । निर्लज्ज.

वियोग, (पु॰) वि+युज्+घञ् । विच्छेद । बिछोह । [illegible] । [illegible] मेल.

वियोगिन्, (पु॰) वि+युज्+घिनुण् । चकवा । चकरा [illegible] । बिछोहवाला (त्रि॰).

विरक्त, (त्रि॰) वि+रञ्ज्+क्त । विरागी । उदास । और [illegible] । [illegible] । बेपरवाह.

विरचित, (त्रि॰) वि+रच+क्त । कृत । बनाहुआ । [illegible] । [illegible].

विरजस्, (स्त्री॰) विगतं रजो यस्याः । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

विश्र(श्रा)म, (पु०) वि+श्रम्+घञ्‌-वा वृद्धिः । विराम । हटना । आराम । किये जारहे कामका अवसान (अंत).

विश्रम्भ, (पु०) वि+श्रम्भ्+घञ्‌ । विश्वास (भरोसा) । प्रणय । केलिकलह (क्रीडासंबंधी झगडा) । और वध (कतल).

विश्रम्भालाप, (पु०) (विश्रम्भस्य आलापः) विश्वासकी बातचीत । गुप्तगुप्त संभाषण । विश्वाससे भराहुआ । परस्पर संभाषण (बातचीत अथवा वार्तालाप).

विश्राव, (पु०) वि+श्रु+घञ्‌ । प्रसिद्धि । और स्रवाहे (मशहूरी).

विश्रुत, (पु०) वि+श्रु+क्त । विख्यात । मशहूर । प्रसिद्ध.

विश्लिष्ट, (त्रि०) वि+श्लिष्+क्त । वियुक्त (बिछडाहुआ-अलगहुआ) और शिथिल (ढीला).

विश्लेष, (पु०) वि+श्लिष्+घञ्‌ । वियोग । बिछोडा । और ढीलापन.

विश्व, (न०) विश्+व । जगत्‌ । संसार । दुनिआं । उसका अभिमानी जीवात्मा (पु०) । श्राद्धके देवताविशेष (पु० ब० व०) । सकल (सारा) (त्रि०) (इसी अर्थमें सर्वनामसंज्ञा होती है).

विश्वकर्मन्‌, (पु०) विश्वेषु कर्म (व्यापारो यस्य) । जिसका काम सब स्थानमें है । सूर्य । देवशिल्पी । (देवताओंका कारीगर) एक मुनि । और परमेश्वर.

विश्वकृत्‌, (पु०) विश्वं करोति । कृ+क्विप्‌ । विश्वको बनाते है । विश्वकर्मा । और परमेश्वर.

विश्वकेतु, (पु०) विश्वे केतवः अस्य । सबके साथ जिसका झंडा है । अनिरुद्ध.

विश्व(ष्व)क्सेन, (पु०) विष्वक्‌ (सु) की सेना अस्य । जिसकी सेना पवित्र हो (विष्णु) प्रियंगु वृक्ष (स्त्री०).

विश्व(ष्व)क्‌, (अव्य०) विश्वं अञ्चति । क्विप्‌ । सर्वतः । चारोंओर । विष्वग्गामी (सब ओर जानेवाला) (त्रि०).

विश्वधारिणी, (स्त्री०) विश्वं धारयति । धृ+णिनि । पृथिवी.

विश्वप्सन्‌, (पु०) विश्वं प्साति (भक्षति) । प्सा+कनिन्‌ । अग्नि । चन्द्रमा । देवता विश्वकर्मा । और पृथिवी.

विश्वम्भर, (पु०) विश्वं बिभर्ति (भृ+खच्‌-मुम्‌ च) । विश्वको पालता है । इन्द्र और विष्णु । पृथिवी (स्त्री०).

विश्वरेतस्‌, (पु०) विश्वं रेतो यस्य । जिसे संसार उत्पन्न करता रहता है । चार मुखवाले ब्रह्मा.

विश्ववेदस्‌, (पु०) विश्वं वेत्ति । विद्+असुन्‌ । संसारको जानता है । इन्द्रआदि देवता । और सब गुण संपन्न.

विश्वसृज्‌, (पु०) विश्वं सृजति । सृज्+क्विप्‌ । संसारको रचता है । चारमुखवाले ब्रह्मा.

विश्वस्त, (त्रि०) वि+श्वस्+क्त । जातविश्वास जिसपर भरोसा कियागया हो । "विधवा" विधवा स्त्री (बेवा औरत) (स्त्री०).

विश्वाची, (स्त्री०) विश्वं अञ्चति । अञ्चि+ अप्सरा.

विश्वात्मन्‌, (पु०) विश्वं आत्मा यस्य । आत्मा है । विष्णु । नारायण । परमात्मा.

विश्वामित्र, (पु०) विश्वं मित्रं अस्य (दीर्घ होता है) । संसार जिसका मित्र है । एक पिता पुत्र । एक राजा.

विश्वाराज्‌, (पु०) विश्वेषु राजते । विश्वोंमें चमकता है । विश्वोंका राजा । और

विश्वावसु, (पु०) विश्वानि वसु यस्मात्‌ । जिससे सबोंका धन होता है । एक गंधर्व ।

विश्वास, (पु०) वि+श्वस्+घञ्‌ । "यह इसीतरह एक चित्तकी वृत्ति । प्रत्यय । श्रद्धा ।

विश्वेदेव, (पु० ब० व०) कर्म० । अदुर् पूजनमें इस (क्रतु आदि) देवता । (पु०).

विश्वेश, (पु०) ६ त० । विश्वका अधिप "विश्वेश्वर".

विष्‌, व्याप्ति (फैलाना) जु० उभ० सक० । विवेष्टि । वेविष्ट । अविक्षत्‌.

विष्‌, (स्त्री०) विष्+क्विप्‌ । विष्ठा । मैला । गू

विष, (न०) विष्+क । जल । (सबको पुष्ट करता है) । मृणाल (कमलकी डण्डी) और विष । जहर (पु० न०)

विषकण्ट, (पु०) विषं कण्टे यस्य । जिसके कंठ है । शिवजी.

विषघ्न, (पु०) विषं हन्ति । (हन्+क) । विषको नाश करता है) शिरीष (सिरस) (कटेला हरा) । विषनाशक । विषको दूर (त्रि०).

विषज्वर, (पु०) विषं इव भयकारक ज्वरो यस्मात्‌ कोई भी प्राणीके नाश करनेवाला है । महिष । भैंसा.

विषण्ड, (न०) विषं ददाति । कमलकी डण्डी । है.

विषदर्शनमृत्युक, (पु०) विषं दृष्ट्वा मृत्युः । विषसे होता है । चकोर । पक्षी.

विषधर, (पु०) विषं धरति । धृ+अच्‌ । सर्प । जिसके कंठ है । सर्प । "विषधरनिर्मोक्" सांप

विषम, (त्रि०) विगतो विरुद्धो वा समः । असम । जो बराबर नहिं । अयुग्म (जो जोडा नहिं) जैसे तीन-पांच आदि । ऊंचा नीचा । दारुण । सख्त । सङ्कट । एक प्रकारका पद्य (न०).

विषमच्छद, (पु०) विषमाः (अयुग्माः) छदाः यस्य । सप्तच्छद । सतौनेका दरख्त.

विषमज्वर, (पु०) विषम उग्रो ज्वरः । सख्तबुखार.

विषमनयन, (पु०) विषमाणि (अयुग्मानि) त्रीणि नयनानि अस्य । जिसके तीन नेत्र हैं । महादेव । शिवजी.

विषमस्थ, (त्रि०) विषमे (उन्नतानते संकटे वा) तिष्ठति । स्था+क । ऊंचे नीचे वा सङ्कटमें ठहरता है । उपद्रवग्रस्त । मुसीबतमें पडाहुआ । संकटमें आया । और ऊंची नीची जगहपर ठहिराहुआ.

विषमशिष्ट, (न०) विषमं शिष्टं (शासनं) । अनुचित शासन । ना मुनासिब सजा.

विषमायुध, (पु०) विषमाणि (अयुग्मानि-पञ्च) आयुधानि (बाणाः) यस्य । जिसके पाँच तीर हैं । कामदेव.

विषय, (पु०) विषिण्वन्ति (विषयिणं संबध्नन्ति स्वात्मकतया) वि+षि+अच् । जो अपने स्वरूपसे विषयीको बांध लेते हैं । इन्द्रियोंसे जानेगये शब्दादि । मजमून । और देश.

विषयिन्, (न०) विषयः अस्ति अस्य+इनि । विषयवाला । ज्ञान (जाना) । और इन्द्रिय । विषयासक्त (विषयोंमें फंसाहुआ) (त्रि०) । राजा । कामदेव । और शब्द (पु०).

विषलता, (स्त्री०) विषव्याप्ता इव लता । बेल मानों जहिरसे घिरी है । इन्द्रवारुणी बेल.

विषविद्या, (स्त्री०) विषाय (तन्निरासाय) विद्या । जहिर दूर करनेका इल्म । विष दूर करनेके मन्त्रको जानना.

विषवैद्य, (पु०) विषे (विषापहरे) वैद्य. (चिकित्सकः) । विष दूरकरनेमें हकीम । विषमन्त्रविद्यावाला.

विषाण, (न०) विष्+कानच् । पशुका सींग । हाथी वा सूअरका दांत । कुष्ठौषध । और क्षीरकाकोली.

विषाद, (पु०) वि+षद्+घञ् । अवसाद । जडता । दिलका टूटना.

विषान्तक, (पु०) विषस्य अन्तक इव । जहिरका मानो यमराज है । शिवजी । विष दूर करनेवाला (त्रि०).

विषाराति, (पु०) ६ त० । विषका शत्रु । काला धतूरा । कृष्णधुस्तूर.

विषास्य, (पु०) विषं आस्ये यस्य । जिसके मुखमें जहिर है । सर्प । सांप । "जिसमें छिपेहुए मुखसत्व निकासा" । भल्लातक.

विषु, (अव्य०) विष्+कु । तुल्य । बराबरी । और नानारूपत्व.

विषुव, (न०) विषु (दिनरात्र्योः साम्यं) वाति-व... वह समय कि जब रात और दिन बराबर हो जाता... "विषुवत्" यही अर्थ.

विष्क्, (हिंसा) कतलकरना-मारना । चु० आ० स... विष्कयते । दर्शन (देखना) । उभ० । विष्कय... अविविष्कत्-त.

विष्कम्भ, (पु०) वि+स्कम्भ्+अच् । सूर्य और च... योग (मेल) से उत्पन्न हुआ पहिला योग । वि... फैलाव । प्रतिबंध । रोक । नाटकका एक अंग (... मध्यपात्रके द्वारा पीछे और आगेका वृत्तान्त ... कहाजाता है) । योगियोंका एक बंध । वृक्ष । की... कील.

विष्टप, (न०) विश्+कपन्+तुट् च । भुवन । ... जगत् । संसार.

विष्टब्ध, (त्रि०) वि+स्तम्भ्+क्त । प्रतिरुद्ध । रुका... अवरुद्ध.

विष्टम्भिन्, (त्रि०) वि+स्तम्भ्+णिनि । प्रतिबंध... रोकनेहारा । एक रोगको उपजानेहारा.

विष्टर, (पु०) वि+स्तृ+अप् । पत्र । कुशाका बना... एक आसन । हरएक आसन । वृक्ष.

विष्टरश्रवस्, (पु०) विष्टरः (कुशमुष्टिरिव) श्र... (कर्णौ) अस्य । कुशाकी मुट्ठीके समान जिसके कान... विष्णु.

विष्टि, (स्त्री०) विश्+क्तिन्-विष् वा । वेतन (तनखा... के विना भार आदि उठानेका दुःख । मजदूरी । का... कर्मणा (कर्मना) । प्रेषण । भेजना । सातवाँ करण... काम करनेहारा नौकर । मजदूर मजदूरीके विना ... करनेवाला (पु०).

विष्ठा, (स्त्री०) विविधं तिष्ठति । स्था+क-अत्वम् । पुरी... मल । गूह.

विष्णु, (पु०) विष् (व्यापन-फैलना) नुक् । व्याप... फैलाहुआ-जो (सब स्थानमें है) । परमेश्वर । ... (आग) । शुद्ध । सात्त्विक । धर्मशास्त्रके बनानेहारा ए... मुनि । वासुदेव.

विष्णुगुप्त, (पु०) चाणक्य पण्डित । यदि वात्स्याय... पक्षिलस्वामी प्रसिद्ध न्यायभाष्यका रचनेवाला है.

विष्णुतैल, (न०) वैद्यक (चिकित्सा) में प्रसिद्ध एक प्र... रका तेल.

विष्णुपद, (न०) विष्णोः पदमिव (व्यापकत्वात्) ... व्यापक होनेसे मानो विष्णुका पाँव है । आकाश । अन्तर...

विष्णुपदी, (स्त्री०) विष्णुपदं कारणत्वेन अस्ति अस्य... ङीप् । जिसका कारण विष्णुका पाँव है । गंगा । ए... का रास, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशिमें बदलना.

विष्णुमाया, (स्त्री०) ६ त० । विष्णोः (परमेश्वरस्य) माया । परमात्माकी अघटघटनापटीयसी (जो न बनसके उसेभी बनादेनेमें बहुतही चतुर) अविद्याशक्ति । उसकी अधिष्ठात्री (आश्रय) दुर्गा.

विष्णुरथ, (पु०) विष्णो रथ इव । मानो विष्णुकी गाडी है । गरुड.

विष्णुरात, (पु०) विष्णुना रातः, विष्णुना रातात् जीवनं यस्मै । रा+क्त । विष्णुने दियागया । विष्णुने जिसे जीवन दिया । परीक्षित् नामी राजा (यह गर्भहीमें अश्वत्थामाके अस्त्रसे जलकर मरगया, परन्तु विष्णुने फिर जिलाया) यह कथा महाभारतमें प्रसिद्ध है.

विष्फार, (पु०) वि+स्फुर्+णिच्+अच् । धनुर्गुणाकर्षणशब्द । कमानके चिल्ला खेंचनेका शब्द । टंकार.

विष्य, (त्रि०) विषेण वध्य । विष्+यत् । जहरमारनेके लायक । जहरसे मार डालनेके लायक । विषवध्य.

विष्वक्सेन, (पु०) विषूची सेना यस्य । जिसकी चारों तरफ सेना है । विष्णुपर चढेहुएको खानेवाला । और विष्णुके गणोंमेंसे एक । प्रियंगु (स्त्री०).

विष्वाण, (न०) वि+स्वन्+घञ् । षत्वणत्वे । भोजन खाना । खुराक.

विस, (न०) वि+सो+क । मृणाल । कमलफूलकी डण्डी ।

विस्, उत्सर्ग (छोडना) । दिवा० पर० सक० सेट् । विस्यति । अवेसीत्.

विसंवाद, (पु०) वि+सम्+वद्+घञ् । विप्रलम्भ । वचन । ठगना । किसी पदार्थके विषयमें उलटा कहना.

विसकुसुम, (न०) विसयुक्तं कुसुमं । कमलफूलकी डण्डीवाला फूल । पद्म.

विसङ्कट, (पु०) विशिष्टो संकटो यस्मात् । ५ ब० । जिससे बडा संकट होता है । सिंह । शेर । इङ्गुदीका वृक्ष.

विसनाभि, (स्त्री०) विसं नाभौ यस्य । जिसकी नाभिमें विस है । पद्मिनी और पद्मोंका समूह.

विसर, (पु०) वि+सृ+अप् । समूह । और विस्तार । फैलाव.

विसर्ग, (पु०) वि+सृज्+घञ् । दान देना । त्याग । छोडना । मलका त्याग । मोक्ष (छुटकारा) और प्रलय.

विसर्जन, (न०) वि+सृज्+ल्युट् । दान । देना । त्याग । छोडना । वि+सृज्+णिच्+ल्युट् । प्रेरण । भेजना.

विसर्पण, (न०) वि+सृप्+ल्युट् । प्रसार । फैलाव । सरकना । भागजाना.

विसिनी, (स्त्री०) विसानां समूहः । तद्युक्तो देशो वा+इनि । कमलोंका समूह । और पद्मलता (बेल).

विसूचिका, (स्त्री०) विशिष्टा सूचीव । स्वार्थे कन् । मानो सुई चुई है । एक प्रकारका रोग । हैजा.

विसृत, (त्रि०) वि+सृ+क्त । विस्तीर्ण । फैलाहुआ.

विसृत्वर, (त्रि०) वि+सृ+क्वरप् । विसरणशील । फैलनेवाला । (स्त्रियां ङीप्).

विसृमर, (त्रि०) वि+सृ+क्मरच् । विसरणशील । फैलनेवाला.

विसृष्ट, (त्रि०) विसृज्+क्त । प्रेरित । भेजाहुआ । छोडाहुआ । क्षिप्त । फेंकागया.

विस्त, (पु० न०) विस्-उत्सर्ग (छोडना) क्त । [illegible] न इट् । कर्षपर्य । सोनेकी मोहर । अस्सी रत्तीका परिमाण (भार).

विस्तार, (पु०) वि+स्तॄ+संज्ञायां कर्तरि घञ् । विटपवृक्ष । शाखाओंका फैलाव । "भावे घञ्" शब्दोंकी (फैलावट) । और समासके वाक्यमें पदोंका समूह.

विस्तीर्ण, (त्रि०) वि+स्तॄ+क्त । विपुल । फैला हुआ । विशाल । लंबा.

विस्फुलिङ्ग, (पु०) विस्फुरति । वि+स्फुर्+ड वा पः [illegible] लिङ्ग अस्य । चमकनेवाले निशानवाला । वह्निकण आगका कतरा । एक प्रकारका विष.

विस्फोट, (पु०) विस्फुटति । वि+स्फुट्+अच् । [illegible] फूटता है (विषफोडा) पदार्थ । "स्वार्थे कन्" एक प्रकारका फोडा.

विस्मय, (पु०) वि+स्मि+अच् । आश्चर्य । अद्भुत अजीब । एक रस.

विस्मापन, (पु०) वि+स्मि+णिच्+ल्यु+आत् ल्यु जो हैरान करदे । कुहक । इन्द्रजालका तमाशा । और कामदेव । गंधर्वोंका पुर (न०) "विस्मापनम्" यही अर्थ.

विस्मित, (त्रि०) वि+स्मि+क्त । विस्मययुक्त । हैरानहुआ.

विस्मृत, (त्रि०) वि+स्मृ+क्त । स्मरणाविषय । भूलगया.

विस्मृति, (स्त्री०) वि+स्मृ+क्तिन् । स्मरणाभाव । भूलना.

विस्र, (न०) विस्+रक् । आमगन्धि । कचा गंध । आमगंध.

विस्रगन्धि, (पु०) विस्रस्य इव गन्धः अस्याः । जिसका गंध कचे गंधके समान है । "इव समा०" हरिताल । हरताल.

विस्रम्भ, (पु०) वि+स्रम्भ+घञ् । विश्वास । प्रणय । परिचय.

विस्रम्भिन्, (त्रि०) वि+स्रम्भ्+णिनि । विश्वासवाला । सुहृत्ती.

विस्रसा, (स्त्री०) वि+स्रंस्+अ । जरा । बुढेपा

विहग, (पु०) विहायसि । [illegible] पक्षी । परिंदह.

वृष्टिजीवन, (त्रि०) वृष्टिः जीवनं यस्य वा वृष्ट्या जीवति– जीव्+ल्युट्+अन । वर्षासे पालागया या आर्द्र (गीला) होगया (नगर)। जलसे पूर्ण होगया । जलसे पलनेवाला । जिसका जीवन जल है । चातक । पपीहा नामसे प्रसिद्ध पक्षी.

वृष्टिभू, (पु०) वृष्टौ (तदुपलक्षिते काले) भवति । वर्षासे पहिचानेहुए समय (बरसात) में होता है । मेक । मेंडक । वर्षामें हुआ (त्रि०).

वृष्टिसंपात, (पु०) वृष्टेः संपातः । वृष्टिका गिरना । पानीका धाराप्रवाह बरसना.

वृष्णि, (पु०) वृष्+नि । यादवोंका वंश । श्रीकृष्ण । और बादल.

वृष्णिगर्भ, (पु०) वृष्णिः (यादवकुल) गर्भे यस्य । जिसके गर्भमें यादवोंका कुल है । श्रीकृष्णमहाराज.

वृष्य, (त्रि०) वृष्+यत् । धाराप्रवाह बरसनेके योग्य । विषयेन्द्रियके शक्तिको बढानेवाला । वाजीकरण.

वृह्, दीप्ति (चमकना) पु० उभ० सक० सेट् भ्वा० पर० इदित् । बृंहति-ते । अबृंहत्-त । बृंहती । अबृंहीत्.

वृह्, ध्वनि (अव्यक्तकरना) और वृद्धि (बढना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । बर्हति । अबर्हत् । अबर्हीत्.

वृहत्, (त्रि०) वृह्+अति । महत् । बडा । स्त्रियां ङीप्.

वृहती, (स्त्री०) बडी स्त्री । वाक् । आच्छादन । कण्टकारिका । [illegible] । नौ अक्षरोंके पादवाला एक छन्द । [illegible].

वृहद्भानु, (पु०) वृहत् भानुः किरणो यस्य । बडेकिरणवाला । सूर्य । चित्रक वृक्ष.

वृहद्रथ, (पु०) वृहत् रथः अस्य । बडेरथवाला । इन्द्र । वेदका एक मन्त्र (वर्णन) । सामवेदका एक भाग.

वृहस्पति, (पु०) वृहतां (वाचां) पतिः । पृ० नि० । [illegible] अंगिरस । जीव । देवताओंका आचार्य (गुरु).

वेग, (पु०) विज्+घञ् । प्रवाह । रव । जोर । नदी । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] एक प्रकारका [illegible] । [illegible].

वेगिन्, (पु०) वेग+अस्त्यर्थे इनि । श्येन । बाजपक्षी । वेगवाला ([illegible]) (त्रि०) स्त्रियां ङीप्

वेण (ऋ), [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । भ्वा० उभ० सक० सेट् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

वेण, (पु०) वेण+अच् । [illegible] । एक प्रकारका [illegible] । [illegible] । [illegible] । एक राजा.

वेणि-णी, (स्त्री०) वेण्+इन्-वा ङीप् । [illegible] केशोंकी रचना । गुत्त । जलका समूह । ज[illegible] देवदारुका वृक्ष । एक नदी । [illegible] स्थान जि[illegible] यमुना और सरस्वती मिलजाती हैं.

वेणीर, (पु०) वेण्+ईरन् । अरिष्टवृक्ष । नीम[illegible]

वेणीसंहार, (पु०) (वेण्याः संहारः) [illegible] चूडा (बालों) बांधना ।

वेणु, (पु०) वेण्+उन् । वंश (बांस) । बांस[illegible] वंशी (एक प्रकारका बाजा) । वंशली.

वेणुज, (पु०) वेणुतो जायते । जन्+ड । [illegible] जौके सदृशका चावल.

वेणुध्म, (पु०) वेणुं (वंशी) धमति । ध्म[illegible] बादक । वंशीबजानेवाला.

वेणुवाद, (त्रि०) वेणुं वादयति । वद्+[illegible] वेणुवादक । वंशी बजानेवाला । वंशी बजाना [illegible]

वेतन, (न०) अज्+तनन्-वीभावः । किसे[illegible] मजदूरी.

वेतनजीविन्, (पु०) (वेतनेन जीवति) [illegible] (मजदूरी) पर जीनेवाला.

वेतनादान, (न०) ६ त० । कर्मदक्षिणा (म[illegible] देना । एक प्रकारका व्यवहार.

वेतस, (पु०) अज्+असुन्-तुडागम-वीभावः । [illegible] एक वृक्ष.

वेतस्वत्, (त्रि०) वेतसः अस्ति अस्य+म[illegible] वेतसवाला देश.

वेताल, (पु०) अज्+विच्-वीभावः । तड+ण[illegible] एक प्रकारका [illegible] (मन) । वह मुर्दा [illegible] भूतने प्रवेश किया है (भूताधिष्ठित शव) [illegible] एक अनुचर (नौकर) । द्वारपाल । दरबान.

वेत्तृ, (त्रि०) विद्+तृच् । ज्ञाता । जाननेवाला । [illegible] हासिल करनेवाला.

वेत्र, (पु०) अज्+त्रल्+वीभावः । बेंत । बेत[illegible]

वेत्रधर, (पु०) वेत्रं धारि । धृ+णच् । वे[illegible] द्वारपाल । दरबान । बेंतकी सोटा पकडनेवा[illegible]

वेत्र(त्रा)वती, (स्त्री०) वेत्रः अस्त्यस्याः [illegible] मतुप् मस्य वः । वा ङीप् । मालवेदेशमें [illegible] "[illegible] बेतवती" इति पुराणम्.

वेत्रासन, (न०) वेत्रनिर्मितं आसनम् । बेत[illegible] आसन । मूडा । कुर्सी आदि.

वेद, (पु०) विद्+अच्+घञ् वा । विष्णु । ज्ञान[illegible] [illegible] । उसका [illegible] और [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] बहुतसा [illegible].

वेदगर्भ, (पु॰) वेदो गर्भे यस्य। जिसके भीतर वेद है। सम्पूर्ण वेदको स्मरण करनेहारा हिरण्यगर्भ.

वेदन, (न॰) विद्+ल्युट्। ज्ञान (जानना)। सुख दुःख आदिका अनुभव करना। और विवाह हुए "वेदना" (स्त्री॰).

वेदपारग, (पु॰) वेदानां पारं (अन्तं सीमां) गच्छति गम्+ड। वेदोंकी सीमातक पहुंचगया। सारे वेदोंको जाननेहारा। समस्तवेदाभिज्ञ.

वेदमातृ, (स्त्री॰) ६ त॰। वेदोंकी माता। गायत्रीमहामन्त्र (वेदोंको बनानेसे).

वेदविद्, (पु॰) वेदं वेत्ति। विद्+क्विप्। वेदको जानता है। विष्णु। वेदको जाननेहारा (त्रि॰).

वेदविहित, (त्रि॰) (वेदेन विहितः)। वेदने विधान (आज्ञा) किया गया.

वेदव्यास, (पु॰) वेदान् व्यस्यति (भिन्नभिन्नशाखात्वेन पृथक् करोति) वि+अस्+अण्। भिन्न भिन्न शाखारूपसे वेदोंको जुदा २ करता है। पराशरका पुत्र। सत्यवतीके गर्भसे उपजा एक मुनि.

वेदस्, (पु॰) विद्+असुन्। वेत्ता। जाननेहारा.

वेदाङ्ग, (न॰) वेदस्य अङ्गं इव। मानो वेदका अंग है (उसका अर्थ प्रकाश करनेसे)। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिषरूप छ अङ्ग.

वेदादि, (पु॰) वेदस्य आदिरिव। मानो वेदका आदि है (उसका पाठ करनेके समय पहिले उच्चारण किया जानेसे)। प्रणव। ओंकार.

वेदान्त, (पु॰) ६ त॰। वेदका अन्त। वेदका शिरोभाग (सिर)। ब्रह्मको प्रतिपादन करनेहारा उपनिषद्रूप ग्रन्थविशेष। उसका उपकार करनेहारा शारीरिक सूत्रका भाष्य आदि.

वेदाधिप, (पु॰) ६ त॰। वेदका मालिक। ऋग्वेदका बृहस्पति, यजुर्वेदका शुक्र, सामवेदका मंगल और अथर्ववेदका स्वामी शनिश्चर (बुध) है। और विष्णु

वेदान्तिन्, (त्रि॰) वेदान्तो वेदान्तेन अस्ति अस्य॰ इनि। जिसे वेदान्तशास्त्र जानेजाता है। वेदान्तशास्त्रके जाननेहारा। वेदान्तशास्त्राभिज्ञ.

वेदाभ्यास, (पु॰) ६ त॰। वेदका पढना, विचारना, अभ्यास करना, जप करना और दान (पढाना आदि)। बार २ वेदशास्त्रके शब्दकी प्रीति करना.

वेदि, (स्त्री॰) वा ङीप्। परिष्कृतभूमि। तैयार (साफ) कीगई पृथिवी। पण्डित (पु॰)

वेदिका, (स्त्री॰) वेदा अङ्गते। अङ्गु+क। होमकी वेदीके ऊपरी। डेहली.

वेदित, (त्रि॰) विद्+णिच्+क्त। ज्ञात। जनाया गया

वेदिन्, (पु॰) विद्+णिनि। पण्डित और हिरण्यगर्भ। जाननेवाला (त्रि॰).

वेध, (पु॰) विध्+घञ्। वेधन। बींधना। नक्षत्रआदिमे रखागया एकप्रकारका योग (जिसे विवाह आदिमें त्यागना उचित है).

वेधक, (न॰) विध्+ण्वुल्। कपूर। कर्पूर। धनियां। वेधकर्ता (वेधनेवाला) (त्रि॰)। छिद्र करनेवाला.

वेधस्, (पु॰) वि+धा+असुन् गुण। हिरण्यगर्भ। जगत्का रचनेहारा। विष्णु। सूर्य। और पण्डित। ब्रह्मा। बनानेवाला.

वेधित, (पु॰) वेधः जात अस्य। तार॰ इतच्। बेधागया (विद्ध)। छिद्रित (सुराख किया हुआ).

वेधिनी, (स्त्री॰) विध्+णिनि। मलैया। जोंक.

वेप्, कांपना। भ्वा॰ आ॰ अक॰ सेट्। वेपते। अवेपिष्ट.

वेपथु, (पु॰) वेप्+अथुच्। कम्प। कांपना। कंप.

वेपन, (न॰) वेप्+ल्युट्। कम्पन। कांपना। हिलना.

वेम, (पु॰) वे+मन्। वायदण्ड। जुलाहेका डण्डा.

वेल्, चलन (हिलाना)। भ्वा॰ प॰ सक॰ सेट्। वेलति। अवेलीत्.

वेल, (न॰) वेल्+अच्। उपवन (बाग)। काल। समय। बाग। और समुद्रका कूल (किनारा) (स्त्री॰)। "वेलामूले विभावरी" आदि.

वेल्ल्, (चलन) हिलाना। भ्वा॰ प॰ सक॰ सेट्। वेल्लति। अवेल्लीत्.

वेल्लज, (पु॰) वेल्ल्+जन्+ड। अङ्कुर। मरिच। मिरच

वेल्लन, (न॰) वेल्ल्+ल्युट्। घोडे आदिका भूमिपर लोटना। बेलन। बनानेका बेलना (बेलना)

वेल्लित, (न॰) वेल्ल्+क्त। कम्पन। कांपना। "स्त्री कट" [illegible]। वक्रित। टेढापन। और कुटिल (टेढा) (त्रि॰)

वेवी, (अदादि) जाना। व्याप्त होना। फेंकना। खाना। और प्रजन गर्भ॰। उभयपद होना। अक॰ सक॰ आ॰ सेट् (यह धातु वेदमें आता है)। वेवीते। अवेवीष्ट.

वेश, (पु॰) विश्+घञ्। अकबरायोंसे पूर्ण घरका घुसना। वेश+अच्। वेश्याका घर। वेशवाट (कसीबियोंका घर)। डील.

वेशधारिन्, (पु॰) वेशं धरति। धृ+णिनि। उसके समान रूप बनानेवाला। बहुरूपिया आदि

वेशवती-वनिता, (स्त्री॰) (वेशवती) वेश (बनावट) वाली वेश्या। स्त्री॰ सुन्दरी। वेश्या

वेशन्त, (पु॰) विश्+झच्। छोटा तलाव

वेशयास, (पु०) वेशस्य वासः । वेश्याओंका निवास-स्थान (रहनेकी जगह).

वेश्मन्, (न०) विश्+मनिन् । गृह । घर.

वेश्मभू, (स्त्री०) ६ त० । घर करनेलायक जगह । गृहकरणार्ह स्थान.

वेश्य, (न०) विश्+ण्यत् । वेशाय हितं वा+यत् । वेशके लायक । वेश्यालय (कंचनीका घर) और व्यापार-योषित् (मोलकी औरत-कंजरी) (स्त्री०).

वेष्टन, (न०) वेष्ट्+ल्युट् । कर्णशष्कुली । कानका पोलाड़ । उष्णीष (पगड़ी-साफा) । कूष्माण्ड (पेठा) और प्राचीर (सफील) । शहरपनाह । घेरा (पु०).

वेष्टित, (त्रि०) वेष्ट्+क्त । प्राचीर (शहरपनाह-सफील) आदिसे घिराहुआ । और रुद्ध । रुकाहुआ । रोकाहुआ.

वेस्, (गति) जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । वेसति । अवेसीत्.

वेसन, (न०) वेस्+ल्युट् । द्विदल । छोले । छोलोंका चूरा.

वेहार, (पु०) वि+हृ+घञ् । पृ० । इस नामका एक देश.

वै, (अव्य०) वा+डै । पादको पूरण कर्ता है । अनुनय । प्रार्थना । निश्चय और संबोधन (बुलाना).

वैकक्ष, (न०) विशेषेण कक्षति (व्याप्नोति)+अण् । बहुतही फैलता है । एक प्रकारका हार । जिसे टेढाकरके कांख (कच्छ) की ओर लटकाते हैं "वुन्" । छातीपर यज्ञोपवीत (जनेऊ) के स्वरूपसे धारण कियाहुआ एक प्रकारका हार.

वैकङ्कत, (पु०) विकङ्कत+स्वार्थेऽण् । एक प्रकारका दरख्त । "विकंकतका" (त्रि०).

वैकल्पिक, (त्रि०) विकल्पेन प्राप्तः भवो वा+ठक् । पक्षसे प्राप्त । मुख्तारी । चाहे वह दूसरा । दोनोंमेंसे एक.

वैकल्य, (न०) विकलस्य भावः+ष्यञ् । विकलता । घबराहट.

वैकुण्ठ, (पु०) विकुण्ठे भवः+अण् । विविधा कुण्ठा माया यस्य । स्वार्थे अण् । "विकुण्ठमें हुआ वा जिसकी माया कई तरहसे कुण्ठा (खुंडी) है" । विष्णु । गरुड़ । इन्द्र.

वैकृत, (न०) विकृतस्य भावः+अण् । विकार । बदलना.

वैखरी, (स्त्री०) विशेषेण खं राति । रा+क । स्वार्थे अण् । अर्थको जतानेहारा कण्ठ (गला) आदि स्थानमें उच्चारण कियागया अक्षरोंका बनाहुआ शब्द.

वैखानस, (पु०) वि+खन्+ड । अन-असु । कर्म० । स्वार्थे अण् । वानप्रस्थ (तीसरे आश्रममें दाखिल हुआ) । एक तपस्वी.

वैगुण्य, (न०) विगतो विरुद्धो वा गुणोऽस्य । तस्य भावः+ष्यञ् । "जहां जो चाहिये" उससे और स्वरूपमें बना देना । बिगाड़ना । अन्यायत्व (बेइन्साफी) । असम्पूर्ण पूरा न होना.

वैचित्र्य, (न०) विचित्रस्य भावः+ष्यञ् । ... कई शकलपन । विलक्षणता । अजीबपना । वि...

वैजयन्त, (पु०) विजयते । वि+जि+झ । ... इन्द्रका प्रासाद (महल) । और एक दं... (झण्डी) । जयन्तीइत्यत्र (स्त्री०).

वैजिक, (न०) बीजेन निर्वृत्तं+ठक् । शिग्रु (... का तेल । "बीजके लिये हितकारी" । ... ठक्" कारण । बीजका (त्रि०).

वैज्ञानिक, (पु०) विज्ञानाय साधु+ठक् । निपु... कार । "विज्ञानकी बाबत बनायागया ग्रन्थ ... शास्त्र । उसे पढ़नेहारा (त्रि०).

वैडालव्रत, (न०) विडालस्य इदं+अण् । तदि... बिल्लीके स्वभाववाला व्रत । "जिसमें धर्मके ... ध्वजाके समान सदा ऊंचे रखता है और छिप... कर्ता है" प्रकट होकर धर्मका आचरण और ... करना.

वैणव, (न०) वेणूनां फलम्+अण् । बांसका फ... (त्रि०).

वैणविक, (त्रि०) वेणोर्विकारः+अण् । वैणवं (... शिल्पं अस्ति अस्य+ठन् । बांसरी बाजेका काम ... वंशीवादक (बांसरी बजानेवाला).

वैणिक, (त्रि०) वीणा-तद्वादनं-शिल्प अस्य+ठ... बजानेवाला.

वैण्य-न्य, (पु०) वेण (न) स्य अपत्यं+यञ् । वै... पृथुनामी राजा.

वैतंसिक, (त्रि०) वितंसेन (मृगपक्ष्यादिबन्धन... चरति+ठक् । जो पशुपक्षिओंको फंसाकर औ... मांस बेचकर जीनेवाला शिकारी (व्याध).

वैतनिक, (त्रि०) वेतनेन जीवति+ठक् । मजदूरी... वाला । काम करनेवाला भृत्य (नौकर) आदि.

वैतरणि-णी, (स्त्री०) वितरणेन (दानेन) लभ्यं... ङीप् वा पृ० ह्रस्वः । जिसे दानसे लांघ सके हैं ... उसके दर्वाजेके पासकी नदी (दर्या) । "यमद्वारे ... तता वैतरणी नदी" इति पुराणम्.

वैतानिक, (पु०) वितानस्य अयं+ठक् । वेदकी ... अग्निका स्थापन करना.

वैतालिक, (त्रि०) विविधः तालः (मङ्गलगीतादि... तेन व्यवहरति+ठक् । मंगलको उत्पन्न करनेहारी ... राजाओंको जगानेहारा मागध (भाट) आदि.

वैतालीय, (पु०) एक प्रकारका मात्राछन्द.

वैदग्ध, (न०) (स्त्री०) विदग्धस्य (चतुरस्य) भावः ... स्त्रियां ङीप् । चातुर्य । चतुराई । हुशियारी । ... ग्ध्यं" भी.

वैदर्भ, (पु०) विदर्भाणां (जनपदानां) राजा+अण् । विदर्भदेशका राजा । एक प्रकारकी काव्यरचना (स्त्री०) । "विदर्भे भवा"+अण् । नलराजाकी स्त्री दमयन्ती (स्त्री०).

वैदिक, (पु०) वेदं वेत्ति-अधीते वा+ठक् । वेदको जाननेवाला ब्राह्मण । "वेदेषु विहित-"+ठक् । वेदमें कहाहुआ । (त्रि०) त्रियां वीर्.

वैदुष्य, (न०) विदुषो भावः । विद्वस्+ष्यञ् । विद्वानका होना । पाण्डित्य । लायकपन.

वैदूर्य, (न०) विदूरे भव+ष्यञ् । एक प्रकारका मणि । जिसका रंग काला और पीला है । बिल्लीकी आंखके समान होता है । मूंगा.

वैदेह, (पु०) विशेषेण देहः (उपचयः) यस्य । स्वार्थेऽण् । जिसकी बहुत वृद्धि होती है । बणिग्जन । व्यापारी आदमी । बनिआं । शूद्रसे वैश्यजातिकी स्त्रीमें उपजी एक जाति । "हव" "वैदेहिकः" बनिआं । "विदेहानां राजा"+अण् । राजाजनक.

वैदेही, (स्त्री०) विदेहेषु (मिथिलादेशेषु) भवा+अण् । मिथिलामें हुई । सीता । जनककी कन्या । हल्दी । मद्य । बनियानी.

वैद्य, (पु०) विद्या अस्ति अस्य+अण् । जिसे विद्या हो । पण्डित । भिषज् । हकीम । डाक्टर.

वैद्यक, (न०) वैद्यं (चिकित्सकं) अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+वन् । हकीमकी खातिर बनायागया ग्रंथ । आयुर्वेद । इल्महकीमी.

वैद्यनाथ, (पु०) वैद्यानां नाथः । वैद्यो (हकीमों) का नाथ (स्वामी) धन्वन्तरीका नाम.

वैद्युत, (त्रि०) तीरन्धी विद्युत इद-अण् । विद्युत् (बिजली)-का । बिजलीवाला । बिजलीसे उत्पन्न हुआ.

वैध, (त्रि०) विधिना आगत+अण् । विधिसे प्रतिपादन कियाहुआ । विधान कियाहुआ

वैधात्र, (पु०) विधातुः अपत्यं+अण् । ब्रह्माकी सन्तान । सनत्कुमार आदि मुनिविशेष.

वैधृति, (पु०) विगता धृतिः. स्वार्थे+अण् । पु० वृद्धि । ज्योतिषयोग । विष्कम्भ आदिमें सत्ताईसवां योग.

वैधेय, (त्रि०) विधीयते अनेन । [illegible]+ढक् । [illegible] स्वार्थे अण् । मूर्ख । बेवकूफ

वैधर्म्य, (न०) [illegible] धर्मो यस्य । [illegible] भावे+ष्यञ् । [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] ।

वैधव्य, (न०) विधवायाः भावः+ष्यञ् । रंडापा । [illegible] । [illegible] ([illegible]).

वैनतेय, (पु०) विनतायाः अपत्यं+ढक् । [illegible] । [illegible] । [illegible]

वैनयिक, (त्रि०) विनये [illegible]+ठक् । [illegible] हकीम.

वैनाशिक, (पु०) विनाशं [illegible]+ठक् । [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] (त्रि०).

वैपरीत्य, (न०) विपरीतस्य भावः+ष्यञ् । उलटापन । विपर्यय.

वैमत्य, (न०) [illegible]+ष्यञ् । [illegible] । [illegible] । [illegible] । अनाद.

वैमात्र, (न०) [illegible] एव+अण् । [illegible] एक [illegible].

वैमुख्य, (न०) विमुखस्य भावः+ष्यञ् । [illegible] । [illegible] । [illegible]

वैमात्र, (पु०) विमातुः अपत्यं+अण् । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible]

वैमात्रेय, (पु०) विमातुः अपत्यं+ढक् । [illegible] । [illegible] । [illegible]

वैयाकरण, (त्रि०) व्याकरणं [illegible] । [illegible]

वैयाघ्र, (पु०) [illegible] । [illegible] के [illegible].

वैयाघ्रपद्य, (पु०) [illegible] । [illegible] एक मुनि । "[illegible]" [illegible]

वैयात्य, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible].

वैयासकि, (पु०) [illegible] । [illegible].

वैयासिकी, (स्त्री०) [illegible] । [illegible]

वैर, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

वैरकर, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

वैरक्त, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

वैरनिर्यातन, (न०) वैरस्य ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

वैराग्य, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

वैरानुबंध, ([illegible]) [illegible] । [illegible]

शाकुनिक, (पु०) शकुनेन (पक्षिवधादिना) जीवति+ठञ् । जो पक्षिओंको मारकर जीता है । पक्षिओंको मारनेहारा.

शाकुन्तलेय, (पु०) शकुन्तलाया अपत्यं+ढक् (य) । दुष्यन्तराजाका बेटा, शकुन्तलाके गर्भसे उपजा । भरत राजा.

शाक्त, (त्रि०) शक्तिः देवता अस्य+अण् । तन्त्रमें कहाहुआ शक्तिदेवीकी उपासना करनेहारा.

शाक्तीक, (पु०) शक्तिः प्रहरणं अस्य+ईकक् । शक्ति(ताकत-बर्छी) से लड़नेहारा.

शाक्य, (पु०) शक्+यत् । तत्र साधु+यत् । बुद्धदेव.

शाक्यसिंह, (पु०) शाक्यवंशे सिंह इव । शाक्यके वंशमें मानों शेर है । बुद्धविशेष.

शाख, (व्याप्ति) फैलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । शाखति । अशाखीत्.

शाख, (पु०) शाख्+अच् । कृत्तिकाका पुत्र । स्कन्द (स्वामिकार्तिक) का छोटा भाई । गणविशेष । मंथका भाग । गर्भके स्थानमें मंथका अंश । और हस्तका हिस्सा । डाली । रुदु । बेल । अन्तिक (नजदीक) और बेदका एक भाग (स्त्री०).

शाखानगर, (न०) शाखेव नगरं । असली मुल्कके पासका छोटा शहर । "शाखापुर" आदि भी.

शाखामृग, (पु०) शाखास्थो मृगः । डालीपर वा डालीका पशु । वानर । बंदर.

शाखारण्ड, (पु०) शाखायां (वेदशाखायां) रण्डः (तद्विहितकर्मानाचरणात्) । वेदमें कहेहुए कामको न करनेसे वेदकी शाखामें रण्ड है । अपनी शाखाको छोड़कर काम करनेहारा.

शाखिन्, (पु०) शाखा अस्ति अस्य+इनि । डालीवाला । वृक्ष । वेदका एक भाग । एक राजा । वृक्षविशेष.

शाट, (पु०) शट्+घञ् । वस्त्र । कपड़ा (स्त्री० ङीप्).

शाटक, (पु० न०) शट्+ण्वुल् । वस्त्र । कपड़ा (स्त्री० टाप्).

शाट्यायन, (पु०) एक मुनि । "टेल ग्रेजं अप" एक प्रकारका ड्रेस, जो बहुत ऊँचेसे किसी प्रकारके वेग्रुक्स ([illegible]) ऊँचेपर खिंचजाता है (न०).

शाठ्य, (न०) शठस्य भावः+ष्यञ् । शठता । [illegible] । मूर्खता.

शाण, (न०) शणेन निर्मितं+अण् । सनके सूतका बना-हुआ कपड़ा आदि । शण्+घञ् । कसौटी । [illegible] । [illegible] देश [illegible] बह [illegible] ([illegible]).

शाणित, (त्रि०) शाण्+णिच्+क्त । तीखा [illegible] कियाहुआ.

शाण्डिल्य, (पु०) शण्डिलस्य अपत्यं+यञ् । [illegible] चलानेहारा, भक्तिशास्त्रके बनानेहारा एक मुनि । [illegible] आग.

शात, (न०) शो+क्त । सुख । उसवाला । कमजोर, और तेज (त्रि०).

शातकुम्भ, (न०) शतकुम्भे भवः+अण् (सोना) । धतूरा । और करवीर (पु०).

शातन, (न०) शो+णिच्-तङ्च ल्युट् । [illegible] छोटाकरना । तेजकरना । और विनाशन ([illegible] "जायते पत्रशातनम्" इति मीमांसा । [illegible]

शात्रव, (पु०) शत्रुः एव+स्वार्थेऽण् । रिपु । "तस्य भावः संघो वा" अण् । वैर । [illegible] ओंका समूह.

शाद, (पु०) शद्+घञ् । कर्दम (कीचड़) । [illegible] बालतृण.

शादहरित, (पु०) शादेन हरितः ([illegible] शाद्वलदेश । नयेघासवाली पृथिवी.

शाद्वल, (पु०) शादाः सन्ति अत्र+ड्वलच् । [illegible] वाली जगह.

शान्, भेदन (फाड़ना) भ्वा० उभ० सक० से[illegible] शान् । शीशांसति-ते । अशीशांसीत् । अशीशां[illegible]

शान, (पु०) शान्+अच् । शस्त्रों (औजारों [illegible] करनेहारा एक यन्त्र.

शान्त, (त्रि०) शम्+क्त । शमयुक्त । [illegible] आचार्य । वह रस कि जिसका स्थायि[illegible] (पु०) । लोमपाद राजाकी कन्या । [illegible] शमीवृक्ष । (स्त्री०).

शान्तनव, (पु०) शान्तनोः अपत्यं+अण् । [illegible] गन्धान । भीष्म पितामह । "भीष्मः शान्[illegible] तर्पणम्.

शान्तनु, (पु०) द्वापर युगमें हुआ चन्द्रवं[illegible] राजाका पुत्र । एक राजा

शान्तरस, (पु०) शान्तः रसः । [illegible] वैराग्य एक रस ([illegible]).

शान्तात्मन्-चेतस्, (त्रि०) शान्त. आत्मा [illegible] अन्तर (मन) वाला.

शान्ति, (स्त्री०) शम्+क्तिन् । क्षमा, [illegible] [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible]

शान्तिक, (त्रि०) शान्ति [illegible] । [illegible] करनेकी [illegible].

शाप, (पु०) शप्+घञ् । "तेरा बुरा हो" इस प्रकार कहना । लानत । शपथ । कसम । सौं.

शापास्त्र, (पु०) शाप एव अस्त्रं यस्य । शापही जिसका औजार है । मुनि । संत.

शाब्दबोध, (पु०) शब्देन निर्वृत्त+अण् । शब्दसे बना हुआ । अन्वय (संबंध) का बोध । शब्दके ज्ञानसे उत्पन्नहुआ एक प्रकारका ज्ञान । वाक्यकी पूरी २ समझ (अर्थज्ञानके लिहाजसे).

शाब्दिक, (पु०) शब्द (शब्दसाधुताज्ञापकं शास्त्रं) वेत्ति अधीते वा+ठक् । शब्दकी शुद्धिको जाननेहारे शास्त्रको जाननेहारा । व्याकरणशास्त्रके जाननेवाला.

शामित्र, (न०) शम्+णिच्+इत्रच् । पशुके बांधनेका स्थान.

शाम्बरी, (स्त्री०) शम्बरेण निर्वृत्ता+अण्+ङीप् । शम्बरनामी दैत्यसे रचीगई । माया । इन्द्रजाल आदि.

शाम्भव, (पु०) शम्भोरयं+अण् । गुग्गल (गुग्गुल)। कपूर। एक विष (अहिर) । शिवजीका पुत्र । और देवदारु । शिवजीका । और उसका उपासक (त्रि०) । दुर्गा (स्त्री०)

शा(सा)यक, (पु०) शो (षो) ण्वुल् । बाण (तीर) । और तलवार (खड्ग).

शार, (न०) शार+अच् । शॄ+घञ् वा । कर्बुरवर्ण । रंगबिरंगी । अगवाला (त्रि०).

शारङ्ग, (पु०) शारं (कर्बुरं) अङ्गं यस्य । शार० । जिसका अंग रंगबिरंगी है । पपीहा (चकित) । हरिण । हाथी । भौंरा । और मोर

शारद, (न०) शरदि भवं+अण् । सित कमल । सादि । बकुल । और हरी मूंग (पु०) । जो शरत् कालमें हो (त्रि०) । "विशे कमलवाली" सरस्वती । "भेतवर्ण अस्ति अस्याः+अच्" (स्त्री०).

शारदिक, (न०) शरदि भवं आदि होनेसे वा+ठञ् । शरद कालका श्राद्ध । शरत् कालकी बीमारी (पु०)

शारदीया, (स्त्री०) शरदि भवा छण् । शरत्कालमें करनेलायक दुर्गाकी पूजा.

शारि-री, (स्त्री०) शृ+इञ् वा ङीप् । पासक (चपणा) आदिकी गोटी । एक चिड़िया (मैना) । हाथीका कवच । बांधना । छल.

शारिफल, (पु० न०) शारेः फलं (आधार) । चपड खेलनेका पटला । छल.

शारीर, (त्रि०) शरीरस्य इदं+अण् । शरीरके सम्बन्धवाला हुआ दुःख सुख आदि । [illegible] (बैल) (पु०) । [illegible] शरीरके [illegible]

शारीरिक, (त्रि०) शरीरे भव+ठञ् । शरीरमें दुःख आदि.

शारुक, (त्रि०) शृ+उकञ् । हिंसक । मारने ([illegible] करनेहारा.

शार्कर, (त्रि०) शर्करा अस्ति अस्य+अण् । (कंकरआदि)वाली जगह (जहां ईंट, रोड़े, बहुत हो).

शार्ङ्ग, (त्रि०) शृङ्गस्य विकार+अण् । सींगका बना पदार्थ । विष्णुका धनुष् (कमान) । और हत्यक [illegible] (पु०) अदरक (न०).

शार्ङ्गिन्, (पु०) शार्ङ्गं अस्ति अस्य+इनि । विष्णु । [illegible] धनुष् पकडनेहारा (त्रि०).

शार्दूल, (पु०) शृ+ऊलच्-दुक् च । [illegible] भेड़िया । एक पक्षी । एक राक्षस ([illegible] श्रेष्ठ अर्थमें)

शार्दूलविक्रीडित, (न०) [illegible] छन्दविशेष.

शार्वर, (न०) शर्वर्यां इदं+अण् । [illegible] अंधेरा.

शाल्द, [illegible] अलाविक.

शाल, (पु०) शल्+घञ् । एक मछली । [illegible] एक वृक्ष । [illegible]

शालग्राम, (पु०) [illegible] "ग्राम"+अण् । यहां [illegible] मूर्ति

शालनिर्यास, (पु०) [illegible] राल (धूप).

शालभञ्जिका, (स्त्री०) [illegible] अच्+ण्वुल् । [illegible] (पंक्ति).

शाला, (स्त्री०) [illegible] लकड़ी [illegible].

शालातुर, (पु०) [illegible]

शालावृक, (पु०) [illegible] बिल्ली । हरिण । और बंदर

शालि, (पु०) [illegible]

शालिवाहन, (पु०) [illegible] एक राजा.

शालिहोत्र, (पु०) [illegible]

शाली, (स्त्री०) शाल्+अच् ङीप् । काला जीरा.

शालीन, (त्रि०) शालां अर्हति । ख । धृष्ट (ढीठ) । बेशरम.

शालु, (न०) शाल्+उण् । शालूक । कसैला पदार्थ । भेक (मेंढक) (पु०).

शालूर, (पु०) शाल्+ऊरच् । भेक । मेंढक । डडु.

शालोत्तरीय, (पु०) शालोत्तरे (ग्रामे) भवः । शालोत्तर गाँवमें उपजा । पाणिनिमुनि.

शाल्मल, (पु०) शाल्+मलच् । सिम्बलका दृक्ष । उसके निशानवाला एक द्वीप (जजीरा).

शाल्व, (पु०) शाल्+व । एक देश.

शाव, (पु०) शव+घञ् । शिशु । बच्चा+स्वार्थे कन् । "शावक" मुर्दका.

शावर, (पु०) शावयति (विशारयति) शव+णिच्+अरन् । बिगाड़देता है । पाप । अपराध । गुनाह । और लोधका दृक्ष । "शवरेण कहाहुआ+अण्" शवरने किया-हुआ मीमांसाका भाष्य । "शावरका" (त्रि०).

शावरी, (स्त्री०) शवरस्य स्त्रिया+अण् । भीलनी । शूक-शिम्बी । एक प्रकारकी विद्या (इल्म).

शाश्वत, (त्रि०) शश्वद् भव+अण् । सदाहुआ । सनातन । नित्य । हमेशका.

शास्, अनुशा (तालीमकरना) । भ्वा० आ० स० सेट् । परस्मैपद । अपवाद । इस धातुके साथ "आङ्" रहता है । आशंसते । आशंसिष्ट.

शास्, आशीर्वाद देना । अदा० आ० सक० सेट्+स्वार्थेट् । अकसर इसके पहिले "आङ्" रहता है । आशास्ते । आशासिष्ट.

शास्, अनुशासन (शिक्षा करना) सेट् अदा० पर० द्विक० बेट् । शास्ति । अशासत्.

शासन, (न०) शास्+ल्युट् । चीजको हिफाजतमें रखना । ताकीद करना । सजादेना । हुकमदेना

शासनहर, (पु०) शासनं हरति । हृ+अच् । आज्ञाको लेजानेवाला । दूत । कासिद

शासितृ, शास्तृ (त्रि०) शास्+तृच् इट् वा । शासनकर्ता । हुकम करनेवाला । सजा देनेवाला.

शास्त्र, (न०) शिष्यते अनेन । शास्+ष्ट्रन् । [illegible] धर्मशास्त्र आदि । हुकम.

शास्त्रकोविद, (त्रि०) शास्त्रे कोविदः । शास्त्रमें अति प्रवीण । शास्त्रका जानकार । शास्त्रनिपुण.

शास्त्रचक्षुस्, (न०) शास्त्रं चक्षुः । [illegible] शास्त्ररूप आँख । [illegible]

शास्त्रदर्शिन्, (त्रि०) शास्त्रं पश्यति । [illegible] शास्त्रको [illegible]

शास्त्रव्युत्पत्ति, (स्त्री०) शास्त्रस्य व्युत्[illegible] चतुराई । वेदादि शास्त्रोंकी चमत्कार समझ[illegible]

शास्त्रिन्, (त्रि०) शास्त्रं वेत्ति-अधीते वा [illegible] जाननेहारा.

शास्त्रीय, (त्रि०) शास्त्रेण विहितः+छ । [illegible] धर्मआदि.

शास्य, (त्रि०) शास्+यत् । उपदेशकरने[illegible] आदि.

शि, छेदन-काटना । भ्वा० उभ० सक० अनि[illegible] शिनुते । अशीषीत् । अशेष्ट.

शिंशपा, (स्त्री०) शिवं पाति । पा+क पृ० । [illegible]

शि(सि)क्थ, (न०) सिच्+थक्-कुक्च । [illegible] को "श" विकल्पसे । मोम । मधूच्छि[illegible] रहता । "स्वार्थे कन्."

शिक्य, (न० स्त्री०) शिक+यत्, शि+यत्-कुक् [illegible] रस्सीका बनाहुआ पदार्थ.

शिक्यित, (त्रि०) शिक्यं (शिक्यस्थं) [illegible] शिक्य+णिच्-कर्मणि क्त । छिकेके आगरेसे [illegible] पदार्थ । छिकेपर रक्खाहुआ.

शिक्ष, अभ्यास करना । भ्वा० आ० स० सेट् । अशिक्षिष्ट.

शिक्षा, (स्त्री०) शिक्ष+अ । पथ । राखा । सीख । अभ्यास । अक्षरोंके उच्चारणको [illegible] वेदका एक अंग । ग्रंथविशेष । "शिक्षा कर्मो[illegible] हति । विद्या । इल्म.

शिक्षागुरु, (पु०) ७ त० । विद्या देनेहारा । [illegible] नेहारा.

शिक्षित, (त्रि०) शिक्षा जाता अस्य+इतच् । [illegible] वा । अभ्यासी । जिसने अभ्यास किया है । [illegible] होशियार । समझदार । सीखाहुआ.

शिख(खा)ण्ड, (पु०) शिखां अमति । अम[illegible] त० । मोरका पिच्छ । चूड़ा । कलगी । चोटी.

शिखण्डक, (पु०) शिखण्ड इव+कन् । [illegible]

शिखण्डिक, (पु०) शिखण्ड अस्ति अस्य+ठन् । [illegible] मुर्गा

शिखण्डिन्, (पु०) शिखण्ड अस्ति अस्य+इनि । [illegible] मोर । [illegible]

शिखर, (न०) शिखा अस्ति अस्य+अरच् । [illegible] चोटी । पहाड़की चोटी । [illegible]

शिखरिन्, (पु०) शिखर अस्ति अस्य+इनि । [illegible] (पहाड़) । [illegible] ([illegible]) [illegible]

शिखा, (स्त्री०) [illegible] ([illegible]) [illegible]

शिखाकन्द, (न०) शिखा इव कन्दः अस्य । गृञ्जन । गाजर.

शिखिध्वज, (पु०) शिखिनो वह्नेर्ध्वज इव । मानों अग्निका झंडा है । धूम । धुआं.

शिखिन, (पु०) शिखा अस्ति अस्य+इनि । चोटीवाला । मोर । आग । चित्रकवृक्ष । केतुग्रह । कुक्कुट । दृक्ष । घोड़ा । ब्राह्मण । मेथी । चोटीवाला (त्रि०).

शिखिप्रिय, (पु०) शिखिनो प्रीणयति । प्री+क । क्षुद्र-बदर । छोटाबेर.

शिखिमोदा, (स्त्री०) शिखिनं मोदयति मुद्+णिच्+अच् । अजमोदा । अजवैन.

शिखिवाहन, (पु०) शिखी (मयूरः) वाहनं यस्य । जिसकी सवारी मोर है । कार्तिकेय.

शिग्रु, (पु०) शि+रक् गुक् च । (सहिजना) वृक्ष । इसका साग.

शिघ, आघ्राण सूंघना । भ्वा० प० स० सेट्-इदित् । शिघति.

शिंघाण, (न०) शिघि+आनच् । पु० णत्वम् । नाकका पाव । लोहेकी मैल । नाककी मैल । काँच (बलगम).

शिञ्ज, अव्यक्तध्वनि-आवाजका । साफ सुनाई न पड़ना । इदित् । अ० आ० सेट् । अ० पु० उभ० चुरा० स० सेट् । शिञ्जते । शिञ्जि-ति । शिंजे । (कई व्याकरणी शिञ्जि कहते हैं) शिञ्जति । शिंजीयात्.

शिञ्जा, (स्त्री०) शिञ्जि+अ । भूषणशब्द । गहने (जेवर)-की आवाज । "शिञ्जि+अच्" धनुर्गुण । कमानका चिल्ला.

शिञ्जिनी, (स्त्री०) शिञ्जति । शिञ्जि+णिनि । कमानका चिल्ला.

शित, (त्रि०) शो+क्त । दुर्बल (कमजोर) । शाणित । तेज कियाहुआ.

शितद्रु, (पु०) शितं द्रवति । द्रु+कु० नि० । शतद्रु नदी (नदी).

शितशूक, (पु०) शितः (तीक्ष्णः) शूकः यस्य । तेज-धारवाला । यव । जौ.

शिति, (पु०) शि+क्तिच् । भूर्जपत्रवृक्ष (भोजपत्रका दरख्त) । शिवरंग । कालारंग । सफ़ेद रंगवाला (त्रि०).

शितिकण्ठ, (पु०) शितिः कण्ठः यस्य । जिसका गला काला है । महादेव । दात्यूह.

शिथिल, (त्रि०) श्लथ्+किलच् । पृ० । श्लथ । ढीला । कमज़ोर ढीला । दृढ़ । मूर्ख । ढीला.

शिनि, (पु०) शि+निक् । यदुके वंशमें एक क्षत्रिय (सात्यकी इसका लड़का (पोता) था)

शिप, (पु०) शि+पक् इस्व । एक सरोवर (तालाब) । एक नदी.

शिफाकन्द, (पु०) शिफा [illegible] कन्दः । कमलमूलकी जड़.

शिरःफल, (पु०) शिर इव फलं यस्य । जिसका फल सिरके समान हो । नारिकेल । नरेल.

शिरःशूल, (न०) शिरस शूलं इव (तालव्यवत्) । सिरका मानो शूल है (सालते) । सिरदर्द.

शिरस्, (न०) श्रृ+असुन् । नि० । मस्तक । माथा । सिर आगेसिरा.

शिरसिरुह, (पु०) शिरसि रोहति । रुह+क । अलुक् स० । सिरपर जमता है । केश । बाल.

शिरस्क, (न०) शिरसि कायति (प्रकाशते) । कै+क । सिरपर चमकता है । शिरस्त्राण । टोप । पगड़ी । शिरका.

शिरस्त्र, (न०) शिरस्त्रायते । त्रै+क । सिरको बचाने-हारा । उष्णीष । पगड़ी.

शिरस्य, (पु०) शिरसि भव+यत् । सिरसाहुआ । स्वच्छ-केश (केश) । जो सिरपर उत्पन्न होता है (त्रि०).

शिरा, (स्त्री०) शृ+क । नाड़ी । रग । नाड़

शिराल, (त्रि०) शिरा अस्ति अस्य+लच् । [illegible] । शिरायुक्त.

शिरीष, (पु०) शृ+ईषन् । शिरीषः वृक्ष । इस नाम का वृक्ष.

शिरोगृह, (न०) शिर इव (उपरिस्थं) गृहम् । ऊपरका घर । चंद्रशाला । चुबारा

शिरोज, (पु०) शिरसि जायते । जन्+ड । सिरमें उत्पन्न है । केश । बाल.

शिरोधरा, (स्त्री०) शिरः (मस्तकं) धरति । धृ+अच् । माथेको पकड़ती है । ग्रीवा । गर्दन । गला

शिरोधि, (स्त्री०) शिर धीयते अत्र । धा+कि । जहां सिर रहता है । ग्रीवा । गर्दन.

शिरोमणि, (पु०) शिरसि धार्यं [illegible] । सिरका भूषण [illegible] मणि । शिरको मणि (चूड़ामणि) । सिरके धारण [illegible] रत्न

शिरोरुह, (पु०) शिरसि रोहति । रुह+क । सिरपर उत्पन्न है । केश । बाल

शिरोवेष्ट, (पु०) वेष्ट+घञ् । [illegible] । सिरका [illegible] । पगड़ी.

शिल्, [illegible] । पु० [illegible] । [illegible] । [illegible]

शिल, (न०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible]).

शिलाकुट्टक, (पु०) शिला कुट्टयति । [illegible] । [illegible] ([illegible]).

शूद्रावेदिन्, (पु०) शूद्रां विन्दति । विद्+णिनि । उप० स० । शूद्रजातिकी स्त्रीसे विवाह करनेहारा । "शूद्रावेदी पतत्यत्र" स्मृतिः.

शूना, (स्त्री०) श्वि+अधिकरणे क्त । प्राणिवधस्थान । जीवोंके मारनेकी जगह । कसाइयोंका घर.

शून्य, (त्रि०) शूनायै हितं (सम्भाव्यानकत्वात्) यत् । [illegible] जगह (जहां प्राणिओंको सहसे मारसके हैं) । आकाश । खाली । बिन्दुमात्र । शुक्ता । और अभाव (न होना) । जो पूरा नहीं । कम । और तुच्छ (त्रि०).

शून्यपदवी, (स्त्री०) शून्या पदवी । सूनी सड़क । खाली पगडंडी । अन्या (जीव) का रास्ता.

शून्यमनस्-मनस्क, (त्रि०) शून्यं मनो यस्य । शून्य (सूने) मनवाला । खाली मनवाला.

शून्यवादिन्, (पु०) शून्यं (अभावमात्रं सर्वकारणतया) वदति । वद्+णिनि । बौद्धविशेष । जो सबका कारण "शून्य" बोलता है (स्वीकार करता है) । "पहिले [illegible] था और हो गया".

शूर, [illegible] होना । दि० आ० सक० सेट् । [illegible].

शूर, [illegible] । पु० उभ० स० [illegible].

शूर, (पु०) [illegible] । और (बहादुर) । [illegible] । सूर्य । सिंह (शेर) । [illegible] । एक सूरमा.

शूरम्मन्य, (पु०) आत्मानं शूरं मन्यते । अपने आपको शूर (बहादुर) मानता है । अहंकार । [illegible]

शूरसेन, (पु०) [illegible] देश । [illegible]

[illegible]

शूल, (पु० न०) शूल्+क । एक बीमारी (रोग) । [illegible] लोहेका काला । और त्रिशूल । चिह्न (निशान) । [illegible] मुनि । और ९ वां योग (पु०).

शूलघातन, (न०) शूलं घातयति । हन्+णिच् दर्द दूर करता है । मण्डूर.

शूलद्विष्, (पु०) ६ त० । दर्दका वैरी । हींग.

शूलधन्वन्, (पु०) शूलं धनुः आयुधं अस्य समा० । त्रिशूल जिसका शस्त्र है । शिवजी.

शूलधर, (पु०) शूलं धारयति । धृ+अच् । त्रि पकड़ता है । शिवजी.

शूलधारिन्, (पु०) शूलं धरति । धृ+णिनि । शि दुर्गा (स्त्री०).

शूलपाणि, (पु०) शूलं पाणौ यस्य । जिसके । त्रिशूल है । शिवजी.

शूलाकृत, (त्रि०) शूलेन संस्कृतं (मांसम्) [illegible] कृ+क्त । लोहेआदिकी कीलसे बेधकर पकाहुआ कबाब.

शूलिक, (त्रि०) शूलं (पाकसाधनमस्ति) अस्य [illegible] ठन् । कीलपर चढ़ाके पकायाहुआ मांस । [illegible]

शूलिन्, (पु०) शूलं अस्ति अस्य+इनि । [illegible] त्रिशूल अस्त्र (औज़ार) रखनेहारा (त्रि०).

शूल्य, (त्रि०) शूले संस्कृतं+यत् । शूलपर पकाहुआ मांस । [illegible] । कबाब.

शृ, हिंसन मारना । क्रया० प० स० सेट् । शृणाति । [illegible] सेट् । [illegible].

शृ, (ग) [illegible], (पु०) [illegible] । [illegible] जो होता है । सियार । गीदड़ । एक दैत्य । [illegible] । [illegible]

शृगालिका, (स्त्री०) [illegible] । [illegible] (गीदड़) की औरत (गीदड़ी) । [illegible]

शृङ्ग, (पु०) [illegible]

शृङ्ग, (न०) [illegible]

शृङ्गमृग, (पु०) [illegible]

शृङ्गवत्, (पु०) [illegible]

शृङ्गवेर, (न०) शृङ्गं इव वेरं (अवयवः) यस्य । जिसका शिखर सींगके समान है । अदरक । सोंठ । रामचन्द्रके मित्र गुह चण्डालका पुर (नगर).

शृङ्गाट, (पु०) शृङ्गं (प्राधान्यं) अटति । अट्+अण् । कामरूपकीओर एक पर्वत । चतुष्पथ । चौराहा । सिङ्घाड़ा.

शृङ्गार, (पु०) शृङ्गं (कामोद्रेकं) ऋच्छति अनेन । ऋ+अण् । बहुत काम बढ़ाता है । नाटकमें एक रस । लौंग । सिन्दूर । और चूर्ण । अदरक । जेवर.

शृङ्गारिन्, (पु०) शृङ्गारः अस्त्यस्य अस्मिन् वा अस्य+इनि । जिसके सजनेसे बहुत काम बढ़ता है । पान । सुपारी । और हाथी (गज) । अच्छी पोशाक पहिनेहुए (सुवेश) (त्रि०).

शृङ्गिन्, (पु०) शृङ्गं अस्ति अस्य+इनि । सींगवाला । मेष (मेंढा) । भारतवर्षका एक सीमापर्वत । पहाड़ । एक मुनि । और शृङ्ग (सींग) सींगवाला (त्रि०).

शृत, (त्रि०) श्रा+क्त । पक्व । पकाहुआ.

शृध्, अपानशब्द-पद मारना । भ्वा० आ० ट्-पद्-स्वरमें सम० अक० सेट् । पादना पेद् । शर्धते । अशृधत् । शर्धिष्यते.

शृध्, उन्दन (गीला करना) भ्वा० उभ० अक० सेट् । गलावेद् । शर्धति-ते.

शेखर, (पु०) शिखि-आप्+अरन् । मू० । शिखा । चोटी । मुकुटके ऊपरका फूल । सुहांजनेकी जड़ । ताज.

शेफ, (पु० न०) शी+फन् । लिंग । शिश्न । शी+अति- पुरुष.

शेफालिका, (स्त्री०) शेरते इति शेफा अलयो यत्र+कन् । जहां भौंरे सोरहे हैं । फूलदार वृक्ष । सुहांजना सूना.

शेमुषी(षि), (स्त्री०) शी+विच् । शेः (मोहः) तं मुष्णाति मुष्+क । जो मोह (अ० मैल) को चुरा लेती है । बुद्धि । अक्ल.

शेव, (पु०) शी+वन् । पुरुषका चिह्न । लिंग । शिश्न.

शेवधि, (पु०) शे (धनादिमोह) तस्य अवधिः । दौलतके मोहकी सीमा । पद्मआदि नौ प्रकारका निधि (खजाना).

शेवाल, (न०) शेते+विच् । वलते-घञ् । शेवाल । सेवाल । शिवाल । पानीके ऊपर जाला सा होता है.

शेष, (पु०) शिष्+अच् । अनन्त । सांपोंका राजा । एक सांप । बाकी.

शेषशायिन्, (पु०) (शेषे शेते) शेषनागपर शयन- (सोने) वाला । विष्णु.

शेषा, (स्त्री०) शिष्+घञ् । निर्माल्य माल्यआदि देवतापर चढीहुई मालाआदि । "शेषामिव ...

शेषान्नम्, (न०) शेषं अन्नम् । बचा हुआ अन्न.

शैक्ष, (पु०) शिक्षां (सकलशास्त्रं) अधीते वेत्ति वा+अण् । शिक्षा (स्वरका विषय) ग्रन्थको पढ़ता या जानता है । "छात्र" । शिष्य यही अर्थ.

शैखरिक, (पु०) शिखरे भवः+ठक् । चोटीपर हुआ । सफेद चिरा । अपामार्ग.

शैत्य, (न०) शीतस्य भाव+ष्यञ् । शीतलता । सर्दी । ठण्डाई । ठण्डापन.

शैथिल्य, (न०) शिथिलस्य भाव+ष्यञ् । ढीलापन । (अदृढसंयोग).

शैनेय, (पु०) शिनेर्गोत्रापत्यं+ढक् । सात्यकिनाम यादव.

शैल, (न०) शिलायां भव+अण् । पत्थरोंमें उपजा गन्धद्रव्य । "शिलाः सन्ति अस्य+अण्" शिलोंवाला । पहाड़ (पु०).

शैलज, (न०) शैले (पर्वते) जायते । जन्+ड । पर्वतमें उत्पन्न होता है । एक प्रकारका गंधद्रव्य । गजपिप्पली और दुर्गा (स्त्री०).

शैलधर, (पु०) शैलं (गोवर्धनपर्वतं) धरति । धृ+अच् । गोवर्धन पहाड़को उठाता है । श्रीकृष्णदेवजी.

शैलभित्ति, (पु०) शैलं भिनत्ति । भिद्+क्तिच् । पत्थर- फाड़नेका औजार.

शैलराज, (पु०) शैलानां राजा । टच् समा० । पहाड़ोंका राजा । हिमालय.

शैलशिबिर, (न०) शैलानां शिबिरं इव । पहाड़ोंकी मानों छावनी है । समुद्र । समुंदर.

शैलसुता, (स्त्री०) ६ त० । पहाड़की लड़की । पार्वती.

शैलाग्र, (न०) शैलस्य अग्रम् । पहाड़की चोटी.

शैलाट, (पु०) शैलं अटति । अट्+अण् । पहाड़में घूमता है । शेर । भील । सिंह । किरात.

शैलालिन्, (पु०) शिलालिना मुनिना प्रोक्तं (नटसूत्रं) अधीयते+णिनि । शिलालिमुनिसे कहेहुए नटोंके नियमोंको पढ़ते हैं । शैलूष । नट.

शैली, (स्त्री०) शीलं एव+स्वार्थे अण् ङीप् । चारित्र । नियम । रीति.

शैलूष, (पु०) शिलूषस्य अपत्यं+अण् । नट । बिल्वका वृक्ष । धूर्त । ताल देनेहारा.

शैव, (न०) शिवं अधिकृत्य कृतो ग्रन्थ+अण् । वेदव्यासका बनायाहुआ शिवजीके प्रभावको वर्णन करनेहारा महापुराणविशेष । "शिवो देवता अस्य+अण्" । शिवजीका भक्त (त्रि०) । "तस्येदं अण्" शिवका (त्रि०).

शैवलिनी, (स्त्री०) शैवलानि सन्ति अस्याः इनि । सेवाल- वाली नदी । नदी ...

शैवाल, (न०) शीं+वालन्+स्वार्थे अण् । सेवाल । पानीमें उपजा पदार्थविशेष । "कृष्णदेवका एक घोड़ा" । घोड़ा.

शैव्य, (पु०) शिवेर्गोत्रापत्यं+यञ् । शिविके गोत्रमें उपजा एक राजा.

शैशव, (न०) शिशोर्भावः+अण् । बचपन । शिशुपाल । बालअवस्था.

शैशिर, (पु०) शिशिरं प्रियं यस्य+अण् । कालीचिड़िआ । सर्दीमें खुश रहती है । "शिशिरे भवः"+अण् । शीतकालमें हुआ (त्रि०).

शो, तीक्ष्णीकरण (तेजकरना) । दि० प० स० अनिट् । श्यति । अशात्-अशासीत्.

शोक, (पु०) शुच्+घञ् । पियारेके विरहसे हुआ दुःखरूप एकप्रकारका चित्तका व्यापार । अफसोस.

शोकारि, (पु०) ६ त० । शोकका शत्रु । कदम्बका वृक्ष । कदम्बका दरख्त.

शोकाविष्ट, उपहत । विह्वल, (त्रि०) शोकेन आविष्टः । शोकसे भराहुआ । शोकमें पड़ा हुआ.

शोचिष्केश, (पु०) शोचिः केश इव यस्य । जिसकी चमक (तेज) बालोंके समान है । वहि (आग) । चित्रकवृक्ष.

शोचिस्, (न०) शुच्+इसि । प्रभा । प्रकाश । चमक । रोचिः.

शोच्य, (त्रि०) शुच्+ण्यत् । क्षुद्र । कमीना । छोटा । दयाके लायक । अफसोसके लायक । बेचारा । गरीब.

शोण्, गति (जाना) । सक० । वर्ण रंगना । अक० भ्वा० प० सेट् । शोणति-अशोणीत्.

शोण, (न०) शोण्+अच् । सिन्दूर (सिंधूर) । और रुधिर (लोहु) । लालगन्ना । मंगलग्रह । आग (पु०).

शोणित, (न०) शोण्+इतच् । (रुधिर । लोहु).

शोणितपुर, (न०) शोणितं इव रक्तं पुरम् । लोहूकी नाईं शहर । बाणासुरका नगर (मुल्क).

शोणोपल, (पु०) कर्म० । लालपत्थर । माणिक्य (माणक) मनि.

शोथ, (पु०) शु+थन् । हाथ पाँव आदिको फुलादेनेहारा सोज.

शोथघ्नी, (स्त्री०) शोथं हन्ति । हन्+क । शालपर्णी । सोज दूर करनेवाली दवाई (त्रि०).

शोधन, (न०) शुध्+णिच्+ल्युट् । शोध । सफाई । विष्ठा (गूंह) । मलआदि छोड़ना । दोष हटाना । और कर्ज उतारना । "शुध्यति अनया+करणे ल्युट् ङीप्" कसौटी (गुर्जी) (स्त्री०).

शोधित, (त्रि०) शुध्+णिच्+क्त । मलआदि हटाकर साफ किया हुआ । साफ । एक किस्मका.

शोफ, (पु०) शु+फन् । शोथ । सोज.

शोभन, (न०) शोभते । शुभ्+ल्यु । ग्रहस्थ पांचवां योग (पु०) । शोभावाला (त्रि०).

शोभा, (स्त्री०) शुभ+अ । दीप्ति । चमक । प्रकाश

शोभाञ्जन, (पु०) शोभायै अज्यते । अञ्ज्+ल्युट् । सहिंजनेका दरख्त.

शोष, (पु०) शुष्+घञ् । हवा आदिसे पानीको [illegible] कठिन करना । सुखाना । "सुखा देता है" । [illegible] बीमारी.

शोषण, (न०) शुष्+ल्युट् । चूसकर रस पीना । सुखाना । कामदेव । एक तीर.

शौक, (न०) शुकानां समूहः+अण् । शुकसमुदाय । तोते.

शौकर, (न०) शूकरस्य इदं+अण् । एक तीर्थ.

शौक्तिकेय, (न०) शुक्तिकायां भवम् । सीपीमें [illegible] मुक्ता । मोती.

शौक्ल्य, (पु०) शुक्लस्य भावः+ष्यञ् । श्वेतता । [illegible] चिट्टापन.

शौच, (न०) शुचेर्भावः+अण् । शुद्धि (सफाई) । [illegible]त्रता । पाकीजगी "न खानेलायक चीजको न खा[ना] निन्दितोंके साथ संग न करना और अपने धर्ममें र[हना] शौच कहलाता है".

शौटीर, (पु०) शौट् (अहंकारकरना)+ईरन् । त्यागी । [एक] और बहादुर । अहंकारवाला (त्रि०).

शौट्, गर्व-अगड़रहोना । भ्वा० प० सक० सेट् । शौट[ति] अशौटीत्.

शौण्ड, (त्रि०) शुण्डायां (सुरायां) अभिरत+अण् शराबमें लगाहुआ । मस्त (मतवारा । और दक्ष (चतुर)

शौण्डिक, (पु०) शुण्डा (सुरा) पण्यं अस्य+ठक् । शराब बेचनेहारा । कलालकी एक जाति.

शौण्डीर, (पु०) शुण्डा (गर्वः) अस्ति अस्य+ईरच् स्वार्थेऽण् । कलाल । अहंकारवाला (त्रि०).

शौद्र, (पु०) शूद्रायां भव +अण् । शूद्रासे उपजाहुआ बे[टा]

शौद्धोदनि, (पु०) शुद्धोदनस्य अपत्यं+इञ् । बौद्धमुनि[वि]शेष । शुद्धोदनकी सन्तान.

शौनक, (पु०) शुनकस्य अपत्यं+अण् । शुनककी सन्तान । एक मुनि । "अपरः शौनकादयः" भा. पु०.

शौनिक, (पु०) शूना (प्राणिवधस्थानं) प्रयोजनं अस्य+ठक् । जीवोंके मारनेका कामकरनेवाला । मांस बेचनेहारा । कसाई । बूचड़खाना । शिकारी.

शौभिक, (त्रि०) शोभा शिल्पं अस्य+ठक् । इन्द्रजालिया । मदारी.

शौरि, (पु०) शूरस्य गोत्रापत्यम् । यादवविशेष । वसुदेव या सूर्यका पुत्र । विष्णु । श्रीकृष्ण । और शनैश्चर.

शौर्य, (न०) शूरस्य भावः+ष्यञ् । बहादुरी । वीर्य । और शक्ति.

शौल्किक, (पु०) शुल्के अधिकृतः+ठक् । करलेनेका काम करनेहारा । महसूलिआ । तहसीलदार.

शौवस्तिक, (त्रि०) श्वः (परदिने) भवः । श्वस्+ठक् नुट् । आनेवाले दिनमें रहनेहारा पदार्थ । कलका.

शौष्कल, (पु०) शुष्कलं (शुष्कमांस) पण्यं अस्य+अण् । सूके मांसका सौदाकरनेवाला । सूके मांसको बेचनेहारा । "सूके मांसको खानेहारा" (त्रि०).

श्चुत्, क्षरण (बहना) भ्वा० पर० अक० सेट् । श्चोतति । अश्चुतत्-अश्चोतीत्.

श्च्युत्, क्षरण (बहना) भ्वा० पर० अक० सींचना-सक० सेट् । श्च्योतति । अश्च्युतत्-अश्च्योतीत्.

श्च्योत, (पु०) समन्तात् सेचन । चारोंओर सींचना । श्च्युत्+घञ्.

श्मशान, (न०) श्मानः (शवाः) शेरते अत्र । शी+आनच् । "श्मन् शब्दसे शव-नाम (भी होता है)" शव (मुर्दे) के जलानेका स्थान । मसान । मुर्दा जलानेकी जगह.

श्मशानवासिन्, (पु०) श्मशाने वसति । वस्+णिनि । मसानमें रहता है । महादेव । और बटुक भैरव । मसानिये (चाण्डाल) आदि (त्रि०).

श्मश्रु, (न०) श्म (मुंहरे) श्रयते (लगरते) अनेन । श्रि+डु । पुरुषका मुंह जिससे पहिचाना जाता है । दाढ़ी.

श्मश्रुमुखी, (स्त्री०) श्मश्रु मुखे यस्याः । जिसके मुखपर दाढ़ी है । ङीप् । पुरुषके लक्षणवाली खोटीयुवती.

श्मश्रुल, (पु०) श्मश्रु विद्यते अस्य+लच् । दाढ़ीवाला । पाडिया.

श्मश्रुवर्धक, (पु०) श्मश्रु वर्धयति (छिनत्ति) । वृध्+ण्वुल् । दाढ़ी काटता है । नापित । क्षुरकर्मकारक । हलरेसे कामकरनेहारा । नाई.

श्यान, (त्रि०) श्यै+क्त । बहुत सिकुड़नेवाला । गाढ़ा होगया । सूकगया । "घनघोरश्यानवर्दमम्" रघु.

श्याम, (पु०) श्यै+मक् । प्रयागस्थ । प्रयागके तीर्थका वृक्ष (बट) । नीला । काला.

श्यामक, (पु०) श्यामेव+इवार्थे कन् । एकप्रकारका धान्य.

श्यामकण्ठ, (पु०) श्यामः कण्ठः अस्य । जिसका कण्ठ श्याम है । मयूर (मोर) । शिव । नीलकण्ठ । एकप्रकारका पक्षी.

श्यामकर्ण, (पु०) श्यामः कर्णः यस्य । काले कानवाला । अश्वमेध (यज्ञ) के उपयोगी (काममें आनेवाला) घोड़ा.

श्यामल, (पु०) श्यामवर्ण अस्ति । लाच् । पिप्पल । काले रंगवाला (त्रि०).

श्यामलता, (स्त्री०) कर्म० । एक बेल । कालासन । शालक । कालारंग । हरारंग.

श्यामशवली, (पु०) द्विवचन (श्यामौ शवलौ च) श्याम (काले) और शवल (विचित्र-कबरचितकबरा) । यमराजके द्वारके रक्षक (रखवारे) दो कुत्ते । चार आंखवाले यमके कुत्ते.

श्यामसुन्दर, (पु०) श्यामः अपि सुन्दरः । काला होकर भी सुन्दर है । श्रीकृष्ण । "श्यामसुन्दर ! ते नमः" इति भागवतम्.

श्यामा, (स्त्री०) श्यै+मक् । एकऔषध (दवाई) । वह स्त्री जो अभी प्रसूत नहीं हुई । यमुना । रात्रि (रात) । गिलोय । गुग्गल । नील । हल्दी । पिप्पल । मद्य । तुलसी । छाया । शिंशपा (शीशमका दरख्त) । गौ । एक पक्षी । एकप्रकारकी औरत (शीतकालमें जिसके अंग गरम हो और गरमीमें सफाईसे शीतल हों, रंग सोनेके समान हो).

श्यामाङ्ग, (पु०) श्यामं (हरितवर्ण) अङ्गं अस्य । जिसका शरीर हरेरंगका हो । बुधग्रह । कालेशरीरवाला (त्रि०) स्त्रियां ङीप्.

श्याल, (पु०) श्यै+कालन् । पत्नीभ्राता । जोरू का भाई । साला । "श्यालिक" भी.

श्याव, (पु०) श्यै+वन् । कालापीला रंग । कृष्णवर्ण । (त्रि०).

श्यावदन्त, (त्रि०) श्यावो दन्तो यस्य । कालेरंग । कालेरंगके दांतवाला.

श्यावदन्त, (पु०) कर्म० । स्वभावहीसे जिसके काले दांत हैं । ६ त० । वन् । कालेदांतवाला (त्रि०) । "मूर्ख्यः श्यावदन्तक " स्मृतिः

श्येत, (पु०) श्यै+इतन् । श्वेतवर्ण (मिला-सफेद रंग) । उसवाला (त्रि०) । स्त्रियां ङीप् । "त" को "न" होता है । श्येनी.

श्येन, (पु०) श्यै+इनन् । एकप्रकारका पक्षी (बाज) । सफेद रंग । उसवाला (त्रि०).

श्यै, गति (जाना) । भ्वा० आ० सक० अनिट् । श्यायते । अश्यास्त.

श्यैनम्पाता, (स्त्री०) श्येनस्य पातो यत्र+अञ् । मुम् च । जहां बाज गिरता आता है । मृगया । शिकार । अहेर

श्रथ, यत्न (वेग) । भ्वा० प० स० सेट् । श्रथति । अश्राथीत्-अश्रथीत्.

श्रथ, वध । चु० उ० सक० सेट् । श्राथयति-ते । अशिश्रथत्.

श्रत्, (अव्य०) श्री+डति । श्रद्धा । विश्वास । इमान । गुरु और वेदान्तपर विश्वास.

श्रथ्, बांधना । छुड़ाना और वध (मारना) । चु० उ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । श्राथयति-ते । श्रथति । (यत्न और दौर्बल्य).

श्रथन, (न०) श्रथ्+ल्युट् । वध (मारना) । कोशिश करना (यत्न) और प्रतिहर्ष (खुशहोना).

श्रद्धा, (स्त्री०) श्रत्+धा+अङ् । आदर । गुरु और वेदान्तके वचनोंपर विश्वास । स्पृहा (इच्छा) । सफाई (शुद्धि) । धर्मके काममें प्रत्यय (विश्वास-निश्चय) । इमान । यकीन.

श्रद्धालु, (स्त्री०) श्रद्धा+आलुच् । स्पृहावती । चाहवाली । श्रद्धावाला (त्रि०).

श्रन्थ्, मन्थन (गुथना) । और वध (मारना) । चु० उ० पक्षे० भ्वा० पर० सक० सेट् । श्रन्थयति-ते । श्रन्थति । अश्रन्थीत्.

श्रन्थ्, मोचन (छुड़ाना) । और बार २ खुशहोना । क्र्या० प० सक० सेट् । श्रथ्नाति । अश्रन्थीत्.

श्रन्थन, (न०) श्रन्थ्+ल्युट् । मन्थन रचना । गुथना.

श्रपित, (त्रि०) श्रा+क्त निप० । पुष्टहुवा । पक्व । पकाहुआ.

श्रम्, तपस्या करना-आयास (तकलीफ उठाना) । अक० भ्वा० पर० सेट् । क्लान्तेद् । श्राम्यति । अश्रमत् । अश्रमीद् । श्रान्त । श्रमित्वा.

श्रम, (पु०) श्रम्+घञ् न वृद्धिः । तपस्या । खेद । मिहनत । [illegible] । पसीना । तकलीफ । अभ्यास.

श्रमण, (पु०) श्रम+ल्यु । एकप्रकारका यति (संन्यासी) । निकम्मा और नीचा (त्रि०) । अधमाधम । सुन्दर स्त्री (स्त्री०).

श्रमित, (त्रि०) श्रम्+इत् । श्रमयुक्त । मेहनती । थकाहुआ.

श्रम्भ्, प्रमाद भूलना । भ्वा० आ० अक० सेट् । श्रम्भते.

श्रय, (पु०) श्रि+अच् । आश्रय । आसरा । सहारा । "श्रयणम्" (न०) यहीं अर्थ.

श्रव, (पु०) श्रूयते अनेन । श्रु+अप् । जिससे सुनता है । कान (कर्ण) । [illegible] । [illegible].

श्रवण (न०) श्रूयते अनेन । श्रु+ल्युट् । कान (कर्ण) । [illegible] इन्द्रिय । "श्रु+ल्युट्" पुं० ([illegible]) । [illegible] (पु०-स्त्री०) । [illegible].

श्रवणेन्द्रिय, (न०) श्रवणम् इन्द्रियम् । [illegible] । [illegible].

श्रवणानुभूति, ([illegible]) [illegible] । [illegible].

श्रवणगोचर, (त्रि०) श्रवणस्य गोचरः । श्रवणके विषय सुनेमें आगया.

श्रविष्ठा, (स्त्री०) । श्रूयते । श्रु+अप् । श्रव (कीर्ति) अस्ति अस्याः+मतुप् । अतिशयेन श्रववती+इष्ठन् मतुपका लोप । बहुत मशहूर । धनिष्ठा तारा.

श्रवस्, (न०) श्रूयते अनेन । श्रु+असि । जिसे सुनता है । कर्ण । धन । कर्मणि असि । कीर्ति । यश.

श्रा, पाक-पकाना । अदा० प० स० अनिट् । श्राति । अश्रासीत् । श्रपयति.

श्राण, (त्रि०) श्रा+क्त । पक्व । पकाहुआ । यवागू (खिचड़ी) (स्त्री०).

श्राद्ध, (न०) श्रद्धा (हेतुत्वेन) अस्ति अस्य+अण् । श्रद्धासे उपजता है । पितापितामहादिकोंको श्रद्धसे देनेलायक द्रव्य । "अस्ति अर्थे+अण्" श्रद्धावाला (त्रि०).

श्राद्धदेव, (पु०) श्राद्धेदेयानां पितृणां देवः । यम । श्राद्धमें बुलायेजानेहारे पितरोंका देवता । यमराज । मुनि.

श्राद्धदेवता, (स्त्री०) श्राद्धे देवता (लक्ष्यत्वेनोद्देश्य) । श्राद्धमें दियेहुये द्रव्यकी देवता । पितर । "पितर श्राद्धदेवताः" स्मृतिः.

श्राद्धिक, (त्रि०) श्राद्धे देयं श्राद्धं । तद्रूपं भक्ष्यत्वेन अस्य वा+ठन् । श्राद्धमें देनेलायक पदार्थको खानेहारा.

श्राद्धिक, (त्रि०) श्राद्धं भक्ष्यत्वेन अस्ति अस्य+ठन् । श्राद्धमें दानकियेहुएको खानेहारा.

श्रान्त, (त्रि०) श्रम्+क्त । श्रमवाला । मेहनती । शान्त । जितेन्द्रिय । थकाहुआ.

श्रान्तसंपादनम्, (न०) श्रान्तस्य संपादनम् । थके हुएको आराम पहुंचाना (खुशियाली करना).

श्रावण, (पु०) श्रवणेन युक्ता पौर्णमासी श्रावणी साऽस्मिन् मासे+अण् । जिस महीनेमें श्रवणनक्षत्रसे पूर्णिमा हो । सावनका महीना । "श्रवणे उत्पन्नः+अण्" [illegible] श्रवणोपदेशीय.

श्रावणी, श्रु+णिच् । पु० ङीप् । धर्मोपदेशनाम [illegible] [illegible].

श्रि, सेवा करना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । श्रयति । अशिश्रियत्-त.

श्रित, (त्रि०) श्रि+क्त । सेवाकियाहुआ । [illegible] । आश्रित.

श्री, पाक (पकाना) क्र्या० उ० स० अनिट् । श्रीणाति । अश्रैषीत्.

श्री, (स्त्री०) श्रि+क्विप् नि० । लक्ष्मी । शोभा । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

श्रीऋषभदेव, (पु०) ऋष्-जाना+अभक् दिव्+अच् । सम्पूर्ण विद्याओंके पार जानेवाला एक मुनि । जैनोंका पहिला तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीअजितनाथ, (पु०) जि+क्त (न० त०) न जितः नाथः । नाथ्+अच् (अ) । किसीसेभी न जीता जा सकनेहारा स्वामी (मालिक) । जैनोंका दूसरा तीर्थंकर (अवतार).

श्रीसंभवनाथ, (पु०) सम्+भू+अप् (अ) तस्य नाथः । सृष्टिमात्रपर आज्ञा चलानेवाला । जैनोंका तीसरा तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीअभिनन्दन, (पु०) अभि+नन्द+अन । अभिनन्दयति (हर्षीकरोति) । अपने भक्तोंको सर्वथा सोत्कर्षित करनेवाला । जैनोंका चौथा तीर्थंकर (अवतार).

श्रीसुमतिनाथ, (पु०) सु+मन्+क्तिन् (ति) । सुष्ठु मतिः यस्य (ब० व्री०) तेषां नाथः । अच्छी (निर्मल) बुद्धिवालोंकी रक्षा करनेवाला । जैनोंका पांचवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीपद्मप्रभु, (पु०) पद्+मन्-प्र+भू-डु (उ) । सम्पूर्ण धन अथवा शरीरकी सब नाडियोंपर आज्ञा चलानेवाला योगिराज । जैनोंका छठा तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीसुपार्श्वनाथ, (पु०) सु+स्पृश्+श्वण्-पृ० । सबके समीप । बहुत पास रहनेहारा नाथ (स्वामी) । अन्तरात्मा । जैनोंका सातवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीचन्द्रप्रभु, (पु०) चदि+रक् । सबका नाथः । सम्पूर्ण जगत्को आनन्द उपजानेहारा स्वामी । सुन्दर-नाथ । जैनोंका आठवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) विशेष

श्रीसुविधिनाथ, (पु०) सु+वि+धा+कि । तेषां नाथः । सम्पूर्ण नियमों (कानूनों) पर आज्ञा चलानेवाला । जैनोंका नवम (नवां) तीर्थंकर (अवतार)

श्रीशीतलनाथ, (पु०) श्यैङ्+क्त=शीत+लाक्+क । शीतं लाति । शीतं अपि अला+लच् वा । शान्त स्वभाव-वालोंका एक मात्र आश्रय । जैनोंका दसवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीश्रेयांसनाथ, (पु०) अतिशयेन प्रशस्य । ईयसु । [illegible] । [illegible] नाथ । विवेक, शम, दम आदि गुणोंसे पूर्ण स्वामी । जैनियोंका ग्यारहवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीवासुपूज्य, (पु०) वस्+उण [illegible] पूज्य । पूज० यत् । सबसे अधिक पूजा पानेवाला विष्णु । [illegible] । जैनोंका बारहवां तीर्थंकर (अवतार)

श्रीविमलनाथ, (पु०) [illegible] (ब० व्री०) । [illegible] । [illegible] [illegible] रहित स्वामी । जिसके सम्पूर्ण [illegible] है । जैनोंका तेरहवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीअनन्तनाथ, (पु०) [illegible] (ब० व्री०) । न [illegible] । जिसके [illegible] नहीं । परात्पर । सर्वव्यापक [illegible] । जैनिओंका चौदहवां (अवतार).

श्रीधर्मनाथ, (पु०) धृ+मन् (पु० न०) । [illegible] है । [illegible] । विश्वप्रवाहमें बहे जाते जीवोंको [illegible] करने-वाला स्वामी । जैनधर्मके पन्द्रहवें तीर्थंकर (अवतार)

श्रीशान्तिनाथ, (पु०) शम्+क्तिन् (ति) [illegible] नाथ । शान्तिपर आज्ञा चलानेवाला । पूर्ण [illegible] वाला स्वामी । जैनिओंका सोलहवां तीर्थंकर (अवतार)

श्रीकुन्थुनाथ, (पु०) कुन्थ्+उन् । [illegible] । कुन्थुके आकारवाले [illegible] स्वामी । [illegible] [illegible] कुन्थुके [illegible] । जैनोंका सत्रहवां वा [illegible] तीर्थंकर (अवतार)

श्रीअरहनाथ, (पु०) [illegible] (अच्) । [illegible] नाथ । पूजनीय स्वामी । [illegible] । जैनोंका अठारहवां तीर्थंकर (अवतार)

श्रीमल्लीनाथ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] धारण करके [illegible] । जैनोंका [illegible] तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) [illegible]

श्रीमुनिसुव्रत, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । जैनोंका [illegible] तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) [illegible]

श्रीनमिनाथ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] तीर्थंकर (अवतार) [illegible]

श्रीअरिष्टनेमि, (पु०) [illegible] । [illegible] । जैनोंका [illegible] तीर्थंकर (अवतार)

श्रीपार्श्वनाथ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । जैनोंका [illegible] तीर्थंकर (अवतार)

श्रीमहावीरस्वामी, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] अवतार.

श्रीकण्ठ, (पु०) श्रीः (शोभा) कण्ठे यस्य । जिसके गलेमें शोभा है । शिवजी । हस्तिनापुरके उत्तरपश्चिमकी ओर कुरुजाङ्गलदेश.

श्रीकर, (न०) श्रियं करोति । कृ+अच् । लालकमलका फूल । विष्णु । दाय (विरसा) के विषयमें ग्रंथ बनानेहारा एक पण्डित । शोभाकारक (सजानेहारा) (त्रि०).

श्रीकान्त, (पु०) ६ त० । विष्णु । "श्रीनाथ" "श्रीपति" आदि भी.

श्रीखण्ड, (न०) श्रियः खण्ड इव यत्र । जहां शोभाका टुकड़ा है । चंदन.

श्रीगर्भ, (पु०) श्रीः गर्भे यस्य । जिसके गर्भमें शोभा है । विष्णु । खड्ग । तरवार.

श्रीधन, (पु०) श्रिया युक्तो धनः । बहुतबुद्धिवाला । एक बुद्ध । दही (न०).

श्रीचक्र, (न०) श्रियः चक्रं (यन्त्रभेदः) । त्रिपुरासुन्दरीकी पूजाका अङ्ग । एक प्रकारका तन्त्रसम्बन्धी चक्र (यन्त्र).

श्रीज, (पु०) श्रियः जायते । जन्+ड । लक्ष्मीसे उपजता है । कामदेव.

श्रीद, (पु०) श्रियं (धनं) ददाति । धन देता है । दा+क । कुबेर । धनदेनेहारा (त्रि०).

श्रीधर, (पु०) श्रियं धरति । धृ+अच् । विष्णु । शालग्रामकी एक मूर्त्ती (न०).

श्रीनिकेतन, (पु०) श्रियं निकेतयति (निवासं करोति) । नि+कित्+णिच्+ल्यु । लक्ष्मी जिसमें निवास देता है । विष्णु । ६ त० । लक्ष्मीका घर (न०).

श्रीरथ, (पु०) श्रीयुक्तः रथः । शोभावाला रथ । रथराज । बड़ी सड़क.

श्रीपर्ण, (न०) श्रीः पर्णे यस्य । जिसके पत्तेमें लक्ष्मी है । पद्म । कमलफूल.

श्रीपुत्र, (पु०) ६ त० । कामदेव । लक्ष्मीका पुत्र (भाई) चन्द्रमा [illegible] । इन्द्रका घोड़ा.

श्रीपुष्प, (न०) श्रीयुक्तं पुष्पम् । लवङ्ग (लौंग).

श्रीफल, (पु०) श्रीयुक्तं फलं यस्य । जिसका फल । [illegible].

श्रीफलकृच्छ्र, (न०) श्रीयुक्तं [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

श्रीमत्, (पु०) श्री+अस्ति [illegible] । [illegible] । [illegible] । विष्णु । शिव । [illegible] (त्रि०) । [illegible].

श्रीमूर्त्ति (स्त्री०) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] (मूरत).

श्रीरङ्गपत्तन, (न०) श्रियः रङ्गस्य पत्तनं यत्र । जहां शोभाके खेलनेका नगर है । दक्षिणमें एक देश.

श्रीराम, (पु०) श्रीरामचन्द्रजी राम । श्रीरामचन्द्र । दशरथका पुत्र । एक राजा । श्रीरामचन्द्रावतार.

श्रील, (त्रि०) श्री+अस्ति अर्थे लच् । शोभायुक्त । लक्ष्मीवाला । दौलतमन्द.

श्रीलता, (स्त्री०) श्रीयुक्ता लता । महाज्योतिष्मती लता । एक बेल.

श्रीवत्स, (पु०) वदति महत्त्वं । वद्+स । श्रीयुक्त [illegible] विष्णुका कौस्तुभमणि । छातीपर सफेद रोमकी [illegible] और मुखी लोमावली (रोमोंकी कतार) । [illegible] शस्त्र । एक राजाका खास घर.

श्रीवराह, (पु०) श्रिया युक्तो वराहः । विष्णुके [illegible] अवतारोंमेंसे एक.

श्रीवास, (पु०) श्रिये वासः (सौरभं) यस्य । जिसे सुगन्धि लक्ष्मीके लिये है । सरलद्रवका रस । रस.

श्रीविद्या, (स्त्री०) श्रिये (त्रिवर्गाय) विद्या । धर्म, अर्थ और कामके लिये एक विद्या । त्रिपुरसुन्दरी.

श्रीश, (पु०) ६ त० । लक्ष्मीका स्वामी । विष्णु । [illegible]

श्रु, श्रवण (सुनना) स्वा० पर० सक० अनिट् । [illegible] आशीर्लिङ्.

श्रुत, (न०) श्रूयते । श्रु+क्त । सुना जाता है । [illegible] (द्रव्य) । उसका ज्ञान । "श्रुतानि" [illegible] श्रवणद्वारा ग्रहण कियाहुआ । शास्त्र (समझा हुआ) (त्रि०).

श्रुतकीर्त्ति, (स्त्री०) कुशध्वजकी लड़की । शत्रुघ्नकी [illegible] "श्रुता (विख्याता) कीर्त्ति" । प्रसिद्ध यश [illegible] (त्रि०).

श्रुतदेवी, (स्त्री०) श्रुतस्य (शास्त्रस्य) देवी । सरस्वती.

श्रुतबोध, (पु०) श्रुतमात्र बोधयति । श्रुत+बुध्+णिच् [illegible] केवल सुनाहुआ समझाता है । [illegible] हुआ एक छन्द शास्त्रका ग्रन्थ.

श्रुतश्रवस्, (पु०) श्रुतं श्रवः (यश) यस्य । जिसका यश सुनागया है । शिशुपालका पिता (पु०).

श्रुताध्ययनम्, (न०) श्रुतस्य अध्ययनम् । वेदका [illegible] (वेदपाठ).

श्रुति, (स्त्री०) श्रु+क्तिन् । कर्ण (कान) । [illegible] [illegible] । सुनना । और वेद.

श्रुतिकटु, (पु०) श्रुतेः (कानके) कटु (कठोर) [illegible] [illegible] [illegible].

श्रुतिजीविका, (स्त्री०) श्रुते [illegible] । [illegible] [illegible].

श्रुतिजीविका, (स्त्री०) श्रुतिं जीवयति (मूलत्वात्ऽनुसरति) जीव्+ण्वुल्। वेदको जीवन देती है (मूलभूत वेदका पीछा करती है) स्मृति। धर्मशास्त्र.

श्रुतिद्वैधम्, (न०) श्रुतेः द्वैधम्। श्रुतिका द्वैधीभाव (विरोध)। वैदिक विधिका परस्पर विरोध.

श्रुतिधर, (त्रि०) श्रुत्वा धारि। धृ+अच्। जो सुनेहीसे सब समझलेता (धारणकर्ता) है.

श्रुतिमूल, (न०) श्रुतिरेव मूलं (धर्मके प्रमाण होनेमें) वेदही जड है। धर्मको बतलानेहारा वेदरूप प्रमाण। ६ त०। वाक्यादि। और वेदशास्त्रमें कहाहुआ धर्मादि। ६ त०। कानका मूल.

श्रुतिवर्जित, (त्रि०) श्रुत्या वर्जितः। वेद वा कानसे रहित। वृज्+क्त। वेदका पाठ न करनेहारा। बधिर। बहिरा। बोरा.

श्रुतिवेध, (पु०) श्रुतेः (कर्णस्य) वेध यत्र। जिसमें कानको वींधा जाता है। कर्णवेधनामी एकप्रकारका संस्कार.

श्रुत्यनुप्रास, (पु०) श्रूयते इति श्रुतिः (शब्दः) तस्य अनुप्रासः। शब्दका अनुप्रास (लौटकर वैसेही शब्दका आना)। शब्दालंकार.

श्रुत्युक्त, (त्रि०) श्रुतौ (वेदे) उक्तः। वेदमें विधान कियाहुआ धर्मादि.

श्रु(स्रु)वा, (स्त्री०) श्रु(स्रु)+क। यज्ञका एक पात्र। (यज्ञका हाथ).

श्रेढी, (स्त्री०) श्रेण्यै (राशीकरणाय) ढौकते। ढौक्+ड्व०। ङीष्। मिश्रकादिके द्रव्योंको मिलानेके लिये अंकशास्त्रमें कहाहुआ एकप्रकारका गिनतीका प्रकार। हिसाब.

श्रेणि(णी), (स्त्री०) श्रि+नि-वा ङीष्। सिलसिला पंक्ति। बाजार (दुकानके सिरा)। आसन.

श्रेयस्, (न०) अतिशयेन प्रशस्तं+ईयसुन्। अच्छा। बहुत सराहनेलायक। धर्म। मोक्ष। और शुभ (अच्छा)। बहुत अच्छा (त्रि०)। हरीतकी (हर्रीड) (स्त्री०).

श्रेयोर्थिन्, (त्रि०) श्रेय अर्थयते। शुभ (सुख)के मांगनेवाला। सुखकी तलाश करनेवाला

श्रेष्ठ, (पु०) अतिशयेन प्रशस्य+इष्ठन्-श्रादेश। बहुतही अच्छा। कुबेर। राजा। ब्राह्मण। और विष्णु। गौका दूध (न०)। बहुत अच्छा (त्रि०).

श्रेष्ठिन्, (पु०) श्रेष्ठं (धनादिकं) अस्त्यस्य+इनि। जिसके पास अच्छा धन आदि है। सिट्ठी (साहूकार)। अच्छा हैसियतवाला। सेठ। साहूकार.

श्रोण, (पु०) श्रोण्+अच्। पंगु। पैर। लंगड़ा (स्त्री०) (स्त्री०).

श्रोण, संघात-इकट्ठा होना। भ्वा० प० सक० सेट्। श्रोणति.

श्रोणि(णी), (स्त्री०) श्रोण्+इन् वा ङीप्। कटि (कमर)। पथ। रास्ता.

श्रोणिफलक, (न०) श्रोणिः फलकं इव। कमरकी कमर (अस्थपटि) ६ त०। कटिपार्श्व (कमरका भाग).

श्रोणिबिम्बम्, (न०) श्रोण्या बिम्बम्। श्रोणिका बिम्ब। गोलकमर.

श्रोतव्य, (त्रि०) श्रु+तव्य। सुननेके लायक.

श्रोतस्, (न०) श्रु+असुन्-तुट् च। कर्ण (कान)। [illegible] का वेग (जोर)। और इन्द्रिय

श्रोत्र, (न०) श्रूयते अनेन। श्रु+ष्ट्रन्। [illegible] [illegible] इन्द्रिय.

श्रोत्रिय, (पु०) श्रुतं (छन्दः वेदं) अधीते वेत्ति वा। श्रुति+घन्। वेद। वेदमें [illegible]। [illegible] [illegible]। ब्राह्मण.

श्रौत, (त्रि०) श्रुतौ विहितः+अण्। वेदमें विधान कियागया। धर्मादि। गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण अग्नि (पु०).

श्रौतसूत्रम्, (न०) श्रौतं सूत्रम्। वेदमार्गकी सूत्रग्रन्थ (आश्वलायन-कात्यायन-आपस्तम्ब आदि)

श्रौष, (न०) श्रोत्रस्य [illegible]। कर्ण (कान)। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] होना। श्रोत्रियका धर्म। वेदपठितका [illegible].

श्रौषट्, (अव्य०) श्रु+डौषट्। देवताओंके हवि (घी) आदिका देना। देवताको हवि देनेका शब्द

श्लक्ष्ण, (त्रि०) श्लिष्+क्स। [illegible]। अल्प (थोड़ा)। मनोहर (दिलपसंद)। [illegible]। चिकना। और छोटा.

श्लथ्, दौर्बल्य-कमजोर होना। चु० उभ० स० सेट्। श्लथयति-ते.

श्लथ, (पु०) श्लथ+अच्। शिथिलहोना। ढीला। दुर्बल। [illegible]। कमजोर

श्लाघ्, अपने गुणोंको प्रकट करना। भ्वा० आ० स० सेट्। श्लाघते.

श्लाघा, (स्त्री०) श्लाघ+अ। [illegible]। [illegible]। [illegible]। स्तुति। इच्छा.

श्लाघाविपर्यय, (पु०) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible].

श्लाघ्य, (त्रि०) श्लाघ+ण्यत्। प्रशस्य। [illegible] [illegible].

श्लिष्, श्लिषा। आलिङ्गन करना। दि० प० सक० अनिट्। श्लिष्यति.

श्लिष्ट (त्रि०) श्लिष्+क्त। आलिङ्गित (आलिङ्गनकिया हुआ)। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो).

षडशीति, (स्त्री०) षडधिका अशीतिः। ■ ऊपर अस्सी। छियासी, सूर्यका एक प्रकारका संक्रमण.

षडशीतिमुख, (न०) षडशीतेः मुखम्। षडशीति नाम संक्रान्तिका मुख.

षडानन, (पु०) षट् आननानि यस्य। जिसके ■ मुख हैं। कार्तिकेय। स्वामिकार्तिक.

षडूर्मि, (पु०) षट् ऊर्मयः (ऐश्वर्याणि) यस्य। छ ऐश्वर्योवाला परमेश्वर.

षड्गव, (त्रि०) षड्भिः गोभिः आयुक्तः शकटः हलो वा। अच् समा०। छ बैलोंवाला छकड़ा वा ■ बैलोंसे खेंचा-गया हल। "षण्णां गवां समाहारः" द्विगुः। छ गौएं (न०).

षड्गुण, (पु०) षड्भिः (गुणिताः) गुणाः। शाक०। राजाओंके सन्धिआदि छ गुण.

षड्ग्रन्थि, (न०) षट् ग्रन्थयः अस्य। छ गांठवाला। पिप्पलीमूल (मघ)। छ पर्वे (गांठ) वाला (त्रि०).

षड्ज, (पु०) षड्भ्यो नासादिस्थानेभ्यो जायते। जन्+ड। नासाआदि ■ स्थानोंसे निकलता है (नासा, गला, छाती, तालु, जीभ और दांत) एक स्वर। "षड्जसंवादिनी केका" इति रघुः.

षड्दीर्घ, (पु०) षड्भिर्गुणिता दीर्घाः। तन्त्रमें आ, ई, ऊ, ऐ, औ, अः इस प्रकार छ दीर्घ.

षड्धा, (अव्य०) षष्+प्रकारे धाच्। षट्प्रकार। छ तरहसे.

षड्रस, (पु०) षण्णां रसानां समाहारः। छ रस (मधुर-मीठा, लवण-सलूना, तिक्त-तीखा, कषाय-कसैला, अम्ल-खट्टा और कटु-कड़वा).

षड्वर्ग, (पु०) ६ त०। छओंका वर्ग (समूह)। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य (दूसरेके शुभसे वैर करना) "व्यजेष्ट षड्वर्गं" इति भट्टिः। ज्योतिषमें क्षेत्र, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश.

षण्, दान (देना)। तना० उभ० स० सेट्। सनोति। सनुते.

ष(ा)ण्ड, (पु०) षण्+ड-पृ०। वृष। (बैल)। नपुंसक (हीजड़ा)। पद्मआदिका समूह (पु० न०).

षण्ढ, (पु०) षण्+ढ-पृ०। नपुंसक (हीजड़ा).

षण्मुख, (पु०) षट् मुखानि यस्य। छ मुखवाला। स्वामिकार्तिक.

षद्, विषाद (दिलका टूटना-अफसोस करना)। अक०। हिंसा-मारना और गति-जाना। स० तु० प० अनिट्। सीदति। असदत्.

षञ्ज, सङ्ग (मिलना) भ्वा० प० स० अनिट्। सजति। असाङ्क्षीत्.

षष्, (त्रि० ब० व०)। षो+क्विन्-पृ०। छही संख्या (गिनती)। षष्ठ शब्द.

षष्टि, (स्त्री०) षड्गुणिता दशतिः। नि०। छ गुणा दशके साथ। साठकी संख्या (गिनती)। उस संख्यक.

षष्टितम, (त्रि०) षष्टेः पूरणः+तमट्। जिससे साठकी संख्या पूरी होजाय। स्त्रियां ङीप्। साठवीं। साठवां.

षष्टिसंवत्सर, (पु० ब० व०) षष्टिगुणिताः संवत्सराः। ज्योतिषमें प्रसिद्ध प्रभव आदि साठ बरस (वर्ष).

षष्ठ, (त्रि०) षण्णां पूरणः। षष्+डट्-थुक् च। जिससे छै संख्या पूरी हो। छठा। स्त्रियां ङीप्। छठी.

षष्ठक, (त्रि०) षष्ठो भाग+कन्। छठा हिस्सा.

षष्ठांश, (पु०) कर्म०। रक्षा करनेके बदले प्रजासे लेनेलायक उत्पन्नहुए शस्य (खेती) का छठा भाग राजाका कर (मासूल).

षष्ठान्न, (त्रि०) षष्ठो दिवसस्य षष्ठः काल. अशन-भोजनस्य वा कालो यस्य। दिनके छठे भागमें भोजन करनेहारा.

षष्ठी, (स्त्री०) षण्णां पूरणी-डट्-थुक्-ङीप्। छठी। देवी। स्वामिकार्तिककी स्त्रीरूप एक प्रकारकी मातृका (माता).

षस्, स्वप्न (सोना)। अदा० प० अक० सेट् (सेट् आता है) सस्ति.

षस्ज्, (सर्पण) फैलना-सरकना। भ्वा० प० ■ सेट्। सज्जति.

षह्, क्षमा (सहारना)। भ्वा० आ० सक० सेट्। सहते। असहीत्.

षाड्गुण्य, (न०) षट् गुणा एव+ष्यञ्। राजाओंके सन्धि आदि छ उपाय.

षाण्मातुर, (पु०) षण्णां मातॄणां अपत्यं+अण्-उकारो रपरः। छ माताओंका बेटा। कार्तिकेय (इसकी छै कृत्तिका, गंगा, पृथिवी, और पार्वती इस प्रकार छै माता हैं.

षाण्मासिक, (न०) षष्ठे मासे भवः+ठञ्। मरेहुएके एक दिन कम छठे महीनेमें करनेलायक एक प्रकार श्राद्ध (वैदिक श्रद्धासे कियागया कर्म).

षाध्, सिद्धि। हासिल होना। स्वा० और दिवा० प० अ० अनिट्। साध्नोति। साध्यति। असात्सीत्.

षान्त्व्, सामयुक्त सम्पादन (दिलासादेना)। चु० उ० सा० सेट्। सान्त्वयति-ते.

षि, बंध (बांधना) स्वा० क्र्या० उ० स० अनिट्। सिनोति-सिनुते। सिनाति-सिनीते। असैषीत्-असेष्ट.

षिट्, अनादर (बेइज्जत करना) भ्वा० प० स० सेट्। सेटति.

षिड्ग, (पु०) षिट्-गन्। पृ०। विट। धूर्त। लम्पट। कामी.

षिध्, गति (जाना) भ्वा० प० स० सेट्। सेधति। असेधीत्.

षिव्, तन्तुसिन्तार (तोग फैलाना-सीना) दि० प० स० सेट्। सीव्यति.

षु, सोमरसका निकालना और मथना। स्वा० उ० स०। नहाना। अक० अनिट्। इति पर० सेट्। सुनोति-सुनुते। असावीत्-असोष्ट.

षू, प्रसव-उत्पन्न होना (पैदाहोना)। अदा० आ० सक० सेट्। सूते। असविष्ट.

षू, प्रसव (पैदाहोना)। दि० आ० सक० सेट्। सूयते। असविष्ट-असोष्ट.

षू, क्षेप (फेंकना)। तु० प० सक० सेट्। सुवति। असावीत्.

षूद्, निवारण (हटाना)। भ्वा० आ० सक० सेट्। सूदते। असूदिष्ट.

षेव्, आराधन (सेवाकरना)। उपभोग (खुशी करना)। और आसरादेना (आश्रय)। भ्वा० उ० स० सेट्। सेवति-ते.

षो, नाशहोना। अक० दि० पर० अनिट्। स्यति। असात्-असासीत्.

षोडत्, (पु०) षट् दन्ता यस्य। दन्तको दत् आदेश होता है। नि०। छ दांतके लायक उमरवाला बैल आदि.

षोडश, (पु०) षोडशानां पूरण+डट्। जिससे सोलहकी संख्या भरजाय। सोलहवां। चन्द्रमाकी कला (सोलहवां भाग)। त्रिपुरसुन्दरी (स्त्री०).

षोडशक, (न०) षोडश परिमाणं अस्य+कन्। षोडश संख्यान वस्तु। सोलह चीजें। प्रेतके लिये दीगई १६ ह चीजें-जैसे पृथिवी, आसन, जल, वस्त्र, दीपक, अन्न, ताम्बूल (पान), छत्र (छाता), गंध, माला, फल, शय्या (सेज-पलंग), पादुका (पाँवरी-खड़ाऊं), गौ, सोना (कांचन), और चांदी। पितरोंके कुलमें दान करनेलायक स्वर्ण आदि सोलह.

षोडशन्, (त्रि० ब० व०) षड्धिका दश। नि०। छ ऊपर दश। सोलहकी सङ्ख्या। उस संख्यावाला.

षोडशमातृका, (स्त्री०) षोडश संख्या मातरः। सोलह माएं। सोलह दुर्गा-जैसे-गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, माता, लोकमाता, शान्ति, पुष्टि, धृति और तुष्टि.

षोडशाङ्ग, (पु०) षोडश द्रव्याणि अङ्गानि अस्य। गुग्गल आदि सोलह चीजोंका बनाहुआ धूप.

षोडशाङ्घ्रि, (पु०) षोडश अङ्घ्रयः (चरणाः) यस्य। सोलह पाँववाला। कर्कट (केकड़ा).

षोडशार, (न०) षोडश आराणि (कोणाः) यस्य। सोलह कोनवाला। सोलह पत्तोंवाला कमल। एक यंत्र.

षोडशिन्, (पु०) षोडश कला विद्यन्ते अस्य+इनि। सोलह कलावाला। चन्द्रमा। सोमरस डालनेका पात्र.

षोडशोपचार, (पु० ब० व०) षोडश संख्याना उपचाराः। पूजाकी सोलह चीजें। जैसे-आसन, स्वागत (भलेआये), पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयक, मधुपर्क, आचमन, स्नान, वस्त्र, भूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और वंदन.

षोढा, (अव्य०) षट् प्रकारं+धाच्। नि०। छ प्रकार। छ तरहसे.

षोढान्यास, (पु०) षोढा (षट् प्रकारः) न्यासः। तन्त्रमें छ प्रकारका न्यासविशेष.

ष्टु, स्तुति-बड़ाई करना-तारीफ करना। अदा० उभ० सक० अनिट्। स्तौति-स्तवीति। स्तुते.

ष्टै, वेष्टन-लपेटना-घेरादेना। सक०। दीप्ति-चमकना। अक० भ्वा० पर० अनिट्। स्तायति.

ष्ठग्, संवरण-छिपाना। भ्वा० प० स० सेट्। स्थगति। अस्थगीत्.

ष्ठा, गति-निवृत्ति (ठहरना)। भ्वा० प० अक० अनिट्। तिष्ठति। अस्थात्.

ष्ठिव्, निरास (मुखसे श्लेष्मआदिका निकालना) थूकना। भ्वा० पर० सक० सेट्। ष्ठीवति। अष्ठेवीत्। ष्ठीवनम्। "ष्ठीव्यति" भी होता है.

ष्ठ्यूत, (त्रि०) ष्ठिव्+क्त। निरस्त (थूकागया)। और वांत (वमनकियाहुआ).

ष्णा, शोधन (साफ करना-नहाना)। स्नाति। अस्नासीत्.

ष्णिह्, प्रीति (प्यारकरना)। दि० प० स० सेट्। स्निह्यति.

ष्मिङ्, ईषद्धास्य (थोड़ा हसना-मुसकुराना)। भ्वा० आ० अक० अनिट्। स्मयते। अस्मेष्ट.

ष्वद्, प्यारकरना और चाटना। भ्वा० आ० सक० सेट्। स्वदते। अस्वदिष्ट

ष्वञ्ज, आलिङ्गन (गलेमिलना)। भ्वा० आ० स० अनिट्। स्वजते। अस्वक्त.

ष्वप्, शयन (सोना)। अदा० प० अ० अनिट्। स्वपिति। अस्वाप्सीत्.

ष्विद्, गात्रप्रक्षरण (नहाना)। दि० पर० अ० अनिट्। स्विद्यति। अस्विदत्.

स

स, (पु०) सो+ड। विष्णु। सर्प (सांप)। ईश्वर। विहग (परिंदा-पक्षी)। यह शब्दके पहिले सम्-सम-तुल्य-सह-मदनाके अर्थमें लगाया जाता है। जैसे-सपुत्र-सभार्द-सतृष्ण-सधन आदि.

संक्षेप (पु०) सम्+क्षिप्+घञ्। बहुतसे अर्थको छोटे वाक्य आदिसे प्रकाश करना। मुख्तसिर.

संक्षोभ, (पु०) सम्+क्षुभ्+घञ्। चाञ्चल्य। चञ्चलता। क्षोभ। घबराहट.

संग्राहिन्, (पु॰) सम्+ग्रह्+णिनि। कुटज नाम द्रव्य। सञ्चयकारक (जमा करनेहारा-इकट्ठा करनेवाला) (त्रि॰).

संघ, (पु॰) सम्+हन्+ड नि॰। समूह। बहुतसे जीव। घञ्। पक्कामेल (पु॰).

संघर्ष, (पु॰) सम्+घृष्+घञ्। अन्योन्यदृढसंयोग। आपसकी रगड। आपसमें पक्का मेल.

संज्ञ, (न॰) सम्+ज्ञा+क। एक प्रकारका गंधवाला द्रव्य। सम्+ज्ञा+अङ्। चेतना (होश)। बुद्धि (अक़ल)। आख्या (नाम)। हाथ आदिके अर्थको जतलाना (इशारा)। गायत्री। और सूर्यकी स्त्री (जोरू) (स्त्री॰).

संज्ञ(ज्ञा)पन, (न॰) सम्+ज्ञा+णिच्-पुक् (मारनेके अर्थमें) ह्रस्व हो जाता है। ल्युट्। मारण (मारना) (दूसरे अर्थमें ह्रस्व नहिं होता)। ज्ञान (जाना)। जतलाना (इश्तिहार) क्तिन्। "संज्ञप्तिः" इसी अर्थमें है (स्त्री॰).

संज्ञासुत, (पु॰) संज्ञायाः (सूर्यपत्न्याः) सुतः। सूर्यकी स्त्रीका बेटा। शनैश्चर। शनि.

संज्ञु, (त्रि॰) संहते जानुनी यस्य ("जानु" के स्थान "ज्ञुः" का आदेश होता है)। संहतजानुक। घुटने-(गोड़े) टेकेहुए.

संज्वर, (पु॰) सम्+ज्वर्+अप्। अग्नि (आग) से उपजा ताप। सेक.

संमर्द, (पु॰) सम्+मृद्+घञ्। आपसकी रगड (एकपर एकका गिरना).

संयत्, (स्त्री॰) संयम्यतेऽत्र। सम्+यम्+क्विप्-तुक् च। जहां बंध जाता है। युद्ध (लडाई-जंग).

संयत, (त्रि॰) सम्+यम्+क्त। बद्ध (बंधाहुआ)। जिसने शास्त्रका नियम पालन किया है.

संयताक्ष, (त्रि॰) संयते अक्षिणी यस्य। बंद कीगई आंखोंवाला। बंद कीगई आंखोंवाला.

संयताञ्जलि, (त्रि॰) संयतः अञ्जलिः यस्य। प्रार्थनाके समय जोडे गये दोनों हाथोंवाला.

संयतात्मन्, (त्रि॰) संयतः आत्मा येन। जितेन्द्रियः। जिसने अपने मनको वश कर लिया है। जितात्मा। वशीकृतचेताः.

संयताहार, (त्रि॰) संयतः आहारः यस्य। संयमपूर्वक खानेवाला। परिमित (मितहुआ) आहार (खाना) खानेवाला.

संयतप्राण, (त्रि॰) संयताः प्राणाः येन। प्राणोंको वश किये हुए.

संयतवाच्, (त्रि॰) संयता वाक् येन। जिसने अपनी वाणीको वश किया है। मितभाषी.

संयन्तृ, (त्रि॰) संयच्छति। सम्+यम्+तृच्। रोकने-हारा। नियन्ता। नियमार बलानेहारा.

सं(य)याम, (पु॰) सम्+यम्+घञ् वा वृद्धिः। ... प्रकारका नियम, जो मनका अंग होनेसे एक दिन ... कियाजाता है। इन्द्रियनिग्रह (इन्द्रियोंका रोकना ...) बंधन। बांधना.

संयमन, (न॰) सम्+यम्+ल्युट्। बंधन (बांधना ...) नत। चतुःशालगृह (चौखणीवाला घर).

संयमनी, (स्त्री॰) संयम्यते अत्र। जहां बांधा जाता ... सम्+यम्+ल्युट्। यमाधिष्ठितपुरी। यमकी नगरी.

संयमिन्, (पु॰) सम्+यम्+णिनि-न वृद्धिः। एक ऋ... इन्द्रियोंको रोकनेहारा (त्रि॰).

संयाव, (पु॰) सम्यक् घृतादिभिः यूयते (मिश्र... गोधूमचूर्णादि अन्न। जहां आटाआदिके साथ ... आदि भलीभांति मिलायाजाता है। सम्+यु+घञ्। ... आदिसे पकाहुआ गोधूमचूर्ण (आटाआदि)। हलवा...

संयुज्, (त्रि॰) सम्यक् युनक्ति। सम्+युज्+क्विन्... अच्छीतरह जोडता है। गुणोंसे भराहुआ। गुणयु... संयुक्त.

संयुक्त, (त्रि॰) सम्+युज्+क्त। संयोगवाला ... मिलाहुआ.

संयुग, (न॰) संयुज्यतेऽत्र। सम्+युज्+क। ... जस्य ग। जहां जोडाजाता है। मिलता है)। यु... लडाई। जंग.

संयुत, (त्रि॰) सम्+यु+क्त। संयुक्त। जुडाहुआ ... मिलाहुआ.

संयोग, (पु॰) सम्+युज्+घञ्। मेलन। मेल... जोडना। क्रियासे उत्पन्नहुआ द्रव्यके आश्रयरहनेहारा ए... गुण। सम्बन्धमात्र। मेल.

संयोजित, (त्रि॰) सम्+युज्+णिच्+क्त। इकट्ठा ... मिलायाहुआ। किसी दूसरे पदार्थसे जोडाहुआ पदार्थ.

संरम्भ (पु॰) सम्+रभ्+घञ्+मुम्च। कोप (गुस्सा)... आक्रोश (निन्दा)। उत्साह (दिलेरी) वेग (जोर)...

संराधन, (न॰) सम्+राध्+ल्युट्। सम्यक् सेव... भलीभांति सेवाकरना। सम्यक् चिन्तन। अच्छी त... सोचना.

संराव, (पु॰) सम्+रु+घञ्। शब्द। आवाज.

संरूढ, (त्रि॰) सम्+रुह्+क्त। प्रौढ (बढाहुआ)... जातांकुर। जिसका अंकुर निकलआया। पैदाहुआ... जमगया.

संरोध, (पु॰) सम्+रुध्+घञ्। रोधन (रोकना)... और क्षेप (फेंकना)।

संलग्न, (त्रि॰) सम्+लग्+क्त। मिलित। मिलाहुआ... लगाहुआ.

संलय, (पु०) संलीयते इन्द्रियव्यापारोऽत्र । सम्+ली+अच् । जहां कोई भी इन्द्रियोंका व्यापार नहीं रहता । निद्रा (नींद) । और प्रलय.

संलाप, (पु०) सम्+लप्+घञ् । परस्पर कथन । आपसमें कहना । प्रेमके साथ आपसमें बातचीत करना । एकान्तमें कहना.

संवत्सर, (पु०) संवसन्ति ऋतवः अत्र । सम्+वस्+सरन् । जिसमें ऋतु (मौसम) वास करती हैं । वत्सर । बरिस (बरस).

संवत्, (अव्य०) विक्रमादित्यके राज्यसे चला शाक । (सन).

संवर्त, (पु०) सम्यक् वर्त्तते (पराववर्त्तते) अत्र । सम्+वृत्+णिच्+घञ् । जिसमें सभी सब कुछ बदल जाता है । प्रलयका समय । एक मुनि धर्मशास्त्रके बनानेहारा । मेघ (बहुत पानीवाला बादल) । मेघराज.

संवर्तक, (न०) सम्+वृत्+णिच्+ण्वुल् । बलदेवलाङ्गल (बलदेवका हल) । "हल. अस्ति अर्थे+अच्" बलदेव । बाड़वानल (समुद्रकी आग) (पु०).

संवर्तक, (पु०) सम्+वृत्+अच् । एक प्रकारका (प्रलयका) बादल । प्रलयकी अग्नि । बड़वानल (ज्वारभाटा) बलरामका नाम ।—कं (न०) बलरामका हल.

संवर्तिका, (स्त्री०) सम्+वृत्+अच् । कमलका नया पत्ता । दीपशिखा । दीपेकी लाट.

संवर्तिका, (स्त्री०) सम्+वृत्+ण्वुल्-टाप्-अतो इ । दीप (दीए)आदिकी शिखा (लाट) । कमल आदिका केसरके पासका दल (पत्ता) । नयापत्ता.

संवर्धक, (त्रि०) सम्+वृध्+णिच्+ण्वुल् । सम्माननाकारी (इज्जत करनेहारा) । बढ़ानेहारा (वृद्धिकारक).

संवलित, (त्रि०) सम्+वल्+क्त । मिलित (मिलाहुआ).

संवसथ, (पु०) संवसन्ति अस्मिन् (निवास करें हैं इसमें) ग्राम (गाँव) । बहुत लोगोंके निवासका स्थान । कुटिया.

संवह, (पु०) सम्यक् वहति । सम्+वह्+अच् । सात वायुओंमेंसे एक (अच्छीतरह बहती है).

संवार, (पु०) सम्+वृ+घञ् । शिक्षाग्रन्थमें कहाहुआ वर्णोंके उच्चारण करनेके लिये एक प्रकारका बाह्य (बाहिरका) प्रयत्न । संगोपन (छिपाना).

संवास, (पु०) संवसति अत्र । सम्+वस्+घञ् । भलीभांति रहता है इसमें । गृह (घर) । पुरवासिओंका पुरसे बाहिर रहनेलायक खुला स्थान.

संवाह, (पु०) संवाहयति । सम्+वह्+घञ् । अंगमर्दक (अंगोंको मलनेहारा) मुट्ठीचापी करनेहारा । "ण्वुल्" वही.

संवाहन, (न०) सम्+वह्+णिच्+ल्युट् । भारआदिका उठाना । अंगसम्मर्दन । मुट्ठीचापी करना.

संविग्न, (त्रि०) सम्+विज्+क्त । उद्विग्न (घबराया-हुआ) । किसी चाहीगई वस्तुके न मिलने या भय आदिसे उसकेहुए दिलवाला.

संवित्ति, (स्त्री०) सम्+विद्+क्तिन् । ज्ञान (समझ) । प्रतिपत्ति । बुद्धि । और अंगीकार (मानलेना).

संविद्, (स्त्री०) सम्+विद्+क्विप् । ज्ञान । प्रतिपत्ति । बुद्धि । अंगीकार । समाधि । नाम आचार । संकेत । युद्ध (लड़ाई-जंग) तोष (खुशी).

संविदा, (स्त्री०) संविद्यते अनया । सम्+विद्+क्विप्+टाप् । ज्ञान होता है इससे । भंगा (भांग) । सिद्धि । "संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी" इति तन्त्रम्.

संविद्व्यतिक्रम, (पु०) संविदः (अङ्गीकारस्य) व्यतिक्रम. यत्र । इकरार करके बदलते हैं जिसमें । अंगीकार करके उल्लंघन करनेके कारणसे उपजा विवाद (एक प्रकारका झगड़ा).

संविदित, (त्रि०) सम्+विद्+क्त । अंगीकृत (माना-हुआ) । भलीभांति जानाहुआ.

संविधान, (न०) सम्+वि+धा+ल्युट् । उपाय । रचना.

संवीक्षण, (न०) सम्यग् वीक्ष्यते (अन्विष्यते) वा । सम्+वि+ईक्ष्+ल्युट् । इष्ट (चाहीगई) वस्तुको पानेके लिये अन्वेषण (तलाश) करना । भलीभांति देखना.

संवीत, (त्रि०) सम्+व्येञ्+क्त । आवृत (ढकाहुआ) । रुद्ध (रुकाहुआ) । "सम्+वि+इण्+क्त" मिलाहुआ.

संवृत, (त्रि०) सम्+वृ+क्त । आवृत (ढकाहुआ) । छिपायाहुआ । "तस्य संवृतमन्त्रस्य" रघु०.

संवृतमन्त्र, (त्रि०) संवृतः मन्त्रः यस्य । छिपे हुए मन्त्र (सलाह) वाला । जो अपनी बातको छिपाये रखता है ।

संवृत्त, (त्रि०) सम्+वृत्+क्त । होगया । पूरा हुआ । इकट्ठा किया गया.

संवेग, (पु०) सम्+विज्+घञ् । (डर) आदिसे त्वर (जल्दी करना) । पूरा वेग (जोर) । सम्भ्रम.

संवेद, (पु०) सम्+विद्+घञ् । ज्ञान (जानना)+युच् । "संवेदना" (स्त्री०).

संवेश, (पु०) सम्यक् विशति अत्र । सम्+विश्+घञ् । भलीभांति प्रवेश करता है इसमें । निद्रा (नींद) । (सम्पूर्वक विश्धातु निद्राके अर्थमें है), जैसा कि "संविष्टः कुशशयने निशां निनाय" इति रघु०.

संवेशन, (न०) सम्+विश्+णिच्+ल्युट् । रतिक्रिया । भोग करना (भोगके पीछे निन्द्रा अधिक होनेसे यह अर्थ हुआ).

संव्यान, (न०) संवीयते । सम्+व्येञ्-कर्मणि ल्युट् । उत्तरीय वस्त्र (ऊपर ओढनेका कपडा)। हरएक कपडा.

संशप्तक, (पु०) सम्यक् शप्तं (अङ्गीकारः) यस्य+कप् । प्रतिज्ञा करके संग्राममें न लौटनेहारा सेनाका पुरुष.

संशय, (पु०) सम्+शी+अच् । सन्देह (शक)। एक धर्ममें होना और न होना । विरुद्ध दो धर्मोंका संदेह । "जैसे पर्वत वह्निवाला है या नहीं" "यह स्थाणु (शाखादिविहीन वृक्ष-ठोंठ) है या पुरुष".

संशयच्छेदिन्, (त्रि०) संशयं छिनत्ति । संशय (शक)-को काटनेवाला । हर तरहके शकको दूर करनेवाला.

संशयस्थ, (त्रि०) संशये तिष्ठति । स्था+क । संशययुक्त । शकमें पडाहुआ.

संशयात्मन्, (पु०) संशय आत्मनि यस्य । जिसको "अपनेमें" संदेह है । संदिग्धान्तःकरण । "संशयात्मा विनश्यति" इति गीता । संदेह करनेहारा.

संशयालु, (त्रि०) संशय+अस्ति अर्थे आलुच् । संशयवाला । शकी । जिसे संदेह रहता है.

संशयितृ, (त्रि०) सम्+शी+तृच् । संशय करनेहारा । संदेहकर्ता.

संशरण, (न०) संशीर्यतेऽनेन । सम्+शॄ+ल्युट् । जिससे बहुत टूटता है । रणारम्भ । युद्धका आरम्भ (शुरू)। हमला.

संशित, (त्रि०) सम्+शो+क्त । सम्पादित व्रतविषयक यत्न । किसी व्रतको पूरा करनेका यत्न करनेहारा । तेज किया हुआ । भलीभांति पूरा कियाहुआ । निर्णय कियाहुआ.

संशितव्रत, (त्रि०) संशितं (सम्यक् सम्पादितं) व्रतं अनेन । भलीभांति व्रतको पूरा करनेहारा । जिसने अपना नियम पूरा किया.

संशुद्धि, (स्त्री०) सम्+शुध्+क्तिन् । सम्यक् शोधन । अच्छी सफाई । देहादिमार्जन । शरीरआदिकी सफाई.

संश्यान, (त्रि०) सम्+श्यै+क्त । शीत आदिसे सिकुडाहुआ.

संश्रय, (पु०) सम्+श्रि+अच् । आश्रय । आसरा । रहनेकी जगह । निवासस्थान.

संश्रव, (पु०) सम्+श्रु+अप् । अंगीकार । इकरार । अङ्गीकार हुआ । मुचलका । "पत्र" "संश्रव" यही अर्थ.

संश्रुत, (त्रि०) सम्+श्रु+क्त । अंगीकृत । इकरार कियाहुआ.

संश्लिष्ट, (त्रि०) सम्+श्लिष्+क्त । आश्लिष्ट । मिलाहुआ । अच्छीतरह चंबडुआ.

संश्लेष, (पु०) सम्+श्लिष+घञ् । आश्लेष । मिलना । मेल.

संसक्त, (त्रि०) सम्+सञ्ज्+क्त । मिलित । मिलाहुआ । बंधाहुआ । बहुत निकट (नजदीक).

संसक्तमनस्, (त्रि०) संसक्तं मनः यस्य । फसे हुए मनवाला । जिसने अपना मन किसी जगह लगा रक्खा है.

संसद्, (स्त्री०) संसीदति अस्याम् । सम्+सद्+क्विप् । जिसमें भलीभांति बैठता है । सभा । कमेटी । मजलिस.

संसरण, (न०) सम्+सृ+ल्युट् । अपने अदृष्ट (पाप और पुण्य) से बंधाहुआ देहका अंगीकार करना संसार । बहना । गमन । चलना । युद्धका आरम्भ । हमला.

संसर्ग, (पु०) सम्+सृज्+ घञ् । सम्बन्ध । मेल । विभागके अनन्तर "जो तेरा धन है वह मेरा है" इस नियमसे एकही स्थानमें इकट्ठा रहनारूप सम्बन्ध (मेल).

संसर्गाभाव, (पु०) संसर्गस्य अभावः । मेलका न होना । ध्वंस, प्रागभाव और अत्यन्ताभावरूप-भेदसे भिन्न भाव (न होना).

संसार, (पु०) संसरति अस्मात् । सम्+सृ+घञ् । चलता है इससे । मिथ्याज्ञानसे उपजी संस्काररूप वासना । देहको आरम्भ करनेहारा अदृष्टविशेष । "आधारे घञ्" विश्व । दुनियां । "भावे घञ्" सगति । मिलना.

संसारचक्रं(न), (संसारस्य चक्रं) संसारका चक्र । जन्ममरणका प्रवाह.

संसारमार्ग, (पु०) ६ त० । संसारका पथ (रास्ता)। योनिद्वार (योनिहीसे बाहिर निकलनेपर मायामोहपना है).

संसारमोक्ष, (पु०) (संसारात् मोक्षः) संसार (जन्ममरणप्रवाह) से छुटकारा । अंतिम छुटकारा । मुक्ति । नजात ।

संसारिन्, (त्रि०) संसरति (अदृष्टभेदेन देहेन सः संयुज्यते)। सम्+सृ+णिनि । किसी पुण्यपापके कारण शरीरके साथ जुडता है । शरीरका अभिमानी जीवात्मा.

संसिद्ध, (त्रि०) सम्यक् स्वभावेन वा सिद्धः । सम्+सिध्+क्त । स्वभावहीसे बनगया । भलीभांति बनाहुआ.

संसृति, (स्त्री०) सम्+सृ+क्तिन् । संसारका प्रवाह । संगति । मेल.

संसृष्ट, (पु०) सम्+सृज्+क्त । विभागके अनन्तर फिर मिलाके फिर अपने २ धनोंमें संबंध रखनेहारा भाईआदि "संसृष्टस्य तु संसृष्टिः" इति स्मृतिः । वमन(कै)किया हुआ । और मिलाहुआ । "भावे क्त" मेल.

संसृष्टिन्, (पु०) संसृष्ट अनेन+इनिः । मिलाहुआ भाई आदि.

संस्कर्तृ, (पु०) सम्+कृ+तृच् सुट् च । संस्कारकर्ता । विवाहआदि संस्कार करनेहारा । पाक करनेहारा । पाचक । रसोइआ.

संस्कार, (पु॰) सम्+कृ+घञ्-सुट् च । शुद्धकरना । स्मृतिका कारण अनुभवसे उपजा आत्माका एक गुण । पृथिवीआदि चारोंमें रहनेहारा "वेग" नामी गुण । शास्त्रके अभ्याससे उत्पन्नहुआ ज्ञान (लियाकत) । व्याकरणकी रीतिसे शब्दोंका साधनप्रकार (बनानेका ढब) । ब्राह्मणआदिका वेदमें कहेहुए कर्मोंकी योग्यताका साधन, गर्भाधानआदि क्रियाओंका समूह । पाक (पकना-रसोई) । विवाहादि दश प्रकारका धर्म

संस्कारपूत, (त्रि॰) (संस्कारेण पूतः) वैदिक रीतिसे पवित्र किया गया । विद्यासे शुद्ध किया हुआ.

संस्कृत, (त्रि॰) सम्+कृ+क्त-सुट् च । संस्कार (साफ) कियाहुआ पदार्थ । व्याकरणआदि लक्षणके आधीन साधनवाला शब्द । पकाहुआ । गलाहुआ । और शोधित (साफ कियाहुआ).

संस्कृतोक्ति, (स्त्री॰) (संस्कृता उक्तिः) संस्कार किया गया वचन । साफ कीगई वाणी (बोली).

संस्तर, (पु॰) सम्+स्तृ+अप् । यज्ञ । शय्या (छेज-पलंग) । पत्तोंकी बनीहुई शय्या (पलंग) । बिछौना

संस्तव, (पु॰) सम्+स्तु+अप् । परिचय (वाकफीयत) अच्छीतरह प्रशंसा कियाहुआ.

संस्त्याय, (पु॰) सम्+स्त्यै+घञ् । संघात । घड़ । फैलाव । घर.

संस्थ, (त्रि॰) सम्+स्था+क । अवस्थित (टिकाहुआ) और मृत (मरगया).

संस्थित, (त्रि॰) सम्+स्था+क्त । मृत । (मराहुआ) । अच्छीतरह ठहराहुआ

संस्फुट, (त्रि॰) सम्+स्फुट्+क । विकसित । खिलाहुआ.

संस्फोट, (पु॰) सम्+स्फुट्+घञ् । युद्ध । जंग । लड़ाई.

संहत, (त्रि॰) सम्+हन्+क्त । दृढ (पक्का) । मिलाहुआ । दूसरेके साथ मिलाहुआ । "संहतपरार्थत्वात्" इति सांख्यम्.

संहतजानु, (त्रि॰) (संहतौ जानू यस्य) । मिलेहुए (जुड़ेहुए) घुटनोंवाला.

संहतस्तनी, (स्त्री॰) (संहतौ स्तनौ यस्याः) । एक दूसरेसे मिलेहुए स्तनोंवाली स्त्री । घनस्तनी.

संहति, (स्त्री॰) सम्+हन्+क्तिन् । समूह (बहुतका मेल) । सम्यग् हनन । भलीभांति चोट लगाना.

संहनन, (न॰) संहन्यते (पदार्थ संमुज्यते) । सम्+हन्+ल्युट् । देह । शरीर । संघात (समूह) । और वध (मारना).

संहर्ष, (पु॰) सम्यक् हर्ष । सम्+हृष्+घञ् । आनन्द (खुशी) । "संहृष्यति अनेन" प्रसन्न होता है इससे । वायु (हवा).

संहार, (पु॰) सम्+हृ+घञ् । प्रलय । नाश (तब एक नरक.

संहिता, (स्त्री॰) सम्यक् हितं (प्रतिपाद्यं) यस्या अच्छी बातको वर्णन करती है । मनु आदिसे र धर्मशास्त्र । पुराण । इतिहास (तारीख आदि) । मन्त्रको प्रतिपादन करनेहारा वेदका भाग.

संहृति, (स्त्री॰) सम्+हृञ्+क्तिन् । बहुतोंसे बुलाया

संह्रादिन्, (त्रि॰) सम्+ह्रद+णिनि । शब्द करनेहार

सकर्ण, (त्रि॰) सह कर्णेन । श्रुतिशील । सुने कानवाला.

सकर्मक, (त्रि॰) सह कर्मणा+कप् । व्याकरणमें कर्म क्रियाको जतलानेहारा धातु (जिसका फल पड़ता है).

सकल, (त्रि॰) सह कलया । "सह" को "स" का होता है । सम्पूर्ण (सारा) । कलासहित । हुमरव्याधे

सकारण, (त्रि॰) सह कारणेन । कारणके साथ । जैसे मट्टीका कार्य "घड़ा" है.

सकाश, (पु॰) काश+घञ् । सह काशेन । अनि समीप । पास.

सकुल्य, (त्रि॰) समाने कुले भव+यत् । एकही हुआ । अपनेसे ऊंचे वा नीचे आठवी पीढीतक पुर समूह । दायभाग (विरसा) लेनेमें अपनेसे ऊपर नीचेकी पांचवी पीढीमें कोई पुरुष । जातभाई.

सकृत्, (अव्य॰) एकबार.

सकृत्प्रज, (पु॰) सकृत् (एकबार) प्रजायते । प्र+ड । एकबार उत्पन्न होता है । कौआ । काक । ए पैदाहुए सन्तानवाला (त्रि॰).

सकृत्फला(ली), (स्त्री॰) सकृत् फलति । फल्+ एकबार फलता है । कदलीवृक्ष (केलेका दरख्त).

सक्त, (त्रि॰) सञ्ज्+क्त । आसक्त (फंसाहुआ) । अनि लगाहुआ.

सक्तु, (पु॰) सच्+तुन् । यवादिचूर्ण (भुनेहुए (आदिक चूरा) सत्तु.

सक्थि, (न॰) सञ्ज्+क्थिन् । ऊरु (पट) । शकटाव माड़ीका ओड़.

सखि, (त्रि॰) सह (समानं) ख्यायते । ख्या+इन्-नि सौहार्दयुक्त (प्रेमसहित) । समानप्रीतिकरनेहारा.

सखी, (स्त्री॰) सखि+ङीष् । सहचरी (साथन) । व सहेली.

सख्य, (न॰) सख्युर्भावः+यत् । मित्रका होना । मित्रता । दो

सगर, (पु॰) सह गरेण (विषेण) वर्तते । विष (जहि के साथ उत्पन्न । सूर्यवंशका एक राजा । "सगरस्तु गर जन" इति पुराणम् । विषवाला (त्रि॰)

सङ्गम, (पु०) सम्+गम्+घञ्-न वृद्धि. । संगति (मेल) । स्त्री और पुरुषका संभोग । नदीआदिका नद (बड़ा दर्या) आदिके साथ मिलनेका स्थान । "गंगासागरसङ्गमः" इति पुराणम्.

सङ्गर, (पु०) संगीर्यंते । सम्+गॄ+अप् । आपद् (मुसीबत) । युद्ध (जंग-लड़ाई) । प्रतिज्ञा (इकरार) । कामकरनेहारा । विष (जहिर) शमीका वृक्ष.

सङ्गव, (पु०) संगता गावो दोहनाय अत्र काले नि० । जिस समय गौएं धोनेके लिये इकट्ठी होती हैं । प्रातःकालके अनन्तरके तीन मुहूर्त (छ घड़ियें).

सङ्गिन्, (त्रि०) सञ्ज्+घिनुण् । संगयुक्त । संगवाला । साथी । भोगी । दाहवती । स्त्रियां ङीप्.

सङ्गीत, (न०) सम्+गै+क्त । दर्शनके लिये नाट्य, गीत, वादित्रिक । नाचना गाना-बजाना-तीनों । इन तीनोंको प्रतिपादन (वर्णन) करनेहारा ग्रंथ । "कर्मणि क्त" । सम्यग् गीत । भलीभांति गायाहुआ (त्रि०).

सङ्गीर्ण, (त्रि०) सम्+गॄ+क्त । स्वीकृत । मानाहुआ.

सङ्ग्रह, (पु०) सम्+ग्रह्+अप् । समाय । इकट्ठा । संक्षेप । योजना । बहुत अर्थवाले वाक्योंको एक स्थानमें जोड़ना.

सङ्ग्रहणी, (स्त्री०) संचिता ग्रहणी । इस नामका एक रोग । कच्ची.

सङ्ग्राम, (पु०) संग्राम-लड़ाई करना+घञ् । युद्ध । जंग । लड़ाई.

सङ्ग्रामपटह, (पु०) ६ त० । युद्धका बाजा । रणवाद्यविशेष.

सङ्ग्राहिन्, (पु०) सम्यक् गृह्णाति मलं । सम्+ग्रह्+णिनि । भलीभांति मलको लेता है । कुटजवृक्ष । मलको रोकनेवाला (मलावष्टम्भक) । संग्रह (इकट्ठा) करनेहारा (त्रि०).

सङ्घ, (पु०) सम्+हन्+घञ् । सजातीयसमूह । एकजातिवालोंका मेल । समूह । बहुतसे इकट्ठे रहनेवाले लोग.

सङ्घट, (पु०) सम्+घट्+घञ् । परस्परसंघर्षण । आपसमें रगड़ना । सौदा । गठन । गांठना । चक्र । पहिया.

सङ्घर्ष, (पु०) सम्+घृष्+घञ् । परस्परघर्षण । आपसमें रगड़ना । पीसना । आपसमें टकराना । स्पर्धा । हसद.

सङ्घशस्, (अव्य०) संघ+वीप्सार्थे शस् । भूरिशः । इकट्ठे होकर । बहुतही समूह.

सङ्घात, (पु०) सम्+हन्+घञ् । समूह । एक नरक । सम्यग् हनन (अच्छीतरह चोट लगाना) । शरीरदोष । पक्का मेल । और कफ.

सचि(ची), (स्त्री०) सच्+इन्-वा ङीप् । इन्द्राणी । इन्द्रकी स्त्री.

सचिव, (पु०) सच्+इवन् । बांधव । सहाय (मददकरनेहारा) । मंत्री । वजीर.

सचेतन, (त्रि०) सह चेतनया । विशिष्टज्ञानयुक्त । विशेषज्ञानवाला । अच्छीसमझवाला । चेतनाके साथ । होशके साथ । होशिआर.

सचेष्ट, (पु०) सचते-सच्+अच् । तथाभूतः सन् इष्टः । आम्र । आम (अंब) । "सह चेष्टया" चेष्टान्वित । चालाक (त्रि०).

सच्चिदानन्द, (पु०) सत् (नित्यं) चित् (चैतन्यं) आनन्दः (सुखस्वरूपं) त्रिपद । कर्म० । नित्यज्ञान और सुखस्वरूप ब्रह्म । परमात्मा.

सच्छूद्र, (पु०) कर्म० । अच्छा शूद्र । गोप (ग्वाला) । गूजर । और मालिन । नाई.

सजाति, (पु०) समाना जातिः अस्य । एकजातिवाला । समान वर्णसे समान वर्णवाली कन्यामें उत्पन्न कियाहुआ पुत्र । समानजातिवाला (त्रि०).

सजातीय, (त्रि०) समानां जातिं अर्हति । छ (ईय) । समानधर्मवाला । अपनीजातिका.

सजु(जू)स्, (अव्य०) सहार्थे । साथके अर्थमें.

सज्ज, (त्रि०) सस्ज+अच् । वर्तुल । तयारहुआ । संनद्ध । "सज्ज" प्रयोजन (लगाना-जोड़ना) । वेद (सजाहुआ) । "सतो जायते-जन्+ड" । साधु (भले) से उपजाहुआ । अथवा सजाया हुआ (त्रि०).

सज्जन, (त्रि०) सस्ज्+णिच्+ल्युट् । रक्षाके लिये पैरोंका स्थापन । सस्ज+ल्युट् । आयोजन (जोड़ना) । सत् जन. । भला मानुष । अच्छी कुलमें उत्पन्नहुआ (पु०) । सवारीके चढ़नेके लिये हाथीका सजाना.

सञ्चय, (पु०) सम्+चि+अच् । समूह । और संग्रह (इकट्ठा).

सञ्चयिन्, (पु०) सम्+चि+इनि । संग्रहकारक । जमाकरनेहारा.

सञ्चार, (पु०) सञ्चरति अनेन । सम्+चर्+घञ् अर्थमें "घ" वा घञ् । सेतु (पुल) । देह (शरीर) । मार्ग-आदिका दूसरी तरफसे जाना । "भावे घ" । कठिनतासे जाना.

सञ्चारिन्, (पु०) सम्+चर्+णिनि । वायु (हवा) । अलंकारमें व्यभिचारिभावादिका अनुसारी अर्थविशेष । चलनेहारा (त्रि०).

सञ्चित, (त्रि०) सम्+चि+क्त । संगृहीत । इकट्ठाकियाहुआ.

सञ्चरन, (न०) सम्+चर्+ल्युट् । आपसमें एक दूसरेके सामने चलनाहुआ चलाचलाहट ([illegible]).

सन्ध्यानटिन्, (पु०) सन्ध्यायां नटति । नट्+णिनि । संध्याके समय नाचता है । शिव । शंकर.

सन्ध्याभ्र, (न०) सन्ध्याकालिकं अभ्रं इव । मानो संध्यासमयका बादल है । सुवर्ण । गेरी । सांझका बादल.

सन्ध्याराग, (न०) सन्ध्याया इव रागः अस्य । संध्याकी नाईं जिसका रङ्ग है । सिन्दूर । सेंधूर.

सन्ध्याराम, (पु०) सन्ध्यायां रमते । रम्+घञ् । जो सन्ध्यानाम स्त्रीमें रमण कर्ता है । ब्रह्मा.

सन्न, (पु०) सीदति । सद्+क्त । पियालका वृक्ष । अवसन्न (निर्बल-कमजोर-घटाहुआ-दुःखीहुआ) (त्रि०) । "स्वार्थे कन्" सन्नक । वामन । बौना.

सन्नत, (त्रि०) सम्+नम्+क्त । प्रणत (झुकाहुआ) । शब्द करनेहारा.

सन्नद्ध, (त्रि०) सम्+नह्+क्त । कृतसन्नाह । संजोह पहिरेहुए । तयारहुआ । बंधाहुआ । उत्पन्नहुआ.

सन्नय, (पु०) सम्+नी+अच् । समूह । बहुतसा.

सन्नहन, (न०) सम्+नह्+ल्युट् । वर्मग्रहण । संजोह पहिरना । उद्योग । हिम्मत । पूरा बंधन.

सन्नाह, (पु०) सन्नह्यते । सम्+नह्+घञ् । संजोया । वर्म । अच्छीतरह बांधाजाता है.

सन्निकर्ष, (पु०) सम्+नि+कृष्+घञ् । सान्निध्य । निकटता । पासहोना । "प्रवृत्तसन्निकर्षो हि क्षणमपि शस्यते" पुराणम् । विषय और इन्द्रियका सम्बन्ध (व्यापार । न्यायमतमें ज्ञानलक्षण सामान्य लक्षण और योगजधर्मविशेष स्वरूप अलौकिक प्रत्यक्षका साधन एक उपाय.

सन्निकर्षण, (न०) सम्+नि+कृष्+ल्युट् । सन्निधान । निकट होना । नजदीक होना.

सन्निधान, (न०) सम्+नि+धा+ल्युट् । नैकट्य । सामीप्यहोना । पासहोना.

सन्निधि, (पु०) सम्+नि+धा+कि । सामीप्य । पासहोना । "कर्मणि कि" इन्द्रियका विषय । कर्म० । अच्छा रखना.

सन्निपतित, (त्रि०) सम्+नि+पत्+क्त । मिलाहुआ । इकट्ठाहुआ । गिरपड़ा.

सन्निपात, (पु०) सम्+नि+पत्+घञ् । मेलन । मिलना । नीचे गिरना । इकट्ठे होजाना । [illegible] । मिलना । समूह । एक प्रकारका ज्वर ([illegible]) जिसमें [illegible] तीनों धातु ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विशेष [illegible] [illegible] है । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])

सन्निपातनुद्, (पु०) सन्निपातं (त्रिदोषरोगं) नुदति । नुद्+क्विप् । जो तीन दोषोंसे उत्पन्नहुए [illegible] रको दूर कर्ता है । नेपालनिम्ब । नेपालदेशका [illegible] (निम्ब).

सन्निबन्धन, (न०) सम्यक् निबन्धनम् । प्रा० । [illegible] तरह बांधना । पक्का बांधना । कई स्थानोंमें स्थित [illegible] वाक्योंको एक स्थानपर संकलन (इकट्ठाकरना) । [illegible] तदुपयोगी (उस कामको पूरा करनेहारा) प्रबन्धि[illegible] ७ ब० । अच्छी जीविकावाला (त्रि०).

सन्निभ, (त्रि०) सम्+नि+भा+क । सदृश । समान । एक जैसा.

सन्निवेश, (पु०) सम्+विश्+आधारे घञ् । पुरके [illegible] हिरका देश । भावे घञ् । सम्यक्स्थिति । [illegible] ठहरना । रावा । अखाड़ा.

सन्निहित, (त्रि०) सम्+नि+धा+क्त । निकटस्थ । [illegible] ठहिराहुआ । नजदीक । "कर्मासन्निहितं नैमि" [illegible] और भलीभांति स्थापित (रक्खागया) । "[illegible] नैकट्य (नजदीकहोना) (न०).

सन्निहितापाय, (त्रि०) सन्निहितः अपायः नाशः [illegible] निकट नाशवाला । जिसका नाश तयारही है । [illegible] हुर । विनश्वर । असार.

सन्न्यस्त, (त्रि०) सम्+नि+अस्+क्त । निक्षिप्त । [illegible] रक्खागया । डालागया । अच्छीतरह [illegible] छुटाहुआ । अर्पित (दियागया).

सन्न्यास, (पु०) सम्+नि+अस्+घञ् । "[illegible] कर्मणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः" इति भगव[illegible] शबल भविष्य फलको छोड़ केवल सांसारिक [illegible] कामनासे कियेगये कर्मोंका त्यागदेनाही सन्न्यास है । [illegible] काम्यकर्मपरित्याग ही संन्यासका स्वरूप है । [illegible] विधान कियेहुए कर्मोंका विधान (रीति). [illegible] भांति त्याग करना । उसके योग्य चौथा आश्रम । [illegible] (चैत्र) में करनेलायक पुराणमें प्रसिद्ध [illegible] व्रतविशेष.

सन्न्यासिन्, (पु०) सम्+नि+अस्+णिनि । [illegible] चौथे आश्रमवाला । चैत्रमें कर्तव्य [illegible].

सपक्ष, (पु०) समानः पक्षः । जहां साध्य और [illegible] दोनों रहजावें, जैसे आग और धूआ [illegible] पहाड़ है । परपक्ष । अपनीओरके लोगोंमें । [illegible] (त्रि०).

सपत्नाकरण, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] । सपत्न+डाच्+कृ+ल्युट् । [illegible] [illegible] [illegible] । "[illegible]" [illegible] [illegible] (त्रि०)

सपत्न, (पु॰) सह एकार्थे पतति (पतते) पत्+न "सह" को "स"। एकही अर्थमें साथ यत्न कर्ता है। एकके लाभमें अपना लाभ करना चाहता है। शत्रु-दुश्मन.

सपत्नी, (स्त्री॰) समानः पतिः यस्याः "ङीप्" और "न" होता है। समान (उसी) पतिवाली। एक भर्तावाली स्त्री (जिसकी दूसरी विरोधिनी-सौतिनभी है)। सौतिन-दूसरी औरत। एकही स्वामीवाली भूमि-आदि (इस अर्थमें "सपति" भी होता है).

सपदि, (अव्य॰) सह पद्यते। पद्+इन् "सह" को "स"। साथही पड़ता है। तत्क्षण। उसी समय। झट.

सपर, पूजा करना (ध्यान करना)-कण्ड्वादि॰ पर॰ सक॰ सेट्। सपर्यति। असपर्यीत्.

सपर्या, (स्त्री॰) सपर्+यक्+अ टाप्। पूजा। आदर। "सोऽहं सपर्याविधिभाजनेन" इति रघुः.

सपाद, (स्त्री॰) सह पादेन (चरणेन-चतुर्थांशेन वा)। पाद (पाँव) सहित पाँववाला चतुर्थांश (चौथेहिस्से) वाला.

सपिण्ड, (त्रि॰) समानः पिण्डः (स्वदेहारम्भकदेह) यस्य। एकही देहसे आरम्भ होनेयोग्य देहवाला ज्ञाति-विशेष। बरादरी। रिश्तेदार। ज्ञातिमें साक्षात्-परम्परा-अविपरम्परासे एकही देहारम्भ (शरीरसे उत्पन्न होने-वाले) हैं इसीलिये "सपिण्डत्व" है। एकसम्बन्धी जिनका पितरोंको प्रेतपिण्ड देनेमें किसी न किसी प्रकारसे सम्बन्ध रहे। दाय (विरसा) लेनेका अधिकारी.

सपिण्डीकरण, (न॰) सह पिण्डेन-ततः अभूततद्भावे च्वि+कृ+ल्युट्। पिण्डके साथ कियागया। मिलायागया। प्रेतपन छुड़ानेके लिये प्रेतके उद्देशसे करनेलायक पिता-आदिके पिण्डोंका समन्वय। एकही स्थानमें मिलानेहारा श्राद्धविशेष.

सपिण्डीकृत, (त्रि॰) सह पिण्डः (पित्रादिपिण्डः) सपिण्डः ततः च्वि+कृ+कर्मणि क्त। जिसके लिये "स-पिण्डीकरण" श्राद्ध किया है वह मृतक (मराहुआ) जन (कोई हो)। "ये सपिण्डीकृताः प्रेताः" इति स्मृतिः.

सपीति, (स्त्री॰) पा+क्तिन्। पीति (पानं)। सह एकत्र पीतिः। ज्ञाति (जात बरादरी) के साथ मिलकर भोजन (खाना).

सप्तक, (न॰) सप्तानां अवयव-कन्। सातकी संख्या (गिन्ती)। "सप्त प्रमाणं अस्य-कन्"। सातकी संख्या-वाला (त्रि॰).

सप्तकी, (स्त्री॰) सप्तभिः (स्वरैः) यः कायति (शब्दा-यते) कै+क। सात सुरोंके समान शब्द कर्ता है। मेखला। तड़ागी.

सप्तचत्वारिंशत्, (स्त्री॰) सप्ताधिका चत्वारिंशत्। शाक॰। सात ऊपर चालीस। सैंतालीस। उस संख्यावाला (त्रि॰).

सप्तच्छद, (पु॰) सप्त सप्त छदाः (प्रतिपत्र) यस्य। जि-सके हरएक पत्तेके साथ सात २ पत्ते हों। सतौनेका दरख्त.

सप्तजिह्व, (पु॰) सप्त जिह्वा इव (आस्वादसाधनानि) आर्चिषो यस्य। जिसकी सातलाटें जिह्वाओंके समान हैं। वह्नि। आग.

सप्तज्वाल, (पु॰) सप्त "काली" इत्यादयः ज्वाला यस्य। "काली" "कराली" प्रभृति जिसकी सात लाटें हैं। अग्नि। आग.

सप्ततन्तु, (पु॰) सप्तभिः "भू" आदिभिः (महाव्या-हृतिभिः) तन्यते। तन्+तुन्। "भू" आदि सात महाव्याहृतिओंसे जिसका विस्तार कियाजाता है। यज्ञ। याग.

सप्तति, (स्त्री॰) सप्तगुणिता दशतिः नि॰। सत्तरकी संख्या। उस संख्यावाला.

सप्ततितम, (त्रि॰) सप्ततेः पूरण+तमट्। जिससे "सत्तर"-की संख्या भरजाती है। सत्तरवा.

सप्तदश, (त्रि॰) सप्तदशानां पूरणः+डट्। सतारवां। जिससे सतारवी संख्या पूरी होती है.

सप्तद्वीपा, (स्त्री॰) सप्त (जम्बूप्रभृतयः) द्वीपा यस्याः। "जम्बू" आदि सात द्वीप (जजीरे) वाली पृथिवी.

सप्तधा, (अव्य॰) सप्तन्+प्रकारे धाच्। सात प्रकार। सात तरहसे.

सप्तधातु, (पु॰ ब॰ व॰) सप्तगुणिता धातवः। रस, असृक, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र (वीर्य) रूप शरीरकी सात धातुएं.

सप्तन्, (पु॰ त्रि॰) सप्+कनिन्। सात। सातसंख्यावाला.

सप्तपदी, (स्त्री॰) सप्तानां पदानां समाहारः। ङीप्। विवाहके समयकी सात फेरियें। सात पाँव। सात शब्द.

सप्तपर्ण, (पु॰) सप्त सप्त पर्णानि अस्य। जिसके प्रति पत्तेके साथ सात २ पत्ते हों। सतौनेका वृक्ष। छतिम.

सप्तपाताल, (न॰) समाहारद्विगुः। पात्रादि। "अतल"-आदि पृथिवीके नीचे सात लोक.

सप्तप्रकृति, (स्त्री॰ ब॰ व॰) सप्त संख्यकाः प्रकृतयः। सांख्यमें प्रसिद्ध "महत्तत्त्व" आदि सात प्रकृतियें। षोडश पदार्थोंका हेतु होनेसे "प्रकृतिपन" और प्रकृतिका कार्य होनेसे इन्हें (सात प्रकृतिओंको) "विकृतिपन" भी है। "स्वामी" आदि राजाके सात अंग। सात सम्भार.

समिध्, (स्त्री॰) समिन्धतेऽनया । सम्+इन्ध्+क्विप् । काष्ठ । लकड़ी । होमके लिये काष्ठविशेष । पलाशादि.

समिध, (पु॰) समिध्यते । सम्+इन्ध्+क । काष्ठ । लकड़ी । और वह्नि । आग.

समिन्धन, (न॰) सम्+इन्ध्+ल्युट् । काष्ठ । अच्छी तरह । धधकना.

समीक, (न॰) सम्+ईकक् । युद्ध । जंग । लड़ाई.

समीकरण, (न॰) असमः समः क्रियते अनेन । सम्+च्वि+कृ+ल्युट् (अन) । असम (जो बराबर नहीं) को सम (बराबर) करना । बीजगणितमें न जानीहुई संख्याओंको जाननेके लिये प्रक्रियाविशेष । तुल्यपरिमाणको करना.

समीक्ष, (न॰) सम्यक् ईक्षतेऽनेन । जिससे भलीभांति देखना है । सांख्यदर्शन । "भावे घञ्" । पर्यालोचन । चारोंओरसे सोचना । ठीक समझना । अ । "समीक्षा" । बुद्धि । मीमांसाशास्त्र । यत्न । स्त्री-टाप्.

समीक्ष्यकारिन्, (त्रि॰) समीक्ष्य करोति । कृ+णिनि । उपर । वस्तुके तत्त्वको भलीभांति सोचकर काम करनेहारा.

समीचीन, (त्रि॰) सम्यक् अञ्चः । सम्+अञ्च्+खिन । यथार्थ । ठीक २ । साधु । और सत्य (हां) । सत्यवाला (त्रि॰).

समीप, (त्रि॰) संगता आपः यत्र । जहां पानी मिल जाता है । निकट । पास.

समीर, (पु॰) सम्यक् ईरयति । सम्+ईर्+अच् । वायु (हवा) । पु॰ "समीर".

समीरण, (पु॰) सम्+ईर्+ल्यु (अन) । वायु (हवा) । पथिक (राही).

समीरिता, (स्त्री॰) सम्+ईर्+क्त+टाप् । कथिता (कहीहुई) । उच्चारित.

समीहित, (त्रि॰) सम्+ईह्+क्त । अभीष्ट । चाहाहुआ । अभिप्रेत.

समुचित, (त्रि॰) सम्+उच्+क्त । सम्यक् उपयुक्त । वाजिब । (योग्य).

समु[illegible] [illegible] (॰) सम्+उद्+चि+अच् । दो तीन इत्यादि । [illegible] रके पदार्थोंको एकत्रित । [illegible] और "तथा" आदि । [illegible] होता है.

[illegible] (॰) सम्+उद्+चि+क्त । इकट्ठा हुआ ।

[illegible] सम्+उद्+चर्+अप्-घञ् वा । अच्छीतरह [illegible] हो । [illegible] भी तरह उल्लङ्घन ।

[illegible] सम्+उद्+छिद्+ल्युट् । उखाड़ना ।

समुच्छ्र(च्छ्रा)य, (पु॰) सम्+उद्+श्रि+अच्-घञ् वा । अत्युन्नति । बहुत ऊंचाहोना । विरोध (दुश्मनी) । ऊंचाई । उत्सेध.

समुच्छ्रित, (त्रि॰) सम्+उद्+श्रि+क्त । अत्युन्नत । बहुत ऊंचाहुआ.

समुच्छलित, (पु॰) सम्यक् उच्छलितं । सम्+उद्+शल्+क्त । चारों ओर फैलाहुआ । चारों ओर उछलाहुआ । समन्तात् विस्तीर्ण.

समुच्छ्वसित, (त्रि॰) सम्+उद्+श्वस्+क्त । सम्यक् उच्छ्वासयुक्त । भलीभांति सांस लेता । [illegible] जिसकी सांस.

समुच्छ्वास, (पु॰) सम्+उद्+श्वस्+घञ् । मुख और नासिकासे प्रकाश वायु (हवा) का [illegible] (बाहर) । सांस.

समुज्झित, (त्रि॰) सम्+उज्झ्+क्त । त्यक्त । छोड़ाहुआ.

समुत्क्रम, (पु॰) सम्+उद्+क्रम्+घञ् [illegible] । ऊर्ध्वगमन । ऊपरजाना । भलीभांति ऊपर जाना.

समुत्कोश, (पु॰) सम्यक् उत्क्रोशति इति । [illegible] । सम्+उद्+क्रुश्+अच् । [illegible] है । [illegible] । कुंज नामी पक्षी । "अ से वत्" [illegible]

समुत्थ, (त्रि॰) सम्यक् उत्तिष्ठति । सम्+उद्+स्था+क । "स" को "थ" । सम्यक् उत्थित । अच्छी तरह उठाहुआ

समुत्पात, (न॰) सम्+उद्+पत्+घञ् [illegible] "स" को "थ" । उत्पात । बुरी [illegible] । उपद्रव.

समुत्पन्न, (त्रि॰) सम्+उद्+पद्+क्त । उत्पन्न । पैदा हुआ । जन्मा

समुत्सार, (पु॰) सम्+उद्+सृ+घञ् । [illegible] । [illegible] । [illegible] बाहर.

समुत्पिञ्ज, (त्रि॰) सम्+उद्+पिञ्ज्+अच् । [illegible] । बहुत [illegible] । [illegible] (पु॰).

समुत्सर्ग, (पु॰) सम्यक् उत्सर्गः । सम्+उद्+सृज्+घञ् । [illegible] । [illegible] । [illegible]

समुत्सारण, (न॰) सम्+उद्+सृ+णिच्+ल्युट् । [illegible] । [illegible] । [illegible].

समुत्सुक, (त्रि॰) सम्यक् उत्सुक । [illegible] । [illegible] । बहुत ही [illegible] । [illegible] (अच्छी [illegible])

समुदग्र, (त्रि॰) सम्+उद्+अग्र [illegible] । [illegible] । [illegible].

समुद्घोष, (पु॰) सम्+उद्+घुष्+घञ् । [illegible] । बहुत [illegible].

समुदय, (पु०) सम्+उद्+इण्+अच् । समूह । युद्ध (जंग) । घटना । और दिन । ज्योतिषमें लग्न (न०).

समुदीरण, (न०) सम्+उद्+ईर्+ल्युट् । अच्छीतरह कहना.

समुद्ग, (पु०) सम्+उद्+गम्+ड । सम्पुटक । सम्पुटके आकारमें संश्लेष करनेहारा पदार्थ । सन्दूक । पच्छी । "कः".

समुद्गम, (पु०) सम्+उद्+गम्+घञ् । ऊपर जाना । उत्पत्ति.

समुद्गीत, (त्रि०) सम्+उद्+गै+क्त । ऊंचे गायागया । उच्चगीत.

समुद्गीर्ण, (त्रि०) सम्+उद्+गॄ+क्त । वमित । ऊपर छल कियाहुआ । उगलाहुआ । उठायाहुआ । और कहाहुआ.

समुद्दिष्ट, (त्रि०) सम्यक् उद्दिष्टं । उद्+दिश्+क्त । अच्छे उद्देश (प्रयोजन) वाला पदार्थ । भलीभांति बतलायाहुआ.

समुद्धत, (त्रि०) सम्+उद्+हन्+क्त । अत्यन्त पगला । [illegible] । [illegible] । बहुत मूर्ख (जो नम्र वा [illegible]) । अभिमानी.

समुद्धरण, (न०) सम्+उद्+हृ+ल्युट् । उत्तोलन । उठाना । [illegible] निकालना (फेंकना) । खायेहुए अन्नका वमन (उगलना) और उखाड़ना । "कर्मणि ल्युट्" । वमन कियाहुआ अन्नआदि । और उखाड़ाहुआ.

समुद्भव, (पु०) सम्+उद्+भू+अप् । समुत्पत्ति । पैदाइश । [illegible].

समुद्भूत, (त्रि०) सम्+उद्+भू+क्त । समुत्पन्न । पैदाहुआ.

समुद्यत, (त्रि०) सम्+उद्+यम्+क्त । पूरे उद्यमवाला.

समुद्यम, (पु०) सम्+उद्+यम्+घञ् । पूरा प्रयत्न ([illegible]).

समुद्र, (पु०) सम्+उन्द्+रक् । [illegible] । सम्+उद्+[illegible] । [illegible] पदार्थ । "[illegible]" [illegible] ([illegible]) (त्रि०).

समुद्रक, (पु०) [illegible]

[illegible]

समुद्रमेखला, (स्त्री०) समुद्रः मेखला इव वेष्टनत्वात् यस्याः । घेर लेनेके कारण समुद्र जिसकी तगड़ी है । पृथिवी.

समुद्रयान, (न०) यायतेऽनेन । या+ल्युट् । ([illegible]) पोत । जहाज । समुद्रके तरनेका साधनविशेष.

समु(द्रि)द्रीय, (त्रि०) समुद्र+भवार्थे घ छ [illegible] समुद्रमें होनेवाला पदार्थ । जो चीज समुद्रमें हो.

समुद्वह, (त्रि०) सम्+उद्+वह्+अच् । श्रेष्ठ । [illegible] अच्छा । अच्छीतरह उठानेहारा.

समुन्दन, (न०) सम्+उन्द्+ल्युट् । सम्यक् आर्द्रता । बड़ा गीलापन । भीगना.

समुन्न, (न०) सम्+उन्द्+क्त । क्लिन्न । आर्द्र । भीगाहुआ.

समुन्नत, (त्रि०) सम्+उद्+नम्+क्त । एक प्रकार (औजार) (पु०).

समुन्नति, (स्त्री०) सम्+उद्+नम्+क्तिन् । [illegible] उंचाई । "प्रायः पयोधरसमुन्नतिरत्र हेतुः" इत्युक्तः

समुन्नद्ध, (त्रि०) सम्+उद्+नह्+क्त । [illegible] मानी । पण्डितम्मन्य । अपने आपको पण्डित [illegible] हारा । प्रभु । और समुद्धत । उत्पन्नहुआ । "[illegible] उठाकर बांधाहुआ.

समुन्नय, (पु०) सम्+उद्+नी+अच् । [illegible] लेजाना । अच्छीतरह लेजाया गया । [illegible] प्रकाश करना.

समुपार्जित, (त्रि०) सम्यक् उपार्जितम् । [illegible] बहुत [illegible] हुआ । कमायाहुआ.

समुपविष्ट, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । पहुंचगया.

समुपोढ, (त्रि०) सम्+उप+वह्+क्त । [illegible] [illegible] । पैदाहुआ.

समुल्लास, (पु०) सम्+उद्+लस्+घञ् । [illegible] पुस्तकी आदिका चोहरा.

समूढ, (त्रि०) सम्+उद्+वा वह्+क्त । [illegible] कियाहुआ । [illegible] । "[illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] कियाहुआ । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०).

समूल, (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

समूह, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] बहुत.

समूहनी, (स्त्री०) समूह्यतेऽनया। जो इकट्ठा करलेती है। झाड़ू। बुहारी। "भावे ल्युट्" सम्मार्जन। पोंछना (न०)

समूहा, (पु०) सम्+ऊह्+ण्यत्। यज्ञियाग्नि। यज्ञकी आग.

समृद्ध, (त्रि०) सम्यक् ऋद्धः। ऋध्+क्त। बहुत सम्पदावाला। अतिवृद्ध। बहुत बढ़ा.

समृद्धि, (स्त्री०) सम्यक् ऋद्धिः। सम्+ऋध्+क्तिन्। बहुत-सम्पदा। दौलत.

समेत, (त्रि०) सम्+आ+इण्+क्त। समागत। आयाहुआ। और संगत। मिलाहुआ.

समेधित, (त्रि०) सम्+एध्+णिच्+क्त। संवर्धित.

समोदक, (न०) समं (अर्धभागेन) तुल्यं उदकं यत्र। आधापानी मिलाकर मथे (रिड़के) हुए दहीसे उत्पन्न हुआ तक्रविशेष (छाछ-लस्सी)। "सह मोदकेन" जिसके पास लड्डू है (मोदकसहित) (त्रि०)

सम्पत्ति, (स्त्री०) सम्+पद्+क्तिन्। अतिविभव। बहुत ऐश्वर्य। बड़ी दौलत। जिसे जैसा चाहिये उसका वैसाही होना। धन.

सम्पद्, (स्त्री०) सम्+पद्+क्विप्। विभव। सम्पत्ति। दौलत। हशमत.

सम्पन्न, (त्रि०) सम्+पद्+क्त। साधित। सावित किया हुआ। सम्पदावाला.

सम्पराय, (पु०) सम्+परा+इण्+अच्। युद्ध। जंग। लड़ाई। आपदा.

सम्परायिक, (न०) सम्पराय (आपदे) हितम्। ठन् (इक)। आपत्तिके लिये हितकारी। युद्ध। जंग। लड़ाई। "साम्परायिक" भी.

सम्पर्क, (पु०) सम्+पृच्+घञ्। सम्बन्ध। मेल.

सम्पर्किन्, (त्रि०) सम्+पृच्+घिनुन्। सम्बन्धवाला। मेलवाला.

[सम्]पा, (स्त्री०) सम्यक् (अलक्षितं) पतति। पत्+ड। अचानकही गिरती है। विद्युत्। बिजली.

[सम्]पाक, (पु०) सम्यक् पाको यस्मात्। जिससे भलीभांति पाक होता है। आरग्वध वृक्ष। इसके खानेसे खायाहुआ अन्न आदि भलीभांति पच सक्ता है.

[सम्]पात, (पु०) सम्+पत्+घञ्। एक प्रकारका पक्षी (परिंदा) की गति (चाल)। अच्छी तरह गिरना.

[सम्]पाति, (पु०) सम्+पत्+णिच्+इन्। जटायु (जटौर-पक्षी) का बड़ा भाई। "स्वार्थे कन्" वही अर्थ.

[सम्]पुट, (पु०) सम्+पुट्+क। कुरबक वृक्ष। जो दोनों ओरसे भलीभांति पुट (पड़दा होनेकी हालत) के समान हो। मिलाहुआ। एकजातिका पदार्थ भिन्नजातिवालेके साथ दोनोंओरसे व्याप्त होकर स्थित होरहा (त्रि०) "वराभः सम्पुटो ज्ञेयः" इति तन्त्रम्.

सम्पुटक, (पु०) सम्पुटयति। सम्+पुट्+अच्+स्वार्थे वुन् (अक)। समुद्गक। संदूक। मञ्जूषा। पिटारी। जुड़ाहुआ.

सम्पूर्ण, (त्रि०) सम्+पूर्+क्त। परिपूर्ण। चारोंओरसे भराहुआ। पूरा २। समग्र। सारा। एक प्रकारकी एकादशी (स्त्री०) टाप्.

सम्पृक्त, (त्रि०) सम्+पृच्+क्त। मिश्रित। मिलाहुआ। बंधाहुआ.

सम्प्रति, (अव्य०) सम्+प्रति। समाहारद्वन्द्वः। इदानीम्। अधुना अब.

सम्प्रतिपत्ति, (स्त्री०) सम्+प्रतिपद्+क्तिन्। वादीके कहेहुए अर्थको स्वीकार करना (मानना)। एक प्रकारका उत्तर.

सम्प्रदातृ, (त्रि०) सम्+प्र+दा+तृच्। दान कर्ता। देनेवाला.

सम्प्रदान, (न०) सम्+प्र+दा+भावे ल्युट्। सम्यक् प्रदान। भलीभांति देना। "सम्प्रदीयते अस्मै ल्युट्" जिसे दियाजाय। "कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानं" इति पाणिनिः। दानकर्मोद्देश्य.

सम्प्रधारणा, (स्त्री०) सम्+प्र+धृ+णिच्+युच् (अन)। योग्य वा अयोग्यका विचार करके अर्थका निर्धार करना। निश्चय.

सम्प्रयोग, (पु०) सम्+प्र+युज्+घञ्। वृद्धिआदि लाभकी इच्छासे धनआदिका विनियोग (लगाना)। मेल। सम्बन्ध। विषयसुखके लिये मेल। इकट्ठाहोना। भलीभांति जोड़ना.

सम्प्रसाद, (पु०) सम्+प्र+सद्+घञ्। योगआदि साधनमें चित्तकी निर्मलता (सफाई) को पूरा करनेहारा एकप्रकारका यत्न। "भावे घञ्" अच्छी प्रसन्नता (खुशी).

सम्प्रसाधन, (न०) सम्+प्र+साध+णिच्+करणे ल्युट्। कटक (कड़ा-चूड़ी) आदि भूषण (जेवर)। "भावे घञ्" भूषणक्रिया (सजाना).

सम्प्रसारण, (न०) सम्+प्र+सृ+णिच्+ल्युट्। सम्यक् फैलाना। अच्छी तरह फैलाना। व्याकरणमें "यण्"-के स्थानमें आगमात "इक्" संज्ञावाला वर्ण.

सम्प्रहार, (पु०) सम्प्रह्रियते अत्र। सम्+प्र+हृ+घञ्। युद्ध। जंग। "भावे घञ्" अच्छीतरह चोट लगाना। मारना.

सम्प्राप्ति, (स्त्री०) सम्+प्र+आप्+क्तिन्। प्राप्ति। वैद्यकशास्त्रमें रोगकी एक अवस्था ([illegible])

सम्प्रैष, (पु०) सम्+प्र+ईष्+[illegible] हुक्म.

सम्नोदन, (न०) सम्+प्र+उद्+ल्युट् । [illegible] दीवकर एक प्रकारका [illegible] । छिड़कना.

सम्नुन्न, (वि०) सम्+नुद्+क्त । [illegible] । [illegible] हुआ । "सम्+नुद्+क्त [illegible]" "सन्नुन्न" यह भी इसी अर्थमें है.

सम्बद्ध, (पु०) सम्+बन्ध्+क्त । [illegible] । "भावे क्त" सम्यक् बंधन । अच्छा बंधाहुआ (न०).

सम्बन्ध, (पुं०) सम्+बंध्+घञ् । मिलने । मेल । संयोग । [illegible] । [illegible] । अच्छा बंधन । "सम्यक् बन्धो यस्मात्" जिससे दृढ़ बंधन होता है । सगाई । रिश्तेदारी (त्रि०).

सम्बर, (न०) सम्+वृ+अप् । जल । [illegible] एकप्रकार । [illegible] ([illegible]) । एक दैत्य । एक मृग । एक मछली । और एक [illegible].

[illegible], (न०) [illegible] । जहाँ बहुत पीता है । [illegible] । "[illegible]" । [illegible] ([illegible]) (पु०).

[illegible], (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । "[illegible]" [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible]

[illegible]

सम्भूति, (स्त्री०) सम्+भू+क्तिन् । [illegible] [illegible] पालन.

सम्भोग, (पु०) सम्+भुज् । [illegible] भोग । अच्छी भोग । रति (सुरति) । [illegible] एक आसन.

सम्भ्रम, (पु०) सम्+भ्रम्+घञ् । भय ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] भय । [illegible] । आदर । [illegible] । [illegible]

सम्मति, (स्त्री०) सम्+मन्+क्तिन् । अनुमति [illegible] अपनी [illegible] अभिज्ञता ([illegible]).

सम्मर्मोत्पतित, (त्रि०) [illegible] [illegible] ([illegible]) से [illegible] हुआ । [illegible]

सम्मर, (पु०) सम्+मृ+क । [illegible] ([illegible]) [illegible] (त्रि०).

सम्मर्द, (पु०) [illegible] । सम्+मृद्+[illegible] [illegible] । "भावे घञ्" । [illegible] । [illegible]

सम्मार्ग, (पु०) सम्+मार्ग+घञ् । [illegible] ([illegible]

सम्मार्जन, (न०) सम्+मृज्+ल्युट् । [illegible]

सम्मार्जनी, (स्त्री०) [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] है [illegible] । [illegible] [illegible] के लिये एक [illegible] ([illegible])

[illegible]

सरला, (स्त्री०) सृ + (अलच्) इति । [illegible] एक प्रकारकी सरलको जानकी है । [illegible] सरलकी लकड़ी.

सरज, (न०) सरज् [illegible] । [illegible] । [illegible].

सरजस्, (स्त्री०) सह रजसा । ऋतुमती स्त्री । [illegible] । रजोगुणवाला (त्रि०) । अव्यु समा० । रजोगुणके साथ.

सरट, (पु०) सृ + अटन् । [illegible] । [illegible] । [illegible].

सरण, (न०) सृ + ल्युट् । गमन (जाना) । और लोहेकी [illegible].

सरणि-णी, (स्त्री०) सृ + अनि । पथ (रास्ता) । [illegible] । पंक्ति । कतार.

सरमा, (स्त्री०) सह रमते । कुत्ती । देवताओंकी कुत्ती । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]

सरयु, (पु०) सृ + अयु । वायु (हवा) । [illegible] । अयोध्याके पास बहनेवाली एक नदी (स्त्री०).

सरल, (पु०) सृ + अलच् । चीड़का (चीड़ी लकड़ी) । उदार ([illegible]) । और ऋजु (सीधा) (त्रि०) । [illegible] (स्त्री०).

सरस्, (न०) सृ + असि । जल । और सरोवर ([illegible]) । "सरसी" [illegible] [illegible] है । "[illegible]" [illegible] [illegible].

सरस, (न०) सह रसेन ([illegible]) । [illegible] [illegible] [illegible] । सरोवर (तालाब) । [illegible] ([illegible]) (त्रि०) । "[illegible]" [illegible]

सरसिज, (न०) सरसि जायते । [illegible] । [illegible] [illegible] है । पद्म । कमल । "[illegible]" [illegible].

सरसीरुह, (न०) सरसी (तालाबमें) रोहति । [illegible] । [illegible] [illegible] होता है । पद्म । कमल: [illegible]

सरस्वत्, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । "[illegible]" को "[illegible]" । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] । और नदी ([illegible]) । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] ([illegible])

सराव, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] है । [illegible] [illegible] ([illegible]) । [illegible] । "[illegible]" [illegible] । [illegible] (त्रि०)

सरित्, (स्त्री०) [illegible] । नदी ([illegible]) । [illegible] ([illegible]).

सरित्पति, (पु०) [illegible] । [illegible] । समुद्र । समुद्र.

सरिद्वत्, (पु०) [illegible] [illegible] "[illegible]" को "[illegible]" । समुद्र.

सरित्सुत, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible].

सरिन्नाथपति, (पु०) [illegible] । [illegible] "[illegible]".

सरिद्वरा, (स्त्री०) [illegible] ([illegible]) । [illegible].

सरीसृप, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) [illegible].

सरु, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible].

सरूप, (त्रि०) [illegible] ("[illegible]" [illegible]) [illegible] है । [illegible] । [illegible].

सरोज, (न०) [illegible] है । [illegible].

सरोजिनी, (स्त्री०) [illegible].

सरोरुह, (न०) [illegible] है । [illegible].

सरोवर, (पु०) [illegible] है । [illegible].

सर्ग, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible].

सर्गबन्ध, (पु०) [illegible] है । [illegible].

सर्ज, [illegible].

सर्ज, (पु०) [illegible].

सर्जन, (न०) [illegible].

सर्जि [illegible].

सर्प (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible].

सर्पेश्वर [illegible].

सर्पराज, (पु॰) सर्पाणां राजा (टच् समा॰)। सांपोंका राजा। वासुकी। एक सांप.

सर्पसत्रिन्, (पु॰) सर्पाणां सत्रं अस्ति अस्य। सांपोंका यज्ञकरनेवाला। राजा जनमेजयका नाम (इसी राजाने "सर्पेष्टि" नाम यज्ञ कियाथा).

सर्पाशन, (पु॰) सर्पं अश्नाति। अश्+ल्युट्। सांपको खाता है। मयूर। मोर। और गरुड.

सर्पिणी, (स्त्री॰) सृज्+णिनि। साँपकी स्त्री। सप्पनी। जानेवाला (त्रि॰).

सर्पिस्, (न॰) सृप्+इसि। साफ किया हुआ मक्खन। एक प्रकारका घी.

सर्पेष्ट, (न॰) सर्पाणां इष्टः। सांपोंका पियारा। चंदनका वृक्ष.

सर्व, सर्वण (जाना-फैलना)। भ्वा॰ प॰ स॰ सेट्। सर्वति। असर्वीत्.

सर्व, (पु॰) सर्व+अच्। शिव। और विष्णु। सम्पूर्ण (सारा-सब)। सकल (त्रि॰).

सर्वसहा, (स्त्री॰) सर्वं सहते। सह्-मुम् च। सबको सहारती है। पृथिवी। भूमि। जमीन। सबकुछ सहारनेवाली (त्रि॰).

सर्वकर्तृ, (पु॰) सर्वं करोति। कृ+तृच्। सबको बनाता है। चारमुखवाला ब्रह्मा। और परमेश्वर.

सर्वकर्मीण, (त्रि॰) सर्वकर्मभ्यः अलं। ख-(ईन)। सब काम करनेहारा। जो सबकुछ करसक्ता है.

सर्वक्षार, (पु॰) सर्वः क्षारमयः। सारा खारा। साबन नामसे प्रसिद्ध पदार्थ.

सर्वग, (न॰) सर्वं गच्छति। गम्+ड। जल (पानी)। शिवजी, परमेश्वर, वायु (हवा) और आत्मा (पु॰)। सबजगह जानेहारा (त्रि॰).

सर्वङ्कष, (पु॰) सर्वं कषति। कष+खच्-मुम् च। सबको कसता है। खल। सबको सतानेहारा (त्रि॰).

सर्वजनीन, (त्रि॰) सर्वजनेषु विदित.। ख (ईन)। सबजगह प्रसिद्ध। सर्वत्र विख्यात। सबकाहितैषी.

सर्वज्ञ, (पु॰) सर्वं जानाति। ज्ञा+क। सबको जानता है। शिवजी। बुद्धदेव। और परमेश्वर। सब कुछ जानेहारा। (त्रि॰)। दुर्गा (स्त्री॰).

सर्वतस्, (अव्य॰) सर्व+तसिल्। सर्वस्मात्। चारोंओर। सबतरफ.

सर्वतोभद्र, (पु॰ न॰) सर्वतो भद्राणि (सुलक्षणं) यस्य। चारों ओर अच्छे सुलक्षण। सब दर्वाजोंमें सुन्दरता। [illegible] (मिश्र) [illegible] (पु॰).

सर्वतोमुख, (न॰) सर्वतः मुखं अस्य। चारोंतरफ मुखवाला। जल। आकाश। शिवजी। ब्रह्मा। स्वर्ग। आत्मा। ब्राह्मण। और अग्नि (पु॰).

सर्वत्र, (अव्य॰) सर्व+त्रल्। सर्वस्मिन् काले। सब स्थानमें। हरवक्त। हरदेशमें। सब दिशाओंमें। सबजगह.

सर्वत्रगामिन्, (पु॰) सर्वत्र गच्छति। गम्+णिनि। सब जगहमें जाता है। वायु (हवा)। सब स्थानमें जानेहारा (त्रि॰)

सर्वथा, (अव्य॰) सर्वप्रकार-थाल्। सबतरह। सब तरहसे.

सर्वदमन, (पु॰) सर्वान् दमयति। दम्+णिच्-ल्यु। सबको दमन (वश-काबूमें) कर्ता है। दुष्यन्तका पुत्र भरतराजा। सर्व दमन कर्ता (सबको काबू करनेहारा (त्रि॰).

सर्वदर्शिन्, (पु॰) सर्वं समभावेन पश्यति। दृश्+णिनि। सबको एकही भावसे देखता है। बुद्ध। और परमेश्वर। सर्वद्रष्टा (सबको देखनेहारा) (त्रि॰)

सर्वदा, (अव्य॰) सर्व+दाच्। सब समय, देश, और हाल में। सदा। हमेशा.

सर्वधुरीण, (त्रि॰) सर्वां धुरं वहति। ख (ईन)। सारा बोझा (भार) उठानेहारा। सबसे (बड़ा) सबके आगेहुआ.

सर्वनाम, (पु॰) सर्वेषां नाम (सबका नाम)। व्याकरणमें कार्यविशेषके लिये कीगई (हुई) संज्ञा "सर्व" आदि शब्दभेद.

सर्वभक्ष, (स्त्री॰) भक्ष+अण्। उप॰। अजा। बकरी। सब कुछ खानेहारा (त्रि॰).

सर्वमङ्गला, (स्त्री॰) सर्वाणि मङ्गलानि अस्याः। सब मंगल (शुभ) होते हैं इससे। ५ ब॰। दुर्गा। भवानी.

सर्वमय, (त्रि॰) सर्वात्मकः। मयट्। सबका आत्मा। परमेश्वर (पु॰).

सर्वरसोत्तम, (पु॰) सर्वेषु रसेषु उत्तमः। सब रसोंमें अच्छा। लवण रस। लोनका रस.

सर्वरात्र, (पु॰) सर्वा रात्रिः। अच् समा॰। [illegible] सकल रात्रि.

सर्वरी, (स्त्री॰) सृ+वनिप् ङीप् "र" च [illegible]

सर्वलिङ्गिन्, (पु॰) [illegible] सब चिन्होंवाला। वेदके विरुद्ध [illegible] सब चिह्नवाला। पाखण्डी.

सर्ववित्, (पु॰) सर्वं वेत्ति। विद्+क्विप्। [illegible] है। परमेश्वर। सब जानेहारा (त्रि॰).

सर्ववेद, (पु॰) सर्वे वेदाः अधीताः [illegible] सब वेदोंको पढ़नेहारा। विद्+अण्। [illegible] कुछ जाननेहारा (त्रि॰).

सर्ववेदस्, (पु०) सर्वाणि (धनानि) वेदयते (लम्भयते) पात्राय ददाति । विद्+णिच्+असुन् । सब धनोंको पात्रके लिये देता है । सर्वस्वदक्षिणक (सारे धनकी दक्षिणावाला) यज्ञ । "विश्वजित्" नामक यज्ञ करनेहारा.

सर्ववेषिन्, (पु०) सर्वेषां वेषः (धार्यत्वेन) अस्ति अस्य । जो सब भेष बनाता है । नट (नकल करनेहारा).

सर्वसन्नहन, (न०) सर्वेषां सन्नहनं (युद्धार्थं सज्जीकरणं) यत्र । जहाँ लड़ाईके लिये सबको तयार किया जाता है । सारी सेनाको तयार करके युद्धकी यात्रा करना.

सर्वसह, (पु०) सर्वं सहते+अच् । गुग्गुल । सबकुछ सहनेहारा (त्रि०).

सर्वसिद्धि, (पु०) सर्वेषां सिद्धिः अस्मात् । सबकी सिद्धि इससे होती है । श्रीफल बिल्वका वृक्ष.

सर्वस्व, (न०) कर्म० सकलधन । सारा धन.

सर्वहित, (न०) सर्वेषां हितं । मरिच । ५ त० । जिससे हित (उपकार) होता है (त्रि०).

सर्वाङ्गीण, (त्रि०) सर्वाङ्गाणि व्याप्नोति । ख (ईन) । सब अङ्गोंमें फैलजानेहारा (सर्वाङ्गव्यापक) । "सर्वाङ्गीणे तरलये" भट्टि०.

सर्वान्नीन, (त्रि०) सर्वेषां अन्नं (सर्वं अन्नं) वा भुङ्क्ते+ख (ईन) । सबके अन्न वा सब अन्नको खाता है । सर्वान्नभक्षक.

सर्वार्थसिद्ध, (पु०) सर्वेषु अर्थेषु सिद्धः । सब अर्थोंमें सिद्ध (कामयाब) । बुद्धदेव । सम्पूर्ण मनोरथोंकी सिद्धिवाला (त्रि०).

सर्वाह्न, (पु०) सर्वं अहः । टच् समा० ह्नादेश । सर्वं । सारादिन.

सर्षप, (पु०) सृ+अप्+षुक्+च । [illegible] । सरसों । तोल-भेद.

सलिल, (न०) सल+इलच् । जल । पानी.

सव, (पु०) सूयते । सू+अप् । यज्ञ । और सन्तान । "षप्" सूर्य । और सोमरस (सोमका रस).

सवन, (न०) सु+ल्युट् । यज्ञका अङ्गरूप स्नान । सोम निकालनेका व्यापार । सोमका पीना । यज्ञ । और प्रसव.

सवयस्, (त्रि०) समानं वयो यस्य । समानको "स" का आदेश । एक उमरवाला । वयस्य । समान । मित्र.

सवर्ण, (पु०) समानो वर्णो यस्य । बराबर रंगवाला । एक-जातिका । स्थान और प्रयत्नसे बराबर अक्षर । जैसे "क" का सवर्ण [illegible] "ख" वा "ग" आदि । वर्णसहित (त्रि०) [illegible].

सवासस्, (त्रि०) सह वाससा । कपड़ेके साथ । जो कपड़ेके साथ रहता है । [illegible] । [illegible]

सविकल्पक, (न०) सह+विकल्पेन+कप् । विकल्पके साथ । वेदान्तमें "ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेयकी भेदकी [illegible] एक प्रकारका ध्यान है ।" न्यायमें "एक वस्तुमें दूसरेके सम्बन्धको अवगाहन करनेहारा ज्ञानविशेष" । [illegible] आदि कि जिसमें त्रिपुटी बनीरहे.

सविकास, (त्रि०) सह विकासेन । प्रकाशके साथ । प्रफुल्ल । [illegible] । खिलाखिला । [illegible].

सविमर्श-सविमर्श, (त्रि०) [illegible] । [illegible] साथ । सोचनेवाला । [illegible] । [illegible] । विचारवाला.

सवितृ, (पु०) सू+तृच् । [illegible] । [illegible] बनानेहारा परमात्मा । "[illegible]" [illegible] । [illegible] सूर्य.

सविध, (त्रि०) सह विधया । विध+क । "सह" को "स" । पास बैठना है । निकट (पास).

सविस्मय, (त्रि०) सह विस्मयेन । विस्मयके साथ । विस्मायक । आश्चर्ययुक्त.

सवेश, (त्रि०) सह [illegible] । "वेश" [illegible] । [illegible] । निकट । [illegible] ([illegible]) । वेश ([illegible]) [illegible]

सव्य, (त्रि०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] और (दक्षिण) । [illegible] (विरुद्ध) । और विष्णु (पु०)

सव्यसाचिन्, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । बांयेसे बाण चलाता है । अर्जुन

सव्येष्ठ, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] और [illegible] है । [illegible] । [illegible]

ससत्वा, (स्त्री०) सह सत्वेन । [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०).

ससम्भ्रम, (अ०) [illegible] । [illegible] । [illegible].

सस्य, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible].

सह, (अव्य०) [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]).

सह, (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] (त्रि०).

सहकार, (पु०) सह ([illegible]) [illegible] । [illegible] [illegible] है । [illegible] । [illegible] है [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (न०)

सहचारिन्, (त्रि०) सह ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] है । [illegible] । [illegible] है । [illegible]

सहगमन, (न०) सह+गम्+ल्युट् । साथजाना । साथ मरना.

सहचर, (त्रि०) सह चरति । चर+ट । साथ चलता है । वयस्य । सखा । मित्र । प्रतिबंधक (रोकनेहारा) । सहाय (मददगार) । और अनुचर (सेवक-नौकर).

सहज, (पु०) सह जायते । जन्+ड । साथ उत्पन्न होता है । सहोदर । भाई । और निसर्ग (स्वभाव) । साथ उठाहुआ । (त्रि०) । ज्योतिषमें जन्मलग्नसे तीसरा स्थान (न०).

सहजमित्र, (न०) सहजं (स्वभावसिद्धं) मित्रं । स्वाभाविक मित्र । बहिनका लड़का आदि.

सहजारि, (पु०) सहजः अरिः । स्वाभाविक शत्रु । सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) । पितृव्यपुत्र । चाचेका बेटा.

सहदेव, (पु०) सह दीव्यति । दिव्+अच् । माद्रीका पुत्र । पाण्डवविशेष । साथ खेलता है । सांपकी औरा । (स्त्री०).

सहधर्मिणी, (स्त्री०) सह (समानः) धर्मः अस्ति अस्याः+इनि । एक जैसे धर्मवाली । पत्नी । स्त्री । औरत.

सहन, (न०) सह+ल्युट् । क्षमा (सहारना) । शीत, उष्ण, आदि [illegible] सहालना सह+युच् । सहारनेहारा । क्षमाशील (त्रि०).

सहपान, (न०) सह पानम् । साथपीना । इकट्ठेहोकर मद्यपीना.

सहभोजन, (न०) सह (एकत्र) भोजनम् । एकजगह [illegible].

सहमरण, (न०) सह (मृतेन पत्या) एक चितारोहणेन मरणम् । मरेहुए पतिके साथ एकचितापर चढके मरना.

सहवसति-[illegible], (स्त्री०) [illegible] । साथ रहना । इकट्ठा रहना । एकही मकानमें दोनोंका निवास करना.

सहस्, (न०) सह+असि । बल (जोर) । ज्योतिषमें मार्गशीर्ष (अगहन) का महीना (पु०).

सहसा, (अव्य०) हठात् । अचानक । अकस्मात् । [illegible].

सहस्य, (पु०) सहसे (बलाय) हितः । बलके हितकारी । पौष (पूस) का महीना.

सहस्र, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । दश [illegible] ।

सहस्रकिरण, (पु०) सहस्रं किरणाः (किरणाः) अस्य । बहुत किरणवाला । सूर्य । "सहस्रांशु" आदि भी.

[illegible], (अव्य०) [illegible] । [illegible] ।

सहस्रधारा, (स्त्री०) सहस्रगुणिता धारा । हजार धार । देवताओंके स्नान करनेकेलिये बहुत छिद्रों (छे[illegible] वाले यन्त्र (कला) से निकले हुए बहुतसे जलकी ध[illegible]

सहस्रनयन, (पु०) सहस्रं नयनानि अस्य । [illegible] आँखवाला इन्द्र । "सहस्रनेत्र" आदि भी इसी अर्थमें[illegible]

सहस्रपत्र, (न०) सहस्रं पत्राणि अस्य । हजारपत्तोंवा[illegible] पद्म । कमलका फूल । "सहस्रपर्ण".

सहस्रपाद्, (पु०) सहस्रं (बहवः) पादाः अस्य[illegible] "पाद्" का आदेश होता है । बहुतसे पाँववाला[illegible] विष्णु । परमेश्वर । "सहस्राक्षः सहस्रपात्" इति पु[illegible] सूक्तम् । "सहस्रपाद" भी होता है.

सहस्रभुज, (पु०) सहस्रं भुजा अस्य । बहुतसी भुज[illegible] वाला । विष्णु । कार्तवीर्यार्जुन । बाणासुर । "सहस्रबाहु[illegible]

सहस्रशिखर, (पु०) सहस्रं शिखराणि अस्य । बहुत[illegible] चोटिओंवाला । विन्ध्य पर्वत.

सहस्रांशु, (पु०) सहस्रं अंशवो अस्य । बहुत किरण[illegible] वाला । सूर्य । और आकका दरख्त.

सहस्राक्ष, (पु०) सहस्रं अक्षीणि अस्य+षच् समास । हजार नेत्रवाला । इन्द्र । विष्णु । और ईश्वर.

सहस्रार, (न०) सहस्रं आराः (कोणाः) अस्य । हजारों कोनोंवाला । शिरमें सुषुम्ना नाडीके नीचे हजार पत्तोंवाला कमलफूल.

सहस्रिन्, (त्रि०) सहस्रं अस्ति अस्य । एक हजारवाला.

सहाय, (पु०) सह एति+इण्+अच् । साथ आता है । सहचर । साथी । मददगार । अनुचर । "अगारनुगोऽपि सहाय एव" इति कुमार.

सहायता, (स्त्री०) सहायानां समूहः+भावे तल् । मदद । साथिओंका समूह.

सहासन, (न०) सह आस्यते अत्र । आस्+ल्युट् । साथ बैठना । एकआसन.

सहित, (त्रि०) [illegible] । पु० । [illegible] । सह+क्त का [illegible] । [illegible] । साथहुआ । मिलाहुआ.

[illegible], (त्रि०) सह+तृच् [illegible] । [illegible] । "[illegible]".

सहिष्णु, (त्रि०) सह्+इष्णुच् । [illegible] । [illegible].

सहिष्णुता, (स्त्री०) सहिष्णोर्भावः [illegible] । क्षमा । [illegible]

सहृदय, (त्रि०) सह हृदयेन । [illegible] । [illegible] । [illegible] । बहुत [illegible].

[illegible], (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

सहोक्ति, (स्त्री०) सह उक्तिः । साथ कहना । जहां "सह" शब्दकी उक्ति हो । एक अर्थसंबंधी अलंकार.

सहोटज, (पु० न०) सहते आतपादि अत्र । सह्+अच् कर्म० । जहां धूप आदि सहारता है । मुनिओंकी पर्णशाला । पत्तोंकी कुटिआ.

सहोढ, (पु०) सह ऊढा येन । साथ विवाही है जिसने । गर्भवाली स्त्रीके साथ विवाह करनेके अनन्तर उसके जो पुत्र उत्पन्न होता है "सहोढज" भी.

सहोदर, (पु०) सह (समानं) उदरं यस्य । एक पेटवाला । एकही गर्भमें उत्पन्न भाई । सगा भाई । बहिन । (स्त्री०).

सह्य, (न०) सहायस्य भाव+यत् । नि० । साहाय्य । सहायपन । सहारलेलायक । (त्रि०) । पहाड (पु०).

सा, (स्त्री०) सो+ड । गौरी । लक्ष्मी । वह.

सांकर्य, (न०) संकरस्य भाव+ष्यञ् । न्यायमें जातिका बाधक (रोकनेहारा) एक दोष । एकमें दूसरेका मिलजाना.

सांख्य, (न०) संख्यायते अत्र । संख्या (सम्यक् ज्ञानम्) सा अस्ति अत्र+अण् । जिसमें गिनाजाता है । जिसमें ठीक ज्ञान होता है । "एषा तेऽभिहिता सांख्ये" गीता । मूलप्रकृति आदि पदार्थोंकी गिनती होती है इसमें । अण् । कपिलका रचाहुआ दर्शनशास्त्र । (जिसमें प्रकृति पुरुष और तत्त्वोंका वर्णन है) । सांख्यका योग (पु०).

साङ्ग, (त्रि०) सह अङ्गेन । अंगयुक्त । अंगसहित । पूरा २.

सांग्रामिक, (त्रि०) संग्रामाय प्रभवति+ठञ् । युद्धके लिये समर्थ होता है । सेनापति । सेनाका मालिक । कसान । युद्धके उपयोगी रथ आदि.

सांघातिक, (त्रि०) संघाताय हितं+ठञ् । संघातकारक । हत्या करनेहारा । ज्योतिषमें जन्मनक्षत्रसे सोलवां नक्षत्र.

सांयात्रिक, (पु०) सम्यक् यात्रायै अलं+ठञ् । जहाज (पोत) से व्यापार करनेहारा । व्यापारी.

सांयुगीन, (त्रि०) संयुगे साधु+ख (ईन) । रण (जंग) में कुशल (चालाक)

सांवत्सर, (पु०) संवत्सरं वेत्ति अधीते वा+अण् । वर्षसंबंधी ज्ञानको प्रकाश करनेहारे शास्त्रको जाने वा पढनेहारा । ज्योतिःशास्त्रको जाननेहारा । गणक । ज्योतिषी.

सांवादिक, (पु०) सम्यक् वादाय अलं+ठञ् । जो भलीभांति शास्त्रार्थ करसक्ता है । नैयायिक । न्यायशास्त्रके जाननेहारा.

सांशयिक, (त्रि०) संशयं आपन्नः+ठञ् । सन्दिग्ध । सन्देहमें पडाहुआ । शकी । संशयवाला.

सांसारिक, (त्रि०) संसाराय हितं+तत्र भवो वा+ठञ् । संसारका हितकारी पदार्थ अथवा संसारमें उत्पन्न हुआ । संसारी.

सांसिद्धिक, (त्रि०) संसिद्धिः (स्वभावसिद्धिः) तया निर्वृत्तः+ठञ् । स्वभावसिद्ध । स्वाभाविक । जो आपसे आपही बना हो । कुदरतन.

साकम्, (अव्य०) सह अकति । शामिल । साथ (तृतीया विभक्तिके साथ होता है).

साकल्य, (न०) सकलस्य भाव+ष्यञ् । समुदाय । साराही । "सार्वे ष्यञ्" । सारा । होमके लिये मिलेहुए तिल आदि द्रव्य.

साकाङ्क्ष, (त्रि०) सह आकाङ्क्षया । साभिलाष । इच्छासहित । चाहके साथ । शाब्दबोधके उपयोगी आकांक्षावाला पदविशेष.

साकार, (त्रि०) सह आकारेण (मूर्त्या) मूर्तिविशिष्ट । मूर्तिवाला । शकलवाला । अंगोंवाला । सावयव.

साकेत, (न०) आकिरतें आकेतः । सह आकेतेन । अयोध्यापुर । "जनस्य साकेतनिवासिनः" इति रघुः । अयोध्यानगरी.

साक्षात्, (अव्य०) सह अक्षाति । अक्ष्+आति-गादेशः । प्रत्यक्ष । आँखोंके सामने । और इसका विषय (जो सामने दीख सक्ता है) । "यत् साक्षात् अपरोक्षात् ब्रह्म" इति श्रुति.

साक्षात्कार, (पु०) साक्षात्+कृ+घञ् । प्रत्यक्ष । सामने.

साक्षिन्, (त्रि०) सह अक्षि+इनि । साक्षात् द्रष्टा इति वा नि० । सामने देखनेहारा । "स्त्रियां ङीप्" परमेश्वर (पु०) । "साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च" इति श्रुतिः । (यही साक्षी चैतन्यस्वरूपसे वेदान्तपरिभाषामें माना है).

साक्ष्य, (न०) साक्षिणो भावः कर्म वा+ष्यञ् । साक्षीका काम । गवाही । "न साक्ष्यमनृतं वदेत्" इति स्मृतिः.

सागर, (पु०) सगरेण निर्वृत्त+अण् । सगरसे बना । समुद्र । एकसंख्या.

सागरगामिनी, (स्त्री०) सागरं गच्छति । गम्+णिनि । वा अन्यम् । समुद्रको जाती है । गम्+णिच ङीप् । नदी । दर्या । छोटी इलायची.

सागरमेखला, (स्त्री०) सागरो मेखलेव यस्याः । समुद्र मानो जिसकी तडागी है । पृथिवी । जमीन.

सागरालय, (पु०) सागरः आलयः यस्य । समुद्र जिसका घर है । वरुणदेवता । पानीका देवता.

सागराम्बरा, (स्त्री०) सागरः अम्बरं यस्याः । समुद्र जिसका वस्त्र है । पृथिवी.

साग्निक, (पु०) सह अग्निना-अग्निहोत्रेण च+कप् । अग्नि (वेदकी) और स्मार्त (धर्मशास्त्रकी) आचरता । अग्निहोत्र (अग्निमें होम) करनेहारा ब्राह्मण.

साध्वी, (स्त्री०) साधु ङीप् । पतिव्रता स्त्री (जो पतिके साथ छायाके समान रहती है) । भली

सानन्द, (त्रि०) सह आनन्देन । आनन्दसहित । खुश.

सानु, (पु० न०) सन्+उण् । पर्वतकी चोटी (प्रस्थ) । वन । पथ । आगे.

सानुज, (न०) सानौ जायते । जन्+ड । प्रपौण्डरीक । तुम्बुरवृक्ष (पु०) । सहानुजेन । अनुजसहित (भाईके साथ) (त्रि०).

सानुमत्, (पु०) सानु अस्ति अस्य+मतुप् । चोटीवाला । पर्वत । पहाड़.

सान्तपन, (न०) सन्तापयति । सम्+तप्+णिच्+ल्युट्-स्वार्थेऽण् । अच्छीतरह तपाता है । दो दिनोंमें सिद्ध होनेहारा व्रतविशेष.

सान्तर, (न०) सह अन्तरेण । सावकाश । विरल । फरक (व्यवधान) के साथ.

सान्तानिक, (त्रि०) सन्तान प्रयोजनं अस्य+ठक् । सन्तानका साधन विधानविशेष । जिससे सन्तान होती है इस प्रकारका विधान.

सान्त्वन, (न०) सान्त्व्+ल्युट् । आनुकूल्यकरण । अच्छी २ बातें सुनाकर क्रोधको दूर करना । ठण्डा करना । कान और मनको प्रसन्नता देनेहारा वचन । प्यार.

सान्दीपनि, (पु०) सन्दीपनस्य अपत्यं+इञ् । सन्दीपनकी सन्तान । बलराम और कृष्णजीका आचार्य । अवन्तिपुरमें निवासकरनेहारा एक मुनि.

सान्द्र, (त्रि०) अदि+रक् । सह अन्द्रेण । निविड । गाढ़ा । मृदु । कोमल । नरम । स्निग्ध । चिकना । और (मनोहर) । वन (जंगल) (न०).

सान्ध्य, (त्रि०) सन्ध्यायां भव +अण् । संध्याकालिक । सांझके समयका

सान्निध्य, (न०) सन्निधिरेव+ष्यञ् । नैकट्य । समीपता । पासपन । पासहोना । पास

सान्निपातिक, (त्रि०) सन्निपातात् (त्रिदोषविकारात्) आगतः । तेन निर्वृत्तो वा+ठक् । तीन दोषोंके बिगड़नेसे आया या हुआ । सन्निपातसे उपजा रोग । "विकारे सान्निपातिके" कुमारः.

सापत्न्य, (पु०) सपत्न एव+स्वार्थे ष्यञ् । शत्रु (दुश्मन) "सपत्न्या भवः । तस्या अपत्यं वा+यञ् ।" सपत्नी (सौति-न) का पुत्र । "सापत्न".

सापिण्ड्य, (न०) सापिण्डस्य भावः+ष्यञ् । सपिण्डता (एकजातपना) । दाय (विरसा) और अशौच (अपवित्रता) स्वीकार करनेके उपयोगी जातिका धर्म । "सापिण्ड्यं साप्तपौरुषं" इति स्मृतिः.

साप्तपदीन, (न०) सप्तभिः पदैः (उच्चरितैः) निर्वृत्तं+ख्यञ् (ईन) । सात पदोंके बोलनेसे बनी । सख्य । मित्रता । सौहार्द । प्रेम.

साप्तपौरुष, (त्रि०) सप्त पुरुषान् व्याप्नोति+अण् । सात पुरुषोंतक फैलता है । सप्तपुरुषव्यापक.

साफल्य, (न०) सफलस्य भावः+ष्यञ् । पूरा होना । सार्थक्य । अर्थके सिद्ध करनेवाला होना । सम्पूर्णता । सफलता.

साम्, सान्त्वन (शान्त करना) चु० उ० स० सेट् । सामयति-ते । असासामत्-त.

सामग, (पु०) साम (तद् वेदं) गायति । सामवेदके गाने वा पढ़नेहारा.

सामग्री, (स्त्री० द०) समग्रस्य भावः (पूरा होना) । +ष्यञ् । समग्रता (सारापन) (स्त्री०) । कारणसमूह । और द्रव्य (स्त्री).

सामञ्जस्य, (न०) समञ्जसस्य भावः+ष्यञ् । औचित्य । अच्छापन । मुनासिब होना.

सामन्, (न०) सो+मनिन् । "अग्निं दूतं वृणीमहे" इत्यादि वेदविशेष । राजाओंके लिये शत्रुको वश करनेका उपायविशेष । और प्यारे वचन आदिसे शान्त करना । पशुको बांधनेकी रस्सी । स्त्री० ङीप्

सामन्त, (पु०) सम्यक्. अन्तः (एकदेशः) यस्य समन्तः । तस्य ईश्वरः+अण् । अपने देशके पास रहनेहारे देशका स्वामी राजा । वह राजा कि जो बड़े राजको कर (खिराज) देता है । करदराजा । कर भरनेहारा राजा.

सामयिक, (त्रि०) समये भवः उचितो वा+ठञ् (इक) समय (वक्त) पर हुआ । और समयके उचित (योग्य)

सामयोनि, (पु०) साम योनिः (उत्पत्तिस्थानं) यस्य । सामसे उत्पन्नहुआ । हस्ती ("एक बार ब्रह्माने सूर्यके दोनों अण्डकपालोंको हाथमें लेकर सात सामों (गीतों) को गाया-तब हाथी गिरे") । ब्रह्मा । कुञ्जर.

सामर्थ्य, (न०) समर्थस्य भावः+ष्यञ् । शक्ति । शरीरका बल (जोर) । शक्ति । योग्यता । योग्यता । अर्थका ठीक जुड़ना.

सामवेदिन्, (पु०) साम वेत्ति+विद्+णिनि । सामवेदके जाननेवाला मनुष्य.

सामाजिक, (पु०) समाजः प्रयोजनं अस्य । समाजमें बैठना जिसका प्रयोजन है । सभ्य । समाजमें बैठनेहारा । सभासद्

सामानाधिकरण्य,म्, (न०) समानं अधिकरणं यस्य तस्य भावः । एकही पद पर दोनोंका होना । एकही अधिकरण होना । समान (बराबर) अधिकार । किसी तरह समान संबंध होना जिसे धूम और वह्निका पर्वतमें सामानाधिकरण्य है.

सामान्य, (न०) समानस्य भावः+ष्यञ् । सादृश्य प्रयोजक धर्म । बराबरीको जतलानेहारा धर्म जैसे "मुख कमलरूलके समान सुन्दर है" इत्यादिमें सुन्दरता आदि+स्वार्थे ष्यञ्-"समानं एव" द्रव्य, गुण और कर्ममें तुल्य रूपसे रहनेहारी जाति.

सामान्यलक्षणा, (स्त्री०) सामान्यं (साधारणधर्मः) लक्षणं यस्याः । एक जैसे धर्मको जतलानेहारी । न्यायमें "अलौकिक प्रत्यक्षका एक उपाय-जैसे एक "घट" के जाननेमें "घटत्वरूप सामान्यधर्मज्ञान" से सम्पूर्ण घटत्ववालेका ज्ञान होता है । अलौकिक सन्निकर्षविशेष.

सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम्, (अव्य०) सामान्या प्रतिपत्तिः पूर्वं यथा तथा । समान प्रतिष्ठाके साथ । बराबर आदर (इज्जत)के साथ.

सामान्या, (स्त्री०) समानैव+स्वार्थे ष्यञ्-टाप् । साधारण (आम) स्त्री । वेश्या । कंजरी.

सामि, (अव्य०) सम+इञ् । अर्ध । आधा । "सामिपरिलेढ़ि" नैषधम्.

सामीप्य, (न०) समीपस्य भावः+स्वार्थे वा ष्यञ् । नैकट्य । पासहोना । निकट । पास । नजदीक.

सामुद्रक, (न०) समुद्रेण प्रोक्तं वुञ् (अक) । हाथ आदिकी रेखा आदिसे स्त्री और पुरुषके शुभ और अशुभ लक्षणको [illegible] (कि जैसा [illegible] और पुरुषोंका [illegible] [illegible] रेखा [illegible] है) "सामुद्रिक" भी [illegible] है.

साम्परायिक, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] ([illegible]) । युद्ध वा परलोकके लिये हितकारी । युद्ध (जंग) । परलोकका [illegible] (त्रि०).

साम्प्रतम्, (अव्य०) सम्+प्र+तम-अनुयुक्त । उचित । [illegible] । युक्तियुक्त । अब । ठीक २.

[illegible], (वि०) [illegible] [illegible] (एकके [illegible] [illegible]) से [illegible] ([illegible]).

साम्य, (न०) समस्य भाव+ष्यञ् । तुल्य [illegible] । [illegible] [illegible] एक [illegible].

साम्राज्य, (न०) [illegible] भाव+ष्यञ् । [illegible] । [illegible] राजा [illegible] । [illegible] । [illegible] (एक [illegible]) का [illegible].

[illegible], (स्त्री०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]

[illegible] (पु०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible].

[illegible] (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible] हुए.

सायम्, (अव्य०) दिनान्त । सांझ । "सायं सन्ध्या [illegible]" उद्धटः.

सायाह्न, (पु०) सायोऽह्नः । स० टच् । अन्हारेका (दिनका अन्त । सांझ । दिनका शेष पांचवां भाग जो [illegible] मुहूर्त होता है.

सायुज्य, (न०) सह युनक्ति । युज्+क्विप् । सायुज "सयुज्" तस्य भाव+ष्यञ् । साथ जुड़ना । पांच प्रकारकी मुक्तियोंमेंसे एकही स्थानमें इष्टदेवताके साथ इकट्ठा होनारूप मुक्ति.

सार, (न०) सृ+घञ् । सार्+अच् वा । जल । धन । [illegible] गुणाद । नवनीत (मक्खन) । लोहा । और बल (जोर) । स्थिर अंश (पक्काहिस्सा) । वायु (हवा) । अच्छा (त्रि०).

सारगन्ध, (पु०) सारः गन्धो यस्य । अच्छे गन्धवाला । चन्दन.

सारघ, (पु०) सरघाभिः निर्मितम् । मक्खियोंसे बना । मधु । शहद । सौद्र.

सारङ्ग, (पु०) सृ+अङ्गच् । चातक नाम (पपीहा) । हरिण । हाथी । भौंरा । छत्ता । राजहंस । मुरगाबी । कपड़ा । कमल । मोर । कामदेव । कमान । बाल । भूषण (गहना) । कमण्डलु । शंख । चन्दन । कपूर । पुष्प । कोयल । बादल । शेर । रात । भूमि । और दीप्ति.

सारङ्गिक, (पु०) सारङ्गं (मृगं) हन्ति+ठक् (इक) । पशुको मारता है । व्याध । शिकार.

सारज, (न०) सारात् (दधिसार) जायते । जन्+ड । मट्ठेसे उपजता है । नवनीत । मक्खन.

सारणि-णी, (स्त्री०) सृ+णिच्+अनि वा ङीप् । छोटी नदी । छोटा दर्रा । [illegible] सहारे नदी आदिको [illegible] ज्योतिषका ग्रन्थविशेष.

सारथि, (पु०) सृ+अथिण । यह रथेन गच्छ (घोड़ा) [illegible] नियुक्त [illegible] । रथ (गाड़ी) आदि चलानेहारा ([illegible]) [illegible] । [illegible] । सारथिन.

[illegible], (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] (त्रि०).

सारमेय, (पु०) सरमायाः ([illegible]) अपत्यम् ([illegible]) । [illegible] की [illegible] पुत्र । कुत्ता ([illegible]) । [illegible] (स्त्री०)

[illegible], (त्रि०) [illegible] । [illegible] । [illegible] हुआ

सारस्वत, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] । [illegible] है । [illegible] [illegible] । और [illegible] ([illegible]) का [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) के [illegible] है । [illegible] । और [illegible] हुआ [illegible] । [illegible] (त्रि०)

सारस्वत, (पु०) सरस्वती देवता अस्य। सरस्वत्या इदं वा+अण्। जिसकी देवी सरस्वती है वा सरस्वतीका यह। बिल्वका दण्डा। एकदेश। पाँच गौडोंमेंसे एकप्रकारका ब्राह्मण। सरस्वतीसे पालन कियाहुआ एकमुनि। ब्रह्माका दिनरूप कल्पविशेष। सरस्वतीवाला (त्रि०).

सारस्वतकल्प, (पु०) कर्म०। तत्रमें सरस्वतीकी उपासनाके लिये एक प्रकार। इस नामका ब्रह्माका दिन.

सारि-री, (पु० स्त्री०) सृ+इञ्। वा ङीप्। पासाः। पासा.

सारिका, (स्त्री०) सरति (गच्छति) सृ+ण्वुल्। एक पक्षी (मैना).

सार्थ, (पु०) सृ+थन्+स्वार्थेऽण्। समूह। जीवोंका समूह। "सह अर्थेन" धनसहित। बनियोंका समूह। धनी (दौलतमंदी) (त्रि०)+कन्। "सार्थक" शब्द.

सार्थवाह, (पु०) सार्थं वहति। वह्+अण्। व्यापारी। बणिग्जन.

सार्द्र, (त्रि०) सह आर्द्रेण। आर्द्रतायुक्त। गीलेपनके साथ। गीला.

सार्धं, (अव्य०) साहित्य। साथ। "सह अर्धेन" सार्ध। आधेके साथ (त्रि०).

सार्प, (न०) सर्पो देवता अस्य+अण्। जिसका देवता सांप है। आश्लेषा नक्षत्र (तारा).

सार्पिष्क, (त्रि०) सर्पिषा संस्कृतं+ठञ् (इक)। घीमें संस्कार कियागया व्यञ्जन (भाजी) आदि.

सार्वजनीन, (त्रि०) सर्वेषु जनेषु विदितः+खञ् (ईन) द्विपदवृद्धिः। सबजनोंमें जानाहुआ। सर्वलोकप्रसिद्ध.

सार्वत्रिक, (त्रि०) सर्वत्र भवं+ठञ् (इक)। सब समयमें हुआ.

सार्वधातुक, (न०) सर्वधातुन् व्याप्नोति+ठञ्। व्याकरणमें लट्। लोट्। लङ्। विधिलिङ्। इन चारोंके प्रत्यय.

सार्वभौतिक, (त्रि०) सर्वाणि भूतानि व्याप्नोति+ठञ्। "दोनों पदोंको वृद्धि होती है"। सब जीवोंमें फैलनेवाला। सर्वभूतव्यापक.

सार्वभौम, (पु०) सर्वस्या भूमेः ईश्वरः। सर्वेषु भूमिषु विदितो वा+अण्। सारी पृथिवीका मालिक। वा सब पृथिवी (नगरों)में जानाहुआ। चक्रवर्ती राजा। कुबेरका हाथी। उत्तर दिशाका हाथी.

सार्वलौकिक, (त्रि०) सर्वेषु लोकेषु विदितः+ठञ्। द्विपदवृद्धिः। सब लोकोंमें जानाहुआ। "स तस्य सार्वलौकिक" इति भट्टिः.

सार्वविभक्तिक, (त्रि०) सर्वासु विभक्तिषु। तदर्थे भव+ठञ् (इक)। सब विभक्तियोंके अर्थमें विधान कियागया "तसिल्" आदि प्रत्यय.

सार्षप, (त्रि०) सर्षपस्य विकारः+अण्। सरसोंका बनाहुआ तेलआदि। "अदुष्टं सार्षपं तैलं" इति स्मृतिः.

साल, (पु०) सल्+घञ्। हरएक वृक्ष। इस नामका वृक्ष। प्राकार। [illegible].

सालनिर्यास, (पु०) ६ त०। सर्जरस। धुना। राल.

सालभञ्जिका, (स्त्री०) सालं भनक्ति। भञ्ज्+ण्वुल्। लकडी आदिका बनाहुआ बनावटी खेलका साधन। पुत्तलिका। पुतली। गुड़ी। वेश्या। कंजरी.

सालूर, (पु०) सल्+ऊरच्+णिच्। भेक। मण्डूक। मेंढक। बेङ्.

सालोक्य, (न०) समानः लोकः अस्य। तस्य भाव+ष्यञ्। पाँच प्रकारकी मुक्तियोंमेंसे अपने इष्टदेवताके साथ एकही लोकमें बसनारूप मुक्तिविशेष.

साल्व, (पु०) ब० व० देशविशेष। इस देशका राजा। [illegible].

सावधान, (त्रि०) सह अवधानेन। जो चित्तको एक ओर किये है। सचेतन होशियार। मनोऽभिनिवेशयुक्त। खबरदार.

सावन, (न०) सवनं (सोमयागाङ्गं कर्म) तदधि+अण्। वह दिन कि जब सोमयागका अंग कार्य कियाजाता है। यज्ञका अन्त। पूरे तीस दिनका मास (महीना)। वरुण.

सा(शा)वर, (पु०) शावरेण निर्वृत्त+अण्। पाप (गुनाह)। अपराध। लोध.

सावर्णि, (पु०) सवर्णायां भव+अण्। सूर्यकी स्त्री छायादेवीके गर्भसे उपजा आठवां मनु+इञ्। "सावर्ण".

सावित्र, (पु०) सविता देवता अस्य+अण्। जिसका देवता सूर्य है। शिव। ब्राह्मण। यज्ञोपवीत (जनेऊ)। स्त्री० ङीप्। गायत्री। सत्यवान्की स्त्री०। सूर्य देवताका "चरु" आदि (त्रि०)। गर्भोपघात (न०)। [illegible]। सूर्य। तस्येदं+अण्। महादेव। वसु (पु०).

सावित्रीपतित-[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible] गिरा हुआ। जब जिस ब्राह्मणादि तीन वर्णोंके [illegible] यथाकाल यज्ञोपवीत नहीं हुआ। ऐसे मनुष्यको "व्रात्य" भी कहते हैं.

सावित्रीव्रत, (न०) सावित्र्यै पूजनविशेष [illegible] व्रतम्। सावित्रीको पूजनेकेलिये करनेलायक व्रतविशेष। ज्येष्ठ (जेठ) के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी.

[illegible], (स्त्री०) [illegible]। [illegible] उपमान। [illegible].

[illegible], (त्रि०) सह अश्रुणा। [illegible]। [illegible] सब। जिसकी आंखोंसे आँसू बह रहे हैं

साहचर्य, (न०) सहचरस्य भाव+ष्यञ्। साथ रहना। [illegible]। सङ्ग। [illegible]। [illegible].

सिद्धपीठ, (पु० न०) कर्म०। सिद्धोंका स्थान (जहां लाखवार बलिदान कियागया है, क्रोडवार होम और महाविद्याका मन्त्र जपागया हो).

सिद्धपुर, (न०) कर्म०। लंकाके नीचे एक पुर है.

सिद्धविद्या, (स्त्री०) सिद्धा विद्या (मन्त्रः) यस्याः। जिसका मन्त्र सिद्ध है। "काली" आदि दस महाविद्या.

सिद्धसाधन, (न०) सिद्धस्य (निश्चितस्य) साधनं (अनुमानम्)। न्यायमें एकप्रकारका दोष जिसमें उस वस्तुका अनुमान कियाजाता है जिसका पहिलेसे निश्चय होरहा है.

सिद्धान्त, (पु०) सिद्धः (निश्चितः) अन्तः यस्मात्। जिस्से अन्त (असली बात) का निश्चय होता है। प्रमाण आदि देकर पूर्वपक्ष (पहिले कीगई दलील) को तोड़कर असली पक्षको स्थापन करनेहारा वाक्यसमूह। वादी और प्रतिवादीसे निश्चय कियाहुआ अर्थ। ज्योति शास्त्रविशेष.

सिद्धार्थ—क, (पु०) सिद्धः अर्थः यस्मात्। जिस्से प्रयोजन सिद्ध होता है। ५ ब० वा कप्। श्वेतसर्षप (सिटी सरसों)। वटीवृक्ष। ६ ब०। प्रसिद्ध अर्थ (त्रि०)। जिनविशेष.

सिद्धि, (स्त्री०) सिध्+क्तिन्। ऋद्धिनाम औषध। योगविशेष। अन्तर्धान (छिपना)। निष्पत्ति (एक कामका पूर्णहोना)। पाक (पकना-रसोई)। पादुका (खड़ाव)। मोक्ष। सम्पदा। "अणिमा" आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य। बुद्धि। "प्रभाव" आदि तीन शक्तियें.

सिद्धिद, (पु०) सिद्धिं ददाति। दा+क। बटुकभैरव। सिद्धिके देनेहारा (त्रि०).

सिद्धियोग, (पु०) सिद्धिहेतुर्योगः। सिद्धिकारक योग। ज्योतिषमें शुक्रआदि वारसहित "नन्दा" आदि.

सिध्मल, (त्रि०) सिध्मन्+अस्त्यर्थे लच्। सिदास रोगवाला। कोढ़ी.

सिनीवाली, (स्त्री०) सिनीं (श्वेतां) चन्द्रकलां वलति (धारयति) अण्-ङीप्। चतुर्दशीवाली अमावास्या.

सिन्दु(न्धु)वार, (पु०) सिन्धुं (सजमर्दं) वारयति। वृ+अण्। निर्गुण्डीवृक्ष। "मुक्ताकलापीकृतसिन्दुवारम्" इति कुमारः (इसमें बहुत गन्ध होता है। फूल सित है.)

सिन्दूर, (न०) स्यन्द्+ऊरन्। सम्प्रसारणम्। लाल रंगका चूर्णविशेष। सिंधूर। संधूर। वृक्षविशेष (पु०).

सिन्धु, (पु०) स्यन्द्+उ। सम्प्रसारण। "द" को "ध" होता है। समुद्र। एक नद (दर्या)। कूप। एक राग। एक देश। और मदका जल (हाथीकी मस्ती)। उस देशका वासी। (पु० ब० व०.)

सिन्धुर, (पु०) सिन्धुः (मदजलं अस्य अस्ति। र। उसीके पानीवाला। हस्ती। हाथी.

सिन्धुराज, (पु०) सिन्धूनां राजा+टच्। नदियोंका राजा। समुद्र.

सिन्धुवार, (पु०) अच्छी जातका घोड़ा। सिन्धु का पारेका घोड़ा। फारसी घोड़ा.

सिन्धुसंगम, (पु०) सिन्धोः (नद्योः) नदीसमुद्रयोः वा संगमः। दो नदिओं वा नदी और समुद्रका मेल। "सः अस्ति" वह जहां हो (त्रि०).

सिप्र, (पु०) सप्+रक्। पृ०। एक तालाव (सरोवर)। चन्द्रमा। गर्मीका पानी। और घर्म (पसीना)। उज्जयिनी नगरीके पास एक नदी (दर्या) (स्त्री०) "सिप्रावातहारानिलकम्पितासु" इति रघुः.

सिम, (पु०) सि+मन्। सर्व। सब। इस अर्थमें सर्वनाम है,

सीह्, सेचन-सींचना। भ्वा० आ० सक० सेट्। सीहते। असीहिष्ट.

सीकर, (पु०) सीक्यते (सिच्यते) अनेन। सीक्+अरन्। जलकण। पानीकी कणी (कतरा).

सीता, (स्त्री०) सि+क्त। पृ० दीर्घः। लाङ्गलपद्धति। हलका फाला। हलचलानेकी रस्सी। जनकराजाकी कन्या.

सीतापति, (पु०) ६ त० श्रीराम। सीताका पति.

सीतायाः पति, (पु०) ६ त०। अलुक् समास। श्रीरामचन्द्र.

सीत्कार, (पु०) "सीत्" इति अव्यक्तस्य कार। सीत्+कृ+घञ्। अनुराग (प्रेम-मुहब्बत) से उत्पन्न हुआ शब्द। सी २ करना.

सीधु, (पु०) सिध्+उ। पृ०। मद्य। शराब (गन्नेके पकेहुए रससे तयार हुआ मद्यविशेष).

सीधुगन्ध, (पु०) सीधोरिव गन्धः आस्वादः यस्य। जिसका स्वाद (मजा) शराबकी भांति हो। आमका वृक्ष। बकुलका वृक्ष.

सीमन्त, (पु०) सीम्नः अन्तः। शक०। केशोंके बीच मांगके समान बालगुच्छ। पटिये। गर्भके छठे वा आठवें महीनेमें करनेलायक एक संस्कार.

सीमन्तिनी, (स्त्री०) सीमन्त+अस्त्यर्थे इनि। सीमन्तवाली। योषित्। नारी। स्त्री। औरत.

सीमन्तोन्नयन, (न०) सीमन्तस्य (गर्भसंस्कारस्य) उन्नयन (बढ़ावन) अत्र। जिसमें सीमन्त (मांगपट्टी) अच्छी तरहसे ऊपर प्रकट होता है। गर्भसंस्कारका कर्मविशेष.

सीमन्, (स्त्री०) सि+मनिन्। मर्यादा। [illegible]। अण्डकोष (फोतृ)। "सीमि पुष्करस्य [illegible]" इति. सि. कौ.

सीमा, (स्त्री०) सीमन्+डाप्। मर्यादा (हदबन्दी-निशान)। खेत आदिका अन्त भाग (हद).

मााधिप, (पु०) सीमायाः अधिपः । सीमाके पासका राजा । पडोसी राजा.

मान्त, (पु०) सीमायाः अन्तः । सीमाका अवसान (हद्द) । सीमाका कोन.

माविवाद, (पु०) सीमायां विवादः । अठारह प्रकारके विवादोंमेंसे "सीमा" के विषयमें झगडा.

मासन्धि, (पु०) सीमायाः संधिः । दो सीमाओं(हदों)-का मेल.

र, (पु०) सि+रक् । दृ० । सूर्य । आकका वृक्ष । और हल.

रध्वज (पु०) सीरः (हलः-तच्चिह्नितः) ध्वजः यस्य । जिसके झंडेपर हलका चिन्ह (नशान) है । जनकराजा.

रपाणि, (पु०) सीरः (हलः) पाणौ यस्य । जिसके हाथमें हल है । बलदेव । बलराम.

रिन्, (पु०) सीरः (हलः) अस्ति अस्य आयुधत्वेन । जिसका शस्त्र हल है । बलराम । बलभद्र.

(से)वन, (न०) सिव्+ल्युट् । नि० वा दीर्घः । सीवन । तन्तुसन्तान । तांतफैलाना । सीना.

, (अव्य०) पूजा । अच्छा । अतिशय (बहुत).

करा, (स्त्री०) सुखेन क्रियते दुह्यते वा । सु+कृ+खल् । सुशीला गौ (जिसे सहजहीसे दो लेते हैं) । जो सुखसे हो (त्रि०).

कल, (पु०) सुष्ठु कल्यते (ख्यायते) असौ । सु+कल्+घञ् । वह जन जो "दाता" "भोक्ता" आदि गुणोंसे प्रसिद्ध है । वह शब्द जो सुकर, मधुर, और व्यक्त हो.

कर्मन्, (पु०) सुष्ठु कर्म० यस्मात् । जिससे अच्छा काम होता है । विष्कम्भ आदिमें सातवां योग । अच्छे कामवाला (त्रि०) । अच्छा काम (न०).

काण्ड, (पु०) सुष्ठु काण्डः अस्य । अच्छी शाखावाला वृक्ष.

कामा, (स्त्री०) सुष्ठु काम्यते असौ । सु+कम्+घञ् । त्रायमाणा लता । अच्छी कामनावाला (त्रि०).

कुमारा, (स्त्री०) सु+कुमार+अच्-घञ् वा । वार्तिकी । नवमालिका । कदली (केला) । और मालती । बहुत कोमल (नाजुक) । सुन्दर कुमारअवस्थावाला (त्रि०) (स्त्री०) ङीप्.

कृत्, (त्रि०) सु+कृ+क्विप् । पुण्य करनेहारा । धार्मिक जन.

कृत, (न०) सु+कृ+क्त । पुण्य । धर्म । और । शुभ । अच्छा काम (न०).

कृति, (स्त्री०) सु+कृ+क्तिन् । पुण्य । मंगल । अच्छा काम.

कृतिन्, (त्रि०) सुकृतं अनेन । इनिः । पुण्यवाला । मनःईच्छा । अच्छे काममें भरपूरा.

सुख, (न०) सुख+घञ् । पुण्यसे उत्पन्नहुआ गुणविशेष आनंद । "नैयायिक आदि" इसे आत्माका धर्म मानते हैं । सांख्य आदि "चित्त" का । "सुखं अस्य अस्ति+अच् वा" सुखी (त्रि०).

सुखजात, (त्रि०) जातं सुखं अस्य । परनिपातः । जातानन्द (जिसे आनन्द प्राप्त हुआ है) । "सुखजातः सुराः पीतः" इति भट्टिः.

सुखभाज्, (त्रि०) सुखं भजते । भज्+ण्वि । सुखवाला.

सुखरात्रिका, (स्त्री०) सुखा रात्रिः यस्याः । ५ ब० कप् । जिससे सुखकी रात होती है । आश्विनमास (असू) की दीपान्विता (जिस रात्रिमें दीपकोंका प्रकाश कियाजाता है-दीवाली) अमावास्या (इसमें लक्ष्मीका पूजन करते हैं).

सुखश्रव-श्रुति, (त्रि०) सुष्ठु श्रवः=श्रवणं यस्य । सुनेमें मधुर (मीठा).

सुखाधार, (पु०) सुखानां आधारः । सुखोंका आश्रय स्वर्ग । कर्म० सुखदेनेवाला निवासस्थान.

सुखावह, (त्रि०) सुखं आवहति (जनयति) । आ+वह्+अच् । सुखजनक । सुखको उपजानेहारा.

सुखोत्सव, (पु०) सुखकर उत्सवो यस्मात् । २ ब० जिससे सुखदेनेहारा उत्सव होता है । पति (मालिक) । कर्म० आनंद करनेहारा उत्सव (पु०).

सुगत, सुष्ठु गच्छति (जानाति) । गम्+कर्तरि क्त । बहुत अच्छा जानता है । बुद्धदेव (यह "निर्वाण" को शांति मानता है)

सुगन्ध, (न०) सुष्ठु गन्धः अस्य । इस नहीं होता । गन्धतैल । छोटाजीरा । कमल । चन्दन । सुगन्धपदार्थवाली दुकान (त्रि०).

सुगन्धि, (पु०) सुष्ठु गन्धः । इलायची । इष्टगन्ध । बढी गई खुशबू । सुरभि । "सुष्ठु गन्धः अस्य" । सुगन्धवाला (त्रि०) । खुशबूदार.

सुगृहीतनामन्, (पु०) सुगृहीतं (प्रातः स्मरणीयं) नाम यस्य । जिसका नाम प्रातःकाल स्मरणकरना चाहिये । पवित्रयशवाला जन.

सुग्रन्थि, (पु०) सु० ग्रन्थिः यस्य । अच्छी गांठवाला । चोरकनामी वृक्ष (त्रि०).

सुग्रीव, (पु०) सुष्ठु ग्रीवा अस्य । अच्छे कण्ठ (गर्दन) वाला । श्रीकृष्णका घोडा । सूर्यका पुत्र । और वानरोंका राजा । सुन्दर ग्रीवावाला (त्रि०).

सुचक्षुस्, (पु०) सुष्ठु चक्षुः इव कर्म अस्य । श्रीरंगी नाई जिसका अच्छा चक्षु है । उदुम्बर । सुन्दर नेत्रवाला (त्रि०) । प्रा० । अच्छी आंख (न०)

सुचरित्रा, (स्त्री०) सुष्ठु चरित्रं यस्याः । अच्छे चरित्रवाली स्त्री । अच्छी चालवाला (त्रि०) । प्रा० । स० । [illegible] । अच्छा चरित्र (न०).

सुचिर, (अव्य०) प्रा० बहुत चिरका समय । बहुत [illegible] (त्रि०).

सुचिरायुस्, (पु०) सुचिरं (बहुकालिकं आयुः) यस्य । जिसकी बहुत देरतक उमर हो । देवता । बहुत कालतक [illegible] (त्रि०).

सुचेलक, (पु०) प्रा० । सूक्ष्मवस्त्र (महीन कपडा) । "सुष्ठु चेलं वस्त्रं" महीन कपडे धारण कियाहुआ (त्रि०)

सुजल, (न०) शोभनं जलं यस्मात् । जिससे अच्छा पानी है । ५ व० । कमलका फूल । प्रा० सुन्दरजल (न०).

सुत, (पु०) सु+क्त । पुत्र । कन्या (स्त्री० टाप्) । निचोडी । निचोडागया (त्रि०).

सु(सू)तक, (न०) सु (सू) भावे क्तः । सु (सू)तं (जन्मं) तस्मात् आगतम् । उत्पत्ति (बालक आदिके जन्म) होनेसे आया+कन् । जननका अशौच (अपवित्रता) । हरएक प्रकारका अशौच । "सूतके मृतके तथा" "प्रसूत सूतकं तस्मात्" इति स्मृतिः.

सुतनु-नू, (पु० स्त्री०) सुष्ठु तनुः यस्याः वा अङ्गं । अच्छे शरीरवाली । नारी । औरत.

सुतपस्, (पु०) सुष्ठु तपति । सु+तप्+असि । बहुत तपता है । सूर्य (सूरज) । "सुष्ठु तप अस्य" । अच्छी तपस्यावाला । मुनि (पु०) सुन्दर तपवाला (त्रि०) । प्र० सुन्दर तपस्या (न०).

सुतराम्, (अव्य०) सु+"अतिशय" के अर्थमें आमु प्रत्यय । निश्चय कियेहुए अर्थका बहुत उचित होना (बहुतसी) । "धिन्वा तद्भ्याशीनयागतस्ता निरीक्षमाणा सुतरां दयालुः" रघुः । यहां धेनुने राजाको जब [illegible] (व्यथित हुए नेत्रवाली) देखा तो बहुत दयायुक्त राजाके लिये हर्षितहुआ.

सुतल, (पु० न०) सुष्ठु तलं यत्र । अच्छे तलवाला । पातालविशेष.

सुतिक्त, (पु०) प्रा० पर्पट (पापड) । बहुत तीखा (त्रि०) नीम (पु०).

सुतार्थिन्, (त्रि०) सुतस्य अर्थं अर्थिन् आम । पुत्र (सन्तान)की इच्छा करनेवाला.

सुतिक्तक, (पु०) सुतस्य [illegible] । [illegible] पुत्र । [illegible] (त्रि०) नीम (पु०).

सुतेजी, (स्त्री०) सुत+इनि+ङीप् । [illegible] । [illegible]

सुतीक्ष्ण, (पु०) प्र० सुतीक्ष्णेषु हरण । मुनिविशेष । बहुत तेज (त्रि०)

सुतुङ्ग, (पु०) प्रा० नारिकेलवृक्ष । नारियल दरख्त । बहुत ऊंचा (त्रि०).

सु(सू)त्रामन्, (पु०) सुष्ठु त्रायते । सु+त्रै+मनिन् । (पु०) । अच्छीतरह बचाता है । इन्द्र । देवताओंका राजा.

सुत्वन्, (पु०) सु+क्वनिप् । यज्ञके अर्थमें सोम कूटने-वाला । सोमरसके पीनेवाला । [illegible] निचोडनेवाला.

सुदण्ड, (पु०) सुष्ठु दण्डः यस्मात् । ५ व० । जिससे अच्छा दण्डा (छडी वा सोटी) बनता है । बेंत । बेत.

सुदत्, (पु०) सुष्ठु दन्ताः अस्य ("वयस्-अवस्था-सूचन" इस अर्थमें "दतृ" आदेश होता है) । अच्छे दांतवाले उमरके सब मनुष्य आदि । युवती स्त्री (जवान औरत) ङीप् । "अवस्थाके भिन्न अर्थमें" "सुदन्त" नहीं होता है (अच्छा दांत)

सुदर्शन, (न०) पु० सुष्ठु दर्शनं+युच् (अन) । अच्छा दिखाई देता है । विष्णुका चक्र । और इन्द्रकी पुरी । (स्त्री०).

सुदामन्, (पु०) सुष्ठु ददाति । दा+मनिन् । अच्छा देता है । मेघ (बादल) । [illegible] । [illegible] (न०) । समुद्र । ऐरावत हाथी । और । श्रीकृष्णजी [illegible] मित्र ब्राह्मण । और अच्छा देनेवाला । (त्रि०) । [illegible] नदी । (स्त्री० ङीप्).

सुदि, (अव्य०) सुष्ठु [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible].

सुदिन, (न०) प्रशस्त दिन । अच्छा दिन । अच्छा । (त्रि०).

सुदिनाह, (न० । [illegible] (सुन्दर अहः) टच् [illegible] । प्रशस्त दिवस । बहुत अच्छा दिन.

सुदूर, (त्रि०) प्र० अतिदूर । बहुत दूर

सुदुघ, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (पु०).

सुधन्वन्, (त्रि०) सुष्ठु धनु यस्य । [illegible] । [illegible] अच्छे धनुष धारण करनेवाला । जिसके धनुष (कमान) [illegible] होनेसे अच्छी अच्छी हैं । [illegible] । [illegible] । और [illegible] (पु०).

सुधर्मन्, (स्त्री०) [illegible] । [illegible] । [illegible] (पु०) । [illegible]

सुधा, (स्त्री०) सुष्ठु धीयते (पीयते) [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] है । अमृत । [illegible] [illegible] (सफेदी) । [illegible] । बिजली । [illegible] । [illegible] । [illegible] (ईंट) । मधु (शहद).

सुधांशु, (पु०) सुधा इव अंशवः [illegible] । [illegible] [illegible] जिसकी किरणें अमृतके समान [illegible] और कपूर (कपूर)

ाजीविन्, (पु०). सुधां (लेपनद्रव्यं) आजीवति । जो कली चूने आदिका काम करके जीता है । पलगंड । ाज । कारीगर.

ानिधि, (पु०) सुधा निधीयते अत्र । नि+धा+कि । अमृत रक्खाजाता है यहां । चन्द्रमा । और कापूर (कर्पूर).

ाहर, (पु०) सुधां हरति । हृ+अच् । अमृतको हरण-र्ता है । गरुड । "सुधाहारक".

ी, (पु०) सुष्ठु धीः यस्य । जिसकी अच्छी (अकिल) है । पण्डित । "सुष्ठु धीः" । अच्छी अकिल (स्त्री०) 'सुष्ठु ध्यायति" सु+ध्यै+क्विप् । नि० । अच्छी बुद्धि-ाला (त्रि०).

ोद्भव, (पु०) सुधया सह उद्भवति । उद्+भू+अच् । अमृतके साथ निकलता है । धन्वंतरी नामा वैद्योंका बड़ा हकीम) । ५ त० । हरीड (स्त्री).

न्द, (न०) सुष्ठु नन्दयति । सु+नन्द्+अच् । अच्छी रह आनन्द कर्ता है । बलरामका मुसल (मोहला) । ीकृष्णके पास रहनेहारा (राजा वा सेवक) । एक ारका राजाका घर । आनन्द उपजानेहारा (त्रि०).

यन, (पु०) सुष्ठु नयने यस्य । जिसकी आँखें (नेत्र) च्छे हों । मृग । हरिण । नारी (स्त्री०) । अच्छी ांखवाला (त्रि०).

(सी)वीर, (पु०) सुष्ठु नासीरः (अग्रगैन्यं) यस्य । ागेको जानेहारी सेना बहुत अच्छी है । इन्द्र । ्तिओंका राजा.

ष्ण, (त्रि०) सु+निष्+स्ना+क्त-षत्वम् । अच्छी[illegible] ुन पकाहुआ । बहुत तपाहुआ.

ति, (स्त्री०) सुष्ठु नीतिः यस्याः । जिसकी अच्छी ीति है । ध्रुव (भक्त) की माता । सुन्दरनीति (स्त्री०).

प, (न०) प्रा० । एक मणि (नीलम) । हरिम अन्तर) । और सुन्दर नीला रंग । (पु०) बलदी । र्जित (स्त्री०).

, (पु०) एक देश । और एकराजा (वंश).

र, (त्रि०) सु+इन्द्+अरन् । [illegible] । मनोहर । हलवई । "[illegible]" । सुन्दर स्त्री । और त्रिपुर-सुन्दरी देवी । कामदेव (पु०).

, (पु०) सुन्दर वपड़े [illegible] । [illegible] । [illegible] (त्रि०).

, (पु०) सुष्ठु [illegible] । प्रा० [illegible] । अच्छा ([illegible]) । और [illegible] (अच्छा [illegible]) । [illegible] (त्रि०).

, (पु०) सुष्ठु पर्ण ([illegible]) यस्य । जिसका [illegible] है । गरुड । सुन्दर [illegible] । (त्रि०) । [illegible] (पु०).

सुपर्णकेतु, (पु०) सुपर्णः (गरुडः) केतुः यस्य । जिसके झण्डेपर गरुडका चिन्ह है । विष्णु.

सुपर्वन्, (पु०) सुष्ठु पर्व यस्य । अच्छे पर्ववाला । देवता । बाण । बांस । और धूआं । प्रा० सुन्दर पर्व (न०).

सुपीत, (न०) प्रा० गर्जर (गाजर) । सुन्दर पीलारंग । (पु०) । उसवाला (त्रि०).

सुपुष्प, (न०) प्रा० लौंगका फूल । तूल (रुई) और स्त्रीओंका रज (जो महीनेके पीछे होताहै).

सुप्, (स्त्री०) व्याकरणमें "सु" "औ" "अस्" प्रभृति प्रत्यय.

सुप्त, (न०) स्वप्+भावे क्त-सम्प्रसारणम् । निद्रा (नींद) । और शयन (सोना) । "कर्तरि क्त" सोयाहुआ (त्रि०).

सुप्ति, (स्त्री०) स्वप्+क्तिन् । शयन (सोना) । निद्रा (नींद) । और सुन्नता.

सुप्रतिभा, (स्त्री०) सुष्ठु प्रतिभा यस्याः । ५ ब० । जिससे कोई प्रकारकी चमकीली बुद्धि उत्पन्न होती है । सुरा । (शराब) । उज्वल (चमकीली) बुद्धि । ६ ब० । उसवाला (त्रि०).

सुप्रभा, (स्त्री०) सुष्ठु प्रभा यस्याः । जिससे अच्छी चमक होती है । अग्निजिह्वाख । सुन्दर दीप्ति (अच्छीचमक) वाला (त्रि०) प्रा० अच्छी दीप्ति (स्त्री०).

सुप्रभात, (न०) प्रा० । शुभ (भलाई) को सूचन (जतलाना) करनेहारा प्रातः (सवेर) का समय । और उसमय पढनेलायक मंगलवचन.

सुप्रयुक्तशर, (पु०) सुप्रयुक्तः शरो येन । शीघ्रहस्त । जिसका हाथ खूब चलता है (तीर चलानेमें) । बाण चलानेके अभ्यासकी चतुराईवाला.

सुप्रलाप, (पु०) सु+प्र+लप्+घञ् । सुवचन । अच्छा वचन.

सुप्रसाद, (पु०) सु+प्र+सद्+क्त । कुबेर । बहुतप्रसन्न हुआ.

सुप्रलपा, (स्त्री०) सु+प्र+लप्+घञ् । सुवचन । अच्छा वचन.

सुप्रसरा, (स्त्री०) सु+प्र+सृ+घञ् । प्रसारिणी ([illegible]) लता । फैलाहुआ (त्रि०).

सुप्रसाद, (पु०) सुखेन (अनायासेन) प्रसादः यस्य । जो सहजहीमें प्रसन्न हो जाता है । शिवजी । प्रा० सुन्दर प्रसन्नता । अच्छी खुशी

सुफल, (पु०) सुष्ठु फलं यस्य । जिसका अच्छा फल है । दाडिम (अनार) । बेर । मूंग । कनेर । और [illegible] । सुन्दर फलवाला (त्रि०).

सुभग, (पु०) सुष्ठु भगः ([illegible]) यस्य । जिसकी [illegible] अच्छी है । चम्पक ([illegible]) । अशोक । और टंकण (सुहागा) । [illegible] । सुन्दर । [illegible] । और [illegible] (त्रि०)

सुभगासुत, (पु०) सुभगायाः सुतः । सुभगा (पतिकी पियारी) का पुत्र । सौभागिनेय.

सुभञ्ज, (पु०) सुखेन भज्यते । जो सहजसे टूटजाता है । भञ्ज्+घञ् । नारिकेलवृक्ष । नरेलका दरख्त.

सुभट, (पु०) प्रा० । सुन्दर योद्धा । अच्छा शूरवीर (बहादुर).

सुभद्र, (पु०) सुष्ठु भद्रं यस्मात् । जिससे अच्छा कल्याण होता है । विष्णु । ६ ब० । अच्छे मंगलवाला (त्रि०) । श्यामलता । श्रीकृष्णकी भगिनी (बहिन) (स्त्री).

सुभद्रेश, (पु०) ६ त० । अर्जुन । "सुभद्रापति" आदि भी.

सुभिक्ष, (त्रि०) सुखेन लभ्या भिक्षा यत्र । बहुत अन्नवाला समय (जब भीख सहजसे मिलसकी है) । सुकाल.

सुभूति, (पु०) सुष्ठु भवति । सु+भू+क्तिच् । एक पण्डित । प्रा० । सुन्दर ऐश्वर्य । (स्त्री०) । ६ ब । उसवाला । (त्रि०) । बिल्वका वृक्ष (पु०).

सुभृश, (न०) सुष्ठु भृशम् । बहुतही दृढ (पक्का) उसवाला (त्रि०).

सुभ्रु(भ्रू), (स्त्री०) सुष्ठु भ्रूः यस्याः+वा ऊङ् । अच्छे भौंवाली । नारी । औरत । अच्छे भौंवाला (त्रि).

सुमदन, (पु०) सुष्ठु मदयति कोकिलान् । मद्+णिच्+ल्यु । जो कोइलोंको भलीभांति मस्त कर्ता है । आँम । आम.

सुमधुर, (न०) प्रा० । बहुत पियारा वचन । और सान्त्वन वाक्य (शान्तिकरानेका वचन) । बडे मीठे रसवाला (त्रि०).

सुमनस्, (न०) सुष्ठु मनो यस्मात् । जिससे अच्छा मन होता है । पुष्प । फूल । "कई इसे बहुवचन मानते हैं" । अच्छे चित्तवाला (त्रि०) । प्रा० अच्छा मन (न०).

सुमित्रा, (स्त्री०) लक्ष्मणकी माता । दशरथकी एक स्त्री.

सुमुख, (पु०) सुष्ठु मुखं अस्मात्-अस्य वा । जिसका सेवन करनेसे अच्छा सुख होता है वा जिसका अच्छा मुख है । गणेशजी । पण्डित । अच्छे मुखवाला (त्रि०).

सुमेखल, (पु०) सुष्ठु मेखला यस्मात् । २ ब० । जिससे अच्छी तडागी बनती है । मुञ्जका वृक्ष । ६ ब० । सुन्दर तडागीवाला (त्रि०).

सुमेधस्, (स्त्री०) सुष्ठु मेधा अस्याः । ५ ब० । असिच् । जिससे अच्छी बुद्धि हो जाती है । ज्योतिष्मती लता । ६ ब० । सुन्दर मेधायुक्त (अच्छी बुद्धिवाला) (त्रि०).

सुमेरु, (पु०) प्रा० एक पर्वत (पहाड) । जपमालाके सिरका मोटा दाना.

सुम्ह-(ह्म), (पु०) एकदेशका नाम । उसके वासी (पु०) ब० व०

सुयामुन, (पु०) यमुनाया इदम् । सुष्ठु यामुनं प्रियत्वेन अस्ति अस्य+अच् । यमुनाका स्थान जिसे पियारा है । विष्णु । वत्सराज । एक महल । एक पहाड । और बादल.

सुयोधन, (पु०) सुखेन युध्यते असौ । सु+युध्+युच् । धृतराष्ट्र राजाका पुत्र दुर्योधन.

सुर, (पु०) सुष्ठु राति (ददाति अभीष्टम्) । सु+रा+क । अच्छी तरह अभिलाषा पूरी कर्ता है । देवता । सूर्य । और पंडित.

सुरगुरु, (पु०) ६ त० । बृहस्पति । देवताओंका गुरु.

सुरङ्ग, (न०) सुष्ठु रङ्गो यस्मात् । ५ ब० । हींग । प्रा० । सुरंग । एक प्रकारका रंग.

सुरज्येष्ठ, (पु०) ७ त० । देवताओंमें बडा । चार मुखवाला ब्रह्मा.

सुरत, (न०) सु+रम्+भावे क्त । स्त्रीपुरुषका संगमरूप (आपसमें इकट्ठाहोना) एक प्रकारकी खेल । "कर्तरि क्त" बहुत रत (पियारमें आया) (त्रि०).

सुरथ, (पु०) सुष्ठु रथ अस्य । चंद्रवंशी एक राजा । "सुरथो नाम राजाभूत्" इति चण्डी । सुन्दर रथवाला (त्रि०).

सुरदारु, (न०) सुरप्रियं (सुरलोकपर्यन्तं उच्छ्रितं वा) दारु । देवताओंका पियारा वा स्वर्गतक ऊंचा वृक्ष । देवदारुवृक्ष.

सुरदीर्घिका, (स्त्री०) सुराणां दीर्घिकेव । मानों देवताओंकी बावली है । गंगा । "सुरवापी".

सुरद्विष्, (पु०) सुरान् द्वेष्टि । द्विष्+क्विप् । देवताओंके साथ विरोध कर्ता है । असुर । दैत्य । देवद्वेष्टा । दानव (त्रि०).

सुरधनुस्, (न०) ६ त० । देवताओंकी कमान । इन्द्रधनुः.

सुरपति, (पु०) ६ त० । इन्द्र । देवताओंका मालिक.

सुरपथ, (पु०) सुराणां पन्था यत्र । अच् समा० । जहां देवताओंका मार्ग है । आकाश । आस्मान.

सुरपादप, (पु०) ६ त० । देवताओंका वृक्ष । कल्पवृक्ष.

सुरपुरी, (स्त्री०) ६ त० । देवताओंकी पुरी । अमरावती.

सुरभि, (न०) सु+रम्+इन् । स्वर्ण (सोना) । और सुन्दर । चम्पक (चम्पा) । जायफलादि । वसन्त ऋतु । सुगंध । चैतका महीना । और पण्डित (पु०) । इन्द्रजव । एक देवी । गौ । सुरा । तुलसी । और पृथिवी । (स्त्री०) धीर । अच्छे गंधवाला । मनोहर । और प्रसिद्ध (त्रि०).

सुरर्षि, (पु०) सुरश्चासौ ऋषिः । देवताओंका निवास ऋषि । नारदआदि ऋषि.

सुरलोक, (पु०) सुराणां लोकः । देवताओंका लोक (निवास करनेका स्थान) । स्वर्ग । "सुरभुवन" भी.

सुरवर्त्मन्, (न०) सुराणां वर्त्म यत्र । यहां देवताओंका मार्ग है । आकाश.

सुरवल्ली, (स्त्री०) सुरप्रिया वल्ली । देवताओंकी पियारी बेल । तुलसी.

सुरवैरिन्, (स्त्री०) ६ त० । असुर (दैत्य) । देवताओंका विरोधी (त्रि०).

सुरसद्मन्, (न०) (सुराणां सद्म) देवताओंका घर। स्वर्ग। बहिश्त.

सुरसरित्, (स्त्री०) सुराणां सरित्। देवताओंकी नदी। गङ्गा.

सुरस्थानम्, (न०) सुराणां स्थानम्। देवताओंका स्थान। देवमंदिर.

सुरसुन्दरी, (स्त्री०) सुरप्रिया सुन्दरी। देवताओंकी पियारी सुन्दरी। मेनका आदि अप्सरा। एक योगिनी.

सुरा, (स्त्री०) सुर+क+सु+रक् वा। मद्य। शराब.

सुराजन्, (पु०) सु (पूजितः) राजा (टच् नहिं होता)। सुन्दर राजा (अच्छा राजा)। ६ ब०। वह देश कि जिसका स्वामी सुन्दर राजा है (त्रि०).

सुराजीविन्, (पु०) सुरां आजीवति। आ+जीव+णिनि। जिसकी जीविका शराबपर है। शौण्डिक। कलाल.

सुराप, (त्रि०) सुरां पिबति। पा+क। मद्यपान करनेहारा.

सुरापगा, (स्त्री०) ६ त०। देवताओंकी नदी। गंगा.

सुरापान, (न०) सुरा पीयते अनेन। "पा+करणे ल्युट्" जिस पात्रमें शराब पी जाती है। अवदंश। चडनी। "भावे ल्युट्" शराबका पीना। सुरायाः पानं येषां गतं। जो शराब पीते हैं। पूर्व देशके लोग (पु०).

सुरार्ह, (न०) सुरान् (देवान्) अर्हति। अर्ह+अण्। जो देवताओंके लायक है। हरिचंदन.

सुराष्ट्र, (पु०) ६ ब०। एकदेश (सुरत).

सुरूप, (न०) सुन्दरं रूपं यस्य। सुन्दर रूप है जिसका। रूप (रंग)। सुन्दर आकार। (त्रि०)। पण्डित। (पु०)। कर्म०। सुन्दर रूप (न०).

सुरेज्य, (पु०) सुरैः इज्यते (पूज्यते)। यज्+क्यप्। ६ त०। जो देवताओंसे पूजा जाता है। बृहस्पति। तुलसी (स्त्री०).

सुरेन्द्र, (पु०) सुराणां इन्द्रः (श्रेष्ठः राजा वा)। देवोंमें अच्छा या राजा। इन्द्र। "सुरराज" भी.

सुरेश्वर, (पु०) (सुराणां ईश्वरः)। देवताओंका ईश्वर। रुद्र (महादेव)। और इन्द्र। स्वर्गकी गंगा (स्त्री०)

सुरोत्तम, (पु०) सुरेषु उत्तमः। देवताओंमें उत्तम। सूर्य

सुरोद, (पु०) सुरा इव उदकं यस्य (उदकस्य उद)। जिसका जल सुरा (शराब) के समान है। सुरासमुद्र

सुलभ, (त्रि०) सुखेन लभ्यते। सु+लभ+खल्। सहजमें मिलनेवाला है। अनायासलभ्य। सुगम.

सुलोचन, (पु०) सुष्ठु लोचनं यस्य। अच्छा आंखवाला। हरिण। सुन्दर नेत्रवाला (त्रि०).

सुलोचना, (स्त्री०) सुष्ठु लोचने अस्याः [illegible]। अच्छे नेत्रोंवाली। [illegible]। [illegible]। अच्छे नेत्रवाला (त्रि०).

सुवचस्, (त्रि०) सुष्ठु वचः यस्य। जिसका वचन अच्छा है। [illegible]। जो अच्छा [illegible] है

सुवर्ण, (न०) सुष्ठु वर्णः अस्य। अच्छे रंगवाला। इस नामका धातु (सोना)। "सुष्ठु वर्णः (रूप-अक्षर वा) अस्य"। सुन्दररूप (शकल) वाला और सुन्दर अक्षरवाला (त्रि०)। "न सुवर्णमयी तनुः परं ननु सा वागपि तावकी तथा" नैषधम्.

सुवर्णकार, (पु०) सुवर्णं (सुवर्णमयभूषणादि) करोति। कृ+अच्। सोनेका भूषण (गहना) आदि बनानेहारा। सुनार। सुनिआरा। सुनिआरा। स्वर्णकार जातिभेद.

सुवर्णपृष्ठ, (त्रि०) सुवर्णं पृष्ठे यस्य। जिसकी पीठपर सोना है। कोट किया हुआ। सोनेके गिल्टवाला.

सुवर्णरेतस्, (पु०) सुवर्णं रेतः यस्य। सोनेके वीर्यवाला. शिवजी.

सुवयस्, (स्त्री०) सुष्ठु वयः अस्याः। अच्छी उमरवाली। प्रौढा (भरजोबन) (स्त्री०).

सुवास, (पु०) सुष्ठु वासः। अच्छी गन्ध (खुशबू)। और सुखका निवास। अच्छी गंधवाला। और अच्छे निवासवाला (सुगन्धिवासान्वित) (त्रि०).

सुवासिनी, (स्त्री०) सुखेन वसति। सु+वस्+णिनि। सुखसे बसती है। चिरकालतक पिताके कुलमें वास करनेहारी (स्त्री०).

सुविद्, (पु०) सुष्ठु वेत्ति। विद्+क्विप्। अच्छी तरह जानता है। पण्डित। "सुष्ठु विद्यते (लभ्यते)। विद्लाभ+क्विप्"। अच्छी मिलती है। गुणोंसे भरीहुई स्त्री (गुणाढ्या स्त्री०).

सुविदत्र, (पु०) सुविदं (गुणाढ्यां स्त्रियं) अत्ति। गुणोंवाली स्त्रीको पाता है। अद्+क्विप्। नृप। राजा.

सुविनीता, (स्त्री०) सु+वि+नी+क्त। सुशीला गौ। सुशील गौ। अच्छी नम्रतावाला (सुशील) (त्रि०).

सुवीज, (पु०) सुष्ठु वीजमस्य। वीज्+क। (खसखस) एक वृक्ष। ६ ब० सुन्दर वीजवाला (त्रि०) (प्रा०)। सुन्दर वीज (बी) (न०).

सुवीर्य, (न०) सुष्ठु वीर्यं यस्मात्। अच्छा वीर्य होता है जिससे, बदरीफल (बेर).

सुवृत्त, (पु०) सुष्ठु वृत्तं यस्य। अच्छे चालचलन (रूप) वाला (त्रि०) ६ ब०.

सुवेश, (पु०) [illegible] (मधुरत्व) [illegible]। [illegible] बहुत अच्छा [illegible] है जिसमें। [illegible]। "सुष्ठु वेशः (सर्वांगानि [illegible]) यस्य"। अच्छे [illegible]। [illegible]। और सुन्दर (सुरूप) (त्रि)

सुवेल, (पु०) सुष्ठु [illegible] ([illegible])। सु+[illegible]। [illegible] है ([illegible] है)। [illegible] ([illegible]) सुन्दर [illegible] (त्रि०)

सुवर्णी, (स्त्री०) सु शोभनं वर्णं (निवास) यस्याः । जिसका निवास अच्छा है । सुवर्णवाली । सुन्दर मकानवाला । (त्रि०).

सुवर्मन्, (पु०) सु+वर्मन् । सु शोभनं वर्म (कवच) यस्य । एक राजा । सुन्दरकवचवाला (त्रि०).

सुशिख, (पु०) सुन्दरी शिखा यस्य । अच्छी लपटवाला । अग्नि । अग्नि । और मिश्रकरस । अच्छी शिखा (चोटी) वाला । (त्रि०) । मयूरशिखा (मोरकी चोटी-कलगी) (स्त्री०).

सुशीत, (न०) प्रा० शीतः चंदन । बहुत शीतल (ठण्डे) स्पर्शवाला (त्रि०).

सुशील, (पु०) सुन्दरं शीलं यस्य । अच्छे स्वभाववाला । विष्णुके दास विचरनेहारा । अच्छे चरित्रवाला (त्रि०).

सुश्रीक, (स्त्री०) सुन्दरी श्रीः यस्य । अच्छी शोभा है जिसकी । सल्लकीवृक्ष (इसे हाथी खाते हैं) । सुन्दर शोभावाला (त्रि०).

सुश्रुत, (पु०) सु श्रूयते । सु+श्रु+क्त । अच्छी तरह सुनाजाता है । विश्वामित्र मुनिका पुत्र । चिकित्साशास्त्रके रचनेहारा एक मुनि । और इसका बनायाहुआ एक ग्रन्थ । सुन्दर सुनाहुआ । (त्रि०) । "देवकर्मेव सुश्रुतेन चरकोक्तेन" इति नैषधम्.

सुश्लिष्ट, (त्रि०) सु+श्लिष्+क्त । सुसंयुक्त (अच्छी तरह मिलाहुआ) । पक्का मिलाहुआ

सुषम, (पु०) सुन्दरः समः । प्रा० समम् । शोभन (अच्छा) । और सम (बराबर) । बडी शोभा (स्त्री०).

सुषिर, (न०) शुष्+किरच् । पृ० । "श" "ष" होता है । छिद्र । छेद । सुराख.

सुषीम, (पु०) सुष्ठु सीमा यस्य । अच्छी सीमावाला । शीतल स्पर्श । सुखवाला । और मनोज्ञ (मनोहर) (त्रि०).

सुषुप्त, (न०) सु+स्वप्+आदेश । "वह अवस्था (हालत-दशा) कि जिसमें सोयाहुआ न कोई अभिलाषा करता है और न कोई स्वप्न (सुपना) देखता है" ज्ञानशून्य दशा । "कर्तरि क्त" इस अवस्थावाला (त्रि०).

सुषुप्ति, (स्त्री०) सु+स्वप्+क्तिन् । पुरीतत् नाडीमें मनका संयोग होना (मिलना) । सब ज्ञानसे शून्य होना । वेदान्तमें सब पदार्थोंसे शून्यहोना । अवस्थाविशेष । "सुषुप्तिकाले सकले प्रलीने" श्रुति..

सुषुम्ना, (स्त्री०) "सुषु" इति अव्यक्तं शब्दं म्नायति यत्र । म्ना+क । जहां प्राणवायु "सुषु" इस अव्यक्त शब्द (बाहिरकी इन्द्रियसे न पहिचानेलायक आवाज) का अभ्यास करता है । तन्त्रमें मेरुदण्ड (पीठकी लंबी हड्डी-मेरुदण्ड) के बाहिर इडा और पिङ्गला नाडियोंके मध्यमें एक सूक्ष्म (महीन) नाडी.

सुषेण, (पु०) सुष्ठु सेनयति । सेनां करोति । शत्-पचम् । वैद्य (वैद) । चिकित्सक (लंकानिवासी हकीम) । और एक वानर (बंदर).

सुष्ठु, (अव्य०) सु+स्था+कु । अतिशय (बहुतही) । प्रशस्त (बहुत अच्छा) । और सत्य (ठीक).

सुसंस्कृत, (त्रि०) सु+सम्+कृ+क्त सुट् च । बडे यत्न (कोशिश)से घीआदि द्रव्यके साथ पकाहुआ व्यंजन (नास्ता) आदि.

सुसम्पद्, (स्त्री०) प्रा० । अच्छी सम्पदा । सौभाग्य । अच्छी सम्पदावाला । ६ ब० सुसम्पद् (अच्छा दौलतमंद) (त्रि०).

सुसाध्य, (त्रि०) सुखेन साध्य । सुख (आराम)से पूरा होनेलायक । आरामसे इलाज करनेलायक सुखसे वश होनेयोग्य.

सुस्थ, (त्रि०) सुखेन तिष्ठति । स्था+क । सुखसे रहता है । नीरोग । सुखी.

सुस्नात, (त्रि०) सुष्ठु स्नातः । सु+स्ना+क्त । जिसने मंगल द्रव्योंसे स्नान किया है । अच्छी तरह नहायाहुआ.

सुस्पर्श, (त्रि०) सुष्ठु स्पर्शः यस्य । अच्छे स्पर्शवाला । छूनेमें अच्छा । आनन्ददायक.

सुहित, (त्रि०) सु+धा+क्त । तृप्त (रजाहुआ) । और विहित (कियाहुआ) । प्रा० । सुन्दरहित (अच्छी भलाई) । (न०) । ५ ब० आगकी जीभ । एक प्रकारकी (स्त्री०).

सुहृद्, (पु०) सुष्ठु हृदयं यस्य ("मित्र" के अर्थमें "हृद्" का आदेश होता है) । जिसका अच्छा हृदय है । मित्र (दोस्त-यार) । ज्योतिषमें लग्नसे चौथा स्थान (घर).

सुहृदय, (त्रि०) सुष्ठु हृदयं यस्य । जिसका अच्छा हृदय है । प्रशस्त मनस्क (अच्छे मनवाला) । प्रा० । अच्छा चित्त (न०).

सुहृद्बल, (न०) सुहृदेव बलम् । मित्ररूप सेना (मित्रकी जोर है).

सू, (स्त्री०) सू+क्विप् । सुति (सन्तति-औलाद) । प्रसव (सन्तान) । क्षेप (फेंकना) और भेजना.

सूकर, (पु०) "सू" इति अव्यक्तं शब्दं करोति । कृ+अच् । जो "सू" यह धीरेसे शब्द करता है । वराह (सूअर) । कुम्भकार (कुम्हार) । एक प्रकारका पशु (मृग)

सूक्त, (न०) सु+वच्+क्त । सुन्दरकथन (अच्छा-उंदा कहना) । एकही अर्थको प्रतिपादन (वर्णन) करनेहारा (जिसमें एकही देवताको संबोधन कियागया है) मन्त्रोंका समूह । जैसे "श्रीसूक्त" "पुरुषसूक्त" इत्यादि । ये सब वेदमें बहुत हैं.

सूक्ष्म, (न०) सूच्-स्मन् । कैतव (छल) । फरेव आत्माके साथ संबंध रखनेहारा पदार्थ । और एक अलंकार । कतक (इमली) वृक्ष । (पु०) । बहुत छोटे परिमाण (माप) वाला । महीन । और अल्प (छोटा) (त्रि०).

सूक्ष्मदर्शिन्, (त्रि०) सूक्ष्मं पश्यति । दृश्+णिनि सूक्ष्म (महीन आत्मसंबंधीविषय) को देखता है । अत्यन्त सुबुद्धि । बहुतही अच्छी बुद्धि (अकिल) वाला । जिसकी बुद्धि कुशाके अग्रभाग (नोक) के समान तेज है.

सूक्ष्मबुद्धि, (स्त्री०) सूक्ष्मा बुद्धिः । सूक्ष्म (महीन) बुद्धि (अकिल) । अत्यन्त कठिन अर्थको समझलेनेवाली बुद्धि.

सूक्ष्मभूत, (न०) कर्म० । वेदान्तमें प्रसिद्ध अपञ्चीकृत (जो अभी पाँचोंसे पचीस नहीं कियेगये) पृथिवी आदि पांच भूतोंके सूक्ष्म (महीन) अंशविशेष (भाग).

सूक्ष्मैला, (स्त्री०) कर्म० । क्षुद्रैला (छोटी इलाइची) गुजराती इलाइची.

सूच्, पैशुन्य-भीतरसे वैरकरना-चुगलखोरीकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । सूचयति-ते । असुसूचत्-त.

सूचक, (त्रि०) सूचयति (अन्तर्दुष्यति) । सूच्+ण्वुल् (अक) । अन्दर (दिल-चित्त) से वैर कर्ता है । पिशुन (चुगलखोर) और बोधक (सूचना देनेहारा) । जतलानेहारा । काक । श्वान । कुत्ता । बिल्ला । पिशाच । बुरा । नाटकमें प्रसिद्ध सूत्रधारनामी प्रधान (मुख्य) नट.

सूचन, (न०) सूच्+ल्युट् । हिंसन (मारना) । और ज्ञपन (जतलाना).

सूचि-ची, (स्त्री०) सूच्+इन्-ङी (?) । छिद्रा (नोक) । सीवनसाधन । सीनेका साधन । अपने नामसे प्रसिद्ध सीनेका पदार्थ । सूई.

सूचिक, (त्रि०) सूचिः (तया सीवनं) शिल्पं अस्य अस्य+ठन् (अक) । जो सूईसे सीनेका व्यापार (कारीगरी) कर्ता है । दर्जी । "सूचिका" (स्त्री०) । हाथीकी सूंड । [illegible] । सूईसे सीनेवाला.

सूचित, (त्रि०) सूच्+क्त । कथित (कहाहुआ) । बोधित (जतलायाहुआ) । और हिंसित (मराहुआ).

सूचीमुख, (न०) सूचीव मुखं अस्य । सूईके (तरह [illegible]) [illegible] मुख है । हीरा (हीरा) । [illegible] (त्रि०).

सूत, (पु०) [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] वर्णसंकर ([illegible]) । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] ([illegible]) । और [illegible] (पु० न०) [illegible] ([illegible]) । और [illegible] (त्रि०).

सूततनय, (पु०) सूतस्य तनयः । सूतका पुत्र । भारत प्रसिद्ध राधासुत कर्ण (इसे सूतने पालन कियाथा).

सूति, (स्त्री०) सू+क्तिन् । प्रसव । उत्पत्ति (पैदाहोना) "सूयते (कण्ड्यते) सोमः अत्र । सू+आधारे क्तिन्" सोमरस निकालनेका स्थान.

सूतिका, (स्त्री०) सू+क्त-कन् ("अ" को "इ") नवप्रसूता स्त्री । नई सूई हुई औरत.

सूतिकागार, (न०) सूतिकाया निवासयोग्यं आगारं । नई सूईहुई स्त्रीके निवासयोग्य घर । प्रसूत होनेका स्थान

सूत्थान, (त्रि०) सुष्ठु उत्थानं (उद्योगः) यस्य । उद्योग (हिम्मत) वाला । चतुर । काम करनेमें कुशल

सूत्या, (स्त्री०) सू+क्यप्-नि० । यज्ञके अंगका विशेष (नहाना) । और सोमरसका पीना.

सूत्याशौच, (न०) सूतिनिमित्तकं आशौचम् । निमित्तसे प्राप्तहुई अपवित्रता । सूतक । जननाद.

सूत्र, ग्रन्थन (गोंदना)-वेष्टन (लपेटना) । [illegible] सक० सेट् । सूत्रयति-ते । असुसूत्रत्-त.

सूत्र, (न०) सूत्र+अच् । यज्ञसाधन । साधन । तांत (तन्तु) । धागा । नियम । प्रमाण । प्रबंध । शा[illegible] संक्षेपमें दिखलानेका नियम.

सूत्रकण्ठ, (पु०) सूत्रं कण्ठे [illegible] है । ब्राह्मण (विप्र) । कपोत

सूत्रधार, (पु०) सूत्रं ([illegible] (तमाशा) के साधनको [illegible] अण् । नाटकका प्रबंध ([illegible] मुख्य नट । इन्द्र । शि[illegible] गर (तर्खान).

सूत्रभिद्, (पु०) सूत्रं [illegible] सूईसे सूतको फाड़ता है [illegible] सीवी । दरजी.

सूत्रयन्त्र, (न०) [illegible] करघा.

सूद, (पु०) सूदयति [illegible] सूपकारक ([illegible] रसोई । [illegible]

सूदन, (न०) [illegible] ([illegible]) ।

सूदशाला, (स्त्री०) [illegible] घर ।

सून, (न०) [illegible] (फूल) । [illegible] (त्रि[illegible]

सूना, (स्त्री०) सू+क्त (उसे "न" होता है)। प्राणीवधस्थान। जीवोंके मारनेकी जगह। "पञ्चसूना गृहस्थस्य" इति मनुः। तनया (लडकी)। हाथीकी सूंड। मांसका घेवना.

सूनु, (पु०) सू+नु। पुत्र। अनुज (छोटाभाई)। सूर्य। आकका वृक्ष। लडकी (कन्या) स्त्री० वा ऊङ्.

सूनृत, (न०) सुनृत्यति अनेन। सु+नृत्+क्त। अच्छीतरह नाचता है इससे। सत्य और पियारा वचन। और मंगल। सत्यवाला (त्रि)

सूप, (पु०) सुखेन पीयते। सु+पा+क। पृ०। सुखसे पीयाजाता है। व्यञ्जनविशेष। एक प्रकारका व्यञ्जन। दाल। रसोई.

सूपकार, (पु०) सूपं करोति। कृ+अण्। पाचक। रसोइया.

सूपाङ्ग, (न०) सूपस्य (तत्संस्कारकं) अङ्गं। उपकरण। दाल आदि मांजनेको साफ करनेवाला साधन। हींग। हिंग.

सूर, (पु०) सवति (प्रेरयति) कर्मणि लोकान्। सू+क्रन्। लोकोंको काममें लगाता है। सूर्य। और अर्क (आक) का वृक्ष। सूर्+क। पण्डित। दाता.

सूरत, (त्रि०) सु+रम्+क्त। पृ० दयालु। मिहर्बान। कृपालु.

सूरसूत, (पु०) ६ त०। सूर्यका सारथि। अरुण। गरुडका बडाभाई.

सूरि, (पु०) सू+क्रिन्। सूर्य। आकका वृक्ष। एक यादव। और पण्डित। "सदा पश्यन्ति सूरयः" इति श्रुतिः.

सूरिन्, (पु०) सूर+इनि। पण्डित। चतुर। दाता.

सूर्पणखा, (स्त्री०) शूर्पं इव नखा अस्याः। पृ०। छाजकी तरह जिसके नख (नाखून-ओंड) हैं। रावणकी बहिन (भगिनी).

सूर्य, (पु०) सृ+क्यप्। नि० दीर्घः। दिवाकर। सूरज। आकका वृक्ष। एक दैत्य.

सूर्यकान्त, (पु०) सूर्यस्य कान्तः (प्रियः)। सूर्यका पियारा। स्फटिक मणि। बिल्लौरी मणि। बिल्लौर। वह मणि कि जो सूर्यकी किरणोंका सम्बन्ध पाकर जलता है। आतसी शीशा.

सूर्यग्रहण, (न०) सूर्यस्य (राहुणा तदाकारतमुपलक्षणा) ग्रहणम् (आक्रमणम्)। सूरजका राहुसे (राहुमें आई हुई पृथिवीकी छायासे) पकडाजाना। ज्योतिषमें सूर्यमें प्रविष्ट (आगई) हुई पृथिवीकी छायासे सूर्यमण्डलका आक्रमणरूप (दबजाना) ग्रहण। सूर्यका ग्रहण.

सूर्यज, (पु०) सूर्यात् जायते। जन्+ड। सूरजसे उत्पन्न होता है। शनिग्रह। यमराज। वैवस्वत मनु। और सुग्रीव बानर। "सूर्यपुत्र" आदि भी। यमुना नदी (स्त्री०).

सूर्या, (स्त्री०) सूर्यस्य भार्या। टाप्। नोकनामकनी सूर्यकी स्त्री (अश्वनी)। (अनुदी) इन्द्री (कोन)। मृदी.

सूर्याचन्द्रौ-सूर्याचन्द्रमसौ, (पु०) द्विवचन (सूर्यश्च चन्द्रश्च-चन्द्रमाश्च) सूर्य और चन्द्रमा.

सूर्यालोक, (पु०) ६ त०। सूर्यका प्रकाश। [illegible]। धूप। घाँह। तेज.

सूर्याश्मन्, (पु०) सूर्यप्रियः अश्मा। सूर्यका पियारा पत्थर। सूर्यकान्तमणि.

सूर्योढ, (पु०) सूर्येण (सूर्यास्तकालेन) ऊढः (प्रापितः)। वह्+क्त। सूर्य छिपनेके समय पहुँचा हुआ अतिथि.

सृक्क(न्), (न०) सृज्+क्क+अनिन् वा। ओष्ठप्रान्तभाग। होठोंके पासका हिस्सा। [illegible]। "सृक्कणी परिलेढि च" स्मृतिः.

सृगाल, (पु०) सृ+गालन्। जम्बूक (गीदड)। एक दैत्य.

सृणि, (पु०) सृ+निः। शत्रु। अंकुश (आंकुस) अर्थ। (स्त्री०) का डीप्। "सृणी" कहती.

सृति, (स्त्री०) सृ+भावे क्तिन्। गमन (जाना)। "वर्त्मनि" अर्थ (रास्ता).

सृत्वर, (त्रि०) सृ+क्वरप्। गमनकर्ता। जानेवाला। स्त्रीमें ङीप् होता है (तब इसका अर्थ "माता" है)

सृप्, गति (जाना) भ्वा० प० स० अनिट्। सर्पति। असृपत्.

सृमर, (पु०) सृ+क्मरच्। मृगविशेष। जानेवाला (त्रि०)

सृष्ट, (त्रि०) सृज्+क्त। निर्मित (रचाहुआ)। बनाया हुआ। छुटाहुआ। निश्चय मिलाहुआ। [illegible]। और छोडाहुआ.

सृष्टि, (स्त्री०) सृज्+क्तिन्। निर्माण (रचना-बनाना)। संसारकी रचना। और स्वभाव। "सर्गे सिसृक्षु" इत्यादि (रचाहुआ)। "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या" इत्यादि

सेक, (पु०) सिच्+घञ्। सेचन (सींचना)। जल आदिसे सींचा करना.

सेकपात्र, (न०) सिच्यते अनेन। "सिच्+करणे ष्ट्रन्" इति०। जिससे सींचते हैं। पात्रविशेष। डोल। [illegible]। [illegible]

सेतु, (पु०) सिनोति बध्नाति। सि+तुन्। बाँधता है [illegible]। पुलि (सरकीर्णस्थल)। सेतुक (सीमावृक्ष) (पु०).

सेचन, (न०) सिच्+भावे ल्युट्। जल आदिसे सींचा करना। सींचना "सर्वे स्युः" इत्यादि। [illegible] सींचनेका बर्तन। [illegible]। [illegible]

सेतु, (पु०) सि+तुन्। एक प्रकारका वृक्ष (वरुण).

सेतु, (पु०) सि+तुन्। जल आदिके बाँधनेवाला [illegible] आल। पुल। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]

सेतुबन्ध, (पु०) ६ त०। सेतुके बाँधनेके लिये [illegible] [illegible] [illegible]। सेतु आदिका बन्धन.

सेतुभेदिन्, (त्रि०) सेतुं भिनत्ति । पुलको तोडनेवाला । दंती वृक्ष (पु०).

सेत्र, (न०) सि+ष्ट्रन् । बेडी । निगड । हथकडी.

सेना, (स्त्री०) सि+न । सह इनेन (प्रभुणा वा) । स्वामी [redacted] प्रभुके साथ । सैन्यं । चमू । फौज.

सेनाङ्ग, (न०) ६ त० । हाथी, घोडा, रथ और पैदलका समूह । और सेनाका उपकरण (साधन).

सेनाचर, (पु०) सेनायां चरति । चर+ट । सेनागामी । सेनामें जानेवाला । "सेनाचरीभवदिभान" इति नैषधम्.

सेनानी, (पु०) सेनां (देवसेनां वा) नयति । नी० क्विप् । सेना वा देवताओंकी सेनाको लेजाता है । कार्तिकेय (सेनापति) । महादेवका बडा पुत्र.

सेनापति, (पु०) ६ त० । कार्तिकेय सेनाका पति । कप्तान्.

सेनामुख, (न०) ६ त० सैन्याग्र । सेनाका मुख (आगा) । हाथी घोडा आदिकी विशेषसंख्या.

सेनारक्ष, (पु०) सेनां रक्षति । रक्ष्+अण् । सेनाकी रक्षा करनेहारा । पहरुआ.

सेफ, (पु०) षि+फ । शेफ । पुरुषका विशेष चिन्ह । लिंग.

सेवक, (पु०) सिव+ण्वुल् । सीवनकर्ता । सीनेहारा । दरजी । "सेव्+ण्वुल्" । भृत्य (नौकर) । दास (गुलाम) । और अनुचर (त्रि०).

सेवधि, (पु०) सेवं दधाति । धा+कि । जिसकी सेवा करनी पडती है । शंख आदि निधि । खजाना.

सेवन, (न०) सिव्-सेव् वा ल्युट् । सूई आदिसे कपडे आदिका जोडना । सीना । आसरालेना । भोगना । बांधना । पूजना । "सीव्यते अनया"+ल्युट् । सूची (सूई) (स्त्री०) ङीप्.

सेवा, (स्त्री०) सेव्+अ । भजन आराधन । भोगना । आसरालेना । नौकरी.

सेवित, (त्रि०) सेव+क्त । पूजागया । सेवाकियाहुआ । आसरालियागया । और भोगागया.

सेव्य, (न०) सेव+ण्यत् । अश्वत्थ (पीपल) । सेवाके लायक (त्रि०).

सैंहिकेय, (पु०) सिंहिकायां भवः+ढक् । सिंहिका (राक्षसी) में हुआ । राहु । "उसका अपत्य (सन्तान) ढक् (एय)" "सैंहिकेय" यही अर्थ है.

सैकत, (न०) सिकताः सन्ति अस्य+अण् । जहां रेत है । बहुत बालुका (रेत) वाला नदी आदिका तट (किनारा) । बहुत रेतीकी जगह (त्रि०).

सैद्धान्तिक, (न०) सिद्धान्तं वेत्ति+ठक् (इक) । सिद्धान्त (अपशीक्षन) के जाननेहारा । सिद्धान्तमित्र.

सैनापत्य, (न०) सेनापतेः भाव । कर्म० वा यक् । सेनापति । फौजका मालिक (कप्तान) का धर्म (काम) "सैनापत्यमुपेत्य वः" कुमारः.

सैनिक, (पु०) सेनायां समवैति+ठक् । सेनामें मिलाहुआ हाथी घोडा आदि । फौजी.

सैन्धव, (न०) सिन्धुनदीसमीपे देशे भवं+अण् । सिन्धु नदीके निकट देशमें उपजा । एक प्रकारका लवण (दूर नोन) । सैंधानोन । "सिंधुके निकटहुआ" अण् । घोटक । घोडा (वह सिंधुदेश (समुद्र) के निकट अरब देशमें उपजा है).

सैन्धवघन, (पु०) सैन्धवमिव घनः । सैन्धवशिला (सैंधानोनकी सिल) के समान चारों ओरसे एकरस स्वरूप । चिदानन्द (चैतन्य और आनन्द) स्वरूप परमेश्वर.

सैन्य, (पु०) सेनायां समवैति । ण्य । सेनामें मिलता है । मिलाहुआ हाथी घोडा आदि । "सेनाका समूह" ष्यञ् (न०).

सैरन्ध्री, (स्त्री०) सीरं (हलं) धरति । धृ+क-मुम्च । सीरन्ध्रः (कृषकः) तस्येदं शिल्पकर्म । अण् । तत् अस्य अस्ति+अच् । ङीष । हलजोतनेवाले (किसान)-के कामवाली । दूसरेके घरमें रहनेहारी स्वाधीना (अपनी इच्छापर चलनेवाली) शिल्पकारिणी (कारीगर) स्त्री (औरत) । "(सैरन्ध्री)" भी होताहै.

सैरिभ, (पु०) सीरे (हले-सद्वहने) इभ [redacted] धरः । +स्वार्थे अण् । हलके उठानेमें हाथीकी नाईं बहादुर है । महिष । भैंसा । "देवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मी"मिति महालक्ष्मीध्यानम्.

सैवाल, (न०) सेवायै (मीनादीनां उपभोगाय) अलति (पर्याप्नोति)+अच् । सेवालः । तत+स्वार्थे अण् । जो मच्छी आदिके भोगनेके लिये बहुत है । शैवाल । (पानीका जंगाल) । स्वार्थे कन् । यही अर्थ है.

सोढ, (त्रि०) सह+सुन्-चा इट् अभाव । शान्त । सहारागया । क्षमाशील । कर्तरि क्त (त्रि०).

सोढ, (त्रि०) सह+तृच् (विकल्पसे इट् नहीं होता) । सहनकर्ता । सहारनेहारा । क्षमाशील.

सोत्कण्ठ, (त्रि०) सह उत्कण्ठया । बहुतसी इच्छाके साथ । प्यारी वस्तुके मिलनेकी इच्छासे विरुद्ध (देरी) को न सहारनेहारा.

सोत्प्रास, (न०) उद्+प्र+अस्+घञ् । सह उत्प्रासेन । सिवारे वचनके साथ । दूसरे अर्थवाले शब्दको किसी औरही अर्थमें कल्पना करके बोलना । सिवारा वचन । सोत्प्रासन । सहास्यहास्य (बहुतऊंचे हसना) (पु०).

सोदय, (त्रि०) सह उदयेन (अनुभवेन-वृध्या वा) । प्रकटहुआ । वृद्धिहुआ । बढाहुआ । लाभसमा । उदयके साथ रहा.

सोदर, (पु०) सह (समानं) उदरं यस्य। एक पेटवाला। एक ही पेटमें हुआ। भाई (सगाभाई)। भगिनी (बहिन) (स्त्री०).

सोदर्य, (पु०) सह (समाने) उदरे जात+यत्। सहोदर। एक पेटमें होनेवाला। भ्राता। (सगाभाई)। भगिनी (बहिन) (स्त्री०).

सोन्माद, (पु०) सह उन्मादेन। पागलपनके साथ। उन्मत्त (पागल)। उन्मादित। नशेमें चूर रहनेहारा.

सोपप्लव, (पु०) सह उपप्लवेन। बड़ी विपत्तिसे दबाया गया। राहु वा चंद्रमाकी छायासे पकड़ा हुआ। शत्रुओंसे दबाया हुआ.

सोपाधि(क), (न०) सह उपाधिना। वा कप्। उपाधिके साथ। प्रतिलाभ (उलटदरपाला) की आशासे दिया गया दानआदि। किसीविशेष गुणको धारण करनेहारा। आवश्यक (जरूरी) (त्रि०)

सोपान, (न०) उप+अन+भावे घञ्। सह विद्यमानः उपानः (उपरिगतिः) अनेन। जिससे ऊपर जासकै हैं। चढ़नेका साधन लकड़ी आदिका बनाहुआ पदार्थ। पैंड़ सांग। सीढ़ी.

सोम, (पु०) सु+मन्। चन्द्रमा। कपूर (कर्पूर)। कुबेर। यमराज। वायु (हवा)। वसु (एक प्रकारका देवता)। देवता। जल (पानी)। सोमलता (बैल) औषध। वानरका रस। अमृत। और किरण। "सह उमया" पार्वतीके साथ। शिवजी। वानरोंका स्वामी सुग्रीव.

सोमगर्भ, (पु०) सोमस्य गर्भः (स्थानम्)। चन्द्रमाका आकाशमण्डल सोहना स्थान। विष्णु। नारायण.

सोमज, (न०) सोमात् जायते। जन्+ड। सोमरसके पीनेसे उपजता है। दुग्ध (दूध)। चन्द्रमासे उपजा (त्रि०)। बुध (पु०).

सोमतीर्थ, (न०) सोमेन तप्त्वा तपः कृतं तीर्थम्। चन्द्रमाने तपस्या करके जिसे तीर्थ बनाया। प्रभासतीर्थ

सोमप, (पु०) सोमं (रसं) पिबति। पा+क। यज्ञमें सोमरसके पीनेहारा। "पा+क्विप्"। "सोमपा"। यही अर्थ.

सोमपीति(थि)न्, (पु०) पीतं अनेनइति। सोमपीत। पु० वा "त" को "थ" होता है। यज्ञमें सोमरसके पीनेहारा। "पा+क्तिन्" सोमपी। यही अर्थ.

सोमबन्धु, (पु०) सोमस्य बन्धु। सोम+बन्धु अस्य वा। चन्द्रमाका बंधु वा कारण जिसका बन्धु है। दर्द। चन्द्रमाका बेटा [illegible]। पु०। कुमुद (कुम) (न०)

सोमभू, (पु०) सोम एव भूः (उत्पत्तिस्थानं) यस्य। चन्द्रमाही जिसके उपजनेकी जगह है। बुधग्रह। चन्द्रवंशी क्षत्रिय.

सोमयाग, (पु०) सोमो यागः। [illegible] सोमरस प्रस्तुत (जिसमें सोमरस [illegible]) है) यज्ञविशेष.

सोमयाजिन्, (पु०) सोमेन यजते। यज+णिनि। सोमरससे यज्ञ करनेहारा। सोमयाज्ञकर्ता.

सोमलता, (स्त्री०) [illegible]। कर्म०। [illegible] लता (बेल).

सोमवंश, (पु०) सोमस्य वंशः। चन्द्रवंश [illegible]। [illegible] वंशमें [illegible] क्षत्रिय.

सोमसार, (पु०) [illegible] जिसका [illegible] है। [illegible]।

सोमसिद्धान्त, (पु०) [illegible]। [illegible] सिद्धान्त [illegible]।

सोमसुत्, (पु०) [illegible] सोमरसका [illegible] हुआ है

सोमसुता, (स्त्री०) [illegible] (चन्द्रमाकी [illegible])। बुध (पु०)। [illegible] है

सोमसूक्त, (न०) सोमस्य (सूक्तम्) [illegible] [illegible] (वेद ८।९)। [illegible] [illegible] "सोमसूक्त व पढ़ीये" [illegible].

सोल्लुण्ठ, (त्रि०) सह [illegible]। [illegible] (हंसीठट्ठा) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सोल्लुण्ठन, (न०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ,

सौकर्य, (न०) [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible])

सौक्तुमिक, (त्रि०) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सौगत, (न०) [illegible] [illegible] [illegible]

सौगन्ध, (पु०) [illegible] [illegible] [illegible]

सौगन्धिक (न०) [illegible] [illegible] [illegible] है।

सौचिक, (पु०) सूचीं (तत्कर्म सीवनं) उपजीवति+ठन् । सूईका काम करके जीता है । सीनेवाला । दरजी.

सौजन्य, (न०) सुजनस्य भावः+ष्यञ् । भलेमानुषका होना । सुजनता । भलमानसी । और अच्छा व्यवहार । "सौजन्यं यशः" इत्युद्भटः.

सौत्र, पाणिन्यादिभिः सूत्रेण (कर्मविशेषाय) पठितः+अण् । पाणिनीआदि मुनिओंसे किसीविशेष कामके लिये सूत्रद्वारा पढाहुआ । भ्वादिविभिन्नह दशगणोंमें होनेवालोंसे भिन्न केवल सूत्रमें पढे हुए धातु.

सौत्रामणी, (स्त्री०) सुत्रामा (इन्द्रः) देवता अस्य+अण् । जिसका देवता इन्द्र है । एक प्रकारका यज्ञ इसीमें ब्राह्मणोंकोभी सुरापान-शराबका पीना विहित (वेदमें कहा हुआ) है । "सौत्रामण्यां सुरां पिबेत्" इति श्रुतिः.

सौदामनी, (स्त्री०) सुदामा (पर्वतभेदः) तत्प्रान्तभवत्वात्+अण् । विद्युत् (बिजली) । यह बिजलीके सुदामा नाम पर्वतके एक देशमें उत्पन्न हुई । और एक अप्सरा । ऐरावतहाथीकी स्त्री । "सौदाम्नी" (त्रि०)

सौदायिक, (न०) सुदायात् (बन्धुकुलात्) आगतः+ठण् । बन्धुकुल (माता-पिता-भाई+पति) से आया । एकप्रकारका स्त्रीधन (जो पति आदिसे पाया है).

सौदास, (पु०) चन्द्रवंशी कल्माषपाद नामक राजा.

सौध, (पु० न०) सुधया (लेपनद्रव्येण) रक्तम्+अण् । राजसदनभेद । एक प्रकारका राजाका महल । सुधासम्बन्धी (अमृतका) (त्रि०).

सौनिक, (पु०) सूना (वधस्थानं)-तदुपलक्षितमांसादि पण्यं अस्य+ठण् । घातकरनेकी जगह (उसमें पहिचाना गया मांसआदि) है सौदा-व्यापार जिसका । मांस (मास) को क्रयविक्रय (मोल लेना और बेचना खरीद फरोख्त) करके जीनेहारा । व्याध (शिकारी) । कसाई.

सौन्दर्य, (न०) सुन्दरस्य भावः+ष्यञ् । चारुता । मनोहरता । सुन्दरता । खूब सूरती । अंगोंकी ठीक रचना.

सौपर्ण, (न०) सुष्ठु पर्णानि-तद्रूपं अर्हति+अण् । अच्छे पत्तोंके रंगवाली । मरकतमणि । पन्ना.

सौपर्णेय, (पु०) सुपर्ण्याः (विनतायाः) अपत्यम्+ढक् । विनताकी सन्तान गरुड.

सौप्तिक, (त्रि०) सुप्तिकाले (रात्री) भवं+ठञ् । रातमें हुआ । रातकी लडाई । सोयेहुओंके विषयमें कियाहुआ ग्रन्थ । महाभारतका एकपर्व (हिस्सा).

सौभ, (न०) सुष्ठु सर्वेषु लोके भाति । भा+क । स्वार्थे अण् । भलीभांति सब लोकमें प्रकाशित है । राजा हरिश्चन्द्रका नगर । कामचारि नगर.

सौभद्र, (पु०) सुभद्रायाः भवः+अण् । सुभद्राका पुत्र । अभिमन्यु.

सौभरि, (पु०) एक मुनि (जिसे मच्छिओंकी क्रीड पर मोह होगया था)

सौभागिनेय, (सुभगाया अपत्यं+ढक्-इनादेशः । दोनें पदोंको वृद्धि होती है । सुभगा (पतिकी पियारी स्त्री) का पुत्र । उसकी कन्या । (स्त्री०) ङीप्.

सौभाग्य, (न०) सुभगस्य भावः+ष्यञ् । द्विपदवृद्धिः प्रियत्वे+स्वार्थे ष्यञ् । सिन्धूर । टङ्कण (सुहागा) विष्कम्भादिमें चौथा योग । पु० । अच्छी किस्मत (न०)

सौभिक, (पु०) सौभं कामचारिपुरं-तन्निर्माणं) शिल्प अस्य+ठण् । कामचारिपुर (अपनी इच्छासे विचरनेहारा नगर) को रचना करनेके व्यापारको जानेहारा । ऐन्द्रजालिक । मदारी.

सौमनस्य, (न०) सुमनसो भावः+ष्यञ् । अच्छे मनका होना । प्रशस्तचित्तता । श्राद्धका पिण्ड देनेके पीछे ब्राह्मणके हाथमें फूल देनेका मन्त्र.

सौमित्र, (त्रि०) पु० सुमित्रायां भवः+अण्+इञ् वा । सुमित्रामें हुआ । लक्ष्मण.

सौम्य, (त्रि०) सोमो देवता अस्य+ष्यण् । सोम (चन्द्रमा) देवतावाला (जिसका देवता चन्द्रमा है) । "सोम-इव-यः । स्वार्थे अण् । चन्द्रमाके समान । मनोहर । सुन्दर । (त्रि०) । बुध । (पु०) । शुभग्रह । वृष आदि समराशि । सोमरस पीनेवाला ब्राह्मण (पु०).

सौम्यग्रह, (पु०) कर्म० ज्योतिषमें चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र-रूप शुभग्रह.

सौम्यनामन्, (त्रि०) सौम्यं नाम यस्य । सुखदायक वा प्यारे नामवाला.

सौर, (पु०) सूरस्य इदम् । सूरो देवता अस्य+अण् वा । सूर्यका पुत्र । शनैश्चर । यमराज । सूर्यदेवतावाला । (त्रि०) । स्त्रियां ङीप् । "सौरी".

सौरभ, (न०) सुरभेर्भावः । अच्छागन्ध । सुगन्धीवाला । अच् । अण् वा । केसर (न०).

सौरभेय, (पु०) सुरभेरपत्यं+ढक् (एय) । गौ । स्त्रीमें ङीप् । "तस्या इदं ढक्" "सुरभिसम्बन्धी" (गौका) (त्रि०).

सौरलोक, (पु०) सौरः लोकः । सूर्यका लोक (सूरजकी दुनिआ).

सौराष्ट्र, (पु०) सुष्ठु राष्ट्रं अस्य अस्ति+अण् । जिसका अच्छा राज है । एकदेश (सूरत) । "सुराष्ट्रे भवः" अण् । सुराष्ट्रदेशमें हुआ । (त्रि०) । एकविष (न०).

सौल्विक, (त्रि०) शुल्वं (ताम्रपात्रादि निर्माणं) शिल्प अस्य+ठक् । जिसका काम ताम्बेके बर्तन बनाना है । ताम्रमय पात्र निर्माण कर्ता । कसेरा.

सौवस्तिक, (पु०) स्वस्तिवचने कुशलः+ठक् । मङ्गल करनेमें चतुर । पुरोहित (सदा भलाई चाहता है).

स्कौन्दिकः, (पु०) [illegible] ([illegible]) आदि [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] है । [illegible] पुत्र ([illegible]) का [illegible] ([illegible])

स्कौम्प, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible].

स्कौन्दई, (न०) [illegible] । [illegible] [illegible] होना । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

स्कौन्दिन्य, (न०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] होना । [illegible] । [illegible] । [illegible]

स्कौन्द, (न०) [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible].

स्कन्द्, (भ्वादि) [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible].

स्कन्द, (पु०) स्कन्दते ([illegible]) अच् । [illegible] है । कार्तिकेय ([illegible] पुत्र).

स्कन्दन, (न०) स्कन्द्+ल्युट् । रेचन । बहना । सूखना । और जाना

स्कन्ध, (पु०) स्कन्दते ([illegible]) [illegible] घञ् । पृ० । जिसपर कुछ चढ़ाया जाता है । अंस । कन्धा । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] । समूह । [illegible] । एक [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] आदि [illegible] । [illegible] । और [illegible] [illegible] ([illegible]) । "[illegible]" [illegible] [illegible].

स्कन्धावार, (पु०) स्कन्धार्थं आवारः । आ+वृ+घञ् । युद्धके लिये [illegible] [illegible] सेनाओंका स्थान (ठिकाना) । छावनी.

स्कन्न, (त्रि०) स्कन्द्+क्त । च्युत (गिरगया) । [illegible] । शोषित । बहाहुआ । सूखाहुआ और जलगया । "भावे क्त" बहना (न०).

स्कम्भ्, रोकरना (प्रतिबन्ध) क्या० उभ० सक० सेट् । स्कभ्नाति-स्कभ्नीते । अस्कम्भीत्-अस्कम्भिष्ट.

स्खद्, विदार (फाड़ना) दि० आ० सक० सेट् । स्खदते । अस्खदिष्ट.

स्खल्, चलना । भ्वा० प० सक० सेट् । स्खलति । अस्खालीत्.

स्खलन, (न०) स्खल्+भावे ल्युट् । चलन (चलना) । गिरना.

स्खलित, (न०) भावे क्त । [illegible] ([illegible]) आदिमें प्राप्त होकर वीरों (बहादुरों) की मर्यादासे गिरना । और गिरना । "कर्तरि क्त" । चलाहुआ (त्रि०).

स्तन्, मेघशब्द (बादलकी आवाजकरना) । चु० उभ० सक० सेट् । स्तनयति-ते । अतस्तनत्-त.

स्तन, (पु०) स्तन्+अच् । स्त्रियोंका एक अंग । मम्मा । [illegible].

स्तनन, (न०) स्तन्+ल्युट् । शब्द (आवाज) बादल (मेघ) की आवाज.

स्तनन्धय, (पु०) स्तनं धयति । स्तनको पीता है । धे+खश् मुम् च । शिशु (बहुत छोटाबच्चा) । छोटी बालक । "स्तनन्धयी".

स्तनप, (पु०) स्तनं पिबति । पा+क । स्तनको पीता है) बहुत छोटाबच्चा । बालक । छोटी बाल.

स्तनभर, (पु०) ६ त० । स्तनोंका बोझा । मोटे स्तनोंका भार.

स्तनमुखम्-मूलं-शिखं, (न०) स्तनस्य मुखम् । स्तन (कुच) का मुख (चूची).

स्तनयित्नु, (पु०) स्तन्+इत्नु । मेघ । बादल । मोथा । बिजली । मौत । और रोग.

स्तनाङ्गराग, (पु०) स्तनयोः अङ्गरागः । स्त्रीके स्तनोंपर लगाया चन्दन आदि । स्तनोंका लेप.

स्तनान्तर, (न०) स्तनयोः अन्तरं । स्तनोंका मध्य (बीच) । हृदय । छाती.

स्तनाभोग, (पु०) ६ त० । स्तन (मम्मा) की परि-पूर्णता । फैलावट.

स्तनांशुकम्, (न०) स्तनयोः अंशुकम् । स्तनोंको ढांकने-वाला वस्त्र (कुरता).

स्तनित, (न०) स्तन्+भावे क्त । मेघ (बादल) का शब्द । और कोंसा आदिका शब्द । "कर्तरि क्त" शब्दवाला (त्रि०)

स्तन्य, (न०) स्तने भवं+यत् । स्तनमें हुआ । दूध.

स्तब्धरोमन्, (पु०) स्तब्धानि रोमाणि यस्य । पक्के रोमोंवाला । सूकर । सूअर.

स्तब्धलोचन, (त्रि०) स्तब्धे लोचने यस्य । न हिलने-वाली आंखोंवाला । निमिष । न फड़कनेवाले नेत्रोंवाला (देवताओंका नेत्र ऐसाही होता है).

स्तभ्, स्तम्भन (रोकना)-जड़होना-अक० जड़करना क्रियाको रोकना । सक० भ्वा० आ० सेट् । इदित् । स्तम्भते । अस्तम्भिष्ट.

स्तम्ब, (पु०) स्था+अम्बच् । पृ० । शाखी । तृण (घास) । गुच्छा । काला । खंभा.

स्तम्बेरम, (पु०) स्तम्बे रमते । अलुक् समा० । वृक्ष आदि शाखा-गुच्छा या झाडीमें रमण करता है (खेलता है) । गज । हाथी.

स्तम्भ्, रोधन (रोकना) । क्या० स्वा० प० स० सेट् । [illegible] । स्तभ्नाति । स्तभ्नोति । अस्तभत् । अस्तम्भीत्.

स्तम्भ, (पु॰) स्तम्भ+अच्। स्थूणा (थाम-खंभा-थम्ब)। "भावे घञ्" जड़ होना। रुकना.

स्तम्भन, (न॰) स्तम्भ् (जड़करना)+"भावे ल्युट्" जड़ीकरन। चेष्टारहित करना। रोकदेना। "करणे ल्युट्" शत्रुके जड़ करनेका साधन एक प्रयोग (मन्त्र)। "स्तम्भ्+णिच्+ल्यु" कामदेवके पाँच बाणोंमेसे एक.

स्तव, (पु॰) स्तु+अप्। प्रशंसा। और स्तुति (तारीफ, बड़ाई).

स्तवक, (पु॰) स्तु+वुन्। स्तव+स्वार्थे क। [illegible]। गुच्छा.

स्तावक, (त्रि॰) स्तु+ण्वुल्। स्तुतिकारक। बड़ाई करनेहारा। तारीफ करनेहारा.

स्तिमित, (न॰) स्तिम्+भावे क्त। आर्द्रता। गीलापन। स्थिरता। और अस्पन्दत्व (न हिलना)। (निश्चल) ठहरा। "कर्त्तरि क्त" अचञ्चल (जो हिलता नहीं) और आर्द्र (गीला) (त्रि॰).

स्तुत, (पु॰) स्तु+क्त। [illegible]। स्तुति किया हुआ। तारीफ किया गया.

स्तुति, (स्त्री॰) स्तु+क्तिन्। स्तव। तारीफ। प्रशंसा। बड़ाई.

स्तुतिपाठक, (पु॰) स्तुति पढ़ै। पठ+ण्वुल्। राजा आदिकी बड़ाई करनेहारा.

स्तुभ, [illegible] ([illegible]) भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। स्तुभोति। [illegible].

स्तूप, (पु॰) स्तूप+अच्। [illegible]। [illegible] (ढेर) [illegible]। केशर। समूह। बल (जोर)। और [illegible]। [illegible]। [illegible].

स्तृ, [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] अनिट्। [illegible]। [illegible]। [illegible].

स्तृ, [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] ([illegible])। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible].

स्तृ, [illegible] ([illegible])। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible].

स्तेन्, [illegible] ([illegible] [illegible])। [illegible] [illegible] [illegible] सेट्। [illegible]। [illegible].

स्तेन (पु॰) [illegible]। [illegible] ([illegible] [illegible]) [illegible]। [illegible] ([illegible])

स्तेय (पु॰) [illegible]। [illegible]। [illegible]। और [illegible].

[illegible] (न॰) [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] ([illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]) [illegible]। [illegible] [illegible].

स्तेयिन्, (त्रि॰) स्तेयं अस्ति अस्य+इनि। परद्रव्यहारक। दूसरेका पदार्थ चुरानेहारा। "स्तो॰ मे चौर".

स्तोक, (पु॰) स्तुच्+घञ्। चातक (पपीहा)। और जलबिन्दु (पानीकी बूंद)। अल्प (थोड़ा) (त्रि॰).

स्तोत्र, (न॰) स्तु+ष्ट्रन्। स्तव। तारीफ। बड़ाई। गुण कर्म और स्वभाव आदिसे स्तुति करना.

स्तोभ, (पु॰) स्तुभ्+घञ्। गान (गीत) आदिकी तालको पूरा करनेके लिये शब्दविशेष (जिसका अर्थ कुछ नहीं) जैसे सामवेदमें "हाउ" "होई" प्रभृति। रोकना। स्तम्भन.

स्तोम्, आत्मगुणाविष्करण (अपने गुणोंका प्रकाश करना) चु॰ उभ॰ सक॰ सेट् स्तोमयति ते। अतुस्तोमत्-त.

स्तोम, (पु॰) स्तोम्+घञ्। स्तु+मन्-वा। समूह। यज्ञ। और स्तव (बड़ाई-तारीफ)। मस्तक (माथा)। धन। [illegible]। शस्त्र (बेंती)। और लोहेका डण्डा (न॰)। वक्र (टेढ़ा) (त्रि॰).

स्त्यान, (न॰) स्त्यै+भावे क्त ("त" को "न" होता है)। स्नेह (चिकना)। घनता (गाढ़ापन)। संहति (मिलाहुआ)। आलस्य। और प्रतिध्वनि (गूंज)। "कर्तरि क्त" संहतिकारक (इकट्ठा करनेहारा) और शब्द करनेवाला (त्रि॰).

स्त्यै, संहति (इकट्ठा होना) और ध्वनि (आवाज करना)। भ्वा॰ अक॰ अनिट्। स्त्यायति। अस्त्यासीत्.

स्त्री, (स्त्री॰ स्त्यै+ड्रट्। योषित्। नारी। औरत। जनानी.

स्त्रीचिह्न, (न॰) स्त्रियाः असाधारणं चिह्नं। स्त्रीका खास निशान। योनि। भग.

स्त्रीचौर, (पु॰) स्त्रियाः चौरः। स्त्रीका मानो चोर है। कामी.

स्त्रीजित, (पु॰) स्त्रिया जितः। स्त्रैण। जो स्त्रीसे जिता। जोरूका (जिसको स्त्रीने आधीन किया है)

स्त्रीधन, (न॰) ६ त॰ वह धन जिसपर स्त्रीका स्वत्व (अधिकार) है (वह ६ प्रकारका होता है)

स्त्रीधर्म, (पु॰) ६ त॰ [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible]) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]

स्त्रीदर्शिनी, (स्त्री॰) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] ([illegible])

स्त्रीपुंस, (पु॰) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] और पुरुष.

स्त्रीपुंसलक्षणा, (स्त्री॰) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] और पुरुषके [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible]) [illegible] [illegible]। [illegible]

स्त्रीलिङ्ग, (पु०) स्त्रिया [illegible] लिङ्गं (तत्कार्यं) यस्य । स्त्रीलिंगमें विधान किया गया व्याकरणमें कहेहुए संस्कारवाला, शब्दविशेष । ६ त० । स्त्रीका चिन्ह (निशान) (न०).

स्त्रीवश्य, (पु०) ६ त० । स्त्रीवशीभूत । स्त्रीके आधीन हुआ.

स्त्रीविधेय, (पु०) ६ त० । स्त्रीके वशमें रहनेहारा.

स्त्रीसंग्रहण, (न०) स्त्रियाः संग्रहणं यत्र । एक प्रकारका विवाद (झगड़ा), जिसमें दूसरेकी स्त्रीको हरण किया जाता है । स्त्रीका पकड़ना.

स्त्रीसभ, (न०) स्त्रीणां सभा स्त्रियभं (नपुंसक होता है) । स्त्रियोंका समाज.

स्त्रीसेवा, (स्त्री०) ६ त० । स्त्रीका संभोग । भोगके द्वारा नारीकी सेवा.

स्त्रैण, (न०) स्त्रिया इदं+अण् । नञ् । स्त्रीका स्वभाव । और स्त्रियोंका समूह (झुंड) । स्त्रीकी आज्ञामें रहनेहारा । और स्त्रीका (त्रि०).

स्थ, (त्रि०) स्था+क । स्थितिशील । ठहरनेवाला । (प्रायः यह किसी पदके पीछेही लगता है) जैसे-पदस्थ । मार्गस्थ । निष्ठस्थ । गृहस्थ.

स्थगर्, संवरण (ढाँपना) भ्वा० पर० सक० सेट् । स्थगति । अस्थगीत्.

स्थगन, (न०) स्थग्+ल्युट् । आच्छादन । ढांपना.

स्थगित, (त्रि०) स्थग्+क्त । आवृत । तिरोहित । ढांपा-हुआ । छिपाहुआ.

स्थगी, (स्त्री०) स्थग्यते अनया । "घञ्" के अर्थमें "क" ङीष् । ढांपाजाता है इससे । ताम्बूल (पान)का पात्र । पानका डब्बा.

स्थण्डिल, (न०) स्थल+इलच्-डुक् । "ल" को "ड" होता है । चत्वर । चौतरा आंगन । चबूतरा (जो चारोंओरसे समान हो) । "निवेदुषी स्थण्डिल एव केवले" इति कुमार । यज्ञके लिये संस्कार किया हुआ स्थान । और होमके लिये कुण्डके प्रतिनिधि (उसकी जगह) लाल्पीले बालुका (रेत) आदिसे करनेलायक मण्डलविशेष । "नित्य और नैमित्तिक कर्म स्थण्डिलपरही करना चाहिये, वह एक हाथभर रेतका बनावे" यह तन्त्रका सिद्धान्त है.

स्थण्डिलशायिन्, (पु०) स्थण्डिले (चत्वरे) शेते (व्रतवशात्)+णिनि । व्रतके लिये चत्वर (चौंतडाआंगन चारोंओरसे खुली जगह)पर सोनेवाला । चबूतरेपर सोनेवाला.

स्थण्डिलेशय, (पु०) स्थण्डिले शेते । अच्-अलुक् समा० । व्रतके लिये चत्वरपर सोनेवाला.

स्थपति, (पु०) स्था+क । उसका पति । कञ्चुकी (अन्तः-पुरमें रहनेहारा बूढ़ा ब्राह्मण) । शिल्पिभेद । एकप्रकार-का कारीगर । राजा । कुबेर । अधीश (मालिक) । "बृह-स्पतिसव" नामक यज्ञके करनेहारा । बहुत अच्छा । (त्रि०).

स्थपुट, (त्रि०) तिष्ठति । स्था+क । स्थं पुटं यत्र । विषमो-न्नतप्रदेश । टेढ़ी और ऊंची जगह । "स्थपुटगतमपि क्रव्य-मव्यग्रमत्ति" इति मालतीमाधवम् । कठिन स्थानमें विचर-नेहारा जीव (पु०).

स्थल्, स्थान (ठहरना) भ्वा० प० अक० सेट् । स्थलति । अस्थालीत्.

स्थल, (न० स्त्री०) स्थल्+अच् । जलसे रहित अकृत्रिम (जो बनावटी नहीं स्वाभाविक) पृथिवीका भाग । स्त्रीत्व-पक्षमें ङीष् । "वनस्थली मर्मरपत्रमोक्षा" इति कुमारः । थल । बनावटी भूभाग (न०).

स्थलवर्त्मन्, (न०) स्थलस्य वर्त्म । थल (पृथिवी-जमीन)-का मार्ग (रास्ता).

स्थलारविन्द्रम्-कमलं-कमलिनी, (न०) स्थलस्य अरवि-न्दम् । थल (पृथिवीपर उत्पन्न हुआ)का कमलफूल.

स्थलेशय, (पु०) स्थले शेते । शी+अच् । अलुक् समा० । वराह (सूअर) और रुरु (एक) प्रकारका हरिण) आदि पशु । थलपर सोनेवाला (त्रि०).

स्थविर, (न०) स्था+किरच् । "स्थव" का आदेश । शैलेय-नामी गन्धद्रव्य । चार मुखवाला ब्रह्मा (पु०) । अचल । स्थिर । न हिलनेवाला और बूढ़ा (त्रि०) । महाश्रावणी (स्त्री०).

स्थविष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन स्थूलः+इष्ठन् । "ल"का लोप होनेपर गुण हुआ । अतिवृद्ध । बहुत बूढ़ा । "ईयसु" होनेपर "स्थवीयान्" भी इसी अर्थमें है (स्त्री०) ङीप्.

स्थाणु, (पु०) स्था+नु । पु० णत्वम् । शिवजी । और शाखा (डाली) से रहितवृक्ष (ठोंठ) । ठूठा (त्रि०).

स्थान, (पु०) स्था+ल्युट् । स्थिति (ठहरना) । समानता । अवकाश (जगह) । वसति (रहना) । मन्त्रकी सन्धि । भाजन (बर्तन) । निकट (पास) । व्याकरणमें प्रयोग (आदिश्यमान "यण्" आदिका कारण स्वरूप "इक्" आदि) । जगह.

स्थानाध्यक्ष, (पु०) स्थानस्य अध्यक्षः । स्थानका स्वामी (मालिक) । निरीक्षक । पुलिसका अधिकारी.

स्थानिक, (त्रि०) स्थाने अधिकृत.+ठक् । स्थानाध्यक्ष । स्थानाधिपति । स्थानका मालिक.

स्थानिन्, (त्रि०) स्थानं अस्य अस्ति रक्षकत्वेन । स्थान-रक्षक । स्थान (जगह) की रक्षा करनेहारा । स्थानं (प्रसंगः) । अस्ति अर्थे इनि । व्याकरणमें आदिश्यमान "यण्" आदिका कारण "इक्" आदि । "स्थानिवदादेशोऽ-नल्विधौ" इति पाणिनिः.

स्थानीय, (न०) स्थीयते अस्मिन् । स्था+आधारे अनीयर् । जहां रहते हैं । नगर (कस्बा) । "स्थानं (वास.) अ-र्हति स्थानस्य इदं वा छ" । निवास करनेलायक देश । स्थानवाला (त्रि०).

स्थाने, (अव्य०) स्थान+न । योग्यता । और औचित्य (मुनासिबपन) । ठीक है । सत्य । बराबरी.

स्थापन, (न०) स्था+णिच्+ल्युट् । टिकाना । आरोपण । चढाना (कायमकरना) । और "पुंसवन" नाम गर्भका संस्कार-पुंस् । "स्थापना" यही अर्थ । रखना.

स्थापित, (त्रि०) स्था+णिच्+क्त । निश्चित पक्का । निवेशित (टीकायाहुआ-रक्खागया) । और न्यस्त.

स्थामन्, (न०) स्था+मनिन् । शक्ति । ताकत । स्थिरता । पकिआई.

स्थायिन्, (त्रि०) स्था+णिनि । स्थितिशील । रहनेवाला । अलंकारमें रसके अनुकूल "रति" आदिभाव (पु०).

स्थायुक, (त्रि०) स्था+उकञ् । स्थितिशील (ठहरनेवाला) । एक ग्रामाधिपति (एक गांवका मालिक) (पु०).

स्थाल, (न०) स्थलति (तिष्ठति) अस्मिन् अन्न । जिसमें अन्न आदि रक्खा जाता है । थाल (अन्नपात्र) । पाकपात्र (देगचा-हांडी) । थाली । थीव्.

स्थालीपुलाक, (पु०) स्थाल्याः पुलाकाः (तण्डुलाः) यस्मिन् अत्र+अच् । थालीके चावल जिसमें हैं । एक प्रकारका न्याय जैसे देगचे-हांडीमें एकचावलका पाक देखकर सारे चावलोंके पाकका अनुमान होजाता है । यदि बटलोहीमें एकदाना गलगया तो सारेही गलेहुए समझने, क्योंकि सबको अग्निका संयोग एकही समयपर हुआ है.

स्थावर, (त्रि०) स्था+वरच् । अचल (जो हिलता नहिं) । स्थिर (एक जगह कायम) । वृक्ष (दरख्त) आदि । पृथिवी आदि पर्वत (पु०) । धनुषका [illegible] (न०).

स्थाविर, (न०) स्थविरस्य भाव+अण् । बुढापन । बुढापा । वृद्धता । यह [illegible] (उमर) [illegible] बीतनेपर होता है.

स्थासक, (पु०) स्था+क्त । स्वार्थे कन् । अलंकार (गहना-जेवर) । पानीकी बूंद.

स्थास्नु, (त्रि०) स्था+स्नु । स्थितिशील । ठहराहुआ । ठहरनेवाला.

स्थित, (त्रि०) स्था+क्त । स्थिर । ठहराहुआ । खडाहुआ । निश्चल । न हिलाहुआ । प्रतिज्ञावाला.

स्थितप्रज्ञ, (त्रि०) स्थिता प्रज्ञा यस्य । ठहरी हुई अविकल-[illegible] । स्थिर (अचल) बुद्धिवाला.

स्थिति, (स्त्री०) स्था+क्तिन् । मर्यादा (नियम) । अवस्थान ([illegible])पर स्थिर होना । और स्थान (ठहरना).

स्थिर, (पु०) स्था+किरच् । पर्वत (पहाड) । देवता । वृक्ष । पेड । स्वामिकार्तिक । शनि । मोक्ष । ज्योतिषमें वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशि है । स्थिरा । (पृथ्वी) । और न हिलनेवाला (त्रि०) । कायम (निश्चल) । दृढ प्रीति.

स्थिरतर, (त्रि०) अतिशयेन स्थिर+तरप् । अत्यन्त-स्थिर । बहुत पक्का । ईश्वर (पु०).

स्थिरधी, (त्रि०) स्थिरा धीः यस्य । अचल (न हिलनेवाली-पक्के निश्चयवाली)बुद्धिवाला.

स्थिरमति, (स्त्री०) स्थिरा मतिः । पक्की अकिल । ६ ब० । स्थिरचित्त । पक्के दिलवाला । स्थिरबुद्धिवाला (त्रि०) । "अनिकेतः स्थिरमतिः" इति गीता.

स्थिरयौवन, (न०) स्थिरं यौवनं (पक्की जवानी) । बहुत देरतक रहनेवाला जीवन । "स्थिरं यौवनं अस्य" पक्की जवानीवाला । विद्याधर आदि (एक प्रकारकी देवता) । देरतक रहनेवाले यौवन (जोबन)वाला (त्रि०).

स्थिरायुस्, (पु०) स्थिरं आयुः यस्य । देरतक स्थायी (कायम) रहनेसे पक्की उमरवाला । शाल्मली (सिंबल)-का दरख्त.

स्थूल, बृंहण (बढना) चु० उभ० सक० सेट् । स्थूलयति-ते

स्थूल, (त्रि०) स्थूल+अच् । पीवर । मोटा और समूह.

स्थेय, (पु०) स्थीयते (विवादनिर्णयकतया) अस्मिन् । स्था+यत् । जिसे किसी विवाद (झगडे) को मिटानेके लिये स्थिर (कायम) किया जाता है । विवादमें संशयका निर्णय करनेहारा । जूरी । और पुरोहित । स्थिरा (त्रि०).

स्थेयस्, (त्रि०) अतिशयेन स्थिर: । ईयसु । स्थादेशः । बहुत पक्का.

स्थैर्य, (न०) स्थिरस्य भाव+ष्यञ् । स्थिरता । पकियाई । मजबूती.

स्थौल्य, (न०) स्थूलस्य भाव+ष्यञ् । पीवरता । मोटाई । मोटापन.

स्नपन, (न०) स्ना+णिच्-पुक्+ल्युट् । जल आदिसे अभिषेक करना । न्हाना । स्नान.

स्नव, (पु०) स्नु+अप् । क्षरण । झरना । बहना चूना.

स्नातक, (पु०) स्ना+भावे क्त । स्नातं अस्य अस्ति+कन् । वेद पढनेके अनन्तर गृहस्थाश्रममें जोडनेके लिये अंगभूत स्नान (न्हाना) करनेहारा । गुरुके पास विद्या समाप्त करके घरमें आनेके लिये स्नान करनेवाला.

स्नातकव्रत, (न०) ६ त० । स्नातकके करनेलायक एक प्रकारका व्रत । "[illegible] स्नातकव्रतमाचरेत्" स्मृतिः.

स्नान, (न०) स्ना+ल्युट् । शोधन (सफाई) । अवगाहन । नहाना.

स्नानीय, (त्रि०) स्नानाय हितम्+छ । स्नानके लिये हितकारी (साधन) तेल । उबटन (बटना) आदि

स्नायु, (स्त्री०) स्नाति (शुध्यति) दोषः अनया । स्ना+उण् । जिससे दोष शुद्ध होजाता है । शरीरमें नसु (रग)से उठनेवाली एक नाडी । नस.

स्निग्ध, (त्रि०) स्निह्+क्त । प्रेमवाला (चिकनाई वा चिकना) । मित्र (प्यारा मित्र) । [illegible] (पु०) । तेल । [illegible] (स्त्री०)

स्निग्धता, (स्त्री०) स्निग्धस्य भावः । स्नेह । चिकनाई । प्रियता.

स्नुत, (पु०) स्नु+क्त । क्षरित । बहा हुआ जलआदि.

स्नुषा, (स्त्री) स्नु+सक् । पुत्रवधू । पुत्रकी स्त्री । बहू । नूं.

स्नेह, (पु०) स्निह्+घञ् । प्रेम (पिआर) । तेलआदि रसविशेष । न्यायमें गुणविशेष (जिससे एक पदार्थ जल्दी जलता है).

स्नेहन, (न०) स्निह्+णिच्+ल्युट् । तेल आदिका मलना.

स्नेहभू, (स्त्री०) ६ त० श्लेष्म (बलगम) नामी शरीरका धातुविशेष । स्नेहका पात्र । प्रेमका स्थान.

स्नेहिन्, (पु०) स्निह्+णिनि । वयस्य (मित्र) । बंधु । स्नेहवाला (त्रि०)

स्पद्, ईषत्कम्प (थोड़ासा काँपना) । भ्वा० आ० अक० सेट् । स्पदते (स्पन्दते) । अस्पन्दिष्ट.

स्पन्द, (पु०) स्पदि+घञ् । ईषच्चलन । थोड़ासा हिलना । थोड़ासा कांपना । एक प्रकारकी क्रिया । आंखका फड़कनाआदि.

स्पर्ध, (संहर्ष, बहुत प्रसन्न होना) । (पराभिभवेच्छा : दूसरेको दबानेकी इच्छा करना) । भ्वा० आ० सक० सेट् । स्पर्धते । अस्पर्धिष्ट.

स्पर्धा, (स्त्री०) स्पर्ध+अ । संहर्ष । तुल्ली । दूसरेको दबानेकी इच्छा । साम्य । बराबरी । उन्नति । तरक्की.

स्पर्श, ग्रहण (पकड़ना) । और स्तेय (चुराना) । चु० उ० स० सेट् । स्पर्शयति-ते । अपस्पर्शत्-त.

स्पर्श, (पु०) स्पृश्-स्पृश् अच् घञ् वा । न्यायमें त्वगिन्द्रियग्राह्य (त्वचा चमड़ा इन्द्रियसे जिसका प्रत्यक्ष होता है) गुणविशेष । पकड़ना रोग । युद्ध (जंग) । गुप्तचर छिपा हुआ दूत) । और उपतापक (छोटा पातक)वायु (हवा) (पु०) छूनेवाला (त्रि०) "क" से ले "म"तकवर्ण (पु०).

स्पश्, ग्रन्थ (गांठना) और बांधना भ्वा० उभ० सक० सेट् । स्पशति-ते.

स्पश, (पु०) स्पश्+अच् । चर । दूत । युद्ध (जंग) । गुप्तचर (जासूस).

स्पष्ट, (त्रि०) स्पश्+क्त । नि० । व्यक्त । प्रकट । स्फुट । साफ.

स्पृष्ट, (त्रि०) स्पृश्+क्त । कृतस्पर्श । छूआहुआ "भावे क्त" छूना (न०).

स्पृष्टास्पृष्टि, (न०) स्पृश्+भावे क्त । नञ्+स्पृश्+क्तिन् । स्पृष्टिश्च अस्पृष्टिश्च द्वयोः समाहारः । स्पर्शास्पर्श । छूना और न छूना.

स्पृह्, इच्छा (चाहना) । चु० उ० सक० सेट् । स्पृहयति-ते । अपस्पृहत्-त.

स्पृहणीय, (त्रि०) स्पृह्+अनीयर् । वाञ्छनीय (चाहनेलायक) और श्लाघ्य (सराहनेलायक) । "अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः" इति कुमार.

स्पृहयालु, (त्रि०) स्पृह्+आलुच् । स्पृहाशील । चाहनेवाला.

स्पृहा, (स्त्री) स्पृह्+अङ् । इच्छा (चाह) । "मिथुने स्पृहावती" कुमारः.

स्पृह्य, (त्रि०) स्पृह्+यत् । वाञ्छनीय । चाहनेलायक

स्फट्, विशीर्णता (फटना) अक० भ्वा० पर० सेट् । स्फटति । अस्फटीत् । अस्फाटीत्.

स्फटि (टी) क, (पु०) स्फटिरि (टी) व । इवार्थे कन् । इसनामकी मणि सूर्यकान्तमणि (आतशीशीशा) । बिल्लौर । स्वार्थे अण् । "स्फाटिकं" यही अर्थ (न).

स्फाटिकाचल, (पु०) स्फटिक इव शुभ्र. अचल. । बिल्लौरके समान चिट्टा पर्वत । कैलासपर्वत (पहाड़) । बिल्लौरका पहाड़.

स्फाय्, वृद्धि (बढ़ना) भ्वा० आ० अक० सेट् । स्फायते । अस्फायि । अस्फायिष्ट । स्फीतः.

स्फाति (स्त्री०) स्फाय्+क्तिन् । वृद्धि (बढ़ना).

स्फार, (पु०) स्फाय्+रक् । स्वर्णबुद्बुद । सोनेका बुलबुला । और विपुल (चौड़ा) । चमकाहुआ । और बहुत (त्रि०).

स्फारण, (न०) स्फुर+णिच् (स्फारादेश) ल्युट् । विकाशन-खिलाना.

स्फिच्, (स्त्री०) स्फाय्+डिच् । कटिदेश । नितम्ब । चूतड़.

स्फिर, (त्रि०) स्फाय्+किरच् । प्रचुर (बहुत) । और विस्तृत । बढ़ाहुआ.

स्फुट्, विकाश (खिलना) । तुदा० अक० सेट् । स्फुटति । अस्फुटीत् । पुस्फोट.

स्फुट, (त्रि०) स्फुट+क । विकसित । खिलाहुआ । व्यक्त (जाहिर) । भिन्न (हटगया) । और चिट्टा । ज्योतिषमें मेषआदि राशिओंके अंशविशेषोंमें स्थित हो रहे सूर्यादिग्रह (पु०) सांपका फन (स्त्री०).

स्फुटन, (न०) स्फुट्+ल्युट् । विकसन (खिलना) । फूटना । विदलीभाव । फटकर निकलना.

स्फुर्, स्फूर्ति (फुरना) । तु० प० अ० सेट् । स्फुरति । अस्फुरीत् । पुस्फोर.

स्फुरण, (न०) स्फुर्+ल्युट् । ईषत् स्पन्दन । थोड़ासा कांपना+युच् । (स्त्री०) वही अर्थ.

स्फुर्ज्, वज्रशब्द (बादलके गाजनेकी आवाज करना) । भ्वा० प० अक० सेट् । स्फूर्जति । अस्फूर्जीत्.

स्फुल, (न०) स्फुल् । हिलना-कांपना+क । कपड़ेका घर । तम्बू.

स्फुलिङ्ग, (पु० क्ली०) स्फुल्+इङ्गच् । "स्फुट्" यह धीमी आवाज निकलती है जिससे । लिगि+घञ् । पृ० वा । आगकी कनी.

स्फूर्जथु, (पु०) स्फूर्ज+अथु । वज्रपतनशब्द । वज्र गिरनेकी आवाज.

स्फूर्ति, (स्त्री०) स्फुर्ज्+स्फुर् वा क्तिन् । फुरना । खिलना । चमकनेवाली अग्नि प्रतिभा.

स्फूर्तिमत्, (पु०) स्फूर्तिः अस्ति अस्य+मतुप् । पाशुपत नामी एक प्रकारका शिवभक्त प्रतिभावाला । फुर्तिवाला । और खिलाहुआ (त्रि०)

स्फेयस्, (त्रि०) अतिशयेन स्फिरः । ईयसु । स्फादेशः । अतिप्रचुर । बहुतही । स्त्री०में ङीप् । ईष्ठन् । "स्फेष्ठः" यही अर्थ.

स्फोट, (पु०) स्फुटति अर्थः यस्मात् । स्फुट्+घञ् । जिससे अर्थ फूटता (निकलता) है । अर्थको जतलानेहारा अक्षरोंसे पहिचानागया पूरा शब्दविशेष । ब्राह्मणविशेष । फोडा.

स्फोटक, (पु०) स्फुट्+ण्वुल् । व्रणविशेष (फोडा) । और विदारक (फाडनेहारा) फोडनेवाला.

स्फोटन, (न०) स्फुट्+ल्यु । विदारण (फाडना) । और विकाशन (खिलाना) । मणिको वेधनकरनेका एक प्रकारका यन्त्र (स्त्री०).

स्फोटायन, (पु०) स्फोट एव अयनं यस्य । व्याकरणके जाननेहारा एक मुनि (जो शब्दके अर्थकी प्रणीतिमें "स्फोट" हीको स्वीकार कर्ता है) । "अवङ् स्फोटायनस्य" इति पाणिनिः.

स्फ्य, (न०) स्फा+यत् । नि० । खड्ग (तर्वारके स्वरूपमें एक प्रकारका यज्ञके लिये काष्ठ (लकडी).

स्म, (अव्य०) स्मि+ड । अतीत (बीतगया) । पादका पूरा करना.

स्मय, (पु०) स्मि+अच् । गर्व । अहंकार (घमण्ड) । और अद्भुत (आश्चर्य).

स्मर, (पु०) स्मरति प्रियं अनेन । स्मृ+अच् । स्मरणकर्ता है पियारेको इससे । कामदेव । "भावे अप्" याद करना.

स्मरगृह, (न०) स्मरस्य गृहं इव । कामदेवका मानों घर है । स्त्रीका एक प्रकारका विशेष चिन्ह । स्मरमन्दिर । योनि । कुस । भग.

स्मरण, (न०) स्मृ+ल्युट् । एक प्रकारका ज्ञान जो जानीहुई वस्तुके अनुभवाधीन संस्कारसे उत्पन्न होता है अर्थात् उद्बोधक सहकारसे उपजा) । याद करना । सोचना.

स्मरदशा, (स्त्री०) स्मरकृता दशा । कामिओंकी कामदेवसे कीगई " नयनप्रीति " (आखका पियार आदि दसदशा (हाल्त).

स्मरवल्लभ, (पु०) स्मरस्य वल्लभः । कामदेवका प्यारा । वसन्त ऋतु.

स्मरहर, स्मरं हरति (मारयति) । हृ+अच् । कामदेवको नाश कर्ता है । महादेव "स्मरमर्दन" भी.

स्मराकुल, आतुर-अति-उत्सुक, (त्रि०) स्मरेण आकुलः । कामदेवसे आकुल (घबराया) हुआ.

स्मराङ्कुश, (पु०) स्मरस्य अङ्कुश इव । कामदेवका मानों अङ्कुश है (उत्तेजक होनेसे) । नख (नाखुन-नहूं) । जा-ओं) नखोंके आघात (चोट) से स्त्रिओंका काम भडकता है.

स्मरासव, (पु०) स्मरोद्दीपक आसवः । कामको भडकानेहारा मद्य) एक प्रकारका जो आसव (नहिं चढाया गया) । लाला (मुखकी लार) । कामिओंका उसके पीनेसे काम बडा चमता है.

स्मार्त, (त्रि०) स्मृतौ विहितः । स्मृतिं वेत्ति-अधीते वा +अण् । धर्मशास्त्रमें विधान किया हुआ स्नानादि । स्मृतिशास्त्रके जाने वा पढनेहारा.

स्मि अनादर-और विस्मय (हैरान होना) (भ्वा० आ० स० सेट्) । स्माययते । अविस्मयत । दूसरेसे विस्मय होनेपर "स्माययति" ऐसाही होता है । यह भ्वादिमेंभी होता है और अनिट् है । स्मयते । अस्मेष्ट.

स्मित, (न०) स्मि+क्त । ईषद्धास्य । थोडासा हसना । विकसित । खिलाहुआ । और हैरान हुआ (विस्मित) (त्रि०).

स्मृ-स्मरण, (याद करना) । भ्वा० प० सक० अनिट्.

स्मृत, (त्रि०) स्मृ+क्त । कृतस्मरण । याद किया हुआ । स्मृतिविषय.

स्मृति, (स्त्री०) स्मृ+क्तिन् । अनुभव कीहुई वस्तुका उद्बोधसहकार (उस चीजको जागादेनेहारा कारण) से संस्कारके आधीन ज्ञानविशेष । यादगारी । यादराश्त । "स्मर्यते वेदधर्मः अनेन " करणे क्तिन् । स्मरण किया जाता है वेदका धर्म जिससे । धर्मका उपदेश करनेहारा शास्त्र । वेदसम्बन्धी अर्थके अनुभवसे उत्पन्न हुआ । वेदके अर्थको अनुवाद (कहेहुए अर्थको फिर कहना किसी दूसरी आदि भाषामें) करनेहारा मुनिओंसे रचाहुआ वाक्यरूप शास्त्र । "वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्" मनुः.

स्मृतिहेतु, (पु०) स्मृतिका कारण । संस्कार । वासनारूप गुणविशेष.

स्मेर, (त्रि०) स्मि+रन् । विकसित । खिलाहुआ । थोडासा हसरहा । "महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति" कुमारः.

स्यद, (पु०) स्यन्द्+क । वेग । जोर.

स्यन्द, स्रवण (बहना) । भ्वा० आ० छट् लट्-लृट् में उभ० अक० वेट् । स्यन्दते । अस्यन्दत्+अस्यन्दिष्ट-अस्यन्त.

स्यन्द, (पु०) स्यन्द्+घञ् । क्षरण । बहाना । चूना । बगना.

स्यन्दन, (न०) स्यन्द+भावे ल्युट् । क्षरण । बहना । "कर्तरि ल्यु" । जल (पानी) न० । रथ । और तिनिसाख्य (पु०).

स्यन्दनारोह, (पु०) स्यन्दनं आरोहति (युद्धार्थे) । आ+रुह्+अण् । रथपर चढकर लडाई करनेहारा.

स्यन्दिन्, (त्रि०) स्यन्द्+णिनि प्रस्रवी । बहनेवाला । लाला (लार) ङीप्.

स्यन्न, (त्रि०) स्यन्द्+क्त । स्रुत । बहाहुआ (पानी आदि).

स्यम्, शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । स्यमति । अस्यमीत्.

स्यमन्तक, (पु०) स्यम् अच्-कन् । श्रीकृष्णजीके हाथकी एक मणि (उसके बहुतही गुण थे).

स्यूत, (त्रि०) सिव्+क्त । सूई आदिसे सीआगया । कपडा आदि । सूतका बनाहुआ पात्र (पु०) । "स्योत" यही अर्थ.

स्यूति, (स्त्री०) सिव्+क्तिन् । सूईआदिसे कपडेका सीवन (सीना).

स्रंसन, (न०) स्रंस्+णिच्+ल्युट् । ऊपर गयेहुएका नीचे गिरना । नीचे गिराना.

स्रंसिन्, (त्रि०) स्रंस्+णिनि । अधःपतनशील । नीचे गिरनेवाला.

स्रग्वत्, (त्रि०) स्रज् (माला) अस्ति अस्य+मतुप् । "म" को "व" । कुत्वम् । मालावाला । मालापहिरेहुए । "स्रग्वी".

स्रज्, (स्त्री०) सृज्यते । सृज्+क्विन् । नि० । माला । माल्य.

स्रन्स्, पतन (गिरना) । भ्वा० आ० तुदमें उभ० अक० सेट् । स्रंसते । अस्रसत्-अस्रंसिष्ट.

स्रम्भ्, विश्वास करना । भ्वा० आ० तुदमें उभ० सक० सेट् । स्रम्भते । अस्रभत्-अस्रम्भिष्ट.

स्र(स्रा)व, (पु०) स्रु+अप्-घञ् वा । क्षरण । बहना । "कर्तरि अच्" । निर्झर । झरना.

स्रवण, (न०) स्रु+ल्युट् । मूत्रजल । मूतका पानी (पेशाब) । और घर्म (पसीना) । "भावे ल्युट्" क्षरण । बहना.

स्रवन्ती, (स्त्री०) स्रु+शतृ-ङीप् । नदी (दर्या) । एक औषधी । स्रवत् (बहनेवाला) (त्रि०) । स्त्रियां ङीप्.

स्रष्टृ, (पु०) सृज्+तृच् । जगत्के बनानेहारा चारमुखवाला ब्रह्मा । और शिवजी । रचयिता (त्रि०).

स्रस्त, (त्रि०) स्रन्स्+क्त । च्युत । पतित । गिराहुआ.

स्रस्तर, (पु०) स्रन्स्+तरच् । आसन.

स्राक्, (अव्य०) स्रु+काक् । त्वरित । झट् । शीघ्र । जल्दी.

स्रु, गति (जाना) सक० । क्षरण (बहना) अक० भ्वा० प० अनिट् । स्रवति । असुस्रुवत्.

स्रुघ्न, (पु०) एक देश (पटना).

स्रुच्, (स्त्री०) स्रु+चिच्-डिच्+चिट्क । वटपलाशादि (बड़बोडके पत्तेके लकडवाला विकङ्कत लकडीका बनाहुआ भुजाके माप जितना बडा एक पात्र । स्रुवा.

स्रुत, (त्रि०) स्रु+क्त । क्षरितजलादि (बहाहुआ पानी-आदि) । और मल (मवाद) । हींगकी पत्ती (स्त्री०).

स्रुव, (पु०) (स्त्री०) स्रु+क । खदिर (खैर) की लकडीका बनाहुआ हाथभर लम्बा एक पात्र । स्रुवली (स्त्री)

स्रोत, (न०) स्रु+तन् । स्रोतस् । सोता । प्रवाह । जोरसे आपही पानीका निकलना.

स्रोतस्, (न०) स्रु+तसि । जिससे आपही पानीका निकलना । और इन्द्रिय (बीर्य).

स्रोतस्वत्, (त्रि०) स्रोत. अस्ति अस्य+मतुप् । "म" को "व" । स्रोतोवाला । नदी (दर्या) । (स्त्रियां ङीप्).

स्रोतस्विनी, (स्त्री०) स्रोतस्+अस्त्यर्थे विनि ङीप् । स्रोते-वाली । नदी (दर्या) । प्रवाहवाला (त्रि०).

स्रोतोञ्जन, (न०) स्रोतसि भवं । यमुनानदीके प्रवाहके निकट सौवीरदेशमें हुआ अञ्जन । सौवीरदेशका अञ्जन । सुरमा.

स्रोतोवहा, (स्त्री०) स्रोतसा वहति (सरति) । वह्+अच् । प्रवाहरूपसे बहती है । नदी (दर्या).

स्व, (न०) स्वन्+ड । धन (दौलत) । आत्मा (आप) और ज्ञाति (बिरादरीका) (पु०) । आत्मीय (अपना) (त्रि०) । "आत्मा" और "आत्मीय" अर्थमें इनकी सर्वनामसंज्ञा हो जाती है.

स्वकर्मन्, (न०) स्वस्य कर्म । अपने वर्णके उचित कर्म । "स्वकर्मनिरतः सदा" इति गीता । अपना काम

स्वकीय, (त्रि०) स्वस्य इदम् । छ-कुक् च । आत्मीय । अपना.

स्वगत, (त्रि०) स्वस्मिन् गतम् आत्मनि वा गतं (सप्त० त०) । अपने मन वा आत्मामें गया । दूसरेसे, छिपी बात । और नाटकमें । नाटकमें केवल अपनेलिए जनोंके सुनेलायक वचन अर्थात् जिसको अन्य सब उपस्थित जन न सुने (न०).

स्वच्छ, (त्रि०) सुष्ठु अच्छ । प्रा० । बहुत अच्छा । बहुत निर्मल (साफ) । मुक्ता (मोती) । और स्फटिक (पु०) । श्वेतदूर्वा (बिल्लौर) (स्त्री०).

स्वच्छन्द, (त्रि०) स्वस्य छन्दः (अभिप्रायः) यत्र । अपनी इच्छापर रहनेहारा । स्वाधीन । स्वतन्त्र । स्वच्छ (यथेच्छाचार).

स्वच्छमणि, (पु०) कर्म० । स्फटिकमणि । स्फटिक । बिल्लौर.

स्वज, (न०) स्वस्मात् (देहात्-आत्मनो वा) जायते । अपने शरीर वा आत्मासे उत्पन्न होता है । स्वेद (पसीना) । पुत्र (लडका) (पु०) । कन्या (लडकी) (स्त्री०) । अपनेसे उत्पन्न हुआ (त्रि०).

स्वजन, (पु०) स्वस्य इव जनः (बन्धु) एतयोः कर्म० । अपने समान जिसको इनके मनमें उत्पन्न हो है । ज्ञाति । बन्धु । अपने लोक.

स्वतन्त्र, (त्रि०) स्वम् तन्त्रं (अधीनम्) यस्य । जो अपने अधीन है । स्वाधीन । जो दूसरेके अधीन नहीं

स्वतस्, (अव्य०) स्व+तसिल् । स्वभावतः । अपने आप । अपनेसे.

स्वधा, (स्त्री०) स्वद (आस्वादन) अच्+टाप् । पितृ-अन्न । पितृदान । अन्न.

स्वन, (न०) स्वन् शब्दे भावे अप् । शब्द । ध्वनि (आवाज) । किसी वस्तुका अव्यक्त शब्द । आवाज.

स्वधर्म, (पु०) स्वस्य वेदविहितकर्मे धर्म । अपना वेद और अपने वंशके अनुसार धर्म । अपने अपने वेदशाखाके अनुसार आचारकर्म धर्म.

स्वधा, (अव्य०) स्वद्+आ+घृ० । "द" को "ध" होता है । पितर-देवताओंके उद्देश (प्रयोजन) से हवि (घी-आदि) का देना । स्वेन धयति । धे+क आप् । एक दुर्गा (स्त्री०) "नमः स्वाहायै स्वधायै" इति पितृगाथा.

स्वधाप्रिय, (पु०) स्वधाशिनां प्रियः । शाक० । स्वधाको खानेवालोंका पियारा । कृष्णतिल (कालेतिल) । "स्वधा" इस शब्दसे उपलक्षित (पहिचानेहुए) श्राद्धआदिका पियारा पिताआदि.

स्वधाभुज्, (पु०) स्वधा इत्यनेन लक्षणं भुङ्क्ते भुज्+क्विप् । "स्वधा" इस शब्दसे छोडेहुए पदार्थको खाताहै । पितृगण । पितरोंका समूह । और देवता.

स्वधिति(ती), (स्त्री०) । स्वेन धीयते । धा+क्तिच् वा ङीप् । कुठार । कुल्हाडा । कुहाडा । परशुः "स्वधितिः".

स्वन्, शब्द (आवाजकरना) । भु० उ० स० सेट् । स्वनति अस्वनीत् अस्वानीत्.

स्वन, (त्रि०) स्वन्+अप् । शब्द (आवाज).

स्वनित, (त्रि०) स्वन्+कर्तरि क्त । शब्दित । आवाज-कियाहुआ । "भावे क्त" । शब्द । आवाज । और बाद-लका गर्जन (गर्जना) (न०).

स्वपन, (न०) स्वप्+ल्युट् । शयन । सोना । नींद । निद्रा.

स्वप्न, (पु०) स्वप्+नन् । नींद । सोना । सोयेहुएका मनका ज्ञानविशेष । सुपना.

स्वभाव, (पु०) स्वस्य भावः । निसर्ग । अपना धर्म । मिजाज । शील.

स्वभावोक्ति, (स्त्री०) स्वभावस्य उक्तिः अत्र । स्वभावका कथन है इसमें । अर्थसम्बन्धी अलंकारविशेष । ६ त० । स्वभावका कथन (कहना).

स्वभू, (पु०) स्वेनैव भवति । भू+क्विप् । आपहीसे होता-है । ब्रह्मा । विष्णु । शिवजी । और कामदेव.

स्वयंवर, (पु०) स्वय (आत्मना) वरः (वरणम्) । आपही वरना । सभामें कन्याका आपही अपने पतिको वरलेना । "स्वयं वृणुते पतिम्" वृ+अच् । आपही पतिको वरलेवाली लडकी (स्त्री०).

स्वयंकृत, (पु०) स्वयं (आत्मना) कृतः । आप बनाया । कृत्रिमपुत्र । बनावटी लडका । आप किया (त्रि०).

स्वयंदत्त, (पु०) स्वयं (आत्मनैव) नतु पितृमातृभ्यां दत्तः । वह लडका कि जिसने अपनेको आपही दियाहै (पिता वा मातासे नहिं दियागया) । "दत्तात्मा तु स्वयं दत्तः" इति स्मृतिः.

स्वयम्, (अव्य०) सु+अय्+अमु । आत्मना । आपही । आप.

स्वयम्भु, (पु०) स्वयम्+भू+डु । आपहुआ । ब्रह्मा.

स्वर्, (अव्य०) स्व+विच् । स्वर्ग । वह स्थान कि जहां दुःख नहिं । परलोक । देवताओंका निवासस्थान । और आकाश.

स्वर, (पु०) स्वृ+अच् । स्व+अप् वा । उदात्त (ऊंचा) अनुदात्त (नीचा) और स्वरित (मिलाहुआ) रूप अक्षरके उच्चारण करनेका यत्नविशेष । तन्त्रमें प्राणआ वायुका व्यापारविशेष । गानेकी आवाज.

स्वरभङ्ग, (पु०) स्वरस्य भङ्गः यस्मात् । जिससे आवा रुकजाती है । एकप्रकारका रोग । ६ त० । स्वरका टूटन

स्वरस, (पु०) स्वस्य रसः (रागः) । अपना अभिप्रा (आशय) । अपना मतलब । वाक्यमें एकप्रकारकी रचना.

स्वराज्, (पु०) स्वेनैव राजते । राज्+क्विप् । आपहीसे प्रकाशित होताहै (चमकता है) । ईश्वर । "अर्थेष्वभिज्ञ स्वराट्" इति भागवतम् । वेदका एक छन्द.

स्वरापगा, (स्त्री०) स्वः (स्वर्गस्य) आपगा । स्वर्गकी नदी । गंगा.

स्वरित, (पु०) स्वरः जातः अस्य+इतच् । एक स्वर । जो उदात्त और अनुदात्तके मेलसे उत्पन्न होता है स्वरवाला (त्रि०).

स्वरु, (पु०) स्वृ+उ । वज्र । यूप (यज्ञका खंभा) का टुकडा । तीर । सूर्यकी किरण । एकप्रकारका बिच्छु.

स्वरुचि, (त्रि०) स्वस्यैव रुचिः (प्रवर्तिका) स्वकृत्ये यस्य । अपने काममें जिसकी अपनीही इच्छा है । स्वातन्त्र्य । आजाद । ६ त० । अपनी अभिलाषा (इच्छा) (स्त्री०).

स्वरूप, (न०) स्वस्य रूपम् । अपना रूप । स्वभाव "स्वमेव रूपम्" । अपना पदार्थ । "स्वं" अपात्मं रूप-यति । रूप+अण् । यथास्वरूप (जिसका जिसका जैसा स्वरूप है) आभेहारा । पण्डित (पु०) । "स्वेन (स्वभावेनैव) रूपं अस्य" । जो स्वभावहीसे रूपवाला है । मनोज्ञ (मनोहर) (त्रि०).

स्वरूपसम्बन्ध, (पु०) स्वरूपं सम्बन्धः । स्वरूपोंका संबन्ध । न्यायमें अपना सम्बन्ध (जिसका संबंध अपनेही साथ है) । ६ पदार्थोंसे भिन्नपदार्थविशेष । जैसे विषयता और प्रतियोगित्व । अपने रूपका सम्बन्ध.

स्वरोदय, (पु०) स्वराणां उदयः यत्र । जहां स्वरों (भाग-विशेषों) से शुभ वा अशुभका ज्ञान होता है । तन्त्र-शास्त्रविशेष.

स्वर्ग, (पु०) स्वरिति (गीयते) । गै+क । सु+ऋज्+घञ् वा । दुःखसे न मिलाहुआ सुखसमूह । देवताओंका निवासस्थान । बडे सुखकी जगह.

स्वर्गनाथ, (पु०) ६ त० । स्वर्गका स्वामी । इन्द्र । "स्वर्पति" भी.

स्वर्गवधू, (स्त्री०) ६ त० । स्वर्गकी स्त्री । अप्सरा.

स्वर्गाचल, (पु०) स्वर्गार्थमचलः । स्वर्गोदका पहाड । सुमेरुपर्वत.

स्वर्गिन्, (पु०) स्वर्ग अस्ति अस्य भोगत्वेनइनिः । स्वर्ग जिसका भोगनेलायक है । देवता । स्वर्गवासी (त्रि०).

स्वर्गौकस्, (पु०) स्वर्ग ओको यस्य । स्वर्ग है स्थान जिसका । देवता.

स्वर्ण, (न०) सुष्ठु अर्णः (वर्णः) यस्य । जिसका अच्छा रंग है । कांचन । सोना । धतूरा । नागकेसर । चिरैंयका घास.

स्वर्णकाय, (पु०) स्वर्णं इव (पीतः) कायः अस्य । सोनेकी नाईं जिसका पीला शरीर है । गरुड.

स्वर्णकार, (पु०) स्वर्णं (स्वर्णमयं अलंकारादि) करोति । कृ+अण् । सोनेका भूषण-जेवर-गहना आदि बनाता है । सुनार । एक जाति.

स्वर्णदी, (स्त्री०) ६ त० । स्वर्गकी नदी । गंगा.

स्वर्भानु, (पु०) स्व (स्वर्गे) भानु. (दीप्तिः) अस्य । स्वर्गमें है चमक इसकी । राहु.

स्वर्लोक, (पु०) स्व एव लोकः (भुवनम्) । स्वर्गलोक । स्वर्ग । बहिश्त । ६ त० । स्वर्गका लोक.

स्वर्वापी, (स्त्री०) स्व (स्वर्गस्य) वापीव । स्वर्गकी मानों बावली है । गंगा.

स्वर्वेश्या, (स्त्री०) स्वः (स्वर्गस्य) वेश्या । स्वर्गकी कंचनी । मेनका आदि अप्सरा.

स्वल्प, (त्रि०) सुष्ठु अल्पम् । प्रा० । बहुत थोड़ा । क्षुद्र । छोटा.

स्ववासिनी, (स्त्री०) स्वस्मिन् (पित्रालये) वसति । वस्+णिनि । पिताके घरमें रहती है । चिरकालतक पिताके घरमें रहनेहारी स्त्री (चाहे विवाहीहुई हो अथवा कुमारी हो).

स्वसृ, (स्त्री०) सु+अस्+ऋन् । भगिनी । बहिन

स्वस्ति, (अव्य०) सु+अस्+क्तिच् । क्षेम । आशिष । कल्याण । और पुण्यआदि स्वीकारवचन (अंगीकारवचन).

स्वस्तिक, (पु० न०) स्वस्ति (शुभाय) हितं+ठन् । कल्याणदेनेहारा । एकप्रकारका घर । एकप्रकारका आसन (बैठना) । एकप्रकारका द्रव्य.

स्वस्तिवाचन, (न०) स्वस्ति (शुभस्य) विप्रद्वारा वाचनम् । ब्राह्मणके द्वारा मंगलपाठ कराना । कामके प्रारम्भमें विघ्न (रुकावट) की शान्तिके लिये ब्राह्मणद्वारा करनेलायक कामोंका कल्याण कहाना । मङ्गलपाठ करना

स्वस्तिवाचनिक, (त्रि०) स्वस्तिवाचनाय हितं (तत आगतं तत्र भव वा+ठञ् । मङ्गलपाठका साधन । मंगलपाठ करनेसे प्राप्तहुआ कुछ पदार्थ (वस्तु देना आदि) इत्यादि.

स्वस्त्ययन, (न०) स्वस्ति (शुभम्) अयनं (प्राप्तिः) यस्मात् । शुभ (मङ्गल) का लाभ होता है जिससे । शुभके लिये शिवादिका वेदविधिसे कियाहुआ पूजन आदि.

स्वस्थ, (त्रि०) स्व (स्वरूपे) स्थितिः, स्थैर्य (स्वभावमें स्थिरता) । स्वरूपमें रहनेहारा । स्वभावमें रहाहुआ । सुख (रोगके बिना) से रहाहुआ । "स्वस्थ ... मपि जीवति ..." [illegible]

स्वस्रीय, (पु०) स्वसुः अपत्यं (ईय) । बहिनका बेटा । भागिनेय । भगिनीपुत्र । बहिनकी लड़की (स्त्री०).

स्वागत, (न०) सुखेन आगमनम् । सु+आ+गम्+क्त । सुखसे आना । भलेआना । "तत् स्वागतं [illegible]" [illegible].

स्वाति-ती, (पु० स्त्री०) [illegible] । अश्विनीसे पन्द्रहवां तारा । सूर्यकी एक स्त्री.

स्वादु,-धीति (प्रसन्नहोना) । स्वादलेना । और [illegible] । स्वादसे । [illegible].

स्वाद, (पु०) स्वद्-स्वद् वा+घञ् । [illegible] अनुभव । स्वादलेना । प्रसन्नहोना । और [illegible].

स्वादु, (पु०) स्वद्+उण् । मीठा रस । और गुड़ । [illegible] ([illegible]) । मीठा । और मनोहर (त्रि०) । [illegible] का दीप.

स्वाधीन, (त्रि०) स्वस्य अधीन । [illegible] । [illegible] । आजाद । अपने आधीन

स्वाधीनपतिका, (स्त्री०) स्वाधीनः पतिः [illegible] । जिसका पती स्वाधीन है । [illegible] (स्त्री) । "स्वाधीनभर्तृका" (जिसका पती वशमें है).

स्वान्त, (न०) स्वन्+क्त । मन (दिल) । [illegible] ([illegible]).

स्वाप, (पु०) स्वप्+घञ् । सोना । निद्रा । नींद । और [illegible].

स्वापतेय, (न०) स्वस्य (धनस्य) पतिः । [illegible] । धनके स्वामीका [illegible] । धन । दौलत

स्वाभाविक, (त्रि०) स्वभावात् आगतः+ठञ् (ठक्) । स्वभावसे आया । स्वभावसिद्ध । अकस्मात् । [illegible] । "[illegible]" [illegible].

स्वामिन्, (त्रि०) स्व+आमिन [illegible] । [illegible] । अपने आधीन । [illegible] । [illegible] । और [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] (पु०)

स्वायम्भुव, (पु०) स्वयम्भुवः अपत्यम् । [illegible] । स्वायम्भुव पुत्र । पहिला मनु । [illegible] ([illegible]) की सन्तान । [illegible] ([illegible]) (त्रि०) । "[illegible] स्वायम्भुवं मनु" [illegible].

स्वाराज्, (पु०) स्व (स्वर्गे) राजते । [illegible] । स्वर्गमें प्रकाशित है (चमकता है) । इन्द्र ([illegible]).

स्वाराज्य, (न०) [illegible] । [illegible] । [illegible].

स्वारोचिष, (पु०) [illegible] मनु । [illegible] मनु । [illegible] [illegible].

स्वार्थ, (पु०) स्वस्य अर्थः ([illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]) । [illegible]

स्वार्थिक, (त्रि०) स्वार्थे विहित+ठञ् (इक)। व्याकरणमें कहाहुआ स्वार्थ (अपना अर्थ) में विधान किया-हुआ प्रत्यय.

स्वास्थ्य, (न०) स्वस्थस्य भावः+ष्यञ्। आरोग्य। आराम। सन्तोष (प्रसन्नता)। और सुख.

स्वाहा, (अव्य०) सु+आ+ह्वे+डा+ति। देवताके उद्देश (प्रयोजन) से हवि (घीआदि) का त्यागना (छोडना)। अग्निदेवताकी स्त्री "स्वाहयेव हविर्भुजम्" इति रघुः। और एक दुर्गा (स्त्री०)। "नमः स्वाहायै स्वधायै" इति पितृगाथा.

स्वाहाप्रिय, (पु०) ६ त०। स्वाहाका पियारा। अग्नि। आग.

स्वाहाभुज्, (पु०) "स्वाहा" इति मन्त्रेण दत्तद्रव्यं भुङ्क्ते। भुज्+क्विप्। "स्वाहा" इस मन्त्रसे छोडेगये पदार्थको खाता है। देव। देवता.

स्विद्, (अव्य०) स्विद्+क्विप्। प्रश्न (सवाल)। पादपूरण.

स्विन्न, (त्रि०) स्विद्+क्त। घर्मयुक्त। पसीनेवाला.

स्वीकार, (पु०) अस्वस्य स्वस्यकारः (करणं)। स्व+च्वि+कृ+घञ्। न अपनेको अपना करना। अंगीकार। मानना। कबूलकरना.

स्वीय, (त्रि०) स्वस्य इदं (ईय)। ६ त०। स्वसम्बन्धी। अपना। एकप्रकारकी नायिका (स्त्री०).

स्वृ, शब्द (आवाज करना)। भ्वा० स्वा० प० सेट्। स्वरति। अस्वारीत्-अस्वार्षीत्.

स्वेच्छा, (स्त्री०) स्वस्य इच्छा। अपनी अभिलाषा (चाह).

स्वेच्छामृत्यु, (पु०) स्वेच्छया मृत्युः यस्य। अपनी इच्छासे जिसकी मौत है। भीष्म। अपनी इच्छासे मरनेवाला (त्रि०).

स्वेद, (पु०) स्विद् भिद् वा घञ्। घर्म। पसीना। गर्मी.

स्वेदज, (पु०) स्वेदज्जायते। पसीनेसे उपजता है। खटमल जूंआदि। पसीनेसे हुआ (त्रि०).

स्वेदनी, (स्त्री०) जिससे (पसीने) आवता। स्विद्+ल्युट्। लोहेका पात्र। तवा। कढाही। भूंजेका पात्र (तवा-भाड़).

स्वैर, (न०) स्वम् ईरं। ईर्+अच्+ई.. । अपनी इच्छा। स्वतन्त्र (त्रि०).

स्वैरिन्, (त्रि०) स्वैरं ईरितुं शीलं अस्य। ईर्+णिनि ... । [illegible] ... इच्छासे विचरनेवाला। स्व-तन्त्र। आज़ाद। व्यभिचारिणी (बदचलन) स्त्री। (स्त्री०).

स्वोपार्जित, (त्रि०) स्वेन उपार्जितं। अपना कमाया हुआ। अपनी मेहनतसे पैदा कियाहुआ धन आदि.

स्वोत्सृष्ट, (न०) [illegible] (छुट्टी)। [illegible]। (यह [illegible] की [illegible] है).

ह

ह, (अव्य०) हा+ड। पादको पूरा करनेके लिये। सम्बोधन (बुलाना)। और प्रसिद्ध (मशहूर)। शिवजी। जल। शून्य। मंगल (पु०).

हंस, (पु०) हन्+अच्। पृ०। इस नामका एक पक्षी (परिंदा)। वह राजा जिसके शरीरपर कोईभी रोग नहिं। विष्णु। सूर्य। परमात्मा "हंसं तनौ सन्निहितं चरन्तम्" नैषधम्। मत्सर (दूसरेका शुभ देख न सकना)। एकप्रकारका यति (संन्यासी)। एकप्रकारका मन्त्र। एकप्रकारकी शरीरमें वायुकी चेष्टा (हर्कतक्रिया)। एकप्रकारका घोड़ा। सुमेरु पर्वत (पहाड़)। शिवजी। श्रेष्ठ। बहुतसुन्दर। अजपामन्त्रके अक्षर। "हंकार" से बाहिर जाता और "सकार" से फिर प्रवेश करता है। "हंस" यह मन्त्र जीव निरन्तर जपता रहता है.

हंसक, (पु०) हंस इव कायति (शब्दायते)। कै+क। हंसकी नाईं शब्द करता है। पादकटक (पौंचा का पजेब)। नूपुर (झांझर)। कड़िआँ.

हंसगामिनी, (स्त्री०) हंस इव (मृदु) गच्छति। गम्+णिनि। हंसकी नाईं कोमल जाती है। धीरे २ चलनेवाली स्त्री। "हंसेन गच्छति" हंसके साथ (सवार पड़कर) जाती है+णिनि। ङीप्। ब्रह्माणी। एक शक्ति.

हंसनादिनी, (स्त्री०) हंसके समान शब्द करती है। हाथीकी गति (चाल)। सभी (शुभभोगवाली), कोयलकी भाँति आलाप (बोलना), और नितम्ब (चूतड़) भारी (गुर्वणी) इस प्रकारसे कहाणीवाली (स्त्री०).

हंसमाला, (स्त्री०) ६ त०। पंक्ति (कतार) के ढंगमें स्थित होरहा हंसोंका समूह। हंसोंकी कतार.

हंसयुवन्, (पु०) हंस युवा। जवान हंस। छोटा हंस

हंसरथ, (पु०) हंस. रथ. (वाहनं यस्य।) हंस जिसका रथ (सवारी) है। चतुर्मुख (चारमुखवाला) ब्रह्मा। "हंसवाहन" आदिभी.

हंसराज, (पु०) हंसानां राजा+टच्। हंसोंका राजा.

हंसारूढ, (पु०) हंसे आरूढ। आ+रुह+क्त। हंसपर चढ़ाहुआ। ब्रह्मा। उनकी शक्ति। ब्रह्माणी (स्त्री०)

हंसी, (स्त्री०) हंसस्य भार्या। ङीप्। हंसकी स्त्री। [illegible] [illegible].

हंहो, (अव्य०) हं+हा+डो। सम्बोधन (बुलाना)। अहंकार। प्रश्न (सवाल)

हंहो-[illegible], (अव्य०) [illegible]। [illegible]। ([illegible])

हट, दीप्ति (चमकना) भ्वा० प० अक० सेट्। हटति। अहटीत्-अहाटीत्

हट्ट, (पु०) हट्+ट । क्रयविक्रयस्थान (मोललेने और बेचनेकी जगह)। "प्रतिहट्टपथे घरट्टजात्" इति नैषधम्.

हट्टचौरक, (पु०) हट्टे (प्रकाशिते स्थाने) एव चौरः । स्वार्थे कन् । खुली जगहपर चोरीकरनेवाला । हट्टका चोर.

हठ, (पु०) हठ्+अच् । बलात्कार । जोरकरना । जोरावरी.

हठयोग, (पु०) हठात्कारेण योग । हठकरके परमात्माके साथ जुड़ना । प्राणायाम (प्राणोंका रोकना) आदि क्रियाके अभ्याससे उत्पन्न हुआ राजयोगके विनाही परमात्माका साक्षात्काररूप चित्तकी वृत्तिका रोकना.

हड्ड, (न०) हड्+ड । पु० । अस्थि । हड्डी (हाड-हड्ड)। कन् । एक जाति.

हण्डा, (स्त्री०) हन्+ड । बड़ा महीका पात्र (बर्तन)। हांडी । "हण्डे" नाटकमें नीचका सम्बोधन (नीचको बुलाना).

हत, (त्रि०) हन्+क्त । नाशित । नाशहुआ । प्रतिहत । मारागया । बोधहुआ । आशासे रहित । और गुणाहुआ । "भावे क्त" । मारना । और गुणना (न०).

हतक, (त्रि०) हत इव (नष्टप्रायत्वात्)+कन् । मानों मराहुआ है । दबाहुआ । गयागुजरा.

हतसाध्वस, (त्रि०) हतः साध्वसः यस्य । दूर होगया है भय जिसका । निर्भय । भयसे रहित । निडर.

हताश, (त्रि०) हता आशा यस्य । जिसकी आशा जाती-रही । आशाशून्य । दयारहित । और पिशुन (चुगलखोर).

हति, (स्त्री०) हन्+क्तिन् । हनन (मारना)। और गुणना.

हत्या, (स्त्री०) हन्+क्यप् । मारना (वध)। प्राणवियोगानुकूलव्यापार (प्राणोंके विछोड़नेका काम)। किसीको प्राणोंसे जुदाकरना । "ब्रह्महत्या सुरापानं" स्मृति..

हद्, (विष्ठोत्सर्ग) मलछोड़ना (हगना)। भ्वा० आ० । हदते । अहदिष्ट.

हन्, वध (मारना) । गति (जाना) अदा० पर० स० अनिट् । हन्ति । अवधीत् । "कुम्भं हन्ति शकोदरी" इत्यादिमें शब्दशास्त्रके जाननेवाले । "गति" अर्थमें मानते हैं (इसीको निरुक्तार्थता-असली अर्थका टलना कहते हैं).

हनु(नू)मत्, (पु०) हनु (नू)+अस्ति अर्थे मतुप् । ठोड़ीवाला । रामचन्द्रजीका अनुचर (सेवक)। अञ्जनाके गर्भसे उत्पन्नहुआ वायु (हवा) का पुत्र । एक विशेष वानर.

हन्त, (अव्य०) हन्+त । हर्ष (खुशी)। दया । विषाद (मनका टूटना) । आर्ति (पीड़ा)। किसी वाक्यका आरम्भ । खेद.

हन्तकार, (पु०) हन्त (हर्षस्य) कारः (करणम्)। "हन्त" इत्यस्य कारः (उच्चारणम्) वा । कृ+घञ् । खुशीका करना । वा "हन्त" (खुशीहो) इस शब्दका उच्चारण करना । अतिथिको देनेलायक अन्न । (हंतो)। और हन्तशब्दका प्रयोग.

हन्तृ, (त्रि०) हन्+तृच् । हननकर्ता । मारनेवाला । जिसका स्वभाव दूसरेको मारनेका पड़गया है । स्त्रीमें ङीप् । हन्त्री.

हन्न, (त्रि०) हद्+क्त । जिसने मलत्याग किया है । कृत-पुरीषोत्सर्ग.

हम्भा(म्मा), (स्त्री०) हम्+भा । हम्म्+अच् टाप् । गौओंकी ध्वनि (आवाज)। पु० । "हम्बा" भी.

हय, गति (जाना)। पु० अक० भ्वा० प० सेट् । हयति । अहयीत्.

हय, (पु०) हय्-दिवा अच् । घोटक । घोड़ा.

हयग्रीव, (पु०) हयस्य इव दीर्घा ग्रीवा अस्य । घोड़ेकी नाईं जिसकी लंबी गर्दन है । विष्णुका एक अवतार । और एक दैत्य । "हयग्रीववधोपेतं तद्वै भागवतं विदुः" इति पुराणम् । दुर्गा (स्त्री०).

हर, (पु०) हृ+अच् । रुद्र । अग्नि (आग)। गर्दभ (गधा) । और विभाजक (बांटनेवाला)। हृ+भावे अप् । हरण (लेजाना)। और विभाजन (बांटना).

हरण, (न०) हृ+भावे ल्युट् । स्थानान्तरकरण । दूसरी जगहपर लेजाना । और विभाजन (बांटना)। "कर्मणि ल्युट्" यौतकादि (दाज-दहेज) में देनेलायक धन.

हरगौरी, (स्त्री०) हरदेहार्धस्था गौरी । महादेवके आधे देहको लेनेवाली पार्वती । अर्धनारीश्वररूप शिवजी और पार्वतीका मूर्तिविशेष । द्वन्द्व० । शिवपार्वती । द्वि० व०.

हरतेजस्, (न०) ६ त० । महादेवका तेज । पारद (पारा) और शिवजीका वीर्य । "हरबीज" आदिभी इसी अर्थमें.

हरशेखरा, (स्त्री०) हरस्य शेखरे आकाशगमनेन अधि अस्याः+अच् । महादेवका शिर जिसका निवासस्थान है । गंगा.

हरि, (पु०) हृ+इन् । विष्णु । सिंह (शेर) । सर्प (सांप)। वानर (बंदर)। भेक (मेंडक-डड्डू)। चन्द्र (चांद)। सूर्य । वायु (हवा)। अश्व (घोड़ा)। यम-राज । महादेव । ब्रह्मा । शक्र । किरण । नौ वर्षोंमेंसे एक । मयूर (मोर)। कोकिल (कोइल)। हंस । शुक (तोता) । भर्तृहरिनामक वाक्यपदीयकारादि ग्रन्थका बनानेवाला पण्डित । इन्द्र । पीत (पीला) । और हरा रंग । तद्वाला (त्रि०) । "हरिं विदित्वा हरिभिश्च वाजिभिः" इति रघु-.

हरिकेश, (पु०) हरयः (पिङ्गलाः) केशा अस्य । पीले केशोंवाला । शिव । शिवका भक्त एक यक्ष (एकप्रकारका देवता).

हरिचन्दन, (न०) हरेः (इन्द्रस्य) प्रियं चन्दनम् । इन्द्रका पियारा चन्दन । देवताओंका एक वृक्ष । विष्णुका पियारा चंदन । चोटीवैगरहके ऊपरके हिस्सेमें उत्पन्न हुआ चंदनविशेष । केसर.

हरिण, (पु०) हृ+इनन् । इस नामका पशु । हिरन । शिव । विष्णु । हंस । चिट्टा रंग । उसवाला (त्रि०).

हरिणहृदय, (पु०) हरिणस्य इव भीतं हृदयं यस्य । जिसका हृदय हिरनकी नाईं डरता है । भीरु । डरपोक । डरनेवाला.

हरिणाक्षी, (स्त्री०) हरिणस्य इव अक्षिणी यस्याः+षच् समा०+ङीप् । जिसके नेत्र हिरनके समान हैं ऐसी स्त्री । हरिणके समान नेत्रोंवाली (त्रि०) । हरविलासिनी नाम गंधवाला द्रव्य.

हरिणाङ्क, (पु०) हरिणः (शशनामकः मृगः) अंकः (चिह्नं) अङ्के (क्रोडे) वा यस्य । शशनामी हरिणके चिह्नवाला । या जिसकी गोदमें हरिण है । चन्द्र (चांद) । चन्द्रमा.

हरित, (पु०) हृ+इति । नीला और पीला रंग मिलाहुआ । और पत्तोंका रंग उसवाला (त्रि०) सूर्यका घोडा । मूंग । शेर (सिंह) सूर्य । और विष्णु (पु०).

हरिताल, (न०) हरिवर्णस्य (पीतवर्णस्य) तालः (प्रतिष्ठा) यत्र । जहां हरेरंगकी प्रतिष्ठा है । पीले रंगका एक प्रकारका उपधातु । हरिताल.

हरितालिका, (स्त्री०) हरेः तालः ([illegible]) यस्यां+कप् । भाद्रपद शुक्लपक्षकी तृतीया.

हरिद्वार, (न०) हरेः (तत्प्राप्तेः) द्वारं (दरवाजा) । हरिके मिलनेका दरवाजा (सेवा करनेसे) इस नामका तीर्थ.

हरिनामन्, (न०) हरेर्नाम तत्+अस्ति अस्य वा । हरिका नाम । [illegible] इत्यादि प्रसिद्ध । "हरिकी नाईं जिसका नाम है" मूंग (पु०).

हरिनेत्र, (न०) हरेः नेत्र इव । मानों हरिकी आंख है । श्वेतपद्म । खिला कमलपुष्प । ६ त० । विष्णुकी आंख । हरिकी नाईं जिसका नेत्र है (बहु० हरिनेत्रः) । पेचक (उल्लू) (पु०).

हरिन्मणि, (पु०) हरिद्वर्णः मणिः । हरे रंगकी मणि । मरकतमणि.

हरिप्रिय, (त्रि०) हरेः (विष्णोः) प्रियः । विष्णुके भक्त ([illegible]) । विष्णुकी प्रीति [illegible] । " [illegible] " । [illegible] (पु०).

हरिमुख, (पु०) [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] है । [illegible] ([illegible]).

हरिवंश, (पु०) ६ त० । [illegible] वंश ([illegible]) । [illegible] [illegible].

हरिवर्ष, (न०) [illegible] ।

हरिवासर, (न०) हरिप्रियं वासरं । हरिका पियारा एकादशीका दिन । और द्वादशीका पहिला पाद ([illegible]

हरिवाहन, (न०) हरिं वाहयति (स्थानान्तरं नय[illegible] वह्+णिच्+ल्यु । हरिको दूसरे स्थानपर [illegible] जाता है । सवारी । गरुड । ६ त०.

हरिबीज, (न०) हरेः बीजं (उत्पत्तिकारणत्वेन) अस्य+अच् । हरिके बीजसे उत्पन्नहुआ । हरिताल [illegible] ताल । "हरितालं हरेर्बीजं लक्ष्म्या बीजं मनःशिला" [illegible] वैद्यकम्.

हरिशयन, (न०) हरेः शयनं (निद्रा) । विष्णुकी [illegible] हरेः शयनं यत्र तदुपलक्षितः कालः । वह समय [illegible] हरि योगनिद्रामें सोते हैं । आषाढकी शुक्लद्वादशीसे [illegible] कार्तिकशुक्ल द्वादशीतक चार महिनोंका समय.

हरिश्चन्द्र, (पु०) हरिः चन्द्र इव (ऋषिभर्थमें सुट् [illegible] है) । हरि मानों चन्द्रमा है । सूर्यवंशमें त्रिशंकुका [illegible] एक राजा (ऋषिसे भिन्न अर्थमें सुट् नहीं होता) । [illegible] चन्द्र.

हरिसंकीर्तन, (न०) हरेः (हरिनाम्न) संकीर्तनं ([illegible] नम्) । श्रीविष्णुका नाम उच्चारण करना । हरिनाम [illegible] "सकलं निष्फलं राजन् हरिसंकीर्तनं विना" पुराणम्.

हरिहय, (पु०) हरिवर्णः हयः यस्य । जिसका घोडा [illegible] रंगका है । इन्द्र । "हरिं विदित्वा हरिभिश्च वाजिभिः [illegible] रघु०.

हरिहर, (पु०) हरिश्चासौ हरः । एकप्रकारकी मूर्ति । जिस[illegible] एक आधा हरि और दूसरा आधा [illegible] है । त्रि० । [illegible] नारायण.

हरिहरक्षेत्र, (न०) हरिहरयोः प्रियं क्षेत्रम् । हरि और[illegible] हरका पियारा स्थान । वह स्थान कि जहां गंगा और गण्ड[illegible] कीका संगम होता है । पाटलिपुत्र (पटना) के उत्तर[illegible] और एक तीर्थ.

हरीतकी, (स्त्री०) हरि (पीतवर्णं फलयुक्त इत (प्राप्त[illegible]) इण्+क्त । संज्ञायां कन् ङीप् । इस नामका एक वृक्ष (जिस[illegible] का फल पीला होता है) । हरीतकी फल "[illegible] [illegible] [illegible] हरीतकी" वैद्यकम्.

हर्तृ, (त्रि०) हृ+तृच् । चुरानेवाला चोर । और सूर्य (पु०).

हर्म्य, (न०) हृ+यत्+मुट् च । धनिकोंका राजभवन ([illegible] प्रासादका घर) । महल.

हर्यक्ष, (पु०) हरि (पिंगल) अक्षि यस्य [illegible] समा० । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible].

हर्यश्व, (पु०) हरिवर्णः अश्वः यस्य । जिसका घोडा हरे रंगका है । इन्द्र.

हर्ष, (पु०) हृष्+घञ् । [illegible] । [illegible] [illegible].

हर्षण, (पु०) हर्षयति (अभीष्टलाभात्) । हृष+णिच्+ल्युः । खुशी देता है (चाहीगई वस्तुके देनेसे) । ज्योतिषशास्त्रमें चौदहवां योग । हर्षकरानेवाला (त्रि०) । "हृष+ल्युट्" हर्ष (न०).

हर्षमाण, (पु०) हृष्+शानच्। एक धातुका वेदना । हृष्टचित्त (जिसका चित्त प्रसन्न है) (त्रि०).

हर्षिणी, (स्त्री०) हृष्+णिच्+णिनि+ङीप् । खिदता (खुशी देनेहारी) । मांग । हर्षकारक (खुशी देनेहारा) (त्रि०).

हर्षित, (त्रि०) हर्षः जातः अस्य+इतच् । आनन्दित । खुश हुआ.

हल्, विलेख (जोतना) भ्वा० प० सक० सेट् । हलति । अहालीत्.

हल, (न०) हल्यते (हल्यते) अनेन । हल्+घञ् कर्मणि च । लाङ्गल । हल.

हलधर, (पु०) हलं धारि (आयुधत्वेन) धृ+अच् । हलको शस्त्ररूपसे धारण करते हैं । बलराम । कृषक (खेतीकरनेहारा) । किसान (त्रि०)

हलभृति, (स्त्री०) हलेन (हलद्वारा) भृतिः । हल चलाकर निर्वाह जीविका.

हला, (स्त्री०) हेति सीयते । नाट्योक्तिमें सखीका संबोधन । सखा (सहेली) । पृथिवी । और जल (पानी)

हलायुध, (पु०) हलेन आयुधानि । आ+युध+क । हलसे लड़ाई करता है । बलदेव.

हलाहल, (पु०) हलेन हल आहलति (स्पर्धते) । हलके समान दिखता है । आ+हल+अच् । [illegible] विष (जहर)

हलिन्, (पु०) हल अस्ति यस्य आयुध [illegible] । जिसका हल शस्त्र है । बलराम । कृषक (किसान) (त्रि०)

हल्य, (त्रि०) हलं (हलकर्षं) अर्हति । [illegible] । हलसे [illegible] । [illegible] "[illegible]" [illegible] (स्त्री०)

हव, (पु०) हु+अप् । ह्वे+अप् । [illegible] । यज्ञ । आह्वान (बुलाना) । होम । और आह्वान (बुलाना).

हवन, (न०) हु+ल्युट् । होम । [illegible] [illegible] (अन्न) [illegible]

हवनी, (स्त्री०) हूयते अस्यां । हु+ल्युट् । [illegible] है [illegible] । [illegible]

हवनीय, (त्रि०) [illegible]

हविर्धान, (न०) [illegible]

हविष्, (न०) हूयते । हु+इसि [illegible] है (घी) । [illegible]

हव्य, (न०) [illegible]

हव्यवाह, (पु०) हव्यं वहति देवेभ्यः । [illegible] जोके पास होमके पदार्थोंको पहुंचाता है । [illegible]

हस्, हसन, (हसना) भ्वा० प० अ० सेट् । [illegible] (दांत दिखाकर [illegible]

ह (हा) स, (पु०) हस्+अच् [illegible] । [illegible] (विहसना).

हसन, (न०) हस्+ल्युट् । [illegible] और [illegible] ([illegible]) । [illegible]

हसन्ती, (स्त्री०) हस्+शतृ ङीप् । [illegible] (त्रि०) । [illegible]

हसित, (न०) हस्+क्त भावे च । [illegible] । [illegible] । [illegible].

हस्त, (पु०) हसति+तन् । [illegible] [illegible] । [illegible] (स्त्री०).

हस्तामलक, (न०) [illegible]

[illegible]

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु)। हा+ल्युट्-नि०। ब्रीहि। धान। (भावे) जहाति। वत्सर (वरिस)। आगकी लाट (स्त्री०).

हार, (पु०) हृ+कर्मणि घञ्। एकप्रकारकी मोतिओंकी माला। माला। "कर्तरि+घञ्"। बाँटनेहारा। भाजक.

हारक, (पु०) हृ+ण्वुल्। चोर-धूर्त। सचरा। भाजक अंक। चुरानेहारा (त्रि०).

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली। हारकी नाईं कतार। मुक्तावली (मोतिओंका हार)। "शृङ्गारहारावली" इति गंगास्तव। पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोष.

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्त+अण्। कदम्ब (कदम) का वृक्ष, (इसका फूल बहुत पीला होता है)। हरदीसे रंगाहुआ (त्रि०).

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि। हृ+णिनि वा। हारक (चुरानेहारा)। हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु०) हृ+णिच्+इतच्। एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा। एक पक्षी (मैना)। और कितव (धूर्तसचरा).

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण्। "हृद्" का आदेश होता है। स्नेह (पियार)। प्रेम। "हृदि भवः विहितो वा अण्"। हृदयसे हुआ या जानागया। हृदयका या हृदयमें जानाहुआ (त्रि०).

हार्य, (पु०) हियतेऽसौ। हृ+ण्यत्। बिभीतक वृक्ष (बहेड़ा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०).

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण्। हल एव वा+अण्। हलवाला। बलराम। और हल.

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ्। मद (नशा)। तालरसकी शराब.

हालाहल, (पु० न०) हालेन हलति। हल्+अच्। एकप्रकारका विष (जहिर)। एक कीड़ा। मद्य (स्त्री०) टीप्.

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है)। हलवाहक (हलसेखनेहारा)। किसान। "हलः प्रहरणं अस्य" हल जिसका शस्त्र है। हलसे युद्धकरनेहारा। "हलस्य इदं वा ठक्-ठञ्" हलका.

हाव, (पु०) ह्वे+घञ्। नि०। आह्वान (बुलाना)। स्त्रियोंकी शृङ्गारभावसे उपजी चेष्टा.

हास्तिक, (न०) हस्तिनां समूहः+ठक्। हाथियोंका समूह.

हास्तिन, (न०) हस्तिना (नृपेण) निर्मितं नगरं (अण्)। हस्तिनृपसे बनायागया। (हस्तिनापुर) दिल्ली.

हास्य, (न०) हस्+ण्यत्। हसना। अलंकारप्रसिद्ध रसविशेष.

हाहाकार, (पु०) हा हा इत्यस्य करणः। कृ+घञ्। हाहाकार। दुःख(कष्ट)का शब्द। रोनेकी आवाज.

हि, बढना और जाना। भ्वा० प० सक० अनिट्। हिनोति। अहैषीत्.

हि, (अव्य०) हा-हि वा+डि। हेतु (सबब)। अवधारण (निश्चय) विशेष। प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि)। शोक। श्लोकका पूराकरना.

हिंसक, (पु०) हिंस्+ण्वुल्। व्याघ्र (भेड़िया) आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु। और शत्रु (दुश्मन)। हिंसाकरनेहारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ। वध (मारना)। घातन (कतल करना)। किसीको प्राणोंसे अलग करना और चोरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र। हिंसाशील। मारनेवाला। घोर (डरावना).

हिक्क्, शब्दकरना। कूकना। भ्वा० उ० अ० सेट्। हिक्कति ते.

हिक्क्, हिंसा (मारना)। चु० आ० स० सेट्। हिक्कयते। अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री०)। हिक्क्+अ। एकप्रकारका रोग (हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिमं गच्छति। गम्+डु। नि। हींग्। रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिङ्ग होताहै).

हिण्ड्, गति (जाना)। घूमना। भ्वा० आ० स० सेट्। हिण्डते। हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनसे मारागया)। म्बा। उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (स्त्रियां टाप्).

हित, (त्रि०) धा+क्त। हि+क्त वा। गत (बीतगया)। पथ्य (हितकारी)। और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति। कृ+णिनि। शुभकारक। भलाईकरनेहारा। हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति। इष्+णिनि। हितकी इच्छा (चाह)करनेहारा। हितेच्छाकारी.

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः। भलाईका उपदेश। हितके लिये उपदेश। विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषयको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल्+घञ्। चु०। दोलन। झूलना। श्रावण (सावनमहीना) के शुक्लपक्षमें विधान कियाहुआ झूलनेसे भगवान्‌का झुलानारूप एकप्रकारका उत्सव। एक रागका नाम.

हिम, (न०) हि+मक्। आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कुहरा)। शीतस्पर्श (ठण्डा छूना)। तद्वाला (त्रि०)। छोटी इलायची। मालमोगरा (स्त्री०)। पद्मकाष्ठ (पाकर) और चंग (पोह) हेमन्तऋतु (सं हिम)। चंदनका वृक्ष। चन्द्र (चांद) और कपूर (पु०).

हिमकर, (पु०) हिमः करः (किरण) यस्य। जिसकी किरण ठंडे हैं। कृ+अच्। चन्द्र (चांद)। और कपूर.

हिमगिरि, (पु०) हिमप्रधानो गिरिः। हिमयुक्तो वा गिरिः। बरफका पहाड । या जहां बहुत बर्फ है। हिमालयका पहाड.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमं प्रस्थः यस्य। शीतल चोटीवाला। हिमालयका पर्वत (पहाड).

हिमवत्, (पु०) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्ति अस्य मतुप्। "म" को "व" होता है। जहां बहुत बर्फ होती है। हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त०। हिमसमूह। बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशवः अस्य। शीतलकिरणोंवाला। चंद्रमा। चांद। और कपूर। काफूर

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र। जिसमें बरफ आती है। अग्रहायणी (मग्गर) और पौष (पूस) रूप दो महीनोंका ऋतु (मौसिम).

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रेः जायते। जन्+ड। हिमालयमें उत्पन्न होती है। क्षीरिणी। पार्वती। और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त०। हिमालयकी पुत्री। दुर्गा। पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः। हिम+ङीप्-आनुक्च। हिमसमूह। बरफका ढेर। "आगता च अरेव हिमानी" रघुवंश..

हिमाराति, (पु०) ६ त०। बरफका शत्रु। सूर्य। आकका वृक्ष। आग.

हिमालय, (पु०) हिमानां आलयः। बरफोंका घर। एक पहाड.

हिमाब्ज, (न०) हिमकाले जायते अब्ज+ड। शीतल समय उपजता है। उत्पल। कमलपुष्प.

हिरण्मय, (त्रि०) हिरण्य+मयट्। नि०। सोनेका बनाहुआ। जिसमें सोना। "हिरण्मयी [illegible]" [illegible]। जो सबोंमेसे एक (न०)। ब्रह्माण्डमें रहनेवाला परम ब्रह्म। "स एष हिरण्मयः पुरुषो हृदये हिरण्मयः" छान्दोग्यम्

हिरण्य, (न०) हिरणमेव (स्वर्ण) रूप। सुवर्ण। सोना। धतूरा। धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक दैत्य (वह कश्यपसे [illegible] हुआ).

हिरण्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+क्विप्। ६ त०। हिरण्यकशिपुको मारनेवाला। विष्णु

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्य (स्वर्ण [illegible]) गर्भः अस्य। [illegible] ब्रह्म (वह [illegible]) [illegible]

हिरण्यरेतस्, (पु०) हिरण्य रेतः यस्य। [illegible] होता है। अग्नि (आग)। और शिवजी.

हि[illegible], (पु०) [illegible] (नाभी) [illegible] है। [illegible] (कस्तूरी)

हिरण्याक्ष, (पु०) कश्यपका पुत्र। एक दैत्य.

हिरुक्, (अ०) [illegible]

हिल्लोल, [illegible]

हिलोल, (पु०) [illegible]

हिव, [illegible]

हिडुम, (न०) [illegible]

हिम, [illegible]

ही, (अव्य०) [illegible]

हीन, [illegible]

हीनवादिन्, (पु०) [illegible]

हीरक, [illegible]

हीर, (न०) [illegible]

हु, [illegible]

हुताश, [illegible]

हुड, [illegible]

हुड, (पु०) [illegible]

हुम, [illegible]

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु) । हा+ल्यु-नि० । ब्रीहि । धान । (भावं) जहाति । बरस (बरिस) । आगकी लाट (स्त्री०).

हार, (पु०) हृ+कर्मणि घञ् । एकप्रकारकी मोतिओंकी माला । माला । "कर्तरि+घञ्" । बाँटनेहारा । भाजक.

हारक, (पु०) हृ+ण्वुल् । चोर- धूर्त । लबरा । भाजक अंक । चुरानेहारा (त्रि०).

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नाईं कतार । मुक्तावली (मोतिओंका हार) । "शृङ्गारहारावली" इति गंगास्तवः । पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोष.

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्त+अण् । कदम्ब (कदम) का वृक्ष, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हल्दीसे रँगाहुआ (त्रि०).

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि । हृ+णिनि वा । हारक (चुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु०) हृ+णिच्-इतच् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्तलबरा).

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । स्नेह (पिआर) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुआ वा जानागया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०).

हार्य, (पु०) ह्रियतेऽसौ । हृ+ण्यत् । विभीतक वृक्ष (बहेडा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०).

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण् । हल एव वा+अण् । हलवाला । बलराम । और हल.

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नशा) । तालरसकी । शराब.

हालाहल, (पु० न०) हालेव हलति । हल्+अच् । एकप्रकारका विष (जहिर) । एक कीडा । मर्या (स्त्री०) ङीप्.

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है) । हलकर्षक (हलखेचनेहारा) । किसान । "हलः प्रहरणं अस्य" हल जिसका शस्त्र है । हलसे युद्धकरनेहारा । "हलस्य इदं वा ठक्-ठन्" हलका.

हाव, (पु०) ह्वे+घञ् । नि० । आह्वान (बुलाना) । स्त्रियोंकी शृङ्गारभावसे उपजी चेष्टा.

हास्तिक, (न०) हस्तिनां समूहः+ठण् । हाथिओंका समूह.

हास्तिन, (न०) हस्तिना (नृपेण) निर्वृत्तं नगरं (अण्) । हस्तिराजासे बनायागया । (हस्तिनापुर) दिल्ली.

हास्य, (न०) हस्+ण्यत् । हसना । अलंकारका रसविशेष.

हाहाकार, (पु०) हा हा इत्यस्य कारः । कृ+घञ् । हाहाकरना । युद्ध(लडाई)का शब्द । शोककी आवाज.

हि, बढना और जाना । स्वा० प० सक० अनिट् । हिनोति । अहैषीत्.

हि, (अव्य०) हा-हि धा+डि । हेतु (सबब) । अवधारण (निश्चय)विशेष । प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि) । शोक । श्लोकका पूराकरना.

हिंसक, (पु०) हिंस्+ण्वुल् । व्याघ्र (भेडिया)आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसाकरनेहारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ । वध (मारना) । घातन (कत्ल करना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और चोरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर (डरावना).

हिक्क्, शब्दकरना । कूकना । भ्वा० उ० अ० सेट् । हिक्कति ते.

हिक्क्, हिंसा (मारना) । चु० आ० स० सेट् । हिक्कयते । अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री०) । हिक्क्+अ । एकप्रकारका रोग(हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिमं गच्छति । गम्+डु । नि । ङीष् । रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिङ्ग होताहै).

हिड, गति (जाना) । घूमना । भ्वा० आ० स० सेट् । इदित् । हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनने मारागया) । म्बा । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (स्त्रियां टाप्).

हित, (त्रि०) धा+क्त । हि+क्त वा । गत (बीतगया) । पथ्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । कृ+णिनि । शुभकारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इष्+णिनि । हितकी इच्छा (चाह)करनेहारा । हितेच्छाकारी.

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषयको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल्+घञ् । चु० । दोलन । झूलना । श्रावण(सावनमहीना)के शुक्लपक्षमें विधान कियाहुआ झूलनेसे भगवान्का झुलानारूप एकप्रकारका उत्सव । एक रागका नाम.

हिम, (न०) हि+मक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा) । शीतलस्पर्श (ठण्डा छूना) । ठण्डाला (त्रि०) । छोटी इलायची । नागरमोथा (स्त्री०) । अग्रहायण (मग्गर) और पौष (पोह) स्वरूपऋतु (मौसिम) । चंदनका वृक्ष । चन्द्र (चांद) और कापूर (पु०).

हिमकर, (पु०) हिमः करः (किरणः) यस्य । जिसकी किरण बर्फ है । कृ+अच् । चन्द्र (चांद) । और कापूर.

हिमगिरि, (पु०) हिममयो गिरिः। हिमप्रधानो वा गिरिः। बर्फका पहाड़। वा जहां बहुत बर्फ है। हिमालयका पहाड़.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमः प्रस्थः यस्य। शीतल चोटीवाला। हिमालयका पर्वत (पहाड़).

हिमवत्, (पु०) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्ति अत्र+मतुप्। "म" को "व" होता है। जहां बहुत बर्फ होती है। हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त०। हिमसमूह। बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशवः यस्य। शीतलकिरणोंवाला। चंद्रमा। चांद। और कपूर। काफूर.

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र। जिसमें बरफ आती है। अग्रहायणी (मगसर) और पौष (पूस) स्वरूप दो महीनोंका ऋतु (मौसिम).

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रौ जायते। जन्+ड। हिमालयमें उत्पन्न होती है। क्षीरिणी। पार्वती। और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त०। हिमालयकी पुत्री। दुर्गा। पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः। हिम+ङीष्-आनुक्। हिमसमूह। बरफका ढेर। "आगता बत जरेव हिमानी" लुकुट.

हिमाराति, (पु०) ६ त०। बरफका शत्रु। सूर्य। आकका वृक्ष। आग.

हिमालय, (पु०) हिमानां आलयः। बरफोंका घर। एक पहाड़.

हिमाब्ज, (न०) हिमकाले जायते जन्+ड। शीतके समय उपजता है। कमल। कमलफूल.

हिरण्मय, (त्रि०) हिरण्यात्मकं+मयट्। नि०। सोनेका बनाहुआ। स्त्रियां ङीप्। "हिरण्मयी सीताप्रतिकृति" उत्तररामचरितम्। नी बर्योंसे एक (न०)। सूर्यमण्डलमें रहनेहारा परम ब्रह्म। "य एष हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते हिरण्यात्मा" छान्दोग्यम्.

हिरण्य, (न०) हिरणमेव (स्वार्थे) यत्। सुवर्ण। सोना। धतूरा। धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक दैत्य (वह कश्यपसे दितिमें हुआ).

हिरण्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+क्विप्। ६ त०। हिरण्यकशिपुको मारनेहारा। विष्णु.

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्य (स्वर्णभाण्डं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) अस्य। सोनेके अंडेसे निकला। चारमुखवाला ब्रह्मा (वह सोनेके अंडेसे निकला था)। शालग्राममूर्तिविशेष.

हिरण्यरेतस्, (पु०) हिरण्यं रेतः यस्य। जिसका वीर्य सोना है। वह्नि (आग)। और चित्रकवृक्ष.

हिरण्यबाहु, (पु०) हिरण्यं बाहयति (प्रापयति) [illegible] सोना पहुंचाता है। "हिरण्यबाहुरिव [illegible]" सोनेकी भुजाके समान जिसके [illegible] है। महादेव। शोणनामी एक नद ([illegible]).

हिरण्याक्ष, (पु०) कश्यपका पुत्र। एक दैत्य.

हिरुक्, (अ०) हि+रुक्किप्-रुट् च। वर्जन (रोकना)। [illegible]

हिल्लोल, [illegible] (झूलना) चु० उ० स० सेट्। हिल्लोलयति-ते.

हिल्लोल, (पु०) हिल्लोल्+अच्। तरंग (लहर)+घञ्। [illegible]

हिव, प्रीणन (प्रसन्न करना) भ्वा० प० स० सेट्। हिन्वति। हिन्वति। अहिन्वीत्.

हिबुक, (न०) हि+बुकक्। नि०। ज्योतिषमें लग्नसे चौथा [illegible].

हिंस, वध (मारना) वा चु० उ० रुधा० प० सक० सेट्। हिनस्ति हिंसति। हिंसयति-ते। अहिंसीत्। अजिहिंसत्-त.

ही, (अव्य०) हि+डी। विस्मय (हैरानी)। दुःख। विषाद ([illegible])। और शोक.

हीन, (त्रि०) ही+क्त। "त" को "न" होता है। ऊन (कम)। त्यागके लायक। और अधम (नीच).

हीनवादिन्, (पु०) कर्म०। पूर्ववाद (पहिला झगड़ा) को छोड़कर [illegible] किसी औरका अवलम्बन करता है। अगले [illegible] छोड़ कर किसी दूसरे विषयमें चलनेहारा। [illegible] वादी (मुद्दई) धर्मशास्त्रमें.

हीनाङ्ग, (त्रि०) हीनं अङ्गं यस्य। स्वभावसे न्यून (कम) अंगवाला। अंधा। लंगड़ा। लूलाआदि। स्त्रियां वा ङीप्.

हीर, (न०) ह+क। नि०। वज्र। और हीरा। शिव। सांप। हार। और सिंह (शेर) (पु०)। स्वार्थे कन्। हीरक [illegible].

हु, होमकरना ([illegible]) जुहो० प० सक० [illegible] जुहोति। अहौषीत्.

हुङ्कार, (पु०) [illegible] हुमित्यस्य कारः। हुं+घञ्। [illegible] प्रतिषेधसूचक (रोकको जतानेहारा) शब्द [illegible]। "[illegible] महाकहं हुङ्कारैरिव [illegible]"

हुड़, [illegible] ([illegible]) भ्वा० आ० स० सेट्। [illegible]

हुड, (पु०) [illegible]। मेष (बकरा)। चोरको रोकनेके लिये [illegible] लोहेका कील (मेख).

हुत, (त्रि०) [illegible]। देवताके उद्देशसे अग्निमें डाला [illegible] होमकियाहुआ "[illegible]"

होम (न०) [illegible]

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु) । हा+ल्यु-नि० । ब्रीहि । धान । (भावं) जहाति । वत्सर (वरिस) । आगकी लाट (स्त्री०).

हार, (पु०) हृ+कर्मणि घञ् । एकप्रकारकी मोतिओंकी माला । माला । "कर्तरि+घञ्" । बाँटनेहारा । भाजक.

हारक, (पु०) हृ+ण्वुल् । चोर- धूर्त । लबरा । भाजक अंक । चुरानेहारा (त्रि०).

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नाई कतार । मुक्तावली (मोतिओंका हार) । "शृङ्गारहारावली" इति गंगास्तवः । पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोष.

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्तः+अण् । कदम्ब (कदम) का दरख्त, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हल्दीसे रँगाहुआ (त्रि०).

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि । हृ+णिनि वा । हारक (चुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु०) हृ+णिच्-इतच् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्तलबरा).

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । स्नेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुआ या जानागया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०).

हार्य, (पु०) ह्रियतेऽसौ । हृ+ण्यत् । विभीतक वृक्ष (बहेडा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०).

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण् । हल एव वा+अण् । हलवाला । बलराम । और हल.

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नशा) । तालरसकी शराब.

हालाहल, (पु० न०) हालेन हलति । हल्+अच् । एकप्रकारका विष (जहिर) । एक कीडा । अर्थ (स्त्री०) ङीप्.

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है) । हलकर्षक (हलसेचलनेहारा) । किसान । "हलः प्रहरणं अस्य" हल जिसका शस्त्र है । हलसे युद्धकरनेहारा । "हलस्य इदं वा ठक्-ठञ्" हलका.

हाव, (पु०) ह्वे+घञ् । नि० । आह्वान (बुलाना) । स्त्रियोंकी शृङ्गारभावसे उपजी चेष्टा.

हास्तिक, (न०) हस्तिनां समूहः+ठण् । हाथिओंका समूह.

हास्तिन, (न०) हस्तिना (नृपेण) निर्वृत्तं नगरं (अण्) । हस्तिराजासे बनायागया । (हस्तिनापुर) दिल्ली.

हास्य, (न०) हस्+ण्यत् । हसना । अलंकारका रसविशेष.

हाहाकार, (पु०) हा हा इत्यस्य कारः । कृ+घञ् । हाहाकरना । युद्ध (लडाई) का शब्द । शोककी आवाज.

हि, बढना और जाना । स्वा० प० सक० अनिट् । हिनोति । अहैषीत्.

हि, (अव्य०) हा-हि वा+डि । हेतु (गरज) । अवधारण- (निश्चय) विशेष । प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि) । शोक । श्लोकका पूराकरना.

हिंसक, (पु०) हिंस्+ण्वुल् । व्याघ्र (भेडिया) आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसाकरनेहारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ । वध (मारना) । घातन (कतलकरना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और जोरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर (डरावना).

हिक्, शब्दकरना । कूकना । भ्वा० उ० अ० सेट् । हिक्कति-ते.

हिक्क्, हिंसा (मारना) । चु० आ० स० सेट् । हिक्कयते । अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री०) । हिक्क्+अ । एकप्रकारका रोग (हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिमं गच्छति । गम्+डु । नि । हींङ् । रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिङ्ग होताहै).

हिण्ड्, गति (जाना) । घूमना । भ्वा० आ० स० सेट् । इदित् । हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनने मारागया) । स्त्री । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (स्त्रियां टाप्).

हित, (त्रि०) धा+क्त । हि+क्त वा । गत (बीतगया) । पथ्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । कृ+णिनि । शुभकारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इष्+णिनि । हितकी इच्छा (चाह) करनेहारा । हितेच्छाकारी.

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेश. । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषयको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल्+घञ् । वृ० । दोलन । झूलना । श्रावण (सावनमहीना) के शुक्लपक्षमें विधान कियाहुआ झूलनेसे भगवान्‌का झुलानारूप एकप्रकारका उत्सव । एक रागका नाम.

हिम, (न०) हि+मक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा) । शीतस्पर्श (ठण्डा छूना) । उसवाला (त्रि०) । छोटी इलायची । नागरमोथा (स्त्री०) । अग्रहायण (मागर) और पौष (पोह) स्वरूपऋतु (मौसिम) । चंदनका दरख्त । चन्द्र (चांद) और कापूर (पु०).

हिमकर, (पु०) हिमः करः (किरण) यस्य । जिसकी किरण ठंडी है । कृ+अच् । चन्द्र (चांद) । और कापूर.

हिमगिरि, (पु०) हिमस्य गिरिः । हिमप्रधानो वा गिरिः । बरफका पहाड । वा जहां बहुत बर्फ है । हिमालय पहाड.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमः प्रस्थः यस्य । शीतल चोटीवाला । हिमालयका पर्वत (पहाड).

हिमवत्, (पु०) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्ति अस्य+ मतुप् । "म" को "व" होता है । जहां बहुत बर्फ होती है । हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त० । हिमसमूह । बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशवः यस्य । शीतलकिरणों वाला । चंद्रमा । चांद । और कपूर । काफूर.

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र । जिसमें बरफ आती है । अगहायनी (अगहन) और पौष (पूस) स्वरूप दो महीनोंका ऋतु (सौशिर).

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रौ जायते । जन्+ड । हिमालयमें उत्पन्न होती है । खोरिकी । पार्वती । और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त० । हिमालयकी पुत्री । दुर्गा । पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः । हिम+ङीप्-आनुक् । हिमसमूह । बरफका ढेर । "आगता बत अरेव हिमानी" सुभद्र.

हिमाराति, (पु०) ६ त० । बरफका शत्रु । सूर्य । आकका दरख्त । आग.

हिमालय, (पु०) हिमानां आलयः । बरफोंका घर । एक पहाड.

हिमाह्व, (न०) हिमकाले जायते जन्+ड । शीतके समय बरसता है । कमल । कमलफूल.

हिरण्मय, (त्रि०) हिरण्यात्मकं+मयट् । नि० । सोनेका बनाहुआ । स्त्रियां ङीप् । "हिरण्मयी सीताप्रतिकृतिः" उत्तररामचरितम् । नौ वर्षोमेंसे एक (न०) । सूर्यमण्डलमें रहनेहारा परम ब्रह्म । "य एष हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते हिरण्यश्मश्रु" छान्दोग्यम्.

हिरण्य, (न०) हिरणमेव (स्वार्थे) यत् । सुवर्ण । सोना । धतूरा । धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक दैत्य (यह कश्यपसे दितिमें हुआ).

हिरण्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+क्विप् । ६ त० । हिरण्यकशिपुको मारनेहारा । विष्णु.

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्यं (स्वर्णमाण्डं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) अस्य । सोनेके अंडेसे निकला । चारमुखवाला ब्रह्मा (वह सोनेके अंडेसे निकला था) । स्थूलप्रपञ्चमूर्तिविशेष

हिरण्यरेतस्, (पु०) हिरण्यं रेतः यस्य । जिसका वीर्य सोना है । वह्नि (आग) । और चित्र

हिरण्यबाहु, (पु०) हिरण्यं बाहरति (प्रापयति) ... सोना पहुंचाता है । "हिरण्यबाहुः ..." । सोनेकी भुजाके समान जिसके ... (...) हैं । महादेव । सोननामी एक नद (...).

हिरण्याक्ष, (पु०) कश्यपका पुत्र । एक दैत्य.

हिरुक्, (अ०) हि+उकिन्-रुट् च । वर्जन (रोकना) । ...

हिलोल्, ... (...) पु० उ० स० सेट् । हिलोलयति-ते.

हिलोल, (पु०) हिलोल+अच् । तरंग (लहर)+घञ् । ...

हिव्, प्रीणन (प्रसन्नकरना) भ्वा० प० स० सेट् । हिन्वति । ... हिन्वीव्.

हिबुक, (न०) हिवि+उकक् । नि० । ज्योतिषमें लग्नसे चौथा स्थान.

हिंस्, वध (मारना) अ० पु० उ० रुधा० प० सक० सेट् । हिनस्ति । हिंसयति-ते । अहिंसीत् । अजिहिंसत्-त.

ही, (अव्य०) हि+डी । विस्मय (हैरानी) । दुःख । विषाद (...) । और शोक.

हीन, (त्रि०) हा+क्त । "त" को "न" होता है । ऊन (कम) । निन्दाके लायक । और अधम (नीच).

हीनयानिक, (पु०) कर्म० । पूर्ववाद (पहिला झगडा) को छोडकर ... किसी औरका अवलम्बन करता है । अपनी ... छोड कर किसी दूसरे विषयमें चलनेवाला । ... वादी (मुद्दई) धर्मशास्त्रमें.

हीनाङ्ग, (त्रि०) हीनं अङ्गं यस्य । स्वभावसे न्यून (कम) अंगवाला । ... । लंगडा । लूला आदि । स्त्रियां वा ङीप्.

हीर, (न०) ... । नि० । वज्र । और हीरा । सिंह । सांप । हार । और सिंह (शेर) (पु०) । स्वार्थे कन् । हीरक एक ... .

हु, होमकरना (अग्निमें घी आदिका डालना) । जुहो० प० सक० ... । अहौषीत्.

हुङ्कार, (पु०) ... हुम्+कार । हु+घञ् । उप० ... प्रतिरोधसूचक (रोकको जतानेहारा) शब्द ... "... महाकवे हुङ्कारेणापि ..." ... .

हुड्, ... (...) भ्वा० आ० स० सेट् । हुडित । हुडते.

हुड, (पु०) ... रोकनेके लिये ...

हुन, ...

हायन, (पु०) जहाति (अनु) । हा+ल्यु-नि० । नीति । धान । (भावे) जहाति । वत्सर (वरिस) । आगकी ज्वाट (स्त्री०).

हार, (पु०) हृ+कर्मणि घञ् । एकप्रकारकी मोतिओंकी माला । माला । "कर्तरि+घञ्" । बाँटनेहारा । भाजक.

हारक, (पु०) हृ+ण्वुल् । चोर- धूर्त । राचरा । भाजक अंक । चुरानेहारा (त्रि०).

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नाईं कतार । मुक्तावली (मोतिओंका हार) । "शृङ्गारहारावली" इति गंगास्तवः । पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोष.

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्तः+अण् । कदम्ब (कदम) का वृक्ष, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हल्दीसे रँगाहुआ (त्रि०).

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि । हृ+णिनि वा । हारक (चुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु०) हृ+णिच्-इतच् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्तरचरा).

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । स्नेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुआ या जानागया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०).

हार्य, (पु०) ह्रियतेऽसौ । हृ+ण्यत् । विभीतक वृक्ष (बहेडा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०).

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण् । हल एव वा+अण् । हलवाला । बलराम । और हल.

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नशा) । तालरसकी । शराब.

हालाहल, (पु० न०) हालेव हलति । हल्+अच् । एकप्रकारका विष (जहिर) । एक कीडा । मद्य (स्त्री०) ङीप्.

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है) । हलकर्षक (हलखेचनेहारा) । किसान । "हलः प्रहरणं अस्य" हल जिसका शस्त्र है । हलसे युद्धकरनेहारा । "हलस्य इदं वा ठक्-ठञ्" हलका.

हाव, (पु०) ह्वे+घञ् । नि० । आह्वान (बुलाना) । स्त्रियोंकी शृङ्गारभावसे उपजी चेष्टा.

हास्तिक, (न०) हस्तिनो समूहः+ठञ् । हाथिओंका समूह.

हास्तिन, (न०) हस्तिना (नृपेण) निर्वृत्तं नगरं (अण्) । हस्तिराजासे बनायागया । (हस्तिनापुर) दिल्ली.

हास्य, (न०) हस्+ण्यत् । हसना । अलंकारका रसविशेष.

हाहाकार, (पु०) हा [redacted] इत्यस्य कारः । कृ+घञ् । हाहाकरना । युद्ध(लडाई)का शब्द । शोककी आवाज.

हि, बढना और जाना । स्वा० प० सक० अनिट् । हिनोति । अहैषीत.

हि, (अव्य०) हा-डि वा+डि । हेतु (सबब) । अवधारण (निश्चय)विशेष । प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (कथन) । शोक । श्लोकका पूरणकरना.

हिंसक, (पु०) हिंस्+ण्वुल् । व्याघ्र (भेडिया)आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसाकरनेहारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ । वध (मारना) । घातन (कतल करना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और चोरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर (डरावना).

हिक्, शब्दकरना । कूकना । भ्वा० उ० अ० सेट् । हिक्कति ते.

हिक्क्, हिंसा (मारना) । चु० आ० स० सेट् । हिक्कयते । अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री०) । हिक्क्+अ । एकप्रकारका रोग(हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिंगं गच्छति । गम्+डु । नि । हींङ् । रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिङ्ग होताहै).

हिण्ड, गति (जाना) । घूमना । भ्वा० आ० स० सेट् । इदित् । हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनसे मारागया) । म्बा । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (स्त्रियां टाप्).

हित, (त्रि०) धा+क्त । हि+क्त वा । गत (बीतगया) । पथ्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । कृ+णिनि । शुभकारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इष्+णिनि । हितकी इच्छा (चाह)करनेहारा । हितेच्छाकारी.

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषयको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल्+घञ् । दृ० । दोलन । झूलना । श्रावण(सावनमहीना)के शुक्लपक्षमें विधान कियाहुआ झूलनेसे भगवान्का झुलानारूप एकप्रकारका उत्सव । एक रागका नाम.

हिम, (न०) हि+मक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा) । शीतलस्पर्श (ठण्डा छूना) । उसवाला (त्रि०) । छोटी इलाइची । नागरमोथा (स्त्री०) । अग्रहायण (मग्घर) और पौष (पोह) स्वरूपऋतु (मौसिम) । चंदनका वृक्ष । चन्द्र (चांद) और काफूर (पु०).

हिमकर, (पु०) हिमः करः (किरणः) यस्य । जिसकी किरण बर्फ है । कृ+अच् । चन्द (चांद) । और काफूर.

हिमगिरि, (पु०) हिमस्य गिरिः। हिमप्रधानो वा गिरिः। बरफका पहाड । वा जहां बहुत बर्फ है। हिमालयका पहाड.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमः प्रस्थः यस्य। शीतल चोटीवाला। हिमालयका पर्वत (पहाड).

हिमवत्, (पु०) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्ति अस्मिन् मतुप्। "म" को "व" होता है। जहां बहुत बर्फ होती है। हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त०। हिमसमूह। बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशवः अस्य। शीतलकिरणोंवाला। चंद्रमा। चांद। और कपूर। काफूर.

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र। जिसमें बरफ आती है। अग्रहायणी (मगहर) और पौष (पूस) स्वरूप दो महीनोंका ऋतु (मौसिम).

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रौ जायते। जन्+ड। हिमालयमें उत्पन्न होती है। क्षीरिणी। पार्वती। और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त०। हिमालयकी पुत्री। दुर्गा। पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः। हिमस्+ङीप्-आनुक्च। हिमसमूह। बरफका ढेर। "आगता चन जरेव हिमानी" रघुवंश.

हिमाराति, (पु०) ६ त०। बरफका शत्रु। सूर्य। आकका वृक्ष। आग.

हिमालय, (पु०) हिमानां आलयः। बरफोंका घर। एक पहाड.

हिमाब्ज, (न०) हिमकाले जायते अप्+ड। शीतके समय बरसता है। उत्पल। कमलफूल.

हिरण्मय, (वि०) हिरण्यात्मक+मयट्। वि०। सोनेका बनाहुआ। स्त्री ङीप्। "हिरण्मयी सीताप्रतिकृति" उत्तररामचरितम्। भी धर्मोंमेंसे एक (न०)। सूर्यमण्डलमें रहनेहारा परम ब्रह्म। "य एष हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते हिरण्यश्मश्रुः" छान्दोग्यम्.

हिरण्य, (न०) हिरणमेव (स्वार्थे) यत्। सुवर्ण। सोना। धतूरा। धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक दैत्य (यह कश्यपसे दितिमें हुआ).

हिरण्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+क्विप्। ६ त०। हिरण्यकशिपुको मारनेहारा। विष्णु.

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्यं (स्वर्णाण्डं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) अस्य। सोनेके अंडेसे निकला। चारमुखवाला ब्रह्मा (वह सोनेके अंडेसे निकला था)। शालग्राममूर्त्तिविशेष.

हिरण्यरेतस्, (पु०) हिरण्यं रेतः यस्य। जिसका वीर्य सोना है। वह्नि (आग)। और चित्रकवृक्ष.

हिरण्यबाहु, (पु०) हिरण्यं वाहयति (प्रापयति) -अन्तर्[illegible] सोना पहुंचाता है। "हिरण्यबाहोः [illegible]" सोनेकी भुजाके समान जिसके [illegible] है। महादेव। शोणनामी एक नद ([illegible]).

हिरण्याक्ष, (पु०) कश्यपका पुत्र। एक दैत्य.

हिरुक्, (अ०) [illegible]। वर्जन (रोकना)। [illegible]

हिलोड़ [illegible] ([illegible]) चु० उ० स० सेट्। हिलोडयति-ते.

हिल्लोल, (पु०) हिल्लोल्+अच्। तरंग (लहर)+घञ्। [illegible]

हिव्, प्रीणन ([illegible]) भ्वा० प० स० सेट्। हिन्वति। हिन्वति। अहिन्वीत्.

हिवुक, (न०) हिवि+उकञ्। नि०। ज्योतिषमें लग्नसे चौथा स्थान.

हिंस, वध (मारना) वा चु० उ० रुधा० प० सक० सेट्। हिंसति-ते। हिंसयति-ते। अहिंसीत्। अजिहिंसत्-त.

ही, (अव्य०) [illegible]। विस्मय (हैरानी)। दुःख। विषाद ([illegible])। और शोक.

हीन, (वि०) हा+क्त। "त" को "न" होता है। ऊन (कम)। निन्दाके लायक। और अधम (नीच).

हीनवादिन्, (पु०) वदे०। पूर्ववाद (पहिला झगडा)। को छोड़कर, जो किसी औरका अवलम्बन करता है। अपनी प्रतिज्ञाको छोड कर किसी दूसरे विषयमें चलनेहारा। [illegible] वादी (मुद्दई) धर्मशास्त्रमें.

हीनाङ्ग, (पु०) हीनं अङ्गं यस्य। स्वभावसे न्यून (कम) अंगवाला। अंधा। लंगडा। कुबडा आदि। स्त्रियां वा ङीप्.

हीर, (न०) [illegible]। वि०। वज्र। और हीरा। शिर। सांप। हार। और सिंह (शेर) (पु०)। स्वार्थे कन्। हीरक [illegible].

हु, होमकरना (अग्नी घीआदिका डालना)। जुहो० प० सक० [illegible]। अहौषीत्.

हुङ्कार, (पु०) [illegible] हुङ्कार+कारः। हु+घञ्। उप० [illegible] (रोकने जतानेहारा) [illegible] "[illegible] महाहवे हुङ्कारेणापि [illegible]"

हुड़, [illegible] ([illegible]) भ्वा० आ० स० सेट्। [illegible]

हुड, (पु०) [illegible] मेष (बादल)। चोरको रोकनेके लिये [illegible] लोहेका कील (मेख)

हुत, (वि०) [illegible] देवताके उद्देशसे मन्त्रपढकर अग्निमें [illegible]। होमकियाहुआ "भरे च" होम (न०) [illegible]

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु) । हा+ल्यु-नि० । ब्रीहि धान । (भावं) जहाति । वत्सर (बरिस) । आगकी लाट (स्त्री०).

हार, (पु०) हृ+कर्मणि घञ् । एकप्रकारकी मोतिओंकी माला । माला । "कर्तरि+घञ्" । बाँटनेहारा । भाजक.

हारक, (पु०) हृ+ण्वुल् । चोर- धूर्त । सचरा । भाजक अंक । चुरानेहारा (त्रि०).

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नाईं कतार । मुक्तावली (मोतिओंका हार) । "शृङ्गारहारावली" इति गंगास्तवः । पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोष.

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्त+अण् । कदम्ब (कदम) का दरख्त, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हरदीसे रँगाहुआ (त्रि०).

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि । हृ+णिनि वा । हारक (चुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु०) हृ+णिच्+इतच् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्तसचरा).

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । स्नेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुआ वा जानागया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०).

हार्य, (पु०) ह्रियतेऽसौ । हृ+ण्यत् । विभीतक वृक्ष (बहेड़ा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०).

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण् । हल एव वा+अण् । हलवाला । बलराम । और हल.

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नशा) । तालरसकी शराब.

हालाहल, (पु० न०) हालेव हलति । हल्+अच् । एकप्रकारका विष (जहिर) । एक कीडा । मर्या(.स्त्री०) ङीप्.

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है) । हलकर्षक (हलखैंचनेहारा) । किसान । "हलः प्रहरणं अस्य" हल जिसका शस्त्र है । हलसे युद्धकरनेहारा । "हलस्य इदं वा ठक्-ठञ्" हलका.

हाव, (पु०) ह्वे+घञ् । नि० । आह्वान (बुलाना) । स्त्रियोंकी शृङ्गारभावसे उपजी चेष्टा.

हास्तिक, (न०) हस्तिनां समूहः+ठञ् । हाथिओंका समूह.

हास्तिन, (न०) हस्तिना (नृपेण) निर्वृत्तं नगरं (अण्) । हस्तिराजासे बनायागया । (हस्तिनापुर) दिल्ली.

हास्य, (न०) हस्+ण्यत् । हसना । अलंकारका रसविशेष.

हाहाकार, (पु०) हा [illegible] हास्य कारः । कृ+घञ् । हाहाकरना । युद्ध(लड़ाई)का शब्द । शोककी आवाज.

हि, बढना और जाना । स्वा० प० सक० अनिट् । हिनोति । हिनुतः । हैषीत्.

हि, (अव्य०) हा-हि वा+डि । हेतु (गरज) । अवधारण(निश्चय)विशेष । प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि) । शोक । श्लोकका पूराकरना.

हिंसक, (पु०) हिंस्+ण्वुल् । व्याघ्र (भेड़िया)आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसाकरनेहारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ । वध (मारना) । घातन (कतलकरना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और जोरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर (डरावना).

हिक्, शब्दकरना । कूकना । भ्वा० उ० अ० सेट् । हिक्कति-ते.

हिक्क्, हिंसा (मारना) । चु० आ० स० सेट् । हिक्कयते । अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री०) । हिक्क्+अ । एकप्रकारका रोग(हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिंसं गच्छति । गम्+डु । नि । हींग् । रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिङ्ग होताहै).

हिण्ड, गति (जाना) । घूमना । भ्वा० आ० स० सेट् । हिण्डते । हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनसे मारागया) । भ्वा । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (स्त्रियां टाप्).

हित, (त्रि०) धा+क्त । हि+क्त वा । गत (बीतगया) । पथ्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । कृ+णिनि । शुभकारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इष्+णिनि । हितकी इच्छा (चाह)करनेहारा । हितेच्छाकारी.

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषयको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल्+घञ् । पु० । दोलन । झूलना । श्रावण(सावनमहीना)के शुक्लपक्षमें विधान कियाहुआ झूलनेसे भगवान्‌का झुलानारूप एकप्रकारका उत्सव । एक रागका नाम.

हिम, (न०) हि+मक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा) । शीतलस्पर्श (ठण्डा छूना) । उसवाला (त्रि०) । छोटी इलायची । नागरमोथा (स्त्री०) । अग्रहायण (मग्गर) और पौष (पोह) स्वरूपऋतु (मौसिम) । चंदनका दरख्त । चन्द्र (चांद) और काफूर (पु०).

हिमकर, (पु०) हिमः करः (किरणः) यस्य । जिसकी किरण बर्फ है । कृ+अच् । चन्द्र (चांद) । और काफूर.

हिमगिरि, (पु॰) हिमस्य गिरिः । हिमप्रधानो वा गिरिः । बर्फका पहाड़ । वा जहां बहुत बर्फ है । हिमालयका पहाड़.

हिमप्रस्थ, (पु॰) हिमं प्रस्थः यस्य । शीतल चोटीवाला । हिमालयका पर्वत (पहाड़).

हिमवत्, (पु॰) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्मिन् अस्त्य मतुप् । "म" को "व" होता है । जहां बहुत बर्फ होती है । हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री॰) ६ त॰ । हिमसमूह । बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु॰) हिमाः अंशवः यस्य । शीतलकिरणोंवाला । चंद्रमा । चांद । और कपूर । काफूर.

हिमागम, (पु॰) हिमस्य आगमः यत्र । जिसमें बरफ आती है । अगहायणी (अगहन) और पौष (पूस) रूप दो महीनोंका ऋतु (शीतऋतु).

हिमाद्रिजा, (स्त्री॰) हिमाद्रौ जायते । जनुःड । हिमालयमें उत्पन्न होती है । क्षीरिणी । पार्वती । और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री॰) ६ त॰ । हिमालयकी पुत्री । दुर्गा । पार्वती.

हिमानी, (स्त्री॰) हिमानां संहतिः । हिम-ङीप्-आनुगम । हिमसमूह । बरफका ढेर । "आयता बत सदैव हिमानी" गुरुड .

हिमाराति, (पु॰) ६ त॰ । बरफका शत्रु । सूर्य । आकका वृक्ष । आग.

हिमालय, (पु॰) हिमानां आलयः । बरफोंका घर । एक पहाड़.

हिमाब्ज, (न॰) हिमकाले जायते अब्-ड । शीतके समय उपजता है । उत्पल । कमलफूल.

हिरण्मय, (त्रि॰) हिरण्यात्मकंमयट् । नि॰ । सोनेका बनाहुआ । त्रिशी लीए । "हिरण्मयी सीताप्रतिकृतिः" उत्तररामचरितम् । भी बर्तोंसे एक (न॰) । ब्रह्माण्डकमें रहनेहारा परम ब्रह्म । "स एष हिरण्मयः पुरुषो हरयते हिरण्यश्म " छ न्दोग्यम्.

हिरण्य, (न॰) हिरणमेव (स्वर्ण) यत् । सुवर्ण । सोना । धतूरा । धन.

हिरण्यकशिपु, (पु॰) एक दैत्य (यह बरसतसे हिरनके हुआ).

हिरण्यकशिपुसूदन, (पु॰) सूदयति । ६ त॰ । हिर ण्यकशिपुको मारनेहारा । विष्णु

हिरण्यगर्भ, (पु॰) हिरण्यं (स्वर्णाण्डं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) अस्य । सोनेके अंडेसे निकला । चतुर्मुख ब्रह्मा (वह सोनेके अंडेसे निकला था) । [illegible]

हिरण्यरेतस्, (पु॰) हिरण्य रेत यस्य । जिसका वीर्य सोना है । अग्नि (आग) । और शिवजी.

हिरण्याक्ष, ([illegible]) [illegible] । [illegible] । "[illegible] [illegible]" । [illegible] (नइस [illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] एक [illegible] ([illegible])

हिरण्याक्ष, ([illegible]) [illegible] पुत्र । एक दैत्य.

हिरन, ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible]

हिलोर; [illegible] ([illegible]) [illegible]

हिलोल, ([illegible]) [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible]

हिव, [illegible]

[illegible]

हसन, (पु०) हसना (क्रतु)। हस्+ल्युट्। हँसि। चन्न। (नर्म) हँसी। कन्दर (करीम)। [illegible] (स्त्री०).

हस, (पु०) हस्+कर्मणि घञ्। एकप्रकारकी मोतीओंकी माल। मन्द। "वर्ततिस्वत्" । कँटनेहारा। भावक.

हसक, (पु०) हस्+ण्वुल्। चोर-धूर्त। सनरा। भावक [illegible]। जुटनेहारा (त्रि०).

हस्तवती, (स्त्री०) हस्त इव लगनी। हस्तकी नाई कपट। कुटवती (मेतीओंका हार)। "[illegible]" इसी [illegible]। [illegible] एक चोर.

हस्तिक, (पु०) [illegible] (कमल) का [illegible], ([illegible] होता है)। [illegible] [illegible] (त्रि०).

हस्तिन्, (त्रि०) [illegible] [illegible]+इनि। ह+मिनि वा। [illegible] (मुनेहारा)। [illegible] और [illegible] (सुन्दर).

[illegible], (पु०) [illegible]। एक मुनि [illegible]। एक पक्षी (कैम)। और [illegible] ([illegible]).

हाँ, (अ०) [illegible] "हर" का आदेश होता है। [illegible] (विस्त)। [illegible]। "[illegible]" [illegible] [illegible] (त्रि०).

हार्द, (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) (त्रि०).

[illegible], (पु०) [illegible]। [illegible]। [illegible]

[illegible], (स्त्री०) [illegible] (अन्न)। [illegible]

[illegible], (पु० अ०) [illegible]। [illegible] ([illegible])। [illegible] (स्त्री०) [illegible]

[illegible], (त्रि०) [illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हि, (अव्य०) हन्-हि बा+डि। हेतु (सबब)। अवधारण (निश्चय) विशेष। प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि)। शोक। श्लोकका पूरा करना.

हिंसक, (पु०) हिंस्+ण्वुल्। व्याघ्र (भेड़िया) आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु। और शत्रु (दुश्मन)। हिंसाकरने-हारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ। वध (मारना)। घातन (घात करना)। किसीको प्राणोंसे अलग करना और चोरआदिका काम

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र। हिंसाशील। मारनेवाला। घोर (डरावना).

हिक्क्, शब्दकरना। कूकना। भ्वा० उ० अ० सेट्। हिक्कति ते.

हिंस्, हिंसा (मारना)। चु० आ० स० सेट्। हिंस्यते। अधिहिंसत.

हिक्का, (स्त्री०)। हिक्क्+अ। एकप्रकारका रोग (हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिमे गच्छति। गम्+डु। नि। सेट्। हमा- [illegible] वृक्ष (जिसका रस हिंग होता है)

हिण्ड्, गति (जाना)। घूमना। भ्वा० आ० स० सेट्। हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (यह भीमसेनने मारा था)। स्त्री। उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (भीमकी स्त्री).

हित, (त्रि०) धा+क्त। हि+क्त वा। पथ्य (भीजनमें) पथ्य (हितकारी)। और हितकर (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति। कृ+णिनि। शुभ [illegible]। भलाईकरनेवाला। हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति। इष्+णिनि। हितकी इच्छा (चाह) करनेवाला। हितैषकाभी.

हिताहितक, (पु०) [illegible] [illegible]

हिन्ताल, (पु०) [illegible]

हिम, (न०) [illegible]

हिमकर, (पु०) हिम [illegible] ([illegible]) [illegible]

हिमगिरि, (पु०) हिमस्य गिरिः । हिमप्रधानो वा गिरिः । बर्फका पहाड । वा जहां बहुत बर्फ है । हिमालयका पहाड.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमः प्रस्थः यस्य । [illegible] । हिमालयका पर्वत (पहाड).

हिमवत्, (पु०) हिमानी (प्राचुर्येण) सन्ति अस्य+ मतुप् । "म" को "व" होता है । जहां बहुत बर्फ होती है । हिमालय पर्वत

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त० । हिमसमूह । बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशवः यस्य । शीतलकिरणों-वाला । चंद्रमा । चांद । और कपूर । काफूर

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र । जिसमें बरफ आती है । अग्रहायणी (अगहन) और पौष (पूस) नामक दो महीनोंकी ऋतु (शिशिर)

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रौ जायते । [illegible] । हिमा लयमें उत्पन्न होती है । [illegible] । पार्वती । और नदी.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त० । हिमालयकी पुत्री । दुर्गा । पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः । हिमशब्दसे-[illegible] । हिमसमूह । बरफका ढेर । "[illegible]" रघुवंश.

हिमाराति, (पु०) ६ त० । बरफका शत्रु । सूर्य । आगका दूत । आग

हिमालय, (पु०) हिमानां आलयः । बरफोंका घर । एक पहाड.

हिमाम्बु, (न०) हिमवत् शीतलं अम्बु । [illegible] बरसता है । [illegible] । [illegible]

हिरण्मय, (त्रि०) हिरण्यस्य [illegible] । त्रि० । [illegible] बनाहुआ । [illegible] । "हिरण्मयी [illegible] शालाभञ्जिकेव [illegible] । [illegible] । [illegible] हिरण्मय पुरुष [illegible] हिरण्मयं" [illegible]

हिरण्य, (न०) हिरण्येत (जाय) [illegible] । [illegible] । [illegible] । धतूरा । धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक दैत्य (जो नरसिंहने मारा गया)

हिरण्यकशिपुद्विष्, (पु०) [illegible] । [illegible] हिरण्यकशिपुको मारनेवाला । विष्णु

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्य ([illegible]) [illegible]) [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । [illegible] [illegible]

हिरण्यरेतस्, (पु०) [illegible] । [illegible] है । आग (अग्नि) । और [illegible].

[illegible]

हायन, (पु॰) जहाति (अम्बु) । हा+ल्यु-नि॰ । णोदि । धान । (भाव) जहाति । वत्सर (वरिस) । आगकी लाट (स्त्री॰).

हार, (पु॰) हृ+कर्मणि घञ् । एकप्रकारकी मोतिओंकी माला । माला । "कर्तरि+घञ्" । बाँटनेहारा । भाजक.

हारक, (पु॰) हृ+ण्वुल् । चोर- धूर्त । सवरा । भाजक अंक । चुरानेहारा (त्रि॰).

हारावली, (स्त्री॰) हार इव आवली । हारकी नाई कतार । मुक्तावली (मोतिओंका हार) । "स्थारहारावली" इति गंगास्तवः । पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोष.

हारिद्र, (पु॰) हरिद्रया रक्त+अण् । कदम्ब (कदम) का वृक्ष, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हल्दीसे रँगाहुआ (त्रि॰).

हारिन्, (त्रि॰) हारः अस्ति अस्य+इनि । हृ+णिनि वा । हारक (चुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु॰) हृ+णिच्-इतच् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्तजुवारी).

हार्द, (न॰) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । स्नेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयसे हुआ वा उत्पन्नवा । हृदयका वा हृदयमें उत्पन्नहुआ (त्रि॰).

हार्य, (पु॰) [illegible] । हृ+ण्यत् । [illegible] वृक्ष (बहेरा) हरणीय ([illegible]) (त्रि॰).

हाल, (पु॰) हलः अस्ति अस्य+अण् । हल एव स्वार्थे+अण् । [illegible] । बलदेव । और हल.

हाला, (स्त्री॰) हल्+घञ् । मद (नशा) । [illegible] [illegible].

हालाहल, (पु॰ न॰) हलेन हलति । हल्+अण् । एकप्रकारका विष (जहिर) । एक कीड़ा । [illegible] (स्त्री॰) [illegible].

हालिक, (त्रि॰) हलेन चरति (हलसे खेतकरता है) । [illegible] (हलमें चलनेहारा) । किसान । "हल प्रहरणं [illegible]" इस विग्रह [illegible] है । हलसे [illegible] । "[illegible] [illegible]" [illegible].

हाव, (पु॰) ह्वे+घञ् । नि॰ । आह्वान (बुलाना) । स्त्रीकी [illegible] चेष्टा.

[illegible], (न॰) [illegible] । [illegible].

[illegible], (न॰) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) । [illegible] । ([illegible]) [illegible].

हास्य, (न॰) [illegible] । [illegible] । [illegible].

[illegible], (पु॰) [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible]

हि, [illegible] । [illegible] । [illegible].

हि, (अव्य॰) हा-हि वा+डि । हेतु (सबब) । अवधारण (निश्चय) विशेष । प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि) । शोक । श्लोकका पूराकरना.

हिंसक, (पु॰) हिंस्+ण्वुल् । व्याघ्र (भेडिया) आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसाकरनेहारा (त्रि॰).

हिंसा, (स्त्री॰) हिंस्+अ । वध (मारना) । घातन (कतलकरना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और औरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि॰) हिंस्+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर (डरावना).

हिक्क्, शब्दकरना । कूकना । भ्वा॰ उ॰ अ॰ सेट् । हिक्कति ते.

हिण्ड्, हिंसा (मारना) । चु॰ आ॰ स॰ सेट् । हिक्कयते । अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री॰) । हिक्क+अ । एकप्रकारका रोग (हिचकी).

हिङ्गु, (न॰) हिंसं गच्छति । गम्+डु । नि । हींग् । रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिंङ्ग होता है).

हिण्ड्, गति (जाना) । घूमना । भ्वा॰ आ॰ स॰ सेट् । हिण्ड् । हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु॰) एक राक्षस (वह भीमसेनसे मारागया) । स्त्री । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (भीमकी स्त्री).

हित, (त्रि॰) धा+क्त । हि+क्त वा । गत (चीलाया) । पथ्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि॰) हितं करोति । कृ+णिनि । उपकारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि॰) हितं इच्छति । इष्+णिनि । हितकी इच्छा (चाह) करनेहारा । हितेच्छाकारी.

हितोपदेश, (पु॰) हितस्य उपदेशः । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिशास्त्रको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु॰) हिन्दोल+अच् । पृ॰ । दोलन । झूलना । श्रावण (सावनमहीना) के शुक्लपक्षमें [illegible] किया हुआ कृष्णके भगवान्‌का झूलनेका एकप्रकारका उत्सव । एक रागका नाम.

हिम, (न॰) हि+मक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कुहर) । शीतस्पर्श (ठंडा छूना) । जाड़ाला (त्रि॰) । [illegible] । [illegible] (स्त्री॰) । [illegible] ([illegible]) और [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] ([illegible]) और [illegible] (पु॰)

हिमकर, (पु॰) हिम कर (किरण) यस्य । जिसकी किरण ठंडी है । [illegible] । चन्द्र (चाँद) । और कपूर.

हिमगिरि, (पु०) हिममयो गिरिः । हिमप्रधानो वा गिरिः । बर्फका पहाड़ । वा जहां बहुत बर्फ है । हिमालयका पहाड़.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमं प्रस्थः यस्य । शीतल चोटीवाला । हिमालयका पर्वत (पहाड़).

हिमवत्, (पु०) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्ति अस्य+ मतुप् । "म" को "व" होता है । जहां बहुत बर्फ होती है । हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त० । हिमसमूह । बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशवः अस्य । शीतलकिरणोंवाला । चंद्रमा । चांद । और कपूर । काफूर.

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र । जिसमें बरफ आती है । अग्रहायणी (मग्गर) और पौष (पूस) रूप दो महीनोंका ऋतु (मौसिम).

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रौ जायते । जन्+ड । हिमालयमें उत्पन्न होती है । क्षीरिणी । पार्वती । और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त० । हिमालयकी पुत्री । दुर्गा । पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः । हिम+ङीप्-आनुक्च । हिमसमूह । बरफका ढेर । "आगता वत जरैव हिमानी" रघुकाव्य.

हिमाराति, (पु०) ६ त० । बरफका शत्रु । सूर्य । आकका वृक्ष । आग.

हिमालय, (पु०) हिमानां आलयः । बरफोंका घर । एक पहाड़.

हिमाब्ज, (न०) हिमकाले जायते जन्+ड । शीतके समय उपजता है । उत्पल । कमलफूल.

हिरण्मय, (त्रि०) हिरण्यात्मकं+मयट् । नि० । सोनेका बनाहुआ । स्त्रियां ङीप् । "हिरण्मयी सीताप्रतिकृतिः" उत्तररामचरितम् । नौ वर्षोंमेंसे एक (न०) । सूर्यमण्डलमें रहनेहारा परम ब्रह्म । "य एष हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते हिरण्यश्मश्रुः" छान्दोग्यम्.

हिरण्य, (न०) हिरणमेव (स्वार्थे) यत् । सुवर्ण । सोना । धतूरा । धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक दैत्य (यह कश्यपसे दितिमें हुआ).

हिरण्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+क्विप् । ६ त० । हिरण्यकशिपुको मारनेहारा । विष्णु.

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्यं (स्वर्णाण्डं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) अस्य । सोनेके अंडेसे निकला । चारमुखवाला ब्रह्मा (यह सोनेके अंडेसे निकला था) । सालग्राममूर्तिविशेष.

हिरण्यरेतस्, (पु०) हिरण्यं रेतः यस्य । जिसका वीर्य सोना है । वह्नि (आग) । और चित्रकवृक्ष.

हिरण्यबाहु, (पु०) हिरण्यं बाहवो (प्राप्यतो) [illegible] सोना पहुंचाता है । "हिरण्यवर्णाः बाहुरिव [illegible]" । सोनेकी भुजाके समान जिसके [illegible] ([illegible]) हैं । महादेव । शोणनामी एक नद (बहादुर).

हिरण्याक्ष, (पु०) कश्यपका पुत्र । एक दैत्य.

हिरुक्, (अ०) हि+उकिक्-रुट् च । वर्जन (रोकना) । [illegible]

हिल्लोल्, [illegible] (झुलाना) चु० उ० स० सेट् । हिल्लोलयति-ते.

हिल्लोल, (पु०) हिल्लोल्+अच् । तरंग (लहर)+घञ् । [illegible]

हिव्, प्रीणन (प्रीतकरना) भ्वा० प० स० सेट् । हिन्वति । हिन्वति । अहिन्वीत्.

हिबुक, (न०) हिवि+उकक् । नि० । ज्योतिषमें लग्नसे चौथा स्थान.

हिंस्, वध (मारना) वा चु० उ० रुधा० प० सक० सेट् । हिनस्ति । हिंस्यात् । हिंसयति-ते । अहिंसीत् । अजिहिंसत्-त.

ही, (अव्य०) हि+डी । विस्मय (हैरानी) । दुःख । विषाद ([illegible]) । और शोक.

हीन, (त्रि०) हा+क्त । "त" को "न" होता है । ऊन (कम) । [illegible] । और अधम (नीच).

हीनवादिन्, (पु०) कर्म० । पूर्ववाद (पहिला झगड़ा)-को छोड़कर [illegible] किसी औरका अवलम्बन करता है । अपनी [illegible] छोड़ कर किसी दूसरे विषयमें चलेहारा । [illegible] (झूठे) पक्षवाले.

हीनाङ्ग, (त्रि०) हीनं अङ्गं यस्य । स्वभावसे न्यून (कम)-अंगवाला । अंधा । लंगड़ा । लूला आदि । स्त्री वा ङीप्.

हीर, (न०) [illegible] । नि० । वज्र । और हीरा । शिर । सांप । हार । [illegible] सिंह (शेर) (पु०) । स्त्रियें च्छन् । हीराकसि [illegible].

हु, होमकरण (आगमें घीआदिका डालना) । जुहो० प० सक० [illegible] । जुहोति । अहौषीत्.

हुङ्कार, (पु०) [illegible] उच्चारणस्य करः । हुं+कृ+घञ् । उप० [illegible] हुंकारशब्द (रोकने अथवा [illegible]) [illegible] । "[illegible] हुङ्कारेणैव [illegible]"

हुड्, [illegible] ([illegible] जाना) भ्वा० आ० स० सेट् । हुडति । [illegible]

हुड, (पु०) [illegible] मेष (भेड़) । चोरके रोकनेके लिये [illegible] (मेष).

हुत, (त्रि०) [illegible] देवताके उद्देशसे अग्निमें डाले [illegible] होमकियाहुआ "अग्ने च" होम (न [illegible]

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु) । हा+ल्यु-नि० । व्रीहि । धान । (भावे) जहाति । वत्सर (बरिस) । सागकी लाट (स्त्री०).

हार, (पु०) हृ+कर्मणि घञ् । एकप्रकारकी मोतियोंकी माला । माला । "कर्तरि+घञ्" । बाँटनेहारा । भाजक.

हारक, (पु०) हृ+ण्वुल् । चोर-धूर्त । सवरा । भाजक अंक । चुरानेहारा (त्रि०).

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली । हारकी नाई कतार । मुक्तावली (मोतियोंका हार) । "रत्नहारावली" इति ग्रंथान्तरः । पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोश.

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्तः+अण् । कदम्ब (कदम) का वृक्ष, (इसका फूल बहुत पीला होता है) । हल्दीसे रंगाहुआ (त्रि०).

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि । हृ+णिनि वा । हारक (चुरानेहारा) । हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु०) हृ+णिच्-इतच् । एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा । एक पक्षी (मैना) । और कितव (धूर्तजुवारी).

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण् । "हृद्" का आदेश होता है । स्नेह (पियार) । प्रेम । "हृदि भवः विहितो वा अण्" । हृदयमें हुआ वा जानागया । हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०).

हार्य, (पु०) ह्रियतेऽसौ । हृ+ण्यत् । विभीतक वृक्ष (बहेडा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०).

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण् । हल एव स्वार्थे+अण् । हलधर । बलदेव । और हल.

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ् । मद (नशा) । [illegible] शराब.

हालाहल, (पु० न०) हालेव हलति । हल्+अच् । एकप्रकारका विष (जहिर) । एक कीडा । मद (स्त्री०) [illegible].

हालिक, (त्रि०) हलेन चरति (हलसे खेती करता है) । हलवाहक (हलजोतनेहारा) । किसान । "हलः प्रहरणं अस्य" इस विग्रहमें यह है । हलसे युद्धकरनेहारा । "हलस्य इदं वा ठक्-ठञ्" [illegible].

हाव, (पु०) ह्वे+घञ् । नि० । आह्वान (बुलाना) । स्त्रियोंकी शृंगारभावसे [illegible] चेष्टा.

हास्तिक, (न०) हस्तिनां समूहः+ठञ् । हाथियोंका समूह.

हास्तिन, (न०) हस्तिन (कुरुराज) निर्मितं नगरं (शहर) । हस्तिनापुर [illegible] । (हस्तिनापुर) [illegible].

हास्य, (न०) हस्+ण्यत् । [illegible] । [illegible].

हाहाकार, (पु०) हा हा इत्यस्य कारः । [illegible] । [illegible] । [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible].

हि, गमन और शब्द । स्वा० प० सक० अनिट् । हिनोति । अहैषीत्.

हि, (अव्य०) हा-हि बा+डि । हेतु (सबब) । अवधारण- (निश्चय) विशेष । प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि) । शोक । श्लोकका पूराकरना.

हिंसक, (पु०) हिंस्+ण्वुल् । व्याघ्र (भेडिया) आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु । और शत्रु (दुश्मन) । हिंसाकरनेहारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ । वध (मारना) । घातन (कतलकरना) । किसीको प्राणोंसे अलग करना और चोरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र । हिंसाशील । मारनेवाला । घोर (डरावना).

हिक्क्, शब्दकरना । कूकना । भ्वा० उ० अ० सेट् । हिक्कति-ते.

हिक्क्, हिंसा (मारना) । चु० आ० स० सेट् । हिक्कयते । अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री०) । हिक्क्+अ । एकप्रकारका रोग (हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिंसं गच्छति । गम्+डु । नि । हींग् । रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिंग होताहै).

हिण्ड्, गति (जाना) । घूमना । भ्वा० आ० स० सेट् । हिण्डते । हिण्डिते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (यह भीमसेनसे मारागया) । स्त्री । उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (स्त्री टाप्).

हित, (त्रि०) धा+क्त । हि+क्त वा । गत (बीतगया) । पथ्य (हितकारी) । और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति । कृ+णिनि । शुभकारक । भलाईकरनेहारा । हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति । इष्+णिनि । हितकी इच्छा (चाह) करनेहारा । हितेच्छाकारी.

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः । भलाईका उपदेश । हितके लिये उपदेश । विष्णुशर्मा का रचाहुआ नीतिशिक्षाको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल्+घञ् । चु० । दोलन । झूलना । श्रावण (सावनमहीना) के शुक्लपक्षमें [illegible] [illegible] [illegible] भगवान्‌का झुलानारूप [illegible] । एक रागका नाम.

हिम, (न०) हि+मक् । आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कुहर) । शीतस्पर्श (ठण्ढा हुआ) । [illegible] (त्रि०) । [illegible] । [illegible] (स्त्री०) । [illegible] ([illegible]) और [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) । [illegible] । [illegible] ([illegible]) और [illegible] (पु०).

हिमकर, (पु०) हिमं करः (किरण) यस्य । [illegible] [illegible] है । [illegible] । [illegible] ([illegible]) । और कपूर.

हिमगिरि, (पु॰) हिममयो गिरिः। हिमप्रधानो वा गिरिः। बर्फका पहाड़। वा जहां बहुत बर्फ है। हिमालयका पहाड़.

हिमप्रस्थ, (पु॰) हिमः प्रस्थः यस्य। शीतल चोटीवाला। हिमालयका पर्वत (पहाड़).

हिमवत्, (पु॰) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्ति अत्र+मतुप्। "म" को "व" होता है। जहां बहुत बर्फ होती है। हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री॰) ६ त॰। हिमसमूह। बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु॰) हिमाः अंशवः यस्य। शीतलकिरणोंवाला। चन्द्रमा। चांद। और कपूर। काफूर.

हिमागम, (पु॰) हिमस्य आगमः यत्र। जिसमें बरफ आती है। अग्रहायणी (मग्गर) और पौष (पूस) स्वरूप दो महीनोंका ऋतु (मौसिम).

हिमाद्रिजा, (स्त्री॰) हिमाद्रौ जायते। जन्+ड। हिमालयमें उत्पन्न होती है। क्षीरिणी। पार्वती। और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री॰) ६ त॰। हिमालयकी पुत्री। दुर्गा। पार्वती.

हिमानी, (स्त्री॰) हिमानां संहतिः। हिम+ङीप्-आनुकच्। हिमसमूह। बरफका ढेर। "आगता घन जरेव हिमानी" रघुवंशः.

हिमारति, (पु॰) ६ त॰। बरफका शत्रु। सूर्य। आकका वृक्ष। आग.

हिमालय, (पु॰) हिमानां आलयः। बरफोंका घर। एक पहाड़.

हिमाब्ज, (न॰) हिमकाले जायते जन्+ड। शीतके समय उपजता है। उत्पल। कमलफूल.

हिरण्मय, (त्रि॰) हिरण्यात्मकं+मयट्। नि॰। सोनेका बनाहुआ। स्त्रियां ङीप्। "हिरण्मयी सीताप्रतिकृतिः" उत्तररामचरितम्। मौ कर्वोंमेंसे एक (न॰)। सूर्यमण्डलमें रहनेहारा परम ब्रह्म। "य एष हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते हिरण्याक्ष." छान्दोग्यम्.

हिरण्य, (न॰) हिरणमेव (स्वार्थे) यत्। सुवर्ण। सोना। धतूरा। धन.

हिरण्यकशिपु, (पु॰) एक दैत्य (वह नरसिंहसे विदीर्ण हुआ).

हिरण्यकशिपुहन्, (पु॰) हन+क्विप्। ६ त॰। हिरण्यकशिपुको मारनेहारा। विष्णु.

हिरण्यगर्भ, (पु॰) हिरण्य (स्वर्णाण्डं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) अस्य। सोनेके अंडेसे निकला। चारमुखवाला ब्रह्मा (वह सोनेके अंडेसे निकला था)। शालग्राममूर्तिविशेष.

हिरण्यरेतस्, (पु॰) हिरण्यं रेतः यस्य। जिसका वीर्य सोना है। वह्नि (आग)। और चित्रकरस.

हिरण्यबाहु, (पु॰) हिरण्यं बाहयति (प्रापयति) [illegible] सोना पहुंचाता है। "हिरण्यवर्णाः बाहुरिव [illegible]"। सोनेकी भुजाके समान जिसके [illegible] हैं। महादेव। शोणनामी एक नद (वह दूसरा).

हिरण्याक्ष, (पु॰) कश्यपका पुत्र। एक दैत्य.

हिरुक्, (अ[illegible]न॰) हि+उकिक्-रुट् च। वर्जन (रोकना)। [illegible]

हिलोल्, [illegible] (मुर्च्छा) पु॰ उ॰ स॰ सेट्। हिलोलयति-ते.

हिलोल, (पु॰) हिलोल्+अच्। तरंग (लहर)+अच्। [illegible]

हिव्, प्रीणन (प्रसन्नकरना) स्वा॰ प॰ स॰ सेट्। इहिवि। हिन्वति। अहिन्वीत्.

हिवुक, (न॰) हिवि+उकक्। नि॰। ज्योतिषमें लग्नसे चौथा स्थान.

हिंस्, वध (मारना) वा चु॰ उ॰ रुधा॰ प॰ सक॰ सेट्। इहिंस। हिनस्ति। हिंसयति-ते। अहिंसीत्। अजिहिंसत्-त.

ही, (अव्य॰) हि+डी। विस्मय (हैरानी)। दुःख। विषाद (उदास रहना)। और शोक.

हीन, (त्रि॰) हीन+क्त। "त" को "न" होता है। कम (कम)। निन्दाके लायक। और अधम (नीच).

हीनवादिन्, (पु॰) कर्म॰। पूर्ववाद (पहिला झगड़ा) को छोड़कर और किसी औरका अवलम्बन करता है। अगली कैफियतको छोड़ कर किसी दूसरे विषयमें धमनेहारा। मुकद्दमेका वादी (मुद्दई) धर्मशास्त्रमें.

हीनाङ्ग, (त्रि॰) हीनं अङ्गं यस्य। स्वभावसे न्यून (कम) अंगवाला। अन्धा। लंगड़ा। खञ्जआदि। स्त्रियां वा ङीप्.

हीर, (न॰) [illegible]। नि॰। वज्र। और हीरा। शिव। सांप। हार। और सिंह (शेर) (पु॰)। स्वार्थे कन्। हीरक[illegible]

हु, होमकरण (अग्निमें घीआदिका डालना)। जुहो॰ प॰ सक॰ [illegible] जुहोति। अहौषीत्.

हुङ्कार, (पु॰) [illegible] हुम्+कार। हुम्। उप॰ [illegible] क्रोधेधनब्रह्म (रोकने वालेनेहारा) शब्द [illegible] "सैवार्य महादर्दे हुङ्कारैरपि नर्दति" [illegible]

हुड्, [illegible] (संघात) भ्वा॰ आ॰ स॰ सेट्। इहुडि। हुड[illegible]

हुड, (पु॰) [illegible] मेष (मेढ़ा)। चोरको रोकनेके लिये पृथिवी[illegible] लोहका कील (मेख).

हुत, (त्रि॰) [illegible] देवताके उद्देशसे मन्त्रपूर्वक अग्निमें [illegible] डालेगये। होमकियाहुआ "अरे च" होम (न॰)[illegible]

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु)। हा+ल्युट्-णि०। व्रीहि। धान। (भावं) जहाति। वत्सर (बरस)। आसरी लाट (स्त्री०).

हार, (पु०) हृ+कर्मणि घञ्। एकप्रकारकी मोतियोंकी माला। माला। "कर्तरि+घञ्" बाँटनेहारा। भाजक.

हारक, (पु०) हृ+ण्वुल्। चोर- धूर्त। राजा। भाजक अंक। चुरानेहारा (त्रि०).

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली। हारकी नाईं कतार। मुक्तावली (मोतियोंका हार)। "श्रृंगारहारावली" इति गंगास्तवः। पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोष.

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्तः+अण्। कदम्ब (कदम) का वृक्ष, (इसका फूल बहुत पीला होता है)। हल्दीसे रंगाहुआ (त्रि०).

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि। हृ+णिनि वा। हारक (चुरानेहारा)। हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु०) हृ+णिच्-इतच्। एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा। एक पक्षी (मैना)। और कितव (धूर्तपरा).

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण्। "हृद्" का आदेश होता है। स्नेह (पियार)। प्रेम। "हृदि भवः सिद्धौ वा अण्"। हृदयसे हुआ वा जानागया। हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०).

हार्य, (पु०) हियतेऽसौ। हृ+ण्यत्। विभीतक वृक्ष (बहेरा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०).

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण्। हल एव स्वार्थे+अण्। हलधर। बलराम। और हल.

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ्। मद (नशा)। [illegible] शराब.

हालाहल, (पु० न०) हालेन हलति। हल्+अच्। एकप्रकारका विष (जहिर)। एक कीड़ा। मद (स्त्री०) [illegible].

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है)। हलवाह (हलजोतनेहारा)। किसान। "हलः प्रहरणं अस्य" इस विग्रहमें ठक् है। हलसे युद्धकरनेहारा। "हलस्य इदं वा ठक्-ठञ्" हलका.

हाव, (पु०) ह्वे+घञ्। नि०। आह्वान (बुलाना)। स्त्रियोंकी शृंगारभावकी [illegible] चेष्टा.

हास्तिक, (न०) हस्तिनां समूहः+ठक्। हाथियोंका समूह.

हास्तिन, (न०) हस्तिन (राजा) [illegible] (अण्)। हस्तिनापुर [illegible]। (हस्तिन पुर) [illegible].

हास्य, (न०) हस्+ण्यत्। हंसना। [illegible].

हाहाकार, (पु०) हा हा इत्यस्य करणं। कृ+घञ्। [illegible] शब्द। दुःख (कष्ट)का शब्द। [illegible].

हि, [illegible]। [illegible]। हिनोति। [illegible].

हि, (अव्य०) हा-हि वा+डि। हेतु (सबब)। अवधारण (निश्चय) विशेष। प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि)। शोक। श्लोकका पूराकरना.

हिंसक, (पु०) हिंस+ण्वुल्। व्याघ्र (भेड़िया) आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु। और शत्रु (दुश्मन)। हिंसाकरनेहारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ। वध (मारना)। घातन (कतलकरना)। किसीको प्राणोंसे अलग करना और औरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र। हिंसाशील। मारनेवाला। घोर (डरावना)

हिक्क्, शब्दकरना। कूकना। भ्वा० उ० स० सेट्। हिक्कति ते.

हिक्क्, हिंसा (मारना)। चु० आ० स० सेट्। हिक्कयते। अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री०)। हिक्क+अ। एकप्रकारका रोग (हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिमं गच्छति। गम्+डु। नि। हींग। रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिंगु होताहै).

हिण्ड्, गति (जाना)। घूमना। भ्वा० आ० स० सेट्। हिण्डते। हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनने मारागया)। स्वा। उस राक्षसकी भगिनी (बहिन) (स्त्रियां टाप्).

हित, (त्रि०) धा+क्त। हि+क्त वा। गत (बीतगया)। पथ्य (हितकारी)। और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति। कृ+णिनि। शुभकारक। भलाईकरनेहारा। हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति। इष्+णिनि। हितकी इच्छा (चाह) करनेहारा। हितेच्छाधारी.

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः। भलाईका उपदेश। हितके लिये उपदेश। विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषयको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल+घञ्। चु०। दोलन। झूला। श्रावण (सावनमहीना) के शुक्लपक्षमें [illegible] कियाहुआ [illegible] भगवान्का झुलानाकर्म एकप्रकारका राग। एक रागका नाम.

हिम, (न०) हि+मक्। आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा)। शीतस्पर्श (ठण्डा छूना)। [illegible] (त्रि०)। [illegible]। [illegible] (स्त्री०)। [illegible] ([illegible]) और [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible])। चंदनका वृक्ष। [illegible] ([illegible]) और कपूर (पु०).

हिमकर, (पु०) हिम. कर. (किरण) [illegible]। [illegible] [illegible] है। कृ+अच्। चन्द्र (चांद)। और कपूर.

हिमगिरि, (पु०) हिममयो गिरिः। हिमप्रधानो वा गिरिः। बरफका पहाड़। वा जहां बहुत बर्फ है। हिमालयका पहाड़.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमः प्रस्थः यस्य। शीतल चोटीवाला। हिमालयका पर्वत (पहाड़).

हिमवत्, (पु०) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्ति अस्य+ मतुप्। "म" को "व" होना है। जहां बहुत बर्फ होवी है। हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त०। हिमसमूह। बरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशव यस्य। शीतलकिरणोंवाला। चंद्रमा। चांद। और कपूर। काफूर

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र। जिसमें बरफ आती है। अग्रहायणी (मगार) और पौष (पूस) स्वरूप दो महीनोंका ऋतु (मौसिम).

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रौ जायते। जन्+ड। हिमालयमें उत्पन्न होती है। क्षीरिणी। पार्वती। और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त०। हिमालयकी पुत्री। गंगा। पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः। हिम+ङीप्-आनुक् च। हिमसमूह। बरफका ढेर। "आगता का अरेव हिमानी" मुकुन्द०.

हिमाराति, (पु०) ६ त०। बरफका शत्रु। सूर्य। आकका पेड़। आग.

हिमालय, (पु०) हिमानां आलय। बरफोंका घर। एक पहाड़.

हिमाब्ज, (न०) हिमकाले जायते जन्+ड। शीतके समय उपजता है। उत्पल। कमलफूल.

हिरण्मय, (त्रि०) हिरण्यात्मक+मयट्। नि०। सोनेका बनाहुआ। स्त्रियां ङीप्। "हिरण्मयी सीताप्रतिकृतिः" उत्तररामचरितम्। नौ वर्षोंमेसे एक (न०)। सूर्यमण्डलमें रहनेवाला परम ब्रह्म। "य एष हिरण्मय पुरुषो दृश्यते हिरण्याक्ष." छान्दोग्यम्

हिरण्य, (न०) हिरणमेव (स्वार्थे) यत्। सुवर्ण। सोना। धतूरा। धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक दैत्य (वह बरसाके दिनमें हुआ).

हिरण्यकशिपुदन, (पु०) हन्+क्विप्। ६ त०। हिरण्यकशिपुको मारनेवाला। विष्णु.

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्य (स्वर्णात्मकं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) अस्य। सोनेके अंडेसे निकला। ब्रह्मा। ... ब्रह्मा (वह सोनेके अंडेसे निकला था)। ... मनुस्मृतिरिति.

हिरण्येतस, (पु०) हिरण्यं रेतः यस्य। ... है। बांह (बाहु) ...

हिरण्याक्ष, (पु०) कश्यपका पुत्र। एक दैत्य.

हिरुक्, (अ०) ...

हिल्लोल, ...

हिसेन्ध, ...

हिव, ...

हिबुक, (न०) ...

हिर, ...

ही, (अव्य०) ...

हीन, (त्रि०) ...

हीनयाचिन, (पु०) ...

हीवाक, ...

हीर, (न०) ...

हु, ...

हुङ्कार, (पु०) ...

हुड, ...

हुत, (पु०) ...

हुत, (त्रि०) ...